।। श्रीहरिः ।।

636

कल्याण

तीर्थाङ्क

[इकतीसवें वर्षका विशेषाङ्क]

गीताप्रेस, गोरखपुर

636 Tirthank_Section_1_1_Front
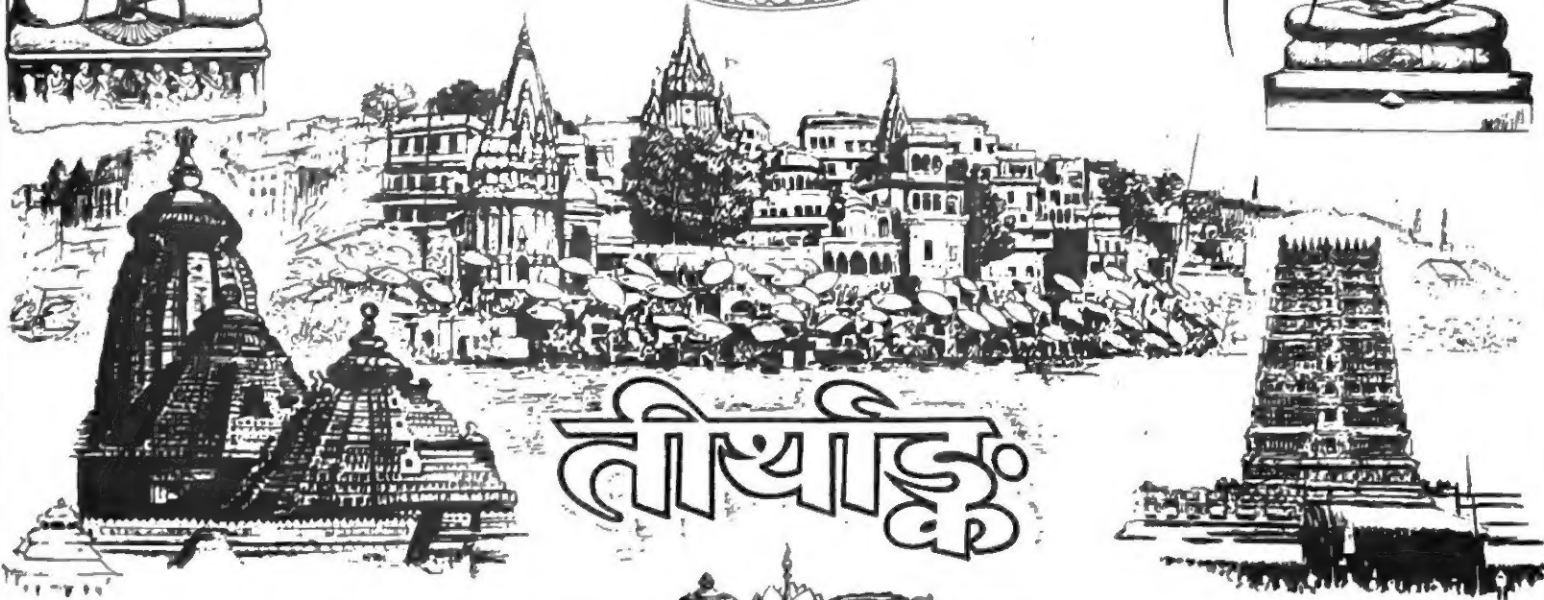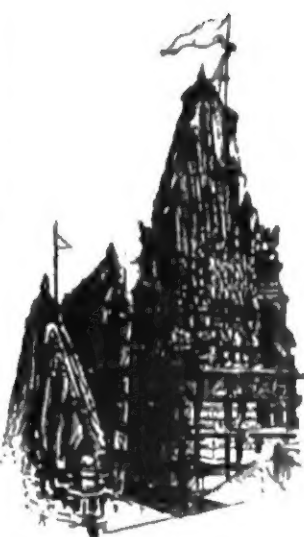
दुर्गति-नाशिनि दुर्गा जय जय, काल-विनाशिनि काली जय जय।
उमा-रमा-ब्रह्माणी जय जय, राधा-सीता-रुक्मिणि जय जय॥
साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, जय शंकर।
हर हर शंकर दुखहर सुखकर अघ-तम-हर हर हर शंकर॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
जय जय दुर्गा, जय मा तारा। जय गणेश जय शुभ-आगारा॥
जयति शिवाशिव जानकिराम। गौरीशंकर सीताराम॥
जय रघुनन्दन जय सियाराम। व्रज-गोपी-प्रिय राधेश्याम॥
रघुपति राघव राजाराम। पतितपावन सीताराम॥

सं० २०७५ पन्द्रहवाँ पुनर्मुद्रण ३,०००
कुल मुद्रण ५०,०००

❖ मूल्य—₹ २३०
(दो सौ तीस रुपये)

जय पावक रवि चन्द्र जयति जय। सत्-चित्-आनँद भूमा जय जय॥
जय जय विश्वरूप हरि जय। जय हर अखिलात्मन् जय जय॥
जय विराट् जय जगत्पते। गौरीपति जय रमापते॥

सम्पादक—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, चिम्मनलाल गोस्वामी, एम० ए०, शास्त्री
केशोराम अग्रवालद्वारा गोबिन्दभवन-कार्यालयके लिये गीताप्रेस, गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित

web: gitapress.org | e-mail : booksales@gitapress.org | ✆ (0551) 2334721, 2331250, 2331251

गीताप्रेस प्रकाशन gitapressbookshop.in से online खरीदें।

॥ श्रीहरिः ॥

'तीर्थाङ्क' के नवीन संस्करणके विषयमें नम्र निवेदन

'तरति पापादिकं यस्मात्'—अर्थात् जिसके द्वारा मनुष्य पापादिसे मुक्त हो जाय, उसे 'तीर्थ' कहते हैं। भारतवर्षके प्रत्येक प्रदेश, नगर और ग्रामतकमें तीर्थ विद्यमान हैं। वेदान्तकी दृष्टिसे तो भारतका अणु-रेणुतक तीर्थस्वरूप है।

जिस प्रकार शरीरमें मस्तक आदि कुछ अङ्ग पवित्र माने गये हैं, उसी प्रकार पृथ्वीमें भी कुछ विशेष स्थान पवित्र और कुछ विशेष माने गये हैं। कहीं-कहीं भू-भागके अद्भुत प्रभावसे, कहीं-कहीं गङ्गा आदि पवित्र नदियोंके सांनिध्यसे और कहीं-कहीं ऋषि-मुनियों तथा संत-महात्माओंकी तपोभूमि अथवा भगवदवतारोंकी लीला-भूमि होनेसे ये पुण्यप्रद माने गये हैं। इन सबमें अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, काञ्ची, अवन्तिका और द्वारका—ये सात प्रधान तीर्थ हैं। ये सातों ही पुरियाँ मुक्तिको देनेवाली हैं। इन सप्त पुरियोंमें मुक्ति प्रदान करनेकी शक्ति उनमें सदा संनिहित भगवत्स्वरूपोंके कारण ही है।

वस्तुतः तीर्थोंकी ऐसी महिमा ही उनका निरन्तर सेवन और इस जीवनके एकमात्र उद्देश्य—भगवत्तत्व तथा भगवत्प्रेमकी प्राप्तिके लिये प्रेरित करनेवाली है। ऐसी प्रेरणा मिलती है भगवत्प्रेमी महात्माओंके सङ्गसे और ऐसे महात्मा मिलते हैं तीर्थोंकी पावन धरतीपर। इसीलिये शास्त्रोंने संतजनोंद्वारा सेवित पवित्र स्थानों—तीर्थोंमें जाकर सत्संग करने, पवित्र जलाशयोंमें स्नान, धार्मिक अनुष्ठान तथा दानादि करने और पवित्र वातावरणमें विचरण करनेकी आज्ञा दी है।

तीर्थोंके सर्वमान्य महत्त्व और उपयोगितापर विचार करके एवं तीर्थविषयक विस्तृत जानकारी देनेवाले मार्ग-दर्शक-साहित्यका अभाव अनुभव करके ही 'कल्याण'ने अपने ३१वें वर्ष—सन् १९५७ ई० के विशेषाङ्कके रूपमें 'तीर्थाङ्क' प्रकाशित किया था। उस समय 'कल्याण' के ग्राहकोंकी संख्या थोड़ी होनेसे विशेषाङ्क सीमित संख्यामें ही छापे जानेके फलस्वरूप उसका लाभ उस समय बहुसंख्यक जन नहीं उठा सके। इसके शीघ्र ही समाप्त हो जानेके कारण 'तीर्थाङ्क' के जिज्ञासुजनोंकी माँग दिनोंदिन बढ़ती ही गयी। इसके पुनर्मुद्रणके लिये 'कल्याण' के बहुसंख्यक प्रेमी पाठकोंके बार-बार प्रेमाग्रह और जनहितमें इसकी उपयोगिताको ध्यानमें रखकर ही अब उसी 'तीर्थाङ्क' का यह दूसरा संस्करण ज्यों-का-ज्यों, किंतु ग्रन्थाकारमें सजिल्द छापा गया है।

इसमें तीर्थोंके महत्त्व और सम्पूर्ण तीर्थोंकी विस्तृत जानकारीसहित, तत्कालीन मार्ग-विवरण तथा यातायातके साधनोंका दिशा-निर्देश भी है। अन्य अनेक साधनोपयोगी और जानने योग्य विषयोंमें—तीर्थ-सेवन-विधि, तीर्थ-सेवनका फलका, तीर्थोंका स्वरूप, महिमा, तीर्थोंके पालनीय नियम आदि एवं तीर्थ-तत्त्व-मीमांसासहित देव-पूजन-विधि, तीर्थ-श्राद्ध-विधि तथा अनेक उपयोगी और सुन्दर स्तोत्रोंके संकलनने इसे और भी अधिक उपादेय बना दिया है। इस प्रकार इस विशेषाङ्कका पुनर्मुद्रण सभी श्रद्धालुओंसहित समस्त तीर्थ-प्रेमियों तथा तीर्थ-यात्रियोंको समुचित मार्ग-दर्शन करानेवाला एक उपयोगी आधार सिद्ध होगा—ऐसी हमें आशा है।

इसमें दिये हुए तीर्थ-स्थानोंके विवरण—स्थिति, नाम और प्रभाव आदि तो आज भी प्रायः वही (यथावत्) हैं; परंतु वर्तमानमें उनके मार्ग-विवरण, यातायातके साधनों और ठहरनेके स्थानों—यात्री-निवास, धर्मशाला आदिके विवरणोंमें इतने समय बाद परिवर्तन हो जाना सम्भव है। अतएव तीर्थ-प्रेमियोंको इस विशेषाङ्कमें दिये हुए आवागमन-सम्बन्धी निर्देशोंपर पूर्णतः निर्भर न रहकर वर्तमान रेलवे-टाइमटेबुल तथा तीर्थ-स्थानोंमें राज्यके सूचना-विभाग एवं समाजसेवी संस्थाओंद्वारा प्रचारित मार्ग-निर्देशिकाओं (गाइडों) से उचित दिशा-निर्देश प्राप्त करना चाहिये। इस विशेषाङ्कसे प्रेरणा लेकर तीर्थयात्रापर जानेवाले सभी प्रेमी महानुभावों और सहृदय बन्धुओंसे हमारा यह भी विनम्र अनुरोध है कि यात्रासे लौटनेपर वे मार्ग और यातायात-सम्बन्धी वर्तमान परिवर्तनोंके विषयमें अपना अनुभूत विवरण कृपया हमें अवश्य भेजें जिससे 'तीर्थाङ्क' के अगले संस्करणमें उन्हें संशोधन-रूपमें सम्मिलित किया जा सके। इस प्रकारका सहयोग प्रदान करनेवाले सभी सज्जनोंके हम विशेष आभारी होंगे।

—प्रकाशक

॥ श्रीहरिः ॥

तीर्थाङ्ककी विषय-सूची

636 Tirthank_Section_1_2_Back

विषय — पृष्ठ-संख्या

विषय	पृष्ठ-संख्या

विषय — पृष्ठ-संख्या

विषय	पृष्ठ-संख्या

विषय	पृष्ठ-संख्या

पद्य-सूची

चित्र-सूची

भगवान् श्रीद्वारकानाथजी, द्वारका (शृङ्गारयुक्त श्रीविग्रह)

पार्षदसहित भगवान् श्रीबदरीनारायणजी

श्रीविट्ठल-भगवान्, पण्ढरपुर

श्रीनन्द-मन्दिर (नन्दगाँव) के श्रीविग्रह

श्रीराधाजी

श्रीसीता-रामके विग्रह, कनकभवन (अयोध्या)

भगवान् श्रीनाथजी नाथद्वारा, श्रीद्वारकाधीशजी काँकरोली, श्रीयमुनाजी,
श्रीरणछोड़रायजी डाकोर और श्रीचारभुजाजी मेवाड़

श्रीवेङ्कटेश-भगवान्, तिरुमलै

श्रीपद्मावती देवी, तिरुच्चानूर

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥
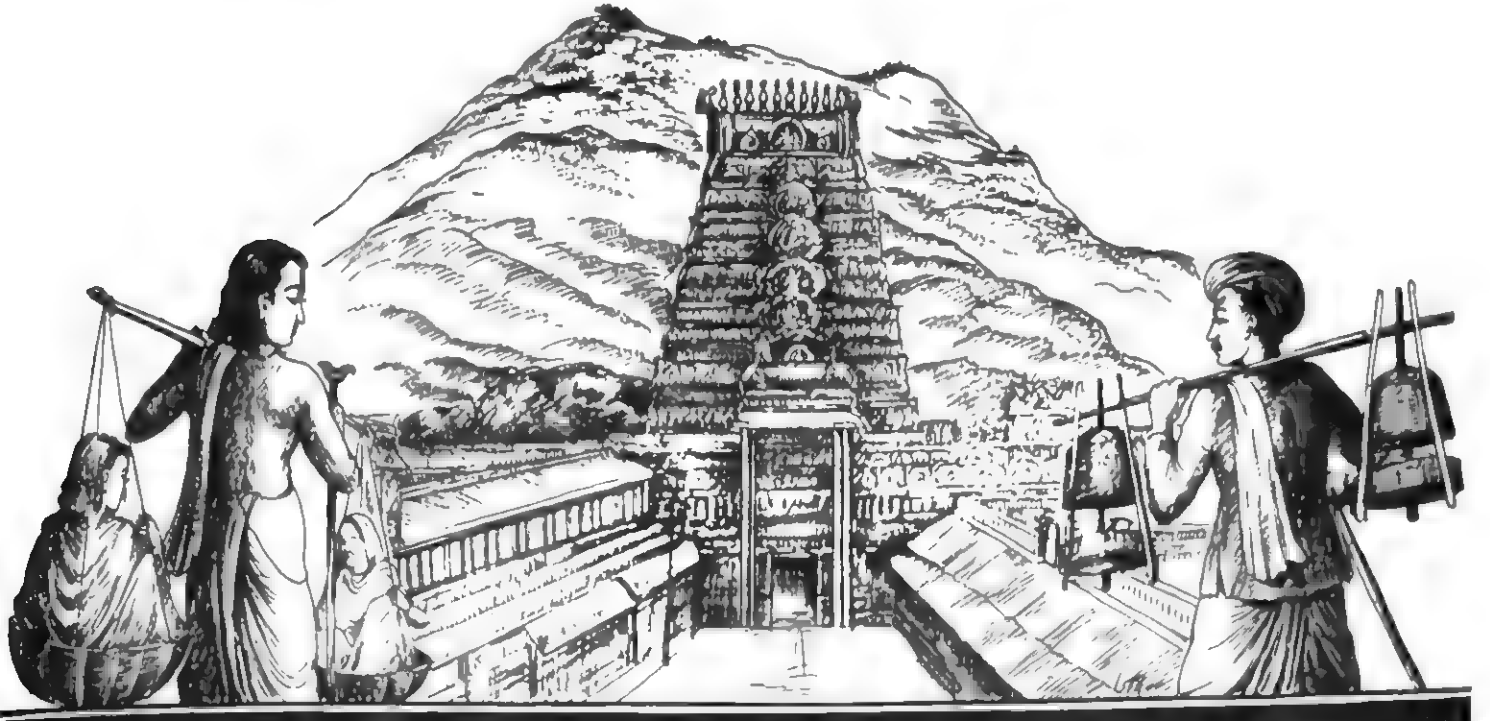
ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

(श्रीमद्भागवत ११। ५। ३३)

वर्ष ३१ | गोरखपुर, सौर माघ, २०१३, जनवरी १९५७ | संख्या १ पूर्ण संख्या ३६२

श्रीद्वारकानाथकी वन्दना

(रचयिता—पाण्डेय पं० श्रीरामनारायणदत्तजी शास्त्री 'राम')

नृणामनादिनिजकर्मनियन्त्रितानामुत्तारणाय भववारिनिधेरपारात्।
वारां निधौ वसति यस्तमहं सदारं द्वारावतीपतिमुदारमतिं नमामि॥ १॥

जो अपने-अपने अनादि कर्मपाशसे जकड़े हुए मनुष्योंको अपार भवसागरसे पार उतारनेके लिये ही सागरमें निवास करते हैं, पटरानियोंसहित उन उदारबुद्धि श्रीद्वारकानाथजीको मैं प्रणाम करता हूँ।

या द्वारमस्त्यपिहितं वरमुक्तिधाम्नस्तां द्वारकां निजपुरीमिह योऽधिशेते।
मोक्षाधिकं च निजधाम परं ददाति तं द्वारकेश्वरमहं प्रणमाम्युदारम्॥ २॥

जो इस लोकमें श्रेष्ठ मुक्तिधामका खुला हुआ द्वार है, उस अपनी द्वारकापुरीमें जो निरन्तर निवास करते और प्राणियोंको मोक्षसे भी बढ़कर अपना परमधाम देते हैं, उन उदार-शिरोमणि श्रीद्वारकानाथजीको मैं नमस्कार करता हूँ॥ २॥

या भीष्मजाप्रभृतयोऽष्ट वरा महिष्यस्ताभिः सरागमभितः परिषेव्यमाणम्।
आराधयन्तमनिशं हृदयेन राधां द्वारावतीपरिवृढं दृढमाश्रयामि॥ ३॥

रुक्मिणी आदि जो आठ श्रेष्ठ पटरानियाँ हैं, वे अत्यन्त निकट रहकर अनुरागपूर्वक जिनकी सब ओरसे सेवा करती हैं, तथापि जो अपने मनसे निरन्तर श्रीराधाकी आराधना करते रहते हैं, उन श्रीद्वारकानाथजीकी मैं दृढ़तापूर्वक शरण लेता हूँ॥ ३॥

शङ्खं प्रसारितसुखं स्वपदाश्रितानां चक्रं सदा दमितदानवदैत्यचक्रम्।
कौमोदकीं भुवनमोदकरीं गदाग्र्यां पद्मालयाप्रियकरं प्रथितं च पद्मम्॥ ४॥
संधारयन्तमतिचारुचतुर्भुजेषु श्रीवत्सकौस्तुभधरं वनमालयाऽऽढ्यम्।
सिन्धोस्तटे मुकुटकुण्डलमण्डितास्यं श्रीद्वारकेशमनिशं शरणं प्रपद्ये॥ ५॥

जो अपने चरणाश्रित भक्तोंके लिये सुखका प्रसार करनेवाले शङ्खको, सदा दैत्यों और दानवोंके दलका दमन करनेवाले चक्रको, सम्पूर्ण भुवनोंको आनन्द प्रदान करनेवाली कौमोदकी नामक श्रेष्ठ गदाको तथा पद्मालया (लक्ष्मीस्वरूपा रुक्मिणी)-का प्रिय करनेवाले प्रख्यात पद्म-पुष्पको अपनी अत्यन्त मनोहर चार भुजाओंमें धारण किये रहते हैं, जिन्होंने अपने वक्षःस्थलपर श्रीवत्सका चिह्न तथा कौस्तुभमणि धारण कर रखी है, जो वनमालासे विभूषित हैं तथा जिनका मुखमण्डल किरीट और कुण्डलोंसे अलंकृत है, उन सिन्धु-तटवर्ती श्रीद्वारकानाथजीकी मैं निरन्तर शरण ग्रहण करता हूँ॥ ४-५॥

श्रीद्वारकानगरसीमनि यत्र कुत्र हित्वा वपुः सपदि यस्य कृपाविशेषात्।
कीटोऽपि कैटभरिपोरुपयाति धाम तं द्वारकेश्वरमहं मनसाऽऽश्रयामि॥ ६॥

जिनकी विशेष कृपासे द्वारकापुरीकी सीमाके भीतर जहाँ-कहीं भी अपने शरीरका त्याग करके कीट भी कैटभ-शत्रु भगवान् श्रीहरिके धाममें तत्काल चला जाता है, उन श्रीद्वारकानाथजीका मैं मन-ही-मन आश्रय लेता हूँ॥ ६॥

पाहीति पार्षतसुतार्तरवं निशम्य यो द्रागुपेत्य नवलाम्बरराशिरासीत्।
कृष्णामपाद् व्यगमयच्च मदं कुरूणां तं द्वारकाधिपतिमाधिहरं स्मरामि॥ ७॥

'प्रभो, मेरी रक्षा करो!' यह द्रौपदीकी आर्त पुकार सुनकर जो झटपट उसके पास जा पहुँचे और उसकी लज्जा ढकनेके लिये नूतन वस्त्रोंकी राशि बन गये तथा इस प्रकार जिन्होंने द्रौपदीकी रक्षा की और कौरवोंका घमंड चूर कर दिया, भक्तोंकी मानसिक व्यथाको हर लेनेवाले उन श्रीद्वारकानाथका मैं स्मरण करता हूँ॥ ७॥

मोहादपार्थपुरुषार्थमवेक्ष्य पार्थं यः संजगौ त्रिजगदुद्धरणाय गीताम्।
ज्ञानं सुदुर्लभमदात् समराङ्गणेऽपि तं द्वारकेशमिह सद्गुरुमाश्रयामि॥ ८॥

जिन्होंने मोहवश अर्जुनके पुरुषार्थको व्यर्थ होते देख उन्हींके ब्याजसे तीनों लोकोंके उद्धारके लिये गीताका गान किया और इस प्रकार समराङ्गणमें भी अत्यन्त दुर्लभ ज्ञान प्रदान किया, उन सद्गुरुस्वरूप श्रीद्वारकानाथजीकी मैं यहाँ शरण लेता हूँ॥ ८॥

इति श्रीद्वारकेशाष्टकं सम्पूर्णम्॥

सर्वोपयोगी प्रातःस्मरण

गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः।
द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः॥
विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
विश्वं तस्य भवेद् वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित्॥
सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम्॥
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे॥
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिफलं लभेत्॥
औषधे चिन्तयेद् विष्णुं भोजने च जनार्दनम्।
शयने पद्मनाभं च विवाहे च प्रजापतिम्॥
युद्धे चक्रधरं देवं प्रवासे च त्रिविक्रमम्।
नारायणं तनुत्यागे श्रीधरं प्रियसंगमे॥
दुःस्वप्नेषु च गोविन्दं संकटे मधुसूदनम्।
कानने नरसिंहं च पावके जलशायिनम्॥
जलमध्ये वराहं च पर्वते रघुनन्दम्।
गमने वामनं चैव सर्वकार्येषु माधवम्॥
एतानि विष्णुनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति॥
आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः।
तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं च प्रभाकरः॥
पञ्चमं च सहस्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः।
सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमं च विभावसुः॥
नवमं दिनकृत् प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः।
एकादशं त्रयीमूर्तिर्द्वादशं सूर्य एव च॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातःकाले पठेन्नरः।
दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धिः प्रजायते॥
काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥
बगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।
एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्तिताः॥
सत्यरूपं सत्यसंधं सत्यनारायणं हरिम्।
यत्सत्यत्वेन जगतस्तं सत्यं त्वां नमाम्यहम्॥
त्रैलोक्यचैतन्यमयादिदेव
श्रीनाथ विष्णो भवदाज्ञयैव।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं
संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये॥
अनिरुद्धं गजं ग्राहं वासुदेवं महाद्युतिम्।
संकर्षणं महात्मानं प्रद्युम्नं च तथैव हि॥
मत्स्यं कूर्मं च वाराहं वामनं तार्क्ष्यमेव च।
नारसिंहं च नागेन्द्रं सृष्टिसंहारकारकम्॥
विश्वरूपं हृषीकेशं गोविन्दं मधुसूदनम्।
त्रिदशैर्वन्दितं देवं महाशक्तिमनुत्तमम्॥
एतान् हि प्रातरुत्थाय संस्मरिष्यन्ति ये नराः।
सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते विष्णुलोकमवाप्नुयुः॥
ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥
प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीक-
व्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान्।
रुक्माङ्गदार्जुनवशिष्ठविभीषणादीन्
पुण्यानिमान् परमभागवतान् स्मरामि॥
भृगुर्वशिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च
मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥
सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः
सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गली च।
सप्तस्वराः सप्तरसातलानि
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥
सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च
सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे॥
उमा उषा च वैदेही रमा गङ्गेति पञ्चकम्।
प्रातरेव स्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्द्धते सदा॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥
प्रभाते यः स्मरेन्नित्यं दुर्गा-दुर्गाक्षरद्वयम्।
आपदस्तस्य नश्यन्ति तमः सूर्योदये यथा॥
हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम्।
पञ्चकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकटनाशनम्॥
अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाँश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
सप्तैतान् यः स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥
पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥
अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥
अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः॥
कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम्॥
कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्।
योऽस्य संकीर्तयेन्नाम कल्प उत्थाय मानवः।
न तस्य वित्तनाशः स्यान्नष्टं च लभते पुनः॥
श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितिं तथा।
प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स विमुच्यते॥
जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्ति-
र्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
त्वया हृषीकेश हृदिस्थितेन
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि॥
प्रातरुत्थाय सायाह्नात् सायाह्नात् प्रातरुत्थितः।
यत्करोमि जगन्नाथस्तदेव तव पूजनम्॥
हे जिह्वे! रससारज्ञे सर्वदा मधुरप्रिये।
नारायणाख्यपीयूषं पिब जिह्वे निरन्तरम्॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
प्रातः शिरसि शुक्लेऽब्जे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम्।
प्रसन्नवदनं शान्तं स्मरेत् तन्नामपूर्वकम्॥
नमोऽस्तु गुरवे तस्मा इष्टदेवस्वरूपिणे।
यस्य वाक्यमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञितम्॥

श्रीगणेशप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं
सिन्दूरपूर्णपरिशोभितगण्डयुग्मम्।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्ड-
माखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम्॥ १॥

प्रातर्नमामि चतुराननवन्द्यमान-
मिच्छानुकूलमखिलं च वरं ददानम्।
तं तुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं
पुत्रं विलासचतुरं शिवयोः शिवाय॥ २॥

प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्तशोक-
दावानलं गणविभुं वरकुञ्जरास्यम्।
अज्ञानकाननविनाशनहव्यवाह-
मुत्साहवर्धनमहं सुतमीश्वरस्य॥ ३॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम्।
प्रातरुत्थाय सततं प्रपठेत् प्रयतः पुमान्॥ ४॥

श्रीशिवप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं
सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ २ ॥

प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम्।
नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ ३ ॥

प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य
श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति।
ते दुःखजालं बहुजन्मसंचितं
हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः ॥ ४ ॥

श्रीविष्णुप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्यै
नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं
चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना
पादारविन्दयुगलं परमस्य पुंसः।
नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य
पारायणप्रवणविप्रपरायणस्य ॥ २ ॥

प्रातर्भजामि भजतामभयंकरं तं
प्राक्सर्वजन्मकृतपापभयापहत्यै ।
यो ग्राहवक्त्रपतिताङ्घ्रिगजेन्द्रघोर-
शोकप्रणाशनकरो धृतशङ्खचक्रः ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं प्रातः प्रातः पठेन्नरः।
लोकत्रयगुरुस्तस्मै दद्यादात्मपदं हरिः ॥ ४ ॥

श्रीसूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि खलु तत् सवितुर्वरेण्यं
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभि-
र्ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च।
वृष्टिप्रमोचनविग्रहहेतुभूतं
त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च ॥ २ ॥

प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं
पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च।
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्तिं
गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम् ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातः प्रातः पठेत्तु यः।
स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुखमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

श्रीचण्डीप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां
सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम्।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां
रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम्॥ १॥

प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्ड-
शुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम्।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां
चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम्॥ २॥

प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं
धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम्।
संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां
मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः॥ ३॥

श्लोकत्रयमिदं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः।
सर्वान् कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते॥ ४॥

श्रीभगवत्प्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि फणिराजतनौ शयानं
नागामरासुरनरादिजगन्निदानम्।
वेदैः सहागमगणैरुपगीयमानं
कान्तारकेतनवतां परमं निधानम्॥ १॥

प्रातर्भजामि भवसागरवारिपारं
देवर्षिसिद्धनिवहैर्विहितोपहारम्।
संदृप्तदानवकदम्बमदापहारं
सौन्दर्यराशिजलराशिसुताविहारम्॥ २॥

प्रातर्नमामि शरदम्बरकान्तिकान्तं
पादारविन्दमकरन्दजुषां भयान्तम्।
नानावतारहृतभूमिभरं महान्तं
पाथोजकम्बुरथपादकरं प्रशान्तम्॥ ३॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं ब्रह्मानन्देन कीर्तितम्।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय सर्वपापैः स मुच्यते॥ ४॥

ब्रह्मप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतत्त्वं
सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम्।
यत् स्वप्नजागरसुषुप्तिमवैति नित्यं
तद् ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसङ्घः॥ १॥

प्रातर्भजामि मनसो वचसामगम्यं
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण।
यन्नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचं-
स्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम्॥ २॥

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं
पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम्।
यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तौ
रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रतिभासितं वै॥ ३॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं लोकत्रयविभूषणम्।
प्रातःकाले पठेद् यस्तु स गच्छेत् परमं पदम्॥ ४॥

श्रीरामप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि रघुनाथमुखारविन्दं
मन्दस्मितं मधुरभाषि विशालभालम्।
कर्णावलम्बिचलकुण्डलशोभिगण्डं
कर्णान्तदीर्घनयनं नयनाभिरामम्॥ १॥

प्रातर्भजामि रघुनाथकरारविन्दं
रक्षोगणाय भयदं वरदं निजेभ्यः।
यद् राजसंसदि विभज्य महेशचापं
सीताकरग्रहणमङ्गलमाप सद्यः॥ २॥

प्रातर्नमामि रघुनाथपदारविन्दं
पद्माङ्कुशादिशुभरेखि सुखावहं मे।
योगीन्द्रमानसमधुव्रतसेव्यमानं
शापापहं सपदि गौतमधर्मपत्न्याः॥ ३॥
प्रातर्वदामि वचसा रघुनाथनाम
वाग्दोषहारि सकलं शमलं निहन्ति।
यत्पार्वती स्वपतिना सह भोक्तुकामा
प्रीत्या सहस्रहरिनामसमं जजाप॥ ४॥
प्रातः श्रये श्रुतिनुतां रघुनाथमूर्तिं
नीलाम्बुदोत्पलसितेतररत्ननीलाम्।
आमुक्तमौक्तिकविशेषविभूषणाढ्यां
ध्येयां समस्तमुनिभिर्जनमुक्तिहेतुम्॥ ५॥
यः श्लोकपञ्चकमिदं प्रयतः पठेद्धि
नित्यं प्रभातसमये पुरुषः प्रबुद्धः।
श्रीरामकिङ्करजनेषु स एव मुख्यो
भूत्वा प्रयाति हरिलोकमनन्यलभ्यम्॥ ६॥

श्रीगणपति-पूजन-विधि

सुपारीपर मौली लपेटकर चावलोंपर स्थापित करके निम्नलिखित ध्यान करे। फिर आवाहन-मन्त्रसे अक्षत चढ़ा दे। मूर्ति हो तो पुष्प सामने रख दे। तदनन्तर ध्यान करे—

ध्यान

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥

आवाहन

आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव॥

प्रतिष्ठा

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

आसन

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

आसनं समर्पयामि॥

पाद्य

उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥

पाद्यं समर्पयामि॥

अर्घ्य

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्।
तापत्रयविनिर्मुक्त तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥

अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमन

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर॥

आचमनीयं जलं समर्पयामि॥

स्नान

गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे॥

स्नानं समर्पयामि॥

दुग्धस्नान

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

दुग्धस्नानं समर्पयामि। पुनर्जलस्नानं समर्पयामि॥

दधिस्नान

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दधिस्नानं समर्पयामि। पुनर्जलस्नानं समर्पयामि॥

घृतस्नान

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

घृतस्नानं समर्पयामि। पुनर्जलस्नानं समर्पयामि॥

मधुस्नान

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मधुस्नानं समर्पयामि। पुनर्जलस्नानं समर्पयामि॥

शर्करा-स्नान

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

शर्करास्नानं समर्पयामि। पुनर्जलस्नानं समर्पयामि॥

पञ्चामृतस्नान

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। पुनर्जलस्नानं समर्पयामि॥

शुद्धोदक-स्नान

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

शुद्धस्नानं समर्पयामि॥

वस्त्र

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥

उपवस्त्र

सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व विभावसो॥

उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥

यज्ञोपवीत

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि॥

मधुपर्क

कांस्ये कांस्येन पिहितो दधिमध्वाज्यसंयुतः।
मधुपर्को मयाऽऽनीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मधुपर्कं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि॥

गन्ध

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

गन्धं समर्पयामि।

रक्तचन्दन

रक्तचन्दनसम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम्।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम्॥

रक्तचन्दनं समर्पयामि॥

रोली

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनार्चितो देव प्रसीद परमेश्वर॥

कुङ्कुमं समर्पयामि॥

सिन्दूर

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सिन्दूरं समर्पयामि॥

अक्षत

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

अक्षतान् समर्पयामि॥

पुष्प

सेवन्तिकाबकुलचम्पकपाटलाब्जैः
पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः।
बिल्वप्रवालगजकेसरमालतीभि-
स्त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद॥

पुष्पं समर्पयामि॥

पुष्पमाला

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

पुष्पमालां समर्पयामि॥

बिल्वपत्र

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर॥

वृन्तहीनं बिल्वपत्रं समर्पयामि॥

दूर्वाङ्कुर

त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि।
सौभाग्यं संततिं देहि सर्वकार्यकरी भव॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि॥

शमीपत्र

शमि शमय मे पापं शमि लोहितकण्टके।
धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनि॥

शमीपत्रं समर्पयामि॥

आभूषण

अलङ्कारान् महादिव्यान् नानारत्नविनिर्मितान्।
गृहाण देवदेवेश प्रसीद परमेश्वर॥

आभूषणं समर्पयामि॥

सुगन्ध तैल

चम्पकाशोकबकुलमालतीयूथिकादिभिः।
वासितं स्निग्धताहेतोस्तैलं चारु प्रगृह्यताम्॥

सुगन्धतैलं समर्पयामि॥

धूप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

धूपमाघ्रापयामि॥

दीप

आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह॥

दीपं दर्शयामि, हस्तप्रक्षालनम्॥

नैवेद्य

शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम्।
उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

नैवेद्यं निवेदयामि॥

मध्ये पानीय

अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धि च पिबेच्छया।
त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि॥

मध्ये पानीयं समर्पयामि॥

ऋतुफल

नारिकेलफलं जम्बूफलं नारङ्गमुत्तमम्।
कूष्माण्डं पुरतो भक्त्या कल्पितं प्रतिगृह्यताम्॥

ऋतुफलं स०॥

आचमन

गङ्गाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्।
आचम्यतां सुरश्रेष्ठ शुद्धमाचमनीयकम्॥

आचमनीयं स०॥

अखण्ड ऋतुफल

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

अखण्डमृतुफलं स०॥

ताम्बूल-पूगीफल

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ताम्बूलं सपूगीफलं स०॥

दक्षिणा

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि॥

आरती

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥

आर्तिक्यं समर्पयामि॥

आरती

आरति गजवदन विनायककी।
सुर-मुनि-पूजित गणनायककी॥ टेक॥
एकदन्त शशिभाल गजानन,
विघ्नविनाशक शुभगुण-कानन,
शिवसुत वन्द्यमान-चतुरानन।
दुःखविनाशक सुखदायककी॥ सुर०॥
ऋद्धि-सिद्धि-स्वामी समर्थ अति,
विमल बुद्धि दाता सुविमल-मति,
अघ-वन-दहन, अमल अविगत-गति,
विद्या-विनय-विभव-दायककी ॥ सुर०॥
पिङ्गल-नयन, विशाल शुण्ड धर,
धूम्रवर्ण शुचि वज्राङ्कुशकर,
लम्बोदर बाधा-विपत्ति-हर,
सुरवन्दित सब बिधि लायककी॥ सुर०॥

पुष्पाञ्जलि

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर॥

॥ पु०स०॥

नमस्कार

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

गजाननं भूतगणाधिसेवितं
कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥
एकदन्तं महाकायं लम्बोदरगजाननम्।
विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्॥

प्रार्थना

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
अनया पूजया गणपतिः प्रीयतां न मम।

श्रीगणपति-मन्त्र

गं गणपतये नमः।

श्रीशिव-पूजन-विधि

पवित्र होकर, आचमन-प्राणायाम करके, संकल्प-वाक्यके अन्तमें '**श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं गणपत्यादिसकल-देवतापूजनपूर्वकं श्रीभवानीशङ्करपूजनं करिष्ये**' कहकर संकल्प छोड़े। फिर नीचे लिखे आवाहन-मन्त्रोंसे मूर्तियोंके समीप पुष्प छोड़े। मूर्ति न हो तो आवाहन करके पूजन करे।

गणेश-पूजन

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे॥

पूजन करके यह प्रार्थना करे—

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

पार्वती-पूजन

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

पूजन करके यह प्रार्थना करे—

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

नन्दीश्वर-पूजन

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः।
पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

पूजन करके यह प्रार्थना करे—

प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निम्पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा॥

वीरभद्र-पूजन

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

पूजन करके यह प्रार्थना करे—

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तया।

स्वामिकार्तिक-पूजन

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

पूजन करके यह प्रार्थना करे—

यत्र बाणाः सं पतन्ति कुमारा विशिखा इव। तत्र इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु॥

कुबेर-पूजन

कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद् यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति॥

पूजन करके यह प्रार्थना करे—

वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि॥

कीर्तिमुख-पूजन

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा विभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवापतये स्वाहा॥

पूजन करके यह प्रार्थना करे—

ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

जलहरीमें सर्पका आकार हो तो सर्पका पूजन

करके पश्चात् शिव-पूजन करे॥

ध्यान

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

पाद्य

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥

॥ पाद्यं समर्पयामि॥

अर्घ्य

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा॥

॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमन

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृताम्॥

॥ आचमनीयं समर्पयामि॥

स्नान

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।

दुग्धस्नान

गोक्षीरधामन् देवेश गोक्षीरेण मया कृतम्।
स्नपनं देवदेवेश गृहाण शिव शङ्कर॥

॥ दुग्धस्नानं समर्पयामि, पुनः जलस्नानं स०॥

दधिस्नान

दध्ना चैव मया देव स्नपनं क्रियते तव।
गृहाण भक्त्या दत्तं मे सुप्रसन्नो भवाव्यय॥

॥ दधिस्नानं समर्पयामि, पुनः जलस्नानं स०॥

घृतस्नान

सर्पिषा देवदेवेश स्नपनं क्रियते मया।
उमाकान्त गृहाणेदं श्रद्धया सुरसत्तम॥

॥ घृतस्नानं समर्पयामि, पुनः जलस्नानं स०॥

मधुस्नान

इदं मधु मया दत्तं तव तुष्ट्यर्थमेव च।
गृहाण शम्भो त्वं भक्त्या मम शान्तिप्रदो भव॥

॥ मधुस्नानं समर्पयामि, पुनः जलस्नानं स०॥

शर्करास्नान

सितया देवदेवेश स्नपनं क्रियते मया।
गृहाण शम्भो मे भक्त्या सुप्रसन्नो भव प्रभो॥

॥ शर्करास्नानं समर्पयामि, पुनः जलस्नानं स०॥

पञ्चामृतस्नान

पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधिसमन्वितम्।
घृतं मधु शर्करया स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

॥ पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि॥

शुद्धोदकस्नान

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

अभिषेक—(जलधारा छोड़े)

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ १॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ २॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरुमा हिꣳसीः पुरुषं जगत्॥ ३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमना असत्॥ ४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳ हेड ईमहे॥ ६॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरन्नमः॥ ८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ ९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ३ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥ १०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मिन्निधेहि तम्॥ १२॥ अवतत्य धनुष्ट्वꣳसहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्यशल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥ १३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।

उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ १४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ १५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ १६॥ (अभिषेकं समर्पयामि)

वस्त्र-उपवस्त्र

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥

(वस्त्रमुपवस्त्रं स०, आचमनीयं स०)

आभरण

ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ ३ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥

(आभरणं समर्पयामि)

यज्ञोपवीत

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ (य०स०, आचमनीयं स०)

गन्ध

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः। शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च॥ (गन्धं स०)

अक्षत

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

(अक्षतान् स०)

पुष्प

ॐ नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च॥

(पुष्पाणि स०)

पुष्पमाला

नानापङ्कजपुष्पैश्च ग्रथितां पल्लवैरपि।
बिल्वपत्रयुतां मालां गृहाण सुमनोहराम्॥

(पुष्पमालां स०)

बिल्वपत्र

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥ १॥

दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
घोरपातकसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥ २॥
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥ ३॥
अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूजये शिवशङ्करम्।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥ ४॥
गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर।
सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रिय॥ ५॥

(बिल्वपत्रं समर्पयामि)

तुलसीमञ्जरी

ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः। मा द्यावापृथिवीअभि शोचीर्मान्तरिक्षम्मा वनस्पतीन्॥

(तु० स०)

दूर्वा

ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

(दूर्वाङ्कुरान् स०)

शमीपत्र

अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्॥

(शमीपत्राणि स०)

आभूषण

वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥

(आभूषणं स०)

सुगन्ध-तैल—(अतर-फुलेल)

अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान्पुमाꣳसं परिपातु विश्वतः॥

(सु०स०)

धूप

ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च॥ (धूपमाघ्रापयामि)

दीप

ॐ नम आशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च

द्वीप्याय च॥ (दीपं दर्शयामि, हस्तप्रक्षालनम्)

नवैद्य

ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चाप्रगल्भ्याय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च॥ (नैवेद्यं निवेदयामि)

मध्ये पानीय

ॐ नमः सोम्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च॥ (म० पा० स०)

ऋतुफल

फलानि यानि रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः।
तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

(ऋतुफलानि स०)

आचमन

त्रिपुरान्तक दीनार्तिनाश श्रीकण्ठ शाश्वत।
गृहाणाचमनीयं च पवित्रोदककल्पितम्॥

(आ०स०)

अखण्ड ऋतुफल

कूष्माण्डं मातुलिङ्गं च नारिकेलफलानि च।
रम्याणि पार्वतीकान्त सोमेश प्रतिगृह्यताम्॥

(अ०ऋ०स०)

ताम्बूल, पूगीफल

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमशद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ (तां० पू० स०)

दक्षिणा

न्यूनातिरिक्तपूजायां सम्पूर्णफलहेतवे।
दक्षिणां काञ्चनीं देव स्थापयामि तवाग्रतः॥

(द्रव्यदक्षिणां स०)

आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

हर हर हर महादेव!

सत्य, सनातन, सुन्दर, शिव! सबके स्वामी।
अविकारी, अविनाशी, अज, अन्तर्यामी॥ १ हर०॥
आदि, अनन्त, अनामय, अकल, कलाधारी।
अमल, अरूप, अगोचर, अविचल, अघहारी॥ २ हर०॥
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, तुम त्रिमूर्तिधारी।
कर्ता, धर्ता, भर्ता, तुम ही संहारी॥ ३ हर०॥
रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय औढरदानी।
साक्षी, परम अकर्ता, कर्ता अभिमानी॥ ४ हर०॥
मणिमय-भवन-निवासी, अति भोगी रागी।
नित्य श्मशान-विहारी, योगी वैरागी॥ ५ हर०॥
छाल-कपाल, गरल-गल, मुण्डमाल, व्याली।
चिताभस्मतन, त्रिनयन, अयन महाकाली॥ ६ हर०॥
प्रेत-पिशाच-सुसेवित, पीतजटाधारी।
विवसन विकटरूपधर रुद्र प्रलयकारी॥ ७ हर०॥
शुभ्र, सौम्य, सुरसरिधर, शशिधर सुखकारी।
अति कमनीय, शान्तिकर, शिव मुनि-मन-हारी॥ ८ हर०॥
निर्गुण, सगुण, निरञ्जन, जगमय, नित्य प्रभो।
कालरूप केवल हर! कालातीत विभो॥ ९ हर०॥
सत्, चित्, आनँद, रसमय करुणामय धाता।
प्रेम-सुधा-निधि, प्रियतम, अखिल विश्व त्राता॥ १० हर०॥
हम अतिदीन, दयामय! चरण-शरण दीजै।
सब विधि निर्मल मति कर अपना कर लीजै॥ ११ हर०॥

स्तुति (पुष्पाञ्जलि)

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥ १॥
वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं शिवं शङ्करम्॥ २॥
शान्तं पद्मासनस्थं शशधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं साङ्कुशं वामभागे
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥ ३॥
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहरपिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि॥ ४॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥ ५ ॥
नमः शिवाय शान्ताय कारणत्रयहेतवे।
निवेदयामि चात्मानं त्वं गतिः परमेश्वर॥ ६ ॥
नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्ते दिव्यचक्षुषे।
नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः॥ ७ ॥
नमस्त्रिशूलहस्ताय दण्डपाशासिपाणये।
नमस्त्रैलोक्यनाथाय भूतानां पतये नमः॥ ८ ॥
नमस्ये त्वां महादेव लोकानां गुरुमीश्वरम्।
पुंसामपूर्णकामानां कामपूरामराङ्घ्रिपम्॥ ९ ॥
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशस्त्वं महादेव तादृशाय नमो नमः॥ १०॥

तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रसे गाल बजाते हुए बम्-बम् बोलकर जलहरीका जल लगाये।

निरावलम्बस्य ममावलम्बं विपाटिताशेषविपत्कदम्बम्।
मदीयपापाचलपातशम्बं प्रवर्ततां वाचि सदैव बम् बम्॥

पञ्चाङ्गप्रणामः

मनमें स्मरण, नेत्रोंसे दर्शन, दोनों हाथ जोड़कर और वाणीसे नामोच्चारण करते हुए, मस्तक झुकाकर प्रणाम करे।

प्रदक्षिणा (अर्धप्रदक्षिणा करे)

यानि कानि च पापानि ज्ञानाज्ञानकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे॥

क्षमा-प्रार्थना

ज्ञानवतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिव।
मम कृत्यमिदं सर्वमेतदेव क्षमस्व मे॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष मां परमेश्वर॥
अनेन पूजनेन श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयताम्॥*

श्रीशिवमन्त्र—'ॐ नमः शिवाय'

---

* शिवमन्त्र-जप रुद्राक्षकी मालासे करना चाहिये। शिवजीकी पूजामें मालती, चमेली, कुन्द, जुही, मौलसिरी, रक्तजवा (लाल अड़हुल), मल्लिका (मोतिया), केतकी (केवड़ा) के पुष्प नहीं चढ़ाने चाहिये। बेलपत्र धोकर उसकी वज्र (मण्डल) तोड़कर उलटा चढ़ाना चाहिये। शिवजीके स्थलमें झाल तथा करताल नहीं बजानी चाहिये। शिवजीकी पूजा त्रिपुण्ड्र तथा रुद्राक्षकी माला धारण करके करनी चाहिये।

श्रीशालग्राम या विष्णुभगवान्‌की पूजन-विधि

शालग्राम और प्रतिष्ठा की हुई मूर्तियोंमें आवाहन नहीं करे। केवल पुष्प सामने रख दे।

ध्यान

उद्यत्कोटिदिवाकराभमनिशं शङ्खं गदां पङ्कजं
चक्रं बिभ्रतमिन्दिरावसुमतीसंशोभिपार्श्वद्वयम्।
कोटीराङ्गदहारकुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभो-
द्दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छ्रीवत्सचिह्नं भजे॥
ध्यायेत् सत्यं गुणातीतं गुणत्रयसमन्वितम्।
लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभाभरणं हरिम्॥
इन्दीवरदलश्यामं शङ्खचक्रगदाधरम्।
नारायणं चतुर्बाहुं श्रीवत्सपदभूषितम्॥

आवाहन

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिꣳ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

आसन

ॐ पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

(आसनं समर्पयामि)

पाद्य

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

(पाद्यं समर्पयामि)

अर्घ्य

ॐ त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥

(अर्घ्यं समर्पयामि)

आचमन

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

(आचमनीयं समर्पयामि)

स्नान

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥

(स्नानीयं जलं समर्पयामि)

दुग्ध

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

(दुग्धस्नानं समर्पयामि, पुनर्जलस्नानं समर्पयामि)

दधि

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूꣳषि तारिषत्॥

(दधिस्नानं समर्पयामि, पुनर्जलस्नानं समर्पयामि)

घृतस्नान

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

(घृतस्नानं समर्पयामि, पुनर्जलस्नानं समर्पयामि)

मधु-स्नान

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमे वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

(मधुस्नानं समर्पयामि, पुनर्जलस्नानं समर्पयामि)

शर्करा

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्ये सन्तꣳसमाहितम्। अपाꣳरसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

(शर्करास्नानं समर्पयामि, पुनर्जल० स०)

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

(पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि)

शुद्धोदक स्नान

कावेरी नर्मदा वेणी तुङ्गभद्रा सरस्वती।
गङ्गा च यमुना चैव ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्॥
गृहाण त्वं रमाकान्त स्नानाय श्रद्धया जलम्।

(शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि)

वस्त्र

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

(वस्त्रोपवस्त्रे समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि)

यज्ञोपवीत

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥

(यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनीयं स०)

मधुपर्क

दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्म समन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदो भव शोभन॥

(मधुपर्कं समर्पयामि, पुनराचमनीयं स०)

गन्ध

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥

(गन्धं समर्पयामि)

भगवान् विष्णुपर अक्षत, श्वेत तिल तथा चावल न चढ़ाये।

पुष्प

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते॥
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

(पुष्पं समर्पयामि)

पुष्पमाला

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

(पुष्पमालां समर्पयामि)

तुलसीपत्र

ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा॥ ३॥
तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्॥

(तुलसीपत्रं समर्पयामि)

बिल्वपत्र

तुलसीबिल्वनिम्बैश्च जम्बीरैरामलैः शुभैः।
पत्रबिल्वमिति ख्यातं प्रसीद परमेश्वर॥

(बिल्वपत्राणि समर्पयामि)

दूर्वा

विष्णवादिसर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा यतः।
क्षीरसागरसम्भूते वंशवृद्धिकरी भव॥

(दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि)

शमीपत्र

शमी शमयते पापं शमी शत्रुविनाशिनी।
धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी॥

(शमीपत्रं समर्पयामि)

आभूषण

ॐ रत्नकङ्कणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भोः॥

(आभूषणं समर्पयामि)

अबीर-गुलाल

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥

(अबीरं समर्पयामि)

सुगन्ध-तैल

ॐ तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर॥

धूप

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रो अजायत॥ १॥

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥ २॥ (धूपमाघ्रापयामि)

दीप

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥

(दीपं दर्शयामि, हस्तप्रक्षालनम्)

नैवेद्य। (तुलसी छोड़कर निम्नलिखित मुद्राएँ दिखावे।)

प्राणाय स्वाहा—कनिष्ठा, अनामिका और अँगूठा मिलाये॥ १॥
अपानाय स्वाहा—अनामिका, मध्यमा और अँगूठा मिलाये॥ २॥
व्यानाय स्वाहा—मध्यमा, तर्जनी और अँगूठा मिलाये॥ ३॥
उदानाय स्वाहा—तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अँगूठा मिलाये॥
समानाय स्वाहा—तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा तथा अँगूठा मिलाये॥ ५॥

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ ३ अकल्पयन्॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे॥
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदत्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥
प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन् हतस्थुर्भुवनानि विश्वा॥

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये॥
रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे॥
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि।
रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥

ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्तात्
सिञ्चद्वालव्यजननिकरैर्वीज्यमानः सखीभिः।
नर्मक्रीडाप्रहसनपरान् पङ्क्तिभोक्तॄन् हसन्वै
भुङ्क्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान् देवदेवः॥
शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपरूपं
लेह्यं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं क्षीरिकाद्यं सुखाद्यम्।
आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीच-
स्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं जुषस्व॥

नैवेद्यं निवेदयामि।

(अन्तःपट देकर भोग लगाना चाहिये)

मध्ये पानीय

एलोशीरलवङ्गादिकर्पूरपरिवासितम्।
प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर॥

मध्ये पानीयं समर्पयामि

ऋतुफल

बीजपूराम्रपनसखर्जूरीकदलीफलम्।
नारिकेलफलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर॥

ऋतुफलं समर्पयामि

आचमन

कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतम्।
आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः॥

आचमनीयं समर्पयामि।

अखण्ड ऋतुफल

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः॥

अखण्डमृतुफलं समर्पयामि

ताम्बूल-पूगीफल

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥

ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं दक्षिणा च तवाग्रतः।
स्थापिता तेन मे प्रीतः पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

दक्षिणां समर्पयामि।

आरती

प्रथम चरणोंकी चार, नाभिकी दो, मुखकी एक या तीन बार और समस्त अङ्गोंकी सात बार आरती करे। पश्चात् शङ्खका जल भक्तोंके ऊपर छिड़के।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरात्रिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव॥

(आरात्रिकं समर्पयामि)

जय लक्ष्मी-विष्णो।
जय लक्ष्मी-नारायण, जय लक्ष्मी-विष्णो।
जय माधव, जय श्रीपति, जय जय जय जिष्णो॥ १॥ जय०॥
जय चम्पा-सम-वर्णे जय नीरदकान्ते।
जय मन्दस्मितशोभे जय अद्भुत-शान्ते॥ २॥ जय०॥
कमलवराभयहस्ते शङ्खादिकधारिन्।
जय कमलालयवासिनि गरुडासनचारिन्॥ ३॥ जय०॥
सच्चिन्मयकरचरणे सच्चिन्मयमूर्ते।
दिव्यानन्द-विलासिनि जय सुखमयमूर्ते॥ ४॥ जय०॥
तुम त्रिभुवनकी माता, तुम सबके त्राता।
तुम लोक-त्रय-जननी, तुम सबके धाता॥ ५॥ जय०॥
तुम धन-जन-सुख-संतति जय देनेवाली।
परमानन्द-विधाता तुम हो वनमाली॥ ६॥ जय०॥

तुम हो सुमति घरोंमें, तुम सबके स्वामी।
चेतन और अचेतनके अन्तर्यामी॥ ७॥ जय०॥
शरणागत हूँ, मुझपर कृपा करो, माता!
जय लक्ष्मी-नारायण नव-मङ्गल-दाता॥ ८॥ जय०॥

स्तुति

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥ १॥
परं परस्मात् प्रकृतेरनादि-
मेकं निविष्टं बहुधा गुहायाम्।
सर्वालयं सर्वचराचरस्थं
नमामि विष्णुं जगदेकनाथम्॥ २॥
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥ ३॥
कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥ ४॥
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे॥ ५॥
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥ ६॥
श्रियः पतिर्यज्ञपतिः प्रजापति-
र्धियां पतिर्लोकपतिर्धरापतिः।
पतिर्गतिश्चान्धकवृष्णिसात्वतां
प्रसीदतां मे भगवान् सतां पतिः॥ ७॥
मत्स्याश्वकच्छपनृसिंहवराहहंस-
राजन्यविप्रविबुधेषु कृतावतारः।
त्वं पासि नस्त्रिभुवनं च यथाधुनेश
भारं भुवो हर यदूत्तम वन्दनं ते॥ ८॥

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं
सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं
सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः॥ ९॥
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥ १०॥
नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥ ११॥
आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति॥ १२॥
मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥ १३॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदव॥ १४॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
पाहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव॥ १५॥
कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च।
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः॥ १६॥
ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिवविरञ्चिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥ १७॥
त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगारदरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥ १८॥
अपराधसहस्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्कुरु॥ १९॥
एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो
दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म
कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय॥ २०॥

पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे॥ स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्य-माधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो।

मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे॥

आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासदः॥ पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्।

संबाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा।
बुद्ध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यत् यत् सकलं परस्मै।
नारायणायेति समर्पयेत्तत्॥

प्रदक्षिणा

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाः सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

क्षमा-प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥
सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः॥

विसर्जन

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यजमानहितार्थाय पुनरागमनाय च॥

चरणामृत-ग्रहण-विधि

बायें हाथपर दोहरा वस्त्र रखकर उसपर दाहिना हाथ रखे; फिर चरणामृत लेकर पान करे। चरणामृत जमीनपर नहीं गिरने दे।

तुलसी-ग्रहण-मन्त्र

पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम्।
भक्षये देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम्॥

चरणामृत-ग्रहण-मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाबाहो भक्तानामार्तिनाशनम्।
सर्वपापप्रशमनं पादोदकं प्रयच्छ मे॥

तदनन्तर निम्नलिखित मन्त्र बोलकर चरणामृत पान करे—

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णुपादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्॥

श्रीविष्णुमन्त्र

(१) ॐ श्रीविष्णवे नमः।
(२) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।
(३) ॐ नमो नारायणाय।

श्रीसूर्य-पूजन-विधि

ध्यान

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं
भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतः कराब्जै-
र्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम्॥

आवाहन

(हाथमें अक्षत लेकर)

ॐ देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावद् देव इहावह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसूर्यनारायणाय नमः इहागच्छ इह तिष्ठ।

१. पाद्य

(अर्घेमें जल लेकर)

ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात्परमानन्दसम्भवः।
तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसूर्यनारा० पाद्यं समर्पयामि।

२. अर्घ्य

ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्।
तापत्रयविमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसूर्यं० अर्घ्यं समर्पयामि।

३. आचमन

ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः।
शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम्॥

(ॐ भू० आचमनीयं०)

४. स्नान

ॐ गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे॥

(ॐ भू० स्नानं समर्पयामि)

५. वस्त्र

ॐ मायाचित्रपटच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे।
निरावरणविज्ञानवासस्ते कल्पयाम्यहम्॥

(ॐ भू० रक्तवस्त्रं समर्प०)

उपवस्त्र-यज्ञोपवीत

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर॥

(ॐ भू० यज्ञोपवीतं०)

६. आभूषण

स्वभावसुन्दराङ्गाय सत्यासत्याश्रयाय ते।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित॥

(ॐ भू० भूषणानि समर्पया०)

७. गन्ध

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

(ॐ भू० चन्दनं समर्प०)

(यहाँ अङ्गुष्ठ तथा कनिष्ठिकाके मूलको मिलाकर गन्धमुद्रा दिखानी चाहिये।)

अक्षत

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

(ॐ भू० अक्षता० सम०)

(अक्षत सभी अङ्गुलियोंको मिलाकर देना चाहिये।)

८. पुष्प एवं पुष्पमाला

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

(ॐ भू० पुष्पमाल्यं सम०)

(तर्जनी-अङ्गुष्ठ मिलाकर पुष्पमुद्रा दिखानी चाहिये।)

९. धूप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

(ॐ भू० धूपमाघ्रापयामि)

(तर्जनीमूल तथा अङ्गुष्ठके संयोगसे धूपमुद्रा बनती है। नाभिके सामने धूप दिखाकर उसे भगवान् सूर्यके बायीं ओर रख देना चाहिये।)

१०. दीप

सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

(ॐ भू० दीपं दर्शयामि)

११. नैवेद्य

सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम्।
निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत्॥

(ॐ भू० नैवेद्यं निवेदयामि)

(अङ्गुष्ठ एवं अनामिकामूलके संयोगसे ग्रासमुद्रा दिखानी चाहिये।)

(पीनेका जल)

नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम्।
परमानन्दपूर्णं त्वं गृहाण जलमुत्तमम्॥

(ॐ भू० पानीयं सम०)

१२. आचमन

उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः।
शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम्॥

(ॐ भू० नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं सम०)

१३. ताम्बूल

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलाचूर्णादिकैर्युक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

(ॐ भू० ताम्बूलं सम०)

फल

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥
(ॐ भू० फलं सम०)

१४. आरात्रिक

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरात्रिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥
(ॐ भू० आरात्रिकं सम०)

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणे पदे पदे॥
(भगवान् सूर्यकी सात बार प्रदक्षिणा करनी चाहिये।)

पुष्पाञ्जलि

नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥
(ॐ भू० पुष्पाञ्जलिं समप०)

१५. आदित्यहृदयादि स्तोत्रोंसे स्तुति करे। तत्पश्चात्

आरती

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय कश्यप-नन्दन।
त्रिभुवन-तिमिर-निकन्दन भक्त-हृदय-चन्दन॥ टेक ॥
सप्त-अश्व रथ राजित एक चक्रधारी।
दुखहारी, सुखकारी, मानस-मल-हारी॥ जय०॥
सुर-मुनि-भूसुर-वन्दित, विमल विभवशाली।
अघ-दल-दलन दिवाकर दिव्य-किरण-माली॥ जय०॥
सकल सुकर्म प्रसविता सविता शुभकारी।
विश्व-विलोचन मोचन भव-बन्धन भारी॥ जय०॥
कमल-समूह-विकाशक, नाशक त्रय तापा।
सेवत सहज हरत अति मनसिज संतापा॥ जय०॥
नेत्र-व्याधि-हर सुरवर भू-पीड़ा-हारी।
वृष्टि-विमोचन संतत परहित-व्रत-धारी॥ जय०॥
सूर्यदेव करुणाकर! अब करुणा कीजै।
हर अज्ञान-मोह सब तत्त्वज्ञान दीजै॥ जय०॥

प्रार्थना

१६. नमस्कार

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

श्रीसूर्यमन्त्र

ॐ श्रीसूर्याय: नम:।

(शारदातिलक तथा मन्त्रमहार्णवमें '**ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्यः श्रीम्**')—इसे भी सूर्यमन्त्र कहा गया है।

सूर्यके पूजनमें तगर, बिल्वपत्र और शङ्खका उपयोग नहीं करना चाहिये।

श्रीदुर्गा-पूजन-विधि

शुद्ध मिट्टीमें जौ या गेहूँ बोकर उसपर कलश स्थापित करे तथा आचमन-प्राणायाम करके संकल्पवाक्यके अन्तमें—

'ममेह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनपुत्रपौत्राद्यविच्छिन्नसंततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मी-कीर्तिलाभशत्रुपराजयप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं कलशस्थापनं दुर्गापूजनं तत्र निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचनं पुण्याहवाचनं गणपत्यादिपूजनं च करिष्ये।'

—कहकर संकल्प छोड़े तथा नीचे लिखे मन्त्रसे भैरवकी प्रार्थना करे—

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्याविघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।

देवीध्यान

ॐ विद्युद्दामसप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

आवाहन

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये॥

आसन

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥ (आ० स०)

पाद्य

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाऽऽहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (पा०स०)

अर्घ्य

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा॥ (अ०स०)

आचमन

आचम्यतां त्वया भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥ (आ० स०)

स्नान

जाह्नवीतोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम्।
स्नापयामि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादिफलप्रदाम्॥ (स्नानं सं०)

पञ्चामृतस्नान

पयो दधि घृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम्।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे॥ (प० स०)

शुद्धोदकस्नान

ॐ परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमाशु ते॥ (शु०स्नानं सं०)

वस्त्र

वस्त्रं च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥ (व० स०)

उपवस्त्र

ॐ यामाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा।
तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम्॥
(उपवस्त्रं स०)

मधुपर्क

दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने॥ (म० स०)

गन्ध

परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि॥ (ग० स०)

कुङ्कुम

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि॥ (कु० स०)

आभूषण

स्वभावसुन्दराङ्गायै नानाशक्त्याश्रिते शिवे।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते॥ (आ०स०)

सिन्दूर

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसंनिभम्।
पूजितासि मया देवि प्रसीद परमेश्वरि॥ (सि० स०)

कज्जल

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारिके।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि॥ (क०स०)

सौभाग्यसूत्र

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुते।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा॥
(सौ०सू०स०)

परिमलद्रव्य

चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमं रोचनं तथा।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपये॥
(परि० द्रव्याणि स०)

अक्षत

रञ्जिताः कुङ्कुमौघेन अक्षताश्चातिशोभनाः।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्ना भव शोभने॥ (अ०स०)

पुष्प

मन्दारपारिजातादिपाटलीकेतकानि च।
जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने॥ (पु०स०)

पुष्पमाला

सुरभिपुष्पनिचयैर्ग्रथितां शुभमालिकाम्।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि॥ (पु०मा०स०)

बिल्वपत्र

अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि॥
(बिल्वपत्रं स०)

धूप

दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनागुरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम्॥
(धूपमाघ्रापयामि)

दीप

घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम्।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा॥
(दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्)

नैवेद्य

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

(नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि)

ऋतुफल

द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाम्रकपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

(ऋ०स०)

आचमन

कामारिवल्लभे देवि कुर्वाचमनमम्बिके।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव चण्डिके॥ (आ०स०)

अखण्ड ऋतुफल

नारिकेलं च नारङ्गं कलिङ्गं मञ्जिरं तथा।
उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम्॥

(अ०ऋ०स०)

ताम्बूल-पूगीफल

एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः सुष्टुवासिताम्।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि॥

(ता० पू० स०)

दक्षिणा

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

(द्र० द० स)

नीराजन

नीराजनं सुमङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम्।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेवि नमोऽस्तु ते॥

दुर्गाजीका आरती

जगजननी जय! जय!! माँ! जगजननी जय! जय!!
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय जय॥ टेक॥
तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा॥ १ ॥ जग०
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी॥ २ ॥ जग०
अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी।
कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर सँहारकारी॥ ३ ॥ जग०
तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी, जाया॥ ४ ॥ जग०
राम, कृष्ण तू, सीता, व्रजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा॥ ५ ॥ जग०
दशविद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव-रूपधरा॥ ६ ॥ जग०
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
तु ही श्मशानविहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू॥ ७ ॥ जग०
सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाधारा।
विवसन विकट-स्वरूपा, प्रलयमयी धारा॥ ८ ॥ जग०
तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरल-मना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना॥ ९ ॥ जग०
मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे॥ १०॥ जग०
शक्ति-शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥ ११॥ जग०
हम अति दीन दुखी माँ! विपति-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥ १२॥ जग०
निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै॥ १३॥ जग०

पुष्पाञ्जलि

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता॥ १॥

प्रदक्षिणा

नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्तवत्सले॥

दण्डवत्-प्रणाम

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृतः॥

क्षमा-प्रार्थना

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥
दुर्गां शिवां शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम्।
सर्वलोकप्रणेत्रीं च प्रणमामि सदा शिवाम्॥ २॥
मङ्गलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम्।
विश्वेश्वरीं विश्वमातां चण्डिकां प्रणमाम्यहम्॥ ३॥
सर्वदेवमयीं देवीं सर्वरोगभयापहाम्।
ब्रह्मेशविष्णुनमितां प्रणमामि सदा उमाम्॥ ४॥
विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिव्यस्थाननिवासिनीम्।
योगिनीं योगमायां च चण्डिकां प्रणमाम्यहम्॥ ५॥
ईशानमातरं देवीमीश्वरीमीश्वरप्रियाम्।
प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां संसारार्णवतारिणीम्॥ ६॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ ७॥
जयन्ती मङ्गला काली भद्राकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥ ८॥

विसर्जन

इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम्।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्थानमनुत्तमम्॥

श्रीदुर्गा-पूजनमें दूर्वाका प्रयोग न करे*

श्रीदुर्गा-मन्त्र

(१) ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।
(२) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

गीता गङ्गा च गायत्री गोविन्देति हृदि स्थिते।
चतुर्गकारसंयुक्ते पुनर्जन्म न विद्यते॥
गङ्गा गीता च सावित्री सीता सत्या पतिव्रता।
ब्रह्मावलिब्रह्मविद्या त्रिसन्ध्या मुक्तिगेहिनी॥
अर्द्धमात्रा चिदानन्दा भवघ्नी भ्रान्तिनाशिनी।
वेदत्रयी परानन्दा तत्त्वार्थज्ञानमञ्जरी॥
इत्येतानि जपेन्नित्यं नरो निश्चलमानसः।
ज्ञानसिद्धिं लभेन्नित्यं तथान्ते परमं पदम्॥

गीता, गङ्गा, गायत्री तथा गोविन्द इन चार गकारसंयुक्त देवताओंके हृदयमें रहनेपर पुनर्जन्म नहीं होता। गङ्गा, गीता, सावित्री, सीता, सत्यभामा, पतिव्रता स्त्री ब्रह्मवल्ली (उपनिषद्) ब्रह्मविद्या, मुक्तिकी निवासभूता त्रिकाल-संध्या, अर्द्धमात्रा, चिदानन्द-स्वरूपमयी भ्रान्ति तथा संसृतिको मिटानेवाली अर्धमात्रा (प्रणव) तथा तत्त्व एवं अर्थके ज्ञानकी उत्पत्तिस्थान परमानन्ददायिनी वेद सभी (ऋक्, यजुः, साम) इनको जो मनुष्य निश्चल मनसे सदा जपता है वह सदा ज्ञान-सिद्धिको प्राप्त करता है तथा अन्तमें उसे परमपद (मोक्ष)-की प्राप्ति होती है।

---

* शिरीषोन्मत्तगिरिजामल्लिकाशाल्मलीभवैः। अर्वजैः कर्णिकारैश्च विष्णुर्नार्च्यस्तथाक्षतैः॥
जपाकुन्दशिरीषैश्च यूथिकामालतीभवैः। केतकीभवपुष्पैश्च नैवार्च्यः शंकरस्तथा॥
गणेशं तुलसीपत्रैर्दुर्गां नैव तु दूर्वया। मुनिपुष्पैस्तथा सूर्यं लक्ष्मीकामी न चार्चयेत्॥
(पद्मपुराण उत्तर खं० ९४। २६—२८)

लक्ष्मीकी इच्छा रखनेवाले व्यक्तिको सिरस, धतूरा, मातुलुङ्गी, मालती, सेमल, मदार और कनेरके फूलोंसे तथा अक्षतोंके द्वारा श्रीविष्णुकी पूजा नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार पलास, कुन्द, सिरस, जुही, मालती और केवड़ेके फूलोंसे श्रीशंकरजीका, तुलसीसे गणेशजीका तथा दूबसे श्रीदुर्गाजीका एवं अगस्त्यके फूलोंसे सूर्यदेवकी पूजा नहीं करनी चाहिये।

भगवान् श्रीविष्णुका मनोहर ध्यान

वज्र, ध्वजा, अङ्कुश, सरसिजके मङ्गलमय चिह्नोंसे युक्त।
उभरे हुए अरुण शोभामय नख-शशि-किरणोंसे संयुक्त॥
चिन्तन-कर्त्ताओंके हृदयोंका जो हरते तम-अज्ञान।
श्रीहरिके उन चरण-सरोजोंका मनसे नित करिये ध्यान॥
जिनकी धोवनसे निकली अति पावन भागीरथी उदार।
शिव हो गये परम शिव जिसके जलको निज मस्तक धार॥
ध्याताओंके पाप-पर्वतोंपर निपपित जो वज्र समान।
श्रीहरिके उन चरण-सरोजोंका मनसे करिये चिर ध्यान॥
विधि-जननी श्रीलक्ष्मीजी जिनको अपनी गोदीपर धार।
जलज-लोचना देव-वन्दिता करतीं जिन्हें हृदयसे प्यार॥
कान्तिमान् निज कर-कमलोंसे लालित करतीं अति सुख मान॥
अज भव-भय-हर हरिके दोनों घुटने पिंडलीं शोभा-खान॥
जङ्घा बलनिधि, नीलवर्ण अलसीके कुसुम-सदृश सुन्दर।
परम सुशोभित होती हैं जो ज्ञान-धाम खगपति ऊपर॥
रुचिर नितम्ब-बिम्ब युग पावन पीताम्बरसे परिवेष्टित।
स्वर्णमयी काञ्चीकी लड़ियोंसे जो रहते आलिङ्गित॥
भुवन-कोश-गृह उदर-देशमें, नाभि-कूप सौन्दर्य-निधान।
ब्रह्माके आधार विश्वमय वारिजका उत्पत्तिस्थान॥
मरकत-मणि-समान दोनों स्तन वक्षःस्थलपर चमक रहे।
शुभ्र हारकी किरणावलिसे गौरवर्ण हो दमक रहे॥
पुरुषोत्तम हरिका मुनि-जन-मोहन विशाल अति उर उन्नत।
नयन-हृदयको सुखदायक लक्ष्मीका जहाँ निवास सतत॥
अखिल लोक-वन्दित श्रीहरिका कम्बुकण्ठ शोभा-आगार।
परम सुशोभित करता कौस्तुभ-मणिको भी अपनेमें धार॥
राजहंस-सम शङ्ख सुशोभित कर-पङ्कजमें दिव्य ललाम।
शत्रुवीर-रुधिराक्त गदा हरिकी प्रिय कौमोदकी सुनाम॥
वनमाला शोभित सुकण्ठमें मधुप कर रहे मधु गुंजार।
जीवोंके मलरहित तत्त्वसम कौस्तुभमणि अति शोभा-सार॥
भक्तानुग्रहरूपी श्रीविग्रहका मुख-सरोज मनहर।
सुघड़ नासिका, कानोंमें मकराकृति कुण्डल अति सुन्दर॥
स्वच्छ कपोलोंपर कुण्डल-किरणोंका पड़ता शुभ्र प्रकाश।
इससे मुख-सरोजकी सुन्दरताका होता और विकास॥
कुञ्चित केश-राशिसे मण्डित मुख सब दिक् मधुमय करता।
निज छविद्वारा मधुकर-सेवित कमल-कोशकी छवि हरता॥
नयन-कमल चञ्चल विशाल हरते उन मीनद्वयका मान।
कमल-कोशपर सदा उछलते बनते जो शोभाकी खान॥
उन्नत भृकुटि सुशोभित हरिके मुख-सरोजपर मन-हरणी।
नेत्रोंकी चितवन अति मोहिनि सर्व सुखोंकी निर्झरणी॥
बढती रहती सदा प्राप्तकर प्रेम प्रसाद-भरी मुसकान।
विपुल कृपाकी वर्षा करती हरती त्रय तापोंके प्रान॥
श्रीहरिका मृदु हास मनोहर अति उदार शरणागत-पाल।
तीव्र शोकके अश्रु-उदधिको पूर्ण सुखा देता तत्काल॥
भूमण्डलकी रचनाकी मायासे प्रभुने मुनि-हित-हेतु।
कामदेवको मोहित करने, जो तोड़ा करते श्रुति-सेतु॥
तदनन्तर हरिके मन-मोहक हँसने का करिये शुभ ध्यान।
जिससे अधर ओष्ठकी विकसित होती अरुण छटा सुख खान॥
कुन्द-कली-से शुभ्र दाँत उससे कुछ अरुणिम हो जाते।
हरिकी इस शोभासे जगके संस्कार सब खो जाते॥

भगवान् श्रीशिवका मनोहर ध्यान

श्रीमहेशकी अङ्गकान्ति अति सुन्दर चम्पक-वर्ण-समान।
श्रीमुख एक, त्रिलोचन शोभित, मुखपर खेल रही मुसकान॥
रत्न-स्वर्ण-आभूषण भूषित शोभित गले मालती हार।
मुकुट मनोहर सद्रत्नोंका करता उज्ज्वलता-विस्तार॥
कम्बुकण्ठमें, वक्षःस्थलपर रहे आभरण विविध विराज।
जो अपनी उज्ज्वल आभासे बढ़ा रहे आनन्द-समाज॥
घुटनों तक लंबी अति सुन्दर शोभन शिवकी भुजा विशाल।
सुन्दर वलय मनोहर अङ्गद आदिकसे शोभित सब काल॥
अग्नितप्त, अतिशुद्ध, सूक्ष्म अति, अनुपम, अति विचित्र मनहर।
वस्त्र और उपवस्त्र सुशोभित शुचि, अमूल्य श्रीशिव-तनपर॥
चन्दन-अगुरु चारु कुङ्कुम-कस्तूरी-भूषित अङ्ग सकल।
दर्पण रत्न-सुमण्डित करमें, आँखें कजरारी उज्ज्वल॥
अपनी दिव्य प्रभासे सबका आच्छादित कर रहे प्रकाश।
अति सुमनोहर रूप, तरुण अति सुन्दर वयका किये विकास॥
सभी विभूषित अङ्गोंसे भूषित भव नित्य परम रमणीय।
सती-शिरोमणि गिरिवर-नन्दिनिके प्रियतम सुकान्त कमनीय॥
सदा शान्त अव्यग्र मुखाम्बुज कोटि शशधरोंसे सुन्दर।
सर्व अङ्ग सुन्दर तनुकी छवि कोटि मनोजोंसे बढ़कर॥
इस प्रकार एकान्त चित्तसे जो करते श्रीशिवका ध्यान।
उनको निज स्वरूप दे देते आशुतोष शंकर भगवान॥

भगवान् श्रीरामका मनोहर ध्यान

चित्र-विचित्र मण्डपोंसे है शोभित अवधपुरी रमणीय।
सर्वकाम सब सिद्धि प्रदायक उसमें कल्पवृक्ष कमनीय॥
उसके मूलभागमें शोभित परम मनोहर सिंहासन।
अति अमूल्य मरकत, सुवर्ण, नीलमसे निर्मित अति शोभन॥
दिव्य कान्तिसे करता वह अति गहरे अन्धकारका नाश।
होता रहता उससे दुर्लभ विमल ज्ञानका सहज प्रकाश॥
उसपर समासीन जन-मनके मोहन राघवेन्द्र भगवान।
श्रीविग्रहका रंग हरित-द्युति श्यामल दूर्वापत्र समान॥
उज्ज्वल आभासे आलोकित दिव्य सच्चिदानन्द-शरीर।
देवराज-पूजित हरता जो सत्वर जन-मनकी सब पीर॥
प्रभुके सुन्दर मुखमण्डलकी सुषमाका अतिशय विस्तार।
देता रहता जो राकाके पूर्ण सुधाधरको धिक्कार॥
उसकी अति कमनीय कान्ति भी लगती अति अपार फीकी।
राघवके वदनारविन्दकी अनुपम छबि विचित्र नीकी॥
लसित अष्टमीके शशाङ्ककी सुषमा तेजपुंज शुभ भाल।
काली घुँघराली अलकावलिकी सुन्दरता विशद विशाल॥
दिव्य मुकुटके मणि-रत्नोंकी रश्मि कर रही द्युति-विस्तार।
मकराकार कुण्डलोंका सौन्दर्य वर्णनातीत अपार॥
सुन्दर अरुण ओष्ठ विद्रुम-सम, दन्तपंक्ति शशि-किरण-समान।
अति शोभित जिह्वा ललाम अति जपापुष्प सम रंग सुभान॥
कम्बु-कण्ठ, जिसमें ऋक् आदिक वेद, शास्त्र करते नित वास।
श्रीविग्रहकी शोभा वर्धित करते ये सब अङ्ग-विलास॥
केहरि-कंधर-पुष्ट समुन्नत कंधे प्रभुके शोभाधाम।
भुज-विशाल, जिनपर अति शोभित कङ्कण-केयूरादि ललाम॥
हीरा-जटित मुद्रिकाकी शोभा देदीप्यमान सब काल।
घुटनोंतक लंबे अति सुन्दर राघवेन्द्रके बाहु विशाल॥
विस्तृत वक्षःस्थल लक्ष्मी-निवाससे अतिशय शोभासार।
श्रीवत्सादि चिह्नसे अङ्कित परम मनोहर नित्य उदार॥
उदर रुचिर, गम्भीर नाभि, अति सुन्दर सुषमामय कटिदेश।
मणिमय काञ्चीसे सुषमा श्रीअङ्गोंकी बढ़ रही विशेष॥
जङ्घा विमल, जानु अति सुन्दर, चरण-कमलकी कान्ति अपार।
अङ्कुश-यव-वज्रादि चिह्नसे अङ्कित तलवे शोभागार॥
योगिध्येय श्रीराघवके श्रीविग्रहका जो करते ध्यान।
प्रतिदिन शुभ उपचारोंसे जो पूजन करते हैं मतिमान॥
वे प्रिय जन प्रभुके होते, नित उन्हें पूजते सब सुर-भूप।
दुर्लभ भक्ति प्राप्त करते वे राघवेन्द्रकी परम अनूप॥

नन्द-नन्दन श्रीकृष्णचन्द्रका मनोहर ध्यान

सुमन-समूह, मनोहर सौरभ, मधु प्रवाह सुषमा-संयुक्त।
नव-पल्लव-विनम्र सुन्दर वृक्षावलिकी शोभासे युक्त॥
नव-प्रफुल्ल मञ्जरी, ललित वल्लरियोंसे आवृत द्युतिमान।
परम रम्य, शिव, सुन्दर श्रीवृन्दावनका यों करिये ध्यान॥
उसमें सदा कर रहे चञ्चल चञ्चरीक मधुमय गुंजार।
बढ़ी और भी विकसित सुमनोंका मधु पीनेसे झनकार॥
कोकिल-शुक-सारिका आदि खग नित्य कर रहे सुमधुर गान।
मत्त मयूर नृत्यरत, यों श्रीवृन्दावनका करिये ध्यान॥
यमुनाकी चञ्चल लहरोंके जलकणसे शीतल सुखधाम।
फुल्ल कमल-केसर-परागसे रञ्जित धूसर वायु ललाम॥
प्रेममयी व्रजसुन्दरियोंके चञ्चल करता चारु वसन।
नित्य निरन्तर करती रहती श्रीवृन्दावनका सेवन॥
उस अरण्यमें सर्वकामप्रद एक कल्पतरु शोभाधाम।
नव पल्लव प्रवालसम अरुणिम, पत्र नीलमणि सदृश ललाम॥
कलिका मुक्ता-प्रभा-पुञ्ज-सी पद्मराग-से फल सुमहान।
सब ऋतुएँ सेवा करतीं नित परम धन्य अपनेको मान॥
सुधा-बिन्दु-वर्षी उस पादपके नीचे वेदी सुन्दर।
स्वर्णमयी, उद्भासित जैसे दिनकर उदित मेरुगिरिपर॥
मणि-निर्मित जगमग अति प्राङ्गण, पुष्प-परागोंसे उज्ज्वल।
छहों ऊर्मियोंसे* विरहित वह वेदी अतिशय पुण्यस्थल॥
वेदीके मणिमय आँगनपर योगपीठ है एक महान।
अष्टदलोंके अरुण कमलका उसपर करिये सुन्दर ध्यान॥
उसके मध्य विराजित सस्मित नन्दतनय श्रीहरि सानन्द।
दीप्तिमान निज दिव्य प्रभासे सविता-सम जो करुणा-कन्द॥
श्रीविग्रहका वर्ण नील-श्यामल, उज्ज्वल आभासे युक्त।
कमल-नीलमणि-मेघ सदृश कोमल, चिक्कण, रससे संयुक्त॥
काले घुँघराले अति चिकने घने सुशोभित केश-कलाप।
मुकुट मयूर-पिच्छका मनहर मस्तकपर हरता हत्ताप॥

* क्षुधा-पिपासा, शोक-मोह और जरा-मृत्यु—ये छः ऊर्मियाँ हैं।

मधुकर-सेवित कल्पद्रुमके कुसुमोंका विचित्र शृङ्गार।
नव-कमलोंके कर्णफूल, जिनपर भौंरे करते गुंजार॥
चमक रहा सुविशाल भालपर गोरोचनका तिलक ललाम।
चित्त-वित्तहर धनुषाकार भृकुटियाँ अतिशय शोभाधाम॥
मुखमण्डलकी कान्ति शरद-शशि-सदृश पूर्ण अकलङ्क अतोल।
नेत्र कमल-दल-से विशाल निर्मल दर्पण-से गोल कपोल॥
दीप्त रत्नमय मकराकृति कुण्डलकी किरणोंसे सविशेष।
कीर-चञ्चु-सम सुन्दर नासा हरती जन-मनका सब क्लेश॥
अरुण अधर बन्धूक सुमन-से चन्द्र-कुन्दकी-सी मुसकान।
सम्मुख दिशा प्रकाशित करती दिव्य छटासे अति द्युतिमान॥
वनके कोमल पल्लव-पुष्पोंसे निर्मित निर्मल नव-हार।
मनहर शङ्ख-सदृश ग्रीवाकी शोभा बढ़ा रहे सुख-सार॥
कंधोंपर घुटनोंतक लटका पारिजात-पुष्पोंका हार।
मत्त मधुप मँडराते उसपर करत मधुर-मधुर गुंजार॥
हार-रूप नक्षत्रोंसे शोभित वक्षःस्थल पीन विशाल।
कौस्तुभमणिरूपी भास्कर है भासमान उसमें सब काल॥
शुचि श्रीवत्स-चिह्न, वक्षःस्थलपर शुभ उन्नत सिंह-स्कन्ध।
सुन्दर श्रीविग्रहसे निःसृत विस्तृत विमल मनोहर गन्ध॥
भुजा गोल, घुटनोंतक लंबी, नाभि गभीर चारु-विस्तार।
उदर उदार, त्रिवलि, रोमावलि मधुप-पंक्ति-सम शोभासार॥
दिव्य रत्न-मणि-निर्मित भूषण श्रीविग्रहपर रहे विराज।
अङ्गद, हार, अँगूठी, कङ्कण, कटि करधनी मनोरम साज॥
दिव्य अङ्गरागोंसे रञ्जित अङ्ग सकल माधुर्य निवास।
विद्युद्वर्ण पीत अम्बरसे आवृत रम्य नितम्बावास॥
जङ्घा-घुटने उभय मनोहर पिंडली गोलाकार सुठार।
परम कान्तिमय उन्नत श्रीपादाग्रभाग सुषमा-आगार॥
नखर-ज्योति निर्मल दर्पण-सम, अरुण-वर्ण माणिक्य समान।
अङ्गुलि-दलसे परम सुशोभित उभय चरण-पङ्कज सुख-खान॥
अङ्कुश-चक्र-शङ्ख-यव-पङ्कज-वज्र-ध्वजा-चिह्नोंसे युक्त।
अरुण हथेली, तलवे सुन्दर करते जनको बन्धन-मुक्त॥
शुचि लावण्य-सार-समुदाय-विनिर्मित सकल मधुर श्रीअङ्ग।
अनुपम रूप-राशि करती नित अगणित मारोंका मद-भङ्ग॥
मुख-सरोजसे मुरली मधुर बजाते गाते नन्दकिशोर।
दिव्य रागकी सृष्टि रहे कर आनन्दार्णव मुनि-मन-चोर॥
मुरली-ध्वनिसे आकर्षित हो वनका जीव-जन्तु प्रत्येक।
निरख रहा श्रीमुखको अपलक बार-बार भुवि मस्तक टेक॥
हरि-सम वय-विलास-गुण-भूषण-शील-स्वभाव-वेषधर गोप।
चञ्चल बाहु नचानेमें अति निपुण, बढ़ाते अनुपम ओप॥
घेरे खड़े श्यामको करते मन्द, मध्य, ऊँचे स्वर गान।
छेड़ रहे वंशी-वीणाकी उसके साथ मधुरतम तान॥
नन्हे-नन्हे शिशु विमुग्ध सब हरिका सुन्दर रूप निहार।
कटि-रशनाकी क्षुद्र घंटियाँ हैं कर रहीं मधुर झनकार॥
बघनखके आभूषण पहने घूम रहे सब चारों ओर।
मीठी अस्फुट वाणीसे हैं भोले शिशु लेते चित चोर॥

गोपी जनसे घिरे श्यामका अब कीजिये मधुरतम ध्यान।
अति मनहर व्रजसुन्दरियोंकी श्रेणीसे सेवित भगवान॥
स्थूल नितम्बोंके बोझेसे जो हो रहीं थकित अति श्रान्त।
मन्थर गतिसे चलतीं वे गुरु वक्षःस्थलसे भाराक्रान्त॥
कबरी गुँथी कर रही उनके रम्य नितम्ब-देशका स्पर्श।
रोमराजि त्रिवलीयुत वक्षःस्थलसे सटी पा रही हर्ष॥
देह-लता रोमाञ्च-अलंकृत पाकर वेणु-सुधा रसराज।
मानो प्रेमरूप पादप हो गया पल्लवित, मुकुलित आज॥
परम मनोहर मोहनकी अति मधुर मोहिनी मृदु मुसकान।
चन्द्रा लोक सदृश करती अनुरागाम्बुधिका वर्धित मान॥
मानो उसकी तरल तरङ्गोंके कणरूपी शोभासार।
गोप-रमणियोंके अङ्गोंमें प्रकट चारु श्रमबिन्दु अपार॥
परम मनोहर भ्रूचापोंसे वनमाली वर्षा करते।
तीक्ष्ण प्रेम-बाणोंकी, उनसे तन-मनकी सुधि-बुधि हरते॥
विदलित मर्मस्थल समस्त हैं, हुए जर्जरित सारे अङ्ग।
मानो प्रेम-वेदना फैली अति दुस्सह, बदले सब रंग॥
परम मनोहर वेष-रूप-सुषमामृतका करनेको पान।
लोलुप रहतीं व्रजबालाएँ नित्य-निरन्तर तज भय-मान॥
प्रणयरूप पय-राशि-प्रवाहिणि मानो वे सरिता अनुपम।
अलस विलोल विलोचन उनके उसमें शोभित सरसिज-सम॥
कबरी शिथिल हुई सबकी तब, गिरे प्रफुल्ल कुसुम-सम्भार।
मधु-लोलुप मधुकर मँड़राते, सेवा करते कर गुंजार॥
व्रजबालाओंकी मृदु वाणी स्खलित हो रही है उस काल।
छाया मद प्रेमोन्मादका, रही न कुछ भी सार-सँभाल॥
चीन-वसन नीवीसे विदलथ, उसका प्रान्तभाग सुन्दर।
करता अर्चि-नितम्ब प्रकाशित, लोल काञ्चि उल्लसित अमर॥
खसे जा रहे ललित पदाम्बुजसे मणिमय नूपुर भूपर।
टूट-टूटकर बिखर रहे हैं, फैल रहे सब इधर-उधर॥
सी-सी स्वर मुखसे निकला तब, काँपे अधर सुपल्लव-लाल।
श्रवणोंमें मणिकुण्डल शोभित, छायी सुधारश्मि सब काल॥
अलसाये लोचन दोनों अति शोभित नील सरोरुह-सम।

सुन्दर पक्ष्म-विभूषित मुकुलाकार दीर्घ अतिशय अनुपम॥
श्वास-समीरण शुचि सुगन्धिसे अधर-सुपल्लव है अम्लान।
अरुण-वर्ण घन मोहनके वे नित नूतन आनन्द निधान॥
प्रियतम-प्रिय पूजोपहारसे उनके कर-पङ्कज कोमल।
सदा सुशोभित रहते, ऐसे अतुलित वह गोपी मण्डल॥
अपने असित विशाल विलोल विलोचनको ले व्रजबाला।
उन्हें बनाकर नील नीरजोंकी मानो सुन्दर माला॥
पूज रहीं हरिके सब अङ्गोंको, यों सेवा करतीं नित्य।
छूट गये उनसे जगके सब विषय दुःखमय और अनित्य॥
नानाविध विलासके आश्रय हैं प्रेमास्पद श्रीभगवान।
परम प्रेयसी व्रजसुन्दरियोंके लोचन हैं मधुप समान॥
प्रणय-सुधारस-पूर्ण मनोमोहक मधुकर वे चारों ओर।
उड़-उड़कर मनहर मुख पङ्कज-विगलित-मधु-रस-पान-विभोर॥
आस्वादन करते, पीते रहते पाते आनन्द अपार।
मानो नेत्ररूप मधुपोंकी माला हरिने की स्वीकार॥
परम प्रेयसी व्रजसुन्दरियाँ परम प्रेम-आश्रय भगवान।
निर्मल कामरहित मनसे यह करिये अतिशय पावन ध्यान॥

बड़े मनोहर दीख रहे हैं, हरते हैं मनका संताप॥
अतिशय चिकने देह सुगन्धित वाले गोवत्सोंका दल।
सुखदायक हो रहा सुशोभित जिनका भारी गलकम्बल॥
माधवके सब ओर उठाये पूँछ, नये शृङ्गोंसे युक्त।
करते हैं प्रहार आपसमें कोमल मस्तकपर भययुक्त॥
लड़नेको वे भूमि खोदते नरम खुरोंसे बारंबार।
विविध भाँतिके खेल कर रहे पुनः-पुनः करते हुंकार॥
जिनकी अति दारुण दहाड़से क्षुब्ध दिशाएँ हो जातीं।
ककुदभारसे भारी जिनकी चलते देह रगड़ खातीं॥
दोनों कान उठाये सुनते मुरलीका रव साँड़ विशाल।
महाभाग वे पशु, जो हरिका सङ्ग पा रहे हैं सब काल।
गोपी-गोप और पशुओंके घेरेसे बाहर मतिमान।
सुर-गण विधि-हर-सुरपति आदिक करते ललित छंद यश-गान॥
वेदाभ्यास-परायण मुनिगण सुदृढ़ धर्मका अभिलाष।
घेरेसे बाहर दक्षिणमें स्थित, विषयोंसे सदा उदास॥
पृष्ठभागकी ओर खड़े सनकादि महामुनि योगीराज।
अन्य मुमुक्षु समाधि-परायण, जिनके साधनके सब साज॥

अब उन भाग्यवती गायोंका, गोकुलका करिये शुभ ध्यान।
जिनकी अपने कर-कमलोंसे सेवा करते हैं भगवान्॥
थकीं थनोंके बड़े भारसे मन्थरगतिसे जो चलतीं।
बचे तृणाङ्कुर दाँतोंमें न चबातीं, नहीं जरा हिलतीं॥
पूँछोंको लटकाये देख रहीं श्रीहरिके मुखकी ओर।
अपलक नेत्रोंसे घेरे श्रीहरिको वे आनन्द-विभोर॥
छोटे-छोटे बछड़े भी हैं घेरे श्रीहरिको सानन्द।
मुरलीसे मीठे स्वरमें गान कर रहे हरि स्वच्छन्द॥
खड़ा किये कानोंको सुनते हैं वे परम मधुर वह गान।
भरा दूध मुँहमें, पर उसको वे हैं नहीं रहे कर पान॥
फेनयुक्त वह दूध बह रहा, उनके मुखसे अपने-आप।

तदनन्तर आकाशस्थित देवर्षिवर्यका करिये ध्यान।
ब्रह्मपुत्र नारद, जिनका वपु गौर सुधाकर-शङ्ख-समान॥
सकल आगमोंके ज्ञाता, विद्युत-सम पीत जटाधारी।
हरि-चरणाम्बुजमें निर्मल रति जिनकी है अतिशय प्यारी॥
सर्वसङ्गका परित्याग कर जो हरिका करते गुणगान।
नित्य निरन्तर श्रुतियुत नाना स्वरसे स्तुति करते मतिमान॥
विविध ग्रामके ललित मूर्छनागणको जो अभिव्यञ्जित कर।
नित्य प्रसन्न रहे कर हरिको प्रेम-भक्ति-मणिके आकर॥
हस प्रकार जो कामराग-वर्जित निर्मल-मति परम सुजान।
नन्द-तनय श्रीकृष्णचन्द्रका प्रेमसहित करते हैं ध्यान॥
उनपर सदा तुष्ट रहते हरि, बरसाते हैं कृपा अपार।
देते प्रेमदान अति दुर्लभ, जो समस्त सारोंका सार॥

व्रजका सुख

जो सुख व्रज मैं एक घरी।
सो सुख तीनि लोक मैं नाहीं धनि यह घोष-पुरी॥
अष्टसिद्धि नवनिधि कर जोरे, द्वारैं रहति खरी।
सिव-सनकादि-सुकादि-अगोचर, ते अवतरे हरी॥
धन्य-धन्य बड़भागिनि जसुमति, निगमनि सही परी।
ऐसैं सूरदास के प्रभु कौं, लीन्हौं अंक भरी॥

तीर्थमें क्यों जाना चाहिये?

भगवत्प्राप्तिके लिये। भगवान्‌का ज्ञान काम-लोभ-वर्जित साधु-सङ्गसे होता है, साधु मिलते हैं तीर्थोंमें।

वलीपलितदेहो वा यौवनेनान्वितोऽपि वा। ज्ञात्वा मृत्युमनिस्तीर्यं हरिं शरणमाव्रजेत्॥
तत्कीर्तने तच्छ्रवणे वन्दने तस्य पूजने। मतिरेव प्रकर्तव्या नान्यत्र वनितादिषु॥
सर्वं नश्वरमालोक्य क्षणस्थायि सुदुःखदम्। जन्ममृत्युजरातीतं भक्तिवल्लभमच्युतम्॥

× × ×

स हरिर्ज्ञायते साधुसंगमात् पापवर्जितात्। येषां कृपातः पुरुषा भवन्त्यसुखवर्जिताः॥
ते साधवः शान्तरागाः कामलोभविवर्जिताः। ब्रुवन्ति यन्महाराज तत् संसारनिवर्तकम्॥
तीर्थेषु लभ्यते साधू रामचन्द्रपरायणः। यद्दर्शनं नृणां पापराशिदाहाशुशुक्षणिः॥
तस्मात् तीर्थेषु गन्तव्यं नरैः संसारभीरुभिः। पुण्योदकेषु सततं साधुश्रेणिविराजिषु॥

(पद्मपुराण, पातालखण्ड १९। १०—१२; १४—१७)

(मनुष्य-जीवनका प्रधान उद्देश्य और एकमात्र परम लाभ है—भगवत्प्राप्ति।) मनुष्यके शरीरमें चाहे झुर्रियाँ पड़ गयी हों, सिरके बाल पक गये हों अथवा वह अभी नवयुवक ही हो, आयी हुई मृत्युको कोई टाल नहीं सकता—यों समझकर (भगवत्प्राप्तिके लिये भगवान्‌के शरण जाना चाहिये तथा भगवान्‌के कीर्तन, श्रवण, वन्दन और पूजनमें ही मन लगाना चाहिये, स्त्री-पुत्रादि अन्य संसारी वस्तुओंमें नहीं। यह सारा प्रपञ्च नाशवान्, क्षणभर रहनेवाला तथा अत्यन्त दुःख देनेवाला है; परंतु श्रीभगवान् जन्म-मृत्यु और जरासे परे हैं (वे नित्य सत्य हैं) और भक्तिदेवीके प्राणवल्लभ तथा अच्युत (सदा अपने सच्चिदानन्दस्वरूपमें स्थित) हैं। यह विचारकर भगवान्‌का भजन करना उचित है।

उन भगवान्‌का (उनके स्वरूप, तत्त्व, गुण, लीला, नाम आदिका) ज्ञान होता है पापरहित साधुसङ्गसे—उन साधुओंके सङ्गसे, जिनकी कृपासे मनुष्य दुःखसे छूट जाते हैं। साधु (वे नहीं हैं, जो केवल नामधारी हैं और मनसे नहीं हैं; साधु वस्तुतः) वे हैं, जिनकी लोक-परलोकके विषयोंमें आसक्ति नहीं रह गयी है, जिनके मनमें कामसंकल्प नहीं है तथा जो लोभसे रहित हैं अर्थात् जो अनासक्त तथा धन और स्त्रीसे किसी प्रकारका मानसिक सम्पर्क भी नहीं रखते हैं। ऐसे साधु जो उपदेश देते हैं, उससे संसारका बन्धन छूट जाता है (भगवत्प्राप्ति हो जाती है)। ऐसे भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके भजनमें लगे हुए साधु मिलते हैं तीर्थोंमें। इनका दर्शन मनुष्योंकी पाप-राशि जला डालनेके लिये अग्निका काम करता है। इसलिये जो लोग संसारसे डरे हुए हैं अर्थात् संसार-बन्धनसे छूटना चाहते हैं, उनको पवित्र जलवाले तीर्थोंमें, जो सदा साधु महात्माओंके सहवाससे सुशोभित रहते हैं, अवश्य जाना चाहिये।

तीर्थयात्राकी शास्त्रीय विधि

विरागं जनयेत् पूर्वं कलत्रादिकुटुम्बके। असत्यभूतं तज्ज्ञात्वा हरिं तु मनसा स्मरेत्॥
क्रोशमात्रं ततो गत्वा राम रामेति च ब्रुवन्। तत्र तीर्थादिषु स्नात्वा क्षौरं कुर्याद् विधानवित्॥
मनुष्याणां च पापानि तीर्थानि प्रति गच्छताम्। केशमाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात् तद्वपनं चरेत्॥
ततो दण्डं तु निर्ग्रन्थिं कमण्डलुमथाजिनम्। बिभृयाल्लोभनिर्मुक्तस्तीर्थवेषधरो नरः॥
विधिना गच्छतां नृणां फलावाप्तिर्विशेषतः। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन तीर्थयात्राविधिं चरेत्॥
यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्। विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते॥
हरे कृष्ण हरे कृष्ण भक्तवत्सल गोपते। शरण्य भगवन् विष्णो मां पाहि बहुसंसृतेः॥
इति ब्रुवन् रसनया मनसा च हरिं स्मरन्। पादचारी गतिं कुर्यात् तीर्थं प्रति महोदयः॥

(पद्मपुराण, पातालखण्ड १९। १९—२६)

(तीर्थयात्रा करनेका निश्चय करके) सबसे पहले स्त्री, कुटुम्ब, घर, पदार्थ आदिको असत्य जानकर उनमें जरा भी आसक्ति न रहने दे और मनसे श्रीभगवान्‌का स्मरण करे। (घर-परिवार-धनादिमें मन अटका रहेगा तो उन्हींका स्मरण होगा—तीर्थयात्राका उद्देश्य ही याद नहीं रहेगा।) तदनन्तर 'राम-राम' की रट लगाते हुए तीर्थयात्रा आरम्भ करे। एक कोस जानेके बाद वहाँ तीर्थ (पवित्र नदी-तालाब-कुएँ) आदिमें स्नान करके क्षौर करवा ले। यात्राकी विधि जाननेवालोंके लिये यह आवश्यक है। तीर्थोंकी ओर जानेवाले मनुष्योंके पाप उनके बालोंपर आकर ठहर जाते हैं, अतः उनका मुण्डन करा देना चाहिये। उसके बाद बिना गाँठका दण्ड अर्थात् मोटी चिकनी बाँसकी मजबूत लाठी, कमण्डलु और आसन लेकर तीर्थके उपयोगी वेष धारण करे (पूरी सादगी स्वीकार करे) तथा (धन, मान, बड़ाई, सत्कार, पूजा आदिके) लोभका त्याग कर दे। इस विधिसे यात्रा करनेवाले मनुष्योंको विशेषरूपसे फलकी प्राप्ति होती है। इसलिये पूरा प्रयत्न करके तीर्थयात्राकी विधिका पालन करे। जिसके दोनों हाथ, दोनों पैर तथा मन वशमें होते हैं अर्थात् क्रमशः भगवान्‌की सेवा एवं स्मरणमें लगे रहते हैं और जिसमें (अध्यात्म-) विद्या, तपस्या तथा कीर्ति होती है, वह तीर्थके फलको प्राप्त करता है।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण भक्तवत्सल गोपते।
शरण्य भगवन् विष्णो मां पाहि बहुसंसृतेः॥

—जीभसे इस मन्त्रका उच्चारण तथा मनसे भगवान्‌का स्मरण करते हुए पैदल ही तीर्थयात्रा करनी चाहिये, तभी वह महान् अभ्युदयकी प्राप्ति करानेवाली होती है।

मानस-तीर्थका महत्त्व

सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः।
सर्वभूतदया तीर्थं तीर्थमार्जवमेव च॥

सत्य तीर्थ है, क्षमा तीर्थ है, इन्द्रियोंपर नियन्त्रण रखना भी तीर्थ है, सब प्राणियोंपर दया करना तीर्थ है और सरलता भी तीर्थ है।

दानं तीर्थं दमस्तीर्थं संतोषस्तीर्थमुच्यते।
ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थं च प्रियवादिता॥

दान तीर्थ है, मनका संयम तीर्थ है, संतोष भी तीर्थ कहा जाता है। ब्रह्मचर्य परम तीर्थ है और प्रिय वचन बोलना भी तीर्थ है।

ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं तपस्तीर्थमुदाहृतम्।
तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसः परा॥

ज्ञान तीर्थ है, धैर्य तीर्थ है, तपको भी तीर्थ कहा गया है। तीर्थोंमें भी सबसे श्रेष्ठ तीर्थ है अन्तःकरणकी आत्यन्तिक विशुद्धि।

न जलाप्लुतदेहस्य स्नानमित्यभिधीयते।
स स्नातो यो दमस्नातः शुचिः शुद्धमनोमलः॥

जलमें शरीरको डुबो लेना ही स्नान नहीं कहलाता। जिसने दमरूपी तीर्थमें स्नान किया है—मन-इन्द्रियोंको वशमें कर रखा है, उसीने वास्तवमें स्नान किया है। जिसने मनका मल धो डाला है, वही शुद्ध है।

यो लुब्धः पिशुनः क्रूरो दाम्भिको विषयात्मकः।
सर्वतीर्थेष्वपि स्नातः पापो मलिन एव सः॥

जो लोभी है, चुगलखोर है, निर्दय है, दम्भी है और विषयासक्त है, वह सब तीर्थोंमें स्नान करके भी पापी और मलिन ही रह जाता है।

न शरीरमलत्यागान्नरो भवति निर्मलः।
मानसे तु मले त्यक्ते भवत्यन्तः सुनिर्मलः॥

केवल शरीरके मैलको उतार देनेसे ही मनुष्य निर्मल नहीं हो जाता। मानसिक मलका परित्याग करनेपर ही वह भीतरसे अत्यन्त निर्मल होता है।

जायन्ते च म्रियन्ते च जलेष्वेव जलौकसः।
न च गच्छन्ति ते स्वर्गमविशुद्धमनोमलाः॥

जलमें निवास करनेवाले जीव जलमें ही जन्मते और मरते हैं, पर उनका मानसिक मल नहीं धुलता, इससे वे स्वर्गको नहीं जाते।

विषयेष्वतिसंरागो मानसो मल उच्यते।
तेष्वेव हि विरागोऽस्य नैर्मल्यं समुदाहृतम्॥

विषयोंके प्रति अत्यन्त आसक्तिको ही मानसिक मल कहा जाता है और उन विषयोंमें वैराग्य होना ही

निर्मलता कहलाती है।

चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानान्न शुद्ध्यति।
शतशोऽपि जलैर्धौतं सुराभाण्डमिवाशुचिः॥

चित्तके भीतर यदि दोष भरा है तो वह तीर्थ-स्नानसे शुद्ध नहीं होता। जैसे मदिरासे भरे हुए घड़ेको ऊपरसे जलद्वारा सैकड़ों बार धोया जाय तो भी वह पवित्र नहीं होता। उसी प्रकार दूषित अन्तःकरणवाला मनुष्य भी तीर्थस्नानसे शुद्ध नहीं होता।

दानमिज्या तपः शौचं तीर्थसेवा श्रुतं तथा।
सर्वाण्येतान्यतीर्थानि यदि भावो न निर्मलः॥

भीतरका भाव शुद्ध न हो तो दान, यज्ञ, तप, शौच, तीर्थसेवन, शास्त्र-श्रवण और स्वाध्याय—ये सभी अतीर्थ हो जाते हैं।

निगृहीतेन्द्रियग्रामो यत्रैव च वसेन्नरः।
तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं नैमिषं पुष्कराणि च॥

जिसने इन्द्रिय-समूहको वशमें कर लिया है, वह मनुष्य जहाँ भी निवास करता है, वहीं उसके लिये कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य और पुष्कर आदि तीर्थ हैं।

ध्यानपूते ज्ञानजले रागद्वेषमलापहे।
यः स्नाति मानसे तीर्थे स याति परमां गतिम्॥

ध्यानके द्वारा पवित्र तथा ज्ञानरूपी जलसे भरे हुए, राग-द्वेषरूप मलको दूर करनेवाले मानस-तीर्थमें जो पुरुष स्नान करता है, वह परम गति—मोक्षको प्राप्त होता है।

(स्कन्दपुराण, काशीखण्ड; अध्याय ६)

तीर्थका फल किसको मिलता है और किसको नहीं मिलता ?

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते॥

जिसके हाथ, पैर और मन भलीभाँति संयमित हैं—अर्थात् जिसके हाथ सेवामें लगे हैं, पैर तीर्थादि भगवत्-स्थानोंमें जाते हैं और मन भगवान्के चिन्तनमें संलग्न है, जिसको अध्यात्मविद्या प्राप्त है, जो धर्मपालनके लिये कष्ट सहता है, जिसकी भगवान्के कृपापात्रके रूपमें कीर्ति है, वह तीर्थके फलको प्राप्त होता है।

प्रतिग्रहादपावृत्तः संतुष्टो येन केनचित्।
अहंकारविमुक्तश्च स तीर्थफलमश्नुते॥

जो प्रतिग्रह नहीं लेता, जो अनुकूल या प्रतिकूल—जो कुछ भी मिल जाय, उसीमें संतुष्ट रहता है तथा जिसमें अहंकारका सर्वथा अभाव है, वह तीर्थके फलको प्राप्त होता है।

अदम्भको निरारम्भो लघ्वाहारो जितेन्द्रियः।
विमुक्तः सर्वसङ्गैर्यः स तीर्थफलमश्नुते॥

जो पाखण्ड नहीं करता, नये-नये कामोंको आरम्भ नहीं करता, थोड़ा आहार करता है, इन्द्रियोंपर विजय प्राप्त कर चुका है, सब प्रकारकी आसक्तियोंसे छूटा हुआ है, वह तीर्थके फलको प्राप्त होता है।

अक्रोधनोऽमलमतिः सत्यवादी दृढव्रतः।
आत्मोपमश्च भूतेषु स तीर्थफलमश्नुते॥

जिसमें क्रोध नहीं है, जिसकी बुद्धि निर्मल है, जो सत्य बोलता है, व्रत-पालनमें दृढ़ है और सब प्राणियोंको अपने आत्माके समान अनुभव करता है, वह तीर्थके फलको प्राप्त होता है।

तीर्थान्यनुसरन् धीरः श्रद्दधानः समाहितः।
कृतपापो विशुद्ध्येत किं पुनः शुद्धकर्मकृत्॥

जो तीर्थोंका सेवन करनेवाला धैर्यवान्, श्रद्धायुक्त और एकाग्रचित्त है, वह पहलेका पापाचारी हो तो भी शुद्ध हो जाता है; फिर जो शुद्ध कर्म करनेवाला है, उसकी तो बात ही क्या है।

अश्रद्दधानः पापात्मा नास्तिकोऽच्छिन्नसंशयः।
हेतुनिष्ठश्च पञ्चैते न तीर्थफलभागिनः॥

(स्कन्दपुराण)

जो अश्रद्धालु है, पापात्मा (पापका पुतला—पापमें गौरवबुद्धि रखनेवाला), नास्तिक, संशयात्मा और केवल तर्कमें ही डूबा रहता है—ये पाँच प्रकारके मनुष्य तीर्थके फलको प्राप्त नहीं करते।

नृणां पापकृतां तीर्थे पापस्य शमनं भवेत्।
यथोक्तफलदं तीर्थं भवेच्छुद्धात्मनां नृणाम्॥

पापी मनुष्योंके तीर्थमें जानेसे उनके पापकी

शान्ति होती है। जिनका अन्तःकरण शुद्ध है, ऐसे मनुष्योंके लिये तीर्थ यथोक्त फल देनेवाला है।

कामं क्रोधं च लोभं च यो जित्वा तीर्थमाविशेत्।
न तेन किंचिदप्राप्तं तीर्थाभिगमनाद् भवेत्॥

जो काम, क्रोध और लोभको जीतकर तीर्थमें प्रवेश करता है, उसे तीर्थयात्रासे कोई भी वस्तु अलभ्य नहीं रहती।

तीर्थानि च यथोक्तेन विधिना संचरन्ति ये।
सर्वद्वन्द्वसहा धीरास्ते नराः स्वर्गगामिनः॥

जो यथोक्त विधिसे तीर्थयात्रा करते हैं, सम्पूर्ण द्वन्द्वोंको सहन करनेवाले वे धीर पुरुष स्वर्गमें जाते हैं।

गङ्गादितीर्थेषु वसन्ति मत्स्या
देवालये पक्षिगणाश्च सन्ति।
भावोज्झितास्ते न फलं लभन्ते
तीर्थाच्च देवायतनाच्च मुख्यात्॥
भावं ततो हृत्कमले निधाय
तीर्थानि सेवेत समाहितात्मा।

(नारदपुराण)

गङ्गा आदि तीर्थोंमें मछलियाँ निवास करती हैं, देवमन्दिरोंमें पक्षीगण रहते हैं; किन्तु उनके चित्त भक्तिभावसे रहित होनेके कारण उन्हें तीर्थसेवन और देवमन्दिरमें निवास करनेसे कोई फल नहीं मिलता। अतः हृदयकमलमें भावका संग्रह करके एकाग्रचित्त होकर तीर्थसेवन करना चाहिये।

छः तीर्थ

१—भक्त-तीर्थ

भवद्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं विभो।
तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तःस्थेन गदाभृता॥

(श्रीमद्भागवत १। १३। १०)

युधिष्ठिरजी भक्तश्रेष्ठ विदुरजी कहते हैं—'आप-जैसे भागवत—भगवान्‌के प्रिय भक्त स्वयं ही तीर्थरूप होते हैं। आपलोग अपने हृदयमें विराजित भगवान्‌के द्वारा तीर्थोंको भी महातीर्थ बनाते हुए विचरण करते हैं।'

२—गुरु-तीर्थ

दिवा प्रकाशकः सूर्यः शशी रात्रौ प्रकाशकः।
गृहप्रकाशको दीपस्तमोनाशकरः सदा॥
रात्रौ दिवा गृहस्यान्ते गुरुः शिष्यं सदैव हि।
अज्ञानाख्यं तमस्तस्य गुरुः सर्वं प्रणाशयेत्॥
तस्माद् गुरुः परं तीर्थं शिष्याणामवनीपते।

(पद्मपुराण, भूमिखण्ड ८५। १२—१४)

सूर्य दिनमें प्रकाश करते हैं, चन्द्रमा रात्रिमें प्रकाशित होते हैं और दीपक घरमें उजाला करता है तथा सदा घरके अँधेरेका नाश करता है; परंतु गुरु अपने शिष्यके हृदयमें रात-दिन सदा ही प्रकाश फैलाते रहते हैं। वे शिष्यके सम्पूर्ण अज्ञानमय अन्धकारका नाश कर देते हैं। अतएव राजन्! शिष्योंके लिये गुरु ही परम तीर्थ हैं।

३—माता-तीर्थ; ४—पिता-तीर्थ

नास्ति मातृसमं तीर्थं पुत्राणां च पितुः समम्।
तारणाय हितायैव इहैव च परत्र च॥
वेदैरपि च किं विप्र पिता येन न पूजितः।
माता न पूजिता येन तस्य वेदा निरर्थकाः॥
एष पुत्रस्य वै धर्मस्तथा तीर्थं नरेष्विह।
एष पुत्रस्य वै मोक्षस्तथा जन्मफलं शुभम्॥

(पद्मपुराण, भूमिखण्ड ६३। १४, १९, २१)

पुत्रोंके इस लोक और परलोकके कल्याणके लिये माता-पिताके समान कोई तीर्थ नहीं है। माता-पिताका जिसने पूजन नहीं किया, उसे वेदोंसे क्या प्रयोजन है? (उसका वेदाध्ययन व्यर्थ है।) पुत्रके लिये माता-पिताका पूजन ही धर्म है, वही तीर्थ है, वही मोक्ष है और वही जन्मका शुभ फल है।

५—पति-तीर्थ

सव्यं पादं स्वभर्तुश्च प्रयागं विद्धि सत्तम।
वामं च पुष्करं तस्य या नारी परिकल्पयेत्॥
तस्य पादोदकस्नानात् तत्पुण्यं परिजायते।
प्रयागपुष्करसमं स्नानं स्त्रीणां न संशयः॥
सर्वतीर्थमयो भर्ता सर्वपुण्यमयः पतिः।

(पद्मपुराण ४१। १२—१४)

जो स्त्री अपने पतिके दाहिने चरणको प्रयाग और बायें

चरणको पुष्कर समझकर पतिके चरणोदकसे स्नान करती है, उसे उन तीर्थोंके स्नानका पुण्य होता। ऐसा स्नान प्रयाग तथा पुष्करमें स्नान करनेके सदृश है, इसमें कोई संदेह नहीं है। पति सर्वतीर्थमय और सर्वपुण्यमय है।

६—पत्नी-तीर्थ

सदाचारपरा भव्या धर्मसाधनतत्परा।
पतिव्रतरता नित्यं सर्वदा ज्ञानवत्सला॥
एवंगुणा भवेद् भार्या यस्य पुण्या महासती।
तस्य गेहे सदा देवास्तिष्ठन्ति च महौजसः॥
पितरो गेहमध्यस्थाः श्रेयो वाञ्छन्ति तस्य च।
गङ्गाद्याः सरितः पुण्याः सागरास्तत्र नान्यथा॥
पुण्या सती यस्य गेहे वर्तते सत्यतत्परा।
तस्य यज्ञाश्च गावश्च ऋषयस्तत्र नान्यथा॥
तत्र सर्वाणि तीर्थानि पुण्यानि विविधानि च।
नास्ति भार्यासमं तीर्थं नास्ति भार्यासमं सुखम्।
नास्ति भार्यासमं पुण्यं तारणाय हिताय च॥

(पद्मपुराण, भूमिखण्ड ५९। ११—१५, २४)

जो सब प्रकारसे सदाचारका पालन करनेवाली, प्रशंसाके योग्य आचरणवाली, धर्म-साधनमें लगी हुई, सदा पातिव्रत्यका पालन करनेवाली तथा ज्ञानकी नित्य अनुरागिणी है, ऐसी गुणवती पुण्यमयी महासती जिसके घरमें पत्नी हो, उसके घरमें सदा देवता निवास करते हैं, पितर भी उसके घरमें रहकर सदा उसके कल्याणकी कामना करते हैं। जिसके घरमें ऐसी सत्यपरायणा पवित्रहृदया सती रहती है, उस घरमें गङ्गा आदि पवित्र नदियाँ, समुद्र, यज्ञ, गौएँ, ऋषिगण तथा सम्पूर्ण विविध पवित्र तीर्थ रहते हैं। कल्याण तथा उद्धारके लिये भार्याके समान कोई तीर्थ नहीं है, भार्याके समान सुख नहीं है और भार्याके समान पुण्य नहीं है।

उत्तर भारतकी यात्रा

उत्तर भारतमें पूरा उत्तरप्रदेश तो आ ही जाता है, कश्मीर, पंजाब, कैलासका तिब्बतीय भाग तथा पश्चिमी पाकिस्तान भी सम्मिलित हैं। इस भागमें केवल कैलासका तिब्बतीय भाग ही ऐसा है, जहाँ कोई भारतीय भाषा बोली या समझी नहीं जाती। वहाँ तिब्बती भाषा बोली जाती है। उधरकी यात्राके लिये एक दुभाषिया, जो मार्गदर्शकका काम भी करता है, भारतके पर्वतीय भागसे साथ ले जाना पड़ता है। भारतसे ही रहनेके लिये तंबू और भोजन-सामग्री भी साथ ले जाना पड़ता है। वहाँ न आवासकी व्यवस्था है न सामग्री मिलनेकी सुविधा।

जहाँतक पश्चिमी पाकिस्तानके तीर्थोंकी बात है, यह कहना कठिन है कि वहाँकी अब क्या स्थिति है। अनुमति-पत्र लेकर ही वहाँकी यात्रा सम्भव है और यात्रामें अनेकों असुविधाओं तथा कठिनाइयोंके आनेकी सम्भावना है।

इन भागोंको छोड़ दें तो शेष भागमें हिंदी-भाषा बोली-समझी जाती है। कश्मीर तथा पंजाबमें उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी चलती है; किन्तु हिंदी समझनेमें किसीको इन भागोंमें कठिनाई नहीं होती। इन भागोंमें सब कहीं बाजारोंमें भोजन-सामग्री, दूध-दही, फल-शाक, पूड़ी-मिठाई मिलती हैं। यात्रीके लिये आवासकी व्यवस्था भी हो जाती है।

कश्मीर तथा यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरी, केदारनाथ, बदरीनाथकी यात्रा जाड़ोंमें सम्भव नहीं। कश्मीर चैत्रसे मार्गशीर्षतक लोग जाते हैं और उत्तराखण्डके तीर्थोंमें वैशाख शुक्लसे दीपावलीतक मार्ग ठीक रहता है।

हिमालयका पवित्र प्रान्त तथा गङ्गा-यमुनाके दोनों ओरसे भूमि अनादिकालसे परम पावन मानी गयी है। यह सम्पूर्ण भूमि ही तीर्थस्वरूपा है। प्रायः यह सब-का-सब भारतीय भाग ऋषियोंकी तपःस्थली है। यही अवतारोंकी प्रिय लीला-भूमि है। इतना होनेपर भी यहाँ अब बहुत प्राचीन मन्दिर या अन्य स्मारक कम ही मिलते हैं; क्योंकि यह भूमि आक्रमणोंका बार-बार आखेट हुई है। बार-बार मन्दिरों एवं तीर्थोंको आततायियोंकी क्रूर वृत्तिने ध्वस्त किया है। अनेक प्राचीन स्थल लुप्त

हो गये और अनेक मन्दिर मसजिदोंमें परिवर्तित कर दिये गये। आक्रमणकारियोंके धर्मोन्मादने जो क्रूर अत्याचार किये, उनमें ऋषि-आश्रमोंकी परम्परा उच्छिन्न हो गयी!

यह तो भगवान्‌की कृपा है, उनकी लीला-भूमिका अद्‌भुत प्रभाव है कि कई शताब्दियोंके (शक, हूण, यवन आदिके) आक्रमणोंसे लेकर पिछली शतीतकके अत्याचारोंके मध्य भी अभी हम भगवल्लीलाभूमि तथा बहुतसे पावन क्षेत्रोंके स्मारकस्थल विद्यमान पाते हैं। भारतीय—हिंदू श्रद्धाने तीर्थयात्राकी अविच्छिन्न परम्परा बनाये रखकर इन तीर्थोंका स्मारक स्थिर रखा है।

हमने देखा है कि दक्षिण भारतके यात्री माघकी सर्दीमें भी प्रयाग सामान्य वस्त्रोंमें पहुँचते हैं और कष्ट पाते हैं। इसलिये यह बता देना आवश्यक है कि इस पूरे भागमें सर्दियोंमें अच्छी सर्दी पड़ती है। उस समय पहननेके गरम कपड़े तथा ओढ़ने-बिछानेकी पर्याप्त व्यवस्था साथ रखकर ही यात्रा करना चाहिये। कश्मीर तथा उत्तराखण्डको छोड़कर शेष भागमें गर्मियोंमें पर्याप्त अधिक गरमी पड़ती है। वर्षामें वर्षा भी प्रायः सब कहीं अच्छी होती है। सभी ऋतुओंमें साथमें छत्ता रखना अच्छा है; क्योंकि शीतकालमें भी वर्षा हो सकती है। ग्रीष्ममें यात्रीको अपने साथ जल रखनेकी थोड़ी व्यवस्था रखनी चाहिये। वैसे इस पूरे भागमें कहीं जलका अभाव नहीं है।

इस भागमें सब कहीं तीर्थ हैं और वे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं; फिर भी मुख्य-मुख्य तीर्थोंकी नामावली इस प्रकार है:—मानसरोवर-कैलास (तिब्बतमें), अमरनाथ-क्षीरभवानी (कश्मीरमें), यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरी तथा केदारनाथ, बदरीनाथ (उत्तराखण्डमें), ज्वालामुखी, हरिद्वार-ऋषिकेश, सम्भल, कुरुक्षेत्र, व्रजमण्डल (मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, गोवर्धन, नन्दगाँव, बरसाना), प्रयाग, चित्रकूट, नैमिषारण्य, अयोध्या, विन्ध्याचल और काशी।

इधरके प्रायः सभी तीर्थोंमें पंडे मिलते हैं। धर्मशालाएँ भी मिलती हैं। काशी-प्रयाग-जैसे स्थानोंमें तो भारतके प्रायः सभी प्रदेशोंके लोग स्थायीरूपसे बस गये हैं। थोड़ा ही प्रयत्न करनेपर यात्री वहाँ अपने प्रान्तके लोगोंके सम्पर्कमें आ सकता है।

मानसरोवर-कैलास

हिमालयके तीर्थोंकी यात्राएँ

यदि तीर्थोंकी पृथक्-पृथक् गणना न करके यात्राकी दिशाओंके ही अनुसार गणना करें तो हिमालयके तीर्थोंको निम्न चार यात्राओंमें गिना जा सकता है—

१—मानसरोवर-कैलास-यात्रा, २—अमरनाथ (कश्मीर)-यात्रा, ३-यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरी, केदारनाथ-बदरीनाथकी यात्रा तथा ४—दामोदर-कुण्ड, मुक्तिनाथ और पशुपतिनाथकी यात्रा तथा इन तीर्थोंके मार्गोंके आसपासके तीर्थकी यात्रा।

आवश्यक सामग्री

हिमालय-प्रदेशकी उक्त सभी यात्राओंमें प्रायः एक-सी सामग्री आवश्यक होती है—

१— पूरे सूती और ऊनी (गरम) कपड़े।
२— सिरपर ऊनी टोपी (मंकी कैप)।
३— गुलूबंद, जिससे सिर और कान बाँधे जा सकें।
४— ऊनी दस्ताने।
५— ऊनी मोजे और सादे मोजे पहननेका अभ्यास हो तो सूती मोजे भी।
६— छाता।
७— बरसाती कोट और टोपी।
८— ऐसे जूते जो बरफ और पत्थरोंपर भी काम दे सकें। बाटाके मोटे रबरवाले तलेके जूते सबसे अच्छे रहते हैं।
९— वल्लमके समान नीचे लोहेसे जड़ी सिरके बराबर लाठी, जिसके सहारे आवश्यक होनेपर कूदा जा सके।
१०— दो अच्छे मोटे कम्बल
११— एक कोई ऐसा कपड़ा, जिसमें सब सामान लपेटा जा सके और जो वर्षा होनेपर भीगे नहीं।
१२— थोड़ी खटाई, इमली या सूखे आलूबुखारे, जो चढ़ाईमें जी मिचलानेपर खाये जा सकें।
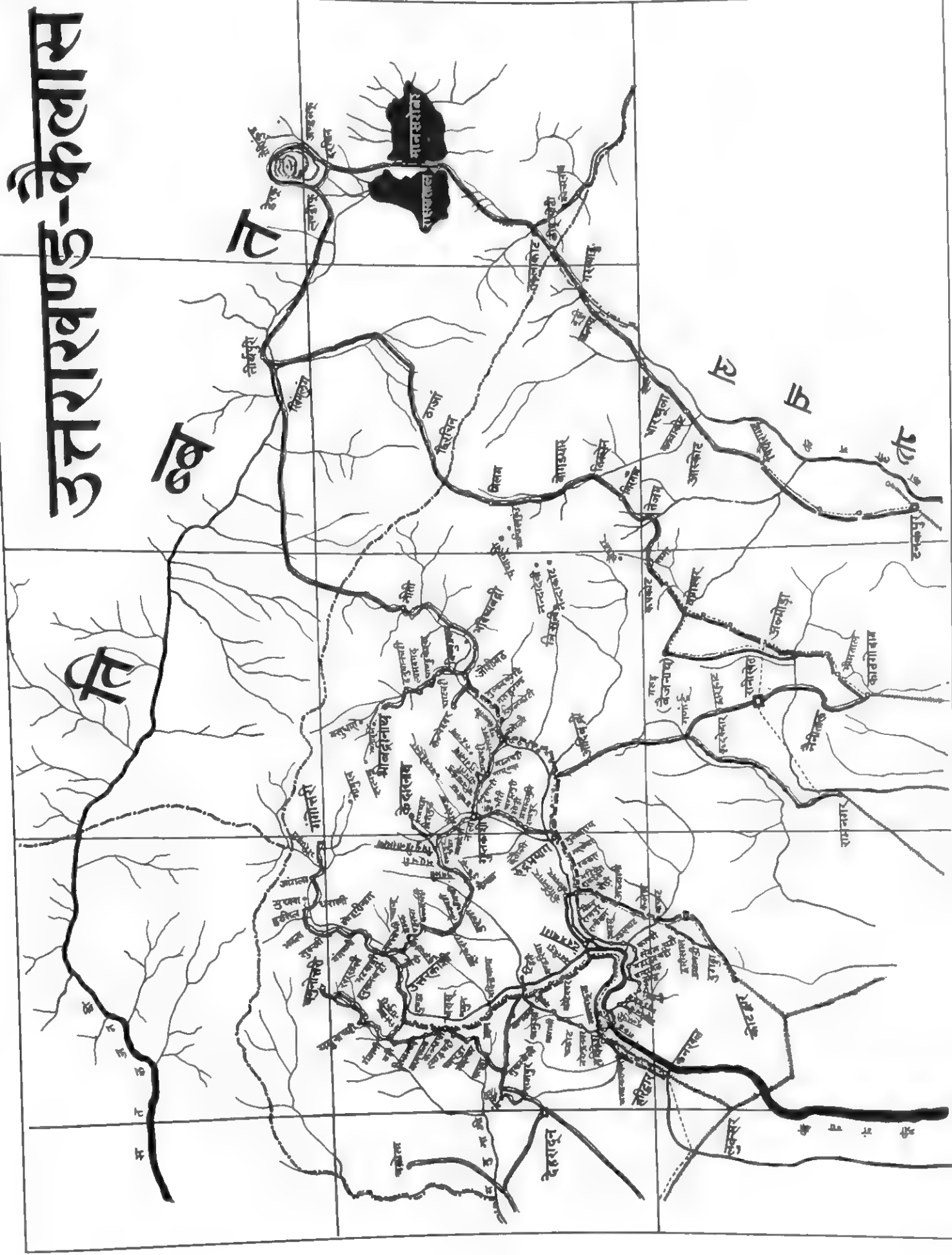
१३— कुछ दवाएँ—जैसे सोडामिंट, सल्फरगो गोनाइडिन, आयोडेक्स, सारीडिन, पेलुड्रिन, चोटपर लगानेका कोई मलहम।
१४— वैसलिन तथा धूपका चश्मा।
१५— मोमबत्ती, टार्च, टार्चके अतिरिक्त सेल, लालटैन।
१६— भोजन बनानेके लिये हल्के बर्तन। स्टोव रखना अधिक सुविधाजनक है।

नोट—(क) जहाँतक बने, इन यात्राओंमें रूईके गद्दे, रूईकी बंडी, रजाई आदि नहीं ले जाना चाहिये। इन कपड़ोंका भीग जानेपर सूखना कठिन होता है। ट्रंक भी नहीं ले जाना चाहिये और धक्के तथा गिरनेसे टूटने-फूटनेवाली चीजें भी नहीं ले जाना चाहिये। साथमें कुछ सूखे मेवे तथा पेड़े तथा इसी प्रकार ही कोई सूखी मिठाई जलपानके लिये रखना अधिक सुविधाजनक होता है; किंतु छाता, बरसाती, कुछ खटाई, जलपानका थोड़ा सामान और एक हल्का पानी पीनेका बर्तन अपने ही पास रखना चाहिये। कुली या सामान ढोनेवाले पशु कई बार मीलों दूर रह जाते हैं और आवश्यकता होनेपर इन वस्तुओंके पास न रहनेसे कष्ट होता है।

(ख) किसी अपरिचित फल, पुष्प या पत्तेको खाना, सूँघना, छूना कष्ट दे सकता है। उनमें अनेक विषैले होते हैं, जो सूँघने या छूनेमात्रसे कष्ट देते हैं।

(ग) इन यात्राओंमें चलते हुए पर्वतीय जलको पीना हानिकर होता है। जलको किसी बर्तनमें लेकर एक-दो मिनट स्थिर होने देना चाहिये, जिससे उसमें जो पत्थरके छोटे-छोटे कण मिले होते हैं, वे नीचे बैठ जायँ। इसके बाद कुछ खाकर—एक-दो दाने किसमिस या थोड़ी मिश्री खाकर जल पीना उत्तम रहता है। प्रातः बिना कुछ खाये यात्रा करना कष्ट देता है। कुछ जलपान करके ही यात्रा करना चाहिये। जलको झरनेसे बर्तनमें लेकर स्थिर किये बिना सीधे झरनेसे पीनेसे पतले शौच लगनेका भय रहता है।

मानसरोवर-माहात्म्य

ततो गच्छेत राजेन्द्र मानसं तीर्थमुत्तमम्।
तत्र स्नात्वा नरो राजन् रुद्रलोके महीयते॥

(महा० वन० ८२; पद्म० आदि० २१।८)

'पितामह और सावित्रीतीर्थके बाद मानसरोवरको जाय। वहाँ स्नान करके रुद्रलोकमें प्रतिष्ठित होता है।'

कैलासपर्वते राम मनसा निर्मितं परम्।
ब्रह्मणा नरशार्दूल तेनेदं मानसं सरः॥

(वाल्मी० बाल० २४।८)

विश्वामित्र कहते हैं, 'राम! कैलासपर्वतपर ब्रह्माकी इच्छासे निर्मित एक सरोवर है। मनसे निर्मित होनेके कारण इसका नाम मानस सर या मानसरोवर है।'

कैलास-माहात्म्य

स्कन्दपुराण, काशीखण्ड अ० १३ तथा हरिवंश अ० २०२ (दाक्षिणात्य पाठ) में इसका भगवान् विष्णुके नाभिपद्मसे उत्पन्न होना वर्णित है। देवीभागवत तथा श्रीमद्भागवत ५। १६। २२ में इसे देवता, सिद्ध तथा महात्माओंका निवासस्थल कहा गया है। श्रीमद्भागवत (४। ६) में इसे भगवान् शङ्करका निवास तथा अतीव रमणीय बतलाया गया है—यहाँ मनुष्योंका निवास सम्भव नहीं।

जन्मौषधितपोमन्त्रयोगसिद्धैर्नरेतरैः।
जुष्टं किन्नरगन्धर्वैरप्सरोभिर्वृतं सदा॥

(श्रीमद्भा० ४।६।९)

गोस्वामी तुलसीदासजीने—

परम रम्य गिरिबर कैलासू। सदा जहाँ सिव उमा निवासू॥
सिद्ध तपोधन जोगिजन सुर किंनर मुनि बृंद।
बसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं सिव सुखकंद॥
हरि हर बिमुख धर्म रति नाहीं। ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं॥

—आदि शब्दोंमें इन्हीं पुराण-वचनोंका भाव भर दिया है। कैलासके विस्तृत वर्णनके लिये हरिवंश (दाक्षिणात्य पाठ) के २०४ से २८१ अध्यायोंको देखना चाहिये।

जैनतीर्थ

कैलास जैनतीर्थोंमें भी माना जाता है। यह सिद्धक्षेत्र है। यहाँसे आदिनाथ स्वामी मोक्षको प्राप्त हुए हैं।

मानसरोवर-कैलास-यात्रा

हिमालयकी पर्वतीय यात्राओंमें मानसरोवर-कैलासकी यात्रा ही सबसे कठिन है और इसकी कठिनाईकी

तुलना केवल बदरीनाथसे आगे स्वर्गारोहणकी या मुक्तिनाथकी यात्रासे ही कुछ की जा सकती है; किंतु स्वर्गारोहण या मुक्तिनाथकी यात्रा जब कि गिने-चुने दिनोंकी है, मानसरोवर-कैलासकी यात्रामें यात्रीको लगभग तीन सप्ताह तिब्बतमें ही रहना पड़ता है। केवल यही एक यात्रा है, जिसमें यात्री हिमालयको पूरा पार करता है। दूसरी यात्राओंमें तो वह हिमालयके केवल एक पृष्ठांशके ही दर्शन कर पाता है।

मानसरोवर-कैलास, अमरनाथ, गोमुख, स्वर्गारोहण-जैसे क्षेत्रोंकी यात्रामें—जहाँ यात्रीको समुद्र-स्तरसे १२००० फुट या उससे ऊपर जाना पड़ता है—यात्री यदि आक्सिजन-मास्क साथ ले जाय तो हवा पतली होने एवं हवामें आक्सिजनकी कमीसे होनेवाले श्वासकष्टसे वह बच जायगा। गैस-पात्रके साथ इस मास्कका बोझ लगभग ५ सेर होता है और वैज्ञानिक सामग्री बेचनेवाली कलकत्ते या बम्बईकी कंपनियोंके यहाँ यात्राके उपयुक्त मोड़कर रखनेयोग्य (फोल्डिंग) मास्क सौ रुपयेसे कममें ही मिल जाता है।

मानसरोवर-कैलास पहुँचनेके लिये भारतसे अनेक मार्ग जाते हैं—जैसे कश्मीरसे लद्दाख होकर जानेवाला मार्ग, नेपालसे मुक्तिनाथ होकर जानेवाला मार्ग, डरमा दर्रेसे जानेवाला मार्ग, गङ्गोत्तरीसे होकर जानेवाला मार्ग आदि। किंतु ये मार्ग बहुत लंबे हैं और इनमें कठिनाइयाँ भी बहुत हैं। इन मार्गोंसे निर्जन प्रदेशमें, हिमप्रदेशमें बहुत अधिक चलना पड़ता है। फलतः ये तीर्थयात्रीके सामान्य मार्ग नहीं हैं। तितिक्षु, संग्रहहीन साधु अकेले-दुकेले इन मार्गोंसे यात्रा करते हैं और इनके समीपवर्ती प्रदेशके पर्वतीय व्यापारी भी भेड़, बकरी, खच्चर या घोड़ोंपर सामान लादकर इन मार्गोंसे यदा-कदा आते-जाते हैं। यात्रियोंके लिये सामान्यतः निम्नलिखित तीन ही मार्ग हैं—

१—पूर्वोत्तर रेलवेके टनकपुर स्टेशनसे मोटर-बसद्वारा पिथौरागढ़ (अल्मोड़ा) जाकर फिर वहाँसे पैदल यात्रा करते 'लिपू' नाम दर्रा पार करके जानेवाला मार्ग।

२—उसी रेलवेके काठगोदाम स्टेशनसे मोटर-बसद्वारा कपकोट (अल्मोड़ा) जाकर फिर पैदलयात्रा करते हुए 'ऊटा', 'जयन्ती' तथा 'कुंगरी बिंगरी' घाटियोंको पार करके जानेवाला मार्ग।

३—उत्तर रेलवेके ऋषिकेश स्टेशनसे मोटर-बसद्वारा जोशीमठ जाकर वहाँसे पैदल यात्रा करते हुए 'नीती'की घाटीको पार करके पैदल जानेवाला मार्ग।

मानसरोवर-कैलासके यात्रीको, चाहे वह किसी भी मार्गमें जाय, कहीं कोई पास या परमिट (आज्ञापत्र) नहीं लेना पड़ता। इन तीनों ही मार्गोंमें यात्रीको भारतीय सीमाका जो अन्तिम बाजार मिलता है, वहाँतक उसे ठहरनेके स्थान, भोजनका सामान तथा भोजन बनानेके बर्तन सुविधापूर्वक मिलते रहते हैं। वहाँतक उसे न किसी मार्गदर्शककी आवश्यकता है न कोई अन्य कठिनाई होती है। जो कुली या घोड़ा उसने सामान ढोने अथवा सवारीके लिये साथ लिया है, वही उसके मार्गनिर्देशोंको पर्याप्त है। वैसे पर्वतमें मुख्य एक ही मार्ग होनेसे मार्ग भूलनेका कोई भय नहीं।

जोशीमठवाले मार्गको छोड़कर शेष दो मार्गोंमें कुली तथा सवारी पूरी यात्राके लिये नहीं मिलते। वे निश्चित दूरीके लिये ही मिलते हैं। आगे मार्गोंके विवरणमें सवारी तथा कुली बदलनेके स्थानोंका निर्देश किया गया है। वहाँ नये कुली तथा सवारीकी व्यवस्था करनी पड़ती है और उस व्यवस्थाके लिये कभी-कभी दो-एक दिन रुकना भी पड़ता है।

इन तीनों ही मार्गोंमें भारतीय सीमाका जो अन्तिम बाजार है, वहाँसे तिब्बती भाषाका जानकार एक मार्गदर्शक (गाइड) साथ आवश्य ले लेना पड़ता है; क्योंकि तिब्बतमें कोई हिन्दी या अंग्रेजी जाननेवाला मिलना कठिन है। तिब्बतमें पूरे समय तंबूमें ही रहना होता है, इसलिये किरायेका तंबू भी उसी स्थानसे लेना पड़ेगा और तिब्बती सर्दीसे बचनेके लिये किरायेके चुटके (भारी कम्बल) तथा भोजन बनानेके बर्तन भी वहींसे लेने चाहिये। तिब्बतमें दाल नहीं पकेगी, कोई शाक नहीं मिलेगा, चावल या आटा मिलेगा तो अत्यन्त मँहगा और बड़े कष्टसे। नमकको छोड़कर कोई मसाला नहीं मिलेगा। कहीं-कहीं दूध, मक्खन, दही और मट्ठा मिलेगा, पर सर्वत्र नहीं। अतः तिब्बतमें जितने दिन रहना है, उतने दिनोंके लिये भोजनका पूरा सामान

भारतीय अन्तिम बाजारसे ही साथ ले लेना चाहिये। चावल, आटा, आलू, चीनी, चाय, डब्बेका जमा दूध, मिट्टीका तेल, मसाले, मोमबत्ती आदि जो कुछ आवश्यक हो, सब उसी बाजारसे ले लिया जाना चाहिये। तिब्बतीय क्षेत्रमें कुछ पानेकी आशा नहीं करना चाहिये।

आवश्यक सूचना

(क) मानसरोवर-कैलास-यात्रामें जब आप तिब्बतकी सीमापर पहुँचेंगे, तब कम्यूनिष्ट चीनके सैनिक आपकी तलाशी लेंगे। पूजा-पाठकी पुस्तकोंके अतिरिक्त अन्य कोई भी पुस्तक, नक्शे, समाचार-पत्र-पत्रिका, दूरबीन, कैमरा, बंदूक, पिस्तौल-जैसे अस्त्र वे साथ नहीं ले जाने देते। अतः यदि आपके पास ऐसी सामग्री हो तो भारतीय सीमामें ही छोड़ देनी चाहिये या अन्तिम पत्रालय (डाकघर) से उसे अपने घर पार्सलद्वारा भेज देना चाहिये।

(ख) जहाँसे बर्फ मिलना आरम्भ होता है, वहाँसे भारतीय सीमामें लौटनेतक प्रातः-सायं दोनों समय पूरे मुखपर और हाथोंमें—विशेषतः हथेलीके पृष्ठभागमें वैसलिन अच्छी प्रकार लगाते रहिये। ऐसा नहीं करनेसे हाथ फट सकते हैं और मुख—विशेषतः नाकपर हिमदंशके घाव हो सकते हैं।

(ग) घाटी पार करनेके दिन प्रातः सूर्योदयसे जितना पहले चल सकें चल देना चाहिये। सूर्यकी धूप तेज होनेपर बर्फ नरम हो जायगी और उसमें पैर गड़ने लगेंगे। बर्फपर धूप पड़नेसे जो चमक होती है, उससे नेत्रोंको बहुत पीड़ा होती है। ऐसे समय धूपका चश्मा लगानेसे यह कष्ट नहीं होता।

नोट—तिब्बतीय क्षेत्रमें कुली नहीं मिलते, घोड़े भी कम ही मिलते हैं। सामान ढोने तथा सवारीके लिये याक (चमर—भैंसकी जातिका पशु, जिसकी पूँछसे चँवर बनता है) मिलता है।

यात्रा-मार्ग

१—लीपू मार्ग।

१— **रेलवे-स्टेशन टनकपुर**—डाकबँगला, बाजार।

२— **पिथौरागढ़**—टनकपुरसे मोटर-बसद्वारा ९५ मील, डाकबँगला, बाजार।

३— **कनालीछीना**—१४ मील, डाकबँगला।
सात—१ मील।
मलान—२ मील''

४— **आस्कोट**—९ मील, डाकबँगला, धर्मशाला।
जौलजेबी—५ मील, काली-गौरी नदियोंका संगम, बाजार।
यह संगमक्षेत्र पवित्र माना जाता है।

५— **बलावाकोट**—६॥ मील, डाकबँगला।
कालका—५ मील।

६— **धारचूला**—डाकबँगला, धर्मशाला। यहाँ कुली और सवारी बदलना पड़ता है।

७— **खेला**—१२ मील अथवा नीचेके मार्गसे येला ६ मील।

८— **पांगु**—७ मील—३ मील कड़ी चढ़ाई, धर्मशाला।
सूसा—२ मील; यहाँसे ३ मीलपर नारायण स्वामीका आश्रम।
सिरधंग—२ मील।

९— **सिरखा**—१ मील, धर्मशाला।

१०— **जुपती**—९ मील।

११— **मालपा**—८ मीन, धर्मशाला; किंतु कोई गाँव नहीं।

१२— **बुड्डी**—८ मील।

१३— **गरब्यांग**—५ मील, धर्मशाला, डाकबँगला। वह भारतीय सीमाका अन्तिम गाँव तथा बाजार है। यहींसे सब सामान ले जाना होगा। यहीं भारतका अन्तिम पोस्टआफिस है।

१४— **कालापानी**—१२ मील, धर्मशाला; परंतु कोई बस्ती नहीं। पता लगा था कि गरब्यांग गाँव पृथ्वीमें धँस रहा है—उजाड़ दिया गया है; अतः धारचूलासे पता लगा लेना चाहिये।

१५— **संगचुम**—६ मील, बर्फसे घिरा मैदान।

१६— **लीपू घाटी**—३ मील बर्फीली कड़ी चढ़ाई।

१७— **पाला**—५ मील मैदान, कड़ी उतराई, धर्मशाला।

१८— **तकलाकोट**—५ मील तिब्बतका पहला बाजार। यहाँसे सवारी बदलनी होती है। यहाँसे १६ मील दूर कोचरनाथ तीर्थ है। वहाँ श्रीराम, लक्ष्मण, जानकीकी भव्य मूर्तियाँ हैं। यात्री प्रातः घोड़ेसे

जाकर शामतक फिर लौट आते हैं।

१९— **मांचा**—१२ मील मैदान (अथवा गौरी उडियार १२ मील)।

२०— **राक्षसताल**—१२ मील मैदान।

२१— **मानसरोवरके तटपर गुसुल**—६ मील, मैदान।

२२— **मानसरोवरके तटपर ज्यूगुम्फा**—८ मील, मैदान।

२३— **बरखा**—१० मील, गाँव।

२४— **बाँगटू**—४ मील, मैदान, मंडी।

२५— **दरचिन**—४ मील मैदान, मंडी यहाँसे कैलास-परिक्रमा प्रारम्भ होती है, सवारी बदलना होगा।

कैलास-परिक्रमा—

१— **दरचिनसे लंडीफू (नन्दी-गुफा)**—४ मील मार्गसे; परन्तु मार्गसे १ मील और सीधी चढ़ाई करके उत्तर आना पड़ता है।

२— **डेरफू** ८ मील—यहाँसे सिंध नदीका उद्गम १ मील और ऊपर है।

३— **गौरीकुण्ड** ३ मील—कड़ी चढ़ाई, समुद्र-स्तरसे १९००० फुट ऊपर।

४— **जंडलफू**—११ मील, दो मील कड़ी उतराई।

५— **दरचिन**—६ मील।

नोट—जो स्थान बिना नंबरके हैं, वहाँ दूकानें हैं और यात्री ठहर सकते हैं। नंबरवाले पड़ावोंपर न ठहरकर यात्री कुछ अधिक चलना चाहे तो उन स्थानोंपर भी ठहर सकता है।

यात्राका समय

इस मार्गसे यात्रा करना हो तो यात्रीको पहिली जूनसे १० जूनके बीचमें टनकपुर पहुँच जाना चाहिये। इस मार्गके लिये यही सर्वोत्तम समय होगा। वर्षामें यह मार्ग अनेक स्थानोंपर खराब हो जाता है।

मार्गकी विशेषता

यह मार्ग अपेक्षाकृत सबसे छोटा मार्ग है। इसमें एक ही बर्फीली घाटी पार करना पड़ता है और वह 'लीपू' का मार्ग अन्य मार्गोंसे १५-२० दिन पहले खुल भी जाता है; किंतु इस मार्गमें चढ़ाई-उतराई कुछ अधिक ही पड़ती है और मार्गमें कोई अन्य तीर्थ, दर्शनीय स्थान अथवा आकर्षक दृश्य नहीं है।

२—जौहर (जयन्ती)-मार्ग—

१— **रेलवे स्टेशन काठगोदाम**-डाकबँगला, बाजार[1]

२— **मोटर-बससे सीधे कपकोट**-१३८ मील[2]

मानी—३ मील

देवीबगड़—४ मील

३— **शामा**—५ मील डाकबँगला (कड़ी चढ़ाई, आगे उतराई)।

रमारी—५ मील "

तेजम—३ मील "

४— **कुइटी**—३ मील "

गिरगाँव—५ मील "

रथपानी—२ मील वन

कालमुनि—२ मील वन

तिक्सेन (मुनस्यारी)—४ मील, यहाँ सवारी बदलेगी।

५— **राँती (मुनस्थारी)**—२ मील, डाकबँगला।

६— **बोगडयार**—१० मील, डाकबँगला, मैदान।

७— **रीलकोट**[3]—७ मील धर्मशाला।

८— **मिलम**[4]—९ मील धर्मशाला; यही भारतीय सीमाका

---

१. यात्री काठगोदामसे मोटर-बसद्वारा अल्मोड़ा जा सकते हैं। अल्मोड़ेसे मोटर-बसके रास्ते सोमेश्वर, गरुड़ होते बागेश्वर ६० मील है। बागेश्वरमें सरयू-स्नान किया जाता है। बागेश्वरसे कपकोट १४ मील है। मोटर-बसका मार्ग बन गया है।

२. कपकोटसे सरयू नदीके उद्गमको जाया जा सकता है। उस स्थानका नाम है 'सौधार तीर्थ' है। वहाँ कार्तिकमें बहुत-से पर्वतीय तीर्थयात्री जाते हैं। वह मार्ग इस प्रकार है—कपकोट चलकर खार-बगड़ ५ मील, सुगमगढ़ ४ मील, भितलतुम ६ मील, सौधार ४ मील। सामान्य यात्री भितलतुमतक ही जाते हैं। वहाँतक दूकानें और ठहरनेके स्थान हैं। आगे ४ मील वन है। भोजनका सामान भितलतुमसे लाना पड़ता है। पर्वतोंसे सैकड़ों धाराएँ गिरती हैं, जो आगे एक होकर सरयू बन जाती हैं। लोगोंका विश्वास है कि भूमिके भीतरसे मानसरोवरका ही जल आकर वहाँ इतनी धाराओंमें प्रकट होता है। सौधारसे इस मार्गसे लौटना पड़ता है।

३. यहाँसे यात्रा नन्दादेवी चोटी देखने १० मील दूर जाकर उसी दिन लौट आ सकते हैं।

४. यहाँसे यात्री ४ मील दूर शाण्डिल्यकुण्डकी यात्रा कर सकते हैं। शाण्डिल्यकुण्डसे २ मील ऊपर मिलम ग्लेशियर पार करनेपर सूर्यकुण्ड आता है, इसे सिद्धक्षेत्र कहा जाता है। त्रिशूली चोटीकी यात्रा भी यहाँसे होती है। ये यात्राएँ करके यात्री उसी दिन मिलम लौट आते हैं।

अन्तिम बाजार तथा पोस्ट-आफिस है। यहींसे सब सामान ले जाना होगा। सवारी-कुली बदलेंगे।

९— **पुंग**—९ मील, धर्मशाला, मैदान (चढ़ाई)।

१०— **छिरचुन**—२० मील मैदान; (ऊटा, जयन्ती तथा कुंगरी-बिंगरी—ये १८००० फुट ऊँची तीन चोटियाँ पार करनी पड़ती हैं। तीनोंमें ही कड़ी चढ़ाई-उतराई है। वैसे एक दिनमें तीनों चोटियाँ पार न हो सकें तो दो या तीन दिनमें भी पार कर सकते हैं और किसी भी चोटीको पार करके नीचे तंबू लगाकर ठहर सकते हैं। बर्फीला मार्ग है यहाँ।

११— **ठाजांग**—१० मील, मैदान।

१२— **मानीथंगा**—७ मील, मैदान।

१३— **खिंगलुंग**—२४ मील, मैदान (इसमें १२ मीलतक पानी नहीं है)। यहाँ गन्धकके गरम पानीका सुन्दर झरना है। बौद्ध मन्दिर है।

नोट—ठाजांग दूसरा मार्ग भी है—गोमचीन ८ मील, चुगड़ १२ मील, जुटम १० मील, तीर्थपुरी १२ मील।

१४— **गुरत्यांग**—१० मील, बौद्धमन्दिर।

१५— **तीर्थपुरी**—६ मील, बौद्धमन्दिर गरम पानीका सोता।

१६— **शिलचक**—२० मील, मैदान (बीचमें भी मैदानमें जलकी अनेक स्थानपर सुविधा होनेसे ठहर सकते हैं)।

१७— **लंडीफू (नन्दीगुफा)**—२० मील, बौद्धमन्दिर।

१८— **डेरफू**—८ मील, बौद्धमन्दिर।

१९— **गौरीकुण्ड**—३ मील (कड़ी चढ़ाई)।

२०— **जंडलफू**—११ मील (२ मील उतराई), बौद्धमन्दिर।

२१— **बाँगटू**—८ मील, मैदान, मंडी।

२२— **ज्यूगुंफा-मानसरोवरतट**—१२ मील।

२३— **बरखा**—१२ मील, गाँव।

२४— **ज्ञानिमा मंडी या डंचू**—२२ मील (यहाँसे ठाजांग, छिरचुन होकर ऊपर सूचित मार्गसे लौटना है। यहाँ सवारी बदलेगी।

यात्राका समय—

इस मार्गकी चोटियोंकी बरफ सबसे देरमें चलने योग्य होती है। अतः २५ जूनसे १५ अगस्ततक किसी समय यात्री काठगोदाम स्टेशन पहुँचकर यात्रा प्रारम्भ कर सकते हैं। २५ जूनसे पहले इस मार्गसे यात्रा करनेपर मिलममें रुककर मार्ग खुलनेकी प्रतीक्षा करना पड़ सकता है।

मार्गकी विशेषता—

यह मार्ग अपेक्षा सबसे लंबा है। इसमें समय भी कुछ अधिक लगता है और एक साथ तीन घाटियाँ पार करनी पड़ती हैं, जो अन्य मार्गोंकी घाटियोंसे ऊँची भी हैं; किंतु इन अन्तिम घाटीके अतिरिक्त और पूरा मार्ग दूसरे मार्गोंकी अपेक्षा उत्तम है। चढ़ाई-उतराई कम है। मार्गके दृश्य सुन्दर हैं तथा इस मार्गसे आनेपर कई सुन्दर स्थान तथा तीर्थ भी मार्गके आस-पास मिल जाते हैं।

३—नीती घाटी (बदरीनाथकी ओरसे जानेवाला मार्ग—

१— **रेलवे स्टेशन ऋषिकेश**—धर्मशाला, अच्छा बाजार।

२— **मोटर-बसद्वारा जोशीमठ**—१४५ मील।

३— **तपोवन**—६ मील।

४— **सुराई ठोटा**—७ मील।

५— **जुम्मा**—११ मील (यहाँसे द्रोणगिरि पर्वतके दर्शन होते हैं।)

६— **मलांरी**—६ मील „

७— **बांबा**—७ मील „

८— **नीती**—३ मील (यही भारतीय सीमाका अन्तिम ग्राम है। यहींसे सब सामान लेना होगा।)

९— **होती घाटी**—५ मील (कड़ी बर्फीली चढ़ाई-उतराई)।

१०— **होती**—६ मील (यहाँ चीनी सेनाकी चौकी है)।

नोट—होतीसे दो मार्ग हैं, एक मार्ग है—शिवचुलम् खिंगलुंग होकर तीर्थपुरी १६ मील और दूसरा मार्ग नीचे है—

११— **ज्यूताल**—११ मील।

१२— **झ्यूंगुल**—११ मील „

१३— **अलंगतारा**—११ मील „

१४— **गोजीमरू**—९ मील „

१५— **देंगो**—११ मील (यहाँ सवारी बदलेगी)।

१६— **गुरुज्ञाम (मिशर)**—१० मील।

१७— **तीर्थपुरी**—६ मील गरम पानीका झरना।

नोट—यहाँसे आगेका मार्ग वही है, जो मार्ग नं० २ (जौहर-मार्ग) में पड़ाव नं० १५ से नं० २३ तक बताया गया है। उसके बाद इसी मार्गसे लौटनेके लिये नं० २३ के पड़ाव बरखासे ८ मील दरचिन आना पड़ता है और वहाँसे १८ मील शिलचक तथा आगे २० मीलतक तीर्थपुरी है। दरचिनसे तीर्थपुरीतक ३८ मील केवल मैदान है, जिसमें कहीं भी जलकी सुविधा देखकर ठहर सकते हैं।

विशेष नोट—इन सब मार्गोंमें जो स्थानोंकी दूरी दी गयी है, उसमें तिब्बतीय क्षेत्रकी दूरी केवल अनुमानसे दी गयी है। वहाँ न मीलके पत्थर हैं, न दूरी जाननेके ठीक साधन। अतः दूरीके सम्बन्धमें यदि हमारा अनुमान कुछ भ्रान्त भी हुआ हो तो क्षम्य है।

यात्राका समय—

यह मार्ग भी जौहर-मार्गके लगभग साथ ही खुलता है, अतः जूनके अन्तिम सप्ताहसे लेकर अगस्तके मध्यतक इस मार्गसे यात्रा हो सकती है।

मार्गकी विशेषता—

इस मार्गसे जानेवाला यात्री हरिद्वार, ऋषिकेश, देव-प्रयाग तथा बदरीनाथके मार्गके अन्य तीर्थोंकी यात्राका लाभ भी उठा सकता है। वह बदरीनाथकी और यदि जूनके प्रारम्भमें यात्रा प्रारम्भ कर दे तो केदारनाथकी यात्रा करके तब आगे जा सकता है। इस मार्गमें पैदल सबसे कम चलना पड़ता है और व्यय भी कम लगता है। समय कम लगता ही है। किंतु जोशीमठके आगेका पैदल मार्ग पर्याप्त कठिन है, चढ़ाई-उतराई भी अधिक है। यात्रीको मोटर-बस छोड़नेके तीन ही चार दिन बाद हिमशिखरपर चढ़ना पड़ता है और तिब्बतीय प्रदेशकी यात्रा करनी पड़ती है, जहाँ वायु पर्याप्त पतली है और उसमें आक्सिजन कम है। इससे यात्रीको कष्ट अधिक प्रतीत होता ही है।

नोट—यह आवश्यक नहीं है कि यात्री जिस मार्गसे जाय, उसी मार्गसे लौटे। वह चाहे जिस मार्गसे लौट सकता है; किंतु यदि उसके पास अपना तंबू तथा कम्बल आदि पर्याप्त नहीं हैं और उसने भारतीय सीमाके अन्तिम बाजारसे किरायेके तंबू आदि लिये हैं तो उसे उसी मार्गसे लौटना पड़ता है; क्योंकि तंबू, कम्बल किरायेपर देनेवाले व्यापारी दूसरे मार्गमें छोड़नेके लिये सामान नहीं दे सकते।

विशेष बातें

मानसरोवर-कैलास-यात्रामें लगभग डेढ़-दो महीनेका समय लगता है। लगभग साढ़े चार सौ मील पैदल या घोड़े, याक आदिकी पीठपर चलना पड़ता है। यात्री अपना भोजन आप स्वयं बना ले और मार्गदर्शक भारतीय सीमाके अन्तिम स्थानसे ले तो यह यात्रा लगभग चार-पाँच सौ रुपयेमें सुविधापूर्वक कर सकता है। जिनका शरीर बहुत मोटा है, जिन्हें कोई श्वासका रोग यह हृदयरोग हो अथवा संग्रहणी-जैसा कोई रोग हो, उन्हें यह यात्रा नहीं करनी चाहिये। छोटे बालकोंको यात्रामें साथ नहीं लेना चाहिये और अत्यन्त वृद्धोंके लिये भी यह यात्रा कठिन है। तिब्बतमें अब हत्या या डकैतीका कोई भय नहीं रहा है। अपना सामान सम्हालकर सावधानीसे रखना चाहिये; क्योंकि चोरीका भय तो प्रायः सर्वत्र ही रहता है। एक-दो संस्थाएँ और कुछ साधु-संन्यासी भी इस यात्राका प्रबन्ध करते हैं। वे अपने साथ यात्रीको ले जाते हैं या यात्रीकी व्यवस्था कर देते हैं। ऐसी किसी व्यवस्थाके साथ जानेपर व्यय अधिक पड़ता है; किंतु भोजनादिकी सुविधा रहती है। यह आवश्यक नहीं है कि यात्रियोंका समुदाय हो, तभी यात्रा की जाय। अकेला यात्री भी मानसरोवर-कैलासकी यात्रा मजेमें कर सकता है। अन्तर इतना ही पड़ता है कि आपके साथ कुछ साथी होंगे तो व्यय कम होगा—तंबू-किराया, मार्गदर्शकका वेतन आदि सबमें बँट जायगा; और आप अकेले होंगे तो व्यय कुछ अधिक होगा।

मानसरोवर

पूरे हिमालयको पार करके, तिब्बती पठारमें लगभग ३० मील जानेपर पर्वतोंसे घिरे दो महान् सरोवर मिलते हैं। मनुष्यके दोनों नेत्रोंके समान वे स्थित हैं और उनके मध्यमें नासिकाके समान ऊपर उठी पर्वतीय

भूमि है, जो दोनोंको पृथक् करती है। इनमें एक है राक्षसताल और दूसरा मानसरोवर। राक्षसताल विस्तारमें बहुत बड़ा है, वह गोल या चौकोर नहीं है। उसकी कई भुजाएँ मीलों दूरतक टेढ़ी-मेढ़ी होकर पर्वतोंमें चली गयी हैं। कहा जाता है कि किसी समय राक्षसराज रावणने वहीं खड़े होकर देवाधिदेव भगवान् शङ्करकी आराधना की थी। दूसरा है सुप्रसिद्ध मानसरोवर। उसका जल अत्यन्त स्वच्छ और अद्‌भुत नीलाभ है। उसका आकार लगभग गोल या अण्डाकार है उसका बाहरी घेरा अनेक विद्वानोंके मतसे २२ मीलका है। मानसरोवर ५१ शक्तिपीठोंमें १ पीठ है। सतीकी दाहिनी हथेली इसीमें गिरी थी।

मानसरोवरमें हंस बहुत हैं—राजहंस भी हैं और सामान्य हंस भी। सामान्य हंसोंकी दो जातियाँ हैं, एक मटमैले सफेद रंगके और दूसरे बादामी रंगके हैं। वे आकारमें बतखोंसे बहुत मिलते हैं; किंतु इनकी चोंचें बतखोंसे पतली हैं, पेटका भाग भी पतला है और पर्याप्त ऊँचाईपर दूरतक उड़ते हैं।

मानसरोवरमें मोती हैं या नहीं, पता नहीं; किंतु तटपर उनके होनेका कोई चिह्न नहीं। कमल उसमें सर्वथा नहीं हैं, एक जातिकी सिवार अवश्य है। किसी समय मानसरोवरका जल राक्षसतालमें जाता था। जलधाराका वह स्थान तो अब भी है; किंतु वह भाग अब ऊँचा हो गया है। प्रत्यक्षमें मानसरोवरसे कोई नदी या छोटा झरना भी नहीं निकलता। किंतु मानसरोवर पर्याप्त उच्चप्रदेशमें है। कुछ अन्वेषक अंग्रेज विद्वानोंका मत है कि कई नदियाँ मानसरोवरसे ही निकलती हैं, जिनमें सरयू और ब्रह्मपुत्रके नाम उल्लेखनीय हैं। मानसरोवरका जल भूमिके भीतरके मार्गोंसे मीलों दूर जाकर उन नदियोंके स्रोतके रूपमें व्यक्त होता है।

मानसरोवरके आसपास या कैलासपर कहीं कोई वृक्ष नहीं, कोई पुष्प नहीं। सच तो यह है कि उस क्षेत्रमें छोटी घास और अधिक-से-अधिक फुट, सवा फुटतक ऊँची उठनेवाली एक कँटीली झाड़ीको छोड़कर और कोई पौधा नहीं होता। मानसरोवरका जल सामान्य शीतल है। उसमें मजेमें स्नान किया जा सकता है। उसके तटपर रंग-बिरंगे पत्थर और कभी-कभी स्फटिकके भी छोटे टुकड़े पाये जाते हैं।

कैलास

मानसरोवरसे कैलास लगभग २० मील दूर है। वैसे उसके दर्शन मानसरोवर पहुँचनेसे बहुत पूर्व ही होने लगते हैं। जौहर-मार्गमें तो कुंगरीविंगरीकी चोटीपर पहुँचते ही यात्रीको कैलासके दर्शन हो जाते हैं—यदि उस समय आकाशमें बादल न हों। तिब्बतके लोगोंमें कैलासके प्रति अपार श्रद्धा है। अनेक तिब्बतीय श्रद्धालु पूरे कैलासकी ३२ मीलकी परिक्रमा दण्डवत् प्रणिपात करते हुए पूरी करते हैं।

भगवान् शङ्करका दिव्य धाम कैलास यही है या और कोई—यह विवाद ही व्यर्थ है। वह कैलास तो दिव्यधाम है, अपार्थिव लोक है; किंतु जैसे साकेतका प्रतिरूप अयोध्याधाम एवं गोलोकका प्रतिरूप व्रजधाम इस धरापर प्राप्य हैं, वैसे ही यह कैलास उस दिव्य कैलासका प्रतिरूप है—ऐसी अपनी धारणा है। इस कैलासके दर्शन करते ही यह बात स्पष्ट हृदयमें आ जाती है कि वह असामान्य पर्वत है—देखे हुए समस्त हिमशिखरोंसे सर्वथा भिन्न और दिव्य।

पूरे कैलासकी आकृति एक विराट् शिवलिङ्ग-जैसी है, जो पर्वतोंसे बने एक षोडशदल कमलके मध्य रखा है। ये कमलाकार शृङ्गवाले पर्वत भी इस प्रकार हैं कि वे उस शिवलिङ्गके लिये अर्घा बने जान पड़ते हैं। उनके चौदह शृङ्ग तो गिने जा सकते हैं; किन्तु सम्मुखके दो शृङ्ग झुककर लंबे हो गये हैं और उन्हें ध्यान देनेपर ही लक्षित किया जा सकता है। उनका यह झुका भाग ऐसा हो गया है जैसे अर्घेका आगेका लंबा भाग। इसी भागसे कैलासका जल गौरीकुण्डमें गिरता है। शिवलिङ्गाकार कैलासपर्वत आसपासके समस्त शिखरोंसे ऊँचा है। वह कसौटीके टोस काले पत्थरका है और ऊपरसे नीचेतक सदा दुग्धोज्ज्वल बरफसे ढका रहता है। किंतु उससे लगे हुए वे पर्वत जिनके शिखर कमलाकार हो रहे हैं, कच्चे लाल मटमैले पत्थरके हैं। आसपासके सभी पर्वत इसी प्रकार कच्चे पत्थरोंके हैं। कैलास अकेला ही वहाँ ठोस काले पत्थरका शिखर है। कमलाकार शिखर क्योंकि कच्चे पत्थरके हैं, उनके शिखर गिरते रहते हैं; एक ओरकी चार पंखड़ियों-जैसे

शिखर इतने गिर गये हैं कि अब उनके शिखरोंके भाग कदाचित् कुछ वर्षोंमें बराबर हो जायँ।

एक बात और ध्यान देनेयोग्य है कि कैलासके शिखरके चारों कोनोंमें ऐसी मन्दिराकृति प्राकृतिक रूपसे बनी है, जैसी बहुत-से मन्दिरोंके शिखरोंपर चारों ओर बनी होती है।

कैलासकी परिक्रमा ३२ मीलकी है, जिसे यात्री प्रायः ३ दिनोंमें पूरा करते हैं। यह परिक्रमा कैलासशिखरकी उसके चारों ओरके कमलाकार शिखरोंके साथ होती है; क्योंकि कैलासशिखर तो अस्पृश्य है और उसका स्पर्श यात्रा मार्गसे लगभग डेढ़ मील सीधी चढ़ाई पार करके ही किया जा सकता है और यह चढ़ाई पर्वतारोहणकी विशिष्ट तैयारीके बिना शक्य नहीं है। कैलासके शिखरकी ऊँचाई समुद्र-स्तरसे १९००० फुट कही जाती है।

कैलासके दर्शन एवं परिक्रमा करनेपर जो अद्भुत शान्ति एवं पवित्रताका अनुभव होता है, वह तो स्वयं अनुभवकी वस्तु है।

आदिबदरी

कहा जाता है कि श्रीबदरीनाथजीकी मूर्ति पहले तिब्बतीय क्षेत्रमें थी। वहाँसे आदि शंकराचार्यजी श्रीविग्रहको भारत ले आये। वह स्थान आदिबदरी कहा जाता है और तिब्बतमें उसे धुलिंगमठ कहते हैं। श्रीबदरीनाथजीसे 'माता' घाटी पार करके एक मार्ग यहाँ जाता है, किंतु यह मार्ग बहुत कठिन और कष्टप्रद है। कैलास जानेके लिये 'नीनी घाटी' का मार्ग बताया गया है। उस मार्गसे शिवचुलम् जाकर वहाँसे थुलिंगमठ (आदिबदरी) जा सकते हैं। यह स्थान अब भी बहुत रमणीक है। प्राचीन भव्य विशाल मूर्तियाँ यहाँ हैं।

पूर्णगिरि

पूर्वोत्तर रेलवेकी एक शाखा पीलीभीतसे टनकपुरतक जाती है। टनकपुरसे लगभग नौ मील दूर शारदा नदीके तटपर नैपाल राज्यकी सीमाके अन्तर्गत पूर्णगिरि नामक पर्वत है। मार्गमें टुन्नास नामक स्थानपर दो धर्मशालाएँ हैं। यह पूरा पर्वत देवीका स्वरूप माना जाता है। इसपरके वृक्ष नहीं काटे जाते और रजस्वला स्त्री या अपवित्र पुरुष इसपर नहीं चढ़ सकता। पर्वतकी चढ़ाई कड़ी है। ऊपर अनेक मन्दिर हैं। सबसे उच्च स्थानपर महाकालीका स्थान है। प्राचीन पीठ ढका रहता है, प्रार्थना करनेपर पंडाजी उसके दर्शन करा देते हैं। नवरात्रमें दूर-दूरसे यात्री यहाँ आते हैं।

नैनीताल

उत्तरप्रदेशका यह प्रसिद्ध शीतल स्थान है। काठगोदाम रेलवे स्टेशनसे यहाँतक मोटर-बस जाती है। काठगोदामसे ही अल्मोड़ाको भी बसका मार्ग गया है।

नैनीतालमें तालके तटपर नैनीदेवीका मन्दिर है। वहीं शिवमन्दिर भी है। तालकी दूसरी ओर पाषाणीदेवीका मन्दिर है। ये दोनों देवीमन्दिर इस प्रदेशमें बहुत पूज्य माने जाते हैं।

भीमताल

नैनीतालसे ११ मील दूर यह स्थान है। भीमताल सुविस्तृत ताल है। उसके तटपर भीमेश्वर नामका शिवमन्दिर है। मन्दिरसे १ फर्लांग उत्तर कर्कोटक शिखर है। वहाँ कर्कोटक नामक पुराण प्रसिद्ध नागकी बाँबी है। भीमेश्वरके पास सप्तर्षियोंके नामपर सात पर्वत-शृङ्ग हैं।

छोटा कैलास—भीमेश्वरसे पूर्वोत्तर १२ मीलपर यह शिखर है। शिवरात्रिको इसपर मेला लगता है। कहते हैं कि इस शिखरपर भगवान् शंकरने पार्वतीजीको योगप्रणालियाँ सुनायी थीं।

उज्जनक

नैनीताल जिलेमें काशीपुर प्रख्यात नगर है। वहाँतक बस जाती है। काशीपुरसे एक मील पूर्व उज्जनक स्थान है। यहाँपर भीमशङ्कर शिवका विशाल मन्दिर है। कुछ विद्वानोंके मतसे यही ज्योतिर्लिङ्ग भीमशङ्करका स्थान है। वे विद्वान् इसी प्रदेशको प्राचीन कामरूप तथा डाकिनी देश बतलाते हैं।

इस मन्दिरका शिवलिङ्ग अत्यन्त विशाल है। वह इतना ऊँचा है कि मन्दिरकी दूसरी मंजिलतक चला गया है। वह मोटा भी इतना है कि दोनों बाँहोंसे भेंटा नहीं जा सकता। मन्दिरके पूर्वभागमें भैरव-मन्दिर है। मन्दिरके बाहर शिवगङ्गाकुण्ड है। कुण्डके पास कोसी नदीकी एक नहर है और उसके भी पूर्व बहुला नदी है। मन्दिरके पश्चिम भगवती बालसुन्दरीका मन्दिर है। यहाँ शिवरात्रि तथा चैत्रशुक्ला अष्टमीको मेला लगता है। मन्दिरके चारों ओर १०८ रुद्र हैं। ये लिङ्ग-मूर्तियाँ चारों ओरके टीलोंकी खुदाईमें मिली हैं। इनमें जागेश्वर तथा हरिशंकरके मन्दिर क्रमशः आग्नेय तथा दक्षिणमें हैं। भीमशङ्कर लिङ्ग बहुत मोटा होनेसे लोग उसे मोटेश्वरनाथके नामसे भी पुकारते हैं। देवी-मन्दिरके पश्चिम एक प्राचीन दुर्गका स्थान है। उसे 'किला' कहते हैं। कहा जाता है कि यहीं द्रोणाचार्यने कौरव-पाण्डवोंको धनुर्विद्या सिखलायी थी। कुछ विद्वान् यह भी कहते हैं कि द्रोणाचार्यजीने भीमसेनद्वारा इस लिङ्गकी स्थापना करवायी थी। किलेके पश्चिम भागमें द्रोणसागर नामक विस्तृत सरोवर है। किलेके पश्चिम भागमें ही एक स्थान श्रवणकुमारका भी है। तीर्थाटन करते हुए श्रवणकुमार अपने माता-पिताके साथ कुछ काल वहाँ रहे थे।

अल्मोड़ा

काठगोदाम स्टेशनसे अल्मोड़ा मोटर-बस जाती है। नगरसे आठ मील दूर काषाय पर्वतपर कौशिकी देवीका मन्दिर है। शुम्भ-निशुम्भ दैत्योंके नाशके लिये जगदम्बा पार्वतीके शरीरसे कौशिकीदेवी प्रकट हुईं,' यह कथा दुर्गासप्तशतीमें है।

जागेश्वर

(लेखक—श्रीसुतीक्ष्णमुनिजी उदासीन)

* अल्मोड़ासे ४ मील चितई, ४ मील बड़ा छीना, ६ मील पनुआ नाला तथा १ मील मीरतोला पोस्टआफिसके पास यशोदामाईका बनवाया उत्तर वृन्दावनके नामसे प्रसिद्ध एक रमणीक आश्रम है। आगे तीन मील बाद चढ़ाईके शिखरपर वृद्ध जागेश्वरका छोटा-सा प्राचीन मन्दिर है। वहाँसे १॥ मीलकी उतराईपर देवदारके सघन वनके मध्य नदीके तटपर श्रीजागेश्वरनाथजीका मन्दिर तथा और भी कई दर्शनीय देवमन्दिर हैं। जागेश्वरनाथको ही नागेश ज्योतिर्लिङ्ग भी कहते हैं। स्कन्दपुराणमें इनकी कथा तथा इनका माहात्म्य आया है। इनके आस-पास पर्वतीय स्थलोंमें बेनीनाग, धौलेनाग, कालियानाग आदि कई नागोंके स्मारकस्थल हैं। उन सबके जागेश्वर (नागेश्वर) ईश माने जाते हैं।

* अल्मोड़ा जिलेका सदर स्थान है। यहाँ नन्दादेवी, केसरदेवी, शङ्कर, सूर्यनारायण आदि कई देवमन्दिर हैं। अल्मोड़ासे ७४ मील ऊपर १३-१४ हजार फुटकी ऊँचाईपर पिंडरा ग्लेशियर (हिमप्रवाह) है।

बागेश्वर

यहाँ पहुँचनेके लिये लखनऊ, बरेली होकर जानेवाली उत्तर रेलवेकी गाड़ीसे काठगोदाम पहुँचना होता है। आगे मोटर लारीद्वारा १२ मील जानेपर भुवाली नामकी बस्ती मिलती है। यहाँपर सन् १९१२ से क्षय रोगसे पीड़ित व्यक्तियोंके लिये सैनिटोरियम (आरोग्यभवन) बना हुआ है। नैनीताल यहाँसे ७ मील पड़ता है। आगे गरम पानी १६ मील, रानीखेत २१ मील, सोमेश्वर १८ मील है। सोमेश्वरसे पैदल मार्गद्वारा प्यारा-पानी होते हुए १४ मील जानेपर सरयू नदी एवं गोमती नदीके संगमपर अल्मोड़े जिलेमें बागेश्वर नामका बड़ा बाजार आता है। अब तो सोमेश्वरसे आगे गरुड़ होकर सीधी मोटर भी काठगोदाम या हलद्वानी मंडीसे यहाँपर आती है।

सम्पूर्ण हिमालय १५०० मील लंबा माना जाता है। इसे नैपाल, केदार, जालन्धर, कश्मीर तथा कूर्माचल—५ भागोंमें विभक्त किया गया है। इसी कूर्माचलकी स्थिति अल्मोड़ा, नैनीताल, कुमायूँ जिलोंमें आजकल मानी जाती है। इसके रजतमय चमचमाते शिखर तथा हरितिमासम्पन्न ऊँची-नीची विषम पर्वतमालाओंके नयनाभिराम सुन्दर दृश्योंको देखनेके लिये सहस्रों व्यक्ति प्रतिवर्ष आया करते हैं।

श्रीबागेश्वरनाथकी प्राचीन मूर्ति अच्छी मान्यता-वाली है।

सौधार

यह सरयूका उद्गम-तीर्थ है। वैसे तो माना जाता है कि सरयू मानसरोवरसे निकली हैं; किन्तु मानसरोवरसे प्रत्यक्ष कोई नदी नहीं निकली है। अनेक भूतत्त्वज्ञ विद्वानोंका मत है कि मानसरोवर बहुत उच्चभूमिपर है। उससे कई नदियोंका उद्भव होता है, जो भूमिके भीतर पर्याप्त दूर जाकर प्रकट होती हैं। श्रीमद्भागवतमें सरयू-उद्गमके सम्बन्धमें आता है— **'यतः सरयुरास्रवत्'** सचमुच सौधारमें चारों ओर पर्वतोंसे सैकड़ों झरने गिरते हैं और वे ही सरयूकी धारा बन जाते हैं।

काठगोदाम रेलवे स्टेशनसे मोटर-बस सोमेश्वर, गरुड़ तथा नागेश्वर होती कपकोटतक जाती है। कपकोटसे आगे पैदल मार्ग इस प्रकार है—

कपकोटसे— खारबगढ़ ५ मील
सुमगढ़ ४ मील
त्रितलतुम ६ मील
सौधार ४ मील

सामान्य यात्री त्रितल तुमतक ही आते हैं। आगे जाना हो तो त्रितलतुमसे भोजनका सामान साथ ले जाना चाहिये। आगे ४ मील वन है।

अमरनाथ (कश्मीर)

अमरनाथका परम पावन क्षेत्र कश्मीरमें पड़ता है। कश्मीर जानेके लिये आपको अपने यहाँसे जिलाधीशसे अनुमति-पत्र (परमिट) लेना पड़ेगा। प्रार्थना करनेपर यह अनुमति-पत्र सरलतासे मिल जाता है। प्रायः प्रत्येक रेलवे-स्टेशनसे कश्मीरकी राजधानी श्रीनगर जानेके लिये तीन महीनेके रिटर्न टिकट अच्छी रियायतके साथ मिल जाते हैं। इस सम्बन्धमें अपने पासके स्टेशनपर पता लगा लेना चाहिये। कश्मीर-यात्राका समय है अप्रैलसे सितम्बर और अमरनाथ-यात्रा जुलाईके प्रारम्भसे पूरे अगस्ततक किसी समय की जा सकती है।

कश्मीर-यात्राके लिये अन्तिम रेलवे-स्टेशन पठानकोट मिलता है। यह एक सुन्दर नगर है। आप जाते समय

या लौटते समय पठानकोटसे तीन तीर्थोंकी यात्रा और कर सकते हैं—१. काँगड़ा, २. काँगड़ा बैजनाथ और ३. ज्वालामुखी। पठानकोटसे बैजनाथ पपरोलातक रेलवे लाइन जाती है। इस लाइनमें ५० मीलपर ज्वालामुखी रोड स्टेशन है, जहाँसे १३ मील दूर पहाड़ीपर ज्वालामुखी-मन्दिर है। यह १३ मील पैदलका मार्ग है। इस मन्दिरमें पृथ्वी-गर्भसे सदा अग्निशिखा निकलती रहती है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें एक शक्तिपीठ है। यहाँ सतीकी जिह्वा गिरी थी। ज्वालामुखी रोडसे १० मील आगे काँगड़ा मन्दिर स्टेशन है। यहाँ विजयेश्वरी अथवा महामाया देवीका मन्दिर है। इसी लाइनपर २९ मील आगे बैजनाथ पपरोला स्टेशन है। यहाँ श्रीवैद्यनाथ शिवलिङ्ग है। कुछ लोग इसी शिवलिङ्गको द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें मानते हैं। यहाँ शिवरात्रिको मेला लगता है। इन तीर्थोंकी यात्रा करके आप पाँचवें दिन पठानकोट लौट आ सकते हैं।

यह ऊपर बताया जा चुका है कि प्रायः सभी रेलवे-स्टेशनोंसे सीधे श्रीनगरके लिये रिटर्न टिकट मिल जाता है। काठगोदामसे जो मोटर-बसें जाती हैं, वे रेलवे-टिकट लेकर अपना रिटर्न टिकट दे देती हैं। रेलवे-टिकट काठगोदामतक ही लें, तो भी काठगोदामसे मोटर-बसका रिटर्न टिकट ले सकते हैं। रिटर्न टिकट लेनेसे सुविधा रहती है। पठानकोटसे मोटर-बसद्वारा जानेपर जम्मू या कुद नामक स्थानमें रात्रि-विश्राम करना पड़ता है और दूसरे दिन यात्री श्रीनगर पहुँचते हैं। ठहरनेके स्थान एवं भोजनकी व्यवस्था इन दोनों स्थानोंमें है।

श्रीनगरमें तथा उसके आस-पास अनेक सुन्दर दर्शनीय स्थान हैं। श्रीनगरसे लगी हुई एक पहाड़ीपर श्रीआद्यशङ्कराचार्यद्वारा स्थापित शिवलिङ्ग है। इस पर्वतको ही शङ्कराचार्य कहते हैं। लगभग दो मीलकी कड़ी चढ़ाईके बाद यात्री मन्दिरमें पहुँचते हैं। पूरा श्रीनगर जैसे मन्दिरके चरणोंमें पड़ा है और मूर्ति इतनी भव्य है कि चढ़ाईका सब श्रम दर्शन करते ही भूल जाता है। मन्दिर बहुत प्राचीन है, पुरातत्त्वविदोंके मतानुसार भी लगभग दो सहस्र वर्ष प्राचीन।

शङ्कराचार्य पर्वतके नीचे ही शङ्करमठ है। कहा जाता है कि यह जगद्गुरु शङ्कराचार्यद्वारा स्थापित है। इस स्थानको दुर्गा-नाग-मन्दिर भी कहते हैं। नगरमें शाह हमदनकी मस्जिद है, जो देवदारुकी लकड़ीसे चौकोर बनी है। यह मस्जिद प्राचीन मन्दिरके ध्वंससे बनायी गयी है। इसके कोनेमें एक पानीका स्रोत है; हिंदू उस स्थानकी पूजा करते हैं और मानते हैं कि वह कालीमन्दिरका स्थान है। नगरमें चौथे पुलके पास महाश्रीका पाँच शिखरोंवाला मन्दिर है, जो अब श्मशानभूमिमें बदल गया है। नगरके पास हरिपर्वत नामक एक छोटी पहाड़ी है। बादशाह अकबरने उसपर एक परकोटा बनवा दिया था। परकोटेके भीतर एक मन्दिर और एक गुरुद्वारा भी है। अब वह सैनिक-सुरक्षित स्थान है और उसे देखनेके लिये श्रीनगरके विजिटर्स ब्यूरो आफिससे अनुमति-पत्र ले जाना आवश्यक है। इस पहाड़ीके दक्षिणमें विशाल शिलापर महागणेशकी मूर्ति है।

श्रीनगरमें दो कलापूर्ण मस्जिदें भी दर्शनीय हैं—विशेषकर नूरजहाँकी बनवायी पत्थरमस्जिद। इसके अतिरिक्त नगरसे दूर मुगल-उद्यान तो अपने सौन्दर्यके लिये विश्वमें प्रसिद्ध हैं। ये उद्यान डल झीलके किनारे-किनारे हैं। रविवारके दिन इन उद्यानोंके झरनोंमें स्थान-स्थानपर फुहारे लगा दिये जाते हैं। इस दिन यात्री तथा अधिकांश नागरिक भी इन उद्यानोंकी सैरको आते हैं और पूरा दिन उधर ही व्यतीत करके लौटते हैं। उद्यानोंतक नौकासे भी जा सकते हैं और डल झीलके किनारे-किनारे सड़क भी जाती है। रविवारको मोटर-बसें भी जाती हैं। जहाँ मोटर-बससे भी जा सकते हैं। डल झीलके किनारेके वे मुख्य उद्यान हैं—शालामारबाग, निशातबाग। इनके अतिरिक्त नौकासे जाकर देखने योग्य है नसीमबाग। शङ्कराचार्य शिखरके पास ही अब नेहरू पार्क बन गया है, जहाँ झीलमें स्नानकी भी उत्तम सुविधा है।

कश्मीरकी यात्रामें जम्मूसे श्रीनगर जाते समय मार्गमें ही आपको ड्राइवर एक पहाड़ीपर जाता मार्ग दिखायेगा। वह मार्ग वैष्णवीदेवीको जाता है। आश्विन-नवरात्रमें वहाँ मेला होता है और तब यात्री भी जाते हैं;

किंतु अत्यन्त वन्य एवं निर्जन मार्ग होनेसे दूसरे समयमें वहाँकी यात्रा कठिन ही है।

कश्मीरके दूसरे मन्दिर एवं तीर्थस्थान हैं—क्षीरभवानी, अनन्त-नाग और मार्तण्ड-मन्दिर तथा दर्शनीय स्थानोंमें गुलमर्ग, मानस बल तथा पहलगाँव मुख्य हैं। कुछ यात्री पहलगाँवसे कोल्हारी ग्लेशियर भी जाते हैं। श्रीनगरकी विजिटर्स ब्यूरोंसे आप मोटर-बसोंका कार्यक्रम ज्ञात करके उसके अनुसार यात्रा करें तो बहुत-से दर्शनीय स्थान मोटर-बसोंसे ही देख लेंगे। जैसे मोटर-बससे मानस बलको देखने जाते समय क्षीरभवानी-मन्दिरके दर्शन हो जायँगे। यहाँ ज्येष्ठशुक्ला अष्टमीको मेला लगता है।

श्रीनगरसे मोटर-बसद्वारा पहलगाँव जाया जा सकता है। इस मार्गके मध्यमें ही अनन्तनाग है। मार्तण्डका प्राचीन तीर्थ पर्वतपर है, मार्गके भटन गाँवमें सरोवर है और पंडे उसीको मार्तण्डतीर्थ बतलाते हैं। वस्तुतः पंडोंके ग्राम भटनसे २-३ मील दूर श्रीनगर-मार्गपर ही एक छोटी पहाड़ी है, जिसपर मार्तण्ड-मन्दिरके भग्नांश शेष हैं। इसी मार्गपर अवन्तीपुर नामक प्राचीन नगरमें भी दो मन्दिरोंके भग्नांश हैं।

पूरा कश्मीर ही दर्शनीय है; किन्तु उसके सभी स्थलोंका वर्णन देना यहाँ शक्य नहीं है। मुख्य विषय तो है अमरनाथयात्रा और इस यात्राके लिये आपको श्रीनगरसे मोटर-बसद्वारा पहलगाँव आना पड़ेगा। पहलगाँवमें होटल हैं, जिनमें ठहरनेकी अच्छी व्यवस्था है। तंबुओंमें भी लोग ठहरते हैं। यहाँसे अमरनाथ २७ मील है और यह मार्ग पैदल या घोड़ोंसे पार करना पड़ता है।

हिमप्रदेशीय यात्राओंमें अमरनाथकी यात्रा सबसे छोटी यात्रा है, सबसे सुगम है और सबसे अधिक यात्री भी इसी यात्रामें जाते हैं। इस यात्राके लिये कोई विशेष तैयारी आवश्यक नहीं। ऊनी कपड़े, ऊनी मोजे, मंकी कैप (सिर ढकनेकी ऊनी टोपी), गुलूबंद, ऊनी दस्ताने, एक छड़ी, तीन कम्बल, थोड़ी खटाई—सूखे आलूबुखारे, बरसाती, टार्च और शक्य हो तो स्टोव। सब ऊनी सामान, छड़ी आदि पहलगाँवसे भी खरीद सकते हैं। बरसाती साथ न हो तो वह पहलगाँवसे किरायेपर मिल जाती है। भोजनका सामान नहीं भी ले जायँ तो आगे भोजन मिलता रहेगा। कुछ जलपानका सामान साथ ले लेना चाहिये।

यात्राके लिये पैदल जाना हो तो सामान ढोनेको कुली यहाँसे लेना पड़ता है। सवारीके घोड़े भी १६-१७ रुपये किराया लेकर लौटनेतकको मिल जाते हैं। तीन-चार यात्री साथ हों तो सामान ढोनेके लिये खच्चर लेना सुविधाजनक होता है।

यात्राका समय—

अमरनाथकी मुख्य यात्रा तो श्रावणी पूर्णिमाको होती है। आषाढ़की पूर्णिमाको भी अधिक यात्री जाते हैं; किंतु इन्हीं तिथियोंमें यात्रा हो, यह आवश्यक नहीं है। जुलाईके पहले सप्ताहसे अगस्तके अन्ततक प्रायः प्रतिदिन पहलगाँवसे यात्री जाते रहते हैं। किसी भी समय इस अवधिमें जाया जा सकता है।

मार्ग

१- **पहलगाँवसे चन्दनवाड़ी**—८ मील, मार्ग साधारणतः अच्छा है। चन्दनवाड़ीमें अच्छे होटल हैं, भोजनादिका सामान ठीक मिल जाता है, लिदर नदीके किनारे-किनारे मार्ग जाता है।

२- **शेषनाग**—७ मील, यहाँ डाकबँगला; किंतु मेलेके दिनोंमें भीड़ अधिक होती है, उस समय तंबू लगाकर ठहरना पड़ता है। तंबू पहलगाँवसे किरायेपर ले जाना होता है। मेलेके अतिरिक्त दिनोंमें तंबू आवश्यक नहीं। चन्दनवाड़ीसे शेषनागके बीचमें ३ मीलकी कड़ी चढ़ाई है। शेषनाग झीलका सौन्दर्य तो अद्भुत ही है, यहाँ भी एक होटल है।

३- **पञ्चतरणी**—८½ मील, शेषनागसे आगेका मार्ग हिमाच्छादित है। इस मार्गमें चलते समय हाथों तथा मुखमें वैसलिन लगाना चाहिये। जहाँ मिचली आवे, वहाँ खटाई चूसनेसे आराम मिलता है।

२- **अमरनाथ**—३½ मील, अमरनाथमें ठहरनेका स्थान नहीं है। यात्रीको पञ्चतरणीमें जलपान करके अमरनाथ आना चाहिये। यहाँ स्नान तथा दर्शन करके शामतक यात्री पञ्चतरणी लौट जाते हैं। वहाँ रात्रि-विश्रामके लिये धर्मशाला है। यात्राके दिनों

उत्तराखण्डके पवित्र स्थल (१)
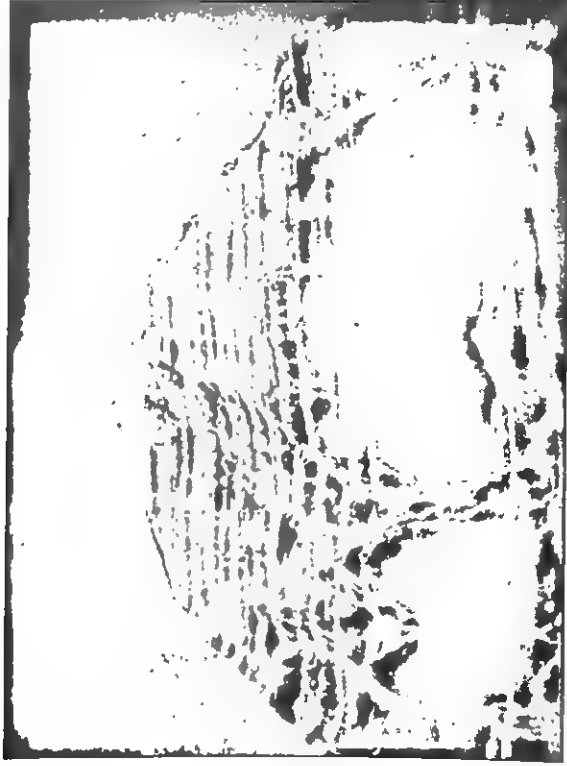
कैलास-शिखर
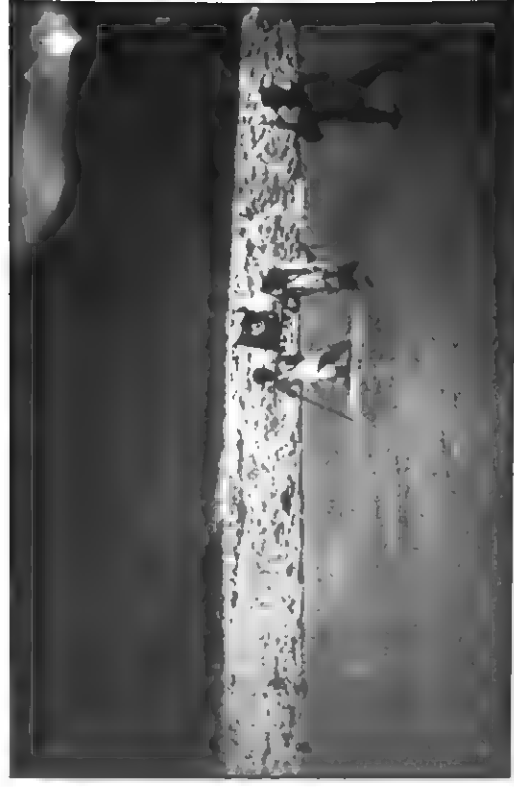
मानसरोवर

मार्तण्ड-मन्दिर, कश्मीर

बूढ़े अमरनाथ, पूँछ

अमरनाथजीकी बर्फसे बनी हुई मूर्ति
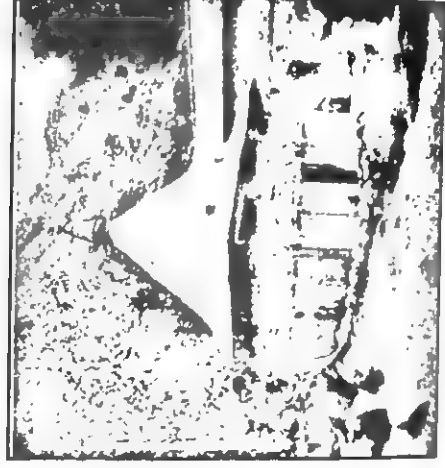
उत्तराखण्डके पवित्र स्थल (२)

वसुधारा (बद्रीनाथके पास)

गौरीकुण्ड
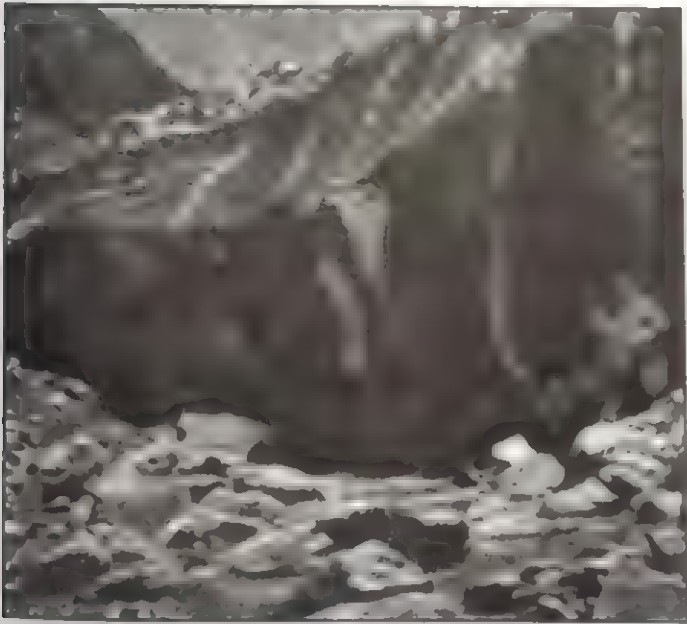
गोमुख

गुप्तकाशी-मन्दिर

एक होटल भी रहता है; किन्तु इस एक दिनके लिये कुछ भोजन साथ ले जाना उत्तम है।

नोट—इस यात्रामें यात्री पहले दिन पहलगाँवसे चलकर रात्रि-विश्राम शेषनागमें करते हैं। दूसरे दिन शेषनागसे चलकर अमरनाथतक चले जाते हैं और वहाँसे दर्शन करके लौटकर पञ्चतरणीमें रात्रि-विश्राम करते हैं। तीसरे दिन पञ्चतरणीसे चलकर प्रायः पहलगाँव पहुँच जाते हैं। इस प्रकार यह केवल तीन दिनकी पैदल यात्रा है।

अमरनाथ

समुद्रस्तरसे १६००० फुटकी ऊँचाईपर पर्वतमें यह लगभग ६० फुट लंबी, २५ से ३० फुट चौड़ी, १५ फुट ऊँची प्राकृतिक गुफा है और उसमें हिमके प्राकृतिक पीठपर हिमनिर्मित प्राकृतिक शिवलिङ्ग है। यह बात सच नहीं है कि यह शिवलिङ्ग अमावस्याको नहीं रहता और शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे क्रमशः बनता हुआ पूर्णिमाको पूर्ण हो जाता है तथा कृष्ण-पक्षमें धीरे-धीरे घटता जाता है। यह बात कैसे फैली, कहा नहीं जा सकता; बहुत लोगोंने लिखा भी है इसे। किन्तु पूर्णिमासे भिन्न तिथिमें यात्रा करके देख लिया गया है कि ऐसी कोई बात नहीं है। हिमनिर्मित शिवलिङ्ग जाड़ोंमें स्वतः बनता है और बहुत मन्दगतिसे क्षीण होता है। वह कभी भी पूर्णतः लुप्त नहीं होता—इतिहासमें कभी पूर्ण लुप्त हुआ होगा, इसमें भी संदेह ही है। अमरनाथ-गुफामें एक गणेशपीठ तथा एक पार्वतीपीठ भी हिमसे बनता है। पार्वतीपीठ ५१ शक्तिपीठोंमेंसे है यहाँ सतीका कण्ठ गिरा था।

अवश्य ही अमरनाथके हिमलिङ्गमें एक अद्भुत बात है कि वह हिमलिङ्ग तथा लिङ्गपीठ (हिम-चबूतरा) ठोस पक्की बरफका होता है जबकि गुफासे बाहर मीलोंतक सर्वत्र कच्ची बरफ ही मिलती है।

अमरनाथ-गुफासे नीचे ही अमरगङ्गाका प्रवाह है। यात्री उसमें स्नान करके गुफामें जाते हैं। सवारीके घोड़े अधिकतर एक या आध मील दूर ही रुक जाते हैं। अमर-गङ्गासे लगभग दो फर्लांग चढ़ाईपर जाकर गुफामें जाना पड़ता है। गुफामें मुख्य शिवलिङ्गको छोड़कर दो और हिमके छोटे विग्रह बनते हैं, जिन्हें पार्वती तथा गणपतिकी मूर्तियाँ कहा जाता है। गुफामें जहाँ-तहाँ बूँद-बूँद करके जल टपकता रहता है। कहा जाता है कि गुफाके ऊपर पर्वतपर श्रीरामकुण्ड है और उसीका जल गुफामें टपकता है। गुफाके पास एक स्थानसे सफेद भस्म-जैसी मिट्टी निकलती है, जिसे यात्री प्रसादस्वरूप लाते हैं। गुफामें वन्य कबूतर भी दिखायी देते हैं। उनकी संख्या विभिन्न समयोंमें विभिन्न देखी गयी है।

यदि वर्षा न होती हो, बादल न हो, धूप निकली हो, तो अमरनाथ-गुफामें शीतका कोई अनुभव नहीं होता। प्रत्येक दशामें इस गुफामें यात्री एक अनिर्वचनीय अद्भुत सात्त्विकता तथा शान्तिका अनुभव करता है, जो उसे आप्लुत करती रहती है।

वैष्णवीदेवी

(लेखक—श्रीसुरेशानन्दजी बहुखण्डी)

यह स्थान जम्मूसे ४६ मील उत्तर-पश्चिमकी ओर एक अत्यन्त अन्धकारमय गुफामें है। यहाँकी यात्रा नवरात्रमें होती है। पहले जम्मूसे ३१ मील मोटर-बससे कटरा नामक स्थानमें जाना पड़ता है।

कटरामें कुली-एजेंसीद्वारा कुलीका प्रबन्ध करना चाहिये। वहाँसे छड़ी, रबरके जूते आदि पर्वतीय यात्राका सामान लेकर चलना पड़ता है। तीन मीलकी दूरीपर चरणपादुका स्थानमें माताके चरण-चिह्न हैं।

आदिकुमारी स्थानमें प्रथम विश्राम होता है। यहाँ धर्मशाला है। यहाँ एक 'गर्भवास' नामक संकीर्ण गुहा है। इसमें प्रवेश करके यात्री बाहर निकलते हैं। आदिकुमारी स्थानमें ही माताका प्रादुर्भाव हुआ था।

आगेका मार्ग दुर्गम तथा संकीर्ण है। 'हाथीमत्था' की कठिन चढ़ाई मिलती है। चढ़ाई पूरी होनेपर लगभग

तीन मील उतराई मिलती है। तथा वैष्णवीदेवीका मन्दिर आता है। यहाँ कोई मन्दिर बना नहीं है। कहा जाता है कि देवीने त्रिशूलके प्रहारसे शिलामें गुफा बना ली है। गुफामें लगभग ५० गज भीतर जानेपर महाकाली, महालक्ष्मी महासरस्वतीकी मूर्तियाँ मिलती हैं। इन मूर्तियोंके चरणोंमें निरन्तर जल प्रवाहित होता रहता है। उसे बाणगङ्गा कहते हैं। गुफाद्वारमें पहले पाँच गजतक लेटकर जाना पड़ता है।

यह वैष्णवीदेवीका स्थान प्रख्यात है। इसे सिद्धपीठ माना जाता है।

बूढ़े अमरनाथ

(लेखक—श्रीस्वामी प्रेमपुरीजी महाराज)

कश्मीरमें पूँछ प्रसिद्ध नगर है। वहाँसे १४ मील दूर ऊँची पहाड़ियोंसे घिरा यह मन्दिर है। पूरा मन्दिर एक ही श्वेत पत्थरका बना है। मन्दिरके चारों ओर बावलियाँ हैं। यहाँ अमरनाथजीकी मूर्तिके नीचेसे जल निकला करता है, जो इन बावलियोंमें आता है।

जम्मूसे पूँछके लिये मोटर-बसें चलती हैं। कहा जाता है कि यही प्राचीन अमरनाथ स्थान है। पहले लोग यहीं यात्रा करने आते थे। यही पुलस्ता नदी है, जिसके तटपर महर्षि पुलस्त्यका आश्रम था। दूसरा अमरनाथ तो पीछे प्रसिद्ध हुआ है।

ऊधमपुर

(लेखक—श्रीओमप्रकाशजी कैलू)

जम्मू (कश्मीर) प्रान्तमें पवित्र देविका नदीके तटपर यह नगर है। जम्मूसे यहाँ मोटर-बससे जाना पड़ता है।

यहाँ देविका नदीके तटपर भगवान् शङ्करका प्राचीन मन्दिर है। मन्दिरके आस-पास प्राचीन भग्नावशेष हैं। देविकाके दोनों तटोंपर पक्के घाट बने हैं। शिवमन्दिरके सामने ही देविकाके दूसरे तटपर श्रीराममन्दिर है। यहाँ वैशाख महीनेमें बड़ा मेला लगता है।

शुद्ध महादेव

जम्मू-श्रीनगर रोडपर पड़ावसे ३ मील आगे जाकर पूर्वकी ओर पैदल मार्ग जाता है। इस मार्गमें मुख्य सड़कसे ४॥ मीलपर गौरीकुण्ड तीर्थ है। यहाँ पार्वती-मन्दिर है। वहाँसे ३ मील आगे शुद्ध महादेवका स्थान है। यह स्थान देविका-तटपर पुण्यक्षेत्र माना जाता है। यहाँ एक बड़ा त्रिशूल है, जिसके दो टुकड़े हैं। कहा जाता है कि भगवान् शङ्करने सुधन्तर नामके राक्षसको मारा था, जिससे त्रिशूल टूट गया।

शुद्ध महादेवसे १॥ मील दूर पर्वतमें सहस्रधारा नामक तीर्थ है। वहाँ पर्वतसे जलधारा गिरती है। यात्री वहाँ स्नान करने जाते हैं। मार्गमें एक छोटा गोकर्ण-मन्दिर मिलता है।

पुरमण्डल

जम्मू-पठानकोट रोडपर जम्मूसे ९ मील आगे जानेपर एक कच्ची सड़क अलग होती है। इस सड़कसे २२ मील जानेपर पुरमण्डल स्थान मिलता है। जम्मूसे पैदल पगडंडीके मार्गसे यह स्थान १५ मील है। देविका नदीके तटपर भगवान् शङ्करका विशाल मन्दिर है। पास ही उमापति महादेवका भव्य मन्दिर है। इनके अतिरिक्त यहाँ और बहुत-से मन्दिर हैं। यह मन्दिरोंका नगर है। यह कश्मीरका गया-क्षेत्र है। जो गया नहीं जा पाते, वे यहाँ आकर श्राद्ध करते हैं। महाराज रणजीतसिंहने यहाँकी यात्रा की थी और यहाँ अनेक मन्दिर निर्माण कराये थे।

यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरी, केदारनाथ, बदरीनाथ आदि

गङ्गोत्तरी-माहात्म्य

धातुः कमण्डलुजलं तदुरुक्रमस्य
पादावनेजनपवित्रतया नरेन्द्र।
स्वर्धुन्यभूनभसि सा पतती निमार्ष्टि
लोकत्रयं भगवतो विशदेव कीर्तिः॥

(श्रीमद्भा०)

'न गङ्गासदृशं तीर्थं न देवः केशवात् परः।'

(महा० वन० ९४। ९६; पद्म आ० ३०।८८)

साक्षात् भगवान् यज्ञपुरुष विष्णु त्रिविक्रमके (तीन डगोंसे) पृथ्वी, स्वर्गादिको लाँघते हुए वामपादके अङ्गुष्ठसे निकलकर उनके चरणपङ्कजका अवनेजन करती हुई भगवती गङ्गा जगत्‌के पापको नष्ट करती हुई स्वर्गसे हिमालयके ब्रह्मसदनमें अवतीर्ण हुईं। वहाँ ये सीता, अलकनन्दा, चक्षु और भद्रा नामसे चार भागोंमें विभक्त होकर चारों दिशाओंमें प्रवाहित हुईं। भारतकी ओर आनेवाली अलकनन्दा कहलायी, जो हेमकूट आदि पर्वतोंको लाँघती हुई भारतमें दक्षिण-पूर्व दिशाकी ओर बहकर समुद्रमें गिरती हैं।

जहाँसे गङ्गाजी प्रकट होकर अवतरित होती दिखती हैं, उसे गङ्गोत्तरी या गङ्गोद्भेद तीर्थ कहते हैं, वहाँ जाकर तर्पण, उपवास आदि करनेसे वाजपेय यज्ञका पुण्य प्राप्त होता है और मनुष्य सदाके लिये ब्रह्मीभूत हो जाता है।

गङ्गोद्भेदं समासाद्य त्रिरात्रोपोषितो नरः।
वाजपेयमवाप्नोति ब्रह्मभूतो भवेत् सदा॥

(महा० वन० ८४। ६५; पद्मपु० आदि० स्वर्ग० ३२। २९)

यों तो गङ्गाजी सर्वत्र महामहनीय हैं, तथापि गङ्गोत्तरी प्रयाग तथा गङ्गासागरमें अति दुर्लभ कही जाती हैं।

'त्रिषु स्थानेषु दुर्लभा। गङ्गोद्भेदे प्रयागे च गङ्गासागरसंगमे।'

'गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे।' आदि। ऋग्वेदसे लेकर रामायण, भारत एवं पुराणोंके अधिकांश भाग गङ्गा-माहात्म्यसे भरे हैं। लगता है गङ्गाजी तीर्थोंके प्राण हैं।

'तीरथ अवगाहन सुरसरि जस'

—से तुलसीदासजीने भी कुछ ऐसा ही भाव प्रकट किया है।

अधिक जाननेके लिये बृहद्धर्मपुराणका 'गङ्गाधर्म' नामक अन्तिम भाग, महाभारत, वनपर्वका ८५ वाँ अध्याय, ब्रह्मपुराण अ० ७८, पद्म०सृ० ६०वाँ अध्याय विष्णुपु० ४।४, देवीभागवत ९।६—१४, ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्रकृतिखण्ड ६—१४ अग्निपुराण अ० ११०, मत्स्यपुराण अ० १०२, वायुपुराण अ० १४२, बृहन्नारदीयपुराण पूर्वभाग ७ से १०, उत्तरभाग अ० ३९—४२ एवं ६८, स्कन्दपुराण, काशीखं० २७—२९ एवं ब्रह्माण्डपुराण अ० १४० देखना चाहिये। ब्रह्माण्डपुराणके अनुसार गङ्गाजीमें आचमन, शौच, निर्माल्य-त्याग, मलघर्षण, गात्रसंवाहन, क्रीड़ा, प्रतिग्रह, रति, अन्य तीर्थादिका भाव, अन्यतीर्थप्रशंसा, संतार (तैरना), मलोत्सर्ग—ये बारह कार्य नहीं करने चाहिये।

यमुनोत्तरी-माहात्म्य

तपनस्य सुता देवी त्रिषु लोकेषु विश्रुता।
समागता महाभाग यमुना तत्र निम्नगा॥
येनैव निःसृता गङ्गा तेनैव यमुना गता।
योजनानां सहस्रेषु कीर्तनात् पापनाशिनी॥
तत्र स्नात्वा च पीत्वा च यमुना यत्र निस्सृता।
सर्वपापविनिर्मुक्तः पुनात्यासप्तमं कुलम्॥

(कूर्मपुराण० ब्राह्मीसंहिता पू० ३९। १—३)

'भगवान् सूर्यकी पुत्री यमुना तीनों लोकोंमें विख्यात हैं। वे भी प्रायः हिमालयके उसी स्थानसे उद्भूत हुई हैं, जहाँसे गङ्गाजी निकली हैं। हजारों योजनोंसे भी यमुनाका स्मरण-कीर्तन पापानाशक है। यमुनोत्तरीमें स्नान तथा जलकणका भी पान करनेवाला व्यक्ति सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है और इसके सात कुलतक पवित्र हो जाते हैं।'

केदारनाथ तथा बदरिकाश्रमका माहात्म्य

नारायणः प्रभुर्विष्णुः शाश्वतः पुरुषोत्तमः।
तस्यातियशसः पुण्यां विशालां बदरीमनु॥
आश्रमः ख्यायते पुण्यस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः।
अन्यत्र मरणान्मुक्तिः स्वधर्मविधिपूर्वकात्।
बदरीदर्शनादेव मुक्तिः पुंसां करे स्थिता॥

(महाभारत)

अन्य तीर्थोंमें स्वधर्मका विधिपूर्वक पालन करते हुए मृत्यु होनेसे मुक्ति होती है, परन्तु बदरीक्षेत्रके तो

दर्शनमात्रसे ही मुक्ति मनुष्यके हाथ आ जाती है। काशीमें मरे हुए मनुष्यको तारकब्रह्म मुक्ति देनेवाला होता है; पर केदारक्षेत्रमें तो शिवलिङ्गके पूजनमात्रसे मोक्ष होता है। श्रीनारायणचरणोंके समीप प्रकाशमान अग्नितीर्थका तथा भगवान् शङ्करके केदारसंज्ञक महालिङ्गका दर्शन करके मनुष्य पुनर्जन्मका भागी नहीं होता (स्कन्द-पुराण, वैष्णवखण्ड, बदरिकाश्रम माहात्म्य, अध्याय २।११, १२, २०)। जहाँ साक्षात् सनातनदेव परमात्मा नारायण विराजमान हैं, वहाँ सारे तीर्थ, सम्पूर्ण आयतन तथा जगत्‌को ही प्रस्तुत मानना चाहिये। बदरी ही परमतीर्थ, तपोवन तथा साक्षात् परात्पर ब्रह्म है। वहीं जीवोंके स्वामी परमेश्वर हैं, जिन्हें जानकर शोक, मोह, चिन्ता तुरन्त मिट जाती है—

यत्र नारायणो देवः परमात्मा सनातनः।
तत्र कृत्स्नं जगत् सर्वं तीर्थान्यायतनानि च॥
तत् पुण्यं परमं ब्रह्म तत् तीर्थं तत् तपोवनम्।
तत् परं परमं देवं भूतानां परमेश्वरम्॥
शाश्वतं परमं चैव धातारं परमं पदम्।
यं विदित्वा न शोचन्ति विद्वांसः शास्त्रदृष्टयः॥

(महा० वन० तीर्थ० ९०। २८—३०)

अधिक क्या, मनुष्य कहींसे भी बदरी-आश्रमका स्मरण करता रहे तो वह पुनरावृत्तिवर्जित श्रीवैष्णवधामको प्राप्त होता है—

श्रीबदर्याश्रमं पुण्यं यत्र यत्र स्थितः स्मरेत्।
स याति वैष्णवं स्थानं पुनरावृत्तिवर्जितः॥

(वराह० पु० १४१। ६७)

बदरीक्षेत्रकी उत्पत्तिकी कोई कथा नहीं है। वेदोंके तुल्य ही यह अनादिसिद्ध कहा गया है (स्कन्द० वै० बदरि० २।२)। यहाँ नर-नारायणाश्रमके अतिरिक्त नारद-शिला, मार्कण्डेयशिला, गरुड़शिला, वाराहीशिला, नारसिंहीशिला, कपालतीर्थ, ब्रह्मतीर्थ, वसुधारातीर्थ, पञ्चतीर्थ, सोमतीर्थ, द्वादशादित्य, चतुःस्रोत, ब्रह्मकुण्ड, मेरुतीर्थ, दण्डपुष्करिणी, गङ्गासंगम, धर्मक्षेत्र आदि कई प्रसिद्ध ऐतिहासिक धार्मिक सुप्रसिद्ध स्थल हैं। इसकी विस्तृत कथा देवीभागवत, स्कन्दपुराणान्तर्गत वैष्णवखण्ड, बदरीमाहात्म्य तथा वाराहोक्त (१४१ वें अध्याय) बदरी-माहात्म्यमें देखनी चाहिये।

उत्तराखण्ड—यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरी, केदारनाथ बदरीनाथ आदिकी यात्रा

उत्तराखण्डकी यात्रामें यात्रीको कितनी सामग्री आवश्यक होगी, यह इस बातपर निर्भर करता है कि यात्रीको कितनी यात्रा करनी है और कब यात्रा करनी है। यमुनोत्तरी, गङ्गोत्तरी, केदारनाथ, बद्रीनाथमें बाबा कालीकमलीवालेकी धर्मशालाएँ हैं; यहाँतक पहुँचनेके मार्गमें भी स्थान-स्थानपर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ यात्रियोंको प्रायः भोजन बनानेके बर्तन भी मिल जाते हैं। भोजनका कच्चा सामान—चावल, दाल, आटा आदि सभी चट्टियोंपर मिलता है, बदरीनाथ, केदारनाथ-जैसे स्थानोंमें धर्मशालाकी ओरसे कम्बल भी मिल जाते हैं। यदि इन स्थानोंसे आगे न जाना हो तो साथमें कम सामान ले जाना चाहिये; किंतु इनसे आगेके तीर्थ गोमुख, लोकपाल आदि भी करने हों तो कैलासयात्रा-प्रसङ्गमें बतायी सभी सामग्री साथ रखनी चाहिये।

कुली और सवारी

कैलास-यात्राके समान यमुनोत्तरीसे बदरीनाथतककी यात्रामें घोड़े नहीं मिलते। इस ओरकी यात्रामें घोड़े कहीं-कहीं मिलते हैं—कदाचित् ही उनकी व्यवस्था हो पाती है। यात्री पैदल न चल सके तो उसे कंडीमें या दाँडीमें जाना पड़ता है। कंडी एक प्रकारका टोकरा है, जिसे एक कुली पीठपर बाँधकर ले चलता है। इस टोकरेमें पीछेकी ओर मुख करके, कुर्सीपर बैठनेके समान पैर बाहर करके यात्रीको बैठना पड़ता है। दाँडी (डंडी) एक प्रकारका खटोला है। इसे चार कुली कंधेपर रखकर ले चलते हैं। चारके बदले छः कुली साथ लिये जायँ तो सुविधा रहती है। कंडी कुलीकी अपनी होती है; किंतु दाँडीका मूल्य अलग देना पड़ता है।

ऋषिकेशमें तथा जहाँ मोटर-बसें जाती हैं, उन स्थानोंमें कुली-एजेंसियाँ हैं। वहाँ कुलियोंको पहचाननेवाले टंडैल रहते हैं। कुलियोंकी वहाँ रजिस्ट्री होती है। कुली-एजेंसीद्वारा ही कुली करना चाहिये। कुलीको एक मनसे अधिक भार (उसके माँगनेपर भी) नहीं देना चाहिये, अन्यथा वे मार्गमें तंग करते हैं। कुली मजदूरी क्या लेंगे, यह निश्चित नहीं, भाव बदलते रहते हैं; पर सामान्यतः ३) से ४) सेरतक वे लेते हैं। इसके अतिरिक्त दो पैसा प्रतिदिन वे जलपानके लिये लेते हैं

और यदि मार्गमें यात्री कहीं एक-दो दिन रुके तो उन दिनोंका भोजन भी कुलीको देना पड़ता है।

आवश्यक सामग्री

पर्वतीय यात्राके लिये आवश्यक सामग्रीकी सूची मानसरोवर-कैलास-यात्राके वर्णनमें दे दी गयी है। यदि गोमुख, सत्पथ आदि जाना हो तो वह पूरी सामग्री साथ लेना चाहिये। यदि केवल यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरी, केदारनाथ-बदरीनाथ जाना हो तो उस सामग्रीमें कुछ परिवर्तन करना सुविधाजनक होगा। जैसे पहाड़पर चढ़नेमें सहायता दे सके, ऐसी छड़ी पर्याप्त है। सिरके बराबर लाठी आवश्यक नहीं है। ऊनी दस्तानोंके बिना भी काम चल जायगा। जूते हल्के किंतु मजबूत होने चाहिये। भारी जूता अनावश्यक है। भोजन बनानेके बर्तन सब कहीं मिल जाते हैं। स्टोपके बिना सरलतासे काम चल जाता है। किंतु छाता, बरसाती कोट, सूती और ऊनी कपड़े, दो कम्बल, इमली, औषध, चाकू, रस्सी, टार्च, लालटेन, मोमबत्ती, सुई, धागा, वैसलिन आदि आवश्यक सामग्री अवश्यक साथ ले लेना चाहिये। ऋषिकेशमें बाबा कालीकमलीवालेके कार्यालयसे 'जललागकी औषध' ले लेना चाहिये। यात्रामें यह कब्ज या पेचिश होनेपर काम देती है।

कुछ सुविधाएँ

यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरी, केदारनाथ-बदरीनाथके मार्गमें चट्टियोंमें ठहरनेका स्थान, आटा, चावल आदि भोजन-सामग्री तथा भोजन बनानेके बर्तन और लकड़ी मिलती है। केदारनाथ-बदरीनाथमें यात्रियोंको बाबा कालीकमली-वालेकी धर्मशालासे कम्बल भी मिलते हैं।

आवश्यक सावधानी

१- चलते-चलते गङ्गाजल या झरनेका जल नहीं पीना चाहिये। जलको बर्तनमें दो चार मिनट रखकर पीना चाहिये, जिससे उसमें जो रेत तथा अन्य पदार्थ हैं, वे नीचे बैठ जायँ।

२- कच्चे फल (आम, आड़ू आदि) या अधपके अथवा सड़े-गले फल नहीं खाने चाहिये।

३- ऋषिकेशसे ही बिच्छू घास मिलने लगती है। उसके स्पर्शसे बचे रहना चाहिये; क्योंकि छू जानेपर बड़ी जलन होती है।

४- केदारनाथके मार्गमें जहरीली मक्खियाँ होती हैं, जिनके काटनेपर खुजली चलकर फोड़े हो जाते हैं। वहाँ शरीर ढके रखना चाहिये। मक्खीके काटनेपर जंबक मलहम लगाना चाहिये।

५- सभी पर्वतीय यात्राओंमें चोरीका भय रहता है। अपना रुपया-पैसा ही नहीं, वस्त्र, बर्तन तथा भोजनादिका सब सामान सावधानीसे सँभाले रहना चाहिये।

६- इतना नहीं चलना चाहिये कि बड़ी थकान आ जाय। अन्यथा बीमार हो सकते हैं।

७- बासी, गरिष्ठ भोजन, बाजारकी पूड़ी-मिठाई, सत्तू, भुने चने खायँगे तो बीमार पड़नेका भय अवश्य रहेगा।

८- शीतल जलमें अधिक देर स्नान नहीं करना चाहिये। शरीरको सर्दीसे बचाना चाहिये।

९- यात्रा प्रातःकाल १० बजेतक और शामको तीन बजेसे सूर्यास्ततक करना उत्तम है। १०-१५ मीलसे अधिक एक दिन नहीं चलना चाहिये।

स्थानोंकी दूरी

१-	ऋषिकेशसे यमुनोत्तरी (टिहरी होकर)	१३१ मील
२-	" " " (देवप्रयाग होकर)	१५१ "
३-	यमुनोत्तरीसे गङ्गोत्तरी	९९ "
४-	गङ्गोत्तरीसे केदारनाथ	१२० "
५-	केदारनाथसे बदरीनाथ	१०२ "
६-	ऋषिकेशसे केदारनाथ	१६४ "
७-	" बदरीनाथ	१६८ "

यात्राका समय

श्रीबदरीनाथजीके पट १५ मईके लगभग (दो-चार दिन आगे-पीछे—जैसा जिस वर्ष हिमपात हुआ हो) खुलते हैं। केदारनाथजी, गङ्गोत्तरी तथा यमुनोत्तरीके पट भी मईके पहलेसे दूसरे सप्ताहके मध्य खुलते हैं। ये सभी मन्दिर दीपावलीतक खुले रहते हैं। यमुनोत्तरी, गङ्गोत्तरी, केदारनाथ, बदरीनाथ—इन चारों स्थानोंमें जाना हो तो उत्तम समय वैशाखके प्रारम्भसे श्रावणके अन्ततक है। केवल बदरीनाथ जाना हो तो जन्माष्टमीतक जा सकते हैं। ज्येष्ठ-आषाढ़ सबसे उत्तम समय है। यात्री सितंबर-अक्टूबरतक जाते तो हैं, पर कष्ट होता है।

यमुनोत्तरी—गङ्गोत्तरी

उत्तराखण्डकी यात्रामें जिन्हें यमुनोत्तरी आदि चारों तीर्थ करने हों, उनके लिये सीधी यात्रा (दाहिनेसे बायें) यमुनोत्तरीसे ही प्रारम्भ करनेसे होगी। यमुनोत्तरीके लिये ऋषिकेशसे तीन मार्ग जाते हैं। इन्हीं तीनों मार्गोंसे गङ्गोत्तरी भी जाया जाता है; क्योंकि गङ्गोत्तरीका मार्ग इसी मार्गमें धरासूसे पृथक् होता है। ये तीनों मार्ग हैं—१. ऋषिकेशसे देवप्रयाग-टिहरी होकर; २. ऋषिकेशसे नरेन्द्रनगर—टिहरी होकर और ३. ऋषिकेशसे देहरादून-मंसूरी होकर।

देवप्रयाग-टिहरी मार्ग

सबसे प्राचीन मार्ग यह देवप्रयाग-टिहरी मार्ग ही है। ऋषिकेशसे देवप्रयाग ४४ मील है, मोटर-बस जाती है। यदि पैदल जाना चाहें तो मार्गका विवरण नीचे दिया जाता है—

लक्ष्मणझूलासे गरुड़चट्टी २ मील कालीकमलीक्षेत्रकी धर्मशाला है।

फूलचट्टी	२	,,	,,	,,
गूलरचट्टी	२	,,	,,	,,
महादेव सैण	२	,,	,,	,,
नाईमोहन	१	,,	,,	,,
बिजनी	३	,,	,,	,,
कुण्ड	३	,,	,,	,,
बंदर भेल	३	,,	,,	,,
महादेवचट्टी	३	गोपालजीका मन्दिर है, धर्मशाला है।		
सेमलचट्टी	४	,,	,,	,,
काडी	३	,,	,,	,,
व्यासघाट	४	,,	,,	,,

गङ्गापार व्यासमन्दिर है। (कहते हैं कि वृत्रासुरके भयसे इन्द्रने यहाँ शंकरजीकी आराधना की थी)

छालुड़ीचट्टी	३ मील	कालीकमलीवाले क्षेत्रकी धर्मशाला है।		
उमरासू	२	,,	,,	,,
सौड़चट्टी	२	,,	,,	,,
देवप्रयाग	२	,,	,,	,,

देवप्रयाग—यहाँ भागीरथी (गङ्गोत्तरीसे आनेवाली गङ्गाकी धारा) और अलकनन्दा (बदरीनाथसे आनेवाली गङ्गाकी धारा)-का सङ्गम है। सङ्गमसे ऊपर श्रीरघुनाथजी, आद्यविश्वेश्वर तथा गङ्गा-यमुनाकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ गृद्धाचल, नरसिंहाचल या दशरथाचल—ये तीन पर्वत हैं। इसे प्राचीन सुदर्शनक्षेत्र कहा जाता है। यात्री यहाँ पितृश्राद्ध-पिण्डदान करते हैं। यहाँसे सीधा मार्ग बदरीनाथको जाता है। एक मार्ग टिहरी जाता है। देवप्रयागसे अलकनन्दा-भागीरथीको पार करके भागीरथीके किनारे-किनारे चलना पड़ता है।

देवप्रयागसे खर्साड़ा १० मील। यहाँ कालीकमलीक्षेत्रकी धर्मशाला है।

कोटेश्वर	४ मील।	यहाँ कोटेश्वर महादेवका मन्दिर है।
बंडरिया (रँवाली)	६ ,,	यहाँ क्षेत्रकी धर्मशाला है।
क्यारी	८ ,,	यहाँ क्षेत्रकी धर्मशाला है।
टिहरी	६ ,,	यहाँ भागीरथी-भिलगना-संगम है। बदरीनाथ तथा केदारनाथके विशाल मन्दिर हैं। यह अच्छा नगर है।

नरेन्द्रनगर-टिहरी मार्ग

ऋषिकेशसे नरेन्द्रनगर १० मील है। यहाँ अब मोटर-बस जाती है।

पैदल मार्गसे दूरी ५ मील है। अच्छा नगर है।

फकोट	१० मील।	यहाँ डाकबँगला है।
नागणी	१० ,,	५ मील उतार पड़ता है।
चमुआ	११ ,,	,,
टिहरी	१० ,,	,,

टिहरीसे धरासू

ऋषिकेशसे धरासूतक मोटर-बस जाती है। यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरीमेंसे किसी भी ओर जानेपर धरासू आना पड़ता है। धरासूसे आगेका मार्ग पैदल यात्राका ही है। टिहरीसे भिलंगना नदीके किनारे-किनारे मार्ग जाता है।

टिहरीसे पीपलचट्टी (सराई) ५ मील

भल्डियाना ६ मील क्षेत्रकी धर्मशाला है।
धाम ६ ,, बड़ी धर्मशाला है।
नगुन ५ ,, धर्मशाला है।
धरासू ५ ,, ,,

ऋषिकेश-देहरादून मार्ग

हरिद्वार या ऋषिकेशसे रेलद्वारा देहरादून जाना चाहिये। देहरादूनमें सिखोंके गुरु रामरायजीकी गद्दी है।

देहरादूनसे राजपुर ७ मील। बावलीके किनारे ठहरनेका स्थान है।
टोलघर १ ,,
जड़ीपानी २॥ ,,
बार्लोगंज १ ,,
मसूरी २॥ ,, यहाँतक देहरादूनसे मोटर-बसें आती हैं।

अब मसूरीसे काणाताल होकर टिहरीतक सड़क बन रही है।

जबरखेत १ मील
* सुवाखोली ५ ,, यहाँसे एक मार्ग धरासूको, दूसरा टिहरीको जाता है। एक पगडंडी उत्तरकाशी जाती है।
थत्यूड़ा ६ ,,
मोलधार ५ ,, यहाँसे आगे ३ मील चढ़ाई और फिर ४ मील उतार है।
अँधियारी ७ ,,
चापड़ा १ ,, यहाँ एक डाकबँगला है।
त्याड़चट्टी ६ ,, दो मील उतार, फिर ४ मील चढ़ाई।
† धरासू ७ ,,

धरासूसे यमुनोत्तरी

कल्याणी ४ मील। मार्गमें पानीका अभाव है।
बरमखाला (गेंउला) ५ मील
सिलक्यारा ५ मील क्षेत्रकी धर्मशाला है।
राड़ी ५ मील
गंगाणी २ मील। यहाँ यमुनाकिनारे एक कुण्ड है जिसको गङ्गाजीका जल कहते हैं। यह गङ्गानयन कुण्ड कहलाता है। यमुनोत्तरीकी यात्रा करके यहीं लौटना होता है। यहाँसे उत्तरकाशीको मार्ग जाता है। यहाँ क्षेत्रकी धर्मशाला है।
यमुना चट्टी ७ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है। यहाँसे यमुना पार १ मीलपर वीफगाँवमें मार्कण्डेय-तीर्थ तथा गरम पानीका झरना है।
कुन्सालाचट्टी ४ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है।
हनुमानचट्टी ५ ,, ,, हनुमानगङ्गाका पुल पार करना पड़ता है।
खरसाली ४ ,, यहाँ यमुनोत्तरीके पंडे रहते हैं। इसके आगे कड़ी सर्दी मिलती है। विषैली मक्खियाँ भी तंग करती हैं।
यमुनोत्तरी ४ मील

यमुनोत्तरी

यह स्थान समुद्र-स्तरसे दस हजार फुट ऊँचाईपर है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये यहाँ कालीकमलीवाले क्षेत्रकी धर्मशाला है। यहाँ कई गरम पानीके कुण्ड हैं, जिनका जल खौलता रहता है। यात्री कपड़ेमें बाँधकर चावल, आलू आदि उनमें डुबा देते हैं और वे पदार्थ पक जाते हैं। इस प्रकार वहाँ भोजन बनानेके लिये चूल्हा नहीं जलाना पड़ता। इन कुण्डोंमें स्नान करना सम्भव नहीं और यमुनाजल इतना शीतल है कि उसमें स्नान करना भी अशक्य है। इसलिये गरम तथा शीतल जल मिलाकर स्नान करनेके कुण्ड बने हैं।

बहुत ऊँचाईपर कलिन्दगिरिसे हिम पिघलकर कई

* सुवाखोलीसे १ मील झालकी, आगे ८ मील धनोल्टी (धर्मशाला है), ८ मील कानाताल (धर्मशाला है), ४ मील बंडालगाँव (धर्मशाला है), ४ मीलपर भल्डियाना टिहरी-धरासू मार्गमें है। इस मार्गसे होकर धरासू पहुँचता है, पर यह मार्ग कठिन है।

† यदि यमुनोत्तरी न जाना हो तो धरासूसे ९ मीलपर दुण्ड स्थान है, यहाँ क्षेत्रकी धर्मशाला है। आगे ३॥ मीलपर नाकुरी चट्टी है, यहाँ धर्मशाला तथा डाकबँगला है। उससे २ मीलपर मालतिगाँव है, जाड़ेमें गङ्गोत्तरीके पंडे इसी गाँवमें रहते हैं उससे ४ मीलपर उत्तरकाशी है। उत्तरकाशीसे गङ्गोत्तरीको सीधा मार्ग गया है।

धाराओंमें गिरता है। कलिन्द पर्वतसे निकलनेके कारण यमुनाजी कलिन्द-नन्दिनी या कालिन्दी कही जाती हैं। वहाँ शीत इतना है कि बार-बार झरनोंका पानी जमता-पिघलता है। ऐसे शीतल स्थानमें गरम पानीका झरना और कुण्ड और पानी भी उबलता हुआ, जिसमें हाथ डालनेसे फफोले पड़ जायँ!

यमुनोत्तरीका स्थान संकीर्ण है। छोटी-सी धर्मशाला है, छोटा-सा यमुनाजीका मन्दिर है। कहा जाता है कि महर्षि असितका यहाँ आश्रम था। वे नित्य स्नान करने गङ्गाजी जाते और निवास करते यहाँ यमुनोत्तरीमें। वृद्धावस्थामें दुर्गम पर्वतीय मार्ग नित्य पार करना कठिन हो गया। तब गङ्गाजीने अपना एक छोटा झरना यमुना-किनारे ऋषिके आश्रमपर प्रकट कर दिया। वह उज्ज्वल पानीका झरना आज भी वहाँ है। हिमालयमें गङ्गा और यमुनाकी धाराएँ एक हो गयी होतीं यदि मध्यमें दण्ड पर्वत न आ जाता। देहरादूनके समीप भी दोनों धाराएँ बहुत पास आ जाती हैं।

सूर्यपुत्री यमराज-सहोदरा कृष्णप्रिया कालिन्दीका यह उद्गमस्थान अत्यन्त भव्य है। इस स्थानकी शोभा और ऊर्जस्विता अद्भुत है।

यमुनोत्तरीसे उत्तरकाशी

यमुनोत्तरी जिस मार्गसे जाते हैं, उसी मार्गसे गंगाणी (२४ मील) लौट आना चाहिये।

गंगाणीसे सिंगोठ-९ मील, क्षेत्रकी धर्मशाला है। यहाँपर धरासू-उत्तरकाशी सड़क मिलती है।

डुडा—३ मील।

उत्तरकाशी—६ मील।

उत्तरकाशी—उत्तराखण्डका प्रधान तीर्थस्थल है। यहाँ कालीकमलीवाले क्षेत्रोंका एक मुख्य केन्द्र है। उत्तम धर्मशाला है। यहाँ अनेकों प्राचीन मन्दिर हैं, जिनमें विश्वनाथजीका मन्दिर तथा देवासुरसंग्रामके समय छूटी हुई शक्ति (मन्दिरके सामनेका त्रिशूल) दर्शनीय हैं। एकादशरुद्र-मन्दिर भी बहुत सुन्दर है। विश्वनाथजीके मन्दिरके पास ही गोपेश्वर, परशुराम, दत्तात्रेय, भैरव, अन्नपूर्णा, रुद्रेश्वर और लक्षेश्वरके मन्दिर हैं। विश्वनाथ-मन्दिरके दक्षिण शिव-दुर्गा-मन्दिर है। इसके पूर्व जड़भरतका मन्दिर है।

उत्तरकाशी भागीरथी, असि और वरणा नदियोंके मध्यमें है। इसके पूर्वमें वारणावत पर्वतपर विमलेश्वर महादेवका मन्दिर है। उत्तरकाशीकी पञ्चक्रोशी परिक्रमा वरणा-संगमपर स्नान करके विमलेश्वरको जल चढ़ाकर प्रारम्भ की जाती है। यहाँ जड़भरतका आश्रम है; उसके पास ब्रह्मकुण्ड है—जहाँ स्नान, तर्पण, पिण्डदानादिका विधान है। ब्रह्मकुण्डमें गङ्गाजीका जल प्रायः सदा रहता है; किंतु यहाँके अन्य घाटों तथा कुण्डोंसे गङ्गाजीकी धारा दूर चली गयी है।

उत्तरकाशीसे गङ्गोत्तरी

उत्तरकाशीसे गङ्गोत्तरी—३ मील, यहाँ डोडीतालसे निकली असिगङ्गा भागीरथीमें मिलती हैं। यहींसे एक मार्ग 'डोडीताल' जाता है। यहाँसे १८ मील दूर यह ताल है जो दो मील घेरेका है। मार्ग सुगम है। 'डोडीताल' बहुत मनोहर स्थान है।

मनेरी—७ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है।

मल्लाचट्टी—७ मील। यहाँसे एक मार्ग बूढ़े केदार होकर केदारनाथ जाता है। गङ्गोत्तरीसे लौटकर इस मार्गसे यात्री केदारनाथ जाते हैं। यहाँसे केदारनाथ ८५ मील है।

भटवाड़ी (भास्कर प्रयाग)-२ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है।

गंगनानी-९ मील। यहाँ ऋषिकुण्डनामक गरम पानीका सोता है। यह पवित्र तीर्थ माना जाता है।

लोहारीनाग—४ मील।

सुक्खी-५ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है।

झाला-३ ,, ,, ,, ।

हरसिल (हरिप्रयाग)—२ मील। झालासे आध मीलपर श्यामप्रयाग (श्यामगङ्गा और भागीरथीका संगम है।) यह स्थान बहुत सुन्दर है। यहाँसे पौने दो मीलपर गुप्तप्रयाग है और उससे आध मीलपर हरिप्रयाग है। यहाँ डाकबँगला, धर्मशाला तथा लक्ष्मीनारायण मन्दिर हैं।

अणियाँ पुल—आध मील।

धराली-२ मील। यहाँसे एक मार्ग मेलंगघाटीसे मानसरोवर कैलास जाता है। मार्ग कठिन है। श्रीकण्ठसे आयी दूधगङ्गा यहाँ भागीरथीमें मिलती हैं। संगमपर शिव-मन्दिर है। सामने श्रीकण्ठपर्वत है—महाराज भगीरथका वह तपःस्थान है। यहाँ गङ्गापार मुखबा

मठ है, जाड़ोंमें गङ्गोत्तरीके पंडे मुखबामें रहते हैं। यहाँसे १ मीलपर मार्कण्डेयस्थान है। शीतकालमें गङ्गाजीकी (गङ्गोत्तरीकी मूर्तिकी) पूजा यहीं होती है। मुखवासे ७ मीलपर कानातालपर्वत है, जिसकी चोटीपर एक स्थान-विशेषसे मानव-सुमेरु (स्वर्णपर्वत) के दर्शन होते हैं।

जांगला-४ मील। सरकारी बँगला लकड़ीका है। १॥ मीलपर नेलंगघाटीको मार्ग जाता है।

जाड़गङ्गासंगम—भैरवघाटी पहुँचनेके पौन मील पहले यह स्थान आता है। यहाँ जाड़गङ्गा या जाह्नवीकी धारा वेगपूर्वक आकर भागीरथीमें मिलती है। कहा जाता है कि इस संगमपर ही जह्नु ऋषिका आश्रम था।

भैरवघाटी—२॥ मील। यहाँ गन्धकका पर्वत होनेसे भूमि गरम रहती है। १ मील दूर भैरव-मन्दिर है।

गङ्गोत्तरी—६॥ मील।

गङ्गोत्तरी

यों तो गङ्गाजीका उद्गम गोमुखसे हुआ है और वह स्थान यहाँसे १८ मील आगे है; किन्तु आगेकी यात्रा बहुत कठिन होनेसे बहुत थोड़े यात्री वहाँ जाते हैं। गङ्गोत्तरीमें स्नान करके, गङ्गाजीका पूजन करके, गङ्गाजल लेकर यात्री यहींसे नीचे लौटते हैं।

यह स्थान समुद्रस्तरसे १०,०२० फीटकी ऊँचाईपर गङ्गाजीके दक्षिण तटपर है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं। यात्रियोंको यहाँ सदावर्त भी मिलता है। गङ्गाजी यहाँ केवल ४४ फुट चौड़ी हैं और गहराई लगभग तीन फुट है। आसपास देवदारु तथा चीड़के वन हैं।

यहाँका मुख्य मन्दिर श्रीगङ्गाजीका मन्दिर है। मन्दिरमें आदिशंकराचार्यद्वारा प्रतिष्ठित गङ्गाजीकी मूर्ति है तथा राजा भगीरथ, यमुना, सरस्वती एवं शंकराचार्यकी मूर्तियाँ भी हैं। गङ्गाजीकी मूर्ति, छत्रादि सब सोनेके हैं। गङ्गाजीके मन्दिरके पास एक भैरवनाथ-मन्दिर है। गङ्गोत्तरीमें सूर्यकुण्ड, विष्णुकुण्ड, ब्रह्मकुण्ड आदि तीर्थ हैं। यहीं विशाल भगीरथशिला है, जिसपर राजा भगीरथने तप किया था। इस शिलापर पिण्डदान किया जाता है। यहाँ गङ्गाजीको विष्णुतुलसी चढ़ायी जाती है।

शीतकालमें यह स्थान हिमाच्छन्न हो जाता है, इसलिये पंडे चलमूर्तियोंको मुखबा ग्रामसे १ मील दूर मार्कण्डेयक्षेत्रमें ले आते हैं। वहीं शीतकालमें उनकी अर्चा होती है। कहा जाता है कि मार्कण्डेयक्षेत्र मार्कण्डेय ऋषिकी तपःस्थली है।

गङ्गोत्तरीसे नीचे केदारगङ्गा संगम है। वहाँसे एक फर्लांगपर बड़ी ऊँचाईसे गङ्गाजी शिवलिङ्गके ऊपर गिरती हैं। इस स्थानको गौरीकुण्ड कहते हैं। यह बड़ा ही मनोरम सुषमापूर्ण स्थान है।

गोमुख

गङ्गोत्तरीसे आगेका मार्ग अत्यन्त कठिन है। मार्गमें रीछ और चीते भी मिल सकते हैं। पर्वतीय तीव्रवेगी नालोंको पार करना तथा कच्चे पर्वतोंपर चढ़ना-उतरना बहुत साहस तथा सावधानीकी अपेक्षा रखता है। आगे न कोई बना मार्ग है न पड़ाव और न दूकानें। गङ्गोत्तरीसे मार्गदर्शक, बड़ी लोहा लगी लाठी, बरफ तथा पत्थरोंपर न फिसलें ऐसे जूते, चार दिनका भोजन-सामान और सम्भव हो तो एक तंबू भी ले जाना चाहिये; क्योंकि तंबू न होनेपर वर्षा आ जानेसे रात्रिमें बड़ा कष्ट होता है।

गङ्गोत्तरीसे लगभग १० मीलपर देवगाड़ नामक एक नदी गङ्गाजीमें मिलती है, वहाँस ४½ मीलपर चीड़ोवास (चीड़)-के वृक्षोंका वन है। यात्रीको यहीं वनके अन्तमें रात्रि विश्राम करके प्रातः बड़े सबेरे गोमुख जाना चाहिये। चीड़ोवाससे लगभग ४ मील दूर गोमुख स्थान है।

गोमुखमें ही हिमधारा (ग्लेशियर)-के नीचेसे गङ्गाजीकी धारा प्रकट होती है। इस स्थानकी शोभा अतुलनीय है। यहाँ भगवती भागीरथीके दर्शन करके लगता है जीवन धन्य हो गया। यात्राकी थकान भूल जाती है। भुवनपावनी गङ्गाके इस उद्गममें स्नान कर पाना मनुष्यका अहोभाग्य है।

गोमुखमें इतना शीत है कि जलमें हाथ डालते ही वह हाथ सूना हो जाता है। अग्नि जलाकर तब यात्री स्नान करता है। गोमुखसे लौटनेमें शीघ्रता करना चाहिये। धूप निकलते ही हिमशिखरोंसे मनों भारी हिमचट्टानें टूट-टूटकर गिरने लगती हैं। अतः धूप चढ़े, इससे पूर्व चीड़ोवासके पड़ावपर पहुँच जाना चाहिये। इस प्रकार गङ्गोत्तरीसे गोमुखकी यात्रामें ३ दिन लगते हैं।

गङ्गाका उद्गम

जो बात आधिदैविक जगत्‌में सत्य है, वही

उत्तराखण्डके पवित्र स्थल (३)

गङ्गोत्तरी

गरुड़-गङ्गा

यमुनोत्तरी

गङ्गातटपर धराली-मन्दिर
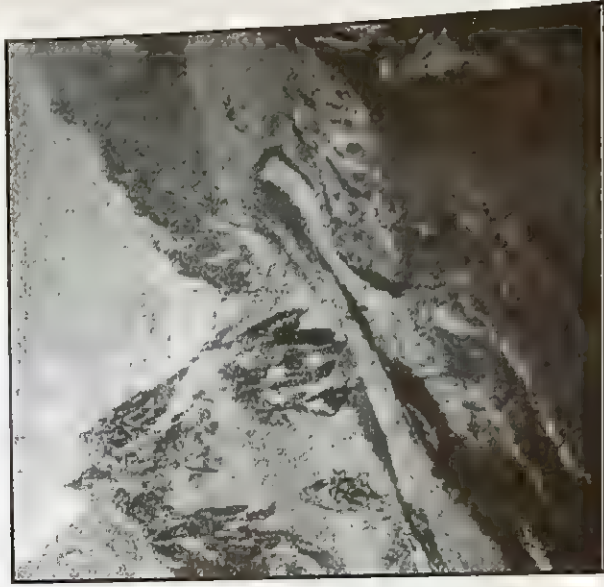
केदारनाथका हिमप्रवाह (गोमुखके पास)

त्रियुगीनारायण

उत्तराखण्डके पवित्र स्थल (४)
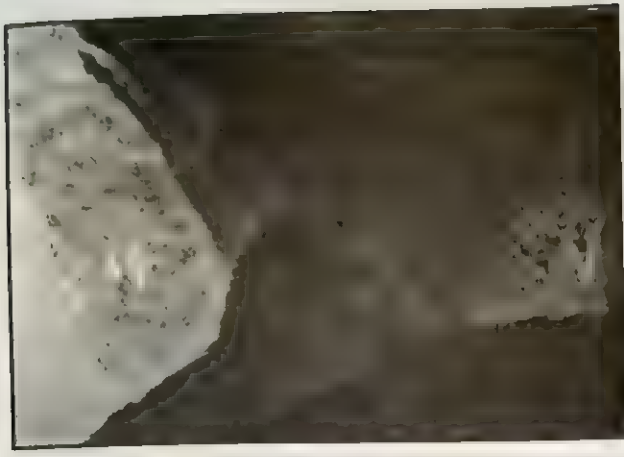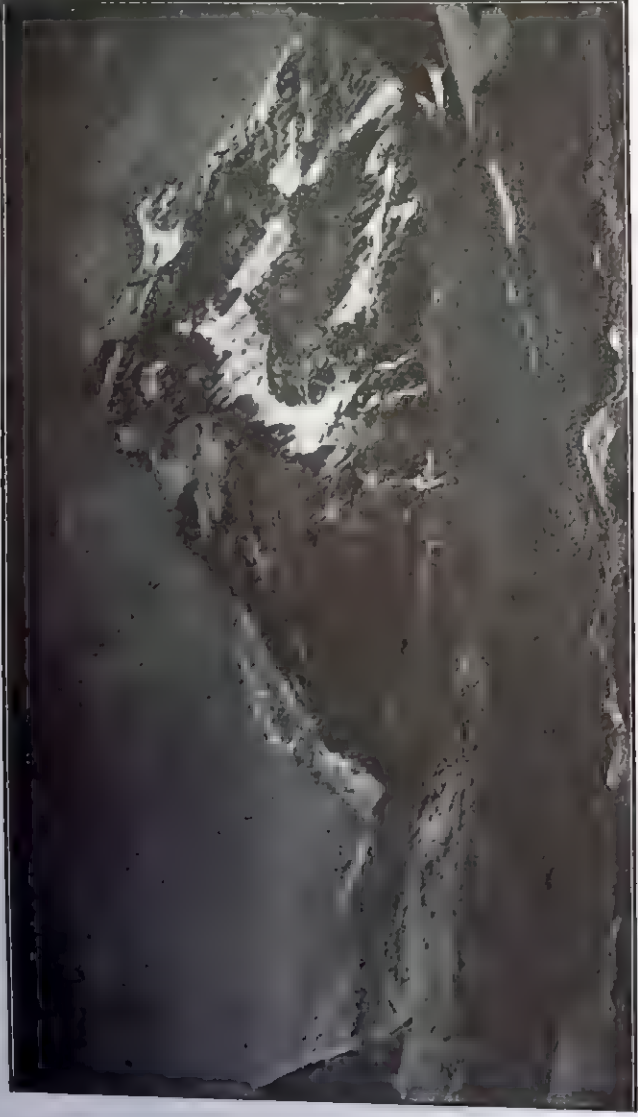
अलकनन्दाका उद्गम-स्थान

ब्रह्मकपाल-शिला, बदरीनाथ

जोशीमठ

देवप्रयाग

आधिभौतिक जगत्में सत्य होगी; क्योंकि हमारा यह जगत् आधिदैविक जगत्का प्रतिरूप है। गङ्गाजी भगवान् नारायणके चरणोंसे निकलकर भगवान् शंकरके मस्तकपर गिरीं और वहाँसे पृथ्वीपर आयीं—यह आधिदैविक जगत्की घटना हमारे जगत्में भी सत्य है। श्रीबदरीनाथसे आगे नर-नारायण पर्वत हैं। नारायण पर्वतके नीचे (चरण)-से ही अलकनन्दा निकलती हैं। और सत्पथ होकर बदरीनाथधाम आती हैं। वहीं नारायणपर्वतके चरणप्रान्तसे भागीरथी गङ्गाका हिमप्रवाह (ग्लेशियर) भी प्रारम्भ होता है। वह प्रवाह अलङ्घ्य चतुःस्तम्भ (चौखम्भे) शिखरसे मानव-सुमेरु (स्वर्णपर्वत)-के पास होता शिवलिङ्गी-शिखरपर आता है। यह शिखर गोमुखसे दक्षिण है। उससे नीचे उतरकर हिमप्रवाहसे गोमुखमें गङ्गाकी धारा पृथ्वीपर व्यक्त होती है। गोमुखमें हिमप्रवाहके दाहिने होकर ऊपर चढ़ा जा सकता है। वहाँसे मानव-सुमेरु ६ मील है और आगे चतुःस्तम्भ २ या ३ मील। किंतु यह यात्रा उच्च हिमशिखरोंपर चढ़नेके अभ्यस्त व्यक्ति ही अपने पूरे सामानके साथ जाकर कर सकते हैं। सामान्य यात्रीके लिये गोमुखसे आगेका मार्ग नहीं है।

गङ्गोत्तरीसे केदारनाथ

गङ्गोत्तरीसे केदारनाथ जानेके लिये—गङ्गोत्तरीको जिस मार्गसे जाते हैं, उसी मार्गसे ४० मील मल्लाचट्टीतक लौटना पड़ता है। मल्लाचट्टीसे आगेका मार्ग इस प्रकार है—

सौराकी गाड (स्याली)-३ मील। धर्मशाला है।

प्यालू—३ मील।

छूँणाचट्टी—३ मील। धर्मशाला है।

बेलक—४ मील।

पँगराना—५ मील।

झल्लाचट्टी—४ मील।

बूढ़ा केदार—५ मील। यहाँ शंकरजीका मन्दिर है।

तोलाचट्टी—४ मील।

भैरोचट्टी—३ मील। यहाँ भैरवजीका तथा हनुमान्जीका मन्दिर है।

भोंटाचट्टी—२ मील।

धुत्तूचट्टी—७ मील। यहाँ रघुनाथजीका मन्दिर है।

गवानाचट्टी—१ मील।

गौमांडा—३ मील।

दुफंदा—३ मील।

पँवाली—३ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है।

मंगूचट्टी—१० मील। इस मार्गमें प्रारम्भिक ४ मीलतक ऊचाई अधिक होनेसे बरफ मिलती है।

त्रियुगीनारायण—५ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है। यहाँ ऋषिकेशसे केदारनाथ जानेवाली सीधी सड़क मिल जाती है।

केदारनाथ—१३$\frac{1}{2}$ मील। त्रियुगीनारायण-केदारनाथका वर्णन अगले मुख्य मार्गके वर्णनके साथ दिया जा रहा है।

केदारनाथ-बदरीनाथ

बहुत-से यात्री यमुनोत्तरी तथा गङ्गोत्तरी नहीं जाते। वे केवल केदारनाथ एवं बदरीनाथकी यात्रा करते हैं। अब ऋषिकेशसे जोशीमठतक मोटर-बसकी सड़क बन गयी है। जोशीमठतक केवल वे यात्री जाते हैं, जिन्हें केवल बदरीनाथ जाना होता है। केदारनाथ जानेवाले यात्री रुद्रप्रयागमें उतर जाते हैं और वहाँसे पैदल केदारनाथ जाते हैं। ऋषिकेशसे बहुत-से श्रद्धालु यात्री पैदल ही पूरी यात्रा करते हैं। ऋषिकेशसे देव प्रयागतकका पैदल मार्ग यमुनोत्तरी-गङ्गोत्तरीयात्राके अन्तर्गत देवप्रयाग-टिहरी मार्गके वर्णनमें बता दिया गया है। देवप्रयागतक मोटरसे भी आ सकते हैं।

देवप्रयागसे आगे पैदलमार्ग—

रानीबाग-८॥ मील।

रामपुर-३॥ मील।

अरकणी-३ मील।

बिल्वकेदार-२ मील।

* श्रीनगर-३ मील। यहाँ नगरप्रवेशसे पूर्व ही शंकरमठ मिलता है और बायीं ओर कमलेश्वर महादेवका मन्दिर है। यह अच्छा नगर है। कालीकमलीवाले क्षेत्रकी

* जो लोग मोटरसे यात्रा करते हैं, वे कीर्तिनगर पहुँचते हैं। वहाँसे पैदल या कंडी आदिसे गङ्गाका पुल पार करना पड़ता है। पुलपार दूसरी मोटर मिलती है, जो श्रीनगर ले आती है। कीर्तिनगरसे श्रीनगर ३ मील है। जो लोग ऋषिकेशसे यात्रा न प्रारम्भ करके नजीबाबादसे रेलद्वारा कोटद्वार आते हैं और वहाँसे मोटर-बससे यात्रा करते हैं, वे भी पौड़ी होकर सीधे श्रीनगर पहुँचते हैं।

बड़ी धर्मशाला है। सत्यनारायणभगवान्‌का मन्दिर है। यह स्थान श्रीक्षेत्र कहा जाता है। सत्ययुगमें कोलासुरके उत्पातसे दुःखी राजा सत्यसंधने यहाँ दुर्गाजीकी आराधना की थी। देवीके वरदानके प्रभावसे राजाने उस असुरका संहार किया। यहाँ अलकनन्दा धनुषाकार हो गयी है—वह धनुषतीर्थ है। भगवान् श्रीरामने यहाँके कमलेश्वर शिवकी अर्चना सहस्र कमलोंसे की थी—ऐसी कथा है। भगवान् शंकरने परीक्षाके लिये एक कमल छिपा दिया, तब श्रीराघवने अपना नेत्र उस कमलके स्थानपर चढ़ाया। यह कमलेश्वर-मन्दिर नगरसे १ मील दूर है। नगरमें श्रीनागेश्वर तथा हनुमान्‌जीके मन्दिर एवं कंसमर्दिनीका स्थान है।

श्रीनगरसे रुद्रप्रयागतक मोटर-बसें जाती हैं। पैदल यात्राका मार्ग निम्न है—

शुकरता—५ मील। कहते हैं यहाँ शुकदेवजीने तपस्या की थी। इसके आगे फरासू गाँव मिलता है, जो परशुरामजीकी तपोभूमि कहा जाता है।

भट्टीसेरा—३॥ मील। धर्मशाला है।

खाँकरा—५ मील।

नरकोटा—२॥ मील।

गुलाबराय—२॥ मील।

रुद्रप्रयाग १॥ मील। यहाँ अलकनन्दा और मन्दाकिनीका संगम है। क्षेत्रकी धर्मशाला है। यहाँसे केदारनाथ तथा बदरीनाथके मार्ग पृथक् होते हैं। केदारनाथको पैदल मार्ग जाता है और बदरीनाथको मोटर-सड़क जाती है। यहाँ शिवमन्दिर है। देवर्षि नारदजीने संगीत-विद्याकी प्राप्तिके लिये यहाँ शङ्करजीकी आराधना की थी। ऋषिकेशसे रुद्रप्रयाग ८४ मील है, रुद्रप्रयागसे केदारनाथ ४८ मील। रुद्रप्रयाग बस-स्टेशनसे २½ मील दूर अलकनन्दाके दाहिने तटपर कोटेश्वर महादेवका स्थान है। एक गुफामें यह शिवलिङ्ग है। मूर्तिपर बराबर जल टपकता रहता है। कोटेश्वरसे १ मीलपर उमरा-नारायणका मन्दिर है। कोटेश्वरमें तथा उमरा नारायणमें भी धर्मशाला है।

स्वामिकार्तिकका मन्दिर—यह रुद्रप्रयागसे १६ मील दूर मोहनाखाल जानेवाले मार्गपर है। यह स्थान सिद्धपीठ माना जाता है।

हरियाली देवी—रुद्रप्रयागसे सात मील दूर शिवानन्दीसे ६ मील पहाड़ी चढ़ाई पड़ती है। पर्वत-शिखरपर यह देवी-मन्दिर है। ये वैष्णवी देवी हैं। (श्रीदयाशङ्कर तिवारी मालगुजारकी सूचनाके आधारपर)

रुद्रप्रयागसे केदारनाथ

पुलके द्वारा अलकनन्दाको पार करके मन्दाकिनीके किनारे-किनारे आगेका मार्ग है।

छतौली—५ मील। यहाँसे आगे अलसतरङ्गिणी नदी मन्दाकिनीमें मिलती है। वहाँ सूर्यनारायणने तप किया था, इससे उसे सूर्यप्रयाग कहते हैं।

मठ चट्टी—१॥ मील।

रामपुर—१ मील।

अगस्त्यमुनि—४॥ मील। यहाँ अगस्त्यमुनिका मन्दिर है। क्षेत्रकी धर्मशाला है। यहाँसे ६ मील पूर्व स्कन्दपर्वत है, वहाँ स्वामिकार्तिकका मन्दिर है।

छोटा नारायण—½ मील। छोटा नारायणका मन्दिर है, रुद्राक्षका वृक्ष है।

सोड़ी—१॥ मील।

चन्द्रापुरी—२ मील। यहाँ चन्द्रशेखर शिव तथा दुर्गाजीके मन्दिर हैं। मन्दाकिनी और चन्द्रानदीका संगम है। यहाँ पुल पार करना पड़ता है।

भीरी—२॥ मील। पुलसे मन्दाकिनी पार करना पड़ता है। भीमका मन्दिर है। टेहरी तथा बूढ़े केदारसे एक पगडंडीका मार्ग यहाँतक है।

कुण्ड—३॥ मील।

गुप्तकाशी—२॥ मील। यहाँ डाकबँगला है, क्षेत्रकी धर्मशाला है। पूर्वकालमें यहाँ ऋषियोंने भगवान् शङ्करकी प्राप्तिके लिये तप किया था। राजा बलिके पुत्र बाणासुरकी राजधानी * शोणितपुर इसके समीप

* बाणासुरकी राजधानी गया-पटनाके मध्य बिहार प्रान्तमें बराबर पर्वतपर भी बतायी जाती है।

रुद्रप्रयागसे चमोली (लालसोंगा)

जो यात्री केदारनाथ नहीं जाते, सीधे बदरीनाथ जाना चाहते हैं, उन्हें यदि मोटरसे जाना हो तब तो आगे जोशीमठतक मोटर जाती ही है। पैदल जाना हो तो अलकनन्दाके किनारे-किनारे जाना चाहिये। रुद्रप्रयागसे आगे शिवानन्दी-७ मील। कमेडा-३॥ मील।

ही है। मन्दाकिनीके उस पार सामने ऊषीमठ है। कहते हैं कि बाणासुरकी कन्या ऊषाका भवन वहाँ था और वहीं ऊषाकी सखी द्वारिकासे अनिरुद्धजीको ले आयी थी। गुप्तकाशीमें अर्द्धनारीश्वर शिवकी नन्दीपर आरूढ़ सुन्दर मूर्ति है। काशी-विश्वनाथकी लिङ्ग-मूर्ति भी है और नन्दीश्वर तथा पार्वतीकी भी मूर्तियाँ उसी मन्दिरमें हैं। एक कुण्डमें दो धाराएँ गिरती हैं। जिन्हें गङ्गा-यमुना कहते हैं। यात्री यहाँ स्नान करके गुप्तदान करते हैं। केदारनाथके पंडे यहीं मिलते हैं।

नाला—१॥ मील। केदारनाथसे लौटते समय यात्री यहींसे सीधे ऊषीमठ चले जाते हैं। यहाँ ललितादेवीका मन्दिर है। ये राजा नलकी आराध्यदेवी हैं।

मातादेवी—१॥ मील। यहाँ मातादेवीका मन्दिर तथा अन्य ४५ प्रचीन मन्दिर हैं।

नारायण कोटि (भेता)—१ मील नारायणका प्राचीन मन्दिर है। वहाँसे २। मीलपर सरस्वती किनारे कालीमठ है। कहा जाता है कि यहाँ कालिदासने देवीकी आराधना की थी।

व्योंगचट्टी—१ मील।

मैखण्डा—२ मील। महिषमर्दिनी देवीका मन्दिर है और हिंडोला है।

फाटा—२ मील। धर्मशाला है।

रामपुर—३ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है। यहाँ कालीकमली-क्षेत्रकी ओरसे यात्रियोंको ५ दिनके लिये कम्बल मिल जाते हैं। अधिक सामान यहीं छोड़ देना चाहिये। केदारनाथसे लौटकर कम्बल लौटा दिये जाते हैं। रामपुरसे त्रियुगीनारायण न जाना हो तो केदारनाथको सीधा रास्ता भी है। त्रियुगीनारायणका मार्ग कठिन चढ़ाईका है। जहरीली मक्खियोंका उपद्रव आगे है।

त्रियुगीनारायण—४॥ मील। पर्वतशिखरपर नारायण-भगवान्‌का मंदिर है। भगवान् नारायण भूदेवी तथा लक्ष्मीदेवीके साथ विराजमान हैं। एक सरस्वती गङ्गाकी धारा यहाँ है, जिससे चार कुण्ड बनाये गये हैं—ब्रह्मकुण्ड, रुद्रकुण्ड, विष्णुकुण्ड और सरस्वती-कुण्ड। रुद्रकुण्डमें स्नान, विष्णुकुण्डमें मार्जन, ब्रह्मकुण्डमें आचमन और सरस्वतीकुण्डमें तर्पण होता है। यहाँ मन्दिरमें अखण्ड धूनी जलती रहती है। यात्री धूनीमें हवन करते हैं, समिधा डालते हैं। कहते हैं कि यहीं शिव-पार्वतीका विवाह हुआ था।

रामपुरसे त्रियुगीनारायण आते समय १॥ मीलपर पाटागाड़ पुल मिलता है। वहाँसे जो त्रियुगीनारायण नहीं जाते, वे सीधे सोमद्वार (सोमप्रयाग) होकर गौरीकुण्ड होते केदारनाथ चले जाते हैं। जो त्रियुगीनारायण जाते हैं, उन्हें लगभग दो मीलकी चढ़ाईके बाद शाकम्भरी देवीका मन्दिर मिलता है। इन्हें मनसा देवी भी कहते हैं। देवीको चीर चढ़ाया जाता है। त्रियुगीनारायणसे इसी मार्गसे पाटागाड़ पुलतक लौटना पड़ता है।

सोमद्वार (सोमप्रयाग)—३। मील। सोम नदी मन्दाकिनीमें मिलती है। पुलपार १ मीलपर छिन्नमस्तक गणपति हैं।

गौरीकुण्ड—३ मील—क्षेत्रकी धर्मशाला है। यहाँ दो कुण्ड हैं—एक गरम पानीका और एक ठंढे पानीका। शीतल जलका कुण्ड अमृतकुण्ड कहा जाता है। कहते हैं कि भगवती पार्वतीने इसीमें प्रथम स्नान किया था। गौरीकुण्डका जल पर्याप्त उष्ण है। माता पार्वतीका जन्म यहीं हुआ था। यहाँ पार्वती-मन्दिर है। श्रीराधाकृष्ण-मन्दिर भी है। यहाँसे केदारनाथ ८ मील है। कड़ी चढ़ाई है। अत्यधिक शीत पड़ता है। मक्खियोंका उपद्रव है।

चिरपटिया भैरव—१ मील। यहाँ वस्त्र चढ़ाया जाता है।

भीलशिला—१ मील।

रामबाड़ा—२ मील। यहाँ क्षेत्रकी धर्मशाला है। केदारनाथ जाकर शामतक यहीं लौट आते हैं। अतः बिस्तर आदि सामान यहीं छोड़ देना चाहिये।

गौचर ४ मील। कर्णप्रयाग-४ मील। यहाँ क्षेत्रकी धर्मशाला है, देवीका प्राचीन मन्दिर है, पिंडरगङ्गा यहाँ अलकनन्दामें मिलती है। उमट्टा-२॥ मील। जैकंडी-२ मील। लंगासु-२ मील। सोनला-३ मील, यहाँ पानी कम है। नन्दप्रयाग-३ मील, यहाँ अलकनन्दाका तथा नन्दाका संगम है। मैठाड़ा-३ मील। कुहेड़चट्टी-२ मील। चमोली-२ मील। चमोलीसे आगेका मार्ग दिया गया है।

* केदारनाथ—१ मील। श्रीकेदारनाथजी द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें एक हैं। सत्ययुगमें उपमन्युजीने यहीं भगवान् शङ्करकी आराधना की थी। द्वापरमें पाण्डवोंने यहाँ तपस्या की। यह केदार-क्षेत्र अनादि है। महिषरूपधारी भगवान् शङ्करके विभिन्न अङ्ग पाँच स्थानोंमें प्रतिष्ठित हुए—इससे पञ्चकेदार माने जाते हैं। उनमेंसे (तृतीय केदार) तुङ्गनाथमें बाहु, (चतुर्थ केदार) रुद्रनाथमें मुख, (द्वितीय केदार) मदमहेश्वरमें नाभि, (पञ्चम केदार) कल्पेश्वरमें जटा तथा (इस प्रथम केदार) केदारनाथमें पृष्ठ-भाग और पशुपतिनाथ नैपालमें सिर माना जाता है। केदारनाथमें भगवान् शङ्करका नित्य सांनिध्य बताया गया है।

केदारनाथमें कोई निर्मित मूर्ति नहीं है। बहुत बड़ा त्रिकोण पर्वत-खण्ड-सा है। यात्री स्वयं जाकर पूजा करते हैं और अङ्कमाल देते हैं। मन्दिर प्राचीन पर साधारण है। वहाँके दर्शनीय स्थान भृगुपंथ (मघ्नगङ्गा), क्षीरगङ्गा (चोराबाड़ीताल), वासुकि ताल, गुगूकुण्ड एवं भैरवशिला हैं।

यहाँ पाँचों पाण्डवोंकी मूर्तियाँ हैं। भीमगुफा और भीमशिला है। कहते हैं कि इस मन्दिरका जीर्णोद्धार आदि-शङ्कराचार्यने करवाया था और यहीं उन्होंने देहत्याग किया था। मन्दिरके पास कई कुण्ड हैं। पर्वतशिखरपर स्थलकमल प्राप्त होते हैं। केदारनाथमें कई धर्मशालाएँ हैं; किंतु अत्यधिक शीतके कारण यात्री वहाँ रातमें नहीं ठहरते।

श्रीकेदारनाथ-मन्दिरमें ऊषा, अनिरुद्ध, पञ्चपाण्डव, श्रीकृष्ण तथा शिव-पार्वतीकी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरके बाहर परिक्रमाके पास अमृतकुण्ड, ईशानकुण्ड, हंसकुण्ड, रेतसकुण्ड आदि तीर्थ हैं।

केदारनाथसे बदरीनाथ

केदारनाथजीसे लौटनेका मार्ग गौरीकुण्ड, रामपुर आदि होकर नालाचट्टीतक वही है। नालाचट्टीसे १॥ मीलपर मन्दाकिनी पार करके ऊषीमठ है।

† ऊषीमठ—जाड़ोंमें केदारक्षेत्र हिमाच्छादित हो जाता है। उस समय केदारनाथजीकी चल-मूर्ति यहाँ आ जाती है। यहीं शीतकालभर उनकी पूजा होती है। यहाँ मन्दिरके भीतर बदरीनाथ, तुङ्गनाथ, ओंकारेश्वर, केदारनाथ, ऊषा, अनिरुद्ध, मान्धाता तथा सत्ययुग, त्रेता-द्वापरकी मूर्तियाँ एवं कई मूर्तियाँ हैं।

गणेशचट्टी—३॥ मील।

पोथीवासा—५ मील।

बनियाकुंड—२ मील।

चौपता—१ मील। यहाँसे तुङ्गनाथ ३ मीलकी कठिन चढ़ाई प्रारम्भ होती है।

कालीमठमें महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वतीके मन्दिरमें हैं। यह सिद्धपीठ माना जाता है। कहते हैं कि रक्तबीज दैत्यके वधके लिये यहीं देवताओंने आराधना की और उन्हें महाकालीने दर्शन दिया था।

यह स्थान वन तथा बर्फीली चट्टानोंके बीचमें है। यहाँ एक कुण्ड है, जो एक शिलासे ढका रहता है। वह केवल दोनों नवरात्रोंमें खोला जाता है। नवरात्रोंमें यहाँ यज्ञ होता है।

कालशिला—कालीमठसे ३ मील दूर यह स्थान है। यहाँ विभिन्न देवियोंके ६४ यन्त्र हैं। कहा जाता है कि रक्तबीज-युद्धके समय इन्हीं यन्त्रोंसे शक्तियाँ प्रकट हुई थीं।

राकेश्वरी—कालीमन्दिरसे ४ मीलपर यह विशाल मन्दिर है। आजकल इस स्थानको राँसी कहते हैं।

कोटिमाहेश्वरी—कालीमठसे यह स्थान दो मील दूर है। कोटिमाहेश्वरी देवीका मन्दिर है। यात्री यहाँ पितृ-तर्पण तथा पिण्डदान करते हैं।

तुङ्गनाथ—३ मील (खड़ी चढ़ाई) तुङ्गनाथ पञ्चकेदारमेंसे तृतीय केदार हैं। इस मन्दिरमें शिवलिङ्ग तथा कई और मूर्तियाँ हैं। यहाँ पातालगङ्गा नामक एक अत्यन्त शीतल जलकी धारा है। तुङ्गनाथ-शिखरपरसे पूर्वकी ओर नन्दादेवी, पञ्चचूली तथा द्रोणाचल

---

* श्रीकेदारनाथजीसे १० मीलपर वासुकि-ताल है। यह अत्यन्त रमणीक स्थान है। किंतु मार्ग बहुत कठिन है। कहीं विश्रामस्थल नहीं है।

† ऊषीमठसे एक पगडंडी मार्ग मदमहेश्वर (मध्यमेश्वर) तक—जो द्वितीय केदार माने जाते हैं—जाता है। मदमहेश्वर १८ मील दूर है। इस मार्गमें कालीमठ तथा मदमहेश्वर-स्थान मिलते हैं। फिर ऊषीमठ लौटना पड़ता है।

शिखर दीखते हैं। उत्तर ओर गङ्गोत्तरी, यमुनोत्तरी, केदारनाथ, चतुःस्तम्भ, बदरीनाथ तथा रुद्रनाथके शिखर दीख पड़ते हैं। दक्षिणमें पौड़ी, चन्द्रवदनी पर्वत तथा सुरखण्डा देवी शिखर दिखायी देते हैं।

जंगलचट्टी—३ मील। यदि तुङ्गनाथकी चढ़ाई न करनी हो तो चोपतासे सीधे १॥ मील भुलकनाचट्टी और वहाँसे १ मील भीमड्यार होकर जंगलचट्टी पहुँच सकते हैं।

पांगरबासा—२॥ मील।

[१]**मण्डलचट्टी**—४। मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है। पासमें बालखिल्या नदी बहती है।

गोपश्वर—४ मील। श्रीमहादेवजीका मन्दिर है, परशुरामजीका परशु (फरसा) तथा अष्टधातुमय त्रिशूल दर्शनीय हैं। यहाँ वैतरणी नदी है।

चमोली (लालसांगा)—३ मील। यह बड़ा बाजार है। क्षेत्रकी धर्मशाला है। यहाँ ऋषिकेशसे सीधे बदरीनाथ जानेवाली सड़क मिल गयी है। केदारनाथसे लौटकर जाना हो तो यहाँ मोटर मिल जाती है, जो बदरीनाथकी ओर जोशीमठतक जाती है।

मठचट्टी—२ मील।

छिनका—१ मील।

सियासैन—३ मील।

हाटचट्टी—१ मील।

[२]**पीपलकोटी**—२ मील। यहाँ डाकबँगला है, क्षेत्रकी धर्मशाला है।

गरुड़गङ्गा—३॥ मील। गणेशजी तथा गरुड़जीकी मूर्तियाँ हैं। गरुड़गङ्गा यहाँ अलकनन्दामें मिलती है। पाँखगाँवमें नृसिंहमन्दिर है। क्षेत्रकी धर्मशाला है।

टँगणी—१॥ मील।

पातालगङ्गा—३ मील। मार्ग खराब है।

गुलाबकोटी—२ मील। डाकबँगला है।

[३]**कुम्हारचट्टी** (हेलंग)—२ मील।

खनेटी—२॥ मील। यहाँसे मुख्य मार्गसे अलग आध मील नीचे अणीमठ नामक स्थानमें वृद्ध बदरीका मन्दिर है। लक्ष्मीनारायणकी प्राचीन मूर्ति है।

झड़कूला—१ मील।

जोशीमठ—१ मील। शीतकालमें ६ महीने श्रीबदरीनाथजीकी चलमूर्ति यहीं रहती है। उस समय यहीं पूजा होती है। यहाँ ज्योतीश्वर महादेव तथा भक्तवत्सल भगवान्—ये दो मुख्य मन्दिर हैं। ज्योतीश्वर शिवमन्दिर प्राचीन है। इसके पास एक अत्यन्त प्राचीन वृक्ष है। इस मन्दिरके पास ही ज्योतिष्पीठ शंकराचार्य-मठ है। यहाँ नभगङ्गा, दण्डधाराका स्नान होता है। जोशीमठसे एक रास्ता नीतीघाटी होकर मानसरोवर-कैलासके लिये जाता है।

जोशीमठके नृसिंहजी—जोशीमठमें नृसिंहभगवान्का मन्दिर है। यहाँ शालग्राम-शिलामें भगवान् नृसिंहकी अद्भुत मूर्ति है। जब पुजारी निर्वाण समयके दर्शन कराते हैं, तब भलीभाँति दर्शन होता है। भगवान् नृसिंहकी एक भुजा बहुत पतली है और लगता है कि पूजा करते समय वह मूर्तिसे कभी भी अलग हो सकती है। कहा जाता है कि जिस दिन यह हाथ अलग होगा, उसी दिन विष्णुप्रयागसे आगे नर-नारायण पर्वत (जो बिल्कुल पास आ गये हैं) मिल जायँगे और बदरीनाथका मार्ग बंद हो जायगा। उसी दिनसे कोई बदरीनाथ नहीं जा सकेगा। उसके बाद यात्री[४]भविष्यबदरी जाया करेंगे।

१-मण्डलचट्टीसे एक मार्ग अमृतकुण्ड जाता है। इस मार्गमें अनसूयामठ, अत्रि-आश्रम, दत्तात्रेय-आश्रम तथा अमृतकुण्ड मिलते हैं; इस यात्राको पूरी करके मण्डलचट्टी लौटनेमें ३ दिन लगते हैं। भोजनादिका सामान मण्डलचट्टीसे साथ ले जाना पड़ता है। मण्डलचट्टीसे एक मार्ग रुद्रनाथको भी जाता है। रुद्रनाथ चतुर्थ केदार माने जाते हैं।

२-पीपलकोटीसे एक मार्ग गोहनाताल जाता है। यह स्थान पीपलकोटीसे १० मील दूर है। स्थान मनोहर है।

३-हेलंगमें सड़क छोड़कर बायीं ओर अलकनन्दाको पुलसे पार करके एक मार्ग जाता है। इस मार्गसे ६ मील जानेपर कल्पेश्वर शिवमन्दिर आता है, जो पञ्चकेदारमेंसे पञ्चम केदार माना जाता है। यहीं ध्यान-बदरीका मन्दिर भी है। इस स्थानका नाम उरगम है। यहाँ क्षेत्रकी धर्मशाला है। दुर्वासाके शापसे पीड़ित देवताओंने यहाँ तपस्या की थी। वंशीनारायण और रुद्रनाथ भी इसी मार्गमें आगे हैं। रुद्रनाथ (चतुर्थ केदार) की यात्रा करके लौटनेमें लगभग ६ दिन लगते हैं। रुद्रनाथको एक मार्ग मण्डलचट्टीसे जाता है।

४-भविष्यबदरी—जोशीमठसे जो मार्ग नीतीघाटी होकर कैलास जाता है, उस मार्गपर जोशीमठसे ६ मीलपर तपोवन है। यहाँ

जोशीमठसे आगे चलनेपर विष्णुप्रयाग—३ मील। विष्णु-गङ्गा और अलकनन्दाका सङ्गम है। प्रवाह तीव्र है। भगवान् विष्णुका मन्दिर है। देवर्षि नारदने यहाँ भगवान्की आराधना की थी।

बलदौड़ाचट्टी—१ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है।

घाटचट्टी—३ मील।

* पाण्डुकेश्वर—२ मील। यहाँ योग-बदरी (ध्यान-बदरी) का मन्दिर है, जिन्हें पाण्डुकेश्वर भी कहते हैं। यह मूर्ति महाराज पाण्डुद्वारा स्थापित है। पाण्डु अपनी दोनों रानियोंके साथ यहीं तपस्या करते थे। यहाँ पाण्डवोंका जन्म हुआ। यहाँ क्षेत्रकी धर्मशाला है। डाकबँगला है।

शेषधारा—१ मील। वैष्णव आश्रम है। शेषजीकी तपोभूमि है।

लामबगड़—१ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है। इसके आगे बैखानस टीला है, जहाँ राजा मरुत्तने यज्ञ किया था।

हनुमान-चट्टी—३॥ मील। क्षेत्रकी धर्मशाला है। हनुमान्जीका मन्दिर है। यहाँ पहले हनुमान्जी निवास करते थे।

घोरसिल पुल—१ मील।

रडंग पुल—१ मील।

काञ्चनगङ्गा—१ मील।

देवदेखनी— १/२ मील। यहाँसे श्रीबदरीनाथ-मन्दिरके दर्शन होते हैं।

श्रीबदरीनाथ—१ मील। यहाँ कालीकमलीक्षेत्रकी कई धर्मशालाएँ हैं। यात्रियोंको क्षेत्रसे कम्बल भी मिलते हैं। सदावर्त मिलती है।

बदरीनाथ—बदरीनाथ धाममें पहुँचकर अलकनन्दामें स्नान करना अत्यन्त कठिन है। अलकनन्दाके तो यहाँ दर्शन ही किये जाते हैं। स्नान तो यात्री तप्तकुण्डमें करते हैं। स्नान करके मन्दिरमें दर्शनको जाना पड़ता है। वनतुलसीकी माला, चनेकी कच्ची दाल, गरी-गोला, मिश्री आदि प्रसाद चढ़ानेके लिये यात्री ले जाते हैं। मन्दिर जाते समय बायीं ओर शङ्कराचार्यजीका मन्दिर मिलता है। मुख्य मन्दिरमें सामने ही गरुड़जी हैं।

श्रीबदरीनाथजीकी मूर्ति शालग्राम-शिलामें बनी ध्यानमग्न चतुर्भुज मूर्ति है। कहा जाता है कि पहली बार यह मूर्ति देवताओंने अलकनन्दामें नारदकुण्डसे निकालकर स्थापित की। देवर्षि नारद उसके प्रधान अर्चक हुए। उसके बाद जब बौद्धोंका प्राबल्य हुआ, तब इस मन्दिरपर उनका

गरम जलका कुण्ड है। बड़ा रमणीक स्थान है। तपोवनसे ३ मील ऊपर विष्णुमन्दिर है, यही भविष्यबदरी है। मन्दिरके पास वृक्षके नीचे एक शिला है, जिसमें ध्यानपूर्वक देखनेसे भगवान्की आधी आकृति दीखती है। भविष्यमें वह आकृति पूरी हो जायगी, तभीसे यहाँ यात्रा होने लगेगी। भविष्यबदरीके पास ही लाता देवीका मन्दिर तथा आकाशसे गिरी खड्ग है। २४ वर्षपर यहाँ भारी मेला लगता है।

* पाण्डुकेश्वरसे एक मार्ग लोकपाल, पुष्पघाटी, हेमकुण्ड तथा काकभुशुण्डितक जाता है। पाण्डुकेश्वरसे हेमकुण्ड ११ मील है। ४ मील चलकर गङ्गापार करके ७ मील जाना पड़ता है। मार्ग कठिन है; किंतु पुष्पघाटी इतनी सुन्दर है—पुष्पोंका ऐसा अद्भुत प्रवेश है वह कि विदेशी यात्री वहाँ पर्याप्त संख्यामें जाते हैं। हेमकुण्डमें छोटा-सा गुरुद्वार बना है। नीचे घाँघरिया स्थानमें सिक्खोंकी दो धर्मशालाएँ हैं। गुरु गोविन्दसिंहने अपने 'विचित्र नाटक' में लिखा है कि उन्होंने पूर्वजन्ममें सप्तशृङ्ग पर्वतपर हेमकुण्डमें तपस्या करके महाकाल और कालिकाकी आराधना की थी। नर-पर्वतपर सुमेरुके समीप यह तीर्थ है। पुराणोंमें इसका बहुत माहात्म्य कहा गया है। काकभुशुण्डितक जाकर लौटनेमें लगभग ८ दिन लगते है। भोजनादिका सब सामान जोशीमठसे जाना चाहिये।

बदरीनाथसे ४ मीलपर हनुमानचट्टी है, उसके ऊपर ही लोकपाल है; किंतु उधरसे मार्ग नहीं है। मार्ग पाण्डुकेश्वरसे ही है। पाण्डुकेश्वरसे ४ मीलपर झूलेके पुलसे गङ्गाको पार करना पड़ता है। पुलपार लक्ष्मणगङ्गा मिलती है, जो लोकपाल सरोवरसे निकली है। इसके किनारे-किनारे ही जाना पड़ता है। एक छोटा गाँव भ्यूडार मिलता है, वहाँसे ४-५ मील ऊपर अत्यन्त दुर्गम चढ़ाई पार करके जंगलमें छोटा-सा लोकपाल मन्दिर मिलता है (वही मुख्य मन्दिर है)। यहाँ रीछका भय है। लोकपालसे ३ मील ऊपर घाँघरियामें सिख-धर्मशाला है। आगे लोकपाल सरोवर है और लोकपाल (लक्ष्मणजी) तथा देवीजीका मन्दिर है। सिखोंका गुरुद्वार है। लोकपाल सरोवर (हेमकुण्ड) अत्यन्त स्वच्छ है। यह पूरा प्रदेश पुष्पघाटी है। स्थलकमल तथा अनेक अद्भुत पुष्पोंसे पृथ्वी ढकी है। इस लोकपाल सरोवरका नाम दण्डपुष्करिणी है। लोकपालसे काकभुशुण्डि-शिखर दीखता है। मार्ग अत्यन्त कठिन है। लोकपालके दूसरी ओर नर-पर्वतपर ही सुमेरु है; किंतु वहाँतक इस मार्गसे जाया जा सकता है या नहीं—कहना कठिन है। लोकपालके एक ओर सुमेरुतीर्थतक तो जाना शक्य है, परन्तु अत्यन्त कठिन मार्ग है।

अधिकार हो गया। उन्होंने बदरीनाथकी मूर्तिको बुद्धमूर्ति मानकर पूजा करना जारी रखा। जब शङ्कराचार्यजी बौद्धोंको पराजित करने लगे, तब इधरके बौद्ध तिब्बत भाग गये। भागते समय वे मूर्तिको अलकनन्दामें फेंक गये। शङ्कराचार्यजीने जब मन्दिर खाली देखा, तब ध्यान करके अपने योगबलसे मूर्तिकी स्थिति जानी और अलकनन्दासे मूर्ति निकलवाकर मन्दिरमें प्रतिष्ठित करायी। तीसरी बार मन्दिरके पुजारीने ही मूर्तिको तप्तकुण्डमें फेंक दिया और वहाँसे चला गया। क्योंकि यात्री आते नहीं थे, उसे सूखे चावल भी भोजनको नहीं मिलते थे। उस समय पाण्डुकेश्वरमें किसीको घण्टाकर्णका आवेश हुआ और उसने बताया कि भगवान्‌का श्रीविग्रह तप्तकुण्डमें पड़ा है। इस बार मूर्ति तप्तकुण्डसे निकालकर श्रीरामानुजाचार्य (इस सम्प्रदायके किसी आचार्य) द्वारा प्रतिष्ठित की गयी।

श्रीबदरीनाथजीके दाहिने कुबेरकी मूर्ति है (पीतलकी), उनके सामने उद्धवजी हैं तथा बदरीनाथजीकी उत्सव-मूर्ति है। यह उत्सवमूर्ति शीतकालमें जोशीमठ बनी रहती है। उद्धवजीके पास ही चरण-पादुकाएँ हैं। बायीं ओर नर-नारायणकी मूर्ति है। इनके समीप ही श्रीदेवी और भूदेवी हैं।

मुख्य मन्दिरसे बाहर मन्दिरके घेरेमें ही शंकराचार्यकी गद्दी है। मन्दिरका कार्यालय है। यहाँ भेंट चढ़ाकर रसीद ले लेनेसे दूसरे दिन प्रसाद मिल जाता है। जहाँ घण्टा लटकता है, वहाँ बिना धड़की घण्टाकर्णकी मूर्ति है। परिक्रमामें भोगमंडीके पास लक्ष्मीजीका मन्दिर है।

बदरीनाथ धामके अन्य तीर्थ—

श्रीबदरीनाथ-मन्दिरके सिंहद्वारसे ४-५ सीढ़ी उतरकर शङ्कराचार्य-मन्दिर है। इसमें लिङ्गमूर्ति है। उससे ३-४ सीढ़ी नीचे आदि-केदारका मन्दिर है। नियम यह है कि आदि-केदारके दर्शन करके बदरीनाथजीके दर्शन करने चाहिये। केदारनाथसे नीचे तप्तकुण्ड है। इसे अग्नितीर्थ कहा जाता है।

तप्तकुण्डके नीचे पञ्चशिला है। १-गरुड़-शिला, वह शिला जो केदारनाथ-मन्दिरको अलकनन्दाकी ओरसे रोके खड़ी है। इसीके नीचे होकर उष्ण जल तप्तकुण्डमें आता है। २-नारदशिला, तप्तकुण्डसे अलकनन्दाकी ओर जो बड़ी शिला है। यह अलकनन्दातक है। इसके नीचे अलकनन्दामें नारदकुण्ड है। इसपर नारदजीने दीर्घकालतक तप किया था। ३-मार्कण्डेय-शिला, नारद-कुण्डके पास अलकनन्दाकी धारामें। इसपर मार्कण्डेयजीने भगवान्‌की आराधना की थी। ४-नरसिंह-शिला, नारदकुण्डसे ऊपर जलमें एक सिंहाकार शिला है। हिरण्यकशिपु-वधके पश्चात् नृसिंहभगवान् यहाँ पधारे थे। ५-वाराही शिला, अलकनन्दाके जलमें यह उच्च शिला है। पातालसे पृथ्वीका उद्धार करके हिरण्याक्षवधके पश्चात् वाराहभगवान् यहाँ शिलारूपमें स्थित हुए। यहाँ गङ्गाजीमें प्रह्लादकुण्ड, कर्मधारा और लक्ष्मीधारा तीर्थ हैं।

तप्तकुण्डसे सड़कपर आ जायँ और लगभग ३०० गज चलकर फिर अलकनन्दाके किनारे उतरें तो वहाँ एक शिला मिलेगी। यह ब्रह्मकपाल तीर्थ (कपाल-मोचन) है। यहाँ यात्री पिण्डदान करते हैं। शङ्करजीने जब ब्रह्माका पाँचवाँ मस्तक कटुभाषी होनेके दोषके कारण काटा, तब वह उनके हाथमें चिपक गया। जब समस्त तीर्थोंमें घूमते शङ्करजी यहाँ आये, तब वह हाथमें सटा कपाल स्वतः छूटकर गिर पड़ा। इस ब्रह्मकपालीतीर्थके नीचे ही ब्रह्मकुण्ड है। यहाँ ब्रह्माजीने तप किया था।

ब्रह्मकुण्डसे मातामूर्ति

ब्रह्मकुण्डसे गङ्गाजीके किनारे-किनारे ऊपर जानेपर जहाँ अलकनन्दा मुड़ती है, वहाँ अत्रि-अनसूया तीर्थ है। उस स्थानसे माणाकी सड़कसे आगे चलनेपर इन्द्रधारा नामक श्वेत झरना मिलता है। यहाँ इन्द्रने तप किया था। इसे इन्द्रपद-तीर्थ भी कहते हैं। किसी महीनेकी शुक्ला त्रयोदशीको यहाँ स्नान-व्रत करना महत्त्वपूर्ण माना गया है। यहाँसे थोड़ी दूर आगे माणा गाँव है। अलकनन्दाके उस पार है; किंतु इसी पार नर-नारायणकी माता धर्म-पत्नी मूर्ति देवीका छोटा-सा मन्दिर है। यह क्षेत्र धर्मक्षेत्र है। भाद्रशुक्ला द्वादशीको यहाँ मेला लगता है। भगवान् नर-नारायण उस दिन माताके दर्शन करने आते हैं। यह स्थान बदरीनाथसे लगभग ३ मील है।

सत्पथ

अलकनन्दाको पार न करके इसी किनारे पगडंडीके रास्तेसे आगे बढ़ें तो अनेक तीर्थ मिलते हैं। उस पार वसुधारा जानेके लिये सड़क है। वसुधारातक जाकर

यात्री उसी दिन बदरीनाथ लौट जाते हैं। किंतु सत्पथकी यात्रा करनी ही तो लगभग ८ दिनका भोजन-सामान, पूरा बिस्तर और रहनेके लिये तंबू लेकर बदरीनाथसे चलना चाहिये। आगे गङ्गाके इसी तटके तीर्थोंका वर्णन दिया जाता है। उस तटके तीर्थोंका वर्णन सत्पथसे लौटनेके मार्गके वर्णनमें आगे दिया जायगा। सत्पथ-स्वर्गारोहणकी यात्रा अगस्त-सितंबरमें होती है; क्योंकि जूनमें हिमखण्ड गिरते रहते हैं और वर्षामें भी पत्थर गिरते हैं पहाड़ोंसे।

मातामूर्तिसे लगभग ४ मील दूर लक्ष्मीवन है। बदरीनाथके आसपास वृक्षोंका नाम नहीं; किंतु यहाँ ऊँचे-ऊँचे भोजपत्रके वृक्ष हैं। यहाँ लक्ष्मीधारा नामक छोटा झरना है। आगे मार्ग बहुत कठिन है। नारायण पर्वत सीधी दीवालके समान है। वहाँ सैकड़ों धाराएँ गिरती हैं। पुराणोंके अनुसार वहाँ पञ्चधारा-तीर्थ, द्वादशादित्य-तीर्थ तथा चतु:स्रोत-तीर्थ होने चाहिये। इनकी ठीक पहचान अब कठिन है।

आगे चक्रतीर्थ है। यह तालाबके आकारका मैदान है, जिसमें एक जलधारा भी बहती है। इससे ३-४ मील आगे सत्पथ है। मार्ग आगे बहुत कठिन है। इस कठिन मार्गके अन्तमें सत्पथका त्रिकोण सरोवर है। स्वच्छ हरे निर्मल जलसे भरा यह सरोवर अपूर्व मनोहर है। इसका अमित माहात्म्य है। स्कन्दपुराणमें कहा गया है कि एकादशीको विष्णुभगवान् यहाँ स्नान करने आते हैं।

सत्पथसे स्वर्गारोहण

सत्पथके आगे तो मार्ग दुर्गम ही है। एक धार-सी है ऊपर चढ़नेको। उससे आगे जानेपर पर्याप्त नीचे एक गोल कुण्ड दीखता है। वह सोमतीर्थ है। उसमें प्राय: जल नहीं रहता। वहाँ चन्द्रमाने दीर्घ कालतक तपस्या की थी। आगे मार्ग नहीं है, बरफपर अनुमानसे मार्गदर्शक ले जाता है। कुछ दूर आगे सूर्यकुण्ड नामक छोटा-सा कुण्ड है। यहाँ नर-नारायण पर्वत मिल गये हैं। यहीं आगे विष्णुकुण्ड है। आगे लिङ्गाकार त्रिकोण पर्वत है। भागीरथी और अलकनन्दाके स्रोतोंका यह संगम है। इसके आगे अलकापुरी नामक शिखर है। सत्पथके आगे विष्णुकुण्डसे होकर अलकनन्दाकी मूलधारा आती है। अलकनन्दाका उद्गम भी नारायणपर्वतके नीचे ही है। सत्पथसे स्वर्गारोहणशिखर दीखता है। हिमपर सीढ़ियोंका आकार स्पष्ट दीखता है।

सत्पथसे बदरीनाथ

अलकापुरी-शिखरके पाससे अलकनन्दाके दूसरे किनारे होकर लौटनेपर वसुधारा मिलती है। बदरीनाथसे बहुत यात्री यहाँतक आते हैं। वसुधारातक अच्छा मार्ग है बदरीनाथसे। यह स्थान बदरीनाथसे ५ मील दूर है। बहुत ऊँचेसे जलधार गिरती है और वायुके झोंकेसे बिखर जाती है। इसका एक बूँद जल भी परम दुर्लभ कहा गया है। यहाँ छोटी-सी धर्मशाला है।

वसुधारासे ढाई मील नीचे आनेपर माणाके पास अलकनन्दामें सरस्वतीकी धारा मिलती है। इसे केशवप्रयाग कहते हैं। वहाँ अलकनन्दापर एक शिला रखी है, जो पुलका काम देती है। वह भीमशिला है। भीमशिलाके पास दो बड़ी धाराएँ गिरती हैं। यह मानसोद्भेद-तीर्थ है। यह जल गढ़वालभरमें सर्वाधिक स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। पुराणोंमें इस मानसोद्भेद-तीर्थका बहुत माहात्म्य है।

केशवप्रयागमें जहाँ सरस्वतीका संगम है, वहीं सरस्वतीके तटपर शम्याप्रास-तीर्थ है। यहीं भगवान् व्यासका आश्रम था। माणाग्राममें व्यास-गुफा है। कहते हैं इसीमें बैठकर व्यासजीने अठारह पुराण लिखे थे। पासमें ही गणेश-गुफा है। व्यास-गुफा जहाँ है, उसी ओर पर्वतकी चोटीपर मुचुकुन्द-गुफा है। कहा जाता है कि भगवान् श्रीकृष्णके आदेशसे मुचुकुन्द राजाने यहाँ आकर तप किया था। मुचुकुन्द-गुफाके पीछे बड़ा भारी मैदान है। कुछ लोग इसको कलापग्राम कहते हैं। इसी ओरसे सरस्वतीके किनारे-किनारे थुलिंग-मठ होकर एक मार्ग मानससरोवर-कैलास जाता है। माणामें शम्यापासके अन्तर्गत ही धर्मका आश्रम है।

माणाग्राम इस ओर भारतीय सीमाका अन्तिम ग्राम है। यहाँसे अलकनन्दाको पुलसे पार करके बदरीनाथतक सीधा मार्ग जाता है। अलकनन्दाके दूसरे तटसे (पुल पार न करके) चलें तो रास्ता कठिन मिलता है; किंतु इस मार्गसे बदरीनाथ २॥ मील है और इसमें निम्न तीर्थ भी मिल जाते हैं—

नर-पर्वतसे चार धाराएँ गिरती हैं—ये चतुर्वेद-धाराएँ हैं, इन धाराओंको पार करनेपर शेषनेत्र मिलता

636 Tirthank_Section_5_2_Back

उत्तरभारत

(रेलवे मान चित्र)

अफगानिस्तान

पाकिस्तान

मथुरा
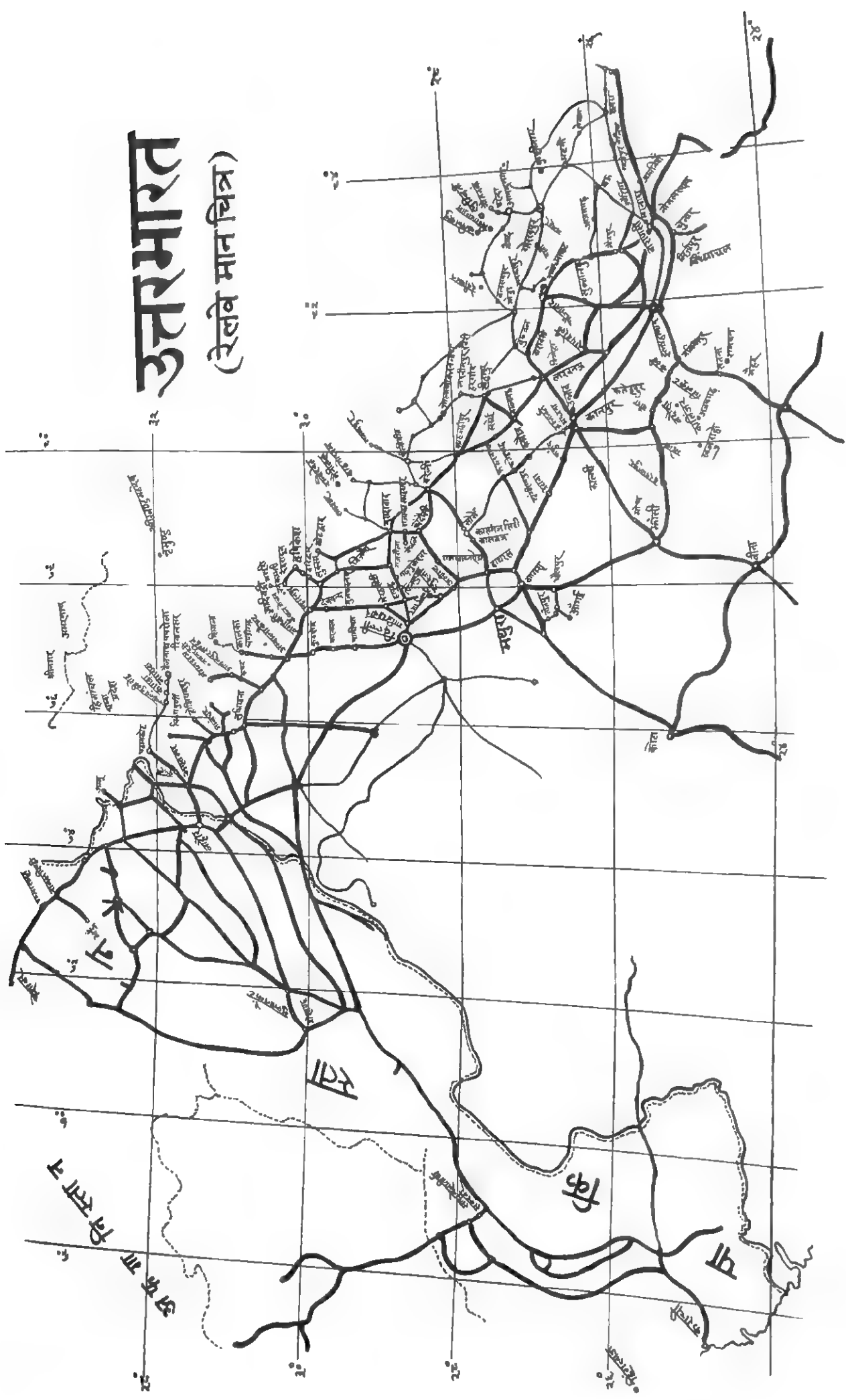
है। यहाँ शिलापर शेषजीके नेत्र बने हैं। यहाँसे बदरीनाथ धाम आ जाते हैं।

चरणपादुका-उर्वशीकुण्ड

श्रीबदरीनाथजीके मन्दिरके पीछे पर्वतपर सीधे चढ़ें तो चरणपादुकाका स्थान आता है। यहींसे नल लगाकर श्रीबदरीनाथ-मन्दिरमें पानी लाया गया है। चरणपादुकासे ऊपर उर्वशीकुण्ड है, जहाँ भगवान् नारायणने उर्वशीको अपनी जङ्घासे प्रकट किया था; किंतु यहाँका मार्ग अत्यन्त कठिन है। इसी पर्वतपर आगे कूर्मतीर्थ, तैमिंगिलतीर्थ तथा नर-नारायणाश्रम है और कोई सीधा चढ़ता जा सके तो इसी पर्वतके ऊपरसे सत्पथ पहुँच जायगा; किंतु यह मार्ग अगम्य है।

बदरीनाथसे लौटना

बदरीनाथकी यात्रा करके यात्री उसी मार्गसे लौटते हैं। जो लोग श्रीनगरसे कोटद्वार होकर लौटना चाहते हैं, उनका मार्ग-विवरण नीचे दिया जा रहा है। श्रीनगरसे कोटद्वार ५९ मील है।

श्रीनगरसे पौड़ी—	८ मील।
अध्वानी—	१० ,, ।
कलेथ—	९ ,, ।
बाँघाट—	३ ,, ।
द्वारीखाल—	७ ,, ।
डाडामंडी—	९ ,, ।
दुगड्डा—	६ ,, ।
कोटद्वार—	६ ,, ।

यहाँसे ६ मील दूर मालिनी नदीके तटपर कण्वाश्रम है। दुष्यन्तपुत्र सम्राट् भरतकी जन्मभूमि है। यहाँ ३½ मीलपर त्रिवेणी नदीके तटपर महर्षि वसिष्ठ तथा गौतमके तपःस्थान हैं।

इस मार्गमें चट्टियाँ नहीं हैं। इसलिये मोटरसे आने-वालोंके अतिरिक्त पैदल यात्रियोंके लिये यह मार्ग सुविधाजनक नहीं है। इसमें चढ़ाव-उतराव भी अधिक है। अतः पैदल यात्रीको ऋषिकेश ही लौटना सुविधाजनक होता है।*

नन्दादेवी और महामृत्युञ्जय

(लेखक—पं० श्रीमायादत्तजी पाण्डेय शास्त्री, साहित्याचार्य)

हिमालयमें गढ़वाल जिलेके वधाण परगनेसे ईशानकी ओर नन्दादेवी पर्वत है। यह गौरीशङ्कर (Mount Everest) के बाद विश्वका सर्वोच्च शिखर है। इसमें नन्दादेवी विराजती हैं। भाद्रशुक्ला सप्तमी यहाँकी (प्रति बारहवें वर्ष) यात्रा होती है। इसका आयोजन गढ़वालका राजकुटुम्ब करता है। चार सींगोंवाला एक मेढ़ा इस यात्राका नेतृत्व करता है। मार्गमें नन्दिकेश्वरी, पूर्णा, त्रिवेणी देवाल, पिलुखेड़ी, लोहाजंग, बाण, रणद्वार, रूपकुण्ड, शिलासमुद्र, नन्दापीठ आदि देवतीर्थ पड़ते हैं। आगे जानेपर मेढ़ा लापता हो जाता है। नन्दरायके गृहमें उत्पन्न हुई नन्दादेवीने असुरोंको मारकर जिस कुण्डमें स्नानकर सौम्यरूपता पायी, वह रूपकुण्ड हुआ, जिसका शोध जारी है।

महामृत्युञ्जय—गढ़वाल तथा टेहरीके जिले केदार-खण्डके नामसे प्रसिद्ध हैं। इस खण्डमें यद्यपि कई विख्यात शिवलिङ्ग हैं, पर केदारनाथ तथा महामृत्युञ्जय बहुत प्रसिद्ध हैं। महामृत्युञ्जय पर्वत कर्णप्रयागसे १८ मील पूर्व है। कर्णगङ्गा नदीसे २ मील दण्डाकार चढ़ाई पार करनेपर भगवान्‌के दर्शन होते हैं। सं० १८६० के भूकम्पमें जब आद्यशङ्कराचार्यके समयका निर्मित मन्दिर गिर पड़ा, तबसे एक प्रासादाकार मन्दिरमें ही भगवान् विराजमान हैं। यहाँ शिवरात्रिको मेला लगता है।

---

* इस लेखमें श्रीएम्० के० पोद्दारके लेख 'श्रीकेदारनाथ और बदरीनाथ यात्रा', पं० श्रीविश्वनाथ लिङ्गशिवाचार्यजीके कई लेखों तथा श्रीमित्रशर्माके लेखसे सहायता ली गयी है।

एकेश्वर और बालकुँवारी देवी

(लेखक—श्रीहरिशंकरजी बडोल)

गढ़वालके चौंदकोट नामक स्थानमें स्थित प्रायः छः हजार फुट ऊँचे पर्वतपर एकेश्वर नामका रमणीय तीर्थ है। शिवधारा नामक स्थानसे निर्मल जलकी धारा प्रवाहित होती है। शिवधारासे दाहिनी ओर दो फर्लांगपर एकेश्वर महादेव हैं। मन्दिरमें एक छोटी-सी धर्मशाला भी लगी है। मन्दिरके पीछे एक गुफा है। किंवदन्ती है कि यह गुफा बदरीनारायणतक गयी है। यहाँ वैशाखकृष्णा २, वसन्तपञ्चमी तथा शिवरात्रिको मेला लगता है।

यहाँसे प्रायः डेढ़ मील पश्चिम दूसरे पर्वतपर बालकुँवारीदेवीका प्राचीन मन्दिर है। भगवतीका श्रीविग्रह उज्ज्वल और मनोहर है। ग्रामवासियोंकी इनमें अपार श्रद्धा है।

हरिद्वार-ऋषिकेश

हरिद्वार-माहात्म्य

स्वर्गद्वारेण तत् तुल्यं गङ्गाद्वारं न संशयः।
तत्राभिषेकं कुर्वीत कोटितीर्थे समाहितः॥
लभते पुण्डरीकं च कुलं चैव समुद्धरेत्।
तत्रैकरात्रिवासेन गोसहस्रफलं लभेत्॥
सप्तगङ्गे त्रिगङ्गे च शक्रावर्ते च तर्पयन्।
देवान् पितॄंश्च विधिवत् पुण्ये लोके महीयते॥
ततः कनखले स्नात्वा त्रिरात्रोपोषितो नरः।
अश्वमेधमवाप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति॥

(पद्मपुरा० आदिखण्ड २८।२७—३०; महा० वनपर्व, तीर्थयात्रापर्व ८४।२७-३०)

'हरिद्वार स्वर्गके द्वारके समान है। इसमें संशय नहीं है। वहाँ जो एकाग्र होकर कोटितीर्थमें स्नान करता है, उसे पुण्डरीक-यज्ञका फल मिलता है। वह अपने कुलका उद्धार कर देता है। वहाँ एक रात निवास करनेसे सहस्र गो-दानका फल मिलता है। सप्तगङ्गा, त्रिगङ्गा और शक्रावर्तमें विधिपूर्वक देवर्षिपितृतर्पण करनेवाला पुण्यलोकमें प्रतिष्ठित होता है। तदनन्तर कनखलमें स्नान करके तीन रात उपवास करे। यों करनेवाला अश्वमेध-यज्ञका फल पाता है और स्वर्गगामी होता है।'

(अधिक जाननेके लिये नारदपुराण एवं रुद्रयामल देखिये)

ऋषिकेश-माहात्म्य

यहाँ देवदत्त नामक ब्राह्मणने तपस्या की थी; किंतु शिव-विष्णुमें भेदबुद्धि होनेके कारण इन्द्र उसकी तपस्या प्रम्लोचा (एक अप्सरा) द्वारा भङ्ग करानेमें सफल हो गये। पुनः तप करनेपर भगवान् शङ्करने कहा—

मामेवावेहि विष्णुं त्वं मा पश्यस्वान्तरं मम।
आवामेकेन भावेन पश्यंस्त्वं सिद्धिमाप्स्यसि॥
पूर्वमन्तरभावेन दृष्टवानसि यन्मम।
तेन विघ्नोऽभवद् येन गलितं त्वत्तपो महत्॥

(वाराहपुरा० १४६।५६-५७)

'तुम मुझे ही विष्णु समझो। हम दोनोंको एक भावसे देखनेपर तुम्हें शीघ्र ही सिद्धि मिलेगी। पहले तुम्हारी हम दोनोंमें भेद-बुद्धि थी, इसीसे विघ्न हुआ और तुम्हारा महान् तप नष्ट हो गया।'

देवदत्तके बाद उनकी लड़की रुरुने यहीं तपस्या की और भगवान्‌से उसी रूपमें वहाँ सदा अवस्थित होनेकी याचना की। फलतः भगवान् वहाँ सदा विराजते हैं।

हरिद्वार—सात पुरियोंमेंसे मायापुरी हरिद्वारके विस्तारके भीतर आ जाती है। प्रति बारहवें वर्ष जब सूर्य और चन्द्र मेषमें और बृहस्पति कुम्भराशिमें स्थित होते हैं, तब यहाँ कुम्भका मेला लगता है। उसके छठे वर्ष अर्धकुम्भी होती है।

इस नगरके कई नाम हैं—हरद्वार, हरिद्वार, गङ्गाद्वार, कुशावर्त। मायापुरी, हरिद्वार, कनखल, ज्वालापुर और भीमगोड़ा—इन पाँचों पुरियोंको मिलाकर हरिद्वार कहा जाता है।

हरिद्वार प्रसिद्ध रेलवे-स्टेशन है। कलकत्ता, पंजाब

तथा दिल्लीसे सीधी ट्रेनें यहाँ आती हैं। सड़कके मार्गसे भी दिल्ली, देहरादून आदिसे यह नगर सम्बन्धित है। हरिद्वारमें ही मैत्रेयजीने विदुरको श्रीमद्भागवत सुनाया था और यहीं नारदजीने सप्तर्षियोंसे श्रीमद्भागवत-सप्ताह सुना था।

ठहरनेके स्थान

१- पंचायती धर्मशाला, स्टेशनके पास।
२- रायबहादुर सेठ सूरजमल झुंझनूवालाकी, उपर बाजार।
३- महाराज कपूर्थलाकी।
४- विनायक मिश्रकी।
५- करोड़ीमलकी।
६- खुशीराम रामगोपालकी, स्टेशन रोड।
७- जयरामदास भिवानीवालेकी।
८- बाबा भोलागिरिकी।
९- सूरजमलकी, कनखल।
१०- हैदराबादवालेकी, नृसिंहभवन, रामघाट।
११- लखनऊवालोंकी, अग्रवाल-धर्मशाला।
१२- सिंधी धर्मशाला।
१३- मुरलीधर अग्रवालकी।
१४- देवीदयाल सुखदयाल अमृतसरवालोंकी।
१५- रावलपिंडीवालोंकी।

इनके अतिरिक्त और भी अनेक धर्मशालाएँ हैं। कनखल-हरिद्वारमें साधु-संन्यासियोंके आश्रमोंकी बहुलता है। उनमें भी यात्री ठहरते हैं।

हरिद्वारके तीर्थ तथा दर्शनीय स्थान

गङ्गाद्वारे कुशावर्ते बिल्वके नीलपर्वते।
स्नात्वा कनखले तीर्थे पुनर्जन्म न विद्यते॥

गङ्गाद्वार (हरिकी पैड़ी), कुशावर्त, बिल्वकेश्वर, नील-पर्वत तथा कनखल—ये पाँच प्रधान तीर्थ हरिद्वारमें हैं। इनमें स्नान तथा दर्शनसे पुनर्जन्म नहीं होता।

ब्रह्मकुण्ड या हरिकी पैड़ी—राजा भगीरथके मर्त्यलोकमें गङ्गाजीको लानेपर राजा श्वेतने इसी स्थानपर ब्रह्माजीकी बड़ी आराधना की थी। उनकी तपस्यासे प्रसन्न होकर ब्रह्माने वर माँगनेको कहा। राजाने कहा कि यह स्थान आपके नामसे प्रसिद्ध हो और यहाँपर आप भगवान् विष्णु तथा महेशके साथ निवास करें और यहाँपर सभी तीर्थोंका वास हो। ब्रह्माने कहा—'ऐसा ही होगा। आजसे यह कुण्ड मेरे नामसे प्रख्यात होगा और इसमें स्नान करनेवाले परमपदके अधिकारी होंगे।' तभीसे इसका नाम ब्रह्मकुण्ड हुआ। कहते हैं राजा विक्रमादित्यके भाई भर्तृहरिने यहीं तपस्या करके अमरपद पाया था। भर्तृहरिकी स्मृतिमें राजा विक्रमादित्यने पहले-पहल यह कुण्ड तथा पैड़ियाँ (सीढ़ियाँ) बनवायी थीं। इनका नाम हरिकी पैड़ी इसी कारण पड़ गया। खास हरिकी पैड़ीके पास एक बड़ा-सा कुण्ड बनवा दिया गया है। इस कुण्डमें एक ओरसे गङ्गाकी धारा आती है और दूसरी ओरसे निकल जाती है। कुण्डमें कहीं भी जल कमर भरसे ज्यादा गहरा नहीं है। इस कुण्डमें ही हरि अर्थात् विष्णुचरणपादुका, मनसादेवी, साक्षीश्वर एवं गङ्गाधर महादेवके मन्दिर तथा राजा मानसिंहकी छत्री है। सायंकालके समय गङ्गाजीकी आरतीकी शोभा बड़ी सुन्दर जान पड़ती है। हरिद्वारमें सर्वप्रधान बस, यही तीर्थ है। यहाँ कुम्भके समय साधुओंका स्नान होता है। यहाँपर सुबह-शाम उपदेश तथा कथाएँ होती हैं।

गऊघाट—ब्रह्मकुण्डके दक्षिण यह घाट है। यहाँपर स्नान करनेसे गोहत्या दूर होती है। पहले यहाँ भंगी हत्यारेको जूतेसे मारता है, फिर स्नान कराता है। गोहत्याके लिये इतना बड़ा दण्ड पानेपर तब उससे उद्धार होता है।

कुशावर्तघाट—गऊघाटसे दक्षिण यह घाट है। यहाँपर दस हजार वर्षतक एक पैरसे खड़े होकर दत्तात्रेयजीने तप किया था। उनके कुश, चीर, कमण्डलु और दण्ड घाटपर रखे थे। जिस समय वे तपस्यामें लीन थे, गङ्गाकी एक प्रबल धार इन चीजोंको बहा ले चली। उनके तपके प्रभावसे वे चीजें बहीं नहीं, बल्कि गङ्गाकी वह धार आवर्त (भँवर) की भाँति वहींपर चक्कर खाने लगी और उनकी सब चीजें भी उसी आवर्तमें चक्कर खाती रहीं। जब उनकी समाधि खुली और उन्होंने देखा कि उनकी सब वस्तुएँ जलमें घूम रही हैं और भीग गयी हैं, तब वे गङ्गाको भस्म करनेके लिये उद्यत हुए। उस समय ब्रह्मादि सभी देवता आकर उनकी स्तुति

करने लगे। तब ऋषिने प्रसन्न होकर कहा—'आपलोग यहीं निवास करें। गङ्गाने मेरे कुश आदिको यहाँ आवर्ताकार घुमाया है, इसलिये इसका नाम कुशावर्त होगा। यहाँ पितरोंको पिण्डदान देनेसे उनका पुनर्जन्म न होगा।' मेषकी संक्रान्तिपर यहाँ पिण्डदानकी बड़ी भीड़ होती है।

श्रवणनाथजीका मन्दिर—कुशावर्तके दक्षिण श्रवणनाथका मन्दिर है। श्रवणनाथजी एक पहुँचे हुए महात्मा थे। उन्हींका यह स्थान है तथा यहाँपर पञ्चमुखी महादेवकी कसौटी पत्थरकी बनी मूर्ति है।

रामघाट—यहाँपर वल्लभ-सम्प्रदायकी श्रीमहाप्रभुजी-की बैठक है।

विष्णुघाट—श्रवणनाथजीके मन्दिरसे दक्षिण विष्णु-घाट है। यहाँपर भगवान् विष्णुने तप किया था।

मायादेवी—विष्णुघाटसे थोड़ा दक्षिण भैरव अखाड़ेके पास यह घाट है। यहाँपर भैरवजी, अष्टभुजी भगवान् शिव तथा त्रिमस्तकी देवी दुर्गाकी मूर्ति है, जिसके एक हाथमें त्रिशूल तथा एकमें नरमुण्ड है। मायादेवीका मन्दिर पुराना है।

गणेशघाट—गणेशजीकी एक विशालकाय मूर्ति इस घाटपर है। स्नान-माहात्म्य भी है।

नारायणी शिला—गणेशघाटसे थोड़ी दूर ज्वालापुरकी सड़कके किनारेपर है। यहाँ नारायण-बलि तथा पिण्डदान करनेसे प्रेतयोनि छूट जाती है।

नीलधारा—नहरके उस पार नीलपर्वतके नीचेवाली गङ्गाकी धारको नीलधारा कहते हैं। असलमें नीलधारा ही गङ्गाकी प्रधान धारा है। हरिद्वारके घाटोंपर बहनेवाली धारा नहरके लिये कृत्रिम रूपसे लायी गयी धारा है। इस धारामेंसे नहरके लिये आवश्यक पानी लेकर बाकी पानी नहरके बगलमें कनखलके पास इसी नीलधारामें मिला दिया जाता है। नीलपर्वतके नीचे नीलधारामें स्नान करके पर्वतपर नीलेश्वर महादेवके दर्शन करनेका बड़ा माहात्म्य है। कहते हैं कि शिवजीके नीलनामक एक गणने यहाँपर शङ्करजीकी प्रसन्नताके लिये घोर तपस्या की थी; इसलिये इस पर्वतका नाम नीलपर्वत, नीचेकी धाराका नाम नीलधारा तथा उसने जिस शिवलिङ्गकी स्थापना की, उसका नाम नीलेश्वर पड़ गया।

कालीमन्दिर—चण्डीदेवीके लिये पहाड़ीपर चढ़नेमें बीच रास्तेमें कामराजका कौल-सम्प्रदायका काली-मन्दिर है।

चण्डीदेवी—नीलपर्वतके शिखरपर चण्डीदेवीका मन्दिर है। चण्डीदेवीकी चढ़ाई जरा कठिन है। यह चढ़ाई करीब दो मीलकी है। चण्डीदेवीके मन्दिरके पास जानेके लिये चढ़ाईके दो मार्ग हैं। पहला गौरीशङ्कर महादेवके मन्दिरसे होकर तथा दूसरा कामराजकी कालीके मन्दिरके पाससे। पहला कठिन है, दूसरा सुगम। पर लोगोंको चाहिये कि पहलेसे चढ़ें और दूसरेसे उतरें। इस प्रकार करनेसे गौरीशङ्कर, नीलेश्वर तथा नागेश्वर शिवके दर्शनके साथ ही नीलपर्वतकी परिक्रमा भी हो जायगी और मन भी न ऊबेगा। कहते हैं देवीके दर्शनोंके लिये रात्रिमें सिंह आता है और इसीलिये वहाँ रात्रिमें पंडे-पुजारी कोई भी नहीं रहते। इस नीलपर्वतके दूसरी ओर कदली-वन है—जिसमें सिंह, हाथी आदि जङ्गली जीवोंका निवास है।

अञ्जनी—हनुमान्‌जीकी माँ अञ्जनीदेवीका मन्दिर चण्डीदेवीके मन्दिरके पास ही पहाड़के दूसरी ओर है।

गौरीशङ्कर—अञ्जनीदेवीके मन्दिरके नीचे गौरीशङ्कर महादेवका मन्दिर है, जो बिल्वके वृक्षोंकी श्रेणीके नामसे प्रसिद्ध है।

बिल्वकेश्वर—स्टेशनसे हरिकी पैड़ीके रास्तेमें जो ललतारो नदीपर पक्का पुल पड़ता है, वहींसे बिल्वकेश्वर महादेवको रास्ता जाता है। रेलवे लाइनके उस पार बिल्वनामक पर्वत है; उसीपर बिल्वकेश्वर महादेव हैं। मन्दिरतक जानेका मार्ग सुगम है। बिल्वकेश्वर महादेवकी दो मूर्तियाँ हैं—एक मन्दिरके अंदर और दूसरी मन्दिरके बाहर। पहले यहाँपर बेलका बहुत बड़ा वृक्ष था, उसीके नीचे बिल्वकेश्वर महादेवकी मूर्ति थी। इसी पर्वतपर गौरीकुण्ड है। बिल्वकेश्वर महादेवके बायीं ओर गुफामें देवीकी मूर्ति है। दोनों मन्दिरोंके बीच एक नदी है, जिसका नाम शिवधारा है। केदारखण्ड, अध्याय १०७ में इस स्थानका वर्णन इस प्रकार है—'उस पर्वतके ऊपर कल्याणकारी शिवधारा नामकी एक धारा है,

जिसमें एक बार भी स्नान करनेसे मनुष्य शिव-तुल्य हो जाता है। उसी स्थानपर एक बिल्ववृक्ष है, उसके नीचे एक शिवलिङ्ग विराजमान है; उसके दर्शनसे ही मनुष्य शिव-तुल्य हो जाता है। हे नारद! उस शिवलिङ्गके दक्षिण ओर अश्वतर नामका एक महानाग रहता है, जिसका मस्तक मणियोंसे युक्त है। वह पातालगामी बिल्वके द्वारा पाताल जाता-आता रहता है। वह कभी मृगके रूपमें और कभी मुनिके रूपमें तीर्थोंमें जाकर स्नान किया करता है।

कनखल—कनखलमें स्नानका बड़ा माहात्म्य है। नीलधारा तथा नहरवाली गङ्गाकी धारा दोनों यहाँ आकर मिल जाती हैं। सभी तीर्थोंमें भटकनेके बाद यहाँपर स्नान करनेसे एक खलकी मुक्ति हो गयी थी। इसलिये मुनियोंने इसका नामकरण 'कनखल' कर दिया। हरिकी पैड़ीसे कनखल ३ मील है। हरिद्वारकी तरह यह भी एक बड़ा कस्बा है। यहाँ भी बाजार है।

दक्षेश्वर महादेव—मुख्य बाजारसे आध मील आगे जानेपर दक्ष प्रजापतिका मन्दिर मिलता है। इसकी संक्षिप्त कथा यों है—दक्ष प्रजापति अपने जामाता शिवजीसे जलते थे। एक बार इन्होंने बृहस्पति-सव नामक यज्ञ किया। उसमें और सभी देवताओंको तो निमन्त्रित किया, किंतु देवाधिदेव शिवजी तथा अपनी पुत्री सतीको नहीं बुलाया। पिताके घर यज्ञ होनेकी बात सुनकर, शिवके मना करनेपर भी, सती बिना बुलाये पिताके घर चली गयी। यज्ञमें अपने पति शिवजीका भाग न देखकर तथा अपने पिताद्वारा उस भरे समाजमें शिवजीकी निन्दा सुनकर सतीको बहुत क्रोध आया। इन्होंने योगाग्निद्वारा अपने प्राण त्याग दिये। सतीके साथ गये हुए शिवजीके गणोंने उनको इस बातकी खबर दी। शिवजीने अपने गणोंद्वारा यज्ञ विध्वंस कराकर तथा दक्षका सिर कटवाकर अग्निकुण्डमें डलवा दिया और स्वयं सतीके शरीरको कंधेपर लेकर सर्वत्र घूमते हुए विलाप करने लगे। तब विष्णुने चक्रसे सतीके शरीरके टुकड़े काट-काटकर भारतवर्षभरमें ५१ स्थानोंपर गिराये। ये ही ५१ स्थान ५१ शक्तिपीठ हुए। बादमें जब देवताओंने शिवजीकी बड़ी स्तुति की, तब प्रसन्न होकर उन्होंने कहा—'बकरेके सिरको दक्षके धड़में जोड़ दो, दक्ष जिंदा हो जायँगे। जब सब काम मायाके कारण हुआ है, इसलिये इस क्षेत्रका नाम मायाक्षेत्र होगा। इस क्षेत्रके दर्शन मात्रसे ही जन्म-जन्मान्तरोंके पापोंसे छुट्टी मिल जायगी। जो अल्पज्ञ मायाक्षेत्रमें दक्षप्रजापतिका दर्शन किये बिना ही तीर्थ-यात्रा करेंगे, उनकी यात्रा निष्फल होगी।' इस स्थानपर शिवरात्रिपर बड़ा मेला लगता है।

सतीकुण्ड—दक्षेश्वरसे आध मील पश्चिम सतीकुण्ड है। कहते हैं यहीं सतीने शरीर-त्याग किया था और दक्ष प्रजापतिने भी यहीं तप किया था। इस कुण्डमें स्नानका माहात्म्य है।

कपिलस्थान—कनखलके रास्तेमें है। कुछ लोग गङ्गासागरके पासके कपिलाश्रमके बदले यहींपर सगरके ६०००० पुत्रोंका गङ्गाद्वारा तारा जाना मानते हैं।

भीमगोड़ा—हरिकी पैड़ीसे पहाड़के नीचे होकर जो सड़क ऋषिकेशको जाती है, उसीपर यह तीर्थ है। पहाड़ीके नीचे एक मन्दिर है। उसके आगे एक चबूतरा तथा कुण्ड है। कुण्डमें पहाड़ी सोतेका पानी आता है। लोगोंका कहना है कि भीमसेनने यहाँ तपस्या की थी और उनके गोडा (पैरके घुटने) टेकनेसे यह कुण्ड बन गया था और इसी कारण इसका यह नाम भी पड़ गया। यहाँ स्नानका बड़ा माहात्म्य है। यहाँपर ब्रह्माजीका मन्दिर है।

चौबीस अवतार—भीमगोड़ेके रास्तेमें गङ्गाके किनारे एक मन्दिर है, जिसे काँगड़ेके राजाका बनवाया हुआ लोग बतलाते हैं। इसमेंकी चौबीस अवतारोंकी मूर्तियाँ दर्शनीय हैं।

सप्तधारा—भीमगोड़ासे १ मील आगे सप्तस्रोत है। यह तपोभूमि है। यहाँ सप्त ऋषियोंने तप किया था और उन्हींके लिये गङ्गाको सात धाराओंमें बहना पड़ा था। स्थान निर्जन तथा रमणीक है।

सत्यनारायण-मन्दिर—सप्तधारासे आगे ३ मीलपर ऋषिकेशके रास्तेमें सत्यनारायणका मन्दिर है। यहाँ भी दर्शन तथा कुण्डमें स्नानका माहात्म्य है।

वीरभद्रेश्वर—सत्यनारायणके मन्दिरसे ५ मील आगे

हरिद्वार

श्रीबिल्वकेश्वर महादेव

गीताभवन
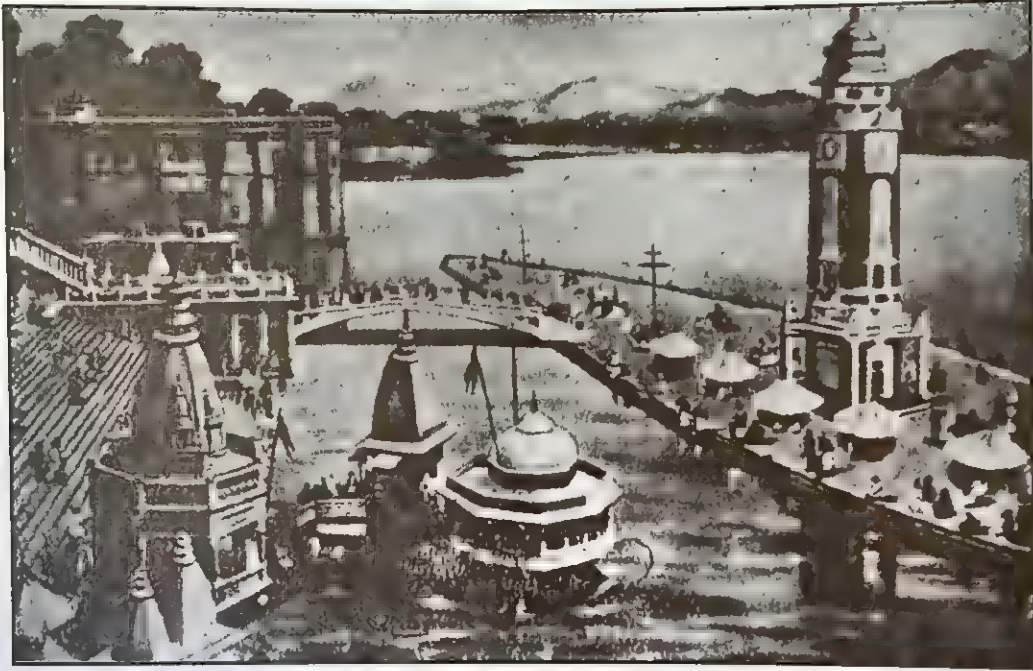
हरिकी पैड़ी

सप्तर्षि-आश्रम, सप्तस्रोत

श्रीपञ्चवक्त्रेश्वर-मन्दिर

हरिद्वारके आस-पास

श्रीदक्षेश्वर-मन्दिर, कनखल

श्रीभरत-मन्दिर, ऋषिकेश
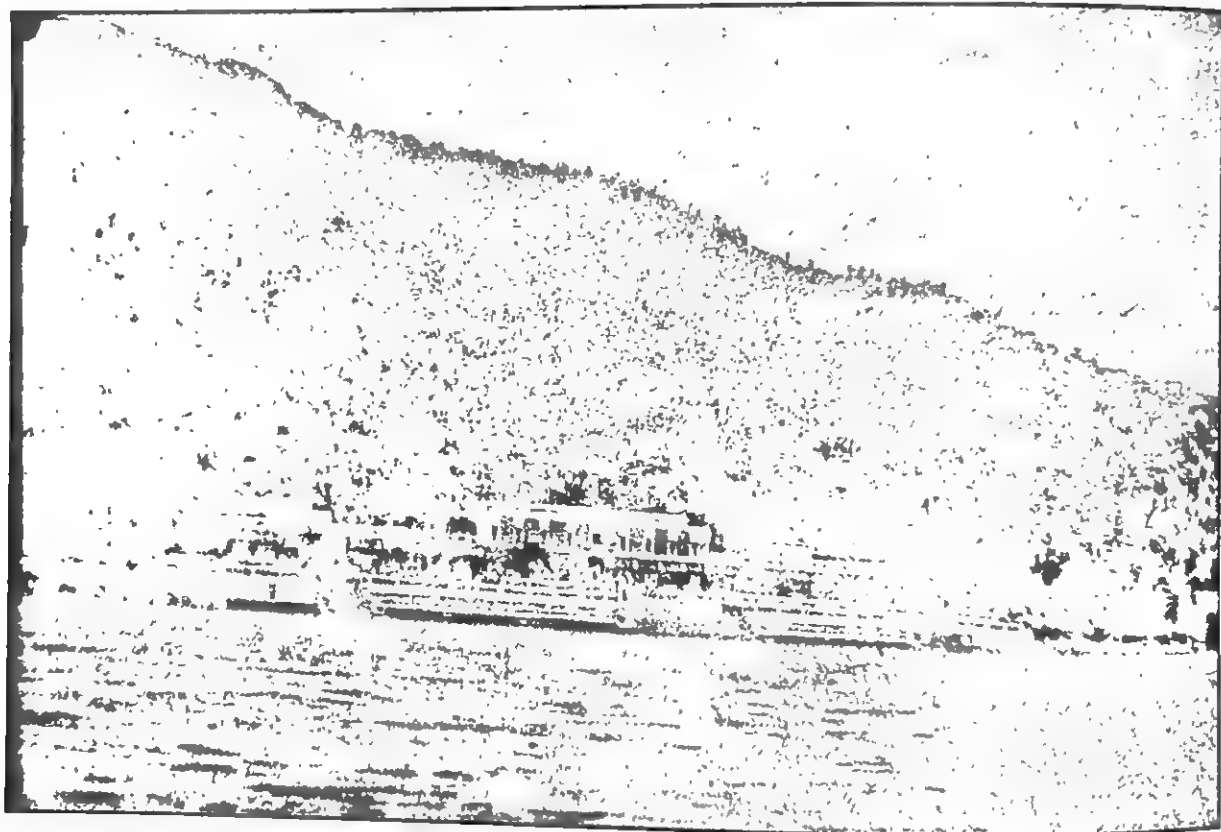
गीताभवन, स्वर्गाश्रम

स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश

लक्ष्मणझूला, ऋषिकेश

वीरभद्रेश्वरका मन्दिर है। बाहर देवियोंके मन्दिर हैं।

ऋषिकेश—हरिद्वारसे ऋषिकेश रेल आती है और मोटर-बसें भी जाती हैं। ऋषिकेशमें भी अनेकों धर्मशालाएँ हैं। यहाँसे यात्री यमुनोत्तरी, गङ्गोत्तरी, केदारनाथ, बदरीनाथ जाते हैं। कालीकमलीवाले क्षेत्रका यहाँ प्रधान कार्यालय है।

ऋषिकेशमें यात्री त्रिवेणीघाटपर स्नान करते हैं। यहाँका मुख्य मन्दिर भरतमन्दिर है। यह प्राचीन विशाल मन्दिर है। इसके अतिरिक्त राममन्दिर, वाराहमन्दिर, चन्द्रेश्वर-मन्दिर आदि कई मन्दिर हैं।

ऋषिकेश बाजारसे आगे १॥ मीलपर मुनिकी रेती है। मुनिकी रेतीपर स्वामी श्रीशिवानन्दजीका प्रसिद्ध आश्रम है। उसके आगे जाकर नौकासे गङ्गा पार करनेपर स्वर्गाश्रम आता है। स्वर्गाश्रम बड़ा रमणीय स्थान है। यहाँ गीताभवनका विशाल स्थान है। यहाँ प्रतिवर्ष चैत्रसे आषाढ़तक 'सत्सङ्ग' का आयोजन होता है। श्रीजयदयालजी गोयन्दका, स्वामीजी श्रीशरणानन्दजी, स्वामीजी श्रीअखण्डानन्दजी, स्वामीजी श्रीपलकनिधिजी, स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी, स्वामीजी श्रीचक्रपाणिजी आदि पधारा करते हैं। हजारों नर-नारी सत्सङ्गका महान् लाभ उठाते हैं। तथा यहीं 'परमार्थनिकेतन' है, जहाँ बहुत-से साधु-संत रहा करते हैं तथा कीर्तन-सत्सङ्ग चलता है। इसके सिवा अन्य भी साधुओंके स्थान देखनेयोग्य हैं। गङ्गा पार करनेके लिये नौकाका प्रबन्ध है।

मुनिकी रेतीसे १॥ मीलपर लक्ष्मणझूला है। यहाँ लक्ष्मणजीका मन्दिर तथा अन्य कई मन्दिर हैं।

ऋषिकेशका विस्तार लक्ष्मणझूलातक है। स्वर्गाश्रममें तथा इस किनारे भी साधु-संन्यासियोंके आश्रम हैं। यह अत्यन्त पवित्र भूमि है। यहाँ स्नान-दान-उपवासका बड़ा महत्त्व है।

कहते हैं कि राक्षसोंके उत्पातसे पीड़ित ऋषियोंकी प्रार्थनासे भगवान्‌ने द्रवित होकर राक्षसोंका नाश करके ऋषियोंको यह साधन-भूमि प्रदान की; इसीसे इसका नाम ऋषिकेश पड़ा। इसका दूसरा पौराणिक नाम 'कुब्जाम्रक' है। कहते हैं कि १७वें मन्वन्तरमें रैभ्य मुनिको भगवान् विष्णुने आमके वृक्षमें दर्शन दिये थे। रैभ्य मुनि कुबड़े थे। इसीसे इसका नाम कुब्जाम्रक पड़ा।

शुकताल

यह वही पवित्र स्थान है, जहाँ श्रीशुकदेवजीने महाराज परीक्षित्‌को श्रीमद्भागवत सुनाया था। यह स्थान देहलीसे पश्चिम गङ्गा-किनारे स्थित है। हरिद्वारसे लगभग ४० मील दक्षिण-पूर्व तथा हस्तिनापुरसे ३० मील उत्तर है। यहाँसे बिजनौर १० मील और मुजफ्फरनगर २० मील दूर है।

मुजफ्फरनगर स्टेशनसे शुकतालतक पक्की सड़क गयी है। इसलिये मुजफ्फरनगरसे यहाँके लिये सवारियाँ सुगमतासे मिल जाती हैं। यात्रियोंके ठहरनेके लिये यहाँ धर्मशाला है।

शुकतालमें एक टीलेपर एक छोटा किंतु अत्यन्त प्राचीन वटवृक्ष है। इसे ब्रह्मचारी-वट कहते हैं। कहा जाता है कि शुकदेवजी इसी वटके नीचे विराजमान हुए थे। इस स्थानपर शुकदेवजीके चरणचिह्न हैं।

भ्रमसे कुछ लोग इसे शुक्रताल भी कहते हैं; किंतु दैत्यगुरु शुक्राचार्यसे इस स्थानका कोई सम्बन्ध नहीं है। वर्षमें दो बार यहाँ मेला लगता है—ज्येष्ठ शुक्ल १० और कार्तिकी पूर्णिमाको*।

देवबंद

दिल्ली-सहारनपुर लाइनमें मुजफ्फरनगरसे १४ मीलपर देवबंद स्टेशन है। यहाँपर दुर्गाजीका मन्दिर है। मन्दिरके समीप ही देवकुण्ड सरोवर है। चैत्र शुक्ला चतुर्दशीसे आठ-दस दिनतक यहाँ मेला लगता है।

* शास्त्री श्रीकैलाशचन्द्रजी नैथानी, श्रीरामलखन वैद्यनाथदासजी तथा श्रीलखुरामजीके लेखोंका सारांश।

यहाँ पहले वन था, जिसे 'देवीवन' कहते थे। उसीसे इस नगरका नाम देवबंद पड़ा। यहाँकी दुर्गाजीको लोग शाकम्भरी देवीकी बहिन कहते हैं। शाकम्भरी देवीके मेलेमें मन्दिरके ठीक सामने केवल देवबंदके निवासी ही ठहर सकते हैं।

दुर्गासप्तशतीमें वर्णित दुर्गाजीका स्थान यही है, ऐसी इधरके विद्वानोंकी मान्यता है।

देवबंदमें श्रीनवरङ्गीलाल (श्रीराधावल्लभजी) का प्रसिद्ध मन्दिर है। कहा जाता है कि श्रीहितहरिवंशजी (श्रीराधावल्लभ-सम्प्रदायके आद्याचार्य) बचपनमें ९ वर्षकी अवस्थामें यहाँ कुएँमें गिर गये थे। जब उनको कुएँसे निकाला गया, तब देखा गया कि वे भीतरसे श्रीनवरङ्गीलालकी मूर्ति ले आये हैं। वह कूप भी मन्दिरके पास ही है। उसे पवित्र माना जाता है।

शाकम्भरी देवी

(लेखिका—सुश्रीविजयलक्ष्मीजी)

शाकम्भरीति विख्याता त्रिषु लोकेषु विश्रुता।
दिव्यं वर्षसहस्रं हि शाकेन किल भारत॥
आहारं सा कृतवती मासि मासि नराधिप।
ऋषयोऽभ्यागतास्तत्र देव्या भक्तास्तपोधनाः॥
आतिथ्यं च कृतं तेषां शाकेन किल भारत।
ततः शाकम्भरीत्येव नाम तस्याः प्रतिष्ठितम्॥
शाकम्भरीं समासाद्य ब्रह्मचारी समाहितः।
त्रिरात्रमुषितः शाकं भक्षयेन्नियतः शुचिः॥
शाकाहारस्य यत् सम्यग्वर्षैर्द्वादशभिः फलम्।
तत् फलं तस्य भवति देव्याश्छन्देन भारत॥

(महा० वनप० तीर्थ० ८४। १४-१८; पद्म० आदि० २८। १४—१८)

'भगवती शाकम्भरीका नाम तीनों लोकमें विख्यात है। उन्होंने हजार दिव्य वर्षोंतक महीनेके अन्तमें एक बार शाकका आहार करके तप किया था और जब देवीभक्त ऋषिगण उनके आश्रमपर आये, तब शाकसे ही उनका आतिथ्य किया था। अतएव उनका नाम शाकम्भरी कहा जाता है। शाकम्भरीके पास जाकर ब्रह्मचर्यपूर्वक ध्यानपरायण होकर यदि तीन दिनोंतक स्नानादिसे पवित्र रहे एवं शाकाहार करे तो बारह वर्षोंतक शाकाहार करनेका जो फल है, वह उसे देवीकी कृपाके प्रसादसे प्राप्त हो जाता है।'

सहारनपुरसे यह स्थान २६ मील दूर है। सहारनपुरसे यहाँतक मोटर-बस जाती है। शाकम्भरी देवीका मन्दिर चारों ओर पर्वतोंसे घिरा है। मन्दिरसे एक मील पहले एक छोटा मन्दिर भूरेदेव (भैरव) का मिलता है। ये देवीके पहरेदार माने जाते हैं। शाकम्भरीमें यात्रियोंके ठहरनेके लिये कोठरियाँ हैं।

कहा जाता है कि शाकम्भरी देवीकी मूर्ति स्वयम्भू मूर्ति है। वहाँ जगद्गुरु शंकराचार्यने तीन मूर्तियाँ और स्थापित की हैं। शाकम्भरी देवीके दाहिने भीमा और भ्रामरी तथा बायें शताक्षी देवी। दाहिने बाल-गणपतिकी भी मूर्ति है। समीपमें एक हनुमान्‌जीकी भी मूर्ति है।

यहाँ नवरात्रमें मेला लगता है। दूसरे समय भोजनादिका सामान साथ ले जाना चाहिये। मेलेके समय भीड़ अधिक होनेसे कष्ट होता है। दर्शन भी बहुत लोगोंको नहीं हो पाते। यहाँ अन्य समयमें जाना अच्छा है, किन्तु वर्षामें मार्ग खराब हो जाता है। शाकम्भरी देवी इधर बहुत प्रख्यात हैं। यहाँ यह सिद्धपीठ माना जाता है।

कपालमोचन-तीर्थ

(लेखक—श्रीहरिरामजी गर्ग)

उत्तर रेलवेमें सहारनपुर-अम्बाला छावनीके बीच जगाधरी स्टेशन है। जगाधरी स्टेशनसे तीर्थस्थल १४½ मील है। पक्की सड़क है। मोटर-बस चलती है। यहाँ भीष्मपञ्चमीको मेला लगता है।

यहाँपर कपालमोचन-तीर्थ और ऋणमोचन-तीर्थ-नामक सरोवर हैं। इनमें स्नान करने दूर-दूरसे यात्री आते हैं। दोनों सरोवर जंगलमें हैं। आसपास ग्राम नहीं है। यहाँपर कई मन्दिर और तीन धर्मशालाएँ हैं।

इस स्थानसे ४ मीलपर पञ्चमुखी हनुमान्का प्राचीन मन्दिर है। पैदल मार्ग है। मन्दिर जंगलमें है।

आदिबदरी—कपालमोचनसे १२ मीलपर आदि-बदरीका मन्दिर है। कहते हैं कि यहाँ दर्शन करना बदरीनाथ-दर्शनके समान है। पैदलका मार्ग है। यह मन्दिर पर्वतपर है। यहाँ ठहरनेकी व्यवस्था नहीं है।

आदिबदरीसे ४ मील आगे ऊँचे पर्वतपर देवी-मन्दिर है। कठिन मार्ग है। कम ही यात्री वहाँतक जाते हैं।

मणिमाजरा

दिल्ली-कालका लाइनमें अंबाला छावनी स्टेशन है। वहाँ उतरकर २३ मील उत्तर जानेपर यह गाँव मिलता है। माजरा गाँवके पास ही मनसा देवीका स्थान है। यह देवी-मन्दिर पंजाबमें बहुत सम्मानित है। दूर-दूरके यात्री आते हैं। नवरात्रमें यहाँ बड़ा मेला लगता है। यहाँ धर्मशालाएँ हैं।

अज-सरोवर (खरड़)

(लेखक—श्रीअर्जुनदेवजी)

उत्तर रेलवेकी दिल्ली-कालका लाइनपर अंबाला छावनीसे ३० मीलपर चण्डीगढ़ स्टेशन है। वहाँसे जंगलके लिये पक्की सड़क जाती है। मोटर-बसें चलती हैं। जंगलके मार्गमें चण्डीगढ़से ७ मीलपर यह स्थान है।

खरड़ गाँवके पास ही यह सरोवर है। कहा जाता है कि इसे महाराज दशरथके पिता अजने बनवाया था। सरोवरके एक ओर पक्के घाट हैं। यहाँ आस-पास मिट्टी खोदनेसे कुछ फुट नीचे मूर्तियाँ निकलती हैं। सरोवरके घाटपर दो शिव-मन्दिर तथा एक सत्यनारायण-भगवान्का मन्दिर है। ग्रहण और कार्तिक-पूर्णिमापर मेला लगता है।

मार्कण्डेयतीर्थ

(लेखक—श्रीधनीरामजी 'कँवल')

अंबाला छावनीसे जो लाइन नंगल बाँध जाती है, उसमें रोपड़से १७ मील आगे कीरतपुर साहेब उतरकर वहाँसे मोटर-बससे विलासपुर और बिलासपुरसे मोटर-बससे ब्रह्मपुर जानेपर फिर ४ मील पैदल जाना पड़ता है। यहाँ ठहरनेकी कोई सुविधा नहीं है। वैशाखी पूर्णिमाको मेला लगता है।

यहाँ यात्री पाँच स्थानोंमें स्नान करते हैं। पहला स्नान मार्कण्डेयतीर्थ नामक सरोवरमें होता है, दूसरा स्नान 'बड़ी किशन' नामक सरोवरमें और शेष तीन स्नान तीन विभिन्न कूपोंपर होते हैं। ये सब तीर्थ एक मीलके भीतर ही हैं। पर्वतमें गुफा भी है। कहा जाता है कि महर्षि मार्कण्डेयजीका आश्रम यहीं था।

यहाँसे ३ मीलपर स्वामी गङ्गागिरिजी नामक प्राचीन संतकी समाधि है।

नयनादेवी

(लेखक—पं० श्रीरामशरणजी तप्या ढढवाल)

अंबाला छावनीसे नंगल बाँध जानेवाली लाइनमें नंगल बाँधसे १२ मील पहले आनन्दपुर साहब स्टेशन है। वहाँसे १० मीलतक आगे मोटर-बस जाती है। फिर १२ मील पैदल पर्वतीय चढ़ाईका मार्ग है। नयनादेवीका स्थान पर्वतपर है। यह सिद्धपीठ माना जाता है। श्रावणशुक्ला प्रतिपदासे ९ तक मेला लगता है।

देउट सिद्ध

नयनादेवीसे १२ मील उत्तर पर्वत-शिखरपर गुफामें यह स्थान है। यहाँ एक सिद्धका भारी त्रिशूल और चिमटा रखा है। पर्वतपर चढ़नेको सीढ़ियाँ बनी हैं। फाल्गुनसे ज्येष्ठतक यहाँ बहुत यात्री आते हैं। यहाँ दूकानें और धर्मशाला है। भाखड़ा-नंगलसे मोटर-बस आती है। केवल दो मील पैदल चलना पड़ता है।

कालका

उत्तर रेलवेकी मुख्य लाइनपर अंबालासे ४० मीलपर कालका स्टेशन है। यहाँ कालिका भगवतीका प्राचीन मन्दिर है। पार्वतीके शरीरसे कौशिकीदेवीके प्रकट हो जानेपर पार्वतीका शरीर श्यामवर्ण हो गया। वे उस स्थानसे आकर कालकामें स्थित हुईं। उनका नाम काली या कालिका हो गया।

शिमला

यह भारत सरकारका ग्रीष्मकालीन आवास-नगर है। यहाँपर सरकारी भवनके पास ही कोटिदेवीका मन्दिर है। शिमला स्टेशनके पास तारा देवीका मन्दिर है। कंडाघाट स्टेशनके पास भी एक प्राचीन देवीका मन्दिर है।

रेणुका-तीर्थ

(लेखक—पं० श्रीलेखराजजी शर्मा)

शिमलासे मोटर-बसद्वारा नाहन और वहाँसे उसी प्रकार ददाहू जाकर वहाँसे गिरि नदीको पार करके पैदल रेणुकातीर्थ जा सकते हैं। ददाहूसे रेणुकातीर्थ दो फर्लांगके लगभग है।

यहाँ रेणुका झील और परशुराम-ताल हैं। परशुरामजी तथा रेणुकाजीका मन्दिर है। एक धर्माशाला है, किंतु वह अरक्षित है। यहाँ ठहरनेका प्रबन्ध नहीं है। कार्तिक शुक्ला ८से पूर्णिमातक मेला लगता है। यात्री प्रायः मेलेके अवसरपर आते हैं। रेणुका झीलके पास जमदग्नि पर्वत है।

जालन्धर

उत्तर रेलवेकी मुगलसराय-अमृतसर मुख्य लाइनपर पंजाबसे जालन्धर स्टेशन है। यह पंजाबके मुख्य नगरोंमें है। कहा जाता है कि यह जलन्धर नामक दैत्यकी राजधानी है। जलन्धर भगवान् शङ्करद्वारा मारा गया था।

यहाँ विश्वमुखी देवीका मन्दिर है। यह मन्दिर ५१ शक्तिपीठोंमें एक है। सतीदेहका वाम स्तन यहाँ गिरा था। देवीके मन्दिरमें पीठस्थानपर स्तनमूर्ति कपड़ेसे ढकी रहती है और धातुनिर्मित मुखमण्डल बाहर रहता है। इसे प्राचीन त्रिगर्ततीर्थ कहते हैं।

अमृतसर

यह पूर्वी पंजाबका प्रसिद्ध नगर है। उत्तर रेलवेका जंक्शन स्टेशन है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं—१. संतरामकी—स्टेशनके पास, २. लाला हरगोविन्ददासकी, ३. हरदयालजीकी, मारवाड़ी बाजारमें और ४. गुरुरामदासकी, गुरुबाजारमें। इसके अतिरिक्त गुरुद्वारेमें सिख यात्रियोंके ठहरनेकी व्यवस्था है।

अमृतसर व्यास नदीके तटपर स्थित है। व्यास पवित्र नदी मानी जाती है। नगरके मध्यमें अमृतसर नामक सरोवर है, जिसके नामपर नगरका नाम पड़ा है। यह सिखतीर्थ है। यहाँ १३ गुरुद्वारे (अखाड़े) हैं। इस नगरका सबसे मुख्य गुरुद्वारा 'स्वर्णमन्दिर' है। यह एक सरोवरके मध्यमें स्थित है। विशाल सरोवरके मध्य ६५ फुट लंबे और इतने ही चौड़े चबूतरेपर स्थित यह भव्य गुरुद्वारा भारतके प्रमुख दर्शनीय स्थानोंमेंसे है।

यह स्मरण रखना चाहिये कि सभी गुरुद्वारोंमें यात्रीको टोपी लगाकर या पगड़ी बाँधकर ही जाने दिया जाता है। नंगे सिर गुरुद्वारेमें जाना वहाँकी शिष्टताके प्रतिकूल है। गुरुद्वारेमें मुख्यपीठपर 'गुरुग्रन्थसाहब' प्रतिष्ठित रहते हैं।

इस नगरमें सरोवरोंके मध्य कई मन्दिर हैं। हिंदू-मन्दिरोंमें दुर्गियाना (दुर्गाजीका मन्दिर) और सत्यनारायण-मन्दिर मुख्यरूपसे दर्शनीय माने जाते हैं। यहाँ श्रीलक्ष्मी-नारायणजीका भी सुन्दर मन्दिर है।

अमृतसरमें जलियानवाला बाग है, जहाँ जनरल डायरने गोलियाँ चलाकर निरीह नागरिकोंको मारा था। यह बाग अब सुरक्षित है। इसे राष्ट्रिय तीर्थ माना जाता है।

(लेखक—अनन्तश्रीविभूषित मण्डलेश्वर परमहंस परिव्राजक यतिवर श्रीस्वामी संतसिंहजी महाराज वेदान्ताचार्य)

श्रीगुरु नानकदेवजीके चतुर्थ स्वरूप गुरु रामदासजी तथा पञ्चम गुरु श्रीअर्जुनदेवजी महाराजद्वारा यह तीर्थ प्रकट हुआ था। 'श्रीअमृतसर' तीर्थके नामपर ही इस नगरका नाम पड़ा है। इस नगरमें पाँच प्रसिद्ध तीर्थ हैं। एक ही दिनमें पाँचों तीर्थोंमें विधिवत् स्नान करनेसे मनुष्यके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इन तीर्थोंके नाम हैं—अमृतसर, संतोषसर, रायसर, विवेकसर और कमलसर (कौलसर)।

कथा यह है कि श्रीरामके अश्वमेध यज्ञका घोड़ा लव-कुशने पकड़ लिया, तब घोर युद्ध छिड़ गया। लव-कुशने युद्धमें भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्नको तो मूर्च्छित कर ही दिया। भगवान् श्रीराम भी रथमें मूर्छा नाट्य करके पड़ रहे। अन्तमें लव-कुशने इन्द्रसे अमृत प्राप्त किया और उस अमृतके द्वारा सबको सचेत किया। शेष अमृत वहीं भूमिमें गाड़ दिया गया।

त्रेतामें जहाँ अमृत गड़ा था, उसी स्थानपर श्रीगुरु रामदासजीने एक सरोवर खुदवाया; किन्तु कालान्तरमें वह कच्चा होनेके कारण पट गया। गुरु अर्जुनदेवजीके समयमें उस पटे हुए सरोवरमें जो कुछ गड्ढा बच रहा था, उसके जलमें संयोगवश स्नान करनेसे एक कोढ़ीका कोढ़ दूर हो गया। गुरु अर्जुनदेवने फिर इस तीर्थका पुनरुद्धार कराया। इस तीर्थमें हरिकी पौड़ी, अड़सठ तीर्थ, दुखभंजन बेरी आदि पवित्र स्थान हैं। (स्वर्णमन्दिर इसी सरमें है।)

संतोषसर—इस सरका निर्माण पञ्चम गुरु अर्जुनदेवजीने कराया था। कथा है कि जब सर बहुत गहरा खोदा गया, तब भीतर एक मठ निकला। उस मठमें एक योगी पता नहीं कबसे समाधिमें स्थित थे। गुरुके प्रयत्नसे वे समाधिसे उत्थित हुए। उन्होंने गुरुसे अनेक तत्त्वज्ञान-सम्बन्धी शङ्काओंका समाधान प्राप्त किया। इसके पश्चात् वे दिव्यधाम चले गये। उन योगीका नाम संतोष था, इसीलिये इस सरोवरका नाम संतोषसर पड़ा।

उत्तर-भारतके कुछ तीर्थ—१

श्रीनैनीदेवी-मन्दिर, नैनीताल
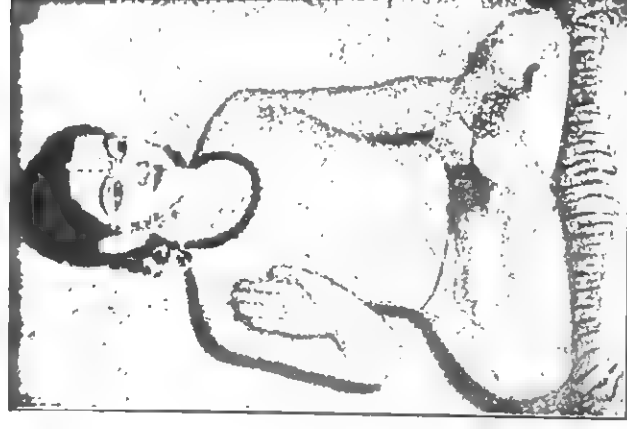
शुकतालकी श्रीशुकदेव-मूर्ति

श्रीशुकदेव-मन्दिर, शुकताल

श्रीरेणुका-झील, रेणुकातीर्थ
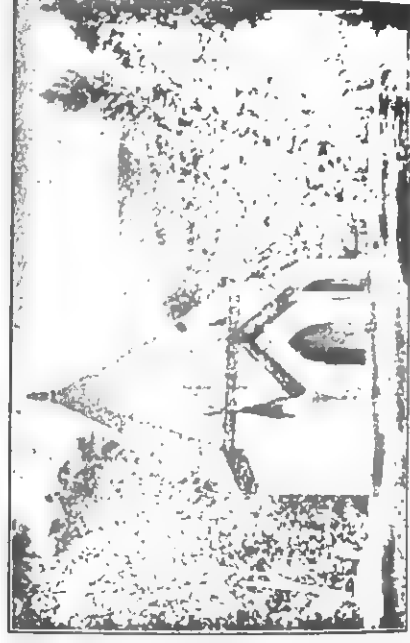
श्रीपरशुराम-मन्दिर, रेणुकातीर्थ

श्रीव्रजेश्वरी-मन्दिर, काँगड़ा

पंजाबके पवित्र स्थल
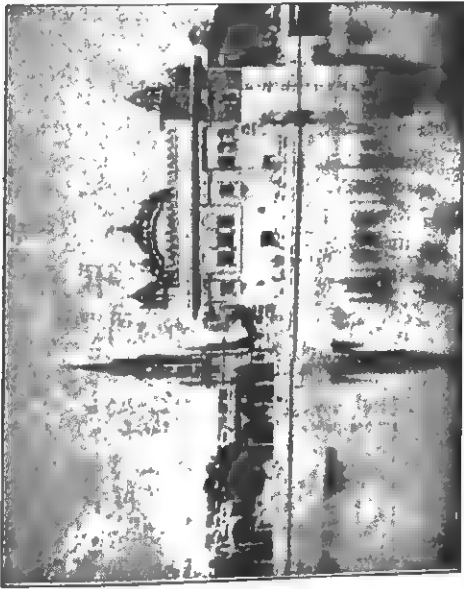
स्वर्ण-मन्दिर, अमृतसर
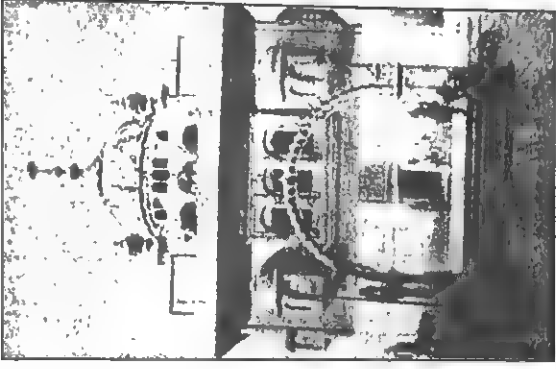
गुरुद्वारा, तरनतारन साहब
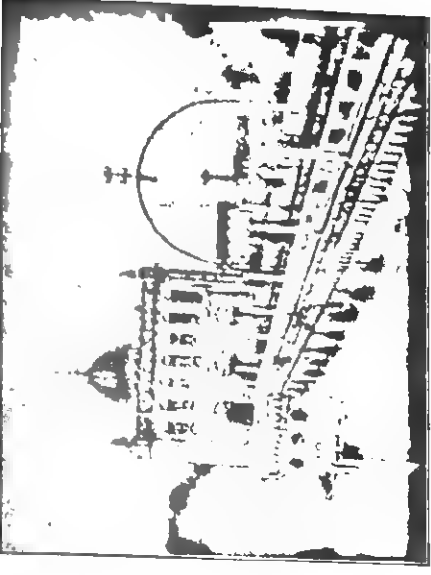
श्रीलक्ष्मीनारायण-मन्दिर, अमृतसर

ब्रह्मसर, कुरुक्षेत्र
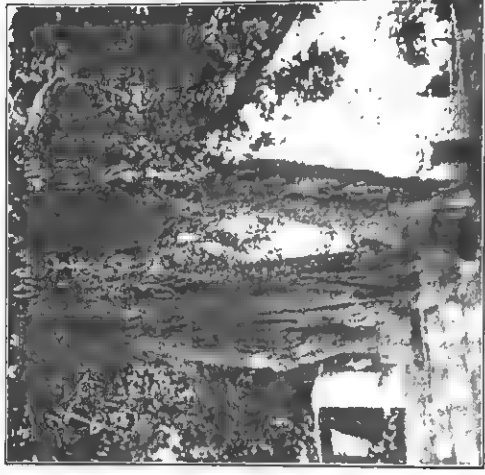
भगवद्गीताका उपदेशस्थल
ज्योतिःसर, कुरुक्षेत्र
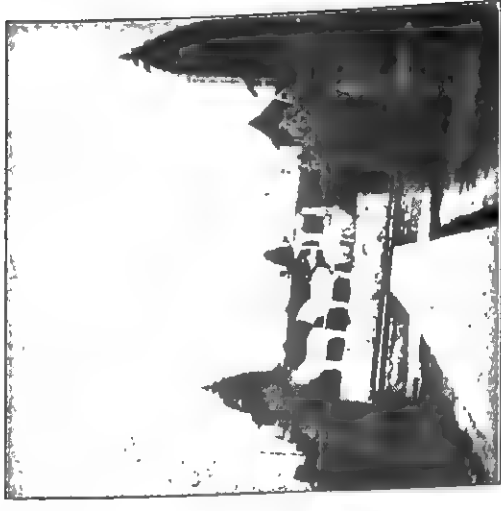
श्रीभगवद्गीता-मन्दिर, कुरुक्षेत्र

तरन-तारन

अमृतसरसे बारह मील दक्षिण व्यास और सतलज नदियोंके संगमसे पूर्वोत्तर यह सिखोंका पवित्र तीर्थ है। अमृतसरसे तरन-तारनतक पक्की सड़क जाती है। यहाँ भी एक सरोवरके मध्य गुरुद्वारा है। गुरु अर्जुनदेवजीने इस स्थानकी प्रतिष्ठा की थी। तरन-तारन सरोवर अत्यन्त पवित्र माना जाता है। वैशाखकी अमावस्याको यहाँ मेला लगता है।

अचलेश्वर

(लेखक—श्रीवेदप्रकाशजी वंशल)

अमृतसर-पठानकोट लाइनमें बटाला स्टेशनसे चार मीलपर यह स्थान है। मन्दिरके समीप सुविस्तृत सरोवर है। यहाँ मुख्य मन्दिरमें शिवलिङ्ग तथा स्वामिकार्तिककी मूर्ति है। मन्दिरमें ही पार्वतीदेवीकी मूर्ति भी है। सरोवरके मध्यमें भी एक शिवमन्दिर है। मन्दिरतक जानेको पुल बना है।

उत्तर भारतमें स्वामिकार्तिकका यह एक ही मन्दिर है। कहा जाता है कि एक बार परस्पर श्रेष्ठताके सम्बन्धमें गणेशजी तथा स्वामिकार्तिकमें विवाद हो गया। भगवान् शंकरने पृथ्वी-प्रदक्षिणा करके निर्णय कर लेनेको कहा। गणेशजीने माता-पिताकी ही परिक्रमा कर ली और वे विजयी माने गये। पृथ्वी-परिक्रमाको निकले स्वामिकार्तिकको मार्गमें ही यह समाचार मिला। समाचार मिलते ही आगेकी यात्रा व्यर्थ समझ वे वहीं अचल रूपमें समाधिमें स्थित हो गये। पीछे भगवान् शिव तथा पार्वतीजी वहीं उनसे मिलने आयीं।

यहाँ वसुओं तथा सिद्धगणोंने यज्ञ किया था। गुरु नानकदेवने भी यहाँ कुछ काल साधना की थी। कार्तिक शुक्ल नवमी-दशमीको मेला लगता है।

चंबा

(लेखक—श्रीहरिप्रसादजी 'सुमन')

पठानकोटसे ही मोटर-बस डलहौजी होकर चंबा जाती है। डलहौजीसे २० मीलपर रावी नदीके तटपर यह सुन्दर नगर बसा है। नगरमें श्रीलक्ष्मीनारायणजीका प्राचीन मन्दिर है। मन्दिरमें भगवान् नारायणकी श्वेत संगमरमरकी प्रतिमा है। इस मन्दिरके साथ ही ६ मन्दिर और हैं। ये सभी मन्दिर विशाल तथा कलापूर्ण हैं। उनमें राधाकृष्ण, श्रीचक्रगुप्तेश्वर, गौरीशंकर, त्र्यम्बकेश्वर और श्रीलक्ष्मी-दामोदरकी मूर्तियाँ है।

भरमौर—चंबासे यह स्थान ३८ मील दूर है। यहाँ नौ नाथ तथा चौरासी सिद्ध पधारे थे। यहाँ अनेक प्राचीन मन्दिर हैं।

मन्महेश—भरमौरसे लगभग ३० मील दूर मन्महेश नामक एक विस्तृत झील है। भाद्रशुक्ला अष्टमीको यहाँ लोग स्नान करने आते हैं। उत्तर भारतका यह मुख्य तीर्थ है। यात्रा पैदल करनी पड़ती है। मार्ग बीहड़ है।

भरमौरसे आगे एक पड़ाव हडसर और दूसरा धनछो आता है। धनछोसे आगे भैरोघाटी तथा बंदरघाटीकी कठिन चढ़ाई है। यहाँ प्रायः मिचली आती है। आगे हिमाच्छादित समतल मैदानमें गौरीकुण्ड है। उसका जल गरम रहता है। यात्री वहाँ स्नान करते हैं। पास ही शिवकरोत्र नदी है। वहाँसे थोड़ी चढ़ाईके बाद मन्महेश झील मिलती है। झीलके तटपर भगवान् शंकरकी श्वेत लिङ्गमूर्ति है।

छत्राढ़ी—भरमौरसे १४ मील चंबाकी ओर यह स्थान है। यहाँ देवीका मन्दिर है। यह मन्दिर लकड़ीका बना है और बहुत सुन्दर है। पहिले यह पूरा मन्दिर एक स्तम्भके आधारपर घूमता था; किंतु अब वह यन्त्र सम्भवतः कुछ खराब हो गया है।

काँगड़ा

पठानकोटसे ५९ मीलपर काँगड़ा और उससे एक मील आगे काँगड़ा-मन्दिर स्टेशन है। काँगड़ासे मन्दिर ३ मील दूर है, किंतु मोटर-बस चलती है। काँगड़ा-मन्दिर स्टेशनसे मन्दिर डेढ़ मील दूर है; किंतु मार्ग पैदलका है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशालाएँ हैं।

यहाँपर महामायाका मन्दिर है, जिसे वज्रेश्वरी कहते

हैं। कुछ लोग इन्हें विद्येश्वरी भी कहते हैं। कहा जाता है कि सतीका यहाँ मुण्ड गिरा था, अतः यह ५१ शक्तिपीठोंमें गिना जाता है; किंतु पञ्जिकामें इसका नाम नहीं है। यहाँ मुण्डकी ही प्रतिमा है। देवीके सम्मुख रजतपीठपर वाग्-यन्त्र है। जालन्धर पीठके शक्तित्रिकोणमें यह मन्दिर है। दोनों नवरात्रोंमें मेला लगता है।

नगरोटा—काँगड़ासे ९ मीलपर यह स्टेशन है। यहाँ चामुण्डा देवीका मन्दिर है। यह मन्दिर स्टेशनसे ४ मील दूर पर्वतपर है, पहाड़ीके दूसरी ओर बाणगङ्गा बहती हैं। वहाँ शंकरजीका भव्य मन्दिर है। कहा जाता है कि यहाँ एक ही रात यात्रीको रहना चाहिये।

बैजनाथ पपरोला—नगरोटासे २१ मील आगे यह स्टेशन है। यहाँ वैद्यनाथ महोदवका मन्दिर है। आसपासके लोग इन्हींको द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें मानते हैं। यहाँ शिवरात्रिपर मेला लगता है।

बाबा रुद्रानन्दकी समाधि—यह स्थान ज्वालामुखीसे ३० मील, चिन्तापूरणी देवीसे २० मील और नयना देवीसे २३ मीलपर ऊना शहरसे ४ मील दूर है। यहाँ योगी संत रुद्रानन्दजीकी समाधि है। दूर-दूरसे यात्री आते हैं। यहाँ ब्रह्मचर्याश्रम है तथा ठहरनेकी सुविधा है।

श्रीज्वालामुखी

(लेखक—श्रीज्ञानचन्द्रजी)

उत्तर रेलवेकी एक शाखा अमृतसरसे पठानकोटतक जाती है। पठानकोटसे एक लाइन 'बैजनाथ पपरोला' तक गयी है, इसी लाइनपर ज्वालामुखी रोड स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग १३ मील दूर पर्वतपर ज्वालामुखीमन्दिर है। स्टेशनसे मन्दिरतक बसें चलती हैं।

ठहरनेके स्थान

मोटर-अड्डेपर रायबहादुर योधामलकी धर्मशाला है। वहाँसे थोड़ी दूरपर मन्दिर है।

ज्वालामुखी—यह ५१ शक्तिपीठोंमें एक है। यहाँ सतीकी जिह्वा गिरी थी। ज्वालामुखी-मन्दिरका ऊपरी भाग स्वर्णमण्डित है। मन्दिरके भीतर पृथ्वीमेंसे मशाल-जैसी ज्योति भूमिसे निकलती है, इसीको देवी माना जाता है। यहाँ मन्दिरके पीछेकी दीवारके गोखलेसे ४, कोनेमेंसे १, दाहिनी ओरकी दीवालसे १ और मध्यके कुण्डकी भित्तियोंसे ४—इस प्रकार दस प्रकाश निकलते हैं। इनके अतिरिक्त और भी कई प्रकाश मन्दिरकी भित्तिके पिछले भागसे निकलते हैं। इनमें कई स्वतः बुझते और प्रकाशित होते रहते हैं।

देवी-मन्दिरके पीछे एक छोटे-मन्दिरमें कुआँ है, उसकी दीवालसे दो प्रकाश-पुञ्ज निकलते हैं। पासमें दूसरे कुएँमें जल है। उसे लोग गोरखनाथकी डिभी कहते हैं। आस-पास कालीदेवीके तथा अन्य कई मन्दिर हैं। मन्दिरके सामने जलका कुण्ड है, उससे जल बाहर निकालकर स्नान किया जाता है। नवरात्रमें यहाँ बड़ा मेला लगता है। यहाँ थोड़ी दूर ऊपर जाकर अर्जुनदेवजीका मन्दिर है।

आसपासके स्थान

चिन्तापूरणी देवी—यह मन्दिर होशियारपुर जिलेमें है। होशियारपुर पंजाबका एक अच्छा नगर है। यहाँसे या पठानकोटसे चिन्तापूरणी देवीके लिये मोटर-बस मिलती है। १६० सीढ़ियाँ चढ़कर जानेसे पर्वतपर देवी-मन्दिर मिलता है। इसमें देवीकी मूर्ति नहीं है, पिण्डी है।

रिबालसर (रेवासर)

(लेखक—पं० श्रीलेखराजजी शर्मा साहित्यशास्त्री)

यह स्थान ज्वालामुखीसे ५५ मील दूर है। जाहू एवं मंडी नामक नगरोंसे रिबालसरके लिये सवारियाँ मिलती हैं। मंडीसे यह १५ मील दूर है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। वैशाखी पूर्णिमा, माघ शुक्ला सप्तमी और फाल्गुन-शुक्ला सप्तमीको मेला लगता है। बौद्ध भी इसे अपना तीर्थ मानते हैं।

यह एक बड़ा सरोवर (झील) है। सरके दक्षिण-पश्चिम 'मानी-पानी' नामका बौद्ध-मन्दिर है। समीपमें एक धर्मशाला है। समीप ही शंकरजीका, लक्ष्मी-नारायणका और धजाधारी (महर्षि लोमश) का मन्दिर है। यहाँ दो वृषभ-मूर्तियाँ हैं।

सरोवरमें सात तैरते भूभाग हैं। उनमें वृक्षोंपर देवमूर्तियाँ बनी हैं। इन भागोंको किनारे लाकर यात्रियोंको दर्शन कराया जाता है। सरोवरके पूर्व गुरुद्वारा है।

इस सरोवरके पश्चिम पहाड़ीपर सात सरोवर हैं। यहाँसे उत्तर नयनादेवीका मन्दिर है।

कहा जाता है कि महर्षि लोमशने यहाँ तप किया था। पाण्डव भी यहाँ आये थे। गुरु गोविन्दसिंहने भी यहाँ कुछ दिन साधना की थी।

कमरूनाग—रिबालसरसे २० मील दूर कमरूनाग सर है। वहाँ कमरूनागका मन्दिर है। यहाँ आषाढ़में संक्रान्तिपर मेला लगता है। पहाड़ी मार्ग है। कठिन चढ़ाई है। शीतकालमें यहाँ हिमपात होता है। उस समय ३ महीने मार्ग बंद रहता है।

मणिकर्ण

(लेखक—श्रीसुतीक्ष्णमुनिजी उदासीन)

मणिकर्ण पहुँचनेके लिये अमृतसरसे पठानकोट होती हुई योगीन्द्रनगरतक रेल जाती है, उसके आगे मोटर-लारी भूमन्तर पड़ावपर छोड़ देती है। यहाँसे पैदल व्यासगङ्गाका पुल पार करके १३$\frac{1}{2}$ मील चलनेपर जरी पड़ाव आता है। उसके आगे ६$\frac{3}{4}$ मील चढ़ाईपर पार्वतीगङ्गाके तटपर मणिकर्ण-तीर्थ (तालाब) आता है। यहाँसे आधे मीलकी दूरीपर पार्वतीगङ्गा है, जिसका दृश्य अतीव मनोहर है। मणिकर्ण सरोवरका जल इतना उष्ण है कि शरीरके किसी अङ्गपर उसकी एक बूँद भी पड़ जाय तो उतने भागपर फफोला पड़कर मांस उधड़ आता है। यात्रीलोग मणिकर्ण तथा पार्वती-गङ्गाके संगमपर स्नान करते हैं। मणिकर्ण स्रोतके जलसे बटलोहीमें चावल रखकर पकाया जाता है।

मणिकर्ण पर्वतका नाम हरेन्द्रगिरि भी है। मणिकर्णका माहात्म्य ब्रह्माण्डपुराणमें आता है। भगवान् शङ्करके कानकी मणि गिर जानेसे इसका नाम मणिकर्ण पड़ा।

कुल्लू

मणिकर्णसे लौटके भूमन्तर आकर आगे ६ मील पक्की सड़कसे मोटरद्वारा चलनेपर व्यास-तटपर कुल्लू नगर आता है। यह बहुत सुन्दर स्थान है। यहाँ पठानकोटसे सीधी मोटर भी मडी होकर आती है। पठानकोटसे कुल्लू १७५ मील पड़ता है। बाजार, रघुनाथ-मन्दिर, धर्मशाला, थाना, पोस्ट-आफिस, बिजली आदिसे सम्पन्न यह नगर है।

कुल्लू-प्रदेश शीतल कश्मीरकी सुन्दरताकी होड़ करनेवाला अपने ढंगका निराला हिमालयकी तलहटीमें चारों ओर तुषारवेष्टित गगनचुम्बी भूधरोंसे घिरा समुद्रतलसे ४७०० फुट ऊँचा बसा है। विजयादशमी—आश्विन शुक्ल १० को यहाँकी विशेष यात्रा होती है। उस दिन आसपासके चारों ओरके देवताओंकी सवारी सज-धजके साथ यहाँ आती है। यह मेला १० दिनका होता है।

कुल्लू (काँगड़ा) के तीर्थ

(लेखक—पं० श्रीपन्नालालजी शर्मा शाण्डिल्य)

जगतसुख—इस गाँवका प्राचीन नाम अनास्त है। यह स्थान धौम्यगङ्गाके तटपर है। पाण्डवोंके आचार्य महर्षि धौम्यने पाण्डवोंके द्वारा यहाँ शिवलिङ्गकी स्थापना करवायी थी। वह लिङ्गविग्रह बिम्बकेश्वर कहा जाता है। बिम्बकेश्वरका मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है। शिव-मन्दिरके पास ही गायत्रीदेवीका मन्दिर है। श्रावणमें बिम्बकेश्वरका अर्चन तथा उनपर धौम्यगङ्गाका जल चढ़ानेका बड़ा महत्त्व है।

छिका—यह स्थान जगतसुखसे थोड़ी दूर पर्वतपर है। महर्षि धौम्यने यहाँ कुछ कालतक साधना की थी। वस्तुतः यह 'तक्षक-स्थान' है। पर्वतपर तक्षक नागकी मूर्ति है।

हामटा—यह पर्वत भी जगतसुखसे थोड़ी ही दूरपर है। इसका प्राचीन नाम हेमगिरि है। यहाँ एक अर्जुन-गुफा है। गुफामें अर्जुनकी अष्टधातु-निर्मित विशाल मूर्ति है। गुफाके बाहर एक स्रोत है। कहा जाता है कि अर्जुनने बाण मारकर माता कुन्तीके पीनेके लिये वहाँ जल प्रकट किया था। भाद्रपदमें यहाँ मेला लगता है। इस स्थानके पास ही शाकम्भरी देवीका स्थान है।

त्रिवेणी-संगम—जगतसुखसे डेढ़ मील पश्चिम धौम्य-गङ्गा, व्यासगङ्गा तथा सौम्यगङ्गाका संगम होता है। यहाँ स्नान, पितृतर्पण एवं श्राद्धका बहुत माहात्म्य माना जाता है।

कलातकुण्ड—त्रिवेणी-संगमसे आध मीलपर यह स्थान है। यहाँ कपिलमुनिका आश्रम है। यहाँपर कई गरम पानीके कुण्ड तथा स्रोत हैं। कपिलमुनिकी अष्टधातुमयी मूर्ति यहाँ छोटे-से मन्दिरमें है। त्रिवेणी-संगमतक जानेवाले मोटर-बसके मार्गमें ही यह स्थान पड़ता है।

वसिष्ठाश्रम—कुल्लूका अन्तिम बस-स्टेशन मानाली है। वहाँसे डेढ़ मील पैदल चलनेपर वसिष्ठाश्रम मिलता है। यहाँ गरम पानीके तीन कुण्ड हैं। महर्षि वसिष्ठकी सुन्दर मूर्ति है। यहाँ एक श्रीराम-मन्दिर भी है।

व्यासकुण्ड

कुल्लूसे १८ मील, ६ फर्लांग कपिल मुनिका दर्शन करके चलनेपर २४ मील आगे मुनाली पड़ाव आता है। मोटर यहाँतक आती है। आगे पैदल (डोली तथा घोड़े भी मिल जाते हैं) चलके २ मीलपर वसिष्ठाश्रम ग्राममें वसिष्ठ मुनिका दर्शन करते हुए ७ मील चलकर आगे ५ मील बर्फकी चढ़ाई चढ़नेपर व्यासकुण्ड—व्यास नदीका उद्गमस्थान आता है। यह मार्ग केवल ज्येष्ठसे आश्विनतक ही खुला रहता है, शेष समय बर्फसे अवरुद्ध हो जानेके कारण यात्राके योग्य नहीं रहता।

इस स्थानको यहाँके लोग रटाँगकी जोत भी कहते हैं। व्यासकुण्डसे ११ बजते-बजते नीचे उतर जाना चाहिये। पीछे पवन, पानी (वर्षा) एवं बादलोंका राज हो जानेके कारण मनुष्यके प्राणोंपर संकट उपस्थित होते देर नहीं लगती। इसकी ऊँचाई १५ सहस्र फुट है। कुल्लूसे इसकी दूरी ४० मील कहते हैं, यहाँ आते समय साथमें पथप्रदर्शक तथा बना हुआ भोजन लाना आवश्यक है।

त्रिलोकनाथ

रटाँगजोत (व्यासकुण्ड) से उतरनेपर चन्द्रा नदीके तटपर खोकसर आता है। यहाँ एक बँगला, एक धर्मशाला और आँटा, दाल, चावल, घृतादिकी एक दूकानके सिवा कुछ नहीं है। आगे चन्द्रा नदीके किनारे-किनारे चलनेपर भागा नदीके साथ चन्द्राका संगम मिलता है और दोनोंकी संयुक्त धाराका नाम चन्द्रभागा पड़ जाता है। इसीको पंजाबमें चिनाब कहते हैं। संगमपर दोनों नदियोंको पार करनेके लिये पृथक्-पृथक् पक्के पुल बँधे हैं। संगमसे तीन मार्ग जाते हैं—एक केलिंगको, दूसरा लद्दाखको, तीसरा चन्द्रभागाके किनारे-किनारे २८ मील श्रीत्रिलोकनाथजीको जाता है।

श्रीत्रिलोकनाथजीका मन्दिर छोटा है, परन्तु बहुत अच्छा है। मन्दिरके भीतर मूर्तिके सामने दो ज्योतियाँ अखण्ड जलती रहती हैं। एकमें ५ मन घृत तथा दूसरेमें ७ मन घृत पड़ता है। इस देशकी रीति है कि जो दर्शन करने जाता है, वह घृत लाके उन ज्योतियोंके दीपकोंमें डाल जाता है।

श्रीत्रिलोकनाथजीकी प्राचीन मूर्ति श्वेत संगमरमरकी है। श्रीत्रिलोकनाथजीके सिरके ऊपर और एक छोटी मूर्ति पद्मासन लगाये बैठी है, जिसे अनाज (अनादि) गुरु कहते हैं।

भागसूनाथ

(लेखक—श्रीसुतीक्ष्णमुनिजी उदासीन)

काँगड़ेसे १३ मील पूर्वोत्तर धर्मशाला नामक नगर आता है। यह काँगड़े जिलेका प्रसिद्ध सैनिटोरियम (आरोग्य-प्रदस्थान) है। यहाँ कई स्थानोंसे मोटर-मार्ग आता है। इसके आगे एक मील पूर्व दिशामें भागसूनाथ महादेवका प्रसिद्ध मन्दिर आता है। इस प्रान्तके लोग इसको बड़ा तीर्थस्थान मानते हैं। शिवरात्रिको बड़ा भारी मेला लगता है।

कंजर महादेव

धर्मशालासे ३ मील खनियारा ग्राममें कंजर महादेवका मन्दिर है। लोगोंका कहना है कि शंकरजीने कंजर (भील) के रूपमें अर्जुनसे यहींपर युद्ध किया था।

नृमुण्ड

(लेखक—श्रीलोकनाथजी मिश्र शास्त्री, प्रभाकर)

शिमलासे जो मार्ग तिब्बत जाता है, उस मार्गपर मोटर-बस द्वारा लगभग ९० मील जानेपर रामपुर बुशहर स्थान मिलता है। वहाँसे सतलज पार ७ मील दूर नृमुण्ड है। यहाँ धर्मशाला है।

यहाँ अम्बिका देवीका मन्दिर है। भगवान् परशुरामने यहाँ तपस्या की थी और उन्हींने देवीकी स्थापना की थी। यह सिद्धपीठ माना जाता है। मन्दिरमें देवीकी द्विभुज मूर्ति है।

परशुरामजीने यहाँ यज्ञ किया था और बहुत-से ब्राह्मणोंको यहाँ बसाया था। नृमुण्डके कई मुहल्ले हैं। उनमें भगवान् लक्ष्मी-नारायण, ईशेश्वर महादेव, चण्डीदेवी, विश्वेश्वर आदिके मन्दिर हैं।

यहाँ एक गुफामें श्रीपरशुरामजीकी रजतमूर्ति है। गुफाके सम्मुख मन्दिर बना हुआ है। यहाँ परशुराम-मूर्तिको 'कालकाम परशुराम' कहते हैं। मन्दिरके चारों ओर प्राकार है। उसमें एक स्थानपर हिडिम्बाकी भयंकर मूर्ति है। द्वारके पास भैरवजीका मन्दिर है।

नृमुण्डके ४ मीलपर मार्कण्डेय मुनिका आश्रम है। दूसरी ओर ६ मीलपर 'भटारलुदेव' का स्थान है। ९ मीलपर 'नित्थर' गाँवमें बूढ़ा महादेवका मन्दिर है। यहाँ आसपास चार चम्भू (शम्भु), सात भराड़ी (शक्ति) तथा नव नागोंके स्थान हैं।

ढक्केश्वर

नृमुण्डसे दो मीलपर एक पर्वतीय गुफा है। इसमें एक ओर एक अँधेरी कन्दरा है, जिसमें पत्थर फेंकनेसे डमरू-जैसा शब्द होता है। गुफाका मार्ग बहुत संकीर्ण है। भीतर भगवान् शङ्करकी लिङ्ग-मूर्ति है। उसपर स्वतः बूँद-बूँद जल टपकता रहता है। शिवरात्रिको यहाँ मेला लगता है। भीतर ही हनुमान्जी तथा पार्वती देवीकी भी मूर्तियाँ हैं।

श्रीखण्ड महादेव

नृमुण्डसे लगभग ३३ मील दूर हिमाच्छादित शिखरपर यह स्थान है। केवल श्रावण-भादोंमें ही यहाँकी यात्रा होती है। नृमुण्डसे १४ मीलपर 'जाँओं' ग्राममें यहाँके पुरोहित रहते हैं। उनको साथ लिये बिना यात्रा करना कठिन है। १८ मीलका मार्ग अत्यन्त दुर्गम है। जाँओंसे आगे ड्वारी तथा भीमड्वारीमें रात्रिविश्राम होता है। यहाँ साधारण गुफाएँ हैं। तीसरे दिन प्रातः 'नयन सरोवर' में स्नान करके आगे जाते हैं। श्रीखण्ड महादेवपर जो कुछ चढ़ाया जाय सब कन्दरामें चला जाता है। यहाँ दो विशाल शिला-कपाट हैं, कहा जाता है कि वे भीमसेनके लगाये हैं। यहाँ सप्तर्षियोंकी मूर्तियाँ भी हैं। यहाँसे तीन मीलपर कार्तिक-स्वामी हैं, किंतु वहाँ पहुँचना अत्यन्त कठिन है।

कहा जाता है कि भस्मासुरसे डरकर पार्वती देवी रो पड़ी थीं। उनके अश्रुओंसे नयनसर बना। श्रीखण्ड महादेवके पास भस्मासुरने तप किया था। यह स्थान इधर अमरनाथके समान मान्य है।

पश्चिमी पाकिस्तानके तीर्थ

पञ्जासाहब

स्टेशन—हसन अब्दालसे दो मील दक्षिण दिशामें यह स्थान स्थित है। लाहौरसे पेशावर जानेवाली रेलवे लाइनपर तक्षशिला (टेक्लो) जंक्शनसे एक स्टेशन आगे हैं। एक समय पीर वली कंधारीने उस जगहके आस-पासके जलको अपनी शक्तिसे खींचकर पहाड़के ऊपर अपने कब्जेमें ले लिया। जलकष्ट देखकर गुरु श्रीनानक भाई मर्दाना तथा बालाजीके साथ समस्त प्राणियोंके कष्टको दूर करनेके लिये वहाँ पहुँचे। पहाड़पर पानीकी प्रार्थनाके लिये भाई मर्दानाको भेजा, किंतु वली कंधारी पीरने तिरस्कारपूर्वक उसे वापस लौटा दिया तथा कहा कि अगर उनमें शक्ति हो तो कहींसे पानी प्राप्त कर लें। गुरु श्रीनानकने मर्दानाको तीन बार पहाड़पर प्रार्थनाके लिये भेजा, पर बदलेमें केवल भर्त्सनाके कुछ भी प्राप्त

नहीं हुआ। अब श्रीगुरु नानकसे न सहा गया। अन्तमें उन्होंने अपनी शक्तिसे समस्त जल खींच लिया। वह फव्वारेके रूपमें बाहर फूट पड़ा। आज भी उस जलसे अनन्त प्राणियोंका जीवन चलता है तथा वह तालाबके रूपमें दिखायी पड़ता है।

जलको जाता हुआ देखकर पीर वली कंधारीने एक बड़ा विशाल पर्वतखण्ड ऊपरसे गिरा दिया। पर्वतखण्ड आता हुआ देख श्रीनानकने अपना एक हाथका पंजा लगाकर उसे रोक दिया। आज भी वह हाथका पंजा तथा उसमें हाथकी रेखाएँ विद्यमान हैं। विधर्मियोंके पत्थर खोदनेपर प्रातःकाल होते ही पुनः पंजा वैसा ही हो जाता है। गुरुद्वारेके सामने ही पहाड़पर पीर वली कंधारीका स्थान भी है। वैशाखकी तारीख १ को वहाँ मेला लगता था तथा अनुमानतः १० लाख दर्शनार्थी सभी प्रान्तोंसे पहुँचते थे। गुरुद्वारा इतना विशाल है कि ३० हजार व्यक्तियोंके रहनेका स्थान गुरुद्वारेमें बना हुआ है। आजकल यह स्थान पाकिस्तानमें है। मेलेके समय सिर्फ २५ सिक्खोंका एक जत्था पाकिस्तानकी आज्ञा प्राप्त होनेपर जाता है। २० व्यक्ति सेवाके लिये सर्वदा वहाँ रहते हैं, जिनका प्रबन्ध शिरोमणि गुरुद्वारा-प्रबन्धक-कमेटी करती है।

साधुबेला तीर्थ

(लेखक—श्रीसुतीक्ष्णमुनिजी उदासीन)

संवत् १८८० की वैशाख कृष्णा तृतीयाको योगिराज श्री ११०८ सद्गुरु वनखंडीजी महाराजने वर्तमान सिन्धके सक्खर नगरके समीप श्रीसिन्धु-गङ्गा (सिन्धुनद) की अतल प्रवाहपूर्ण धाराके मध्य स्थित पहाड़ीपर श्रीसाधु-वेलातीर्थकी अवतारणा की और उसके चारों ओर बीस घाट बनवाकर जनताके आने-जाने तथा स्नान-जप-पूजा करनेके लिये सुविधा कर दी। पाकिस्तान बननेसे पूर्व यह तीर्थ साधुओंका विराट् विश्रामस्थल था, जहाँ अनेक साधु समय-समयपर आकर और निवास करके एकान्त भजन और तपस्या किया करते थे।

प्रारम्भमें जब यह तीर्थ केवल एक पहाड़ीके रूपमें था, उसी समय श्रीबनखंडीजी महाराजने वहाँ बैठकर संसारका पोषण करनेवाली माता अन्नपूर्णाजीकी कृपा प्राप्त करनेके निमित्त तप करना प्रारम्भ किया और वरदानके रूपमें हरीतकीका कमण्डलु प्राप्त किया।

पूजा, भजन, अध्ययन, अध्यापनके साधनोंके अतिरिक्त यहाँ भगवान् राम, लक्ष्मण और सीता, मारुतिनन्दन हनुमान्, गणेश, श्रीसत्यनारायण, माता दुर्गा, श्रीचन्द्राचार्य तथा भवभयहारी त्रिपुरारि महादेवजीकी मूर्तियोंकी भी विधिवत् प्रतिष्ठा करके उनके मन्दिर बना दिये गये थे। वहाँ नियमित रूपसे नित्य महात्माओंके धर्मोपदेश, कथा-कीर्तन आदि हुआ करते थे और अब भी इस तीर्थके काशी तथा बम्बईमें स्थित आश्रमोंमें नियमितरूपसे कथा, कीर्तन और प्रवचन होते रहते हैं। इस तीर्थने धर्मप्रचारके अतिरिक्त विद्याप्रचारमें भी बड़ा सहयोग दिया। यह इस तीर्थकी और तीर्थके धर्मनिष्ठ तपस्वी तथा उदार महंतोंकी ही वरिष्ठ परम्पराका प्रताप है कि सम्पूर्ण सिन्धमें सनातनधर्मकी भावना, ईश्वरमें विश्वास और सादे सात्त्विक जीवनकी प्रतिष्ठा होती रही। आज भी उस तीर्थके भक्तोंकी संख्या कम नहीं है।

कटाक्षराज

लाहौर-पेशावर लाइनमें लालामूसा जंकशनसे मलकवाल होते खिवड़ा स्टेशनपर उतरना होता है। खिवड़ेसे ९ मील पहाड़पर हिंदुओंका बड़ा तीर्थ कटाक्षराज है। सड़क पक्की गाड़ी-मोटरकी जाती है। यहाँ प्रति वैशाखकी संक्रान्तिको बहुत भारी मेला ५ दिनका लगा करता था। उस दिन हरिद्वार, प्रयागके कुम्भोंके अनुसार उदासीन, संन्यासी, वैरागी महात्माओंकी शाही (शोभायात्रा) निकाली जाती थी और समस्त

मेलेमें घूमकर सब लोग कटाक्षराज तालाबमें जाकर स्नान करते थे। अब इस पवित्र तीर्थके पश्चिमी पाकिस्तानमें पड़ जानेके कारण मेला आदिका लगना तथा साधु-महात्माओंकी शाही आदिका निकलना बंद हो चुका है। पता नहीं इस पवित्र स्थलकी क्या गति है।

कटाक्षराजके तालाबका नाम अमरकुण्ड है। इसको पृथ्वीका नेत्र भी कहते हैं। इस सरोवरसे जलकी धारा निकालकर छोटी नहरके रूपमें उससे कटाक्षराज तथा चोआग्रामके खेतोंके सिञ्चनका काम लिया जाता है।

मुलतान

यह पूर्वी पंजाबका बड़ा नगर तथा प्रमुख रेलवे स्टेशन है। यहाँ नृसिंहभगवान्‌का मन्दिर है। कहा जाता है कि भगवान् नृसिंहका अवतार यहीं हुआ था। नृसिंहचतुर्दशीको मेला लगता था।

नगरसे ४ मील दूर सूर्यकुण्ड नामक सरोवर है। वहाँ भाद्र शुक्ल ६ और माघ शु० ७ मेला लगता था।

हिंगलाज

संसार परिणामी है। इसमें अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। यह कोई नवीन बात नहीं है। इसीके अनुसार भारतका विभाजन तथा पाकिस्तानका उद्भव भी हुआ। इस कारण हमारे अनेक तीर्थस्थान पाकिस्तानमें पड़कर अब हमलोगोंके लिये अतीव दूर हो गये हैं। पश्चिमी पाकिस्तानके इन्हीं स्थानोंमें हिंगलाजदेवीका पवित्र स्थान है।

कराचीसे पारसकी खाड़ीकी ओर जाते हुए मकरानतक नावसे तथा आगे पैदल जानेपर ७वें मुकामपर चन्द्रकूप तथा १३ वें मुकामपर हिंगलाज पहुँचते हैं। यहाँ गुफामें जगज्जननी भगवती हिंगलाजका दर्शन है। गुफामें हाथ-पैरके बल जाना पड़ता है। साथमें काली माँका भी दर्शन है। हिंगलाजका ठुमरेका दाना प्रसिद्ध है। इसकी माला साधुलोग पहनते हैं। हिंगलाजमें पृथ्वीसे निकलती हुई ज्योति है।

देवीभागवत स्कन्ध ७ अ० ३९ में तथा ब्रह्मवैवर्तपुराण, कृष्णजन्म-खण्ड अ०, ७६ श्लोक २१ में यहाँका माहात्म्य विस्तारसहित आता है। यह शक्तिपीठ है, यहाँ सतीका ब्रह्मरन्ध्र गिरा था। —सुतीक्ष्णमुनि

कुरुक्षेत्र

(लेखक—ब्रह्मचारी श्रीमोहनजी)

कुरुक्षेत्र-माहात्म्य

कुरुक्षेत्रं गमिष्यामि कुरुक्षेत्रे वसाम्यहम्।
य एवं सततं ब्रूयात् सोऽपि पापैः प्रमुच्यते॥
पांसवोऽपि कुरुक्षेत्रे वायुना समुदीरिताः।
अपि दुष्कृतकर्माणं नयन्ति परमां गतिम्॥
दक्षिणेन सरस्वत्या दृषद्वत्युत्तरेण च।
ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे॥
मनसाप्यभिकामस्य कुरुक्षेत्रं युधिष्ठिर।
पापानि विप्रणश्यन्ति ब्रह्मलोकं च गच्छति॥
गत्वा हि श्रद्धया युक्तः कुरुक्षेत्रं कुरूद्वह।
फलं प्राप्नोति च तदा राजसूयाश्वमेधयोः॥

(महा० वनपर्व० तीर्थयात्रा० ८३। २—७)
(पद्मपुरा० आदिख० (स्वर्ग ख०) २६। २—६)

''मैं कुरुक्षेत्रमें जाऊँगा', 'मैं कुरुक्षेत्रमें बसता हूँ'—जो इस प्रकार सर्वदा कहता रहता है, वह भी सारे पापोंसे मुक्त हो जाता है। वायुसे उड़ायी हुई यहाँकी धूलि भी किसी पापीके शरीरपर पड़ जाय तो वह उसे श्रेष्ठगतिकी प्राप्ति करा देती है। दृषद्वतीके उत्तर तथा सरस्वती नदीके दक्षिणतक कुरुक्षेत्रकी सीमा है। इस बीचमें जो लोग वास करते हैं, वे मानो स्वर्गमें ही बसते हैं। युधिष्ठिर! जो आदमी मनसे भी कुरुक्षेत्रकी ओर जानेकी इच्छा करता है, उसके भी पाप नष्ट हो जाते हैं और वह ब्रह्मलोकको प्राप्त होता है। कुरुकुलश्रेष्ठ! जो श्रद्धापूर्वक कुरुक्षेत्रतीर्थकी यात्रा करता है, उसे राजसूय तथा अश्वमेध—इन दोनों यज्ञोंका एकत्र फल प्राप्त हो जाता है।''

(कुरुक्षेत्रका माहात्म्य शतपथ ब्राह्मण, बृहज्जाबालोपनिषद्, यजुर्वेद तथा प्राय: सभी पुराणोंमें आता है।)

पुरातन युग—कुरुक्षेत्रका इतिहास वास्तवमें संक्षिप्त रूपसे भारतीय इतिहास ही है। इस पावन भू-क्षेत्रमें सरस्वती नदीके पवित्र तटोंपर ऋषियोंने सर्वप्रथम वेद-मन्त्रोंका उच्चारण किया, ब्रह्मा तथा अन्यान्य देवताओंने यज्ञोंका आयोजन किया, महर्षि वसिष्ठ तथा विश्वामित्रने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया। पाण्डवों तथा कौरवोंने इसीको महाभारतीय समरका युद्धाङ्गण बनाया, भगवान् श्रीकृष्णने विश्वको अपनी गीताका अमर संदेश सुनाया तथा महर्षि वेदव्यासने इसीसे सम्बन्धित महाभारतके प्रसिद्ध ग्रन्थकी रचना की। महाराज कुरुने इसीको अपना कृषि-क्षेत्र बनाया और पुराणोंने इसकी महिमाका विस्तारपूर्वक वर्णन किया।

इसी प्रसिद्ध एवं पावन क्षेत्रमें समृद्धशाली हिंदू सम्राटोंको राज्य-लक्ष्मीसे वञ्चित किया गया, मुसल्मान बादशाहोंके विशाल साम्राज्य मिट्टीमें मिला दिये गये, मरहठों तथा सिक्खोंकी सुदृढ़ शक्तियोंका यहींपर पतन हुआ। प्रत्येक युगमें महाराजाओं तथा साम्राज्योंके उत्थान तथा पतनका इतिहास इसी क्षेत्रमें मानव-रक्तसे लिखा गया।

प्राचीन कुरुक्षेत्र न एक पवित्र सरोवर था न केवल एक शहर, बल्कि एक विस्तृत भू-क्षेत्र था, जिसमें बहुत-से शहर तथा गाँव आबाद थे। यह लगभग ५० मील लंबा तथा इतना ही चौड़ा था। यह दक्षिणमें वर्तमान पानीपत तथा जींद स्टेटतक, पश्चिममें वर्तमान पटियाला स्टेटतक, पूर्वमें यमुना एवं उत्तरमें सरस्वती नदीतक फैला हुआ था।

यजुर्वेदने इसे इन्द्र, विष्णु, शिव तथा अन्यान्य देवताओंकी यज्ञभूमि बताकर वर्णित किया है। कौरवों तथा पाण्डवोंके पूर्वज महाराज कुरुके यहाँ आनेसे पूर्व यह ब्रह्माकी 'उत्तर वेदी' के नामसे विख्यात था। इसका सुविस्तृत वर्णन वामनपुराणमें मिलता है। कहा जाता है कि महाराजा कुरुने इस क्षेत्रको आध्यात्मिक शिक्षाका विशाल केन्द्र बनाया। वामनपुराणके २२वें अध्यायमें इसकी उत्पत्तिके वर्णनमें कहा गया है कि 'महाराज कुरुने पावन सरस्वती नदीके किनारे इस स्थानपर आध्यात्मिक शिक्षा तथा अष्टाङ्ग धर्म* की कृषि करनेका निश्चय किया। राजा यहाँ स्वर्णरथमें बैठकर आये तथा उस रथके स्वर्णसे कृषिके लिये हल तैयार किया। उन्होंने भगवान् शिव तथा यमराजसे क्रमशः बृषभ (बैल) तथा महिष (भैंसा) लेकर खेती आरम्भ की। उस समय देवराज इन्द्रने आकर राजा कुरुसे प्रश्न किया, 'राजन्! क्या करते हो?' राजाने निवेदन किया, 'मैं अष्टाङ्ग धर्मकी कृषिके लिये जमीन तैयार कर रहा हूँ।'

इन्द्रने पुन: कहा, ''राजन्! बीज कहाँ है?'' राजा कुरुने निवेदन किया, 'देवेन्द्र! बीज मेरे पास है।' देवराज इन्द्र हँसने लगे तथा अपने स्थानको लौट गये। तथा राजा निरन्तर सात कोस भूमि कृषिके लिये प्रतिदिन तैयार करते रहे। कहा जाता है कि इस प्रकार उन्होंने ४८ कोस भूमि तैयार की। उस समय भगवान् विष्णु वहाँ पधारे तथा उन्होंने भी राजा कुरुसे प्रश्न किया कि 'राजन्! क्या कर रहे हो?' राजाने इन्द्रके प्रश्न करनेपर जो उत्तर दिया था, वही इनसे भी निवेदन कर दिया। भगवान् विष्णुने कहा, 'राजन्! आप बीज मुझे दे दें, मैं उसे आपके लिये बो दूँगा।' इतना सुनकर राजा कुरुने यह कहते हुए कि बीज मेरे पास है, अपनी दाहिनी भुजा फैला दी। भगवान् विष्णुने अपने चक्रसे उसके सहस्र टुकड़े किये तथा उन टुकड़ोंको कृषिक्षेत्रमें बो दिया। इसी प्रकार राजाने बीजारोपणके निमित्त अपनी बायीं भुजा, दोनों पैर तथा अन्तमें अपना सिर भी भगवान् विष्णुको अर्पण कर दिया। भगवान् विष्णुने राजासे अत्यन्त प्रसन्न होकर उनसे वर माँगनेको कहा। राजाने निवेदन किया—'हे भगवन्! जितनी भूमि मैंने जोती है, वह सब पुण्यक्षेत्र, धर्मक्षेत्र होकर मेरे नामसे विख्यात हो, भगवान् शिव समस्त देवताओंसहित यहाँ वास करें, तथा यहाँ किया हुआ स्नान, उपवास, तप, यज्ञ, शुभ तथा अशुभ—जो भी कर्म किया जाय वह अक्षय हो जाय; जो भी यहाँ मृत्युको प्राप्त हो, वह अपने पाप-पुण्यके प्रभावसे रहित होकर स्वर्गको प्राप्त हो।' भगवान्ने 'तथास्तु' कहकर राजाके वचनोंका अनुमोदन किया।

* तप, सत्य, क्षमा, दया, शौच, दान, योग तथा ब्रह्मचर्यको यहाँ अष्टाङ्ग धर्म कहा गया है।

महाभारतमें आता है कि पावन सरस्वती नदीके तटपर ऋषि-गण अपने आश्रमोंमें सहस्रों विद्यार्थियोंसहित निवास किया करते थे तथा ऋषि-आश्रम ही धर्म तथा संस्कृतिकी शिक्षाके सर्वोत्तम केन्द्र थे। वहीं यह भी कहा गया है कि युद्धकी इच्छासे कौरवों एवं पाण्डवोंकी विशाल सेनाएँ क्रमशः पूर्व एवं पश्चिमकी ओरसे इस समराङ्गणमें प्रविष्ट हुईं तथा उनमें १८ दिनोंतक भीषण संग्राम होता रहा। इसी ग्रन्थके भीष्मपर्वसे प्रमाणित होता है कि युद्धके प्रथम दिवस ही जब पाण्डवोंके वीर सेनानी महारथी अर्जुनने अपने ही भाई-बान्धवोंको दोनों पक्षोंकी ओरसे युद्धके लिये तैयार देखा, तब युद्धमें कुल-संहारके भयंकर परिणामको सोचकर वे कर्तव्यविमुख हो गये तथा उन्होंने युद्ध करनेसे इन्कार कर दिया। उस समय अर्जुनके सारथि बने हुए भगवान् श्रीकृष्णने उन्हें वेदों तथा शास्त्रोंके सारभूत श्रीमद्भगवद्गीतारूपी अमृतका पान कराके कठोर कर्त्तव्यपालनकी प्रेरणा दी भगवान् श्रीकृष्णने समराङ्गणके जिस पावन स्थानपर गीताका यह अमर संदेश दिया, सरस्वती नदीके तटपर वह पुण्य स्थान 'ज्योतिसर' के नामसे विख्यात हुआ तथा आनेवाली संततिके लिये तीर्थ बन गया, इस घटनाका साक्षी, यह स्थान वर्तमान कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशनसे लगभग पाँच मील दूर पेहवा जानेवाली पक्की सड़कपर स्थित है।

आधुनिक ऐतिहासिक युग

प्राचीन धार्मिक ग्रन्थोंके आधारपर यह कहा जा सकता है कि महाभारतीय युद्धसे लेकर महाराजा हर्षवर्धनपर्यन्त यह क्षेत्र सांस्कृतिक तथा सामाजिक दोनों ही दृष्टिकोणोंसे उन्नतिके शिखरपर था। सन् ३०० ई० पू० में यूनानी राजदूत मैगस्थनीजने लिखा है कि 'लोग रातमें भी घरोंके दरवाजे खोलकर सोते हैं, चोरी तथा बदमाशीका नाम भी नहीं है, स्त्रियोंका चरित्र उच्च कोटिका है, देशमें चारों ओर शान्ति है, आर्थिक दशा अच्छी है, व्यापार तथा कलाकी उन्नतिमें राज्य-प्रबन्धकी सहायता प्रदान है, लोगोंका चरित्र उच्च कोटिका है।' बौद्धोंके समयमें भी कुरुक्षेत्र आर्य-संस्कृति (वैदिक संस्कृति) का सर्वोत्तम केन्द्र रहा, हिंदू एवं बौद्ध परस्पर मित्रभावसे रहते थे; राजा बौद्ध हों अथवा हिंदू, वे अपनी दोनों ही प्रजाको समानभावसे देखते थे।

महाभारतके इस प्राचीन युद्धक्षेत्रका हमारे देशके इतिहासकी प्रमुख घटनाओंसे घनिष्ठतम सम्बन्ध है। थानेसर, पानीपत, तरावड़ी, कैथल तथा करनाल इत्यादि इतिहास-प्रसिद्ध युद्धमैदान कुरुक्षेत्रकी इस पवित्र भूमिमें ही स्थिति हैं। ३२६ ईसापूर्वसे लेकर सन् ४८० (ईसाके बाद) तक प्रथम तो यह क्षेत्र मौर्य राजाओंके अधिकारमें रहा, तत्पश्चात् इसपर गुप्त राजाओंका अधिकार हुआ, जिनका राजत्वकाल भारतीय इतिहासमें 'स्वर्ण-युग' कहा जाता है। गुप्त-राज्यकालमें यह क्षेत्र उन्नतिके शिखरपर था।

उस समय भी थानेसर ऐश्वर्यशाली तथा वैदिक साहित्यकी शिक्षाका सर्वश्रेष्ठ केन्द्र माना जाता था। हर्षके दरबारी प्रसिद्ध विद्वान् राजकवि बाणभट्टने अपनी पुस्तक 'हर्ष-चरित' में इस क्षेत्रके ऐश्वर्यका विस्तारसे वर्णन किया है। उसने लिखा है 'थानेसर सरस्वती नदीके तटपर बसा हुआ है तथा धार्मिक शिक्षा एवं व्यापारका प्रसिद्ध केन्द्र है। यहाँका समस्त वायुमण्डल वेद-मन्त्रोंकी ध्वनिसे परिपूर्ण है।' महाराजा हर्षके समय चीनी यात्री ह्वान-च्यांग (Huen-Tsang) भारत-भ्रमणके लिये आया था। वह सन् ६२९ से ६४५ तक भारतमें ठहरा, उसके उपलब्ध लेखोंसे तत्कालीन भारतकी दशापर अच्छा प्रकाश पड़ता है। ह्वान-च्यांग स्वयं कई वर्षोंतक हर्षके राज-दरबारमें रहा। वह लिखता है—'वर्तमान शताब्दी धार्मिक प्रगतिका युग है। बुद्धमत यद्यपि शक्तिशाली है, तथापि उसका पतन हो रहा है। वैदिक धर्म पुनः उन्नतिकी ओर अग्रसर हो रहा है। निस्संदेह ही धार्मिक परम्पराने थानेसरको उत्तरी भारतमें सर्वोच्च स्थान प्राप्त करनेमें अत्यधिक सहायता प्रदान की है।'

इसके बादका कुरुक्षेत्रका इतिहास तो बर्बर आक्रमणों एवं पैशाचिक विनाशका इतिहास है। वह पवित्र भूमि बराबर रक्तस्नात हुई और बार-बार इसके पवित्र स्थल आततायी आक्रमणकारियोंद्वारा ध्वस्त किये गये। अब तो जो कुछ अवशेष तीर्थ हैं, उनका ही वर्णन दिया जा सकता है।

कुरुक्षेत्रके पवित्र स्थान

कुरुक्षेत्र अर्थात् 'कुरुका खेत' एक विस्तृत क्षेत्र है, जो लगभग ५० मील लंबा और उतना ही चौड़ा है। यह समस्त क्षेत्र ही अत्यन्त पवित्र माना जाता है। पुराणोंने इसकी महिमाका विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।

जो इस क्षेत्रके दर्शन करते हैं, इसके तीर्थोंमें स्नान करते हैं अथवा निवास करते हैं, इस स्थानमें प्राणत्याग करते हैं, वे स्वर्ग प्राप्त करते हैं। इस क्षेत्रको 'भृगुक्षेत्र' भी कहा गया है (क्योंकि ऋषि भृगुने यहाँ यज्ञोंका आयोजन किया था) तथा यह ब्रह्माजीकी 'उत्तर-वेदी' के नामसे भी विख्यात है। (उत्तर-वेदी ब्रह्माजीकी पाँच वेदियोंमेंसे एक है, जहाँ ब्रह्माजीने यज्ञ किये थे)। पुराणोंमें उल्लेख आता है कि इस क्षेत्रमें किया हुआ दान, तप इत्यादि १३ दिनतक १३ गुनी वृद्धिको प्राप्त होता है।

पवित्र वन तथा पवित्र नदियाँ

इस क्षेत्रमें सात पवित्र बन तथा सात पवित्र नदियाँ मानी जाती हैं। वामनपुराणमें वर्णन है—

काम्यकं च वनं पुण्यं तथादितिवनं महत्।
व्यासस्य च वनं पुण्यं फलकीवनमेव च॥
तथा सूर्यवनं स्थानं तथा मधुवनं महत्।
पुण्यशीतवनं नाम सर्वकल्मषनाशनम्॥

अर्थात्—इन सात वनोंका इस प्रकार वर्णन है कि १. काम्यकवन, २. अदितिवन, ३. व्यासवन, ४. फलकीवन, ५. सूर्यवन, ६. मधुवन और ७. शीतवन ये ही सात वन हैं। (अध्याय ३४, श्लोक ४ से ७ तक)

इसी प्रकार नदियोंके सम्बन्धमें आया है—

सरस्वती नदी पुण्या तथा वैतरणी नदी।
आपगा च महापुण्या गङ्गा मन्दाकिनी नदी॥
मधुस्रवा अम्लुनदी कौशिकी पापनाशिनी।
दृषद्वती महापुण्या तथा हिरण्वती नदी॥

(अ० ३९। ६—८)

अर्थात् सात नदियोंके नाम इस प्रकार हैं— १. सरस्वती नदी, वैतरणी नदी, ३. आपगा, ४. मधुस्रवा नदी, ५. कौशिकी नदी, ६. दृषद्वती नदी, ७. हिरण्वती नदी।

पवित्र सरोवर तथा कूप

इसी प्रकार इस क्षेत्रमें चार सरोवर तथा चार कूप अति पवित्र माने जाते हैं, जहाँ अधिकांश यात्री दर्शनार्थ जाते हैं।

पवित्र सरोवर—१. ब्रह्मसर, २. ज्योतिसर, ३. स्थानेसर ४. कालेसर।

पवित्र कूप—१. चन्द्रकूप, २. विष्णुकूप, ३. रुद्रकूप तथा ४. देवीकूप।

कुरुक्षेत्रमें ३६० तीर्थोंकी गणना की जाती है; परंतु ऐसे यात्री (दर्शनार्थी) कम ही होते हैं, जो सभी तीर्थोंके दर्शनोंका कष्ट सहन कर सकें।

निम्नलिखित रेलवे स्टेशनोंपर उतरकर यात्री अधिकांश तीर्थ-स्थानोंका दर्शन कर सकते हैं—थानेसर सिटी, कुरुक्षेत्र, अमीन, कैथल, जींद, सफीदों। प्रसिद्ध पेहवा या पृथूदक तीर्थ-स्थानके लिये थानेसरसे मोटर-सर्विस चलती है तथा नरवाणा ब्रांचकी छोटी रेलवे लाइनपर पेहवा रोड स्टेशनसे पेहवाको एक कच्ची सड़क जाती है। इस स्टेशनसे तीर्थ-स्थान लगभग ८ मील है।

यहाँके प्राचीन सातों वनोंका अब कोई विशेष अवशेष नहीं रहा है। वनोंको काटकर अब प्रायः खेतोंका रूप दिया जा चुका है। अब तो उनकी सीमाओं तथा स्थानोंका सही पता लगाना भी असम्भव-सा हो गया है। फिर भी उन वनोंके स्थानोंपर उनके नामसे वहाँ गाँव बसे हुए हैं, जिनसे इस बातका पता चलता है कि कभी यहाँ वे पवित्र वन थे। वनोंकी पहचान अब इस प्रकार की जाती है—

१. काम्यकवन—यहाँपर कमोधा ग्राम है तथा काम्यक तीर्थ भी है। यह ज्योतिसरसे लगभग ३ मील दूर, पेहवा जानेवाली सड़कके दक्षिणमें है।

२. अदितिवन—यहाँपर अमीन ग्राम है तथा अदिति-तीर्थ भी है। अमीन कुरुक्षेत्रसे ५ मील दूर देहली-अंबाला रेलवे लाइनपर स्टेशन है।

३. व्यासवन—यहाँपर वारसा ग्राम है, जो करनालसे कैथल जानेवाली सड़कके दक्षिणमें है।

४. फलकीवन—यहाँपर फरल ग्राम है तथा प्रसिद्ध फल्गु तीर्थ है। यह पेहवा-रोड रेलवे स्टेशन (छोटी लाइन) के समीप है।

५. **सूर्यवन**—यहाँ संजूमा ग्राम है तथा सूर्यकुण्ड-तीर्थ है।

६. **मधुवन**—यहाँपर मोहिना ग्राम है। यह करनालसे कैथल जानेवाली सड़कके दक्षिणमें स्थित है।

७. **शीतवन**—यहाँपर सीवन ग्राम है, जो कैथल तहसीलमें है।

इसी प्रकार पवित्र नदियाँ भी कोई अच्छी हालतमें नहीं हैं। उनके प्रवाह बंद हो चुके हैं। सिवा सरस्वती नदीके अन्य नदियोंके स्थानका पता लगाना भी असम्भव हो चुका है। सरस्वती नदीमें बरसातके मौसममें कहीं-कहीं पानी बहता है तथा अन्य ऋतुओंमें वह भी सूख जाती है। यह बरसातके समयमें थानेसर, नरकातारी, ज्योतिसर तथा पेहवा आदि स्थानोंमें बहती है।

ब्रह्मसर तथा संनिहितसर

थानेसर शहरसे दक्षिण-पूर्वकी दिशामें थानेसर सिटी रेलवे स्टेशनके समीप ही दो प्रसिद्ध सरोवर ब्रह्मसर एवं संनिहितसर हैं। यह कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशनसे लगभग एक मील दूर है। ब्रह्मसरको ही आजकल कुरुक्षेत्र कहा जाता है। महाभारत तथा पुराणोंसे यह बात प्रमाणित होती है कि ब्रह्मसर किसी समय ८ मील लंबा तथा ८ मील चौड़ा एक विस्तृत सरोवर था। संनिहित भी, जो आज एक पृथक् सरोवर है, इसीका अङ्ग था तथा थानेसर, ज्योतिसर, कालेसर आदि सभी ब्रह्मसरमें ही स्थित थे।[१]

कुछ मनुष्योंको यह गलत धारणा है कि कुरुक्षेत्र ही वह द्वैपायन-सरोवर, जहाँ महाभारतीय युद्धके अन्तिम दिन दुर्योधन जलके अंदर जाकर छिप गया था। यथार्थमें द्वैपायन एक पृथक् सरोवर है, जिसे पाराशर भी कहते हैं। यह थानेसरसे लगभग २० मील है।

सूर्यग्रहणका मेला

सूर्यग्रहणके अवसरपर कुरुक्षेत्रमें एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें भारतके प्रत्येक प्रान्तसे नर-नारी आकर एकत्र होते हैं। यात्री थानेसर तथा ज्योतिसरमें भी स्नान तथा दर्शनार्थ जाते हैं। श्रीमद्भागवत, पुराणके दशम स्कन्धमें उल्लेख है कि महाभारतीय युद्धसे पूर्व सूर्यग्रहणके अवसरपर भगवान् श्रीकृष्ण सभी यदुवंशियोंसहित द्वारकासे कुरुक्षेत्रमें पधारे थे। उस समय दूर-दूरके देश-विदेशोंके राजालोग यहाँ एकत्र हुए थे और सूर्यग्रहणके पर्वपर सभीने स्नान, पूजा-पाठ तथा धार्मिक कार्य किये थे। यहाँ सोमवती अमावस्यापर स्नान करनेसे सब तीर्थोंके स्नानका फल प्राप्त होता है।

ब्रह्मसर-विभाग

ब्रह्मसर (समन्तपञ्चकतीर्थ)

ब्रह्मसरका विस्तृत सरोवर (अब वह कुरुक्षेत्र सरोवरके नामसे जन-साधारणमें प्रसिद्ध है) लगभग १४४२ गज लंबा तथा ७०० गज चौड़ा है। सरोवरमें दो द्वीप हैं। इन द्वीपोंमें प्राचीन मन्दिर तथा ऐतिहासिक महत्त्वके स्थान हैं। छोटे द्वीपमें गरुड़सहित भगवान् विष्णुका प्राचीन मन्दिर है, यह एक पुलके द्वारा श्रवणनाथ मठ (संन्यासियोंका प्राचीन आश्रम) के समीप उत्तरी तटसे मिला हुआ है तथा एक दूसरा पुल बड़े द्वीपके मध्यसे सरोवरके उत्तरी तटसे दक्षिणी तटको मिलाता है। इस द्वीपमें आमोंके बगीचे हैं तथा कुछ प्राचीन मन्दिरों तथा भवनोंके भग्नावशेष हैं, साथ ही अति प्राचीन 'चन्द्रकूप' का पवित्र तीर्थ-स्थान है। कहा जाता है कि मुगल बादशाह औरंगजेबने इसी स्थानपर अपने सिपाहियोंके रहनेके लिये मकान बनवाया था। वे सिपाही तीर्थमें स्नान तथा धार्मिक कार्य करनेवाले यात्रियोंसे कर वसूल करते थे; जो इस टैक्स (कर) की अवहेलना करते थे, उन्हें या तो गोली मार दी जाती थी या पकड़कर उनसे काम करवाया जाता था।

पुराणोंमें उल्लेख मिलता है कि महाभारतीय युद्धसे बहुत पहले ब्रह्मसरनामक सरोवर सर्वप्रथम महाराज कुरुने तैयार करवाया था[२]। सन् १९४८ में राष्ट्रपिता महात्मा गान्धीकी अस्थिभस्मका एक भाग इस पवित्र सरोवरमें भी बहाया गया था।

इसके उत्तरी तटपर प्राचीन मठ-मन्दिर तथा धर्मशालाएँ हैं, जिनमें बाबा कालीकमलीवालेकी धर्मशाला तथा श्रवणनाथकी हवेली विशेष उल्लेखनीय स्थान हैं। यहाँ यात्रियों तथा साधु-महात्माओंके ठहरनेका उत्तम प्रबन्ध है। उत्तरी किनारेके मध्यमें गौडीयमठ (बंगाली साधुओंका आश्रम) तथा कुरुक्षेत्र-जीर्णोद्धार-सोसाइटीका

---

१. वामनपुराणमें है—

रन्तुकादौजसं चापि पावनाच्च चतुर्मुखम्। सरः संनिहितं प्रोक्तं ब्रह्मणा पूर्वमेव तु॥
विश्वेश्वराद्धस्तिपुरं तथा कन्या जरद्गवी। यावदोघवती प्रोक्ता तावत् संनिहितं सरः॥
विश्वेश्वराद् देववरात् पावनी च सरस्वती। सरः संनिहितं प्रोक्तं समन्तादर्द्धयोजनम्॥ (२२।५१, ५३, ५५)

२. सुदर्शनस्य जननीं ह्रदं कृत्वा सुविस्तृतम्। तस्यास्तज्जलमासाद्य स्नात्वा प्रीतोऽभवन्नृपः॥ (वामनपुराण, अध्याय २२, श्लोक १४)

कुरुक्षेत्र-पुस्तकालय है, जिसे गीता-भवन भी कहते हैं। सरोवरके उत्तम-पश्चिमकी ओर समीप ही बिड़लाजीकी ओरसे गीता-मन्दिरका निर्माण हो रहा है। सरोवरके समीप ही उत्तर-पश्चिमके तटपर सिक्खोंका एक गुरुद्वारा है। दक्षिणी तटपर एक गुरुद्वारा गुरु नानकदेवजीकी स्मृतिमें है। गुरु नानकदेवजी, गुरु गोविन्दसिंहजी तथा अन्य सिक्ख गुरुओंने अपने-अपने समयमें इस पुण्यभूमिके तीर्थोंका दर्शन किया था।

संनिहित

यह ब्रह्मसरसे बहुत छोटा है। इसकी लंबाई-चौड़ाई क्रमशः लगभग ५०० गज तथा १५० गज है। इसके तीन ओर घाट हैं। सर्वप्रथम यात्री यहीं आते हैं। सूर्यग्रहणके अवसरपर बड़ी संख्यामें यात्री यहाँ एकत्र होते हैं। सरोवरके पश्चिमी तटके समीप श्रीलक्ष्मीनारायणका अति सुन्दर प्राचीन मन्दिर है।

विष्णुधर्मोत्तरमें लिखा है—

पुनः संनिहित्यां वै कुरुक्षेत्रे विशेषतः।
अर्चयेच्च पितॄंस्तत्र स पुत्रस्त्वनृणो भवेत्॥

'अर्थात् कुरुक्षेत्रके बीचमें जो संनिहित तीर्थ है, उसमें श्राद्ध-तर्पण करनेवाला पुत्र पितृ-ऋणसे उऋण हो जाता है।'

यहाँपर वामन-द्वादशी (भगवान् वामनका जन्म-दिन), जन्माष्टमी (भगवान् श्रीकृष्णका जन्म-दिन), दशहरा (जिस दिन भगवान् रामने रावणको मारा था) तथा अन्य धार्मिक, उत्सवोंपर मेले लगते हैं।

थानेसर (स्थाण्वीश्वर) तीर्थ

यह थानेसर शहरसे लगभग दो फर्लांगकी दूरीपर है। यह अत्यन्त ही पवित्र सरोवर है तथा इसके तटपर ही भगवान् स्थाण्वीश्वर (स्थाणु-शिव) का प्राचीन मन्दिर है। पुराणोंने विस्तारपूर्वक स्थाणु-शिव तथा इस पवित्र सरोवरकी महिमाका वर्णन किया है। कहा जाता है कि एक बार इस सरोवरके कुछ जलबिन्दुओंके स्पर्शसे ही महाराज वेनका कुष्ठ दूर हो गया था। यह भी कहा जाता है कि महाभारतीय युद्धमें विजयकी कामनासे पाण्डवोंने यहींपर भगवान् शिवका पूजन करके उनसे विजयका आशीर्वाद ग्रहण किया था।

चन्द्रकूप

ब्रह्मसर (कुरुक्षेत्र) सरोवरके मध्यमें बड़े द्वीपपर यह एक अति प्राचीन पवित्र स्थान है। यह एक कूप (कुआँ) है, जो कुरुक्षेत्रके चार पवित्र कुओंमें गिना जाता है। कूपके साथ ही एक मन्दिर है। कहा जाता है कि महाराज युधिष्ठिरने महाभारत युद्धके बाद यहाँपर एक विजय-स्तम्भ बनवाया था। विजय-स्तम्भ अब यहाँ नहीं है।

भद्रकाली-मन्दिर

यह माता कालीका मन्दिर स्थाणु-शिव मन्दिरसे थोड़ी दूरीपर है। कहा जाता है कि युद्धसे पूर्व पाण्डवोंने विजयकी कामनासे यहाँ माँ कालीका पूजन किया तथा यज्ञ किया था। यह भारतवर्षके ५१ देवी-पीठोंमेंसे एक है। कहा जाता है कि भगवान् विष्णुके सुदर्शन चक्रसे कटकर सतीके दाहिने पैरकी एड़ी यहाँपर गिर गयी थी।

बाणगङ्गा

यह तीर्थस्थान ब्रह्मसर (कुरुक्षेत्र) सरोवरसे लगभग तीन मील है और एक कच्ची सड़क इसे ब्रह्मसरसे मिलाती है। कहा जाता है कि महाभारतके युद्धमें पितामह भीष्म इस स्थानपर शर-शय्यापर गिरे थे तथा उस समय उनके पानी माँगनेपर उनकी इच्छासे महारथी अर्जुनने बाण मारकर जमीनसे पानी निकाला, जिसकी धारा सीधे पितामहके मुखमें गिरी। यहाँपर चारों ओरसे पक्का बना हुआ सरोवर है तथा एक छोटा-सा मन्दिर भी है।

नाभि-कमल-तीर्थ

यह थानेसर शहरके समीप ही है। कहा जाता है कि इसी स्थानपर भगवान् विष्णुकी नाभिसे उत्पन्न हुए कमलसे ब्रह्माजीकी उत्पत्ति हुई थी। यहाँपर यात्री स्नान, जप तथा भगवान् विष्णु तथा ब्रह्माजीका पूजन करके अनन्त फलके भागी होते हैं। सरोवर छोटा परंतु पक्का बना हुआ है तथा वहीं ब्रह्माजीसहित भगवान् विष्णुका छोटा-सा मन्दिर है।

कर्णका खेड़ा

ब्रह्मसर (कुरुक्षेत्र) सरोवरसे लगभग एक मील दक्षिण-पश्चिमकी ओर मिर्जापुर ग्रामके समीप ही एक टीला है। कहा जाता है कि महाभारतीय युद्धके समय दानवीर कर्णने इसी स्थानपर ब्राह्मणोंको दान दिया था। यात्री इस टीलेकी परिक्रमा करते हैं।

आपगा-तीर्थ

कर्णका खेड़ाके समीप ही यह तीर्थ-स्थान एक सरोवरके रूपमें है, जो चारों ओरसे पक्का है; परन्तु ठीक देख-भाल न होनेसे जीर्ण हो चुका है। कहा जाता है कि कुरुक्षेत्रकी पवित्र नदियोंमें मानी जानेवाली आपगा नदी यहाँसे होकर बहती थी। नदीका प्रवाह बंद हो जानेके बाद यहाँपर पानी इकट्ठा होकर जलाशयके रूपमें परिणत हो गया। यहाँपर भाद्रपद कृष्णा १४ को मध्याह्नमें पितृ-तर्पण एवं श्राद्ध करनेसे पितृलोकमें पितरोंकी मुक्ति होती है। इसी नामका एक तीर्थ कैथल तहसीलमें भी है।

भीष्म-शर-शय्या या नरकातारी

यह तीर्थ-स्थान कुरुक्षेत्रसे पेहवा जानेवाली सड़कके उत्तरमें, थानेसरसे लगभग १॥ मीलपर है। कुछ मनुष्योंका कहना है कि यही वह स्थान है, जहाँ पितामह भीष्म शर-शय्यापर सोये थे। यात्री यहाँके पवित्र सरोवरमें स्नान करके पूजा-पाठ करते हैं। सरोवर चारों ओरसे पक्का तथा कुण्डकी भाँति बना हुआ है।

रत्न-यक्ष-तीर्थ

यह कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशनसे लगभग एक मील दूर कुरुक्षेत्रसे पीपली जानेवाली सड़कके उत्तरमें है। कुरुक्षेत्रकी ४८ कोसकी परिक्रमापर जानेवाले यात्री अपनी यात्रा यहाँसे आरम्भ करते हैं। यहाँपर एक पवित्र सरोवर है तथा स्वामिकार्तिक और रत्नयक्षका मन्दिर है।

कुबेर-तीर्थ

यह भद्रकाली-मन्दिरसे थोड़ी दूरपर सरस्वती नदीके तटपर है। यहाँ सरस्वतीके तटपर कुबेरने यज्ञोंका आयोजन किया था।

मारकण्डा-तीर्थ

इस स्थानपर ऋषि मार्कण्डेयका आश्रम था। उन्होंने इसी स्थानपर वर्षों तपस्या करके परम पद प्राप्त किया था। यह सरस्वती नदीके तटपर है। यात्री यहाँ सरस्वतीमें स्नान करके सूर्यका पूजन करते हैं।

दधीचि-तीर्थ

इस स्थानपर महर्षि दधीचिका आश्रम था। यह सरस्वती नदीके तटपर है। महर्षि दधीचिने देवराज इन्द्रके माँगनेपर उन्हें राक्षसोंका संहार करनेके उद्देश्यसे वज्र बनानेके लिये अपनी हड्डियोंका दान किया था।

प्राची सरस्वती

यहाँपर सरस्वती नदी पश्चिमसे पूर्वाभिमुख होकर बहती है। अब तो केवल एक जलाशयमात्र ही शेष है आस-पास पुराने भग्नावशेष पड़े हुए हैं। सुनसान मन्दिर जीर्ण दशामें है। यात्री यहाँपर पितृ-तर्पण करते हैं।

अमीन या चक्रव्यूह

अमीन एक छोटा-सा ग्राम है, जो एक अति ऊँचे टीलेपर बसा हुआ है। यह थानेसरसे लगभग पाँच मील है और देहली-अंबाला रेलवे-लाइनपर स्टेशन भी है। कहा जाता है कि गुरु द्रोणाचार्यने महाभारतके युद्धमें कौरव-सेनाकी ओरसे यहींपर चक्रव्यूहकी रचना की थी, जिसमें अर्जुनपुत्र 'अभिमन्यु' प्रवेश तो कर पाया था किन्तु निकल न सकनेके कारण मारा गया था। कहा जाता है कि अभिमन्युसे ही बिगड़कर इसका नाम अमीन हो गया है। यात्री इस ग्रामकी ही परिक्रमा करते हैं तथा अन्यान्य तीर्थोंपर स्नान-दान तथा दर्शन करते हैं।

इस ग्राममें निम्नलिखित तीर्थ विद्यमान हैं:—

अदितिकुण्ड तथा सूर्यकुण्ड

अमीन ग्रामके पूर्वमें दो सरोवर हैं—जिनमेंसे एक तो सूखा ही रहता है, परन्तु दूसरेमें जल भरा रहता है। इनमें पहला अदितिकुण्ड और दूसरा सूर्यकुण्ड कहलाता है। यहींपर महर्षि कश्यप तथा उनकी पत्नी अदितिका आश्रम था और माता अदितिने भगवान् वामनको पुत्ररूपमें प्राप्त किया था। यहाँपर एक शिवमन्दिर है, जिसमें अति प्राचीन दो लाल पत्थरकी बनी हुई मूर्तियाँ रखी हैं, जो यहींके एक स्थानसे प्राप्त हुई थीं।

सोम-तीर्थ

यह एक कच्चा तालाब ग्रामके दक्षिणकी ओर है। यह सोम (चन्द्रदेव) के यज्ञका स्थान है। यहाँ लगभग ३५ साल पहले दो लाल पत्थरकी बनी हुई मूर्तियाँ जमीनसे निकाली गयी थीं, जो लगभग पाँच फुट ऊँची हैं और जिन्हें सूर्यकुण्डके शिव-मन्दिरमें रखवा दिया गया।

कर्ण-वध

अमीन ग्रामके ऊँचे टीलेके समीप ही एक बहुत बड़ी खाई है। कहा जाता है कि महाभारतीय युद्धमें जब

कर्णके रथका पहिया जमीनमें धँस गया था, तब अर्जुनने उसे यहीं मारा था। इसी कारण इस स्थानका नाम कर्ण-वध हुआ।

जयधर

यह स्थान अमीन ग्रामसे लगभग आध मील दूर है। कहा जाता है कि चक्रव्यूहमें अभिमन्युकी मृत्युका बदला अर्जुनने जयद्रथको यहाँ मारकर लिया था। यह जयधर जयद्रथका ही अपभ्रंश है।

वामन-कुण्ड

यह भगवान् वामनका जन्मस्थान है।

पाराशर या द्वैपायन ह्रद

यह तीर्थ-स्थान बहलोलपुर ग्रामके समीप ही है। यह ग्राम करनालसे कैथल जानेवाली पक्की सड़कसे लगभग ६ मील उत्तरमें है। एक कच्ची सड़क गाँवसे आकर इस पक्की सड़कमें मिलती है। यह कुरुक्षेत्र (ब्रह्मसर) सरोवरकी भाँति अति ही विशाल सरोवर है। इसके चारों ओर बहुत ऊँचा तथा चौड़ा मिट्टीका बना हुआ किनारा है, जो दीवारकी भाँति सरोवरको घेरे हुए है। कहा जाता है कि महाभारतीय युद्धके अन्तिम दिन दुर्योधन युद्ध-मैदानसे भागकर इसी सरोवरमें छिप गया था, पाण्डवोंने पता लगाकर उसे युद्धके लिये ललकारकर सरोवरसे बाहर निकाला था। यह भी कहा जाता है कि महर्षि पराशरका आश्रम यहीं था। फाल्गुन शुक्ला ११ को यहाँपर बड़ा मेला लगता है। यह तीर्थस्थान थानेसरसे दक्षिणमें लगभग २०-२५ मीलपर है।

विष्णुपद-तीर्थ

यह तीर्थ-स्थान पाराशरसे लगभग तीन मील उत्तर-पश्चिमकी ओर सगा ग्राममें है। पाराशरसे एक कच्ची सड़क इस ग्रामको जाती है। यहाँपर ऋषि विमलने यज्ञ किया था तथा भगवान् विष्णुके दर्शन प्राप्त किये थे, इसीसे यह तीर्थ-स्थान विष्णुपद कहलाता है। यह बड़ा सरोवर है, जिसके तीन ओर पक्के घाट हैं तथा भगवान् शिवके मन्दिर हैं।

विमल-तीर्थ

विष्णुपद-तीर्थके समीप ही यह एक ऊँचा टीला है, यहीं ऋषि विमलका आश्रम था। यात्री इस टीलेकी परिक्रमा करते हैं तथा ऋषि विमलका पूजन करते हैं।

ज्योतिसर-तीर्थ

कुरुक्षेत्रकी भूमिमें श्रीमद्भगवद्गीताकी जन्मभूमि ज्योतिसर अति ही पवित्र स्थान है। इसी स्थानपर महाभारतकी प्रसिद्ध लड़ाईके समय वीर अर्जुनको भगवान् श्रीकृष्णने गीतारूपी अमृतका पान कराया था, महाराजा हर्षके समयमें यह स्थान उनकी राजधानीमें ही सम्मिलित था। यह वर्तमान थानेसर शहरसे तीन मील पश्चिमकी ओर कुरुक्षेत्रसे पेहवा जानेवाली पक्की सड़कपर है। तीर्थकी उत्तर दिशामें इसी नामका एक ग्राम भी बसा हुआ है। पतित-पावनी सरस्वती नदी इसके समीप होकर बहती है।

इस स्थानपर एक अति प्राचीन सरोवर तथा कुछ प्राचीन वट-वृक्षोंके अतिरिक्त अन्य कोई विशेष प्राचीन स्मारक नहीं है। सरोवर 'ज्योतिसर' अर्थात् 'ज्ञानका स्रोत' के नामसे प्रसिद्ध है। सरोवर तटपर खड़े हुए प्राचीन वट-वृक्षोंमेंसे एक वट-वृक्ष अति पवित्र माना जाता है। वह 'अक्षय वट-वृक्ष' के नामसे विख्यात है, जो भगवान् श्रीकृष्णके गीता-उपदेशकी घटनाका एकमात्र साक्षी माना जाता है। एक अन्य वट-वृक्ष एक प्राचीन शिवमन्दिरके भग्नावशेषपर खड़ा हुआ है। (अधिक सम्भव है कि यह शिव-मन्दिर थानेसर-विध्वंसके समय ही मुसल्मानोंकी ध्वंसवृत्तिका शिकार बना हो।) लगभग १५० वर्ष पहले इस भग्नावशेषके समीप कश्मीरके एक महाराजाने एक नये शिव-मन्दिरका निर्माण करवाया था तथा एक दूसरा मन्दिर लगभग ६० साल पहलेका बना हुआ है। सन् १९२४ ई०में स्व० महाराजा दरभंगाने अक्षय वट-वृक्षके चारों ओरके चबूतरेको पुनः निर्माण करवाकर पक्का बनवाया तथा भगवान् श्रीकृष्णका एक छोटा मन्दिर बनवाया। यहाँका पवित्र सरोवर अत्यन्त विशाल (लगभग १०००×५००) है। इसके उत्तरी तटपर शिवालय है तथा अक्षय वट-वृक्ष है तथा दक्षिणी तटसे पेहवा जानेवाली सड़क गुजरती है। सरोवरके उत्तरी तथा पूर्वी तटोंपर सुन्दर पक्के घाट बने हुए हैं।

यातायात-साधन

कुरुक्षेत्र रेलवे-स्टेशनसे ज्योतिसर जानेवाले यात्रियोंको रिक्शे, ताँगे तथा मोटर-बसें पर्याप्त संख्यामें मिलती हैं।

कुरुक्षेत्रसे पेहवा जानेवाली सभी मोटर-बसें ज्योतिसर होकर ही जाती हैं तथा यह तीर्थ-स्थान कुरुक्षेत्र रेलवे-जंकशनसे पाँच मील है।

काम्यक-तीर्थ या काम्यकवन

काम्यकवन कुरुक्षेत्रके सात पवित्र वनोंमेंसे एक है। यहींपर पाण्डवोंने अपने प्रवासके कुछ दिन बिताये थे। ज्योतिसरसे लगभग २॥ मील पेहवा जानेवाली सड़कके दक्षिणमें कमोधा ग्राम है। 'काम्यक' का अपभ्रंश ही कमोधा है। यहाँपर ग्रामके पश्चिममें काम्यक-तीर्थ है। सरोवरके एक ओर प्राचीन पक्का घाट है तथा भगवान् शिवका मन्दिर है। चैत्र शुक्ला सप्तमीको प्रतिवर्ष यहाँ मेला लगता है।

भूरिसर

'भूरिसर' यथार्थमें 'भूरिश्रवा' का अपभ्रंश है। भूरिश्रवा कौरव-पक्षके योद्धा थे, जिनकी मृत्यु इस स्थानपर हुई थी। यह ज्योतिसरसे लगभग पाँच मील पश्चिममें पेहवा जानेवाली सड़कपर है। पवित्र सरोवर तथा भगवान् शिवका मन्दिर सड़कके उत्तरमें है। यात्री यहाँपर पवित्र सरोवरमें स्नान करके सूर्य-देवका पूजन करते हैं। इसे सूर्यकुण्ड भी कहा जाता है।

पृथूदक (पेहेवा)

पृथूदक (पेहेवा)-माहात्म्य

पुण्यमाहुः कुरुक्षेत्रं कुरुक्षेत्रात् सरस्वती।
सरस्वत्याश्च तीर्थानि तीर्थेभ्यश्च पृथूदकम्।
पृथूदकात् पुण्यतमं नान्यत् तीर्थं नरोत्तम॥
अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि स्त्रिया वा पुरुषेण वा।
यत् किंचिदशुभं कर्म कृतं मानुषबुद्धिना॥
तत् सर्वं नश्यते तत्र स्नानमात्रस्य भारत।
अश्वमेधफलं चापि लभते स्वर्गमेव च॥

(महा० वन० तीर्थयात्रापर्व ८३। १४; १४८, ४९। पद्म० स्वर्ग० २७, ३१। ३८-३९)

'कुरुक्षेत्रको बड़ा पुण्यमय कहा गया है, किंतु कुरुक्षेत्रसे भी अधिक पुण्यमयी सरस्वती है। सरस्वतीसे भी उसके तटवर्ती पवित्र हैं और उनसे भी अधिक पृथूदक पुण्यमय है। नरोत्तम! पृथूदकसे बढ़कर और कोई पवित्र तीर्थ नहीं है। यहाँ स्नानमात्रसे ही नर-नारियोंद्वारा किये गये सभी पाप, चाहे वे अनजानमें किये गये हों या जानकर, नष्ट हो जाते हैं। उसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है तथा स्वर्गकी प्राप्ति होती है।'

पृथूदक पंजाबके अंबाला जिलेमें सरस्वती नदीके दाहिने तटपर अवस्थित है। प्रसिद्ध थानेसर नगरसे यह ६$\frac{१}{२}$ कोस दूर है। अब इसे पेहेवा कहते हैं। महाराज पृथुने अपने पिताकी अन्त्येष्टि यहीं की थी, अतः यह उन्हींके नामपर प्रसिद्ध हो गया। यहाँ अति प्राचीन मुद्राएँ तथा मूर्तियाँ मिली हैं। यहाँ पश्चिमकी ओर गोरखनाथके शिष्य गरीबनाथका मन्दिर है। यहाँ अनेकों तीर्थ हैं। वामनपुराणके अनुसार विश्वामित्रको यहीं ब्राह्मण्यका लाभ हुआ था।

गजनी तथा गोरीने थानेसरको लूटा। उनके परवर्ती मुस्लिम अधिकारी यहाँ आनेवाले तीर्थयात्रियोंका चालान करने लगे। अन्तमें सिक्खोंके सहारे यहाँ पुनः तीर्थोंका उद्धार होना आरम्भ हुआ। यहाँ मधुस्रवा, घृतस्रवा, ययाति, बृहस्पति तथा पृथ्वीश्वरादि अनेक तीर्थ हैं।

पेहेवा (पृथूदक)

महाराज वेनके पुत्र महाराज पृथुके नामसे ही यह तीर्थ-स्थान 'पृथूदक' के नामसे विख्यात हुआ। पृथूदक अर्थात् 'पृथुका सरोवर'। पृथूदकका ही 'पेहवा' हो गया है। हजारों यात्री प्रतिवर्ष पितृपक्षमें यहाँ श्राद्ध आदि करनेके लिये आते हैं, उस समय यहाँ बड़ा मेला लगता है। यहाँके प्रसिद्ध तथा प्राचीन मन्दिर एवं दर्शनीय स्थान निम्नलिखित हैं—

१. पृथ्वीश्वर महादेव—यह प्राचीन शिव-मन्दिर है, जिसका निर्माण सर्वप्रथम महाराज पृथुने करवाया था, परन्तु मुसल्मानी राज्यमें यह स्थान भी विध्वंस कर दिया गया। मरहठोंने इस देवालयका पुनः निर्माण करवाया तथा इसका जीर्णोद्धार महाराजा रणजीतसिंहजीने करवाया था।

२. **सरस्वतीदेवी**—यह सरस्वती देवीका छोटा-सा मन्दिर सरस्वती नदीके घाटपर ही बना हुआ है। इसका निर्माण भी मरहठोंने करवाया था। मन्दिरके द्वारपर चित्रकारी किया हुआ एक दरवाजा लगा हुआ है, जो एक स्थानसे खुदाईके समय निकला था।

३. **स्वामिकार्तिक**—पृथ्वीश्वर महादेवके मन्दिरके समीप ही अत्यन्त प्राचीन मन्दिर स्वामिकार्त्तिकका है। यात्री यहाँ श्रद्धासे तेल एवं सिन्दूर चढ़ाते हैं।

४. **चतुर्मुख महादेव**—यह शिव-मन्दिर बाबा श्रवणनाथके डेरेमें है। प्राचीन तथा विशाल मन्दिर है। शिवलिङ्ग असली कसीटीका बना हुआ है। उसमें चार मुख बने हुए हैं तथा पास ही अष्टधातुकी बनी हुई हनुमान्‌जीकी विशाल मूर्ति है, जो दर्शन करने योग्य है।

सरस्वती नदीके तटपर पवित्र घाट

१. **पृथूदक**—इस स्थानपर महाराज पृथु तप करके अपने परमतत्त्वमें लीन हुए थे। इससे यह स्थान पृथूदक कहलाया तथा शहर भी इसी नामसे विख्यात हुआ। यहींपर ऋषि उत्तङ्क, मनु इत्यादिने भी तप किया था।

२. **ब्रह्मयोनि**—यह तीर्थ-स्थान पृथूदक-तीर्थके साथ जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि ब्रह्माजीने सर्वप्रथम सृष्टिकी रचना इसी स्थानपर की थी। यहींपर तपस्या करके ऋषि विश्वामित्र, देवापि, सिन्धु आर्ष्टिषेण तथा अग्निने मोक्ष प्राप्त किया था; इस तीर्थका नाम इन ऋषियोंके नामसे भी है। कहा जाता है कि विश्वामित्रने यहीं ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था। यह तीर्थ-स्थान सरस्वती नदीके किनारे शहरसे लगभग एक फर्लांग दूर है।

३. **अवकीर्णतीर्थ**—मानव कल्याणके लिये यह तीर्थ ब्रह्माजीने बनाया था। ऋषि बकदाल्भ्यने यहाँ जप, तप तथा यज्ञ किये थे। यहाँपर यज्ञोपवीत-संस्कार कराया जाता है। यात्री इस स्थानपर स्नान करके ब्रह्माजीका पूजन करते हैं। इसके समीप ही पृथ्वीश्वर महादेवका मन्दिर है।

४. **बृहस्पतितीर्थ**—अवकीर्ण-तीर्थके साथ ही जुड़ा हुआ यह तीर्थ-स्थान है। यहाँपर देवताओंके गुरु बृहस्पतिजीने यज्ञोंका आयोजन किया था। यहाँ स्नान करके बृहस्पतिजीका पूजन किया जाता है।

५. **पापान्तकतीर्थ**—यह तीर्थ-स्थान बृहस्पतितीर्थके घाटोंके समीप ही है। यहाँपर स्नान करनेसे हत्यादोष दूर हो जाता है।

६. **ययातितीर्थ**—इस स्थानपर सरस्वती नदीके पावन तटपर महाराजा ययातिने यज्ञ किये थे तथा राजाकी कामनाके अनुसार ही सरस्वती नदीने दुग्ध, घृत एवं मधुको बहाया था। इसी कारण वे घाट भी दुग्धस्रवा तथा मधुस्रवाके नामसे प्रसिद्ध हैं। यहाँपर यात्री स्नान करके पितरोंके मोक्षके निमित्त शास्त्रानुसार धार्मिक कार्य पूर्ण करते हैं। इस स्थानपर सरस्वती नदीके दोनों तटोंपर पक्के घाट बने हुए हैं। चैत्र बदी १४ को इस तीर्थपर मेला लगता है।

७. **रामतीर्थ**—सरस्वती नदीके तटपर यह परशुरामजीके यज्ञका स्थान है। लोग यहाँ परशुरामजी तथा उनके माता-पिताका पूजन करते हैं।

८. **विश्वामित्रतीर्थ**—यहाँपर ऋषि विश्वामित्रका आश्रम था। यह उनके तपका स्थान है। अब यहाँ सिर्फ एक ऊँचा टीला है तथा कच्चा घाट है।

९. **वशिष्ठ-प्राची**—यहाँ महर्षि वशिष्ठका आश्रम था तथा उन्होंने इसी स्थानपर यज्ञोंका आयोजन किया था। इस स्थानपर तीन मन्दिर भगवान् शिवके हैं, जो अब सुनसान-से ही पड़े हैं तथा सरस्वती नदीके तटपर बने हुए घाट भी अच्छी दशामें नहीं हैं। यहाँपर दो शिव-मन्दिरोंके मध्यमें एक गुफा बनी हुई है। जिसे वशिष्ठ-गुहा कहते हैं तथा एक कूप है, जहाँ यात्री अपने स्वर्गवासी सम्बन्धियोंके कल्याणके लिये धार्मिक कृत्य करते हैं।

१०. **फल्गुतीर्थ या सोमतीर्थ**—यहींपर प्राचीन पवित्र फलोंका वन था, जो कुरुक्षेत्रके सात पवित्र वनोंमें गिना जाता था। यहाँ एक ग्राम भी है, जो फरलके नामसे प्रसिद्ध है। प्राचीन समयमें दृषद्वती नदी इसी स्थानसे होकर बहती थी। पवित्र सरोवर अच्छी दशामें है। यहाँपर पितृ-पक्षमें तथा सोमवती अमावास्याके दिन बहुत बड़ा मेला लगता है। कहा जाता है कि उस समय यहाँ श्राद्ध, तर्पण तथा पिण्डदान करनेसे गयाके समान ही फल प्राप्त होता है। पाण्डवोंने यहीं आकर श्राद्ध किया था।

इसके समीप ही निम्नलिखित तीर्थ हैं, जहाँ यात्री दर्शन तथा धार्मिक कार्य करते एवं पुण्य-लाभ करते हैं—

(१) पाणीश्वर, (२) सूर्य-तीर्थ, (३) शुक्रतीर्थ।

636 Tirthank_Section_6_2_Front

कैथल

पूर्वी पंजाबका करनाल जिला अत्यन्त ही विस्तृत है, कैथल इसीका एक सब-डिवीजन है। पुराणोंमें इसका 'कपिस्थल' के नामसे वर्णन किया गया है—कपिस्थल अर्थात् बंदरोंका स्थान। यह भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके परम भक्त श्रीमहावीर हनुमान्‌जीकी भूमि है। महाभारतके ग्रन्थमें भी इस स्थानका वर्णन मिलता है। महाराज युधिष्ठिरने युद्धको रोकने तथा शान्ति-स्थापनकी इच्छासे समझौता करते हुए दुर्योधनसे जो पाँच गाँव माँगे थे, उनमें कपिस्थलका नाम भी था।

यह कुरुक्षेत्र रेलवे-जंकशनसे २६ मील उत्तर-पश्चिममें नरवाना ब्रांच लाइनका एक स्टेशन है। एक पक्की सड़क भी यहाँसे करनाल जाती है। करनालसे मोटर-बसें इस तीर्थ-स्थानको जाती हैं। एक कच्ची सड़क रेलवे-लाइनके साथ-साथ कुरुक्षेत्रसे भी जाती है, परन्तु उसपर यातायातका अच्छा प्रबन्ध नहीं है। कुरुक्षेत्रसे जानेवाले यात्री रेलसे ही इस स्थानपर जा सकते हैं।

शहरके चारों ओर ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थान बहुसंख्यामें हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है—

१. केदार-तीर्थ या वृद्धकेदार-तीर्थ—शहरके समीप ही यह एक विस्तृत सरोवर है तथा इसके तटपर सात शिवालय हैं। चैत्र शुक्ला १४ को यहाँ मेला लगता है।

२. चण्डीस्थान—यहाँपर चण्डीदेवीका मन्दिर है।

३. सर्वदेवतीर्थ—इसे सकलसर भी कहते हैं। यहाँपर स्नान, ध्यान तथा दान करनेसे सभी देवता प्रसन्न होते हैं।

४. विष्णुतीर्थ—इसे इन्द्र-तीर्थ भी कहते हैं। यहाँ स्नान करके इन्द्र तथा भगवान् विष्णुका पूजन किया जाता है।

५. टिंडी-तीर्थ—यह शब्द 'नन्दी' का अपभ्रंश है। नन्दी भगवान् शिवके प्रधान गणोंमें एक हैं, जिनका निवासस्थान यहीं था।

६. नवग्रहकुण्ड—यहाँ यात्री स्नान करके नवग्रहोंका विधिपूर्वक पूजन करते हैं, इससे ग्रहोंकी शान्ति होती है। ये कुण्ड अब छोटे-छोटे सरोवरोंके रूपमें हैं तथा एक दूसरेसे थोड़ी-थोड़ी दूरीपर हैं।

७. कुलोत्तारण-तीर्थ—यह तीर्थ कैथल शहरसे तीन मील उत्तरमें है। यहाँ एक गाँव भी है, जो इस तीर्थके नामसे ही कुलोत्तारण कहलाता है। पवित्र सरोवरके एक ओर पक्के घाट हैं तथा भगवान् शिवका मन्दिर है।

८. सूरजकुण्ड या सरकतीर्थ—कैथलसे तीन मील पूर्व शेरगढ़ ग्राममें यह तीर्थस्थान है। यहाँ पवित्र सरोवर तथा मन्दिर बना हुआ है। कहा जाता है कि स्वामिकार्तिकका जन्म इसी स्थानपर सरकंडोंके वनमें हुआ था। यात्री यहाँ स्नान करके भगवान् शिव तथा उनके पुत्र स्वामिकार्तिकका पूजन करते हैं।

९. धनजन्म—कैथलसे दो मील पश्चिममें दूधखेड़ी ग्राम है, जहाँ यह तीर्थस्थान है। कहा जाता है, यह ऋषि नारदके यज्ञका स्थान है। उन्हें यहीं भगवान् विष्णु तथा शिवजीके दर्शन हुए थे, जिससे उन्होंने अपना जन्म धन्य माना था; इसीसे यह तीर्थस्थान 'धनजन्म' कहलाता है। यात्री यहाँ स्नान करके भगवान् विष्णु तथा शिवका पूजन करते हैं।

१०. मानस-तीर्थ—यह तीर्थस्थान कैथलसे चार मील पश्चिममें मानस ग्राममें है। इसे मानसरोवर भी कहते हैं। यात्री यहाँ पवित्र तीर्थमें स्नान करते हैं एवं दान करके पुण्य-लाभ करते हैं।

११. आपगा—यह तीर्थस्थान एक पवित्र सरोवरके रूपमें कैथलसे दो मील पश्चिमकी ओर गाधड़ी ग्राममें है। कहा जाता है कि कुरुक्षेत्रकी सात पवित्र नदियोंमें गिनी जानेवाली आपगा नदी यहींसे होकर बहती थी। श्रावण कृष्णा १४ को यहाँ बड़ा मेला लगता है और उस दिन स्नान-दानसे मोक्ष प्राप्त होता है।

१२. सप्तऋषिकुण्ड और ब्रह्मडबर—यह तीर्थ-स्थान कैथलसे लगभग डेढ़ मील दक्षिण-पश्चिमकी ओर शिलखेड़ी ग्राममें है। इस स्थानपर ब्रह्माजी तथा सप्तर्षियोंने यज्ञ किये थे। यात्री यहाँ स्नान करके ब्रह्माजी तथा सप्त-ऋषियोंका पूजन करते हैं।

१३. वासुकि यक्ष—कैथलसे आठ मील पश्चिममें भरवाना ब्रांच रेलवे-लाइनपर सजूमा एक स्टेशन है, इस

636 Tirthank_Section_6_2_Back

स्टेशनके समीप बहर उर्फ बराहग्राममें वासुकि यक्षका मन्दिर है। यहाँ कुरुक्षेत्रकी पश्चिमी सीमा समाप्त होती है, यात्री यहाँ स्नान करके निर्विघ्न अपनी यात्राकी पूर्णताके लिये वासुकि यक्षका पूजन करते हैं।

जींदके समीपवर्ती तीर्थ

निम्नलिखित तीर्थ-स्थान पानीपतसे जींद जानेवाली छोटी लाइनपर स्थित रेलवे-स्टेशनोंपर उतरकर आसानीसे देखे जा सकते हैं—

१. रूपवती-तीर्थ—यह तीर्थ-स्थान आसन ग्राममें है, जो रेलवे-स्टेशन भी है। यह ऋषि च्यवनकी तपोभूमि थी, अश्विनीकुमारोंकी कृपासे ऋषिने यहीं नवयौवन प्राप्त किया था। अश्विनीकुमारका अपभ्रंश ही 'आसन' हो गया है। यात्री स्नान तथा पूजा-पाठ करके स्वास्थ्य तथा सुखका लाभ प्राप्त करते हैं।

२. अरन्तुक यक्ष—बहादुरपुर ग्रामके समीप ही सैनिक (सीसग्राम) में यह मन्दिर है। यात्री इस स्थानपर स्नान करके अरन्तुक यक्षका पूजन करते हैं। यहाँपर कुरुक्षेत्रकी सीमा समाप्त हो जाती है।

३. वराह-तीर्थ—जींद स्टेशनपर उतरकर यात्री विरही कलाँ ग्राममें जाते हैं, जो जींदसे थोड़ी दूर है। यहींपर वराह-तीर्थ है तथा इसके आस-पास अन्य तीर्थ भी हैं। भगवान् विष्णु वराहका अवतार लेकर यहाँ प्रकट हुए थे तथा पृथ्वीका उद्धार किया था। यात्री यहाँ स्नान करके भगवान् विष्णुका पूजन करते हैं।

४. पिण्ड-तारकतीर्थ—यह तीर्थ-स्थान पिंडारामें है, जो रेलवे-स्टेशन भी है। यह बहुत बड़ा पवित्र सरोवर है, जिसपर पक्के घाट और मन्दिर हैं तथा एक धर्मशाला तीर्थके समीप ही है। सोमवती अमावस्याको यहाँ बड़ा मेला लगता है। यात्री इसमें स्नान करके पितृ-तर्पण करते हैं।

५. वराह-वन—यह तीर्थ-स्थान एक जंगल है, जो पिंडाराके नामसे प्रसिद्ध है। इस वनमें बहुत-से तीर्थ-स्थान हैं तथा एक मन्दिर 'अग्नीदेवी' का है। श्रावणके महीनेमें यात्री इसकी परिक्रमा करते हैं तथा भगवान् नृसिंहका पूजन करते हैं।

६. पुष्कर-तीर्थ—यह तीर्थ-स्थान पिंडारासे तीन मीलपर है। यह परशुरामजीके पिता जमदग्नि ऋषिकी तपोभूमि है। यहाँ एक बड़ा सरोवर है, जिसपर पक्के घाट एवं भगवान् शिवका मन्दिर बना हुआ है।

७. रामह्रद—जींद रेलवे-स्टेशनके समीप ही यह एक पवित्र एवं प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। परशुरामजीने यहाँ यज्ञ किये थे। पक्के घाट, मन्दिर तथा धर्मशालाएँ इसके तटपर बनी हुई हैं। इसके समीप ही अन्य दो अति पवित्र तीर्थ-स्थान हैं।

कपील यक्ष—यह यक्षका मन्दिर कुरुक्षेत्रकी दक्षिण-पश्चिम सीमापर है। यात्री यहाँ कपील यक्षका पूजन करते हैं।

संनिहित—थानेसरके संनिहित तीर्थकी भाँति ही इस तीर्थका भी बड़ा माहात्म्य है। सूर्य-ग्रहण एवं चन्द्र-ग्रहणपर यहाँ बड़ा मेला लगता है तथा वैशाख एवं कार्तिक मासमें भी मेला होता है। यात्री यहाँपर तीर्थ-स्थानोंमें स्नान करते हैं एवं परशुरामजी, उनके पिता तथा माताका पूजन करते हैं।

८. भूतेश्वर महादेव—यह जींद शहरमें ही है। जींदके महाराजा रघुवीरसिंहजीने इसका जीर्णोद्धार करवाया था तथा पवित्र सरोवरके मध्यमें भगवान् शिवका मन्दिर बनवा दिया था। सरोवरके तटपर अन्य मन्दिर तथा धर्मशालाएँ भी हैं। सूर्यकुण्डपर जयन्तीदेवीका मन्दिर है, कहते हैं कि 'जयन्ती' का अपभ्रंश जींद हो गया है।

इसके समीप ही निम्नलिखित तीर्थ-स्थान हैं—

१-सोमनाथ, २-ज्वाला-माला, ३-सूर्य-कुण्ड, ४-शंकर-तीर्थ, ५-असिधारा, ६-एकवंश-तीर्थ उर्फ ढूँढा।

९. सर्प-दमन—यह तीर्थ-स्थान सफीदोंमें है, जो रेलवे स्टेशन भी है। कहा जाता है महाराजा जनमेजयने यहाँ सर्पदमन यज्ञ किया था, यह तीर्थ-स्थान सर्पकुण्ड भी कहलाता है।*

* 'कुरुक्षेत्र' नामक पुस्तिकासे।

दिल्ली

यह भारतकी राजधानीका महानगर है। यहाँ अनेकों धर्मशालाएँ हैं और बहुत-से मन्दिर हैं। प्राचीन मन्दिरोंमें कुतुबमीनारके पास योगमाया-मन्दिर है। पास ही पाण्डवोंके किलेका ध्वंसावशेष है। पाण्डवोंकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ इसी भूमिपर बसी थी। इसी ऐतिहासिक भूमिपर कई साम्राज्योंका उत्थान एवं पतन हुआ है। योगमाया-मन्दिरमें कोई मूर्ति न होकर केवल योनि-पीठ है। कहा जाता है कि ये सम्राट् पृथ्वीराजकी आराध्य देवी हैं। यहाँसे लगभग सात मीलपर ओखला गाँवमें एक टीलेपर काली-मन्दिर है। नयी दिल्लीमें बिड़लामन्दिर (श्रीलक्ष्मी-नारायणका मन्दिर) नवीन मन्दिरोंमें बहुत ही उत्तम तथा दर्शनीय माना जाता है। नगरमें और भी कई मन्दिर हैं।

दिल्लीके पुराने किलेकी—जो यमुना-तटपर अवस्थित है—पूर्वी दीवारके निकट झाड़ियोंमें एक छोटा भैरव-मन्दिर है। कहा जाता है कि यह मन्दिर महाभारतकालीन है। महाभारतयुद्धसे पूर्व भीमसेन काशीसे यह मूर्ति ले आये थे और युधिष्ठिरने उनका पूजन किया। दीर्घकालव्यापी मुसल्मानी राज्यमें भी इस मूर्तिका सुरक्षित रहना अद्भुत बात है। भैरवाष्टमीपर यहाँ विशेष समारोह होता है।

खुरजा

(लेखक—श्रीगनपतरायजी पोद्दार)

उत्तर रेलवेपर खुरजा-जंकशन स्टेशन है। यह एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है। स्टेशनसे नगर ४ मील है। पक्की सड़कका मार्ग है। सवारियाँ मिलती हैं। नगरमें दाऊजीका प्रसिद्ध मन्दिर है। मन्दिर तो यह नवीन है, क्योंकि प्राचीन मन्दिर जीर्ण हो चुका था, किंतु मूर्ति प्राचीन है। इसके अतिरिक्त नगरमें राधाकृष्ण, श्रीराम, गङ्गाजी, हनुमान्जी, लक्ष्मीनारायण आदि अनेक मन्दिर है। नगरमें कई धर्मशालाएँ हैं। एक धर्मशाला स्टेशनपर भी है।

जाबरा—खुरजासे २० मील दक्षिण यमुनातटपर यह गाँव है। खुरजासे मोटर-बस चलती है। कहा जाता है कि यहाँ जावित्र ऋषिका आश्रम था। उनका स्मारक-मन्दिर बना है।

मेरठ

दिल्लीसे ४५ मीलपर यह उत्तर भारतका प्रसिद्ध नगर है। नगर बहुत बड़ा है। यहाँ धर्मशालाएँ कई हैं। कहा जाता है कि द्वापरमें यहीं खाण्डववन था। उस समय यहाँ सूर्यतीर्थ था। आज भी मेरठ नगरके बाहर सूर्यकुण्ड नामक विस्तृत सरोवर है, जो प्रायः सूखा पड़ा रहता है। सरोवरके एक ओर एक घेरेमें मनोहरनाथ महादेवका मन्दिर है। उसके पास ही काली-मन्दिर है। नगरमें बालेश्वरनाथ महादेवका मन्दिर दर्शनीय है।

कहा जाता है कि खाण्डववन बहुत विस्तृत था। वनके उस भागमें, जहाँ मेरठ बसा हुआ है, दानव-विश्वकर्मा मय रहा करता था। मयराष्ट्रका बिगड़ा हुआ रूप मेरठ है।

मेरठ जिलेके दो तीर्थ

(लेखक—श्रीबहादुरसिंहजी 'भगत')

बालौनी—मेरठसे १५ मील दूर पश्चिम हर नदीके तटपर यह गाँव है। प्राचीन कालमें यह कुशस्थली कहा जाता था। इसका विस्तार हर नदीसे यमुनातक था। यहाँ महर्षि वाल्मीकिका आश्रम था। वाल्मीकिकुटी यहाँ आज भी है। मैत्रेय ऋषिकी भी यह तपःस्थली है।

यहाँसे १ मील उत्तरमें महर्षि जमदग्निका आश्रम है।

यही परशुरामजीकी जन्मभूमि है। यहाँसे दो मील उत्तर परशुरामेश्वर शिवलिङ्ग है। इसी स्थानके सामने नदीके दूसरे तटपर परशुरामजीने सहस्त्रार्जुनको युद्धमें मारा था। हर नदीको आजक हिंडन कहते हैं। यह हर नदी शिवालकसे निकलती है। इसे पञ्चतीर्थी भी कहते हैं; क्योंकि इसमें पाँच छोटी नदियोंका जल आता है। वाल्मीकि-आश्रममें मार्गशीर्ष-शुक्ला ३ को मेला लगता है।

वाल्मीकि-मन्दिर यहाँका मुख्य मन्दिर है। इसमें श्रीराम, लक्ष्मण, सीता, भरत, शत्रुघ्न तथा महर्षि वाल्मीकिकी मूर्तियाँ हैं। इनके अतिरिक्त दो शिवमन्दिर तथा एक हनुमान्‌जीका मन्दिर भी है। मेरठसे बालौनीतक बस-सर्विस चलती है।

गगौल—मेरठसे दक्षिण ४ मील दूर यह गाँव है। यहाँ ताँगे-रिक्शेसे जा सकते हैं। यहाँ एक सरोवर है। कहा जाता है कि महर्षि विश्वामित्रने यहाँ यज्ञ किया था। यहाँका सरोवर ही यज्ञकुण्ड कहा जाता है। सरोवरके किनारे विश्वामित्रजीका मन्दिर है। सरोवरमें स्नान करके यात्री पिण्डदान करते हैं। गया-श्राद्धके समान ही यहाँ पिण्डदानका फल बताया जाता है।

पिलखुआ

(लेखक—भक्त श्रीरामशरणदासजी)

देहली-मुरादाबाद लाइनपर पिलखुआ स्टेशन है। यहाँ प्राचीन तीर्थ कनकताल है, जिसे अब कंखली कहते हैं। यह ताल अब तो नाम मात्रको ही रह गया है। तीर्थ लुप्तप्राय है। तालके किनारे कंखलेश्वर महादेवका मन्दिर है।

पिलखुआके पास ही संत बाबा आत्मारामजीकी समाधि तथा कुटिया है। आसपासके लोग इस समाधिका पूजन करते हैं।

गाजियाबाद

देहली मुरादाबाद लाइनपर ही गाजियाबाद स्टेशन है। यहाँ दूधेश्वरनाथका प्रसिद्ध मन्दिर है। गाजियाबादके पास 'हरनद' नामकी छोटी नदी बहती है। गाजियाबादसे ८ मीलपर विसरग गाँव है। कहा जाता है कि वहाँ विश्रवामुनिका आश्रम था। उन्हीं विश्रवामुनिके पुत्र कुबेर तथा रावण-कुम्भकर्ण हुए। विश्रवामुनि तथा रावणद्वारा पूजित लिङ्ग दूधेश्वरनाथका माना जाता है। यह शिवलिङ्ग यहाँ पृथ्वी खोदनेपर मिला था।

मन्दिरके पास ही एक कूप है, जो मूर्ति मिलनेपर पृथ्वी खोदते समय ही व्यक्त हुआ था। छत्रपति शिवाजी महाराज जब दिल्ली आये थे, तब यहाँ भी आये थे और यह मन्दिर उन्हींने बनवाया था। उससे पूर्व मन्दिर अत्यन्त जीर्ण दशामें था।

मन्दिरके पास ही बाबा गरीबगिरिकी समाधि है। उसकी भी इधर बहुत मान्यता है।

हस्तिनापुर

मेरठ नगरसे २२ मीलपर यह स्थान है। मेरठसे २१ मीलपर खतौली स्टेशन है, वहाँसे हस्तिनापुरके लिये मार्ग जाता है। सड़कके मार्गसे जानेपर मेरठसे नवातेतक पक्की सड़क है, उसके आगे कच्ची सड़क जाती है।

हस्तिनापुर पाण्डवोंकी राजधानी थी। अब तो गङ्गाजी इस स्थानसे कई मील दूर हट गयी हैं। गङ्गाकी यहाँ जो पुरानी धारा है, उसे 'बेड़' या बूढ़ी गङ्गा कहते हैं।

कार्तिकी पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है। प्राचीन खँड़हर यहाँ आसपास हैं।

जैनतीर्थ

आदितीर्थङ्कर ऋषभदेवजीको राजा श्रेयांसने यहाँ इक्षुरसका दान किया था, इसलिये यह दानतीर्थ कहा जाता है। यहाँ शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अर्हन्नाथ और अर्हन्नाथ नामक तीन तीर्थङ्करोंके गर्भवास, जन्म, तप और ज्ञान-कल्याणक हुए हैं। इसलिये यह अतिशय क्षेत्र है। श्रीमल्लिनाथजीका समवसरण (समारोह) भी यहाँ हुआ था।

यहाँ तीनों तीर्थङ्करोंके चरणचिह्न हैं। यहाँ जैनमन्दिर तथा धर्मशाला है। यहाँसे पास ही भसूमा ग्राममें प्राचीन जैन प्रतिबिम्ब (प्रतिमाएँ) हैं।

रावलीघाट

मुजफ्फरनगरसे मतावलीघाटतक पक्की सड़क गयी है। मतावलीघाटके ठीक सामने गङ्गाके दूसरे तटपर रावलीघाट है। विजनौरसे यहाँतक पक्की सड़क आयी है। यहाँ मालती नदी गङ्गाजीमें मिलती है। कहा जाता है यहाँ विश्वामित्रजीका आश्रम था और सम्राट् भरतकी पत्नी शकुन्तलाका जन्म यहीं हुआ था।

गंज

बिजनौरसे ८ मील दूर गङ्गा-किनारे दारानगर कस्बा है। वहाँसे आधमीलपर गंज नामक स्थान है। यहाँ कार्तिक पूर्णिमाको मेला लगता है। दारानगरमें विदुर-कुटी है। महाभारत-युद्धके समय पाण्डवोंने अपनी स्त्रियोंका शिबिर यहीं रखा था। विदुरकुटीके दर्शनार्थ श्रावण महीनेमें यात्री आते हैं। यहाँ दो धर्मशालाएँ तथा ठाकुरद्वारे भी हैं। कार्तिककी सप्तमीसे यहाँ गङ्गाजीकी रेतपर मेला लगता है, जो कई दिन रहता है।

सीतावनी

दारानगरसे ८ मील दक्षिण गङ्गा-किनारे यह स्थान है। यहाँ एक शिवमन्दिर है। पास ही एक सीता-कुण्ड है।

गढ़मुक्तेश्वर

मेरठसे २६ मील दक्षिण पूर्व गङ्गाके दाहिने तटपर यह नगर है। मेरठसे यहाँतक मोटर-बसें जाती हैं। प्राचीन कालमें विस्तृत हस्तिनापुर नगरका यह एक मुहल्ला था। यहाँका मुख्य मन्दिर मुक्तेश्वर-शिवमन्दिर है। यह विशाल मन्दिर गङ्गातटसे १ मील दूर है। इस मन्दिरके भीतर ही नृग-कूप है, जिसके जलसे स्नानका माहात्म्य माना जाता है। मन्दिरके पास ही वनमें झारखण्डेश्वर नामक प्राचीन शिवलिङ्ग है।

इनके अतिरिक्त श्रीलक्ष्मीनारायण-मन्दिर, श्रीकृष्णका पंचायती मन्दिर, श्रीराममन्दिर, दाऊजीका मन्दिर, चन्द्रमाके क्षयरोगके निवारणका स्थान, दुर्गाजीका मन्दिर, नृसिंहमन्दिर और गौरीशंकर-मन्दिर बाजारमें हैं। हस्तिनापुरकी ओर कल्याणेश्वर महादेवका मन्दिर है, जहाँ परशुरामजीद्वारा स्थापित मूर्ति है। इनके अतिरिक्त गङ्गेश्वर, भूतेश्वर एवं आशुतोषकी प्राचीन मूर्तियाँ हैं। लगभग ८० सतीस्तम्भ यहाँ हैं, जो अब भग्नावशेषरूपमें हैं। गङ्गाजीका मन्दिर सबसे प्राचीन है। गङ्गाजीके तीन और मन्दिर हैं। यहाँ कार्तिकी पूर्णिमाको मेला लगता है।

ब्रह्मतीर्थ

(लेखक—श्रीज्ञानवान काश्यप काव्यभूषण, साहित्यरत्न)

उत्तर रेलवेकी मुरादाबाद-दिल्ली लाइनमें मुरादाबादसे ३३ मीलपर गजरौला जंकशन है। वहाँसे ५ मील दूर यह स्थान है। पक्की सड़क है।

यहाँ संत श्रीब्रह्मावतजीकी समाधि है। ये महात्मा सम्राट् अकबरके समय हुए थे। उनका स्थापित किया आश्रम यहाँ है। शिवरात्रिको मेला लगता है। पासमें ब्रह्मतीर्थ नाम सरोवर है।

हल्दौर

(लेखक—श्रीचन्द्रपालसिंह टेलर-मास्टर)

मुरादाबाद-नजीबाबाद लाइनमें बिजनौरसे ११ मीलपर हल्दौर स्टेशन है। यहाँ बाबा मनसादासका प्राचीन मन्दिर है। बाबा मनसादास एक सिद्ध संत हो गये हैं। उनकी समाधि इस मन्दिरमें है। बहुत-से लोग बच्चोंका मुण्डन-संस्कार यहाँ कराते हैं।

हरदोई जिलेके तीन तीर्थ

(लेखक—श्रीशिवरतनजी शर्मा टाटधारी)

ब्रह्मावर्त—हरदोई जिलेकी बिलग्राम तहसीलके साँडी कस्बेसे दो मील ब्रह्मावर्त सरोवर है। इसमें चारों ओर पक्के घाट हैं। गङ्गा-दशहरा और जन्माष्टमीपर मेला लगता है। पासमें ही सूर्यकुण्ड है।

सुनासीरनाथ—कस्बा बिलग्रामसे दक्षिण दो मीलपर जंगलमें यह प्राचीन मन्दिर है। कहा जाता है कि इन्द्रने यहाँ शिवार्चन किया था। फाल्गुन तथा श्रावणमें मेला लगता है। मल्लाँवाँ स्टेशनसे मार्ग गया है।

सङ्कटहर—गोकुलबेहटा स्टेशनसे तीन मीलपर मैदानमें सङ्कटहर महादेवका मन्दिर है। यहाँ भी फाल्गुन तथा श्रावणमें मेला लगता है। हरदोईसे मोटर-बस भी चलती है।

उत्तर प्रदेशके गङ्गातटवर्ती कुछ तीर्थ

पूठ

गढ़मुक्तेश्वरसे ८ मील दक्षिण गङ्गाके दाहिने तटपर पूठ गाँव है। इसका प्राचीन नाम पुष्पवती था। हस्तिनापुर-नरेशोंका यह क्रीड़ोद्यान था। यहाँ श्रीरघुनाथजी, श्रीराधाकृष्ण तथा महाकालेश्वरके मन्दिर गङ्गा-तटपर हैं। सोमवती अमावस्याको मेला लगता है।

पूठसे १ मीलपर शंकरटीला है। यह स्थान जंगलसे घिरा है। यहाँ एक शिवमन्दिर है।

माडू

पूठसे आठ मील दूर माडू गाँव है। कहा जाता है कि यहाँ माण्डव्य ऋषिका आश्रम था। यहाँ माण्डव्य ऋषिकी मूर्ति तथा माण्डकेश्वर महादेवका मन्दिर है।

अहार

माडूसे ५ मील अहार नामक एक छोटा नगर है। यहाँ भैरव, गणेश, कञ्चना माता, हनुमान्जी, भूतेश्वर, नागेश्वर तथा अम्बिकेश्वरके मन्दिर हैं। कहा जाता है कि भगवान्ने वाराहरूप धारण करके यहाँ असुरोंका दमन किया था। सम्राट् परीक्षित्के पुत्र जनमेजयने यहीं नागयज्ञ किया था। शिवरात्रि और गङ्गा-दशहरापर यहाँ मेला लगता है।

यहाँसे दो मीलपर अवान्तिकादेवीका मन्दिर है। वहाँ चार धर्मशालाएँ हैं। एक प्राचीन शिवमन्दिर है। चैत्र मासमें रामनवमीपर मेला लगता है।

अनूपशहर

यह नगर अहारसे ७ मील दक्षिण गङ्गा-किनारे है। उत्तरी रेलवेकी खुर्जा-मेरठ सिटी लाइनपर बुलंदशहर स्टेशन है। बुलंदशहरसे अनूपशहरतक मोटर-बस चलती है।

यहाँ नगरके प्रारम्भमें ही नर्वदेश्वर शिवमन्दिर है। श्रीगिरिधारीजीका मन्दिर, चामुण्डादेवीका मन्दिर, विहारीजीका मन्दिर और हनुमान्जीका प्राचीन मन्दिर हैं। यहाँ गङ्गाकिनारे अनेक साधु-आश्रम हैं। यात्रियोंके ठहरनेके लिये बारह-तेरह धर्मशालाएँ हैं।

अनूपशहरसे गङ्गा पार करके अथवा अलीगढ़-बरेली रेलवे लाइनके बबराला स्टेशनपर उतरनेसे गवाँ ग्रामका मार्ग मिलता है। गवाँसे एक मीलपर हरिबाबाका बाँध है। बाँधपर कीर्तनभवन, रामभवन और सत्सङ्गभवन हैं।

कर्णवास

अनूपशहरसे ८ मील दक्षिण कर्णवास क्षेत्र है। अलीगढ़-बरेली रेलवे-लाइनके राजघाट नरौरा स्टेशनपर उतरकर कर्णवास जाया जा सकता है।

कर्णवास प्राचीन तीर्थ है और दीर्घकालसे महात्माओंकी निवास-भूमि रहा है। इसका पुराना नाम भृगुक्षेत्र है। महर्षि भृगुने यहाँ निवास किया था। भगवती दुर्गाने शुम्भ-निशुम्भ राक्षसोंको मारनेके पश्चात् यहाँ बैठकर विश्राम किया था। देवीजीका मन्दिर यहाँ कल्याणीदेवीके नामसे प्रसिद्ध है। कुन्तीद्वारा बहाये गये कर्णकी मञ्जूषा (पेटी) यहीं गङ्गासे निकाली गयी थी। कर्णने इसी क्षेत्रमें तपस्या की थी। यहाँ एक कर्णशिला है, जिसपर बैठकर वे अतिथियोंको दान देते थे। कर्णके नामपर ही इस क्षेत्रका नाम कर्णवास हो गया। भगवान् बुद्धने भी यहाँ तपस्या की थी। कर्णवासके समीप बुधौ ही वह स्थान कहा जाता है।

कर्णवासमें कई धर्मशालाएँ हैं। साधुओंके लिये अन्नसत्र भी हैं। यहाँ गङ्गाकिनारे प्रायः संन्यासी, साधु निवास करते हैं। प्रसिद्ध संत विद्याधरजीकी यह जन्मभूमि है। दूसरे अनेक संतोंकी यह साधन-भूमि रही है। आर्यसमाजके प्रवर्तक स्वामी दयानन्दजी सरस्वतीने भी यहाँ साधना की थी। चैत्र और आश्विनके नवरात्रोंमें यहाँ मेला लगता है। गङ्गा-तटपर यहाँ भूतेश्वर महादेवका मन्दिर है। कार्तिक पूर्णिमा और गङ्गादशहरेपर स्नानार्थियोंकी पर्याप्त भीड़ होती है।

राजघाट

कर्णवाससे ३ मीलपर राजघाट स्थान है। बरेली-अलीगढ़ रेलवे-लाइनका राजघाट नरौरा स्टेशन यहीं है। यहाँ गङ्गाजीका मन्दिर है। प्रत्येक अमावस्या एवं पूर्णिमाको मेला लगता है। राजघाटके सामने गङ्गापार नवराला स्थान है। वहाँ कई धर्मशालाएँ तथा मन्दिर हैं।

विहारघाट

राजघाटसे एक मीलपर विहारघाट है। इसे नलक्षेत्र भी कहते हैं। यह राजा नलके स्नान-दानादिका स्थान रहा है। यहाँ वानप्रस्थाश्रम पर्याप्त हैं। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं। गङ्गा-किनारे साधुओंकी कुटियाँ हैं। श्रीबिहारीजीका मन्दिर और गायत्रीदेवीका मन्दिर है। यहाँसे दो मीलपर नरवर स्थानमें प्रसिद्ध संस्कृत-पाठशाला है।

रामघाट

विहारघाटसे ६ मीलपर गङ्गाके दक्षिण तटपर रामघाट प्रसिद्ध तीर्थ है। यह एक कस्बा है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये यहाँ धर्मशाला है। यहाँ बहुत अधिक मन्दिर हैं; किंतु मुख्य हैं—हनुमान्‌जी, नृसिंहजी, विहारीजी, गङ्गाजी, सीतारामजी, सत्यनारायणजी, रघुनाथजी (गढ़ीमें), गोविन्ददेवजी (नहर किनारे), दाऊजी तथा कृष्ण-बलदेवके मन्दिर।

रामघाटसे दो फर्लांगपर खेतका टीला है। वहाँ वन-खण्डेश्वर महादेवका प्राचीन मन्दिर है। कहा जाता है कि कीलेश्वर नामक दैत्यको मारकर श्रीबलरामजीने इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा की थी। कार्तिकी पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है।

काम्पिल

यह स्थान बदायूँ जिलेमें है। पूर्वोत्तर रेलवेकी आगरा फोर्ट-गोरखपुर लाइनपर हाथरस रोड जंकशनसे ८६ मीलपर कायमगंज रेलवे-स्टेशन है। कायमगंजसे काम्पिलतक पक्की सड़क जाती है। कायमगंजसे यह स्थान ६ मील दूर है।

किसी समय काम्पिल महानगर था। यहाँ रामेश्वरनाथ और कालेश्वरनाथ महादेवके प्रसिद्ध मन्दिर हैं। कपिल मुनिकी कुटी है और उससे नीचे उतरकर द्रौपदीकुण्ड है। श्रीपरशुरामजीका मन्दिर तथा लालजीदासके मन्दिरपर वसन्त-ऋतुमें मेले लगते हैं। यहाँके महावीरजीके मन्दिरपर भाद्रशुक्ला द्वितीयाको मेला लगता है। किलेपर दुर्गाजी, आनन्दी देवी और महावीरजीके मन्दिर हैं। यहाँ एक सिद्धस्थान कहा जाता है, वहाँ शंकरजीकी मूर्ति है। गङ्गाजीकी धारा अब काम्पिलसे दूर हो गयी है।

काम्पिलसे ५ मीलपर रुदयन स्थान है। वहाँ आश्विनमें पिण्डदान-श्राद्ध किया जाता है। उससे ४ मील आगे मुडौल (मुण्डवन) में शरद्वीप कुण्ड है। कहा जाता है कि यहीं शिखण्डीको पुंस्त्व प्राप्त हुआ था।

जैनतीर्थ—तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथजीके यहाँ चार

उत्तर-भारतके कुछ तीर्थ—२

दिल्लीकी खुदाईमें निकली नीलमकी पाँच भगवत्-प्रतिमाएँ

श्रीलक्ष्मीनारायण-मन्दिर, दिल्ली

महात्मा गाँधीकी समाधि, राजघाट, दिल्ली

श्रीगङ्गा-मन्दिर, गढ़मुक्तेश्वर
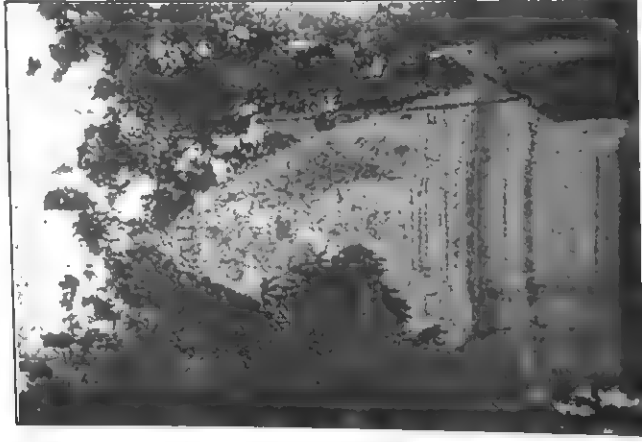
श्रीमुक्तेश्वर-मन्दिर, गढ़मुक्तेश्वर
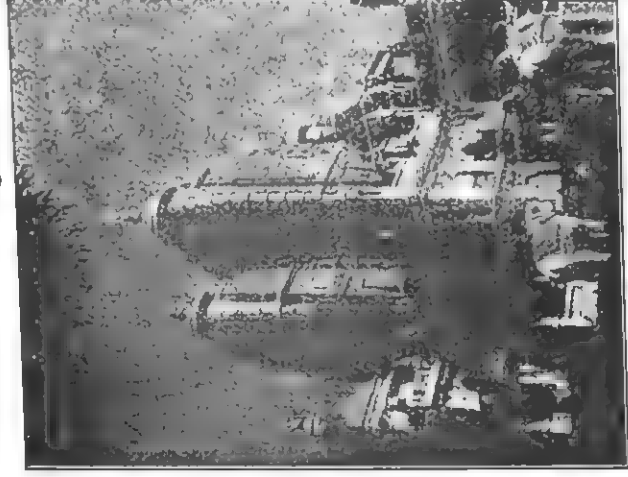
श्रीनर्मदेश्वर-मन्दिर, अनूपशहर
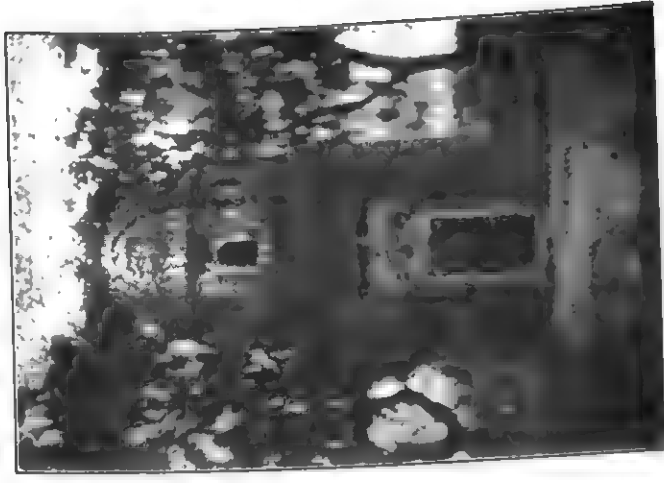
कर्णशिला, कर्णवास

उत्तर-भारतके कुछ तीर्थ—३
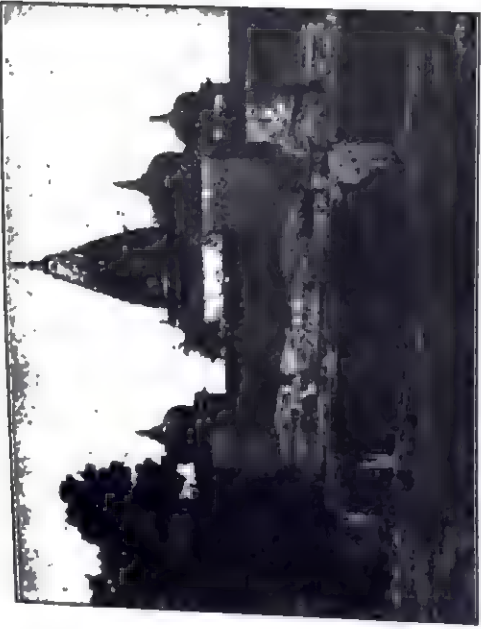
श्वेताम्बर-जैन-मन्दिर, कम्पिला
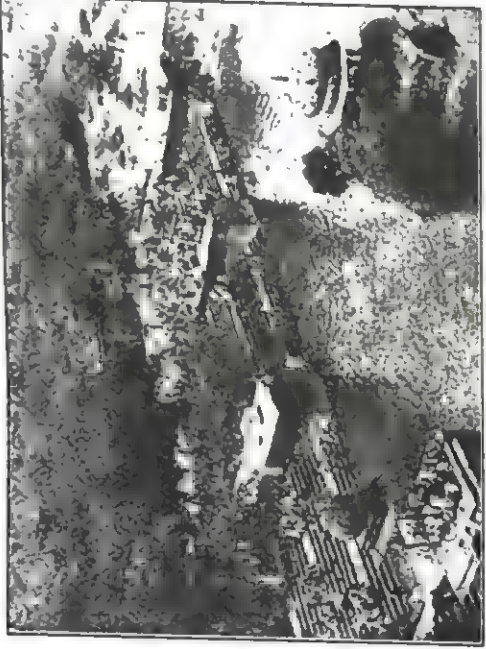
मुचुकुन्द-तीर्थ, धौलपुर

श्रीचक्रतीर्थ, नैमिषारण्य
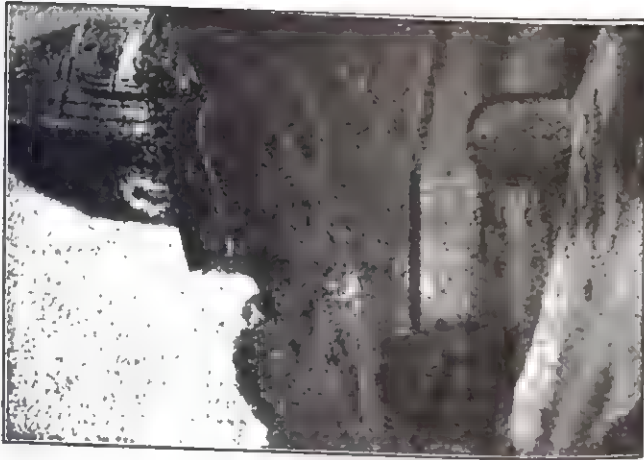
श्रीवनखण्डीश्वर महादेव,
धरणीधर-तीर्थ

श्रीधरणीधर-तीर्थका पश्चिमी तट

रामघाट, कन्नौज

कल्याणक हुए हैं। काम्पिलमें दो जैन धर्मशालाएँ हैं। जैनमन्दिर हैं। चैत्र कृष्ण अमावस्यापर जैनमेला लगता है।

सेंग

कन्नौजसे १८ मीलपर यह स्थान है। यहाँ शृङ्गीऋषिका प्राचीन मन्दिर है। यहाँसे दो मीलपर सैवन्सू स्थान है। वहाँ भालशिलादेवी, वनखण्डेश्वर महादेव तथा हनुमान्‌जीके मन्दिर हैं। सेंगसे दो मीलपर जैसरमऊमें भंगेश्वर महादेवका मन्दिर है।

सरैया

सेंगसे ९ मीलपर यह स्थान है। यहाँ घाटपर नीलकण्ठ शिवमन्दिर है। घाटसे पास ही खैरेश्वर महादेवका मन्दिर है। यह बहुत सम्मानित तथा सिद्ध स्थान माना जाता है।

सरैया घाटसे एक मीलपर वीरेश्वर शिवमन्दिर है। वहाँ पास ही वनमें अश्वत्थामाका मन्दिर और दूधेश्वर शिवमन्दिर हैं।

सरैया घाटसे ५ मीलपर बन्दीमाताका मन्दिर है। कहा जाता है कि यह देवीमूर्ति श्रीजानकीजीद्वारा प्रतिष्ठित है।

शिवराजपुर

उत्तर रेलवेकी मुगलसराय-दिल्ली लाइनपर बिंदकीरोड स्टेशन है। वहाँसे ४ मीलपर शिवराजपुर है। यहाँ बहुत अधिक मन्दिर हैं, किंतु अब थोड़े मन्दिरोंमें मूर्तियाँ रह गयी हैं। प्रसिद्ध मन्दिर हैं—गङ्गेश्वर, सिद्धेश्वर, कपिलेश्वर, अङ्गदेश्वर, पञ्चवटेश्वर, मुण्डेश्वर, शकुनेश्वर, दूधियादेवी, कालिकादेवी, रसिकबिहारीजी तथा गिरिधर गोपालजी। यहाँ बहुत-से घाट हैं, किंतु गङ्गाजी उनसे दूर चली गयी हैं।

कहा जाता है कि मीराँबाई मेवाड़ छोड़नेके पश्चात् यहाँसे जा रही थीं। विश्रामके पश्चात् जब वे अपने गिरिधर गोपालको उठाने लगीं, तब वे उठे ही नहीं। उनकी यहीं निवासकी इच्छा जानकर स्थानीय लोगोंने गिरिधरगोपालका मन्दिर बनवा दिया।

बकसर

(लेखक—पं० श्रीगिरिजाशंकरजी अवस्थी)

शिवराजपुरसे ३ मील पूर्व यह स्थान उन्नाव जिलेमें पड़ता है। यहाँ वागीश्वर महादेवका प्राचीन मन्दिर है। कहा जाता है कि यह उस बकासुरका निवासस्थान था, जिसे भगवान् श्रीकृष्णने मारा था। बकासुरद्वारा स्थापित महेश्वरनाथ-मन्दिर भी यहाँ है। एक चण्डिकादेवीका मन्दिर है, जिसमें देवीकी दो मूर्तियाँ हैं। यहाँ गङ्गास्नानके कई मेले लगते हैं। कहा जाता है कि दुर्गासप्तशतीमें जिन राजा सुरथ तथा समाधि वैश्यके तपका वर्णन है, उनकी तपःस्थली यही है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं। गङ्गा-दशहरा तथा कार्तिकी पूर्णिमापर मेला लगता है।

आदमपुर

यह स्थान बकसरसे ८ मील पूर्व स्थित निसगर नामक स्थानके सामने गङ्गाके दूसरे तटपर पड़ता है। यहाँ ब्रह्मशिला नामक एक श्रीराममन्दिर है। कहा जाता है कि यहाँ ब्रह्माजीने यज्ञ किया था। गङ्गास्नानके कई मेले लगते हैं।

असनी

उत्तर रेलवेकी मुख्य लाइनमें फतेहपुर स्टेशन है। वहाँसे यह स्थान ३ मील दूर है। यहाँ शंकरजीके और देवीके लगभग ६० मन्दिर हैं। कहा जाता है कि यह अश्विनीकुमार देवताओंकी तपोभूमि है।

सम्भल

(लेखक—डॉ० श्रीभगवतशरणजी द्विवेदी)

यह स्थान मुरादाबाद जिलेमें है। उत्तर रेलवेकी चन्दौसी-मुरादाबाद लाइनमें राजाका साहसपुर स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन 'सम्भल हातिमसराय' तक जाती है। सम्भलके स्टेशनका नाम सम्भल हातिमसराय है। कलियुगके अन्तमें विष्णुयश ब्राह्मणके यहाँ इसी सम्भलमें भगवान् कल्किका अवतार होगा।

सत्ययुगमें इस नगरका नाम 'सत्यव्रत' था, त्रेतामें 'महद्गिरि', द्वापरमें 'पिङ्गल' और कलियुगमें 'सम्भल' है। इसमें ६८ तीर्थ और १९ कूप हैं। यहाँ एक अतिविशाल और प्राचीन मन्दिर है, जो हरिमन्दिर

कहलाता है; परन्तु इस समय मुसलमान उसमें प्रति शुक्रवारको दोपहरकी नमाज़ पढ़ते-पढ़ाते हैं। उन्होंने इसकी कुछ-कुछ रूपरेखा भी बदल डाली है। इसके अतिरिक्त यहाँ तीन मुख्य शिवलिङ्ग हैं—(१) पूर्वमें चन्द्रेश्वर, (२) उत्तरमें भुवनेश्वर, (३) दक्षिणमें सम्भलेश्वर।

प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला चतुर्थी और पञ्चमीको इन तीर्थों और कूपोंकी परिक्रमा देने, जो २४ कोस लम्बी होती है, दूर-दूरसे यात्री आते हैं। शहरी मेला चतुर्थीको नैमिषारण्य तीर्थपर और पञ्चमीको वंशगोपाल और मणिकर्णिका तीर्थोंपर होता है।

प्रत्येक तीर्थके दर्शन और स्नान तथा प्रत्येक कूपकी यात्रा भाद्रमासमें होती है और इसे 'बनकरना' कहा जाता है। तीर्थों और कूपोंका विवरण इस प्रकार है—

१. सूर्यकुण्ड—इसका नाम अर्ककुण्ड भी है। इसके मध्यमें एक बहुत बड़ा कुआँ है। प्रति रविवारका स्नान यहाँ होता है। कार्तिक शुक्ला षष्ठीको यहाँ मेला लगता है। यहीं एक शिव-मन्दिर है, जिसमें श्रीकृष्णेश्वर नामका शिवलिङ्ग है।

२. हंसतीर्थ—सूर्यकुण्डके निकट यह एक कच्चा तालाब है। चैत्र वदी अष्टमीको यहाँकी यात्रा होती है।

३. कृष्णतीर्थ—यह भी सूर्यकुण्डके पास एक कच्चा तालाब है। इसमें स्नान करनेसे चेचक रोग नहीं होता। आषाढ़ शुक्ला ११ को यात्रा होती है।

४. कुरुक्षेत्र—सम्भलसे चन्दौसी जानेवाली कच्ची सड़कपर सम्भलसे लगभग ४ फर्लांगपर यह तीर्थ पक्का बना हुआ है। इसके किनारे एक शिवमन्दिर है। मङ्गलके दिन यहाँ स्नान होता है। प्रतिवर्ष कन्याकी संक्रान्तिपर तथा सूर्यग्रहणपर यहाँ विशेष स्नान होता है।

५. दशाश्वमेध—कुरुक्षेत्रसे दक्षिण एक कच्चा तालाब है। यहाँ राजा ययातिने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे। ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदासे दशमीतक यहाँका स्नान होता है।

६. विष्णुपादोदक—दशाश्वमेधसे उत्तरकी ओर और उसीके पास एक कच्चा तालाब है, जो नूरियोंसरायके समीप है। कार्तिक कृष्णा १२ को यहाँकी यात्रा एवं स्नान होता है।

७. विजयतीर्थ—नूरियोंसरायके दक्षिणमें एक कच्चा तालाब है। इसका मुख्य स्नान और यात्रा आश्विन शुक्ला १० (विजयादशमी) को होती है।

८. श्वेतदीप—सैफ़खाँसरायमें एक कच्चा तालाब है। वैशाख शुक्ला १४ को इसकी यात्रा होती है।

९. ज्ञानकेशव—पास ही यह तीर्थ है। कच्चा है। पहले इसका नाम कृष्णकेशव था। गरुड़जीने यहाँ निवास किया था। गणेश-चतुर्थीको यहाँ स्नान होता है।

१०. पिशाचमोचन—वहीं उत्तरमें है। पहले इसका नाम विमलोदक था। स्नान श्रावण शु० १२ को होता है।

११. चतुर्मुख कूप—वहीं पासमें यह एक बहुत बड़े आकारका पक्का कंकरका बना हुआ कुआँ है। यहाँ ब्रह्माजीने निवास किया था। हर महीनेकी त्रयोदशीको स्नान होता है।

१२. नैमिषारण्य—ज्ञानकेशव-तीर्थके पास यह एक पक्का कुआँ है। इसको भगवान् विष्णुने अपने चक्रसे खोदा था। यहाँ गुरुवार त्रयोदशीको स्नान होता है। प्रति बृहस्पतिवारको भी लोग दूर-दूरसे स्नान करने आते हैं। कार्तिक शुक्ला चौथको यहाँ मेला लगता है। बाबा क्षेमनाथ साधुकी समाधिपर, जो तीर्थके किनारे बनी हुई है, चनेकी दाल और चनेके लड्डू चढ़ाये जाते हैं।

१३. धर्मनिधि—नैमिषारण्यसे दक्षिणमें है। कच्चा है। मङ्गलवार चौथको यहाँ स्नान होता है।

१४. चतुस्सागर—विजयतीर्थसे दक्षिणमें कच्चा है। इसके पास मदारका टीला है।

१५. एकान्ती—वहीं पासमें कच्चा है। भादों कृष्ण ३ को यहाँ मेला होता है।

१६. ऊर्ध्वरेता—एकान्तीके पास कच्चा है। इसके समीप कृष्णदास-सरायकी बस्ती है। अष्टमीको स्नान होता है।

१७. अवन्तीश्वर—ऊर्ध्व रेताके पास कच्चा है।

१८. लोलार्क या लहोकर—हल्लूसरायके पास कच्चा है। माघकी सप्तमीको यहाँ स्नान करके सूर्योपासना की जाती है।

१९. चन्द्रतीर्थ—उसीके पास कच्चा है। यहाँ चन्द्रग्रहणपर स्नान होता है।

२०. शङ्खमाधव—हल्लूसरायसे पूर्वको है। कच्चा

है। अगहन सुदी सप्तमीको स्नान होता है।

२१. यमघण्ट—हल्लूसरायके पास कच्चा है। स्नान यमद्वितीयाको तथा ज्येष्ठके शनिवारोंका माहात्म्य।

२२. अशोककूप—वहीं पास है। अशोक-अष्टमीको यहाँकी यात्रा होती है।

२३. पञ्चाग्निकूप—वहीं पासमें है। वैशाख, माघमें प्रतिदिन स्नानका महत्त्व है।

२४. पापमोचन-तीर्थ—चौधरीसरायके पास कच्चा है। यात्रा-स्नान अगहन सुदी अष्टमीको होते हैं।

२५. कालोदक—चौधरीसरायमें कच्चा है। दीपावलीके दिन इसकी यात्रा होती है।

२६. सोमतीर्थ—चौधरीसरायमें कच्चा है। स्नान सोमवती अमावास्याको होता है।

२७. चक्र सुदर्शन—पासमें है। कच्चा है, भगवान्ने चक्र सुदर्शनसे इसे खोदा था।

२८. गोकुल बनारसी—(गोतीर्थ) उसीके पास है। कामधेनुने यहाँ निवास किया था।

२९. अङ्गारक—हयातनगरकी बस्तीके पास कच्चा है। मङ्गलदेवका यहाँ निवास हुआ था। प्रति मङ्गलको स्नान होता है।

३०. रत्नप्रयाग—वहींपर कच्चा है। इस तीर्थके पास पाँच तीर्थ हैं, जो पञ्चप्रयागके नामसे पुकारे जाते हैं। यात्रा प्रतिमास सप्तमीको होती है। ये पञ्चप्रयाग निम्न हैं—

३१. वासुकिप्रयाग—पञ्चप्रयागके पाँचों तीर्थ कच्चे तालाब हैं। नागपञ्चमीको इनमें स्नान होता है।

३२. क्षेमकप्रयाग—जन्माष्टमीको मेला होता है।

३३. तारकप्रयाग—

३४. गन्धर्वप्रयाग—

३५. मृत्युंजय—हयातनगरके पास पक्का तीर्थ है। मंगलवारी छठ और ज्येष्ठ वदी पड़िवाको स्नानका महापर्व होता है।

३६. ज्येष्ठपुष्कर—हयातनगरमें कच्चा बना है, नीलकण्ठवाले बागमें है। कार्तिक वदी अष्टमीको यहाँकी यात्रा होती है।

३७. मध्यपुष्कर—यह तीर्थ ज्येष्ठपुष्करसे २४ गजकी दूरीपर है। परिक्रमावाले दिन यहाँ स्नान होता है।

३८. कनिष्ठपुष्कर—मध्यपुष्करके पास है। प्रत्येक अष्टमी तथा कार्तिक वदी अष्टमीको यहाँ स्नान होता है।

३९. धर्मकूप—हयातनगरसे आधे मीलकी दूरीपर सम्भलसे बहजोई जानेवाली सड़कपर है।

४०. पञ्चगोवर्धन या नन्दा—४० नन्दा, ४१ सुनन्दा, ४२ सुमना, ४३ सुशीला, ४४ सुरभी—ये पाँच तीर्थ पञ्चगोवर्धनके नामसे प्रसिद्ध हैं। हयातनगरसे पूर्वदक्षिणके कोनेमें आधे मीलकी दूरीपर कच्चे बने हैं। अमावास्या और दिवालीको इनमें स्नान होता है।

४१. ब्रह्मावर्त—सरायतरीनसे पूर्व-दक्षिणमें कच्चा बना है।

४२. नर्मदा—ब्रह्मावर्त तीर्थसे ५०० गज दूर कच्चा बना है। सिंहकी संक्रान्तिको स्नानका पर्व होता है।

४३. वाग्भारती—सरायतरीनसे पश्चिममें कच्चा है। ऋषिपञ्चमी और त्रयोदशीको स्नान होता है।

४४. वंशगोपाल—यह तीर्थ सम्भलसे दक्षिणकी ओर दो मीलकी दूरीपर पक्का बना है। किनारेपर शिव-मन्दिर है, वटवृक्ष है। कार्तिक शुक्ला पञ्चमीको २४ कोसकी सम्भलके तीर्थोंकी परिक्रमा यहाँ समाप्त होती है। कार्तिक शुक्ला चौथको यह परिक्रमा यहींसे आरम्भ भी होती है।

४५. रेवाकुण्ड—वंशगोपालसे उत्तरमें ९०० कदमकी दूरीपर कच्चा बना है। श्रावण शु० तीजको यात्रा होती है।

४६. सिंह गोदावरी—वंशगोपालसे उत्तरमें कच्चा बना है। सिंहकी संक्रान्तिको यात्रा होती है।

४७. रसोदक कूप—यह कूप सम्भलसे भविष्यगङ्गाको जानेवाले रास्तेपर वाग्भारतीसे ५० गजके अन्तरपर है। यहाँ देवीका स्थान है तथा संभलेश्वर महादेवका मन्दिर है।

४८. गोमती—यह भविष्य गङ्गाके निकट उसका एक अङ्ग है। भाद्रपद शुक्ला द्वादशीको स्नान होता है।

४९. भविष्यगङ्गा—यह कबीरकी सरायके पास है। इसके स्नानका फल गङ्गाजीके स्नानके समान है। जब सूर्य-चन्द्र और बृहस्पति—तीनों एक साथ पुष्य नक्षत्रपर आयेंगे, तब यह गङ्गा हो जायगी। उसी कालमें सम्भलमें कल्किभगवान्का अवतार होगा। यहाँपर

कर्तिक मासकी पूर्णमासी और प्रति चन्द्रग्रहणपर स्नान होता है, संक्रान्ति और अष्टमीकी यात्रा होती है।

५०. ऋणमोचन—यह तीर्थ मनोकामना तीर्थके निकट है। अमावस्याको यहाँ स्नान होता है।

५१. मनोकामना—यह तीर्थ मोहल्लाकोटके निकट है। पक्का बना हुआ है। चारों तरफ किनारेपर धर्मशालाएँ बनी हैं, जिनमें यात्री, साधु, महात्मा ठहरते हैं। इसका नाम महोदकी था। स्नान—सोमवती, एकादशी, चन्द्रग्रहण और कार्तिक शुक्ला पूर्णमासी।

५२. माहिष्मती—मनोकामनाके पास कच्चा सरोवर है। मेवासुर राक्षसको देवीजीने मारा, उससे यह नदी उत्पन्न हुई।

५३. पुष्पदन्त—यह तीर्थ रत्नजगके पास कच्चा है। पुष्यनक्षत्रमें यात्रा होती है।

५४. अकर्ममोचन—यह पुष्पदन्तके पास है। चैत्र शुक्ल त्रयोदशीको इसकी यात्रा होती है।

५५. आदिगया—यह तीर्थ मोहल्ला रुकनुद्दीनसरायके पास कच्चा बना है। गयाजीको जानेवाले पहले यहीं पितृश्राद्ध करते हैं। इसे आदिगया कहते हैं। पितृपक्षमें इसकी यात्रा होती है। आश्विन कृष्ण ३० अमावस्याको यहाँ स्नान, पितृ-तर्पण आदि होते हैं।

५६. गुप्तार्क—अकर्ममोचन-तीर्थके पास यह कच्चा बना है। यात्रा द्वादशीको होती है।

५७. रत्नजग—यह तीर्थ मोहल्ला दीपासरायके निकट है।

५८. चक्रपाणि—वहीं पासमें है, कच्चा है। इस तीर्थको विष्णुके चक्रसे खुदा हुआ बताते हैं। वैशाख शुक्ला एकादशीको इसकी यात्रा होती है।

५९. स्वर्गद्वीप—यह चक्रपाणि तीर्थके पास है। वैशाख शुक्लपक्षमें इसकी यात्रा होती है।

६०. मोक्षतीर्थ—सम्भलसे पश्चिमकी ओर लगभग ४ मीलकी दूरीपर महमूदपुर और पुरके मध्य यह एक कच्चा तालाब है।

६१. मलहानिक—सम्भलके उत्तरमें भागीरथी तीर्थके निकट यह एक कच्चा कूप है। इसके स्नानसे, भुवनेश्वर महादेवके तथा मालखजनी देवीके पूजनसे चार युगोंके पाप छूट जाते हैं। दुर्गाष्टमी तथा मार्गशीर्ष शुक्ला १४ को यहाँकी यात्रा होती है।

६२. त्रिसंध्या—भागीरथी-तीर्थके उत्तरमें सती-स्थानके समीप कच्चा बना है। मेष संक्रान्तिका पर्व यहाँ मनाया जाता है।

६३. भागीरथी—यह तीर्थ तिमरदाससरायके निकट पक्का बना है। जिस समय श्रीभगीरथजी श्रीगङ्गाजीको लाये थे, तब वे यहीं ठहरे थे। प्रति अष्टमीको यहाँकी यात्रा होती है। स्नानानन्तर श्रीभुवनेश्वरजी महादेवका पूजन करना चाहिये।

६४. मत्स्योदरी—यह तीर्थ मियाँसरायके पास है। कार्तिक शुक्ला नवमीको यहाँकी यात्रा होती है।

६५. भद्रकाश्रम—मोहल्ला ठेरके पास यह तीर्थ-भदेसरेके नामसे प्रसिद्ध है। यह पक्का बना हुआ था। बुधाष्टमी भाद्रमासमें इसकी यात्रा होती है।

६६. अनन्तेश्वर—यह भद्रकाश्रमके पास कच्चा बना है।

६७. अत्रिकाश्रम—चिमनसरायके पास है, अत्रि ऋषिने यहाँ तप किया था। भाद्र शुक्ला पञ्चमीको यहाँकी यात्रा होती है।

६८. देवखात—मियाँसरायमें है। इसको देवताओंने खोदा था। इसकी यात्रा पूर्णमासीको होती है।

६९. विष्णुखात—देवखातसे पूर्व है। भगवान्‌ने यहाँ विश्राम किया था।

७०. यज्ञकूप—यह कूप हरिमन्दिरके अंदर है।

७१. धरणी-बाराहकूप—हरिमन्दिरसे पश्चिममें है। यहाँ वाराह-अवतारकी पूजा होती है।

७२. हृषीकेशकूप—हरिमन्दिरसे पूर्वको मोहल्ला पूर्वीकोटमें खागियोंके घरोंके पास है।

७३. पराशरकूप—मोहल्ला पूर्वी कोटमें है।

७४. विमलकूप—उसी मोहल्लेमें कार्तिकमासभर प्रातःकालीन स्नान होता है।

७५. कृष्णकूप—यह कूप कल्कि-विष्णु भगवान्‌के मन्दिरके बाहर है।

७६. विष्णुकूप—यह कूप मोहल्ला सानीवालमें है। प्रति द्वादशीको यहाँकी यात्रा होती है।

७७. **शौनककूप**—तीर्थ मनोकामनाके पास सड़कके किनारे हैं। यहाँ शौनक ऋषिने तप किया था।

७८. **वायुकूप**—मोहल्ला पश्चिमीकोटमें देहलीद्वारके पास है।

७९. **जमदग्निकूप**—वायुकूपसे १२० गज उत्तर दिशामें है। यह स्थान जमदग्नि ऋषिकी आराधनाका है।

८०. **अकर्ममोचन कूप**—वहीं पास है।

८१. **मृत्युञ्जयकूप**—जमदग्निकूपसे १५० गज उत्तर है।

८२. **बलिकूप**—आजकल जहाँ तहसीलकी इमारत बनी हुई है, उसी जगह यह कूप बना है।

८३. **सप्तसागर कूप**—यह कूप सरथल दरवाजेके पास है। इसके पास (किनारे) एक सरथलेश्वर महादेवका मन्दिर है। सात समुद्रोंका जल लाकर इसका निर्माण किया गया था।

व्रजमण्डल (मथुरा-वृन्दावन)

व्रजमण्डल (मथुरा-वृन्दावन)-माहात्म्य

इतिहास-पुराणोंमें मथुराके चार नाम आते हैं— मधुपघ्न, मधुपुरी, मधुरा तथा मथुरा। सबोंका सम्बन्ध मधुदैत्यसे है, जिसे मारकर शत्रुघ्नजीने ऋषियोंका क्लेश दूर किया था भगवान् श्रीकृष्णकी जन्मस्थली तथा लीलाभूमि होनेसे इसका माहात्म्य अनन्त है। वाराहपुराणमें भगवान्के वचन हैं—

न विद्यते च पाताले नान्तरिक्षे न मानुषे।
समानं मथुराया हि प्रियं मम वसुन्धरे॥
सा रम्या च सुशस्ता च जन्मभूमिस्तथा मम।

(१५२।८-९)

'पृथ्वी! पाताल, अन्तरिक्ष (भूमिसे ऊपर स्वर्गादिलोक) तथा भूलोकमें मुझे मथुराके समान कोई भी प्रिय (तीर्थ) नहीं है। वह अत्यन्त रम्य, प्रशस्त मेरी जन्मभूमि है।'

महामाघ्यां प्रयागे तु यत् फलं लभते नरः॥
तत् फलं लभते देवि मथुरायां दिने दिने।

(१५२।१३-१४)

'महामाघी (माघ मासमें जब पूर्णिमाको मघा नक्षत्र हो) के दिन प्रयागमें जो स्नानादिका फल है, वह मथुरामें प्रतिदिन सामान्यतया प्राप्त होता रहता है।'

पूर्णं वर्षसहस्रं तु वाराणस्यां हि यत् फलम्।
तत् फलं लभते देवि मथुरायां क्षणेन हि॥

(१५२।१५)

हजार वर्ष काशीवासका जो फल है, वह मथुराके एक क्षण वासका है।

कार्तिक्यां चैव यत्पुण्यं पुष्करे तु वसुन्धरे।
तत्फलं लभते देवि मथुरायां जितेन्द्रियः॥

(१५२।१६)

'वसुन्धरे! कार्तिकी (कार्तिककी पूर्णिमा) को जो पुष्करमें वसनेका पुण्य है,* वही जितेन्द्रियको मथुरावाससे प्राप्त होता है।'

यहाँ जन्माष्टमी, यमद्वितीया तथा ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशीके स्नान तथा भगवद्दर्शनका विपुल माहात्म्य है।

(विष्णु० अं० ६, अध्याय ८)

व्रजमण्डलके अन्तर्गत १२ वन हैं—मधुवन, कुमुदवन, काम्यकवन, बहुलवन, भद्रवन, खादिरवन, श्रीवन, महावन, लोहजङ्घवन, बिल्ववन, भाण्डीरवन तथा वृन्दावन। इन सभी वनोंका विपुल माहात्म्य है, फिर वृन्दावनका तो कहना ही क्या। इसे पृथ्वीका परमोत्तम तथा परम गुप्त भाग कहा गया है—

गुह्याद् गुह्यतमं रम्यं मध्यं वृन्दावनं भुवि।
अक्षरं परमानन्दं गोविन्दस्थानमव्ययम्॥

(पद्मपुराण, पातालखण्ड ६९। ७१)

यह साक्षात् भगवान्का शरीर है, पूर्ण ब्रह्मसुखका आश्रय है। यहाँकी धूलिके स्पर्शसे भी मोक्ष होता है, अधिक क्या कहा जाय—

गोविन्ददेहतोऽभिन्नं पूर्णब्रह्मसुखाश्रयम्।
मुक्तिस्तत्र रजःस्पर्शात् तन्माहात्म्यं किमुच्यते॥

(पद्म० पा० ६९। ७२)

* कार्तिकी पूर्णिमाको पुष्करवासका फल शास्त्रोंमें यों कहा है—

यस्तु वर्षशतं पूर्णमग्निहोत्रमुपाचरेत्। कार्तिकी वा वसेदेकां पुष्करे सममेव तत्॥

(महा० वन० ८२। ३७; पद्म० १। ११। ३३)

'जो पूरे सौ वर्षतक अग्निहोत्र करता है अथवा जो केवल कार्तिकी पूर्णिमाके दिन पुष्करवास करता है, दोनोंका समान फल है।'

कहा जाता है कि एक बार मुक्तिने भगवान् माधवसे पूछा—'केशव! मेरी मुक्तिका उपाय बताओ।' प्रभुने कहा, 'बस जब व्रज-रज तेरे सिरपर उड़कर पड़ जाय' तब तू अपनेको मुक्त हुआ समझ—

मुक्ति कहै गोपाल सों, मेरी मुक्त बताय।
व्रज-रज उड़ि माथे परे, मुक्ति मुक्त हो जाय॥

धन्य है व्रज-रजकी महिमा।

(अधिक जाननेके लिये नारदपुराण उ० आ० ७५—८०, वाराह पु० १५२ से १७०, पद्म० पा० ६९—८३ देखिये।)

मथुरा-वृन्दावन

मथुरा-वृन्दावनका अर्थ है पूरा माथुरमण्डल या व्रज-मण्डल, जिसका विस्तार ८४ कोस बताया गया है। मथुरा व्रजके केन्द्रमें है। व्रजके तीर्थोंमेंसे कहीं जाना हो, प्रायः मथुरा आना पड़ता है। मथुराके चारों ओर व्रजके तीर्थ हैं। मथुरासे विभिन्न दिशाओंमें उनकी अवस्थिति होनेके कारण प्रायः एकसे-दूसरे तीर्थ जानेके लिये मथुरा होकर जाना पड़ता है। अब व्रजके सभी मुख्य तीर्थोंमें प्रायः सड़कें हो गयी हैं और वहाँ मोटर-बसें तथा अन्य सवारियाँ जाती हैं।

मथुराका प्राचीन नाम मधुरा या मधुवन है। भगवान् श्रीकृष्णने तो द्वापरके अन्तमें यहाँ अवतार लिया; किंतु यह क्षेत्र तो अनादिकालसे परम पावन माना जाता है। सृष्टिके प्रारम्भमें ही स्वायम्भुव मनुके पौत्र ध्रुवको देवर्षि नारदजीने मधुवनमें जाकर भगवदाराधन करनेका उपदेश दिया और बताया—'**पुण्यं मधुवनं यत्र सांनिध्यं नित्यदा हरेः।**' परम पवित्र मधुवनमें श्रीहरि नित्य संनिहित रहते हैं। ध्रुवने यहाँ तपस्या की और यहीं उन्हें भगवद्दर्शन हुआ।

ध्रुवके तपःकालमें यह मधुवन था। यहाँ कोई नगर नहीं था। पीछे मधुनामक राक्षसने यहाँ मधुरा या मधुपुरी नामक नगर बसाया। उसके पुत्र लवण नामक राक्षसको मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामके आदेशसे शत्रुघ्नजीने मारा और मधुरा शत्रुघ्नजीकी तथा उनके वंशधरोंकी राजधानी हुई। पीछे द्वापरमें यह स्थान शूरसेनवंशीय क्षत्रियोंकी राजधानी बना और यहीं श्रीकृष्णचन्द्रने अवतार ग्रहण किया।

मार्ग

मथुरा जंक्शन और मथुरा छावनी—ये दो मुख्य स्टेशन हैं मथुराके। मथुरा जंक्शनपर पूर्वोत्तर रेलवे तथा पश्चिमी और मध्य रेलवे तीनों हैं। पश्चिमी रेलवेकी छोटी लाइन जो हाथरस, कासगंजकी ओर गयी है, उसपर मथुरा छावनी स्टेशन है। मथुरा छावनीसे मथुरानगर समीप है; किंतु मथुरा जंक्शनसे १॥ मील दूर है। स्टेशनसे नगरतक आनेके लिये रिक्शे-ताँगे मिलते हैं।

मथुरासे कई दिशाओंमें जानेके लिये पक्की सड़कें हैं। दिल्ली, आगरा, हाथरस, भरतपुर, जलेसर आदिका मथुरासे सड़कोंका सम्बन्ध है।

ठहरनेके स्थान

मथुरामें भी कई धार्मिक संस्थाएँ हैं। यात्री पंडोंके यहाँ भी ठहरते हैं। कई धर्मशालाएँ हैं यात्रियोंके ठहरनेके लिये—१-राजा तिलोईकी धर्मशाला, बंगालीघाट, २-हरमुखराय दुलीचन्दकी, स्वामीघाट। ३-हरदयाल विष्णुदयालकी, नयाबाजार। ४-तेजपाल गोकुलदासकी, मारूगली। ५-रामगोपाल लक्ष्मीनारायणकी, जूनामन्दिर प्रयागघाट। ६-महाराज आवागढ़की, पुलके पास। ७-दामोदरभवन, छत्ताबाजार। ८-दामोदरदास तापीदास, असकुण्डा बाजार। ९-बिहारीलालकी, बंगालीघाट। १०-कुञ्जलाल विश्वेश्वरदासकी, रामघाट। ११-नैनसीवाली, रामघाट। १२-सेठ घनश्यामदास रूपकिशोर भाटिया, विक्टोरियापार्क। १३-माहेश्वरी धर्मशाला, वृन्दावन दरवाजा। १४-सागरवालेकी, किलेके ऊपर। १५-जबलपुरकी, सतघटा। १६-शेरगढ़की, सतघटा। १७-मंगलदास गिरिधारीदास, छत्ताबाजार। १८-करमसीदास बम्बईवालेकी, कारामहल, विश्रामघाट। १९-गंगोलीमल गजानन्द अग्रवालकी, चौकबाजार।

मथुरा-दर्शन

मथुरामें श्रीयमुनाजीके किनारे २४ मुख्य घाट हैं, जिनमें बारह घाट विश्रामघाटसे उत्तर और बारह दक्षिण हैं। उनके नाम हैं—१-विश्रामघाट, २-प्रयागघाट, ३-कनखलघाट, ४-बिन्दुघाट, ५-बंगालीघाट, ६-सूर्यघाट, ७-चिन्तामणिघाट, ८-ध्रुवघाट, ९-ऋषिघाट, १०-मोक्षघाट, ११-कोटिघाट, १२-बुद्धघाट—ये दक्षिणकी ओर हैं। उत्तरके घाट हैं—१३-गणेशघाट, १४-मानसघाट, १५-दशाश्वमेधघाट, १६-चक्रतीर्थघाट, १७-कृष्णगङ्गाघाट, १८-सोमतीर्थघाट, १९-ब्रह्मलोकघाट, २०-घण्टाभरणघाट,

२१-धारापतनघाट, २२-संगमतीर्थघाट, २३-नवतीर्थघाट, २४-असीकुण्डाघाट।

विश्रामघाट इनमें मुख्य घाट है। कहते हैं कि यहाँ कंसवधके पश्चात् श्रीकृष्णचन्द्रने विश्राम किया था। यहाँ सायंकालीन यमुनाजीकी आरती दर्शनीय होती है। यम-द्वितीयाको यहाँ स्नानार्थियोंका मेला होता है। घाटके पास ही श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक है।

ध्रुवघाटके पास ध्रुव-टीलेपर छोटे मन्दिरमें ध्रुवजीकी मूर्ति है। असीकुण्डाघाट वाराहक्षेत्र कहा जाता है। यहाँ वाराहजी तथा गणेशजीकी मूर्तियाँ हैं।

मथुराके चारों ओर चार शिवमन्दिर हैं—पश्चिममें भूतेश्वर, पूर्वमें पिप्पलेश्वर, दक्षिणमें रङ्गेश्वर और उत्तरमें गोकर्णेश्वर। मानिक चौकमें नीलवाराह तथा श्वेतवाराहकी मूर्तियाँ हैं।

प्राचीन मथुरा नगर वहाँ था, जहाँ आज केशवदेवका कटरा है। वहाँ जन्मभूमि-स्थानपर वज्रनाभका बनवाया श्रीकेशवदेवका मन्दिर था, जिसे तुड़वाकर औरंगजेबने मसजिद बनवा दी। मसजिदके पीछे दूसरा केशवदेव-मन्दिर बन गया है। मन्दिरके पास पोतराकुण्ड नामक विशाल कुण्ड है। इसके पास ही कृष्ण-जन्मभूमिका मन्दिर है। यहाँ एक पुराना गङ्गाजीका मन्दिर भी है। इसी ओर भूतेश्वर महादेवके पास कंकाली टीलेपर कंकाली देवीका मन्दिर है। इसके आगे बलभद्रकुण्ड तथा बलदेवजी और जगन्नाथजीके मन्दिर हैं।

श्रीद्वारिकाधीशजी—यह नगरका सबसे प्रसिद्ध मन्दिर है। इसकी सेवा-पूजा वल्लभ-सम्प्रदायके अनुसार होती है। समय-समयपर दर्शन होते हैं। भोग लगी भोजन-सामग्री यात्री दूकानोंसे खरीद सकते हैं।

गतश्रमनारायण-मन्दिर—द्वारिकाधीश-मन्दिरके दाहिनी ओर एक मन्दिर है। इसमें श्रीकृष्ण मूर्तिके एक ओर श्रीराधा तथा दूसरी ओर कुब्जाकी मूर्ति है।

वाराह-मन्दिर—द्वारिकाधीश-मन्दिरके पीछे यह मन्दिर है।

गोविन्दजीका मन्दिर—वाराह-मन्दिरसे कुछ आगे यह मन्दिर है। इसके आगे स्वामीघाटपर बिहारीजीका मन्दिर है। इसी घाटपर गोवर्धननाथजीका विशाल मन्दिर है।

श्रीरामजीद्वारेमें श्रीराममन्दिर है और वहीं श्रीगोपालजीकी अष्टभुजी मूर्ति है। यहाँ रामनवमीको मेला लगता है। इसीके पास कीलमठ गलीमें स्वामी कीलजीकी गुफा है। इनका बेनीमाधव-मन्दिर प्रयागघाटपर है।

तुलसी-चौतरेपर श्रीनाथजीकी बैठक है। आगे चौबच्चामें वीरभद्रेश्वर-मन्दिर है। वहीं शत्रुघ्नजीका मन्दिर है। इसके पास ही गोपाल-मन्दिर है।

होली दरवाजेके पास वज्रनाभद्वारा स्थापित कंसनिकन्दन मन्दिर है। उससे आगे दाऊजीका मन्दिर है। महोलीकी पौरमें पद्मनाभजीका मन्दिर है। ये भी वज्रनाभद्वारा स्थापित है। डोरीबाजारमें गोपीनाथजीका मन्दिर है। घीयामडीमें दो राममन्दिर हैं। उनके आगे दीर्घविष्णुका मन्दिर है।

सीतलापाइसामें मथुरा देवी और गजापाइसामें दाऊजीके एक चरणका चिह्न है। रामदास-मडीमें मथुरानाथ तथा मथुरानाथेश्वर शिवके प्राचीन मन्दिर हैं। बंगालीघाटपर वल्लभ-सम्प्रदायके चार मन्दिर हैं। ध्रुवटीलेपर ध्रुवजीके चरण-चिह्न हैं। पहले श्रीनिम्बार्काचार्यके पूज्य श्रीसर्वेश्वर और विश्वेश्वर शालग्राम यहीं थे, जो अब क्रमशः सलेमाबाद और छत्तीसगढ़में विराजमान हैं।

सप्तर्षि-टीलेपर सप्तर्षियों तथा अरुन्धतीजीकी मूर्तियाँ हैं। गऊघाटपर श्रीराधा-बिहारीजीका मन्दिर है। आगे मथुराके पश्चिममें टीलेपर महाविद्यादेवीका मन्दिर है। वहाँ नीचे एक कुण्ड है, पशुपति महादेवका मन्दिर है और सरस्वती-नाला है। उसके आगे सरस्वती-कुण्ड और सरस्वती मन्दिर हैं। आगे चामुण्डा-मन्दिर है। यह चामुण्डा-मन्दिर ५१ शक्ति-पीठोंमें एक है। यहाँ सतीके केश गिरे थे, ऐसा कुछ लोग मानते हैं। यहाँसे मथुरा लौटते समय अम्बरीष-टीला मिलता है, जहाँ अम्बरीषने तप किया था। टीलेपर हनुमान्जीका मन्दिर है।

मथुरा-परिक्रमा

मथुरां समनुप्राप्य यस्तु कुर्यात् प्रदक्षिणम्।
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा॥

(वाराहपुराण १५९। १४)

जो मथुराके प्राप्त होनेपर उसकी प्रदक्षिणा करता है, उसने सातों द्वीपवाली पृथ्वीकी प्रदक्षिणा कर ली।

प्रत्येक एकादशी तथा अक्षयनवमीको मथुरा-परिक्रमा होती है। देवशयनी तथा देवोत्थानी एकादशीको

मथुरा एवं नन्दगाँव

श्रीद्वारिकाधीश-मन्दिर

श्रीकृष्ण-जन्मभूमि
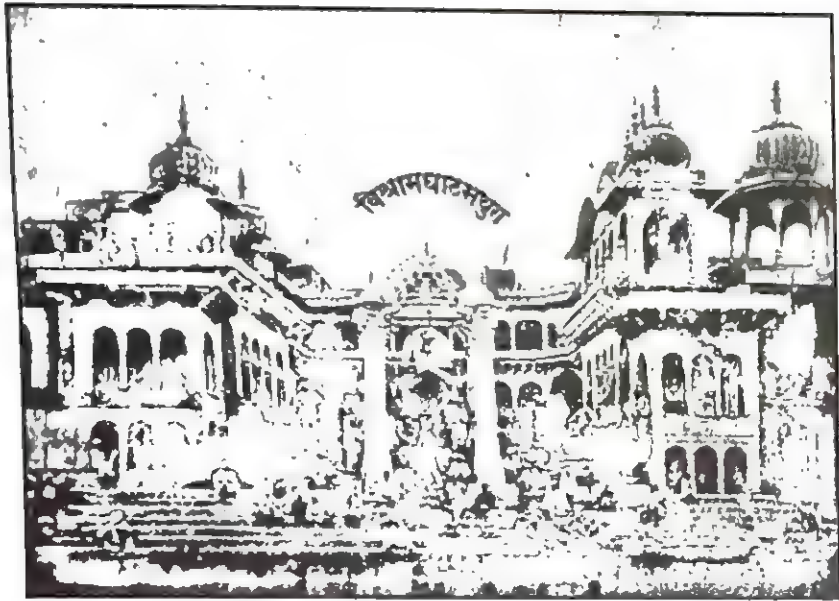
विश्रामघाट

गीता-मन्दिरका सभा-भवन
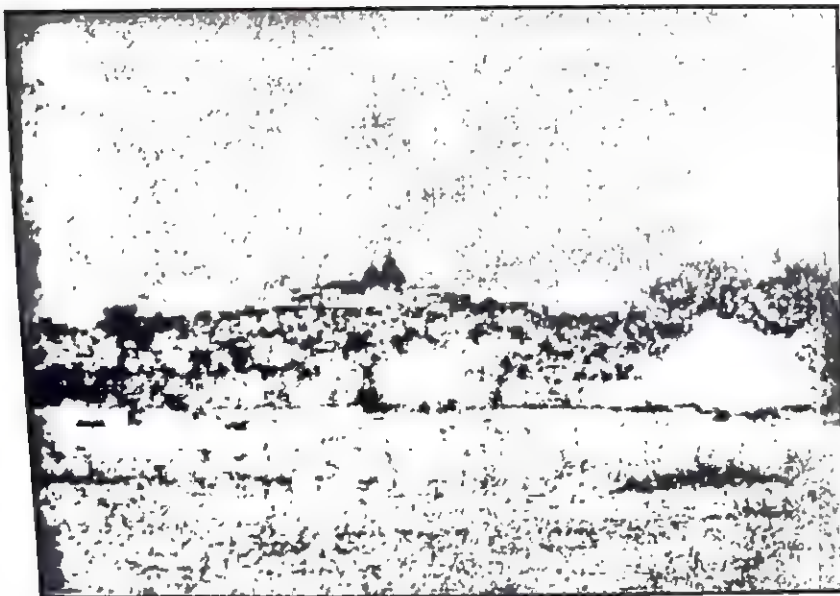
नन्दगाँवका एक दृश्य

गीता-मन्दिरका भगवद्-विग्रह

व्रजभूमिके कुछ मुख्य स्थल

मानसी गङ्गा, गोवर्धन
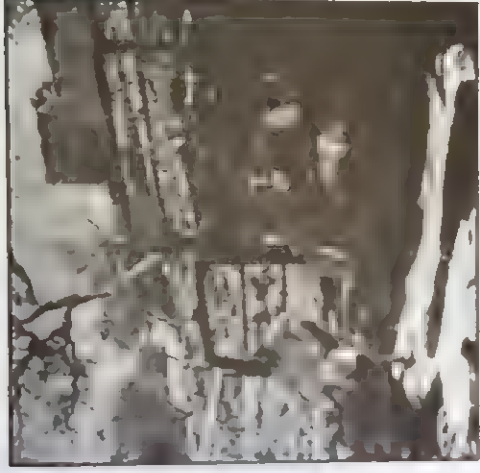
मुखारविन्द (जतीपुरा)

कुसुम-सरोवर

प्रेम-सरोवर (बरसानेके पास)
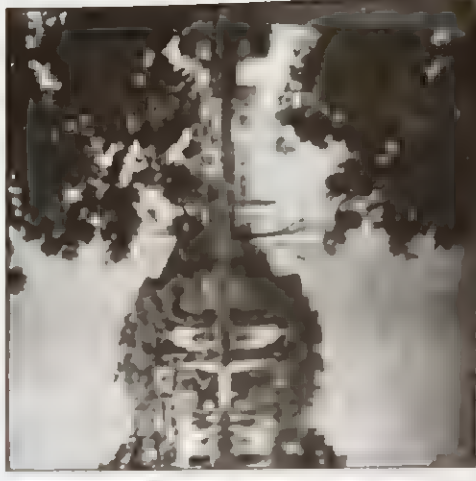
श्रीराधा-कुण्ड

श्रीकृष्ण-कुण्ड

मथुरा-वृन्दावनकी सम्मिलित परिक्रमा की जाती है। वैशाख शुक्ला पूर्णिमाको भी रात्रिमें परिक्रमा की जाती है, जिसे 'वन-विहार' कहते हैं। परिक्रमाके स्थान ये हैं—विश्रामघाट, गतश्रमनारायण-मन्दिर, कंसखार, सतीबुर्ज, चर्चिकादेवी, योगघाट, पिप्लेश्वर महादेव, योगमार्ग-वटुक, प्रयागघाट, बेनीमाधव-मन्दिर, श्यामघाट, श्यामजीका मन्दिर, दाऊजी, मदनमोहनजी, गोकुलनाथजी, कनखलतीर्थ, तिन्दुकतीर्थ, सूर्यघाट, ध्रुवक्षेत्र, ध्रुवटीला, सप्तर्षि-टीला (इसमेंसे श्वेत यज्ञभस्म निकलती है), कोटितीर्थ, रावणटीला, बुद्धतीर्थ, बलिटीला (इसमेंसे काली यज्ञभस्म निकलती है), रङ्गभूमि, रङ्गेश्वर महादेव, सप्तसमुद्रकूप, शिवताल, बलभद्रकुण्ड, भूतेश्वर महादेव, पोतराकुण्ड, ज्ञानवापी, जन्मभूमि, केशवदेव-मन्दिर, कृष्णकूप, कुब्जाकूप, महाविद्या, सरस्वतीनाला, सरस्वती-कुण्ड, सरस्वती-मन्दिर, चामुण्डा, उत्तरकोटि-तीर्थ, गणेशतीर्थ, गोकर्णेश्वर महादेव, गौतम ऋषिकी समाधि, सेनापतिघाट, सरस्वती-संगम, दशाश्वमेधघाट, अम्बरीषटीला, चक्रतीर्थ, कृष्णगङ्गा, कालिंजर महादेव, सोमतीर्थ, गौघाट, घण्टाकर्ण, मुक्तितीर्थ, कंसकिला, ब्रह्मघाट, वैकुण्ठघाट, धारापतन, वसुदेवघाट, प्राचीन विश्रामघाट, असिकुण्डा, वाराहक्षेत्र, द्वारिकाधीश-मन्दिर, मणिकर्णिका-घाट, महाप्रभु वल्लभाचार्यकी बैठक, गार्गी-सार्गी तीर्थ और विश्रामघाट। अब लोग उत्तर-दक्षिणके कई तीर्थोंको परिक्रमामें छोड़ देते हैं। परिक्रमामें मथुराके सब मुख्य दर्शनीय स्थान आ जाते हैं।

मथुराका जैनतीर्थ

मथुरा स्टेशनसे १ मीलपर चौरासी नामक ग्राम सिद्धक्षेत्र है। अन्तिम केवली श्रीजम्बूस्वामी, उनके साथ महामुनि विद्युच्चर और उनके साथके पाँच सौ अनुगत मुनिगण यहाँसे मोक्ष पधारे। उनके स्मरणमें यहाँ ५०० स्तूप बने थे। चौरासीमें जैन-मन्दिर है। मथुरा नगरमें भी ६ जैन-मन्दिर हैं और जैन-धर्मशाला है।

वृन्दावन

मथुरासे ६ मील उत्तर वृन्दावन है। किंतु रेलसे जानेपर उसकी दूरी ९ मील होती है। मथुरा छावनी स्टेशनसे छोटी लाइनकी ट्रेन मथुरा जक्शन होकर वृन्दावन जाती है। मथुरासे वृन्दावनतक मोटर-बसें भी चलती हैं और मथुराके वृन्दावन-दरवाजेसे रिक्शे-ताँगे भी मिलते हैं।

गीतामन्दिर—मथुरा-वृन्दावन-मार्गपर लगभग मध्यमें हिंदूधर्मके महान् पोषक श्रीजुगलकिशोरजी बिड़लाका बनवाया भव्य गीतामन्दिर है, जिसमें गीता-गायककी संगमरमरकी विशाल एवं सुन्दर मूर्ति स्थापित है एवं सम्पूर्ण गीता सुललित अक्षरोंमें पत्थरपर खुदी है। यहाँ प्रतिदिन प्रातः-सायं दोनों समय सुमधुर स्वरोंमें नियमित रूपसे भगवन्नाम-कीर्तन तथा पद-गायन भी होता है। ठहरनेके लिये सुन्दर तथा सुव्यवस्थित धर्मशाला भी है।

वृन्दावनमें ठहरनेके लिये बहुत-सी धर्मशालाएँ हैं। स्टेशनके पास ही मिर्जापुरवालोंकी धर्मशाला है। श्रीविहारीजीके मन्दिरके पास, भजनाश्रमके पास, श्रीरङ्गजीके मन्दिरके पास तथा और भी कई धर्मशालाएँ हैं। भक्तवर श्रीजानकीदासजी पाटोदियाद्वारा स्थापित पुराना 'भजनाश्रम' जहाँ हजारों असहाय माताएँ कीर्तन करके अन्न पाती हैं, आचार्य श्रीचक्रपाणिजीका 'नारायणाश्रम' तथा श्रीशिवभगवानजी फोगलाके अथक प्रयत्नसे निर्मित 'वृन्दावन-भजन-सेवाश्रम,' श्रीउड़ियाबाबाजीका आश्रम तथा कानपुरके सिंहानियाद्वारा बनवाया सुन्दर मन्दिर, स्वामीजी श्रीशरणानन्दजीका 'मानव-सेवासंघ-आश्रम' आदि नवीन उपयोगी स्थान हैं।

वृन्दावनकी परिक्रमा ४ मीलकी है। बहुत-से लोग प्रतिदिन परिक्रमा करते हैं।

ब्रह्मवैवर्तपुराणमें कथा है कि सत्ययुगमें महाराज केदारकी पुत्री वृन्दाने यहीं श्रीकृष्णको पतिरूपमें पानेके लिये दीर्घकालतक तपस्या की थी। श्यामसुन्दरने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिया। वृन्दाकी पावन तपोभूमि होनेसे यह वृन्दावन कहा जाता है। श्रीराधा-कृष्णकी निकुञ्ज-लीलाओंकी प्रधान रङ्गस्थली वृन्दावन ही है। उसकी अधिष्ठात्री श्रीवृन्दादेवी हैं। इसलिये भी इसे वृन्दावन कहते हैं।

दर्शनीय स्थान

परिक्रमा-क्रमसे वर्णन करें तो पहले यमुनातटपर कालियह्रद आता है, जहाँ नन्दनन्दनने कालिय नागको नाथा था। वहाँ कालियमर्दन-कर्ता भगवान्‌की मूर्ति है।

उसके आगे युगलघाट है, जहाँ युगलकिशोरजीका मन्दिर है। इसके पास ही मदनमोहनजीका मन्दिर है। श्रीसनातन गोस्वामीको प्राप्त मदनमोहनजी तो अब करौली (राजस्थान) में विराजमान हैं। अब मन्दिरमें मदनमोहनजीकी दूसरी मूर्ति है।

इसके पश्चात् महाप्रभु श्रीचैतन्यदेवके स्नेहपात्र अद्वैताचार्य गोस्वामीकी तपोभूमि अद्वैतवट है। वहीं अष्टसखियोंका मन्दिर है। उससे आगे स्वामी श्रीहरिदासजीके आराध्य श्रीबाँकेविहारीजीका मन्दिर है। इस मन्दिरकी अनेक विशेषताएँ हैं। श्रीविहारीजीके दर्शन लगातार नहीं होते, बीच-बीचमें पर्दा आ जाता है। केवल अक्षय तृतीयाको उनके चरणोंके दर्शन होते हैं। केवल शरत्पूर्णिमाको वे वंशी धारण करते हैं और केवल एक दिन श्रावण शुक्ला ३ को झूलेपर विराजमान होते हैं।

आगे श्रीहितहरिवंशजीके आराध्य श्रीराधावल्लभजीका मन्दिर है। फिर दानगली, मानगली, यमुनागली, कुञ्जगली तथा सेवाकुञ्ज हैं। सेवाकुञ्जमें रङ्गमहल नामक छोटा मन्दिर है, जिसमें श्रीराधा-कृष्णके चित्रपट हैं। इसमें ललिता-बाग है। सेवाकुञ्जके सम्बन्धमें यह प्रसिद्ध है कि वहाँ रात्रिमें प्रतिदिन साक्षात् भगवान् श्रीकृष्णकी रास-लीला होती है। इसीलिये वहाँ रात्रिमें कोई रहने नहीं पाता। पशु-पक्षीतक सायंकाल होते-होते वहाँसे चले जाते हैं।

शृङ्गारवटमें श्रीराधिकाजीकी बैठक है। लोई-बाजारमें सवा मनके शालग्रामजीका मन्दिर है। आगे साह-विहारीजीका संगमरमरका मन्दिर है। साह-विहारीजी लखनऊके नगरसेठ लाला कुंदनलालजी फुंदनलालजीके आराध्य हैं—जो अपनी अपार सम्पत्तिको त्यागकर वृन्दावनमें अत्यन्त विरक्तरूपमें रहने लगे थे और ललितकिशोरी एवं ललितमाधुरीके नामसे जिनके सुमधुर पद उपलब्ध हैं। उसके पास निधिवन है, जहाँ स्वामी हारदासजी विराजते थे और जहाँ श्रीबाँकेबिहारीजी प्रकट हुए। श्रीबाँकेबिहारीजीरूप परम निधिके प्राकट्यका स्थल होनेसे ही इसे निधिवन कहते हैं।

निधिवनके पास ही श्रीराधारमणजीका मन्दिर है। ये श्रीश्रीचैतन्यदेवके कृपापात्र श्रीगोपालभट्टजीके आराध्य हैं। यह श्रीविग्रह शालग्राम-शिलासे स्वतः प्रकट हुआ है। इसके आगे श्रीगोपीनाथजीका मन्दिर है। श्रीगोपीनाथजीकी प्राचीन मूर्ति मुसल्मानी उपद्रवके समय जयपुर चली गयी और वहीं विराजमान है। अब दूसरा श्रीविग्रह है।

वंशीवटके पास श्रीगोकुलानन्द-मन्दिर है। वंशीवटमें श्रीराधाकृष्णके चरण-चिह्न हैं। उसके आगे महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक है। वहीं आगे श्रीगोपेश्वरनाथ महादेवका मन्दिर है। इनके दर्शनके बिना वृन्दावन यात्रा पूर्ण नहीं मानी जाती। इस मन्दिरसे आगे ब्रह्मचारीजी (श्रीगिरिधारीदास) के श्रीराधा-कृष्णका मन्दिर है।

आगे विस्तृत स्थानपर श्रीलालाबाबूका मन्दिर है। इसके पीछेकी ओर जगन्नाथघाटपर श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर है। यहाँकी मूर्ति कलेवर परिवर्तनके समय श्रीजगन्नाथपुरीसे लायी गयी थी।

लालाबाबूके मन्दिरके पास सम्मुख दिशामें ब्रह्मकुण्ड है। यहीं श्रीकृष्णचन्द्रने गोपोंको ब्रह्म-दर्शन कराया था। इससे लगा हुआ श्रीरङ्गजीका मन्दिर है। दक्षिण भारतकी शैलीका, श्रीरामानुज-सम्प्रदायका यह विशाल एवं भव्य मन्दिर है। इस मन्दिरके उत्सवोंमेंसे पौषका ब्रह्मोत्सव तथा चैत्रका वैकुण्ठोत्सव मुख्य हैं।

श्रीरङ्गजीके मन्दिरके सम्मुख श्रीगोविन्ददेवजीका प्राचीन मन्दिर है। श्रीगोविन्दजी वज्रनाभद्वारा स्थापित थे, जिनकी मूर्ति श्रीरूपगोस्वामीको मिली थी। यवन-उपद्रवके समय यह मूर्ति जयपुर चली गयी और वहाँके राजमहलमें विराजमान है। इसके पीछे अब गोविन्ददेवजीका दूसरा मन्दिर है।

श्रीरङ्गजीके मन्दिरके पीछे ज्ञानगुदड़ी स्थान है। यह विरक्त महात्माओंकी भजनस्थली है, अब वहाँ एक श्रीराम-मन्दिर है और टट्टीस्थानका मन्दिर है। कहते हैं उद्धवजीका श्रीगोपीजनोंके साथ संवाद यहीं हुआ था।

मथुराकी सड़कपर जयपुर महाराजका बनवाया विशाल मन्दिर है। उसके सामने तड़ासके राजा वनमालीदासका बनवाया मन्दिर है। इसे 'जमाई बाबू' का मन्दिर कहते हैं। राजाकी पुत्री इन्हें अपना पति मानती थी। अविवाहित अवस्थामें ही उसका देहान्त हो गया था।

वृन्दावन मन्दिरोंका नगर है! वहाँ प्रत्येक गलीमें, घर-घरमें मन्दिर हैं। उन सब मन्दिरोंका वर्णन कर पाना कठिन है। कुछ मुख्य मन्दिरोंकी ही चर्चा यहाँ की गयी है।

वृन्दावन

श्रीराधावल्लभजी

श्रीरङ्ग-मन्दिर

साहजीका मन्दिर

श्रीगोविन्ददेव-मन्दिर

सेवाकुञ्ज

निधिवन

व्रजकी कुछ झाँकियाँ

श्रीराधारमणजी, वृन्दावन

श्रीराधा-दामोदरजी, वृन्दावन

श्रीचैतन्यमहाप्रभु, भ्रमरघाट, वृन्दावन

श्रीलाडिलीजीका मन्दिर, बरसाना
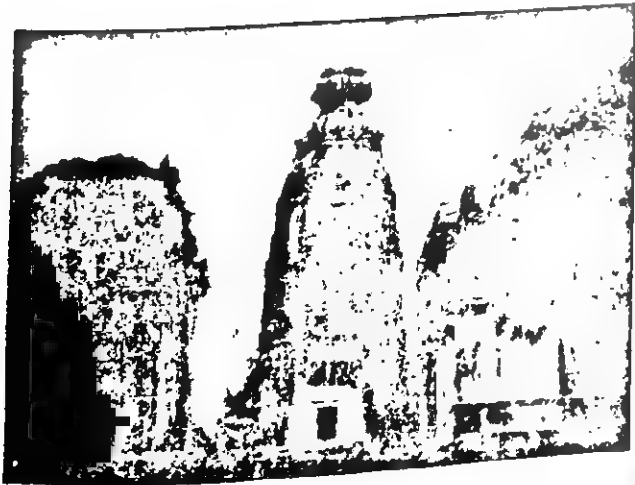
श्रीमदनमोहनजीका मन्दिर, वृन्दावन

श्रीठकुरानीघाट, गोकुल

यह स्मरण रखनेकी बात है कि मथुरा-वृन्दावनपर विधर्मियोंके आक्रमण बार-बार हुए हैं। प्राचीनकालसे हूण, शक आदि जातियाँ इसे नष्ट करती रही हैं। जैनोंमें भी जब प्रबल संकीर्णताका ज्वार आया था—मथुरा उनसे आक्रान्त हुई थी। उसके पश्चात् तीन बार यवनोंने इस पुनीत तीर्थको ध्वस्त किया। इसीका परिणाम यह है कि यहाँ प्राचीन मन्दिर रह नहीं गये हैं। वृन्दावनमें ५०० वर्षसे पुराना कोई मन्दिर नहीं है। व्रजमें प्राचीन तो भूमि है, श्रीयमुनाजी हैं और गिरिराज गोवर्धन हैं।

गोकुल

यह स्थान मथुरासे ६ मील यमुनाके दूसरे तटपर है। पक्के पुलसे यमुना पार करनेपर ताँगा-रिक्शा तथा बस भी मिलती है। यहाँ वल्लभ-सम्प्रदायके कई मन्दिर हैं। यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशालाएँ भी हैं।

महावन

गोकुलसे एक मील दूर है। यहाँ नन्दभवन है। जन्माष्टमीको यहाँ मेला लगता है।

बलदेव

महावनसे ६ मीलपर यह गाँव है। यहाँ दाऊजीका प्रसिद्ध मन्दिर है। क्षीरसागर नामक सरोवर है।

नन्दगाँव

मथुरासे यह स्थान २९ मील दूर है। मथुरासे नन्दगाँव-बरसाने मोटर-बसें चलती हैं। गोवर्धनसे भी नन्दगाँव-बरसाना मोटर-बसद्वारा आ सकते हैं। यहाँ एक पहाड़ीपर श्रीनन्दजीका मन्दिर है—जिसमें नन्द, यशोदा, श्रीकृष्ण-बलराम, ग्वालबाल तथा श्रीराधाजीकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ नीचे पामरी-कुण्ड नामक सरोवर है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये छोटी धर्मशालाएँ हैं।

बरसाना

यह स्थान मथुरासे ३५ मील दूर है। इसका प्राचीन नाम बृहत्सानु, ब्रह्मसानु या वृषभानुपुर है। यह पूर्णब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णकी ह्लादिनी-शक्ति एवं प्राणप्रियतम नित्यनिकुञ्जेश्वरी श्रीराधाकिशोरीकी पितृभूमि है। यह लगभग दो सौ फुट ऊँचे एक पहाड़की ढालपर बसा हुआ है, जो दक्षिण-पश्चिमकी ओर चौथाई मीलतक चला गया है। इसी पहाड़ीका नाम बृहत्सानु या ब्रह्मसानु है। इस पहाड़ीको साक्षात् ब्रह्माजीका स्वरूप मानते हैं, जिस प्रकार नन्दगाँवकी पहाड़ीको शिवजीका एवं गिरिराज गोवर्द्धनको विष्णुका स्वरूप माना गया है। इसके चार शिखर ही ब्रह्माजीके चार मुख माने गये हैं। इन्हीं शिखरोंमेंसे एकपर मोरकुटी (जहाँ श्यामसुन्दर मोर बनकर श्रीराधाकिशोरीको रिझानेके लिये नाचे थे), दूसरेपर मानगढ़ (जहाँ श्यामसुन्दरने मानवती किशोरीको मनाया था), तीसरेपर विलासगढ़ (जो श्रीमतीका विलासगृह है) तथा चौथे शिखरपर दानगढ़ है (जहाँ प्रिया-प्रियतमकी दानलीला सम्पन्न हुई थी और श्यामसुन्दरने श्रीकिशोरी तथा उनकी सखियोंका दधि-माखन लूट-लूटकर खाया था और अपने ग्वालबालोंको खिलाया था)। बरसानेके दूसरी ओर एक छोटी पहाड़ी और है, इन दोनों पहाड़ोंकी द्रोणी (खोह) में बरसाना ग्राम बसा है। दोनों पर्वत जहाँ मिलते हैं, वहाँ एक ऐसी तंग घाटी है कि अकेला मनुष्य भी उसमेंसे कठिनाईसे निकल सकता है। दोनों पहाड़ोंका अङ्गरूप नावके-से आकारका एक ही पत्थर है, जो धरतीपर जम रहा है। इसकी विचित्रता देखते ही बनती है। यहीं श्यामसुन्दरने गोपियोंको घेरा था। इसीको साँकरी खोर (संकीर्ण पथ) कहते हैं। यहाँ भादों सुदी अष्टमी (श्रीराधाकिशोरीकी जन्मतिथि) से चतुर्दशीतक बहुत सुन्दर मेला होता है। इसी प्रकार फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, नवमी एवं दशमीको होलीकी लीला होती है।

पहाड़पर कई मन्दिर हैं, जिनमें प्रधान मन्दिर सेठ हरगुलालजी बेरीवालेके द्वारा पुनर्निर्मित श्रीलाड़िलीजीका प्राचीन एवं विशाल मन्दिर है। पहाड़ीके नीचेसे जब इस मन्दिरपर दृष्टि जाती है, तब यह बहुत ही मनोहर लगता है। सीढ़ियोंपर चढ़कर जब मन्दिरको जाते हैं, तब रास्तेमें वृषभानुजी (राधाकिशोरीके पिता) महीभानुजीका मन्दिर मिलता है। सीढ़ियोंके नीचे पर्वतके मूलमें दो मन्दिर और हैं—एक राधाकिशोरीकी प्रधान अष्टसखियों (ललिता, विशाखा, चित्रा, इन्दुलेखा, चम्पकलता, रङ्गदेवी, तुङ्गविद्या एवं सुदेवी) का है तथा दूसरा वृषभानुजीका है, जिसमें वृषभानुजीकी बड़ी विशाल एवं पूरी मूर्ति है, एक ओर श्रीकिशोरी सहारा दिये खड़ी हैं, दूसरी ओर उनके बड़े भाई तथा श्यामसुन्दरके प्रिय सखा श्रीदामा खड़े हैं।

यहाँ भानोखर (भानुपुष्कर) नामका सुन्दर पक्का

तालाब है, जो मूलतः वृषभानुजीका बनाया हुआ कहा जाता है। उसके समीप ही राधाकिशोरीकी माता श्रीकीर्तिदाजीके नामसे कीर्तिकुण्ड नामका तालाब बना हुआ है। भानोखरके किनारे एक जलमहल है, जिसके दरवाजे सरोवरमें जलके ऊपर खुले हुए हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ दो सरोवर और हैं—एकका नाम मुक्ताकुण्ड और दूसरेका पीरी पोखर (प्रियाकुण्ड)। पीरी पोखरमें कहते हैं प्रियाजी अपने श्रीअङ्गोंका उद्वर्तन करके स्नान करती थीं। यहाँ यह भी प्रसिद्ध है कि श्रीकिशोरीजीने (विवाहके पीछे) अपने पीले हाथ यहीं धोये थे। इसीसे इसका नाम पीरी (पीली) पोखर हो गया। पास ही चिकसौली (चित्रशाला) ग्राम है। बरसाना ग्राम किसी समय अत्यन्त समृद्ध था, मुसल्मानोंके क्रूर आक्रमणोंका शिकार होकर यह भी नष्ट-भ्रष्ट हो गया। इस समय वहाँके लोग बहुत दीन अवस्थामें हैं।

गोवर्धन

मथुरासे गोवर्धन १६ मील और बरसानेसे १४ मील दूर है। मथुरासे यहाँतक बसें चलती हैं। गोवर्धन एक छोटी पहाड़ीके रूपमें है, जिसकी लम्बाई लगभग ४ मील है। ऊँचाई बहुत थोड़ी है, कहीं-कहीं तो भूमिके बराबर है। गिरिराज गोवर्धनकी परिक्रमा बराबर होती है। कुल परिक्रमा १४ मीलकी है। बहुत-से लोग दण्डवत् करते हुए परिक्रमा करते हैं। एक स्थानपर १०८ दण्डवत् करके तब आगे बढ़ना और इसी क्रमसे लगभग तीन वर्षमें परिक्रमा पूरी करना यहाँ बहुत बड़ा तप माना जाता है। दो-चार साधु प्रायः हर समय १०८ दण्डवती परिक्रमा करनेवाले रहते ही हैं।

गोवर्धन बस्ती प्रायः मध्यमें है। उसमें मानसी गङ्गा नामक एक बड़ा सरोवर है। परिक्रमा-मार्गमें गोविन्दकुण्ड, राधाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, कुसुमसरोवर आदि अनेक सुंदर सरोवर मिलते हैं। इन सब पवित्र तीर्थोंकी नामावली व्रज-परिक्रमा-वर्णनमें दी जा रही है।

व्रज-परिक्रमा

व्रज ८४ कोस कहा जाता है। प्रतिवर्ष वर्षा-शरद्में कई परिक्रमा-मण्डलियाँ व्रज-परिक्रमाके लिये निकलती हैं। इनमें एक यात्रा 'रामदल' के नामसे विख्यात है। इस दलमें प्रायः पुरुष एवं साधु होते हैं। १६ दिनमें यह दल परिक्रमा कर आता है। दूसरी यात्रा वल्लभकुलके गोस्वामियोंकी है। इसमें डेढ़ महीनेके लगभग लगता है। इसमें गृहस्थ अधिक होते हैं। फाल्गुनमें भी एक यात्रा होती है, इसमें भी गृहस्थ अधिक होते हैं। परिक्रमाके मार्गके क्रमसे व्रजके तीर्थोंकी नामावली नीचे दी जा रही है—

१. मधुवन—मथुराका वर्णन पहिले दिया जा चुका है। वहाँसे यह स्थान ४.५ मील दूर है। यहाँ कृष्णकुण्ड तथा चतुर्भुज, कुमरकल्याण और ध्रुवके मन्दिर हैं। लवणासुरकी गुफा है। श्रीवल्लभाचार्यकी बैठक है। यहाँ भाद्र कृष्णा ११ को मेला लगता है।

२. तालवन—इसे तारसी गाँव कहते हैं। यहाँ बलरामजीने धेनुकासुरको मारा था। यहाँ बलभद्रकुण्ड और बलदेवजीका मन्दिर है।

३. कुमुदवन—कपिलमुनिका मन्दिर तथा श्रीठाकुरजी, श्रीवल्लभाचार्यजी एवं उनके पुत्र गुसाईंजी (श्रीविट्ठलनाथजी) की बैठकें हैं। विहारकुण्ड है। यहाँसे लौटकर मधुवन आना पड़ता है।

४. गिरिधरपुर—यहाँ चामुण्डा देवी हैं।

५. शंतनुकुण्ड—इसे सतोहा गाँव कहते हैं। यहाँ शंतनुकुण्ड, गिरिधारीजी, बलदेवजी और शंतनुके मन्दिर हैं। भाद्र शु० ६ तथा प्रत्येक रावावारी सप्तमीको यहाँ मेला लगता है।

६. दतियागाँव—कहा जाता है कि द्वारिकासे यहाँ आकर श्रीकृष्णने भागते हुए दन्तवक्त्रको मारा था।

७. गन्धर्वेश्वर—गणेशरा गाँव है। यहाँ गन्धर्वकुण्ड है।

८. खेचरी गाँव—पूतना यहींकी थी।

९. बहुलावन—वाठी गाँव है। यहाँ कृष्णकुण्ड तथा श्रीकृष्ण बलराम एवं बहुला गौके मन्दिर हैं। श्रीवल्लभाचार्य जीकी बैठक है। इसके आगे सकना गाँवमें श्रीबलभद्रकुण्ड और गोरे दाऊजीका मन्दिर है।

१०. तोषगाँव—श्रीकृष्णके सखा तोषकी जन्मभूमि है। तोष-कुण्ड है।

११. विहारवन—यहाँ विहारवन, कदम्बखण्डी तथा चरणचिह्न हैं।

१२. जाखिन—(यक्षहन् गाँव) यहाँ रोहिणीकुण्ड और बलदेवजीका मन्दिर है।

१३. मुखराइ—(मोक्षराज-तीर्थ) राधाकिशोरीकी नानी

मुखरादेवीका मन्दिर है।

१४. रारगाँव—(बहुलावनसे यहाँ आनेका सीधा मार्ग भी है।) बलभद्रकुण्ड, बलभद्र-मन्दिर और कदम्ब-खण्डी यहाँके दर्शनीय स्थान हैं।

१५. जसोदी गाँव—यहाँ सूर्यकुण्ड है।

१६. बसोदी गाँव—वसन्तकुण्ड, ललिताकुण्ड, राजकदम्ब वृक्षमें मुकुटका चिह्न एवं वट-वृक्ष—ये यहाँके दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ श्रीराधाकृष्णने प्रथम झूला-क्रीड़ा की थी।

१७. राधाकुण्ड—राधाकुण्ड और कृष्णकुण्ड परस्पर मिलते हैं। श्रीहितहरिवंशजी, श्रीवल्लभाचार्यजी, श्रीगुसाईंजी तथा उनके पुत्र श्रीगोकुलनाथजीकी बैठकें हैं। श्रीगोविन्ददेव (गिरिराजजीकी जिह्वाके दर्शन), पाण्डव-श्रीकृष्ण (वृक्षरूप) तथा अनेक मन्दिर हैं। इसके पास ही वह स्थान है, जहाँ श्रीकृष्णचन्द्रने अरिष्टासुरको मारा था। उस गाँवको अब अड़ींग कहते हैं।

वज्रकुण्ड, विशाखाकुण्ड, ललिताकुण्ड, अष्ट सखियोंके कुण्ड, गोपीकूप, और पासमें उद्धवकुण्ड, नारदकुण्ड, ग्वालपोखरा, रत्नसिंहासन एवं किलोलकुण्ड—ये तीर्थ राधाकुण्ड ग्रामकी सीमामें ही पड़ते हैं। राधाकुण्ड भी श्रीराधाकृष्णका प्रधान विहारस्थल है।

१८. गोवर्धन—राधाकुण्डसे यहाँ आते समय पहले कुसुम-सरोवर पड़ता है। बस्तीमें मानसी गङ्गा हैं। हरदेवजीका मन्दिर, चक्रेश्वर महादेव (वज्रनाभद्वारा स्थापित), श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक, श्रीगुसाईंजीकी बैठक, चरणचिह्न और मानसीदेवीके दर्शन हैं।

यहाँसे आगे बसई गाँवमें बसईकुण्ड और ब्रह्मकुण्ड हैं; किंतु उधर यात्रा नहीं जाती। मानसीगङ्गापर गिरिराजका मुखारविन्द है। आषाढ़ी पूर्णिमा और दीपावलीको यहाँ मेला लगता है। मानसीगङ्गाके पश्चिम सकीतरा गाँव है। यहाँ चन्द्रावलीजी ब्याही गयी थीं।

मानसीगङ्गाके पास श्रीलक्ष्मीनारायणका मन्दिर है। यहाँ गोरोचन, धर्मरोचन, पापमोचन, ऋणमोचन तथा निवृत्तिकुण्ड नामक कुण्ड हैं। दानघाटीमें श्रीदानरायजीका मन्दिर है।

१९. जमनाउतो गाँव—यमुनाजीका निकुञ्ज है। अष्टछापके प्रसिद्ध भक्त-कवि श्रीकुम्भनदासजी यहाँ रहते थे।

२०. अड़ींग—बलदेवजीका मन्दिर और बलभद्र-कुण्ड है।

२१. माधुरीकुण्ड—माधुरीमोहन-मन्दिर है।

२२. भवनपुरा—भवानीमायाका मन्दिर है।

२३. पारासौली—(परम रासस्थली) रासचबूतरा, चन्द्रविहारीका मन्दिर, श्रीवल्लभाचार्यजी, गुसाईंजी (श्रीविट्ठलनाथजी) तथा श्रीगोकुलनाथजीकी बैठकें, श्रीनाथजीका जलघड़ा, इन्द्रके नगारे (दुन्दुभिके आकारके दो पत्थर हैं, जिन्हें बजानेपर नगारेका-सा शब्द होता है) तथा चन्द्रसरोवर हैं। श्रीवल्लभाचार्यजीके मतानुसार यही वृन्दावन है। परम रासस्थली भी यही है।

२४. पैठो गाँव—यहाँ श्रीकृष्ण गुफा, चतुर्भुजनाथजीका मन्दिर, नारायणसरोवर, लक्ष्मीकूप, ऐंठा कदम्ब, क्षीरसागर तथा बलभद्रकुण्ड हैं।

२५. बछगाँव—बछड़े चरानेका स्थान है। कनकसागर, सहस्रकुण्ड, रामकुण्ड, अड़वारोकुण्ड, रावरीकुण्ड तथा सूर्यकुण्ड—ये ६ कुण्ड हैं। रामकुण्डपर माखनचोर-मन्दिर तथा रावरीकुण्डपर वत्सविहारी मन्दिर है।

२६. आन्यौर—श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक तथा गौरीकुण्ड है। यहाँ श्रीगिरिराजपर दही-कटोरा, टोपी, मोजा आदिके चिह्न दीखते हैं। संघर्षकुण्ड तथा बलदेवजीका मन्दिर है। बाजनी शिला है, जिसे अँगुली या छड़ीसे ठोकनेसे शब्द होता है। इसके आगे केसरीकुण्ड, गन्धर्वकुण्ड और गोविन्दकुण्ड है। गोविन्दकुण्डपर ही कामधेनुने श्रीकृष्णका अभिषेक किया था। यहाँ चतुरानागाके स्थानमें श्रीनाथजीके दर्शन हैं। गिरिराजपर छड़ीका चिह्न है। मुकुट तथा हस्ताक्षर हैं ठाकुरजीके। इससे दक्षिण कुछ दूरसे देखनेपर गिरिराजपर रेखाओंसे बने वृषभारूढ़ महादेव तथा श्रीराधा-कृष्णके दर्शन होते हैं। पाससे देखनेपर नहीं दीखते। इसके आगे सिन्दूरी शिला है, जिसपर हाथ लगानेसे लालिमा आ जाती है। आगे गिरिराजका अन्तिम भाग है, जिसे पूँछरी कहते हैं। यहाँ अप्सराकुण्ड, नवलकुण्ड, पूँछरीका लौठा, रामदासजीकी गुफा और भूत बने हुए कृष्णदासजीका कुआँ है।

२७. श्यामढाक—गोपीतलाई, गोपसागर, श्यामढाक, ठाकुरजीका मन्दिर तथा जलघड़ा—ये यहाँके प्रधान दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ आस-पास अनेक भगवल्लीलास्थल

हैं। चरणघाटीमें भगवान्‌के, कामधेनुके, ऐरावतके तथा उच्चैःश्रवा घोड़ेके चरण चिह्न हैं। ढूक बलदेवजीका मन्दिर है। काजलीशिला (छूनेसे हाथको काला करनेवाली), सुरभीकुण्ड, ऐरावतकुण्ड और अष्टछापके कवि एवं भगवान्‌के प्रिय सखा श्रीगोविन्द स्वामीकी कदम्बखण्डी (कदम्बका सघन वन, जहाँ क्यारियाँ बनी हैं), गुफा, हरजूकी पोखर, हरजूकुण्ड आदि स्थान हैं।

२८. जतीपुरा—यहाँ श्रीवल्लभाचार्यजीके वंशजोंकी सात गद्दियाँ हैं, श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक है*। अन्नकूटका उत्सव यहाँ प्रधान है। यहाँ भी गिरिराजका मुखारविन्द कहा जाता है। यहाँ नाभि-चिह्न एवं श्रीनाथजीके प्रकट होनेका स्थान है। गिरिराजमें कई गुफाएँ हैं। नीचे तीज-चबूतरा और दण्डवती शिला है।

२९. रुद्रकुण्ड—बूढ़े महादेवका मन्दिर, सूर्यकुण्ड, बिलछूवन, कन्दुकक्रीड़ाका स्थान, श्रीराधिकाजीकी बैठक, जान-अजानवृक्ष तथा पूजनी शिला है।

३०. गाँठोली गाँव—गुलालकुण्ड, श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक, शय्यामन्दिर, टौककोधनो, बैजगाँव, बलभद्रकुण्ड तथा रेवतीकुण्ड हैं।

३१. डीग—दाऊजीका मन्दिर और रूपसागर है।

३२. नीमगाँव—यहाँ श्रीनिम्बार्काचार्य निवास करते थे। दूसरा नीमगाँव महावनके पास है। कुछ लोगोंके मतसे महावनके पास नीमगाँवमें श्रीनिम्बार्काचार्यका जन्म हुआ था।

३३. पाडरगाँव—पाडरगङ्गा हैं।

३४. परमदरे गाँव—इसे 'प्रमोदवन' भी कहते हैं। श्रीकृष्णकुण्ड तथा श्रीदामा-मन्दिर हैं।

३५. बहज गाँव—इन्द्रने यहाँ श्रीकृष्ण-स्तवन किया था। वेदशिरा तथा मुनिशीर्ष गाँव हैं।

३६. आदिबदरी—श्यामसुन्दरने यहाँ गोपोंको बदरी-नारायणके दर्शन कराये थे। सेऊगाँव, नयनसरोवर, अलखगङ्गा, खोह, बड़े बदरी, मानसरोवर, नारायण-मन्दिर, व्यास-बदरीनाथ-मन्दिर तथा तप्तकुण्ड—ये आस-पासके तीर्थ हैं। श्वेतपर्वत, सुगन्धि शिला, नीलघाटी और आनन्दघाटी—ये भी समीप हैं। इन स्थानोंकी दूरियाँ पत्थरोंमें खुदी हैं वहाँ।

३७. इंद्रोली गाँव—इन्दुलेखाजीका गाँव है। इन्दु-लेखा-निकुञ्ज, इन्दुकूप, इन्दुकुण्ड हैं।

३८. कामवन—इसे काम्यकवन भी कहते हैं। यहाँ गोविन्ददेवजीके मन्दिरमें वृन्दादेवीका मन्दिर है। यहाँ ८४ तीर्थ कहे जाते हैं, जिनमेंसे कुछके नाम इस प्रकार हैं—मधुसूदन-कुण्ड, यशोदाकुण्ड, सेतुबन्ध रामेश्वर, चक्रतीर्थ, लङ्कापलङ्काकुण्ड, लुकलुककुण्ड (श्यामकुण्ड), लुकलुककन्दरा, चरणपहाड़ी (चरणचिह्न), महोदधिकुण्ड, छटंकी-पँसेरी, रत्नसागर, ललिताबावड़ी, नन्दकूप, नन्दबैठक, मोतीकुण्ड, देवीकुण्ड, गयाकुण्ड, गदाधर-मन्दिर, प्रयाग-कुण्ड, काशीकुण्ड, गोमतीकुण्ड, पञ्चगोपकुण्ड, घोषरानी-कुण्ड, यशोदाजीका पीहर, गोपीनाथजीका मन्दिर, चौरासी खंभे, गोपीनाथजी, गोविन्ददेवजी, मदनमोहनजी एवं राधावल्लभजीके मन्दिर, गोकुलचन्द्रमाजी, नवनीतप्रियाजी, मदनमोहनजी एवं श्वेतवाराहके मन्दिर, सूर्यकुण्ड, गोपालकुण्ड, राधाकुण्ड, शीतलाकुण्ड, ब्रह्माजीका मन्दिर, ब्रह्माकुण्ड, श्रीकुण्ड, श्रीवल्लभाचार्यजी, श्रीविट्ठलनाथजी तथा गोकुलनाथजीकी बैठकें, खिसलनी शिला, कामसागर, व्योमासुरकी गुफा, कठलामुकुट तथा हाथके चिह्न, नीचे उतरकर श्रीबलदेवजीके बायें चरणका चिह्न, भोजनथाली (पर्वतपर स्वतः बनी), भोग-कटोरा, कृष्णकुण्ड, चरणकुण्ड, गरुड़कुण्ड, रामकुण्ड, राममन्दिर, अघासुरकी गुफा, कामेश्वर महादेव (वज्रनाभद्वारा स्थापित), चन्द्रभागाकुण्ड, वाराहकुण्ड, पाण्डव मन्दिर, चारों युगोंके महादेव, धर्मकुण्ड, धर्मकूप, पञ्चतीर्थ, मनकामनाकुण्ड, इन्द्र-मन्दिर, विमलकुण्ड, हिंडोलास्थान, सुनहरी कदम्बखण्डी, रासमण्डल-चबूतरा, कुञ्जमें जल-शय्या, विहारस्थान, यावकके चिह्न आदि तीर्थ हैं। (इनमें अनेक कुण्ड अब लुप्त हो गये हैं।)

३९. कनवारो गाँव—कर्ण-वेध हुआ था यहाँ श्रीकृष्ण बलरामका। कर्णकुण्ड, सुनहरी कदम्बखण्डी, पनिहारीकुण्ड, कृष्णकुण्ड, ठाकुरजीकी बैठक तथा काका वल्लभजीकी बैठक है।

४०. चित्र-विचित्र शिला—रेखाओंके चिह्न, ५६ कटोरोंके चिह्न, राधाजीके चरणचिह्न, मानिकशिला और देहकुण्ड हैं।

४१. ऊँचोगाँव—यह श्रीबलदेवजीकी क्रीड़ा-भूमि है। इसे श्रीराधा-कृष्णका विवाहस्थान तथा श्रीललिताजीका

* आचार्योंने जहाँ श्रीमद्भागवतका सप्ताह-पारायण किया हो, वहीं उनकी बैठक मानी गयी है।

स्थान भी कहा जाता है। भक्तवर श्रीनारायण भट्टजी यहींके थे। यहाँ सयोगतीर्थ तथा श्रीबलदेव-रासमण्डल हैं। इससे आगे भानोखर, वृषभानुकुण्ड, रावड़ीकुण्ड, पाँवड़ीकुण्ड, शीतलकुण्ड, तिलककुण्ड, ललिताकुण्ड, विशाखाकुण्ड, कुहककुण्ड, मोरकुण्ड, जलविहार-कुण्ड, दोहनीकुण्ड, नौवारीचौवारीकुण्ड, सूर्यकुण्ड तथा रत्नकुण्ड हैं।

४२. डभारो गाँव—चम्पकलताजीका गाँव है।

४३. बरसाना—इस पहाड़ीको ब्रह्माजीका स्वरूप मानते हैं। यहाँ मोरकुटी, मानगढ़, विलासगढ़ तथा साँकरी खोर हैं। यहाँ भाद्र शुक्ला ८ से १४ तक मेला तथा फाल्गुन शुक्ला ८ से १० तक होलीका मेला होता है। यहाँ दिल्लीके श्रीबिहारीलालजी पोद्दारकी बनवायी हुई एक सुन्दर धर्मशाला है।

४४. गहवर (गह्वर) वन—यह बहुत ही रमणीक स्थान है। शङ्खका चिह्न, महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक, दानगढ़ तथा गायके स्तनोंका चिह्न—ये यहाँके मुख्य दर्शनीय स्थान हैं। दानगढ़में जयपुरके महाराजा माधोसिंहजीका बनवाया हुआ विशाल एवं भव्य मन्दिर है। यहाँ पत्थरकी कारीगरी देखने योग्य है।

४५. प्रेमसरोवर—यह एक विशाल एवं सुन्दर सरोवर है, यहाँ श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक तथा रामगढ़निवासी सेठ घनश्यामदासजीके पुत्र सेठ लक्ष्मीनारायणजी पोद्दारका बनवाया हुआ श्रीराधागोपालजीका मन्दिर है। मन्दिरमें एक संस्कृत-पाठशाला तथा अन्नसत्र है। प्रेमसरोवर बरसाने एवं नन्दगाँवके बीचमें है। यहाँ भादों एवं फाल्गुनमें बड़े मेले होते हैं। श्रीराधागोपालजीके विषयमें मन्दिरके वर्तमान मालिक सेठ कन्हैयालालजी पोद्दारद्वारा रचित एक मनोहर सवैया है:—

उर आवत हे नँदलाल इतै अलि आत रहीं वृषभानुदुलारी।
बिच प्रेमसरोबर भेंट भई, यह प्रेम-निकुंज नवीन निहारी॥
चित चाहतु है इतही रहिये, यह कीन्हि बिनय पिय सौं जब प्यारी।
तब नित्य निवास कियो इत है मिलि राधेगुबिंद निकुंजबिहारी॥

४६. संकेत—श्रीराधा-कृष्णका मिलनस्थान। रास-मण्डल-चबूतरा, झूलास्थान, रङ्गमहल, शय्या-मन्दिर, विह्वलादेवी, विह्वलकुण्ड, संकेतविहारी-मन्दिर, श्रीवल्लभा-चार्यजीकी बैठक, श्रीराधारमणजीका मन्दिर और श्रीचैतन्य-महाप्रभुकी बैठक है।

४७. रीठौरागाँव—यह चन्द्रावलीजीका गाँव है। चन्द्रावलीकुण्ड, चन्द्रावली-बैठक, चन्द्रावली-कुञ्जभवन, श्रीठाकुरजीकी बैठक, श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक, यशोदामन्दिर, ललितामन्दिर, ललिताकुण्ड, रासमण्डल-चबूतरा, हिंडोला स्थान, विशाखाजीकी कुञ्ज, विशाखाकुण्ड, विशालकुण्ड, कदम्बकुञ्ज, मधुसूदनकुण्ड, मोहनकुण्ड, हाऊ-बिलाऊ, दधि-मन्थन-मठ, पद्मतीर्थ, देलकुण्ड, पनिहारी-गाँव, पनिहारीकुण्ड, चरण-पहाड़ी—ये यहाँके प्रधान दर्शनीय स्थान हैं।

४८. नन्दगाँव—चौड़ेखर, रोहिणी-मोहिनीकुण्ड, गायोंका खूँटा, गाँयोंकी खिड़क, पानसरोवर, श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक, श्रीसनातन गोस्वामीकी कुटी, मोतीकुण्ड, फुलवारी उसास, श्यामपीपरी, टेरकदम्ब, श्रीरूपगोस्वामीकी कुटी, कृष्णकुण्ड, आशकुण्ड, आशेश्वर महादेव, जल-विहार, कुहककुण्ड, छाछकुण्ड, छछिहारी देवी, जोगियाकुण्ड, वृक्षकोटरमें भंडार, अक्रूर-बैठक, वस्त्रकुण्ड, वस्त्रवना, ललितमोहनविशाखा उद्धव-कुण्ड, उद्धवके क्यार (इनमेंसे एक कदम्बमें स्वतः दोने उत्पन्न होते हैं, जिसमें एक छटाँक वस्तु आ सके)। उद्धवजीकी बैठक, नन्दपोखरा, यशोदाकुण्ड, मधुसूदनकुण्ड, नृसिंहनाद, नन्दमन्दिर, नन्दीश्वर महादेव तथा यशोदानन्दन, विहारीजी और चतुरानागाके ठाकुर हैं। पर्वतपर श्रीराधा-कृष्णके चरणचिह्न हैं। नन्दीश्वरसे वायुकोणमें गेंदोखर (कन्दुक-क्रीड़ास्थल) एवं कदम्बवन हैं।

४९. महिरातो गाँव—अभिनन्दजीकी गोशाला, साँचौली गाँव, गिड़ोयो गाँव, जाववट, पांडरगङ्गा, किशोरीकुण्ड, कोकिलावन, पूर्णमासीकुण्ड, दौमन, कदम्बखण्डी, रुनकी-झुनकीकुण्ड, कजरीवन, कृष्णकुण्ड, आँजनो गाँव, आँजनखोर, आँजनी शिला (इसपर अँगुली घिसकर नेत्रमें लगानेसे नेत्रोंमें अञ्जन लग जाता है)—ये पासके स्थान हैं।

५०. सीपरसों—यहाँ श्रीकृष्णने आश्वासन दिया था मथुरा जाते समय कि 'मैं शीघ्र—परसों आ जाऊँगा।' गोकुण्ड, विलासवट, हंससरोवर तथा सारसवन यहाँके दर्शनीय स्थान हैं।

५१. पिसायो गाँव—कदम्बखण्डी, तृषाकुण्ड,

विशाखाकुण्ड, खदिरवन, गायोंकी खिरक, कुण्डलवन, भवनकुण्ड, डकाराकुण्ड, चिन्ताखुरी, गोपीनाथजी, दाऊजी, बलभद्रकुण्ड, खेलनकुण्ड, चीरतलाई, बकथरा (बक-वध-स्थल), सिद्धवन, भोजनस्थली, भदावल तथा कमई (विशाखाजीका जन्मस्थान) है।

५२. करहला—ललिताजीका जन्मस्थान। कङ्कण-कुण्ड, कदम्बखण्डी, हिंडोलास्थान, श्रीवल्लभाचार्यजी, श्रीविट्ठलनाथजी तथा श्रीगोकुलनाथजीकी बैठकें हैं। श्रीनाथजीका मुकुट यहाँ है। वृषभानुजीका उपवन है। निधोली, सहारमें महेश्वरकुण्ड, माणिककुण्ड, साखी (शङ्खचूड़-वधस्थल) तथा रामकुण्ड हैं। जाववटमें किशोरीकुण्ड, चीरकुण्ड, हिंडोलेका स्थान है तथा पाडरकुण्ड, नरकुण्ड, पाण्डव एवं नारायणवृक्ष हैं। कोकिलावनमें कोकिलाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, पनिहारीकुण्ड श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक, पाण्डवगंगाका स्थान है। बड़ी बठैनमें बलभद्रकुण्ड एवं दाऊजीका मन्दिर है। छोटी बठैनमें कृष्णकुण्ड तथा साक्षीगोपाल-मन्दिर है।

५३. बैंदोखर—चरणपहाड़में सूर्य, चन्द्र, गौ, अश्व तथा ठाकुरजीके चरणचिह्न, चरणगङ्गा, पौढ़ानाथजीके दर्शन, गायोंकी खिड़क है। (ये सब स्थान नन्दगाँव-बरसानेके आस-पास हैं।)

५४. रासौली गाँव—रासमण्डल-चबूतरा, रासकुण्ड, श्रीनाथजीका जलघड़ा तथा श्रीनाथजीकी बैठक है।

५५. कामर गाँव—गोपीकुण्ड, गोपीजलविहार, हरि-कुण्ड, मोहनकुण्ड, मोहनजीका मन्दिर और दुर्वासाजीका मन्दिर है।

५६. दहगाँव—दधिकुण्ड, दधिहारीदेवी, व्रजभूषण-मन्दिर, (वृक्षोंमें) मुकुटका चिह्न, सात सखियोंके क्रीड़ा-स्थान। यहाँ भाद्रशु० ६ को मेला लगता है। कोटवनमें कदम्बखण्डी तथा श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक है। चमेलीवनमें राम, लक्ष्मण, सीता तथा हनुमान्‌जीके कुण्ड हैं और हनुमत्-मन्दिर है। गहनवन, गोपालगढ़, गोपालकुण्ड, वत्सवन (वत्सासुर-वधस्थान), फारैन (होली-क्रीड़ा-स्थल), प्रह्लादकुण्ड—ये पास ही हैं।

५७. शेषशायी—पौढ़ानाथजीके दर्शन, क्षीरसागर, हिंडोलास्थान एवं श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक है।

५८. कोसी—यह स्टेशन तथा बड़ी मंडी है। रत्नाकरकुण्ड, माधवकुण्ड, विशाखाकुण्ड और गोमतीकुण्ड हैं। दशहरा तथा चैत्रशुक्ला द्वितीयाको मेला होता है।

५९. छाता—सूर्यकुण्ड है। शेषशायीसे यहाँ सीधे आनेपर नन्दनवन, चन्दनवन, बुखराई ताल, बढ़ाघाट (कालियह्रद), उझानीघाट, खेलनवन, लालबाग और शेरगढ़ मार्गमें पड़ते हैं। कोसी होकर आनेपर मार्गमें पैगाँव, श्यामकुण्ड, नारदकुण्ड, प्रह्लादकुण्ड, चतुर्भुजनाथ तथा श्रीराधिकाजीके मन्दिर मिलते हैं।

६०. शेरगढ़—यहाँ दाऊजीने यमुनाजीका आकर्षण किया था। रामघाटपर दाऊजीका मन्दिर है। आगे ब्रह्मघाट है। आगे आभूषणवन, निवारणवन, गुञ्जावन, विहारवन, विहारीजीका मन्दिर, विहारकुण्ड हैं। कजरौटी गाँवसे आगे दूसरी ओर अक्षयवट एवं अक्षयविहारीजी हैं। गोपीतलाई और स्फटिकके शालग्रामजी हैं।

६१. चीरघाट—गोपकुमारियोंने श्रीकृष्णको पतिरूपमें पानेके लिये यहाँ कात्यायनी पूजन किया था। यहीं चीरहरण हुआ था। चीरकदम्ब, कात्यायनी देवी तथा श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक है।

६२. नन्दघाट—यहाँसे वरुणका दूत नन्दजीको वरुणलोक ले गया था।

६३. बसईगाँव—वसुदेवकुण्ड है। यह वसुदेवजीका स्थान कहा जाता है।

६४. वत्सवन—वत्सविहारीजीका मन्दिर, श्रीवल्लभा-चार्यजीकी बैठक, ग्वालमण्डलीका स्थान, ग्वालकुण्ड, हरिबोलतीर्थ तथा ब्रह्मकुण्ड हैं। (यहाँ ब्रह्माजीने बछड़े चुराये थे।)

६५. रासौली गाँव—यहाँ दाऊजीका रासमण्डल-चबूतरा है। चीरघाटसे यहाँतक दूसरा मार्ग है—यमुना पार करके सुरभिवन, मुञ्जाटवी, मेखवन, भद्रवन, भाण्डीरवन, श्यामवन, श्यामकुण्ड, श्यामजी और दाऊजीके मन्दिर, माँट, बेलवन (यहाँ श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक है), आटसगावँ, रामभद्रताल होते हुए।

६६. नरी-सेमरी गाँव—बलदेवजीका मन्दिर, नरीदेवी, किशोरीकुण्ड और नारायणकुण्ड हैं। यहाँ लोग नवरात्रमें पूजन करने आते हैं।

६७. चौमुहा गाँव—ब्रह्माजीने यहाँ श्रीकृष्ण-स्तवन किया था।

६८. जैत—कृष्णकुण्ड, अघासुर (सर्पमूर्ति)।

६९. छटीकरा—सखियोंके ६ कुण्ड तथा राधाजीका गुप्त भवन है।

७०. गरुड़गोविन्द—गरुड़पर विराजमान द्वादशभुज श्रीगोविन्दके दर्शन हैं।

७१. अक्रूरघाट—अक्रूरजीको यहाँ मधुरामें श्रीकृष्णचन्द्रने दिव्य-दर्शन कराया था। गोपीनाथजीका मन्दिर है। वैशाख शु० ९ को मेला होता है।

७२. भतरौड—मदनटेरमें मदनगोपालजीका मन्दिर है। यहाँ यज्ञपत्नियोंने भगवान्‌को भोजन कराया था। कार्तिकी पूर्णिमाको मेला लगता है।

७३. वृन्दावन—यहाँका विवरण पहले दिया जा चुका है।

७४. सुनीर—महर्षि सौभरिने यहाँ जलमें रहकर तप किया था। सुरभि-कुण्ड, लाड़ली-कुण्ड आदि कई कुण्ड और बलदेवजी, व्रजभूषणजी तथा गङ्गाजीके मन्दिर हैं। भाद्र शु० ६ को मेला लगता है।

७५. मँड्यारी—यह मुञ्जाटवी है, जहाँ गायें और गोप वनमें भटक गये थे और दावाग्नि लगनेपर श्रीकृष्णचन्द्रने उसे पान कर लिया था।

७६. भद्रवन—मधुसूदनकुण्ड, मधुसूदन-मन्दिर तथा हनुमान्‌जीकी मूर्ति है।

७७. भाण्डीरवन—भाण्डीरवट, भाण्डीरकूप तथा मुकुटके दर्शन हैं। पुराणोंके अनुसार ब्रह्माजीने यहीं श्रीराधाकृष्णका विवाह कराया था। यहीं बलरामजीने प्रलम्बासुरको मारा।

७८. माँटगाँव—दाऊजीका मन्दिर तथा जीवगोस्वामीकी भजनस्थली है।

७९. बेलवन—श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर तथा श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक है।

८०. खेलन-वन—श्रीराधा-कृष्णकी यह क्रीड़ा-भूमि है।

८१. मानसरोवर—श्रीराधा-कृष्णका मन्दिर और दो बैठकें हैं। हंसगंजमें दुर्वासा-आश्रम है। माघमें मेला लगता है।

८२. राया—यहाँ श्रीनन्दजीका कोषागार था।

८३. लोहवन—भगवान्‌ने वहाँ लोहासुरको मारा था। कृष्णकुण्ड, लोहासुरकी गुफा एवं गोपीनाथजीका मन्दिर है।

८४. बृहद्वन—यह बहुत विस्तृत था; किंतु अब थोड़ा भाग शेष है। जहाँ कुछ लोग निम्बार्काचार्यकी जन्मभूमि मानते हैं, वह नीमगाँव यहीं लोहवनसे पूर्व है।

८५. आनन्दी-बन्दीदेवी—यहाँ आनन्दी-बन्दीकुण्ड है।

८६. बलदेव गाँव—पुराना नाम रीड़ागाँव है। श्रीबलदेवजीका मन्दिर है। उसमें बलदेवजी तथा रेवतीजीकी मूर्तियाँ हैं। क्षीरसागर सरोवर है। यह मूर्ति वज्रनाभकी स्थापित की हुई है।

८७. देवनगर—बलदेव गाँवसे १० मील उत्तर दिवस्पति गोपका स्थान है, यहाँ रामसागर तथा विशाल कदम्ब हैं। बलदेव गाँवके पास हतोड़ा गाँवमें श्रीनन्दजीकी बैठक है।

८८. ब्रह्माण्डघाट—श्यामसुन्दरने यहाँ मृद्-भक्षण-लीला की थी।

८९. कोलेघाट—यहींसे यमुना पार करके श्रीकृष्णको लेकर वसुदेवजी मथुरासे गोकुल आये थे।

९०. कर्णावल—किन्हीं-किन्हीं मतसे यहाँ श्रीकृष्णका कर्णवेध हुआ था। कर्णवेध-कूप, रतन-चौक, मदनमोहनजी और माधवरायके मन्दिर हैं। मथुरेशजीकी प्राकट्य-भूमि है। मथुरेशजी अब जतीपुरामें विराजते हैं।

९१. महावन—पहले नन्दजी यहीं रहते थे। चिन्ता-हरण, यमलार्जुनभङ्ग, बछड़ा चरानेका स्थान, नन्दजीके दतौन करनेका टीला, नन्दकूप, पूतनाखार, शकटासुरभङ्ग, तृणावर्तभङ्ग, नन्दभवन, दधिमन्थन-स्थान, छठीपालना, चौरासी खंभोंका मन्दिर (दाऊजीकी मूर्ति है), मथुरानाथ, द्वारिकानाथ तथा श्यामजीके मन्दिर, गायोंकी खिड़क, गोबरके टीले, दाऊजी और श्रीकृष्णकी रमणरेती, गोपकूप तथा नारदटीला हैं।

९२. गोकुल—यहाँ नन्दजीका गोष्ठ था। ठकुरानीघाट है। श्रीवल्लभाचार्यजी, श्रीविट्ठलनाथजी तथा श्रीगोकुलनाथजीकी बैठकें हैं। यहाँके श्रीविग्रहोंमेंसे मथुरेशजी जतीपुरामें, विट्ठलनाथजी नाथद्वारेमें, द्वारिकाधीशजी काँकरोलीमें, गोकुलचन्द्रमाजी तथा मदनमोहनजी कामवनमें तथा बालकृष्णजी सूरतमें विराजमान हैं। गोकुलमें अब केवल गोकुलनाथजी हैं। चौबीस मन्दिर यहाँ वल्लभकुलके और हैं।

९३. रावल—यह श्रीराधाजीकी ननिहाल है। यहीं

श्रीराधाका जन्म हुआ था। यहाँ राधाघाट और श्रीलाडिली-मन्दिर है।

यहाँसे यमुना पार करके मथुरा पहुँच जाते हैं। दूसरा मार्ग रावलसे लोहवन, हंसगंज होकर मथुरा आनेका है। कुछ लोग गोकुलसे ही मथुरा आ जाते हैं। इस प्रकार व्रज-परिक्रमा पूर्ण होती है।

जुरहरा

(लेखक—श्रीचैतन्यस्वरूपजी अग्रवाल)

यह स्थान 'व्रजद्वार' कहा जाता है। पहले कामवनसे व्रज-परिक्रमा इधर होकर आती थी। परिक्रमामें पुराना मार्ग छोड़ना उचित नहीं। यहाँपर कन्हैयाकुण्ड है। यहाँसे डेढ़ मीलपर पाई गाँव है। वहाँ श्रीराधा-कृष्णकी आँख-मिचौनी लीला हुई थी।

इन्द्रने जहाँ रासलीलाके दर्शन प्राप्त किये थे, वह इन्द्रकुटी भी समीप ही है। इन्द्रकुटीके पास सरोवर तथा धर्मशाला है। वहाँ हनुमान्‌जीका मन्दिर भी है। पासमें ही गोपालकुण्ड है।

महरानेसे यह स्थान ८ मील पड़ता है और कामवनसे १० मील है।

रुनकता (रेणुका-क्षेत्र)

(लेखक—पं० श्रीभगवानजी शर्मा)

आगरासे मथुरा जानेवाली पक्की सड़कपर मथुरासे १० मील रुनकता ग्राम है। कहा जाता है कि यह रेणुका-क्षेत्र है। यह महर्षि जमदग्निका आश्रम था। यहाँ एक ऊँचे टीलेपर जमदग्नि ऋषिका मन्दिर है, उसमें जमदग्नि तथा रेणुकाजीकी मूर्तियाँ हैं। नीचे लक्ष्मीनारायण-मन्दिर और परशुरामजीका मन्दिर है। यहाँ एक त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का प्राचीन मन्दिर है, नवीन भी कई मन्दिर हैं। गङ्गादशहरा, परशुराम-जयन्ती और सोमवती अमावस्यापर मेला लगता है। महाकवि सूरदासजीने यहाँ बहुत दिन निवास किया था। यहाँ यमुना पश्चिमवाहिनी हैं।

मुचुकुन्दतीर्थ (धौलपुर)

(लेखक—श्रीजीवनलालजी उपाध्याय)

आगरासे धौलपुर सीधी रेलवे लाइन है। धौलपुर स्टेशनके पास यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। स्टेशनसे ३ मील दूर मुचुकुन्दतीर्थ है। वहाँतक पक्की सड़क है।

यहाँ एक पर्वत है, जिसे गन्धमादन कहा जाता है। इसी पर्वतमें मुचुकुन्द-गुफा है। कहा जाता है कि राजा मुचुकुन्द देवताओंके वरदानसे निद्रा पाकर इसी गुफामें सो रहे थे। मथुरापर जब कालयवनने घेरा डाला, तब श्रीकृष्णचन्द्र उसके सामनेसे अस्त्रहीन भागे और इसी गुफामें चले आये। उनका पीछा करता हुआ कालयवन भी गुफामें चला आया। सोते मुचुकुन्दको श्रीकृष्ण समझकर उसने ठोकर मारी। मुचुकुन्द जाग उठे। उनकी दृष्टि पड़ते ही कालयवन भस्म हो गया। फिर राजाको श्रीकृष्णचन्द्रने दर्शन दिया और उत्तराखण्डमें जाकर तपस्या करनेको कहा। राजाने पर्वतकी गुफासे बाहर यज्ञ किया और उत्तराखण्ड चले गये।

मुचुकुन्दके यज्ञस्थानपर एक सरोवर है। इसमें चारों और पक्के घाट हैं। सरोवरके तटपर अनेक देवमन्दिर हैं। यहाँ ऋषिपञ्चमी और देवषष्ठीको मेला लगता है। आस-पासके लोग बालकोंका मुण्डन-संस्कार भी यहीं कराते हैं।

सीताकुण्ड

मध्य रेलवेकी एक लाइन धौलपुरसे ताँतपुरतक जाती है। इस लाइनपर धौलपुरसे ३५ मील आँगई स्टेशन है। आँगईसे सीताकुण्ड ६ मील दूर है।

यहाँ आस-पास न कोई झरना है न सरोवर। सीता-कुण्ड बहुत छोटा कुण्ड है और उसमें चट्टानपर एक गड्ढेमें केवल इतना जल रहता है कि एक छोटी कटोरी भरी जा सके; किंतु बराबर व्यय करनेपर भी यह जल कम नहीं होता। आस-पासके गाँवोंके लोग यहींसे जल ले जाते हैं। कहा जाता है कि इस जलके छींटे देनेसे चेचकका प्रकोप शान्त हो जाता है।

धरणीधर-तीर्थ

(लेखक—पं० श्रीउमाशङ्करजी दीक्षित)

अलीगढ़ जिलेमें यह स्थान अलीगढ़से २२ मील और मथुरासे १८ मील है। इसका वर्तमान नाम बेसवाँ है।

कहा जाता है कि यह पृथ्वीका नाभिस्थल है। महर्षि विश्वामित्रने यहाँ यज्ञ किया था। उस यज्ञकुण्डके स्थानपर ही अब विश्वामित्र-सरोवर है। इस सरोवरके किनारे धर्मशाला तथा मन्दिर है। ईशानकोणमें वनखण्डीनाथ शिवका मन्दिर है। वही श्रीराममन्दिर है। सरोवरके पूर्वतटपर धर्मशाला तथा शिवमन्दिर हैं। अग्निकोणमें हनुमान्‌जीका पुराना मन्दिर है। इस तटपर भी दो धर्मशालाएँ हैं। सरोवरके एक ओर भूतेश्वर शिवमन्दिर तथा काली-मन्दिर हैं।

कहा जाता है कि धरणीधर-कुण्डकी खुदाईके समय बहुत-सी शालग्राम शिखाएँ निकली थीं। वे अब श्रीरघुनाथजीके मन्दिरमें हैं। उस समय कुण्डसे दो और मूर्तियाँ तथा जली सुपारी, नारियल आदि प्रचुर मात्रामें निकले थे।

कुण्डके पश्चिम धरणीधरेश्वर महादेवका मन्दिर है। यही यहाँका मुख्य मन्दिर है। इससे कुछ आगे संकटमोचन हनुमान्‌जीका मन्दिर है।

उत्तर-प्रदेशके कुछ जैनतीर्थ

उत्तर-भारतमें कैलास और मथुरा—ये दो सिद्ध क्षेत्र हैं। इनका वर्णन इन स्थानोंके साथ आ चुका है। इनके अतिरिक्त उत्तर-प्रदेशमें हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, रत्नपुरी, सिंहपुर (सारनाथ), चन्द्रपुर (चन्द्रावती), कौशाम्बी, कम्पिल, शारीपुर-बटेश्वर, चाँदपुर, बनारस, त्रिलोकपुर, किष्किन्धापुर तथा कुकुमग्राम और संकिश—ये अतिशय क्षेत्र माने जाते हैं। इनमेंसे हस्तिनापुर, सारनाथ (सिंहपुर), चन्द्रावती (चन्द्रपुर), कौशाम्बी, कुकुमग्राम, किष्किन्धापुर तथा बनारसका वर्णन तो इन तीर्थोंके वर्णनके साथ आ चुका है। शेषका वर्णन नीचे दिया जा रहा है—

अहिच्छत्र (रामनगर)—उत्तर रेलवेके आँवला स्टेशनसे ६ मील जाकर रामनगर पैदल या बैलगाड़ीसे जाना पड़ता है।

यहाँ श्रीपार्श्वनाथजी पधारे थे। जब वे ध्यानस्थ थे, तब धरणेन्द्र तथा पद्मावती नामक नागोंने उनके मस्तकपर अपने फणोंसे छत्र लगाया था। यहाँकी खुदाईसे प्राचीन जैन मूर्तियाँ निकली हैं। यहाँ जैन-मन्दिर है। कार्तिकमें मेला लगता है।

शारीपुर (बटेश्वर)—शिकोहाबाद स्टेशनसे बटेश्वर १३ मील है। सड़क गयी है। बटेश्वरसे १ मील शारीपुर है। यहाँ श्रीनेमिनाथजीका जन्म हुआ था। यहाँ प्राचीन जैन-मन्दिर तथा नेमिनाथजीके चरण-चिह्न हैं। बटेश्वरमें अजितनाथजीकी प्रतिमा जैन-मन्दिरमें है। बटेश्वरमें यमुनातटपर बटेश्वर महादेवका हिंदू-मन्दिर प्रख्यात है।

कम्पिल—इसका प्राचीन नाम काम्पिल्य है। फर्रूखाबाद जंक्शनसे कायमगंज स्टेशन आना पड़ता है। कायमगंजसे कम्पिलतक सड़क है।

यहाँ विमलनाथजीके गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान-

636 Tirthank_Section_7_1_Back

कल्याणक हुए हैं। अन्तिम तीर्थङ्कर, श्रीमहावीरका समवशरण भी यहाँ आया था। यहाँ प्राचीन जैन-मन्दिर है, जिसमें विमलनाथजीकी तीन प्रतिमाएँ हैं। एक जैन* धर्मशाला है। चैत्र और आश्विनमें मेला लगता है।

रत्नपुरी—फैजाबादसे यहाँ जाया जाता है। यहाँ तीर्थङ्कर श्रीधर्मनाथजीका जन्म हुआ था। यहाँ जैन-मन्दिर है।

त्रिलोकपुर—पूर्वोत्तर-रेलवेके बाराबंकी जंक्शनसे १० मीलपर बिन्दौरा स्टेशन है। वहाँसे यह स्थान तीन मील दूर है। यहाँ नेमिनाथजीका मन्दिर है।

चाँदपुर (चंदावर)—मध्य-रेलवेकी बीना-झाँसी लाइनपर जखलौन स्टेशन है। वहाँसे ५ मीलपर यह स्थान है। यहाँ शान्तिनाथ स्वामीका स्थान है।

कुरगमा—इसका प्राचीन नाम कुरुग्राम है। चाँदपुरके समान यह स्थान भी झाँसी जिलेमें है। यह अतिशय क्षेत्र है।

संकिश—यह बौद्धतीर्थ माना जाता है। इसका प्राचीन नाम संकास्य है। वर्तमान समयमें यह स्थान एटा जिलेमें बसन्तपुरके पास है। कहते हैं कि बुद्धभगवान् यहाँ स्वर्गसे उतरकर पृथ्वीपर आये थे। जैन भी इसे अपना तीर्थ मानते हैं। तेरहवें तीर्थङ्कर विमलनाथजीका यह केवल ज्ञानस्थान माना जाता है, अतः यह अतिशय क्षेत्र है।

सोरों (वाराह-क्षेत्र)

(लेखक—श्रीपरमहंसजी वासिष्ठ)

पूर्वोत्तर-रेलवेमें कासगंज स्टेशनसे ९ मीलपर सोरों स्टेशन है। यह एटा जिलेमें पड़ता है। वाराह-क्षेत्रके नामसे भारतमें कई स्थान कहे जाते हैं, उनमेंसे एक स्थान सोरों है। यहाँ बहुत-सी धर्मशालाएँ हैं।

सोरोंसे गङ्गाजी अब दूर चली गयी हैं। कभी गङ्गाका प्रवाह यहाँ था। उस पुरानी धाराके किनारे अनेकों घाट हैं। घाटोंके समीप अनेकों देवमन्दिर हैं। यहाँका मुख्य मन्दिर वाराहभगवान्‌का मन्दिर है। उसमें श्वेतवाराहकी चतुर्भुज मूर्ति है। भगवान्‌के वामभागमें लक्ष्मीजी हैं।

सोरोंकी परिक्रमा ५ मीलकी है। मार्गशीर्ष शुक्ला ११ को यहाँ मेला लगता है, जो आठ दिनतक रहता है। यहाँ हरिपदीगङ्गा नामक कुण्डमें दूर-दूरसे लोग अस्थि-विसर्जन करने आते हैं। यहाँ चार वटोंमें गृद्धवट है। उसके नीचे वटुकनाथ-मन्दिर है।

स्थानीय लोगोंका मत है कि गोस्वामी तुलसीदासकी यह जन्मभूमि है। नन्ददासजीद्वारा स्थापित श्यामायन (बलदेवजीका) मन्दिर यहाँ है। योगमार्ग नामक स्थान तथा सूर्यकुण्ड यहाँके विख्यात तीर्थ हैं।

देवल

पूर्वोत्तर-रेलवेकी एक शाखा पीलीभीतसे शाहजहाँपुर-तक गयी है। इस शाखापर पीलीभीतसे २३ मीलपर बीसपुर स्टेशन है। इस स्टेशनसे १० मील पूर्वोत्तर गढ़गजना तथा देवलके प्राचीन खँडहर हैं। इन खँडहरोंसे भगवान् वाराहकी एक प्राचीन मूर्ति मिली है, जो देवलके मन्दिरमें है। कहा जाता है कि महर्षि देवलका आश्रम यहीं था।

* प्रायः जैन-धर्मशालाओंमें जैनेतर यात्रियोंको नहीं ठहरने दिया जाता। दिगम्बरजैन धर्मशालामें केवल दिगम्बरजैन और श्वेताम्बरजैन-धर्मशालामें श्वेताम्बरजैन ही ठहराये जाते हैं। इसलिये जैनेतर यात्रियोंको जैनतीर्थोंमें जानेपर ठहरने आदिकी असुविधा हो सकती है।

देवकली

(लेखक—पं० श्रीदेवव्रतजी मिश्र)

पूर्वोत्तर-रेलवेकी कासगंज-लखनऊ लाइनमें लखीमपुर-खेरी स्टेशनसे नौ मीलपर देवकली स्टेशन है। यहाँ एक विस्तृत सरोवर है। उसके उत्तरके घाट पक्के हैं। वहीं शिव-मन्दिर है। प्रत्येक अमावस्याको मेला लगता है।

कहते हैं कि जनमेजयका नागयज्ञ यहीं हुआ था। मन्दिरके उत्तर एक छोटा सरोवर और है। उसीको यज्ञकुण्ड बताया जाता है। इस सरोवरसे जले शाकल्यके अन्न खोदनेपर निकलते हैं। इसकी मिट्टी लोग नागपञ्चमीको अपने घरोंमें छिड़क देते हैं और विश्वास करते हैं कि इससे घरमें वर्षभर सर्प नहीं आते।

हरगाँव

(लेखक—पं० श्रीबालदीनजी शुक्ल)

यह स्थान लखीमपुरसे सीतापुर जानेवाली सड़कपर पड़ता है, जहाँ बराबर मोटर-बसें चलती हैं। सीतापुर या लखीमपुरसे यहाँ आ सकते हैं। यहाँ एक छोटी धर्मशाला है। कार्तिकी पूर्णिमाको बड़ा मेला लगता है।

यहाँ एक प्राचीन शिव-मन्दिर है। मन्दिरके सामने सरोवर है, सरोवरके आस-पास अन्य कई जीर्ण मन्दिर हैं। कहा जाता है, पाण्डवोंने एक रात्रिमें यह सरोवर बनाया था। बताते हैं अर्जुनने बाण मारकर इसमें जल प्रकट किया। यहाँसे थोड़ी दूरपर बाणगङ्गा सरोवर है। समीपके लोग मानते हैं कि यह विराटनगर है। यहाँ कस्बेके दक्षिण कीचककी समाधि है।

गोला गोकर्णनाथ

पूर्वोत्तर रेलवेके लखीमपुर खीरी स्टेशनसे २२ मीलपर गोला गोकर्णनाथ स्टेशन है। यहाँ फाल्गुनमें शिवरात्रिको और चैत्र शुक्लपक्षमें बड़ा मेला लगता है। यह उत्तर गोकर्णक्षेत्र है। दक्षिण गोकर्णक्षेत्र दक्षिण भारतमें पश्चिम समुद्र-तटपर है। गोकर्णक्षेत्रमें भगवान् शंकरका आत्म-तत्त्वलिङ्ग है।

यहाँ एक विशाल सरोवर है, जिसके समीप गोकर्णनाथ महादेवका विशाल मन्दिर है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये चार-पाँच धर्मशालाएँ हैं।

वाराहपुराणमें कथा है कि भगवान् शंकर एक बार मृगरूप धारण करके यहाँ विचरण कर रहे थे। देवता उन्हें ढूँढ़ते हुए आये और उसमेंसे ब्रह्मा, भगवान् विष्णु तथा देवराज इन्द्रने मृगरूपमें शंकरजीको पहचानकर उन्हें पकड़नेके लिये उनके सींग पकड़े। मृगरूपधारी शिव तो अन्तर्धान हो गये; किंतु उनके तीन सींग तीनों देवताओंके हाथमें रह गये। उनमेंसे एक शृङ्ग यहाँ गोकर्णनाथमें देवताओंने स्थापित किया, दूसरा भागलपुर जिले (बिहार) के शृंगेश्वरनामक स्थानमें और तीसरा देवराज इन्द्रने स्वर्गमें। रावणने जब इन्द्रपर विजय प्राप्त की, तब वह स्वर्गसे गोकर्णलिङ्ग ले आया; किंतु मार्गमें उसे एक स्थानपर रखकर नित्यकर्ममें लग गया। नित्यकर्मसे निवृत्त होकर जब वह उस मूर्तिको उठाने लगा, तब वह उठी नहीं। रावणद्वारा स्वर्गसे लायी गयी वह लिङ्गमूर्ति दक्षिण भारतके गोकर्ण-तीर्थमें है और देवताओंद्वारा स्थापित मूर्ति गोला गोकर्णनाथमें है।

गोकर्णक्षेत्रके तीर्थ

(लेखक—पं० श्रीजयदेवजी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य)

गोकर्णक्षेत्रके आस-पास कई तीर्थ हैं—१. माण्ड-कुण्ड—गोकर्णसे चार मील पश्चिम २. कोणार्क-कुण्ड—हिन्दुस्थान शुगर मिलके उत्तर; ३. भद्रकुण्ड—गोकर्ण-मन्दिरसे आधमील; ४. पुनर्भूकुण्ड—स्टेशनके उत्तर पुनर्भू गाँवमें; ५. गोकर्ण-तीर्थ—मन्दिरके समीप।

यहाँ इस क्षेत्रमें गोकर्णनाथको लेकर पञ्चलिङ्ग माने जाते हैं, जिनमें मुख्य लिङ्ग गोकर्णजीका है। दूसरे देवकली स्टेशनके पास सरोवर किनारे देवेश्वर महादेव। तीसरे मीरा स्टेशनके पास गदेश्वर। चौथे गोकर्णनाथसे दक्षिण बाबरगाँवमें बटेश्वर और पाँचवें सुनेसर ग्रामके पश्चिम स्वर्णेश्वर।

नैमिषारण्य

नैमिषारण्य-माहात्म्य

इदं त्रैलोक्यविख्यातं तीर्थं नैमिषमुत्तमम्।
महादेवप्रियकरं महापातकनाशनम्॥
अन्नदानं तपस्तप्तं श्राद्धयागादिकं च यत्।
एकैकं नाशयेत् पापं सप्तजन्मकृतं तथा॥

(कूर्मपुराण, उत्तर० ४२। १, १४)

'यह नैमिषारण्य-तीर्थ तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध है। यह भगवान् शंकरको परम प्रिय तथा महापातकोंको दूर करनेवाला है। यहाँ की गयी तपस्या, श्राद्ध, यज्ञ, अन्न दान आदि एक-एक क्रिया सात जन्मोंके पापोंका विनाश कर देती है।'

वायुपुराणान्तर्गत माघ-माहात्म्य तथा बृहद्धर्मपुराण, पूर्वभागके अनुसार इसके किसी गुप्त स्थलमें आज भी ऋषियोंका स्वाध्यायानुष्ठान चलता है। लोमहर्षणके पुत्र सौति उग्रश्रवाने यहीं ऋषियोंको पौराणिक कथाएँ सुनायी थीं।

'एतत् तु वैष्णवं क्षेत्रं नैमिषारण्यसंज्ञितम्।
अधिष्ठायाद्यापि विप्राः कुर्वन्ति सत्क्रियाः सदा॥'

(बृहद्धर्मपु० १३। ३३)

वाराहपुराण (११। १०८) के अनुसार यहाँ भगवान्‌द्वारा निमिषमात्रमें दानवोंका संहार होनेसे यह नैमिषारण्य कहलाया। वायु, कूर्म आदि पुराणोंके अनुसार भगवान्‌के मनोमय चक्रकी नेमि (हाल) यहीं विशीर्ण हुई (गिरी) थी, अतएव यह नैमिषारण्य कहलाया—

प्रययुस्तस्य चक्रस्य यत्र नेमिर्व्यशीर्यत।
तद् वनं तेन विख्यातं नैमिषं मुनिपूजितम्॥

(वायु० १। १८१। ८६)

मिस्त्रिख (मिश्रक)-तीर्थका माहात्म्य

ततो गच्छेत राजेन्द्र मिश्रकं तीर्थमुत्तमम्।
तत्र तीर्थानि राजेन्द्र मिश्रितानि महात्मना॥
व्यासेन नृपशार्दूल द्विजार्थमिति नः श्रुतम्।
सर्वतीर्थेषु स स्नाति मिश्रके स्नाति यो नरः॥

(महा० वन० तीर्थयात्रापर्व० ८३। ९१-९२;
पद्मपुराण, आदिखण्ड २६। ८५-८६)

'राजेन्द्र! तदनन्तर परमोत्तम मिश्रक तीर्थको जाय। वहाँ महात्मा व्यासदेवजीने द्विजोंके कल्याणके लिये सभी तीर्थोंका मिश्रण किया है, ऐसी बात हमलोगोंने सुनी है। जो मिश्रकमें स्नान करता है, वह मानो सभी तीर्थोंमें स्नान कर लेता है।'

नैमिषारण्य

महर्षि शौनकके मनमें दीर्घकालतक ज्ञानसत्र करनेकी इच्छा थी। उनकी आराधनासे प्रसन्न होकर ब्रह्माजीने उन्हें एक चक्र दिया और कहा—'इसे चलाते हुए चले जाओ। जहाँ इस चक्रकी 'नेमि' (बाहरी परिधि) गिर जाय, उसी स्थलको पवित्र समझकर वहीं आश्रम बनाकर ज्ञानसत्र करो।' शौनकजीके साथ अट्ठासी सहस्र ऋषि थे। वे सब लोग उस चक्रको चलाते हुए भारतमें घूमने लगे। गोमती नदीके किनारे एक तपोवनमें चक्रकी नेमि गिर गयी और वहीं वह चक्र भूमिमें प्रवेश कर गया। चक्रकी नेमि गिरनेसे वह तीर्थ 'नैमिश' कहा गया। जहाँ चक्र भूमिमें प्रवेश कर गया, वह स्थान चक्रतीर्थ कहा जाता है। यह तीर्थ गोमती नदीके वाम तटपर है और ५१ पितृस्थानोंमेंसे एक स्थान माना जाता है। यहाँ सोमवती अमावस्याको मेला लगता है।

शौनकजीको इसी तीर्थमें सूतजीने अठारहों पुराणोंकी कथा सुनायी। द्वापरमें श्रीबलरामजी यहाँ पधारे थे। भूलसे

उनके द्वारा रोमहर्षण सूतकी मृत्यु हो गयी। बलरामजीने उनके पुत्र उग्रश्रवाको वरदान दिया कि वे पुराणोंके वक्ता हों और ऋषियोंको सतानेवाले राक्षस बल्वलका वध किया। सम्पूर्ण भारतकी तीर्थयात्रा करके बलरामजी फिर नैमिषारण्य आये और यहाँ उन्होंने यज्ञ किया।

मार्ग

उत्तर रेलवेपर बालामऊ जंक्शन स्टेशन है। वहाँसे १६ मीलपर नैमिषारण्य स्टेशन पड़ता है। बालामऊमें ट्रेन बदलकर नैमिषारण्य जाना पड़ता है।

दर्शनीय स्थान

नैमिषारण्य स्टेशनसे लगभग एक मील दूर चक्रतीर्थ मिलता है। यह एक सरोवर है, जिसका मध्यभाग गोलाकार है और उससे बराबर जल निकलता रहता है। उस मध्यके घेरके बाहर स्नान करनेका घेरा है। यही नैमिषारण्यका मुख्य तीर्थ है। इसके किनारे अनेक मन्दिर हैं, मुख्य मन्दिर भूतनाथ महादेवका है।

नैमिषारण्यकी परिक्रमा ८४ कोसकी है। यह परिक्रमा प्रतिवर्ष फाल्गुनकी अमावस्याको प्रारम्भ होकर पूर्णिमाको पूर्ण होती है। नैमिषारण्यकी छोटी (अन्तर्वेदी) परिक्रमा ३ मीलकी है। इस परिक्रमामें यहाँके सभी तीर्थ आ जाते हैं। यहाँके तीर्थ ये हैं—

१-चक्रतीर्थ, जिसका वर्णन ऊपर हो चुका है। २-पञ्चप्रयाग, यह पक्का सरोवर है। इसके किनारे अक्षयवट नामक वृक्ष है। ३-ललितादेवी, यह यहाँका प्रधान मन्दिर है। ४-गोवर्धन महादेव। ५-क्षेमकाया देवी। ६-जानकी-कुण्ड। ७-हनुमान्‌जी। ८-काशी, पक्के सरोवरपर। अन्नपूर्णा तथा विश्वनाथजीके मन्दिर हैं। यहाँ पिण्डदान होता है। ९-धर्मराज-मन्दिर। १०-व्यास-शुकदेवके स्थान, एक मन्दिरमें भीतर शुकदेवजीकी और बाहर व्यासजीकी गद्दी है तथा पासमें मनु और शतरूपाके चबूतरे हैं। ११-ब्रह्मावर्त, सूखा सरोवर। १२-गङ्गोत्तरी, सूखा सरोवर रेतसे भरा। १३-पुष्कर, सरोवर है। १४-गोमती नदी। १५-दशाश्वमेध टीला, टीलेपर एक मन्दिरमें श्रीकृष्ण और पाण्डवोंकी मूर्तियाँ हैं। १६-पाण्डवकिला, एक टीलेपर मन्दिरमें श्रीकृष्ण तथा पाण्डवोंकी मूर्तियाँ हैं। १७-सूतजीका स्थान, एक मन्दिरमें सूतजीकी गद्दी है। वहीं राधा-कृष्ण तथा बलरामजीकी मूर्तियाँ हैं। १८-श्रीराममन्दिर।

यहाँ स्वामी श्रीनारदानन्दजी महाराजका आश्रम तथा एक ब्रह्मचर्याश्रम भी है, जहाँ ब्रह्मचारी प्राचीन पद्धतिसे शिक्षा प्राप्त करते हैं। आश्रममें साधक लोग साधनाकी दृष्टिसे रहते हैं।

कहा जाता है कि कलियुगमें समस्त तीर्थ नैमिष क्षेत्रमें ही निवास करते हैं।

रुद्रावर्त—नैमिषारण्य स्टेशनसे वनमें लगभग ३ मील दूर यह बावली है। कहा जाता है पहले इसमें विल्वपत्रके अतिरिक्त कोई पत्ता नहीं डूबता था; किन्तु अब तो ऐसी कोई बात नहीं है। वनमें पगडंडीका मार्ग होनेसे स्थानीय मार्गदर्शक साथ ले जाना चाहिये।

मिश्रिख—नैमिषारण्यसे ५ मील दूर, सीतापुरसे हरदोई जानेवाली सड़कपर सीतापुरसे १३ मीलपर यह तीर्थ है। यहाँपर दधीचिकुण्ड है। कहा जाता है कि महर्षि दधीचिका यहीं आश्रम था। देवताओंके माँगनेपर वज्र बनानेके लिये उन्होंने उन्हें अस्थियाँ यहीं दी थीं। यहाँ दधीचि ऋषिका मन्दिर भी है। कहते हैं कि दधीचि-कुण्डमें समस्त तीर्थोंका जल मिश्रित किया गया है।

धौतपाप (हत्याहरण)

नैमिषारण्य-मिश्रिखसे एक योजन (लगभग ८ मील) पर यह क्षेत्र है। यह तीर्थ गोमती किनारे है। यहाँ स्नान करनेसे समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, ऐसा पुराणोंमें वर्णन मिलता है। जिला सुलतानपुरमें लहुआ बाजारसे ईशान कोणमें ४ मीलपर राजापति गाँवमें यह स्थान है। यहाँ ठाकुरबाड़ी है; श्रीशङ्करजी तथा हनुमान्‌जीका मन्दिर है। ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, रामनवमी तथा कार्तिकी पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है।

सुलतानपुर—उत्तर रेलवेकी इलाहाबाद-फैजाबाद लाइनपर सुलतानपुर स्टेशन है। यह नगर ग्रांडट्रंक रोडपर है। यहाँ गोमती नदीके किनारे सीताकुण्ड तीर्थ है। कहा जाता है कि वन जाते समय श्रीजानकीजीने यहाँ स्नान किया था। गङ्गादशहरा और कार्तिक-पूर्णिमाको मेला लगता है।

बाँगरमऊ

कानपुर सेंट्रल स्टेशनसे जो लाइन बालामऊ जाती है, उसमें बाँगरमऊ स्टेशन है। यहाँ एक अद्भुत मन्दिर है, जो तन्त्रशास्त्रकी रीतिसे बना है। यह मन्दिर राजराजेश्वरी श्रीविद्यामन्दिर कहा जाता है।

मुख्य मन्दिरके बरामदेसे लगे नीचे दोनों ओर दो शिवमन्दिर हैं। इनमें पूर्वके मन्दिरमें लिङ्गमूर्ति है। इस लिङ्गमूर्तिमें श्वेत, रक्त, पीत रंग तथा चन्द्रविन्दु आदिके चिह्न हैं। पश्चिमके मन्दिरमें रक्तवर्ण पञ्चमुख चतुर्भुज शिवमूर्ति है।

मुख्य मन्दिरके भीतर अष्टधातुमयी जगदम्बाकी मनोहर मूर्ति है। आसनके नीचे चतुर्दल कमलपर ब्रह्माजी स्थित हैं। कमल-दलोंपर क्रमशः 'वं शं षं सं' ये बीजाक्षर अङ्कित हैं। उसके बाद षट्दल कमलपर विष्णुभगवान् स्थित हैं। इसके दलोंपर 'बं भं मं यं रं लं' ये अक्षर उत्कीर्ण हैं। बीचमें षोडशदल कमलपर सदाशिव विराजमान हैं। दलोंपर 'अं' से 'अः' तकके सोलह स्वर-वर्ण अङ्कित हैं। इसके बायीं ओर नीलवर्ण दशदल पद्मपर 'डं' से 'फं' तकके वर्णोंके साथ रुद्रकी मूर्ति है। आगे वाम पार्श्वमें द्वादशदल रक्तकमलपर 'कं' से 'ठं' पर्यन्त वर्ण तथा ईश्वरमूर्ति है। इन पञ्च देवताओंके ऊपर श्वेतकमल है। उसमें 'हं क्षं' बीजाक्षर हैं तथा सदाशिव लेटे हैं। सदाशिवकी नाभिसे निकले कमलपर जगदम्बाकी मूर्ति विराजमान है।

कुण्डलिनी योगके आधारपर बना अपने ढंगका यह एक ही मन्दिर है।

शृङ्गीरामपुर

(लेखक—ब्रह्मचारी श्रीशिवानन्दजी)

आगराफोर्ट-गोरखपुर लाइनपर आगराफोर्टसे १८४ मीलपर सिंघीरामपुर स्टेशन है। यहाँ गङ्गाजीके दक्षिण तटपर शृङ्गी ऋषिका मन्दिर है। कार्तिककी पूर्णिमा तथा दशहराको मेला लगता है।

कहा जाता है कि महाराज परीक्षित्को शाप देनेपर शृङ्गी ऋषिके मस्तकमें सींग निकल आया। उनके पिता शमीक ऋषिने उन्हें तपस्या करनेका आदेश दिया। शृङ्गी ऋषि अनेक तीर्थोंमें होते हुए यहाँ आकर तप करने लगे। यहाँ उनके मस्तकका सींग गिर गया।

यहाँसे पूर्व च्यवन ऋषिका आश्रम था, जिसे अब चियासर कहते हैं। यहाँ शिवजीका एक प्राचीन मन्दिर है।

कान्यकुब्ज (कन्नौज)

(लेखक—श्री०वी०आर० सक्सेना)

इसे अश्वतीर्थ कहा जाता है। महर्षि ऋचीकने यहाँके महाराज गाधिकी कन्यासे विवाह किया था। महाराज गाधिने शुल्करूपमें एक सहस्र श्यामकर्ण घोड़े माँगे, जो ऋषिने वरुणदेवसे कहकर यहीं प्रकट कर दिये। महाराज गाधिके पुत्र विश्वामित्रजी हुए और महर्षि ऋचीकके पुत्र जमदग्नि ऋषि। जमदग्निजीके पुत्र परशुरामजी थे। यहाँ गौरीशंकर, क्षेमकरी देवी, फूलमती देवी तथा सिंहवाहिनी देवीके मन्दिर हैं।

पहले कन्नौज वैभवपूर्ण नगर रह चुका है। गङ्गाजी इसके पाससे बहती थीं, किंतु अब गङ्गाकी धारा चार मील दूर चली गयी है। कन्नौजमें अब प्राचीन कुछ चिह्नमात्र अवशेष हैं। यह स्थान कानपुरसे पचास मीलपर एक रेलवे स्टेशन है।

आसपासके तीर्थ

खेरेश्वर महादेव—कन्नौजसे ३८ मील दक्षिणपूर्व और कानपुरसे १२ मीलपर मन्धना स्टेशन है, वहाँसे १० मीलपर राजापुर स्टेशन है। राजापुर स्टेशनसे २ मील दूर खेरेश्वर महादेवका मन्दिर है। इसे कुछ लोग घेरेश्वर भी कहते हैं। इसके पास ही अश्वत्थामाका स्थान है। कहा जाता है कि खेरेश्वर लिङ्ग अश्वत्थामाद्वारा स्थापित है।

यहाँ एक ओर चतुर्मुख शिवलिङ्ग भी स्थापित है। शिवरात्रिको मेला लगता है।

बिठूर—मन्धनासे एक रेलवे लाइन बिठूर जाती है। स्टेशनसे चलनेपर पहले बिठूरकी नवीन बस्ती और फिर पुराना बिठूर मिलता है।

बिठूरमें गङ्गाजीके कई घाट हैं, जिनमें मुख्य घाट ब्रह्मघाट है। यहाँ बहुत-से मन्दिर हैं। मुख्य मन्दिर वाल्मीकेश्वर महादेवका है। गङ्गाके घाटकी सीढ़ियोंपर एक स्थानपर एक कील है एक फुट ऊँची। इसे ब्रह्माकी कील कहा जाता है। यहाँ प्रतिवर्ष कार्तिककी पूर्णिमाको मेला लगता है। कुछ लोगोंका मत है कि स्वायम्भुव मनुकी यहीं राजधानी थी और ध्रुवका जन्म यहीं हुआ था।

वाल्मीकि-आश्रम—बिठूरसे ६ मीलपर गङ्गाजीसे १॥ मील दूर वैला रुद्रपुर ग्राम है। इसका पुराना नाम द्वैलव बताया जाता है। वाल्मीकि ऋषिकी जन्मभूमि यहीं थी, ऐसी कुछ लोगोंकी मान्यता है। यहाँ एक प्राचीन वाल्मीकिकूप है। श्रीजानकीजी द्वितीय वनवासमें यहीं वाल्मीकि-आश्रममें रहीं, यहीं लव-कुशका जन्म हुआ, यहीं वाल्मीकीय रामायणकी रचना हुई, ऐसी मान्यता स्थानीय जनताकी है।

उन्नाव-क्षेत्रके चार तीर्थ

(लेखक—श्रीकृष्णबहादुरजी सिनहा एम्० ए०, एल्-एल०बी०)

१. परियर—गङ्गाके पावन तटपर उन्नावसे १४ मील उत्तरकी ओर परियर स्थान है। कार्तिक-पूर्णिमाको यहाँ यात्री गङ्गास्नानके लिये आते हैं। कहते हैं अश्वमेधके अवसरपर श्रीरामचन्द्रजीने यहाँ श्यामवर्ण घोड़ा छोड़ा था। लव और कुशने परियरके वनमें घोड़ेको पकड़ लिया था। इससे युद्ध आरम्भ हो गया। मन्दिरमें कुछ बाणोंके सिरे रखे हैं। इस तरहके बाण प्रायः नदीके तलीमें मिल जाते हैं। यहाँ लव और कुशका बनवाया हुआ बालकानेश्वरनाथ महादेवका मन्दिर है, एक जानकीजी या सीताजीका मन्दिर भी है।

परियर सूफीपुर जानेवाली पक्की सड़कपर स्थित है। उन्नावसे १४ मील उत्तरमें है।

२. संग्रामपुर—का प्राचीन गाँव उन्नाव जिलेमें मौरावाँसे जब्रैलाको जानेवाली सड़कपर एक मील दक्षिणकी ओर है। यह मौरावाँसे ६ मील दूर है। कहते हैं कि रात्रिको आखेटके लिये निकले महाराज दशरथके शब्दवेधी बाणसे यहीं श्रवणकुमार मारे गये। यहीं उनकी चितामें उनके अंधे माता-पिता जले। जब कभी किसी क्षत्रियने यहाँ बसनेका प्रयत्न किया, तब-तब उसका अनिष्ट हुआ। तालाबके पास श्रवणकुमारकी पत्थरकी मूर्ति बनी है। कहते हैं श्रवण प्याससे मरा था, इसलिये इस मूर्तिकी नाभिके छेदमें कितना ही जल छोड़ा जाय, वह नहीं भरता।

३. कुसम्भी—कानपुर-लखनऊ रेलवे लाइनपर कुसम्भी स्टेशन है। यहाँ दुर्गादेवीका मन्दिर है। सामने बड़ा पक्का तालाब है। चैत्रकी पूर्णिमाको यहाँ जिलेका सबसे बड़ा मेला लगता है। स्त्रियाँ पुत्र एवं पुत्रीके मुण्डन-संस्कार आदि यहींपर सम्पन्न कराती हैं।

यह स्थान उन्नाव जिलेके अजगैन (अजग्राम) स्टेशनसे ३ मील है।

४. दुर्गा-कुशहरी—कुसम्भी स्टेशनसे २ मील दक्षिण नवाबगंज नामक स्थानमें दुर्गाजीका एक विशाल भव्य मन्दिर है, जो दुर्गा-कुशहरी नामसे विख्यात है। इन देवीजीका मेला भी चैत्रकी पूर्णिमाको लगता है। नवाबगंज उन्नावसे १२ मील उत्तर-पूर्वकी ओर अजगैन रेलवे-स्टेशनसे ३ मील और लखनऊसे २५ मील दूर है।

डलमऊ

उत्तर रेलवेकी रायबरेली-कानपुर लाइनपर रायबरेलीसे ४४ मीलपर डलमऊ स्टेशन है। कहा जाता है कि यहाँ दाल्भ्य ऋषिका आश्रम है। अब लोग डालवाल कहकर ऋषिका पूजन करते हैं। कार्तिक-पूर्णिमाको गङ्गा-स्नानका मेला होता है।

क्षीरेश्वर

(लेखक—पं० श्रीरामनारायणजी त्रिपाठी 'मित्र' शास्त्री)

कानपुर-दिल्ली लाइनपर शिवराजपुर स्टेशनसे ३ मील उत्तर यह स्थान है। कहा जाता है कि अश्वत्थामाने यहाँ शिवलिङ्गकी स्थापना करके उन्हें दूध चढ़ाया था। मन्दिर बड़ा है और सुन्दर है। पास ही एक सरोवर है। लोग सतीघाटसे गङ्गाजल लाकर यहाँ चढ़ाते हैं।

यहाँसे लगभग आध मीलपर एक मन्दिरमें अश्वत्थामाकी मूर्ति है। उसके आगे लगभग आध मीलपर एक भग्न मन्दिर जङ्गलमें है। उसमें श्वेत रङ्गकी भगवान् शङ्करकी साकार मूर्ति है। यहाँ आस-पास जङ्गलमें अनेक दर्शनीय स्थान हैं।

कुदरकोट

(लेखक—पं० श्रीयशोदानन्दजी शर्मा)

कानपुर सेंट्रल एवं इटावा स्टेशनोंके मध्य फफुंदसे ११ मीलपर अछलदा स्टेशन है। वहाँसे ८ मील दूर कुदरकोट है। कुछ लोग इसे विदर्भदेशस्थ कुण्डिनपुर मानते हैं, जहाँ श्रीरुक्मिणीजी जन्मी थीं। यहाँ एक रुक्मिणीकुण्ड है। ग्रामके बाहर पुरहर नदी है। उसके तटपर अलोपादेवीका मन्दिर है।

कालपी

(लेखक—श्रीगिरिधारीलालजी खरे)

मध्य रेलवेकी झाँसी-कानपुर लाइनपर झाँसीसे ९२ मील दूर कालपी स्टेशन है। यह नगर यमुनाके दक्षिणतटपर स्थित है।

कालपीमें जौंधर नालाके पास व्यास-टीला है। यहाँसे पास ही नृसिंह-टीला है। यहाँके लोग मानते हैं कि व्यास-टीला भगवान् व्यासका आश्रमस्थान है। नृसिंहटीला वह स्थान है, जहाँ प्रह्लादकी रक्षाके लिये नृसिंहभगवान् प्रकट हुए थे। यहाँके लोगोंकी मान्यता है कि जौंधर नालेके पाससे प्रलयकाल आनेपर पृथ्वीसे मोटी जलधारा निकलकर विश्वको जलमग्न कर देती है।

आसपासके स्थान

एरच—झाँसीसे ३४ मीलपर मोथ स्टेशन है। वहाँसे ५ मील पूर्व एरच है। यह प्राचीन हिरण्यकशिपुपुरी है। प्राचीन नगरके भग्नावशेषपर एरच बसा है। यह स्थान वेत्रवती नदीके उत्तर तटपर है। यहाँ प्रह्लाद-पहाड़ी और प्रह्लाद दौह (ह्रद) है।

बबीना—कालपी-हमीरपुर रोडपर कालपीसे १० मील दक्षिण-पूर्व यह स्थान है। यहाँ महर्षि वाल्मीकिका आश्रम था। अब एक सरोवर तथा एक मन्दिर है।

परासन—बबीनासे १० मील दक्षिण वेत्रवती नदीके उत्तरी तटपर यह स्थान है। यहाँ एक मन्दिरमें महर्षि पराशरकी मूर्ति है। यह पराशर ऋषिकी तपोभूमि है।

बेरी—परासनसे १० मील पूर्व और बबीनासे १० मील दक्षिण-पूर्व बरमा और वेत्रवतीके सङ्गमपर यह स्थान है। यह महर्षि कर्दमकी तपोभूमि है। नदी-तटपर कोटेश्वर शिव-मन्दिर है। इसके अतिरिक्त बेरी नगरमें हनुमान्‌जीका मन्दिर तथा श्रीराधाकृष्णका मन्दिर है।

जखेला—बेरीसे चार मील उत्तर है। यहाँ मार्कण्डेय मुनिकी तपोभूमि है तथा मार्कण्डेय मुनिका मन्दिर है। यह मन्दिर महामुनिके नामसे प्रसिद्ध है।

फतेहपुर जिलेके तीन तीर्थ

(लेखक—श्रीइन्द्रकुमारजी 'रञ्जन')

भिटौरा—उत्तर प्रदेशके फतेहपुर नगरसे ८ मील उत्तर गङ्गातटपर स्थित है। यहाँ गङ्गा उत्तरवाहिनी हैं। इसे भृगु मुनिका स्थान कहा जाता है। विजयादशमी और भाद्रपदकी अमावस्याको गङ्गास्नानका मेला लगता है।

हसवा—फतेहपुरसे ८ मील पूर्व ग्रांड ट्रंक रोडपर है। कहा जाता है कि भक्तश्रेष्ठ सुधन्वा यहींके थे। यहाँ प्राचीन दुर्गके अवशेष हैं। 'असोथरके नागा बाबा' की कुटी यहाँ है। ये एक प्रसिद्ध संत हो गये हैं।

असोथर—फतेहपुरसे १४ मील दक्षिण-पूर्व यमुनातटपर है। यहाँ अश्वत्थामाका किला था। उसके भग्नावशेष हैं। कार्तिक-पूर्णिमाको मेला लगता है। यमुनातटपर संत बरमहे बाबाकी समाधि है।

अहिनवार

(लेखक—श्रीरामदासजी विश्वकर्मा)

रायबरेली-लखनऊ लाइनपर रायबरेलीसे २६ मील दूर निगोहाँ स्टेशन है। वहाँसे दक्षिण ओर राती गाँवके पास एक सरोवर तथा एक पुराना मन्दिर है। यही अहिनवार-क्षेत्र है। राजा नहुष यहीं अजगर योनिमें पड़े थे। धर्मराज युधिष्ठिरसे मिलनेके बाद उनका इस योनिसे उद्धार हुआ। कहा जाता है कि युधिष्ठिरने यहाँ यज्ञ किया था। अनेक बार भूमिमेंसे जला शाकल्य मिलता है। यहाँ श्राद्धपक्षमें लोग पिण्डदान करते हैं। नरक-चतुर्दशी तथा कार्तिक-पूर्णिमाको भी मेला लगता है।

घुइसरनाथ

(लेखक—महात्मा श्रीकान्तशरणजी)

यह स्थान प्रतापगढ़ जिलेमें सई नदीके तटपर है। घुइसरनाथ (घृणेश्वरनाथ) शिवमन्दिर है। यह एकादश लिङ्गोंमें एक है। प्रत्येक मङ्गलवारको मेला लगता है। प्रतापगढ़ स्टेशनसे यहाँतक मोटर-बसें चलती हैं। प्रतापगढ़से यह स्थान २५ मील दूर है।

प्रयाग

प्रयाग-माहात्म्य

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ॥

ब्राह्मीनपुत्रीत्रिपथास्त्रिवेणी-
समागमेनाक्षतयोगमात्रान्।
यत्राप्लुतान् ब्रह्मपदं नयन्ति
स तीर्थराजो जयति प्रयागः॥
श्यामो वटोऽश्यामगुणं वृणोति
स्वच्छायया श्यामलया जनानाम्।
श्यामः श्रमं कृन्तति यत्र दृष्टः
स तीर्थराजो जयति प्रयागः॥

(पद्म० उ० खं० २३। ३४, ३५)

'सरस्वती, यमुना और गङ्गाका जहाँ संगम है, जहाँ स्नान करनेवाले ब्रह्मपदको प्राप्त होते हैं, उस तीर्थराज प्रयागकी जय हो। जहाँ श्यामल अक्षयवट अपनी छायासे मनुष्योंको दिव्य सत्त्वगुण प्रदान करता है, जहाँ भगवान् माधव अपने दर्शन करनेवालोंका पाप-ताप काट डालते हैं, उस तीर्थराज प्रयागकी जय हो!'

उपर्युक्त स्तोत्रमें—

'सितासिते सरिते यत्र संगते तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति'

—इस ऋग्वेदकी ऋचाका ही उपबृंहण हुआ है। तीर्थराज प्रयागके* माहात्म्यसे सारा वैदिक साहित्य भरा

* सृष्टिके आदिमें यहाँ श्रीब्रह्माजीका प्रकृष्ट यज्ञ हुआ था। इसीसे इसका नाम प्रयाग कहलाया—
प्रकृष्टं सर्वयागेभ्यः प्रयाग इति उच्यते। (स्कं० पु०)

पड़ा है। पद्मपुराण कहता है—

ग्रहाणां च यथा सूर्यो नक्षत्राणां यथा शशी।
तीर्थानामुत्तमं तीर्थं प्रयागाख्यमनुत्तमम्॥

'जैसे ग्रहोंमें सूर्य तथा ताराओंमें चन्द्रमा हैं, वैसे ही तीर्थोंमें प्रयाग सर्वोत्तम है।'

यत्र वटस्याक्षयस्य दर्शनं कुरुते नरः।
तेन दर्शनमात्रेण ब्रह्महत्या विनश्यति॥

'जो पुरुष यहाँके अक्षयवटका दर्शन करता है, उसके दर्शनमात्रसे ब्रह्महत्या नष्ट हो जाती है।'

आदिवटः समाख्यातः कल्पान्तेऽपि च दृश्यते।
शेते विष्णुर्यस्य पत्रे अतोऽयमव्ययः स्मृतः॥

'यह अक्षयवट आदिवट कहलाता है और कल्पान्तरमें भी देखा जाता है। इसके पत्तेपर भगवान् विष्णु शयन करते हैं, अतः यह वट अव्यय समझा जाता है।'

माधवाख्यस्तत्र देवः सुखं तिष्ठति नित्यशः।
तस्य वै दर्शनं कार्यं महापापैः प्रमुच्यते॥

'वहाँ भगवान् माधव नामसे सुखपूर्वक नित्य विराजते हैं; उनका दर्शन करना चाहिये। ऐसा करनेसे मनुष्य महापापोंसे मुक्त हो जाता है।'

गोघ्नो वापि च चाण्डालो दुष्टो वा दुष्टचेतनः।
बालघाती तथाविद्वान् म्रियते तत्र वै यदा॥
स वै चतुर्भुजो भूत्वा वैकुण्ठे वसते चिरम्।

'गोघाती, चाण्डाल, शठ, दुष्ट-चित्त, बालघाती या मूर्ख—जो भी यहाँ मरता है, वह चतुर्भुज होकर अनन्त कालतक वैकुण्ठमें वास करता है।'

प्रयागे तु नरो यस्तु माघस्नानं करोति च।
न तस्य फलसंख्यास्ति शृणु देवर्षिसत्तम॥

(पद्म० उ० खं० ३, ४, ७, ८, १०, १२—१४)

'देवर्षे! प्रयागमें जो माघस्नान करता है, उसके पुण्यफलकी कोई गणना नहीं।'

अधिक जाननेके लिये महा० वनपर्व० अ० ८५, मत्स्यपुराण अ० १०५, कूर्मपुराण अ० ३६, अग्निपु० अ० १११, पद्मपु० आदि० ३९ तथा गरुड० पूर्व० ६५ एवं प्रयाग-माहात्म्यशताध्यायी देखनी चाहिये।

प्रयाग

प्रयाग तीर्थराज कहे जाते हैं। समस्त तीर्थोंके ये अधिपति हैं। सातों पुरियाँ इनकी रानियाँ कही गयी हैं। गङ्गा-यमुनाकी धाराने पूरे प्रयाग-क्षेत्रको तीन भागोंमें बाँट दिया है। ये तीनों भाग अग्निस्वरूप—यज्ञवेदी माने जाते हैं। इनमें गङ्गा-यमुनाके मध्यका भाग गार्हपत्याग्नि, गङ्गापारका भाग (प्रतिष्ठानपुर—झूँसी) आहवनीय अग्नि और यमुनापारका भाग (अलर्कपुर—अरैल) दक्षिणाग्नि माना जाता है। इन भागोंमें पवित्र होकर एक-एक रात्रि निवाससे इन अग्नियोंकी उपासनाका फल प्राप्त होता है।

प्रयागमें प्रति माघ मासमें मेला होता है। इसे कल्पवास कहते हैं। बहुत-से श्रद्धालु यात्री प्रतिवर्ष गङ्गा-यमुनाके मध्यमें कल्पवास करते हैं। कल्पवास कोई सौर मासकी मकर-संक्रातिसे कुम्भकी संक्रान्तितक मानते हैं और कोई चान्द्रमासके अनुसार माघ महीनेभरकी मानते हैं। यहाँ प्रति बारहवें वर्ष जब बृहस्पति वृषराशिमें और सूर्य मकरराशिमें होते हैं; प्रयागमें कुम्भपर्व होता है। इसमें लाखों यात्री यहाँ आते हैं। कुम्भसे छठे वर्ष अर्धकुम्भी मेला होता है। इस अवसरपर भी माघभर प्रयागमें भारी मेला रहता है। प्रसिद्ध है कि सम्राट् हर्षवर्द्धन प्रयागमें प्रति पाँचवें वर्ष (वस्तुतः ५ वर्षका अन्तर देकर कुम्भ और अर्धकुम्भीके समय) धर्मसभाका आयोजन करते थे और उसमें अपना सर्वस्व दान कर दिया करते थे।

प्रयागमें गङ्गा-यमुनाके संगममें स्नान करके प्राणी पापोंसे मुक्त होकर स्वर्गका अधिकारी हो जाता है और इस क्षेत्रमें देह त्यागनेवाले प्राणीकी मुक्ति हो जाती है—ऐसे वचन पुराणोंमें हैं।

मार्ग

प्रयाग सभी ओरसे केन्द्रमें है। यहाँके स्टेशन हैं—इलाहाबाद, नैनी, प्रयाग, इलाहाबाद सिटी, आइजट ब्रिज और झूसी। इनमें इलाहाबाद स्टेशन जंक्शन है।

यहाँ उत्तर रेलवे तथा मध्य रेलवेकी लाइनें मिलती हैं। अधिकांश यात्री यहीं उतरते हैं। जो यात्री मध्य रेलवेसे बम्बई-जबलपुरकी दिशासे आते हैं, वे नैनी भी उतर सकते हैं। इलाहाबाद स्टेशनसे ४ मील दूर यह स्टेशन यमुनापार है। यहाँसे संगम तीन मील दूर है; किंतु संगमतक जानेका मार्ग कच्चा है। पूर्वी रेलवेपर इलाहाबाद स्टेशनसे अयोध्या-फैजाबादकी ओर जानेपर प्रयाग स्टेशन दो मीलपर पड़ता है। अयोध्याकी ओरसे आनेवाले यात्री प्रायः यहाँ उतरते हैं। नगरके मध्यमें पूर्वोत्तर रेलवेका इलाहाबाद सिटी (रामबाग) स्टेशन है। गोरखपुर, बनारस गाजीपुर, छपरा, बलियाकी ओरसे इस रेलवेद्वारा आनेवाले यात्री झूसी, आइजट ब्रिज या इलाहाबाद सिटी स्टेशन उतरते हैं; क्योंकि इलाहाबाद सिटी स्टेशनसे ३ मीलपर इसी रेलवेपर दारागंजमें आइजट ब्रिज स्टेशन है और गङ्गापार झूसी स्टेशन है। इनके अतिरिक्त प्रयागघाट स्टेशन और त्रिवेणीसंगम स्टेशन और हैं, जो केवल माघ मासमें कार्य करते हैं। माघ मासमें प्रयाग स्टेशनसे प्रयागघाट स्टेशन और इलाहाबाद जंक्शनसे त्रिवेणीसंगम स्टेशनपर ट्रेनें आती हैं। प्रयागसे बनारस, लखनऊ, फैजाबाद, रीवाँ, मिर्जापुर, जौनपुरको पक्की सड़कें जाती हैं। अतः सड़कके मार्गसे भी किसी ओरसे प्रयाग जाया जा सकता है।

प्रयागमें सरकारी बसें चलती हैं। इलाहाबाद स्टेशनसे त्रिवेणी-संगम लगभग ४ मील दूर है। नैनीसे संगम पहुँचनेके लिये यमुनातटतक पैदल या ताँगे-रिक्शेसे आकर नौकासे यमुनाको पार करना पड़ता है। झूसीसे दारागंजतक वर्षाके अतिरिक्त महीनोंमें पीपोंका पुल रहता है; किंतु झूसीमें ताँगे कम ही मिलते हैं। पुल पार करके (लगभग १ मील चलकर) दारागंज आनेपर बस तथा रिक्शे-ताँगे मिलते हैं। आइजटब्रिज, इलाहाबाद सिटी अथवा प्रयाग स्टेशनके पास सवारियाँ मिलती हैं। सवारियाँ माघ मेलेके समय संगमसे २ से ४ फर्लांग दूर बाँधपर ही उतार देती हैं; किंतु मेलेके अतिरिक्त समयमें वे संगमतक ले जाती हैं।

ठहरनेके स्थान

प्रयागमें ठहरनेके अनेक स्थान हैं। नैनी और झूसीमें भी धर्मशालाएँ हैं। इनके अतिरिक्त अनेकों मठ तथा संस्थाएँ हैं। होटलोंमें ठहरनेवालोंके लिये पर्याप्त होटल हैं। कुछ धर्मशालाओंके नाम नीचे दिये जा रहे हैं—

१-बिहारीलाल कुंजीलाल सिंहानियाकी, इलाहाबाद जंकशनके पास।

२-तेजपाल गोकुलदासकी, यमुना-पुलके पास।

३-गोमती बीबी रानी फूलपुरकी, मुट्ठीगंज।

४-बाबू वंशीधर गोपाल रस्तोगीकी, दारागंज।

५-चमेली देवीकी, दारागंज।

६-दुलारी देवीकी, घंटाघरके पास।

७-बुद्धसेनकी, दारागंज।

प्रयागके मुख्य कर्म

तीर्थोंमें उपवास, जप, दान, पूजा-पाठ तो मुख्य होता ही है, किसी तीर्थविशेषका कुछ विशेष कर्म भी होता है। प्रयागका मुख्य कर्म है मुण्डन। अन्य तीर्थोंमें क्षौर वर्जित है, किन्तु प्रयागमें मुण्डन करानेकी विधि है। त्रिवेणी-संगमके पास निश्चित स्थानपर मुण्डन होता है। विधवा स्त्रियाँ भी मुण्डन कराती हैं। सौभाग्यवती स्त्रियोंके लिये वेणी-दानकी विधि है। सौभाग्यवती स्त्री पतिके साथ त्रिवेणीतटपर वेणी-दानका संकल्प करके, हल्दी लगाकर त्रिवेणीमें स्नान करे और तब बाहर आकर पतिसे 'वेणी-दान' की आज्ञा ले। स्नानके समय उसकी वेणी बँधी रहनी चाहिये। आज्ञा देकर पति स्त्रीकी वेणीके छोरपर मङ्गल-द्रव्य बाँधता है और फिर कैंची या छूरेसे वेणीका अग्रभाग बँधे हुए मंगलद्रव्य सहित काटकर स्त्रीके हाथमें रख देता है। स्त्री उस सब सामग्रीको त्रिवेणीमें प्रवाहित कर दे। इसके पश्चात् फिर स्नान करे।

त्रिवेणीस्नान—मुण्डनके पश्चात् त्रिवेणी-स्नान होता है। जहाँ गङ्गाजीका उज्ज्वल जल यमुनाजीके नीले जलसे मिलता हो, वही संगम-स्थल है। यहाँ सरस्वती गुप्त हैं। किलेके दक्षिण यमुनातटपर एक कुण्ड है, उसीको पंडे सरस्वती नदीका स्थान बतलाकर पूजन कराते हैं। संगमका स्थान बदलता रहता है। वर्षाके दिनोंमें गङ्गाजल सफेदी लिये मटमैला और यमुनाजल लालिमा लिये होता है। शीतकालमें गङ्गाजल अत्यन्त शीतल और यमुनाजल कुछ उष्ण रहता है। संगमपर ये अन्तर स्पष्ट दीखते हैं। प्रायः नौकामें बैठकर लोग संगम-स्नान करते हैं; किंतु पैदल कुछ दूर जलमें चलकर भी संगमस्नान किया जा सकता है—बहुत-से

लोग करते भी हैं।

त्रिवेणी-तटपर पक्का घाट नहीं है। यहाँ पंडे अपनी चौकियाँ (तख्ते) तटपर और जलके भीतर भी लगाये रहते हैं। उनपर वस्त्र रखकर यात्री स्नान करते हैं। पंडोंके अलग-अलग चिह्नवाले झंडे होते हैं, जिनसे यात्री अपने पंडेका स्थान सुविधापूर्वक ढूँढ़ सकते हैं।

प्रयागके मुख्य देवस्थान

त्रिवेणीं माधवं सोमं भरद्वाजं च वासुकिम्।
वन्देऽक्षयवटं शेषं प्रयागं तीर्थनायकम्॥

'त्रिवेणी, बिन्दुमाधव, सोमेश्वर, भरद्वाज, वासुकिनाग, अक्षयवट और शेष (बलदेवजी)—ये प्रयागके मुख्य स्थान हैं। इनके अतिरिक्त और भी बहुत-से देवस्थान प्रयागक्षेत्रमें हैं।

माधव—प्रयागशताध्यायीके अनुसार अक्षयवटके दाहिने भागमें वेणीमाधव वैष्णवपीठ होना चाहिये; किन्तु अब त्रिवेणीसंगमपर जलरूपमें ही वेणीमाधव माने जाते है। प्रयागमें कुल १२ माधव कहे गये हैं—१. शङ्खमाधव (झूसीकी ओर छतनगाके पास मुंशीके बागमें), २-चक्रमाधव (अरैलमें), ३-गदामाधव (नैनीके एक मन्दिरमें यह मूर्ति है), ४-पद्ममाधव (वीकर-देवरियामें केवल स्थाननिर्देशक पत्थर है), ५-अनन्तमाधव (अक्षयवटके पास), ६-बिन्दुमाधव (कहीं मूर्ति नहीं है—स्थान द्रौपदीघाटके पास), ७-मनोहरमाधव (द्रवेश्वरनाथ-मन्दिरमें मूर्ति है), ८-असिमाधव (नागवासुकिके पास होना चाहिये), ९-संकष्टहर-माधव (झूसीमें हंसतीर्थके पीछे संध्यावटके नीचे), १०-आदि वेणीमाधव (त्रिवेणीपर जलरूपमें), ११-आदि-माधव (अरैलमें), १२-श्रीवेणीमाधव (दारागंजमें)।

अक्षयवट—प्रयागके तीर्थोंमें अक्षयवट मुख्य है। त्रिवेणीसंगमसे थोड़ी दूरपर किलेके भीतर अक्षयवट है। पहले किलेकी पातालपुरी गुफामें एक सूखी डाल गाड़कर उसमें कपड़ा लपेटा रखा जाता था और उसीको अक्षयवट कहकर दर्शन कराया जाता था; किन्तु अब किलेके यमुना-किनारेवाले भागमें अक्षयवटका पता लग गया है और उस वटवृक्षका दर्शन सप्ताहमें दो दिन सबके लिये खुला रहता है। यमुनाकिनारेके फाटकसे वहाँतक जाया जा सकता है।

किलेके भीतर जहाँ पहले सूखा अक्षयवट दिखाया जाता था—वहाँ भी यात्री जाते हैं। यह स्थान पातालपुरी-मन्दिर कहा जाता है; क्योंकि यह भूमिके नीचे है। इस स्थानमें जिन देवताओंकी मूर्तियाँ हैं, उनके नाम ये हैं—धर्मराज, अन्नपूर्णा, संकटमोचन, महालक्ष्मी, गौरी-गणेश, आदिगणेश, बालमुकुन्द, ब्रह्मचारी, प्रयागराजेश्वर शिव, शूलटङ्केश्वर महादेव, गौरी-शंकर, सत्यनारायण, यमदण्ड महादेव, दण्डपाणि भैरव, ललितादेवी, गङ्गाजी, स्वामिकार्तिक, नृसिंह, सरस्वती, विष्णु, यमुना, दत्तात्रेय, गोरखनाथ, जाम्बवान्, सूर्य, अनसूया, वेदव्यास, वरुण, पवन, मार्कण्डेय, सिद्धनाथ, बिन्दुमाधव, कुबेर, अग्नि, दूधनाथ, पार्वती, सोम, दुर्वासा, राम-लक्ष्मण, शेष, यमराज, अनन्तमाधव, साक्षी विनायक, हनुमान्जी। किलेके भीतर कुलस्तम्भ है, जिसपर अशोकने पीछेसे शिलालेख खुदवा दिया और इसीसे उसे अशोकस्तम्भ कहा जाने लगा। बिना विशेष आज्ञाके उसके दर्शन नहीं हो सकते।

हनुमान्जी—किलेके पास हनुमान्जीका मन्दिर है। यहाँ भूमिपर लेटी हनुमान्जीकी विशाल मूर्ति है। वर्षाऋतुमें बाढ़ आनेपर यह स्थान जलमग्न हो जाता है।

मनकामेश्वर—किलेसे थोड़ी दूर पश्चिम यह शिव-मन्दिर है। किलेसे यात्री नौकाद्वारा ही यहाँ पहुँचते हैं। बीचमें सरस्वती-कूप है।

सोमनाथ—यमुनापार अरैलग्राममें बिन्दुमाधव-मन्दिरके पास यह छोटा शिवमन्दिर है। संगमसे या किलेसे नौकाद्वारा यहाँ जाया जा सकता है।

नागवासुकि—दारागंज मुहल्लेमें श्रीबिन्दुमाधवजीके दर्शन करके वहाँसे लगभग एक मील जानेपर बक्सी मुहल्लेमें गङ्गातटपर नागवासुकिका मन्दिर मिलता है। नागपञ्चमीको यहाँ मेला लगता है।

बलदेवजी (शेष)—नागवासुकिसे आगे लगभग दो मील पश्चिम गङ्गाकिनारे यह मन्दिर है।

शिवकुटी—यह कोटितीर्थ है, जिसे अब शिवकुटी कहते हैं। बलदेवजीसे दो मील आगे गङ्गातटपर यह तीर्थ है। श्रावणमें यहाँ मेला लगता है। यहाँ एक शिवमन्दिर तथा धर्मशाला भी है।

भरद्वाज-आश्रम—शिवकुटीसे लौटनेपर नगरमें करनलगंजमें एक स्थान है। नागवासुकिसे भरद्वाज होकर भी बलदेवजी जा सकते हैं। यहाँ भरद्वाजेश्वर

शिवलिङ्ग है तथा एक मन्दिरमें हजार फणोंके शेषकी मूर्ति है।

अलोपी देवी—चौकसे दारागंजको जो ग्रांड ट्रंक रोड गयी है, उसमें दारागंजसे ४ फर्लांगपर अलोपीदेवीका मन्दिर है। यहाँ प्राय: मेले लगते रहते हैं। अलोपीदेवी वस्तुत: ललितादेवी हैं।

बिन्दुमाधव—संगमसे या सोमेश्वरनाथका दर्शन करके गङ्गापार हो जानेपर मुंशीके बागमें बिन्दुमाधवका दर्शन होता है। इस स्थानसे किनारे-किनारे पैदल आनेपर प्रतिष्ठानपुर (झूसी) प्राय: एक मील पड़ता है। यात्री दारागंजसे पीपोंके पुलपर गङ्गापार करके तिवारीका शिवाला, हंसकूप, समुद्रकूपके दर्शन करते यहाँ आ सकते हैं। अथवा यहाँसे पैदल चलकर इन तीर्थोंका दर्शन करते पीपोंके पुलसे दारागंज पहुँच सकते हैं।

झूसी (प्रतिष्ठानपुर)—कहा जाता है कि यह पुरूरवाकी राजधानी थी। ठीक त्रिवेणी-संगमसे सामने गङ्गापार पुराना किला है, जो अब एक टीलामात्र रह गया है। उसपर समुद्रकूप नामक कुआँ है, जो बड़ा पवित्र माना जाता है। वहाँसे उत्तर चलनेपर पुरानी झूसी तथा नयी झूसीके मध्यमें हंसकूप नामक कुआँ है। इसके पास हंसतीर्थ नामक कुण्डलिनी-योगके आधारपर बना मन्दिर है, जिसके पूर्वद्वारके पास संध्यावट तथा संकष्टहर माधव (की भग्नमूर्तियाँ) हैं। आगे नयी झूसीमें तिवारीका शिवालय अच्छा मन्दिर है। झूसीमें श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीका प्रसिद्ध संकीर्तन-भवन है। जहाँ नित्य कथा-कीर्तन होते रहते हैं।

ललितादेवी—तन्त्रचूड़ामणिके अनुसार प्रयागमें ५१ शक्तिपीठोंमेंसे एक शक्तिपीठ है। यहाँ सतीकी हस्ताङ्गुलि गिरी थी। यहाँकी शक्ति ललितादेवी हैं और भव नामक भैरव हैं। प्रयागमें ललितादेवीकी मूर्तियाँ दो हैं—एक अक्षयवटके पास है और दूसरी मीरपुरकी ओर है। किलेमें ललितादेवीके समीप ही ललितेश्वर शिव हैं। ललितादेवीका ठीक स्थान—जो शक्तिपीठ है—अलोपी देवी हैं।

प्रयागकी परिक्रमा

प्रयागकी अन्तर्वेदी परिक्रमा दो दिनमें होती है और बहिर्वेदी परिक्रमा दस दिनमें। इनका संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जा रहा है। किंतु इनमें बहुतसे तीर्थ यमुनामें या गङ्गामें हैं, उनके स्थाननिर्देशक पत्थर भी नहीं गड़े हैं। कुछ तीर्थ लुप्त हो गये हैं।

अन्तर्वेदी परिक्रमा—त्रिवेणी-स्नान करके जलरूपमें विराजमान बिन्दुमाधवका पूजन करे और वहाँसे यात्रा प्रारम्भ करे। यमुनाजीमें मधुकुल्या, घृतकुल्या, निरञ्जनतीर्थ, आदित्यतीर्थ और ऋणमोचनतीर्थ किलेतक हैं। इनमें स्नान या मार्जन किया जाता है। आगे यमुनाकिनारे ही पापमोचनतीर्थ, परशुरामतीर्थ (सरस्वतीकुण्डके नीचे), गोघट्टनतीर्थ, पिशाचमोचनतीर्थ, कामेश्वरतीर्थ (मन:-कामेश्वर), कपिलतीर्थ, इन्द्रेश्वर शिव, तक्षककुण्ड, तक्षकेश्वर शिव, (बरुआघाटके आगे दरियाबाद मुहल्लेमें यमुना-किनारे) कालियह्रद, चक्रतीर्थ, सिन्धुसागर तीर्थ (ककरहा-घाटके पास) होते हुए सड़कसे पाण्डवकूप, वरुणकूप (गढ़ईकी सरायमें) होकर कश्यपतीर्थ, द्रव्येश्वरनाथ शिव (चौकमें) होते हुए सूर्यकुण्ड होकर भरद्वाज-आश्रम (करनलगंज) में रात्रिविश्राम करे। प्रात:काल भरद्वाजेश्वर, सीतारामाश्रय, विश्वामित्राश्रम, गौतमाश्रम, जमदग्नि-आश्रम, वशिष्ठाश्रम, वायु-आश्रम (सब भरद्वाजाश्रममें ही हैं) के दर्शन करके उच्चै:श्रवास्थान, नागवासुकि, ब्रह्मकुण्ड, दशाश्वमेधेश्वर, लक्ष्मीतीर्थ, महोदधितीर्थ, मलापहतीर्थ, उर्वशीकुण्ड, शक्रतीर्थ, विश्वामित्रतीर्थ, बृहस्पतितीर्थ, अत्रितीर्थ, दत्तात्रेयतीर्थ, दुर्वासातीर्थ, सोमतीर्थ, सारस्वततीर्थ (ये सब तीर्थ गङ्गाजीमें हैं) को प्रणाम करता हनुमान्‌जीके दर्शन करके त्रिवेणीस्नान करे।

बहिर्वेदी परिक्रमा

प्रथम दिन—त्रिवेणी-स्नान-पूजन करके अक्षयवट-दर्शन करते हुए किलेके नीचेसे यमुनाको पार करना चाहिये। उस पार शूलटङ्केश्वर, सुधारसतीर्थ, उर्वशीकुण्ड (यमुनाजीमें), आदि-बिन्दुमाधवके दर्शन करके किनारे-किनारे हनुमान्‌तीर्थ, सीताकुण्ड, रामतीर्थ, वरुणतीर्थ एवं चक्रमाधवको प्रणाम करते हुए सोमेश्वरनाथमें रात्रिविश्राम।

द्वितीय दिन—किनारे-किनारे सोमतीर्थ, सूर्यतीर्थ, कुबेरतीर्थ, वायुतीर्थ, अग्नितीर्थ (धारामें होनेसे)—इन्हें स्मरण एवं प्रणाम करते देवरिख गाँवमें महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठकका तथा नैनी गाँवमें गदामाधवका दर्शन करके कम्बलाश्वतर (छिउकी स्टेशनके पार नैनीमें) होते हुए रामसागरपर रात्रिविश्राम।

तृतीय दिन—वीकर-देवरियामें यमुनातटपर रात्रिनिवास और श्राद्ध। यहाँ श्राद्ध करनेका अनन्त फल है। यहाँ

प्रयागराज

नाग-वासुकि

भरद्वाज-आश्रम

संध्या-वट, झूसी

त्रिवेणी

संकीर्तन-भवन, झूसी
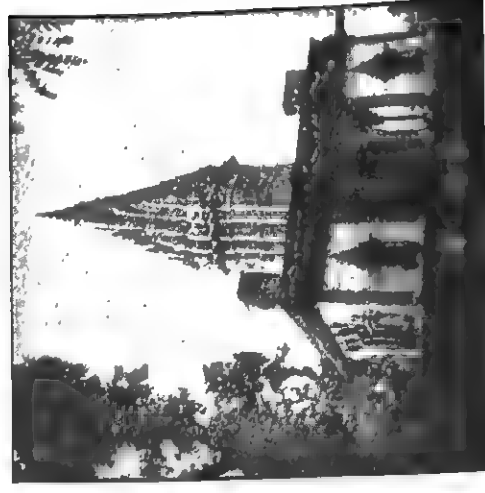
शिवालय, झूसी
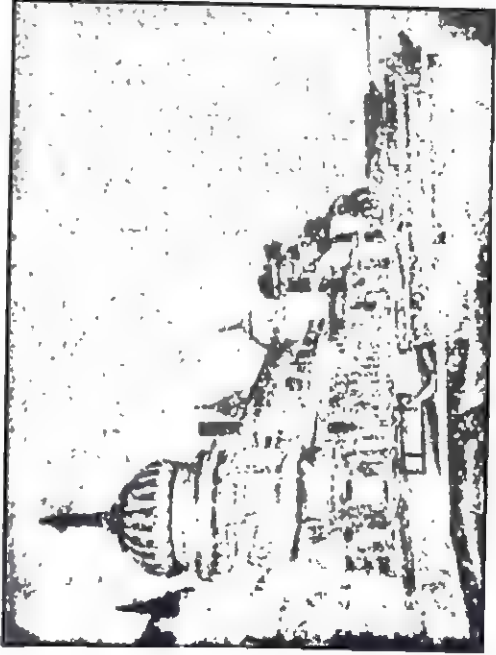
श्रीअयोध्यापुरी

स्वर्गद्वार-घाट
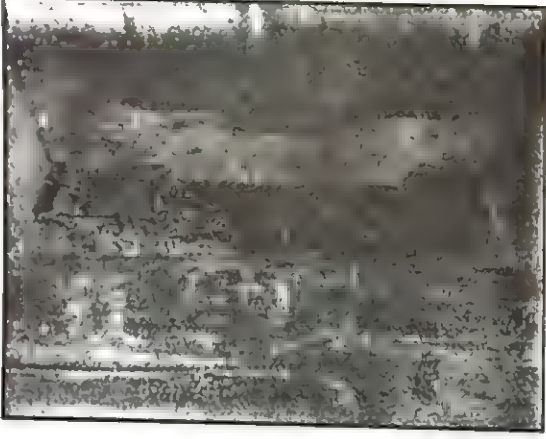
जन्म-स्थान-कसौटीका खंभा

कनक-भवन

हनुमानगढ़ी

अयोध्यानगरीका दृश्य
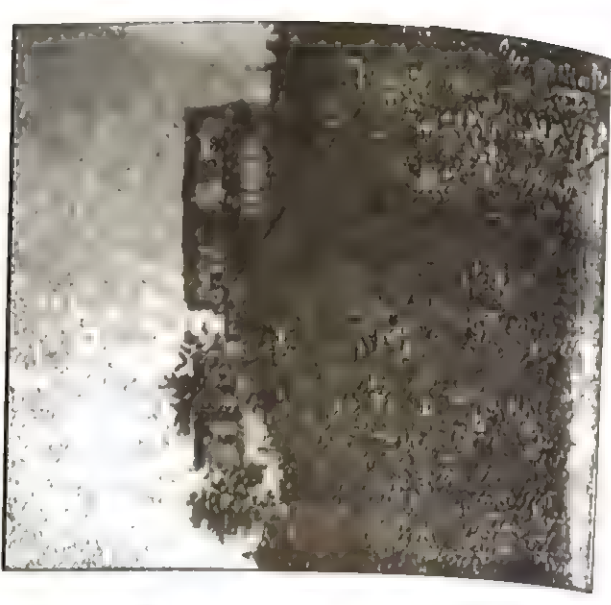
श्रीमणिपर्वत

यमुनाजीके मध्य पहाड़ीपर महादेवजी हैं।

चतुर्थ दिन—वीकरमें यमुनापार होकर करहदाके पास बनखण्डी महादेवमें रात्रिनिवास।

पञ्चम-दिन—बेगमसरायसे आगे नीमाघाट होते हुए द्रौपदीघाटपर रात्रिविश्राम।

षष्ठ दिन—शिवकोटि-तीर्थपर रात्रि-निवास।

सप्तम दिन—पड़िला महादेवके दर्शन करते हुए मानसतीर्थपर रात्रिविश्राम।

अष्टम दिन—झूसी होते हुए नागेश्वरनाथ-क्षेत्रमें नागतीर्थके दर्शन करके शङ्खमाधवपर रात्रिनिवास।

नवम दिन—व्यासाश्रम, समुद्रकूप, ऐलतीर्थ, संकष्टहर माधव (हंसतीर्थ), संध्यावट, हंसकूप, ब्रह्मकुण्ड, उर्वशी-तीर्थ एवं अरुन्धती होते हुए प्रतिष्ठानपुर (झूसी) में रात्रिवास।

दशम दिन—झूसीसे त्रिवेणी जाकर परिक्रमा समाप्त।

बहिर्वेदीकी परिक्रमा करनेवालोंको दसवें दिन त्रिवेणीतटपर जाकर फिर अन्तर्वेदी परिक्रमा कर लेना चाहिये।

प्रयागके आसपासके तीर्थ

प्रयागके आसपासके तीर्थोंमें दुर्वासा-आश्रम, लाक्षागृह, सीतामढ़ी, इमिलियनदेवी, ऋषियन, राजापुर, शृङ्गवेरपुर और कड़ा हैं।

दुर्वासा-आश्रम—प्रयागमें त्रिवेणी-संगमपर गङ्गापार होकर गङ्गाकिनारे चलें तो संगमसे लगभग ६ मील और छतनगा (शङ्खमाधव) से ४ मील दूर ककरा ग्राम पड़ेगा। यहाँ दुर्वासामुनिका मन्दिर है। श्रावणमें मेला लगता है। झूसीसे पूर्वोत्तर रेलवेमें (बनारसकी ओर) ७ मीलपर रामनाथपुर स्टेशन है। यहाँसे ककराग्राम ३ मील है।

ऐन्द्रीदेवी—दुर्वासा-आश्रमसे आध मीलपर ऐन्द्रीदेवीका मन्दिर है। अब इन्हें आनन्दीदेवी कहते हैं। दुर्वासाजीके तपकी राक्षसोंसे रक्षाके लिये ऐन्द्रीदेवीका आवाहन तथा स्थापन महर्षि भरद्वाजने किया था।

लाक्षागृह—इसका वर्तमान नाम लच्छागिर है। यहीं दुर्योधनने पाण्डवोंको धोखेसे जला देनेके लिये लाक्षागृह बनवाया था। यह स्थान गङ्गाकिनारेके मार्गसे दुर्वासाश्रमसे १८ मील है। पूर्वोत्तर रेलवेमें झूसीसे १८ मीलपर हड़ियाखास स्टेशन है। इस स्टेशनसे लाक्षागृह केवल ३ मील है।

सीतामढ़ी—महर्षि वाल्मीकिका आश्रम देशमें कई स्थानोंपर बताया जाता है; किन्तु वाल्मीकीय रामायण देखनेसे लगता है कि वह गङ्गा-किनारे था और कहीं चित्रकूटकी दिशामें (प्रयागके आसपास) था, जहाँ लक्ष्मणजी सीताजीको छोड़ आये थे और जहाँ लव-कुशका जन्म हुआ था। प्रयागसे आगे सीतामढ़ी वाल्मीकि-आश्रम कहा जाता है। यह स्थान पूर्वोत्तर रेलवेपर हँडियाखाससे ५ मील आगे भीटी स्टेशनसे लगभग ३ मील दूर गङ्गा-किनारे है।

इमिलियनदेवी—प्रयागकी बहिर्वेदी परिक्रमामें वीकरका नाम आया है। यहाँ यमुनाके मध्यमें एक पहाड़ी है। इसे सुजाव देवता कहते हैं। त्रिवेणी-संगमसे नौकाद्वारा जानेपर वीकर ४ मील पड़ता है। उसके ५ मील आगे यमुनाकिनारे इमिलियनदेवीका स्थान है। यहाँका मेला प्रसिद्ध है।

ऋषियन—इस स्थानका नाम मऊछीबो है। भगवान् श्रीरामने महर्षि भरद्वाजसे मार्गदर्शनके लिये जो चार ब्रह्मचारी साथ माँगे थे, उन्हें इसी स्थानसे विदा किया गया था।

राजापुर—इलाहाबाद जंकशनसे २४ मीलपर भरवारी स्टेशन है। वहाँसे मंझनपुर होकर मोटर या इक्केसे राजापुर जाना पड़ता है। इलाहाबादसे सीधी मोटर-बस भी राजापुर जाती है। गोस्वामी तुलसीदासजीकी यह एक मतसे जन्मभूमि और दूसरे मतसे साधन-भूमि है। यहाँ उनके हाथकी लिखी कही जानेवाली श्रीरामचरित-मानसके अयोध्याकाण्डकी प्रति सुरक्षित है। इसी जगह एक तुलसी-स्मारककी योजना की जा रही है। राजापुरके ठीक सामने यमुनापार महोबा है। महोबाका वर्णन चित्रकूटके साथ किया जायगा।

शृङ्गवेरपुर—प्रयागसे मोटर-बस शृङ्गवेरपुर जाती है। उत्तर रेलवेकी इलाहाबाद-रायबरेली लाइनपर इलाहाबादसे २१ मील दूर रामचौरारोड स्टेशन है। वहाँसे

शृङ्गवेरपुर ३ मील है। भगवान् श्रीरामने वनवासके समय यहाँ निषादराज गुहका आग्रह मानकर रात्रि-विश्राम किया था। यहाँ शृङ्गी (ऋष्यशृङ्ग) ऋषि तथा उनकी पत्नी दशरथ-सुता शान्तादेवीका मन्दिर है। ग्रामसे पश्चिम दो फर्लांगपर गङ्गाजीमें ऋष्यशृङ्गके पिताके नामपर विभाण्डक-कुण्ड है। शृङ्गवेरपुरसे लगभग १ मील पूर्व रामचौरा ग्राम है, वहाँ गङ्गाकिनारे एक मन्दिरमें श्रीरामचन्द्रजीके चरणचिह्न हैं। इससे लगा हुआ रामनगर स्थान है, जहाँ प्रत्येक पूर्णिमा और अमावस्याको मेला लगता है।

रामनगरसे १॥ मीलपर भैरवजी और शङ्करजीके स्थान हैं। उनके सामने गङ्गाके दूसरे तटपर कुरई बस्ती है। इन दोनों स्थानोंके मध्यमें गङ्गाजीमें सीताकुण्ड है। लोग कहते हैं कि सीताजीने इस कुण्डसे मिट्टी ली थी। इस कुण्डमें यह अद्भुत बात है कि गङ्गाकी धारा जब दक्षिण तटपर रहती है, तब कुण्डमें जल उत्तर ओर रहता है और धारा जब उत्तर ओर रहती है, तब कुण्डमें जल दक्षिण ओर होता है।

(लेखक—श्रीव्रजकिशोरजी पाठक 'व्रजेश')

कड़ा—प्रयागसे ४० मीलपर कड़ा नामका स्थान है। यह संत मलूकदासकी जन्मभूमि है। कड़ेकी शीतला भवानी प्रसिद्ध हैं। प्रायः खत्रीलोग अपने बालकोंका मुण्डन-संस्कार कड़ा आकर कराते हैं। आषाढ़बदी अष्टमीको मुख्य मेला होता है। जयचन्दकालिकाका मन्दिर है। यहाँसे आध मील पूर्व जाह्नवीकुण्ड है। कहते हैं, यहाँ जह्नु ऋषिका आश्रम था। यहाँ शीतला-मन्दिरमें कोई मूर्ति नहीं है। मन्दिरमें एक कुण्ड है, कुण्ड सूखनेपर उसमें एक पंजा दीखता है। मन्दिरके पास १०-१५ धर्मशालाएँ हैं।

प्रयागके जैनतीर्थ

अक्षयवट—अक्षयवटको जैन भी पवित्र मानते हैं। कहते हैं कि इसके नीचे ऋषभदेवजीने तप किया था। प्रयागमें कई जैन-मन्दिर हैं। चौकके पास जैन-धर्मशाला भी है।

पफसोजी—भरवारी स्टेशन (इलाहाबाद जंकशनसे २४ मील) से यहाँ जाया जाता है। यहाँ प्रभासक्षेत्र नामक पहाड़ीपर पद्मप्रभुसे सम्बन्धित एक जैनमन्दिर है।

कौशाम्बी—यह स्थान पफसोजीसे ४ मीलपर है। पद्मप्रभुके गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान—ये चार कल्याणक यहाँ हुए थे। यह प्रसिद्ध उदयन राजाकी राजधानी थी। इस स्थानका नाम अब कोसम है। यहाँ पृथ्वीकी खुदाईसे बहुत-सी मूर्तियाँ मिली हैं। यहाँ पासके गडवाहा ग्राममें जैन-मन्दिर है।

पड़िला महादेव

(लेखक—श्रीबद्रीप्रसादजी मानसशिरोमणि)

उत्तर रेलवेकी इलाहाबाद-जौनपुर लाइनपर भरवई स्टेशन है। स्टेशनसे एक मील दूर यह स्थान है। पाण्डवेश्वर स्थानको ही अब पड़िला महादेव कहा जाता है। यह स्थान प्रयागसे १० मील दूर है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं।

यहाँ पाण्डवेश्वर महादेवका मन्दिर है। इस स्थानसे दो मील दूर भीमकुण्ड है। कहा जाता है कि परीक्षित्को राज्य देकर पाण्डव इसी मार्गसे हिमालय गये थे। यहाँ बैजू नामके एक भक्त हो गये हैं। पहले बैजूकी पूजा करके तब पाण्डवेश्वरकी पूजा होती है। यहाँ शिवरात्रिपर मेला लगता है।

चित्रकूट

चित्रकूट-माहात्म्य

कामद भे गिरि राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत बिषादा॥

गोस्वामीजीने किस आतुरतासे अपनेको चित्रकूट जानेके लिये कहा है, देखते ही बनता है—

अब चित चेति चित्रकूटहि चलु।

...न करु बिलंब बिचारु चारुमति, बरष पाछिले सम अगिले पलु॥

उनका कथन है कि कलियुगने समस्त संसारपर अपना जाल बिछा दिया, पर प्रभुकी कृपासे अद्यावधि चित्रकूट उससे मुक्त है। उनके इस कथनमें महर्षि वाल्मीकिके ये वचन भी प्रमाण हैं—

यावता चित्रकूटस्य नरः शृङ्गाण्यवेक्षते।

कल्याणानि समाधत्ते न मोहे कुरुते मनः॥

(वा० रा० २। ५४। ३०)

अर्थात् मनुष्य जबतक चित्रकूटके शिखरोंका अवलोकन करता रहता है, तबतक वह कल्याण-मार्गपर चलता रहता है तथा उसका मन मोह—अविवेकमें नहीं फँसता।

ऋषयस्तत्र बहवो विहृत्य शरदां शतम्।
तपसा दिवमारूढाः कपालशिरसा सह॥

(वा० २। ५०। ३१)

'बहुत-से ऋषि वहाँ सैकड़ों वर्षतक भगवान् शिवके साथ विहार करके अन्तमें तपस्याके द्वारा स्वर्गको चले गये।'

यहीं ब्रह्मा, विष्णु, महेश—तीनों महाप्रभुओंको एक साथ (चन्द्रमा, मुनि दत्तात्रेय तथा दुर्वासाके रूपमें) जन्म ग्रहण करना पड़ा था और यहाँ प्रवेश करते ही नल, युधिष्ठिर आदिका घोर क्लेश मिट गया था—

जहँ जनमें जग जनक जगत पति
बिधि हरि हर परिहरि प्रपंच छल।
सकृत प्रबेस करत जेहि आश्रम
बिगत बिषाद भए पारथ नल॥

(वि० प०)

चित्रकूटे शुभे क्षेत्रे श्रीरामपदभूषिते।
तपश्चचार विधिवद् धर्मराजो युधिष्ठिरः॥
दमयन्तीपतिर्वीरो राज्यं प्राप हताशुभः।

(महारा०)

'श्रीरामके पादपद्मोंसे अलंकृत शुभ चित्रकूट क्षेत्रमें धर्मराज युधिष्ठिरने विधिपूर्वक तपस्या की तथा दमयन्तीके पति वीरशिरोमणि महाराज नलने अपने समस्त अशुभ कर्मोंको जलाकर पुनः अपना खोया हुआ राज्य पा लिया।'

कहते हैं आज भी कामदगिरिके समक्ष जो मनौती मानी जाती है, उसे वे पूरा करते हैं।

विभिन्न रामायणों, पद्मपुराण, स्कन्दपुराण, महाभारत तथा कालिदासके मेघदूतनामक खण्डकाव्यमें चित्रकूटका अमित माहात्म्य तथा परम रम्य वर्णन उपलब्ध होता है।

चित्रकूट

चित्रकूटका सबसे बड़ा माहात्म्य यह है कि भगवान् श्रीरामने वहाँ निवास किया। वैसे चित्रकूट सदासे तपोभूमि रही है। महर्षि अत्रिका वहाँ आश्रम था। आस-पास बहुत-से ऋषि-मुनि रहते थे। उन दिनों वनोंमें महर्षियोंके कुल रहा करते थे। किसी एक तेजस्वी, तपोधन, शास्त्रज्ञ ऋषिके सहारे आस-पास दूसरे तपस्वी, साधननिष्ठ, मुनिगण आश्रम बना लेते थे; क्योंकि वीतराग पुरुषोंको भी सत्सङ्ग सदासे प्रिय है। चित्रकूटमें मुनियोंका इस प्रकारका एक बड़ा समाज था और उसके संचालक थे महर्षि अत्रि। वहाँकी पूरी भूमि उन देवोत्तर पुरुषोंकी पद-रजसे पुनीत है।

चित्रकूट भगवान् श्रीरामकी नित्य-क्रीड़ाभूमि है। वे न कभी चित्रकूट छोड़ते हैं न अयोध्या। यहाँ वे नित्य निवास करते हैं। अधिकारी भगवद्भक्त यहाँ उनका साक्षात्कार कर पाते हैं। अनेकों संत भगवद्भक्तोंको इस क्षेत्रमें भगवान् श्रीरामके दर्शन हुए हैं। यहाँ तपस्वी, भगवद्भक्त, विरक्त महापुरुष सदासे रहे हैं। उनकी परम्परा अविच्छिन्न चलती आयी है।

मार्ग

मानिकपुर-झाँसी लाइनपर चित्रकूट और करवी स्टेशन हैं। प्रयागसे जानेवाले या जबलपुरकी ओरसे आनेवालोंको मानिकपुरमें गाड़ी बदलनी पड़ती है। प्रयागसे मध्य-रेलवेपर ६३ मील दूर मानिकपुर स्टेशन है। वहाँसे करवी १९ मील और चित्रकूट स्टेशन २४ मील है। यात्रियोंको सुविधा करवी स्टेशनपर उतरनेमें होती है; क्योंकि करवीसे अच्छा मार्ग है और सवारियाँ मिल जाती हैं। चित्रकूट स्टेशनसे मार्ग अच्छा नहीं है। कानपुरसे बाँदाको एक सीधी लाइन है। इस लाइनसे आनेपर बाँदामें गाड़ी बदलनी पड़ती है।

चित्रकूट बस्तीका नाम सीतापुर है। यह स्थान चित्रकूट स्टेशनसे ४ मील है; किंतु मार्ग ऊँचा-नीचा है। करवीसे सीतापुर ५ मील है। करवीमें स्टेशनके पास धर्मशाला है। करवी बाजार है। स्टेशनसे सीतापुरके लिये ताँगे मिलते हैं। मोटर-बसें भी चलती हैं।

ठहरनेके स्थान

१-श्रीभैरोप्रसाद बद्रीदास अग्रवालकी, करवी स्टेशनसे १ फर्लांगपर।

२-श्रीसाधूराम तुलारामकी, सीतापुर बाजारमें।

३-सेठ गोवर्धनदास तुमसरवालेकी, रामघाटपर।

नोट—यहाँ और भी कई धर्मशालाएँ हैं। यात्री मठोंमें, मन्दिरोंमें भी ठहर सकते हैं। सीतापुरमें, कामदगिरिकी

परिक्रमामें, जानकीकुण्डपर, करवी बाजारमें सभी जगह यात्रियोंके ठहरनेकी सुविधा है। भोजनादिका सब सामान सीतापुर (चित्रकूट) में मिल जाता है। जानकीकुण्डपर दूकानें नहीं हैं। कामदगिरिकी परिक्रमामें थोड़ी दूकानें हैं।

चित्रकूट-दर्शन

चित्रकूटमें कामदगिरिकी परिक्रमा तथा देवदर्शन ही मुख्य हैं। यहाँके सम्पूर्ण तीर्थोंके दर्शन ५ दिनोंमें सुगमतासे हो जाते हैं। क्रम यह है—

पहले दिन—सीतापुरमें राघव-प्रयागमें स्नान, कामदगिरिकी परिक्रमा तथा वहाँके और सीतापुरके मन्दिरोंके दर्शन। ७ मील।

दूसरे दिन—राघव-प्रयागमें स्नान करके कोटितीर्थ, सीतारसोई, हनुमान-धारा होकर सीतापुर लौटे। १२ मील।

तीसरे दिन—राघव-प्रयागमें स्नान करके केशवगढ़, प्रमोदवन, जानकीकुण्ड, सिरसा-वन, स्फटिकशिला तथा अनसूयाजी होते बाबूपुरमें रहे। १० मील।

चौथे दिन—बाबूपुरसे गुप्तगोदावरी जाकर स्नान करे और कैलासपर्वतका दर्शन करके चौबेपुरमें रहे। १० मील।

पाँचवें दिन—चौबेपुरसे भरतकूप जाकर स्नान करे और रामशय्या होकर सीतापुर लौटे। १० मील।

सीतापुर—यह छोटा-सा कस्बा है, जो पयोष्णीके किनारे बसा है। पहले इसका नाम जैसिंहपुर था। यही चित्रकूटकी मुख्य बस्ती है। यहाँ पयस्विनीपर चौबीस पक्के घाट हैं, जिनमें चार मुख्य हैं, १. राघवप्रयाग, २. कैलासघाट, ३. रामघाट, ४. घृतकुल्याघाट।

गोस्वामी तुलसीदासजीके रहनेके दो स्थान चित्रकूटमें हैं—एक तो रामघाटके पास गलीमें और दूसरा कामतानाथ (कामदगिरि) की परिक्रमामें चरण-पादुकाके पास।

रामघाटके ऊपर यज्ञवेदी-मन्दिर है। कहते हैं कि यहाँ ब्रह्माजीने यज्ञ किया था। इसी मन्दिरके जगमोहनमें उत्तर ओर पर्णकुटीका स्थान है, जहाँ श्रीराम वनवासके समय निवास करते थे।

राघवप्रयाग यहाँका मुख्य घाट है। यहाँ पयस्विनीमें धनुषाकार बहता एक नाला मिलता है, जिसे लोग मन्दाकिनी कहते हैं। यह गरमीमें सूख जाता है। कहते हैं कि भगवान् श्रीरामने इसी घाटपर स्वर्गीय महाराज दशरथको तिलाञ्जलि दी थी। इस घाटके ऊपर मत्तगजेन्द्रेश्वरका मन्दिर है।

कामतानाथ (कामदगिरि) की परिक्रमा—सीतापुरसे डेढ़ मील दूर कामतानाथ या कामदगिरि नामकी पहाड़ी है। यह पहाड़ी परम पवित्र मानी जाती है। इसपर ऊपर नहीं चढ़ा जाता। इसीकी परिक्रमा की जाती है। परिक्रमा तीन मीलकी है। पूरा परिक्रमा-मार्ग पक्का है।

परिक्रमामें पहला स्थान मुखारविन्द पड़ता है। यह स्थान अत्यन्त पवित्र माना जाता है। इसके पश्चात् परिक्रमामें छोटे-बड़े अनेकों मन्दिर मिलते हैं—उनमें मुख्य हैं श्रीहनुमान्‌जी, साक्षीगोपाल, लक्ष्मीनारायण, श्रीरामजीका स्थान, तुलसीदासजीका स्थान, कैकेयी और भरतजीका मन्दिर, चरणपादुका और श्रीलक्ष्मणजीका मन्दिर।

चित्रकूटमें कई स्थानोंपर चरणचिह्न मिलते हैं, जिनमें तीन मुख्य हैं—१. चरणपादुका, २. जानकीकुण्ड, ३. स्फटिकशिला। कामतानाथकी परिक्रमामें चरणपादुका-स्थान है। इसमें तीन मन्दिर गुमटीके समान बने हैं। एकमें बायें पैरका चिह्न है, जो छोटा है। दूसरेमें बहुत बड़े पैरोंके चिह्न हैं। तीसरेमें बहुतसे पद-चिह्न हैं। कहा जाता है कि यहाँ श्रीराम भरतसे मिले थे। उस समय पाषाण द्रवित होनेसे उनमें चरण-चिह्न बन गये।

चरणपादुकाके पास ही लक्ष्मण-पहाड़ी है, इसपर लक्ष्मणजीका मन्दिर है। ऊपर जानेके लिये लगभग १५० सीढ़ी चढ़ना पड़ता है। कहा जाता है कि यह स्थान लक्ष्मणजीको प्रिय था। वे रातमें यहीं बैठकर पहरा दिया करते थे।

सीतारसोई-हनुमानधारा—सीतापुर (चित्रकूट) से पूर्व संकर्षण पर्वत है, इसीपर कोटितीर्थ है। कोटितीर्थके समीप जाकर ऊपर चढ़नेसे चढ़ाई कम पड़ती है। वहाँके ऊपर-ही-ऊपर आनेपर बाँकेसिद्ध, पंपासर, सरस्वती नदी (झरना), यमतीर्थ, सिद्धाश्रम, गृध्राश्रम (जटायु-तपोभूमि) और कुछ उतरकर हनुमानधारा है। यहाँ एक पतली धारा हनुमान्‌जीके आगे कुण्डमें गिरती है। हनुमानधारासे उतर आनेका मार्ग है। हनुमानधारासे सौ सीढ़ी ऊपर सीतारसोई है।

सिद्धाश्रमसे दो मील पूर्व मणिकर्णिका-तीर्थ है। उसके मध्यमें चन्द्र, सूर्य, वायु, अग्नि और वरुण—इन पाँच देवताओंका निवास होनेसे उसे पञ्चतीर्थ कहते हैं। यहाँसे कुछ दूरीपर ब्रह्मपद-तीर्थ है।

जानकीकुण्ड—तीसरे दिनकी परिक्रमामें पयस्विनी

नदीके किनारे बायें तटसे जानेपर पहले प्रमोदवन मिलता है। इसके चारों ओर पक्की दीवाल और कोठरियाँ बनी हैं। बीचमें दो मन्दिर हैं। प्रमोदवनसे आगे पयस्विनी-तटपर जानकीकुण्ड है। नदी-तटपर श्वेत पत्थरोंपर यहाँ बहुतसे चरण-चिह्न हैं। कहते हैं कि यहाँ श्रीजानकीजी प्रायः स्नान किया करती थीं।

स्फटिकशिला—जानकीकुण्डसे डेढ़ मीलपर स्फटिकशिला स्थान है। यहीं इन्द्रके पुत्र जयन्तने कौएका रूप धारण करके श्रीसीताजीको चोंच मारी थी। अब यहाँ दो शिलाएँ हैं, जो पयस्विनीके तटपर हैं। इनमें बड़ी शिलापर श्रीरामजीका चरण-चिह्न है।

अनसूया (अत्रि-आश्रम)—स्फटिकशिलासे लगभग ५ मील और सीतापुरसे ८ मील दूर दक्षिणकी ओर पहाड़ीपर अनसूयाजी तथा महर्षि अत्रिका आश्रम है। यहाँ अत्रि-अनसूया, दत्तात्रेय, दुर्वासा और चन्द्रमाकी मूर्ति है। पास ही दूसरी पहाड़ीपर बहुत ऊपर हनुमान्‌जीकी मूर्तियाँ है। यह स्थान घने जंगलोंके बीचमें है। यहाँ प्रायः जंगली पशु आते हैं। यात्री यहाँ दर्शन करके या तो सीतापुर लौट आते हैं या ४ मील दूर बाबूपुर ग्राम चले जाते हैं। यह ग्राम गुप्तगोदावरी मार्गमें है।

गुप्तगोदावरी—अनसूयाजीसे ६ मील (बाबूपुरसे दो मील) पर गुप्तगोदावरी है। एक अँधेरी गुफामें १५-१६ गज भीतर सीताकुण्ड है, जिसमें झरनेका जल सदा गिरता रहता है। यह कुण्ड कम गहरा है। गुफाके भीतर अँधेरा होनेके कारण दीपक लेकर जाना पड़ता है। गुफासे जलधारा बाहर आकर दो कुण्डोंमें गिरती है और वहीं गुप्त हो जाती है। गुप्तगोदावरीसे लगभग डेढ़ मील दूर गाँवमें एक पाठशाला तथा मन्दिर है। यात्री या तो सीतापुर लौट आते हैं या गुप्तगोदावरीसे ७ मीलपर चौबेपुर ग्राममें रात्रिनिवास करते हैं।

भरतकूप—यह स्थान चौबेपुर तथा चित्रकूट (सीतापुर) दोनोंसे ४ मील ही दूर है। भरतकूप स्टेशनसे यह स्थान एक मीलके लगभग है। श्रीरामके राज्याभिषेकके लिये समस्त तीर्थोंका जल भरतजी ले गये थे। वह जल महर्षि अत्रिके आदेशसे इस कूपमें डाला गया था। यह कूप सर्वतीर्थस्वरूप माना जाता है। यहाँ श्रीराममन्दिर भी है। किंतु यहाँ ठहरनेकी व्यवस्था नहीं है, न बाजार ही है। भरतकूपसे थोड़ी दूरीपर भरतजीका मन्दिर है।

रामशय्या—भरतकूपसे सीतापुर लौटते समय यह स्थान मिलता है। एक शिलापर दो व्यक्तियोंके लेटनेके चिह्न हैं और मध्यमें धनुषका चिह्न है। कहते हैं कि श्रीसीतारामने यहाँ एक रात्रि विश्राम किया था। मर्यादापुरुषोत्तमने अपने और जानकीजीके मध्यमें पार्थक्यके लिये धनुष रख लिया था।

चित्रकूटके आसपासके तीर्थ

चित्रकूटके आस-पासके तीर्थोंमें गणेशकुण्ड, वाल्मीकि-आश्रम, विराधकुण्ड, शरभङ्ग-आश्रम, वीरसिंहपुर, सुतीक्ष्ण-आश्रम, रामवन, मैहर, कालिंजर, महोबा और खजुराहो हैं।

गणेशकुण्ड—करवी स्टेशनसे सीतापुर (चित्रकूट) जाते समय मार्गमें करवी संस्कृत-पाठशाला मिलती है। यहाँसे लगभग ढाई मील दूर दक्षिण-पूर्व पगडंडीके रास्ते जानेपर गणेशकुण्ड नामक सरोवर तथा प्राचीन मन्दिर मिलते हैं। अब ये सरोवर तथा मन्दिर जीर्ण दशामें असुरक्षित हैं।

वाल्मीकि-आश्रम—भगवान् श्रीराम जब प्रयागसे चित्रकूटकी ओर चले थे, तब मार्गमें महर्षि वाल्मीकिके आश्रमपर पहुँचे थे। महर्षिने ही श्रीरामको चित्रकूटमें निवास करनेको कहा था। चित्रकूटके आस-पास वाल्मीकि मुनिके दो स्थान कहे जाते हैं। देशमें तो कई स्थान बताये जाते हैं। यहाँ एक स्थान कामतानाथसे १५ मील दूर पश्चिम लालापुर पहाड़ीपर बछोई गाँवमें है। यहाँ जानेके लिये पगडंडीका ही मार्ग है। दूसरा स्थान सीतापुर (चित्रकूट) के समीप ही है। भगवान् श्रीराम जब चित्रकूटमें रहने लगे, तब सम्भव है वाल्मीकिजी भी कुछ दिन वहाँ समीपमें आश्रम बनाकर रहे हों।

विराधकुण्ड—भगवान् श्रीराम जिस मार्गसे चित्रकूटसे आगे गये थे, वह मार्ग अब भी है; किंतु है घोर वनमें पगडंडीका मार्ग और जहाँ दूरतक चौरस शिलाएँ हैं, वहाँ मार्गका चिह्न न होनेसे भटक जानेका भय है। इस मार्गमें अनसूयासे शरभङ्ग-आश्रमतक वन है और उसमें बाघ, चीते, रीछोंका भय रहता है। मार्गदर्शक साथ लिये बिना इस मार्गसे जाना ठीक नहीं। अनसूया-आश्रमसे लगभग तीन मील दूर एक झरना तथा गुफामें एक हनुमान्‌जीकी मूर्ति है। वहाँसे डेढ़ मीलपर विराधकुण्ड है। यहाँ लक्ष्मणजीने गड्ढा खोदा था, जिसमें विराध

चित्रकूट

रामघाट

कामतानाथ (कामदगिरि)

मन्दाकिनी-घाट

हनुमानधारा

चित्रकूटके आस-पास
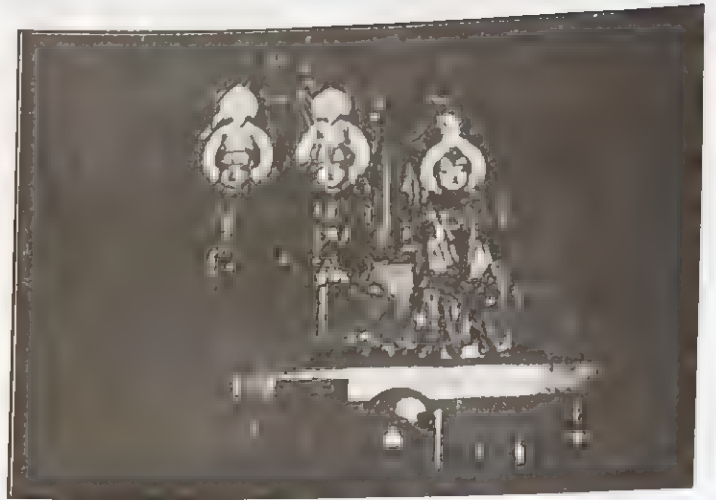
भरतकूप

भरतकूप-मन्दिरके श्रीविग्रह

अनसूयाजी
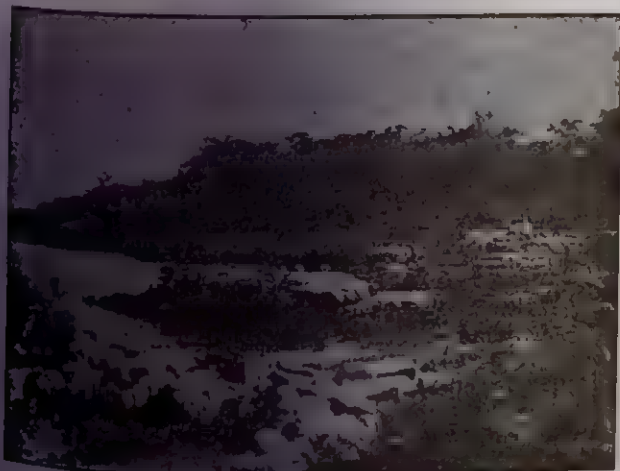
स्फटिकशिला

गुप्त-गोदावरीके समीपका एक पहाड़ी दृश्य

राक्षसको गाड़ दिया गया। यह टेढ़ा-मेढ़ा गड्ढा बहुत बड़ा है और इसकी गहराई नापनेकी चेष्टा अंग्रेजी राज्यकालमें एक बार हुई थी; किंतु सफलता नहीं मिली। यह स्थान घने वनमें है। समीपके वन्य लोगोंको भी इसे ढूँढ़नेके लिये आस-पास बहुत देर भटकना पड़ता है। यहाँ एक गाटर गाड़ दिया जाय या स्तम्भ बनवा दिया जाय तो सरलतासे यह स्थान मिल सकता है।

विराधकुण्ड पहुँचनेका दूसरा मार्ग यह है कि इटारसी-इलाहाबाद लाइनमें मानिकपुरसे १५ मील दूर टिकरिया नामक स्टेशनपर उतरकर पैदल आया जाय। स्टेशनसे लगभग दो मील और टिकरिया गाँवसे एक मीलपर विराधकुण्ड है।

शरभङ्ग-आश्रम—विराधकुण्डसे टिकरिया गाँव होकर वनके मार्गसे लगभग १० मील शरभङ्ग-आश्रमके लिये जाना पड़ता है। वनके मार्गसे न जाना हो तो टिकरिया स्टेशनसे २१ मील आगे जैतवारा स्टेशनपर उतरना चाहिये। वहाँसे ६ मील विरसिंगपुर और वहाँसे ९ मील शरभङ्ग-आश्रम है। मार्ग यह भी पैदलका ही है; किन्तु शरभङ्ग-आश्रमके पास थोड़ी दूर ही वनमें चलता पड़ता है।

शरभङ्ग-आश्रमके पास एक कुण्ड है, जिसमें नीचेसे जल आता है। यहाँ श्रीराम-मन्दिर है। वन्य पशुओंका भय होनेसे संध्याके पश्चात् मन्दिरका बाहरी द्वार बंद कर दिया जाता है। यात्री यहाँ मन्दिरमें ठहर सकते हैं। महर्षि शरभङ्गने भगवान् श्रीरामके सामने अग्नि प्रज्वलित करके यहीं शरीर छोड़ा था।

विरसिंगपुर—इसका ठीक नाम वीरसिंहपुर है। यहाँ एक बड़ा-सा सरोवर है, बाजार है, धर्मशाला है और भगवान् शङ्करका प्राचीन मन्दिर है। जैतवारा स्टेशनसे यह स्थान ६ मील है और शरभङ्ग-आश्रमसे ९ मील।

सुतीक्ष्ण-आश्रम—यह स्थान वीरसिंहपुरसे लगभग १४ मील है। शरभङ्ग-आश्रमसे सीधे जानेपर १० मील पड़ता है। यहाँ भी श्रीराममन्दिर है। महर्षि अगस्त्यजीके शिष्य सुतीक्ष्ण मुनि यहाँ रहते थे। भगवान् श्रीराम यहाँ पर्याप्त समयतक रहे थे।

रामवन—मानिकपुरसे ४८ मील और जैतवारासे केवल ३ मील आगे सतना स्टेशन है। सतनासे रीवा पक्की सड़क जाती है और उसपर बसें चलती हैं। सतना-रीवा रोडपर सतनासे लगभग १० मीलपर दुर्जनपुर ग्राम है। वहाँ बससे उतर जानेपर केवल दो फर्लांग रामवन है। रामवन कोई प्राचीन तीर्थ नहीं है, किन्तु श्रीरामचरितमानसका प्रचार करनेवाली 'मानससंघ' नामक संस्थाका केन्द्र है। यहाँ श्रीमारुतिभगवान्‌की मूर्ति और नर्मदेश्वर शिवकी लिङ्गमूर्ति दर्शनीय हैं। यहाँ राम-नाम-मन्दिरमें लगभग आध अरब लिखित राम-नाम संगृहीत हैं।

मैहर—सतना स्टेशनसे २२ मील आगे इसी लाइनमें मैहर स्टेशन है। यहाँ एक पहाड़ीपर शारदा देवीका मन्दिर है। कहा जाता है कि ये सुप्रसिद्ध वीर आल्हाकी आराध्यदेवी हैं। यह सिद्धपीठ माना जाता है। पर्वतपर ऊपरतक जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं।

कालञ्जर

कालञ्जर-माहात्म्य

महाभारत-वनपर्व तथा पद्मपुराण-आदिखण्डमें इसके माहात्म्यके सम्बन्धमें ये वचन उपलब्ध होते हैं—

अत्र कालञ्जरं नाम पर्वतं लोकविश्रुतम्।
तत्र देवह्रदे स्नात्वा गोसहस्रफलं लभेत्॥
यो स्नातः स्नापयेत् तत्र गिरौ कालञ्जरे नृप।
स्वर्गलोके महीयेत नरो नास्त्यत्र संशयः॥

(पद्म० आदि० ३९। ५२-५३; म० वन० ८५। ५६-५७)

'यहाँ (तुङ्गकारण्यमें) कालञ्जर नामका लोकविख्यात पर्वत है। यहाँके देवह्रदमें स्नान करनेसे हजार गोदानका फल प्राप्त होता है। यहाँ जो स्वयं स्नान करके दूसरोंको नहलाता है, वह मनुष्य स्वर्गमें प्रतिष्ठित होता है, इसमें कोई संशय नहीं है।'

सम्भवतः पहले यहाँ कोई हिरण्यबिन्दु नामका पर्वत तथा अगस्त्याश्रम भी था—

हिरण्यबिन्दुः कथितो गिरौ कालञ्जरे महान्।
अगस्त्यपर्वतो रम्यः पुण्यो गिरिवरः शिवः॥
अगस्त्यस्य तु राजेन्द्र तत्राश्रमवरो नृप।

(महा० वन० तीर्थयात्रा० ८७। २०-२१)

कालिंजर—चित्रकूटकी यात्रा करके मानिकपुर न

लौटें और करवी स्टेशनसे आगे चलें तो उसी मानिकपुर-झाँसी लाइनमें करवीसे २० मीलपर बदौसा स्टेशन है। वहाँसे १८ मीलपर कालिंजर ग्राम है। वहाँ कालिंजर पर्वतपर पुराना किला है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये डाकबँगला है। पहाड़ीके नीचे सुरसरि-गङ्गा नामक सरोवर है।

कालिंजरका किला प्राचीन है। सरोवरसे पर्वतपर जाते समय मध्यमार्गमें वनखण्डेश्वर शिवमन्दिर मिलता है। आगे पर्वत काटकर मार्ग बना है। सात द्वार पार करके किलेमें पहुँचा जा सकता है। चौथे द्वारके आगे भैरवकुण्ड सरोवर है, उससे थोड़ी दूरपर भैरव-मूर्ति है और वहाँ एक गुफा है। आगे हनुमान्-दरवाजेके पास हनुमानकुण्ड है। किलेके अंदर पातालगङ्गा आती हैं, उनका मार्ग कठिन है। वहाँ एक गुफा है। वहाँसे आगे पाण्डुगुफा है, जहाँसे बुद्धिसरोवरको मार्ग जाता है। इनके पश्चात् मृगधारा है, जहाँ दो कोठरियाँ, एक कुण्ड तथा सात हरिनोंकी मूर्तियाँ* हैं। कोटितीर्थमेंसे मृगधारामें जल आता है। कोटितीर्थ किलेके मध्यमें एक सरोवर है। नीचे उतरते समय एक द्वारके पास दीवालमें जैनतीर्थङ्करोंकी मूर्तियाँ हैं। आगे जटाशङ्कर, क्षीरसागर, तुङ्गभैरव और कई गुफाएँ मिलती हैं। इनके बाद नीलकण्ठ-शिवमन्दिर है, यहाँ शैव एवं वैष्णव देवताओंकी बहुत-सी प्रतिमाएँ हैं। मन्दिरके आगे एक सरोवर है, जिससे आगे कालभैरव-मूर्ति है।

बाँदा

मानिकपुर जंकशनसे ६२ मीलपर बाँदा स्टेशन है। बाँदामें १६१ देवमन्दिर बताये जाते हैं। यहाँ एक छोटी पहाड़ीपर पाण्डवेश्वर शिव-मन्दिर है और गुफा भी है। कहा जाता है कि वनवासके समय पाण्डव यहाँ रहे हैं।

महोबा

मानिकपुर-झाँसी लाइनमें ही मानिकपुरसे ९५ मील और बदौसासे ५९ मील दूर महोबा स्टेशन है। रेलवे स्टेशनसे कुछ दूरीपर कीर्तिसागर नामक बड़ा सरोवर है। इसीके समीप मदनसागर है, जिसके चारों ओर कई देवालय हैं। मदनसागरके मध्यमें दो टापू हैं, जिनमें एकपर खखरा-मठ नामक शिव-मन्दिर है। इस सरोवरके अग्निकोणपर कण्ठेश्वर शिव तथा बड़ी चण्डिकादेवीके स्थान हैं। कण्ठेश्वर शिवका स्थान एक गुफामें है। इससे लगी शङ्कराचार्यगुफा है। बड़ी चण्डिकादेवीकी मूर्ति बारह फुट ऊँची और अष्टादश-भुजा है। यहाँ दूर-दूरसे शक्तिके उपासक अनुष्ठानादिके लिये आते हैं।

मदनसागरके पश्चिम गोखार-पर्वत है, जो अनेक महात्माओंकी तपोभूमि है। इस पर्वतपर एक अँधेरी गुफा है, जो पचास-साठ गज लंबी है। दूसरी उजियारी खोह है, जिसमें पहाड़ी काटकर बहुत-सी कोठरियाँ बनी हैं। किसी समय इनमें भजन करनेवाले साधु रहते थे।

गोखार-पर्वतसे बस्तीकी ओर आते समय लश्कर रावण स्थानमें बारह फुट ऊँची हाथमें दण्ड लिये भैरव-मूर्ति मिलती है। यहाँ भाद्रकृष्ण २ को मेला लगता है। आगे पठारपर पठवाके महावीरजीकी मूर्ति है। बस्तीके प्रारम्भमें भैरवनाथजीकी मूर्ति है, जिसे लोग सिंहभवानी कहते हैं। मदनसागरके तटपर एक और अष्टादशभुजा देवीमन्दिर है, जिन्हें लोग छोटी चण्डिका कहते हैं।

मदनसागरके किनारे मनियाँ देवकी (मनीराम नामक ब्राह्मणकी, जिन्होंने आत्महत्या कर ली थी।) समाधि है और आल्हाकी कीली नामक दीपस्तम्भ है।

महोबेसे पश्चिम एक पहाड़ीपर वनखण्डीश्वरका स्थान है। यहाँ चढ़नेके लिये ३०-४० बड़ी सीढ़ियाँ हैं, जिनकी दरारोंमें प्रायः अजगर सर्प देखे जाते हैं। यहाँसे ४-५ मील आगे मकरबई स्थानमें एक प्राचीन मन्दिर है।

महोबा अत्यन्त प्रसिद्ध वीर आल्हा-ऊदलकी राजधानी थी। ये दोनों ही चंदेलनरेशके सामन्त थे।

* कौशिकपुत्रोंकी मृग होनेकी कथा प्रायः श्राद्धमाहात्म्यमें सर्वत्र आती है। देखिये हरिवंश १। १९ से २३ अध्याय; मत्स्य० २०; शिवपुराण, शिवधर्म ६३; पद्मपुरा० सृष्टि० १०।

कहते हैं कि इनमें आल्हा योग-साधनसे अमर हो गये और अब भी कभी-कभी किसीको दीख जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि मैहरकी शारदादेवी उनकी आराध्या हैं और प्रतिदिन प्रातः देवीके गलेमें ताजे पुष्पोंकी (अलक्ष्यरूपसे आल्हाद्वारा चढ़ायी) माला मिलती है।

खजुराहो—भारतके प्रसिद्धतम कलापूर्ण मन्दिरोंमें खजुराहोके मन्दिर हैं। महोबासे ३३ मील आगे उसी लाइनमें हरपालपुर स्टेशन है, जहाँसे खजुराहोके लिये मार्ग है। यह स्थान छत्रपुरसे २७ मील तथा पन्नासे २५ मील है। यहाँ जानेके लिये पन्ना, छत्रपुर, सतना या महोबासे मोटर-बसें मिल जाती हैं, थोड़ी ही दूर पैदल जाना पड़ता है।

चंदेलनरेशोंके रहनेका स्थान महोबा था। कालिञ्जरमें उनका दुर्ग था और खजुराहोमें उन्होंने मन्दिर बनवाये। खजुराहोमें कुल ३० मन्दिर हैं, जिनमें आठ जैन-मन्दिर हैं। हिन्दू-मन्दिरोंमें कंडरिया महादेवका मन्दिर सबसे प्रसिद्ध है; किन्तु उतने ही बड़े मन्दिर यहाँ आठ-दस और हैं। प्रत्येक मन्दिर ऊँचे चबूतरेपर बना है। इन मन्दिरोंमें बहुत कारीगरी है। कनिंघमने केवल कंडरिया महादेव मन्दिरमें दो फुटसे ऊँची मूर्तियाँ गिनीं तो वे ८७२ मिलीं। छोटी मूर्तियाँ तो सहस्रों हैं।

अजयगढ़

(लेखक—पं० श्रीपुरुषोत्तमरावजी तैलंग)

इसका प्राचीन नाम 'अजगढ़' है। अयोध्याके महाराज अज (दशरथजीके पिता) ने यहाँ एक गढ़ बनवाया था और प्रत्येक मकर-संक्रन्तिपर वे यहाँ आकर जप-दानादि करते थे। अब भी यहाँ मकर-संक्रान्तिपर यात्री आते हैं। एक सप्ताहतक मेला लगता है। इस पर्वतकी परिक्रमा करनेसे कठिन रोग दूर होते हैं, ऐसी लोकमान्यता है।

पर्वतके दक्षिणी भागमें बौद्ध, जैन तथा हिंदू मूर्तियोंके भग्नावशेष मिलते हैं। खजुराहो-शैलीके चार विहार तथा तीन सरोवर हैं, पर्वतके मध्यभागमें अजसरोवर है। उसके पास ही अजैपाल बाबा नामक प्राचीन संतका मन्दिर है।

पर्वतपरसे तीन चौथाई उतर आनेपर एक विशाल गुफामें भूतेश्वर शिवलिङ्गके दर्शन होते हैं। महाराज अजकी यह साधनाभूमि है। इस गुफासे कई गुप्त मार्ग दूर-दूरतक गये हैं—ऐसा कहा जाता है। अब तो वे मार्ग अवरुद्ध हो गये हैं।

देव-पर्वत—अजयगढ़से ४ मील उत्तर यह पर्वत है। कहते हैं कि शुक्राचार्यकी पुत्री देवयानीने यहाँ तपस्या की थी। पर्वतपर एक विशाल गुफा है, उसके द्वारपर भगवान् विष्णुकी मूर्ति है। पर्वतके शिखरपर एक चौकोर मैदान है, वहाँ महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक मानी जाती है। श्रद्धालुजन इस पर्वतकी परिक्रमा करते हैं।

अघमर्षण-तीर्थ

(लेखक—श्रीरामभद्रजी गौड़)

सतनाकी रघुराजनगर तहसीलमें अमुवा ग्राम है। यहाँ धार, कुंडी तथा बेधक—ये तीन स्थान पास-पास हैं। तीनों मिलाकर 'अभरखन' (अघमर्षण) कहे जाते हैं। धारमें सिद्धेश्वर महादेवका मन्दिर है। कुण्डीमें तीर्थकुण्ड है और बेधकमें प्रजापतिकी यज्ञवेदी है।

शिकारगंज—रीवासे ३६ मील पूर्व सोनभद्रके तटपर यह गाँव है। यहाँ अघमोचन-तीर्थ तथा भ्रमरकूट (भमरसेन) स्थान है।

काशीपुरी*

काशी-माहात्म्य

मुक्ति जन्म महि जानि, ग्यान खानि अघ हानि कर।
जहँ बस संभु भवानि, सो कासी सेइअ कस न॥

ऐतिहासिकोंकी दृष्टिमें काशी संसारकी सबसे प्राचीन नगरी है। इसका वेदोंमें कई जगह उल्लेख है। **'आप इव काशिना संगृभीताः'** (ऋक् ७। १०४। ८) **'मघवन् काशिरित्ते'** (ऋ० ३। ३०। ५)। **'यज्ञः काशीनां भरतः सात्वतामिव'** (शतप० ब्रा० १३। ५। ४। १९; २१) आदि। पुराणोंके अनुसार यह आद्य वैष्णव स्थान है। पहले यह भगवान् माधवकी पुरी थी। कहा जाता है कि एक बार भगवान् शङ्करने ब्रह्माजीका एक सिर काट दिया और वह सिर उनके करतलसे संलग्न हो गया। वे १२ वर्षोंतक बदरीनारायण, कुरुक्षेत्र, ब्रह्महृद आदिमें घूमते रहे। पर वह सिर हाथसे अलग नहीं हुआ। अन्तमें ज्यों ही उन्होंने काशीकी सीमामें प्रवेश किया, ब्रह्महत्याने उनका पीछा छोड़ दिया और स्नान करते ही करसंलग्न कपाल भी अलग हो गया। जहाँ वह कपाल छूटा, वही कपालमोचन तीर्थ कहलाया। फिर भगवान् विष्णुसे प्रार्थना करके उन्होंने उस पुरीको अपने नित्य आवासके लिये माँग लिया। जहाँ प्रभुके नेत्रोंसे आनन्दाश्रु गिरे थे, वह बिन्दुसरोवर कहलाया और भगवान् बिन्दुमाधव नामसे प्रतिष्ठित हुए। (स्कन्दपुराण, काशी०; बृहन्नारदी० उत्तर० अ० २९। १—७२; उ० ४८। ९—१२)।

काशीखण्ड आदिके अनुसार काशीके १२ नाम हैं—काशी, वाराणसी, अविमुक्त, आनन्दकानन, महाश्मशान, रुद्रावास, काशिका, तपःस्थली, मुक्तिभूमि (क्षेत्र, पुरी) और श्रीशिवपुरी (त्रिपुरारि-राजनगरी)।

काशीके माहात्म्यके सम्बन्धमें स्कन्दपुराण कहता है—

भूमिष्ठापि न यात्र भूस्त्रिदिवसोऽप्युच्चैरधःस्थापि या
या बद्धा भुवि मुक्तिदा स्युरमृतं यस्यां मृता जन्तवः।
या नित्यं त्रिजगत्पवित्रतटिनी तीरे सुरैः सेव्यते
सा काशी त्रिपुरारिराजनगरी पायादपायाज्जगत्॥

(काशीख० १। १)

'जो पृथ्वीपर होनेपर भी पृथ्वीसे सम्बद्ध नहीं है (साधारण पृथ्वी नहीं है—तीन लोकसे न्यारी है), जो अधःस्थित (नीची होनेपर भी) स्वर्गादि लोकोंसे भी अधिक प्रतिष्ठित एवं उच्चतर है, जो जागतिक सीमाओंसे आबद्ध होनेपर भी सभीका बन्धन काटनेवाली मोक्षदायिनी है, जो सदा त्रिलोकपावनी भगवती भागीरथीके तटपर सुशोभित तथा देवताओंसे सुसेवित है, वह त्रिपुरारि भगवान् विश्वनाथकी राजनगरी सम्पूर्ण जगत्को नष्ट होनेसे बचाये।'

नारदपुराण कहता है—

वाराणसी तु भुवनत्रयसारभूता
रम्या नृणां सुगतिदा किल सेव्यमाना।
अत्रागता विविधदुष्कृतकारिणोऽपि
पापक्षये विरजसः सुमनःप्रकाशाः॥

(ना०पु०उ० ४८। १३)

'काशी परम रम्य ही नहीं, त्रिलोकीका सार है। वह सेवन किये जानेपर मनुष्योंको सद्गति प्रदान करती है। अनेक पापाचारी भी यहाँ आकर पापमुक्त होकर देववत् प्रकाशित होने लगते हैं।'

कहा जाता है कि अवन्तिका आदि सात मोक्षपुरियाँ हैं, पर वे कालान्तरमें काशीप्राप्ति कराके ही मोक्ष प्रदान करती हैं। काशी ही एक पुरी है जो साक्षात् मोक्ष देती है—

अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तिकराणि च।
काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः॥

(काशीखं०)

'काशीखण्ड' का कहना है कि 'मैं कब काशी जाऊँगा, कब शङ्करजीका दर्शन करूँगा' इस प्रकार जो सोचता तथा कहता है, उसे सर्वदा काशीवासका फल होता है—

---

* काशीकी सीमा शास्त्रोंमें यों वर्णित है—

द्वियोजनमथार्द्धं च पूर्वपश्चिमतः स्थितम्। अर्द्धयोजनविस्तीर्णं दक्षिणोत्तरतः स्मृतम्॥
वरणासिर्नदी यावदसिः शुष्कनदी शुभे। एष क्षेत्रस्य विस्तारः प्रोक्तो देवेन शम्भुना॥
अयनं तूत्तरं ज्ञेयं तिमिचण्डेश्वरं ततः। दक्षिणं शङ्कुकर्णं तु ॐकारं तदनन्तरम्॥

(ना० पु० उ० ४९। १९-२०; अग्निपु० ११२। ६)

अर्थात् काशी पूर्व-पश्चिम ढाई योजन (दस कोस) लंबी तथा दक्षिणोत्तर आध योजन (दो कोस) चौड़ी है। भगवान् शङ्करने इसका विस्तार वरणासे शुष्कनदी असीतक बतलाया है। इसके उत्तरमें अयन तथा तिमिचण्डेश्वर एवं दक्षिणमें शङ्कुकर्ण एवं ॐकारेश्वर हैं।

कदा काश्यां गमिष्यामि कदा द्रक्ष्यामि शङ्करम्।
इति ब्रुवाणः सततं काशीवासफलं लभेत्॥

जिनके हृदयमें काशी सदा विराजमान है, उन्हें संसार-सर्पके विषसे क्या भय?—

येषां हृदि सदैवास्ते काशी त्वाशीविषाङ्गदः।
संसाराशीविषविषं न तेषां प्रभवेत् क्वचित्॥

जिसने काशी—यह दो अक्षरोंका अमृत कानोंसे पान कर लिया, उसे गर्भजनित व्यथाकथा नहीं सुननी पड़ती—

श्रुतं कर्णामृतं येन काशीत्यक्षरयुग्मकम्।
न समाकर्णयत्येव स पुनर्गर्भजां कथाम्॥

(काशी खं० अध्या० ६४)

जो दूरसे भी काशी-काशी सदा जपता रहता है, वह अन्यत्र रहकर भी मोक्ष प्राप्त कर लेता है—

काशी काशीति काशीति जपतो यस्य संस्थितिः।
अन्यत्रापि सततस्तस्य पुरो मुक्तिः प्रकाशते॥

(६४)

काशीके विभिन्न क्षेत्रोंमें किये गये स्नान, दान, जप, तप, अध्ययनादिकी अनन्त महिमा है। काशी-माहात्म्यके सम्बन्धमें अधिक जाननेके लिये स्कन्दपुराण-काशीखण्ड अध्याय १ से १००; नारदपुराण उ० भा० अ० ४८ से ५३; अ० २९; अग्निपु० अ० ११२; शिवपुराण, शतरु० अ० २; पद्मपुराण पूना आनन्दाश्रमसं० आदिख० ३२ से ३७ अध्यायतक; वेङ्कटेश्वर सं० स्वर्गख० ३२ से ३७ तक, उत्तरख० अध्याय २३; भविष्य पु० उ० १३० आदि स्थलोंको देखना चाहिये।

काशी

इसे बनारस या वाराणसी भी कहा जाता है। कहा जाता है कि यह पुरी भगवान् शङ्करके त्रिशूलपर बसी है और प्रलयमें भी इसका नाश नहीं होता। वरणा और असि नामक नदियोंके बीच बसी होनेसे इसे वाराणसी कहते हैं। जहाँ देह त्यागनेसे प्राणी मुक्त हो जाय, वह अविमुक्त क्षेत्र यही है। यहाँ देह-त्यागके समय भगवान् शङ्कर मरणोन्मुख प्राणीको तारकमन्त्र सुनाते हैं और उससे जीवको तत्त्वज्ञान हो जाता है, उसके सामने अपना ब्रह्मस्वरूप प्रकाशित हो जाता है। इस प्रकार 'जहाँ ब्रह्म प्रकाशित हो, वह काशी' यह काशी नामका अर्थ है।

अयोध्या, मथुरा, माया (कनखल-हरिद्वार), काशी, काञ्ची, अवन्तिका (उज्जैन) तथा द्वारिका—ये सात पुरियाँ हैं। इनमें भी काशी मुख्य मानी गयी है। '**काश्यां हि मरणान्मुक्तिः**' काशीमें कैसा भी प्राणी मरे, वह मुक्त हो जाता है—यह शास्त्रकी घोषणा है और इसपर आस्था रखते हुए सहस्रों वर्षसे देशके कोने-कोनेसे लोग देहोत्सर्गके लिये काशी आते रहे हैं। बहुत-से लोग तो मरनेके लिये काशीमें ही निवास करते हैं। वे काशीसे बाहर जाते ही नहीं।

काशी भारतका प्राचीनतम विद्याकेन्द्र और सांस्कृतिक नगर है। यह किसी एक प्रान्त, एक सम्प्रदाय या एक समाजका नगर नहीं है। भारतके सभी प्रान्तोंके निवासियोंके यहाँ मुहल्ले हैं। कश्मीरसे कन्याकुमारी और आसाम भूटानसे कच्छतकके लोग यहाँ स्थायीरूपसे बसे हैं। भगवान् विश्वनाथकी इस पुरीमें सभी सम्प्रदायके लोग रहते हैं, उनकी संस्थाएँ हैं और उपासनास्थान हैं। संस्कृत-विद्याका तो यह सदासे सम्मान्य केन्द्र रहा है। धार्मिक व्यवस्थामें पूरे देशके लिये काशीके विद्वानोंका निर्णय सदा शिरोधार्य रहा है और काशीके विद्वान् कौन? वे काशीके विद्वान्, जो काशीमें रहें। उनका और उनके पूर्वपुरुषोंका जन्म कहाँ किस प्रान्तमें हुआ, इससे कोई विवाद नहीं; क्योंकि काशी तो पूरे भारतकी नगरी है। भगवान् विश्वनाथकी पुरीमें प्रान्तीयता या और किसी संकीर्णताको स्थान कैसे हो सकता है।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें भगवान् शङ्करका विश्वनाथनामक ज्योतिर्लिंग काशीमें है और ५१ शक्तिपीठोंमेंसे एक शक्तिपीठ (मणिकर्णिकापर विशालाक्षी) काशीमें है। यहाँ सतीका दाहिना कर्णकुण्डल गिरा था। इनके भैरव कालभैरव हैं। पुराणोंमें काशीकी अपार महिमा है। भगवती भागीरथीके बायें तटपर यह नगर अर्धचन्द्राकार तीन मीलतक बसा है और अब तो नगरका विस्तार बढ़ता ही जा रहा है। इसे मन्दिरोंका नगर कहा जाता है; क्योंकि यहाँ गली-गलीमें अनेकों मन्दिर हैं। उन सब मन्दिरोंकी नामावली भी दे पाना कठिन है। '**ग्रहणेषु काशी मकरे प्रयागः**' के अनुसार चन्द्रग्रहणके समय काशीमें स्नानार्थियोंकी बहुत भीड़ होती है।

मार्ग

प्रसिद्ध ग्रांडट्रंक रोडपर काशी अवस्थित है। सड़कके मार्गसे यहाँसे एक ओर पटना-कलकत्ता, दूसरी ओर लखनऊ, दिल्ली या प्रयाग जाया जा सकता है। पूर्वोत्तर रेलवे और उत्तरी रेलवेका यहाँ जंकशन स्टेशन है बनारस छावनी। यही यहाँका मुख्य स्टेशन है। पूर्वोत्तर रेलवेसे आनेवाले बनारससिटी और उत्तरी रेलवेसे आनेवाले काशी स्टेशनपर भी उतरते हैं।

काशी स्टेशनके पास ही गङ्गाजीपर राजघाटका पुल है। इस स्टेशनसे गङ्गाजी केवल सौ गज होंगी। किंतु

तीर्थयात्री प्रायः मणिकर्णिकाघाट या दशाश्वमेधघाटपर स्नान करते हैं। बनारस छावनीसे दशाश्वमेधघाट लगभग ३ मील और मणिकर्णिकाघाट भी लगभग उतना ही दूर है। काशी स्टेशनसे मणिकर्णिकाघाट ३ मील और दशाश्वमेधघाट ३॥ मील दूर है। बनारस सिटी स्टेशनसे घाटोंकी दूरी बनारस छावनी स्टेशनकी अपेक्षा आध मील कम हो जाती है।

मणिकर्णिकाघाट या दशाश्वमेधघाट कहीं स्नान किया जाय, वहाँसे श्रीविश्वनाथजी तथा अन्नपूर्णाजीके मन्दिर दो फर्लांगसे अधिक दूर नहीं हैं। यह दूरी गलियोंमें होकर पार करनी पड़ती है, अतः घाटसे मन्दिर पैदल ही जाना पड़ता है।

काशी नगरमें सरकारी बसें चलती हैं और सब कहीं रिक्शे-ताँगे किरायेपर पर्याप्त मिलते हैं। स्टेशनोंपर टैक्सी-मोटरें भी मिलती हैं।

ठहरनेके स्थान

काशीमें मठों, मन्दिरों तथा अनेक साहित्यिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओंके कार्यालय हैं। देशके धनी-मानी लोगोंने यहाँ अनेक अन्नसत्र खोल रखे हैं और अनेक धर्मशालाएँ बनवा रखी हैं। कुछ धर्मशालाओंके नाम नीचे दिये जा रहे हैं, किन्तु इनके अतिरिक्त भी बहुत-सी धर्मशालाएँ हैं।

१-श्रीकृष्ण-धर्मशाला, बनारस छावनी स्टेशनके पास। २-राधाकृष्ण शिवदत्तरायकी, ज्ञानवापी। ३-लक्ष्मीरामकी फाटक सुखलाल साव। ४-लखनऊवालेकी, बुलानाला। ५-मोतीलाल भागीरथमलकी, बुलानाला। ६-बैजनाथ दूदवेवालेकी, बुलानाला। ७-बागला धर्मशाला, हौज कटरा। ८-सत्यनारायण धर्मशाला, बाँसफाटक। ९-मथुरासावकी धर्मशाला, बड़ा गणेश। १०-पार्वतीदेवीकी धर्मशाला, गोमठ, मणिकर्णिका। ११-बैजनाथ पटेलकी धर्मशाला, पत्थरगली। १२-वृन्दावनजी सारस्वतकी, गढ़वासी टोला। १३-विशनजी मोरारकाकी, दूधविनायक। १४-धर्मदास नन्दसाहू दीपचन्दकी, मीरघाट। १५-सुखलाल साहू विशनसिंहकी, शटकमें। १६-जटाशंकरजीकी, टेहनी टोला। १७-लक्ष्मीरामजीकी, विश्वनाथ-मन्दिरके पास। १८-रेवाबाईकी (गुजरातियोंके लिये) टाउनहाल। १९-हरसुन्दरी (बंगालियोंके लिये), दशाश्वमेधके पास।

काशीके घाट

काशीके घाटोंमें पाँच घाट मुख्य माने जाते हैं—१-वरणासङ्गमघाट, २-पञ्चगङ्गाघाट, ३-मणिकर्णिकाघाट, ४-दशाश्वमेधघाट, ५-असीसंगमघाट। इनके अतिरिक्त और भी बहुत-से घाट हैं। घाटोंकी कुल संख्या ५०-६० के लगभग है। उनमेंसे मुख्य घाटोंका वर्णन नीचे दिया जा रहा है—

१. वरणासंगमघाट—पश्चिमसे आकर वरणा नामकी छोटी नदी यहाँ गङ्गाजीमें मिलती है। यहाँ भाद्रशुक्ल १२ तथा महावारुणीपर्वको मेला लगता है। संगमसे पहले वरणानदीके बायें किनारे वसिष्ठेश्वर तथा ऋतीश्वर नामके शिवमन्दिर हैं। वरणासंगमके पास विष्णुपादोदक-तीर्थ तथा श्वेतद्वीप-तीर्थ हैं। घाटकी सीढ़ियोंके ऊपर भगवान् आदि-केशवका मन्दिर है। इस मन्दिरमें भगवान् केशवकी चतुर्भुज श्याम रंगकी खड़ी मूर्ति है। यहाँ दीवालमें केशवादित्य शिव हैं। पास ही हरिहरेश्वर-शिवमन्दिर है। इससे थोड़ी दूरपर वेदेश्वर, नक्षत्रेश्वर तथा श्वेतद्वीपेश्वर महादेव हैं। काशी स्टेशनसे वरणासंगमघाट डेढ़ मील है।

२. राजघाट—यह घाट काशी स्टेशनके पास ही है। यहाँ गङ्गाजीपर मालवीय-पुल नामक रेलवे-पुल है। यहाँ पासमें योगी वीरका मन्दिर है। राजघाट तथा प्रह्लादघाटके बीच गङ्गातटके ऊपर स्वलीनेश्वर तथा वरद-विनायक मन्दिर हैं।

३. प्रह्लादघाट—राजघाटसे कुछ ही दूर यह घाट है। इसके पास प्रह्लादेश्वर-शिवमन्दिर है। यहाँसे त्रिलोचन-घाटके मध्य भृगुकेशव-मन्दिर है। यहाँ प्रचण्ड-विनायक हैं।

४. त्रिलोचनघाट—यह 'त्रिविष्टतीर्थ' है। यहाँ अक्षयतृतीयाको मेला लगता है। त्रिलोचननाथ-शिवमन्दिर है तथा मण्डलाकार अरुणादित्य-मन्दिर भी है। एक छोटे मन्दिरमें वाराणसीदेवी हैं तथा उद्दण्ड-मुण्ड विनायक हैं। त्रिलोचन-मन्दिरके बाहर आदिमहादेव-मन्दिर है, उसके पास मोदकप्रिय गणपति हैं। यहीं पार्वतीश्वर-लिङ्ग है और उसके पास संहारभैरव हैं।

५. महताघाट—इस घाटके ऊपर नर-नारायण-मन्दिर है। पौष-पूर्णिमाको यहाँ स्नानका अधिक महत्त्व है।

६. गायघाट—यह गोप्रेक्ष-तीर्थ है। घाटके पास हनुमान्‌जीका मन्दिर है, इसमें निर्मालिका गौरीमूर्ति है।

७. लालघाट—इस घाटपर गोप्रेक्षेश्वर महादेव तथा गोपी-गोविन्दकी मूर्तियाँ हैं।

८. शीतलाघाट—इसपर शीतलादेवीकी मूर्ति है।

९. राजमन्दिरघाट—यहाँ हनुमान्-मन्दिरमें लक्ष्मी-नृसिंह-मूर्ति है।

१०. ब्रह्माघाट—इस घाटपर ब्रह्मेश्वर-शिवमन्दिर है। घाटसे थोड़ी दूर ऊपर दत्तात्रेयभगवान्‌का मन्दिर है।

११. दुर्गाघाट—घाटपर नृसिंहजीकी मूर्ति है। यहाँ एक मकानमें ब्रह्मचारिणी दुर्गाजीकी श्याममूर्ति है। उससे कुछ दूरपर श्रीराममन्दिर है।

१२. पञ्चगङ्गाघाट—कहा जाता है कि यहाँ यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा नदियाँ गुप्तरूपसे गङ्गाजीमें मिलती हैं; इसीसे इस घाटका नाम पञ्चगङ्गा है। यहाँ विष्णु-काञ्ची-तीर्थ तथा बिन्दुतीर्थ हैं। घाटके ऊपर बहुत-से मन्दिर हैं। एक मन्दिर है बिन्दुमाधवजीका। अग्निबिन्दु नामक ब्राह्मणको भगवान् नारायणने वरदान दिया था—'मैं यहाँ रहूँगा।' इससे उनका नाम यहाँ बिन्दुमाधव पड़ा। पास ही पञ्चगङ्गेश्वर महादेवका मन्दिर है। इस घाटके पास ही माधवरामका धरहरा है। पुराना बिन्दुमाधव-मन्दिर तोड़कर औरंगजेबने मस्जिद बनवा दी थी, उस मस्जिदके पीछे द्वारिकाधीश तथा राधाकृष्णके मन्दिर हैं। पञ्चगङ्गाघाटपर कार्तिकस्नानका महत्त्व है।

१३. लक्ष्मण-बालाघाट—इस घाटके ऊपर लक्ष्मण-बालाजी अथवा वेङ्कटेशभगवान्‌का मन्दिर है। पास गर्भस्तीश्वर महादेवका छोटा मन्दिर है तथा समीपके एक मकानमें मङ्गलगौरीदेवीश्वर मूर्ति है। यहाँ मयूखादित्य तथा मित्रविनायकके मन्दिर भी हैं।

१४. रामघाट—यह रामतीर्थ कहा जाता है। यहाँ लोग रामनवमीको प्रायः स्नान करने आते हैं। घाटके ऊपर कालविनायक तथा घाटसे कुछ दूर आनन्दभैरव-मन्दिर है।

१५. अग्नीश्वरघाट—यहाँ अग्नीश्वर-शिवमन्दिर है।

१६. भोंसलाघाट—घाटपर लक्ष्मीनारायण-मन्दिर, नागेश्वर-शिवमन्दिर तथा नागेश-विनायक हैं। यह घाट नागपुरके भोंसला-राजवंशका बनवाया हुआ है।

१७. गङ्गा-महलघाट—इस घाटपर हनुमान्‌जीकी दो मूर्तियाँ तथा गङ्गाजीका मन्दिर है।

१८. संकठाघाट—इसे यमतीर्थ कहा जाता है। यहाँ यमेश्वर तथा यमादित्य नामके दो शिवमन्दिर हैं। यमद्वितीयाको यहाँ मेला लगता है। घाटपर संकठादेवीका मन्दिर है। इस मन्दिरके बाहर कृष्णेश्वर और याज्ञवल्क्येश्वर महादेव हैं। एक हरिश्चन्द्रेश्वर मन्दिर है। उससे थोड़ी दूरपर वसिष्ठेश्वर, वामदेवेश्वर तथा अरुन्धतीदेवी एक मन्दिरमें हैं। उस मन्दिरके द्वारपर चिन्तामणि नामक विनायकमूर्ति है। उससे थोड़ी दूर सेनाविनायक हैं। विन्ध्यवासिनीदेवीका मन्दिर भी यहाँ संकठादेवी मन्दिरके बाहर है।

१९. सिंधियाघाट—घाटपर आत्मवीरेश्वर मन्दिर है। मन्दिरमें दुर्गाजी, मङ्गलेश्वर महादेव, मङ्गलविनायक तथा अन्य देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। गलीकी दूसरी ओर बृहस्पतीश्वर, पार्वतीश्वर आदि मूर्तियाँ हैं; एक मन्दिरमें सिद्धेश्वरीदेवी तथा सिद्धेश्वर, कलियुगेश्वर और चन्द्रेश्वर नामक लिङ्ग हैं, चन्द्रकूप है। ब्रह्मपुरीमें विघ्नेश्वर महादेव हैं। यह घाट ग्वालियरके प्रसिद्ध सिंधिया नरेशोंका बनवाया हुआ है।

२०. मणिकर्णिकाघाट—इस घाटको वीरतीर्थ भी कहते हैं, इस घाटके ऊपर मणिकर्णिका-कुण्ड है, जिसमें चारों ओर सीढ़ियाँ हैं। २१ सीढ़ी नीचे जल है। इस कुण्डकी तहमें एक भैरवकुण्ड है। इस कुण्डका पानी प्रति आठवें दिन निकाल दिया जाता है और एक छिद्रसे स्वच्छ जलधारा अपने-आप निकलती है, जिससे कुण्ड भर जाता है। पास ही तारकेश्वर शिव-मन्दिर तथा दूसरे मन्दिर हैं। यहाँ वीरेश्वर-मन्दिर है। वीरतीर्थमें स्नान करके लोग वीरेश्वरकी पूजा करते हैं।

२१. चिताघाट—मणिकर्णिकाके दक्षिण-पश्चिम यह काशीका श्मशान-घाट है।

२२. राजराजेश्वरीघाट—इसपर राजराजेश्वरी-मन्दिर है।

२३. ललिताघाट—इसपर ललितादेवीका मन्दिर है। घाटके समीप ललितातीर्थ है। यहाँ आश्विन-कृष्णा द्वितीयाको मेला होता है। ललितामन्दिरमें काशीदेवीकी मूर्ति तथा गङ्गाकेशव, गङ्गादित्य, मोक्षेश्वर एवं करुणेश्वर शिवलिङ्ग हैं। इसी घाटपर चीनके मन्दिरोंकी शैलीका नैपाली शिव-मन्दिर है। यहाँ नैपाली यात्रियोंके लिये धर्मशाला है।

२४. मीरघाट—यहाँ विशाल-तीर्थ है। घाटपर धर्मकूप नामक कुआँ है, जिसके पास विश्वबाहुदेवीका मन्दिर है। इसमें दिवोदासेश्वर शिवलिङ्ग है। कूपके दक्षिण धर्मेश्वरमन्दिर है। उसके पास ही विशालाक्षी नामक पार्वती-मन्दिर है। घाटके पास आशाविनायक तथा हनुमान्‌जीकी बड़ी मूर्ति है। पासके मकानमें वृद्धादित्यकी तथा एक गलीमें आनन्दभैरवकी मूर्ति है।

२५. मानमन्दिरघाट—यहाँ दाल्भ्येश्वर, सोमेश्वर, सेतुबन्ध रामेश्वर और स्थूलदन्त विनायककी मूर्तियाँ हैं। लक्ष्मीनारायण-मन्दिर और वाराही देवीका मन्दिर भी है। जयपुरके राजा मानसिंहका बनवाया हुआ प्रसिद्ध

मानमन्दिर यहीं है, जिसकी छतके ऊपर उन्हींकी बनवायी हुई एक वेधशाला है, जिसमें नक्षत्रों और ग्रहोंके निरीक्षणके सात यन्त्र जीर्ण दशामें हैं।

२६. **दशाश्वमेधघाट**—यह जान लेना चाहिये कि वरणासंगमघाटसे यह घाट लगभग ३ मील और राजघाटसे १॥ मील है। कहा जाता है कि ब्रह्माजीने यहाँ दस अश्वमेध यज्ञ किये थे। काशीका यह मुख्य एवं प्रशस्त घाट है। यहाँ बहुत स्नानार्थी आते हैं। यहाँ जलके भीतर रुद्र-सरोवर तीर्थ है। घाटपर दशाश्वमेधेश्वर शिवजी हैं तथा शीतलादेवीकी मूर्ति है। एक मन्दिरमें गङ्गा, सरस्वती, यमुना, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं नृसिंहजीकी मनुष्य-बराबर मूर्तियाँ हैं। घाटके उत्तर विशाल शिवमन्दिर है। उसके उत्तर शूलटङ्केश्वर-शिवमन्दिर है, जिसमें अभयविनायक हैं। घाटपर प्रयागेश्वर, प्रयागमाधव तथा आदिवाराहेश्वरके मन्दिर हैं। ज्येष्ठशुक्ला १० गङ्गादशहराको इस घाटपर स्नानका अधिक माहात्म्य है।

इस घाटसे थोड़ी दूरपर बालमुकुन्द-मन्दिर है। उसके समीप ब्रह्मेश्वर तथा सिद्धतुण्ड गणेश हैं।

२७. **राणामहलघाट**—दशाश्वमेधघाटके पश्चात् अहल्या-बाईघाट एवं मुंशीघाटके पश्चात् यह घाट है। इसपर वक्रतुण्ड विनायककी मूर्ति है।

२८. **चौसट्ठीघाट**—इस घाटपर चौसठ योगिनियोंकी मूर्ति है। पास ही मण्डपमें भद्रकाली-मूर्ति है। घाटसे थोड़ी दूरपर पुष्पदन्तेश्वर, गरुडेश्वर तथा पातालेश्वर महादेव हैं पुष्पदन्तेश्वर-मन्दिरमें एकदन्तविनायक-मूर्ति है। इसके पश्चात् पाडेघाट, सर्वेश्वरघाट, राजघाट हैं।

२९. **नारदघाट**—इसपर नारदेश्वर शिवमन्दिर है।

३०. **मानसरोवरघाट**—इसपर मानसरोवर-कुण्ड है। पासमें हंसेश्वर नामक शिवमन्दिर है। थोड़ी दूरपर रुक्माङ्गदेश्वर शिव तथा चित्रग्रीवा देवीका मन्दिर है।

३१. **क्षेमेश्वरघाट**—इसपर क्षेमेश्वर-मन्दिर है।

३२. **चौकीघाट**—यहाँ एक चबूतरेपर बहुत-सी मूर्तियाँ हैं।

३३. **केदारघाट**—इसके ऊपर गौरीकुण्ड है, जिसके पार केदारेश्वर-मन्दिर है। इस मन्दिरमें पार्वती, स्वामिकार्तिक, गणपति, दण्डपाणि भैरव, नन्दी आदि अनेक मूर्तियाँ हैं। यहाँ लक्ष्मीनारायण-मन्दिर तथा मीनाक्षीदेवीका मन्दिर भी है। केदारेश्वर-मन्दिरके बाहर नीलकण्ठेश्वर-मन्दिर है, जिसके सम्मुख संगमेश्वर शिव हैं। कुछ दूर तिलभाण्डेश्वर-मन्दिर है।

३४. **ललीघाट**—यहाँ चिन्तामणि-विनायक हैं।

३५. **श्मशानघाट**—यहाँ पहले मुर्दे जलाये जाते थे। यहाँ श्मशानेश्वर शिव हैं। इसीका दूसरा नाम हरिश्चन्द्रघाट है। महाराज हरिश्चन्द्र यहीं चाण्डालके हाथ बिककर श्मशान-कर वसूल करते थे।

३६. **हनुमान्घाट**—यहाँ हनुमान्जीकी मूर्ति है। समीपमें ही रुरु-भैरव हैं। आगे दण्डीघाट है।

३७. **शिवालाघाट**—यहाँ स्वप्नेश्वर-शिवलिङ्ग तथा स्वप्नेश्वरी देवी हैं। इसके दक्षिण हयग्रीवकुण्ड तथा हयग्रीवभगवान्की मूर्ति है।

३८. **वृक्षराजघाट**—यहाँ तीन जैन मन्दिर हैं।

३९. **जानकीघाट**—यहाँ चार मन्दिर हैं।

४०. **तुलसीघाट**—घाटके ऊपर गङ्गासागरकुण्ड है। इसी घाटपर गोस्वामी तुलसीदासजी बहुत दिन रहे और यहीं संवत् १६८० में उन्होंने देह छोड़ा। यहाँ उनके द्वारा स्थापित हनुमान्जीकी मूर्ति है। इस मन्दिरमें तुलसीदासजीकी चरण-पादुका तथा अन्य कई स्मारक सुरक्षित हैं। इस मन्दिरमें भगवान् कपिलकी मूर्ति भी है। तुलसीघाटसे थोड़ी दूरपर लोलार्ककुण्ड है। यह एक कुआँ है, जिसमें एक पासके हौजमें होकर नीचेतक जानेका मार्ग है। कुण्डकी सीढ़ियोंके ऊपर लोलादित्य तथा लोलार्केश्वर शिव-मूर्तियाँ हैं। पास ही अमरेश्वर एवं परेश्वरेश्वर शिव-मन्दिर हैं। इसके समीप ही अर्कविनायक हैं।

४१. **असि-संगमघाट**—यह घाट कच्चा है। यहाँ असि नामक नदी गङ्गाजीमें मिलती है। इस घाटके ऊपर जैनमन्दिर है। यहाँ हरिद्वार-तीर्थ माना जाता है। कार्तिककृष्णा ६ को यहाँ स्नानका विशेष महत्त्व है। यह घाट दशाश्वमेधघाटसे लगभग २ मील है।

काशीके मन्दिर एवं कुण्ड

१. **श्रीविश्वनाथजी**—काशीका सर्वप्रधान मन्दिर यही है। मन्दिरपर स्वर्णकलश चढ़ा है, जिसे इतिहास-प्रसिद्ध पंजाब-केसरी महाराज रणजीतसिंहने अर्पित किया था। इस मन्दिरके सम्मुख सभामण्डप है और मण्डपके पश्चिम दण्डपाणीश्वर-मन्दिर है। सभामण्डपमें बड़ा घण्टा तथा अनेक देवमूर्तियाँ हैं। मन्दिरके प्राङ्गणके एक ओर सौभाग्यगौरी तथा गणेशजी और दूसरी ओर शृङ्गारगौरी, अविमुक्तेश्वर तथा सत्यनारायणके मन्दिर हैं। दण्डपाणीश्वरमन्दिरके पश्चिम शनैश्चरेश्वर महादेव हैं।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें यह विश्वेश्वर-लिङ्ग है। इसकी कुछ विशेषताएँ हैं। यहाँ जलहरी शङ्कुके आकारकी नहीं,

काशी
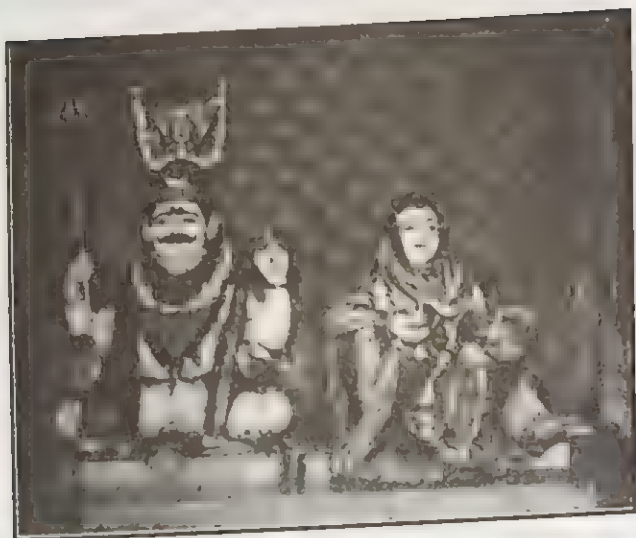
श्रीअन्नपूर्णा-मन्दिरमें शिव-पार्वती

श्रीकालभैरव
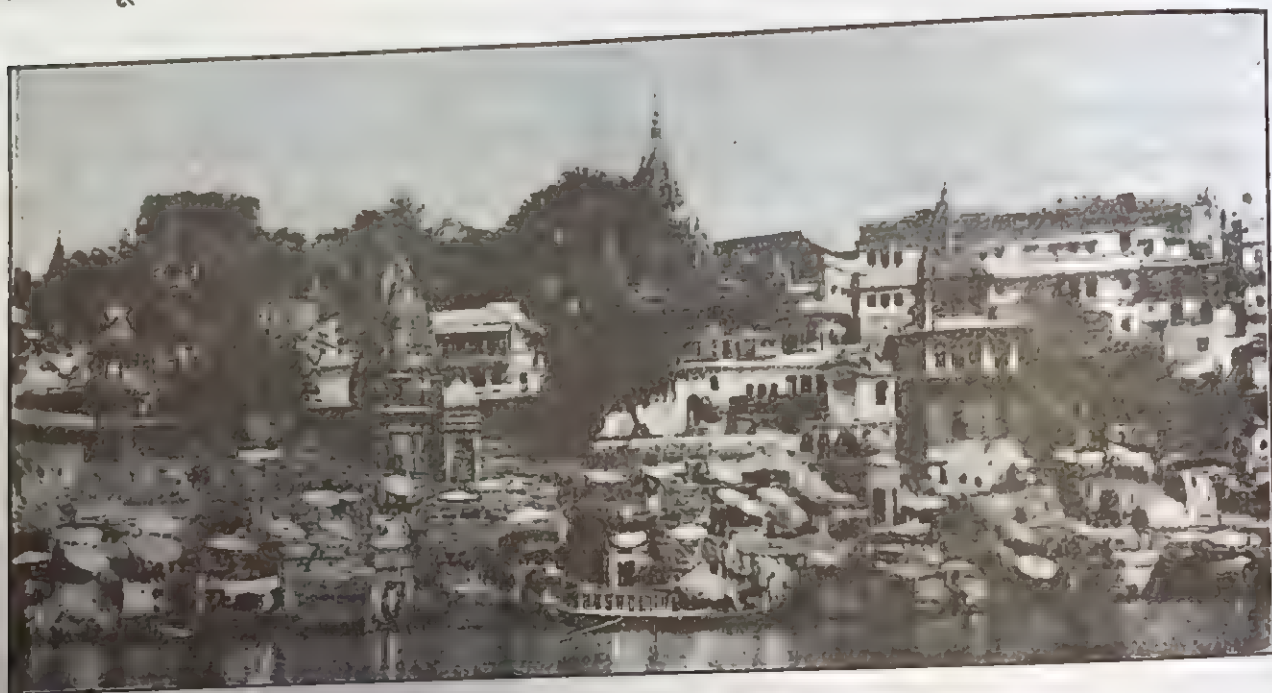
मणिकर्णिका-घाट

दुर्गाकुण्डकी श्रीदुर्गाजी

श्रीदुर्गा-मन्दिर, रामनगर

काशी

श्रीविश्वनाथजी
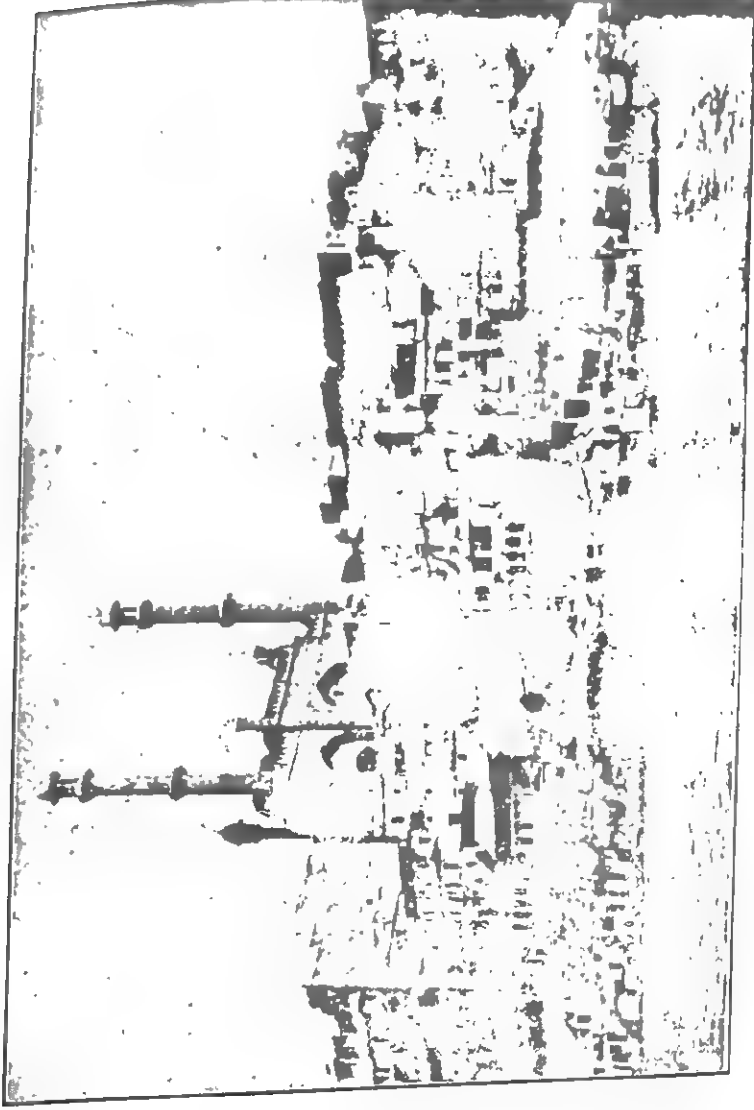
पञ्चगङ्गाघाट
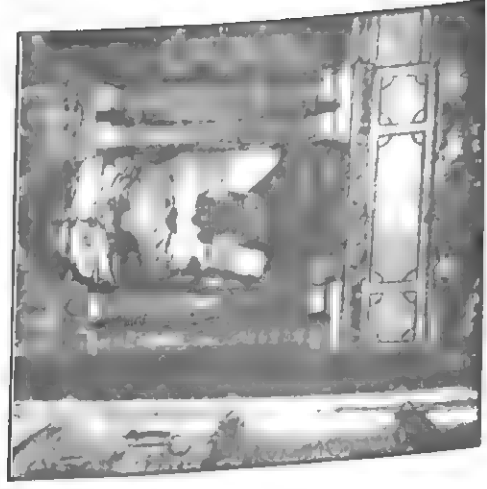
प्राचीन श्रीविश्वनाथ-मन्दिरका नन्दी

गङ्गावतरण (श्रीअन्नपूर्णा-मन्दिर)

श्रीअन्नपूर्णाजी

rthank Section 8_1_Front
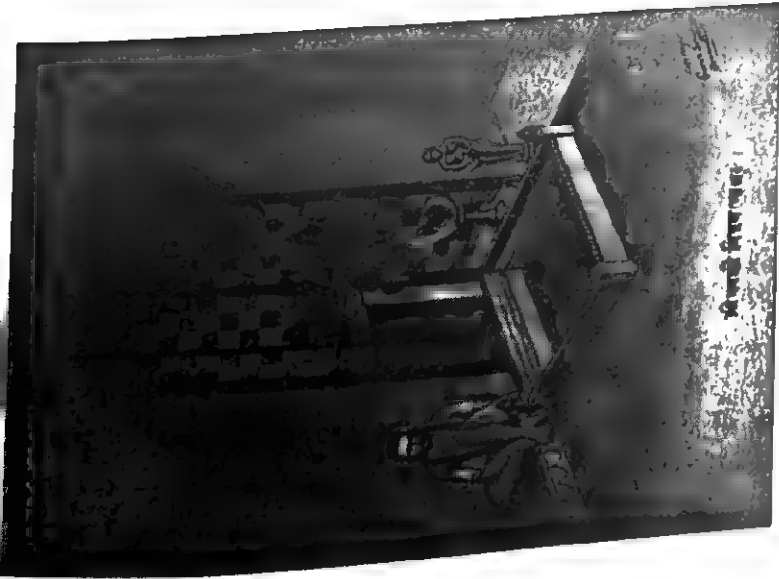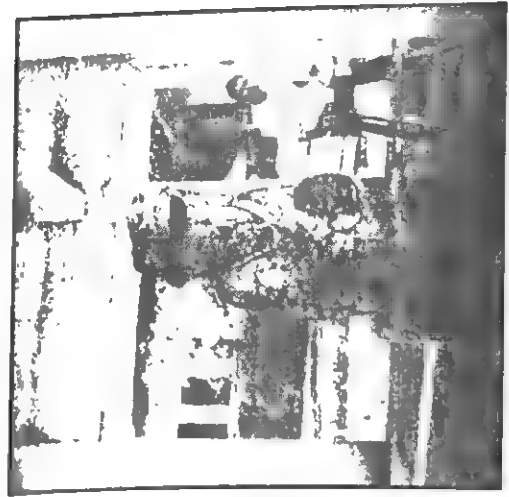
चौरस है। उसमेंसे जल निकलनेका मार्ग नहीं है। जल लोटेसे उलीचकर निकाला जाता है। कार्तिकशुक्ला १४ तथा महाशिवरात्रिको विश्वेश्वरका अर्चन महान् फलदायी है।

श्रीविश्वनाथजी काशीके सम्राट् हैं। उनके मन्त्री हरेश्वर, कथावाचक ब्रह्मेश्वर, कोतवाल भैरव, धनाध्यक्ष तारकेश्वर, चोबदार दण्डपाणि, भंडारी वीरेश्वर, अधिकारी ढुण्ढिराज तथा काशीके अन्य शिवलिङ्ग प्रजापालक हैं।

विश्वनाथ-मन्दिरके वायव्यकोणमें लगभग डेढ़ सौ शिवलिङ्ग हैं। इनमें धर्मराजेश्वर मुख्य हैं। इस मण्डलीको शिवकी कचहरी कहते हैं। यहाँ मोद-विनायक, प्रमोद-विनायक, सुमुख-विनायक और गणनाथ-विनायककी मूर्तियाँ हैं।

२. ज्ञानवापी—श्रीविश्वनाथ-मन्दिरके पास ही ज्ञानवापीकूप है। कहा जाता है कि औरंगजेबने जब विश्वनाथ-मन्दिर तुड़वाया, तब श्रीविश्वनाथजी इस कूपमें चले गये। पीछे उन्हें वहाँसे निकालकर वर्तमान मन्दिरमें स्थापित किया गया। इस कूपके जलसे यात्री आचमन करते हैं।

यहाँपर ७ फुट ऊँचा नन्दी है, जो प्राचीन विश्वनाथ-मन्दिरकी ओर मुख करके स्थित है। यहाँ प्राचीन मन्दिरके स्थानपर औरंगजेबने मसजिद बनवा दी; किन्तु उसमें मन्दिरके चिह्न अभीतक देखे जाते हैं। मसजिदके बाहर एक छोटे चबूतरेपर बहुत छोटे मन्दिरमें गौरीशंकर-मूर्ति है।

३. अक्षयवट—श्रीविश्वनाथ-मन्दिरके द्वारसे निकलकर ढुण्ढिराज गणेशकी ओर चलें तो प्रथम बायीं ओर शनैश्चरका मन्दिर मिलता है। इनका मुख चाँदीका है, शरीर नहीं है। नीचे केवल कपड़ा पहिनाया होता है। पास एक ओर महावीरजी हैं। एक कोनेमें एक वटवृक्ष है, जिसे अक्षयवट कहते हैं। यहाँ द्रुपदादित्य तथा नकुलेश्वर महादेव हैं।

४. अन्नपूर्णा—विश्वनाथ-मन्दिरसे थोड़ी दूरपर ही यह मन्दिर है। चाँदीके सिंहासनपर अन्नपूर्णाकी पीतलकी मूर्ति विराजमान है। मन्दिरके सभामण्डपके पूर्व कुबेर, सूर्य, गणेश, विष्णु तथा हनुमान्‌जीकी मूर्तियाँ तथा आचार्य श्रीभास्कररायद्वारा स्थापित यन्त्रेश्वर लिङ्ग है, जिसपर श्रीयन्त्र खुदा हुआ है। इस मन्दिरके साथ लगा एक खण्ड और है, जिसका आँगन विस्तृत है। उसमें महाकाली, शिव-परिवार, गङ्गावतरण, लक्ष्मीनारायण, श्रीरामदरबार, राधाकृष्ण, उमामहेश्वर एवं अन्तमें नृसिंहजीकी संगमरमरकी सुन्दर मूर्तियाँ हैं। चैत्र शु० ९ तथा आश्विन शु० ८ को अन्नपूर्णाके दर्शन-पूजनकी विशेष महिमा है।

५. ढुण्ढिराज गणेश—अन्नपूर्णा-मन्दिरके पश्चिमगलीके पास ढुण्ढिराज गणेश हैं। इनके प्रत्येक अङ्गपर चाँदी मढ़ी है। कहा जाता है कि महाराज दिवोदासने गण्डकीके पाषाणसे यह मूर्ति बनवायी थी। माघ शुक्ला ४ को इनके पूजनका अधिक महत्त्व है।

६. दण्डपाणि—ढुण्ढिराजके समीप उत्तर ओर एक छोटे मन्दिरमें दण्डपाणिकी मूर्ति है। उनके दोनों ओर उनके दो गण हैं—शुभ्रं और विभ्रं।

७. आदिविश्वेश्वर—ज्ञानवापीके पास प्राचीन विश्वनाथ मन्दिर तोड़कर औरंगजेबने मसजिद बनवा दी है। उसके पश्चिमोत्तर सड़कके पास आदि-विश्वेश्वरका मन्दिर है।

८. लाङ्गलीश्वर—आदिविश्वेश्वरके समीप पाँच पाण्डवोंसे आगे एक मन्दिरमें लाङ्गलीश्वर नामक विशाल शिवलिङ्ग है। आदिविश्वेश्वरके आगे सड़कपर सत्यनारायणजीका भव्य मन्दिर है।

९. काशी-करवत—औरंगजेबवाली उक्त मसजिदके पास एक गलीमें यह स्थान है। एक अँधेरे कुएँमें एक शिवलिङ्ग है। कुएँमें जानेका मार्ग बंद रहता है, किसी निश्चित समय ही वह खुलता है। कुएँमें ऊपरसे ही अक्षत-पुष्प चढ़ाया जाता है। पहिले लोग यहाँ 'करवत' लेते थे।

इस स्थानसे थोड़ी दूरपर मदालसेश्वर शिवमन्दिर है। वहाँसे आगे कालिका-गलीमें चण्डी-चण्डीश्वरका मन्दिर है। उससे आगे एक मन्दिरमें कालरात्रि दुर्गाजीका विग्रह है। आगे शुक्रकूप तथा शुक्रेश्वर महादेव हैं। यहाँसे थोड़ी दूरपर भवानीशंकर महादेव तथा भवानी गौरीका मन्दिर है। पास ही एक मकानमें सृष्टिविनायककी मूर्ति है। इनसे थोड़ी दूरपर प्रतिकेश्वर शिव हैं। यहाँसे पश्चिम एक मकानमें पञ्चमुख गणेश हैं।

ढुण्ढिराज गणेशके पश्चिम यज्ञविनायक-मन्दिर है। उससे थोड़ी दूरपर समुद्रेश्वर तथा ईशानेश्वरके मन्दिर हैं। श्रीविश्वेश्वर-मन्दिरसे कुछ दूरपर चित्रघण्ट-विनायक हैं। वहाँसे उत्तर चित्रघण्टा देवी हैं। इस गलीके बाहर पशुपतीश्वर-मन्दिर है। यहाँसे कुछ दूरपर शीतला गलीमें एक अँधेरे कूपमें पितामहेश्वर-मूर्ति है, जिसका दर्शन केवल शिवरात्रिको होता है। यहाँसे थोड़ी दूरपर ब्रह्मपुरी मुहल्लेमें कलशेश्वर महादेव तथा कलशेश्वरी देवीका मन्दिर है। यहाँसे थोड़ी दूरपर सत्यकालेश्वर महादेव हैं।

१०. गोपालमन्दिर—सत्यकालेश्वरसे पूर्व चौखंबा

मुहल्लेमें वल्लभसम्प्रदायका यह मुख्य मन्दिर है। इसमें श्रीगोपालजी तथा श्रीमुकुन्दरायजीके विग्रह हैं। पूजा-सेवा वल्लभ-सम्प्रदायके अनुसार होती है।

गोपालमन्दिरके सामने रणछोड़जीका मन्दिर, बड़े महाराजका मन्दिर, बलदेवजीका मन्दिर और दाऊजीका मन्दिर है। यह मन्दिर भी वल्लभसम्प्रदायके हैं।

११. **सिद्धिदा दुर्गा**—गोपालमन्दिरसे थोड़ी दूरपर यह मन्दिर है। दाऊजीके मन्दिरके पास बिन्दुमाधव-मन्दिर है और वहाँसे थोड़ी दूरपर कर्दमेश्वर, कालमाधव तथा पापक्षेमेश्वर शिवमन्दिर हैं।

१२. **कालभैरव**—यह मन्दिर भैरवनाथ मुहल्लेमें है। यह सिंहासनपर स्थित चतुर्भुज मूर्ति है, जो चाँदीसे मढ़ी है। मन्दिरके आगे बड़े महावीर तथा दाहिने मण्डपमें योगीश्वरी देवी हैं। मन्दिरके पिछले द्वारके बाहर क्षेत्रपाल भैरवकी मूर्ति है। श्रीभैरवजीका वाहन काला कुत्ता है। ये नगरके कोटपाल हैं। कार्तिककृष्णा ८, मार्गशीर्षकृष्णा ८, चतुर्दशी तथा रविवारको भैरवजीके दर्शन-पूजनका विशेष महत्त्व है।

कालभैरवके पास एक गलीमें व्यतीपातेश्वर (नवग्रहेश्वर) महादेव हैं। वहाँसे थोड़ी दूरपर कालेश्वर महादेव हैं, इस मन्दिरमें तीन हाथका कालदण्ड है। यहाँ कालीकी मूर्ति और कालकूप भी है। समीप ही जतनबर (चैतन्यवट) नामक स्थान है। महाप्रभु श्रीचैतन्यदेव काशीमें यहीं ठहरे थे; प्रबोधानन्द सरस्वतीने यहीं उनका शिष्यत्व ग्रहण किया था।

१३. **दुर्गाजी**—असि-संगमघाटसे थोड़ी दूरपर पुष्कर-तीर्थ सरोवर है। वहाँसे लगभग आध मीलपर दुर्गाकुण्ड नामका विशाल सरोवर है। इसके किनारे दुर्गाजीका मन्दिर है। इस मन्दिरमें कूष्माण्डा देवीकी मूर्ति है, जिसे लोग दुर्गाजी कहते हैं। मन्दिरके घेरेमें शिव, गणपति आदि देवताओंके मन्दिर हैं। मुख्य द्वारके पास दुर्गा-विनायक तथा चण्डभैरवकी मूर्तियाँ हैं। पास ही कुक्कुटेश्वर महादेव हैं। राजा सुबाहुपर प्रसन्न होकर भगवती यहाँ दुर्गारूपसे स्थित हुई हैं।

१४. **संकटमोचन**—दुर्गाजीसे आगे यह मन्दिर एक बड़े बगीचेमें है। यहाँकी हनुमान्‌जीकी मूर्ति गोस्वामी तुलसीदासजीद्वारा स्थापित है। सामने राम-मन्दिर है।

१५. **कुरुक्षेत्र-तीर्थ**—दुर्गाकुण्डसे थोड़ी दूरपर नगरकी ओर कुरुक्षेत्र सरोवर है। वहाँसे कुछ दूरपर सिद्धकुण्ड है। आगे कुछ दूरपर कृमिकुण्ड है। यहाँ बाबा किनारामका स्थान है। इसके पास कूटदन्त-विनायक हैं। यहाँसे थोड़ी दूरपर रेवतीतीर्थ सरोवर है, जिसे अब 'रेवड़ी तालाब' कहते हैं। यहाँसे कुछ दूरपर शङ्खोद्धारतीर्थ, द्वारकातीर्थ, दूर्वासातीर्थ तथा कृष्ण-रुक्मिणीतीर्थ हैं। यहाँसे कुछ उत्तर कामाक्षा-कुण्ड है, जिसके पास वैद्यनाथ, क्रोधभैरव तथा कामाक्षा-योगिनीकी मूर्तियाँ हैं। यहाँसे कुछ दूरपर रामकुण्ड है, जिसके पास लवेश्वर तथा कुशेश्वर शिव हैं। आगे शिवगिरि सरोवरके पास त्रिमुख-विनायक और त्रिपुरान्तकके मन्दिर हैं। यहाँसे कुछ दूर लालपुर मुहल्लेमें मातृकुण्ड है, जिसके पास पित्रीश्वर शिव तथा क्षिप्रप्रसाद-विनायक हैं। इनके पीछे मातृदेवी मन्दिर है। आगे पितृकुण्ड सरोवर है।

१६. **पिशाचमोचन**—मातृकुण्डसे थोड़ी दूरपर यह कुण्ड है। यहाँ पिण्डदानसे मृतात्मा प्रेतयोनिसे छूट जाती है। यह बड़ा सरोवर है। घाटपर महावीर, कपर्दीश्वर, पञ्चविनायक, पिशाचमस्तक, विष्णु, वाल्मीकि तथा अन्य देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ वाल्मीकेश्वर शिव तथा हेरम्ब-विनायक हैं।

१७. **लक्ष्मीकुण्ड**—पिशाचमोचनसे कुछ दूरपर लक्ष्मीकुण्ड मुहल्लेमें लक्ष्मीकुण्ड सरोवर है। इसके पास महालक्ष्मीका मन्दिर है। इस मन्दिरमें मयूरी योगिनीकी मूर्ति भी है। पास ही शिवमन्दिर तथा कालीमठ हैं। कुण्डके पास कुण्डिकाक्ष-विनायक हैं। थोड़ी दूरपर सूर्यकुण्डपर साम्बादित्य तथा द्विमुख-विनायक हैं।

१८. **मन्दाकिनी**—इस मुहल्लेको अब मैदागिन कहते हैं। यहाँ कम्पनी-बागमें मन्दाकिनी सरोवर है, जिसके पास मन्दाकिनी-मन्दिर है। कम्पनी-बागसे थोड़ी दूरपर मध्यमेश्वर-मन्दिर है। आगे गणेशगंजमें ऋणहरेश्वर शिव-मन्दिर है। समीपके वृद्धकाल मुहल्लेमें रत्नेश्वर महादेव हैं, उनके पास ही सतीश्वर शिव तथा अवन्तिका-देवीका मन्दिर है। समीपमें रत्नचूड़ामणि कूप है। आलमगीरी मसजिदके पास हरतीर्थ नामक सरोवर है, इसके पास हंसेश्वर तथा रुद्रेश्वरके मन्दिर हैं। कम्पनी-बागके पास बड़े गणेशकी भव्य मूर्ति है।

१९. **कृत्तिवासेश्वर**—वृद्धकाल गलीके दाहिनी ओर हरतीर्थ मुहल्लेमें कृत्तिवासेश्वर-मन्दिर था, जिसे तोड़वाकर औरंगजेबने मसजिद बनवा दी। इस आलमगीरी मसजिदके चौगानमें एक हौजमें २½ फुट ऊँचा फुहारास्तम्भ है, यही पुराना कृत्तिवासेश्वर लिङ्ग है। अब आलमगीरी

मसजिदके पास कृत्तिवासेश्वरका नवीन मन्दिर है। यहाँ पास ही वृद्धकालेश्वर-मन्दिर भी है। उसमें वृद्धकालेश्वर तथा महाकालेश्वर लिङ्ग हैं। इस मन्दिरके चौकमें वृद्धकाल नामक कूप है, जिसके पास अमृतकुण्ड नामक सरोवर है। अमृतकुण्डमें स्नानसे कुष्ठतकके मिटनेकी बात कही जाती है। कूपके उत्तर दक्षेश्वर महादेव हैं तथा हनुमान्जीका भी मन्दिर है। अमृतकुण्डके पास असिताङ्ग-भैरवका मन्दिर तथा मालतीश्वर-मन्दिर हैं।

वृद्धकाल-मन्दिरसे कुछ दूरपर मृत्युञ्जय-मन्दिर है। वहाँसे थोड़ी दूरपर मणिप्रदीपेश्वर शिव हैं। उनके पास ही धनसेरा स्थानमें धनेश्वर महादेव तथा नृसिंहजी हैं। यहाँसे कुछ दूर सुमन्तेश्वर शिव तथा हनुमान्जीका मन्दिर है। उसके उत्तर ऋणमोचन और पापमोचन नामके दो सरोवर हैं, जिनके पास विश्वकर्मेश्वर-शिवमन्दिर है।

२०. गोरखनाथ-मन्दिर—मैदागिन मुहल्लेमें ही यह मन्दिर है। इसमें गोरखनाथजीके चरणचिह्न हैं। साथ ही वृषेश्वर महादेव हैं। यहाँ गोरखसम्प्रदायके साधु रहते हैं।

इस स्थानसे थोड़ी दूरपर नृसिंह-चबूतरा है। उसके पास रामानुज-सम्प्रदायके मन्दिर हैं। इसके दक्षिण कल्याणी देवीका मन्दिर है। वहाँसे थोड़ी दूरपर हनुमान्जी तथा जम्बुकेश्वर-शिवमन्दिर हैं। थोड़ी दूरपर वक्रतुण्ड-विनायकका विशाल मन्दिर है। इसमें हस्तदन्त-विनायकमूर्ति है। इस मन्दिरमें सिद्धकण्ठेश्वर शिवलिङ्ग है। यहाँसे कुछ दूर श्रीजगन्नाथ-मन्दिर तथा आषाढ़ीश्वर-शिवमन्दिर हैं।

२१. भूतभैरव—काशीपुरा मुहल्लेमें भूतभैरवका मन्दिर है। इन्हें भीषणभैरव भी कहते हैं। पास ही कन्हुकेश्वर शिवमन्दिर है और कुछ दूर निवासेश्वर, व्याघ्रेश्वर एवं जैगीषव्येश्वरके मन्दिर हैं। जैगीषव्य-मन्दिरमें जैगीषव्य नामक गुफा है, जिसमें बहुत-से शिवलिङ्ग हैं। इस मुहल्लेमें ही ज्येष्ठेश्वरका विशाल मन्दिर है, जिसके पास ज्येष्ठागौरी, ज्येष्ठविनायकके मन्दिर तथा ज्येष्ठा वापी है।

२२. काशीदेवी—ज्येष्ठेश्वरसे थोड़ी दूरपर काशीदेवीका मन्दिर है, जिसके पास सप्तसागर कूप है। इसके पश्चिम कर्णघण्टा सरोवर है। यहाँ एक ओर कर्णघण्टेश्वर-मन्दिर तथा व्यासेश्वर सरोवर और व्यासकूप भी हैं। यहाँसे आगे हरिशंकर मुहल्लेमें हरिशंकरेश्वर गुप्तलिंग है। मछरहट्टा मुहल्लेमें चित्रगुप्तेश्वर-मन्दिर है। उसके पास एक गलीमें भारभूतेश्वर, राजविनायक तथा विकेश्वर महादेवके मन्दिर हैं। इनके पश्चिम अस्थिक्षेप सरोवर है। इसके समीप एक मन्दिरमें हाटकेश्वर तथा उटनकेश्वर महादेव हैं।

२३. कबीरचौरा—इस मुहल्लेमें कबीरजीकी गद्दी है। गद्दीके पास कबीरजीकी टोपी तथा रामानन्द स्वामी एवं कबीरजीके चित्र हैं।

२४. धूपचण्डी—धूपचण्डी मुहल्लेमें इसी नामके सरोवरके तटपर धूपचण्डी देवीका मन्दिर है तथा विकटद्विज-विनायक हैं। थोड़ी दूरपर चित्रकूट सरोवर है। आगे विधिराज-विनायकका मन्दिर है।

क्वीन्स कॉलेजसे लौटते समय माधवबागके पास नाटी इमलीमें विजया-दशमीके दिन मेला होता है। आगे ईश्वरगंगी मुहल्लेमें चिन्तामणि-विनायक हैं और तीन हाथ ऊँचा पहलदार अग्नीध्रेश्वर (योगेश्वर) लिङ्ग है। मन्दिरके पार आग्नीध्रकुण्ड है। इसीको ईश्वरगंगी कहते हैं। आगे एक अँधेरी गुफा है एक कोठरीमें, जिसे गुहागङ्गा कहते हैं। पासमें उर्वशीश्वर महादेव हैं।

जैतपुरा मुहल्लेमें जवाहरेश्वर महादेव हैं। समीप ही सिद्धेश्वर हैं। यहीं एक मन्दिरमें सिंहपर बैठी वागीश्वरी (स्कन्दमाता)-मूर्ति है। इस मन्दिरमें अन्य अनेक देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। यहाँसे थोड़ी दूर नागकुआँ मुहल्लेमें कर्कोटकतीर्थ है। इसे नागकूप कहते हैं। यहाँ नागपञ्चमीको मेला लगता है। इसके पास एक बकरियाकुण्ड नामक सरोवर है, जहाँ उत्तरार्कादित्य-मन्दिर है। वरणातटके मढ़ियाघाटपर शैलपुत्री देवीका मन्दिर है, वहाँ शैलेश्वर महादेव हैं।

२५. कपालमोचन—बकरियाकुण्डसे एक मीलपर कपालमोचन कुण्ड है। यह बड़ा सरोवर है। यहाँ एक घेरेमें एक सात फुट ऊँचा ताँबेसे मढ़ा स्तम्भ है, जिसे लाटभैरव या कपालभैरव कहते हैं। यह स्थान जलालीपुर गाँवमें है। यहाँ एक पत्थरकी कुत्तेकी मूर्ति और एक कुआँ है। यहाँ वरणाके आँवलीघाटपर चण्डीश्वर शिव तथा मुण्डविनायक हैं।

२६. बटुकभैरव—स्कूलके पास यह भैरवजीका मन्दिर है। पासमें ही कामाक्षा देवी हैं।

२७. तिलभाण्डेश्वर—बंगाली टोला स्कूलके पास

यह मन्दिर है। इसकी लिङ्गमूर्ति साढ़े चार फुट ऊँची है। इसके आगे केदारेश्वर-मन्दिर है। यहाँ शिवरात्रिको तथा श्रावणके सोमवारोंको भीड़ रहती है।

काशीमें मन्दिर तो गली-गलीमें, घर-घरमें हैं। यहाँ तो कुछ थोड़े-से मन्दिरोंका ही नाम दिया गया है; क्योंकि सबका वर्णन देना शक्य नहीं था।

काशीका तीर्थदर्शन—अन्तर्वेदी और पञ्चक्रोशी परिक्रमाएँ

नित्ययात्रा—श्रीगङ्गाजीमें या मणिकर्णिकाकुण्डमें स्नान करके भगवान् विष्णु, दण्डपाणि, महेश्वर, ढुण्ढिराज, ज्ञानवापी, नन्दिकेश्वर, तारकेश्वर तथा महाकालेश्वरका दर्शन करके फिर दण्डपाणिका दर्शन करे और तब श्रीविश्वनाथजी एवं अन्नपूर्णाजीका दर्शन करे।

अन्तर्वेदी परिक्रमा—प्रातःकाल स्नान करके पञ्च-विनायक तथा विश्वनाथजीका दर्शन करके निर्वाणमण्डपमें जाकर नियम-ग्रहण करके मणिकर्णिकामें स्नान करे और मौन होकर मणिकर्णकेश्वरका पूजन करे। वहाँसे कम्बलाश्वतर, वासुकीश्वर, पर्वतेश्वर, गङ्गाकेशव, ललितादेवी, जरासंधेश्वर, सोमनाथ, वाराहेश्वर, ब्रह्मेश्वर, अगस्तीश्वर, कश्यपेश्वर, हरिकेशव, वैद्यनाथ, ध्रुवेश्वर, गोकर्णेश्वर, हाटकेश्वर, अस्थिक्षेप सरोवर, कीकेश्वर, भारभूतेश्वर, चित्रगुप्तेश्वर, चित्रघण्टा, दुर्गाजी, पशुपीतश्वर, पितामहेश्वर, कलशेश्वर, चन्द्रेश्वर, वीरेश्वर, विद्येश्वर, आग्नीध्रेश्वर, नागेश्वर, हरिश्चन्द्रेश्वर, चिन्तामणि-विनायक, सेनाविनायक, वसिष्ठेश्वर, वामदेवेश्वर, त्रिसङ्गेश्वर, विशालाक्षी, धर्मेश्वर, विश्वबाहुक, आशाविनायक, वृद्धादित्य, चतुर्वक्त्रेश्वर, ब्राह्मीश्वर, मनःप्रकामेश्वर, ईशानेश्वर, चण्डी-चण्डीश्वर, भवानीशंकर, ढुण्ढिराज, राजराजेश्वर, लाङ्गलीश्वर, नकुलीश्वर, परान्नेश्वर, परद्रव्येश्वर, प्रतिग्रहेश्वर, निष्कलङ्केश्वर, मार्कण्डेयेश्वर, अप्सरेश्वर, गङ्गेश्वर, ज्ञानवापी, नन्दिकेश्वर, तारकेश्वर, महाकालेश्वर, दण्डपाणि महेश्वर, मोक्षेश्वर, तीरभद्रेश्वर, अविमुक्तेश्वर तथा पञ्चविनायकका दर्शन करके विश्वनाथजीका दर्शन करे और तब मौन समाप्त करे।

सामान्यदर्शन—जिनसे अन्तर्वेदी परिक्रमा नित्य नहीं हो सकती और नित्य यात्रा भी नहीं हो सकती, उन्हें प्रतिदिन मणिकर्णिकापर गङ्गास्नान करके ढुण्ढिराज गणेश, श्रीविश्वनाथजी, श्रीअन्नपूर्णाजी और कालभैरवजीका दर्शन करना चाहिये।

पञ्चक्रोशी परिक्रमा—काशीकी परिक्रमा ४७ मीलकी है। इस मार्गमें स्थान-स्थानपर धर्मशालाएँ हैं। कई बाजार पड़ते हैं। भोजनकी सामग्री तथा अन्य आवश्यक पदार्थोंकी दुकानें पूरे मार्गमें हैं। वैसे तो सभी महीनोंमें यह परिक्रमा होती है, किन्तु मार्गशीर्षमें और फाल्गुनमें विशेष यात्री परिक्रमा करते हैं। पुरुषोत्तम महीने (अधिक मास)-में तो परिक्रमा-पथमें बराबर यात्रियोंका मेला चलता रहता है।

पञ्चक्रोशी परिक्रमा सामान्यः पाँच दिनमें समाप्त होती है। कुछ लोग शिवरात्रिको एक ही दिनमें पूरी परिक्रमा कर लेते हैं। मणिकर्णिकापर स्नान करके ज्ञानवापी, विश्वनाथजी, अन्नपूर्णा तथा ढुण्ढिराज गणेशका दर्शन करके पहले दिन छः मील चलकर यात्री कँड़वा नामक स्थानपर, जो चुनारकी सड़कपर है, विश्राम करते हैं। इस स्थानपर कर्दमेश्वरमन्दिर है। दूसरे दिन कर्दमेश्वरसे चलकर १० मील दूर भीमचण्डी स्थानपर विश्राम होता है। तीसरे दिन भीमचण्डीसे १४ मील दूर वरणा-किनारे रामेश्वर नामक स्थानपर विश्राम होता है। चौथे दिन रामेश्वरसे १४ मील चलकर कपिलधारा नामक स्थानपर विश्राम किया जाता है। पाँचवें दिन कपिलधारासे ६ मील चलकर मणिकर्णिका-घाटपर स्नान करके सिद्धि-विनायक, श्रीविश्वनाथजी, अन्नपूर्णाजी, ढुण्ढिराज, दण्डपाणि और कालभैरवका दर्शन करके यात्रा समाप्त करते हैं।

इस पञ्चक्रोशी यात्रामें जिन देवताओं एवं तीर्थोंके दर्शन होते हैं, उनकी नामावली क्रमसे नीचे दी जा रही है—

प्रथम दिन—श्रीविश्वनाथ, अन्नपूर्णा, ढुण्ढिराज गणेश, मोद-गणेश, प्रमोद-गणेश, सुमुख-गणेश, दुर्मुख-गणेश, दण्डपाणि, कालभैरव, मणिकर्णिकेश्वर, सिद्धि-विनायक, गङ्गाकेशव, ललितादेवी, जरासंधेश्वर, सोमनाथ, अदाल्मेश्वर, शूलटङ्केश्वर, वाराहेश्वर, दशाश्वमेधेश्वर, सर्वेश्वर, केदारेश्वर, हनुमदीश्वर, लोलार्क, अर्कविनायक, संगमेश्वर, दुर्गाकुण्ड, दुर्गाविनायक, दुर्गाजी, विष्वक्सेनेश्वर, कर्दमेश्वर, कर्दमकूप, सोमनाथ, विरूपाक्ष और नीलकण्ठेश्वर।

द्वितीय दिन-नागनाथ, चामुण्डादेवी, मोक्षेश्वर, करुणेश्वर, वीरभद्रेश्वर, विकटा-दुर्गा, उन्मत्त भैरव, नील गण, कालकूट गण, विमला-दुर्गा, महादेव, नन्दिकेश्वर, भृङ्गिरिटिगण, गणप्रिय, विरूपाक्ष, यक्षेश्वर, विमलेश्वर, ज्ञानदेश्वर, मोक्षदेश्वर, अमृतेश्वर, गन्धर्वसागर (भीमचण्डी सरोवर) भीमचण्डी

देवी, चण्डविनायक, रविरक्ताक्ष गन्धर्व और नरकार्णव-तारक गण।

तृतीय दिन—एकपाद गण, महाभीमा, भैरव, भैरवी, भूतनाथ, सोमनाथेश्वर, सिन्धुरोधस् तीर्थ, कालनाथेश्वर, कपर्दीश्वर, कामेश्वर, वीरभद्र गण, चारुमुख गण, गणनाथेश्वर, देहलीविनायक, षोडशविनायक, उद्दण्डविनायक, उत्कलेश्वर, रुद्राणी-तपोभूमि, रामेश्वर, सोमनाथेश्वर, भरतेश्वर, लक्ष्मणेश्वर, शत्रुघ्नेश्वर, द्यावाभूमीश्वर और नहुषेश्वर।

चतुर्थ दिन-असंख्याततीर्थलिङ्ग, देवसंधेश्वर, पाशपाणि गणेश, पृथ्वीश्वर, स्वर्गभूमि, पूयसरोवर, वृषभध्वज-तीर्थ और वृषभध्वज।

पञ्चम दिन—ज्वालानृसिंह, सर्वविनायक, वरणासंगम, संगमेश्वर, आदिकेशव, प्रह्लादेश्वर, त्रिलोचन, पञ्चगङ्गा, बिन्दुमाधव, गभस्तीश्वर, मङ्गलागौरी, वसिष्ठेश्वर, वामदेवेश्वर, पर्वतेश्वर, महेश्वर, मणिकर्णिका, सप्तावरण विनायक (यव-विनायक), विश्वनाथ, अन्नपूर्णा, ढुण्ढिराज, दण्डपाणि और कालभैरव।

काशीके देवता

काशीमें विश्वनाथजीको मिलाकर कुल ५९ मुख्य शिव-लिङ्ग हैं। १२ आदित्य हैं। ५६ विनायक हैं। ८ भैरव हैं। ९ दुर्गा हैं। १३ नृसिंह हैं। १६ केशव हैं। इनमेंसे बहुतोंके मन्दिर एवं मूर्तियाँ लुप्त हो गयी हैं। बहुत-से घरोंमें पड़ गये हैं।

काशीके जैनतीर्थ

काशीपुरी जैनोंका अतिशय क्षेत्र है। यहाँ भदैनी मुहल्लेमें सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथजी और भेलूपुरा मुहल्लेमें तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथजीका जन्म हुआ था। भदैनी और भेलूपुरामें इन तीर्थंकरोंके जन्मस्थानोंपर इनके मन्दिर बने हैं। इनके अतिरिक्त बुलानालेपर एक पंचायती मन्दिर तथा तीन चैत्यालय हैं। मैदागिनमें जैनमन्दिर और जैनधर्मशाला है। भदैनीपर जैनियोंका 'स्याद्वाद-विद्यालय' है।

दर्शनीय स्थान—हिंदू-विश्वविद्यालय तो काशीकी ही नहीं, भारतकी प्रमुख शिक्षा-संस्था है। यह महामना मालवीयजीकी अमरकीर्ति है। इसमें श्रीयुगलकिशोरजी बिड़लाकी विशेष चेष्टासे श्रीविश्वनाथका एक विशाल मन्दिर भी बना है। भारतमाता-मन्दिर यात्रियोंके देखनेयोग्य है। इसमें संगमरमरपर भारतका नक्शा बड़े सुन्दर ढंगसे बनाया गया है। इसी सड़कपर इस मन्दिर तथा स्टेशनके बीचमें काशी-विद्यापीठ नामक राष्ट्रिय शिक्षा-संस्था है। काशीनागरी-प्रचारिणी-सभा, भारत-धर्म-महामण्डल, क्वीन्स कालेज तथा सरस्वती-भवन पुस्तकालय देखनेयोग्य हैं।

काशीका पौराणिक इतिहास

महाराज सुदेवके पुत्र सम्राट् दिवोदासने गङ्गातटपर वाराणसी नगर बसाया था। एक बार भगवान् शंकरने देखा कि पार्वतीजीको यह अच्छा नहीं लगता कि वे सदा पितृगृहमें ही पतिके साथ रहें। पार्वतीकी प्रसन्नताके लिये शंकरजीने हिमालय छोड़कर किसी सिद्धक्षेत्रमें रहनेका विचार किया। उन्हें काशीक्षेत्र प्रिय लगा। शंकरजीने अपने निकुम्भ नामक गणको आदेश दिया—'वाराणसीको निर्जन करो।' निकुम्भने आदेशका पालन किया। नगर निर्जन हो जानेपर भगवान् शंकर अपने गणोंके साथ वहाँ आकर रहने लगे। भगवान् शंकरके सांनिध्यमें रहनेकी इच्छासे वहाँ देवता तथा नागलोक भी निवास करने लगे।

प्रतापी सम्राट् दिवोदास अपनी राजधानी छिन जानेसे दुखी थे। उन्होंने तपस्या करके ब्रह्माजीसे वरदान माँगा—'देवता अपने दिव्यलोकोंमें रहें और नाग पाताललोकमें। पृथ्वी मनुष्योंके लिये रहे।' ब्रह्माजीने 'एवमस्तु' कह दिया। फल यह हुआ कि शंकरजी तथा सब देवताओंको वाराणसी छोड़ देना पड़ा; किन्तु शंकरजीने यहाँ विश्वेश्वररूपसे निवास किया तथा दूसरे देवता भी श्रीविग्रहरूपमें स्थित हुए।

भगवान् शंकर काशी छोड़कर मन्दराचलपर चले तो गये, किन्तु उन्हें अपनी यह नित्यपुरी बहुत प्रिय थी। वे यहीं रहना चाहते थे। उन्होंने राजा दिवोदासको यहाँसे निकालने लिये चौंसठ योगिनियाँ भेजीं; किंतु राजाने उन्हें एक घाटपर स्थापित कर दिया। शंकरजीने सूर्यको भेजा; किंतु इस पुरीका वैभव देखकर वे लोल (चञ्चल) बन गये और अपने बारह रूपोंसे यहीं बस गये। शंकरजीकी प्रेरणासे ब्रह्माजी पधारे, उन्होंने दिवोदासकी सहायतासे यहाँ दस अश्वमेध यज्ञ किये और स्वयं भी बस गये। अन्तमें शंकरजीकी इच्छा पूर्ण करने भगवान् विष्णु यहाँ ब्राह्मणके रूपमें पधारे। उन्होंने दिवोदासको ज्ञानोपदेश किया। इससे वह पुण्यात्मा नरेश विरक्त हो गया। नरेशने स्वयं एक शिवलिङ्गकी स्थापना की। विमानमें बैठकर दिवोदास शंकरजीके धाम गये और

तब भगवान् शंकर मन्दराचलसे आकर काशीमें स्थित हुए। भगवान् शिवका यह क्रीड़ाक्षेत्र अविमुक्तक्षेत्र, आनन्दकानन आदि नामोंसे प्रसिद्ध है। काशीमें समस्त तीर्थ एवं सभी देवता निवास करते हैं। जब विश्वामित्रजीने राजा हरिश्चन्द्रसे समस्त राज्य दानमें ले लिया, तब राजा इसी काशीपुरीमें आये। यहीं उन्होंने अपनी पत्नी एक ब्राह्मणके घर दासी-कर्मके लिये बेची और स्वयं चाण्डालके हाथ बिककर ऋषिको दक्षिणा दी।

काशीके आस-पासके तीर्थ

काशीके समीपके तीर्थोंमें रामनगर, सारनाथ, चन्द्रावती, मार्कण्डेय, जमनिया, कौलेश्वरनाथ और विन्ध्याचल हैं।

रामनगर—यह नगर गङ्गाके दाहिने तटपर असि-संगमघाटसे एक मील और मालवीय-पुलसे चार मील दूर है। नगवासे नौकाद्वारा गङ्गा पार करके रामनगर लोग जाते हैं। मोटरद्वारा या ताँगेद्वारा जाना हो तो मालवीय-पुलको पार करके पक्की सड़क रामनगरतक जाती है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये अच्छी धर्मशाला है। यहाँ राजमहलसे एक मील दूर एक बड़ा तालाब और विशाल मन्दिर है। आश्विनमासभर यहाँ रामलीला होती है। राजमहलके एक भागमें वेदव्यासेश्वर तथा शुकदेवेश्वर लिङ्गमूर्तियाँ हैं।

सारनाथ—बनारस छावनी स्टेशनसे पाँच मील, बनारस-सिटी स्टेशनसे तीन मील और सड़कके मार्गसे सारनाथ चार मील पड़ता है। यह पूर्वोत्तर रेलवेका स्टेशन है और बनारससे यहाँ जानेके लिये सवारियाँ ताँगा-रिक्शा आदि मिलते हैं। सारनाथमें बौद्ध-धर्मशाला है। यह बौद्ध-तीर्थ है। भगवान् बुद्धने अपना प्रथम उपदेश यहीं दिया था। यहींसे उन्होंने धर्मचक्र-प्रवर्तन प्रारम्भ किया था।

सारनाथकी दर्शनीय वस्तुएँ हैं—अशोकका चतुर्मुख सिंहस्तम्भ, भगवान् बुद्धका मन्दिर है (यही यहाँका प्रधान मन्दिर है), धमेखस्तूप, चौखण्डीस्तूप, सारनाथका वस्तु-संग्रहालय, जैनमन्दिर, मूलगन्धकुटी और नवीन विहार।

सारनाथ बौद्ध-धर्मका प्रधान केन्द्र था; किन्तु मुहम्मद गोरीने आक्रमण करके इसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। वह यहाँकी स्वर्णमूर्तियाँ उठा ले गया और कलापूर्ण मूर्तियोंको उसने तोड़ डाला। फलतः सारनाथ उजाड़ हो गया। केवल धमेखस्तूप टूटी-फूटी दशामें बच रहा। यह स्थान चरागाहमात्र रह गया था। सन् १९०५ ई०में पुरातत्त्व-विभागने यहाँ खुदाईका काम प्रारम्भ किया। इतिहासके विद्वानों तथा बौद्ध-धर्मके अनुयायियोंका इधर ध्यान गया। तबसे सारनाथ महत्त्व प्राप्त करने लगा। इसका जीर्णोद्धार हुआ, यहाँ वस्तु-संग्रहालय स्थापित हुआ, नवीन विहार निर्मित हुआ, भगवान् बुद्धका मन्दिर और बौद्ध-धर्मशाला बनी। सारनाथ अब बराबर विस्तृत होता जा रहा है।

जैन-ग्रन्थोंमें इसे सिंहपुर कहा गया है। जैनधर्मावलम्बी इसे 'अतिशय क्षेत्र' मानते हैं। श्रेयांसनाथके यहाँ गर्भ, जन्म और तप—ये तीन कल्याणक हुए हैं। श्रेयांसनाथजीकी प्रतिमा है यहाँके जैन-मन्दिरमें। इस मन्दिरके सामने ही अशोक-स्तम्भ है।

चन्द्रावती—इसका प्राचीन नाम चन्द्रपुरी है। यह जैन-तीर्थ है। यहाँ चन्द्रप्रभु (जैनाचार्य) का जन्म हुआ था। यह अतिशय क्षेत्र माना जाता है। यहाँ गङ्गा-किनारे जैन-मन्दिर और जैन-धर्मशाला है। यह स्थान बनारससे १३ मील पड़ता है। यहाँके लिये पैदल आना हो तो पूर्वोत्तर रेलवेके कादीपुर स्टेशनपर उतरकर लगभग ४ मील चलना होगा।

पश्चिमवाहिनी गङ्गा—श्रीगङ्गाजीकी धारा पश्चिमवाहिनी अत्यन्त पुण्यरूप मानी जाती है। हरिद्वार, प्रयाग तथा गङ्गासागरके समान ही पश्चिमवाहिनी धाराका भी माहात्म्य है। प्रयागमें गङ्गाजी पश्चिमवाहिनी होकर यमुनाको अङ्कमाल देती हैं; किन्तु वहाँ पश्चिमवाहिनी धारा नाममात्रको है। गङ्गाजी काशीसे १५ मील आगे बलुआ नामक बाजारसे पश्चिमवाहिनी होती हैं और ४ मीलतक पश्चिमवाहिनी रहकर चन्द्रावतीमें उत्तरकी ओर मुड़ जाती हैं। मकरसंक्रान्तिपर बलुआघाटपर पश्चिमवाहिनी-स्नानका मेला लगता है।

विन्ध्याचल-क्षेत्र

विन्ध्यवासिनी-माहात्म्य

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ॥
नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी॥

(मार्कण्डेयपु० देवीमाहा० ११। ४२)

'देवताओ! वैवस्वत मन्वन्तरके अट्ठाईसवें युगमें शुम्भ और निशुम्भ नामके दो अन्य महादैत्य उत्पन्न होंगे। तब मैं नन्दगोपके घरमें उनकी पत्नी यशोदाके गर्भसे अवतीर्ण हो विन्ध्याचलमें जाकर रहूँगी और उक्त दोनों असुरोंका नाश करूँगी।'

शुम्भ-निशुभके हननकी कथा वामनपुराणके ५६वें अध्यायमें आती है। श्रीमद्देवीभागवतके दशमस्कन्धमें यह कथा आती है कि स्वायम्भुव मनुने क्षीरसमुद्रके तटपर देवीकी आराधना करते हुए घोर तपस्या की। सौ वर्ष जब इसी प्रकार बीत गये, तब भगवती उनके सामने प्रादुर्भूत हुईं और उन्होंने मनुजीसे वर माँगनेको कहा। मनुजीने उनकी बड़ी दिव्य स्तुति की और सारस्वत-मन्त्र जपनेवालेके लिये भोग-मोक्षकी सुलभता, जातिस्मरता, (जन्मान्तरज्ञान) वक्तृत्वसौष्ठव (सद्भाषण-कला) आदिका वर माँगा। भगवतीने 'एवमस्तु' कहकर उन्हें निष्कण्टक राज्यका भी वर दिया और वे विन्ध्याचलपर चली आयीं और विन्ध्यवासिनी कहलायीं—

पश्यतस्तु मनोरेव जगाम विन्ध्यपर्वतम्।
....
लोकेषु प्रथिता विन्ध्यवासिनीति च शौनक॥

इनका पूजन, दर्शन, चरित्रश्रवण, शत्रुनाशक, जयप्रद तथा ज्ञानवर्धक है। वे उपासकोंकी समस्त इच्छाओंको पूर्ण करती हैं। (देवीभा० १०। १—७)

मार्कण्डेय (गङ्गा-गोमती-सङ्गम)—बनारस छावनी स्टेशनसे ११ मीलपर पूर्वोत्तर रेलवेका स्टेशन है रजवाड़ी। इस स्टेशनसे लगभग तीन मीलपर गोमती नदी गङ्गाजीमें मिलती है। यह संगम-स्थान अत्यन्त पवित्र माना जाता है। यहाँ कैथी नामक बाजार है। संगमके पास मार्कण्डेयक्षेत्र है, यहाँ मार्कण्डेयेश्वर महादेवका मन्दिर है। शिवरात्रिको यहाँ मेला लगता है। कहा जाता है कि यह क्षेत्र मार्कण्डेयजीकी तपोभूमि है। यात्री मन्दिरमें ही ठहर सकते हैं।

कौलेश्वरनाथ (सकलडीहा)—पूर्वीरेलवेपर मुगलसरायसे १२ मीलपर सकलडीहा स्टेशन है। यहाँ स्टेशनके पास ही कौलेश्वरनाथ शिवका मन्दिर है। शिवरात्रिको यहाँ बड़ा मेला लगता है। स्टेशनके दूसरी ओर एक बड़ा सरोवर है, जिसके समीप एक शिव-मन्दिर और है। यात्री दोनों मन्दिरोंमें ठहर सकते हैं।

जमदग्नि-आश्रम (जमनियाँ)—पूर्वी रेलवेपर मुगलसरायसे २८ मील दूर जमनियाँ स्टेशन है। यहाँ बाजार है। कहा जाता है कि यहाँ गङ्गाकिनारे जमदग्नि ऋषिका आश्रम था। किसी समय यहाँ मदन नामक नरेशने यज्ञ किया था। जमनियाँसे दो मील दक्षिण-पूर्व शहापुर ग्राममें उनका बनवाया हुआ मदनेश्वर-शिवमन्दिर तथा एक स्तम्भ अब भी है।

चुनार—चुनारका प्राचीन नाम चरणाद्रि है। गङ्गाके दाहिने तटपर आधी मील लंबी तथा मीलभर चौड़ी पहाड़ी मनुष्यके चरणके आकारकी है। उत्तररेलवेपर मुगलसरायसे २० मील दूर चुनार स्टेशन है। कहा जाता है कि राजा बलिसे तीन पैर भूमिका दान लेकर भगवान् वामनने जब पृथ्वी नापना प्रारम्भ किया, तब उनका प्रथम चरण यहीं पड़ा था।

चरणाद्रि राजा भर्तृहरिकी तपोभूमि है। यहाँके दुर्गमें आदि-विक्रमादित्यका बनवाया हुआ भर्तृहरिका मन्दिर है, जिसमें उनकी समाधि है। गङ्गातटपर यह अत्यन्त मनोरम स्थान है। यहाँ गङ्गाजीमें जरगो नामक छोटी नदी मिलती है। स्टेशनसे थोड़ी दूरपर कामाक्षा देवीका मन्दिर है। यहाँपर गङ्गेश्वर महादेवकी प्राचीन मूर्ति है। इनके अतिरिक्त गङ्गातटपर अनेक मन्दिर हैं। जरगोके तटपर हनुमान्जीका सुन्दर मन्दिर है। इस मन्दिरसे दक्षिण-पूर्व आध मीलपर 'कूप मन्दिर' है। यहाँ दो पक्के सरोवर हैं। इस स्थानको गुप्त-वृन्दावन कहा जाता है। 'कूप-मन्दिर' वल्लभ-सम्प्रदायका मन्दिर है। यहाँ श्रीविट्ठलनाथजीकी गद्दी है। इनके अतिरिक्त दुर्गाखोह, भैरवजी, चक्रदेव आदि मन्दिर हैं। चुनार स्टेशनसे २ मील दक्षिण पर्वतपर दुर्गाकुण्ड है। वहाँ दुर्गाजीका

मन्दिर और झरना है।

मिर्जापुर—उत्तर रेलवेके अन्तर्गत मुगलसरायसे ४० मीलपर तथा चुनारसे २० मीलपर यह स्टेशन है। मिर्जापुर बड़ा नगर है। यहाँ स्टेशनके पास बींझराम भाणामलकी धर्मशाला है।

गङ्गाजीपर यहाँ २० घाट हैं। इन घाटोंपर अनेक मन्दिर हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध मन्दिर श्रीतारकेश्वरनाथ महादेवका है। इस नगरसे लगभग ६ मील दूर 'टाँडा' तथा 'विन्डहम' नामक प्रपात हैं। वर्षाके दिनोंमें इन प्रपातोंकी शोभा दर्शनीय होती है। वहाँ यात्रीके ठहरनेके लिये डाकबँगला है। मिर्जापुरसे १ मीलपर दो-तीन शिवमन्दिर हैं। उनसे थोड़ी दूरपर वामनभगवान्‌का मन्दिर है। यहाँ वामनद्वादशी (भाद्र शु०१२) को मेला लगता है। थोड़ी दूरपर दुग्धेश्वर नामका शिवमन्दिर है।

विन्ध्याचल

(लेखक—पं० श्रीनारायणदासजी चतुर्वेदी)

उत्तर रेलवेके अन्तर्गत मिर्जापुरसे केवल ४ मीलपर विन्ध्याचल स्टेशन है। मिर्जापुरसे पक्की सड़क भी यहाँ आती है। स्टेशनसे लगभग १ मील दूर गङ्गातटपर विन्ध्याचल-बाजार है। गङ्गातटसे विन्ध्यवासिनी देवीका मन्दिर केवल दो फर्लांग है। यात्रियोंको पंडे अपने घरोंमें ठहराते हैं। यहाँ चार धर्मशालाएँ हैं—१. शिवनारायण बलदेवदास सिंघानियाकी, २. सारस्वत खत्रियोंकी, ३. चुनमुन मिश्रकी, ४. सेठ गिरधारीलालकी।

विन्ध्याचलमें देवीके तीन मन्दिर मुख्य हैं—१. विन्ध्यवासिनी (कौशिकीदेवी), २. महाकाली, ३. अष्टभुजा। इन तीनोंके दर्शनकी यात्रा 'त्रिकोण-यात्रा' कही जाती है।

विन्ध्यवासिनी—यह मन्दिर बस्तीके मध्यमें ऊँचे स्थानपर है। मन्दिरमें सिंहपर खड़ी २॥ हाथकी देवीकी मूर्ति है। इन कौशिकी देवीको ही विन्ध्यवासिनी कहा जाता है। मन्दिरके पश्चिम एक आँगन है। इस आँगनके पश्चिम भागमें बारहभुजा देवी हैं, दूसरे मण्डपमें खर्परेश्वर शिव हैं तथा दक्षिण ओर महाकालीकी मूर्ति है। उत्तर ओर धर्मध्वजादेवी हैं। नवरात्रमें यहाँ मेला लगता है। मन्दिर-प्राङ्गणमें सैकड़ों ब्राह्मण बैठकर श्रीदुर्गासप्तशतीका पाठ करते हैं। देवीभागवतमें उल्लिखित १०८ शक्तिपीठोंमें विन्ध्यवासिनीकी गणना है।

श्रीविन्ध्यवासिनी-मन्दिरसे थोड़ी दूर विन्ध्येश्वर महादेवका मन्दिर है, उनके पास ही हनुमान्‌जीकी मूर्ति है। विन्ध्याचलके उत्तर गङ्गाके पार रेतमें एक छोटी चट्टानपर विन्ध्येश्वर शिवलिङ्ग है। गङ्गाजीमें बाढ़ आनेपर यह जलमग्न हो जाता है। पक्के घाटपर अन्नपूर्णाजीका मन्दिर है और पुलिस-थानेके पास बटुकभैरवजीका। यहाँसे कालीखोहके मार्गमें चुंगी-चौकीके पास वनखण्डी महादेवका मन्दिर है। रेलवे-स्टेशनके पास बँधवाके महावीरजी हैं।

महाकाली—वस्तुतः ये चामुण्डादेवी हैं। यह स्थान कालीखोह कहा जाता है और विन्ध्याचलसे दो मील दूर है। विन्ध्यवासिनी-मन्दिरसे थोड़ी दूरपर विन्ध्याचलकी श्रेणी प्रारम्भ हो जाती है। यहाँ पहाड़ीपर एक ओरसे चढ़कर दूसरी ओर उतरा जाता है। जाते समय पहले यह महाकाली-मन्दिर मिलता है। कालीखोह नामक स्थानमें यह मन्दिर है। देवीका शरीर छोटा है, किन्तु मुख विशाल है।

कालीखोहके पास ही भैरवजीका स्थान है। इसी स्थानसे सीढ़ियाँ प्रारम्भ होती हैं। १२५ सीढ़ी ऊपर गेरुआ तालाब मिलता है। इसका जल सदा गेरुए रंगका रहता है। यात्रीलोग उसमें अपने कपड़े रँग लेते हैं। यहाँ श्रीकृष्ण-मन्दिर है। उससे लगभग १०० सीढ़ियाँ उतरनेपर सीताकुण्ड तथा सीताजीके चरणचिह्न मिलते हैं। सीताकुण्डके पास ही एक झरना है, जिसके दूसरी ओर अष्टभुजा-मन्दिर है।

अष्टभुजा—कालीखोहसे अष्टभुजा मन्दिर लगभग १ मील है। इन अष्टभुजा देवीको कुछ लोग महासरस्वती भी कहते हैं। विन्ध्यवासिनीको लोग महालक्ष्मी मान लेते हैं और इस प्रकार 'त्रिकोणयात्रा' को महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वतीकी यात्रा कहते हैं। द्वापरके अन्तमें मथुरामें कंसके कारागारमें भगवान् श्रीकृष्णका प्रादुर्भाव हुआ था। भगवान्‌के ही आदेशसे वसुदेवजी शिशु श्रीकृष्णको यमुनापार गोकुलके नन्दभवनमें रख आये और नन्दपत्नी श्रीयशोदाजीकी नवजात कन्याको उठा लाये। कंस जब उस कन्याको पत्थरपर पटकने लगा, तब उसके हाथसे छूटकर कन्या आकाशमें चली गयी। वहाँ उसने अपना अष्टभुजरूप प्रकट किया। वे ही श्रीकृष्णानुजा यहाँ विन्ध्याचलमें अष्टभुजारूपसे विराजमान हैं।

अष्टभुजादेवीके मन्दिरके पास एक गुफामें कालीदेवीका दूसरा मन्दिर है। वहाँसे चलनेपर भैरवकुण्ड तथा भैरवनाथजीका मन्दिर मिलता है। पासमें मच्छन्दराकुण्ड है। पहाड़से उतरनेपर शीतलामन्दिर तथा एक बड़ा सरोवर मिलता है, जिसके पास हनुमान्‌जीका मन्दिर है। विन्ध्याचलतक आनेमें रामेश्वरमन्दिर मिलता है; उसके उत्तर गङ्गातटपर रामगया स्थान है, जहाँ श्राद्ध किया जाता है। अष्टभुजासे आध मील आगे जंगलमें मङ्गलादेवीका मन्दिर है। कहा जाता है कि इनकी स्थापना भगवान् रामने की थी।

पौराणिक कथा—श्रीदुर्गासप्तशतीमें कथा है कि शुम्भ-निशुम्भ नामक दैत्योंसे पीड़ित देवता देवीकी प्रार्थना कर रहे थे। पार्वतीजी उधरसे निकलीं और उन्होंने पूछा—'आपलोग किसकी स्तुति कर रहे हैं?' उसी समय पार्वतीके शरीरमेंसे एक तेजोमयी देवी प्रकट हुईं। वे बोलीं—'ये लोग मेरी स्तुति कर रहे हैं।' पार्वतीके शरीरकोशसे निकलनेके कारण वे कौशिकी कही गयीं। उन्होंने ही शुम्भ और निशुम्भको मारा। उनके प्रकट होनेके पश्चात् पार्वतीका शरीर काला पड़ गया—वे काली कहलाने लगीं।

शुम्भ-निशुम्भके युद्धमें जब देवी क्रुद्ध हुईं, तब उनके ललाटसे भयानक मुखवाली चामुण्डादेवी प्रकट हुईं। उन्होंने शुम्भ-निशुम्भके सेनापति चण्ड-मुण्डको मार दिया और रक्त-बीज नामक असुरका रक्त भी पी गयीं। इस क्षेत्रमें कौशिकीदेवी विन्ध्यवासिनी कही जाती हैं और चामुण्डादेवी कालीरूपमें कालीखोहमें स्थित हैं।

विन्ध्याचलके समीपवर्ती तीर्थ

लालभट्टकी बावली—कालीखोहके पाससे यहाँ मार्ग जाता है। विन्ध्याचलसे यह ३ मील दूर है। एक बावली और एक कुटिया है।

सप्तसागर—लालभट्टकी बावलीसे ३ मील दक्षिण जंगलमें यह स्थान है। पास-पास सात छोटे सरोवर हैं। यहाँ गणेशजीका मन्दिर है। आश्विन कृ० ४ को मेला लगता है।

लोंहदी-महावीर—विन्ध्याचलसे ५ मील, मिर्जापुरसे १ मील दूर यह हनुमान्‌जीका मन्दिर है। कार्तिकपूर्णिमाको मेला लगता है।

यज्ञेश्वरनाथ

(लेखक—पं० श्रीबलरामजी शास्त्री, एम्० ए०, शास्त्राचार्य, साहित्यरत्न)

वाराणसी (काशी) से मोटर-बस चकिया जाती है। चकियासे ५ मील दक्षिण-पश्चिम पर्वतीय प्रदेशमें यज्ञेश्वरनाथ महादेवका मन्दिर है। मन्दिरके पास ही चन्द्रप्रभा नदी बहती है। आसपास केवड़ेका वन है। महाशिवरात्रिपर मेला लगता है।

दक्ष-यज्ञ-कुण्ड—आजमगढ़ जिलेकी सगड़ी तहसीलके महाराजगंज बाजारमें एक बृहत् सरोवर है। कहा जाता है कि प्राचीन कालमें प्रजापति दक्षने जो यज्ञ किया था, उसीका यह यज्ञकुण्ड है। इसमें स्नान करना पवित्र माना जाता है। इसलिये गङ्गादशहरा तथा दूसरे स्नान-पर्वोंपर यहाँ भीड़ होती है।

देवलास—इस स्थानका प्राचीन नाम देवलार्क है। आजमगढ़ जिलेमें मऊ-शाहगंज रेलवे-लाइनपर मुहम्मदाबाद स्टेशनसे यह स्थान ४ मील दूर है। यह तीर्थ तमसा नदीके उत्तरतटपर है।

यहाँ एक प्राचीन सूर्यमन्दिर है। यह मन्दिर विशाल है। मन्दिरमें भगवान् सूर्यकी संगमरमरकी मूर्ति विद्यमान है। कहा जाता है कि देवल ऋषिके द्वारा इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई थी। वर्तमान मूर्ति पीछे स्थापित की गयी थी। पहले यहाँ भगवान् सूर्यकी स्वर्णमूर्ति थी, जो विधर्मी-शासनकालमें उठा ली गयी। मन्दिरके समीप एक धनुषाकार सरोवर है। भाद्रशुक्ला षष्ठीको यहाँ मेला लगता है। मन्दिरके आसपास प्राचीन दुर्गके ध्वस्तांश हैं।

संत घनश्यामकी समाधि—मुहम्मदाबाद स्टेशनसे ४ मील दक्षिण गुरादरी गाँवमें यह समाधि है। उन्नीसवीं शताब्दीमें ये अत्यन्त प्रख्यात संत हुए हैं। यहाँ एक पक्का सरोवर है। कहा जाता है कि यह इन्हीं संतकी सिद्धिसे ज्येष्ठमें जलपूर्ण हो गया था। सरोवरके पास संत घनश्यामजी तथा उनकी माताके समाधि-मन्दिर हैं। रामनवमी तथा चैत्रपूर्णिमापर यहाँ मेला लगता है।

दुर्वासाधाम—मऊ-शाहगंज रेलवे-लाइनपर खुरासो

रोड स्टेशनसे ३ मील दक्षिण यह स्थान है। कहा जाता है कि यहाँ महर्षि दुर्वासाजीने तपस्या की थी। यहाँपर दुर्वासाजीका एक बड़ा मन्दिर है। यह मन्दिर गोमती नदीके किनारे है। कार्तिकपूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है।

इस स्थानके पास ही लोहरागाँवमें संत गोविन्द-दासजीकी समाधि है। मार्गशीर्षशुक्ला दशमीको यहाँ विशेष महोत्सव होता है। उस समय यहाँ आजमगढ़से बसें जाती हैं।

बलिया जिलेके कुछ तीर्थ

(लेखक—श्रीरामप्रसादजी)

मिल्की—यहाँ स्वामी महाराज बाबाकी समाधि है। द्वाबामें यह स्थान प्रसिद्ध है। समाधिके उत्तर एक नाला है, जिसपर पक्का घाट है। लोग वहीं स्नान करते हैं। समाधिके पास एक 'गलायची' का वृक्ष है। उसकी लोग पूजा करते हैं। यहाँ एक कुआँ है, जिसमें समस्त तीर्थोंका जल छोड़ा हुआ है। समाधिके पास धुनी है, जिसमें दो सौ वर्षसे अग्नि जल रही है। द्वाबाक्षेत्रमें श्रीस्वामीजी महाराजके शिष्योंकी समाधियाँ विभिन्न स्थानोंपर हैं।

जमालपुर चकिया—यहाँ भगवान् शङ्करका प्राचीन मन्दिर है। यह भी द्वाबामें है। शिवरात्रिपर मेला लगता है।

लक्ष्मीपुर वैरिया—द्वाबेके इस गाँवमें भी प्राचीन शिवमन्दिर है। शिवरात्रिपर मेला लगता है।

मिश्रकी मठिया—सुरेमनपुर स्टेशनसे ५ मील दक्षिण है। यहाँ देवीका प्रख्यात मन्दिर है। यहाँ चैत्र शुक्ला ९ को मेला लगता है।

मैरीतार—यहाँ हनुमान्‌जीका प्रसिद्ध मन्दिर है।

मनियर

बलिया जिलेमें सरयू-तटपर मनियर स्थान है। यहाँ देवीका मन्दिर है। इस मन्दिरमें आद्याशक्तिकी बड़ी भव्य स्वर्णमूर्ति है। कमलपर विराजमान देवीकी चतुर्भुज मूर्ति है, जिनके हाथोंमें शूल, अमृतकलश, खप्पर और अभयमुद्रा है।

कहा जाता है कि यहीं समीपमें मेधस् मुनिका आश्रम था। दुर्गासप्तशतीमें यह कथा है कि राजा सुरथ और समाधि वैश्यने महर्षि मेधस्‌के उपदेशसे देवीकी मृत्तिका-मूर्ति बनाकर आराधना की थी। सरयू-तटपर यहाँ राजा सुरथकी आराध्य मृत्तिका-मूर्ति है। जब आराधनासे प्रसन्न होकर देवीने सुरथ राजाको दर्शन दिया, तब राजाने देवीसे प्रार्थना की कि वे इस स्थानमें नित्य स्थित हों। इस प्रार्थनासे देवीकी स्वर्णमूर्ति वहाँ प्रकट हुई।

लोधेश्वर

(लेखक—पं० श्रीलक्ष्मीनारायणजी त्रिवेदी)

बाराबंकी जिलेमें पूर्वोत्तर रेलवेके बुढ़वल स्टेशनसे लगभग ३ मील उत्तर यह स्थान है। बाराबंकीसे मोटरमार्ग भी है। यहाँ लोधेश्वर महादेवका मन्दिर है। कहा जाता है कि महाराज युधिष्ठिरने इस विग्रहकी स्थापना की थी। शिवरात्रिको यहाँ मेला लगता है।

कोटवाधाम

पूर्वोत्तर रेलवेकी लखनऊ-फैजाबाद लाइनपर सैदखानपुर स्टेशन है। वहाँसे कोटवाधाम ६ मीलपर है। संत जगजीवन साहब यहींके थे। सप्तनामी सम्प्रदायके वे आचार्य हैं, इसलिये कोटवाधाम सतनामी सम्प्रदायका मुख्य तीर्थ बन गया है।

कित्तूर

(लेखक—श्रीभैया मुनेश्वरबक्सजी)

बाराबंकी जिलेमें यह स्थान है। इसका प्राचीन नाम कुन्तीनगर है। प्रथम वनवासमें माता कुन्तीके साथ पाण्डव यहाँ आये थे। भगवान् श्रीकृष्णके परमधाम चले जानेपर द्वारिकासे पारिजात वृक्ष लाकर अर्जुनने यहीं लगाया था। वह वृक्ष अब भी यहाँ है।

रामनगरसे दरियाबाद जानेवाली सड़कपर कित्तूर गाँव है। उसके पास सड़कसे दो फर्लांगपर यह वृक्ष है। पूर्वोत्तर रेलवेके बुढ़वल स्टेशनसे यह स्थान ७ मील पड़ता है।

श्रीअयोध्या

अयोध्या-माहात्म्य

जद्यपि सब बैंकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जगु जाना॥
अवध सरिस प्रिय मोहि न सोऊ। यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ॥
अवध प्रभाव जान तब प्रानी। जब उर बसहिं राम धनु पानी॥
कवनिउँ जनम अवध बस जोई। राम परायन सो परि होई॥

यह पुरी भगवान्‌के वामपादाङ्गुष्ठसे उद्‌भूता पवित्र सरिता सरयूके दक्षिण तटपर बसी है। मनुने इस पुरीको सर्वप्रथम बसाया था—

'मनुना मानवेन्द्रेण सा पुरी निर्मिता स्वयम्।'

(वाल्मी० बाल० ५। ६ तथा रुद्रयामलतन्त्र)

'स्कन्दपुराण' के अनुसार यह सुदर्शनचक्रपर बसी है। 'भूतशुद्धितत्त्व' के अनुसार यह श्रीरामभद्रके धनुषाग्रपर स्थित है—'**श्रीरामधनुषाग्रस्था अयोध्या सा महापुरी।**' 'अयोध्या' शब्दका निर्वचन करता हुआ स्कन्दपुराण कहता है—''अ'कार ब्रह्मा है, 'य'कार विष्णु है तथा 'ध'कार रुद्रका स्वरूप है। अतएव 'अयोध्या' ब्रह्मा, श्रीविष्णु तथा भगवान् शंकर-इन तीनोंका समन्वित रूप है। समस्त उपपातकोंके साथ ब्रह्महत्यादि महापातक भी इससे युद्ध नहीं कर सकते, इसलिये इसे अयोध्या कहते हैं*।''

इसका मान सहस्त्रधारातीर्थसे एक योजन पूर्व, सरयूसे एक योजन दक्षिण, समसे एक योजन पश्चिम तथा तमसा नदीसे एक योजन उत्तरतक है। (स्कन्दपुराण-वैष्णवखण्ड अयो० माहा० १। ६४-६५)। पहले ब्रह्माजीने अयोध्याकी यात्रा की थी और अपने नामसे एक कुण्ड बनाया था, जो ब्रह्मकुण्ड नामसे विख्यात है। भगवती सीताद्वारा निर्मित एक सीताकुण्ड है, जिसे भगवान् श्रीरामने वर देकर समस्त-कामपूरक बनाया। उसमें स्नान करनेसे मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो जाता है। ब्रह्मकुण्डसे पूर्वोत्तर ऋणमोचनतीर्थ (सरयूमें) है। यहाँ लोमशजीने विधिपूर्वक स्नान किया था। सहस्त्रधारासे पूर्व ६३६ धनुष (१२७२ गज) तक 'स्वर्गद्वार' कहलाता है। यहाँ जो जप, तप, हवन, दर्शन, दान, ध्यान, अध्ययन आदि किया जाता है, वह सब अक्षय होता है—

सहस्त्रधारामारभ्य पूर्वतः सरयूजले।
षट्त्रिंशदधिका प्रोक्ता धनुषां षट्शती मितिः॥
स्वर्गद्वारस्य विस्तारः पुराणज्ञैर्विशारदैः।
स्वर्गद्वारे परा सिद्धिः स्वर्गद्वारे परा गतिः॥
जप्तं दत्तं हुतं दृष्टं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
ध्यानमध्ययनं सर्वं दानं भवति चाक्षयम्॥

(स्क० वै० अयो० ३। ६, ७, १४)

यहाँ चन्द्रहरि, गुप्तहरि, चक्रहरि, सम्मेद आदि अन्य कई तीर्थ हैं। जहाँ समस्त अवधवासियोंके साथ भगवान् साकेतलोकमें—वैष्णवतेजमें प्रविष्ट हुए थे, वह पुण्यसलिला सरयूमें स्थित गोप्रतार-तीर्थ है। यह अयोध्यासे पश्चिम है। वहाँ जो स्नान करता है, वह निश्चय ही योगिदुर्लभ श्रीरामधामको प्राप्त होता है—

गोप्रतारे नरो विद्वान् योऽपि स्नापि सुनिश्चितः।
विशत्यसौ परं स्थानं योगिनामपि दुर्लभम्॥

(६। १७८)

---

*अकारो ब्रह्म च प्रोक्तं यकारो विष्णुरुच्यते। धकारो रुद्ररूपश्च अयोध्यानाम राजते।
सर्वोपपातकैर्युक्तैर्ब्रह्महत्यादिपातकैः। न योध्या शक्यते यस्मात्तामयोध्यां ततो विदुः॥

(स्क० वैष्ण० अयो० १। ६०-६१)

सबको तारनेवाला होनेसे ही यह गोप्रतारक कहलाया। साक्षात् तीर्थराज प्रयाग भी यहाँ सब पापोंको धोनेके लिये कार्तिक मासमें स्नान करने आते हैं—

यत्र प्रयागराजोऽपि स्नातुमायाति कार्तिके।
शुद्ध्यर्थं साधुकामोऽसौ प्रयागो मुनिसत्तम॥

(६।१८२)

सरयूमें जहाँ श्रीकृष्णकी पटरानी रुक्मिणीजीने स्नान किया था, वहाँ रुक्मिणीकुण्ड है। उससे ईशानकोणमें बृहस्पतिकुण्ड है तथा उसके ईशानकोणमें क्षीरोदककुण्ड है, जहाँ महाराज दशरथने पुत्रेष्टियज्ञ किया था; उससे पश्चिमोत्तरमें वसिष्ठकुण्ड है। अन्य भी उर्वशीकुण्ड आदि कई तीर्थ स्कन्दपुराण तथा रुद्रयामलोक्त अयोध्या-माहात्म्यमें वर्णित हैं। कालक्रमसे इनमें कुछ लुप्त तथा परिवर्तित भी पाये जाते हैं।

अयोध्या

सप्तपुरियोंमें प्रथम पुरी अध्योध्या है। मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामके भी पूर्ववर्ती सूर्यवंशी राजाओंकी यह राजधानी रही है। इक्ष्वाकुसे श्रीरघुनाथजीतक सभी चक्रवर्ती नरेशोंने अयोध्याके सिंहासनको भूषित किया है। भगवान् श्रीरामकी अवतार-भूमि होकर तो अयोध्या साकेत हो गयी। किंच मर्यादापुरुषोत्तमके साथ अयोध्याके कीट-पतङ्गतक उनके दिव्यधाममें चले गये, इससे पहली बार त्रेतामें ही अयोध्या उजड़ गयी। श्रीरामके पुत्र कुशने इसे फिर बसाया।

अयोध्याका प्राचीन इतिहास बतलाता है कि वर्तमान अयोध्या महाराज विक्रमादित्यकी बसायी है। महाराज विक्रमादित्य देशाटन करते हुए संयोगवश यहाँ सरयूकिनारे पहुँचे थे और यहाँ उनकी सेनाने शिविर डाला था। उस समय यहाँ वन था। कोई प्राचीन तीर्थ-चिह्न यहाँ नहीं था। महाराज विक्रमादित्यको इस भूमिमें कुछ चमत्कार दीख पड़ा। उन्होंने खोज प्रारम्भ की और पासके योगसिद्ध संतोंकी कृपासे उन्हें ज्ञात हुआ कि यह श्रीअवधकी भूमि है। उन संतोंके निर्देशसे महाराजने यहाँ भगवल्लीलास्थलीको जानकर वहाँ मन्दिर, सरोवर, कूप आदि बनवाये।

मथुराके समान अयोध्या भी आक्रमणकारियोंका बार-बार आखेट होती रही है। बार-बार आततायियोंने इस पावन पुरीको ध्वस्त किया। इस प्रकार अब अयोध्यामें प्राचीनताके नामपर केवल भूमि और सरयूजी बच रही हैं। अवश्य ही भगवल्लीला-स्थलीके स्थान वे ही हैं।

मार्ग

अयोध्या लखनऊसे ८४ मील और काशीसे १२० मील है। यह नगर सरयू (घाघरा) के दक्षिण तटपर बसा है। उत्तर भारत रेलवेपर अयोध्या स्टेशन है। मुगलसराय, बनारस, लखनऊसे यहाँ सीधी गाड़ियाँ आती हैं। स्टेशनसे सरयूजी लगभग ३ मील दूर हैं और मुख्य मन्दिर कनकभवन लगभग १॥ मील दूर है। पूर्वोत्तर रेलवेद्वारा गोरखपुरकी दिशासे आनेपर मनकापुर स्टेशनपर गाड़ी बदलकर लक्कड़मंडी स्टेशन आना पड़ता है। लक्कड़मंडी सरयूजीके उस पार है। वर्षामें सरयूपर स्टीमर चलता है और अन्य ऋतुओंमें पीपोंका पुल रहता है। सरयूपार होकर अयोध्या आया जा सकता है।

बनारस, लखनऊ, प्रयाग, गोरखपुर आदि नगरोंसे अयोध्या पक्की सड़कोंसे सम्बन्धित है।

ठहरनेके स्थान

अयोध्यामें यात्री साधुओंके मठोंमें भी ठहरते हैं। प्रायः सभी साधु-स्थानोंमें यात्रियोंके ठहरनेकी व्यवस्था है और अयोध्या तो साधुओंका नगर है। नगरमें अनेकों धर्मशालाएँ हैं। कुछके नाम नीचे दिये जा रहे हैं—

१-हरनारायणकी, रायगंज; २-कन्हैयालालकी, रायगंज; ३-महंत सुखरामदासकी नयाघाट; ४-लाला पन्नालाल गोंडेवालेकी, वासुदेवघाट; ५-करमसीदास बम्बईवालेकी स्वर्गद्वारघाट; ६-छंगामल कानपुरवालेकी, रायगंज; ७-रूसीवाली रानीकी, रायगंज; ८-डिप्टी महादेवप्रसादकी, रायगंज; ९-हरिसिंहकी, बाजारमें; १०-बिन्दुवासिनीकी, नागेश्वरनाथके पास।

दर्शनीय स्थान

अयोध्यामें सरयू-किनारे कई सुन्दर पक्के घाट बने हुए हैं। किन्तु सरयूजीकी धारा अब घाटोंसे दूर चली गयी है। पश्चिमसे पूरब चलें तो घाटोंका यह क्रम मिलेगा—ऋणमोचनघाट, सहस्रधारा, लक्ष्मणघाट, स्वर्गद्वार, गङ्गामहल, शिवालाघाट, जटाईघाट, अहल्याबाईघाट, धौरहराघाट, रूपकलाघाट, नयाघाट, जानकीघाट और रामघाट।

लक्ष्मणघाट—यहाँके मन्दिरमें लक्ष्मणजीकी ५ फुट ऊँची मूर्ति है। यह मूर्ति सामने कुण्डमें पायी गयी थी। कहा जाता है कि यहींसे श्रीलक्ष्मणजी

परमधाम पधारे थे।

स्वर्गद्वार—इस घाटके पास श्रीनागेश्वरनाथ महादेवका मन्दिर है। कहते हैं कि यह मूर्ति कुशद्वारा स्थापित की हुई है और इसी मन्दिरको पाकर महाराज विक्रमादित्यने अयोध्याका जीर्णोद्धार किया। नागेश्वरनाथके पास ही एक गलीमें श्रीरामचन्द्रजीका मन्दिर है। एक ही काले पत्थरमें श्रीरामपञ्चायतनकी मूर्तियाँ हैं। बाबरने जब जन्मस्थानके मन्दिरको तोड़ा, तब पुजारियोंने वहाँसे यह मूर्ति उठाकर यहाँ स्थापित कर दी। स्वर्गद्वारघाटपर ही यात्री पिण्डदान करते हैं।

अहल्याबाईघाट—इस घाटसे थोड़ी दूरपर त्रेतानाथजीका मन्दिर है। कहते हैं कि भगवान् श्रीरामने यहाँ यज्ञ किया था। इसमें श्रीराम-जानकीकी मूर्ति है।

नयाघाट—इस घाटके पास तुलसीदासजीका मन्दिर है। इससे दो फर्लांगपर महात्मा मनीरामका आश्रम (मनीरामकी छावनी) है।

रामकोट—अयोध्यामें अब रामकोट (श्रीरामका दुर्ग) नामक कोई स्थान रहा नहीं है। कभी यह दुर्ग था और बहुत विस्तृत था। कहा जाता है कि उसमें २० द्वार थे; किंतु अब तो चार स्थान ही उसके अवशेष माने जाते हैं—हनुमानगढ़ी, सुग्रीवटीला, अङ्गदटीला, मत्तगजेन्द्र (माँगगेंड)।

हनुमानगढ़ी—यह स्थान सरयूतटसे लगभग १ मीलपर नगरमें है। यह एक ऊँचे टीलेपर चार कोटका छोटा-सा दुर्ग है। ६० सीढ़ी चढ़नेपर श्रीहनुमान्‌जीका मन्दिर मिलता है। इस मन्दिरमें हनुमान्‌जीकी बैठी मूर्ति है। एक दूसरी हनुमान्‌जीकी ६ इंचकी मूर्ति वहाँ है, जो सदा पुष्पोंसे आच्छादित रहती है। मन्दिरके चारों ओर मकान हैं, जिसमें साधु रहते हैं।

हनुमानगढ़ीके दक्षिणमें सुग्रीवटीला और अङ्गदटीला हैं। कुछ लोग सुग्रीवटीलेका स्थान मणिपर्वतके दक्षिण-पश्चिम, जहाँ बौद्धमठ था, बतलाते हैं।

कनकभवन—अयोध्याका यही मुख्य मन्दिर है, जो ओड़छा-नरेशका बनवाया हुआ है। यह सबसे विशाल एवं भव्य है। इसे श्रीरामका अन्तःपुर या सीताजीका महल कहते हैं। इसमें मुख्य मूर्तियाँ श्रीसीता-रामकी हैं। सिंहासनपर जो बड़ी मूर्तियाँ है, उनके आगे श्रीसीता-रामकी छोटी मूर्तियाँ हैं। छोटी मूर्तियाँ ही प्राचीन कही जाती हैं।

दर्शनेश्वर—हनुमानगढ़ीसे थोड़ी दूरपर अयोध्यानरेशका महल है। इस महलकी वाटिकामें दर्शनेश्वर महादेवका सुन्दर मन्दिर है।

जन्मस्थान—कनकभवनसे आगे श्रीराम-जन्मभूमि है। यहाँके प्राचीन मन्दिरको बाबरने तुड़वाकर मसजिद बना दिया था; किंतु अब वहाँ फिर श्रीरामकी मूर्ति आसीन है। उस प्राचीन मन्दिरके घेरेमें जन्मभूमिका एक छोटा मन्दिर और है।

जन्मस्थानके पास कई मन्दिर हैं—सीतारसोई, चौबीस अवतार, कोपभवन, रत्नसिंहासन, आनन्दभवन, रङ्गमहल, साखी गोपाल आदि।

तुलसीचौरा—राममहलके दक्षिण खुले मैदानमें तुलसी-चौरा है। यह वह स्थान है, जहाँ गोस्वामी तुलसीदासजीने श्रीरामचरितमानसकी रचना प्रारम्भ की थी।

मणिपर्वत—तुलसीचौरासे लगभग १ मील दूर, अयोध्या-स्टेशनके पास वनमें एक टीला है। टीलेके ऊपर मन्दिर है। यहींपर अशोकके २०० फुट ऊँचे एक स्तूपका अवशेष है।

दतूनकुण्ड—यह स्थान मणिपर्वतके पास ही है। वैष्णव कहते हैं कि श्रीरघुनाथजी यहाँ दातौन करते थे। कुछ लोगोंका कहना है कि गौतम बुद्ध जब अयोध्यामें रहते थे, तब उन्होंने एक दिन यहाँ अपनी दातौन गाड़ दी। वह सात फुट ऊँचा वृक्ष हो गयी। कई विदेशी यात्रियोंने उसे देखा है, जिनमें फाहियान मुख्य है। वह वृक्ष अब नहीं है, उसका स्मारक है।

अयोध्यामें बहुत अधिक मन्दिर हैं। यहाँ केवल प्राचीन स्थानोंका उल्लेख किया गया है। नवीन मन्दिर तथा संतोंके स्थान तो अयोध्यामें बहुत अधिक हैं।

आसपासके तीर्थ

सोनखर—कहा जाता है कि यहाँ महाराज रघुका कोषागार था। कुबेरने यहीं स्वर्णवर्षा की थी।

सूर्यकुण्ड—रामघाटसे यह ५ मील दूर है। पक्की सड़कका मार्ग है। बड़ा सरोवर है, जिसके चारों ओर घाट बने हैं। पश्चिम किनारेपर सूर्यनारायणका मन्दिर है।

गुप्तारघाट—(गोप्रतार-तीर्थ) अयोध्यासे ९ मील पश्चिम सरयू-किनारे यह स्थान है। फैजाबाद छावनी होकर सड़क जाती है। यहाँ सरयूस्नानका बहुत माहात्म्य

माना जाता है। घाटके पास गुप्तहरिका मन्दिर है।

गुप्तारघाटसे १ मीलपर निर्मलीकुण्ड है। उसके पास निर्मलनाथ महादेवका मन्दिर है।

जनौरा (जनकौरा)—महाराज जनक जब अयोध्या पधारते थे, तब यहीं उनका शिविर रहता था। अयोध्यासे सात मील दूर फैजाबाद-सुलतानपुर सड़कपर यह स्थान है। यहाँ गिरिजाकुण्ड नामक सरोवर है, जिसके पास एक शिव-मन्दिर है।

नन्दिग्राम—फैजाबादसे १० मील और अयोध्यासे १६ मील दक्षिण यह स्थान है, जहाँ श्रीराम-वनवासके समय १४ वर्ष भरतजीने तपस्या करते हुए व्यतीत किये थे। यहाँ भरतकुण्ड सरोवर और भरतजीका मन्दिर है।

दशरथतीर्थ—रामघाटसे ८ मील पूर्व सरयूतटपर वह स्थान है, जहाँ महाराज दशरथका अन्तिम संस्कार हुआ था।

छपैया—अयोध्यासे सरयूपार ६ मील दूर छपैया गाँव है। स्वामिनारायण-सम्प्रदायके प्रवर्तक स्वामी सहजानन्दजीकी यह जन्मभूमि है। छपैया स्टेशन है पूर्वोत्तर रेलवेका।

परिक्रमा

अयोध्याकी दो परिक्रमाएँ हैं। बड़ी परिक्रमा स्वर्गद्वारसे प्रारम्भ होती है। वहाँसे सरयू-किनारे सात मील जाकर और फिर मुड़कर शाहनवाजपुर, मुकारसनगर होते हुए दर्शननगरमें सूर्यकुण्डपर पहला विश्राम किया जाता है। वहाँसे पश्चिम कोसाहा, मिर्जापुर, बीकापुर ग्रामोंमें होते जनौरा पहुँचनेपर दूसरा विश्राम होता है। जनौरासे खोजमपुर, निर्मलीकुण्ड, गुप्तारघाट होते स्वर्गद्वार पहुँचनेपर परिक्रमा पूरी हो जाती है।

अयोध्याकी छोटी (अन्तर्वेदी) परिक्रमा केवल ६ मीलकी है। यह रामघाटसे प्रारम्भ होती है तथा बाबा रघुनाथदासकी गद्दी, सीताकुण्ड, अग्निकुण्ड, विद्याकुण्ड, मणिपर्वत, कुबेरपर्वत, सुग्रीवपर्वत, लक्ष्मणघाट, स्वर्गद्वार होते हुए रामघाट आकर पूर्ण होती है।

मेले—अयोध्यामें श्रीरामनवमीपर सबसे बड़ा मेला होता है। दूसरा मेला ८-९ दिनतक श्रावण-शुक्लपक्षमें झूलेका होता है। कार्तिक-पूर्णिमापर भी सरयूस्नान करने यात्री आते हैं।

वाराहक्षेत्र

(लेखक—वेदान्तभूषण पं० श्रीरामकुमारदासजी रामायणी, साहित्यरत्न)

अयोध्यासे २४ मील पश्चिम सरयू और घाघरा नदियोंका संगम है। यह संगम-क्षेत्र ही पवित्र वाराहक्षेत्र है। यहाँ भगवान् वाराहका प्राचीन मन्दिर है, जो अब जीर्णदशामें है। पौषमासमें धनके सूर्य होनेपर लोग यहाँ कल्पवास करते हैं। श्रीअयोध्यावासकी ८४ कोसकी परिक्रमा जो २२ दिनमें पूर्ण होती है, उसमें यहाँ भी एक रात्रि-विश्राम होता है। यह स्थान गोंडा जिलेमें है। मूल गोसाईंचरितमें बाबा वेणीमाधवदासजीने लिखा है कि इसी क्षेत्रमें गोस्वामी तुलसीदासजीने अपने गुरुदेवसे बचपनमें श्रीरामचरितमानस सुना था—

कहत कथा इतिहास बहु, आए सूकर खेत।
संगम सरजू घाघरा, संत जनन सुख देत॥

(मू० गो० च० दोहा १०)

सरयूकी बाढ़के कारण यहाँका स्थान कई बार विनष्ट हुआ और कई बार उसका जीर्णोद्धार हुआ है।

बौद्धतीर्थ

अयोध्याको बौद्धग्रन्थोंमें 'साकेत' कहा गया है। गौतम-बुद्ध वर्षामें यहाँ प्रायः रहते थे। मणिपर्वतके दक्षिण-पश्चिम एक बौद्ध मठ था भी। इस मठसे आगे वह स्तूप था, जिसमें बुद्धके नख और केश रखे थे।

जैनतीर्थ

अयोध्या सूर्यवंशी नरेशोंकी प्राचीनतम राजधानी है। अतः जैनोंके प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ भगवान् ऋषभ-देवजीकी यह जन्मभूमि है। उनके गर्भ एवं जन्म कल्याणक यहीं हुए थे। द्वितीय तीर्थङ्कर अजितनाथ, चतुर्थ तीर्थङ्कर अभिनन्दननाथ, पाँचवें तीर्थङ्कर सुमतिनाथ और चौदहवें तीर्थङ्कर अनन्तनाथजीका जन्म भी यहीं हुआ था।

यहाँ कटरा मुहल्लेमें एक जैन-धर्मशाला है। निम्नलिखित स्थानोंपर पाँच जैनमन्दिर भी हैं—

१-आदिनाथ—स्वर्गद्वारके पास मुराई टीलेमें एक टीलेपर।

२-अजितनाथ—इटौवा (सप्तसागर) के पश्चिम इसमें शिलालेख है।

३-अभिनन्दननाथ—सरायके पास।

४-सुमतिनाथ—रामकोटमें। इसमें पार्श्वनाथ तथा नेमिनाथकी मूर्तियाँ हैं।

५-अनन्तनाथ—गोलाघाटके नालेके पास ऊँचे टीलेपर। मन्दिरोंमें जैन तीर्थङ्करोंके चरण-चिह्न बने हैं।

जमदग्निकुण्ड-जमैथा

(लेखक—पं० श्रीसूर्यमोहनजी शुक्ल)

जमैथा ग्राम गोंडा जिलेमें है। यह अयोध्यासे १६ मील दूर है। यहाँ जमदग्निकुण्ड नामक प्राचीन सरोवर है, जिसका जीर्णोद्धार किया गया है। सरोवरके पास एक शिव-मन्दिर तथा एक देवी-मन्दिर है। पासमें एक धर्मशाला है। यहाँ यमद्वितीयाको मेला लगता है।

कहा जाता है कि यहाँ महर्षि जमदग्निका आश्रम था। यहाँसे १२ मील पश्चिम वाराहक्षेत्र है। यहाँसे ५ मील दूर सरयूतटपर परास ग्राम है। वहाँ पराशरऋषिका आश्रम था।

बलरामपुर

पूर्वोत्तर रेलवेकी गोरखपुर-गोंडा लाइनपर बलरामपुर स्टेशन है। बलरामपुरमें बिजलेश्वरी देवीका मन्दिर है। यह मन्दिर इस ओर बहुत प्रतिष्ठित है।

इसी प्रकार गोंडा जिलेमें महादेवा बालेश्वरनाथ, मछली-गाँवमें कर्णनाथ और खड़गपुरमें पचरनाथ तथा पृथ्वीनाथके मन्दिर हैं। इन स्थानोंमें भी स्थानीय मेले लगते हैं।

देवीपाटन

मार्ग—पूर्वोत्तर रेलवेकी गोरखपुर-गोंडा लाइनपर बलरामपुर स्टेशन है। बलरामपुरसे १४ मील उत्तर गोंडा जिलेमें देवीपाटन बस्ती है।

मन्दिर—देवीपाटनमें पटेश्वरी देवीका प्रसिद्ध मन्दिर है। कहा जाता है कि महाराज विक्रमादित्यने देवीकी स्थापना की थी, किंतु औरंगजेबने पुराना मन्दिर ध्वस्त कर दिया; उसके पश्चात् वर्तमान मन्दिर बना है। यह भी कहा जाता है कि कर्णने परशुरामजीसे यहीं ब्रह्मास्त्र प्राप्त किया था।

रामपुर—पूर्वोत्तर रेलवेपर बस्ती-गोरखपुरके बीचमें बस्तीसे १२ मील दूर मुंडेरवा स्टेशन है। इस स्टेशनसे दो मीलपर रामपुर गाँव है। यहाँ एक भग्न स्तूप है। कहा जाता है कि भगवान् बुद्धके वास्तविक स्मारकोंके ८ भागोंमें एक यहाँ समाधिस्थ है। यहींसे चुराया हुआ बुद्धका दाँत अब कैंडी (सीलोन) के 'दाँतमन्दिर' में सुरक्षित है।

पिपरावाँ—पूर्वोत्तर रेलवेकी गोरखपुर-गोंडा लाइनपर गोरखपुरसे ४६ मील दूर नौगढ़ स्टेशन है। स्टेशनसे १३ मील उत्तर पिपरावाँ ग्राम है। यहाँ बुद्धके आठ मुख्य स्मारक-स्तूपोंमें एक स्तूप है। यह स्मारक शाक्योंद्वारा बनाया गया था, जिन्होंने बुद्धके निर्वाणपर उनके फूलों (अस्थियों) मेंसे एक भाग पाया और उसपर यह स्तूप बनाया।

कपिलवस्तु—पिपरावाँसे ९ मील उत्तर-पश्चिम नैपाल राज्यमें तौलिरा स्थान है। यहाँ विशाल भग्नावशेष हैं। यह स्थान लुम्बिनीसे १५ मील पश्चिम है। विश्वास किया जाता है कि यही प्राचीन कपिलवस्तु नगरका स्थान है, जहाँ कुमार सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) के पिता महाराज शुद्धोदनकी राजधानी थी।

बड़छत्र—पूर्वोत्तर रेलवेके मनकापुर-बस्ती स्टेशनोंके बीच मनकापुरसे २८ मीलपर टिनिच स्टेशन है। स्टेशनसे २ मील पूर्व कुआनो नदीके दक्षिणी तटपर, रेलवे पुलसे आध मील दूर बड़छत्र गाँव है।

बड़छत्र वाराहक्षेत्र है। भगवान्ने यहाँ वाराहरूप धारण किया था। कुछ विद्वानोंके मतानुसार गोस्वामी तुलसीदासजी यहाँ बचपनमें अपने गुरुदेवके पास रहे थे और यहीं उन्होंने पहले-पहल श्रीरामचरितमानसकी कथा सुनी थी।

इस स्थानका प्राचीन नाम व्याघ्रपुर और बौद्धग्रन्थोंके अनुसार कोली था। श्रीगौतम बुद्धकी माता मायादेवीके पिता सुप्रबुद्धकी यहीं राजधानी थी।

गोरखपुर

यह पूर्वोत्तर रेलवेका जंकशन स्टेशन है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला-बाजारमें एक धर्मशाला है और हिंदी बाजारमें स्वर्गीय श्रीमहादेवप्रसाद पोद्दारकी तथा श्रीहरवंशराम भगवानदासकी धर्मशालाएँ हैं।

गोरखपुरका मुख्य मन्दिर श्रीगोरखनाथजीका मन्दिर है। यह मन्दिर स्टेशनसे लगभग ३ मील दूर है। स्टेशनसे मन्दिरतक पक्की सड़क गयी है। बाबा गोरखनाथजीकी यही मुख्य तपःस्थली तथा गद्दी है। हिंदू-महासभाके नेता प्रसिद्ध कर्मठ बाबा श्रीदिग्विजयनाथजीके महंत होनेके बाद इस स्थानकी बहुत उन्नति हुई है तथा हो रही है। गुरु गोरखनाथजीके वैसे तो देशमें अनेक स्थान हैं; किन्तु चार प्रधान मठ माने जाते हैं—१-गोरखपुर, २-जूनागढ़ (सौराष्ट्र), ३-पेशावर (पश्चिमी पाकिस्तान), ४-भडंगनाथ (दक्षिण भारत)।

स्टेशनसे लगभग १ मील दूर रेलवे-लाइनके पार एक विष्णुमन्दिर है। इसमें भगवान् विष्णुकी प्राचीन मूर्ति प्रतिष्ठित है।

यात्री गोरखपुर आकर गीताप्रेस भी अवश्य देखना चाहते हैं। प्रेस नगरके शेखपुर मुहल्लेमें गीताप्रेस रोडपर है। प्रेसका कलापूर्ण द्वार तथा लीला-चित्र-मन्दिर दर्शनीय हैं। इसमें भगवान् श्रीराम तथा श्रीकृष्णकी लीलाके पूरे चित्र हैं। सभी अवतारोंके, भगवान् शिव और भगवतीके विविध तथा संतों-भक्तोंकी लीलाके सभी हाथके बने कलापूर्ण चित्र लीलाक्रमसे लगाये गये हैं।

मगहर—गोरखपुरसे १७ मील दूर पूर्वोत्तर रेलवेकी लखनऊ जानेवाली लाइनपर यह स्टेशन है। महात्मा कबीरदासजीने यहीं शरीर छोड़ा था। यहाँ उनकी समाधि है। कबीरपंथियोंका यह तीर्थ है। श्रीकबीरदासजीके पुत्र कमालकी समाधि भी यहीं है।

कुशीनगर—गोरखपुर जिलेमें कसिया नामक स्थान ही प्राचीन कुशीनगर है। गोरखपुरसे कसिया (कुशीनगर) ३६ मील है। यहाँतक गोरखपुरसे पक्की सड़क गयी है, जिसपर मोटर-बस चलती है। यहाँ श्रीबिड़लाजीकी धर्मशाला है तथा भगवान् बुद्धका स्मारक है। यहाँ खुदाईसे निकली मूर्तियोंके अतिरिक्त माथाकुँवरका कोटा 'परिनिर्वाणस्तूप' तथा 'विहारस्तूप' दर्शनीय हैं।

८० वर्षकी अवस्थामें तथागत बुद्धने दो शाल वृक्षोंके मध्य यहाँ महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था। यह प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ है।

लुम्बिनी—यह स्थान नैपालकी तराईमें पूर्वोत्तर रेलवेकी गोरखपुर-नौतनवाँ लाइनके नौतनवाँ स्टेशनसे २० मील और गोरखपुर-गोंडा लाइनके नौगढ़ स्टेशनसे १० मील है। नौगढ़से यहाँतक पक्का मार्ग भी बन गया है। गौतमबुद्धका जन्म यहीं हुआ था। यहाँके प्राचीन विहार नष्ट हो चुके हैं। केवल अशोकका एक स्तम्भ है, जिसपर खुदा है—'भगवान् बुद्धका जन्म यहाँ हुआ था।' इस स्तम्भके अतिरिक्त एक समाधिस्तूप भी है, जिसमें बुद्धकी एक मूर्ति है। नैपाल-सरकारद्वारा निर्मित दो स्तूप और हैं। रुक्मनदेईका मन्दिर दर्शनीय है। एक पुष्करिणी भी यहाँ है।

श्रावस्ती—पूर्वोत्तर रेलवेकी गोरखपुर-गोंडा लाइनपर स्थित बलरामपुर स्टेशनसे १२ मील पश्चिम सहेठ-महेठ ग्राम ही प्राचीन श्रावस्ती है। यह कोसलदेशकी राजधानी थी। भगवान् श्रीरामके पुत्र लवने इसे अपनी राजधानी बनाया था। कुछ लोगोंका मत है कि महाभारत-युद्धके पश्चात् युधिष्ठिरके अश्वमेध-यज्ञके अश्वकी रक्षा करते हुए अर्जुनको यहींके राजकुमार सुधन्वासे युद्ध करना पड़ा था।

श्रावस्ती बौद्ध एवं जैन दोनोंका तीर्थ है। यहाँ बुद्धने चमत्कार दिखाया था। तथागत दीर्घकालतक श्रावस्तीमें रहे थे। अब यहाँ बौद्ध धर्मशाला है तथा बौद्धमठ भी है। भगवान् बुद्धका मन्दिर भी है।

जैनतीर्थ—जैनतीर्थोंमें श्रावस्ती अतिशय क्षेत्र मानी जाती है। यहाँ तीसरे तीर्थंकर सम्भवनाथजीका जन्म हुआ था। यह स्थान एक ऊँचे टीलेपर है।

कुकुम ग्राम—गोरखपुरसे ४६ मील दूर 'कहाऊ गाँव' ही कुकुम ग्राम है। यह जैनतीर्थ है। वहाँ जैनमन्दिरोंके कई भग्नावशेष हैं। ग्रामके उत्तर एक मानस्तम्भ है।

किष्किन्धापुर—वर्तमान खूखंदो ग्राम ही किष्किन्धापुर या काकंदी नगर है। गोरखपुरसे ही यहाँ भी आया जाता है। यह जैनतीर्थ है। यहाँ पुष्पदन्त स्वामीके गर्भ, जन्म कल्याणक हुए हैं। उन्हींके नामका यहाँ एक मन्दिर है।

कूलकुल्या देवी

कुशीनगरसे ६ मील दूर अग्निकोणमें 'कुलकुला' स्थान है। यहाँपर एक छोटी नदी (कुल्या) है। उसके तटपर देवीका स्थान है। कुल्या (नदी) के तटपर होनेके कारण इन्हें कूलकुल्या* देवी कहते हैं। एक छोटी चहारदीवारीके भीतर चबूतरेपर देवीका स्थान है। रामनवमीके अवसरपर कई दिनोंतक यहाँ मेला लगता है। वे वैष्णवी देवी हैं। अतः उनकी पूजा सात्त्विक विधिसे होती है। इधर यह जाग्रत् पीठ माना जाता है।

देवीके स्थानसे कुछ ही दूरीपर दक्षिण ओर कूलकुल्येश्वर-शिवमन्दिर है। यहाँकी लिङ्गमूर्ति अत्यन्त प्राचीन है। शिवरात्रिपर इस मन्दिरपर भी मेला लगता है।

दुग्धेश्वरनाथ

गोरखपुर-भटनी लाइनपर गौरीबाजार स्टेशन है। वहाँसे १० मील दक्षिण रुद्रपुर गाँवमें दुग्धेश्वरनाथ महादेवका मन्दिर है। इन्हें महाकालका उपलिङ्ग माना जाता है।

महाकालस्य यल्लिङ्गं दुग्धेशमिति विश्रुतम्।

पहले यहाँ पञ्चक्रोशी परिक्रमा होती थी, जिसमें अनेक तीर्थ पड़ते थे। शिवरात्रि तथा अधिक मासमें यहाँ मेला लगता है। मुख्य मन्दिरके आसपास अनेक नवीन मन्दिर भी हैं।

अनेक बार यह शिवलिङ्ग हिलने लगता है और २४ घंटे हिलता रहता है, फिर स्थिर हो जाता है। स्थिर हो जानेपर प्रयत्न करके भी उसे हिलाया नहीं जा सकता। मूर्तिके हिलनेकी घटना ज्ञात इतिहासमें अनेक बार हो चुकी है।

महेन्द्रनाथ

(लेखक—श्रीवंशबहादुरजी मल्ल)

पूर्वोत्तर रेलवेकी एक लाइन भटनीसे बरहज बाजारतक जाती है। बरहज बाजारसे ५ मील पश्चिम रुद्रपुर-बरहज सड़कपर राप्ती नदीके किनारे महेन गाँव है। इस गाँवमें महेन्द्रनाथजीका मन्दिर है। प्रसिद्ध संत पौहारीबाबाकी यह जन्मभूमि है। महेन्द्रनाथजी उन्हींके आराध्य हैं। महेन्द्रनाथजीकी मूर्तिमें मुख तथा गलेमें मुण्डमाला है और मूर्तिके ऊपरका भाग शिवलिङ्गके समान है। यह मूर्ति प्राचीन है। मन्दिर नवीन बना है। मन्दिरके पास सरोवर है। आसपास भूमि खोदनेपर प्राचीन भवनोंके चिह्न मिलते हैं। यहाँ श्रावणमें और महाशिवरात्रिपर मेला लगता है। एक धर्मशाला पासमें है।

पूर्व भारतकी यात्रा

इस खण्डमें बिहार, नैपाल, बंगाल-आसाम, उड़ीसा तथा पूर्वी पाकिस्तानके तीर्थोंका वर्णन आया है। इनमेंसे बिहारमें हिंदी, नैपालमें नैपाली, बंगाल-आसाममें बँगला तथा उड़ीसामें उड़िया बोली जाती है। नैपाली भी देवनागरी लिपिमें ही लिखी जाती है। बँगला तथा उड़ियाकी अपनी स्वतन्त्र लिपियाँ हैं और इनका साहित्य सम्पन्न है। इस पूरे भागमें हिन्दी समझ ली जाती है। बंगाल, उड़ीसा, आसामके नितान्त ग्राम्य क्षेत्रोंको छोड़कर नगरों तथा बड़े बाजारोंमें लोग काम चल सके, इतनी हिंदी बोल भी लेते हैं। यात्रीका काम इस भागमें हिंदीसे मजेमें चल सकता है। यदि वह थोड़ी बँगला भी जानता हो, तब तो पूरी सुविधा रहे।

पूर्वी पाकिस्तानकी भाषा बँगला है; किन्तु वहाँ अनुमतिपत्रके बिना नहीं जाया जा सकता। वहाँके तीर्थस्थलोंकी

* शास्त्रोंमें भगवतीका एक नाम कुरुकुल्ला भी आता है। सम्भव है उसीका रूप बिगड़कर कूलकुल्या हो गया हो।

पूर्व भारत
(रेलवे-मार्ग)
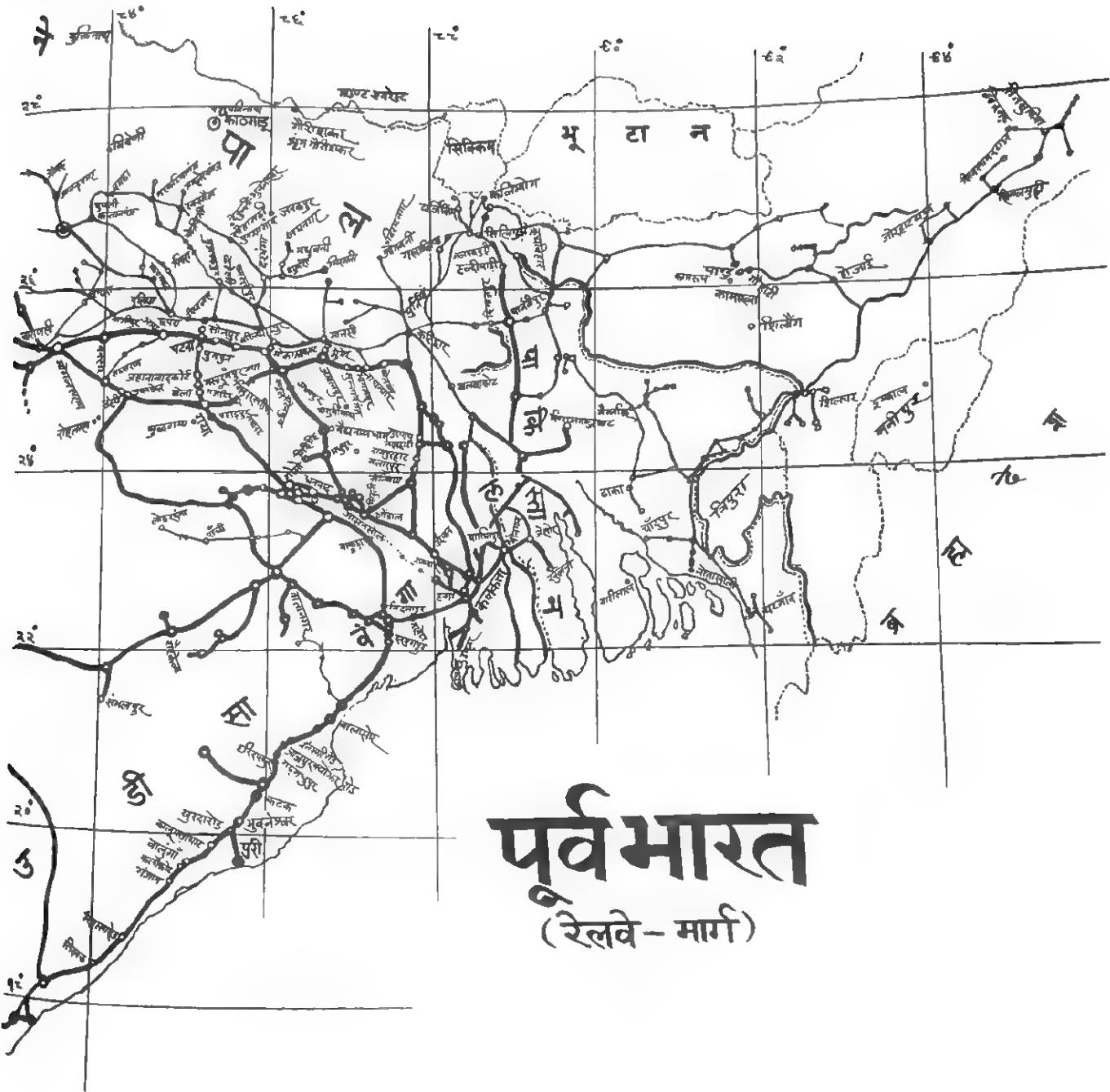
वर्तमान दशा क्या है, यह कहना भी कठिन है। यात्रीको वहाँकी यात्रामें अनेक अकल्पित कठिनाइयाँ आ सकती हैं।

इस पूरे भागमें प्रायः चावल खाया जाता है; किन्तु बाजारोंमें आटा भी मिलता है। उत्तर भारतके समान इस भागमें भी बाजारोंमें पूड़ी-मिठाईकी दूकानें प्रायः सब कहीं मिलती हैं। फल तथा शाक भी मिलते हैं और दूध-दहीकी दूकानें भी पायी जाती हैं।

इस भागके मुख्य तीर्थोंमें धर्मशालाएँ हैं। पंडे भी हैं और यात्री पंडोंके यहाँ भी ठहरते हैं। वर्षाके दिनोंमें इस भागकी यात्रा कष्टकर होती है; क्योंकि वर्षा इस प्रदेशमें पर्याप्त होती है। शीतकालमें अधिकांश भागमें अच्छी सर्दी पड़ती है और ग्रीष्ममें गरमी भी पड़ती है। इसलिये यात्रीको छाता साथ रखना चाहिये। शीतकालमें गरम कपड़े तथा ओढ़ने-बिछानेका पर्याप्त प्रबन्ध रखकर यात्रा करनी चाहिये।

नैपालमें पशुपतिनाथकी यात्रा शिवरात्रिपर होती है। दूसरे समय वहाँ जानेके लिये अपने यहाँके जिलाधीशका अनुमतिपत्र और इनकमटैक्स आफिसका प्रमाणपत्र लेना आवश्यक होता है। मुक्तिनाथकी यात्रा चैत्रशुक्लसे कार्तिकतक हो सकती है; किन्तु यदि वहाँसे आगे दामोदरकुण्ड भी जाना हो तो भाद्रशुक्लसे कार्तिक-अमावस्यातकका समय उपयुक्त होता है।

इस भागके प्रधान तीर्थ हैं—पशुपतिनाथ-मुक्तिनाथ (नैपालमें), कामाख्या (आसाम), जनकपुर, सीतामढ़ी, शृङ्गेश्वरनाथ, गया, राजगृह, वैद्यनाथधाम, नवद्वीप, तारकेश्वर, गङ्गा-सागर, वासुकिनाथ, याजपुर, भुवनेश्वर और पुरी।

इस भागमें मुख्य जैनतीर्थ पारसनाथ (सम्मेतशिखर), राजगृह, पावापुरी, मन्दार-गिरि हैं। राजगृह और नालन्दा बौद्ध तीर्थ हैं।

महीमयी देवी

गोरखपुर-कटिहार लाइनमें छपरासे १८ मीलपर दिधवारा स्टेशन है। वहाँसे लगभग ढाई मीलपर गङ्गाकिनारे महीमयी देवीका मन्दिर है। मन्दिरमें देवीकी मूर्ति नहीं है, एक ठीक वैसी पिण्डी है खूब बड़ी, जैसी विद्वान् ब्राह्मण पूजनादिके समय गोबरसे 'गौरी' की बनाते हैं। आश्विन तथा चैत्रके नवरात्रोंमें यहाँ मेला लगता है।

कहा जाता है कि दुर्गासप्तशतीमें वर्णित समाधि वैश्यने यहाँ गङ्गातटपर देवीकी यह मृत्तिका-मूर्ति (पिण्डी) बनाकर आराधना की थी। उनकी भक्तिसे तुष्ट होकर देवीने उन्हें दर्शन दिया। मनियर गाँवमें राजा सुरथकी आराध्य देवी-मूर्ति है।

सोनपुर

(लेखक—श्रीचतुर्भुजरायजी गुरु शर्मा)

कटिहार-गोरखपुर लाइनपर सोनपुर प्रसिद्ध स्टेशन है। पहले यह प्रख्यात नगर रह चुका है। यहाँसे दक्षिण तेल-नदीके किनारे सुवर्णमेरु महादेवका मन्दिर है। इसी मन्दिरके नामपर इस नगरका नाम सोनपुर (स्वर्णपुर) पड़ा है।

दन्तकथाओंके अनुसार स्वर्णमेरु महादेवकी लिङ्गमूर्ति किसी शिवभक्त दैत्यके द्वारा पूर्व युगमें पूजित थी। कालान्तरमें वह मूर्ति वनमें पृथ्वीमें दब गयी। एक स्वप्नादेशके अनुसार एक शिवभक्त व्यापारीने तेलनदीके किनारे मन्दिर बनवाया और मन्दिर बन जानेपर उसमें वह शिवमूर्ति स्वयं प्रकट हुई।

नगरमें धर्मशाला है। महाशिवरात्रिपर यहाँ मेला होता है।

हरिहर-क्षेत्र

मार्ग—पूर्वोत्तर रेलवेपर बिहारदेशमें छपरासे २९ मील दूर सोनपुर स्टेशन है। स्टेशनसे कुछ दूरीपर गण्डकी नदी गङ्गामें मिलती है। वहीं सोनपुर छोटी-सी बस्ती है। सोनपुरके पास ही हरिहर-क्षेत्रका मेला लगता है।

दर्शनीय स्थान—मही नामक एक छोटी नदीके

तटपर यहाँ श्रीहरिहरनाथका मन्दिर है। इसमें शिव-विष्णुकी हरिहरात्मक मूर्ति है। प्रत्येक कार्तिकी पूर्णिमापर यहाँ हरिहरक्षेत्रका मेला लगता है। यह मेला दो सप्ताहतक रहता है।

महर्षि विश्वामित्रजीके साथ जनकपुर जाते हुए श्रीराम-लक्ष्मण यहाँ पधारे थे। कुछ लोगोंका मत है कि गज-ग्राहका युद्ध यहीं हुआ था और यहीं भगवान्ने ग्राहसे गजेन्द्रको छुड़ाया था। कुछ लोग गजेन्द्रोद्धारका स्थान गण्डकी नदीका उद्गमक्षेत्र दामोदरकुण्ड या मुक्तिनाथ बतलाते हैं।

खगेश्वरनाथ (मतलापुर)

मुजफ्फरपुर (बिहार) से ६ मीलपर ढोली स्टेशन है। वहाँसे मतलापुर ५ मील दूर है। ताँगे मिलते हैं स्टेशनपर। मन्दिरके पास धर्मशाला है।

मतलापुरमें खगेश्वर महादेवका प्राचीन मन्दिर है। लोग इनको अंकुरी महादेव कहते हैं। पास ही पार्वतीजीके दो मन्दिर तथा केदारनाथ महादेव, भैरवजी एवं वटेश्वरनाथके मन्दिर हैं। पासमें सरोवर था, जो अब मिट्टीसे भर गया है। शिवरात्रिको मेला लगता है।

पिपरा

पूर्वोत्तर रेलवेकी मुजफ्फरपुर-नरकटियागंज लाइनपर मुजफ्फरपुरसे ३७ मील दूर पिपरा स्टेशन है। स्टेशनके पास प्राचीन किलेके खँडहर हैं। वहीं एक सीताकुण्ड सरोवर है। विश्वास किया जाता है कि श्रीजानकीजीने उसमें स्नान किया था। यहाँपर सूर्य, हनुमान् एवं महिषमर्दिनी देवीके मन्दिर हैं। एक स्थानपर रावणकी भी मूर्ति है। यहाँ रामनवमीपर मेला लगता है।

अरेराज महादेव

मार्ग—पूर्वोत्तर रेलवेकी एक शाखा मुजफ्फरपुरसे मोतिहारी जाती है। मोतिहारी स्टेशनसे अरेराज महादेवका स्थान लगभग ५ मील दूर है।

मन्दिर—एक सरोवरके पास अरेराज महादेवका मन्दिर है। उसके पास ही पार्वती-मन्दिर है। शिवरात्रिपर यहाँ मेला लगता है। किसान यहाँ धानकी बाल चढ़ाते हैं। कुछ लोग शिवमन्दिरसे पार्वती-मन्दिरतक पगड़ी लगाते हैं। अरेराज गाँवमें एक प्राचीन स्तम्भ भी है।

त्रिवेणी

पूर्वोत्तर रेलवेकी नरकटियागंज-बगहा लाइन है। बगहासे एक सड़क उत्तर-पश्चिम ४० मीलतक जाती है। सड़क गण्डकी नदीके पास समाप्त होती है। यहाँ भारतीय सीमामें भैंसा-लोटन गाँव है और नदी-पार नैपालमें त्रिवेणी-घाट है।

त्रिवेणीके पास बड़ी गण्डक, पञ्चनद तथा सोनहाका संगम होता हे। यहाँ मकरसंक्रान्तिपर मेला लगता है।

पञ्चनदसे कुछ आगे, जहाँ सोनहा पर्वतसे नीचे उतरती है, वाल्मीकि-आश्रम बताया जाता है। वहाँ छोटा-सा सीताजीका मन्दिर है। कहते हैं कि वहींसे सीताजीने श्रीरामकी सेनाके साथ लव-कुशको युद्ध करते देखा था।

बगहासे २५ मील दूर दरवाबारीके निकट वनमें एक स्थान है, जिसे 'बावन गढ़ तिरपन बाजार' कहते हैं। कहा जाता है कि वनवासके समय पाण्डव कुछ दिन वहाँ रहे थे।

जयमङ्गला देवी

(लेखक—श्रीकेदारनाथसिंहजी और श्रीलखनदेवसिंहजी)

पूर्वोत्तर रेलवेपर समस्तीपुरसे आगे बेगूसराय स्टेशन है। वहाँसे यह स्थान १२ मील दूर है। पूर्वोत्तर रेलवेकी मानसी-समस्तीपुर लाइनके सलौना स्टेशनसे ६ मील पश्चिम है।

बरगदके नीचे एक प्राचीन मन्दिर है। उसमें जयमङ्गला देवीकी मूर्ति है। प्रत्येक मङ्गलवारको आस-पासके लोग जल चढ़ाने आते हैं। मन्दिर जलमङ्गला-गढ़में है, जो अब ध्वस्त हो चुका है। इस गढ़के चारों ओर कावर झील है। झील गरमीमें सूख जाती है। झीलमें मन्दिरतक जानेको एक बाँध है।

यहाँ आस-पास खेतोंसे वाराहभगवान् तथा बदरीनारायणजीकी मूर्तियाँ मिली हैं। यह एक साधारण मन्दिरमें रखी हैं।

उग्रनाथ महादेव

(लेखक—पं० श्रीबदरीनारायणजी चौधरी साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ, बी०ए०)

पूर्वोत्तर रेलवेकी दरभंगा-जयनगर लाइनपर सकरी और पंडौल स्टेशन हैं। दोनों स्टेशनोंसे भवानीपुर लगभग ढाई मील है। स्टेशनोंसे भवानीपुरतक अच्छी सड़क है।

भवानीपुर ग्रामके उत्तर श्रीउग्रनाथ महादेवका प्राचीन मन्दिर है। मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ है। मन्दिरमें शिवलिङ्गके समीप श्रीलक्ष्मीनारायणकी प्राचीन मूर्ति प्रतिष्ठित है। हनुमान्जीकी मूर्ति भी वहाँ स्थापित की गयी है। मन्दिरके समीप एक सरोवर है। यहाँ प्राचीन भग्नावशेष आस-पास हैं। खोदनेपर भूमिसे मूर्तियोंके अंश प्रायः पाये जाते हैं। सरोवरके भीतर अनेक कुण्ड हैं। यहाँ शिवरात्रिको मेला लगता है। कहा जाता है कि पाण्डवोंने यहाँ आकर उग्रनाथजीकी पूजा की थी। महाकवि विद्यापति यहाँ बहुत दिन रहे हैं।

याज्ञवल्क्य-आश्रम

(लेखक—श्रीरामचन्द्रजी भगत)

दरभंगा-सीतामढ़ी लाइनपर कमतौल स्टेशन है। वहाँसे तीन मील पैदल जाना पड़ता है। समीपमें रमौल ग्राम है। वहाँ एक शिव-मन्दिर है। इस मन्दिरमें यात्री ठहर सकते हैं। इस ग्रामके पास ही गौतमकुण्ड है। इस ग्रामके पास वटवृक्षोंका वन है। इस वनमें ही महर्षि याज्ञवल्क्यका आश्रम था। महर्षि याज्ञवल्क्य महाराज जनकके गुरु थे, यह बात स्मरणीय है।

सीतामढ़ी

(लेखक—पं० श्रीअमरनाथजी झा)

नैपालमें पशुपतिनाथकी यात्रा करके लौटते समय यात्री प्रातः सीतामढ़ी और जनकपुरके दर्शन करना चाहते हैं। रक्सौल-दरभंगा रेलवे-लाइनपर सीतामढ़ी स्टेशन है। स्टेशनसे मुख्य मन्दिर लगभग एक मील दूर है। मुजफ्फरपुर जिलेमें यह स्थान पड़ता है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

लखनदेई नदीके पश्चिम तटपर सीतामढ़ी बस्ती है। यहाँ एक घेरेके भीतर श्रीसीताजीका मन्दिर है। घेरेमें दूसरे भी कई मन्दिर हैं। मुख्य मन्दिरके आस-पास श्रीराम, लक्ष्मण, शिव, हनुमान् तथा गणेशजीके भी मन्दिर हैं। श्रीरामनवमीको यहाँ मेला लगता है।

सीतामढ़ीसे १ मीलपर पुलउड़ा गाँवके पास पक्का

सरोवर है। कहा जाता है कि इसी स्थानपर श्रीजानकीजी भूमिसे उत्पन्न हुई थीं। सरोवरके पास ठाकुरबाड़ी है।

महाराज निमिके वंशमें राजा ह्रस्वरोमाके पुत्र सीरध्वज थे। देशमें अकाल पड़नेपर यज्ञके लिये स्वर्णके हलसे यज्ञभूमि जोत रहे थे, उस समय भूमिमें हलाग्र लगनेपर एक दिव्य कन्या प्रकट हुई। सीताके प्रकट होनेके कारण वह (हलसे जोती हुई भूमि सीता-सिरौर) सीता कही गयी। उस भूमिपर उर्विजाकुण्ड नामक प्राचीन हवनकुण्ड है। यह स्मरण रखनेकी बात है कि निमिवंशके नरेशोंकी उपाधि विदेह और जनक है।

देकुली-भुवनेश्वर

(लेखक—आचार्य श्रीमदनजी साहित्यभूषण)

पूर्वोत्तर रेलवेके सीतामढ़ी स्टेशनसे यह स्थान १६ मील दूर है। मार्गपर मोटर-बस चलती है। यहाँ देवकुल सरोवर था। सरोवरके पूर्वी तटपर श्रीभुवनेश्वरका मन्दिर है। मन्दिरमें लिङ्गमूर्तिके अतिरिक्त कालभैरवकी प्राचीन मूर्ति भी है। यहाँ आसपास प्राचीन भग्नावशेष हैं। कहा जाता है कि द्वापरमें अभिमन्युके विवाहके लिये पाण्डव बारात लेकर विराटनगर आये, तब यहीं उनके शिविर पड़े थे। यहाँ आसपास और भी नवीन मन्दिर बने हैं।

मिथिला (जनकपुर)

मिथिला-माहात्म्य

चम्पारण्यसे गण्डकीतक मिथिलाकी शास्त्रीय सीमा है—

गण्डकीतीरमासाद्य चम्पारण्यान्तकं शिवे।
विदेहभूः समाख्याता तैरभुक्ताभिधा तु सा॥

(शक्तिसंगमतन्त्र, पटल ७)

यह 'तैरभुक्त' शब्द ही आज तिरहुत हो गया है। विदेहपुरी सदासे विवेकियोंकी स्थली ख्यात रही है। वेदों तथा उपनिषदों* तकमें इसकी बार-बार चर्चा आयी है। अधिक क्या, यहाँकी वेश्याएँ भी ब्रह्मज्ञानिनी हो गयीं। पिङ्गलाने कहा था—

विदेहानां पुरे ह्यस्मिन्नहमेकैव मूढधीः।
यान्यमिच्छन्त्यसत्यस्मादात्मदात् काममच्युतात्॥

(श्रीमद्भा० ११। ८। ३४)

'इस विदेह-नगरीमें मैं ही अकेली ऐसी मूर्खा हूँ, जो अविनाशी, परमप्रिय परमात्माको छोड़कर दूसरे पुरुषकी अभिलाषा करती हूँ।' पराम्बा भगवती जगज्जननी जानकीकी जन्मभूमि होनेसे इसका अतुल माहात्म्य है। जनककूपमें स्नान करके मनुष्य विष्णुलोकको प्राप्त होता है।

जनकस्य तु राजर्षेः कूपस्त्रिदशपूजितः।
तत्राभिषेकं कृत्वा तु विष्णुलोकमवाप्नुयात्॥

(पद्म० आदि० ३८। ३१; महा० वन० ८४। १११)

जनकपुर

(लेखक—पं० श्रीजीवनाथजी झा)

जनकपुर-तीर्थका प्राचीन नाम है मिथिला, तीरभुक्ति, विदेह तथा विदेहनगर। सीतामढ़ीसे या दरभंगासे जनकपुर-रोड स्टेशन जाया जा सकता है। वहाँसे जनकपुर २४ मील है। सीतामढ़ीसे या दरभंगासे नैपाल-सरकार रेलवेके जयनगर स्टेशनतक चले जायँ तो वहाँसे जनकपुरतक उक्त रेलवे द्वारा जा सकते हैं। जयनगरसे जनकपुर १८ मील है। यह मार्ग सुभीतेका है। जनकपुर प्राचीन मिथिलाकी राजधानीका दुर्ग (किला) है, जिसके चारों ओर पूर्वक्रमसे शिलानाथ, कपिलेश्वर, कूपेश्वर, कल्याणेश्वर, जलेश्वर, क्षीरेश्वर तथा मिथिलेश्वर रक्षकके रूपमें रहते थे। इन शिवलिङ्गोंके मन्दिर अब भी विद्यमान हैं। इनमें कपिलेश्वर और कूपेश्वरको छोड़कर शेष मन्दिर ५-५ कोसकी दूरीपर हैं। किलेके चारों ओर महामुनि विश्वामित्र, गौतम, वाल्मीकि और याज्ञवल्क्यके आश्रम थे, जो अब भी किसी-न-किसी रूपमें विद्यमान हैं।

महाभारतके बाद सम्पूर्ण प्रदेश निर्जन वनमें परिणत हो गया। एकान्त जानकर यहाँ सिद्ध महात्मा तपस्या करने लगे। उन्हीं मुनियोंमें संन्यासी चतुर्भुजगिरि और वैष्णव सूरकिशोर भी थे। इन्होंने स्वप्नमें आदेश पाकर

* देखिये शतपथ ब्रा० १। ४। १। १०; तैत्तिरीय ब्रा० ३। १०। ९। ९; बृहदारण्यक उप० ३। ८। २; ४। २। ६; कौषीतकि १ इत्यादि।

अक्षयवटके तलसे श्रीरामपञ्चायतन मूर्ति निकालकर जनकपुरकी ख्याति करायी। वह वटवृक्ष अभीतक राममन्दिरके घेरेमें विद्यमान है।

दर्शनीय स्थान

श्रीजानकीमन्दिर

इस स्थानपर पूर्वकालमें एक जीर्ण-शीर्ण प्राचीन मन्दिर था, जिसमें महात्मा सूरकिशोरजीद्वारा सुवर्णमयी सीता तथा रामकी भव्य मूर्तियाँ स्थापित थीं। सं० १९६७ में टीकमगढ़की स्व० वृषभानु कुँअरिजीने अति सुन्दर विशाल मन्दिरका निर्माण कराया। वह महल आजकल नौलखा, जानकीमहल अथवा शीशमहलके नामसे प्रख्यात है।

इसीके घेरेमें सुनयना-जानकीका मन्दिर भी है। इसमें अङ्गराग-सरसे उद्धृत सीता, राम और लक्ष्मणकी मूर्त्तियाँ तथा राजर्षि जनक और सुनयना एवं शतानन्दजीकी मूर्तियाँ भी दर्शनीय हैं।

श्रीराममन्दिर

इस मन्दिरमें सिद्ध महात्मा चतुर्भुजगिरिके हाथसे अक्षयवटके तलसे उखाड़ी गयी अति प्राचीन श्रीरामपञ्चायतनमूर्तियाँ, श्रीलक्ष्मी-नारायणकी मूर्तियाँ तथा दशावतारकी मूर्तियाँ स्थापित हैं। बृहत् विष्णुपुराणके अनुसार यही सुवर्णमण्डप है।

इसके घेरेमें ही हनुमान्-मन्दिर, चतुर्भुजनाथ-मन्दिर, मण्डप तथा देवी-मन्दिर हैं। जनकपुरके आदिप्रवर्तक महात्मा चतुर्भुजगिरिकी जीवित समाधिपर चतुर्भुजनाथ (शिव) स्थापित हैं। देवी-मन्दिरमें राजर्षि जनककी कुल-देवता त्रिपुरसुन्दरी देवीका मृत्तिकापीठ दर्शनीय है; यह शक्तिपीठ माना जाता है।

जनक-मन्दिर

यह स्थान राममन्दिरसे ईशानकोणमें है। इसमें विदेह जनक, सुनयना एवं सं० २००२ में गङ्गासागरसरोवरके उद्धारके समय पायी गयी श्रीसीताजीकी सुभव्य मूर्ति दर्शनीय है।

लक्ष्मण-मन्दिर

जानकी-मन्दिरके अति निकट यह मन्दिर है। इसमें श्रीसीता-राम तथा लक्ष्मणजी विराजमान हैं।

रङ्गभूमि

जानकी-मन्दिरसे वायव्यकोणमें लगभग २५ बीघेकी एक समतल भूमि है, जो 'रङ्गभूमि', 'बरहबिघबा' या 'बरहविगहा' नामसे ख्यात है। इसके पश्चिम भागमें मौनीबाबाका सुन्दर मन्दिर है और दक्षिणमें 'साधूगाद्दी' है। कहा जाता है कि इसी स्थानपर धनुर्भङ्ग हुआ था। वस्तुतः यह भूमि श्रीजनकललीजीकी क्रीडास्थली है। धनुषका भङ्ग तो धनुषा नामक स्थानमें हुआ था, जहाँ अब भी उस धनुषका खण्ड टूटा हुआ देखा जाता है।

रत्नसागर-मन्दिर

जानकी-मन्दिरसे १ मील पश्चिमोत्तर कोणमें रत्नसागर नामके सुन्दर सरोवरके समीप स्थित इस मन्दिरमें युगल-सरकारकी भव्यमूर्ति विराजमान है। समीपमें एक वैदेही-विहार-वाटिका नामक फुलवारी शोभा दे रही है। कहा जाता है कि यहाँ जानकीजीके विवाहोत्सवमें रत्न लुटाये गये थे। कोई-कोई इसे खजानेका स्थान (निधि) बतलाते हैं।

दशरथ-मन्दिर

यह स्थान महाराज-सरसे पश्चिम है। यहाँ महाराज दशरथकी मूर्ति दर्शनीय है।

जनकपुरके सरोवर और नदियाँ

जनकपुरमें राममन्दिरके सम्मुख दो सरोवर हैं, धनुष-सर और गङ्गासागर। गङ्गासागरके स्थानपर ही निमिराजके शरीरके मन्थनसे प्रथम जनककी उत्पत्ति हुई थी।

राममन्दिरसे पूर्व धनुषसागर है। इसी स्थानपर शिवधनुष रखा रहता था। यह नलद्वारा गङ्गासागरसे सम्पृक्त है।

अरगजा-सर—इसमें श्रीजानकीजी उबटन लगाकर स्नान करती थीं। यह जानकी-महलसे उत्तर है।

महाराज-सर—श्रीजानकी-मन्दिरसे पश्चिम है। इसे दशरथ-सर भी कहते हैं।

जनक-सर—यह जनकपुरसे ८ मील ईशानकोणमें है। वहीं परशुरामकुण्ड है।

रत्नसागर—रङ्गभूमिके पश्चिमोत्तर है।

अग्निकुण्ड—रत्नसागरके पश्चिम है।

विहारकुण्ड—यह जानकीह्रद अग्निकुण्डके दक्षिण है। यहाँ श्रीजानकी स्नान करती थीं।

विद्याकूप—विहारकुण्डके पास है। वहीं शतानन्दकूप भी है। पासमें सीताकुण्ड है। विद्याकूपके उत्तर समीपमें ही ज्ञानकूप है।

श्रीजनकपुर-धाम

श्रीराम-मन्दिरका बाहरी दृश्य

श्रीजानकीजीका नौलखा-मन्दिर

श्रीजनक-मन्दिर
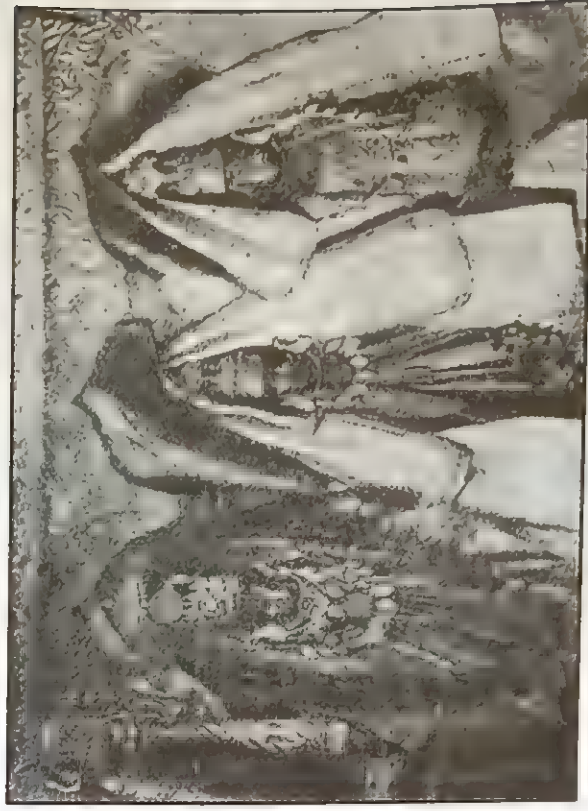
श्रीराम-मन्दिरकी प्राचीन मूर्तियाँ

नैपालके पवित्र स्थल
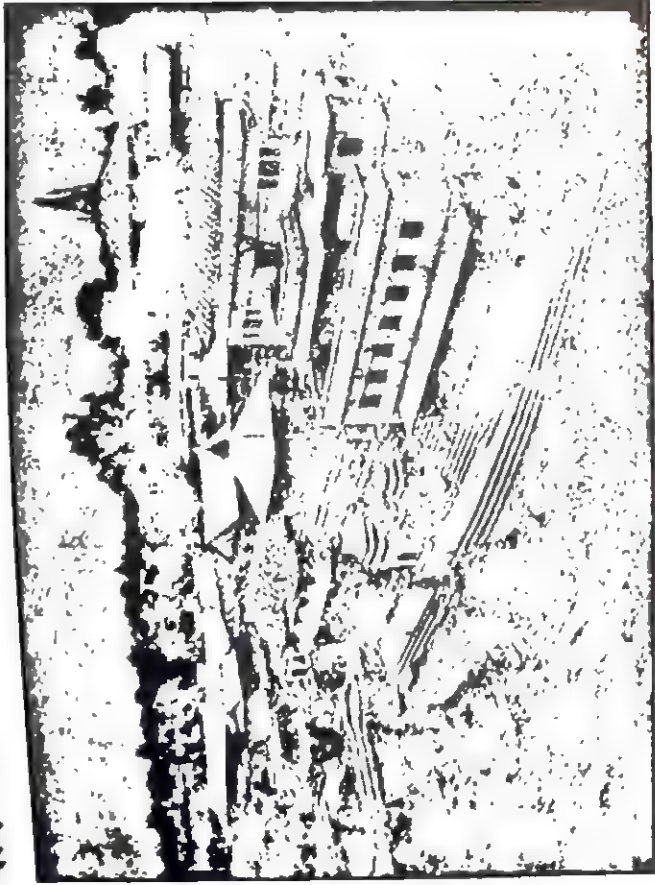
श्रीपशुपतिनाथ—बाहरी दृश्य

श्रीपशुपतिनाथ—भीतरी दृश्य
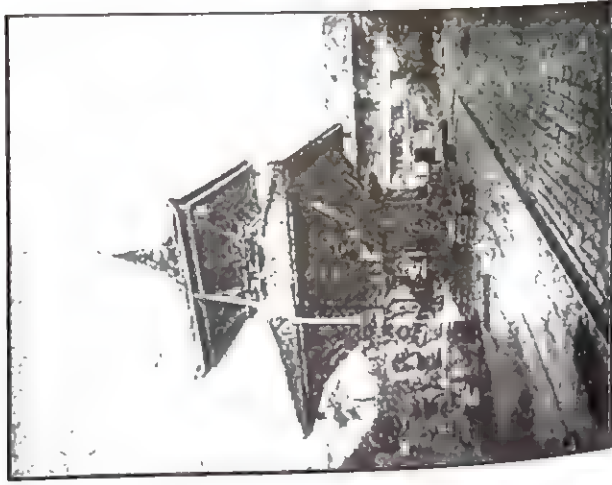
मीननाथ-मन्दिर, पाटन

श्रीसूर्यविनायक गणेश-मन्दिर, भटगाँव
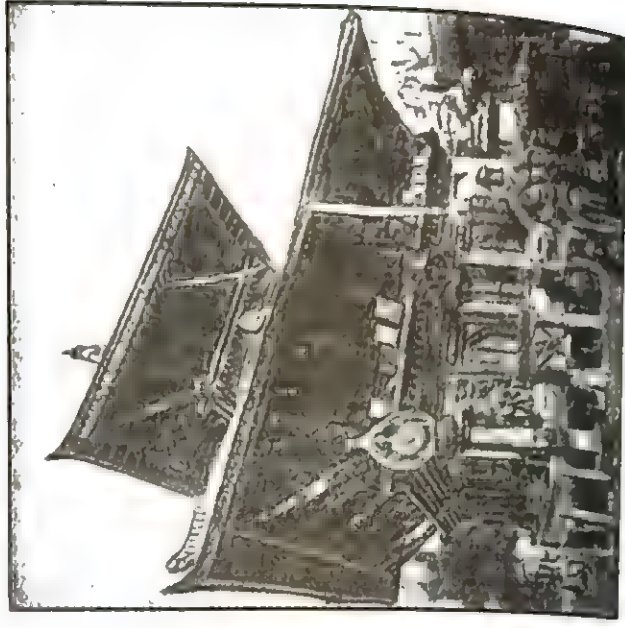
श्रीचंगुनारायण

श्रीजनकपुर-धाममें कूप तथा सरोवर ७६ माने गये हैं। वे सभी पवित्र तीर्थ हैं तथा जनकपुरकी पञ्चक्रोशी परिक्रमामें पड़ते हैं। यहाँ उनकी नामावली विस्तार-भयसे नहीं दी गयी।

दुग्धवती—जनकपुरसे पश्चिम यह नदी है। कहते हैं कि श्रीजानकीके जन्मके समय यहाँ कामधेनुके दूधकी धारा बही थी।

यमुनी—जनकपुरसे ८ मील पूर्व है। यमुना ही मानो इस रूपमें यहाँ बहती हैं।

जलाधि—वस्तुतः यह सरस्वती नदी है, जनकपुरकी पूर्व-सीमापर बहती है।

गेरुका—जनकपुरसे ३ मील पश्चिमोत्तर यह गैरिका नदी है।

इनके अतिरिक्त भूसी (भूयसी), इक्षुमती, माढ़ा (मण्डना), विग्घी (व्याघ्रमती) और विरजा नदियाँ आसपास हैं। इन सबमें स्नान पुण्यप्रद माना गया है।

जनकपुरसे ६ मील दक्षिण-पूर्व एक सरोवरके पास विश्वामित्रजीका मन्दिर है।

धनुषा—जनकपुरसे १४ मील दूर धनुषा बस्ती है। बैलगाड़ीका मार्ग है। यहाँ जंगलमें एक सरोवरके पास पत्थरका विशाल धनुष-खण्ड पड़ा है। कहा जाता है कि श्रीरामने धनुषयज्ञमें जो शिवधनुष तोड़ा था, उसीका यह एक खण्ड है।

उच्चैठ—जनकपुरसे ३२ मील पूर्व, बसके मार्गपर। यहाँ दुर्गाजीका मन्दिर है। कहा जाता है कि कालिदासने यहीं देवीकी आराधना की थी।

कपिलेश्वर—उच्चैठसे ८ मील पूर्व, बसके मार्गपर। दरभंगा स्टेशनसे भी यहाँ बस आती है। धर्मशाला है, एक सरोवर है और कपिलेश्वर-मन्दिर है। यहाँसे १ मीलपर वनदुर्गा-मन्दिर है। वहाँतक पक्की सड़क है।

कुशेश्वर—वनदुर्गासे ३२ मील पूर्व। दरभंगासे पिपराघाटतक बस जाती है और वहाँसे ४ मील पैदलका मार्ग है। यहाँ कुशेश्वर कामलिङ्ग माने जाते हैं। इधर इनकी बड़ी प्रतिष्ठा है।

उग्रतारा—यह देवीका प्रसिद्ध पीठ है। सहरसा स्टेशनके पास वनगामहिंसी नामक गाँवके समीप है। कुछ लोग इसे शक्तिपीठ मानते हैं और कहते हैं कि सती-देहका नेत्रभाग यहाँ गिरा था। यहाँ एक यन्त्रपर तारा, एकजटा तथा नील सरस्वतीकी मूर्तियाँ स्थित हैं। इनके अतिरिक्त दुर्गा, काली, त्रिपुरसुन्दरी, तारकेश्वर तथा तारानाथकी भी मूर्तियाँ हैं।

सिंहेश्वर—मधेपुरा स्टेशनसे ६ मील दूर बस-मार्गपर। सिंहेश्वर अनादि लिङ्ग माना जाता है। कहा जाता है कि यहाँ शृङ्गी ऋषिका आश्रम था।

गौतमकुण्ड—सीतामढ़ीसे जो रेलवे-लाइन दरभंगा जाती है, उसीपर कमतौला स्टेशन है। इस स्टेशनसे ३ मील उत्तर-पश्चिम एक छोटी नदीके किनारे पुनौराग्राममें अहल्याका एक छोटा मन्दिर है। यहाँ रामनवमीको मेला लगता है। स्टेशनसे १० मील पश्चिम मैदानमें गौतम-कुण्ड सरोवर है। इसके घाट पक्के बने हैं। सरोवरके तलमें ५ कुण्ड हैं। गौतम-कुण्डके पास नृसिंहभगवान्का छोटा-सा मन्दिर है।

गौतम-कुण्डसे ३ मील पूर्व अहल्याकुण्ड है। यहाँ अहल्याका चौरा तथा श्रीराम-लक्ष्मणका मन्दिर है। कहा जाता है कि यहीं महर्षि गौतमकी पत्नी अहल्या महर्षिके शापसे शिला बनी पड़ी थीं। श्रीरामकी चरण-धूलिके स्पर्शसे शाप दूर हो गया, अहल्याको दिव्यरूप प्राप्त हो गया और वे अपने पतिदेवके पास ऋषिलोक चली गयीं। यह पूरा क्षेत्र गौतमाश्रम माना जाता है।

पुनौरासे पूर्व १-मङरौनी, २-जमसन, ३-विसफी, ४-अंधरा-ठाढ़ी, ५-तरौनी—ये पाँच ग्राम अतिशय प्रसिद्ध माने जाते हैं। इनकी प्रसिद्धिके कारण क्रमशः १-मदन उपाध्याय, २-ध्री उपाध्याय, ३-विद्यापति, ४-लक्ष्मीनाथ गोसाईं, ५-कमलादत्त गोसाईं—ये पाँच आदर्श महापुरुष हुए हैं।

(१) मधुवनी स्टेशनसे १ मील पश्चिम टमटम-मार्गपर मङरौनी ग्राम है। वहाँ पूर्व समयमें मदन उपाध्याय नामके विद्वान् हो गये हैं। भगवतीकी सिद्धि उनको मिली थी। वे स्नानके बाद धोती कचारकर आकाशमें फेंक देते थे और वह आकाशमें ही सूखती रहती थी।

(२) शकुरी स्टेशनसे ४ मील उत्तर टमटम-मार्गपर जमसन ग्राममें ध्री उपाध्याय हुए हैं। वे नितान्त कर्मठ थे। पोखरेका चातुश्चरण-यज्ञ कर रहे थे। अपराह्न हो गया था। ज्ञात हुआ कि शिखा खुली है। शिखाबन्धनके अनन्तर पुनः यज्ञका संकल्प किया और लोगोंसे कहा कि जबतक मेरा यज्ञ सम्पन्न नहीं होगा तबतक सूर्यास्त

नहीं हो सकता। ऐसा ही हुआ। उस दिन बहुत देरके बाद सूर्यास्त हुआ। वह पोखरा अभीतक है।

(३) मधुवनी स्टेशनसे २ मील उत्तर टमटम-मार्गपर विसफी ग्राम है। वहाँ विद्यापति हुए हैं। वे शैव थे। आवश्यकतानुसार शिवजी 'उदना' नामका सेवक बनकर उनका कार्य-सम्पादन किया करते थे। बादमें ज्ञात होनेपर वे उदना-उदना चिल्लाकर शिवजीको पुकारते थे। इनकी मृत्युके समय इनकी प्रार्थनाके अनुसार ४ मील दूरीपर मृत्युशय्याके समीप श्रीगङ्गाजीकी धारा आयी थी, जो अभीतक वर्तमान है। विसफी-ग्रामके विकासके लिये बिहार सरकार प्रबन्ध कर रही है।

(४) मधुवनी स्टेशनसे १६ मील उत्तर बैलगाड़ी-मार्गपर अंधराठाढ़ी ग्राममें लक्ष्मीनाथ गोसाईं हुए हैं। बरसातका समय था, नदी बहुत बढ़ी हुई थी। मल्लाहने कहा—अभी समय नहीं जो आपको पार उतार सकूँ। ये खड़ाऊँ पहने हुए थे, खड़ाऊँपर चढ़े हुए ही नदी पार कर गये। बादमें धारा सूख गयी। वह सूखी हुई नदी अब भी है।

(५) दरभंगा स्टेशनसे १० मील पूर्व टमटम-मार्गपर तरौनी ग्राम है। वहाँ कमलादत्त गोसाईं हुए हैं। वे भगवान् बाल-गोपालके उपासक थे, उनके हाथसे दिये हुए दूधको गोपालभगवान् स्वयं पान करते थे।

पशुपतिनाथ, मुक्तिनाथ, दामोदरकुण्ड (नेपाल)

मुक्तिनाथ-माहात्म्य

इसका नाम शालग्राम-क्षेत्र भी है। भगवान् श्रीहरि यहाँ पर्वतरूपमें और भगवान् शङ्कर पर्वतस्थ लिङ्गरूपमें स्थित हैं। यहाँकी सारी शिलाएँ भगवत्स्वरूप हैं, फिर चक्राङ्कितोंका तो पूछना ही क्या। यहाँ पहले पुलह तथा पुलस्त्य ऋषियोंका आश्रम था। सोमेश्वर लिङ्ग तथा रावणद्वारा प्रकट की हुई बाणगङ्गाकी पवित्र धारा भी यहाँ है। यही नहीं, देविका, गण्डकी तथा चक्रा नदियोंके संगमसे यहाँ त्रिवेणी बन गयी है। राजर्षि भरतने भी राज-पाट छोड़कर यहीं तपस्या की थी। दूसरे जन्ममें जब वे कालंजरमें मृग हुए, उस समय भी अपनी माता तथा मृग-यूथको छोड़कर मृगशरीरसे यहीं आ गये। वाराहपुराणके अनुसार किसी कल्पमें गज-ग्राहका युद्ध भी यहीं हुआ था तथा भगवान्ने सुदर्शन चक्रसे ग्राहका मुख विदीर्ण करके गजराजका उद्धार किया था। यहाँ और कई तीर्थ हैं जिनमें हरिहरप्रभ, हंसतीर्थ और यक्षतीर्थ मुख्य हैं। यहाँ जो त्रिधार—त्रिवेणीमें स्नान करके देवता तथा पितरोंका तर्पण करता है तथा भगवान् शङ्करकी पूजा करता है, उसका पुनर्जन्म नहीं होता—

तीर्थे त्रिधारे यः स्नात्वा संतर्प्य पितृदेवताः।
महायोगिनमभ्यर्च्य न भूयो जन्मभाग् भवेत्॥

(वाराह० १४४। १७२)

यात्राकी तैयारी

नैपालके तीर्थोंकी यात्राके लिये कोई आज्ञापत्र नहीं लेना पड़ता, यदि आप शिवरात्रिके अवसरपर यात्रा करना चाहते हैं। शिवरात्रिके लगभग १० दिन पहलेसे रक्सौल स्टेशनसे यात्रियोंको नैपाल जानेकी पूरी छूट रहती है और शिवरात्रिके सात दिन बादतक वे काठमंडू या आन्तरिक नैपालमें रह सकते हैं। जो लोग मुक्तिनाथ जाना चाहते हैं, वे काठमंडूमें प्रार्थनापत्र देकर चैत्रतक वहाँ ठहरनेकी अनुमति सरलतासे पा जाते हैं।

जो लोग शिवरात्रिके अवसरके अतिरिक्त किसी दूसरे समय यात्रा करना चाहें, उनके लिये आवश्यक है कि अपने यहाँके जिला-अधिकारी (कलेक्टर) से प्रमाणपत्र ले लें कि वे नैपाल जानेके अधिकारी हैं तथा अपने यहाँके इन्कमटैक्स आफिसरसे प्रमाणपत्र ले लें कि उनपर कोई सरकारी टैक्स बाकी नहीं है। ये दोनों प्रमाणपत्र नैपाल-सीमापर दिखलानेपर ही वहाँ प्रवेश प्राप्त होता है।

यात्राका समय

पशुपतिनाथकी यात्रा किसी समय की जा सकती है। केवल दिसम्बर-जनवरीमें वहाँ अधिक शीत पड़ता है। भारतीय यात्री प्रायः शिवरात्रिके अवसरपर जाते हैं।

मुक्तिनाथकी यात्रा चैत्र शुक्लसे कार्तिक कृष्णतक की जा सकती है और दामोदरकुण्ड तो मुक्तिनाथसे आगे है। वहाँ जाना हो तो मुक्तिनाथकी यात्रा अगस्त-सितंबरमें करना उत्तम है; क्योंकि जून-जुलाईमें उधर वर्षा या बरफके पिघलनेके उपद्रव रहते हैं। जूनसे

पहले वहाँका मार्ग खुला नहीं रहता और सितंबरके बाद हिमपातका भय रहता है।

आवश्यक सामान

पशुपतिनाथकी यात्राके लिये तो कोई विशेष सामान नहीं चाहिये। शिवरात्रिके अवसरपर यात्रा करनेवालोंको गरम कपड़े, कम्बल तथा स्वयं भोजन बनाना हो तो भोजनके पात्र ले जाना चाहिये। वैसे मार्गमें बाजार मिलते रहते हैं, कोई कठिनाई नहीं होती।

मुक्तिनाथ तथा दामोदरकुण्डकी यात्रा करनेवालोंको दो अच्छे कम्बल, कुछ मिश्री, काली मिर्च, थोड़ी खटाई, मोमबत्ती, टार्च, भोजन बनानेका बर्तन (हलका) साथ रखना चाहिये। मुक्तिनाथतक चावल, दाल, आटा आदि मिलता रहेगा। मुक्तिनाथसे आगे दामोदरकुण्ड जाना हो तो ३-४ दिनके लिये चावल आदि साथ ले जाना पड़ता है।

पशुपतिनाथ

बिहार-प्रदेशमें पूर्वोत्तर रेलवेका स्टेशन रक्सौल है, समस्तीपुर-दरभंगा होकर या नरकटियागंज होकर रक्सौल जाया जा सकता है। भारतीय रेलवे स्टेशन रक्सौलसे लगभग एक फर्लांग दूर नैपाल-सरकार-रेलवेका स्टेशन है। वहाँ नैपाल-सरकार-रेलवेमें बैठना पड़ता है। यह ट्रेन केवल २९ मील अमलेखगंजतक जाती है।

अमलेखगंजसे भीमफेड़ी बाजार २७ मील दूर है। वहाँतक लारियाँ जाती हैं। भीमफेड़ीसे थानकोट स्थान १८ मील दूर है। यह पैदलका रास्ता है। इसमें कठिन चढ़ाई-उतराई पड़ती है; किन्तु-बीचमें दो पड़ावके स्थान हैं। दूकानें मिलती हैं। थानकोटसे काठमंडू ६ मील है। पक्की सड़क है। लारियाँ तथा टैक्सियाँ मिलती हैं। काठमंडूसे लगभग दो मीलपर पशुपतिनाथजीका मन्दिर है।

काठमंडू नगर विष्णुमती और बागमती नामक नदियोंके संगमपर बसा है। इनमेंसे बागमती नदीके तटपर नैपालके रक्षक मछंदरनाथ (मत्स्येन्द्रनाथ) का मन्दिर है। पशुपतिनाथका मन्दिर विष्णुमती नदीके तटपर है। यात्री विष्णुमतीमें स्नान करके दर्शन करने जाते हैं।

लोकमें यह बात फैली है कि पशुपतिनाथकी मूर्ति पारसकी है; किन्तु यह भ्रममात्र है। यह पञ्चमुख शिवलिङ्ग है, जो भगवान् शङ्करकी अष्टतत्त्व-मूर्तियोंमें एक माना जाता है। महिषरूपधारी भगवान् शिवका यह शिरोभाग है। पास ही एक मण्डपमें नन्दीकी मूर्ति है। पशुपतिनाथके मन्दिरके समीप ही देवीका विशाल मन्दिर है।

पशुपतिनाथ-मन्दिरसे थोड़ी ही दूरपर गुह्येश्वरी देवीका मन्दिर है। यह मन्दिर विशाल है और भव्य है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें है। सतीके दोनों जानु यहाँ गिरे थे।

यात्रियोंके ठहरनेके लिये पशुपतिनाथमें कई धर्मशालाएँ हैं। अब तो मुजफ्फरपुरसे काठमंडूको हवाई जहाज जाते हैं।

मुक्तिनाथ

मुक्तिनाथ काठमंडूसे १४० मील है। यहाँ आनेके लिये गोरखपुरसे भी एक मार्ग है। काठमंडूसे हवाई जहाजद्वारा पोखरा आना पड़ता है। यदि गोरखपुरसे आना हो तो गोरखपुरसे नौतनवाँ ट्रेनसे और नौतनवाँसे भैरवहा मोटरसे आकर भैरवहासे पोखरा हवाई जहाजसे जा सकते हैं। गोरखपुरसे सीधे भैरवहातक मोटर-बसें भी आती हैं। यदि हवाई जहाजसे यात्रा न करना हो तो गोरखपुरसे भैरवहा मोटरसे, भैरवहासे बुटवल मोटरसे और वहाँसे पैदल यात्रा पालपा, बागतुंग होकर करना पड़ता है। इस मार्गसे मुक्तिनाथतक पैदल ६४ मील चलना पड़ता है। मुक्तिनाथमें धर्मशाला है, यह मुक्तिनाथ-मन्दिरसे १ मील पहले मिल जाती है।

पोखरासे मुक्तिनाथ

पोखरासे नागडांडा	—	७ मील
घोरे पानी	—	९ मील
दानभंसार	—	९ ,,
टुकचे बाजार	—	११ ,,
मुक्तिनाथ	—	१२ ,,

इस पैदल मार्गमें धर्मशालाएँ नहीं हैं। दूकानदारोंके यहाँ ठहरनेकी सुविधा प्राप्त हो जाती है। मुक्तिनाथ पहुँचनेसे पूर्व ही कागबेनी-तीर्थ मिलता है।

मुक्तिनाथ—मुक्तिनाथ शालग्राम-क्षेत्र है। दानभंसारसे गण्डकीके पुलिनपर और मार्गके समीपके पर्वतपर शालग्राम-शिलाका मिलना प्रारम्भ हो जाता है। गण्डकी नदीका उद्गम तो दामोदरकुण्ड है; किंतु उसके किनारे जहाँतक शालग्राम पर्वतका विस्तार है, वह पूरा क्षेत्र शालग्राम-क्षेत्र है। इस क्षेत्रमें शालग्रामके अनेक रूप पाये जाते हैं। रंग, आकार, चक्र तथा मुखादिके भेदसे शालग्रामशिला हरि, विष्णु, कृष्ण, राम, नृसिंह आदि मानी जाती है।

गण्डकी नदीको नारायणी या शालग्रामी भी कहते हैं। मुक्तिनाथके अन्तर्गत नारायणी नदीमें गरम पानीके सात झरने हैं, इनमेंसे अग्निकुण्ड नामक झरना एक पर्वतसे निकलता है। उसके उद्गमके पास पर्वतमें अग्निज्वालाएँ दृष्टि पड़ती है। मुक्तिनाथमें कई देवमन्दिर हैं तथा धर्मशाला भी है। मुक्तिनाथ ५१ शक्तिपीठोंमें १ पीठ है। यहाँ सतीका दाहिना गण्डस्थल गिरा था।

दामोदरकुण्ड

मुक्तिनाथसे दामोदरकुण्ड १६ मील है। आगे कोई मार्ग नहीं बना है। टुकचे बाजारसे मार्गदर्शक, कुली, भोजन-सामान तथा तंबू ले जाना चाहिये; क्योंकि बरफपर अनुमानसे ही चलना पड़ता है। दो दिन चलनेपर पहले नकली दामोदरकुण्ड मिलता है। एक दिन आगे और जानेपर असली (शुद्ध) दामोदरकुण्ड प्राप्त होता है। नैपालके लोगोंकी धारणा है कि दामोदरकुण्डसे सजीव (अत्यन्त प्रभावशाली) शालग्राम पाये जा सकते हैं, किंतु अत्यन्त कठिन मार्ग तथा बहुत शीत होनेसे वहाँतककी यात्रा कम ही लोग करते हैं।

नैपालके कुछ तीर्थ

बुद्धनाथ

यह बौद्धोंका मन्दिर है और काठमंडूसे ३½ मीलकी दूरीपर है। इसे मानदेव नामके राजाने प्रायः विक्रमकी छठी शताब्दीमें निर्माण कराया था। शीत-ऋतुमें यहाँ तिब्बतनिवासी दर्शनार्थी अत्यधिक संख्यामें आते हैं। मन्दिरके चारों ओर आयताकार दीवाल है, जिसपर अमिताभकी अगणित मूर्तियाँ बनी हैं। नैपालके अधिकांश मन्दिरोंमें हिंदू एवं बौद्ध धर्म तथा कलाओंका मिश्रण है और यह मन्दिर भी वैसा ही है। बुद्धनाथकी सड़क अच्छी है और सर्वत्र कोई-न-कोई आकर्षक वस्तु देखनेको मिलती जाती है।

मत्स्येन्द्रनाथ (पाटन)

पाटनमें यद्यपि बहुत-से प्राचीन तथा नवीन बौद्ध-मन्दिर हैं, तथापि उनमें मत्स्येन्द्रनाथ किंवा मीननाथका मन्दिर सर्वाधिक आकर्षक है। यह शिवालयके ढंगका है और इसकी चमक-दमक बड़ी ही निराली है। बगलमें ही एक छोटा स्तूपाकार मन्दिर है। बड़े-बड़े छायादार वृक्षोंसे इसकी शोभा और बढ़ जाती है। दरवाजेपर दायें-बायें बहुतसे देवताओं तथा पशुओंके चित्रमय प्रस्तर गड़े हैं, जो चीनी स्थापत्यकलाके प्रतीक जान पड़ते हैं। यहाँका श्रीराधा-कृष्ण-मन्दिर भी बड़ा आकर्षक है। यहाँ उत्तर भारत तथा अकबरके प्रासादोंकी स्थापत्यकलाका मिश्रण दृष्टिगोचर होता है।

सूर्यविनायक गणेश

यह मन्दिर भाटगाँवमें है। भाटगाँव काठमंडू (नेपालकी राजधानी) से आठ मीलकी दूरीपर है और प्राचीन नेवार राजवंशकी तीन राजधानियोंमेंसे एक है। १७६९ के गुर्खा-युद्धमें बिना लड़ाईके ही समर्पण कर दिये जानेके कारण, इसकी कला-कौशलको कोई क्षति नहीं पहुँची है। यह नगर पाटनकी अपेक्षा स्वच्छ तथा सुन्दर है। यहाँ देवी, भवानी आदि कई दूसरे मन्दिर भी बड़े आकर्षक हैं। पश्चिमकी ओर 'सिद्धपोखरी' एक बड़ा सरोवर है, जो सन् १६४०-५० में निर्मित हुआ था। इसमें चीनसे लाकर सुनहली मछलियाँ पाली गयी हैं।

विनायक गणेश-मन्दिर अत्यन्त भव्य है। मन्दिरके समक्ष एक स्तूप है, जिसके सिरेपर कमल बना है। कमलके ऊपर गणेशजीका वाहन चूहा है। इसकी बायीं ओर घण्टा है, जिसके बगलमें कई क्षुद्र घण्टिकाएँ हैं।

चंगु-नारायण

यह मन्दिर प्रायः काठमंडूसे १० मीलकी दूरीपर है और एक पहाड़ीके ऊपर बना है। यह एक चौकोर प्राङ्गणके मध्यमें है तथा दुमंजिले धरहरेके आकारका है। इसके प्राङ्गणका कुछ भाग तो घाससे ढका है और अवशिष्ट भाग सुन्दर चिकनी ईंटोंसे जड़ा है। मन्दिरका प्रमुख द्वार अत्यन्त सुन्दर है। प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक सिलवाँ लेवीने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है तथा नैपाली मन्दिरोंमें इसे सर्वोत्तम बताया है। दरवाजेके दोनों बगल दो प्रस्तर-स्तूपोंपर शङ्ख तथा चक्र बने हैं। इन्हें सिलवाँ लेवी ४९६ ई० की रचना बतलाता है। दूसरे विदेशी लेखकोंकी दृष्टिमें यह स्थान नैपाल तराईके सभी स्थलोंमें अधिक शान्त तथा आनन्दप्रद स्थल है।

नारायण-चतुष्टय—चंगुनारायणके आस-पास विशङ्कु-नारायण, शिखरनारायण तथा एचंगुनारायण नामके गाँव हैं और इन गाँवोंमें इन्हीं नामोंके भगवान् नारायणके मन्दिर हैं। इन चारों नारायण-मन्दिरोंका एक ही दिन दर्शन करना अत्यन्त पुण्यप्रद माना जाता है। इन चारों

गाँवोंकी यात्रा करनेमें २२ मील चलना पड़ता है। श्रद्धालु लोग पर्याप्त कठिनाई उठाकर भी चारों नारायण-मन्दिरोंका एक ही दिन दर्शन करते हैं।

शङ्खु—यह गाँव चङ्गुनारायणसे ३ मील दूर है। यहाँ सिद्धि-विनायकका मन्दिर है।

गोकर्ण—पशुपतिनाथसे ईशानकोणमें बागमती नदीके किनारे यह तीर्थ है।

बोधनाथ—काठमंडू तथा पशुपतिनाथके मध्यमें यह गाँव है। यहाँ बौद्ध मन्दिर है। बौद्ध यात्री यहाँ दर्शनार्थ आते हैं।

गोदावरी—फूलचोया नामक पर्वतके समीप यह नगर है। बारह वर्षमें एक बार यहाँ एक महीनेतक बड़ा भारी मेला लगता है। यहाँ गोदावरी झरना है। लोगोंका विश्वास है कि दक्षिणकी गोदावरी नदीसे इस निर्झरका भूगर्भसे सम्बन्ध है।

नीलकण्ठ—शिवपुरी-शिखरपर यह गाँव है। यहाँ एक सरोवर है, उसके मध्यमें एक अण्डाकार बृहत् नीलवर्ण शिवलिङ्ग-शिला है। यह लिङ्ग-मूर्ति सरोवरमें नीचेतक गयी है। श्रावणमें यहाँ मेला लगता है।

सरोवरके उत्तर उच्च पर्वत है। उसके तीन शिखरोंसे तीन जलप्रवाह निकलकर एक दूसरे सरोवरमें गिरते हैं। इनको त्रिशूलधारा कहा जाता है। कहा जाता है कि भगवान् शङ्करने अपने त्रिशूलसे इन्हें प्रकट किया है। यहींसे त्रिशूलगङ्गा नदी निकलती है। इस पर्वतपर छोटे-बड़े २२ सरोवर हैं।

देवीघाट—नवकोटसे लगभग दो मीलपर त्रिशूलगङ्गा और सूर्यमती नदियोंका संगम है। संगमपर देवी तथा भैरवके मन्दिर हैं। यहाँ वैशाखी पूर्णिमाको मेला लगता है।

कीर्तिपुर—थानकोट गाँवके पूर्व पर्वतपर जो छोटे-बड़े गाँव हैं, उनमें कीर्तिपुर मुख्य—केन्द्रका बाजार है। यहाँ एक पहाड़ी किला है। पासमें ही भैरव-मन्दिर है, जो बहुत प्राचीन है। इस मन्दिरकी विशेषता यह है कि मुख्य देवताके रूपमें एक व्याघ्रमूर्ति है। आस-पासके लोगोंमें इस मन्दिरकी बहुत मान्यता है।

नगरके उत्तर एक पर्वतपर गणेशजीका मन्दिर है। मन्दिरमें अष्टमातृका-मूर्तियाँ भी हैं।

नवकोट—काठमंडूसे २५ मील पूर्व यह नगर है। यहाँ भैरवी देवीका मन्दिर है।

स्वयम्भूनाथ—काठमंडूसे पश्चिम दो मील दूर पर्वतशिखरपर यह बौद्ध-मन्दिर है। ४०० सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जाना पड़ता है। प्रथम सीढ़ीके पास बुद्धकी मूर्ति है और एक वेदीपर वज्रधारी इन्द्रकी प्रतिमा है।

बक्सर (सिद्धाश्रम)

पूर्वी रेलवेकी मुगलसराय-पटना लाइनपर बक्सर स्टेशन है। यहाँ अब अच्छा नगर है, बाजार है। त्रेतामें यह स्थान सिद्धाश्रम कहा जाता था। महर्षि विश्वामित्रका आश्रम यहीं था। यहींपर श्रीराम-लक्ष्मणने मरीच-सुबाहु आदिको मारकर ऋषिके यज्ञकी रक्षा की थी। प्राचीन समयमें यह तपोवन था। आज भी गङ्गा-किनारे चरित्रवनका कुछ थोड़ा अवशेष बचा है।

बक्सरमें संगमेश्वर, सोमेश्वर, चित्ररथेश्वर, रामेश्वर, सिद्धनाथ और गौरीशङ्कर—ये शङ्करजीके प्राचीन मन्दिर माने जाते हैं। बक्सरकी पञ्चक्रोशी परिक्रमा होती है। परिक्रमामें वहाँके सभी तीर्थ आ जाते हैं, इसलिये परिक्रमाका वर्णन नीचे दिया जा रहा है—

परिक्रमा—मार्गशीर्षकृष्णा पञ्चमीको गङ्गास्नान करके बक्सरसे अहिरवली गाँव जाय। कुछ लोग यहीं गौतमाश्रम मानते हैं (दूसरा गौतमाश्रम जनकपुरके पास है)। यहाँ अहल्याका दर्शन किया जाता है। यहीं रात्रिवास करना चाहिये।

अहिरवलीसे चलकर दूसरा विश्राम नदावँ गाँवमें होता है। इसे नारदाश्रम कहा जाता है। वहाँ नारदकुण्डमें स्नान तथा केशवभगवान्का दर्शन करके भभूवर ग्राम जाना चाहिये। इसे भार्गवाश्रम कहा जाता है। यहीं रात्रिविश्राम होता है। यहाँ भार्गव-सरोवर है। अगला रात्रिविश्राम उनवावँ ग्राम (उद्दालकाश्रम) में होता है। वहाँ उद्दालक-तीर्थ है। वहाँसे चलकर चरित्रवन आना चाहिये।

चरित्रवन महर्षि विश्वामित्रका यज्ञस्थल है। पूरे चरित्रवनमें लगभग १ मील लंबे और आध मील चौड़े क्षेत्रमें छ:से आठ फुटकी दूरीपर प्राचीन यज्ञकुण्ड हैं। इन यज्ञकुण्डोंकी पंक्तियाँ मिट्टीसे दबी होनेके कारण

केवल गङ्गा-तटपर दीखती हैं। पक्के खपरैलसे बँधे पूरे कूएँकी गहराईके ये कुण्ड हैं। इनमेंसे अनेक बार लोगोंको जले हुए यवादि यज्ञान्न मिलते हैं।

चरित्रवन पहुँचनेपर परिक्रमा पूर्ण हो जाती है। इस चरित्रवनसे लगभग डेढ़ मील पश्चिम गङ्गाजीमें ठोर नदी मिलती है। वहींपर संगमेश्वर-मन्दिर है। उसके पास ही जेलके पास वामनेश्वर-मन्दिर है। यहाँ वामनाश्रम कहा जाता है। वामनाश्रमसे चरित्रवनकी ओर आनेपर सोमेश्वर शिवमन्दिर तथा श्रीरघुवरजीका मन्दिर पड़ता है। चरित्रवनमें रामटीलेपर श्रीखाकीबाबा कई मन्दिर बनवा रहे हैं। वहाँ नींवके पास भूमि खोदनेसे बहुत-से प्राचीन मिट्टीके कलश, यव आदि, जले हुए यज्ञान्न तथा कुछ मूर्तियाँ निकली हैं। इस स्थानके पास ही राम-चबूतरा है और उसके पास श्रीलक्ष्मीनारायण-मन्दिर है। इसका श्रीविग्रह प्राचीन है, वह गङ्गाजीमें पाया गया था। यहाँसे कुछ पूर्व चित्ररथेश्वर शिवमन्दिर है। यह मन्दिर अहल्याबाईका बनवाया हुआ है।

चरित्रवनके पूर्वमें ताड़का-नाला है। इस नालेसे आगे रामरेखा-घाट है। यही बक्सरका प्रधान घाट है। घाटके ऊपर श्रीरामेश्वर-मन्दिर है। इस मन्दिरके पास ही श्रीराम-मन्दिर है, जिसके घेरेमें एक भूगर्भस्थ स्थानमें ब्रह्माजीकी मूर्ति है। चरित्रवनमें रानीघाटपर मदोत्कटा देवी हैं।

बक्सरके पूर्वी छोरपर सिद्धनाथका मन्दिर है। नगरमें एक ओर व्याघ्रसर नामक सरोवर है। उसके पास ही गौरीशङ्कर-मन्दिर है। बक्सरमें स्नानके लिये ५ स्थान पवित्र माने गये हैं—विश्रामकुण्ड (कोयिरिया पुरवा गाँव), व्याघ्रसर, रामरेखाघाट, ठोरसंगम और विश्वामित्रह्रद (चरित्रवनमें गङ्गाजीमें)।

यह बक्सर (सिद्धाश्रम) कारूष देशमें माना जाता है। द्वापरमें इसी देशका राजा पौण्ड्रक (मिथ्यावासुदेव) था, जो श्रीकृष्णद्वारा मारा गया।

आरा जिलेके चार तीर्थ

ऊली—शाहाबाद जिलेमें बक्सर तो महर्षि विश्वामित्रकी यज्ञस्थली रही ही, ऊली[1] भी उनकी तपोभूमि है। यहाँ एक सरस्वती नदी भी है, जो शोणभद्रमें वहीं मिल गयी है। महाभारत-शान्तिपर्व, ब्रह्मपुराण, देवीभागवत तथा वाल्मीकीय रामायण आदिमें तपस्यार्थ इनके दक्षिण जानेकी बात आती है। उस समय गुरुके वक्री तथा चन्द्रादि ग्रहोंके लक्षण-वैकृत्यके कारण लगातार कई वर्षोंतक वृष्टि नहीं हुई और बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ गया था। गुरुपुत्रोंके शापसे चाण्डाल होकर त्रिशङ्कु भी विश्वामित्रकी खोजमें यहीं आये और जिस-किसी प्रकार उन्होंने इनके स्त्री-पुत्रोंकी दुर्भिक्षसे जान बचायी। इससे प्रसन्न होकर विश्वामित्रने त्रिशङ्कुको (यज्ञानुष्ठानद्वारा) सशरीर स्वर्ग भेजा। पर देवताओंने उनके चाण्डाल-शरीरको स्वर्गके अयोग्य समझ वहाँसे उलटा गिरा दिया। फिर विश्वामित्रके रोकनेसे वे बीचमें ही उलटे लटक गये। वहाँ उनके मुखसे लालापात होनेसे कर्मनाशा नामकी नदी बन गयी, जिसके जलके स्पर्शमात्रसे मनुष्यके सभी पुण्य नष्ट हो जाते हैं।[2] वह कर्मनाशा यहीं कैमूर पर्वत (विन्ध्यकी एक श्रेणी) से निकली है। यहाँसे अत्यन्त समीप शोणभद्र नदके बीचमें रावणका स्थापित किया हुआ अत्यन्त प्राचीन शिवलिङ्ग है, जिसे दससीसानाथ कहते हैं। एक यह भी मत है कि रावण एक शिवलिङ्ग कैलाससे लङ्का ले जा रहा था। यहाँ आनेपर उसे लघुशङ्का लगी। उसने उसे एक ब्राह्मणको देकर लघुशङ्का करना आरम्भ किया और उसीसे कर्मनाशा निकली। देर होते देख ब्राह्मणने (जो वस्तुतः विष्णु ही थे) लिङ्गको वहीं शोणमें रख रास्ता लिया। पूर्व प्रतिज्ञानुसार रावणसे वह लिङ्ग नहीं

१-यह स्थान डेहरी-रोहतास लाइट रेलवेके रोहतास स्टेशनसे १० मील दक्षिण है।

२-कर्मनाशाजलस्पर्शात् करतोयाविलङ्घनात्। गण्डकीबाहुतरणाद् धर्मः स्खलति कीर्तनात्॥

'कर्मनाशाके जलको छूनेसे, (बंगालकी) करतोया नदीके लाँघनेसे, गण्डकीमें तैरनेसे और स्वयं अपने पुण्यको बखाननेसे धर्मका क्षय होता है।'

(आनन्दरामा०, यात्रा-का० ९। ३, याग-का० ३। ३६ आदि कई स्थलोंपर यह श्लोक आता है।)

636 Tirthank_Section_9_1_Back

उठा और वहीं रह गया। यहीं कोईल (एक चौड़ी तथा बड़ी तेज धारवाली) नदी भी मिलती है। यहाँ शंकरजीके पास शिवरात्रिके निकट महीनोंतक भारी मेला होता है। यहाँसे समीप ही पर्वतमें महादेवखोह आदि कई साधनोपयोगी गुफाएँ हैं।

गुप्तेश्वरनाथ

यहाँसे प्रायः ११ मील उत्तर अर्जुनगिरि (विन्ध्यके एक शृङ्ग) के पादतलमें एक सिद्ध गुफा है। उसमें प्रायः २०० गज भीतर जानेपर एक विचित्र (निराधार पत्थरोंके ऊपर विराजमान) शिवलिङ्ग दृष्टिगोचर होता है। यह स्थान पहले बड़ा सुरम्य था। (शोणभद्रका प्रवाह यहाँसे पौन मील है।) पर अब पर्वतमें खानोंके खुदनेसे इसकी छटा नष्ट हो रही है। यहाँ जानेके लिये डेहरी-रोहतास लाइट रेलवेका बनजारी स्टेशन ही उपयुक्त है।

ब्रह्मपुर

यह स्थान पूर्वी रेलवेके मेन लाइनपर रघुनाथपुर स्टेशनसे उत्तर दो मीलपर है। यहाँ श्रीब्रह्मेश्वरनाथ महादेवजीका बहुत प्राचीन मन्दिर है। मन्दिरके समीप एक विशाल सरोवर है। फाल्गुनकृष्णा त्रयोदशी (महाशिवरात्रि) और वैशाखकृष्णा त्रयोदशीके अवसरपर यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है; उस समय यहाँ दर्शन और पूजनके लिये लाखों यात्री आते हैं। यहाँसे उत्तर लगभग डेढ़ मीलपर श्रीगङ्गाजी हैं। वहाँ जाकर यात्रीलोग स्नान करते और गङ्गाजल लाकर श्रीब्रह्मेश्वरनाथजीपर चढ़ाते हैं। विहार-सरकारद्वारा मेलेके लिये विशेष प्रबन्ध रहता है। मन्दिरके पास एक धर्मशाला है।

रोहितेश्वर

रोहितास-स्टेशनसे ३ मीलपर रोहिताश्वाचलपर एक देवीमन्दिर तथा एक विशाल शिवमन्दिर है, जो औरंगजेब-द्वारा तोड़े जानेसे भग्नावस्थामें ही विद्यमान हैं। यहाँसे १ मील पश्चिम रोहतास नामका प्राचीन इतिहासप्रसिद्ध दुर्ग है, जो अत्यन्त सुदृढ़ है। इसके चारों ओर कई तालाब, स्रोत तथा मन्दिर हैं। पर्वतके ऊपर सघन वनमें इस दुर्गकी शोभा बड़ी निराली है। श्रावणमें यहाँ दिन-रात यात्रियोंकी भीड़ लगी रहती है। इसके दीवालपरकी लिपिसे सिद्ध है कि इतिहासप्रसिद्ध राजा मानसिंह यहाँ बहुत दिनोंतक रहे थे। शेरशाहने भी इसमें बहुत दिनोंतक शरण ली थी।

पटना

पूर्वीरेलवेपर पटना जंकशन-स्टेशन है। यहाँ दो प्राचीन मन्दिर हैं—

१- चौकमें हरिमन्दिरसे दक्षिण एक गलीमें छोटी पटन-देवीका मन्दिर है। यहाँ महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वतीकी मूर्तियाँ हैं।

२- चौकसे ३ मील पश्चिम महाराजगंजमें बड़ी पटनदेवीका मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें एक पीठ होना चाहिये; क्योंकि सतीकी दक्षिण जङ्घा मगधमें गिरी थी। यहाँ श्रीबिड़लाजीका बनवाया हुआ एक सुन्दर श्रीलक्ष्मीनारायणजीका मन्दिर भी है।

पटना गङ्गातटपर बसा है। इसका प्राचीन नाम पाटलिपुत्र है। मगध प्रदेशकी एक प्राचीनकालसे राजधानी रहा है। सिखोंके दसवें गुरु श्रीगोविन्दसिंहकी जन्मभूमि होनेसे यह सिखतीर्थ भी है।

हरिमन्दिर—गुरु गोविन्दसिंहकी जन्मभूमिपर जो मन्दिर है, उसका नाम हरिमन्दिर है। यह चौकके पास एक गलीमें है। मन्दिर बहुत भव्य है। इसके पूर्वी दालानमें गुरु गोविन्दसिंहकी दो जोड़ी चरणपादुकाएँ हैं और पश्चिमी दालानमें सिंहासनपर ग्रन्थसाहब प्रतिष्ठित हैं।

नवम गुरु तेगबहादुरकी धर्मपत्नी श्रीमती गुर्जरीदेवीकी कोखसे इसी स्थानपर पौषशुक्ला सप्तमी सं० १७२३ (सन् १६६६ ई०) के दिन गुरु गोविन्दसिंहका जन्म हुआ था। प्रतिवर्ष पौषशुक्ला सप्तमीको यहाँ महोत्सव मनाया जाता है।

जैनतीर्थ—पटना सिद्धक्षेत्र माना गया है। यहाँसे सेठ सुदर्शन मोक्ष गये हैं। स्टेशनके पास एक टेकरीपर उनकी चरणपादुकाएँ बनी हैं। पासमें एक जैनधर्मशाला है। पटनामें जैनोंके ५ मन्दिर और चैत्यालय हैं।

वैकुण्ठपुर

पुनपुन स्टेशनसे यहाँ जानेके लिये सवारियाँ मिलती हैं। गया-पटना लाइनपर पुनपुन स्टेशन है।

पुनपुन नदी वैकुण्ठपुरके पास गङ्गामें मिलती है। यह संगम-स्थान पवित्र तीर्थ माना जाता है। यहाँ गङ्गातटपर घाट तथा देवमन्दिर हैं। धर्मशाला भी यहाँ है। ग्रहण, शिवरात्रि आदि पर्वोंपर यहाँ मेला लगता है।

कश्यपा (तारा देवी)

(लेखक—श्रीरामेश्वरदासजी)

पूर्वी रेलवेकी गया-पटना लाइनपर मखदूमपुर गया स्टेशन है। वहाँसे ८ मील पैदल जाना पड़ता है।

यहाँ भगवती ताराका मन्दिर है। मन्दिरके पास एक सरोवर है। कहा जाता है कि काश्यप नामक मुनिने यहाँ तपस्या की और यह देवीमूर्ति स्थापित की। मन्दिरमें भगवान् विष्णु, कुबेर तथा अन्य अनेक देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। दोनों नवरात्रोंमें मेला लगता है।

बराबर

गया-पटना लाइनपर गयासे १२ मील दूर बेला स्टेशन है। वहाँसे ९ मील पैदल जाना पड़ता है। किंतु मार्ग जंगलमेंसे जाता है। इधरकी वन्य जातियोंके लोग प्रायः १०-१५ यात्रियोंके दलपर भी आक्रमण कर देते हैं और निर्दयतापूर्वक घायल करके उनके वस्त्रतक छीन लेते हैं। यात्रीको या तो बंदूक-जैसे अस्त्रसे सुसज्जित होकर आना चाहिये अथवा श्रावण महीनेमें या अनन्तचतुर्दशीपर बराबरके मेलेके समय भीड़के साथ आना चाहिये।

बराबरके पर्वतको संध्यागिरि कहा जाता है। कहते हैं कि यहीं बाणासुरकी राजधानी थी। श्रीकृष्णके पौत्र अनिरुद्धका विवाह यहीं बाणासुरकी पुत्री ऊषासे हुआ था।

बराबरका शिवमन्दिर बहुत सिद्ध स्थान माना जाता है। यहाँ पर्वतीय गुफाएँ दर्शनीय हैं।

डेहरी आन सोन—हबड़ाँ-गया लाइनपर यह स्टेशन है। स्टेशनसे कुछ दूर देवीका स्थान है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें है। सतीका दक्षिण नितम्ब यहाँ गिरा था।

देवकुण्ड (च्यवनाश्रम)

मगधे च गया पुण्या नदी पुण्या पुनःपुनः।
च्यवनस्याश्रमं पुण्यं पुण्यं राजगृहं वनम्॥

मगधमें गया, पुनपुन नदी, च्यवनाश्रम और राजगृह—ये चार पवित्र क्षेत्र हैं। इनमेंसे च्यवनाश्रमका नाम अब देवकुण्ड है। यह स्थान गया जिलेमें है। निकटतम रेलवे-स्टेशन जहाँनाबाद (पटना-गया लाइनपर गयासे २७ मील दूर) है। वहाँसे ३६ मील दूर यह स्थान है। यहाँ देवकुण्ड नामक सरोवर और च्यवनेश्वर नामका शिव-मन्दिर है। महाराज शर्यातिकी पुत्री सुकन्याने यहीं दीमकोंकी बाँबीसे ढँके परम तपस्वी च्यवन ऋषिके चमकते नेत्रोंको कुतूहलवश काँटेसे विद्ध कर दिया था। ऋषिके कोपसे बचनेके लिये राजाने सुकन्याका विवाह च्यवनजीसे कर दिया। कुछ काल पश्चात् देववैद्य अश्विनीकुमार ऋषिके आश्रममें पधारे, उन्होंने देवकुण्डमें ऋषिको स्नान कराके युवा बना दिया और उनके नेत्र भी स्वस्थ कर दिये।

गया

गया-माहात्म्य

एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोऽपि गयां व्रजेत्।
यजेत वाश्वमेधेन नीलं वा वृषमुत्सृजेत्॥

(पद्म० स्वर्ग० ३८। १७, वायु० अग्नि० आदि कई पुराणोंमें)

'बहुत-से पुत्रोंकी मनुष्यको इसीलिये कामना करनी चाहिये कि उनमेंसे कोई एक गया हो आये····· अथवा पिताकी सद्गतिके लिये, नीले रंगका साँड़ छोड़ दे।'

ततो गयां समासाद्य ब्रह्मचारी समाहितः।
अश्वमेधमवाप्नोति गमनादेव भारत॥
यत्राक्षय्यवटो नाम त्रिषु लोकेषु विश्रुतः।
पितॄणां तत्र वै दत्तमक्षयं भवति प्रभो॥
महानद्यामुपस्पृश्य तर्पयेत् पितृदेवताः।
अक्षयानाप्नुयाल्लोकान् कुलं चैव समुद्धरेत्॥

(महा० वन० तीर्थयात्रा० ८४।८२—८४; पद्म० आदि० ३८।२—४)

'तत्पश्चात् गया जाकर ब्रह्मचर्य-पालनपूर्वक एकाग्रचित्त हो मनुष्य अश्वमेध-यज्ञका फल प्राप्त करता है; वहाँ अक्षयवट है, जो तीनों लोकोंमें विख्यात है। उसके समीप पितरोंके लिये दिया हुआ सब कुछ अक्षय हो जाता है। वहाँ महानदीमें स्नान करके जो देवताओं तथा पितरोंका तर्पण करता है, वह अक्षय लोकोंको प्राप्त होता है तथा अपने कुलका उद्धार कर देता है।'

गयायां नहि तत् स्थानं यत्र तीर्थं न विद्यते।
सांनिध्यं सर्वतीर्थानां गयातीर्थं ततो वरम्॥
ब्रह्मज्ञानेन किं साध्यं गोगृहे मरणेन किम्।
वासेन किं कुरुक्षेत्रे यदि पुत्रो गयां व्रजेत्॥

(वायुपुराण, गयामाहा० ३)

'गयामें ऐसा कोई स्थान नहीं है, जो तीर्थ न हो। वहाँ सभी तीर्थोंका सांनिध्य है, अतः गयातीर्थ सर्वश्रेष्ठ है। ब्रह्मज्ञान, कुरुक्षेत्रके वास तथा गो-शालामें मरनेसे क्या लेना है, यदि पुत्र गया चला जाय (और वहाँ पिण्डदान कर दे)।'

गया

भारतवर्षका प्रमुख पितृतीर्थ गया है। पितर कामना करते हैं कि उनके वंशमें कोई ऐसा पुत्र उत्पन्न हो, जो गया जाकर वहाँ उनका श्राद्ध करे। लोगोंमें यह भ्रान्त धारणा घर कर गयी है कि गयामें पिण्डदान करनेके पश्चात् फिर पितरोंका वार्षिक श्राद्ध नहीं करना चाहिये। सच बात तो यह है कि गयामें पिण्डदानसे पितरोंकी अक्षय तृप्ति होती है। इसलिये यदि उसके पश्चात् वार्षिक श्राद्ध न किया जाय तो श्राद्ध न करनेका पाप नहीं होता; किंतु यदि वार्षिक श्राद्ध किया जाय तो वह उत्तम माना जाता है। उससे पितर प्रसन्न ही होते हैं।

एक कोस क्षेत्र गया-सिर माना जाता है, ढाई कोसतक गया है और पाँच कोसतक गयाक्षेत्र है। इसीके मध्यमें सब तीर्थ आ जाते हैं।

गया जानेकी विधि*

गया जानेवालेको चाहिये कि पहले अपनी पितृभूमिपर जाकर मस्तक तथा दाढ़ी-मूँछके पूरे बाल मुँड़वाकर गैरिक वस्त्र पहनकर पितरोंको आमन्त्रित करे। सुगन्धित द्रव्योंको पानीमें घोलकर अथवा दूधसे धारा गिराते हुए पूरे ग्राम तथा ग्रामके श्मशानकी परिक्रमा करे।

इसके पश्चात् घर न जाकर ग्रामसे कम-से-कम ४ मील दूर चला जाय और वहाँ पितृ-श्राद्ध करे और श्राद्धसे बचे अन्नका भोजन करके वहीं रात्रि-विश्राम करे। प्रातःकाल उठकर स्नानादि करके तब आगे प्रस्थान करे। गयासे लौटकर हवनादि करके तब गैरिक वस्त्रोंका त्याग किया जाता है।

गया पहुँचनेसे पहले यात्रीको पुनपुन नदीके तटपर श्राद्ध करना चाहिये। जो लोग पटनासे गया आते हैं, उन्हें पूर्वी रेलवेकी पटना-गया लाइनके पटना जंकशनसे ९ मीलपर पुनपुन स्टेशन मिलता है। यहाँ छोटा-सा बाजार है। यहीं उतरकर लोग श्राद्ध कर सकते हैं। जो लोग सीधे गया पहुँच गये हों, वे भी वहाँसे पहले पुनपुन जाकर श्राद्ध करके गया लौट सकते हैं। जो लोग बनारस-मुगलसरायकी ओरसे जाते हैं, वे सोननगर स्टेशन उतर जाते हैं और वहाँसे डेढ़ मील पूर्व पुनपुनके तटपर जाकर श्राद्धादि करके तब गया जाते हैं।

* गया-माहात्म्यमें यह बात स्पष्टरूपसे आती है कि गयामें किसी भी समय पिण्डदान किया जा सकता है। जो विधिपूर्वक वहाँ नहीं गये हैं, अकस्मात् पहुँच गये हैं या जो पूरी विधिका पालन नहीं कर सकते, वे भी गयामें पितृ-श्राद्ध कर सकते हैं।

पूर्व-भारतके कुछ मन्दिर

श्रीरामेश्वर-मन्दिर, बक्सर

श्रीरघुवरजीका मन्दिर, बक्सर
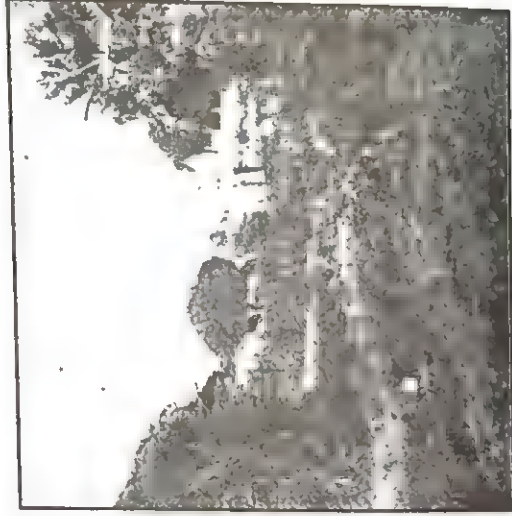
श्रीलक्ष्मीनारायणका श्रीविग्रह, बक्सर

श्रीशिव-मन्दिर, तपोवन (गया)

राजगृह-कुण्ड

नालंदाकी एक खुदाईमें निकले मन्दिरके भग्नावशेष
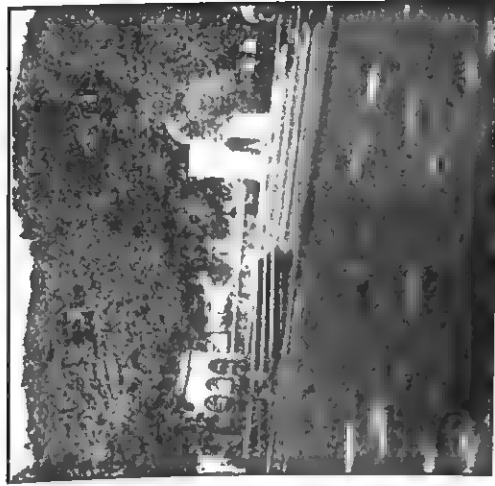
गया और उसके आस-पास

श्रीदामोदर-मन्दिर, गया

गयाके श्रीदामोदर-मन्दिर और विष्णुपद (पीछेसे)

श्रीब्रह्माजीका मन्दिर, ब्रह्मयोनि, गया

प्रेतशिलाके नीचे ब्रह्मकुण्ड, गया

रामशिलाके नीचेका मन्दिर, गया

बुद्धगयाका मन्दिर तथा पवित्र बोधिवृक्ष

मार्ग

पूर्वी रेलवेपर गया मुख्य स्टेशन है। कलकत्तेसे गया होकर दिल्लीतक सीधी ट्रेनें जाती हैं। पटनासे भी गयातक एक लाइन है। गया सड़कके मार्गसे भी आसपासके सभी बड़े नगरोंसे सम्बद्ध है।

ठहरनेके स्थान

गयामें प्रायः यात्री पंडोंके घरोंपर ठहरते हैं। धर्मशालाएँ कई हैं—१-सेठ शिवप्रसादजी झुँझनूवालेकी, स्टेशनके पास; २-इन्हींकी चाँद-चौरेके पास; ३-श्रीगुलराज-रामविलासकी, चौक; ४-भारत-सेवाश्रम-संघकी; ५-महाबोधि सोसायटीकी, बुद्ध-गयामें (इसमें केवल बौद्ध ठहर सकते हैं); ६-जैन-धर्मशाला, स्टेशनसे १½ मीलपर।

दर्शनीय स्थान

गयाका मुख्य मन्दिर विष्णुपद है। यह स्थान स्टेशनसे लगभग दो मील दूर है। गयाके अन्य स्थान भी दूर-दूर हैं; किंतु सब कहीं ताँगे, रिक्शे आदि सवारियाँ मिलती हैं।

फल्गु—यह नदी गयाके पूर्व बहती है। इसमें केवल वर्षा-ऋतुमें जल रहता है। अन्य महीनोंमें नदीकी रेतमें गड्ढा करनेपर स्वच्छ जल निकल आता है। गयाके पूर्व नगकूट पहाड़ी है, उससे दक्षिण फल्गु नदीका नाम महाना हो जाता है। गयासे दक्षिण ३ मीलपर नीलाञ्जन नदी इस महाना नदीमें मिलती है। उस संगमसे १ मील दक्षिण सरस्वतीके मन्दिरतक इस नदीका नाम सरस्वती है। मधुस्रवा नामकी एक छोटी नदी गयासे दक्षिण महानामें मिलती है। इसकी धारा वर्षाके बाद (फल्गुके सूख जानेपर) फल्गुसे पृथक् होकर गदाधर-मन्दिरके नीचे बहती है। गयामें (पुनपुन-श्राद्धके अतिरिक्त) यात्रीके श्राद्धकर्म सात दिनके हैं (अधिकांश लोग उन्हें १५ या १७ दिनोंमें विभाजित करके पूर्ण करते हैं)। इनमेंसे प्रथम दिन फल्गुमें स्नान और फल्गुके तटपर ही श्राद्ध किया जाता है।

विष्णुपद—गयाका यही प्रधान मन्दिर है। फल्गु नदीके किनारे यह विशाल मन्दिर है। मन्दिरमें अष्टकोण वेदीपर भगवान् विष्णुका चरण-चिह्न बना है। मन्दिरके बाहर सभा-मण्डप है तथा लोगोंके श्राद्ध करनेके लिये दो बड़े मण्डप हैं। पास ही एक मन्दिरमें गरुड़जीकी प्रतिमा है।

इस मन्दिरके दक्षिण जगन्नाथजीका मन्दिर है। वहीं एक धर्मशाला है। वहीं दूसरे मन्दिरमें भगवान् लक्ष्मी-नारायणकी मूर्ति है।

गदाधर—विष्णुपद-मन्दिरसे कुछ गज पूर्वोत्तर फल्गु-नदीके किनारे गदाधर-भगवान्‌का मन्दिर है। इसमें गदाधरभगवान्‌की चतुर्भुज मूर्ति है। इसके जगमोहनमें श्रीराम, लक्ष्मण, सीताजी तथा ब्रह्माजीकी मूर्तियाँ हैं।

गयसिर—विष्णुपद-मन्दिरसे दक्षिण गयसिर स्थान है। एक बरामदेमें एक छोटा कुण्ड है। इसी बरामदेमें लोग पिण्डदान करते हैं। गयसिरसे पश्चिम एक घेरेमें गयकूप है।

मुण्डपृष्ठ—गयसिरसे थोड़ी दूरपर यह स्थान है। यहाँ बारहभुजावाली मुण्डपृष्ठा देवीकी मूर्ति है।

आदिगया—गयामें यह सबसे प्राचीन स्थान माना जाता है। मुण्डपृष्ठसे यह स्थान दक्षिण-पश्चिम है। वहाँ एक शिला है, जिसपर पिण्डदान होता है। वहाँसे पाँच सीढ़ी उतरनेपर एक आँगन मिलता है। आँगनके पश्चिम तीन सीढ़ियाँ उतरनेपर एक कोठरीमें कुछ मूर्तियाँ हैं।

धौतपाद—आदिगयासे दक्षिण-पश्चिम गयाके दक्षिण फाटकके पूर्व बरामदेमें एक सफेद शिला है। उस शिलापर तथा आसपास पिण्डदान होता है।

सूर्यकुण्ड—विष्णुपदसे लगभग पौने दो सौ गज उत्तर यह सरोवर है। इस कुण्डका उत्तरी भाग उदीची, मध्यभाग कनखल और दक्षिणभाग दक्षिण मानस-तीर्थ कहलाता है। इस कुण्डके पश्चिम एक मन्दिरमें सूर्यनारायणकी चतुर्भुज मूर्ति है, जिसे दक्षिणार्क कहते हैं।

जिह्वालोल—सूर्यकुण्डसे ८० गज दक्षिण फल्गुकिनारे यह तीर्थ है। एक पीपलका वृक्ष है।

सीताकुण्ड और रामगया—विष्णुपद-मन्दिरके ठीक सामने फल्गु नदीके उस पार सीताकुण्ड है। यहाँ मन्दिरमें काले पत्थरका महाराज दशरथका हाथ बना है।

वहींपर एक शिला है, जो भरताश्रमकी वेदी कहलाती है। इसीको रामगया कहते हैं। यहाँ मतङ्ग ऋषिका चरणचिह्न बना है तथा अनेक देवमूर्तियाँ हैं।

उत्तरमानस—विष्णुपदसे १ मील उत्तर रामशिला-मार्गपर उत्तरमानस सरोवर है। इसमें चारों ओर पक्की सीढ़ियाँ हैं। इसके पश्चिम एक धर्मशाला है और उत्तर

एक मन्दिर है, जिसमें उत्तरार्क सूर्य और शीतलादेवीकी मूर्तियाँ हैं। सरोवरके पश्चिमोत्तर कोणपर मौनेश्वर तथा पितामहेश्वर शिव-मन्दिर हैं। यहाँ श्राद्ध करके यात्री मौन होकर सूर्यकुण्डतक जाते हैं।

रामशिला—विष्णुपदसे लगभग ३ मील उत्तर फल्गुके किनारे रामशिला पहाड़ी है। पहाड़ीके नीचे रामकुण्ड नामक सरोवर है। सरोवरके दक्षिण एक शिवमन्दिर है। रामशिलासे लगा २० सीढ़ी ऊपर श्रीराम-मन्दिर है और एक धर्मशाला है। ३४० सीढ़ी ऊपर रामशिला तीर्थ है। यहाँ ऊपर एक शिव-मन्दिर है, इसके जगमोहनमें चरण-चिह्न बना है। मन्दिरके दक्षिण एक बरामदेमें दो-तीन मूर्तियाँ हैं। श्रीरामके आनेसे पूर्व इस पहाड़ीका नाम प्रेतशिला है।

काकबलि—रामशिलासे २०० गज दक्षिण एक घेरेके भीतर वटवृक्ष है। वहाँ काकबलि, यमबलि और श्वानबलि दी जाती है।

प्रेतशिला और ब्रह्मकुण्ड—रामशिलासे चार मील पश्चिम प्रेतशिला है। इसका पुराना नाम प्रेतपर्वत है। गया-नगरसे यह स्थान सात मील दूर है। यहाँ पर्वतके नीचे एक पक्का सरोवर है, उसे ब्रह्मकुण्ड कहते हैं। यहाँतक (रामशिला होकर) आनेके लिये पक्की सड़क है। ब्रह्मकुण्डके पास एक-दो मन्दिर हैं। ब्रह्मकुण्डसे लगभग ४०० सीढ़ी चढ़कर प्रेतशिला पहुँचते हैं। ऊपर एक छोटा मन्दिर है, जिसमें आँगन तथा बरामदे हैं।

वैतरणी—गयाके दक्षिण फाटकके दक्षिण यह सरोवर है।

भीमगया—वैतरणीके पश्चिमोत्तर एक घेरेके भीतर एक शिला है। घेरेके एक बरामदेमें भीमसेनकी मूर्ति है। दक्षिण बरामदेमें भीमसेनके अँगूठेका तीन हाथ गहरा चिह्न है।

भस्मकूट-गोप्रचार—भीमगयासे दक्षिण-पश्चिम यह छोटी पहाड़ी है। इसके ऊपर भगवान् जनार्दनका मन्दिर है। इस मन्दिरसे थोड़ी दूरपर मङ्गलादेवीका मन्दिर है, जिसमें मङ्गलेश्वर शिवलिङ्ग तथा मङ्गलादेवीकी मूर्ति है। यहीं गोप्रचारतीर्थ है। एक शिलापर गायोंके खुरोंके चिह्न हैं। कहते हैं कि ब्रह्माजीने यहाँ गोदान किया था।

ब्रह्मसरोवर—गयाके दक्षिण फाटकके लगभग ३५० गज दूर वैतरणी सरोवरके पास यह सरोवर है। इसमें एक गदाखण्ड पड़ा है, उसकी परिक्रमा की जाती है। इसके पास (दूसरी) काकबलिवेदी है। समीपमें 'तारकब्रह्म' का दर्शन करके 'आम्र-सिञ्चन' की विधि है; किंतु अब आमका वृक्ष वहाँ नहीं है। केवल एक पक्का थाला बना है।

अक्षयवट—ब्रह्मसरोवरके पास ही अक्षयवट है। चहारदीवारीसे घिरा विस्तृत पक्का आँगन है, जिसके मध्य वटवृक्ष है। इसके उत्तर वटेश्वर महादेवका मन्दिर है।

अक्षयवटसे पश्चिम रुक्मिणी-सरोवर और अक्षयवटके उत्तर वृद्धप्रपितामहेश्वरका मन्दिर है।

गदालोल—अक्षयवटके दक्षिण गदालोल नामक कच्चा सरोवर है। सरोवरमें एक स्तम्भके रूपमें गदा है। कहते हैं कि असुरको मारकर भगवान्ने यहाँ गदा धोयी थी।

मङ्गलागौरी—ब्रह्मसरोवरके पास पहाड़ीपर १२५ सीढ़ी ऊपर यह मन्दिर है। इसी पहाड़ीपर और ऊपर जानेपर अविमुक्तेश्वरनाथका प्राचीन मन्दिर मिलता है। यहाँ भगवान्की चतुर्भुज मूर्ति है। जिसके श्राद्ध करनेवाला कोई न हो, वह अपने लिये तिलरहित दही मिलाकर तीन पिण्ड यहाँ भगवान्के दाहिने हाथमें दे जाय—ऐसी विधि है।

आकाशगङ्गा—मङ्गलागौरीके पास दूसरे पर्वतपर हनुमान्जीका स्थान है। यहाँ एक कुण्ड है, जिसे आकाशगङ्गा कहते हैं। इससे कुछ नीचे एक और कुण्ड है, जो पातालगङ्गा कहा जाता है। पहाड़ीके नीचे पश्चिम ओर कपिलधारा है।

गायत्रीदेवी—विष्णुपद-मन्दिरसे आध मील उत्तर फल्गु-किनारे गायत्रीघाट है। घाटके ऊपर गायत्रीदेवीका मन्दिर है। इसके उत्तर लक्ष्मीनारायण-मन्दिर है और वहीं पासमें बभनीघाटपर फल्वीश्वर शिव-मन्दिर है। उसके दक्षिण गयादित्य नामक सूर्यकी चतुर्भुज-मूर्ति एक मन्दिरमें है।

संकटादेवी-प्रपितामहेश्वर—विष्णुपद-मन्दिरसे लगभग ३५० गज दक्षिण संकटादेवी और प्रपितामहेश्वरके छोटे-छोटे मन्दिर हैं।

ब्रह्मयोनि—गयासे लगभग दो मील दूर (बुद्धगयाकी ओर) यह पर्वत है। लगभग ४७० सीढ़ी ऊपर ब्रह्माजीका मन्दिर है। इस पर्वतपर दो पत्थर गुफाके ढंगसे पड़े हैं—इन्हें ब्रह्मयोनि और मातृयोनि कहते हैं। कुछ लोग इनके

नीचे सोकर आर-पार निकलते हैं। पर्वतशिखरके कुछ नीचे ब्रह्मकुण्ड नामक पक्का सरोवर है।

सरस्वती और सावित्रीकुण्ड—ब्रह्मयोनि पर्वतके नीचे ये दोनों पक्के कुण्ड हैं। सावित्रीकुण्डका जल वर्षाके जलके समान मटमैला है और सरस्वतीकुण्डका जल स्वच्छ रहता है। यहाँ सावित्रीका मन्दिर है। यहींपर कर्मनाशा सरोवर है।

सरस्वती नदी—गयासे तीन मील आगे जाकर पक्की सड़क छोड़कर पैदल १ मील कच्चे मार्गसे जानेपर सरस्वती नदी मिलती है। सरस्वती-तटपर छोटा-सा सरस्वती देवीका मन्दिर है। वहीं एक चबूतरेपर चरण-चिह्न तथा कई शिवलिङ्ग हैं।

मतङ्गवापी—सरस्वतीसे लगभग १ मीलपर मतङ्गवापी नामक छोटी बावली है। यहाँ पगडंडीसे आना पड़ता है। बावलीके उत्तर चार मन्दिर हैं; जिनमें मातङ्गेश्वर शिवका मन्दिर मुख्य है।

धर्मारण्य—मतङ्गवापीसे दो मील दक्षिण-पूर्वमें यह स्थान है। यहाँ एक कुआँ है। यहाँ पिण्डदानके बाद पिण्ड कुएँमें डाल दिया जाता है। यहाँ धर्मराज युधिष्ठिरका छोटा मन्दिर है। पासमें 'रहट-कूप' है। पुत्रकामनासे उसके पास लोग पिण्डदान करते हैं। कूपके समीप भीमसेनका छोटा मन्दिर है। कहते हैं, युधिष्ठिर जब भीमसेनके साथ अपने पिताका श्राद्ध करने गया आये थे, तब यहाँ कुछ दिन उन्होंने तप किया था।

बोधगया (बुद्धगया)—धर्मारण्यसे १ मील पश्चिम यह स्थान है। गयासे बुद्धगया ७ मील दूर है। यहाँ बुद्ध-भगवान्‌का विशाल मन्दिर है। मन्दिरके पीछे पत्थरका चबूतरा है, जिसे 'बौद्ध-सिंहासन' कहते हैं। इसी स्थानपर बैठकर गौतम बुद्धने तपस्या की थी और यहीं बोधिवृक्षके नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था। वह बोधिवृक्ष तो अब है नहीं, किंतु एक नया पीपलका वृक्ष वहाँ लगाया गया है। बुद्धगयामें मन्दिरके कुछ ही दूरपर बाजार है।

बकरौर—बुद्धगयासे कुछ दूर पूर्व यह प्राचीन स्थान है। यहाँ प्राचीन भग्नावशेष तथा कई स्तूप हैं।

गया-श्राद्धका क्रम

प्रथम दिन—पुनपुनके तटपर श्राद्ध करके, गया आकर पहले दिन फल्गुमें स्नान और फल्गुके किनारे श्राद्ध किया जाता है। इस दिन गायत्री-तीर्थमें प्रातः स्नान-संध्या, मध्याह्नमें सावित्रीकुण्डमें स्नान-संध्या और सायंकाल सरस्वतीकुण्डमें स्नान करके संध्या करनी चाहिये।

द्वितीय दिन—फल्गु-स्नान, प्रेतशिला जाकर ब्रह्मकुण्ड तथा प्रेतशिलापर पिण्डदान, वहाँसे रामशिला आकर रामकुण्ड और रामशिलापर पिण्डदान और वहाँसे नीचे आकर काकबलि-स्थानपर काक, यम तथा श्वान-बलि-नामक पिण्डदान।

तृतीय दिन—फल्गुस्नान करके उत्तर-मानस जाकर वहाँ स्नान, तर्पण, पिण्डदान, उत्तरार्क-दर्शन और वहाँसे मौन होकर सूर्यकुण्ड आकर उसके उदीची, कनखल तथा दक्षिण-मानस तीर्थोंमें स्नान, तर्पण, पिण्डदान और दक्षिणार्कका दर्शन-पूजन करके फल्गु-किनारे जाकर स्नान-तर्पण करे और भगवान् गदाधरका दर्शन एवं पूजन करे।

चतुर्थ दिन—फल्गु-स्नान, मतङ्गवापी जाकर वहाँ स्नान, पिण्डदान, धर्मेश्वर-दर्शन, धर्मारण्यमें पिण्डदान और वहाँसे बुद्धगया जाकर बोधिवृक्षके नीचे श्राद्ध।

पञ्चम दिन—फल्गुस्नान, ब्रह्मसरमें स्नान-तर्पण, पिण्डदान, आम्रसेचन, ब्रह्मसरोवर-प्रदक्षिणा, वहाँ काक-यम-श्वानबलि और फिर स्नान।

षष्ठ दिन—फल्गु-स्नान, विष्णुपदमें विष्णुपद, रुद्रपद, दक्षिणाग्निपद, गार्हस्पत्यपद, आवहनीयपद, सभ्यपद, आवसथ्यपद, सूर्यपद, कार्तिकेयपद, क्रौञ्चपद एवं कश्यपपद नामक वेदियोंके (ये विष्णुपद-मन्दिरमें ही मानी जाती हैं) दर्शन और उनपर श्राद्ध-पिण्डदान। वहाँसे गजकर्णिकामें तर्पण और गयसिरपर पिण्डदान, जिह्वालोल, मधुस्रवा, मुण्डपृष्ठपर पिण्डदान।

सप्तम दिन—फल्गुस्नान, गदालोलपर स्नान-श्राद्ध, अक्षयवट जाकर अक्षयवटके नीचे श्राद्ध और वहाँ तीन या एक ब्राह्मणको भोजन कराना।

वे सात दिनके कर्म केवल सकाम श्राद्ध करनेवालोंके लिये हैं। इन सात दिनोंके अतिरिक्त वैतरणी, भस्मकूट, गोप्रचार, आदिगया, धौतपाद, जिह्वालोल, रामगया आदिमें भी स्नान-तर्पण-पिण्डदानादि किया जाता है।

गयामें आश्विन-कृष्णपक्षमें बहुत अधिक लोग श्राद्ध करने जाते हैं। पूरे श्राद्धपक्ष वे यहाँ रहते हैं। श्राद्धपक्षके लिये पिण्डदानादि-क्रम इस प्रकार है—

भाद्रशुक्ला चतुर्दशी—पुनपुन-तटपर श्राद्ध।

भाद्रशुक्ला पूर्णिमा—फल्गु नदीमें स्नान और नदी-तटपर खीरके पिण्डसे श्राद्ध।

आश्विनकृष्णा प्रतिपदा— ब्रह्मकुण्ड, प्रेतशिला, रामकुण्ड एवं रामशिलापर श्राद्ध और काकबलि।

" " **द्वितीया**— उत्तरमानस, उदीची, कनखल, दक्षिणमानस और जिह्वालोल तीर्थोंपर पिण्डदान।

" " **तृतीया**— सरस्वतीस्नान, मतङ्गवापी, धर्मारण्य और बोधगयामें श्राद्ध।

" " **चतुर्थी**— ब्रह्मसरोवरपर श्राद्ध, आम्रसेचन, काकबलि।

" " **पञ्चमी**— विष्णुपद-मन्दिरमें रुद्रपद, ब्रह्मपद और विष्णुपदपर खीरके पिण्डसे श्राद्ध।

" " **षष्ठीसे अष्टमीतक**—विष्णुपद मन्दिरके सोलह वेदी नामक मण्डपमें १४ स्थानोंपर और पासके मण्डपमें दो स्थानपर पिण्डदान होता है।

वेदियोंके नाम हैं—कार्तिकपद, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्याग्नि, आवहनीयाग्नि, सातत्याग्नि, आवसथ्याग्नि, सूर्यपद, चन्द्रपद, गणेशपद, दधीचिपद, कण्वपद, मतङ्गपद, क्रौञ्चपद, इन्द्रपद, अगस्त्यपद और कश्यपपद। अष्टमीको सोलह वेदी नामक मण्डपमें दूधसे गजकर्ण-तर्पण होता है।

आश्विनकृष्णा नवमी— रामगयामें श्राद्ध और सीताकुण्डपर माता, पितामही और प्रपितामहीको बालूके पिण्ड दिये जाते हैं।

" " **दशमी**— गयसिर और गयकूपके पास पिण्डदान।

" " **एकादशी**—मुण्डपृष्ठ, आदिगया और धौतपादमें खोवे या तिल-गुड़से पिण्डदान।

" " **द्वादशी**— भीमगया, गोप्रचार और गदालोलमें पिण्डदान।

" " **त्रयोदशी**— फल्गु-स्नान करके दूधका तर्पण, गायत्री, सावित्री तथा सरस्वती तीर्थोंपर क्रमशः प्रातः, मध्याह्न, सायं स्नान और संध्या।

आश्विनकृष्णा चतुर्दशी—वैतरणी-स्नान और तर्पण।

" " **अमावस्या**— अक्षयवटके नीचे श्राद्ध और ब्राह्मण-भोजन।

आश्विनशुक्ला प्रतिपदा—गायत्रीघाटपर दही-अक्षतका पिण्ड देकर गयाश्राद्ध समाप्त किया जाता है।

इतिहास

धर्मकी पुत्री धर्मवती अपने पति महर्षि मरीचिके चरण दबा रही थी। उसी समय वहाँ ब्रह्माजी पधारे। ये मेरे श्वशुर हैं, यह जानकर धर्मवतीने उठकर उनका स्वागत किया; किंतु महर्षि मरीचिने पतिसेवा-त्यागरूप इसे अपराध माना और पत्नीको शिला हो जानेका शाप दिया। इसके पश्चात् धर्मवतीने सहस्र वर्षतक कठोर तपस्या की। इससे प्रसन्न होकर भगवान् नारायण तथा सभी देवताओंने उसे वरदान दिया कि उसके शिला-रूपपर सभी देवताओंकी स्थिति रहेगी।

गय नामका असुर केवल तपस्यामें ही प्रीति रखता था। वह दीर्घकालतक निष्कामभावसे तप करता रहा। भगवान् नारायणने उसे वरदान दिया कि उसका देह समस्त तीर्थोंसे भी अधिक पवित्र हो जाय। इस वरदानके पश्चात् भी असुर तपस्या करता ही रहा। उसके तपसे त्रिलोकी संतप्त होने लगी। देवता संत्रस्त हो उठे। अन्तमें भगवान् विष्णुके आदेशसे ब्रह्माजीने गयके पास जाकर यज्ञ करनेके लिये उसकी देह माँगी। गय सो गया और उसके शरीरपर यज्ञ किया गया; किंतु यज्ञ पूरा होनेपर असुर फिर उठने लगा। उस समय वह धर्मवती शिला देवताओंने गयासुरके ऊपर रख दी। इतनेपर भी असुर उठने लगा तो सभी देवताओंके साथ स्वयं भगवान् विष्णु गदाधररूपमें उसके ऊपर स्थित हुए।

गय नामक असुरकी यह पूरी देह, जो १० मील विस्तृत है, परम पवित्र है। उसपर कहीं भी पिण्डदान करनेसे पितर प्रेतयोनि तथा नरकसे छूटकर अक्षय तृप्ति प्राप्त करते हैं।

जैनतीर्थ

कुलहा पहाड़—गयामें दो जैन-मन्दिर हैं। गयासे ३ मील दूर कुलहा पहाड़ है, जिसे 'जैनी पहाड़' भी कहते हैं। इस पर्वतपर श्रीशीतलनाथजीने तपस्या की थी; किन्तु यहाँतक जानेका मार्ग उत्तम नहीं है।

देव

(लेखक—श्रीशंकरदयालसिंहजी)

गया जिलेकी औरंगाबाद तहसीलमें देव एक कस्बा है। गयासे या औरंगाबादसे यहाँतक मोटर-बसें बराबर चलती हैं।

यहाँ भगवान् सूर्यका प्राचीन मन्दिर है। मन्दिर एक ईंटोंकी दीवारके घेरेमें है। मन्दिरमें श्रीराम, लक्ष्मण और सीताजीकी मूर्तियाँ हैं और उनके सिंहासनके नीचे सूर्य-मूर्ति अङ्कित है।

मन्दिरके द्वारपर एक ओर सूर्य तथा एक ओर शिव-पार्वतीकी मूर्तियाँ हैं। यह विशाल मन्दिर बावन पोरसा ऊँचा कहा जाता है; किंतु अब इतनी ऊँचाई है नहीं। इसके घेरेमें कुल बारह मन्दिर हैं। ऊँचाईके बीचमें गणेशजीकी मूर्ति है। मन्दिरके बाहर शिवलिङ्ग स्थापित है।

कहा जाता है कि यह मन्दिर राजा ऐल (पुरूरवा) का बनवाया हुआ है। उन्होंने ही यहाँ सूर्यकुण्ड और यह सूर्यमन्दिर बनवाया था। चैत्र और कार्तिककी षष्ठीको यहाँ मेला लगता है।

कहा जाता है कि यह सूर्यमन्दिर था; किन्तु आततायी विधर्मी शासकोंके समयमें मन्दिरकी मूर्तियाँ तोड़ दी गयीं। वर्तमान मुख्य मूर्तियाँ पीछेकी स्थापित हैं।

पञ्चतीर्थ

(लेखक—श्रीउमाशंकरजी 'ऋषि')

गयासे मौ बाजारतक बस चलती है। मौ बाजारसे कुर्थातक कच्ची सड़क है। कुर्थासे दो मील दूर (गयासे ३० मील) यह स्थान है।

पुनपुन नदीके किनारे यह पञ्चतीर्थ है, जिसे लोग पाण्डव-तीर्थ भी कहते हैं। यहाँ एक शिवमन्दिर तथा एक देवीचौरा है। कहते हैं कि पाण्डवोंने पुनपुनके किनारे श्राद्ध किया था। मन्दिरसे थोड़ी दूरतक पञ्चपाण्डवघाट हैं। कार्तिक-पूर्णिमा एवं मेष तथा मकरकी संक्रान्तिपर यहाँ मेले लगते हैं।

संडेश्वर

(लेखक—पाण्डेय श्रीबाबूलालजी शर्मा)

गयासे २१ मीलपर पहाड़पुर स्टेशन है, वहाँसे दो मीलपर यह स्थान है। संडेश्वरनाथका मन्दिर प्राचीन है। शिवलिङ्ग पृथ्वीके ऊपरी स्तरसे लगभग दो गज नीचे है। यह स्थान वनमें है। इस ओर संडेश्वरनाथकी बड़ी प्रतिष्ठा है। शिवरात्रि और रामनवमीपर मेला लगता है। पासमें धर्मशाला है। आस-पास प्राचीन भग्नावशेष हैं।

उमगा

(लेखक—पं० श्रीयोगेश्वरजी शर्मा)

गया जिलेके मदनपुर थानेमें उमगा पर्वत है। यह ग्रांड-ट्रंक रोडके ३०७ वें मीलसे एक मील दक्षिण पड़ता है। यहाँ पर्वतके ऊपर प्राचीन समयका अत्यन्त कलापूर्ण सूर्यमन्दिर है। यह मन्दिर ६० फुट ऊँचा है। कहा जाता है कि पहले यह श्रीजगन्नाथ-मन्दिर था। यहाँ आस-पास छोटे-बड़े ५२ मन्दिर हैं। पर्वतके सर्वोच्च शिखरपर गौरीशङ्कर-मन्दिर है। पर्वतपर एक सरोवर तथा एक कुण्ड है। यहाँ विजयादशमी तथा शिवरात्रिको मेला लगता है।

तपोवन

गया-क्यूल लाइनपर गयासे १५ मीलपर वजीरगंज स्टेशन है। वहाँ उतरकर ६ मील पैदल जाना पड़ता है। वर्षाके अतिरिक्त गयासे स्यौतर मोटर-बस चलती है। स्यौतरसे तपोवनके लिये दो मील पैदल जाना पड़ता है।

तपोवनमें गरम पानीके चार कुण्ड हैं—जिन्हें सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमारकुण्ड कहा जाता है। शङ्करजीका एक मन्दिर है।

यहाँ न कोई बस्ती है, न दूकान है और न ठहरनेका स्थान है। निकटतम गाँव लगभग २ मील दूर है। मकरसंक्रान्ति और पुरुषोत्तममासमें यहाँ मेला लगता है। उस समय यहाँ दूकानें रहती हैं।

राजगृह

राजगृह-माहात्म्य

ततो राजगृहं गच्छेत् तीर्थसेवी नराधिप।
उपस्पृश्य ततस्तत्र कक्षीवानिव मोदते॥
यक्षिण्या नैत्यकं तत्र प्राश्नीत पुरुषः शुचिः।
यक्षिण्यास्तु प्रसादेन मुच्यते ब्रह्महत्यया॥

(पद्म० आदि० ३८। २२,२३; महा०वन०तीर्थ० ८४। १०४-५)

'तत्पश्चात् तीर्थसेवी पुरुष राजगृहको जाय। वहाँ स्नान करके पुरुष कक्षीवान्‌के सदृश आनन्द पाता है। वहाँ पवित्र होकर पुरुष यक्षिणी-नैवेद्य भक्षण करे। इससे वह ब्रह्महत्यासे मुक्त हो जाता है।'

राजगृह

राजगृह सनातनधर्मी हिंदू, बौद्ध तथा जैन-तीनोंका ही तीर्थ है। मगधकी राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) से पूर्व राजगृह ही थी। आज भी राजगृह पवित्र तीर्थ-भूमि है और पुरुषोत्तम-मासमें तो वहाँ बहुत अधिक यात्री पहुँचते हैं।

मार्ग

पूर्वी रेलवेपर पटना जंकशनसे २९ मील पूर्व बख्तियारपुर जंकशन स्टेशन है। वहाँसे राजगिरकुण्ड स्टेशनतक बिहार लाइट रेलवे जाती है। पटना अथवा बख्तियारपुरसे राजगृहके लिये मोटर-बस चलती है। बख्तियारपुरसे राजगृह ३३ मील है।

ठहरनेके स्थान

राजगृहमें दिगम्बर जैन धर्मशाला तथा श्वेताम्बर जैन धर्मशालाके अतिरिक्त आनन्दीबाईकी धर्मशाला, पंडोंकी धर्मशाला, सुन्दरसाहकी धर्मशाला और ठठेरोंकी धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थान

राजगृह बस्तीसे लगभग एक मील दूर ब्रह्मकुण्ड है। राजगृहमें एक छोटी नदी है, जिसे सरस्वती नदी कहते हैं। यह पूर्वसे आकर उत्तर गयी है। ब्रह्मकुण्डके पास सरस्वतीको प्राची सरस्वती कहते हैं। नदीमें जल कम ही रहता है।

ब्रह्मकुण्ड—वैभार पर्वतपर प्राची सरस्वतीके पास बहुत-से कुण्ड हैं। इस क्षेत्रको मार्कण्डेयक्षेत्र कहा जाता है। यहाँका मुख्य कुण्ड ब्रह्मकुण्ड है। ब्रह्मकुण्डके नैर्ऋत्यकोणमें हंसतीर्थ है। इसके ऊपर कई देवमूर्तियाँ हैं। ब्रह्मकुण्डसे उत्तर २० गजपर यक्षिणीचैत्य है। ब्रह्मकुण्डसे पूर्व पञ्चनद-तीर्थ है। इसमें ५ गरम झरने हैं। उसके अतिरिक्त मार्कण्डेयकुण्ड, व्यासकुण्ड, गङ्गा-यमुनाकुण्ड, अनन्तकुण्ड, सप्तर्षिधारा और काशीधारा यहाँ हैं। इनमेंसे गङ्गा-यमुनाकुण्डमें एक धारा शीतल तथा दूसरी उष्ण है। दूसरे सब कुण्ड गरम झरनोंके हैं। सप्तर्षिधारा एक बावली है, इसकी पश्चिम दीवारमें ५ और दक्षिणमें दो झरने हैं। बावलीके किनारे सप्तर्षियोंकी मूर्तियाँ हैं। मार्कण्डेयकुण्डसे दक्षिण कामाक्षादेवीका मन्दिर है। ब्रह्मकुण्डसे दक्षिण एक शिवमन्दिर है और सप्तर्षिधाराके उत्तर किनारेपर एक शिवमन्दिर है। सप्तर्षिधाराके पास ही ब्रह्मकुण्ड है। सप्तर्षिधारासे पश्चिम दत्तात्रेयमण्डप है। जलके पास ब्रह्मा, लक्ष्मी तथा गणेशकी मूर्तियाँ हैं। ब्रह्मकुण्डके पूर्व वाराहमन्दिर है। पहाड़ीकी ढालपर संध्यादेवीका मन्दिर है और उसके पास ही केदारकुण्ड है। यहीं एक मन्दिरमें भगवान् विष्णुके चरणचिह्न हैं। सरस्वतीसे ब्रह्मकुण्डतक जानेको पक्की सीढ़ियाँ हैं।

केदारनाथ—ब्रह्मकुण्डसे २०० गजपर केदारकुण्ड है। (आजकल इसे जियतकुण्ड कहते हैं।) वहाँसे २०० गजपर विष्णुपद है, उसके पास ही संध्यादेवी हैं। यहाँसे

मील पश्चिम पर्वतपर सोमनाथ-मन्दिर है।

सीताकुण्ड—ब्रह्मकुण्डके नीचे सरस्वतीसे दो सौ गज पूर्व पाँच कुण्ड हैं—१-सीताकुण्ड, इसके पूर्व नाटकेश्वरशिवमन्दिर है; २-सूर्यकुण्ड, ३-चन्द्रकुण्ड, ४-गणेशकुण्ड, ५-रामकुण्ड। इनमेंसे रामकुण्डमें दो झरने हैं—एक शीतल, दूसरा उष्ण। शेष चारों कुण्डोंमें गरम झरनेका जल है। सीताकुण्डसे पूर्व विपुलाचल पर्वतकी जड़में ठंढे पानीका झरना है। वहीं पासमें शृङ्गीकुण्ड है, जिसमें एक गरम और एक ठंढे पानीका झरना गिरता है। प्राची सरस्वतीसे ४०० गज उत्तर मधुसूदन नामक स्थान है। शृङ्गीकुण्डसे १०० गज पूर्व गृध्रसी-सरोवर था, जो अब नष्टप्राय हो गया है।

वैतरणी—सरस्वतीकुण्डसे आधमील उत्तर सरस्वती नदीको वैतरणी कहते हैं। वहाँ नदीके दोनों तटोंपर पक्के घाट हैं। दक्षिणतटपर लोग पिण्डदान और गोदान करते हैं। बायें तटपर माधव-भगवान्‌का मन्दिर है।

वैतरणीसे लगभग चार सौ गज उत्तर सरस्वतीको ही शालग्रामकुण्ड कहा जाता है। वहाँ घाट बना है। यहाँसे पूर्व धर्मेश्वर महादेवका मन्दिर है और उससे पूर्व भरतकूप है।

वानरीकुण्ड—ब्रह्मकुण्डके नीचे सरस्वतीकुण्डसे दक्षिण नदीके बायें किनारे वानरी-तरणकुण्ड है। इस कुण्डसे कुछ दूर दक्षिण-गोदावरी नामक छोटी धार सरस्वतीमें मिलती है। इस संगमसे दक्षिण-पूर्व पहाड़ी टीलेपर जरा देवीका मन्दिर है। कहते हैं कि जरासंधको जीवन देनेवाली जरा राक्षसीका ही यह स्मारक है।

सोनभंडार—सरस्वती-गोदावरी-संगमसे पश्चिम, ब्रह्म कुण्डसे लगभग एक मील दूर वैभार पर्वतके दक्षिण सोनभंडार नामक गुफा है। यह स्थान बौद्धतीर्थ है, यहाँ तथागतकी उपस्थितिमें बौद्धोंकी प्रथम सभा हुई थी। कुछ लोग इसे स्वस्तिकस्थान कहते हैं।

पञ्चपर्वत—राजगृहमें पाँच पर्वत पवित्र माने जाते हैं। सभी तीर्थ इनके ऊपर या इनके मध्यमें आ जाते हैं। इनके नाम हैं—१-वैभार, २-विपुलाचल (चैतक), ३-रत्नगिरि (ऋषिगिरि), ४-उदयगिरि और ५-स्वर्णगिरि (श्रमणगिरि)।

वैभार—पर्वतोंके गणना-क्रममें यह पाँचवाँ पर्वत है। इसीके पास ब्रह्मकुण्ड है। पर्वतपर एक मील चढ़ाईके पश्चात् एक प्राचीन मन्दिरमें सोमनाथ और सिद्धनाथ—दो शिवलिङ्ग हैं। वहीं आस-पास पाँच जैनमन्दिर हैं।

विपुलाचल—यह पर्वत प्रथम पर्वत है। यह सीताकुण्डसे पूर्व है। इसपर चार जैन-मन्दिर और श्रीवीरप्रभुकी चरण-पादुकाएँ हैं। इससे दक्षिणकी पहाड़ीपर गणेशजीका मन्दिर है। यह मन्दिर बहुत प्रतिष्ठित है। इसी पर्वतपर मुनि सुव्रतनाथके चार कल्याणक हुए हैं। गणेशमन्दिरसे पूर्व एक गुफा है, जो भूषणमड़ही कही जाती है। कहा जाता है कि महाकवि भूषणने इसमें एक बार शरण ली थी।

रत्नगिरि—यह विपुलाचलसे दक्षिण द्वितीय पर्वत है। इसपर एक जैन-मन्दिर और मुनि सुव्रतनाथादि तीर्थंकरोंके चरणचिह्न हैं।

उदयगिरि—इसपर कुछ ऊपर नाटकेश्वर महादेवका मन्दिर है। उससे ऊपर दो जैन-मन्दिर तथा दो चरण-पादुकाएँ हैं।

स्वर्णगिरि (श्रमणगिरि)—इसपर दो जैन-मन्दिर तथा कई चरणचिह्न हैं।

वैकुण्ठतीर्थ—ब्रह्मकुण्डसे ६ मील पूर्व वैकुण्ठ नामक नदी है। यहीं वैकुण्ठपद-तीर्थ है। यह स्थान ऋष्यशृङ्ग (शृङ्गीकुण्ड) से दो कोस पूर्व है। (शृङ्गीकुण्ड विपुलाचलके नीचे है, उसका वर्णन पहले आ चुका है।) यहाँ शिवनाथ महादेव हैं। वैकुण्ठसे दो मील उत्तर कण्ठेश्वर महादेव हैं।

बाणगङ्गा—ब्रह्मकुण्डसे लगभग चार मील दक्षिण बाणगङ्गा नामक नदी है। इसे अत्यन्त पवित्र माना जाता है। यहीं पासमें रङ्गभूमि है। कहा जाता है कि भीमसेन और जरासंधका युद्ध यहीं हुआ था और यहीं भगवान् श्रीकृष्णकी उपस्थितिमें भीमसेनने उसके शरीरको चीर डाला था। यहाँ पत्थरपर बहुतसे रगड़ लगनेसे चिह्न हैं।

मणियार मठ (नागमणि मन्दिर)—ब्रह्मकुण्डसे दो मील दक्षिण (बाणगङ्गासे दो मील उत्तर) यह स्थान है। यहाँ अशोकका स्तूप है। मणियार मठसे एक मील दक्षिण अहल्याह्रद है। इसके पास ही गौतम-वन है। कहते हैं कि गौतमजीसे यहीं कक्षीवान् नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। मणियार मठसे एक मील दक्षिण-पूर्व व्यासाश्रम है, वहाँ कभी त्रिकोटीश्वर-मन्दिर था। उस स्थानके पास ही धौतपाप तीर्थ है।

गृध्रकूट—रङ्गभूमिसे चार मील दक्षिण-पूर्व गृध्रकूट पर्वत है। गौतमबुद्ध इसीपर वर्षाकाल व्यतीत करते थे। पर्वतपर उनके रहनेके स्थान हैं। उसपर देवघट नामक नाला है।

अग्नितीर्थ—गृध्रकूटसे चार मील पूर्व (धौतपापसे दक्षिण) अग्निधारा नामक कुण्ड है। इसका जल सबसे उष्ण रहता है।

तपोवन और गिरिव्रज—ब्रह्मकुण्डसे बारह मील पश्चिम तपोवन है। इसका वर्णन गयाके वर्णनके साथ दिया गया है। राजगृहसे पर्वतका मार्ग वहाँतक है। उसके पास ही गिरिव्रज स्थान है, जहाँ पुराणप्रसिद्ध राजा जरासंधकी राजधानी थी। अग्नितीर्थसे तपोवन आठ मील पश्चिम है। इसे कौशिकाश्रम भी कहते हैं।

कण्वाश्रम—तपोवनसे दो मील उत्तर कण्वाश्रम है। कहते हैं कि इतिहासप्रसिद्ध सम्राट् दुष्यन्त और शकुन्तलाका मिलन यहीं हुआ था। (एक कण्वाश्रम उत्तराखण्डमें कोटद्वारके पास है।) यहाँसे कण्वती पर्वत पार करनेपर राजगृह समीप पड़ता है; किन्तु मार्ग बीहड़ है।

सीताकुटी—तपोवनसे बारह मील दक्षिण सीताकुटी स्थान है। यहाँ श्रीजानकीजीका मन्दिर है। यहींपर सीताह्रद है।

बारहमाथा—कण्वाश्रमसे ६ मील पूर्व यह पर्वत है। बौद्ध इसे चौरप्रपात-विहार कहते हैं। यहीं जरासंधने बहुत-से राजाओंको बंदी बना रखा था।

यतीकोल—बारहमाथासे एक मील उत्तर पर्वतसे दो धाराएँ गिरती हैं, जिन्हें गङ्गा-यमुना-धारा कहते हैं। यही धारा घूमकर जरादेवीके पास सरस्वतीमें गोदावरी नामसे मिलती है।

अमरनिर्झर—यतीकोलसे एक मील पूर्व यह झरना है। यहाँका मार्ग कुछ कठिन है। यहाँ घना वन है।

शिवगङ्गा—अमरनिर्झरसे तीन मील पूर्व अक्षय पीपल नामक एक पीपलवृक्ष है। इसके पास ही शिवगङ्गा सरोवर है। वहाँ शुभंकर महादेव थे; किन्तु अब वह मूर्ति नहीं है।

जरासंधका अखाड़ा—शिवगङ्गासे ८०० गज उत्तर जरासंधका अखाड़ा है। यहाँकी मिट्टी चिकनी है। यहाँसे एक मील पूर्व सोनभंडार है।

धुनिवर—सोनभंडारसे एक मील पूर्वोत्तर धुनिवर नामका बहुत बड़ा वटवृक्ष है। कहा जाता है कि इसे किसी सिद्ध संतने अपनी धूनीमें लगाकर पुनः हरा कर दिया। यहाँसे एक मील उत्तर राजगृह नगर है।

बौद्धमन्दिर—राजगृहमें स्टेशन-मार्गपर यह मन्दिर है। यहाँ बौद्ध यात्रियोंके ठहरनेके लिये एक धर्मशाला भी है। इस मन्दिरमें प्रातः ६ बजेसे १० बजेतक बुद्ध-भगवान्‌के दर्शन होते हैं।

बौद्धतीर्थ—राजगृह प्रधान बौद्धतीर्थ है। तथागत प्रायः वर्षाके चार महीने यहीं व्यतीत करते थे। यहीं नोजभंडारमें उनकी उपस्थितिमें प्रथम बौद्ध-सभा हुई थी। यहाँ बौद्धोंके १८ विहार थे। अब उनमें कोई नहीं हैं। उनके स्थान इस प्रकार बताये जाते हैं—

१. **भेलूवन-विहार**—डाकबँगलेसे दक्षिण।
२. **तपोदा-बिहार**—ब्रह्मकुण्डके पास।
३. **तपोदा-कन्दरा**—सप्तर्षिधारा।
४. **पिपली-गुहा**—जरासंधकी बैठक।
५. **केन्दुक-कन्दरा**—अंधरिया-धंधरिया। (यह शारीपुत्र और मौद्गलायनका स्थान था।)
६. **सतपर्णी-गुहा**—सोनभंडार।
७. **गौतम-कन्दरा**—जरा देवीके मन्दिरसे पश्चिम सरस्वती-किनारे।
८. **जीवकाम्बरवन**—गृध्रकूटके पुलके पास।
९. **मदकूची विहार**—गृध्रकूटके नीचे।
१०. **शूकरखता**—गृध्रकूटपर आनन्दगुहासे पूर्व।
११. **गृध्रकूट-विहार**—गृध्रकूटपर धर्मासनसे दक्षिण।
१२. **इन्द्रशिला-विहार**—गृध्रकूटसे तीन मील पूर्व गदहखोह।
१३. **सर्पनिधि-विहार**—रङ्गभूमि।
१४. **कृष्णशिला-विहार**—बिम्बसारके जेलसे दक्षिण पर्वतपर स्तूप है।
१५. **गृध्रव्रज-विहार**—उदयगिरिके मध्यभागमें।
१६. **कसकारामा-विहार**—ब्रह्मकुण्डसे दो मील पश्चिम सप्तपर्णी हॉल।
१७. **चौरप्रपात-विहार**—बारहमाथा।
१८. **शीतवन-विहार**—अजातशत्रुके किलेके पास।

जैनतीर्थ

जैनतीर्थ पञ्च पहाड़ोंपर हैं, उनका वर्णन दिया जा चुका है। इक्कीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रतनाथका जन्म

यहीं हुआ था। यहीं उन्होंने तप किया था और नीलवनके चम्पकवृक्षके नीचे केवल-ज्ञानी हुए थे। मुनिराज धनदत्त और महावीरके कई गणधर भी इस स्थानसे मोक्ष गये हैं। यहीं नीलगुफामें क्षुल्लिका पूतिगन्धाने समाधि मरण किया था। राजगृहसे पञ्च पर्वतोंसे एक मीलपर जहाँ श्रेणिक नरेशके भवनोंके चिह्न हैं, वहाँ गणधरोंकी चरण-पादुकाएँ हैं। जैनयात्री वहाँ दर्शन करने जाते हैं।

आसपासके बौद्ध-जैन-तीर्थ

नालन्दा—बिहार लाइट रेलवेपर राजगिरकुण्डसे ८ मील पहले ही नालन्दा स्टेशन पड़ता है। पटनासे या बख्तियारपुरसे मोटर-बसें भी आती हैं। स्टेशनके पास यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। स्टेशनसे लगभग एक मील दूर बड़गावाँ ग्राम है। इसके पास ही नालन्दाके भग्नावशेष हैं।

यह स्थान हिंदू, बौद्ध तथा जैन—तीनोंका ही तीर्थस्थल है। बड़गावाँ बस्तीमें एक छोटा सूर्यमन्दिर है और बस्तीके बाहर सूर्यकुण्ड सरोवर है।

कुछ लोग इसे कुण्डिनपुर कहते हैं। श्रीकृष्णचन्द्रकी पट्टमहिषी रुक्मिणीजीकी जन्मभूमि कुण्डिनपुर विदर्भदेशमें (वर्धाके पास) है और तीर्थंकर महावीर स्वामीकी जन्मभूमि कुण्डलपुर मुजफ्फरनगर जिलेका कुण्ड ग्राम है; किंतु यहाँ महावीर स्वामीका समवशरण आया था। नालन्दाकी खुदाईमें पृथ्वीके नीचेसे अनेक जैनमूर्तियाँ निकली हैं। यहाँ एक जैनमन्दिर है, जिसमें महावीर स्वामीकी मूर्ति है।

नालन्दा बौद्धकालमें भारतका प्रमुख विद्याकेन्द्र था। विदेशोंतकसे विद्यार्थी यहाँ शिक्षा पाने आते थे। इधर नालन्दामें भूमि खोदनेसे पता लगा है कि यह महानगर कई बार बना और कई बार ध्वस्त हुआ। एक ध्वस्त भवनके ऊपर ही दूसरा बना दिया गया और किसी कारणसे जब वह कालान्तरमें ढह गया, तब उसी ढेरपर तीसरा भवन बना। कहीं-कहीं इस प्रकार एकके ऊपर एक पाँच मंजिलेंतक हैं, जिनमेंसे अब भी तीन मंजिलें भूमिमें हैं। जो दो मंजिलें निकली हैं, उनकी रक्षाकी दृष्टिसे नीचे खोदना बंद कर दिया गया है।

नालन्दाकी खुदाईमें प्राप्त वस्तुएँ वहाँके संग्रहालयमें सुरक्षित रखी गयी हैं।

पावापुर—यह जैनतीर्थ है। इसका प्राचीन नाम अपापापुर था। गयासे नवादा होकर यहाँतक बस जाती है। पटनासे नवादा बस-लाइन है और उसीपर यह स्थान पड़ता है। बिहार लाइट रेलवेके विहारशरीफ स्टेशनसे यह स्थान ९ मील है। मोटर, ताँगा आदि जाता है। बस-रोडसे मन्दिर एक मील दूर है।

अन्तिम तीर्थंकर महावीरस्वामीने यहीं मोक्ष प्राप्त किया था। उनका निर्वाण-मन्दिर सरोवरके मध्यमें है। उसे जल-मन्दिर कहा जाता है। इसमें महावीरस्वामी, गौतमस्वामी और सुधर्मस्वामीके चरणचिह्न हैं। यहाँ कई और जैन-मन्दिर हैं। बस्तीमें श्वेताम्बर-जैनमन्दिर। श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दोनों जैनसम्प्रदायोंकी धर्मशालाएँ हैं।

गुणावा—जैनतीर्थ है। यह स्थान पूर्वी रेलवेकी गया-क्यूल लाइनके नवादा स्टेशनसे १॥ मील दूर है। पटना या बख्तियारपुरसे मोटर-बसें पावापुर होते नवादातक आती हैं। पावापुरसे बसद्वारा गुणावा और गुणावासे नवादा जा सकते हैं।

इन्द्रभूति गौतम-गणधर यहाँ मुक्त हुए थे, यहाँका जैनमन्दिर भी सरोवरके बीचमें बना है। उसमें तीर्थंकरोंके चरण-चिह्न हैं।

नाथनगर—जैनतीर्थ है। नवादा स्टेशनसे क्यूल आकर वहाँ गाड़ी बदलकर यहाँ पहुँच सकते हैं। पूर्वोत्तर रेलवे हबड़ा-क्यूल लाइनपर भागलपुरसे दो मील दूर नाथनगर स्टेशन है। स्टेशनसे आध मीलपर जैनधर्मशाला है।

यह प्राचीन चम्पापुर नगर है। तीर्थंकर वासुपूज्यस्वामीके पाँचों कल्याणक यहाँ हुए थे। धर्मघोष मुनिने यहाँ समाधि-मरण किया था। यहाँ कई जैनमन्दिर हैं। यहाँसे भागलपुर होकर मन्दारगिरि जा सकते हैं। (वहाँका वर्णन भागलपुरके साथ अलग गया है।)

ककोलत

(लेखक—श्रीछोटेलालजी साहु)

यह स्थान राजगृहसे १८—२० मील दूर है। गया जिलेके नवादा सबडिवीजनके ग्राम अकबरपुरसे यह स्थान ६ मील है। यहाँ आस-पास वन है।

यहाँ पर्वतके ऊपर छोटे-बड़े कई जलके कुण्ड हैं, जिनसे होती हुई जलधारा नीचे गिरती है। यहाँका जल स्वास्थ्यके लिये बहुत लाभदायक माना जाता है। गङ्गा-दशहरापर और मकरसंक्रान्तिपर मेला लगता है।

जहाँ पर्वतसे नीचे जलधारा गिरती है, वहाँ बहुत गहरा कुण्ड है। कुण्डके पास भगवान् शङ्करका मन्दिर है। वहीं यात्रियोंके ठहरनेके लिये कमरे बने हैं।

यहाँसे शृङ्गी ऋषिका स्थान १० मील दक्षिण है और तपोवन १५ मील पश्चिमोत्तर है।

बाढ़

(लेखक—साहित्यवाचस्पति पं० श्रीमथुरानाथजी शर्मा, शास्त्री)

पूर्वी रेलवेमें मोकामा जंकशनसे १६ मीलपर बाढ़ स्टेशन है। स्टेशनसे बाजार दो मील दूर है। वहाँ गङ्गातटपर उमानाथतीर्थ है। यहाँ उमानाथका मन्दिर है। यहाँ गङ्गा उत्तरवाहिनी हैं। मन्दिरके पास ही पार्वतीमन्दिर है। एक ओर हनुमान्‌जीका मन्दिर है। आस-पास और कई मन्दिर हैं। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं। कुछ दूर सतीमन्दिर है और गौदूबेका थान है। ये एक संत हो गये हैं।

यहाँसे २० मीलपर वैकुण्ठनाथ महादेवका मन्दिर है। कहते हैं कि उसमें जरासंधद्वारा पूजित मूर्ति प्रतिष्ठित है।

अभयपुर

(लेखक—श्रीहरिप्रसादजी)

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-क्यूल लाइनमें क्यूलसे १४ मील पहले अभयपुर स्टेशन है। यहाँसे पैदल जाना पड़ता है।

यहाँ एक कुण्ड है। कुण्डके पास दो मन्दिर हैं। यात्री कुण्डमें स्नान करते हैं। कुण्डमें पर्वतसे जल आता है और कुण्डसे निकलकर एक नदी बन जाता है। कुण्डसे थोड़ी दूरपर पर्वत है। पर्वतपर ही शृङ्गी ऋषिका तपःस्थान है। उसी स्थानसे जल कुण्डमें आता है। वसन्तपञ्चमी, शिवरात्रि और भाद्री पूर्णिमापर मेला लगता है।

ऋषिकुण्ड

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-क्यूल शाखापर जमालपुर जंकशन है। जमालपुरसे दो मील दूर पर्वतपर ऋषिकुण्ड नामक गरम पानीका कुण्ड है। यह पानी कई कुण्डोंमें होकर आता है। यहाँ अधिकमासमें मेला लगता है।

मुंगेर

पूर्वी रेलवेकी एक शाखा जमालपुरसे मुंगेर जाती है। मुंगेर नगरमें गङ्गाजीका कष्टहरणी घाट है। घाटपर कई देवमन्दिर हैं। कहा जाता है कि दानवीर कर्णकी यहीं राजधानी थी। माघी पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है।

सीताकुण्ड—मुंगेरसे ५ मील दूर एक घेरेके भीतर चार कुण्ड हैं। उनके नाम हैं—रामकुण्ड, लक्ष्मणकुण्ड, भरतकुण्ड और शत्रुघ्नकुण्ड। इन चारों कुण्डोंका जल शीतल है। पास ही सीताकुण्ड है। सीताकुण्डका जल

इतना उष्ण है कि उसमें स्नान नहीं किया जा सकता। कुण्डके चारों ओर जँगला लगा है। यहाँ माघपूर्णिमा, वैशाखपूर्णिमा, कार्तिकपूर्णिमा और रामनवमीपर मेला लगता है।

चण्डीमन्दिर—सीताकुण्डसे पाँच मील दूर गङ्गातटसे लगभग एक मीलपर चण्डीदेवीका एक ही पत्थरसे बना हुआ अर्ध-गोलाकार मन्दिर है। उसमें एक छोटा द्वार है। भीतर दीवालमें चण्डीदेवीकी मूर्ति बनी है।

अजगयबीनाथ

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-क्यूल लाइनपर भागलपुर जंकशनसे १५ मीलपर सुलतानगंज स्टेशन है। स्टेशनसे थोड़ी दूर उत्तर जहाँगीरा गाँवके पास गङ्गाजीकी बीच धारामें एक चट्टानपर अजगयबीनाथ महादेवका मन्दिर है। कहा जाता है कि यहीं जह्नुऋषिका आश्रम था। बैजू नामक भील यहींसे गङ्गाजल ले जाकर वैद्यनाथधाममें वैद्यनाथजीपर चढ़ाता था। अब भी बहुत-से लोग वैद्यनाथजीपर चढ़ानेके लिये यहाँसे गङ्गाजल ले जाते हैं। अजगयबीनाथके पास जह्नुमुनिका स्थान है। आस-पास और कई पुराने मन्दिर हैं। एक ओर चट्टान काटकर गणेश, सूर्य, विष्णुभगवान्, देवी, हनुमान्जी आदिकी मूर्तियाँ बनायी गयी हैं। यहाँ माघपूर्णिमासे शिवरात्रितक मेला लगता है।

मन्दारगिरि

पूर्वी रेलवेपर भागलपुर स्टेशन है। भागलपुर नगरसे लगभग २८ मीलपर मन्दारगिरि पहाड़ी है। इस पहाड़ीके ऊपर सीताकुण्ड और रामकुण्ड नामके शीतल जलके दो कुण्ड हैं। शिखरपर मन्दिरमें भगवान्के चरण-चिह्न और देवीका मस्तक है। इस पहाड़ीके नीचे पाद-मूलमें पापहरिणी पुष्करिणी है। इस स्थानसे दो मीलपर बौंसी गाँवमें मधुसूदनभगवान्का मन्दिर है। वहाँसे थोड़ी दूरपर एक सरोवर है। पौष-संक्रान्तिपर यहाँ तीन दिन मेला रहता है। यात्री पापहरिणी पुष्करिणीमें स्नान करके मन्दारगिरिपर जाते हैं और वहाँसे उतरकर मधुसूदन-भगवान्का दर्शन करते हैं। मधुसूदनभगवान्की श्रीमूर्तिको पापहरिणीमें स्नान कराके पहाड़ीपर छोटे मन्दिरमें दिनभर रखा जाता है। संध्याको भगवान् अपने मन्दिरमें पधारते हैं। इस पहाड़ीके नीचे एक दैत्य दबा है। कहा जाता है कि भगवान् विष्णुने उसका मस्तक काट दिया और उसके धड़को पहाड़ीसे दबाकर पहाड़ीपर अपने चरण-चिह्न रख दिये। इसीसे यह पहाड़ी पवित्र है।

जैनतीर्थ—मन्दारगिरि जैनतीर्थ भी है। यहाँ दो जैनमन्दिर पहाड़ीपर हैं। वासुपूज्य स्वामीका मोक्षकल्याणक स्थान यहीं है।

नाया नगर

(लेखक—पं० श्रीगणेशजी झा)

भागलपुर जिलेमें किसुनगंजसे पश्चिम यह ग्राम है। यहाँ श्रीदुर्गाजीका प्रख्यात मन्दिर है। भगवती दुर्गाकी यह चतुर्भुज मूर्ति भगवान् विष्णुद्वारा स्थापित कही जाती है। यहाँ सोमवार, बुधवार तथा शुक्रको भीड़ होती है।

बटेश्वर (विक्रमशिला)

(लेखक—श्रीगजाधरलालजी टेकड़ीवाल)

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-क्यूल लाइनमें भागलपुरसे १९ मील पूर्व कोलगाँव स्टेशन है। यहाँसे तीन मील पूर्व गङ्गा-किनारे बटेश्वरनाथका टीला है। यहाँ बटेश्वरनाथ महादेवका मन्दिर है। यहाँ बहुत-सी मूर्तियोंके भग्नावशेष मिलते हैं। बटेश्वरनाथके पास नागाबाबाका मन्दिर है। माघपूर्णिमाको मेला लगता है।

मौर्यकालमें यहाँ विक्रमशिला नामक विश्वविद्यालय था, जो उस समय भारतकी महान् शिक्षा-संस्था थी,

ऐसा कुछ ऐतिहासिक विद्वान् मानते हैं।

बटेश्वरनाथसे दो मील दूर पर्वतकी चोटीपर दुर्वासा-ऋषिका आश्रम है। यह स्थान बटेश्वरनाथ-कोलगाँव मार्गमें पड़ता है।

शृङ्गेश्वरनाथ

दरभंगासे ६० मील पूर्व भागलपुर जिलेके कोशीक्षेत्रमें एक छोटी नदीके पास सिंगेश्वर बस्ती है। यहाँ एक घेरेके भीतर शृङ्गेश्वरनाथ महादेवका मन्दिर है। शिवरात्रिपर तथा वैशाखमें यहाँ मेला लगता है।

भगवान् शङ्कर जब मृगरूप धारण करके मन्दाराचलसे चले गये थे और देवता उन्हें ढूँढ़ रहे थे, तब श्लेष्मान्तक वनमें देवताओंने मृगरूपधारी शिवको देखा। भगवान् विष्णु, ब्रह्मा तथा इन्द्रने उस मृगके सींग पकड़े। मृग तो अन्तर्हित हो गया, किंतु सींगके तीन टुकड़े तीनोंके हाथमें रह गये। इन्द्रने अपने हाथका टुकड़ा—सींगका अग्रभाग स्वर्गमें स्थापित किया, जिसे स्वर्ग-विजयके बाद रावण ले आया। और वह दक्षिण गोकर्णमें स्थित है। ब्रह्माजीने अपने हाथका अंश—सींगका मध्यभाग गोला गोकर्णनाथमें स्थापित किया और भगवान्विष्णुने अपने हाथका अंश—सींगका मूलभाग यहाँ स्थापित किया। ये ही शृङ्गेश्वरनाथ कहे जाते हैं।

कनकपुर

हबड़ा-क्यूल लाइनपर नलहाटीसे दस मील दूर मुराराय स्टेशन है। वहाँसे तीन मीलपर कनकपुर गाँव है। यहाँ अपराजिता-देवीका मन्दिर है। स्टेशनसे पैदल या बैलगाड़ीपर आना पड़ता है। नवरात्रमें यहाँ मेला लगता है।

तारापुर

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-क्यूल लाइनपर हबड़ासे १२९ मील दूर रामपुरहाट स्टेशन है। स्टेशनसे कुछ दूर तारापुर ग्राम है। यहाँ श्मशानमें कालिकादेवीका मन्दिर है। यह स्थान इधर बहुत प्रतिष्ठित है।

चण्डीपुर

रामपुरहाट स्टेशनसे ८ मील पहले ही मलारपुर स्टेशन है। वहाँसे चार मीलपर चण्डीपुर ग्राम है। यहाँ तारादेवीका मन्दिर है। यह स्थान सिद्धपीठ माना जाता है।

नन्दिपुर

पूर्वी रेलवेकी हाबड़ा-क्यूल लाइनमें सैंथिया स्टेशनसे अग्निकोणमें थोड़ी दूरपर नन्दिपुर नामक स्थानमें एक बड़े वटवृक्षके नीचे देवी-मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें है। सतीका कण्ठहार यहाँ गिरा था।

नलहाटी

सैंथियासे २६ मीलपर उसी लाइनमें नलहाटी स्टेशन है। स्टेशनसे २ मीलपर नैर्ऋत्यकोणमें ऊँचे टीलेपर देवीका स्थान है। यह भी ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ सतीकी शिरोनली गिरी थी।

बिहारके मुख्य जैन-मन्दिर

पावापुरका सरोवर
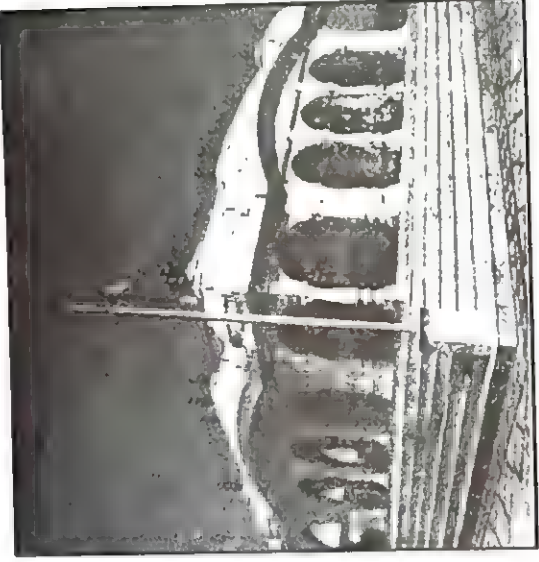
पावापुरका मुख्य जैन-मन्दिर

पावापुर-मन्दिरके भीतर चरण-चिह्न

पावापुर, ग्राम-मन्दिर

पारसनाथका जल-मन्दिर

पारसनाथ-मन्दिर, सम्मेतशिखर
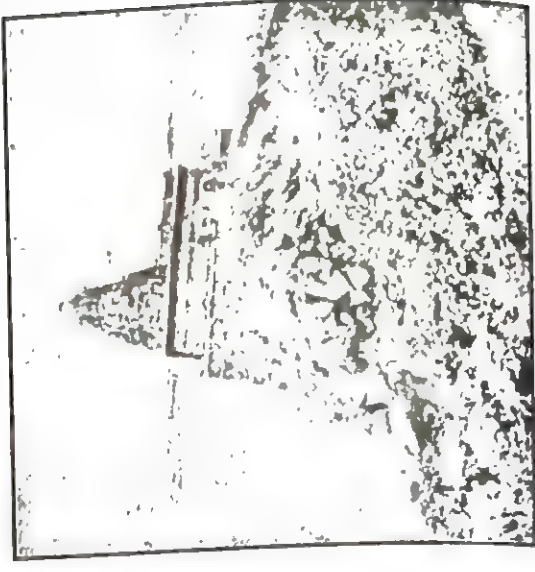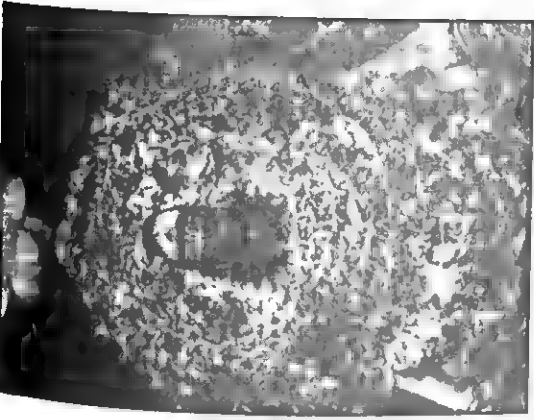
बिहार एवं बंगालके कुछ मन्दिर

श्रीमधुसूदन भगवान्, मन्दारगिरि

पापहारिणी पुष्करिणीके तटसे मन्दार-गिरिका एक दृश्य

गीतगोविन्दकार श्रीजयदेवजीका समाधि-मन्दिर, केंदुली

शिवगङ्गा-सरोवर, वैद्यनाथ
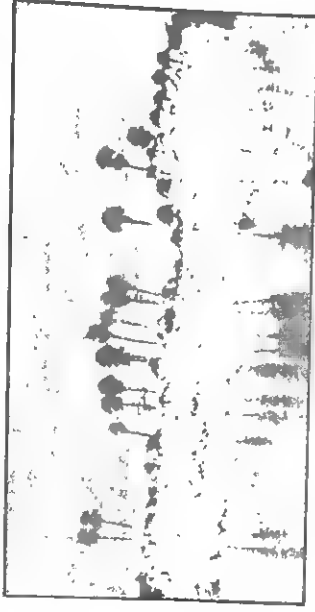
श्रीवैद्यनाथ-मन्दिर, वैद्यनाथधाम
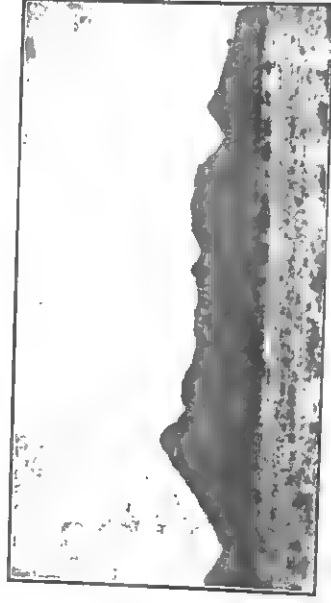
त्रिकूटपर्वतका एक जलप्रपात
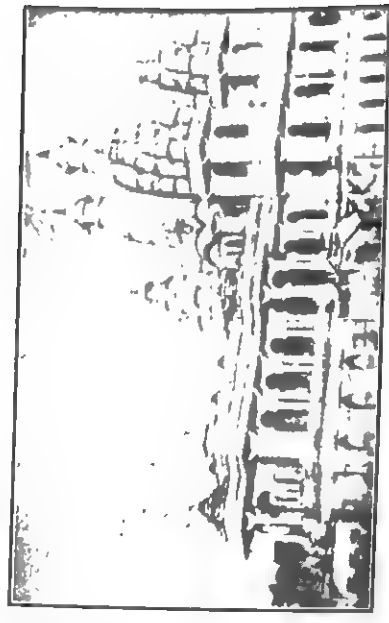
युगल-मन्दिरका एक दृश्य, वैद्यनाथ

बाकेश्वर

पूर्वी रेलवेकी मुख्य लाइनमें ओंडाल जंकशन है। ओंडालसे एक लाइन सैंथिया जाती है। इस लाइनपर ओंडालसे २२ मीलपर दुब्राजपुर स्टेशन है। इस स्टेशनसे ७ मील उत्तर तप्त जलके कई झरने हैं। तप्त झरनोंके पास कई शिवमन्दिर हैं। बाकेश्वर नालेके तटपर होनेसे यह स्थान बाकेश्वर कहा जाता है। यह स्थान ५१ शक्तिपीठोंमें है। सतीका मन यहाँ गिरा था। यहाँका मुख्य मन्दिर वक्रेश्वर शिव-मन्दिर है। यहाँ पापहरणकुण्ड है। कहते हैं कि यहाँ अष्टावक्र ऋषिका आश्रम था।

केंदुली (केन्दुबिल्व)

ओंडाल-सैंथिया रेलवे-लाइनमें ओंडालसे ६ मीलपर सिहुली स्टेशन है। वहाँसे १८ मील दूर अजय नदीके उत्तर केंदुली ग्राम है। गीतगोविन्दके रचयिता महाकवि जयदेवकी यही जन्मभूमि है। भक्त जयदेवजीका यहाँ समाधि-मन्दिर है। मकर-संक्रान्तिपर यहाँ मेला लगता है।

क्षीरग्राम

पूर्वी रेलवेके बर्दवान जंकशनसे २० मील उत्तर यह स्थान है। यहाँ देवी-मन्दिर है, जो ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ सतीके दाहिने पैरका अँगूठा गिरा था।

श्रीवैद्यनाथधाम

श्रीवैद्यनाथ द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें एक हैं और वैद्यनाथधाम ५१ शक्तिपीठोंमें एक पीठ भी है। सतीके देहसे यहाँ उनका हृदय गिरा था। कुछ लोग हैदराबाद क्षेत्रमें परली वैद्यनाथको द्वादश लिङ्गोंमें मानते हैं; किंतु वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग चिताभूमिमें बताया गया है; अतः उसका स्थान यह वैद्यनाथधाम ही जान पड़ता है। वैद्यनाथधामका एक नाम देवघर भी है। बहुत-से लोग सांसारिक कामनाओंसे वैद्यनाथ आते हैं और संकल्पपूर्वक निर्जलव्रत करके मन्दिरमें धरना देकर पड़ रहते हैं। इनमें अधिकांश क्षुधा-पिपासा न सह सकनेसे लौट जाते हैं; किन्तु जो बराबर टिके रहते हैं, उनकी कामना पूर्ण होती सुनी जाती है।

मार्ग—पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-पटना लाइनपर जसीडीह स्टेशन है। जसीडीहसे एक रेलवे-लाइन वैद्यनाथधाम स्टेशनतक जाती है। जसीडीहसे वैद्यनाथधाम स्टेशन चार मील है। स्टेशनसे श्रीवैद्यनाथ-मन्दिर लगभग एक मील है। मन्दिरतक पक्की सड़क है। सवारियाँ मिलती हैं।

ठहरनेके स्थान—वैद्यनाथधाममें बहुत-से लोग पंडोंके घरोंमें ठहरते हैं। यात्रियोंके ठहरनेके लिये निम्नलिखित धर्मशालाएँ भी हैं। १-हजारीमलकी दूधवेवालेकी धर्मशाला, स्टेशनके पास। २-हरिकृष्णदास भट्टरकी, शिवगङ्गापर। ३-मुखाराम लक्ष्मीनारायणकी, मन्दिरके पास। ४-रामचन्द्र गोयनकाकी, बड़ी बाजार, ५-ताराचन्द्र रामनाथ पूनेवालेकी, ज्ञानगुदड़ी। ६-शंकरधर्मशाला, चौक।

दर्शनीय स्थान—वैद्यनाथधामका मुख्य मन्दिर श्रीवैद्यनाथ-मन्दिर ही है। मन्दिरके घेरेमें ही पुष्पादि तथा तीर्थोंका जल भी बिकता है। श्रीवैद्यनाथशिवलिङ्ग रावणद्वारा कैलाससे लाया गया था। लिङ्गमूर्ति ऊँचाईमें बहुत छोटी है—आधारपीठसे उसका उभाड़ थोड़ा ही है।

श्रीवैद्यनाथ-मन्दिरके घेरेमें ही २१ मन्दिर और हैं—

१—गौरी-मन्दिर—वैद्यनाथजीके सम्मुख ही यह मन्दिर है। यही यहाँका शक्तिपीठ है। इसमें एक ही सिंहासनपर श्रीजयदुर्गा तथा त्रिपुरसुन्दरीकी दो मूर्तियाँ विराजमान हैं।

२-कार्तिकेय-मन्दिर—परिक्रमामें चलनेपर यह दूसरा मन्दिर आता है। इसमें मदनमोहनजी तथा कार्तिकेयकी

मूर्तियाँ हैं। इनके अतिरिक्त परिक्रमामें ये मन्दिर क्रमशः मिलते हैं—

३—गणपति-मन्दिर, ४. ब्रह्माजीका मन्दिर, ५. सन्ध्या-देवीका मन्दिर, ६. कालभैरव-मन्दिर, ७. हनुमान्‌जीका मन्दिर, ८. मनसा देवीका मन्दिर, ९. सरस्वती-मन्दिर, १०. सूर्य-मन्दिर, ११. बगला देवीका मन्दिर, १२. श्रीराम-मन्दिर, १३. आनन्दभैरव-मन्दिर, १४. गङ्गा-मन्दिर, १५. मानिक चौक चबूतरा, १६. हर-गौरी मन्दिर, १७. कालिका-मन्दिर, १८. अन्नपूर्णा-मन्दिर, १९. चन्द्रकूप, २०. लक्ष्मी-नारायण-मन्दिर, २१. नीलकण्ठ महादेव मन्दिर।

आसपासके दर्शनीय स्थान

शिवगङ्गा सरोवर—कहा जाता है कि रावणने जलकी आवश्यकता होनेपर पदाघातसे यह सरोवर उत्पन्न किया था। मन्दिरके पास ही यह सरोवर है। यात्री इसमें स्नान करके तब दर्शन करने जाते हैं।

तपोवन—वैद्यनाथ (देवघर) से चार मील पूर्व एक पर्वतपर यह स्थान है। यहाँ शिखरपर एक शिव-मन्दिर है और शूलकुण्ड नामक एक कुण्ड है। स्थानीय लोग इसे महर्षि वाल्मीकिका तपोवन कहते हैं।

त्रिकूट—तपोवनसे ६ मील (वैद्यनाथसे १० मील) पूर्व यह पर्वत है। इसपर त्रिकूटेश्वर शिवमन्दिर है। इस पर्वतसे मयूराक्षी नदी निकलती है।

हरिलाजोड़ी—यह वैद्यनाथसे उत्तर-पूर्व एक ग्राम है। कहा जाता है कि यहीं एक हर्रके वृक्षके नीचे रावणने वैद्यनाथलिङ्ग ब्राह्मणवेशधारी श्रीनारायणके हाथमें दिया था। अब यहाँ एक काली-मन्दिर है।

दोलमञ्च—श्रीवैद्यनाथ-मन्दिरसे कुछ दूर पश्चिम यह स्थान है। दोलपूर्णिमा (फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा) को यहाँ श्रीराधा-कृष्णका झूलामहोत्सव होता है।

बैजू-मन्दिर—दोलमञ्चसे पश्चिम बैजू भीलकी समाधि है। बैजू भील ही श्रीवैद्यनाथका प्रथम पूजक था।

नन्दन पर्वत—वैद्यनाथधामके उत्तर-पश्चिम कोणपर यह पर्वत है। इसके ऊपर छिन्नमस्ता देवीका मन्दिर है। पर्वतके नीचे काली-मन्दिर है।

कथा

राक्षसराज रावणने कैलासपर भगवान् शङ्करको संतुष्ट करनेके लिये कठोर तप किया। उसकी तपस्यासे संतुष्ट होकर शङ्करजीने प्रत्यक्ष दर्शन दिया और वरदान माँगनेको कहा। रावणने प्रार्थना की कि भगवान् शङ्कर लङ्कामें निवास करें। शङ्करजीने रावणको वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग प्रदान करके आज्ञा दी कि उसे वह लङ्कामें स्थापित करे; किंतु शङ्करजीने सावधान कर दिया कि मार्गमें कहीं पृथ्वीपर वह मूर्ति रखेगा तो फिर उठा नहीं सकेगा।

देवता नहीं चाहते थे कि ज्योतिर्लिङ्ग लङ्का जाय। आकाशमार्गसे मूर्ति लेकर जाते हुए रावणके उदरमें वरुणदेवने प्रवेश किया। रावणको लघुशङ्काका अत्यधिक वेग प्रतीत हुआ। विवश होकर वह पृथ्वीपर उतर पड़ा। वृद्ध ब्राह्मणका वेश बनाये भगवान् विष्णु वहाँ पहलेसे खड़े थे। रावणने कुछ क्षण लिये रहनेको कहकर मूर्ति ब्राह्मणको दे दी।

रावणके उदरमें तो वरुणदेव बैठे थे। उसकी लघुशङ्का झटपट पूरी कैसे हो सकती थी। इधर वृद्ध ब्राह्मणने कहा—'मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। यह धरी है तुम्हारी मूर्ति।' इतना कहकर वे चले गये।

रावण निवृत्त होकर उठा और उसने मूर्ति उठानेकी चेष्टा की तो असफल हो गया। शिवलिङ्ग तो पातालतक चला गया था—भूमिके ऊपर तो वह केवल आठ अंगुल शेष रहा था। निराश होकर रावणने चन्द्रकूप नामक कूप बनाया, उसमें सब तीर्थोंका जल एकत्र करके उसने वैद्यनाथजीका उसी कूपके जलसे अभिषेक किया। इसके पश्चात् आकाशवाणीद्वारा आश्वासन पाकर वह लङ्का चला गया। रावणके जानेके पश्चात् बैजू नामक भीलने इस मूर्तिको देखा और उसीने उसका प्रथम पूजन किया। बैजू जीवनभर इस मूर्तिका अनन्य सेवक रहा।

वासुकिनाथ

(लेखक—पं० श्रीकन्हैयालालजी पाण्डेय 'रसेश')

वैद्यनाथ (देवघर) से २८ मील पूर्वोत्तर देवघरसे दुमका जानेवाली पक्की सड़कपर यह स्थान है। देवघर और दुमकासे मोटर-बस मिलती है। भागलपुरसे भी बस आती है।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे नागेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग कहाँ है—यह विवादग्रस्त प्रश्न है। द्वारिकाके पास, हैदराबाद राज्यमें और यहाँ उसे बताया जाता है। दारुकवनमें नागेश्वर लिङ्गका वर्णन है। दारुकका ही अपभ्रंश दुमका हो गया, ऐसा इधरके विद्वान् मानते हैं। श्रीवासुकिनाथ ही नागेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग हैं, इस प्रकारकी दृढ़ मान्यता इस ओरके विद्वानोंकी है।

यहाँपर श्रीवासुकिनाथके मुख्य मन्दिरके अतिरिक्त आसपास पार्वती, काली, अन्नपूर्णा, राधाकृष्ण, तारा, त्रिपुरसुन्दरी, भैरवी, धूमावती, मातङ्गी, कार्तिकेय, गणेश, सूर्य, छिन्नमस्ता, बगला, त्रिपुराभैरवी, कमला, वटुक-भैरव, कालभैरव, हनुमान् तथा सुदर्शनचक्रके श्रीविग्रह हैं।

मन्दिरके घेरेमें चन्द्रकूप सरोवर है। उसीका जल शङ्करजीपर चढ़ाया जाता है। मन्दिरके उत्तर शिवगङ्गा सरोवर है। सरोवरके पास हनुमान्जीका मन्दिर है। उससे कुछ पूर्व श्मशानघाटके पास तारादेवीका पीठ है।

यात्रियोंके ठहरनेके लिये यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं। श्रावण, भाद्र, माघ तथा वैशाखमें विशेष मेला होता है।

कथा

यह कथा पुराणप्रख्यात है कि सुप्रिय नामक वैश्य शिवभक्तको आराधना करते समय दारुक नामक राक्षस मारने आया; तब भगवान् शङ्करने प्रकट होकर उस राक्षसका विनाश किया और भक्तकी रक्षा की। भक्तकी प्रार्थनापर भगवान् वहीं ज्योतिर्लिङ्गरूपमें स्थित हुए।

कालान्तरमें वह ज्योतिर्लिङ्ग लोकमें प्रख्यात नहीं रहा। घोर वनमें वह लुप्त हो गया। एक समय अकाल पड़ा। अकालके कारण लोग वनोंमें कन्द-मूलकी खोजमें भटकने लगे। उस समय वासु नामक एक मनुष्य कन्दकी खोजमें भूमि खोद रहा था। उसके शस्त्रका आघात ज्योतिर्लिङ्गपर लगा तो उससे रक्त निकलने लगा। वासु डर गया; किन्तु भगवान् शंकरने उसे आकाशवाणीद्वारा आश्वासन दिया। वासु उसी समयसे उस लिङ्गमूर्तिका पूजन करने लगा। वासुद्वारा पूजित होनेसे नागेश्वरलिङ्गका नाम वासुकिनाथ हो गया।

वासुकिनाथसे ईशानकोणपर वासुकिपर्वत है। उसपर अमृतमन्थनके पश्चात् देवताओंने वासुकि नागको छोड़ा। उस वासुकि नागद्वारा आराधित होनेके कारण यह मूर्ति नागेश्वर तथा वासुकिनाथ इन दोनों नामोंसे प्रख्यात हुई, यह भी कुछ विद्वानोंका मत है।

आसपासके तीर्थ

दुःखहरणनाथ—वासुकिनाथसे लगभग दो मील दक्षिण पहाड़ीपर यह मन्दिर है। यहाँ पहले एक योगी रहते थे। मन्दिरमें दुःखहरणनाथ नामक शिवलिङ्ग है। यहाँ चारों ओर पहाड़ियाँ हैं।

नीमानाथ—वासुकिनाथसे पाँच मील वायव्यकोणमें मयूराक्षी नदीके तटपर नीमानाथ-शिवमन्दिर है। नीमा नामक प्राचीन शिवभक्ताके ये आराध्य हैं।

शुम्भेश्वरनाथ—देवघर-भागलपुर रोडपर सरैया हाट ग्रामसे दो मील अग्निकोणमें यह विशाल मन्दिर है। शुम्भ दैत्यने यहाँ शंकरजीकी आराधना की है। यह स्थान घोर वनमें है, यहाँ पार्वती-मन्दिर तथा दो और मन्दिर हैं। शिवगङ्गा नामकी एक पुष्करिणी भी है।

महादेव सिमरिया

(लेखक—पं० श्रीशुकदेवजी मिश्र वैद्य, आयुर्वेदाचार्य)

यह स्थान श्रीवैद्यनाथधामसे ६२ मील दूर है। पूर्व-रेलवेकी क्यूल-गया लाइनपर क्यूलसे २० मील दूर शेखपुरा स्टेशन है। इस स्टेशनसे महादेवसे सिमरिया लगभग ३ मील है। स्टेशनसे पक्की सड़क जाती है। मोटर-बस चलती है। लक्खीसरायसे गयाको बस-सर्विस महादेव सिमरिया होकर ही जाती है।

इस स्थानपर धनेश्वरनाथ महादेवका विशाल मन्दिर है। कहा जाता है कि एक कुम्हारको मिट्टी खोदते समय यह लिङ्गमूर्ति प्राप्त हुई। उसी कुम्हारके वंशज यहाँ पुजारी होते हैं। मन्दिरके चारों ओर शिवगङ्गा सरोवर है। उसपर एक ओरसे मन्दिरतक जानेको मार्ग है।

मन्दिरके सामने नन्दीकी मूर्ति है। मुख्य मन्दिरके अतिरिक्त श्रीपार्वतजी, श्रीलक्ष्मी-नारायण, अष्टभुजादेवी, गणेशजी तथा संध्यादेवीके मन्दिर और श्रीहनुमान्जीका

चबूतरा वहाँ है। मन्दिरके पास चन्द्रकूप है, उसीका जल धनेश्वरनाथजीको चढ़ाया जाता है।

यात्रियोंके ठहरनेके लिये यहाँ एक बड़ी धर्मशाला है। इस प्रदेशमें धनेश्वरनाथजीकी बड़ी मान्यता है। लोग इन्हें द्वितीय वैद्यनाथ कहते हैं। यहाँ शिवरात्रि, वसन्तपञ्चमी, माघीपूर्णिमा और भाद्रपद पूर्णिमाको मेला लगता है।

गृध्रेश्वरनाथ—महादेव सिमरियासे दक्षिण-पूर्व दस मीलपर गृध्रकूट पर्वत है। उसके नीचे गृध्रेश्वरनाथ महादेवका मन्दिर है। यह मन्दिर किउल नदीके तटपर है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। कहा जाता है कि इसी पर्वतपर जटायुका स्थान था। अब भी पर्वतशिखरपर सहस्रों गीध रहते हैं।

गृध्रकूटसे दो मील पश्चिममें पञ्चमूर स्थान है। यहाँ एक विशाल कुण्ड है, जिससे पाँच धाराएँ निकलती हैं। कुछ लोग इसी स्थानको पञ्चवटी बतलाते हैं।

चन्द्रघण्टा—महादेव सिमरियासे आठ मील पश्चिम सड़कके पास नेतला भगवतीका मन्दिर है। शिक्षित वर्ग इन्हें चन्द्रघण्टा देवी कहता है।

शृङ्गी ऋषि—यह स्थान महादेव सिमरियासे १५ मील उत्तर है। पूर्वी रेलवेकी जसीडीह-क्यूल लाइनके बीचमें मननपुर स्टेशनसे यह स्थान पाँच मील है। पगडंडीका मार्ग है। यहाँ पर्वतसे एक प्रपात पाँच धाराओंमें एक कुण्डमें गिरता है। यात्री इसी प्रपातमें स्नान करते हैं। यहाँ एक छोटा मन्दिर है। कुछ लोग कहते हैं कि श्रीरामका चूडाकरण-संस्कार यहीं हुआ था। ऋष्यशृङ्गका आश्रम यहीं था।

ज्वालपा—शृङ्गी ऋषिके स्थानसे तीन मील पश्चिम ज्वालपादेवीका मन्दिर है। प्रत्येक मङ्गलवारको यहाँ स्थानीय लोग एकत्र होते हैं।

झारखण्डनाथ

(लेखक—श्रीगौरीशंकरजी राम 'माहुरी')

पूर्वी रेलवेके मधुपुर स्टेशनसे एक लाइन गिरिडीह आती है। वहाँसे मल्होग्रामतक बस-सर्विस है। मल्होग्रामसे सात मील पैदल मार्ग है।

इणानदीके तटपर झारखण्डनाथका मन्दिर है। यह स्थान वनमें है। मन्दिरके पास सरोवर है। महाशिवरात्रिपर यहाँ मेला लगता है।

पारसनाथ (सम्मेतशिखर)

यह प्रधान जैन-तीर्थ है। जैन इसे सम्मेतशिखर या शिखरजी कहते हैं। यह सिद्ध क्षेत्र माना जाता है। यहाँसे २० तीर्थङ्कर तथा असंख्य मुनि मोक्ष गये हैं। आदिनाथ ऋषभदेव भगवान् यहींसे मोक्ष गये हैं। जैनोंके सभी सम्प्रदाय इसे परम पवित्र क्षेत्र मानते हैं। इस पर्वतकी वन्दनासे जीवको नरक नहीं जाना पड़ता, ऐसी मान्यता है।

मार्ग—पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-गया लाइनपर गोमोसे बारह मील दूर पारसनाथ स्टेशन है। इस स्टेशनके समीपवर्ती गाँवका नाम ईसरी है। गयासे ईसरीतक मोटर-बस चलती है। पारसनाथ पहाड़ीका नाम है। उसके नीचे जो बस्ती है, उसे मधुवन कहते हैं। पारसनाथके यात्रीको ईसरी (पारसनाथ स्टेशन) से मधुवनतक जानेके लिये मोटर-बस प्रायः मिल जाती है। पारसनाथ स्टेशनसे मधुवन १४ मील है।

दूसरा मार्ग—पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-पटना लाइनके मधुपुर स्टेशनपर गाड़ी बदलना चाहिये। मधुपुरसे एक लाइन गिरिडीह जाती है। गिरिडीहसे मधुवन २० मील है। गिरिडीहसे मधुवनतक मोटर-बस तथा टैक्सी भी मिलती है।

तीसरा मार्ग—पूर्वी रेलवेपर गोमोसे ७ मील दूर निमियाघाट स्टेशन है। यहाँसे पारसनाथ-शिखर केवल ७ मील है; किंतु यह मार्ग पगडंडीका, वनके मध्यसे पर्वतीय बीहड़ मार्ग है। कुली या सवारी नहीं मिलती।

ठहरनेकी व्यवस्था—गिरिडीहमें एक जैन-धर्मशाला है। मधुवनमें श्वेताम्बर-जैन-धर्मशाला, दिगम्बर-जैन-धर्मशाला और तेरहपंथी-जैन-धर्मशाला है।

पारसनाथ-दर्शन—मधुवनसे ६ मीलकी पहाड़ी चढ़ाई है, ६ मील पर्वतोंपर घूमना है और ६ मीलकी

उतराई है। इस प्रकार १८ मीलकी पैदल यात्रा है। यात्रीको सबेरे ही चल देना चाहिये, जिससे अधिक धूप होनेसे पूर्व वह ऊपर पहुँच जाय।

मधुवनसे दो मील जानेपर गन्धर्वनाला मिलता है। उससे एक मील आगे दो मार्ग हो जाते हैं। बायीं ओरके मार्गसे जाना चाहिये। इससे सीधी परिक्रमा हो जाती है। दाहिनी ओरका रास्ता सीधे पारसनाथ-शिखर गया है। यात्री इससे लौटता है। बायें मार्गमें सीतानाला पड़ता है। यहाँसे १ मीलतक पक्की सीढ़ियाँ हैं, फिर कच्ची सड़क है।

ऊपर पहले गौतम स्वामीकी टोंक मिलती है। टोंकों (शिखरों) पर प्रायः चरणचिह्न हैं मन्दिरोंमें। यहाँसे बायें हाथकी ओर जाना चाहिये। आगे चन्द्रप्रभुजीकी टोंक पर्याप्त ऊँची है। उससे आगे अभिनन्दननाथकी टोंक होकर नीचे तलहटीमें जलमन्दिर जाते हैं। जलमन्दिरमें तीर्थङ्करोंकी मूर्तियाँ हैं। जलमन्दिरसे फिर गौतम स्वामीकी टोंकपर चढ़ना पड़ता है। और वहाँसे दाहिनी ओरका मार्ग पकड़कर पश्चिमके स्थानोंपर होते अन्तमें पार्श्वनाथ टोंक पहुँचते हैं। यह सबसे ऊँचा शिखर है। यहाँका मन्दिर भी बहुत सुन्दर है। यहाँसे यात्री सीधे नीचे लौटता है।

मधुवनमें भी कुछ जैन-मन्दिर हैं। वहाँ छोटा-सा बाजार भी है। भोजनादिकी सब सामग्री दूकानोंपर मिल जाती है।

विष्णुपुर

(लेखक—पं० श्रीनारायणचन्द्रजी गोस्वामी)

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-गोमो लाइनपर हबड़ासे १२५ मील दूर विष्णुपुर स्टेशन है। श्रीजीव गोस्वामीकी आज्ञासे श्रीनिवास, नरोत्तम ठाकुर और श्यामानन्दजी बैलगाड़ीमें वैष्णव-ग्रन्थ वृन्दावनसे गौड़ ले जा रहे थे। विष्णुपुरके पास वनमें बैलगाड़ी लूट ली गयी। यह लूट विष्णुपुरके राजाने ही करायी थी। पीछे जब ज्ञात हुआ कि संदूकोंमें पुस्तकें हैं, तब राजाने उन्हें सुरक्षित रख दिया। ग्रन्थ खोकर श्रीनिवासजीने अपने दोनों साथी लौटा दिये और स्वयं यहीं रुक गये। एक बार भागवतकी कथामें सहसा राजासे श्रीनिवासजीका परिचय हो गया। राजाने क्षमा माँगी, ग्रन्थ लौटा दिये और दीक्षा लेकर वैष्णव हो गया।

इस राजाके कुलमें ही परम भागवत राजा गोपालसिंह हुए। उनके पूजामें निमग्न रहते समय शत्रुओंने आक्रमण किया तो उनके इष्टदेव श्रीमदनमोहनजी स्वयं घोड़ेपर बैठकर दलमर्दन तोप लेकर युद्ध करके शत्रुओंको पराजित करने गये।

इस समय भी वह दलमर्दन तोप विष्णुपुरमें है। यहाँ श्रीमदनमोहनजी, श्रीराधेश्याम, मदनगोपाल और श्रीराधालालजीके मन्दिर हैं तथा यमुना, कालिन्दी, कालीदह, श्यामकुण्ड, राधाकुण्ड और श्यामबाँध, कृष्णबाँध, लालबाँध आदि सरोवर हैं।

यात्रियोंके ठहरनेके लिये स्टेशनसे एक मीलपर माहेश्वरी धर्मशाला है।

जयरामवाटी—विष्णुपुरसे २७ मील दूर है। यहाँतक मोटर-बस जाती है। यह श्रीशारदामाता (परमहंस रामकृष्णदेवकी पूर्वाश्रमकी धर्मपत्नी) की जन्मस्थली है। यहाँ शारदामाताका स्मृति-मन्दिर है।

कामारपूकर—जयरामवाटीसे ३ मील दूर। मोटर-बस यहाँतक आती है। यह परमहंस श्रीरामकृष्णदेवकी जन्मभूमि है। परमहंसदेवका स्मृति-मन्दिर है।

राँगीनाथ

(लेखक—श्रीअखौरी बनवारीप्रसादजी तथा श्रीचन्दनसिंहजी)

राँची जिलेके मैनपुर थानासे १० मीलपर नेतरहाट नामक पर्वतके नीचे श्रीराँगीनाथ महादेवका प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर जीर्ण दशामें है। आस-पास बहुत-सी भग्न मूर्तियाँ हैं। यहाँ एक विशाल त्रिशूल है। इतना बड़ा त्रिशूल अन्यत्र देखा नहीं जाता। पर्वतके पास ही एक झरना गिरता है। इस ओर यह प्रसिद्ध क्षेत्र है। मन्दिर प्राचीन कलाका सुन्दर प्रतीक है।

इस स्थानके समीप जंगलमें श्रीराधाकृष्णकी युगल-मूर्ति है। इनकी पूजा दूरवर्ती गाँवोंके वैष्णव प्रतिदिन आकर कर जाते हैं।

आञ्जनग्राम

पूर्वी-रेलवेकी एक लाइन राँचीसे लोहरदगा स्टेशन-तक जाती है। लोहरदगासे पक्की सड़क गुमलातक गयी है। गुमलासे ८ मील पहले ही टोटो ग्राम है। इस ग्रामसे ३ मील दूर आञ्जनग्राम है। कहा जाता है कि यही हनुमान्‌जीकी जन्मभूमि है। यहाँकी भूमि खोदनेपर प्राचीन वस्तुएँ प्राय: पायी जाती हैं। यह स्थान छोटा नागपुर जिलेमें है।

इस गाँवमें बहुत अधिक शिवलिङ्ग हैं और कई सरोवर हैं। कहते हैं कि यहाँ ३६० देवताओंका स्थान था। इतने ही सरोवर भी यहाँ थे; किंतु कालक्रमसे वह सब अब नष्ट हो चुका है।

इस गाँवके समीप पहाड़में अञ्जनी-गुफा है। श्रीहनुमान्‌जीकी माता अञ्जनादेवीका वह स्थान कहा जाता है। अञ्जनी-गुफासे थोड़ी दूरपर इन्द्रस्तम्भ और चन्द्रगुफा हैं। गाँवमें एक इन्द्रकुण्ड है, जिससे जल निकलता रहता है। इस स्थानकी प्रतिष्ठित मूर्ति है चक्र-महादेहकी मूर्ति।

अञ्जन गाँवमें उराँव लोगोंकी बस्ती है। यह छोटा-सा गाँव है। इस तीर्थका पता अभी ही लगा है और अब कुछ लोगोंका ध्यान इसकी ओर आकर्षित हुआ है।

महादेव केतूँगा

(लेखक—श्रीमदनमोहनदासजी गोस्वामी)

राँची जिलेके वानो थानेमें दूर जंगलमें जहाँ देवनदी और मलगो नदीका संगम है, वहाँ संगमपर भगवान् शंकरका मन्दिर है। यह लिङ्गमूर्ति पार्वती-मूर्तिके साथ भूमिसे प्रकट स्वयम्भू मूर्ति है। नदीके दूसरे किनारे नन्दीकी मूर्ति है। वहाँ प्राचीन मन्दिरोंके खँडहर हैं। महाशिवरात्रिपर तीन दिन तथा मकरसंक्रान्तिपर मेला लगता है। कार्तिकी पूर्णिमापर भी लोग आते हैं।

बाँकुड़ा

हबड़ा-गोमो लाइनपर हबड़ासे १४४ मीलपर है। यहाँसे कुछ ही दूरपर प्रख्यात एकतेश्वर महादेवका स्थान है। वहाँ बहुत यात्री जाते हैं। शिवरात्रिपर मेला लगता है। श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका सपरिवार यहीं रहते हैं। यहीं उनके भाई व्यापार करते हैं।

सोनामुखी

(लेखक—श्रीवामनशाह एच० कुटार)

मार्ग—यह स्थान पश्चिमी बंगालके बाँकुड़ा जिलेमें पड़ता है। बाँकुड़ा-दामोदर रिवर रेलवे-लाइनपर बाँकुड़ासे २९ मील दूर सोनामुखी स्टेशन है।

दर्शनीय स्थान—स्टेशनसे पास ही बंगालके प्रसिद्ध संत पागल हरनाथका मन्दिर है। उसमें उन्हींकी प्रतिमा है।

मन्दिरके पीछे सरोवर है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। पासमें ही पागल हरनाथजीके पिताद्वारा प्रतिष्ठित शिवमन्दिर है। शिवमन्दिरके पास श्रीराधाकृष्णका मन्दिर है।

सोनामुखीमें ही बाबा मनोहरदासजीका समाधि-मन्दिर है।

बंगालके कुछ मन्दिर

श्रीहरनाथ-शान्तिकुटीर, सोनामुखी
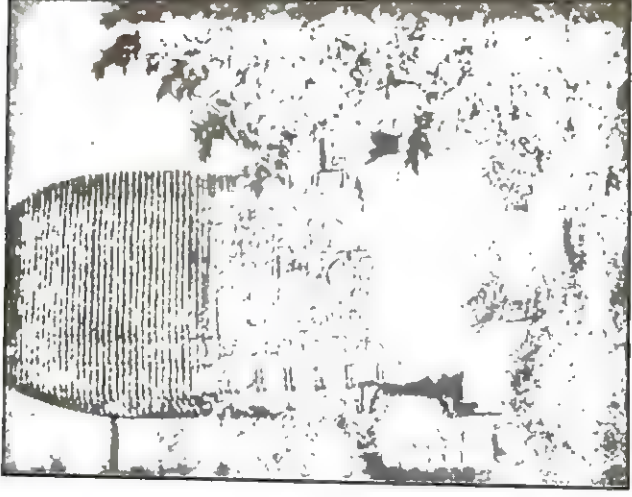
श्रीशिव-मन्दिर, सोनामुखी
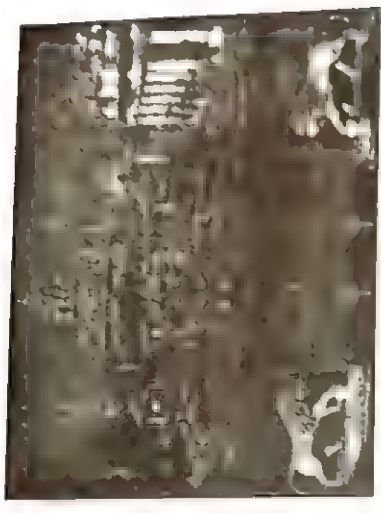
श्रीपार्श्वनाथ जैन-मन्दिर, कलकत्ता

आदिकाली-मन्दिर, कलकत्ता

काली-मन्दिर, कालीघाट

श्रीदक्षिणेश्वर-मन्दिर, कलकत्ता

बंगाल तथा आसामके कुछ मन्दिर

योगपीठ, श्रीधाम
मायापुरका श्रीमन्दिर
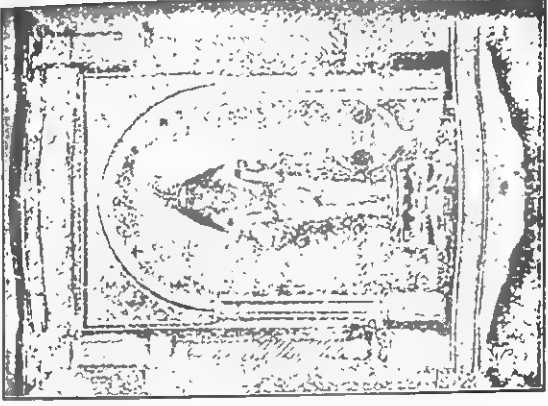
श्रीविष्णुप्रियाजीके द्वारा स्थापित
गौराङ्ग-विग्रह, नवद्वीप

श्रीकामाख्या-मन्दिर, गौहाटी

श्रीतारकेश्वर-मन्दिर—सामनेसे
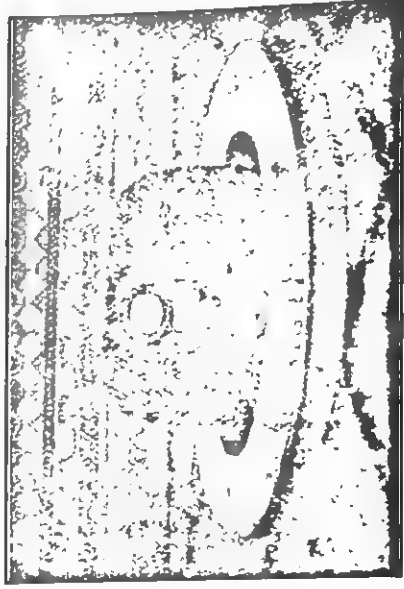
श्रीतारकेश्वर लिङ्ग-विग्रह

श्रीचन्द्रनाथ-मन्दिर, चटगाँव

गरबेट्टा

हबड़ा-गोमो लाइनपर मिदनापुरसे २९ मील (हबड़ासे १०९ मील) दूर गरबेटा स्टेशन है। यहाँ सर्वमङ्गला देवी तथा कांगेश्वर महादेव—ये दो मन्दिर हैं। ये दोनों मन्दिर प्राचीन और सुन्दर हैं। इनके समीप ही एक किलेका परकोटा है। उसके भीतर सात सरोवर हैं। प्रत्येक सरोवरके मध्यमें एक देव-मन्दिर है।

कलकत्ता

कलकत्ता भारतकी महानगरी है। यह गङ्गा-तटपर स्थित है। हबड़ा, सियालदह और दक्षिणेश्वर—ये रेलवे स्टेशन कलकत्तेमें ही पड़ते हैं। ५१ शक्तिपीठोंमेंसे कलकत्ता एक शक्तिपीठ है। यहाँ सतीदेहके दाहिने पैरकी चार अँगुलियाँ (अँगूठेको छोड़कर) गिरी थीं।

ठहरनेके स्थान

कलकत्तेमें बहुत-सी संस्थाओंके कार्यालय हैं, होटलोंमें ठहरनेवालोंके लिये वह व्यवस्था है ही। पर्याप्त धर्मशालाएँ भी हैं, जिनमेंसे कुछके नाम नीचे दिये जा रहे हैं—

१-श्रीफूलचंद मुकीम जैनकी, कलाकर स्ट्रीट, नेहरूपार्कके सामने, बड़ा बाजार, २-श्रीसूरजमलजी झुंझुनवालाकी, ६ मल्लिक स्ट्रीट। ३-श्रीलक्ष्मीनारायणजीकी, ५ बाँसतल्ला। ४-राजा शिवबक्सजी बागलाकी, हबड़ा। ५-पं० विनायकजी मिश्रकी २२६ हरीसन रोड। ६-श्रीश्यामदेवजी भोतिकाकी, १५० हरीसन रोड। ७-श्रीबब्लूलालजी अग्रवालकी, १६९ हरीसन रोड। ८-श्रीरामकृष्णदासजी गिरधारीलालकी, १६७ हरीसन रोड। ९-श्रीधनसुखदास जेठमलकी, जैन-धर्मशाला, ४४ बद्रीदास टेम्पल स्ट्रीट, मानिकतल्ला। १०-बड़ी संगत, सिख-मन्दिर, ७९ सूतापट्टी। ११-सेठ वासुदेव जेठाभाई मूलचन्दकी, ७ अमरतल्ला स्ट्रीट। १२-पुरसुन्दरी-धर्मशाला, ६। २४ बीडन स्ट्रीट। १३-बीकानेरके डागाजीकी, न्यू जगन्नाथ रोड। १४-श्रीजमुनादासजी टीबड़ेवालेकी, १६४ सी चित्तरंजन एवन्यू। १५-दिगम्बर-जैनभवन, बाँगड़ बिल्डिंग, मछुआ बाजार। १६-रामभवन, विवेकानन्द रोड। इनके अतिरिक्त भी बहुत-सी धर्मशालाएँ हैं।

तीर्थस्थल

कलकत्तेमें सर्वमङ्गला, तारासुन्दरी, श्रीसत्यनारायणजी, नवीन श्रीराम-मन्दिर, भूतेश्वर महादेव, श्रीदाऊजी, श्रीसाँवलियाजी आदि मन्दिर तो बहुत-से हैं; किंतु जिन्हें तीर्थस्थलोंमें गिना जा सके, ऐसे प्रधान चार ही स्थान हैं—१-आदिकाली, २-काली, ३-दक्षिणेश्वर, ४-बेलूरमठ।

आदिकाली—यह कलकत्तेमें सबसे प्राचीन स्थान है। टालीगंजमें ट्राम तथा बसके अड्डोंसे लगभग एक मीलपर नगरसे प्रायः बाहर यह देवी-मन्दिर है। मुख्य मन्दिर नष्ट होनेके बाद पुनः बना है, इससे शिखरदार नहीं है। मुख्य मन्दिरके दोनों ओर ऊँचे चबूतरेपर एक ओर पाँच और एक ओर छः मन्दिर हैं। इनमें शिवलिङ्ग हैं। इस प्रकार ये एकादश रुद्र-मन्दिर हैं। कलकत्तेका शक्तिपीठ यही स्थान है।

काली-मन्दिर—कलकत्तेका काली-मन्दिर अत्यन्त प्रख्यात है। इसमें महाकालीकी मूर्ति है। कुछ लोग काली-मन्दिरको ही शक्तिपीठ मामते हैं। देवी-मन्दिरके समीप ही नकुलेश्वर शिव-मन्दिर है।

दक्षिणेश्वर—कलकत्तेमें दक्षिणेश्वर एक रेलवे-स्टेशन ही है। यह स्थान गङ्गा-किनारे है। यहाँ रानी रासमणिका बनवाया काली-मन्दिर है। मन्दिर अत्यन्त भव्य है। मन्दिरके घेरेमें चबूतरेपर १२ शिव-मन्दिर हैं। परमहंस श्रीरामकृष्णदेवने यहीं महाकालीकी आराधना की थी। मन्दिरसे लगा हुआ परमहंसदेवका कमरा है, जिसमें उनका पलंग तथा दूसरे स्मृतिचिह्न सुरक्षित हैं। मन्दिरके बाहर परमहंसकी पूर्वाश्रमकी धर्मपत्नी श्रीशारदामाता तथा रानी रासमणिका समाधि-मन्दिर है और वह

वटवृक्ष है, जिसके नीचे परमहंसदेव ध्यान किया करते थे।

बेलूरमठ—दक्षिणेश्वरके पासके गङ्गापार होकर हबड़ाकी ओर आनेपर कुछ दूरपर गङ्गा-किनारे बेलूर-मठ है। इस मठकी स्थापना स्वामी विवेकानन्दजीने की थी। श्रीरामकृष्णमिशनका यहीं प्रधान कार्यालय है। यहाँका श्रीरामकृष्ण-मन्दिर अत्यन्त भव्य है। विशाल मन्दिरमें प्राच्य-पाश्चात्य कलाओंका मनोरम ऐक्य है। यहीं स्वामी विवेकानन्दजीकी समाधि भी है।

जैन-मन्दिर—यहाँका प्रसिद्ध श्रीपार्श्वनाथजीका जैनमन्दिर बहुत ही सुन्दर और दर्शनीय है। जैनियोंके और मन्दिर भी हैं।

प्रसिद्ध महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, श्रीकेशवचन्द्र सेन, स्वामी विवेकानन्द, कवीन्द्र श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा श्रीचित्तरञ्जनदास आदिकी जन्मभूमि कलकत्ता ही है। यहाँका हबड़ापुल जगत्प्रसिद्ध है।

कलकत्तेके आस-पासके तीर्थ

बड़नगर

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-बरहरवा लाइनमें अजीमगंज स्टेशन है। अजीमगंजसे १ मील उत्तर गङ्गा-किनारे बड़नगर प्रसिद्ध स्थान है।

बड़नगर मन्दिरोंसे भरा है। यहाँका सबसे बड़ा मन्दिर भवानीश्वर शिव-मन्दिर है। यहाँ गोपाल-मन्दिर, सिंहवाहिनी-मन्दिर, दशभुजा-मन्दिर, अन्नपूर्णा-मन्दिर, राजराजेश्वरीमन्दिर, मदनगोपाल-मन्दिर और चारबाँगला-मन्दिर दर्शनीय हैं। यहाँ एक अष्टभुजागणेश-मन्दिर भी है।

अजीमगंजसे ४ मील पहले लालबाग कोर्ट स्टेशन है। वहाँसे ३ मील गङ्गा-किनारे बड़नगरके पास किरीटस्थानका देवी-मन्दिर ५१ शक्तिपीठोंमें एक है। वहाँ सतीका किरीट गिरा था।

गुप्तीपाड़ा

नवद्वीप धाम स्टेशनसे १५ मील दूर कलना स्थान है। वहाँसे गुप्तीपाड़ा चार मील दूर है। यहाँ बहुत अधिक प्राचीन देवालय हैं। उनमें श्रीवृन्दावनचन्द्र, कृष्णचन्द्र, रामचन्द्र तथा चैतन्यदेवके मन्दिर अधिक प्रसिद्ध हैं।

बालागढ़

गुप्तीपाड़ासे ६ मीलपर यह स्थान है। यहाँ एक चण्डीमन्दिर तथा श्रीराधागोविन्द-मन्दिर है। यह स्थान गौड़ीय वैष्णवोंका श्रीपीठ है।

चकदह

बालागढ़से ५ मीलपर यह स्थान है। कहा जाता है कि गङ्गा ले आते समय महाराज भगीरथके रथके पहियोंके चिह्न यहाँ पड़े थे। यहाँ पातपाड़ाका मन्दिर दर्शनीय है। वारुणीपर्वपर यहाँ मेला लगता है।

त्रिवेणी

चकदहसे ५ मीलपर यह स्थान है। बंगालमें प्राचीन चार विद्याकेन्द्र माने जाते रहे हैं—१-नवद्वीप, २-शान्तिपुर, ३-गुप्तीपाड़ा, ४-त्रिवेणी। प्रयागमें जैसे गङ्गा, यमुना, सरस्वती एक हो गयी हैं, वैसे ही वे यहाँसे पृथक् हो जाती हैं। भागीरथी कलकत्ते होकर गङ्गासागर जाती हैं। सरस्वती सप्तग्राम होती सँकराइल स्थानमें फिर गङ्गामें मिल जाती हैं और यमुना पूर्वकी ओर इच्छामती नामसे बहती हैं। प्रयागकी त्रिवेणीको युक्त-त्रिवेणी और यहाँकी त्रिवेणीको मुक्त-त्रिवेणी कहा जाता है।

इस स्थानका पुराणोंमें बहुत माहात्म्य बताया गया है। यहाँ गङ्गादशहरा, वारुणी, मकरसंक्रान्ति, माघपूर्णिमा, ग्रहण आदि अवसरोंपर मेला लगता है। यहाँ एक स्थानपर सात छोटे मन्दिरोंके मध्य श्रीवेणीमाधवजीका मन्दिर है।

बंसबाटी

पूर्वी रेलवेपर कलकत्तेसे २८ मील दूर यह स्टेशन है। त्रिवेणी यहाँसे दो मील है। यहाँ भगवान् विष्णु, काली तथा हंसेश्वरीके मन्दिर हैं। इनमें हंसेश्वरी-मन्दिरमें भगवान् शङ्कर लेटे हुए दिखाये गये हैं। उनकी नाभिसे निकले कमलपर हंसेश्वरीदेवी विराजमान हैं। यह मन्दिर कुण्डलिनीयोगके आधारपर बना है।

बल्लभपुर

हबड़ासे १२ मीलपर श्रीरामपुर स्टेशन है। वहाँसे २ मीलपर बल्लभपुर गाँव है। यहाँ श्रीराधावल्लभका भव्य मन्दिर है। इस गाँवसे एक मीलपर महेश नामक गाँव है। उस गाँवमें श्रीजगन्नाजीका मन्दिर है। वैशाख महीनेमें यहाँ बड़ा मेला लगता है। महेशसे

श्रीजगन्नाथजीकी रथयात्रा प्रारम्भ होनेके बाद रथ बल्लभपुर आता है। आठ दिन बाद श्रीजगन्नाथजी निज-मन्दिरमें लौटते हैं। इस महोत्सवके समय यहाँ लक्षाधिक यात्री एकत्र होते हैं।

वैद्यवाटी

यह स्थान निमाई-तीर्थ घाट नामसे प्रसिद्ध है। पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-बर्दवान लाइनपर हबड़ासे १४ मील दूर सिवड़ा-फूली स्टेशन है और १५ मीलपर वैद्यवाटी स्टेशन है। यहाँ भद्रकाली-मन्दिर है।

सिवड़ाफूली

यह स्टेशन हबड़ासे १४ मीलपर है। यहाँ श्रीनिस्तारिणी कालीदेवीका मन्दिर है। यह मन्दिर राजा हरिश्चन्द्रने बनवाया था।

यहाँसे १ मीलपर गङ्गाके दाहिने तटपर श्रीरामपुर है। यहाँ एक प्राचीन शीतलामन्दिर है। ग्राममें श्रीजगन्नाथजी और श्रीराधावल्लभजीके मन्दिर हैं। यहाँकी रथयात्रा प्रसिद्ध है।

छत्रभाग

पूर्वी रेलवेकी कलकत्ता-लक्ष्मीकान्तपुर लाइनपर कलकत्तेसे ३३ मील दूर मथुरापुर रोड स्टेशन है। इस स्टेशनसे लगभग चार मील दूर बड़ाशी-माधवपुर ग्राममें चक्र तीर्थ है। पास ही छत्रभागमें त्रिपुरसुन्दरी देवीका मन्दिर है।

बड़ाशीग्राममें बदरिकानाथ नामक प्राचीन शिवलिङ्ग है। इस लिङ्गमूर्तिका प्राचीन नाम अम्बुलिङ्ग है। चैतन्य-भागवतमें अम्बुलिङ्गका बहुत माहात्म्य वर्णित है। कहा गया है कि जब राजा भगीरथ गङ्गा ले आये, तब गङ्गाजीके वियोगसे अधीर होकर शङ्करजी उनके साथ आये और छत्रभागमें गङ्गाजीमें जलरूप होकर मिल गये।

बदरिकानाथ-मन्दिरके पास ही शिवकुण्ड है। मन्दिरके निकट भागीरथीके भीतर चक्रतीर्थ है। कहा जाता है कि दैत्यगुरु शुक्राचार्यने इस स्थानपर नन्दातिथि, शुक्रवारको स्नान किया था और इससे वे पापमुक्त हो गये थे। चैत्र शुक्ला प्रतिपदाको शुक्रवार होनेपर यहाँ बड़ा मेला लगता है। नन्दापूकर सरोवरमें उस समय लोग स्नान करते हैं। नन्दापूकरसे आध मीलपर माधवपुर ग्राम है। वहाँ संकेतमाधवकी मूर्ति है।

नन्दापूकरसे कुछ दूरपर खाँड़ी ग्राममें नारायणीदेवीकी मूर्ति है। ये देवी सिंहवाहिनी, त्रिनेत्रा, द्विभुजा, पीतवर्णा हैं। नारायणीदेवी-मन्दिरके पास दक्षिणरायका मन्दिर है।

तामलुक (ताम्रलिप्ति)

मायापुरसे नौ मील दूर गङ्गाके बायें तटपर फाल्टा नगर है। फाल्टाके सामने दामोदर नदी है। वहीं जलमारी रेतका समूह है और उसके दूसरे सिरेपर रूपनारायण नदीका गङ्गामें संगम है। रूपनारायण नदीके तटपर तामलुक नगर है।

तामलुक प्राचीन नगर है। चीनी यात्री हुएनसांगने इसे बंदरगाह बताया है; किन्तु अब समुद्र यहाँसे ६० मील दूर है। यह बौद्ध-तीर्थ रहा है। यहाँ दस विहार थे। अब भी यहाँ एक अशोक-स्तम्भ है।

रूपनारायण नदीके तटपर यहाँ वर्गभीमा कालीका विशाल मन्दिर है। यह बहुत प्राचीन एवं सुदृढ़ मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ सतीका वाम गुल्फ गिरा था।

लाभपुर

पूर्वी रेलवेकी अहमदपुर-बर्दवान लाइनपर लाभपुर स्टेशन है। स्टेशनके पास देवी-मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें एक पीठ है। सतीका अधर यहाँ गिरा था।

गङ्गा-सागर

मार्ग—कलकत्तेसे यात्री प्रायः जहाजमें गङ्गा-सागर जाते हैं। कलकत्तेसे ३८ मील दक्षिण 'डायमंड हारबर' स्टेशन है। वहाँसे नावें और जहाज भी गङ्गा-सागर जाते हैं। कलकत्तेसे सागरद्वीप लगभग ९० मील दक्षिण है।

तीर्थस्थान—सागरद्वीपमें केवल थोड़े-से साधु ही रहते हैं। यह द्वीप १५० वर्गमीलके लगभग है। यह अब वनसे ढका और जनहीनप्राय है। इस सागरद्वीपमें जहाँ गङ्गासागरका मेला होता है, वहाँसे कई मील उत्तर वामनखल स्थानमें एक प्राचीन मन्दिर है। उसके पास चन्दनपीड़िवनमें एक जीर्ण मन्दिर है और बुड़बुड़ीर-तटपर विशालाक्षीका मन्दिर है।

इस समय जहाँ गङ्गा-सागरपर मेला लगता है,

पहले वहीं गङ्गाजी समुद्रमें मिलती थीं; किंतु अब गङ्गाका मुहाना पीछे हट आया है। अब गङ्गा-सागर (सागरद्वीप) के पास गङ्गाजीकी एक छोटी धारा समुद्रसे मिलती है।

गङ्गा-सागरका मेला मकर-संक्रान्तिपर लगता है और प्रायः पाँच दिन रहता है। इसमें स्नान तीन दिन होता है। गङ्गा-सागरमें कोई मन्दिर नहीं है। मेलेके कुछ दिन पूर्व १ मील जंगल काटकर मेलेके लिये स्थान बनाया जाता है। यहाँ कभी कपिलमुनिका मन्दिर था; किन्तु उसे समुद्र बहा ले गया। अब तो कपिलमुनिकी मूर्ति कलकत्तेमें रखी रहती है और मेलेसे एक दो सप्ताह पूर्व पुरोहितोंको दे दी जाती है। यह मूर्ति लाल रंगकी है। रेतमें चार फुट ऊँचे चबूतरेपर एक अस्थायी मन्दिर बनाकर उसमें पुजारी कपिलमुनिकी मूर्ति स्थापित कर देते हैं।

गङ्गा-सागरमें यात्री प्रायः रेतपर ही पड़े रहते हैं। संक्रान्तिके दिन समुद्रसे प्रार्थना की जाती है और प्रसाद चढ़ाया जाता है और समुद्र-स्नान किया जाता है। दोपहरको फिर स्नान तथा मुण्डन-कर्म होता है। यहाँपर लोग श्राद्ध, पिण्डदान भी करते हैं। इसके पश्चात् कपिलमुनिके दर्शन करते हैं। तीन दिन समुद्र-स्नान तथा दर्शन किया जाता है। इसके बाद लोग लौटने लगते हैं। पाँचवें दिन मेला समाप्त हो जाता है।

कुछ लोग कार्तिकी पूर्णिमापर भी गङ्गासागर जाते हैं; किन्तु उस समय वहाँ न बाजार होता न दूकानें जाती हैं। उस समय जानेवालोंको भोजनादि सामग्री साथ ले जाना पड़ता है। मकर-संक्रान्तिके अवसरपर तो वहाँ पूरा बाजार लगता है।

गङ्गा-सागरमें मीठे जलका अभाव-सा ही है। मेलेके समय यात्रियोंके लिये जलकी सामान्य व्यवस्था है। मीठे जलका एक कच्चा सरोवर है। उसमें मेलेके समय कोई स्नान नहीं करने पाता। घड़ेमें वहाँका पानी ले जा सकते हैं। खारे पानीके दो-तीन सरोवर आसपास हैं।

सिद्धेश्वर

कलकत्ता-लालगोलाघाट लाइनपर कृष्णनगर सिटी स्टेशनसे ४ मील (कलकत्तेसे ६६ मील) दूर बहादुरपुर स्टेशन है। इस स्टेशनसे थोड़ी ही दूरपर सिद्धेश्वर क्षेत्र है। सिद्धेश्वर शिव-मन्दिर बहुत प्राचीन है। चैत्रमें यहाँ बड़ा मेला लगता है। कहा जाता है कि योगदर्शनकार महर्षि पतञ्जलिका यहाँ आश्रम था।

तारकेश्वर

पूर्वी रेलवेकी एक लाइन हबड़ासे तारकेश्वरतक जाती है। हबड़ासे तारकेश्वर स्टेशन ३४ मील दूर है। स्टेशनसे मन्दिर लगभग १ मील है। तारकेश्वर एक सामान्य बाजार है। यात्री यहाँ प्रायः पंडोंके घर ठहरते हैं।

तारकेश्वर-मन्दिरके समीप दुग्धगङ्गा नामका सरोवर है। उसमें स्नान करके यात्री तारकेश्वरके दर्शन करते हैं।

श्रीतारकेश्वर-मन्दिरके पास ही काली-मन्दिर है। श्रीवैद्यनाथधामकी भाँति यहाँ भी बहुत-से रोगी तथा दूसरे सकाम लोग अपनी कामना-पूर्तिके लिये जाते हैं। और संकल्प करके निर्जल व्रत लेकर मन्दिरके आसपास पड़े रहते हैं। वे बराबर पञ्चाक्षर-मन्त्रका जप करते रहें—ऐसा नियम है। कहा जाता है कि ऐसे धरना देनेवालोंको भूख-प्यासका कष्ट अन्य स्थानोंकी अपेक्षा बहुत अधिक प्रतीत होता है। स्वप्नमें उन्हें भय भी आते हैं तथा अनेक बार कई प्रकारकी पीड़ा भी होती है। इन कष्टोंसे बहुत-से लोग घबराकर चले जाते हैं। जो इनमें भी स्थिर रहते हैं, उनका उद्देश्य पूरा होता है।

तारकेश्वरमें महाशिवरात्रि तथा मेषकी संक्रान्तिपर मेला लगता है।

घण्टेश्वर

हुगली जिलेमें खानाकुल कृष्णनगर रत्नाकर नदीके किनारे है। यहाँ नदीके तटपर घण्टेश्वर महादेवका विशाल मन्दिर है। यहाँ आसपास और भी देवताओंके मन्दिर हैं। लिङ्गेश्वरतन्त्रके अनुसार यह एक प्रधान शिवपीठ है। तारकेश्वरसे लोग यहाँ आते हैं। यहाँ मन्दिरके दोनों ओर श्मशान है।

चण्डीतला

कलकत्ता-दत्तपूकर-बनगाँव लाइनपर सियालदहसे ३६ मील दूर गोबरडाँगा स्टेशन है। वहाँसे आध मीलपर खाँटुरा चण्डीतला ग्राम है। यहाँ कंकड़ा झीलके किनारे वटवृक्षके नीचे मङ्गल-चण्डी-मन्दिर है। पासमें शिव-मन्दिर भी है। कहा जाता है कि सतीदेहसे यहाँ हाथका कङ्कण गिरा था, अत: यह शक्तिपीठ है। वैसे ५१ शक्तिपीठोंकी सूचीमें इस स्थानका नाम नहीं है।

नवद्वीप धाम

यह श्रीचैतन्यमहाप्रभुकी जन्मभूमि होनेसे गौड़ीय वैष्णवोंका महातीर्थ है। पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-बरहरवा लाइनपर हबड़ासे ६६ मील दूर 'नवद्वीप धाम' स्टेशन है। स्टेशनसे नवद्वीप नगर लगभग एक मील दूर है। नवद्वीपमें भजनाश्रम है और वहाँ यात्रियोंके ठहरनेकी सुविधा भी है। इसके अतिरिक्त श्रीमोतीरायकी धर्मशाला, हेतमपुर महाराजकी धर्मशाला तथा रामचन्द्रपुर-भजनाश्रम भी ठहरनेके स्थान हैं।

नवद्वीपके अधिकांश मन्दिरोंमें दर्शनार्थीको निश्चित दक्षिणा देकर ही दर्शनार्थ मन्दिरमें जाने दिया जाता है। बहुत-से स्थानोंमें श्रीगौराङ्ग महाप्रभुकी अनेक लीलाओंकी मिट्टीकी मूर्तियाँ सजायी गयी हैं, किन्तु उनकी पूजा नहीं होती। केवल यात्री उनके दर्शन कर आते हैं।

दर्शनीय स्थान

१-धामेश्वर—श्रीगौराङ्ग-महाप्रभु-मन्दिर। कहा जाता है कि यहाँका श्रीविग्रह श्रीविष्णुप्रियादेवी (महाप्रभुकी पूर्वाश्रमकी पत्नीद्वारा) प्रतिष्ठित है। यही यहाँका मुख्य मन्दिर है।

२-श्रीअद्वैताचार्य-मन्दिर। ३-श्रीगौरगोविन्द-मन्दिर। ४-शचीमाता-विष्णुप्रिया-मन्दिर। ५-जगाई-मधाई-उद्धार। ६-गदाधर-आँगन। ७-नन्दन आचार्यके घर नित्यानन्द-मिलन। ८-गुप्तवृन्दावन और पञ्चतत्त्व। ९-श्रीगौराङ्ग-जन्मलीला। १०-श्रीगौराङ्ग-बाल्यलीला। ११-श्रीगौराङ्ग-विवाह-लीला। १२-महाप्रभुकी ढोलबाड़ी। १३-श्रीनित्यानन्द प्रभु। १४-हरिसभा और हरिभक्तिप्रदायिनी सभा।

इनमें धामेश्वर—श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके मन्दिरके अतिरिक्त शेष प्राय: सबमें मिट्टीकी मूर्तियाँ सजायी गयी हैं और उनका केवल दर्शन होता है।

१५-सोनार गौराङ्ग। यहाँ श्रीगौराङ्ग महाप्रभुकी स्वर्णमूर्ति है।

१६-षड्भुज गौराङ्ग महाप्रभु अथवा वैकुण्ठधाम।

१७-गौराङ्ग-विश्वरूप।

१८-श्रीवास-प्राङ्गण।

इनके अतिरिक्त निम्न मन्दिर ऐसे हैं, जिनमें यात्रीको अनिवार्य रूपसे कोई दक्षिणा नहीं देनी पड़ती।

१९-पौड़ा माता। यह नवद्वीपकी अधीश्वरी मानी जाती हैं।

२०-सिद्धेश्वरी और बूढ़े शिव।

२१-आगमेश्वरी। २२-तुलादेवी। २३-पौड़ामाताका पञ्चमुण्ड आसन। २४-श्रीमहाप्रभुका भीटा। २५-अभयामाता। २६-बड़ा अखाड़ा। २७-छोटा अखाड़ा। २८-बलदेव-अखाड़ा। २९-श्रीगोविन्दजीका मन्दिर। ३०-अकेले निताई। ३१-पुरी-गम्भीरामठ। ३२-भजनकुटी। ३३-श्रीवृन्दावनचन्द्र। ३४-गदाधर-सङ्गम। ३५-समाजबाड़ी। ३६-सोनार निताई-गौर। ३७-श्रीसीताराम-मन्दिर। ३८-श्रीगौर-विष्णुप्रिया। ३९-श्रीनृसिंहमन्दिर।

636 Tirthank_Section_10_1_Back

इन सबमें धामेश्वर-गौराङ्ग महाप्रभुका मन्दिर, पौड़ा-माता तथा बूढ़े शिवकी मान्यता यहाँ पर्याप्त अधिक है।

नवद्वीपके पास जह्नु-नगर है। वहाँ जह्नुमुनिका स्थान है। कहा जाता है कि वहीं जह्नु ऋषिने गङ्गाको पीकर फिर अपनी जङ्घासे प्रकट किया था।

मायापुर

गौड़ीयमठके संस्थापक श्रीभक्तिविनोद ठाकुरका मत है कि मायापुर ही नवद्वीप-धाम है—वर्तमान नवद्वीप धाम रामचन्द्रपुर है, वह नवद्वीप नहीं है; किंतु गौड़ीयमठके अतिरिक्त श्रीचैतन्य महाप्रभुके अनुयायी इस बातको स्वीकार नहीं करते। वर्तमान नवद्वीप ही नवद्वीप है, इसमें उनकी पूरी श्रद्धा है।

नवद्वीप धामसे गङ्गापार होकर मायापुर जाना पड़ता है। मायापुर गौड़ीयमठका मुख्य स्थान है। वहाँके दर्शनीय स्थान हैं—१-श्रीयोगपीठ या श्रीचैतन्य महाप्रभुका आविर्भाव-स्थल। २-श्रीवास-आँगन। ३-अनुकूल कृष्णानुशीलनागार। ४-श्रीअद्वैत-भवन। ५-श्रीचैतन्यमठ। ६-श्रीमुरारिगुप्तका सीताराम-मन्दिर तथा राधागोविन्द-मन्दिर। ७-प्राचीन पृथुकुण्ड या बल्लालदीघि। ८-कालीकी समाधि। ९-महाप्रभुका घाट। १०-श्रीधर-आँगन आदि।

नवद्वीपके समान यहाँ भी कई मन्दिरोंमें मृत्तिका-मूर्तियाँ रखी गयी हैं।

आस-पासके स्थान

सीमन्तद्वीप—मायापुरसे यह स्थान पास ही है। यहाँ सीमन्तिनी देवीका मन्दिर है। इस द्वीपमें ही दो और स्थान दर्शनीय हैं—शरडाँगा और वामनपूकर।

शरडाँगामें श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर है। पुरीके समान ही इसमें श्रीकृष्ण, बलराम और सुभद्राजीकी मूर्तियाँ हैं।

वामनपूकर—ग्रामका पुराना नाम बेलपूकर है। इसके पास 'मेघार चर' स्थान है। कहा जाता है कि वहाँ श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके संकेतसे आकाशमें छाया-मेघ दूर हो गया था।

गोद्रुमद्वीप—इस द्वीपमें सुरभिकुञ्ज नामका एक विशाल अश्वत्थ वृक्ष है। यह वृक्ष गौर-लीलास्थल माना जाता है। इसलिये इसके दर्शन करने लोग जाते हैं। स्वानन्दसुखद कुञ्जमें श्रीभक्तिविनोद ठाकुरका समाधि-मन्दिर है।

हरिहरक्षेत्र—यह स्थान अलकनन्दाके पश्चिम गण्डकी-किनारे है।

महावाराणसी—यह स्थान हरिहरक्षेत्रके समीप अलकनन्दाके पश्चिम है। यहाँ श्रीशिव-पार्वती-मन्दिर है।

देवपाड़ा—इसका प्राचीन नाम देवपल्ली है। कहा जाता है कि हिरण्यकशिपु-वधके पश्चात् भगवान् नृसिंहने यहाँ कुछ काल विश्राम किया था। यहाँ नृसिंह-मन्दिर है।

माजिदा—इसका पूर्वनाम मध्यद्वीप है। इसे सप्तर्षि-भजनस्थली कहा जाता है। मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा, पुलह, पुलस्त्य, वशिष्ठ और क्रतु ऋषियोंके टीले हैं।

सप्तर्षि-टीलोंसे दक्षिण एक जलधारा है, जिसे लोग गोमती कहते हैं। उसके किनारे गौर-भक्त नैमिषारण्य मानते हैं। उनकी श्रद्धा है कि भविष्यमें यहीं शौनकादि ऋषि चैतन्यभागवत श्रवण करेंगे।

पास ही ब्राह्मणपूकर स्थान है। कहा जाता है कि प्राचीन कालमें दिवोदास नामक ब्राह्मणने दिव्यचक्षुद्वारा यहीं पुष्करतीर्थका दर्शन किया था। वहीं पासमें हाटडाँगा है, देवताओंने वहाँ गौर-नाम-कीर्तन किया है, ऐसा गौड़ीय भक्त मानते हैं।

कुलिया—इसका प्राचीन नाम कोलद्वीप है। यहाँ श्रीगौराङ्ग प्रभुकी कई लीलाएँ हुई हैं।

चाँपाहाटी—यहाँ श्रीगौर-गदाधर-मठ है। कहा जाता है कि यहाँ द्वापरमें समुद्रसेन नामक राजाकी राजधानी थी। युधिष्ठिरके राजसूय-यज्ञके लिये दिग्विजय करते हुए भीमसेन जब यहाँ आये, तब समुद्रसेनने उन्हें संकटमें डाल दिया, कि श्रीकृष्णके प्रकट होनेपर भीमसेनका उसने सत्कार भी किया।

इन स्थानोंके अतिरिक्त आस-पास और भी बहुतसे स्थान हैं, जहाँ श्रीगौराङ्ग महाप्रभुकी लीलाएँ हुई हैं।

शान्तिपुर

नवद्वीपसे १२ मीलपर शान्तिपुर है। गौड़ीय वैष्णवोंका यह श्रीपीठ है। यहाँ बावलाग्राममें श्रीअद्वैताचार्यकी पाटबाड़ी है। श्रीअद्वैताचार्यको गौड़ीय वैष्णव शङ्करजीका अवतार मानते हैं।

शान्तिपुरमें श्यामचन्द्र, गोकुलचन्द्र और जलेश्वर महादेवके मन्दिर विख्यात हैं। शान्तिपुर बाजारमें महाकालीकी अत्यन्त विशाल मूर्ति है।

कार्तिकी पूर्णिमाके दिन होनेवाला शान्तिपुरका मेला प्रसिद्ध है।

कटवा

नवद्वीपधाम स्टेशनसे २४ मील दूर कटवा स्टेशन है। यह अजी-गङ्गा-संगमके पास है। श्रीगौराङ्ग महाप्रभुने यहीं संन्यास लिया था। यहाँ श्रीचैतन्य महाप्रभुका मन्दिर है। गौड़ीय वैष्णवोंका यह सम्मान्य तीर्थ है।

कटवासे ८ मीलपर अग्रद्वीप नामक स्थान है। यहाँ श्रीगोपीनाथजीका मन्दिर है। वारुणी-पर्वपर मेला लगता है। यहाँका प्राचीन मन्दिर तो गङ्गाजीकी धाराने नष्ट कर दिया, नया मन्दिर गङ्गातटके एक मील दूर है।

मोग्राम—कटवासे लगभग ७ मील उत्तर यह स्थान है। पैदल मार्ग है। यहाँ अङ्गुरीयकचण्डी-मन्दिर है। कहा जाता है कि यहाँ सतीजीके हाथसे अँगूठी गिरी थी।

केतुब्रह्म

नवद्वीप धामसे २४ मील दूर कटवा जंकशन स्टेशन है। वहाँसे पश्चिम केतुब्रह्म या केतुग्राम है। वहाँका देवी-मन्दिर ५१ शक्ति-पीठोंमें है। सतीका वाम बाहु वहाँ गिरा था।

दलमा

(लेखक—पं० श्रीदेवनारायणजी शास्त्री 'देवेन्द्र')

मार्ग—पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-नागपुर लाइनके 'तातानगर' स्टेशनसे साकची ग्राममें जाना चाहिये। वहाँ मौनीबाबाकी धर्मशाला है, शिवमन्दिर है तथा शीतला-मन्दिर है। इनमेंसे कहीं भी ठहर सकते हैं। वहाँसे बसद्वारा गिट्टी कटनेके स्थानतक जाया जा सकता है। उससे चार मील आगे पर्वत-शिखरपर तीर्थस्थान है। कोई मार्गदर्शक ले जाना चाहिये। स्थान जंगलका है। वन्य पशुओंका भय रहता है।

दलमा पर्वत-शिखरपर विजयतारा देवीका मन्दिर है। एक भयानक गुफामें दलमेश्वर शिव, शीतलादेवी तथा कालभैरवकी मूर्तियाँ हैं। आस-पास वसिष्ठकुण्ड, भृगुकुण्ड, गौतमकुण्ड तीर्थ हैं। यहाँ स्वर्णरेखा नामकी नदी बहती है। ऊपर शिखरपर रुद्रहनुमान्की मूर्ति है। गुरुपूर्णिमा, कार्तिकी पूर्णिमा तथा शिवरात्रिको मेला लगता है।

द्वैपायन-ह्रद

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-नागपुर लाइनपर रौरकेला जंकशन स्टेशन है। वहाँसे चार मील पश्चिम शङ्खनदी, कोयेल और ब्राह्मणी नदियोंसे घिरा एक द्वीप है। यह स्थान एक झील-सा बन गया है। इसीको कुछ लोग महर्षि व्यासकी जन्मभूमि मानते हैं।

युक्तदेशके हमीरपुर जिलेमें कालपी नामका कस्बा है। भगवान् व्यासका जन्मस्थान वहाँ भी माना जाता है। यद्यपि वहाँ कोई आश्रम या मन्दिर नहीं है, फिर भी व्यासजीका जन्मस्थान वही स्थान जान पड़ता है।

जगेली

(लेखक—श्रीप्रेमानन्दजी गोस्वामी)

पूर्वोत्तर-रेलवेकी काटहार-जोगबनी लाइनके पूर्णिमा स्टेशनसे एक लाइन मुरलीगंजको गयी है। इस लाइनपर पूर्णिमासे ९ मील दूर कृत्यानन्दनगर स्टेशन है। वहाँसे ५ मील उत्तर जगेली ग्राम है। इस गाँवमें सिद्ध संत मटुकीनाथ हो गये हैं। उनकी बैठक है और उनकी आराध्या भवानी दुर्गाका मन्दिर है। पासमें माताकुण्ड नामक सरोवर है।

636 Tirthank_Section_10_2_Back

सिकलीगढ़ धरहरा

(लेखक—श्रीमोतीलालजी गोस्वामी)

उक्त लाइनपर ही पूर्णियासे २३ मील दूर वनमंखी स्टेशन है। वहाँसे दो मील उत्तर यह ग्राम है। इसे प्रह्लादकी जन्मभूमि कहा जाता है। यहाँ एक प्राचीन दुर्गके भग्नावशेष हैं। उनमें वह स्तम्भ भी बताया जाता है, जिससे नृसिंहभगवान् प्रकट हुए थे। स्तम्भ फटा हुआ है। गढ़से ६ मील पूर्व अंकुरीनाथ महादेव हैं। इन्हें हिरण्यकशिपुकी आराध्य मूर्ति कहा जाता है। मन्दिर बड़ा है। पासमें धर्मशाला है।

धूनीसाहब

(लेखक—श्रीसुतीक्ष्णमुनिजी उदासीन)

श्रीधूनीसाहबतक आनेके लिये पूर्वोत्तर-रेलवेके कटिहार जंकशनसे जोगबनीतक रेलसे ६७ मील आकर ३ मील मोटर-लारीद्वारा चलनेपर नैपालराज्यकी सीमापर विराटनगर अच्छा बाजार आता है। यहाँ विश्रामके लिये धर्मशालाएँ हैं। इसके आगे ६ मील दूबरीबाजार और १२ मील पखली-पड़ाव आता है। मोटर इसी जगह धूनीसाहबके यात्रियोंको उतारकर धड़ागको चली जाती है। पखली-पड़ावसे २ मील पैदल या बैलगाड़ीसे चलकर धूनीसाहब पहुँचना होता है। इस स्थानका नाम मोरगझाड़ीके नामसे प्रसिद्ध है। इस स्थानको वनखण्डी नाथकी धूनी भी कहते थे।

वि० सं० १७६० में श्रीवनखण्डीजी महाराजने यहाँ स्थित हो योगसाधनाके लिये धूना जलाया था। तबसे आजतक उस स्थलपर अविच्छिन्न धूना प्रज्वलित रहा करता है। सुनते हैं कि वनखण्डीजी महाराजके समय सिंह तथा हाथी उनके धूनेके लिये लकड़ियाँ लाया करते थे। धूनेकी नित्य पूजा होती है।

वाराहक्षेत्र (कोकामुख)

धूनीसाहब (वनखण्डीनाथकी धूनी) से २० मील उत्तर धवलागिरिकी कठिन चढ़ाई है। आगे चतरागद्दी-मन्दिर मिलता है। वहाँसे कोसी नदीमें नौकासे या नदी-किनारे पैदल चलना पड़ता है। नैपालराज्यमें कोसी नदीके किनारे धवलागिरि-शिखरपर वाराहक्षेत्र है, जिसे कोकामुख भी कहते हैं। एक मन्दिरमें वाराहभगवान्‌की चतुर्भुज मूर्ति है। मन्दिरके पास कोवरा (कोका) नदी है, जिसका जल वाराहभगवान्‌पर चढ़ाया जाता है। कार्तिकी पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है। यह मेला तीन-चार दिन रहता है।

वाराह-मन्दिरसे ३ मील दूर पहाड़ीपर सूर्यकुण्ड नामक प्राचीन सरोवर है। वाराहक्षेत्रके यात्रीको भोजन-सामग्री साथ ले जाना चाहिये। पर्वतका विकट मार्ग है।

कोकामुख पवित्र पितृतीर्थ है। वहाँ स्नान तथा पितृ-तर्पणका विधान है। भगवान् विष्णुने इस तीर्थमें वाराहरूप त्यागकर अपना चतुर्भुजरूप धारण किया था। कोकामुख-क्षेत्र पाँच योजन विस्तीर्ण है। इन पाँच योजनोंमें जलबिंदुतीर्थ (ऊँचे पर्वतसे बिखरकर बूँदोंमें गिरती जलधारा), विष्णुधारा (बहुत मोटी धारासे गिरता प्रपात), विष्णुपद या वाराहशिला (वाराहमूर्ति) सोमतीर्थ, पञ्चशिला, अग्निसर (जहाँ पर्वतसे ५ धाराएँ निकलती हैं), ब्रह्मसर (ऊँचेसे शिलापर गिरती धारा), सूर्यप्रभ (गरम पानीका झरना), कौशिकी नदी, मत्स्यशिला (पर्वतपर गिरती जलधारा) आदि तीर्थ वाराहपुराणमें बताये गये हैं। किन्तु अब इन सब तीर्थोंका पता नहीं है। केवल कौशिकी नदी तथा वाराहमूर्ति यहाँके ज्ञात तीर्थोंमें हैं।

कीचक-वध-स्थान

(लेखक—श्रीरामेश्वरप्रसादजी 'चञ्चल')

पूर्वोत्तर-रेलवेकी कटिहार-सिलीगुड़ी लाइनमें कटिहारसे ९८ मीलपर गलगलिया स्टेशन है। वहाँसे लगभग ३ मील पश्चिम नैपालराज्यमें कीचक-वधका स्थान माना जाता है। कुछ लोगोंकी मान्यता है कि यहीं पुराना विराटनगर था।

यहाँ एक कुण्ड है, जिससे जल निकलता रहता है। इस कुण्डको पवित्र माना जाता है। मकरसंक्रान्तिपर यहाँ लोग स्नान करने आते हैं। यहाँ लोग जीवित कबूतर छोड़ते हैं। यह स्थान जङ्गलके बीचमें है।

जल्पेश्वर

पूर्वोत्तर-रेलवेकी एक लाइन सिलीगुड़ीसे हल्दीवाड़ी-तक जाती है। इसपर सिलीगुड़ीसे २५ मील दूर जलपाईगुड़ी स्टेशन है। यहाँसे ८ मीलपर जल्पेश्वरजीका स्थान है। शिवरात्रिको बड़ा मेला लगता है।

दार्जिलिंग

यह पर्वतीय शीतप्रधान नगर है। सिलीगुड़ीसे दार्जिलिंगतक पूर्वोत्तर-रेलवेकी एक शाखा गयी है। दार्जिलिंग जिस पर्वतपर है, उसका प्राचीन नाम दूर्जयगिरि है। यहाँ दुर्जयलिङ्ग नामक भगवान् शङ्करकी लिङ्गमूर्ति है। भोटिया लोग उनकी अधिक पूजा करते हैं।

दार्जिलिंगके पश्चिमोत्तर एक पर्वतपर देवीका मन्दिर है। उसके नीचे 'दिव्य कुण्ड' नामक तीर्थ है।

रामकैल

पूर्वी रेलवेकी कटिहार-सिंहाबाद शाखामें ५६ मीलपर मालदाकोर्ट तथा ओल्ड मालदा स्टेशन हैं।

मालदानगरसे सागरडिघी जानेको सवारियाँ मिलती हैं। सागरडिघीके समीप ही रामकैल ग्राम है। यहाँ श्रीकृष्ण-मन्दिर है। ज्येष्ठमें एकादशीसे पूर्णिमातक यहाँ बड़ा मेला लगता है। मन्दिरके समीप ही सरोवर है।

कामरूप (कामाख्या)

माहात्म्य

कामाख्या परमं तीर्थं कामाख्या परमं तपः।
कामाख्या परमो धर्मः कामाख्या परमा गतिः॥

५१ सिद्धपीठोंमें कामरूपको सर्वोत्तम कहा गया है। जब भगवान् शङ्कर सतीके शवको कंधेपर ढो रहे थे, तब विष्णुके चक्रसे खण्डित होकर उनका गुह्य भाग यहीं गिरा था। महाभागवत (देवीपुराण) के १२ वें अध्यायमें आता है कि सतीके वियोगसे अत्यन्त दुःखित होकर भगवान् शङ्करने ब्रह्मा तथा विष्णुसे पुनः सती-प्राप्तिका उपाय पूछा। भगवान् विष्णु तथा ब्रह्माजीके बहुत समझानेपर उन्होंने कहा कि सतीकी सर्वव्यापकता तथा नित्यताका ज्ञान होनेपर भी मैं उनके पत्नीत्वका अभाव नहीं सह सकता। फिर तीनों जनोंने यहीं तपस्या आरम्भ की। भगवतीने प्रकट होकर शङ्करजीको वर दिया कि मैं गङ्गा तथा पार्वतीके रूपमें हिमवान्‌के घर अवतीर्ण होकर दोनों रूपोंसे आपको ही वरण करूँगी और वैसा ही हुआ। भगवान् विष्णु एवं ब्रह्माजीको भी यथेच्छ वरकी प्राप्ति हुई। तबसे इसका माहात्म्य विलक्षण समझा जाता है—

[illegible] क्षपापादभवबन्धनिषूदन।
[illegible] प्रेतनामः पीठः कामरूपे महात्मने॥
(महाभा० १२। ३०)

यहाँ भगवती साक्षात् स्थित हैं। इस महापीठके जल जलमें स्नान करके ब्रह्महत्यारा भी भवबन्धनसे छुटकारा पा जाता है—

यत्र साक्षाद् भगवती स्वयमेव व्यवस्थिता।
तत्र गत्वा महापीठे स्नात्वा लोहित्यवारिणि॥
ब्रह्महापि नरः सद्यो मुच्यते भवबन्धनात्।
(देवीपुराण १२। ३२)

साक्षात् भगवान् जनार्दन ही यहाँ जल (द्रव) रूपसे वर्तमान हैं। यहाँ आकर स्नान करके निम्न मन्त्रसे कामेश्वरी भगवतीको प्रणाम करना चाहिये—

कामेश्वरीं च कामाख्यां कामरूपनिवासिनीम्।
तप्तकाञ्चनसंकाशां तां नमामि सुरेश्वरीम्॥
(देवीपुराण १२। ३४-३५)

फिर मानसकुण्डादिमें स्नान करे। तन्त्रोक्तविधिसे परमेश्वरीकी पूजा, जप, हवन आदि करके यथेच्छ फलकी प्राप्ति यहाँ साधकको सुलभ है।
(महाभा० १२। ३७)

कामाख्या (क्षी) देवी

(लेखक—श्रीमुनीश्वरमुनिजी उदासीन)

ये आसाम देशमें हैं। यहाँ आनेको छोटी लाइनकी पूर्वोत्तर रेलवेसे अमीनगाँव आना होता है। आगे ब्रह्मपुत्र नदीको स्टीमरसे पार करके मोटरद्वारा २॥ मील चलकर कामाक्षीदेवी आना होता है। चाहे पाण्डुसे रेलद्वारा गौहाटी आकर पुनः कामाक्षीदेवी आ जायँ। कामाक्षीदेवीका मन्दिर पहाड़ीपर है, जो अनुमानसे एक मील ऊँची होगी। इस पहाड़ीको नीलपर्वत भी कहते हैं। इस देशको कामरूप, असम या आसाम कहते हैं। तन्त्रोंमें लिखा है कि करतोया नदीसे लेकर ब्रह्मपुत्र तकका त्रिकोणाकार कामरूप देश माना जाता है था; किंतु आज वह रूप रेखा नहीं रही।

इस देशमें कई सिद्धपीठ हैं—जैसे सौभारपीठ, श्रीपीठ, रत्नपीठ, विष्णुपीठ, रुद्रपीठ तथा ब्रह्मपीठ आदि। इन सबमें कामाख्यापीठ सबसे प्रधान माना जाता है।

कामाक्षीदेवीका मन्दिर कूचबिहारके राजा विश्वसिंह और शिवसिंहका बनवाया हुआ है। इससे प्रथमका मन्दिर सन् १५६४ में कालापहाड़ने तोड़ डाला था। प्रथम इस मन्दिरका नाम आनन्दाख्य था, जो वर्तमान मन्दिरसे कुछ दूरीपर है। मन्दिरके समीपमें ही एक छोटा सा सरोवर है।

देवीभागवत ७ वें स्कन्ध, अध्याय ३८ में कामाक्षीदेवीका माहात्म्य कहते समय बताया गया है कि समस्त भूमण्डलमें देवीका यह महाक्षेत्र माना जाता है।

इसके दर्शन, भजन, पाठ-पूजा करनेसे सर्वविघ्नोंकी शान्ति होती है। आश्विन तथा चैत्रके नवरात्रोंमें बहुत बड़ा मेला लगता है।

पहाड़ीसे उतरनेपर गौहाटी नगरके सामने ब्रह्मपुत्र नदीके मध्यमें उमानन्द नामक छोटे चट्टानी टापूमें शिवमन्दिर मिलता है, जिसका दर्शन करनेके लिये नौकाद्वारा जाना होता है। उमानन्द-मूर्तिको लोग भैरव (कामाख्याका रक्षक) मानते हैं।

होजाई

(लेखक—पं० श्रीचिमनरामजी शर्मा)

आसाममें पूर्वोत्तर रेलवेकी पाण्डु-तिनसुकिया लाइनपर गौहाटीसे ९३ मील दूर होजाई स्टेशन है। होजाई एक अच्छा शहर है। इस शहरसे ४ मीलपर [illegible] नामक नदी है। इस नदीके किनारे वन था। किसानोंने खेतीके लिये वनको काट दिया। वन काटनेपर मिट्टीके बड़े-बड़े टीले मिले। उन टीलोंको खोदनेपर उनमें मन्दिरोंके भग्नावशेष तथा शिवलिङ्ग मिले। यहाँपर इस प्रकार पाँच शिवलिङ्ग मिले। ये लिङ्ग-मूर्तियाँ विशाल हैं। मूर्तियोंके आस-पास वृक्ष हैं। केवल बीचके शिवलिङ्गपर स्थानीय मारवाड़ी व्यापारियोंने

मन्दिर बनवा दिया है। अब यहाँ शिवरात्रिपर मेला लगता है। चैतमें वारुणीपर्वपर भी भीड़ होती है। जोगिजान नदीके दूसरे तटसे १ मील दूरीपर इसी प्रकार वन काटनेपर टीलोंसे ११ शिवलिङ्ग निकले हैं। ये लिङ्ग-मूर्तियाँ इतनी विशाल हैं कि सौ मनुष्य भी उन्हें नहीं उठा सकते। मूर्तियाँ और जलहरी ठीक हैं। केवल मन्दिरकी दीवारें आदि टूटी-फूटी हैं। मन्दिरोंके सामने एक पुष्करिणी है।

शिवसागर

आसाम प्रदेशके शिवसागर स्थानमें मुक्तिनाथ महादेवका मन्दिर प्रसिद्ध है। एक स्वप्नादेशके अनुसार अहोमवंशीय राजा शिवसिंहने यह मन्दिर बनवाया था। मन्दिरकी लिङ्गमूर्ति तो प्राचीन है। उसे स्वयम्भू लिङ्ग माना जाता है। मन्दिरपर सवा मनका स्वर्ण-कलश है। शिव-मन्दिरके बायीं ओर विष्णु-मन्दिर और दाहिनी ओर भगवतीका मन्दिर है। उत्तर ओर एक बहुत बड़ा सरोवर है। महाशिवरात्रिपर यहाँ मेला लगता है।

पाण्डु-तिनसुकिया लाइनके सिमलगुडी स्टेशनसे एक लाइन मोरेनहाटतक जाती है। इस लाइनमें सिमलगुडीसे १० मीलपर शिवसागर टाउन स्टेशन है।

परशुरामकुण्ड

(लेखक—श्रीस्वामी भूमानन्दजी)

आसाममें हिमालयकी पूर्वोत्तर सीमापर पर्वतके पाददेशमें परशुरामकुण्डकी अवस्थिति है। कहते हैं कि श्रीपरशुरामने जब मातृहत्यामोक्षणके लिये जमदग्नि ऋषिसे उपाय पूछा, तब उन्होंने कहा कि ब्रह्मकुण्डमें जाकर स्नान करो—

'तस्मात् त्वं ब्रह्मकुण्डाय गच्छ स्नातुं च तज्जले।'

वहाँ परशुरामका पाप नष्ट हो गया। विश्व-कल्याणके लिये पर्वतको फरसेसे काटकर ब्रह्मकुण्डका जल परशुरामजी बाहर ले आये। वही धारा ब्रह्मकुण्डसे निस्सरित होनेके कारण ब्रह्मपुत्र कहलायी। ब्रह्मकुण्डसे चलकर ब्रह्मपुत्र (कैलास-पर्वतस्थ) लोहितसरोवरमें जा गिरा। एक बार तो परशुरामजी हतोत्साह-से हुए, किंतु बादमें फिर कुठारसे लोहितसरोवरकी उच्चभूमि काटकर उन्होंने ब्रह्मपुत्रको पृथ्वीपर पहुँचा ही दिया। जिस स्थलपर ब्रह्मपुत्रने भूतलका स्पर्श किया, उसी स्थानका नाम परशुरामकुण्ड है।*

भुवनबाबा

(लेखक—श्रीश्रीधरजी पाण्डेय विद्यार्थी)

यह तीर्थ आसाममें भारतीय सीमान्त-प्रदेशमें है। यहाँ पहुँचनेके दो मार्ग हैं—एक शिलचरसे लक्खीपुरतक मोटर-बससे और वहाँसे मोतीनगरतक रिक्शे या ताँगेसे। दूसरा मार्ग शिलचरसे सोनाई होते हुए मोतीनगरतक मोटर-बससे। मोतीनगरसे ७ मील पर्वतीय पैदल मार्ग है।

शिलचरसे ४० मील दूर पर्वतपर यह तीर्थ है। शिवरात्रिपर यहाँ मेला लगता है। यहाँ श्रीभुवनबाबाका मन्दिर है। एक सरोवर है। मुख्य तीर्थके पास ही एक गुफा है। गुफा अँधेरी होनेसे यात्री भीतर नहीं जाते। यहाँ तीर्थके पास यात्रियोंके ठहरनेकी व्यवस्था है। भोजन-सामग्री भी मिल जाती है।

* ब्रह्मपुत्र आता तो हिमालयके तिब्बती क्षेत्रसे है। जहाँ यह आसाममें प्रवेश करता है, वहीं परशुरामकुण्ड था; किन्तु उधर पर्वतोंमें भूकम्प होनेसे ब्रह्मपुत्रकी धारा बदल गयी। परशुरामकुण्ड अब धारामें लुप्त हो गया। इसलिये वहाँका मार्ग देना अनावश्यक है।

शालवाड़ी

पूर्वोत्तर-रेलवेकी मनिहारीघाट-पाण्डु लाइनके सिलीगुड़ी स्टेशनसे एक लाइन हल्दीवाड़ीतक जाती है। उसपर जलपाईगुड़ी स्टेशन है। जलपाईगुड़ी जिला है, इस जिलेके बोदा इलाकेमें शालवाड़ी ग्राम है। यहाँ तिस्तानदीके किनारे देवीका मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें है। सतीका वाम चरण यहाँ गिरा था।

राधाकिशोरपुर

यह स्थान त्रिपुरा-राज्यमें है। इस स्थानसे लगभग डेढ़ मील दूर पर्वतपर त्रिपुरसुन्दरी देवीका मन्दिर है। यह स्थान भी ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ सतीका दक्षिण चरण गिरा था।

बाउरभाग ग्राम

यह स्थान आसाम प्रान्तमें शिलाँगसे ३३ मील दूर जयंतिया पर्वतपर है। यहाँ जयन्ती देवीका मन्दिर है, जो ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ सतीकी वामजङ्घा गिरी थी।

पूर्वी पाकिस्तानके तीर्थ

सीताकुण्ड

चटगाँव जिलेमें सीताकुण्ड रेलवे-स्टेशन है। यहाँ सीताकुण्ड नामकी पहाड़ी है। पहाड़ीकी सबसे ऊँची चोटीपर सीताकुण्ड है। इसका जल गरम है। जलके पास जलती अग्नि ले जानेसे कुण्डकी भाप भभक उठती है। सीताकुण्डसे तीन मील उत्तर एक पवित्र झरना है।

सीताकुण्डके पास चन्द्रशेखर पर्वतपर देवी-मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें है। सतीका यहाँ दक्षिण बाहु गिरा था।

बलवाकुण्ड

सीताकुण्डसे ४ मील दक्षिण बलवाकुण्ड रेलवे-स्टेशन है। इसके पास बलवाकुण्ड (वाडवकुण्ड) तीर्थ है। कुण्डके जलपर ज्वालामुखीके समान सदा अग्निकी लपट उठती रहती है। पास ही पत्थरसे भी अग्नि निकला करती है।

खेतुर

इशुरदी-अमतुरा रेलवे-लाइनपर खेतुर रोड स्टेशन है। स्टेशनसे ११ मील दूर पद्मानदीके बायें तटपर खेतुर वैष्णवतीर्थ है।

श्रीचैतन्यके कृपापात्र श्रीनरोत्तम ठाकुरका जन्म खेतुरमें ही हुआ था। यहाँ श्रीगौराङ्ग महाप्रभु, विष्णुप्रियाजी तथा नित्यानन्दजीके श्रीविग्रह मन्दिरमें हैं।

भवानीपुर

पाकिस्तान-रेलवेकी लालमनीरहाट-संतहाट लाइनपर बोगरा स्टेशन है। वहाँसे २० मील नैर्ऋत्यकोणमें भवानीपुर स्थान है। यह ५१ शक्तिपीठोंमेंसे १ पीठ है। सतीका बायाँ कान यहाँ गिरा था।

शिकारपुर

खुलना स्टेशनसे बारीसालके लिये स्टीमर जाता है। बारीसालसे १३ मील उत्तर शिकारपुर ग्राममें सुगन्धा (सुनन्दा) नदीके तटपर उग्रतारा देवीका मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ सतीकी नासिका गिरी थी।

ईश्वरीपुर

यह ग्राम खुलना जिलेमें है। यहाँ सतीकी बायीं हथेली गिरी थी, इसलिये यह ५१ शक्तिपीठोंमें है।

कंतजी (दीनाजपुर)

पाकिस्तान-रेलवेमें पर्वतपुरसे एक लाइन दीनाजपुर जाती है। दीनाजपुर बाजारसे लगभग २० मीलपर जंगलमें कंतजीका विशाल मन्दिर है। यह मन्दिर इस ओर बहुत प्रसिद्ध है।

कंतजीसे २० मील पश्चिम जंगलमें गोविन्दजीका बड़ा मन्दिर है।

ब्रह्मपुत्रतीर्थ

पाकिस्तान रेलवेके कौनिया जंकशनसे ६ मील तिष्या गाँवतक बोटमें जाना पड़ता है। वहाँसे १६ मीलपर कुरी ग्राम है। कुरी ग्रामसे १३ मीलपर ब्रह्मपुत्र नदीमें ब्रह्मपुत्रतीर्थ है। चैत्र शुक्ला अष्टमीको ब्रह्मपुत्र-स्नानका मेला होता है। कहा जाता है कि यहाँ स्नान करके परशुरामजी मातृहत्याके दोषसे मुक्त हुए थे।

मेहार कालीबाड़ी—पाकिस्तान-रेलवेमें चाँदपुरसे तीन स्टेशन आगे भिंगारा स्टेशन है। वहाँसे दो फर्लांगपर यह स्थान है। यहाँकी कालीकी मूर्ति बहुत जाग्रत् मानी जाती थी। पौष-संक्रान्तिपर यहाँ मेला लगता था।

ढाका दक्षिण—पाकिस्तान रेलवेमें गोआलंदोघाट स्टेशनसे स्टीमरद्वारा नईहाट जाना पड़ता है। वहाँसे कुछ दूर यह ग्राम है। इसे गुप्तवृन्दावन कहते हैं। श्रीचैतन्यमहाप्रभुके पिता जगन्नाथ मिश्र तथा पितामह उपेन्द्र मिश्रकी यह जन्मभूमि है। यहाँसे कुछ दूर कैलास पहाड़ीपर गोपेश्वर शिव-मन्दिर है।

चटगाँव—सीताकुण्ड रेलवे-स्टेशनसे यहाँ जाना पड़ता है। यहाँ चन्द्रशेखर शिव-मन्दिर है। तन्त्रचूडामणिमें कहा गया है कि यहाँ सतीका बाहु गिरा था। अतएव यहाँ देवीका मन्दिर ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ चन्द्रनाथ पर्वतपर ही सीताकुण्ड, व्यासकुण्ड, सूर्यकुण्ड, ब्रह्मकुण्ड, जनकोटिशिव, सहस्रधारा, बाडवकुण्ड (बलवाकुण्ड) तथा लवणाक्ष तीर्थ हैं। शिवरात्रिको मेला लगता था। ये तीर्थ प्रायः पास-पास हैं।

सीताकुण्ड रेलवे-स्टेशनके पास स्वयम्भूनाथके दर्शनार्थ भी यात्री जा सकता है। स्टेशनसे कुछ दूर यह स्थान है। चटगाँवसे नौकाद्वारा जानेपर द्वीपमें आदिनाथ-मन्दिर मिलता है।

कुमारीकुण्ड—पाकिस्तान-रेलवेकी बल्ला-हबीबगंज लाइनपर कुमिरा स्टेशन है। यहाँसे कुमारीकुण्डके लिये मार्ग जाता है। यहाँ पानीपर एक शब्द हुआ करता है। यहाँ लोग श्राद्ध-तर्पण करने जाते थे।

जयन्तियापुर—उसी लाइनपर आगे सेराहडी (श्रीहट्ट) स्टेशन है। उससे आगे कम्पनीगंजसे पूर्व जयन्तीपुर ग्राम है। यहाँ जयन्तीदेवीका मन्दिर है। पहले यहाँ बहुत यात्री जाते थे।

नोट—पाकिस्तानके तीर्थों तथा मन्दिरोंका विवरण पहलेका है। अब वहाँकी स्थिति क्या है, कहा नहीं जा सकता।

दाँतन

हबड़ा-वाल्टेयर लाइनपर खड़गपुरसे ३२ मील दूर यह स्टेशन है। यहाँ शामलेश्वर महादेवका प्राचीन मन्दिर है। देवालयके सम्मुख नन्दीश्वरकी भव्य मूर्ति है; किन्तु वह आततायियोंद्वारा भग्न की हुई है। कहा जाता है कि यह मन्दिर राजा भोजने बनवाया था। पास ही विद्याधर तथा शशाङ्क नामक दो सरोवर हैं। यहाँ धर्मशाला भी है।

क्षीरचोर गोपीनाथ

(लेखिका—श्रीमती पार्वती रथ)

हबड़ा-वाल्टेयर लाइनपर हबड़ासे १४४ मील दूर बालासोर स्टेशन है। वहाँसे मोटर-बससे ६ मील जानेपर रेमुणा ग्राममें गोपीनाथजीका मन्दिर मिलता है। यहाँ अनेक गौड़ीय मठ हैं। श्रीचैतन्यमहाप्रभु पुरी जाते समय यहाँ पधारे थे।

कथा—एक बार श्रीजानकीजीके मनमें मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामके द्वापरके अवतारकी लीला देखनेकी इच्छा हुई। श्रीरघुनाथजी उस समय रेमुणामें सप्तशरा नदीके किनारे कुछ काल श्रीगोपीवल्लभरूपमें रहे—यह किंवदन्ती सुनी जाती है।

इस स्थानपर वनप्रान्तमें श्रीगोपीनाथजीकी मूर्ति देखकर लांगुला-नरसिंहदेव-नरेशने मन्दिर बनवाया। श्रीमाधवेन्द्रपुरीजी महाराज एक बार श्रीगोपीनाथजीके दर्शन करने पधारे थे। दर्शन करते समय भगवान्‌को भोग लगा खीर-नैवेद्य मिले, ऐसी उनके मनमें इच्छा हुई; किन्तु संकोचवश सेवकोंसे माँग नहीं सके। भोग

लगते समय श्रीगोपीनाथजीने एक कटोरा खीर वस्त्रोंके नीचे छिपा लिया। पीछे पुजारीको स्वप्नादेश हुआ—'मेरे वस्त्रोंके नीचे एक कटोरा खीर है। उसे ले जाकर शून्यहाटमें जो महात्मा भजन कर रहे हैं, उन्हें दे दो।' पुजारीने खीर ले जाकर श्रीमाधवेन्द्रपुरीको दे दी। तभीसे श्रीगोपीनाथजीका नाम 'क्षीरचोर' पड़ गया।

याजपुर

(लेखक—श्रीश्रीधररथ शर्मा बी० ए०, बी० एल०)

हबड़ा-वाल्टेयर लाइनपर कटकसे ४४ मील पहले ही जाजपुर क्योंझररोड स्टेशन है। इस स्टेशनसे भी ७ मील पहले वैतरणी रोड स्टेशन है। कुछ यात्री वैतरणी रोडपर भी उतरते हैं; किन्तु वहाँसे तीर्थ १२ मील है और पैदल चलना पड़ता है। जाजपुर क्योंझररोडसे तीर्थ ९ मील है। स्टेशनसे याजपुरतक बस जाती है। याजपुरमें दो धर्मशालाएँ हैं; किन्तु दोनों ही अच्छी दशामें नहीं हैं।

याजपुर नाभिगया-क्षेत्र माना जाता है। यहाँ श्राद्ध, तर्पण आदिका महत्त्व है। उत्कलमें मुख्य तीर्थ-स्थान चार ही हैं—१-पुरी। २-भुवनेश्वर। ३-कोणार्क और ४-याजपुर। उत्कलका यह चक्र-क्षेत्र माना जाता है। यहाँ वैतरणी नदी है।

कहते हैं कि यहाँ पहले ब्रह्माजीने यज्ञ किया था। उस यज्ञके कुण्डसे ही विरजादेवीका प्राकट्य हुआ था। इसीलिये स्थानका नाम यागपुर या याजपुर पड़ा। जहाँ यज्ञ हुआ था, उस स्थानको 'हरमुकुन्दपुर' कहते हैं।

यहाँ वैतरणी नदीके घाटपर मन्दिर है। इनमेंसे एक मन्दिरमें गणेशजीकी सुन्दर मूर्ति है। उससे लगे हुए मन्दिरमें सप्तमातृका-मूर्तियाँ हैं। पास ही भगवान् विष्णुका मन्दिर है। घाटके पास दो-तीन दर्शनीय मन्दिर और हैं।

वैतरणी नदी पार करके भगवान् वाराहके मन्दिरमें जाना पड़ता है। वह यहाँका प्राचीन मन्दिर है। मन्दिरमें यज्ञवाराहकी सुन्दर मूर्ति है। यही यहाँका मुख्य मन्दिर है।

घाटसे लगभग एक मीलपर प्राचीन गरुड़-स्तम्भ है। आगे ब्रह्मकुण्डके समीप विरजादेवीका मन्दिर है। कुछ विद्वान् ५१ शक्तिपीठोंमें इसीको नाभिपीठ मानते हैं। सतीका नाभिदेश यहीं गिरा था, यह उनकी मान्यता है। विरजादेवीकी मूर्ति द्विभुज है। वहाँ मन्दिरमें उनके वाहन सिंहकी भी मूर्ति है।

इस मन्दिरसे थोड़ी ही दूरीपर त्रिलोचन शिव-मन्दिर है। कहा जाता है कि रावणने वहाँ तपस्या की थी।

नाभिगया-कुण्डके पास घण्टाकर्ण भैरवजीकी मूर्ति है।

इस क्षेत्रमें पहले अनेकों मन्दिर थे। कुछ मूर्तियाँ यहाँके डाकबँगलेके आँगनमें रखी हैं।

सिद्धेश्वर

याजपुरसे ३॥ मील पैदल जानेपर सिद्धेश्वर शिव-मन्दिर मिलता है। कहते हैं कि प्रद्युम्नजीने यहीं तपस्या की तथा सिद्धेश्वर महादेवकी स्थापना की थी।

सिंहापुर

(लेखक—पं० श्रीसोमनाथदासजी)

जाजपुर क्योंझररोडसे १२ मील आगे गढ़ मधुपुर स्टेशन है। वहाँसे दो मील दूर सिंहापुर ग्राम है। इस ग्राममें नारायण-तीर्थ है। इस नारायण-तीर्थ सरोवरमें भगवान् नारायणकी शेषशायी मूर्ति पूरे वर्षभर जलमें डूबी रहती है। इसीलिये इस मूर्तिको 'गङ्गा-नारायण' कहते हैं। मेष-संक्रान्तिके दिन यह मूर्ति जलसे बाहर आती है। उस दिन यहाँ बड़ा मेला होता है।

महाविनायक

गढ़ मधुपुर स्टेशनसे ७ मील आगे हरिदासपुर स्टेशन है। वहाँसे चार मीलपर महाविनायकका मन्दिर है। उसके पास ही उमाकुण्ड-तीर्थ है।

कहते हैं कि एक बार रावण कैलाससे भगवान् शङ्करको संतुष्ट करके पार्वतीजी तथा गणेशजीके साथ लङ्का ले जा रहा था। भगवान् शङ्कर मार्गमें यहाँ रुके थे। उसीसे इस स्थानके पासके पर्वतका नाम कैलास पड़ा। पर्वतपर भगवान् शङ्करका गर्भ-महालिङ्ग है। उस समय भगवती पार्वती जहाँ रुकी थीं, उस स्थानको चण्डीखोल कहते हैं।

चण्डीखोल

हरिदासपुर स्टेशनसे ३ मील आगे धानमण्डल स्टेशन है। वहाँसे ५ मीलपर पर्वतमें यह स्थान है। वर्षाको छोड़ शेष ऋतुओंमें मोटर-बस जाती है। यहाँ चण्डी-देवी तथा शङ्करजीका मन्दिर है।

छतिया

चण्डीखोलसे दो मीलपर छतिया गाँव है। यहाँ श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर है। यहाँ भगवान् कल्किकी पूजा होती है। यहाँसे पास ही इन्द्र-इन्द्राणी स्थान है।

कनकपुर

कटकसे झाँकड़ जानेवाली मोटर-बसमें बैठकर तेन्तुलिपदा जानेवाले मार्गपर उतरना चाहिये। वहाँसे पैदल कनकपुर जाना चाहिये। कनकपुरमें शारदा-देवीका मन्दिर खँड़हरके रूपमें स्थित है। मन्दिर विशाल है। पंडोंके यहाँ ठहरना पड़ता है। श्रीशारदाजीका मन्दिर पहले कनकपुरमें था; किंतु वह मन्दिर नष्ट हो जानेपर लगभग ३०० वर्ष पूर्व समीपके ग्राम तेन्तुलिपदामें दूसरा मन्दिर बना। महासरस्वतीका यह पीठ उत्कलमें प्रख्यात है। यहाँ सारलादास नामके एक प्रसिद्ध संत हो चुके हैं, जिन्हें 'शूद्रमुनि' कहा जाता है। उनके नामसे देवीका नाम 'सारला' भी लोग कहते हैं।

कटक

(लेखक—पं० श्रीसत्यनारायणजी महापात्र)

कटकमें महानदीके किनारे धवलेश्वर-महादेवका प्राचीन मन्दिर है। यह स्वयम्भूलिङ्ग है। कार्तिक शुक्ला १४ को पूरे उत्कलमें इनका उत्सव मनाया जाता है। कटक महानगर है। नगरमें अनेकों देव-मन्दिर हैं। धर्मशालाएँ है।

गोकर्ण-तीर्थ

कटक जिलेके धर्मशाला थानेमें गोकर्णजीका स्थान है। यहाँ गोकर्ण-तीर्थ तथा गोकर्णेश्वर शिव-मन्दिर है। यह उत्कलका प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ है।

पापक्षय-घाट

(लेखक—पं० आदित्यप्रसादजी गुरु, व्याकरण-साहित्य-शास्त्री, काव्यतीर्थ, साहित्यरत्न, तर्कभूषण)

उत्कल (उड़ीसा) के बलाङ्गिर (पाटना) जिलेमें सोनपुर प्रसिद्ध स्थान है। सोनपुरसे बरगढ़ जानेवाली मोटर-बसका मार्ग पापक्षय-घाटके पाससे जाता है। विनका नामक स्थानमें मोटर-बससे उतरकर एक मील पैदल जाना पड़ता है। यह स्थान सोनपुरसे १९ मील दूर है।

चित्रोत्पला (महानदी) के तटपर एक वटवृक्ष है। उसके नीचे एक शिला है, जिसे पापक्षय-देवता कहते हैं। दूसरा कोई मन्दिर या मूर्ति नहीं है। ग्रहण तथा वारुणीपर्वपर यहाँ बड़ा भारी मेला लगता है। चार-पाँच दिन पहिलेसे बाजार लग जाता है।

यहाँसे एक मील दूर विनीतपुरमें कपिलेश्वर शिव-मन्दिर है।

सम्बलपुरके कुछ तीर्थ

(लेखक—श्रीनन्दकिशोरजी पोद्दार)

होमा—यह स्थान सम्बलपुरसे १५ मील दूर है। सम्बलपुरसे मोटर-बस धामा जाती है। वहाँसे होमा दो मील है।

यह स्थान महानदीके किनारे है। यहाँ महादेवजीका मन्दिर है। शिवरात्रिपर मेला लगता है। यहाँके सब मकान ऐसे तिरछे हैं मानो अभी गिर जायँगे। यहाँ मूर्ति दो हाथ नीचे है। प्रकाश करके दर्शन किया जाता है।

मानेश्वर—यह स्थान सम्बलपुरसे ६ मील दूर है। प्रत्येक सोमवारको मेला लगता है। मन्दिरमें मानेश्वर-मूर्ति भी डेढ़-दो हाथ नीचे है। यहाँ पासमें सरोवर है। यहाँ सकाम लोग धरना देते हैं।

नृसिंहनाथ—यह स्थान सम्बलपुरसे ९० मील है। सम्बलपुरसे नवापाड़ातक बस जाती है। इस बस-रोडसे पाइकमालामें उतरनेपर नृसिंह-मन्दिर दो मील रह जाता है।

यह स्थान पर्वतपर है। यहाँ ऊचाईसे झरना गिरता है। मन्दिरमें नृसिंहजीकी मूर्ति है। ठहरनेकी साधारण जगह है। यहाँसे दो मील दूर घोर वनमें कपिलधारा नामक बहुत ऊँचेसे गिरनेवाला प्रपात है।

हरिशंकर—नृसिंहनाथसे पर्वतीय मार्गसे ९ मील आगे जानेपर हरिशंकरजीका मन्दिर मिलता है। यहाँ नृसिंह-चतुर्दशी तथा शिवरात्रिको मेला लगता है। रायपुरसे हरिशंकर-रोड स्टेशन जाकर वहाँसे २० मील बैलगाड़ी या टैक्सीसे चलनेपर भी हम हरिशंकर पहुँच सकते हैं। यह स्थान पर्वतसे नीचे है। यहाँसे एक मील दूर गाँवमें इन्सपेक्शन बँगला है, जहाँ यात्री ठहर सकते हैं।

भुवनेश्वर

(लेखक—पं० श्रीसदाशिवरथ शर्मा)

हबड़ा-वाल्टेयर लाइनपर कटक-खुरदारोडके बीचमें कटकसे १८ मील दूर भुवनेश्वर स्टेशन है। स्टेशनसे भुवनेश्वरका मुख्य मन्दिर लगभग तीन मील दूर है। पुरीसे भुवनेश्वर ३ योजन है। यह स्थान उत्कलकी प्राचीन राजधानी था और अब स्वाधीन भारतमें फिर उत्कलकी राजधानी हो गया है। स्टेशनसे मुख्य मन्दिरके पासतक बस जाती है। ताँगे-रिक्शे भी मिलते हैं।

भुवनेश्वर काशीके समान ही शिव-मन्दिरोंका नगर है। कहा जाता है कि यहाँ कई सहस्र मन्दिर थे। अब भी मन्दिरोंकी संख्या कई सौ है। इसे उत्कल-वाराणसी और गुप्तकाशी भी लोग कहते हैं; किन्तु पुराणोंमें इसे 'एकाम्र क्षेत्र' कहा गया है। भगवान् शङ्करने इस क्षेत्रको प्रकट किया, इससे यह शाम्भव-क्षेत्र भी कहलाता है।

पुरीके समान यहाँ भी महाप्रसादका माहात्म्य माना जाता है, किंतु यहाँ मुख्य मन्दिरके कोटके भीतर ही

महाप्रसादमें स्पर्शादि दोष नहीं मानते। मन्दिरकी परिधिसे बाहर प्रसादको स्पर्श-दोषसे बचानेका ध्यान रखा जाता है। प्रायः यात्री मन्दिरकी परिधिमें नृत्यमण्डपमें प्रसाद ग्रहण करते हैं।

ठहरनेके स्थान

अन्य तीर्थोंकी भाँति भुवनेश्वरमें भी पंडोंके यहाँ ठहरनेकी व्यवस्था है। धर्मशालाएँ ये हैं—१-श्रीहर-गोविन्दरायजी मथुरादास डालमिया भिवानीवालेकी, बिन्दु-सरोवरके पास। २-रायबहादुर श्रीहजारीमलजी दूधवेवालाकी, बिन्दु-सरोवरके पास। ३-श्रीहरनामलजी विशेश्वरलाल गोयनकाकी, बिन्दुसरोवरके पास। ४-स्टेशनके पास भी एक छोटी धर्मशाला है।

स्नानके पवित्र तीर्थ

भुवनेश्वरमें ९ प्रसिद्ध तीर्थ हैं, जिनमें यात्रीको स्नान-प्रोक्षणादि करना चाहिये—१-बिन्दुसरोवर, २-पापनाशिनी, ३-गङ्गा-यमुना, ४-कोटितीर्थ, ५-देवी पापहरा, ६-मेघतीर्थ, ७-अलाबुतीर्थ, ८-अशोक-कुण्ड (रामह्रद), ९-ब्रह्मकुण्ड।

इनमें भी बिन्दु-सरोवर तथा ब्रह्मकुण्डका स्नान मुख्य माना जाता है।

बिन्दुसरोवर—भुवनेश्वरके बाजारके पास मुख्य सड़कसे लगा हुआ यह सुविस्तृत सरोवर है। समस्त तीर्थोंका जल इसमें डाला गया है, इसलिये यह परम पवित्र माना जाता है। सरोवरके मध्यमें एक मन्दिर है। वैशाख महीनेमें यहाँ चन्दनयात्रा (जल-विहार) का उत्सव होता है। सरोवरके चारों ओर बहुत-से मन्दिर हैं।

ब्रह्मकुण्ड—बिन्दुसरोवरसे लगभग दो फर्लांग दूर नगरके बाह्य भागमें एक बड़े घेरेके भीतर ब्रह्मेश्वर-मन्दिर तथा और कई मन्दिर हैं। इसी घेरेमें ब्रह्मकुण्ड, मेघकुण्ड, रामह्रद तथा अलाबुतीर्थ-कुण्ड हैं। इन कुण्डोंके समीप मेघेश्वर, रामेश्वर एवं अलाबुकेश्वर मन्दिर हैं। इनमेंसे ब्रह्मकुण्डमें स्नान किया जाता है। कुण्डमें गोमुखसे बराबर जल गिरता है और एक मार्गसे कुण्डके बाहर जाता रहता है।

कोटितीर्थ—भुवनेश्वर नगर आनेके मुख्यमार्गके बगलमें यह तीर्थ है।

देवी पापहरा—मुख्य मन्दिर (लिङ्गराज-मन्दिर) के सम्मुख कार्यालयके प्राङ्गणमें। इसी प्रकार मुख्य मन्दिरके पिछले भागमें यमेश्वर-मन्दिरके सामने पापनाशिनी तीर्थ है।

श्रीलिङ्गराज-मन्दिर—यही भुवनेश्वरका मुख्य मन्दिर है। श्रीलिङ्गराजका ही नाम भुवनेश्वर है। यह मन्दिर उच्च प्राकारके भीतर है। प्राकारमें चारों ओर चार द्वार हैं, जिनमें मुख्य द्वारको सिंहद्वार कहा जाता है।

सिंहद्वारसे प्रवेश करनेपर पहले गणेशजीका मन्दिर मिलता है। आगे नन्दीस्तम्भ है और उसके आगे मुख्य मन्दिरका भोगमण्डप है। इसी मण्डपमें हरि-हर-मन्त्रसे लिङ्गराजजीको भोग लगाया जाता है।

भोगमण्डपके आगे नाट्यमन्दिर (जगमोहन) है। आगे मुखशाला है, जिसमें दक्षिण ओर द्वार है। यहाँसे आगे विमान (श्रीमन्दिर) है। इस निज-मन्दिरकी निर्माणकला उत्कृष्ट है। इसके बाहरी भागमें अत्यन्त मनोरम शिल्पसौन्दर्य है। भीतरका अंश भी मनोहर है।

श्रीलिङ्गराजजीके निज-मन्दिरमें चपटा अगठित विग्रह है। यह वस्तुतः बुद्बुद-लिङ्ग है। शिलामें बुद्बुदाकार उठे हुए अङ्कुर-भागोंको बुद्बुद-लिङ्ग कहा जाता है। यह चक्राकार होनेसे हरि-हरात्मक लिङ्ग माना जाता है और हरिहरात्मक मानकर हरि-हर मन्त्रसे इनकी पूजा होती है। कुछ लोग त्रिभुजाकार होनेसे इन्हें हरगौर्यात्मक तथा दीर्घ होनेसे कालरुद्रात्मक भी मानते हैं। यात्री भीतर जाकर स्वयं इनकी पूजा कर सकते हैं। हरिहरात्मक लिङ्ग होनेसे यहाँ त्रिशूल मुख्यायुध नहीं माना जाता, पिनाक (धनुष) ही मुख्यायुध माना जाता है।

इस मन्दिरके तीन भागोंमें तीन मन्दिर हैं। मन्दिरके दक्षिण भागवाले मन्दिरमें गणेशजीकी मूर्ति है, उस भागको 'निशा' कहते हैं। लिङ्गराजजीके मन्दिरके पश्चात्-भागमें पार्वती-मन्दिर है। यह मूर्ति खण्डित होनेपर भी सुन्दर है। उत्तर भागमें स्वामीका मन्दिर है। इन तीनों मन्दिरोंके अतिरिक्त श्रीलिङ्गराजमन्दिरके ऊर्ध्वभागमें कीर्तिमुख, नाट्येश्वर, दश दिक्पालादिकी मूर्तियाँ अङ्कित हैं।

मुख्य लिङ्गराज-मन्दिरके अतिरिक्त प्राकारके भीतर बहुतसे देव-देवियोंके मन्दिर हैं। उनमें महाकालेश्वर, लक्ष्मी-नृसिंह, यमेश्वर, विश्वकर्मा, भुवनेश्वरी, गोपालिनी (पार्वती) जीके मन्दिर मुख्य हैं। इनमें भुवनेश्वरी तथा

पार्वतीजीको श्रीलिङ्गराजजीकी शक्ति माना जाता है। भुवनेश्वरी-मन्दिरके समीप ही नन्दी-मन्दिर है, जिसमें विशाल नन्दीकी मूर्ति है।

अन्य मन्दिर

भुवनेश्वरमें इतने अधिक मन्दिर हैं कि उनकी नामावली भी देना सम्भव नहीं है। केवल मुख्य मन्दिरोंका संक्षिप्त उल्लेख ही किया जा सकता है। वैसे यहाँके प्रायः सभी मन्दिरोंमें सम्मुख भोगमन्दिर है और उसके पीछे उच्च श्रीमन्दिर (विमान या निजमन्दिर) है। मन्दिरोंका ढाँचा प्रायः एक-सा है, किन्तु प्रत्येक कलामें अपनी विशेषता रखता है।

अनन्त वासुदेव—एकाम्रक्षेत्र (भुवनेश्वर) के ये ही अधिष्ठातृ-देवता हैं। भगवान् शङ्कर इन्हींकी अनुमतिसे इस क्षेत्रमें पधारे। बिन्दुसरोवरके मणिकर्णिका-घाटपर ऊपरी भागमें यह मन्दिर है। यहाँ मुख्य मन्दिरमें सुभद्रा, नारायण तथा लक्ष्मीजीके श्रीविग्रह हैं।

बिन्दुसागरके चारों ओर बहुत-से मन्दिर हैं। उनमें पश्चिम तटपर ब्रह्माजीका मन्दिर और दक्षिणमें भवानी-शङ्करका मन्दिर दर्शनीय हैं।

रामेश्वर—स्टेशनसे भुवनेश्वर आते समय मार्गमें यह मन्दिर पड़ता है। इसे गुंडीचा-मन्दिर भी कहते हैं; क्योंकि चैत्रशुक्ला अष्टमीको श्रीलिङ्गराजजीका रथ यहाँ आता है।

ब्रह्मेश्वर—ब्रह्मकुण्डके समीप यह अत्यन्त कलापूर्ण मन्दिर है। इसमें शिव, भैरव, चामुण्डा आदिकी मूर्तियाँ दर्शनीय हैं।

मेघेश्वर—ब्रह्मकुण्डके पास ही मेघेश्वर तथा भास्करेश्वर मन्दिर हैं। ये दोनों ही मन्दिर प्राचीन हैं और कलापूर्ण हैं।

राजा-रानी-मन्दिर—यह पहले विष्णु-मन्दिर था। कटक-भुवनेश्वर सड़कके पास है। इसमें अब कोई आराध्य-मूर्ति तो नहीं है, किन्तु मन्दिर बहुत सुन्दर है। इसका शिल्प-सौन्दर्य देखने यात्री जाते हैं।

इसी प्रकार मुक्तेश्वर, सिद्धेश्वर तथा वहीं परशुरामेश्वर मन्दिर भी कलाकी दृष्टिसे सुन्दर एवं दर्शनीय हैं। यहाँ कलापूर्ण सुन्दर मन्दिर बहुत हैं; किन्तु अधिकांश मन्दिरोंमें आराध्य मूर्ति रही नहीं। कई मन्दिर तो अब ऐसे खड़े हैं कि उनमें प्रवेश करना भी भयावह है। वे किसी समय गिर सकते हैं।

कथा—काशीमें सभी तीर्थाधिदेवोंके बस जानेपर भगवान् शङ्करको एकान्तमें रहनेकी इच्छा हुई। देवर्षि नारदजीने एकाम्रक्षेत्रकी प्रशंसा की। यहाँ आकर शङ्करजीने क्षेत्रपति अनन्त वासुदेवजीसे कुछ काल निवासकी अनुमति माँगी। भगवान् वासुदेवने शङ्करजीको यहाँ नित्य निवासका अनुरोध करके रोक लिया।

उदयगिरि-खण्डगिरि

(लेखक—पं० श्रीरामचन्द्र रथ शर्मा)

भुवनेश्वरसे ७ मील पश्चिम उदयगिरि तथा खण्ड-गिरि नामक पहाड़ियाँ हैं। इनमें उदयगिरि अतिशयक्षेत्र है जैनोंका। इस स्थानसे कलिङ्ग देशके ५०० मुनि मोक्ष गये हैं। दोनों पहाड़ियाँ समीप ही हैं। नीचे जैन-धर्मशाला है।

उदयगिरिका नाम 'कुमारीगिरि' है। श्रीमहावीरस्वामी यहाँ पधारे थे। इस पर्वतमें अनेकों गुफामन्दिर बने हैं। पहले अलकापुरी गुफा है; फिर क्रमसे जय-विजयगुफा, रानीनूरगुफा, गणेशगुफा मिलती है। गणेशगुफाके बाहर दो हाथी बने हैं। वहाँसे लौटनेपर 'स्वर्गगुफा', 'मध्यगुफा' तथा 'पातालगुफा' आती है। पातालगुफाके ऊपर हाथीगुफा है। इन गुफाओंमें अनेकों मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।

उदयगिरिके समीप मार्गके वाम भागमें खण्डगिरि है। सीढ़ियोंके सामने ही खण्डगिरि-गुफा है। उसके ऊपर-नीचे ५ गुफाएँ हैं। शिखरपर जैन-मन्दिर हैं। एक घेरेके भीतर दो मन्दिर हैं, एक छोटा और एक बड़ा। मन्दिरोंके पास आकाशगङ्गा नामक कुण्ड है। आगे गुप्तगङ्गा, श्यामकुण्ड तथा राधाकुण्ड हैं। उनके आगे इन्द्रिकेसरी गुफा है। उसके पश्चात् एक गुफामें २४ तीर्थंकरोंकी प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। आगे बारहभुजी गुफा है।

उदयगिरि और खण्डगिरिकी गुफाओंकी प्राचीनता एवं शिल्पकला देखने दूर-दूरके यात्री आते हैं।

भुवनेश्वर और उसके आस-पास

श्रीलिङ्गराज-मन्दिर, भुवनेश्वर

श्रीमुक्तेश्वर-मन्दिर, भुवनेश्वर

श्रीपरशुरामेश्वर-मन्दिर, भुवनेश्वर

बिन्दुसर, भुवनेश्वर

श्रीलिङ्गराज-मन्दिरका भोगमन्दिर (सामनेसे)

अर्क-तीर्थ कोणार्क-मन्दिर

सूर्य-मूर्ति
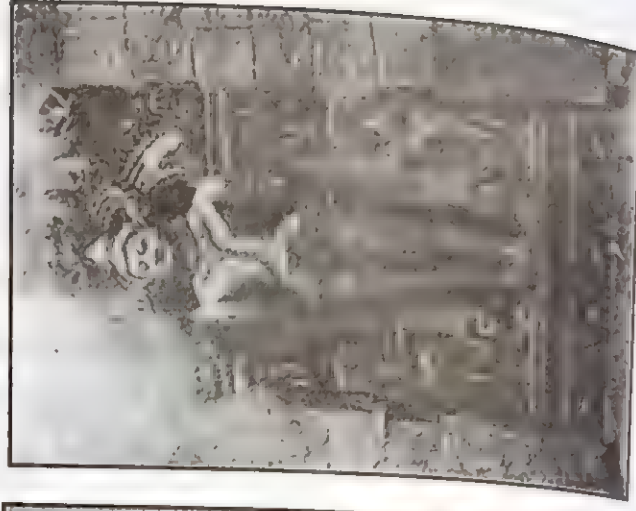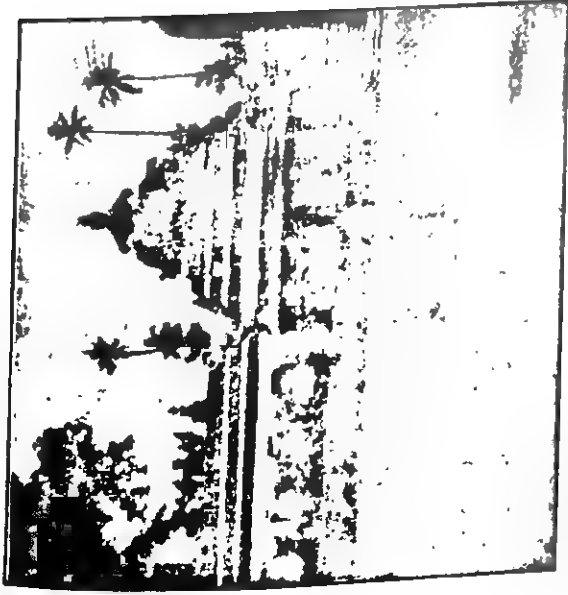
पुरीके आस-पास

दशाश्वमेध-घाटपर सप्त-मातृका एवं सिद्धविनायक-मन्दिर, याजपुर
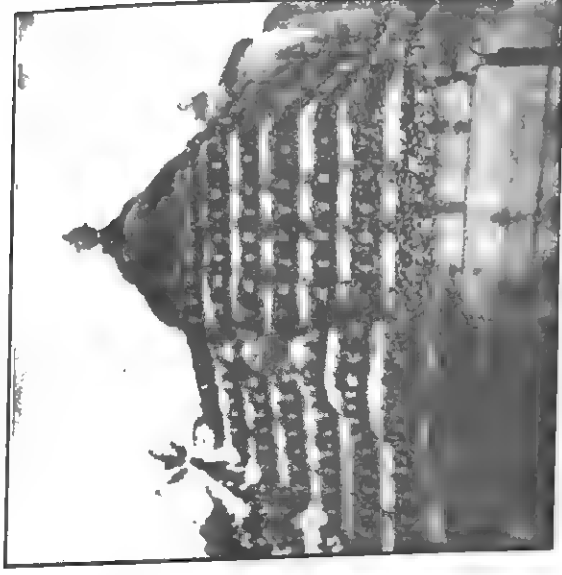
श्रीवराह-मन्दिर, याजपुर
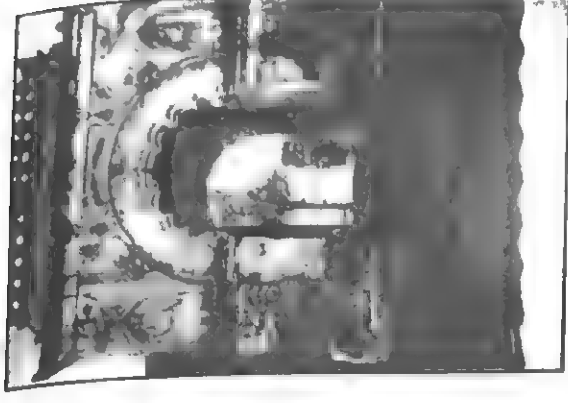
भगवती-महाक्षेत्र, बाणपुर

खण्डगिरिकी तपस्या-गुफा
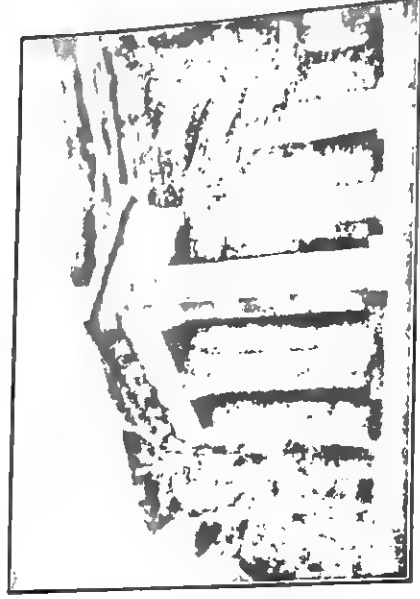
तपस्या-गुफा, उदयगिरि

पाण्डवतीर्थ, महेन्द्राचल

धवलागिरि

भुवनेश्वरसे यह स्थान दो मीलपर है। यहाँ पर्वतमें बौद्ध-गुफाएँ हैं। कहा जाता है कि यहीं अशोकका इतिहास-प्रसिद्ध कलिङ्ग-युद्ध हुआ था। इस युद्धमें हुए भयानक नर-संहारने अशोकका हृदय परिवर्तन कर दिया था। अशोकने यहीं बुद्ध-धर्म स्वीकार किया था। इस पर्वतको अश्वत्थामा-पर्वत भी कहते हैं। यहाँ अश्वत्थामा-विहार था।

कोणार्क

(लेखक—श्रीश्रीनिवास रामानुजदासजी)

पुरीसे समुद्र-किनारेके पैदल मार्गसे कोणार्क २० मील है, किन्तु यह मार्ग अच्छा नहीं है। पुरीसे मोटर-बसद्वारा जानेपर ५४ मील और भुवनेश्वरसे बसद्वारा जानेपर ४४ मील पड़ता है। दोनों स्थानोंसे बसें जाती हैं। कोणार्कमें कोई बस्ती नहीं है। यहाँ ठहरनेका स्थान भी नहीं है। मन्दिरमें कोई आराध्य मूर्ति नहीं है। वर्षामें यहाँ बसें नहीं जातीं। भोजनका सामान साथ ले जाना चाहिये; क्योंकि निकटतम ग्राम ४ मील दूर है।

कोणार्कको प्राचीन पद्मक्षेत्र कहा जाता है। एक बार श्रीकृष्णचन्द्रके पुत्र साम्बको कुष्ठ हो गया था। भगवान्‌की आज्ञासे इस स्थानपर आकर कोणादित्यकी आराधना करनेसे ही वह कुष्ठ दूर हुआ। साम्बने ही सूर्य-मूर्ति स्थापित की थी। (यह मूर्ति अब पुरीमें है।)

किसी समय यह स्थान सौर-सम्प्रदायका प्रधान केन्द्र था। पासमें चन्द्रभागा नदी है। यहाँ माघशुक्ला सप्तमीको स्नान महापुण्यप्रद माना जाता है।

एक चारों ओरसे पक्के घेरेके भीतर—जो सरोवरकी भाँति जान पड़ता है, किन्तु सूखा है—सूर्यदेवका विशाल मन्दिर है। यह विशाल रथ-मन्दिर बनाया गया था। मन्दिरमें रथके पहिये तथा सात घोड़े, सारथिका स्थान आदि सब बना है। मन्दिर बहुत ऊँचा था, किन्तु शिखरका भाग टूट गया है। मन्दिरको आततायियोंने तोड़ा और लूटा। फिर मन्दिर किसी कारणसे भूमिमें कुछ धँस गया। अब मूल विमान (श्रीमन्दिर) तो है नहीं, केवल सम्मुखके भोग-मण्डपका कुछ भाग खड़ा है। इस मन्दिरके पीछे एक सूर्यपत्नी संज्ञाका मन्दिर है। वह भी भग्न दशामें है।

यह सूर्य-मन्दिर अपनी कलाके लिये विश्वका सर्वश्रेष्ठ मन्दिर कहा जाता है। एक सरकारी संग्रहालयभवन यहाँ है, जिसमें मन्दिरकी मूर्तियोंके अनेक अंश संगृहीत हैं। वहाँ नवग्रह मूर्तियाँ, जो एक ही शिलामें हैं, अखण्ड तथा बहुत सुन्दर हैं।

अश्लील मूर्तियाँ—कोणार्कके इस सूर्य मन्दिरका जो अंश खड़ा है, उसमें प्रायः सर्वत्र अश्लील मूर्तियोंकी भरमार है। संग्रहालयमें भी ये मूर्तियाँ हैं। पुरीमें श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरपर तथा साक्षीगोपाल-मन्दिरपर भी ऐसी मूर्तियाँ हैं। यह बात केवल उड़ीसाके प्राचीन मन्दिरोंकी नहीं है, समस्त भारतके प्राचीन मन्दिरोंमें पायी जाती है। दक्षिण भारतके मन्दिरोंके गोपुरोंमें भी ऐसी मूर्तियाँ पायी जाती हैं। नैपालमें तथा अन्य प्राचीन मन्दिरोंमें—सर्वत्र यह बात मिलती है। यहाँतक कि देवमन्दिरोंके लिये बने काष्ठरथोंमें भी ऐसी मूर्तियाँ हैं। कहा जाता है कि वज्रपातसे रक्षाके लिये इनका निर्माण होता था; किन्तु रथोंपर तथा कोणार्कमन्दिरमें सर्वत्र इनका होना बताता है कि शिल्पकारोंपर वाममार्गी साधनोंका बहुत प्रभाव था। दूसरा कोई समुचित कारण ऐसी मूर्तियोंके निर्माणका जान नहीं पड़ता।

हाटकेश्वर-तप्तकुण्ड

खुर्दा-रोड स्टेशनसे मोटर-बसद्वारा ४ मील बाघमारीतक जाकर आगे दो मील पैदल चलना पड़ता है। यहाँ एक गरम पानीका कुण्ड है। उसका जल खौलता रहता है। जलमें गन्धकका अंश बताया जाता है। यह जल अनेक उदर-विकारों एवं चर्मरोगोंमें लाभकारी होता है। कुण्डके समीप ही हाटकेश्वर शिव-मन्दिर है।

सिंहनाद

खुर्दा-रोड स्टेशनसे यहाँ भी बस जाती है। महानदीके किनारे सिंहनाद महादेवका मन्दिर है। यह मन्दिर भट्टारिकापीठ कहा जाता है। यहाँ भट्टारिका देवीका मन्दिर भी है।

श्रीरघुनाथ

(लेखक—पं० श्रीमदनमोहनजी मिश्र, बी० ए०)

खुर्दा-रोड स्टेशनसे मोटर-बसद्वारा ४० मील नयागढ़ और वहाँसे दूसरी बससे १० मील ओड़गाँव जाना पड़ता है। यहाँ श्रीरघुनाथजीका भव्य मन्दिर है। मन्दिरमें चन्दनकाष्ठकी श्रीरघुनाथजीकी मूर्ति है। मन्दिरमें ऋष्यमूक पर्वतका दृश्य तथा अनेक ऋषियोंकी मूर्तियाँ हैं।

वनवासके समय श्रीराम-लक्ष्मण यहाँ पधारे थे और एक चन्दन-वृक्षके नीचे उन्होंने रात्रि-विश्राम किया था। प्रभुके चले जानेपर आसपासके शबर जातिके लोग उस वृक्षकी पूजा करने लगे। नयागढ़नरेश कृष्णचन्द्रदेव तीर्थ-यात्राके लिये निकलनेपर मार्ग भूलकर यहाँ पहुँच गये। वे इसी चन्दन-वृक्षके नीचे ठहरे। रात्रिमें उनपर व्याघ्रने आक्रमण कर दिया। महाराज अपने आराध्य श्रीरामको पुकारकर भयके कारण मूर्च्छित हो गये। मूर्च्छा दूर होनेपर उन्हें अपने सामने श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीके प्रत्यक्ष दर्शन हुए। महाराजने वहाँ श्रीराम-मन्दिर बनवाया और उसी वृक्षके काष्ठसे श्रीरघुनाथजीकी मूर्ति बनवाकर स्थापित की।

चर्चिकादेवी

खुर्दा-रोड स्टेशनसे मोटर-बसद्वारा बाँकी जाना पड़ता है। वहाँ महानदीके किनारे एक पहाड़ीपर चर्चिकादेवीका मन्दिर है। उत्कलके अष्ट शक्तिपीठोंमें यह भी एक पीठ है।

नीलमाधव

खुर्दा-रोडसे मोटर-बसद्वारा खण्डपड़ा जाकर वहाँसे कंटिलो जाना चाहिये। महानदीके तटपर यहाँ श्रीनीलमाधवका मन्दिर है। यह इस ओर बहुत सम्मानप्राप्त स्थान है।

वेणुपडा

खुर्दारोड-पुरी लाइनपर खुर्दा-रोडसे १० मील दूर देलांग स्टेशन है। वहाँसे ५ मीलपर वेणुपड़ा ग्राम है। यहाँ उत्कलके प्राचीन संत आर्तत्राणदासजीका स्थान है। पूरे उत्कल प्रान्तमें इस संत-तीर्थका बहुत सम्मान है।

पुरी

(लेखक—पं० श्रीसदाशिवरथ शर्मा)

श्रीजगन्नाथ चार परम पावन धामोंमें एक है। ऐसी भी मान्यता है कि शेष तीन धामोंमें बदरीनाथ सत्ययुगका, रामेश्वर त्रेताका तथा द्वारिका द्वापरका धाम है; किन्तु इस कलियुगका पावनकारी धाम तो पुरी ही है।

पहले यहाँ नीलाचल नामक पर्वत था और **नीलमाधव भगवान्‌की** श्रीमूर्ति थी उस पर्वतपर, जिसकी **देवता आराधना करते थे।** वह पर्वत भूमिमें चला गया **और भगवान्‌की वह** मूर्ति देवता अपने लोकमें ले गये;

किंतु इस क्षेत्रको उन्हींकी स्मृतिमें अब भी नीलाचल कहते हैं। श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरके शिखरपर लगा चक्र 'नीलच्छत्र' कहा जाता है। उस नीलच्छत्रके दर्शन जहाँतक होते हैं, वह पूरा क्षेत्र श्रीजगन्नाथपुरी है।

इस क्षेत्रके अन्य अनेक नाम हैं। यह श्रीक्षेत्र, पुरुषोत्तमपुरी तथा शङ्खक्षेत्र भी कहा जाता है; क्योंकि इस पूरे पुण्यक्षेत्रकी आकृति शङ्खके समान है। शाक्त इसे उड्डियानपीठ कहते हैं। ५१ शक्तिपीठोंमें यह एक पीठस्थल है। सतीकी नाभि यहाँ गिरी थी।

श्रीजगन्नाथजीके महाप्रसादकी महिमा तो भुवन-विख्यात है। महाप्रसादमें छुआछूतका दोष तो माना ही नहीं जाता, उच्छिष्टता दोष भी नहीं माना जाता और व्रत-पर्वादिके दिन भी उसे ग्रहण करना विहित है। सच तो यह है कि भगवत्प्रसाद अन्न या पदार्थ नहीं हुआ करता। वह तो चिन्मय तत्त्व है। उसे पदार्थ मानकर विचार करना ही दोष है। श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु पुरी पधारे तो एकादशी-व्रतके दिन उनकी निष्ठाकी परीक्षाके लिये उनको किसीने मन्दिरमें ही महाप्रसाद दे दिया। आचार्यने महाप्रसाद हाथमें लेकर उसका स्तवन प्रारम्भ किया और एकादशीके पूरे दिन तथा रात्रि उसका स्तवन करते रहे। दूसरे दिन द्वादशीमें स्तवन समाप्त करके उन्होंने प्रसाद ग्रहण किया। इस प्रकार उन्होंने महाप्रसाद एवं एकादशी दोनोंको समुचित आदर दिया।

मार्ग

पूर्वी रेलवेकी हावड़ा-वाल्टेयर लाइनपर कटकसे २९ मील दूर खुरदा-रोड स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन पुरीतक जाती है। खुरदा-रोडसे पुरी २८ मील है। आसनसोल, हबड़ा, मद्रास तथा तलचरसे पुरीके लिये सीधी ट्रेनें चलती हैं।

कटक, भुवनेश्वर, खुरदा-रोड आदिसे पुरीके लिये मोटर-बसें भी चलती हैं। पुरी स्टेशनसे श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर लगभग एक मील है।

ठहरनेके स्थान

पुरीमें बहुत-से मठ हैं। प्रायः सभी मठोंमें यात्री ठहरते हैं। अनेकों धर्मशालाएँ भी हैं, जिनमें मुख्य हैं— १-दूधवेवालोंकी धर्मशाला, मन्दिरके निकट बड़ा रास्ता; २-गोयनका-धर्मशाला, बड़ा रास्ता; ३-सेठ धनजी मूलजीकी, दलबेदी कोना; ४-सेठ कन्हैयालालजी बागलाकी, बड़ा रास्ता, मन्दिरसे एक मीलपर; ५-बीकानेरवालोंकी, दलबेदी कोना; ६-खेमका-धर्मशाला, डोलमण्डपसाही, कचहरी रोड; ७-श्रीआशारामजी मोतीरामकी, दलबेदी कोना।

स्नानके स्थान

श्रीजगन्नाथपुरीमें १-महोदधि (समुद्र), २-रोहिणीकुण्ड, ३-इन्द्रद्युम्नसरोवर, ४-मार्कण्डेयसरोवर, ५-श्वेतगङ्गा, ६-चन्दनतालाब, ७-लोकनाथसरोवर, ८-चक्रतीर्थ—ये आठ पवित्र जलतीर्थ हैं। इनमेंसे भी समुद्रस्नान तथा रोहिणीकुण्ड, मार्कण्डेयसरोवर एवं इन्द्रद्युम्नसरोवरका स्नान प्रधान माना जाता है।

१-श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरसे सीधा मार्ग समुद्रतटको गया है। स्नानका स्थान स्वर्गद्वार कहा जाता है। श्रीजगन्नाथमन्दिरसे स्वर्गद्वार लगभग एक मील है।

२-रोहिणीकुण्ड—यह कुण्ड श्रीजगन्नाथमन्दिरके भीतर ही है। इसमें सुदर्शनचक्रकी छाया पड़ती है। कहा जाता है कि एक कौआ अकस्मात् इसमें गिर पड़ा, इससे उसे सारूप्यमुक्ति प्राप्त हुई।

३-इन्द्रद्युम्नसरोवर मन्दिरसे लगभग डेढ़ मीलपर गुंडीचामन्दिर (जनकपुर) के पास है।

४-५—मार्कण्डेयसरोवर और चन्दनतालाब—ये दोनों ही पास-पास हैं। श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरसे आध मील दूर हैं।

६-श्वेतगङ्गासरोवर स्वर्गद्वार (समुद्रस्नान) के मार्गमें है।

७-श्रीलोकनाथमन्दिरके पास लोकनाथसरोवर है। जगन्नाथजीके मन्दिरसे लगभग दो मील है। इसे हर-पार्वती-सर या शिवगङ्गा भी कहते हैं।

८-चक्रतीर्थ स्टेशनसे आध मीलपर समुद्रतटपर है।

श्रीजगन्नाथमन्दिर—श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर बहुत विशाल है। मन्दिर दो परकोटोंके भीतर है। इसमें चारों ओर चार महाद्वार हैं। मुख्य मन्दिरके तीन भाग हैं— विमान या श्रीमन्दिर, जो सबसे ऊँचा है; इसीमें श्रीजगन्नाथजी विराजमान हैं। उसके सामने जगमोहन है और जगमोहनके पश्चात् मुखशाला नामक मन्दिर है। मुखशालाके आगे भोगमण्डप है।

श्रीजगन्नाथमन्दिरके पूर्वमें सिंहद्वार, दक्षिणमें अश्वद्वार, पश्चिममें व्याघ्रद्वार और उत्तरमें हस्तिद्वार है।

निजमन्दिरके घेरेके मन्दिर—सिंहद्वारके सम्मुख कोणार्कसे लाकर स्थापित किया उच्च अरुणस्तम्भ है। इसकी प्रदक्षिणा करके, सिंहद्वारको प्रणाम करके द्वारमें प्रवेश करनेपर दाहिनी ओर पतितपावन जगन्नाथजीके विग्रह (द्वारमें ही) दृष्टिगोचर होते हैं। इनके दर्शन सभीके लिये सुलभ हैं। विधर्मी भी इनका दर्शन कर सकते हैं।

आगे एक छोटे मन्दिरमें विश्वनाथलिङ्ग है। कोई ब्राह्मण काशी जाना चाहते थे। श्रीजगन्नाथजीने उन्हें स्वप्नमें आदेश दिया कि उक्त लिङ्गमूर्तिके अर्चनसे ही उन्हें विश्वनाथजीके पूजनका फल प्राप्त हो जायगा।

श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरके दूसरे प्राकारके भीतर जानेसे पूर्व २५ सीढ़ी चढ़ना पड़ता है। इन सीढ़ियोंको प्रकृतिके २५ विभागोंका प्रतीक माना गया है। द्वितीय प्राकारके द्वारमें प्रवेश करनेके पूर्व दोनों ओर भगवत्प्रसादका बाजार दिखायी देता है।

आगे अजाननाथ गणेश; बटेरा महादेव एवं पटमङ्गलादेवीके स्थान हैं। सत्यनारायणभगवान् हैं। इनकी सेवा अन्यधर्मी भी करते हैं। आगे वटवृक्ष है, जिसे कल्पवृक्ष कहते हैं। उसके नीचे बालमुकुन्द (वटपत्रशायी) के दर्शन हैं। वटवृक्षकी परिक्रमा की जाती है। वहाँसे आगे गणेशजीका मन्दिर है। इन्हें सिद्धगणेश कहते हैं। पासमें सर्वमङ्गलादेवी तथा अन्य देवीमन्दिर हैं।

श्रीजगन्नाथजीके निजमन्दिर-द्वारके सामने मुक्तिमण्डप है। इसे ब्रह्मासन कहते हैं। ब्रह्माजी पूर्वकालमें यज्ञके प्रधानाचार्य होकर यहीं विराजमान होते थे। इस मुक्तिमण्डपमें स्थानीय विद्वान् ब्राह्मणोंके बैठनेकी परिपाटी है।

मुक्तिमण्डपके पीछेकी ओर मुक्तनृसिंहका मन्दिर है। ये यहाँके क्षेत्रपाल हैं। इस मन्दिरके पास ही रोहिणीकुण्ड है। उसके समीप ही विमलादेवीका मन्दिर है। यह यहाँका शक्तिपीठ है। जैन लोग इस विग्रहका सरस्वती नामसे पूजन करते हैं।

यहाँसे आगे सरस्वतीजीका मन्दिर है। सरस्वती तथा लक्ष्मीजीके मन्दिरोंके बीचमें नीलमाधवजीका मन्दिर है। यहीं कूर्मबेढ़ामें श्रीजगन्नाथजीका एक अन्य छोटा मन्दिर है। समीप ही काञ्चीगणेशकी मूर्ति है। आगे भुवनेश्वरीदेवीका मन्दिर है। उत्कलके शाक्त आराधकोंकी ये आराध्या हैं।

वहाँसे आगे श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर है। इस मन्दिरमें श्रीलक्ष्मीजीकी मुख्यमूर्ति है। समीप ही श्रीशङ्कराचार्यजी तथा लक्ष्मी-नारायणकी मूर्तियाँ हैं। इसी मन्दिरके जगमोहनमें कथा तथा अन्य शास्त्रचर्चा होती है।

श्रीलक्ष्मीजीके मन्दिरके समीप सूर्यमन्दिर है। मन्दिरमें सूर्य, चन्द्र तथा इन्द्रकी छोटी-छोटी मूर्तियाँ हैं। कोणार्क-मन्दिरसे लायी हुई सूर्यभगवान्की प्रतिमा इसी मन्दिरमें गुप्त स्थानमें रखी है।

पास ही पातालेश्वर महादेवका सुन्दर मन्दिर है। इनका माहात्म्य बहुत माना जाता है। यहीं उत्तरामणि देवीकी मूर्ति है। यहाँसे पास ही ईशानेश्वर मन्दिर है। इनको श्रीजगन्नाथजीका मामा कहते हैं। इस लिङ्गविग्रहके सम्मुख जो नन्दीकी मूर्ति है, उससे गुप्तगङ्गाका प्रवाह निकला है। वहाँ नखसे आघात करनेपर जल निकल आता है।

यहाँसे आगे निजमन्दिरसे एक द्वार बाहर जाता है। इस द्वारको वैकुण्ठद्वार कहते हैं। वैकुण्ठद्वारके समीप वैकुण्ठेश्वर महादेवका मन्दिर है। यहाँ बगीचा-सा है। बारह वर्षपर जब श्रीजगन्नाजीका कलेवर-परिवर्तन होता है, तब पुराने विग्रहको यहीं समाधि दी जाती है।

जय-विजयद्वारमें जय-विजयकी मूर्तियाँ हैं। इनका दर्शन करके, इनसे अनुमति लेकर तब निजमन्दिरमें जाना उचित है। इसी द्वारके समीप श्रीजगन्नाथजीका भण्डारघर है।

निजमन्दिर—प्रायः मन्दिरकी परिक्रमा करके (थोड़ा परिक्रमांश शेष रहता है) यात्री निजमन्दिरके जगमोहनमें प्रवेश करता है। जगमोहनमें गरुड़स्तम्भ (भोगमण्डपमें) है। श्रीचैतन्यमहाप्रभु यहींसे श्रीजगन्नाथजीके दर्शन करते थे। वहाँ एक छोटा गड्ढा भूमिमें है। कहा जाता है कि वह गड्ढा महाप्रभुके आँसुओंसे भर जाया करता था। गरुड़स्तम्भको दाहिने करके तथा जय-विजय (भोगमण्डप) की मूर्तियोंको प्रणाम करके तब आगे निजमन्दिरमें जाना चाहिये।

निजमन्दिरमें १६ फुट लंबी, ४ फुट ऊँची वेदी है। इसे रत्नवेदी कहते हैं। वेदीके तीन ओर ३ फुट चौड़ी गली है, जिससे यात्री श्रीजगन्नाथजीकी परिक्रमा करते हैं। इस वेदीपर श्रीजगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलरामजीकी मुख्य मूर्तियाँ विराजमान हैं। श्रीजगन्नाथजीका श्यामवर्ण

है। वेदीपर एक ओर ६ फुट लंबा सुदर्शनचक्र प्रतिष्ठित है। यहीं नीलमाधव, लक्ष्मी तथा सरस्वतीकी छोटी मूर्तियाँ भी हैं।

श्रीजगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलरामजीकी मूर्तियाँ अपूर्ण हैं। उनके हाथ पूरे नहीं बने हैं। मुखमण्डल भी सम्पूर्ण निर्मित नहीं हैं। इसका कारण आगे कथामें सूचित किया गया है।

यात्री एक बार श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरमें भीतरतक जाकर चरणस्पर्श कर सकते हैं। जगमोहनमेंसे दर्शन तो प्रायः रात्रिमें पट बंद होनेके अतिरिक्त सभी समय होता है; किंतु यहाँकी सेवा-पद्धति कुछ ऐसी है कि यह निश्चित नहीं कि किस समय भोग लगेगा और कब सबके लिये भीतरतक जानेकी सुविधा प्राप्त होगी। प्रायः रात्रिमें ही यह सुविधा होती है। दिनमें भी एक समय यह सुविधा मिलती है, किंतु प्रतिदिन उसके मिलनेका निश्चय नहीं है।

विशेषोत्सव—वैशाखशुक्ला तृतीयासे ज्येष्ठ कृष्णा ८ तक २१ दिन चन्दनयात्रा होती है। इस समय मदनमोहन, राम-कृष्ण, लक्ष्मी-सरस्वती, पञ्चमहादेव (नीलकण्ठेश्वर, मार्कण्डेयेश्वर, लोकनाथ, कपालमोचन और जम्भेश्वर) के उत्सव-विग्रह चन्दनतालाबपर जाते हैं। वहाँ स्नान तथा नौका-विहार होता है।

ज्येष्ठशुक्ला एकादशीको रुक्मिणी-हरण-लीला मन्दिरमें होती है। ज्येष्ठपूर्णिमाको श्रीजगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलरामजीकी स्नानयात्रा होती है। ये श्रीविग्रह स्नानमण्डपमें जाते हैं। वहाँ उन्हें १०८ घड़ोंके जलसे स्नान कराया जाता है। स्नानके पश्चात् भगवान्का गणेश-वेशमें शृङ्गार होता है। कहा जाता है कि इस अवसरपर श्रीजगन्नाथजीने एक गणेशजीके भक्तको गणेशरूपमें दर्शन दिया था। इसके पश्चात् १५ दिन मन्दिर बंद रहता है।

आषाढ़शुक्ला द्वितीयाको श्रीजगन्नाथजीकी रथयात्रा होती है। यह पुरीका प्रधान महोत्सव है। तीन अत्यन्त विशाल रथ होते हैं। पहले रथपर श्रीबलरामजी, दूसरेपर सुभद्रा तथा सुदर्शनचक्र, तीसरेपर श्रीजगन्नाथजी विराजमान होते हैं। संध्यातक ये रथ गुंडीचामन्दिर पहुँच जाते हैं। दूसरे दिन भगवान् रथसे उतरकर मन्दिरमें पधारते हैं और सात दिन वहीं विराजमान रहते हैं। दशमीको वहाँसे रथपर लौटते हैं। इन नौ दिनोंके श्रीजगन्नाथजीके दर्शनको 'आड़पदर्शन' कहते हैं। इसका बहुत अधिक माहात्म्य माना जाता है।

श्रावणकी अमावस्याको जगन्नाथजीके सेवकोंका उत्सव होता है। श्रावणमें शुक्लपक्षकी दशमीसे झूलनयात्रा होती है। जन्माष्टमीको जन्मोत्सव, भाद्रकृष्णा ११ को कालियदमन, भाद्रशुक्ला ११ को पार्श्वपरिवर्तनोत्सव, वामनद्वादशी, आश्विनपूर्णिमाको सुदर्शनविजयोत्सव तथा नवरात्रमें विमलादेवीके उत्सव—इस प्रकार मन्दिरमें प्रायः सभी पर्वोंपर महोत्सव होते ही रहते हैं।

कथा—द्वापरमें द्वारिकामें श्रीकृष्णचन्द्रकी पटरानियोंने एक बार माता रोहिणीजीके भवनमें जाकर उनसे आग्रह किया कि वे उन्हें श्यामसुन्दरकी व्रज-लीलाके गोपी-प्रेम-प्रसङ्गको सुनायें। माताने इस बातको टालनेका बहुत प्रयत्न किया; किंतु पटरानियोंके आग्रहके कारण उन्हें वह वर्णन सुनानेको प्रस्तुत होना पड़ा। उचित नहीं था कि सुभद्राजी भी वहाँ रहें। अतः माता रोहिणीने सुभद्राजीको भवनके द्वारके बाहर खड़े रहनेको कहा और आदेश दे दिया कि वे किसीको भीतर न आने दें। संयोगवश उसी समय श्रीकृष्ण-बलराम वहाँ पधारे। सुभद्राजीने दोनों भाइयोंके मध्यमें खड़े होकर अपने दोनों हाथ फैलाकर दोनोंको भीतर जानेसे रोक दिया। बंद द्वारके भीतर जो व्रजप्रेमकी वार्ता हो रही थी, उसे द्वारके बाहरसे ही यत्किंचित् सुनकर तीनोंके ही शरीर द्रवित होने लगे। उसी समय देवर्षि नारद वहाँ आ गये। देवर्षिने यह जो प्रेम-द्रवित रूप देखा तो प्रार्थना की—'आप तीनों इसी रूपमें विराजमान हों।' श्रीकृष्णचन्द्रने स्वीकार किया—'कलियुगमें दारुविग्रहमें इसी रूपमें हम तीनों स्थित होंगे।'

प्राचीन कालमें मालवदेशके नरेश इन्द्रद्युम्नको पता लगा कि उत्कलप्रदेशमें कहीं नीलाचलपर भगवान् नीलमाधवका देवपूजित श्रीविग्रह है। वे परम विष्णुभक्त उस श्रीविग्रहका दर्शन करनेके प्रयत्नमें लगे। उन्हें स्थानका पता लग गया; किंतु वे वहाँ पहुँचे इसके पूर्व ही देवता उस श्रीविग्रहको लेकर अपने लोकमें चले गये थे। उसी समय आकाशवाणी हुई कि दारुब्रह्मरूपमें तुम्हें अब श्रीजगन्नाथके दर्शन होंगे।

महाराज इन्द्रद्युम्न सपरिवार आये थे। वे नीलाचलके पास ही बस गये। एक दिन समुद्रमें एक बहुत बड़ा

काष्ठ (महादारु) बहकर आया। राजाने उसे निकलवा लिया। इससे विष्णुमूर्ति बनवानेका उन्होंने निश्चय किया। उसी समय वृद्ध बढ़ईके रूपमें विश्वकर्मा उपस्थित हुए। उन्होंने मूर्ति बनाना स्वीकार किया; किंतु यह निश्चय करा लिया कि जबतक वे सूचित न करें, उनका वह गृह खोला न जाय जिसमें वे मूर्ति बनायेंगे।

महादारुको लेकर वे वृद्ध बढ़ई गुंडीचामन्दिरके स्थानपर भवनमें बंद हो गये। अनेक दिन व्यतीत हो गये। महारानीने आग्रह प्रारम्भ किया—'इतने दिनोंमें वह वृद्ध मूर्तिकार अवश्य भूख-प्याससे मर गया होगा या मरणासन्न होगा। भवनका द्वार खोलकर उसकी अवस्था देख लेनी चाहिये।' महाराजने द्वार खुलवाया। बढ़ई तो अदृश्य हो चुका था; किन्तु वहाँ श्रीजगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलरामजीकी असम्पूर्ण प्रतिमाएँ मिलीं। राजाको बड़ा दुःख हुआ मूर्तियोंके सम्पूर्ण न होनेसे, किंतु उसी समय आकाशवाणी हुई—'चिन्ता मत करो! इसी रूपमें रहनेकी हमारी इच्छा है। मूर्तियोंपर पवित्र द्रव्य (रंग आदि) चढ़ाकर उन्हें प्रतिष्ठित कर दो!' इस आकाशवाणीके अनुसार वे ही मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हुईं। गुंडीचामन्दिरके पास मूर्ति-निर्माण हुआ था, अतः गुंडीचामन्दिरको ब्रह्मलोक या जनकपुर कहते हैं।

द्वारिकामें एक बार श्रीसुभद्राजीने नगर देखना चाहा। श्रीकृष्ण तथा बलरामजी उन्हें पृथक् रथमें बैठाकर, अपने रथोंके मध्यमें उनका रथ करके उन्हें नगर-दर्शन कराने ले गये। इसी घटनाके स्मारक-रूपमें यहाँ रथयात्रा निकलती है।

उत्कलमें 'दुर्गा-माधव-पूजा' एक विशेष पद्धति ही है। अन्य किसी प्रान्तमें ऐसी पद्धति नहीं है। इसी पद्धतिके अनुसार श्रीजगन्नाथजीको भोग लगा नैवेद्य विमलादेवीको भोग लगता है और तब वह महाप्रसाद माना जाता है।

पुरीधामके अन्य मन्दिर

१. गुंडीचामन्दिर—श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरके सम्मुखसे जो मुख्य मार्ग जाता है, उसीसे लगभग डेढ़ मीलपर यह स्थान है। थोड़ा घूमकर जानेसे इस मार्गमें मार्कण्डेय-सरोवर और चन्दनतालाब पड़ते हैं। मार्कण्डेय-सरोवरके पास मार्कण्डेयेश्वर-मन्दिर है। गुंडीचामन्दिरमें रथयात्राके समय श्रीजगन्नाथजी विराजमान होते हैं। शेष समय मन्दिरमें कोई मूर्ति नहीं रहती। केवल निज मन्दिरके सभाभवनके अगले भागमें लक्ष्मीजीकी मूर्ति रहती है।

गुंडीचामन्दिरके समीप उत्तर-पूर्व कोणमें इन्द्रद्युम्न सरोवर है। गुंडीचामन्दिरके पीछे ही सिद्ध हनुमान्‌जीका प्राचीन मन्दिर है।

२. कपालमोचन—यह तीर्थ श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरके दक्षिण-पश्चिम कोणमें है।

३. एमारमठ—श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरके सिंहद्वारके सामने ही है। श्रीरामानुजाचार्यजीका एक नाम 'एम्बाडीयम्' था। इसी नामपर इस मठका नाम पड़ा है। श्रीरामानुजाचार्य यहाँ कुछ समय रहे थे। उनके आराध्य गोपालजीका श्रीविग्रह यहाँ है।

४. गम्भीरामठ (श्रीराधाकान्तमठ)—श्रीजगन्नाथ-मन्दिरसे स्वर्गद्वार (समुद्र) जानेवाले मार्गमें एक गलीसे इसमें जाना पड़ता है। श्रीचैतन्यमहाप्रभु यहाँ १८ वर्ष रहे थे। यह श्रीकाशीमिश्रका भवन था। महाप्रभुके रहनेपर यह गम्भीरा-मन्दिर कहा जाने लगा और अब श्रीराधाकान्तमठ कहा जाता है। इसमें प्रवेश करते ही श्रीराधाकान्त-मन्दिर मिलता है। उसमें श्रीराधा-कृष्णकी मनोहर मूर्ति है। भीतर जाकर गम्भीरा-मन्दिर है। जिस कोठरीमें महाप्रभु १८ वर्ष महान् विरहकी उन्माद अवस्थामें रहे, उसमें उनका चित्र, चरणपादुका, करवा, गुदड़ी, माला आदि सुरक्षित हैं।

५. सिद्धबकुल—श्रीराधाकान्तमठवाली गलीसे निकलकर कुछ आगे जानेपर एक गलीमें यह स्थान मिलता है। यह श्रीहरिदासजीकी भजनस्थली है। यहाँ पहले छाया नहीं थी। श्रीचैतन्यमहाप्रभुने यहाँ बकुल (मौलिश्री) की दातौन गाड़ दी। कालान्तरमें वह दातौन वृक्ष बन गयी। यह वृक्ष और इसकी डालेंतक खोखली हैं।

६. समुद्रके मार्गमें ही आगे श्वेतगङ्गा सरोवर मिलता है। वहीं श्वेतकेशव-मन्दिर है। श्रीजगन्नाथजीके साथ ही इस मन्दिरकी मूर्तिका भी कलेवर-परिवर्तन होता है। यहीं श्रीचैतन्यमहाप्रभुके प्रेमपात्र श्रीवासुदेव सार्वभौमका आवासस्थान है।

७. गोवर्धनपीठ (शङ्कराचार्यमठ)—समुद्रको जानेवाले इसी मार्गमें आगे दाहिनी ओर एक मार्ग श्रीशङ्कराचार्यजीके गोवर्धनमठको जाता है। आद्य शङ्कराचार्यजीके प्रधान चार पीठोंमेंसे यह एक है। यहाँ श्रीशङ्कराचार्यजीकी मूर्ति
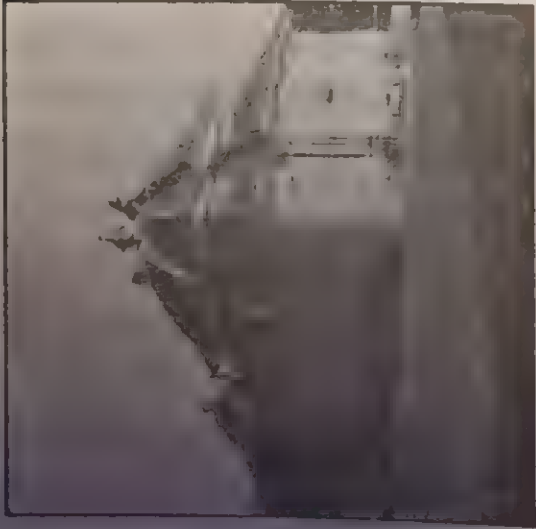
श्रीजगन्नाथपुरीकी एक झलक

गुण्डीचा-मन्दिर

श्रीजगन्नाथ-मन्दिर, सिंहद्वारके बाहरसे

श्रीमहाप्रभुकी पादुका, कमण्डलु आदि
(गम्भीरामठ)
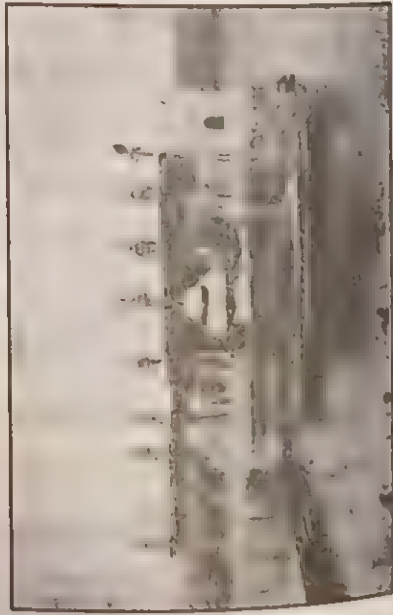
चन्दन-सरोवर

तीर्थराज (इन्द्रद्युम्न-सरोवर)
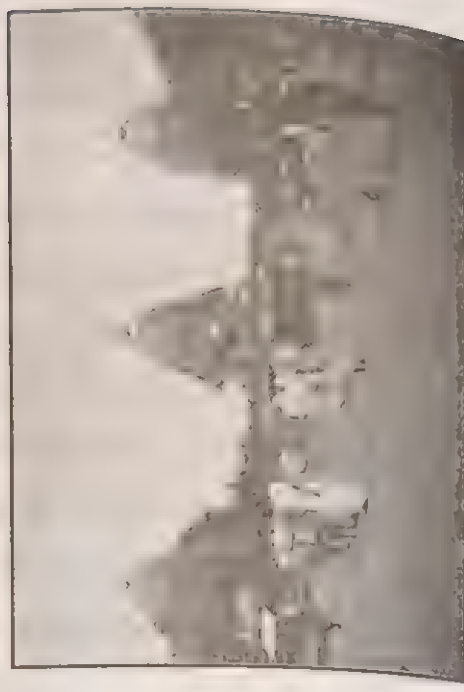
श्रीजगन्नाथजीकी रथयात्रा
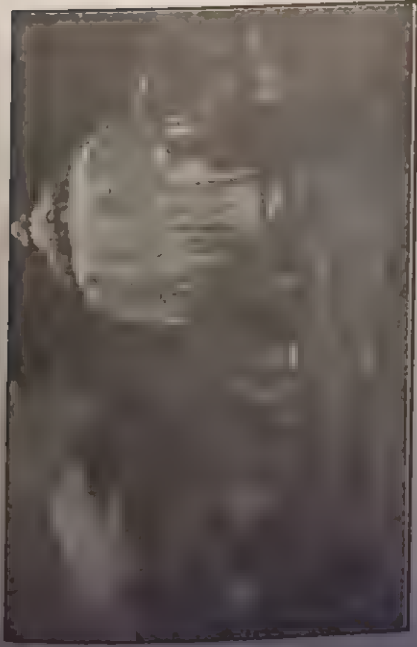
पुरीके आस-पास

श्रीलोकनाथ

सिद्ध बकुल
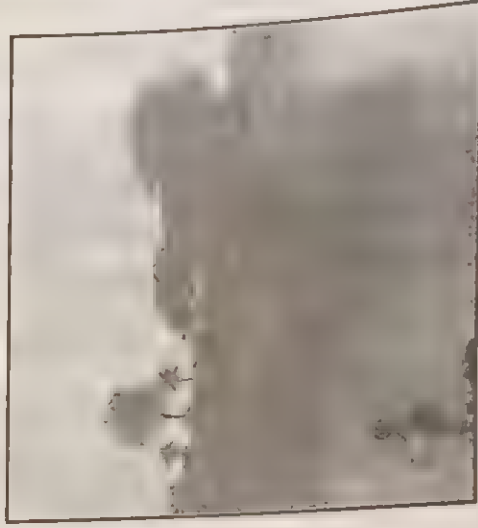
श्रीशङ्कराचार्य-मठ (गोवर्धनपीठ)

आड़प-मण्डप, जनकपुरी

प्राची सरस्वती
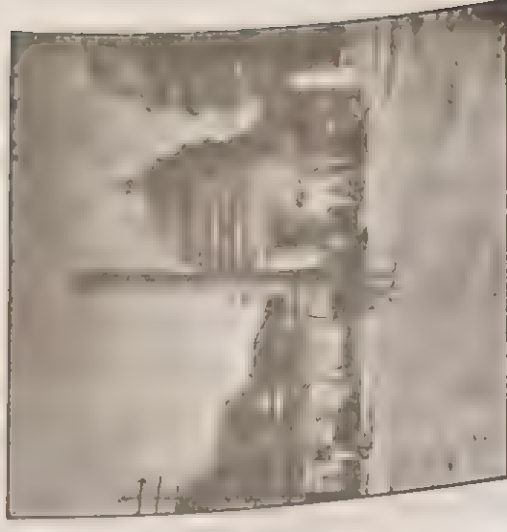
श्रीसाखीगोपाल-मन्दिर

तथा कई भगवद्‌विग्रह मन्दिरमें हैं।

इसके अतिरिक्त श्रीराधाकान्तमठके समीप एक शङ्करानन्दमठ है। श्रीमद्भागवतके टीकाकार श्रीधरस्वामी इसी स्थानमें रहते थे।

८. **कबीरमठ**—समुद्रतटपर स्वर्गद्वारके पास यह स्थान है। यहाँ पातालगङ्गा नामका एक कूप है। यहाँ कबीरदासजी स्वयं आकर कुछ दिन रहे थे।

९. **हरिदासजीकी समाधि**—स्वर्गद्वारसे दाहिनी ओर जानेवाले मार्गसे चलनेपर लगभग आध मील दूर हरिदासजीका समाधि-मन्दिर मिलता है। श्रीचैतन्यमहाप्रभुने अपने हाथों स्वामी हरिदासजीके शरीरको समाधि दी थी।

१०. **तोटा गोपीनाथ**—हरिदासजीकी समाधिके आगे लगभग एक मीलपर यह मन्दिर है। यहीं रेतका वह टीला है, जिसे चटकगिरि कहते हैं और जिसमें महाप्रभुको गिरिराज गोवर्धनके और निकटवर्ती समुद्रमें कालिन्दीके दर्शन हुए थे। श्रीगौराङ्ग महाप्रभुको इस चटकगिरिकी रेतमें ही श्रीगोपीनाथजीकी मूर्ति मिली थी। श्रीरसिकानन्दजी गोस्वामी इस विग्रहकी अर्चना करते थे। कहा जाता है कि यह मूर्ति पहले खड़ी थी। प्रतिमा पर्याप्त ऊँची होनेसे भगवान्‌के मस्तकपर पाग नहीं बाँधी जा पाती थी। इससे जब भावुक आराधकको खेद हुआ, तब श्रीगोपीनाथजी बैठ गये। श्रीचैतन्यमहाप्रभु इसी मूर्तिमें लीन हुए, यह मान्यता भी बहुत-से भक्तोंकी है। मूर्तिमें एक स्वर्णिम रेखा है, जिसे महाप्रभुके लीन होनेका चिह्न कहा जाता है।

११. **लोकनाथ**—तोटा गोपीनाथसे लगभग आध मील आगे नगरसे बाहर वन्य प्रदेशमें एक घेरेके भीतर श्रीलोकनाथ महादेवका मन्दिर है। श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरसे एक सड़क यहाँतक आयी है। उस मार्गसे यह स्थान लगभग ढाई मील है। मन्दिरके पास ही सरोवर है। उसे हर-पार्वतीसर या शिवगङ्गा-सरोवर भी कहते हैं। मन्दिरमें शिवलिङ्गके पाससे बराबर जल निकलता रहता है। श्रीलोकनाथलिङ्ग जलमें डूबा रहता है। जलके ऊपर ही पूजा-सामग्री चढ़ायी जाती है। केवल महाशिवरात्रिके दिन जब सब जल उलीचकर निकाल दिया जाता है, तब कुछ समयतक श्रीलोकनाथजीके दर्शन हो पाते हैं।

१२. **श्रीजगन्नाथ**-मन्दिरसे लोकनाथ जानेवाले मार्गमें श्रीमाधवेन्द्रपुरीका कूप है। यहाँ श्रीमाधवेन्द्रपुरीजी तथा श्रीचैतन्यमहाप्रभुका सत्सङ्ग हुआ था।

१३. **बेड़ी-हनुमान्**—पुरी रेलवे-स्टेशनसे समुद्रतटकी ओर जानेपर लगभग आध मील दूर श्रीहनुमान्‌जीका मन्दिर मिलता है। मन्दिर ऊँचे चबूतरेपर है। यहाँ श्रीहनुमान्‌जीके पैरोंमें बेड़ी पड़ी है। समुद्र पुरीकी सीमामें न बढ़ आये, इसके लिये भगवान्‌ने यहाँ हनुमान्‌जीको नियुक्त किया था, किंतु एक बार हनुमान्‌जी श्रीरामनवमी-महोत्सव देखने अयोध्या चले गये। इसपर भगवान्‌ने उनके पैरोंमें बेड़ी डाल दी, जिससे वे फिर कहीं न जा सकें।

१४. **चक्रतीर्थ और चक्रनारायण**—बेड़ी-हनुमान्-मन्दिरके सामने ही समुद्रतटपर चक्रनारायण-मन्दिर है। कुछ सीढ़ियाँ चढ़नेपर मन्दिरमें भगवान्‌के दर्शन होते हैं। मन्दिर प्राचीन है, किन्तु अब जीर्ण होता जा रहा है। इस मन्दिरके पीछे समुद्र-किनारे चक्रतीर्थ है। उसमें समुद्रका ही जल भरा रहता है। जिस महादारुसे श्रीजगन्नाथजीका श्रीविग्रह बना, वह यहीं आकर समुद्र-किनारे लगा था।

१५. **सोनार गौराङ्ग**—यह मन्दिर बेड़ी-हनुमान्-मन्दिरके समीप ही है। इसमें श्रीगौराङ्ग महाप्रभुकी अत्यन्त सुन्दर स्वर्णनिर्मित मूर्ति है।

१६. **कानवत हनुमान्**—यह हनुमान्‌जीका मन्दिर श्रीजगन्नाथ-मन्दिरसे आध मील दूर है। समुद्रकी गर्जन-ध्वनिसे सुभद्राजीकी निद्रा भङ्ग होती थी। इसलिये यहाँ हनुमान्‌जीकी नियुक्ति हुई। हनुमान्‌जी कान लगाये सुनते रहते हैं कि समुद्रकी ध्वनि यहाँतक आती तो नहीं है।

इनके अतिरिक्त पुरीमें सुदामापुरी, पापुड़ियामठमें नृसिंहमन्दिर, नीलकण्ठेश्वर, हरचंदसाही मुहल्लेमें—यमेश्वर, मृत्युञ्जय, विश्वेश्वर, बिल्वेश्वर तथा श्वेतमाधव एवं भास्करकूप—ये मन्दिर एवं तीर्थ दर्शनीय हैं। हरचंदसाही मुहल्लेमें पवित्र मणिकर्णिका-तीर्थ है।

यहाँ श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक बड़े मार्गपर है। उसे महाप्रभुजीकी बैठक कहते हैं। श्रीवल्लभाचार्यके यहाँ पधारनेपर उनका यह स्थान बना था।

गुरु नानकदेवजी भी यहाँ पधारे थे। जगन्नाथमन्दिरके सिंहद्वारके सामने ही उनका स्थान है। उसे नानकमठ कहते हैं। पुरीमें श्रीरामानन्द-सम्प्रदायके कई स्थान हैं। उनमें 'छोटा छत्ता' स्थानमें साधु-सेवा होती है। निम्बार्क-

सम्प्रदाय तथा गौड़ीय सम्प्रदायके भी कई मठ हैं।

उत्कलभाषामें श्रीजगन्नाथदासजीके श्रीमद्भागवतके पद्यानुवादका वैसा ही सम्मान है, जैसे हिंदीमें श्रीरामचरितमानसका। इन महात्माका स्थान भी पुरीमें ही है। उसे जगन्नाथदास-आश्रम कहते हैं। उनकी साधनस्थलीकी गुफा भी है।

महाप्रभु श्रीचैतन्यदेवके अतिशय प्रेमपात्र श्रीरायरामानन्दजीका स्थान आज जगन्नाथवल्लभ-मठ कहा जाता है। यह बड़े मार्गपर ही है।

बालासाही मुहल्लेमें भग्न राजभवनोंके पास श्यामाकालीका मन्दिर है। ये यहाँके नरेशोंकी आराध्यदेवी रही हैं।

नरेन्द्रसरोवर (चन्दन-तालाब) के समीप महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामीका समाधि-मन्दिर है। वहीं एक आश्रम तथा शिव-मन्दिर भी है।

बड़दाँडमें महात्मा सालबेगकी समाधि है। यवन हरिदासजीके समान मुसलमान होनेपर भी ये परम वैष्णव भक्त हुए हैं।

पुरीके आसपास पञ्चमुनि-आश्रम माने जाते हैं। उनमेंसे पुरीके दोलमण्डपसाहीमें अङ्गिरा-आश्रम, मार्कण्डेयसरोवरपर मार्कण्डेय-आश्रम, बालीसाही मुहल्लेमें भृगु-आश्रम, हरचंदसाही मुहल्लेमें यमेश्वर-मन्दिरके पास कण्ड्वाश्रम—ये चार पुरीमें हैं और भद्राचलाश्रम खुर्दारोड स्टेशनसे मोटरद्वारा दसपल्ला जाकर वहाँसे २५ मील जानेपर पर्वतोंके मध्य है।

अच्युतानन्दजीका साधनस्थल ब्रह्मगोपालतीर्थ स्टेशनरोडपर है। आज जिसे 'पापुड़ियामठ' कहते हैं, वहाँ महर्षि पिप्पलायनका आश्रम था। महर्षिद्वारा पूजित नृसिंहभगवान्‌की श्रीमूर्ति वहाँ है।

पुरुषोत्तमक्षेत्रको शङ्खक्षेत्र कहते हैं; क्योंकि उसका आकार शङ्खके समान है। इस शङ्खाकारके पश्चिमभागमें वृषभध्वज, पूर्वभागमें नीलकण्ठ, मध्यभागमें कपालमोचन तथा अर्द्धासनीदेवी स्थित हैं। यहाँ आठ देवीपीठ हैं। वट (श्रीजगन्नाथ-मन्दिरमें) के मूलमें मङ्गलादेवी, पश्चिममें विमलादेवी, शङ्खाकारके पृष्ठभागमें सर्वमङ्गलादेवी, पूर्वमें मरीचि, पश्चिममें चण्डिका, उत्तरमें अर्द्धासनी तथा लम्बा एवं दक्षिणमें कालरात्रि स्थित हैं। इसी प्रकार वटेश्वर (वटमूलमें), कपालमोचन, क्षेत्रपाल, यमेश्वर, मार्कण्डेयेश्वर, ईशान, बिल्वेश तथा नीलकण्ठ—इन आठ रूपोंमें यहाँ शङ्करजी भी स्थित हैं।

कपोतेश्वर

पुरीसे सात मीलपर भार्गवी नदीके किनारे यह मन्दिर है। यहाँ माघ शुक्ला १२ को मेला लगता है।

यहाँ शङ्करजीने ही मायासे कपोतरूप धारण करके तपस्या की थी। भगवान् विष्णुके आदेशसे यहाँ कपोतेश्वरलिङ्गकी स्थापना हुई।

अलालनाथ

(लेखक—पं० श्रीशरच्चन्द्रजी महापात्र बी०ए०)

इस स्थानका शुद्ध नाम अन्नवरनाथ है। पुरीसे यह स्थान १४ मील है। पैदल या बैलगाड़ीका मार्ग है।

अलालनाथमें श्रीजनार्दनका मन्दिर है। यह स्थान ब्रह्मगिरिपर माना जाता है। श्रीरामानुजाचार्य जब पुरी आये थे, तब यहाँ भी गये थे। श्रीचैतन्यमहाप्रभुने यहाँ एक शिलापर श्रीजनार्दनको साष्टाङ्ग प्रणिपात किया था। उस शिलापर महाप्रभुके सर्वाङ्ग-प्रणिपात करते समयका चिह्न है। वह शिला गौड़ीय भक्तोंके लिये परम पवित्र है। महाप्रभु यहाँ पुरीसे तीन बार आये थे।

यहाँकी कथा है कि श्रीजनार्दनने पुजारीके भोले भावुक बालकके हाथसे प्रत्यक्ष खीरका प्रसाद ग्रहण किया था। इससे यहाँ खीरके प्रसादका माहात्म्य अधिक है।

प्राची

(लेखक—अध्यापक श्रीकान्हूचरणजी मिश्र एम० ए०)

पुरीसे ३९ मील दूर काकटपुर ग्राम है। यहाँ प्राची नदीके तटपर मङ्गलादेवीका मन्दिर है। यह मन्दिर विशाल है और इधर सम्मानित शक्तिपीठ माना जाता है। यहाँ मन्दिरमें देवीका 'वीणा' यन्त्र है, जो गुप्त रखा जाता है। यह शक्तिपीठ श्रीजगन्नाथ-मन्दिरके अङ्गभूत शक्तिपीठोंमें है। आश्विन-नवरात्रमें यहाँ विशेष महोत्सव होता है और चैत्र-नवरात्रमें यहाँके सेवायत अग्निपर चलते हैं।

मङ्गलादेवीके मन्दिरके सामने प्राचीके दूसरे तटपर महर्षि विश्वामित्रका आश्रम है।

प्राची अत्यन्त पवित्र नदी है। पुराणोंमें इसका विपुल माहात्म्य वर्णित है। यह गङ्गाजीके समान मानी जाती है। इसका पूरा नाम प्राची सरस्वती है। प्राचीके तटपर अनेक मन्दिरों एवं नगरोंके ध्वंसावशेष दीखते हैं। पुराणोंमें प्राचीतटवर्ती बहुत-से तीर्थों तथा मन्दिरोंका वर्णन आता है; किंतु अब उनमेंसे अधिकांश लुप्त हो गये हैं।

साक्षीगोपाल

(लेखक—पं० श्रीकृष्णमोहनजी मिश्र)

खुर्दा-रोडसे पुरी जानेवाली लाइनपर खुर्दा-रोडसे १८ मील (पुरीसे १० मील) दूर साखीगोपाल स्टेशन है। पुरी या भुवनेश्वरसे मोटर-बस भी आती है। स्टेशनसे मन्दिर आध मील है। मन्दिरके पास धर्मशाला है। पुरीधामकी यात्राका साक्षी यहाँ गोपालजीको माना जाता है, इसलिये यात्री प्राय: पुरीकी यात्रा करके तब यहाँ आते हैं।

मन्दिरके समीप ही चन्दनतालाब है। उसमें स्नान करके तब गोपालजीका दर्शन करते हैं। मन्दिरके द्वारके बाहर गरुड़स्तम्भ है। मन्दिरके दोनों ओर राधाकुण्ड और श्यामकुण्ड नामके सरोवर हैं। मुख्य मन्दिरमें श्रीगोपालजीकी बहुत मनोहर मूर्ति है। समीप ही श्रीराधिकाजीका मन्दिर है।

कथा—एक वृद्ध ब्राह्मण तीर्थ-यात्राको जाने लगे तो एक युवक ब्राह्मण-कुमार भी उनके साथ हो गया। उस समय यात्रा पैदल होती थी। युवकने वृद्ध ब्राह्मणकी बड़े परिश्रमसे सेवा की। उसकी सेवासे प्रसन्न होकर वृन्दावन पहुँचनेपर गोपालजीके मन्दिरमें वृद्धने कहा—'यात्रासे लौटकर मैं अपनी कन्याका तुमसे विवाह कर दूँगा।'

यात्रासे दोनों लौटे। युवक कंगाल था और वृद्ध धनी थे। वृद्ध ब्राह्मणके पुत्रोंने युवकके साथ अपनी बहिन ब्याहना स्वीकार नहीं किया। युवकका अपमान भी हुआ। उसने पंचायत एकत्र की तो पंचोंने कहा—'किसके सामने इन्होंने तुम्हें कन्या देनेको कहा था? साक्षी ले आओ।' युवकमें दृढ़ भगवद्विश्वास था। उसने कहा—'गोपालजीके सामने कहा था।' किन्तु पंच तो प्रत्यक्ष साक्षी चाहते थे। युवक वृन्दावन गया और उसने रोकर गोपालजीसे प्रार्थना की। गोपालजी सदाके भक्तवत्सल हैं, वे बोले—'तुम चलो, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चलता हूँ। मेरी नूपुरध्वनि तुम्हें सुनायी देती रहेगी; किन्तु जहाँ तुम पीछे देखोगे, मैं वहीं खड़ा हो जाऊँगा।'

फुलअलसा नामक स्थानपर भगवान्‌के श्रीचरण रेतमें डूबे, नूपुरध्वनि बंद हुई और ब्राह्मणने पीछे देखा। गोपालजी वहीं खड़े हो गये, किन्तु ब्राह्मण युवकका काम हो गया। गोपालजीका श्रीविग्रह जिसके लिये पैरों चलकर इतनी दूर आया, उसे कन्या देना किसीके लिये भी परम सौभाग्यकी बात थी। उससे साक्षी अब कौन माँगता।

गोपालजीका वह श्रीविग्रह कटकके नरेश अपनी एक विजय-यात्रामें पुरी ले आये और वहाँ श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरमें स्थापित कर दिया; किन्तु जगन्नाथजीको जानेवाला सब नैवेद्य गोपालजी पहले ही भोग लगा लेते थे। श्रीजगन्नाथजीने स्वप्न दिया। फलतः जहाँ मन्दिरमें गोपालजी विराजमान थे, वहाँ तो सत्यनारायणभगवान्‌की मूर्ति जगन्नाथजीके मन्दिरमें स्थापित हुई और श्रीगोपालजी

पुरीसे दस मील दूर इस मन्दिरमें पधराये गये।

यहाँ श्रीराधिकाजीके बिना अकेले गोपालजीका मन लगता नहीं था। स्वयं श्रीवृषभानुकुमारी अपने एक अंशसे गोपालजीके पुजारी श्रीबिल्वेश्वर महापात्रके यहाँ कन्यारूपमें अवतीर्ण हुईं। कन्याका नाम 'लक्ष्मी' रखा गया। कन्याके युवती होनेपर अद्भुत घटनाएँ होने लगीं। कभी गोपालजीकी माला रात्रिमें उस कन्या लक्ष्मीकी शय्यापर मिलती और कभी लक्ष्मीके वस्त्र या आभूषण गोपालजीका बंद मन्दिर प्रातःकाल खोला जाता तो मन्दिरके भीतर मिलते। यह घटना प्रतिदिन होने लगी। बात इतनी फैली कि नरेशतक पहुँची। अन्तमें विद्वानोंने सम्मति दी कि गोपालजीके मन्दिरमें श्रीराधाजीके मूर्ति स्थापित होनी चाहिये।

राजाके आदेशसे मूर्तिका निर्माण प्रारम्भ हुआ। मूर्ति बन गयी और उसकी स्थापनाका दिन आया। मूर्तिकी ठीक प्रतिष्ठाके समय पुजारीकी कन्या लक्ष्मीका देहावसान हो गया। मूर्तिको लोगोंने देखा तो कारीगरोंके हाथसे जो श्रीराधाकी मूर्ति बनी थी, वह ठीक लक्ष्मीकी ही मूर्तिके अनुरूप हो गयी थी। कार्तिक शुक्ला नवमीको इस प्रतिमाका चरण-दर्शन-महोत्सव होता है।

वालुकेश्वर

(लेखक—श्रीनीलकण्ठ बाहिनीपति)

साक्षीगोपालसे तीन मीलतक वराल नामक स्थानमें वालुकेश्वर शिव-मन्दिर है। यह स्वयम्भूलिङ्ग है। राजा कुशध्वजने यहाँ भगवान् शङ्करकी आराधना की थी। समीप ही भस्मस्थल नामका एक स्थान है। वहाँ अनेकों वर्षोंसे भूमिसे उत्तम भस्म निकलती है। यही भस्म श्रीवालुकेश्वरजीको लगायी जाती है। यात्री इस भस्मको अपने यहाँ ले जाते हैं।

चण्डेश्वर

(लेखक—पं० श्रीमृत्युञ्जयजी महापात्र)

खुर्दारोडसे २७ मीलपर कालुपाड़ाघाट स्टेशन है। वहाँसे बैलगाड़ीद्वारा या पैदल चण्डेश्वर ग्राम जाना पड़ता है। यहाँ चण्डीहर-तीर्थ तथा चण्डेश्वर शिव-मन्दिर हैं। यह मन्दिर बहुत प्राचीन है। कार्तिकी पूर्णिमाको यहाँ महोत्सव होता है।

बाणपुर

खुर्दारोडसे ४४ मीलपर बालुगाँ स्टेशन है। स्टेशनसे ४ मीलपर बाणपुर बाजार है। बाजारतक बस जाती है। धर्मशाला है। कहा जाता है कि बाणासुरने इस स्थानपर यज्ञ किया था। यहाँ बाणासुरके द्वारा स्थापित शक्तिपीठ है। घंटशिला नामक देवीका भव्य मन्दिर है। यहाँ देवीकी मूर्ति नहीं है। उनका श्रीविग्रह केवल स्तम्भाकार है। यहाँका दक्षप्रजापति-मन्दिर प्राचीन है। उसमें दक्षेश्वर-शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित है।

निर्मलझर

बालुगाँसे ११ मीलपर कल्लीकोट स्टेशन है। स्टेशनसे कुछ दूर पर्वतमें एक झरना है, जिसे निर्मलझर कहते हैं। यहाँ नारायणी देवीका मन्दिर है। उत्कलके शाक्त विद्वान् इसे सिद्धपीठ मानते हैं।

ब्रह्मपुर

खुर्दारोडसे ९२ मीलपर ब्रह्मपुर (गंजम) स्टेशन है। ब्रह्मपुर अच्छा नगर है। नगरके मध्यमें ठाकुराणीजीका सुन्दर मन्दिर है। चैत्र नवरात्रमें यहाँ महोत्सव होता है।

पुरुषोत्तमपुर

ब्रह्मपुरसे मोटर-बसद्वारा पुरुषोत्तमपुर जाना पड़ता है। यहाँ एक पर्वतपर ३२७ सीढ़ी चढ़नेपर तारातरिणी देवीका मन्दिर मिलता है। दक्षिण उड़ीसाका यह मुख्य मन्दिर है।

बुद्धखोल

ब्रह्मपुरसे मोटर-बसद्वारा बुगुडा जाकर ३ मील पैदल चलना पड़ता है। यहाँ पद्मपाणि बुद्ध-मन्दिर है। बाबा रामदासजीका विरञ्चि-नारायण-मठ यहाँ है। अक्षयतृतीयाको यहाँ मेला लगता है।

महेन्द्रगिरि

यह गंजम जिलेमें है तथा मद्रास-कलकत्ता रेलवे-लाइनपर मंडासारोड (Mandasa Road) रेलवे स्टेशनसे २० मील पश्चिम-उत्तरकी ओर है। यह स्थान समुद्रसे केवल १६ मीलकी दूरीपर है और ऊपरसे स्पष्ट दीख पड़ता है। यह पर्वत समुद्रके धरातलसे लगभग ५ हजार फुट ऊँचा है। इसका वर्णन रामायण, महाभारत तथा अधिकांश पुराणों एवं काव्योंमें आता है। पुराणोंमें इसका नाम कुलपर्वतोंमें सर्वप्रथम आया है—

महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षवांस्तथा।
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वताः॥

(विष्णु० कूर्म० ब्रह्मपु०)

कालिदासने रघुके दिग्विजय-प्रसङ्गमें इसका उल्लेख किया है। इसपर भीमका मन्दिर देखने ही योग्य है। यहाँ पर्वतकी पूर्वी ढालपर युधिष्ठिरका मन्दिर बड़ा ही आकर्षक है। थोड़ी दूर और पूर्व जानेपर कुन्तीका मन्दिर मिलता है। इसके चारों ओर सघन निकुञ्ज हैं। प्रवेशमार्गके ओसारेपर नवग्रहोंके चित्र बने हैं। इस मन्दिरको गोकर्णेश्वर-मन्दिर भी कहा जाता है। यह पर्वत परशुरामजीके आवास-स्थलरूपमें प्रसिद्ध है।

मुखलिङ्गम्

नौपाड़ासे १७ मील आगे तिलरू स्टेशन है। वहाँसे मोटर-बसद्वारा १२ मील जाना पड़ता है। मुखलिङ्गम् साधारण बाजार है। यहाँ एक घेरेके भीतर भगवान् शङ्करका मन्दिर है। उसमें जो लिङ्गमूर्ति है, वह खोखली है। उसमें भीतर हाथ जा सकता है। मन्दिरके अष्टकोणोंपर दिक्पालोंके नामसे सम्बन्धित लिङ्गविग्रह हैं। पार्वतीजीका भी एक मन्दिर है। आस-पास कई अन्य छोटे मन्दिर हैं।

यहाँ एक शिवभक्त हो गये हैं। उनकी दो पत्नियोंमें भी एक शिवभक्ता थीं। घरमें केतकीका वृक्ष था, उसके पुष्पोंसे वे भगवान् शङ्करका पूजन करती थीं। सपत्नीने द्वेषवश वृक्ष काट दिया। वृक्ष-मूलसे रक्त निकला। वहाँ शिवलिङ्ग था, उसके भीतरसे वह वृक्ष निकला था। लिङ्गका ऊपरी भाग खुला होनेसे यह मुखलिङ्गम् कहा जाता है।

मध्यभारतकी यात्रा

इस भागमें भारतका पूरा ही मध्यभाग ले लिया गया है। राजस्थान, मध्यभारत, मध्यप्रदेश तथा हैदराबाद क्षेत्रके मराठी भाषा-भाषी प्रदेशोंके तीर्थोंका विवरण इस भागमें आया है। इसलिये यह भाग विस्तारकी दृष्टिसे बहुत बड़ा है। इसमें अनेकों विविधताएँ हैं। राजस्थानी, हिंदी और मराठी—इस क्षेत्रकी मुख्य भाषाएँ हैं। इनमें राजस्थानी भी हिंदीका ही एक रूपान्तर है। प्रायः पूरे मराठी-भाषा-भाषी क्षेत्रमें हिंदी समझ ली जाती है। मराठी तथा हिंदीकी लिपि एक ही होनेसे जो हिंदी पढ़ सकते हैं, उनके लिये इस खण्डके तीर्थोंकी यात्रामें लिपिसम्बन्धी कठिनाई नहीं होगी; किन्तु जो हिन्दी सर्वथा नहीं जानते, उनके लिये अनेक स्थानोंमें कठिनाई हो सकती है।

दक्षिण भारतको छोड़कर शेष सम्पूर्ण भारतके तीर्थोंमें पंडे हैं। जहाँ पंडोंके कारण कुछ उलझनें होती हैं, वहाँ अपरिचित यात्रीको सुविधा भी होती है। यदि पंडोंका संगठन हो, उनकी सुगठित संस्था हो और यात्रीको सुविधा देनेका वह संस्था ध्यान रखे तो भारतकी पंडा-प्रथा इस युगमें भी बहुत उपादेय होगी। यात्रीको स्टेशनपर या बससे उतरते ही पंडे मिल जाते हैं। इसका अर्थ है कि उसे सब दर्शनीय स्थान दिखा देनेवाला मार्गदर्शक मिल गया, जो उसके ठहरने, भोजनादिकी व्यवस्थामें भी पूरी सहायता देगा। इतना ही नहीं, पंडोंका यात्रीसे परिवारका-सा परम्परागत सम्बन्ध होता है, जिसके कारण वे यात्रीकी सुख-सुविधाका प्रायः पूरा ध्यान रखते हैं और उन्हें किसी प्रकारका कष्ट नहीं होने देते। अपने घरका पंडा मिल जानेपर फिर यात्रीको दूसरे पंडे भी तंग नहीं करते। बदलेमें वे यात्रीसे इतनी ही आशा रखते हैं कि वह उनका सम्मान करे और यथाशक्ति दान-दक्षिणा दे; क्योंकि उसीपर उनकी आजीविका चलती है। प्रायः सभी प्रधान तीर्थोंमें धर्मशालाएँ हैं। पंडोंके घर भी ठहरनेकी व्यवस्था रहती है।

यह पूरा खण्ड ऐसा है कि जिसमें ग्रीष्ममें कड़ी गरमी और शीतमें कड़ी सर्दी पड़ती है। राजस्थानके तीर्थोंकी यात्रा वर्षामें करना अच्छा है; किन्तु इस भागके अनेक तीर्थोंकी यात्रा वर्षामें असुविधाजनक होगी; क्योंकि मालवा, मध्यप्रदेश आदिमें वर्षा पर्याप्त होती है। उस समय छोटी नदियाँ बढ़ी रहती हैं। जहाँ थोड़ा भी पैदल चलना होता है, वहाँ कष्ट होता है। बहुत-से स्थानोंमें चिकनी मिट्टी होती है, जो गीली होनेपर पैरमें चिपकती है।

शीतकालमें यात्रा करना हो तो पहिननेके लिये पूरे गरम कपड़े, ओढ़नेके लिये दो अच्छे कम्बल या रजाई तथा बिछानेके लिये कम्बल या रूईका पतला गद्दा साथ रखना चाहिये। ग्रीष्मकालमें यात्रा करना हो तो एक साधारण दरी, एक चद्दर और साधारण सूती कपड़े पर्याप्त होंगे; किंतु नंगे पैर यात्रा की जा सकेगी, ऐसी आशा नहीं करना चाहिये। शीतकालमें भी नंगे पैर रहना कष्टकर होगा। छाता सब ऋतुओंमें साथ रखना चाहिये; क्योंकि शीतकालमें कभी भी वर्षा आ सकती है और ग्रीष्ममें तो धूपसे बचनेके लिये वह आवश्यक है ही।

ग्रीष्ममें यात्रा करते समय अपने साथ पानी रखना चाहिये। अनेक स्टेशनोंपर पीनेके लिये पानीकी व्यवस्था नहीं होती।

इस पूरे भागके तीर्थोंमें जहाँ बाजार हैं, वहाँ आटा, चावल, दाल उपलब्ध हो जाते हैं। जो लोग बाजारमें भोजन करना पसंद करते हैं, उन्हें प्रायः सब बाजारोंमें, जहाँ होटल हैं, इच्छानुसार रोटी या चावल मिल जाता है। बड़े स्टेशनोंपर तथा बाजारोंमें पूड़ी, मिठाई तथा नमकीन पदार्थ भी मिल जाते हैं। वैसे बाजारकी पूड़ी-मिठाई आदि 'वनस्पति' घीकी बनी होती है और हानिकर होती है। भोजन स्वयं बनाया जाय, यही सबसे उत्तम है।

इस खण्डके मुख्य तीर्थ हैं—अमरकण्टक, ओंकारेश्वर, उज्जैन, शबरीनारायण, राजिमा, नासिक-त्र्यम्बक, पुष्कर, चित्तौड़, नाथद्वारा, लोहार्गल, एकलिङ्ग, महाबलेश्वर, तुलजापुर, पंढरपुर, वाई, कोल्हापुर, धृष्णेश्वर, परली बैजनाथ, पैठण एवं अवढ़ा नागनाथ। इनके दर्शनका प्रयत्न करना चाहिये।

मध्य भारत
(रेलवे-मार्ग)
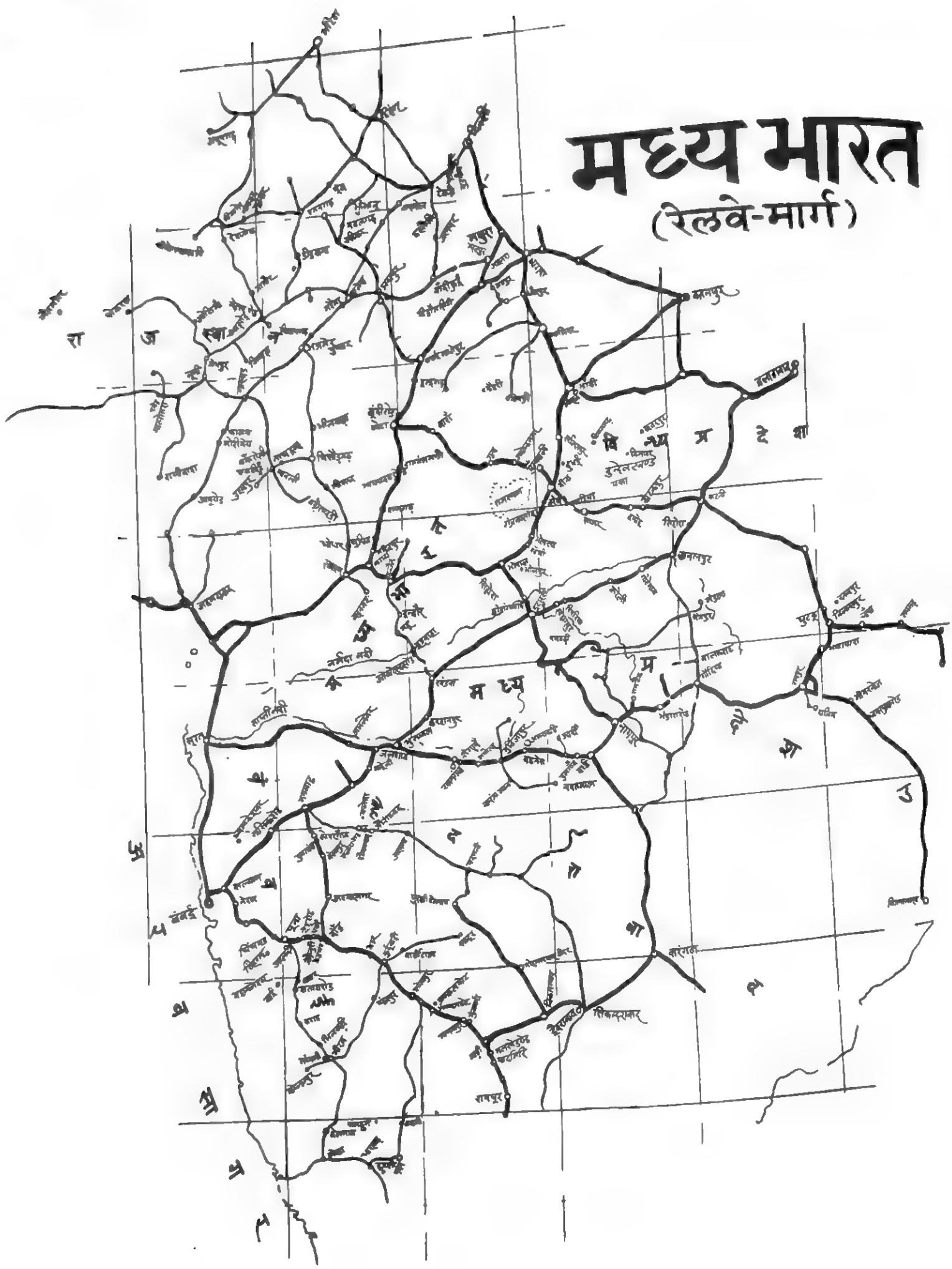
दिगरौता (भनेश्वर)

(लेखक—श्रीरोशनलालजी अग्रवाल)

मध्यरेलवेकी बम्बई-दिल्ली लाइनपर धौलपुरसे १६ मील दूर जाजौ स्टेशन है। वहाँसे ६ मील पश्चिमोत्तर दिगरौता ग्राम है। यह ग्राम आगरासे ताँतपुर जानेवाली मोटर-बस-लाइनपर स्थित कागारौल स्थानसे ढाई मील है। दिगरौता ग्रामसे दक्षिण भनेश्वर-तीर्थ है। यह तीर्थ एक सरोवर है, जिसके दो घाट पक्के हैं। सरोवरके पास भगवान् शङ्करका मन्दिर है। उसमें स्वयम्भू लिङ्ग-मूर्ति है। आस-पासके लोग यहाँ अपने झगड़े सुलझाते हैं। प्रसिद्ध है कि यहाँ झूठ बोलनेसे हानि होती है। शिवरात्रिके समय लोग सोरोंसे गङ्गाजल लाकर चढ़ाते हैं। तीर्थके पास पूर्व ओर नृसिंह-मन्दिर है।

पासमें ही संत रामजी-राम बाबाकी समाधि है। यहाँ दो धर्मशालाएँ हैं। दिगरौता ग्राममें कई देव-मन्दिर हैं।

धाय-महादेव—खोड़

(लेखक—श्रीहरिकृष्ण बद्रीप्रसाद भार्गव)

मध्यरेलवेकी एक लाइन ग्वालियरसे शिवपुरीतक जाती है। शिवपुरीसे खोड़तक मोटर-बस चलती है। खोड़में मन्दिरके पास दो धर्मशालाएँ हैं।

खोड़ग्राममें धाय-महादेवका प्रसिद्ध मन्दिर है। यह मूर्ति एक धायवृक्षके नीचे भूमिमें पायी गयी, इसीसे इन्हें धाय-महादेव कहते हैं। यह मन्दिरका स्थान तीन ओर उमंग नदीसे घिरा है। नदीपर पक्के घाट हैं। मुख्य मन्दिरके सामने श्रीगणेशजीकी मूर्ति है। गणेशजीके दाहिने दुर्गाजी तथा श्रीराम-लक्ष्मणका मन्दिर है। मुख्य मन्दिरमें अखण्ड दीप जलता रहता है। मन्दिरमें शिवलिङ्गके सामने नन्दी तथा पार्वतीजीकी मूर्तियाँ हैं।

मन्दिरसे कुछ दूरपर तप्तकुण्ड है। यहाँ शिवरात्रिपर मेला लगता है।

शिवपुरी

(लेखक—श्रीबाबूलालजी गोयल)

मध्य-रेलवेकी ग्वालियर शाखापर शिवपुरी अन्तिम स्टेशन है। यह एक प्रख्यात नगर है।

बाणगङ्गा—शिवपुरी स्टेशनसे ३ मीलपर छोटे-बड़े ५२ कुण्ड हैं। इनमें कई पर्याप्त बड़े हैं। लोग मानते हैं कि इनमें गङ्गाजीका जल है। ग्रहणपर यहाँ मेला लगता है। सबसे बड़े कुण्डके पास शिवलिङ्ग तथा नन्दी-मूर्ति है। आस-पास गङ्गाजी, हनुमान्जी, शङ्करजी आदिके मन्दिर हैं।

भदैयाकुण्ड—बाणगङ्गाके पास ही यह स्थान है। इसमें गोमुखसे बराबर जल गिरता है। कुण्डसे जल बाहर जाता रहता है।

सिद्धेश्वर—शिवपुरीका यह प्राचीन मन्दिर है। यह नगरसे पूर्व स्थित है। कहा जाता है कि यहाँ शिवार्चन करके अनेक ऋषि-मुनियोंने सिद्धियाँ पायी हैं। इसी मन्दिरमें भगवान् नारायणकी एक प्रतिमा है, जो पारासरी गाँवके पास मिली थी। यह मूर्ति बहुत प्राचीन है। मन्दिरमें एक और प्राचीन प्रतिमा है, जिसमें शिवलिङ्गके ऊपर शिव-पार्वतीकी मूर्ति है। यह मूर्ति भी नरवरसे लायी गयी है। इनके अतिरिक्त मन्दिरमें राधाकृष्ण, हनुमान् तथा गणेशकी मूर्तियाँ हैं।

शिवपुरीमें सरोवरके मध्यमें श्रीराधा-कृष्णका एक मन्दिर है। नगरके दक्षिण राजप्रसादके समीप देवीजीका मन्दिर है। वहीं भारतके स्वातन्त्र्य-संग्रामके सेनानी ताँत्या टोपेके फाँसीका स्थान है। वहाँ एक चबूतरा स्मारकरूपमें बना है। नगरके पास मनसापूरण हनुमान्जीका प्रख्यात मन्दिर है।

नगरसे ६ मीलपर भूराखोह, बाँकड़ेके हनुमान्, टूँड़ा भरखा खोह, टपकन खोह आदि दर्शनीय स्थान हैं। नगरसे १४ मीलपर नरवरकी सड़कपर टपकेश्वरी देवीका मन्दिर पहाड़ी गुफामें है। यहाँ एक जलप्रवाह पर्वतमें है।

शिवपुरीसे २४ मीलपर पौहरी नगर है। वहाँ एक प्राचीन जलमन्दिर (सरोवरके मध्य) बना है। वहाँ भी सिद्धेश्वर-मन्दिर है। पासमें पार्वती नदीके उद्गम-स्थानपर पहाड़ीपर केदारनाथका मन्दिर है।

तूमेंन

(लेखक—पं० श्रीशङ्करलालजी शर्मा)

इस स्थानका प्राचीन नाम तुम्बवन है। गुना जिलेके अशोकनगर परगनेमें यह स्थान है। इस स्थानके पास बहुत अधिक शिवलिङ्ग पाये जाते हैं। उनमें त्रिमुख, पञ्चमुख, सप्तमुख, शतमुखादि अनेक मुखोंके लिङ्ग हैं। एक विन्ध्यवासिनी देवीका भी यहाँ मन्दिर है। नगरसे दक्षिण सीताहिंडोल स्थान है।

अशोकनगर स्टेशनसे यह स्थान ५ मील दूर है। कहा जाता है कि राजा मयूरध्वजकी राजधानी यहाँ थी। विन्ध्यवासिनी देवी उन्हींकी आराध्या हैं। उस मन्दिरमें राजा मयूरध्वजकी मूर्ति भी है।

दतिया

(प्रेषक—श्रीरामभरोसे चतुर्वेदी)

झाँसीसे १६ मीलपर दतिया स्टेशन है।

कहा जाता है कि यह दन्तवक्त्रकी राजधानी है। यहाँका मुख्य मन्दिर दन्तवक्त्रेश्वर-मन्दिर है। इन्हें लोग मड़िया महादेव कहते हैं। यह मन्दिर एक छोटी पहाड़ीपर है। पासमें एक देवी-मन्दिर भी है। दूसरा प्राचीन मन्दिर वनखण्डेश्वरका है। इसके अतिरिक्त पकौरिया महादेव, नृसिंह-मन्दिर (नृसिंह-टीलेपर), हनुमान्-किला, बड़े गोविन्दजी, विहारीजी, राजराजेश्वर महादेव आदि बहुत-से मन्दिर दतियामें हैं।

दतियाके पास उड़नू टौरियापर हनुमान्जीका मन्दिर है। यहाँ ३६० सीढ़ियाँ चढ़कर जाना पड़ता है। श्रावणकी तीजको मेला लगता है। पञ्चमकविकी टौरियापर भैरवजीका प्राचीन मन्दिर है। वहाँ तारादेवीकी भी मूर्ति है। रिछरा फाटककी ओर चिरई टौरपर देवीका मन्दिर प्रसिद्ध है। गोपालदासकी टौरियापर भी एक भव्य मन्दिर है। खेर गाँवमें खेरापति हनुमान्का मन्दिर है।

दतियासे ३ मीलपर शुकदेव पर्वतपर खेरी माताका मन्दिर है। यह सिद्धपीठ माना जाता है।

जमदारो—यह स्थान घोर वनमें है। सेंवढ़ासे लगभग ६ मील दूर है। लोगोंका विश्वास है कि यहीं महर्षि जमदग्निका आश्रम था।

नारदा—सेंवढ़ासे ४ मील पीपलोंका एक वन है। वहाँ एक बड़ी शिला है। इसे नारदजीकी तपःस्थली कहा जाता है। पासमें सनकुआ गाँव है, जो सनकादिकी तपोभूमि कहा जाता है। यहाँ कार्तिकी पूर्णिमापर मेला लगता है।

अनौटा—सेंवढ़ासे ४ मीलपर इस गाँवमें महादेवजीका प्राचीन मन्दिर है।

नैकोरा—दतियासे १२ मील पश्चिम महुअर नदीके तटपर यह गाँव है। एक ऊँचे टीलेसे जलधारा निकलती है। पास ही शङ्करजीका मन्दिर है। अक्षयतृतीयाको मेला लगता है। इसे महाकवि भवभूतिकी जन्मभूमि कहा जाता है।

रतनगढ़की माता—सेंवढ़ा तहसीलमें मरसैनीसे ४ मीलपर सिंधके पार उच्च शिखरपर रतनगढ़की माताकी विशाल प्रतिमा है। कहा जाता है कि यह काली-मूर्ति छत्रपति शिवाजीद्वारा प्रतिष्ठित है।

रामगढ़की माता—भाँडेरकी ओर डेढ़ मीलपर यह विशाल देवी-मूर्ति है।

मध्यप्रदेशके कुछ पवित्र स्थल—१

पोहरीका प्राचीन जलमन्दिर, शिवपुरी
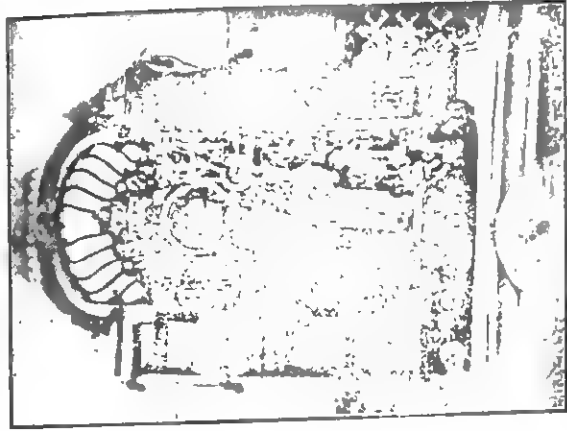
श्रीसिद्धेश्वर-मन्दिरके श्रीविष्णु भगवान्, शिवपुरी

श्रीगौरीशङ्कर, शिवपुरी
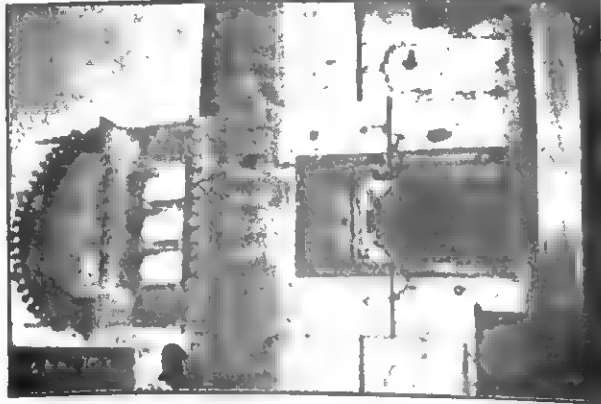
श्रीयुगलकिशोरजीका मन्दिर, पन्ना

स्वामी श्रीप्राणनाथजीकी कुटी, पन्ना

श्रीबलदाऊजीका मन्दिर, पन्ना

मध्यप्रदेशके कुछ पवित्र स्थल—२
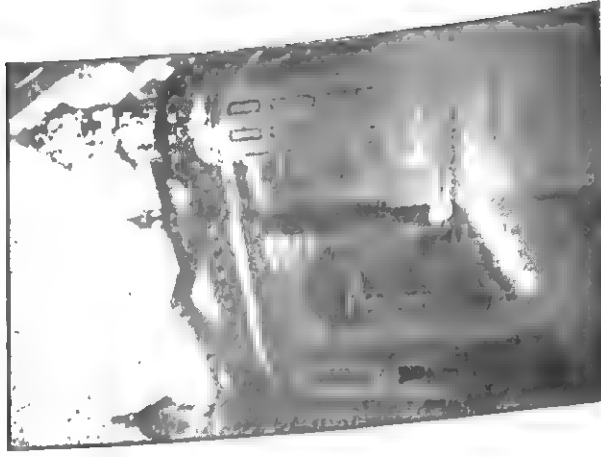
साँची-स्तूपके घेरेका उत्तरी द्वार
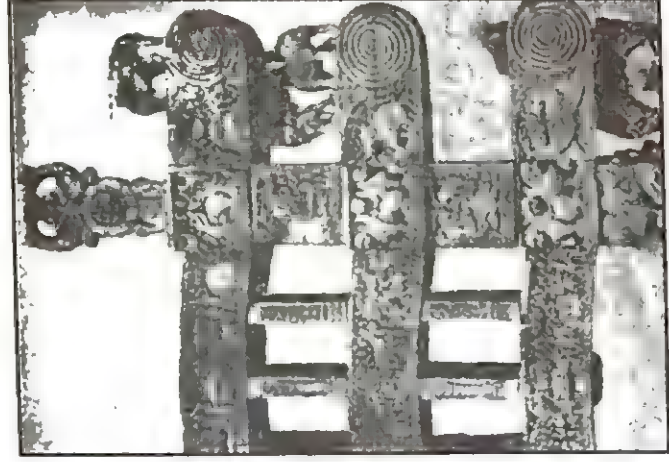
साँची-स्तूपके घेरेका पूर्वी द्वार
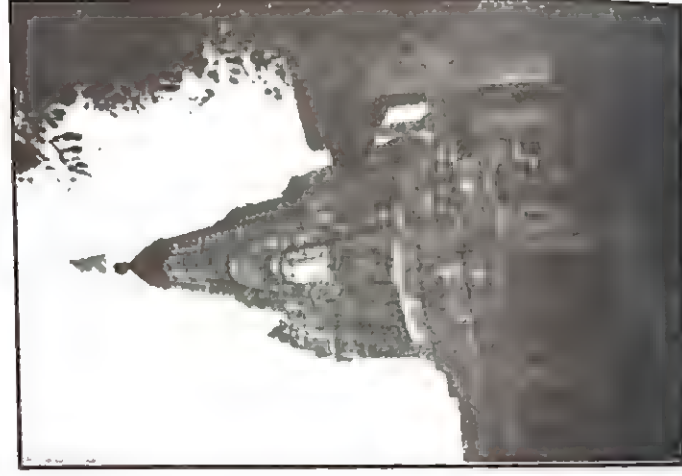
साँची-स्तूप

श्रीकेशवनारायण-मन्दिर, शबरीनारायण

बड़ा मन्दिर, शबरीनारायण

श्रीराजीवलोचन-मन्दिर, राजिम

636 Tirthank_Section_11_2_Back
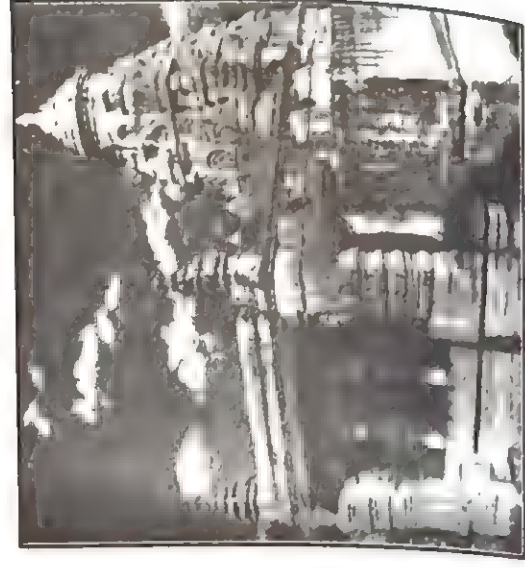
उनाव

(लेखक—श्रीरामसेवकजी सक्सेना)

दतियासे १० मील दूर उनाव ग्राम है। झाँसीसे यह स्थान ६ मील है। झाँसीसे यहाँतक मोटर-बसें चलती हैं।

यहाँ सूर्यचक्र है, जिसे बालाजी कहते हैं। एक काले पत्थरपर सूर्य-मूर्ति खुदी है। यह मूर्ति एक स्वप्नादेशके अनुसार भूमिमेंसे निकाली गयी थी। बालाजीके मन्दिरके पास ही पहूजा नदी है। मन्दिरके आसपास धर्मशाला है। यहाँ हनुमान्जी तथा श्रीराधावल्लभके मन्दिर भी दर्शनीय हैं। बालाजीका सूर्यचक्र इस प्रकार स्थापित है कि उसपर सूर्योदयकी प्रथम किरण पड़ती है। यहाँ रङ्गपञ्चमी और रथयात्राको मेले लगते हैं।

झाँसी-छतरपुर-टीकमगढ़ क्षेत्रके कुछ देवस्थान

(लेखक—पं० श्रीराजारामजी बादल 'विशारद')

१. **केदारेश्वर**—शङ्करजीका यह स्थान ग्राम रौनीमें, जो मऊ-रानीपुर (झाँसी) से २ मील दक्षिण-पूर्वमें है, एक मील ऊँचे पहाड़पर है। यहाँ संक्रान्तिके दिन बड़ा भारी मेला लगता है।

२. **महाशिव**—यह स्थान ग्राम सरसेड़, जिला छतरपुरमें एक पहाड़पर है। श्रीशिवजीकी पिंडी शनैः-शनैः बढ़ रही है और पहाड़ ऊँचा होता जा रहा है। मैंने आजसे तीस वर्ष पहले जब दर्शन किये थे, तब दर्शनार्थी मन्दिरमें घुसकर केवल सीधे बैठ सकते थे, पर अब निहुरके खड़े हो जाते हैं। शिवलिङ्ग पहलेकी अपेक्षा अधिक बड़ा और मोटा हो गया है। यहाँ वसन्तपञ्चमी तथा शिवरात्रिको मेला-सा लगा करता है। यह स्थान हरपालपुर स्टेशनसे पश्चिममें २ मील दूर है।

३. **बड़े महादेव**—ग्राम जेवर, जिला टीकमगढ़में एक प्राचीन मन्दिर बीच बस्तीमें स्थित है, जिसमें शङ्करजीकी केवल एक पिंडी थी। उस पिंडीके आस-पास कई पिंडियाँ भूमिसे स्वयं प्रकट हो गयीं, जो प्रतिवर्ष बढ़ती जाती हैं। सम्प्रति तीन पिंडियाँ बहुत बड़ी हैं, तीन मझोली हैं और दो निकल रही हैं। यह स्थान रानीपुर रोड स्टेशनसे ४ मील दक्षिणमें है।

४. **बाहुवीर बजरंग**—यह स्थान घाटकोटरा, जिला झाँसीमें है। यहाँ श्रीमहावीरजीकी पाँच फुट ऊँची मूर्ति है। इनका हाथ पहले मस्तकसे चिपका हुआ था। संवत् २००९ में इन्होंने अपना मस्तकवाला हाथ उठा लिया, जो आजतक मस्तकसे अलग दिखायी देता है। यहाँ तभीसे प्रतिवर्ष चैत्री पूर्णिमाको मेला लगता है।

५. **गताके बजरंग**—यह स्थान घाटकोटरा, जिला झाँसीसे एक मील पूर्व धसान नदीके निकट है। ये हनुमान्जी पहले पृथ्वीमें दबे हुए थे। २०० वर्ष पहले इन्होंने एक पण्डितजीको, जो बादल-वंशके थे, स्वप्नादेश दिया था कि हमारा स्थान बनवा दो। उसी दिन हल जोतते समय हलकी नोक लग जानेसे उस स्थानसे रुधिरकी धारा निकली। यह देखकर बस्तीवाले एकत्र हुए, पण्डितजीकी आज्ञासे स्थान खोदा गया। महावीरजीके ऊपर तबसे औषधरूपमें घीका फाहा चढ़ने लगा, जो कई वर्ष चढ़ता रहा। आज उस स्थानका यह प्रभाव है कि दो फर्लांगके घेरेमें कोई कैसा भी शिकारी हो, उसके द्वारा जीवघात नहीं हो पाता।

६. **महाबली माता**—यह स्थान ग्राम भदरवारा, जिला झाँसीसे उत्तरमें चार फर्लांग दूर है। प्रातः, दोपहर तथा सायंकालमें इस मूर्तिके क्रमशः बाल-युवा-वृद्धरूपमें दर्शन होते हैं। यहाँ चैत्रके नवरात्रमें प्रतिवर्ष मेला लगा करता है।

७. **शारदादेवी**—यह स्थान गरौंली, जिला छतरपुरमें पहाड़पर स्थित है। यहाँ चैत्र नवरात्रमें बड़ा भारी मेला प्रतिवर्ष लगा करता है।

८. **बैजनाथजी**—ग्राम गरौंली, जिला छतरपुरमें ये शङ्करजी धसान नदीकी बीच धारामें एक चट्टानपर स्वयं प्रकट हुए थे और प्रतिवर्ष बढ़ते जा रहे हैं। लोग यहाँ अनुष्ठान किया करते हैं। संक्रान्तिको बड़ा मेला लगता है।

९. **सूर्यदेव तथा शनिदेवके मन्दिर**—ग्राम मऊ सहनियाँ, जिला छतरपुरमें हैं।

१०. अछरू माता—यह स्थान ग्राम पृथ्वीपुरा, जिला टीकमगढ़में है। यहाँ मूर्ति नहीं है, एक कुण्डके आकारका गड्ढा है। यहाँ चैत्र नवरात्रमें प्राचीन कालसे मेला लगता आ रहा है।

११. युगलकिशोरभगवान्—पन्नामें भगवान् श्रीयुगल-किशोरजीका मन्दिर है। पन्ना एक तीर्थस्थान है। यहाँ श्रीजगन्नाथस्वामीके भी दो मन्दिर हैं।

१२. रामराजा—यह स्थान ओरछा, जिला टीकमगढ़में है। भगवान् श्रीरामचन्द्रजी अयोध्यासे पुष्य नक्षत्रमें यात्रा करके कई महीनोंमें ओरछा आये थे।

१३. विश्वामित्रजीका स्थान—यह स्थान ग्राम जलालपुरा, जिला झाँसीके पास झारखंड नामक वनमें धसान नदीके बीच प्रवाहमें है।

१४. सिद्धकी गुफा—यह एक चमत्कारिक गुफा ग्राम करारा, जिला छतरपुरमें है; यह एक पहाड़के बीचमें है एवं बहुत प्राचीन है।

ओरछा

(लेखिका—सुश्री सु० कुमारी)

मध्यरेलवेकी झाँसी-मानिकपुर लाइनपर झाँसीसे ७ मील दूर ओरछा स्टेशन है। स्टेशनसे ओरछा दो मील दूर है; किन्तु सवारीकी सुविधा नहीं रहती। झाँसीसे ओरछा मोटर-बस चलती है। उससे आना अधिक सुविधाजनक है। बेतवा नदीके किनारे ओरछा बसा है।

ओरछेमें दो मुख्य मन्दिर हैं—श्रीराममन्दिर और चतुर्भुजजीका मन्दिर। ओरछा बाजारके सामने एक द्वार है। द्वारके बाद मैदान है। इस मैदानके सामने एक ओर श्रीराममन्दिर है और दूसरी ओर चतुर्भुजजीका विशाल मन्दिर। श्रीराममन्दिरके चौकमें तुलसी-क्यारी है। वहीं बैठकर हरदौलने प्राणत्याग किया था। मन्दिरमें श्रीराम, जानकी, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्नकी मूर्तियाँ हैं। सुग्रीव, जाम्बवान् आदिकी भी मूर्तियाँ हैं। यह श्रीराममूर्ति रानी गणेशकुँवरिको अयोध्यामें सरयू-स्नान करते समय मिली थी। मूर्ति उनकी गोदमें स्वयं आ गयी थी।

श्रीरामजीके मन्दिरके सामने चतुर्भुजजीका मन्दिर है। उसमें राधा-कृष्णकी युगल-मूर्ति है। यहाँ रामनवमी, झूला तथा कार्तिकी पूर्णिमाको उत्सव होते हैं।

लक्ष्मीमन्दिर—ओरछासे तीन-चार मील दूर एक पहाड़ीपर लक्ष्मीजीका मन्दिर है। उसमें लक्ष्मी-नारायणकी युगल-मूर्ति है।

जटाशंकर

विन्ध्यप्रदेशमें छत्रपुरके पास बिजावर है। वहाँसे लगभग २० मील दूर पहाड़ोंमें यह स्थान है। केवल पगडंडीका मार्ग है।

यहाँ शङ्करजीका एक छोटा मन्दिर और दो कुण्ड हैं। एकमें गरम पानी और एकमें ठंडा पानी है। कुण्डसे जल बराबर निकलता रहता है।

यह स्थान इधर बहुत मान्यताप्राप्त है।

अवारमाता (रामटौरिया)

यह स्थान छतरपुर जिलेमें पड़ता है। सागरसे या छतरपुरसे मोटर-बसद्वारा हीरापुर आकर ८ मील पैदल चलना पड़ता है। मेलेके समय मन्दिरतक बस जाती है। वैशाखी पूर्णिमाको मेला लगता है। श्रीअवारमाता दुर्गाजीका स्वरूप मानी जाती हैं। इस ओर उनकी बहुत मान्यता है।

कुण्डेश्वर-तीर्थ

(लेखिका—श्रीहेमलता देवी तैलङ्ग)

बुन्देलखण्डमें टीकमगढ़से चार मील दक्षिण जमडार नदीके उत्तर-तटपर एक ऊँचे कगारपर शिवमन्दिर है। यहाँ नीचे नदीमें एक कुण्ड है, जिसकी गहराईका किसीको पता नहीं। १५वीं शताब्दीमें धन्ती नामकी खटकिनको इसका पता लगा। श्रीवल्लभाचार्यजी उन दिनों वहीं तुङ्गारण्यमें श्रीमद्भागवतकी कथा कह रहे थे। समाचार पाकर उन्होंने तैलङ्ग ब्राह्मणोंद्वारा उनका वैदिक संस्कार कराया और कुण्डसे आविर्भूत होनेके कारण इनका 'कुण्डेश्वर' नामकरण किया। इधर इसके समीप घाट तथा बगीचे भी बनवा दिये गये हैं। यहाँ शिवरात्रि, मकरसंक्रान्ति तथा वसन्तपञ्चमीके अवसरपर मेला लगता है।

बानपुर—इस स्थानसे ४ मीलपर जमडार और जामने नदियोंका संगम है। संगमसे दो मीलपर बानपुर ग्राम है। इस ओर लोगोंका विश्वास है कि यह बानपुर ही बाणासुरकी राजधानी थी और कुण्डेश्वर महादेव बाणासुरके आराध्य हैं। यहाँ शिवरात्रिपर मेला लगता है।

पाली

(लेखक—पं० श्रीमहादेवप्रसादजी चतुर्वेदी और श्रीमोतीलालजी पाण्डेय)

झाँसी जिलेके ललितपुर नगरसे १५ मील दक्षिण यह स्थान है। यहाँ भगवान् नीलकण्ठका मन्दिर है। मन्दिरमें नीलकण्ठ-भगवान्की त्रिमूर्ति प्रतिमा प्रतिष्ठित है। त्रिदेवमयी त्रिमुख शिवमूर्ति बड़ी ही भव्य है। मूर्तिके दाहिनी ओर तीन शेरोंकी मूर्तियाँ हैं। यह स्थान पाली ग्रामके दक्षिण-पश्चिम पर्वत-शिखरपर है। मन्दिरके नीचे झरना है। गुरुपूर्णिमापर मेला लगता है। पाली-ग्राम जाखलौन स्टेशनसे ७ मील है। नीलकण्ठ मन्दिरके समीप ही प्राचीन श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीका मन्दिर है।

दूधई—पालीसे ५ मील दक्षिण दूधई ग्राम है। वहाँसे १ मील दूर पर्वतपर नृसिंहभगवान्की विशाल मूर्ति है। यह मूर्ति ४५ फुट ऊँची है। मूर्ति-कलाकी दृष्टिसे यह प्रतिमा उत्तम है। यहाँ एक ६ मील घेरेका सरोवर है। दूधई ग्राममें भगवान्के चौबीस अवतारों तथा अनेक देवी-देवताओंकी प्राचीन मूर्तियाँ मिलती हैं। धौर्रा स्टेशनसे यह स्थान ६ मील पूर्व है।

चँदेरी (चन्द्रापुरी)

(लेखक—पं० श्रीरामभरोसेजी चौबे, श्रीउमाशंकरजी वैद्य, श्रीहरगोविन्दजी पाराशर शास्त्री)

यह बुन्देलखण्डके पश्चिम भागमें है। यहाँ पहुँचनेके लिये दो मार्ग हैं—एक ललितपुरसे, दूसरा मूँगावली रेलवे-स्टेशनसे। इसके चारों ओर विन्ध्यारण्यकी रम्य श्रेणियाँ हैं। चँदेरीसे सटे हुए दक्षिणस्थ त्रिभुजाकार पर्वतके बीच जागेश्वरी माता विराजती हैं। मन्दिरमें सदैव मनोरम झरना झरता रहता है।

कहते हैं कि चँदेरीके शासक राजा कूर्मने, जिन्हें कुष्ठरोग था, आखेटमें प्याससे व्याकुल होकर एक निर्मल जलकुण्ड ढूँढ़ा। वहाँ जल पीते ही उनका कोढ़ दूर हो गया। वहीं एक दिव्य बाला दीखी, जो तुरन्त विलीन हो गयी। स्वप्नमें उसीने राजासे कहा—'मैं शिशुपालके यज्ञस्थलपर प्रकट होना चाहती हूँ। तू मन्दिर बना, पर ९ दिनतक उसका द्वार न खोलना।' महाराजने वैसा ही किया, पर तीसरे ही दिन दरवाजा खोल दिया। माता विशाल चट्टान फोड़कर प्रकट हुईं, पर मुखारविन्द मात्रका ही दर्शन हो सका। इनका दर्शन श्रद्धालुओंके लिये कामधेनुके सदृश है।

यहाँ कई धर्मशालाएँ तथा मन्दिर हैं। नवरात्रमें मेला भी लगता है।

सूखाजी

(लेखक—श्रीबनारसीदासजी जैन)

बीना-कटनी रेलवे-लाइनपर ही सागरसे ३१ मील दूर पथरिया स्टेशन है। वहाँसे ५ मील उत्तर सूखाजी नामक स्थान है। संत तारणस्वामीका यह जन्म-स्थान है। यहाँ तारणस्वामीका मन्दिर है। मार्गशीर्ष-शुक्ला सप्तमीको उनके अनुयायियोंका यहाँ मेला लगता है।

खंडोबा

(लेखक—श्रीगोविन्द यशवंत बडनेरकर)

सागर जिलेमें बड़ी देवरी नामका एक बड़ा ग्राम है। सागरसे यहाँ मोटर-बस जाती है। यहाँ खंडोबा (म्हालसाकांत)-का मन्दिर है। खंडोबा शिवजीके अवतार माने जाते हैं। मार्गशीर्ष-शुक्ला षष्ठी (चम्पाषष्ठी) को यहाँ मेला लगता है।

यहाँकी विशेषता है अग्निपर चलना। चम्पाषष्ठीको मन्दिरके सामने साढ़े तीन हाथ लंबा, सवा हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद दिया जाता है। इस गड्ढेमें एक गाड़ी लकड़ी जलायी जाती है। मध्याह्नमें गड्ढेमें जब केवल दहकते अंगारे रहते हैं, धुआँ या लपट नहीं रहती, तब जिसने खंडोबाकी मनौती की हो और उसकी कामना पूर्ण हुई हो, वह स्त्री हो या पुरुष, उसे इन अंगारोंपर चलना पड़ता है। वह पहले मन्दिरमें जाकर खंडोबाको नारियल और भंडार (पिसी हल्दी) चढ़ाता है और तब बाहर आकर अग्निपर चलता है। अग्निपर वह तीन परिक्रमा करके तब नीचे आता है। उसको न कोई पीड़ा होती न पैर जलता है। प्रतिवर्ष १५-२० आदमी अग्निपर चलते हैं। वे पैरोंमें कुछ लगाते नहीं।

इसी स्थानमें एक सतीचौरा भी है।

जागेश्वर (बाँदकपुर)

(लेखक—श्रीसुखनन्दनप्रसादजी श्रीवास्तव)

मध्य-रेलवेकी बीना-कटनी लाइनपर दमोहसे नौ मील दूर बाँदकपुर स्टेशन है। यह स्थान सागर जिलेमें पड़ता है।

बाँदकपुरमें जागेश्वर महादेवका मन्दिर है। कहा जाता है कि यहाँका शिवलिङ्ग बढ़ रहा है। शिव-मन्दिरके पास ही पार्वतीजीका मन्दिर है। दोनों मन्दिरोंके मध्य अमृत-बावली है। यहाँ वसन्तपञ्चमी तथा शिवरात्रिको मेला लगता है। लोग नर्मदाजल या गङ्गाजल चढ़ानेके लिये ले जाते हैं। यात्रियोंके ठहरनेके लिये एक धर्मशाला है।

सीतानगर

(लेखक—श्रीगोकुलप्रसादजी सीरोठिया)

दमोह स्टेशनसे १७ मील दूर सुनार नदीके तटपर सीतानगर अच्छा कस्बा है। कहा जाता है कि यहाँ महर्षि वाल्मीकिका आश्रम था। श्रीजानकीजीने यहीं द्वितीय वनवासका समय व्यतीत किया था।

यहाँपर सुनार और कोपरा एवं बेंक नदियोंका संगम है। संगमपर मढ़कोलेश्वर महोदवका मन्दिर है। मन्दिर बहुत प्राचीन है। श्रीमढ़कोलेश्वर-लिङ्ग स्वयम्भू माना जाता है। इस मन्दिरको एक ही रात्रिमें विश्वकर्माने बनाया और रात्रि व्यतीत हो जानेसे वे कलश नहीं बना सके, ऐसी लोकोक्ति प्रचलित है। यहाँका शिवलिङ्ग बढ़ रहा है।

शिव-मन्दिरके सामने पार्वती-मन्दिर है। इस मन्दिरके नीचे एक गुफा है। नगरमें श्रीरामकुमारजीका मन्दिर, श्रीमुरलीमनोहर-मन्दिर, श्रीराम-मन्दिर, श्रीजीकी कुञ्ज तथा शिवमन्दिर दर्शनीय मन्दिर हैं।

यहाँ आस-पासके प्रदेशोंके लोग पर्वोंपर संगम-स्नान करने तथा अस्थि-विसर्जन करने आते हैं।

निसई मल्हारगढ़

बीना-कोटा लाइनपर बीनासे १८ मील दूर मुँगावली-स्टेशन है। वहाँसे ९ मील दूर संत तारणस्वामीका निर्वाण स्थान निसई मल्हारगढ़ है। यहाँ संत तारणस्वामीका मन्दिर है। यहाँका उत्सव ज्येष्ठ-कृष्णपक्षमें होता है।

कपिलधारा

(लेखक—श्रीउदयचंदजी शर्मा 'मयङ्क')

कोटा-बीना लाइनपर बाराँ स्टेशन है। बाराँसे शाहाबाद जानेवाली मोटर-बससे भँवरगढ़तक आकर फिर ८ मील पैदल चलना पड़ता है। मेलेके समय स्टेशनसे कपिलधारातक बस चलती है।

यह तीर्थ नाहरगढ़ ग्रामसे १ मील दूर जंगलमें है। कार्तिकी पूर्णिमाको मेला लगता है। पर्वतपर गोमुखसे कपिल-गङ्गाकी धारा बराबर गिरती है। पास ही शिवकुण्ड है। उसके पास भगवान् शङ्करका मन्दिर है। शिवकुण्डके मध्यमें भगवान् शङ्करकी सुन्दर मूर्ति है। शिवकुण्डमें ५० फुट ऊपरसे पर्वतके झरनेसे जल आता रहता है। इस स्थानके आस-पास ३-४ गुफाएँ हैं। लगभग ५० फुट नीचेसे यात्रीको शिवकुण्डतक आना पड़ता है। यह इतना मार्ग कठिन है।

कहा जाता है कि यह भगवान् कपिलकी तपःस्थली है। कपिलजीने अपने तपोबलसे यहाँ पर्वतमेंसे गङ्गाकी धारा प्रकट कर दी।

उदयपुर (भेलसा)

मध्य-रेलवेकी बम्बई-दिल्ली लाइनपर भोपालसे ६४ मील दूर बरेथ स्टेशन है। इस स्टेशनसे चार मीलपर उदयपुर एक छोटा गाँव है। वहाँतक पक्की सड़क जाती है।

यहाँ उदयेश्वरका मन्दिर तथा पिसनहारीका मन्दिर—ये प्राचीन कलाके उत्तम प्रतीक हैं। आस-पास बहुत अधिक कलापूर्ण भग्नावशेष हैं।

बदोह

बरेथ स्टेशनसे ६ मील आगे कल्हार स्टेशन है। वहाँसे १२ मील पूर्व बदोह नामक छोटा ग्राम है। इस ग्रामका पुराना नाम बड़नगर है। यहाँ गाड़रमल-मन्दिर, दशावतार-मन्दिर, सतमढ़ा मन्दिर तथा कुछ जैन-मन्दिर प्राचीन कलाके अच्छे उदाहरण हैं। ये मन्दिर अब जीर्ण दशामें हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ अनेकों मन्दिरोंके खँडहर हैं।

भेलसा

मध्य-रेलवेपर भोपालसे ३४ मील दूर भेलसा स्टेशन है। भेलसा अच्छा नगर है। यह बेतवा नदीके किनारे बसा है। नदी-तटपर अनेक देवमन्दिर हैं। इस नगरका पुराना नाम विदिशा है।

जैनतीर्थ—दसवें तीर्थंकर श्रीशीतलनाथजीका यहाँ जन्म स्थान कहा जाता है। यहाँ एक विशाल प्राचीन जैनमन्दिर है। कई और जैन-मन्दिर, चैत्यालय तथा जैन-धर्मशाला हैं।

उदयगिरि-गुफा

भेलसासे ५ मील दूर पश्चिम उदयगिरि पर्वत है। इसमें कुल मिलाकर २० गुफाएँ हैं, जिनमें दो जैन-गुफाएँ हैं और शेष सनातनधर्मी मूर्तियोंकी हैं। इन गुफाओंकी मूर्तियाँ बहुत सुन्दर हैं। इन्हीं गुफाओंमें वाराहगुफा है, जिससे भगवान् वाराहकी प्राचीन विशाल मूर्ति मिली है।

सेमरखेड़ी

यह स्थान मध्य-रेलवेकी बम्बई-दिल्ली लाइनपर भोपालसे ५८ मील दूर गंज बासोदा स्टेशन उतरकर वहाँसे सिरोंज ग्राम होकर जानेपर मिलता है। सिरोंज ग्रामसे ५ मील दूर है। यहाँ संत तारणस्वामीने तपस्या की है। तारणस्वामीका मन्दिर है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। माघ शु० ५ को उनके अनुयायी यहाँ एकत्र होते हैं।

देवपुर

(लेखक—श्रीरामस्वरूपजी श्रीवास्तव)

मध्य-रेलवेकी बम्बई-दिल्ली लाइनपर भोपालसे ५८ मील दूर गंज बासोदा स्टेशन उतरकर वहाँसे मोटर-बससे सिरोंज जाना पड़ता है। सिरोंज ग्रामसे यह स्थान लगभग ५ मील है।

गाँवके पास नीलिगिरि पर्वतपर भगवान् शङ्करका प्राचीन मन्दिर है। पर्वतपर जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। पर्वतके नीचे तीन कुण्ड है, जिनमें सदा जल भरा रहता है। यहाँ कार्तिकी पूर्णिमाको मेला लगता है।

ऐरन

गंज वासोदासे १८ मील आगे मंडी बामोरा स्टेशन है। वहाँसे ६ मीलपर यह स्थान है। कहा जाता है कि यहीं महाभारतकालीन विराटनगर था; यहाँ वाराहकी प्रतिमा, भीमकी गदा तथा अन्य प्राचीन भग्नावशेष मिलते हैं। वीना नदीके मध्यमें मन्दिर है। यहाँ रात्रिको ठहरना मना है।

साँची

भोपालसे २८ मील दूर और भेलसासे ६ मील पूर्व साँची स्टेशन है। उदयगिरिसे साँची पास ही है। यहाँ बौद्ध स्तूप हैं, जिनमें एक ४२ फुट ऊँचा है। साँचीस्तूपोंकी कला प्रख्यात है। साँचीसे ५ मील सोनारीके पास ८ बौद्ध स्तूप हैं और साँचीसे ७ मीलपर भोजपुरके पास ३७ बौद्ध स्तूप हैं। साँचीमें पहले बौद्ध विहार भी थे। यहाँ एक सरोवर है, जिसकी सीढ़ियाँ बुद्धके समयकी कही जाती हैं।

भोजपुर

(लेखक—पं० श्रीभैयालाल हरवंशजी आर्य)

यह स्थान भोपालसे कुछ दूरपर वेत्रवती नदीके तटपर है। यहाँका शिवमन्दिर राजा भोजका बनवाया हुआ है। यह मन्दिर ऊपरसे खुला है। मन्दिरमें छत नहीं है। भगवान् शङ्करकी विशाल लिङ्गमूर्ति मन्दिरमें है।

उज्जैन

अवन्तिका-माहात्म्य

महाकालः सरिच्छिप्रा गतिश्चैव सुनिर्मला।
उज्जयिन्यां विशालाक्षि वासः कस्य न रोचयेत्॥
स्नानं कृत्वा नरो यस्तु महानद्यां हि दुर्लभम्।
महाकालं नमस्कृत्य नरो मृत्युं न शोचयेत्॥
मृतः कीटः पतङ्गो वा रुद्रस्यानुचरो भवेत्॥

(स्कं० पुरा० आव० अवन्तिक्षे० माहा० २६। १७—१९)

'जहाँ भगवान् महाकाल हैं, शिप्रा नदी है और सुनिर्मल गति मिलती है, उस उज्जयिनीमें भला, किसे रहना अच्छा न लगेगा। महानदी शिप्रामें स्नान करके, जो कठिनाईसे मिलता है, तथा महाकालको नमस्कार कर लेनेपर फिर मृत्युकी कोई चिन्ता नहीं रहती। कीट या पतंग भी मरनेपर रुद्रका अनुचर होता है।'

उज्जैन

इस नगरको उज्जयिनी या अवन्तिका भी कहते हैं। इस स्थानको पृथ्वीका नाभिदेश कहा गया है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें महाकाल लिङ्ग यहीं है और ५१ शक्तिपीठोंमें यहाँ एक पीठ भी है। यहाँ सतीका कूर्पर (केहुनी) गिरा था। रुद्रसागर सरोवरके पास हरसिद्धि देवीका मन्दिर है; वहीं यह शक्तिपीठ है और मूर्तिके बदले केहुनीकी पूजा होती है। द्वापरमें श्रीकृष्ण-बलराम यहीं महर्षि सान्दीपनिके आश्रममें अध्ययन करने आये थे। उज्जयिनी बहुत वैभवशालिनी रह चुकी है। महाराज विक्रमादित्यके समय उज्जयिनी भारतकी राजधानी थी। भारतीय ज्यौतिषशास्त्रमें देशान्तरकी शून्यरेखा उज्जयिनीसे प्रारम्भ हुई मानी जाती थी। यह सप्तपुरियोंमें एक पुरी है। यहाँ १२ वर्षमें एक बार कुम्भ लगता है, जो कुछ लोगोंके मतसे सं० २०१३ में हो चुका तथा अन्य लोगोंके मतसे अगले वर्ष सं० २०१४ की भाद्री अमावस्याको पड़ेगा। कुम्भसे ६ वर्षपर अर्धकुम्भीका मेला होता है।

मार्ग

मध्यरेलवेकी भोपाल-उज्जैन और आगरा-उज्जैन लाइनें हैं तथा पश्चिमी रेलवेकी नागदा-उज्जैन और फतेहाबाद-उज्जैन लाइनें हैं। इनमेंसे किसी लाइनसे उज्जैन पहुँच सकते हैं।

ठहरनेके स्थान

उज्जैनमें यात्री पंडोंके यहाँ ठहरते हैं। यहाँ कई धर्मशालाएँ भी हैं—१-महाराज ग्वालियरकी धर्मशाला, स्टेशनके पास; २-फतेहपुरवालोंकी, शिप्राके किनारे; ३-खेमराज-श्रीकृष्णदासकी, हरसिद्धि दरवाजा।

दर्शनीय स्थान

उज्जैनके दर्शनीय स्थान हैं—१-महाकाल-मन्दिर, २-हरसिद्धि देवी, ३-बड़े गणेश, ४-गोपालमन्दिर, ५-गढ़कालिका, ६-भर्तृहरिगुहा, ७-कालभैरव, ८-सांदीपनि-आश्रम (अङ्कपाद), ९-सिद्धवट, १०-मङ्गलनाथ, ११-वेधशाला, १२-शिप्रा।

शिप्रा—उज्जैनमें शिप्रा नदी बहती है, जो अत्यन्त पवित्र मानी गयी है। कहा जाता है कि शिप्रा भगवान् विष्णुके शरीरसे उत्पन्न हुई नदी है। उज्जैन स्टेशनसे शिप्रा प्रायः डेढ़ मील दूर पड़ती है। इसपर पक्के घाट बँधे हैं, जिनमें नरसिंहघाट, रामघाट, पिशाचमोचन-तीर्थ, छत्रीघाट, गन्धर्वतीर्थ प्रसिद्ध हैं। घाटोंपर मन्दिर बने हैं। गङ्गादशहरा, कार्तिकी पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमाको मेला लगता है। बृहस्पतिके सिंहराशिमें होनेपर शिप्रास्नानका बहुत महत्त्व माना गया है। शिप्रामें गन्धर्वतीर्थसे आगे पुल बँधा है। पुलसे उसपर जानेपर दत्तका अखाड़ा, केदारेश्वर और रणजीत हनुमान्‌जीके स्थान मिलते हैं। श्मशानसे आगे (इसी पार) वीर दुर्गादास राठौरकी छतरी है। यहीं दुर्गादासकी मृत्यु हुई थी। उससे आगे ऋणमुक्त महादेव हैं।

महाकाल—उज्जैनका यही प्रधान मन्दिर है। कहा गया है—

आकाशे तारकं लिङ्गं पाताले हाटकेश्वरम्।
मृत्युलोके महाकालं लिङ्गत्रय नमोऽस्तु ते॥

महाकाल-मन्दिर स्टेशनसे लगभग १ मील दूर है। महाकाल-मन्दिरका प्राङ्गण विशाल है और सामान्य भूमिकी सतहसे कुछ नीचे है। इस प्राङ्गणके मध्यमें मन्दिर है। इस मन्दिरमें दो खण्ड हैं। प्राङ्गणकी सतहके बराबर मन्दिरका ऊपरी खण्ड है। इसमें जो भगवान् शंकरकी लिङ्गमूर्ति है, उसे ओंकारेश्वर कहा जाता है।

ओंकारेश्वरके ठीक नीचे, नीचेके खण्डमें महाकाल-लिङ्गमूर्ति है।

महाकालेश्वर-लिङ्गमूर्ति विशाल है और चाँदीकी जलहरी (अरघे) में नाग-परिवेष्टित है। इसके एक ओर गणेशजी हैं, दूसरी ओर पार्वती और तीसरी ओर स्वामिकार्तिक। यहाँ एक घृतदीप और एक तेलदीप जलता रहता है।

मन्दिरके ऊपर प्राङ्गणके दक्षिण भागमें कई मन्दिर हैं, जिनमें अनादिकालेश्वर तथा वृद्धकालेश्वर (जूने महाकाल) के मन्दिर विशाल हैं। महाकालमन्दिरके पास (नीचे) सभा-मण्डप है और उसके नीचे कोटितीर्थ नामक सरोवर है। सरोवरके आसपास छोटी-छोटी शिव-छतरियाँ हैं। पास ही देवास राज्यकी धर्मशाला है।

महाकालेश्वरके सभामण्डपमें श्रीराममन्दिर है और रामजीके पीछे अवन्तिकापुरीकी अवन्तिका देवी हैं।

बड़े गणेश—महाकाल-मन्दिरके पास ही बड़े गणेशका मन्दिर है। यह मूर्ति है तो आधुनिक, किंतु बहुत बड़ी है और बहुत सुन्दर है। उसके पास ही पञ्चमुख हनुमान्‌जीका मन्दिर है। हनुमान्‌जीकी मूर्ति सप्तधातुकी है। इस मन्दिरमें बहुत-सी देवमूर्तियाँ हैं।

हरसिद्धिदेवी—रुद्रसरोवरके पास चहारदीवारीसे घिरा यह श्रेष्ठ मन्दिर है। यही अवन्तिकाका शक्तिपीठ है। महाराज विक्रमादित्यकी आराध्या भवानी ये ही हैं। हरसिद्धिदेवीका एक स्थान सौराष्ट्रमें मूलद्वारिकासे आगे समुद्रकी खाड़ीमें पर्वतपर है। कहा जाता है कि महाराज विक्रमादित्य वहींसे देवीको अपनी आराधनाके द्वारा संतुष्ट करके अवन्तिका ले आये थे। दोनों स्थानोंमें देवीकी मूर्तियाँ एक-जैसी हैं। वस्तुतः मन्दिरमें देवीकी प्रतिमा नहीं है, मुख्यपीठपर श्रीयन्त्र है और उसके पीछे भगवती अन्नपूर्णाकी प्रतिमा है। मन्दिरके पूर्वद्वारके पास कोनेमें एक बावड़ी है, जिसके बीचमें एक स्तम्भ है। पूर्वद्वारसे लगा सप्तसागर सरोवर है।

हरसिद्धि देवीके मन्दिरके पीछे अगस्त्येश्वरका स्थान है।

चौबीस खंभा—महाकाल-मन्दिरसे बाजारकी ओर जाते समय यह स्थान मिलता है। यह एक प्राचीन द्वारका अवशेष है। यहाँ भद्रकाली देवीका स्थान है।

गोपालमन्दिर—यह मन्दिर बाजारमें है। इसमें श्रीराधाकृष्ण तथा शंकरजीकी मूर्तियाँ है। यह मन्दिर महाराज दौलतराव सिन्धियाकी महारानी बायजाबाईका बनवाया है।

गढ़कालिका—गोपालजीके मन्दिरसे यहाँ जानेका मार्ग है। नगरसे यह स्थान एक मील दूर है। कहा जाता है कि इन्हीं महाकालीकी आराधना करके कालिदास महाकवि हुए थे। महाकाली-मन्दिरके पास ही स्थिर गणेशका प्राचीन मन्दिर है। गणेशमन्दिरके सामने एक प्राचीन हनुमान्‌जीका मन्दिर है। वहीं भगवान् विष्णुकी सुन्दर मूर्ति है। पासमें ही खेतमें गौर भैरवका स्थान है। यहाँसे पास ही शिप्राका घाट है, जहाँ सतियोंके स्मारक हैं। शिप्राके उस पार श्मशान-स्थल है।

भर्तृहरिगुफा—कालिकाजीसे उत्तर लगभग दो फर्लांगपर खेतमें भर्तृहरिगुफा और भर्तृहरिकी समाधि है। एक संकुचित मार्गसे भूगर्भमें जाना पड़ता है। यह स्थान किसी प्राचीन मन्दिरका भग्नावशेष जान पड़ता है।

कालभैरव—नगरसे तीन मील दूर शिप्राकिनारे भैरवगढ़ नामक बस्ती है। यहाँ एक टीलेपर कालभैरवका मन्दिर है। भैरवाष्टमी (अगहन-कृष्ण ८) को यहाँ मेला लगता है।

सिद्धवट—कालभैरवके पूर्व शिप्रा नदीके दूसरे किनारे सिद्धवट है। वैशाखमें यहाँकी यात्रा होती है। इस वटवृक्षके नीचे नागबलि, नारायणबलि आदि कार्योंका माहात्म्य माना गया है।

अङ्कपाद (सांदीपनि-आश्रम)—गोपालमन्दिरसे लगभग दो मीलपर मङ्गलेश्वरके मार्गमें यह स्थान है। श्रीकृष्ण-बलराम तथा सुदामाने यहीं महर्षि सांदीपनिसे विद्याध्ययन किया था। यहाँ गोमती-सरोवर नामक कुण्ड है, एक उपवन है और उसमें महर्षि सांदीपनिकी गद्दी है। महर्षि सांदीपनि, उनके पुत्र तथा श्रीकृष्ण, बलराम और सुदामाकी मूर्तियाँ हैं। श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक है। पास ही विष्णुसागर और पुरुषोत्तमसागर हैं। चित्रगुप्तका पुराना स्थान भी पास ही है। अङ्कपादके पश्चिम जनार्दन-मन्दिर है।

मङ्गलनाथ—अङ्कपादके कुछ आगे टीलेपर मङ्गलनाथका मन्दिर है। पृथ्वीपुत्र मङ्गल ग्रहकी उत्पत्ति यहीं मानी जाती है। यहाँ मङ्गलवारको पूजन होता है।

वेधशाला—इसे लोग यन्त्रमहल कहते हैं। उज्जैनके दक्षिण शिप्राके दक्षिण-तटपर यह है। अब यह जीर्ण दशामें है। पहले यहाँ आकाशीय ग्रह-नक्षत्रोंकी गति

जाननेके उत्तम यन्त्र थे। कई यन्त्र अब भी हैं।

अवन्तिकाकी पञ्चक्रोशी यात्रा होती है, जिसमें पिङ्गलेश्वर, कायावरोहणेश्वर, बिल्वेश्वर, दुर्धरेश्वर और नीलकण्ठेश्वरके स्थान आ जाते हैं। ये यात्राएँ और होती हैं—

अष्टविंशतितीर्थ-यात्रा—इसमें २८ तीर्थ हैं, जो प्रायः सब-के-सब शिप्रा-तटपर हैं। उनके नाम हैं—१-रुद्रसरोवर, २-कर्कराज, ३-नरसिंहतीर्थ, ४-नीलगङ्गा, ५-पिशाचमोचन, ६-गन्धर्वतीर्थ, ७-केदारतीर्थ, ८-चक्रतीर्थ, ९-सोमतीर्थ, १०-देवप्रयाग, ११-योगतीर्थ, १२-कपिलाश्रम, १३-घृतकुल्या, १४-मधुकुल्या, १५-औखरतीर्थ, १६-कालभैरव, १७-द्वादशार्क, १८-दशाश्वमेध, १९-अङ्गारकतीर्थ, २०-खर्गता-संगम, २१-ऋणमोचन-तीर्थ, २२-शक्तिभेद-तीर्थ, २३-पापमोचन-तीर्थ, २४-व्यास-तीर्थ, २५-प्रेतमोचन-तीर्थ, २६-नवनदा-तीर्थ, २७-मन्दाग्नि-तीर्थ, २८-पैतामह-तीर्थ।

महाकाल-यात्रा—यह रुद्रसागरसे प्रारम्भ होती है। इसमें आनेवाले देवता ये हैं—कोटेश्वर, महाकाल, कपाल-मोचन, कपिलेश्वर, हनुमदीश्वर, पैप्पलाद्य, स्वप्नेश्वर, विश्वतोमुख, सोमेश्वर, वैश्वानरेश्वर, लकुलीश, गद्यानेश्वर, विघ्नविनायक, वृद्धकालेश्वर, विघ्नविनाशक, प्राणीशबल, तनयेश्वर, दण्डपाणि, गृहेश्वर, महाकाल, दुर्वासेश्वर, कालेश्वर, बाधिरेश्वर, और मात्रीश्वर।

क्षेत्रयात्रा—शङ्खोद्धारक्षेत्र (अङ्कपादमें), विश्वरूपक्षेत्र (सिंहपुरीमें), माधवक्षेत्र (अङ्कपादमें), चक्रपाणितीर्थ (शिप्रातट) और अङ्कपाद।

नगरप्रदक्षिणा—इसमें मुख्य पाँच नगरधिष्ठातृ-देवियाँ आती हैं—पद्मावती, स्वर्णशृङ्गा, अवन्तिका, अमरावती और उज्जयिनी।

नित्ययात्रा—शिप्रास्नान, नागचण्डेश, कोटेश्वर, महाकाल, अवन्तिकादेवी, हरसिद्धिदेवी तथा अगस्त्येश्वरके दर्शन।

द्वादशयात्रा—१-गुप्तेश्वर, २-अगस्त्येश्वर, ३-ढुण्ढेश्वर, ४-डमरुकेश्वर, ५-अनादिकल्पेश्वर, ६-सिद्धेश्वर, ७-वीरभद्रादेवी, ८-स्वर्णजालेश्वर, ९-त्रिविष्टपेश्वर, १०-कर्कोटेश्वर, ११-कपालेश्वर, १२-स्वर्गद्वारेश्वर। यह यात्रा पिशाचमोचन-तीर्थसे प्रारम्भ करनी चाहिये।

सप्तसागर-यात्रा—रुद्रसागर (हरसिद्धिके पास), पुष्करसागर (नलिया बाखल), क्षीरसागर (डाबरी), गोवर्धनसागर (बुधवारी), रत्नाकरसागर (उँडासेगाँव), विष्णुसागर और पुरुषोत्तमसागर (अङ्कपाद)।

अष्टमहाभैरव—दण्डपाणि (देवप्रयागके पास), विक्रान्ति भैरव (औखरेश्वरके पास), महाभैरव (सिंहपुरी), क्षेत्रपाल (सिंहपुरी), वटुकभैरव (ब्रह्मपोल), आनन्दभैरव (मल्लिकार्जुनपर) गौरभैरव (गढ़पर), कालभैरव (भैरवगढ़)।

एकादश रुद्र—कपर्दी (तिलभाण्डेशके पास), कपाली (ब्रह्मपोल), कलानाथ (औखरेश्वरपर), वृषासन (महाकालमें), त्र्यम्बक (औखरेश्वरपर), शूलपाणि (महाकालमें), चीरवासा (महाकालमें), दिगम्बर (जाटके कुएँपर), गिरीश (कालिका-मन्दिर), कामचारी (वृन्दावनपुरा), शर्व (सर्वाङ्गभूषण-तीर्थपर)।

देवी-स्थान—एकानंशा (सिंहपुरीमें), भद्रकाली (चौबीसखंभा), अवन्तिका (महाकालमें), नवदुर्गा (अबदलपुरा), चतुःषष्टि योगिनी (नयापुरा), विन्ध्यवासिनी (गढ़पर), वैष्णवी (सिंहपुरी), कपाली (जोगीपुरा), छिन्नमस्ता (अबदलपुरा), वाराही (कार्तिकचौक), महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती (कार्तिकचौक, एक ही मन्दिरमें)।

शिवलिङ्ग—महाकालवन (अवन्तिकाक्षेत्र) में असंख्य शिवलिङ्ग माने जाते हैं। उनमेंसे ८४ मुख्यलिङ्ग हैं और वे अवन्तिकाके विभिन्न स्थानोंमें स्थित हैं।

चित्रगुप्त-तीर्थ (उज्जैन)

(लेखक—श्रीकृष्णगोपालजी माथुर)

अवन्तिकापुरीमें कायस्थोंके परमाराध्यदेव चित्रगुप्तजीका प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर अवन्तिकापुरीकी पञ्चक्रोशी परिक्रमाके पास कायथा नामक गाँवमें है। मन्दिरके पास एक चबूतरा है। कहा जाता है कि वहाँ चित्रगुप्तजीने यज्ञ किया था।

अङ्कपाद (सांदीपनि-आश्रममें भी) दोनों रानियों तथा बारह पुत्रोंसहित चित्रगुप्तजीकी मूर्ति विद्यमान है। यह मन्दिर अङ्कपादके समीपके खेतके पास है। इसमें

अवन्तिकापुरीकी एक झलक

श्रीमहाकाल-मन्दिर

श्रीहरसिद्धि देवीका मन्दिर

गढ़की कालिका

शिप्राघाट

श्रीसिद्धनाथ

श्रीमङ्गलनाथ

उज्जैन तथा धारके कुछ पवित्र स्थल

सांदीपनि-आश्रम, उज्जैन

श्रीकालभैरव-मन्दिर, उज्जैन
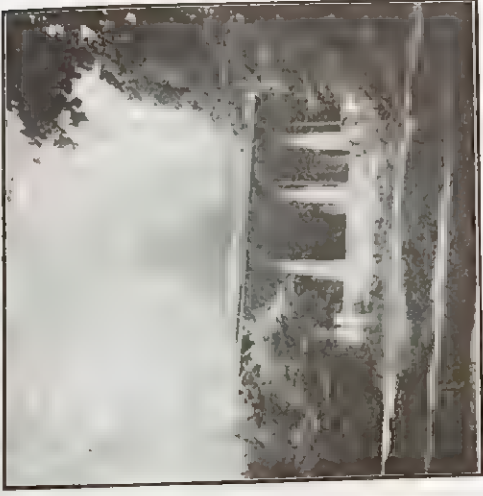
गोमती-कुण्ड, उज्जैन

श्रीमहाकाली-मन्दिर, उज्जैन

चित्रगुप्तजीका प्राचीन मन्दिर, उज्जैन
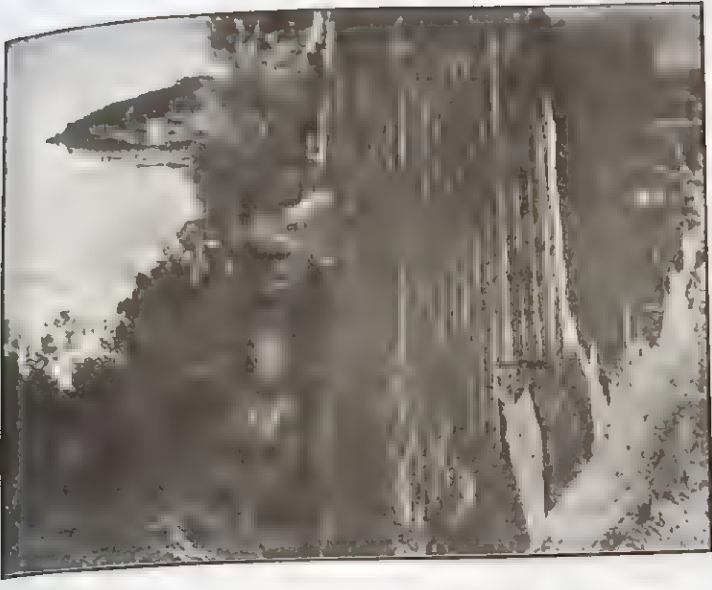
श्रीजयहृदयेश्वर महादेव, धार

काले पत्थरकी एक शिला है, जिसपर एक ओर दोनों रानियों तथा बारह पुत्रोंसहित चित्रगुप्तजीकी मूर्ति अङ्कित है और दूसरी ओर यमराजकी मूर्ति उत्कीर्ण है। यहाँ यमद्वितीयाको मेला लगता है।

जैन-तीर्थ

अवन्तिकापुरीका उज्जैन या उज्जयिनी नाम यहाँ जैनशासनके समयमें ही पड़ा। यह अतिशय क्षेत्र माना जाता है। चौबीसवें तीर्थंकर महावीरस्वामीने यहाँके श्मशानमें तपस्या की थी। श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी यहाँ विचरे हैं। यहाँ जैन-मूर्तियोंके भग्नावशेष कई स्थानोंपर मिलते हैं। स्टेशनसे दो मीलपर नमक-मंडीमें जैन-मन्दिर और जैन-धर्मशाला है। नयापुरामें भी एक जैन-मन्दिर है।

(श्रीघनश्यामदास देवड़ा, बी०काम०, विशारदके लेखसे सहायता ली गयी है।)

निष्कलङ्केश्वर

(लेखक—श्रीप्रेमसिंहजी ठाकुर)

उज्जैनसे १० मीलपर निकलङ्क ग्राममें यह शिव-मन्दिर है। ताजपुर स्टेशनसे यहाँ पैदल आना पड़ता है।

मन्दिरमें दो सीढ़ी नीचे भगवान् शंकरकी पञ्चमुख मूर्ति है। समीप ही पार्वतीजीकी मूर्ति है। मन्दिरके द्वारपर गणेशजी तथा सम्मुख नन्दीकी प्रतिमा है।

यह मन्दिर बहुत प्राचीन है। पूरे मन्दिरकी भित्तिपर बहिर्भागमें देवमूर्तियाँ बनी हैं। मन्दिरके समीप ही एक सरोवर है। यहाँ कुछ समाधियाँ हैं। पास ही धर्मशाला है। श्रावणमें सोमवारको विशेष यात्री आते हैं।

करेडी माता

सम्भवतः इनका शुद्ध नाम कनकावती देवी है। आगरा-बम्बई रोडपर स्थित शाजापुर नगरसे यहाँ आना सुविधाजनक है। यहाँपर करेडी गाँवमें अष्टभुजा देवीका मन्दिर है। कहा जाता है कि छत्रपति शिवाजी महाराजने इनकी अर्चना की थी। स्वप्नमें देवीजीने शिवाजीको मुकुट पहनाया था।

होलिकोत्सवके पश्चात् रङ्गपञ्चमी बीत जानेपर जो प्रथम मङ्गलवार पड़ता है, उस दिन यहाँ मेला लगता है। मन्दिरके आसपास प्राचीन भग्नमूर्तियाँ बहुत मिलती हैं। मन्दिरके समीप सरोवर है।

इस स्थानसे दस-बारह मीलकी दूरीपर एक ओर उज्जैनकी कालिका देवी और दूसरी ओर देवासकी भगवती हैं। देवासकी भगवती, उज्जैनकी कालिका तथा करेडीकी इन अष्टभुजाके दर्शनकी यात्रा 'त्रिकोण यात्रा' कही जाती है। क्रमशः ये कौशिकी, कात्यायनी और चण्डिकाका स्वरूप मानी जाती हैं।

बैजनाथ महादेव

उज्जैनसे उत्तर ओर आगर एक प्राचीन कस्बा है। आगरसे ईशानकोणमें बैजनाथ महादेवका मन्दिर डेढ़ मीलपर है। यह मन्दिर तो उन्नीसवीं शताब्दीका बना है, किन्तु बैजनाथलिङ्ग अत्यन्त प्राचीन है।

पुराने कागजोंसे पता लगता है कि यहाँ कोई बेट बैजनाथ खेड़ा था। उसमें यह शिव-मन्दिर था, किन्तु वह गाँव नष्ट हो गया। आसपास घोर वन हो गया। मन्दिरके पास बाणगङ्गा नामक छोटी-सी नदी थी, जो अब भी है।

सन् १८८० की बात है। काबुलका युद्ध चल रहा था। कर्नल मार्टिन युद्धमें गये थे। उनका कोई पत्र न मिलनेसे मिसेज मार्टिन बहुत उद्विग्न थीं। वे अपने

बँगलेसे घूमने निकलीं। एक छोटे-से भग्नप्राय मन्दिरमें कुछ लोग शंकरजीकी पूजा कर रहे थे। मिसेज मार्टिनने उन लोगोंसे बातें कीं और उनकी बातोंसे प्रभावित होकर कहा—मेरे पतिका कुशल-समाचार मिल जाय और वे सकुशल लौट आयें तो मैं मन्दिर बनवा दूँगी।'

ग्यारहवें दिन कर्नल मार्टिनका पत्र आ गया। उसमें लिखा था—'एक जटा-दाढ़ीवाला भयंकर पुरुष हाथमें त्रिशूल लिये बैलपर बैठा मुझे बार-बार दीखता है। वह कठिनाइयोंमें मेरी रक्षा करता है।'

कर्नल मार्टिनके युद्धसे लौट आनेपर मिसेज मार्टिनने उनसे सब बातें कहीं। कर्नलने चंदा कराया और श्रीबैजनाथका विशाल मन्दिर सन् १८८३ में बना।

महिदपुर

महिदपुर नगर (मालवा) से एक मीलपर किलेके सामने एक टीलेपर श्रीदेवीका एक प्राचीन मन्दिर है। देवीकी मूर्ति श्यामवर्ण चतुर्भुज है। उनके करोंमें शङ्ख, गदा तथा ढाल है। इस मूर्तिकी यह विशेषता है कि उसके मस्तकपर जलहरीसहित शिवलिङ्ग है। शिवलिङ्गके ऊपर नागफण भी है। यह मन्दिर शिप्राके तटपर है। आश्विन-नवरात्रमें यहाँ विशेष समारोह होता है।

भूतेश्वर

(लेखक—भागवतरत्न पं० श्रीशम्भूलालजी द्विवेदी)

मध्यभारतमें कालीसिंध (कृष्णासिंधु) नदीके किनारे सोनकच्छ (स्वर्णकच्छ) नगर है। उज्जैनसे यहाँ जा सकते हैं। इस नगरमें पिप्पलेश्वर महादेवका प्राचीन मन्दिर है। इस तीर्थमें स्नान कृच्छ्रचान्द्रायणके समान पुण्यप्रद है।

सोनकच्छसे भूतेश्वर १८ मील है। यहाँ भूतेश्वरका मनोहर मन्दिर है, जिसमें स्वयम्भू-लिङ्ग भूतेश्वर विराजमान हैं। कार्तिकी पूर्णिमापर यहाँ विशेष समारोह होता है। अन्य पर्वोंपर भी दूर-दूरके यात्री आते हैं। यह मन्दिर भी कालीसिंधके किनारे है।

इस स्थानसे आगे सप्तस्रोत तीर्थ है। वहाँ सात धाराओंका संगम हुआ है। उस स्थानपर सप्तेश्वर महादेवका स्थान है। तटके ऊपर शेषनारायणका मन्दिर और नवग्रहमन्दिर भी हैं।

शोणितपुर

(लेखक—श्रीभैयालालजी कायस्थ)

मध्य-रेलवेमें इटारसीसे ३० मीलपर सोहागपुर स्टेशन है। इसके पास ही शोणितपुर है। यहाँपर भगवान् नृसिंहका प्राचीन मन्दिर है।

कहा जाता है यह शोणितपुर बाणासुरकी राजधानी थी। श्रीकृष्णचन्द्रके पौत्र अनिरुद्धका विवाह बाणासुरकी पुत्री ऊषासे हुआ था। इस विवाहके पूर्व बाणासुरका श्रीकृष्णचन्द्रसे युद्ध हुआ, जिसमें भगवान् शंकरने बाणासुरके पक्षसे युद्ध किया था।

शोणितपुरसे कुछ दूर नर्मदा-किनारे ब्रह्माण्डघाट है। यहाँ वाराहभगवान्‌की मूर्ति है। कुछ दूरीपर वाराह-गङ्गा हैं।

पचमढ़ी—शोणितपुरके पास ही पचमढ़ीमें जटाशंकर महादेव हैं। यह मूर्ति एक गुफामें है। कहा जाता है कि हिरण्यकशिपु इन जटाशंकर शिवकी ही आराधना करता था।

नागद्वारी—जिस गुफामें जटाशंकर लिङ्ग है, उसी गुफासे नागलोकको मार्ग गया बतलाते हैं। गुफामें जल भरा रहता है। गुफामें बड़े-बड़े सर्प मिलते हैं, किन्तु वे किसीको हानि नहीं पहुँचाते। गुफामें अन्धकार है, प्रकाश लेकर लोग कुछ दूरतक गुफामें जाते हैं।

तप्त-कुण्ड अनहोनी

(लेखक—श्रीजगन्नाथप्रसाद रामरतनजी)

मध्य रेलवेकी इटारसी-इलाहाबाद लाइनपर इटारसीसे ४१ मीलपर पिपरिया स्टेशन है। इस स्टेशनसे लगभग ८ मील पक्की सड़कसे जानेपर २ मील कच्चा मार्ग मिलता है। इस कुण्डका जल खौलता रहता है। उसमें चावल पक जाता है। कुण्डके पास शङ्करजीका मन्दिर है। यह स्थान जंगलमें है। कार्तिकी पूर्णिमा और मकर संक्रान्तिपर मेला लगता है। इस कुण्डसे अनहोनी नामक नदी निकली है।

झोंतेश्वर

(लेखक—पं० श्रीशोभारामजी पाठक, काव्य-व्याकरण-पुराण-तीर्थ)

इस स्थानका वास्तविक नाम ज्योतिरीश्वर है। गोटेगाँव स्टेशनसे यह ६ मील आग्नेय कोणमें वनमें है। यहाँ वसन्तपञ्चमीको मेला लगता है। भगवान् शंकरकी दो लिङ्गमूर्तियाँ हैं। ये एक पक्के चबूतरेपर स्थापित हैं। पास कुछ और मूर्तियाँ हैं। दक्षिण ओर माता पार्वतीकी मूर्ति है।

गौरीशंकर-तीर्थ

(लेखक—श्रीगयाप्रसादजी कुरेले)

सिहोरा तहसीलके मझगवाँ कस्बेसे ५ मील दूर हिरन नदीके तटपर सकुली ग्रामसे एक मील दूर यह क्षेत्र है। यहाँ गौरीशंकरजीका मन्दिर है। यहाँ अनेक साधकोंने प्राचीन कालमें साधनाएँ की हैं। इस युगमें यह मन्त्र-साधनके लिये सिद्ध क्षेत्र माना जाता है।

मझौली

(लेखक—पं० श्रीबेनीप्रसादजी द्विवेदी तथा श्रीकन्हैयालालजी हयारण)

मध्यरेलवेकी इटारसी-इलाहाबाद लाइनपर सिहोरा रोड स्टेशन है। यह स्टेशन जबलपुरसे ३४ मीलपर है। सिहोरा नगरसे गुबरा जानेवाली मोटर-बस लाइनपर सिहोरासे १२ मीलपर मझौली ग्राम है।

मझौलीमें भगवान् वाराहका मन्दिर प्रसिद्ध है। यह अत्यन्त प्राचीन मन्दिर है। मन्दिरमें एक ही पत्थरमें सिंहासन तथा मूर्ति बनी है। भगवान् वाराहकी मूर्ति लगभग ढाई गज ऊँची है। वाराहभगवान्‌के शरीरमें सर्वत्र विभिन्न देवताओंकी मूर्तियाँ अङ्कित हैं। यह सर्वदेवमयी श्वेतवाराहकी मूर्ति इधर बहुत प्रतिष्ठित है। मन्दिरमें और भी अनेकों देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ माघ शु० १० से ७ दिनतक मेला लगता है। कहा जाता है कि नरीला तालाबमें, जो पास ही है, एक धीवरके जालमें एक छोटी वाराहमूर्ति आयी। वही मूर्ति बढ़ते-बढ़ते हाथीके बराबर हो गयी है।

यहाँसे लगभग १२ मीलपर उत्तर और रूपनाथ-स्थान है। यहाँ तीन कुण्ड हैं तथा गुफामें रूपनाथ महादेवकी लिङ्गमूर्ति है।

ऋषभतीर्थ

(लेखक—पं० श्रीत्रिलोचनप्रसादजी पाण्डेय)

यह स्थान पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-नागपुर लाइनपर रायगढ़से ३० मील एवं शक्ति स्टेशनसे १४ मील दूर है। इस स्थानका नाम गुंजीग्राम था; किन्तु अब सरकारने इसका नाम ऋषभतीर्थ स्वीकार कर लिया है।

इस तीर्थका पता हालमें ही एक शिलालेखसे लगा है, जो इसी स्थानपर है। महाभारतमें दक्षिण कोसलके इस ऋषभतीर्थका उल्लेख है। यहाँ एक कुण्ड है, जिसमें शिवरात्रि तथा दूसरे पुण्य-पर्वोंपर स्नान करने आसपासके लोग आते हैं।

पद्मपुर

उपर्युक्त लाइनके चाँपा स्टेशनसे यह गाँव लगभग ५ मील है। यहाँ एक शिवमन्दिर है। फाल्गुन-पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है। प्राचीन समयमें किसी भक्तके पेटमें भयंकर दर्द होता था। औषध करनेपर भी जब दर्द न गया, तब यहाँ वह धरना देकर पड़ गया। शङ्करजीकी कृपासे उसका दर्द दूर हो गया। कहा जाता है कि तबसे यहाँ पूर्णिमाको पूजन करनेवालेके पेटका दर्द दूर हो जाता है।

तुरतुरिया

(लेखक—महंत श्रीराधिकादासजी)

हबड़ा-नागपुर लाइनपर बिलासपुरसे २९ मील आगे भाटापार स्टेशन है। स्टेशनसे २७ मील मोटर-बसद्वारा लवन-नामक स्थानपर आना पड़ता है। लवनसे पैदल या बैलगाड़ीसे तुरतुरिया १२ मील पड़ता है। यहाँ माघ-पूर्णिमाको मेला लगता है।

यह स्थान पहाड़ोंके बीचमें है। एक छोटा मन्दिर है, जिसमें महर्षि वाल्मीकि तथा श्रीराम-लक्ष्मणकी मूर्तियाँ हैं। उसके सामने एक मन्दिरमें लव-कुशकी युगल-मूर्ति है। वहीं पर्वतके ऊपर एक मन्दिरमें वाल्मीकिमुनि तथा सीताजीकी मूर्तियाँ हैं, किन्तु पर्वतपर हिंसक पशुओंका भय होनेसे कम लोग ही जाते हैं।

मन्दिरके पास पर्वतमें एक गोमुख बना है। उससे जल निकलता रहता है। इस जलसे बने नालेको लोग सुरसुरी नदी कहते हैं। इधरके लोगोंकी मान्यता है कि महर्षि वाल्मीकिका आश्रम यहीं था।

शबरीनारायण

(लेखक—श्रीकौशलप्रसादजी तिवारी)

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-नागपुर लाइनपर विलासपुर छत्तीस गढ़का प्रसिद्ध नगर और स्टेशन है। विलासपुरसे शबरीनारायण ४० मील दूर है। विलासपुरसे मोटर-बस भी जाती है। शबरीनारायणमें ठहरनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं। माघ-पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है।

यहाँका मुख्य मन्दिर भगवान् नारायणका है। इसमें भगवान् नारायणकी चतुर्भुज मूर्ति है। कहा जाता है कि यह मन्दिर शबरजातिद्वारा बनाया गया है।

शबरीनारायण बस्ती महानदीके किनारे है। इस नदीका प्राचीन नाम चित्रोत्पला है। नदीके पास ही शबरीनारायण-मन्दिर है। उसके पास श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर है। शबरीनारायण-मन्दिरके सामने केशवनारायण-मन्दिर है, किन्तु प्राचीन मन्दिर गिर जानेसे अब एक छतरी ही बच रही है। पास ही प्राचीन चन्द्रचूड़-मन्दिर है। इसकी स्थापत्यकला उत्तम है। बगलमें श्रीराम-मन्दिर है।

शबरीनारायणसे कुछ दूर हनुमान्‌जीका मन्दिर है। उस स्थानको जनकपुर कहते हैं।

खरौद—शबरीनारायणसे दो मीलपर खरौद नामक स्थान है। यहाँ लक्ष्मणेश्वर-शिवमन्दिर है। इसमें स्वयम्भू मूर्ति है। कुछ लोग इसे खर-दूषणका स्थान कहते हैं।

पैसर—शबरीनारायणसे लगभग ९ मील दूर यह गाँव महानदीके तटपर है। कहा जाता है कि भगवान् श्रीरामने दण्डकारण्य जाते समय इसी स्थानपर महानदी पार की थी। यहाँपर अब भी उसके स्मृतिचिह्न हैं।

छत्तीसगढ़के दो तीर्थ

(लेखक—वेदान्तभूषण पं० श्रीरामकुमारदासजी रामायणी)

राजिम—पूर्वी रेलवेमें रायपुरसे राजिमतक एक लाइन जाती है। रायपुरसे राजिम २८ मील है। रायपुरसे मोटर-बसका भी मार्ग है। यहाँ महानदीमें दो नदियाँ पैरी और सोट मिलती हैं। इससे इसे त्रिवेणी कहा जाता है। यहाँ राजीवलोचनभगवान्‌का प्राचीन मन्दिर है। मन्दिरमें भगवान् नारायणकी चतुर्भुज मूर्ति है। मन्दिरके भीतर ही दशावतार तथा बालमुकुन्दजीके मन्दिर हैं। राजिम बस्तीमें २२ मन्दिर हैं। त्रिवेणी-संगमपर कुलेश्वर-शिवमन्दिर है। यह मन्दिर विशाल है। कहा जाता है कि इसकी मूर्ति श्रीजानकीजीद्वारा स्थापित है। पासमें एक झरना है। पासमें धौम्य ऋषिका आश्रम है। यहाँ कई जैन-मन्दिर भी हैं।

राजिम छत्तीसगढ़का मुख्य तीर्थ है। जगन्नाथपुरीसे लौटे यात्री प्रायः राजिम जाते हैं। यहाँके राजीवलोचन-मन्दिर, कुलेश्वर शिव-मन्दिर तथा जीर्णदशामें स्थित श्रीराम-मन्दिर शिल्प-कलाके भव्य प्रतीक हैं।

पीथमपुर—पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-नागपुर लाइनपर रामगढ़से ४९ मील पूर चाँपा स्टेशन है। चाँपासे पीथमपुर पैदल या बैलगाड़ीसे जाना पड़ता है। यहाँ 'हसदो' नदीके किनारे भगवान् शङ्करका विशाल मन्दिर है। शिवरात्रिके समय मेला लगता है। यह मेला १५ दिन रहता है।

रतनपुर

(लेखक—श्रीगोकुलप्रसादजी थवाइत)

बिलासपुरसे १० मील दूर कटनी-बिलासपुर लाइनपर घुटकू स्टेशन है। घुटकूसे रतनपुरके लिये मार्ग जाता है। यह स्थान दुल्हरा नदीके तटपर है। माघ-पूर्णिमाको मेला लगता है।

रतनपुर छत्तीसगढ़की पुरानी राजधानी है। इस समय तो यहाँ किलेके पास सती-मन्दिर है। वहाँ राजा लक्ष्मणसिंहकी बीस रानियाँ सती हुई थीं; किन्तु कहा जाता है कि यही राजा मयूरध्वजकी राजधानी है। राजा मयूरध्वजने अतिथिको संतुष्ट करनेके लिये अपना शरीर आरेसे चिरवाया। अतिथिरूपमें पधारे भगवान्‌ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिये।

रतनपुरको छोटी काशी भी कहते हैं। यहाँ पहाड़ीके नीचे बृहदीश्वर शिव-मन्दिर तथा महाकालीका मन्दिर है। रतनपुर किलेमें प्रथम द्वारपर भैरवमूर्ति है। सामने एक कुण्ड है। वहाँसे आध मील पश्चिम लक्ष्मी-मन्दिर है। यह मन्दिर पर्वतपर है। लगभग एक डेढ़ मील दूर महामाया भगवतीका मन्दिर है। यह प्राचीन मन्दिर कलापूर्ण है। सामने सरोवर है। उसके दूसरे तटपर शिवमन्दिर है। थोड़ी दूरपर एक बीस द्वारका बड़ा शिवमन्दिर है। किलेमें श्रीलक्ष्मी-नारायण मन्दिर है। वहीं जगन्नाथजीका भी मन्दिर है। यह मूर्ति पुरीसे आयी है। बाँढ़ा पहाड़ीपर विशाल रामन्दिर है। इसकी श्रीराममूर्ति सरोवरसे मिली है। इसके पास ही हनुमान्-मन्दिर है।

पालना

(लेखक—पं० श्रीघनश्यामप्रसादजी शर्मा)

रतनपुरसे ईशानकोणमें १५ मील दूर यह गाँव है। यहाँ भगवान् शङ्करका प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर छत्तीसगढ़का सबसे सुन्दर मन्दिर कहा जाता है। पूरे मन्दिरमें नाना प्रकारकी मूर्तियाँ बनी हैं। प्राचीन कलाका यह उत्कृष्ट नमूना है।

बस्तर

रायपुरसे ही बस्तर जाना पड़ता है। रायपुरसे बस्तर जानेके लिये सवारी मिलती है। बस्तरके पास शङ्खिनी एवं डाकिनी नदियोंका संगम है। इनके संगमपर दन्तेश्वरी देवीका मन्दिर है। यह देवी-मन्दिर इस ओर बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ नवरात्रमें दूर-दूरके यात्री आते हैं।

सकलनारायण

(लेखक—श्रीलक्ष्मीनारायणजी)

बस्तर जिलेकी तहसील भोपाल-पटनम्से लगभग ६ मील दूर पेद्दामाटूर ग्राम है। उसके पास ही यह तीर्थ है। ग्रामके पास चितवांगू नदी है। नदीके पास एक छोटे मन्दिरमें भगवान् विष्णुकी मूर्ति है। यह मूर्ति प्राचीन है और सुन्दर है। नदीमें स्नान करके विष्णुभगवान्के दर्शन करके तब यात्री पासके पर्वतपर चढ़ते हैं। पर्वतपर एक गुफा है, जिसमें अन्धकार रहता है। गुफाके अंदर पानीका झरना बहता रहता है। प्रकाश लेकर भीतर जाना पड़ता है। सुरंगमें एक स्थानपर मार्ग इतना संकीर्ण है कि लेटकर भीतर जाना पड़ता है। भीतर सीताजी, बलरामजी तथा लक्ष्मणजीकी छोटी मूर्तियाँ हैं। यहाँ मूर्ति श्रीकृष्णकी है, जिन्हें सकलनारायण कहते हैं। यह श्रीकृष्णमूर्ति पहली गुफासे लौटकर ५० सीढ़ी ऊपर जानेपर दूसरी गुफामें एक चबूतरेपर प्रतिष्ठित है। एक गायकी मूर्तिके सहारे श्रीकृष्णचन्द्र खड़े हैं। मूर्ति गोवर्धनधरणकी है। पासमें गोपोंकी भी मूर्तियाँ हैं। यहाँ चैत्रशुक्ला प्रतिपदाको सात दिनतक बड़ा भारी मेला लगता है। इस ओर यह तीर्थ बहुत प्रसिद्ध है।

विशालतम शिवलिङ्ग

यह शिवलिङ्ग गरियाबंद (रायपुरसे जाते हैं) से डेढ़ मील बभनी डोंगरीके मार्गपर जंगलोंके बीच है। इसकी ऊँचाई ४० फुट, घेरा प्रायः १५० फुट तथा वजन हजारों टन होगा। प्रतिमा प्राकृतिक तथा अनादि है। इसका पता हालमें ही लगा है।

चम्पकारण्य

(लेखक—श्री बी०जे० कोटेचा)

रायपुरसे ७३ मीलपर नवापारा रोड है। नवापारासे ७ मील चम्पारण्य है। रायपुरसे राजिमतक मोटर-बस भी चलती है और ट्रेन भी चलती है। नवापारा रोड स्टेशन है। वहाँ दो धर्मशालाएँ हैं। वहाँसे आगे पैदल या बैलगाड़ीमें जाना पड़ता है।

चम्पकारण्यमें महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीका जन्म

हुआ था। उस समय उनके माता-पिता दक्षिणसे काशी तीर्थयात्रा करने जा रहे थे। मार्गमें ही महाप्रभुका जन्म हुआ। यहाँपर महाप्रभुकी छठी बैठक भी है। बैठकके पास भगवान् शंकरका मन्दिर है। चैत्रकृष्णा एकादशीको मेला लगता है। इस वनमें जूता पहनकर नहीं जाया जाता।

डोंगरेश्वर

(लेखक—पं० श्रीपरशुरामजी शर्मा पाण्डेय)

रायपुरसे मोटर-बसद्वारा पांडातराई जानेपर वहाँसे १॥ मील पैदल जाकर फोंक नदीके किनारे डोंगरिया गाँव पहुँचते हैं। वहीं डोंगरेश्वर हैं। यह मूर्ति नदीमें पायी गयी थी। एक ही पत्थरमें जलहरी तथा शिवलिङ्ग है। एक विशाल शिला नदीमें है, जो लगभग ५० गज चौड़ी है। शिलाके दोनों सिरे नदीमें कितनी दूर दोनों किनारोंकी ओर गये हैं और शिला कितनी पृथ्वीमें नीचे है, यह खोदनेपर भी पता नहीं लगा। इसी शिलाके ऊपरी भागमें जलहरी तथा शिवलिङ्ग बना है। इस मूर्तिके ऊपरसे नदीका जल बहता रहता है। पासमें एक धर्मशाला है। महाशिवरात्रिपर मेला लगता है।

भोरमदेव

यहाँके लिये रायपुर या बिलासपुरसे मोटर-बसद्वारा कवर्धा जाकर ९ मील पैदल चलना पड़ता है। यहाँ शंकरजीका विशाल मन्दिर है। चैत्रकृष्णा १३ को मेला लगता है। इस स्थानकी प्रतिष्ठा राजा ब्रह्मदेवके द्वारा हुई है। मन्दिरके पास एक सरोवर है।

रायपुरके समीपवर्ती चार तीर्थ

(लेखक—बाबा चीनीदासजी)

नरसिंह-क्षेत्र

पूर्वी रेलवेकी रायपुर विजयानगरम् लाइनपर रायपुरसे ७३ मील दूर नवापारा रोड स्टेशन है। वहाँसे २२ मीलपर यह तीर्थ है। स्टेशनसे नवापारा और वहाँसे पाइकमालातक बस-सर्विस है। आगे केवल डेढ़ मील मार्ग रह जाता है। यहाँ धर्मशाला है।

यहाँ मुख्य मन्दिर श्रीनृसिंहभगवान्का है। उसके अतिरिक्त यहाँ शंकरजीका और जगन्नाथजीका भी मन्दिर है। ये मन्दिर यहाँकी धाराके किनारे हैं। यहाँ वैशाख-पूर्णिमाको मेला लगता है।

हरिशंकर

इस स्थानसे १२ मील दूर पर्वतपर हरिशंकरजीका मन्दिर है। वहाँसे कपिलधारा, पाण्डवधारा, गुप्तधारा, भीमधारा तथा चालधारा—ये पाँच धाराएँ निकलती हैं। इनमें पाँचवीं धाराके नीचे गोकुण्ड है।

इनमें कपिलधाराका प्रवाह प्रखर है। पाण्डवधाराके पास पर्वतमें पाण्डवोंकी ऊँची मूर्तियाँ चट्टानमें बनी हैं। गुप्तधारा सीताकुण्डमें है। यह कुण्ड चट्टानमें बना है। इसका जल गरम रहता है। भीमधारा ४० फुट ऊपरसे गिरती है। चालधाराके नीचे अथाह जल है। बाँसकी चाल बनाकर इसमें स्नान होता है। गोकुण्डमें आसपासके लोग बच्चोंके मुण्डनके केश प्रवाहित करते हैं।

हरिशंकरजी जानेके लिये नवापारा रोडसे १८ मील आगे हरिशंकर-रोड स्टेशन है। वहाँसे हरिशंकरजीका स्थान चार मील उत्तर है।

गोघस क्षेत्र

नवापारासे यह स्थान १६ मील है। केवल पैदल मार्ग है। पर्वतके ऊपर शंकरजीकी विशाल लिङ्गमूर्ति है। आसपास कई और शिवलिङ्ग हैं। वैशाख-पूर्णिमाको मेला लगता है।

यहाँका मुख्य शिवलिङ्ग एक गुफामें है। उसी गुफासे जोग नदी निकलती है। इस नदीमें ३ मीलके भीतर ६ दर्रे हैं, जिनमें एक त्रिशूल दर्रा है। वहाँ डेढ़ मनका त्रिशूल है, जो अब दो टुकड़ोंमें है।

खलारी

रायपुर-विजयानगरम् लाइनपर रायपुरसे ४६ मील दूर भीमखोज स्टेशन है। वहाँसे यह स्थान १ मील दूर है। यहाँ चैत्र-पूर्णिमापर तीन दिन मेला रहता है।

पहाड़के ऊपर दुर्गाजीका मन्दिर है। उन्हें खलारी माता कहते हैं। पर्वतका घेरा आध मीलसे कुछ अधिक है। यात्री पर्वतकी परिक्रमा करते हैं। पर्वतसे नीचे जहाँ मेला लगता है, वहाँ दुर्गाजी, जगन्नाथ तथा श्रीरामके मन्दिर हैं।

पर्वतके आसपास लगभग १२० तालाब हैं।

नर्मदातटके तीर्थ

नर्मदा-माहात्म्य

पुण्या कनखले गङ्गा कुरुक्षेत्रे सरस्वती।
ग्रामे वा यदि वारण्ये पुण्या सर्वत्र नर्मदा॥
त्रिभिः सारस्वतं पुण्यं सप्ताहेन तु यामुनम्।
सद्यः पुनाति गाङ्गेयं दर्शनादेव नार्मदम्॥

(पद्मपु० आदि० स्वर्ग० १३। ६-७)

'गङ्गा हरद्वारमें तथा सरस्वती कुरुक्षेत्रमें अत्यन्त पुण्यमयी कही गयी हैं, किन्तु नर्मदा तो—चाहे गाँवके बगलसे बह रही हों या जंगलोंके बीच सर्वत्र पुण्यमयी ही हैं। सरस्वतीका जल तीन दिनोंमें, यमुनाका एक सप्ताहमें तथा गङ्गाका जल तुरन्त छूते-न-छूते पवित्र कर डालता है, पर नर्मदाका जल तो दर्शनमात्रसे ही पवित्र कर देता है।'

पुराणोंमें पुरूरवा तथा हिरण्यरेताके तपसे नर्मदाजीको पृथ्वीपर पधारनेकी कथा आती है। नर्मदाके डेढ़ सौ स्रोत कहे गये हैं। विज्ञ पुरुषोंका कहना है कि ४८७ गजकी चौड़ाईमें इसकी धारा बहती है। कोई भी मनुष्य नर्मदामें जहाँ-कहीं भी स्नान कर लेता है, उसका सौ जन्मोंका पाप तत्काल नष्ट हो जाता है।

(स्कन्दपुराण, रेवाखण्ड, ७)

पुराणोंके अनुसार अमरकण्टकसे लेकर नर्मदा-संगमतक दस करोड़ तीर्थ हैं। नर्मदा-संगमके दर्शनसे समस्त तीर्थोंके दर्शनका फल प्राप्त हो जाता है—

नर्मदासंगमं यावद् यावच्चामरकण्टकम्।
तत्रान्तरे महाराज तीर्थकोट्यो दश स्थिताः॥
सर्वतीर्थाभिषेकं च यः पश्येत् सागरेश्वरम्।
तं दृष्ट्वा सर्वतीर्थानि दृष्टानि स्युर्न संशयः॥

(पद्म० आदि० २१। ४४, ४२)

अमरकण्टक-माहात्म्य

चन्द्रसूर्योपरागेषु गच्छेद् योऽमरकण्टकम्।
अश्वमेधाद् दशगुणं प्रवदन्तिमनीषिणः॥
स्वर्गलोकमवाप्नोति तत्र दृष्ट्वा महेश्वरम्।
तत्र ज्वालेश्वरो नाम पर्वतेऽमरकण्टके॥
तत्र स्नात्वा दिवं यान्ति ये मृतास्तेऽपुनर्भवाः।
अमरा नाम देवास्ते पर्वतेऽमरकण्टके।
कोटिश ऋषिमुख्यास्ते तपस्तप्यन्ति सुव्रताः।

(पद्म० आदि० १५। ७४—८०)

'चन्द्र या सूर्यग्रहणके समय जो अमरकण्टक पर्वतपर जाता है, उसे अश्वमेध-यज्ञका दसगुना फल मिलता है—ऐसा विद्वानोंका कहना है। अमरकण्टक पर्वतपर ज्वालेश्वर नामके महादेव हैं, उनका दर्शन कर मनुष्य स्वर्गलोकका अधिकारी होता है। अमरकण्टकमें स्नान करनेवालेका पुनर्जन्म नहीं होता। इस पर्वतपर करोड़ों देवता तथा मुख्य ऋषिगण विविध व्रतोंका पालन करते हुए तप करते हैं?' नर्मदा तथा शोणभद्रका यही उद्गमस्थल है।

अमरकण्टक

कलियुगमें रेवा (नर्मदा) गङ्गाके समान ही पवित्र हैं। श्रद्धालुजन नर्मदाकी परिक्रमा करते हैं। नर्मदा-किनारे अनेक तीर्थस्थल हैं। तपस्वी साधकोंको नर्मदा सदा प्रिय रही हैं। नर्मदातटपर स्थान-स्थानपर महापुरुषोंके आश्रम रहे हैं। नर्मदा-स्नान पापहारी है। पवित्र नदियोंमें अब एक रेवा (नर्मदा) ही ऐसी हैं, जिनसे कोई नहर नहीं निकली है और उनके तटपर कोई बड़ा नगर न होनेसे कोई गंदा नाला उनमें नहीं गिरता।

श्रीगङ्गाजीका उद्गम तो मनुष्यके लिये अत्यन्त

दुर्लभ है; क्योंकि गङ्गाजी निकली हैं, नारायण पर्वतके नीचेसे और वहाँतक अभी तो सम्भवतः कोई मनुष्य पहुँचा नहीं है। गङ्गाजीकी धारा गोमुखमें व्यक्त होती है, वहाँतक भी गिने-चुने लोग जा पाते हैं—यहाँतक कि गङ्गोत्तरीतक भी थोड़े ही लोग जा सकते हैं; किन्तु नर्मदाजीका उद्गम इतना दुष्प्राप्य नहीं है। बहुत कम व्यय और कम कठिनाई उठाकर मनुष्य नर्मदा उद्गमके दर्शन-स्नानका सुयोग पा सकता है।

श्रीनर्मदाजी मेकल पर्वतपर अमरकण्टक नामक ग्रामके एक कुण्डसे निकली हैं। मेकल पर्वतसे निकलनेके कारण उन्हें मेकल-सुता कहते हैं। विन्ध्याचल और सतपुरा पर्वत-श्रेणियोंके बीचमें मेकल पर्वत है। कहा जाता है कि इस पर्वतपर भगवान् शंकर, राजा मेकल, तथा व्यास, भृगु, कपिल आदि ऋषियोंने तपस्या की है।

मार्ग

अमरकण्टक विन्ध्य-प्रदेशकी सरकारका ग्रीष्मकालीन आवासस्थान माना गया है। अतः वहाँतक रीवासे पक्की सड़क है और मोटर-बस चलती है।

पूर्वी रेलवेकी कटनी विलासपुर शाखामें कटनीसे १३५ मील और विलासपुरसे ६३ मीलपर पेडरा रोड स्टेशन है। इस स्टेशनपर उतरनेसे रीवासे आनेवाली मोटर-बस मिल जाती है। स्टेशनके पास गौरेला ग्राम है, जहाँ कई धर्मशालाएँ हैं। गौरेलासे मोटर-बस कबीरचौतरा जाती है। वहाँसे अमरकण्टक तीन मील रहता है।

ठहरनेका स्थान

अमरकण्टकमें अहल्याबाईकी धर्मशाला पर्याप्त बड़ी है। यात्री प्रायः धर्मशालामें ठहरते हैं।

रेवा-उद्गम

कहा जाता है कि नर्मदा बाँसके झुरमुटसे निकली है; किन्तु अब तो वह बाँसका झुरमुट रहा नहीं है। वहाँ ११ कोनेका एक पक्का कुण्ड बना है। इस कुण्डमें चारों ओर सीढ़ियाँ हैं। कुण्डके पश्चिम गोमुख बना है, जिससे थोड़ा-थोड़ा जल कुण्डमें गिरता रहता है। इस कुण्डको कोटितीर्थ कहते हैं।

कोटितीर्थकुण्डके उत्तर नर्मदेश्वर एवं अमरकण्टकेश्वरके मन्दिर हैं। वहीं एक मन्दिर और है। इनके अतिरिक्त नर्मदाजी और अमरनाथजीके मन्दिर कुण्डके उत्तर ही कुछ दूरीपर है। इन पाँच मन्दिरोंके अतिरिक्त १५ मन्दिर वहाँ और हैं।

अमरकण्टकमें कई प्राचीन मन्दिर हैं। इनमें केशवनारायणका मन्दिर, मत्स्येन्द्रनाथका मन्दिर आदि दर्शनीय हैं।

आस-पासके स्थान

मार्कण्डेय-आश्रम—अमरकण्टकसे आध मील दूर अग्निकोणमें मार्कण्डेय ऋषिकी तपोभूमि है। यहाँ एक वृक्षके नीचे चबूतरेपर कई देवमूर्तियाँ हैं।

शोणभद्रका उद्गम—अमरकण्टकसे १॥ मील (मार्कण्डेय आश्रमसे १ मील) दूर शोणभद्र नदीका उद्गम-स्थान है। घोर जंगलका कठिन मार्ग है। उद्गम-स्थानपर एक छोटा कुण्ड है। कुण्डसे शोणभद्रकी धारा पर्वतसे नीचे गिरती है। यहाँ शोणेश्वर शिव-मन्दिर है।

भृगु-कमण्डलु—यह स्थान शोणभद्रके उद्गमसे दक्षिण है। कहा जाता है कि महर्षि भृगुने यहाँ तपस्या की थी। उनके कमण्डलुसे एक छोटी नदी निकली है, जिसे कर-गङ्गा कहते हैं।

कबीरचौतरा—नर्मदा-परिक्रमामें अमरकण्टकसे चलनेपर ३ मील दूर यह स्थान मिलता है। संत कबीरदासजीने यहाँ कुछ काल निवास किया है, ऐसा कहा जाता है कि अमरकण्टकसे यहाँतक सड़क है; किन्तु है यह वनके मध्यका स्थान, वन्य पशुओंका पूरा भय रहता है।

ज्वालेश्वर—अमरकण्टकसे ४ मील उत्तर ज्वाला नदीका उद्गम है। वहाँ ज्वालेश्वर महादेवका मन्दिर है। स्कन्दपुराणमें इस तीर्थका माहात्म्य बताया गया है; किन्तु सघन वन एवं पर्वतका मार्ग है। मार्गदर्शक लेकर ही जाना चाहिये।

कपिलधारा—कबीरचौतरेसे २॥ मील उत्तर-पश्चिम कपिलधारा नामक नर्मदाजीका प्रपात है। यहाँ महर्षि कपिलका आश्रम था। नर्मदातटपर उनके चरण-चिह्न दिखायी पड़ते हैं।

अमरकण्टकसे यहाँतक आनेका मार्ग बहुत तंग है। केवल पैदलका मार्ग है। इस स्थानके पास ही नीलगङ्गाका संगम और चक्रतीर्थ है।

दूधधारा—कपिलधारासे १ मील आगे नर्मदाजीका दूसरा प्रपात दूधधारा है। यहाँतकका मार्ग भी सँकरा

तथा डरावना है।

कुकरीमठ—डिंडोरी स्थानसे यह केवल ९ मील है और डिंडोरीसे यहाँतक सड़क आती है। मचरार नदीके किनारे स्वामी श्रीशंकराचार्यजीद्वारा स्थापित ऋणमुक्तेश्वर महादेवका यहाँ बहुत प्राचीन मन्दिर है। नर्मदाजी यहाँसे ६ मील दूर हैं।

देवगाँव

गोंदिया-जबलपुर लाइन (पूर्वी रेलवे) पर नैनपुर स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन मंडलाफोर्ट स्टेशन गयी है। मंडलाफोर्टसे देवगाँवतक पक्की सड़क है।

देवगाँव नर्मदाके दक्षिण तटपर है। यहाँ बढ़नेर नदी नर्मदामें मिलती है। संगमपर जमदग्नि ऋषिका आश्रम है। आश्रमके पास जमदग्नीश्वर तथा पातालेश्वर महादेवके दो मन्दिर हैं। मकर-संक्रान्तिपर मेला लगता है।

आस-पासके स्थान

महोगाँव—मंडलासे आनेवाली पक्की सड़कपर, मंडलासे ९ मील दूर महोगाँव है। यह स्थान बढ़नेर नदीके किनारे है। जमदग्नि ऋषिकी कामधेनु गौ यहीं रहती थीं।

सिंघरपुर—देवगाँवसे थोड़ी दूर नर्मदाके उत्तर तटपर लिंगाघाट ग्राम है। वहाँसे थोड़ी दूर नर्मदाके दक्षिण तटपर सिंघरपुर ग्राम है। यह शृङ्गी ऋषिका स्थान कहा जाता है।

देवकुण्ड—डिंडोरीसे मंडला जानेवाली पक्की सड़कपर डिंडोरीसे १४ मील दूर सक्का गाँव है। वहाँसे दो मीलपर मालपुर गाँवके पास खरमेर नदी नर्मदामें मिलती है। ग्रामके पास देवनालेका कुण्ड है। इस कुण्डमें ४० फुट ऊपरसे जल गिरता है। कुण्डके आस-पास कई गुफाएँ हैं।

मंडला

पूर्वी रेलवेकी गोंदिया-जबलपुर लाइनपर नैनपुर स्टेशनसे एक लाइन मंडलाफोर्टतक गयी है। मंडला मध्यप्रान्तका प्रसिद्ध नगर है। मंडलासे एक पक्की सड़क देवगाँव, डिंडोरी होती अमरकण्टकतक और दूसरी सड़क जबलपुरतक गयी है।

यहाँका किला अब जीर्ण दशामें है। किलेमें राजराजेश्वरीदेवीका मन्दिर है। इस मन्दिरमें अनेक देवताओंकी तथा सहस्रार्जुनकी मूर्ति है। किलेके सामने नर्मदाजीके दूसरे तटपर महर्षि व्यासका आश्रम है। उस आश्रममें व्यासनारायण नामक भगवान् शङ्करकी लिङ्गमूर्ति है।

आस-पासके स्थान

हृदयनगर—मंडलाके सामने नर्मदाजीके दूसरे (दक्षिण) तटपर बंजर नदी नर्मदामें मिलती है। संगममें ५ मील दूर बंजर नदीके किनारे हृदयनगर है। यहाँ सुरपन और मटियारी नामक नदियाँ बंजरमें मिलती हैं। इसलिये लोग इसे त्रिवेणी कहते हैं। महाशिवरात्रिके समय एक महीने यहाँ मेला रहता है।

जहाँ बंजर नदी नर्मदामें मिली है, वहाँ अम्बुदेश्वर महादेवका मुख्य मन्दिर है। नर्मदाजीपर पक्के घाट हैं। इस स्थानपर अनेक मन्दिर हैं। इस स्थानको पहिले विष्णुपुरी कहते थे। बंजर नदी पार करनेपर महाराजपुर (ब्रह्मपुरी) मिलता है, जिसका पुराना नाम सरस्वती-प्रस्रवणतीर्थ है। कहते हैं कि वहाँ सरस्वती देवीने तपस्या की थी।

मधुपुरा घाट—बंजर नदीके संगमसे (नर्मदा-प्रवाहके ऊपरकी ओर) ८ मील दूर यह स्थान है। इसे लोग घोड़ाघाट कहते हैं। कहा जाता है कि यहाँ मार्कण्डेय ऋषिने तप किया था। मार्कण्डेश्वरका यहाँ मन्दिर है। यहाँसे ३ मील पूर्व योगिनी-गुफा है। कहा जाता है कि भगवान् श्रीरामके अश्वमेध यज्ञका अश्व जब यहाँ आया, तब योगिनीने उसे गुप्त कर दिया; किन्तु शत्रुघ्नजीके आग्रहसे फिर अश्व लौटा दिया।

सीता-रपटन—मधुपुरी ग्रामसे ५ मील जंगलके मार्गसे जानेपर सुरपन नदीके किनारे यह स्थान है। यहाँपर कई कुण्ड हैं। कहा जाता है कि यहाँ महर्षि

वाल्मीकिका आश्रम था। सीताजीने यहाँ बालकोंको भोजन कराया था। भोजनके पत्तल जो पत्थर बन गये, यहाँ हैं। भोजन परसते समय जहाँ सीताजी फिसलकर गिर पड़ी थीं, वह स्थान सीता-रपटन कहा जाता है। कार्तिक-पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है।

सहस्रधारा—मंडलासे (नर्मदाजीके प्रवाहकी ओर) ३ मीलपर नर्मदाजीकी कई धाराएँ हो गयी हैं। कहा जाता है कि यहाँ सहस्रार्जुनने अपनी भुजाओंसे नर्मदाके प्रवाहको रोका था। कार्तिक-शुक्ला १३ को मेला लगता है।

लुकेश्वर—मंडलासे जो सड़क जबलपुरको जाती है, उससे नर्मदा-तटके ग्राम पदमी घाटतक आ सकते हैं। वहाँसे ५ मील दूर नर्मदाके दक्षिण तटपर यह तीर्थ है। लोगोंका विश्वास है कि यहाँ नर्मदाकी धारामें मणिमय शिवलिङ्ग है, जो सदा गुप्त रहता है।

नन्दिकेश्वरघाट—यह स्थान जबलपुर जिलेमें नर्मदाजीके उत्तर तटपर है। लुकेश्वरसे यह स्थान लगभग २० मील पड़ता है। यहाँ भगवान् शंकरका मन्दिर तथा धर्मशाला है। कहा जाता है कि यहाँ धर्मराजने तपस्या की थी। महाशिवरात्रिपर मेला लगता है। यहाँसे थोड़ी दूरपर हिंगना नदी नर्मदामें मिलती है।

जबलपुर

जबलपुर मध्यरेलवेका स्टेशन है और मध्यप्रदेशका प्रख्यात नगर है। कहा जाता है कि यहाँ पहले जाबालि ऋषिका आश्रम था; और इसका पुराना नाम जाबालिपत्तन है; किन्तु अब यहाँ ऋषि-आश्रमका कोई चिह्न नहीं है। यहाँ एक सुन्दर सरोवर है, उसके चारों ओर अनेकों मन्दिर हैं।

आस-पासके स्थान

तिलवाराघाट—जबलपुरसे ६ मील दूर नागपुर जानेवाली सड़कपर यह स्थान है। तिलभाण्डेश्वरका मन्दिर है। मकर-संक्रान्तिपर मेला लगता है।

रामनगरा—तिलवाराघाटसे एक मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर यह मुकुटक्षेत्र है। कहा जाता है कि यहाँ राजा हरिश्चन्द्रने तपस्या की थी।

त्रिशूलघाट—रामनगरासे लगभग दो मीलपर नर्मदाके दोनों तटोंपर क्रमशः त्रिशूलघाट तथा त्रिशूलतीर्थ हैं। नर्मदाकी धारा यहाँ पर्वत फोड़कर त्रिशूलके समान बहती है। इसे भगवान्तीर्थ और वाराहतीर्थ भी कहते हैं। कहा जाता है कि पृथ्वीको लेकर भगवान् वाराह यहीं प्रकट हुए थे।

लमेटीघाट—त्रिशूलघाटसे एक मील आगे नर्मदाके दोनों तटोंपर यह घाट है। उत्तर तटपर सरस्वती नदीका संगम है। वहाँ कई मन्दिर हैं। दक्षिण तटपर इन्द्रने तपस्या की थी, वहाँ ऐरावतके पदचिह्न पत्थरोंपर हैं। इन्द्रेश्वर शिव-मन्दिर, कई अन्य मन्दिर तथा धर्मशाला हैं।

गोपालपुरघाट—लमेटीघाटसे एक मील आगे नर्मदाके उत्तर तटपर यह घाट है। यहाँसे लगभग तीन मील उत्तर तेवर ग्राम है। पहले यह त्रिपुरी कहलाता था। अब तेवरमें एक बावली है। उससे दो मीलपर करनबेलके खंडहर हैं। वहाँ प्राचीन मन्दिरके भग्नावशेषमात्र हैं।

भेड़ाघाट—यह स्थान गोपालपुरसे ३ मीलपर है। जबलपुरसे १० मीलपर भेड़ाघाट स्टेशन भी है। जबलपुरसे भेड़ाघाटतक पक्की सड़क है। कहा जाता है कि यह महर्षि भृगुकी तपोभूमि है। महर्षि भृगुका तपःस्थान विद्यमान है। नर्मदाके उत्तर तटपर वामनगङ्गा-नामक नदीका संगम है। संगमके पास श्रीकृष्ण-मन्दिर और धर्मशाला है। यहाँ एक छोटी पहाड़ीपर गौरीशङ्कर-मन्दिर है।

भेड़ाघाटसे थोड़ी दूरपर धुआँधार प्रपात है। यहाँ नर्मदाका जल ४० फुट ऊपरसे गिरता है। धुआँधारके आगे नर्मदाका प्रवाह संगमरमरकी चट्टानोंके मध्यसे बहता है।

जलेरीघाट—भेड़ाघाटसे १० मील दूर यह घाट है। यहाँ नर्मदाके बीचमें पर्वतकी तली फोड़कर शङ्करजीकी जलहरी बनी है। यह जलहरी एक कुण्ड बन गया है। कुण्डके बीचमें लुकेश्वर शिव हैं, जिनका दर्शन नहीं होता।

बेलपठारघाट—जलेरीघाटसे ४ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर यह स्थान है। कहा जाता है कि राजा बलिने यहाँ कुछ दिन रहकर यज्ञ तथा दान किया था।

ब्रह्माण्डघाट

मध्यरेलवेमें जबलपुरसे (इटारसीकी ओर) ६२ मीलपर करेली स्टेशन है। करेलीसे सागरतक जानेवाली पक्की सड़कके किनारे नर्मदा-तटपर करेलीसे ९ मील दूर ब्रह्माण्डघाट है।

ब्रह्माण्डघाटसे थोड़ी दूरपर नर्मदाजीकी दो धाराएँ हो जानेसे मध्यमें एक छोटा द्वीप बन गया है। द्वीपमें कुछ आगे सप्तधारा-तीर्थ है। नर्मदाजीकी पर्वतपरसे गिरते समय कई धाराएँ हो गयी हैं। इन धाराओंके गिरनेसे कई कुण्ड बन गये हैं। इनमें भीमकुण्ड, अर्जुनकुण्ड और ब्रह्मकुण्ड मुख्य हैं। भीमकुण्डके पास भीमके पदचिह्न हैं। ब्रह्मकुण्ड ब्रह्माजीका यज्ञ-कुण्ड है। उससे यज्ञभस्म निकलती है। द्वीपके वनमें कृष्ण-मन्दिर है।

यहाँसे कुछ दूरपर नर्मदाके दक्षिण किनारे रानी दुर्गावतीका बनवाया विशाल शिव-मन्दिर है। उसके पास ही धरणी-वाराहकी विशाल मूर्ति है। नर्मदाके उत्तर तटपर लक्ष्मी-नारायण-मन्दिर है। नर्मदाजीके बीचमें पिसनहारीका शिव-मन्दिर है। नर्मदाजीके उत्तर तटपर ब्रह्माण्ड ग्राममें पक्के घाट हैं और घाटपर मन्दिर हैं।

आस-पासके तीर्थ

पिठेरा-गरारू—(नर्मदाजीके प्रवाहके ऊपरकी ओर) ब्रह्माण्डघाटसे लगभग १४ मीलपर नर्मदाजीके दक्षिण तटपर गरारू ग्राम है। यहाँ शङ्करजी और गरुड़जीके विशाल मन्दिर हैं। गरारू ग्रामके सामने नर्मदाके उत्तर तटपर पिठेरा ग्राम है। यहाँ भी अनेक प्राचीन मन्दिर हैं।

पिपरियाघाट—गरारूसे ४ मील दूर नर्मदाके दक्षिण तटपर यह स्थान है। यहाँपर भगवान् शङ्करकी लिङ्गमूर्ति ५ फुटसे भी ऊँची है।

हरणी-संगम—पिपरियाघाटसे ६ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर हरणी नदीका संगम है। यहाँ संगमेश्वर और हरणेश्वर मन्दिर हैं। सामने नर्मदाके दक्षिण तटपर साँगलग्राम है। कहा जाता है कि आद्य शङ्कराचार्य यहाँ पधारे थे।

बुधघाट—हरणी-संगमसे २ मीलपर बुध (ग्रह-) की तपोभूमि है। यहाँ बुधेश्वर-मन्दिर है।

ब्रह्मकुण्ड-तीर्थ—बुधघाटसे दो मीलपर नर्मदाके दक्षिण तटपर ब्रह्मकुण्ड है। कहा जाता है कि यहाँ देवताओंके साथ ब्रह्माजीने तप किया था। नर्मदाजीके एक कुण्डमें देवशिला है।

सुनाचारघाट—ब्रह्मकुण्डसे ५ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर यह स्थान है। इसका पुराना नाम सहस्रावर्त-तीर्थ है।

सर्राघाट—सुनाचारघाटसे १ मीलपर है। यह प्राचीन सौगन्धिकवन-तीर्थ है। यहाँ पितृतर्पण-श्राद्धका महत्त्व है।

गोराघाट—सर्राघाटसे ४ मीलपर यह प्राचीन ब्रह्मोदतीर्थ है। कहा जाता है कि यहाँ सप्तर्षियोंने तपस्या की थी। यहाँ उदुम्बरेश्वर शिव-मन्दिर है।

अंडियाघाट—(नर्मदाजीके प्रवाहकी ओर) ब्रह्माण्ड-घाटसे ५ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर यहाँ मन्मथेश्वर शिव-मन्दिर है।

बेलथारी-कोठिया—अंडियाघाटसे ५ मील दूर-नर्मदाके उत्तर तटपर बेलथारी ग्राम है। कहा जाता है कि यह राजा बलिकी यज्ञ-स्थली है। यहाँसे यज्ञ-भस्म निकलती है। इसके सामने नर्मदाजीके दक्षिण तटपर शाङ्करीगङ्गा नदीका संगम है। यहाँ आद्य शङ्कराचार्य पधारे थे।

शुक्लघाट—बेलथारीसे १६ मील दूर नर्मदाजीके उत्तर तटपर है। गाड़रवाड़ा स्टेशनसे रिछावरघाटतक सड़क है। यह स्थान रिछावरघाटसे १ मील है। यहाँ शुक्ल-तीर्थ है। कहा जाता है कि यहाँ महर्षि कश्यपका आश्रम था। शुक्लेश्वर शिव-मन्दिर है। ग्रहणपर यहाँ स्नानका मेला होता है।

शोकलपुर—शुक्लघाटसे १ मील आगे नर्मदाके दक्षिण तटपर शोकलपुर ग्राम है। यहाँ शक्कर नदीका संगम है। संगमेश्वर मन्दिर है। कार्तिकी पूर्णिमाको मेला लगता है।

अंघोरा—शोकलपुरसे ४ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर यह ग्राम है। यहाँ जनकेश्वर-तीर्थ है। कहा जाता है कि यहाँ महाराज जनकने यज्ञ किया था।

डेमावर—अंघोरासे १६ मीलपर यह गाँव है। इसके पास जमुनघाटमें नर्मदाजीके कुण्डमें ४० फुटसे अधिक लंबी धर्मशिला है।

दूधी-संगम—डेमावरसे २ मील आगे नर्मदाके दक्षिण तटपर दूधी नदीका संगम है। यहाँसे थोड़ी दूरपर

उमरधा ग्रामके पास सिरसिरीघाट है। वहाँ बगलमें ऋषि-टेकड़ी है। दूधी-संगमके स्थानको बगल-दरियाव कहते हैं।

साईंखेड़ा—गाड़रवाड़ा स्टेशनसे साईंखेड़ा कुछ मील दूर है। यह स्थान दूधी नदीके किनारे है। गाड़रवाड़ासे साईंखेड़ातक पक्की सड़क है। धूनीवाले दादा (स्वामी श्रीकेशवानन्दजी) का यहाँ कई वर्षोंतक निवास रहा।

कोउधानघाट—दूधी-संगमसे लगभग १ मील दूर नर्मदाजीके उत्तर तटपर खाँड़ नदीका संगम है। उससे आध मील आगे कोउधानघाट है। इसका शुद्ध नाम केतुधानघाट है। केतु ग्रहने यहाँ तप किया था। यहाँका प्राचीन केत्वीश्वर-मन्दिर तो है नहीं, अब यहाँ श्रीराम-मन्दिर है।

होशंगाबाद

(संग्रहकर्ता—श्रीरामदास गुबरेले)

मध्यरेलवेकी बम्बई-दिल्ली लाइनपर इटारसीसे १२ मील दूर होशंगाबाद स्टेशन है। यह मध्यदेशका प्रसिद्ध नगर है। स्टेशनसे नगर लगभग आध मील है। यह नगर-नर्मदाके दक्षिणतटपर बसा है। नर्मदापर कई सुन्दर घाट हैं। जानकी सेठानीके घाटपर धर्मशाला है तथा नर्मदाजीका मन्दिर है।

होशंगाबादमें नर्मदा-किनारे अनेकों मन्दिर हैं। उनमें मुख्य मन्दिर हैं—श्रीजगन्नाथजी, बलदाऊजी, हनुमान्‌जी, श्रीरामचन्द्रजी, महादेवजी और शनिदेव। स्टेशनके पास संतरामजी बाबाकी समाधि है। इनका स्थान नगरमें धनावड़में है।

आस-पासके तीर्थ

बाँद्राभान—(नर्मदाजीके ऊपरकी ओर) होशंगाबादसे ६ मीलपर यह स्थान है। यहाँ नर्मदाके उत्तर तटपर पर्वतश्रेणीमें महात्मा मृगनाथका स्थान है और दक्षिण तटपर तवा नदीका संगम है। यहाँ वैश्वानरने तप किया था। कार्तिक-पूर्णिमाको मेला लगता है।

सूर्यकुण्ड—बाँद्राभानसे ६ मील दूर नर्मदाके दक्षिण तटपर नर्मदाजीमें सूर्यकुण्ड है। कहा जाता है कि सूर्यने यहाँ अन्धकासुरको मारा था।

गौघाट—सूर्यकुण्डसे सीधे मार्गसे लगभग १० मील दूर वृद्धरेवापर गौघाट है। कुछ ऊपर नर्मदाकी दो धाराएँ हो गयी हैं, जिनमें छोटी धाराको वृद्धरेवा कहते हैं। गौघाटपर १२ योगिनियों तथा दो सिद्धोंके स्थान हैं।

नाँदनेर—नर्मदाकी मुख्य धाराके उत्तर तटपर यहाँ प्राचीन मन्दिरोंके खँडहर हैं। महाकालेश्वर तथा मनःकामेश्वर शिव-मन्दिर हैं।

भारकच्छ—नाँदनेरसे ८ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर यह स्थान है। कहा जाता है कि यहाँ महर्षि भृगुने गायत्रीपुरश्चरण किया था। गरुड़जीने भी यहाँ तपस्या की थी। इसे भृगुकच्छ भी कहते हैं। चैत्रमें मेला लगता है।

पाण्डुद्वीप—भारकच्छसे दो मीलपर मारू नदीका संगम है। कहा जाता है, यह पाण्डवोंकी तपःस्थली है।

पामलीघाट—पाण्डुद्वीपसे १ मीलपर नर्मदाके दक्षिण तटपर पलकमती नदीका संगम है। वनवासके समय पाण्डवोंने यहाँ यज्ञ किया था। कार्तिकी पूर्णिमा और मकर-संक्रान्तिका मेला होता है।

मोतलसिर—पामलीघाटसे दो मीलपर ईश्वरपुर है। मध्यरेलवेकी इटारसी-इलाहाबाद लाइनपर इटारसीसे ३० मील दूर सोहागपुर स्टेशन है। सोहागपुरसे ईश्वरपुरतक सड़क है। ईश्वरपुरसे मोतलसिर ४ मील दूर नर्मदाके दक्षिण तटपर है। यहाँ नारदी-गङ्गा नदी नर्मदामें मिलती है। नारदजीकी यह तपोभूमि कही जाती है। यहाँका नारदेश्वर-मन्दिर लुप्त हो चुका है।

सिगलवाड़ा—मोतलसिरसे ३ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर वरुणानदीका संगम है। वारुणेश्वर-मन्दिर जीर्ण हो गया है। यहाँ वैशाख, कार्तिक और माघमें मेला लगता है।

तेदोनी-संगम—वगलवाड़ासे २ मीलपर तेदोनी नदी नर्मदामें उत्तर तटपर मिलती है। कहा जाता है यह आकाशदीप-तीर्थ है। पाण्डवोंने यहाँ यज्ञ किया था और कार्तिकमें आकाशदीप लगाये थे।

माछा (रामघाट)—तेदोनी-संगमसे ५ मील दूर

अमरकण्टक तथा नर्मदा-तटके कुछ पवित्र स्थल

अमरकण्टकका कोटितीर्थ-कुण्ड

कपिलधारा-प्रपात, अमरकण्टक

नर्मदा-तटपर काले महादेवकी मूर्ति, होशंगाबाद

मुख्य घाटपर हनुमानजीका मन्दिर, होशंगाबाद

नर्मदापारका गुलजारी-मन्दिर, होशंगाबाद

मुख्य घाटके मन्दिरोंकी झाँकी, होशंगाबाद

नर्मदा-तटके कुछ पवित्र स्थल—२
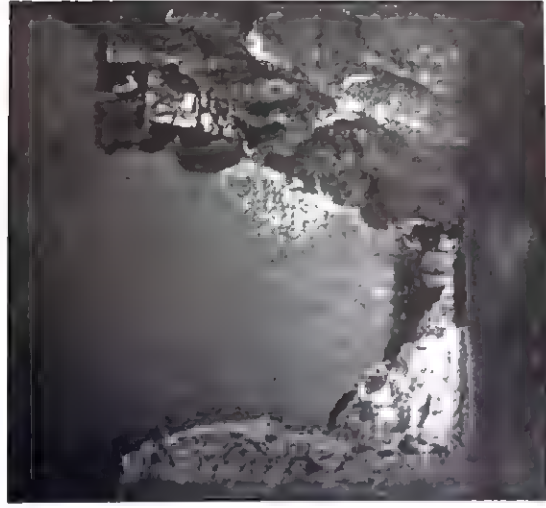
भेड़ाघाटमें श्वेत संगमरमरकी चट्टानोंके बीच नर्मदाजी

सहस्त्रधाराकी दिव्य छटा, माहिष्मती
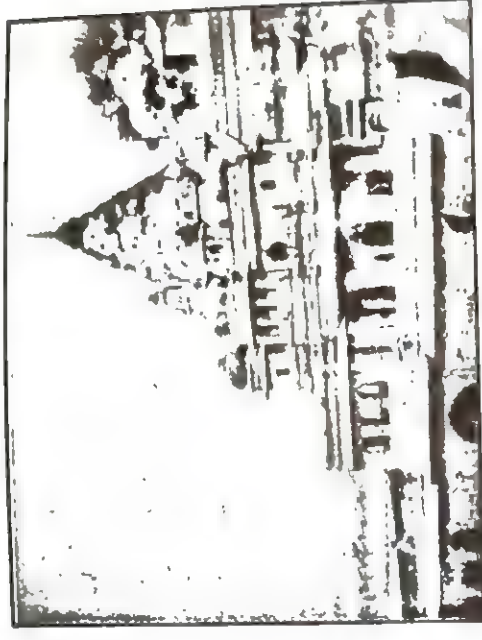
श्रीअहल्येश्वर-मन्दिर, माहिष्मती

श्रीओंकारेश्वर-मन्दिर, शिवपुरी

श्रीसिद्धनाथजीका प्राचीन भग्न मन्दिर, ओंकारेश्वर

भृगुपतनवाली पहाड़ी, ओंकारेश्वर

नर्मदाके दक्षिण तटपर माछा ग्राम है। यहाँ कुब्जा नदीका संगम है। इसे रामघाट तथा बिल्वाम्रक तीर्थ भी कहते हैं। कहा जाता है कि राजा रन्तिदेवने यहाँ बहुत बड़ा यज्ञ किया था। कुब्जाकी भी यह तपोभूमि कही जाती है। अमावस्याको यहाँ नर्मदा-स्नानका माहात्म्य है। यहाँ श्रीराधावल्लभजी तथा श्रीरामके मन्दिर हैं।

साँड़िया—माछासे ५ मील दूर नर्मदाके दक्षिण तटपर अञ्जनी नदीका संगम है। संगमपर गौरी-तीर्थ है। इस स्थानको शाण्डिलेश्वर-तीर्थ भी कहते हैं। कहते हैं यहाँ स्नान करनेसे इन्द्रकी ब्रह्महत्या दूर हुई थी। महर्षि शाण्डिल्यने यहाँ तप तथा यज्ञ किया था। यहाँ द्वादशादित्य तीर्थ भी है। इटारसीसे ४१ मीलपर पिपरिया स्टेशन है। पिपरियासे यहाँतक पक्की सड़क है।

टिघरिया—यह स्थान होशंगाबादसे (नर्मदाजीके प्रवाहकी ओर) १७ मील है। यहाँ गौमुखघाट, गोकर्णेश्वर-मन्दिर तथा अन्य कई मन्दिर हैं।

कुलेरा (कुन्तीपुर) घाट—टिघरियासे ४ मील दूर नर्मदाके दक्षिण तटपर यह घाट है। यहाँ हत्याहरण नदीका संगम है। संगमके पास लक्ष्मीकुण्ड है। माता कुन्तीदेवीके साथ पाण्डवोंने यहाँ निवास किया था।

आँवरीघाट—कुलेरासे एक मील दूर यहाँ नर्मदाके मध्यमें पहाड़ी टीलेपर भीमकुण्ड है। पाण्डव यहाँ भी कुछ काल रहे थे। सोमवती अमावस्याको मेला लगता है। मध्य-रेलवेकी बम्बई-दिल्ली लाइनपर इटारसीसे १६ मील पूर्व धर्मकुण्डी स्टेशन है। वहाँसे यहाँके लिये मार्ग है। धर्मकुण्डीसे यह स्थान १४ मील है।

इंदाना-संगम—आँवरीघाटसे तीन मील दूर इंदाना नदी नर्मदाके दक्षिण तटपर मिलती है। यहाँ चतुर्मुख महादेवका मन्दिर है। आँवरीघाटसे यहाँ आते समय मार्गमें तीन छोटी पहाड़ियाँ मिलती हैं। बीचकी पहाड़ीपर महात्मा भाऊनाथजीका स्थान है।

गोंदागाँव—इंदाना-संगमसे २० मील दूर यह स्थान है। धर्मकुण्डीसे २३ मील और इटारसीसे ३९ मील पूर्व टिमरनी स्टेशन है। वहाँसे यह स्थान १४ मील है। पक्की सड़क है। नर्मदाके दक्षिण तटपर यहाँ गंजाल नदीका संगम है। गंजालमें शाहजुरी नामक पत्थर मिलते हैं, जिनपर वृक्षादिके चित्र होते हैं। संगमपर गंजालेश्वर शिव-मन्दिर है। सोमवती अमावस्याको मेला लगता है।

गोनी-संगम—गोंदागाँवसे १२ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर गोनी नदी मिलती है। कहा जाता है यहाँ जमदग्नि ऋषिने तप किया था।

मेळाघाट—गोनी-संगमसे २ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर यहाँ संत आत्माराम बाबाकी समाधि है।

हंड़िया-नेमावर—मेळाघाटसे १ मीलपर नेमावर नगर है। उसके सामने नर्मदाके दक्षिण तटपर हंड़िया नगर है। हरदा स्टेशनसे हंड़िया १३ मील है। पक्की सड़कका मार्ग है। हंड़ियासे थोड़ी दूर पश्चिम सिद्धनाथ-मन्दिर है। कहा जाता है वहाँ कुबेरने तप किया था। दूसरे तटपर नेमावरमें सिद्धनाथ-मन्दिर है। सनकादि महर्षियोंने सिद्धनाथकी स्थापना की थी, ऐसा कहा जाता है। यहाँ भी जमदग्नि ऋषिकी तपोभूमि मानते हैं। यहाँ नर्मदामें सूर्यकुण्ड है, जो गरमीमें दीखता है। कुण्डमें शेषशायी भगवान्‌की मूर्ति है। इसे नर्मदाका नाभिस्थान (मध्यभाग) कहते हैं।

बागदी-संगम—हंड़िया-नेमावरसे ६ मील नर्मदाके उत्तर तटपर बागदी नदी मिलती है। कहते हैं कि यहाँ कालभैरवने तपस्या की थी।

उचानघाट—बागदी-संगमसे १ मीलपर नर्मदाकी दो धाराएँ हो जानेसे मध्यमें द्वीप बन गया है। उच्चैःश्रवाने यहाँ तप किया था।

फतेहगढ़—बागदी-संगमसे ८ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर यहाँ दाँतोनी नदीका संगम है। हरणेश्वर शिव तथा कालभैरवके मन्दिर हैं। मृगरूपधारी ऋषिको यहाँ कालभैरवने वरदान दिया था।

पुनघाट—फतेहगढ़से ११ मील, नर्मदाके दक्षिण तटपर खंडवासे ४४ मीलपर खिरकिया स्टेशन है। वहाँसे यह स्थान १२ मील दूर है। स्टेशनसे यहाँतक सड़क है। यहाँ गौतमेश्वरका प्राचीन मन्दिर है। कहा जाता है यह गौतम ऋषिकी तपोभूमि है। पुनघाटके सामने उत्तर तटपर धर्मपुरी है। उसके पास नर्मदाजीमें एक छोटे टापूपर पत्थरोंके दो ढेर हैं। उनको लोग भीमसेनकी काँवर कहते हैं। धर्मपुरीसे १ मीलपर मानधारामें नर्मदाका प्रपात है।

बलकेश्वर—पुनघाटसे ९ मील नर्मदाके दोनों तटपर। हरसूद स्टेशनसे यहाँतक सड़क है। नर्मदाके दक्षिण

तटपर यहाँ बलकेश्वर-मन्दिर है। कहा जाता है कि राजा बलिने यहाँ तप किया और बलकेश्वरकी स्थापना की है। इसके आगेका मार्ग जंगल-पर्वतोंका है।

कालभैरव—पुनघाटके सामने नर्मदाके उत्तर तटपर धर्मपुरी है, यह बता आये हैं। धर्मपुरी १३ मील दूर जंगलके मार्गसे बारंगा नालेके पास कालभैरवका स्थान है। नर्मदा-तटसे यह स्थान ५ मील दूर है। यहाँ पर्वतकी तलीमें कालभैरवकी गुफा है।

ओंकारेश्वर (मान्धाता)

ओंकारेश्वर-माहात्म्य

देवस्थानसमं ह्येतत् मत्प्रसादाद् भविष्यति।
अन्नदानं तपः पूजा तथा प्राणविसर्जनम्॥
ये कुर्वन्ति नरास्तेषां शिवलोकनिवासनम्।

(स्क० पु० रेवा खं०, अ०२२—नवलकिशोर प्रेसका संस्करण)

'ओंकारेश्वर तीर्थ अलौकिक है। भगवान् शङ्करकी कृपासे यह देवस्थानके तुल्य है। यहाँ जो अन्न-दान, तप, पूजा करते अथवा मृत्युको प्राप्त होते हैं, उनका शिवलोकमें निवास होता है।'

अमरे (ले) श्वर-माहात्म्य

अमराणां शतैश्चैव सेवितो ह्यमरेश्वरः।
तथैव ऋषिसंघैश्च तेन पुण्यतमो महान्॥

(स्क०पुराण आव० रेवा० खं० २८। १३३—वेङ्कटेश्वर प्रेसका संस्करण)

महान् पुण्यतम अमरेश्वर तीर्थ सदा सैकड़ों देवता तथा ऋषि-संघोंद्वारा सेवित है। अतएव यह महान् पवित्र है।

ओंकारेश्वर

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें ओङ्कारेश्वरकी गणना है। इस ज्योतिर्लिङ्गकी एक विशेषता यह है कि यहाँ दो ज्योतिर्लिङ्ग हैं—ओंकारेश्वर और अमलेश्वर। इन दोनोंको द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंकी गिनती करते समय एक ही गिना जाता है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंका नाम-निर्देश करनेवाले श्लोकोंमें '**ओंकारममलेश्वरम्**' देखकर यह पाठ उसमें और **ओंकारम्-अमलेश्वरम्** यह सन्धि न समझकर बहुत-से लोग अमलेश्वरको ममलेश्वर कहते हैं, जो ठीक नहीं है।

नर्मदाजीके बीचमें मान्धाता टापूपर ओंकारेश्वर-लिङ्ग है। इस द्वीपपर महाराज मान्धाताने शङ्करजीकी आराधना की थी, इसीसे इस द्वीपका नाम मान्धाता पड़ गया। मान्धाता टापूका क्षेत्रफल लगभग एक वर्गमील होगा। यह एक पहाड़ी है, जो एक ओर कुछ ढालू है। इसके एक ओर नर्मदाजी बहती हैं और दूसरी ओर नर्मदाजीकी ही एक धारा है, जिसे लोग कावेरी कहते हैं। द्वीपके अन्तमें यह कावेरी-धारा नर्मदामें मिल जाती है। इस मान्धाता द्वीपका आकार प्रणवसे मिलता-जुलता है।

कहा जाता है कि विन्ध्यपर्वत (अपने आधिदैवतरूपसे) यहाँ ओंकार-यन्त्रमें तथा पार्थिवलिङ्गमें भी भगवान् शङ्करकी आराधना करता था। आराधनासे प्रसन्न होकर भगवान् शङ्कर प्रकट हुए। तब विन्ध्यने भगवान्से वहीं दिव्यरूपमें नित्य स्थित रहनेका वरदान माँगा। भगवान् शङ्कर तभीसे वहाँ ज्योतिर्लिङ्गरूपमें स्थित हैं। ओंकार-यन्त्रके स्थानमें उनका ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग है और पार्थिवलिङ्गके स्थानमें अमलेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग है।

मार्ग

पश्चिमी रेलवेकी अजमेर-खंडवा लाइनपर खंडवासे ३७ मील पहले ओंकारेश्वर-रोड स्टेशन है। यह स्थान इन्दौरसे ४७ मील है। यहाँसे ओंकारेश्वर ७ मील दूर है। स्टेशनसे ओंकारेश्वरके पास नर्मदा-तटपर सड़क है। मोटर-बस चलती है तथा बैलगाड़ी भी मिलती है।

ठहरनेके स्थान

१-ओंकारेश्वर-रोड स्टेशनपर एक धर्मशाला है।

२-स्टेशनसे नर्मदाजीका खेड़ीघाट लगभग १ मील है। इस घाटपर धर्मशाला है।

३-ओंकारेश्वर पहुँचनेपर नर्मदाजीके इसी ओर (विष्णुपुरीमें) अहल्याबाईकी धर्मशाला दृष्टिगोचर होती है।

४-नौकाद्वारा नर्मदाको पार करके जानेपर मान्धाताद्वीपमें (ओंकारेश्वर-मन्दिरके पास) सुन्दरलालजी बाहेतीकी धर्मशाला मिलती है।

ओंकारेश्वर-दर्शन

मोटर या बैलगाड़ी जहाँ यात्रीको छोड़ देती है, वहाँ

नर्मदा-किनारे जो बस्ती है, उसे विष्णुपुरी कहते हैं। यहाँ नर्मदाजीपर पक्का घाट है। नौकाद्वारा नर्मदाजीको पार करके यात्री मान्धाता द्वीपमें पहुँचता है। उस ओर भी पक्का घाट है। यहाँ घाटके पास नर्मदाजीमें कोटितीर्थ या चक्रतीर्थ माना जाता है। यहीं स्नान करके यात्री सीढ़ियोंसे ऊपर चढ़कर ओंकारेश्वर-मन्दिरमें दर्शन करने जाते हैं। मन्दिर तटपर ही कुछ ऊँचाईपर है।

श्रीओंकारेश्वरकी मूर्ति अनगढ़ है। यह मूर्ति मन्दिरके ठीक शिखरके नीचे न होकर एक ओर हटकर है। मूर्तिके चारों ओर जल भरा रहता है। मन्दिरका द्वार छोटा है—ऐसा लगता है जैसे गुफामें जा रहे हों। पासमें ही पार्वतीजीकी मूर्ति है। मन्दिरके हातेमें पञ्चमुख गणेशजीकी मूर्ति है। ओंकारेश्वर-मन्दिरमें सीढ़ियाँ चढ़कर दूसरी मंजिलपर जानेपर महाकालेश्वर लिङ्ग-मूर्तिके दर्शन होते हैं। यह मूर्ति शिखरके नीचे है। तीसरी मंजिलपर वैद्यनाथेश्वर लिङ्गमूर्ति है। यह भी शिखरके नीचे है।

श्रीओंकारेश्वरजीकी परिक्रमामें रामेश्वर-मन्दिर तथा गौरी-सोमनाथके दर्शन हो जाते हैं। ओंकारेश्वर-मन्दिरके पास अविमुक्तेश्वर, ज्वालेश्वर, केदारेश्वर आदि कई मन्दिर हैं।

ओंकारेश्वर-यात्राक्रम

मान्धाता टापूमें ही ओंकारेश्वरकी दो परिक्रमाएँ होती हैं एक छोटी और एक बड़ी। ओंकारेश्वरकी यात्रा तीन दिनकी मानी जाती है। इस तीन दिनकी यात्रामें वहाँके सभी तीर्थ आ जाते हैं। अतः इस क्रमसे ही वर्णन किया जा रहा है।

प्रथम दिनकी यात्रा—कोटि-तीर्थपर (मान्धाता द्वीपमें) स्नान और घाटपर ही कोटेश्वर, हाटकेश्वर, त्र्यम्बकेश्वर, गायत्रीश्वर, गोविन्देश्वर, सावित्रीश्वरका दर्शन करके भूरीश्वर, श्रीकालिका तथा पञ्चमुख गणपतिका एवं नन्दीका दर्शन करते हुए ओंकारेश्वरजीका दर्शन करे। ओंकारेश्वर-मन्दिरमें ही शुकदेव, मान्धातेश्वर, मनागणेश्वर, श्रीद्वारिकाधीश, नर्मदेश्वर, नर्मदादेवी, महाकालेश्वर, वैद्यनाथेश्वर, सिद्धेश्वर, रामेश्वर, जालेश्वरके दर्शन करके विशल्या-संगम तीर्थपर विशल्येश्वरका दर्शन करते हुए अन्धकेश्वर, झुमकेश्वर, नवग्रहेश्वर, मारुति (यहाँ राजा मानकी साँग गड़ी है), साक्षीगणेश, अन्नपूर्णा और तुलसीजीका दर्शन करके मध्याह्न विश्राम किया जाता है। मध्याह्नोत्तर आविमुक्तेश्वर, महात्मा दरियाईनाथकी गद्दी, बटुकभैरव, मङ्गलेश्वर, नागचन्द्रेश्वर, दत्तात्रेय एवं काले-गोरे भैरवका दर्शन करते बाजारसे आगे श्रीराममन्दिरमें श्रीरामचतुष्टयका तथा वहीं गुफामें धृष्णेश्वरका दर्शन करके नर्मदाजीके मन्दिरमें नर्मदाजीका दर्शन करना चाहिये।

दूसरे दिन—यह दिन ओंकार (मान्धाता) पर्वतकी पञ्चक्रोशी परिक्रमाका है। कोटितीर्थपर स्नान करके चक्रेश्वरका दर्शन करते हुए गऊघाटपर गोदन्तेश्वर, खेड़ापति हनुमान्, मल्लिकार्जुन, चन्द्रेश्वर, त्रिलोचनेश्वर, गोपेश्वरके दर्शन करते श्मशानमें पिशाचमुक्तेश्वर, केदारेश्वर होकर सावित्री-कुण्ड और आगे यमलार्जुनेश्वरके दर्शन करके कावेरी-संगम तीर्थपर स्नान-तर्पणादि करे तथा वहीं श्रीरणछोड़जी एवं ऋणमुक्तेश्वरका पूजन करे। आगे राजा मुचुकुन्दके किलेके द्वारसे कुछ दूर जानेपर हिडिम्बा-संगम तीर्थ मिलता है। यहाँ मार्गमें गौरी-सोमनाथकी विशाल लिङ्गमूर्ति मिलती है (इसे मामा-भानजा कहते हैं)। यह तिमंजिला मन्दिर है और प्रत्येक मंजिलपर शिवलिङ्ग स्थापित हैं। पास ही शिवमूर्ति है। यहाँ नन्दी, गणेशजी और हनुमान्‌जीकी भी विशाल मूर्तियाँ हैं। आगे अन्नपूर्णा, अष्टभुजा, महिषासुरमर्दिनी, सीता-रसोई तथा आनन्द-भैरवके दर्शन करके नीचे उतरे। यह ओंकारका प्रथम खण्ड पूरा हुआ। नीचे पञ्चमुख हनुमान्‌जी हैं। सूर्यपोल द्वारमें षोडशभुजा दुर्गा, अष्टभुजादेवी तथा द्वारके बाहर आशापुरी माताके दर्शन करके सिद्धनाथ एवं कुन्ती माता (दशभुजादेवी) के दर्शन करते हुए किलेके बाहर द्वारमें अर्जुन तथा भीमकी मूर्तियोंके दर्शन करे। यहाँसे धीरे-धीरे नीचे उतरकर वीरखलापर भीमाशंकरके दर्शन करके और नीचे उतरकर कालभैरवके दर्शन करे तथा कावेरी-संगमपर जूने कोटितीर्थ और सूर्यकुण्डके दर्शन करके नौकासे या पैदल (ऋतुके अनुसार जैसे सम्भव हो) कावेरी पार करे। उस पार पंथिया ग्राममें चौबीस अवतार, पशुपतिनाथ, गयाशिला, एरडी-संगमतीर्थ, पित्रीश्वर एवं गदाधरभगवान्‌के दर्शन करे। यहाँ पिण्डदान-श्राद्ध होता है। फिर कावेरी पार करके लाटभैरव-गुफामें कालेश्वर, आगे छप्पनभैरव तथा कल्पान्तभैरवके दर्शन करते हुए राजमहलमें श्रीरामका दर्शन करके ओंकारेश्वरके

दर्शनसे परिक्रमा पूरी करे।

तीसरे दिनकी यात्रा—इस मान्धाता द्वीपसे नर्मदा पार करके इस ओर विष्णुपुरी और ब्रह्मपुरीकी यात्रा की जाती है। विष्णुपुरीके पास गोमुखसे बराबर जल गिरता रहता है। यह जल जहाँ नर्मदामें गिरता है, उसे कपिला-संगम-तीर्थ कहते हैं। वहाँ स्नान और मार्जन किया जाता है। गोमुखकी धारा गोकर्ण और महाबलेश्वर लिङ्गोंपर गिरती है। यह जल त्रिशूलभेद कुण्डसे आता है। इसे कपिलधारा कहते हैं। वहाँसे इन्द्रेश्वर और व्यासेश्वरका दर्शन करके अमलेश्वरका दर्शन करना चाहिये।

अमलेश्वर

अमलेश्वर भी ज्योतिर्लिङ्ग है। अमलेश्वर-मन्दिर अहल्याबाईका बनवाया हुआ है। गायकवाड़ राज्यकी ओरसे नियत किये हुए बहुत-से ब्राह्मण यहाँ पार्थिव-पूजन करते रहते हैं। यात्री चाहे तो पहले अमलेश्वरका दर्शन करके तब नर्मदा पार होकर ओंकारेश्वर जाय; किन्तु नियम पहले ओंकारेश्वरका दर्शन करके लौटते समय अमलेश्वर दर्शनका ही है। अमलेश्वर-प्रदक्षिणामें वृद्धकालेश्वर, बाणेश्वर, मुक्तेश्वर, कर्दमेश्वर और तिलभाण्डेश्वरके मन्दिर मिलते हैं।

अमलेश्वरका दर्शन करके (निरंजनी अखाड़ेमें) स्वामिकार्तिक, (अघोरी नालेमें) अघोरेश्वर गणपति, मारुतिका दर्शन करते हुए नृसिंहटेकरी तथा गुप्तेश्वर होकर (ब्रह्मपुरीमें) ब्रह्मेश्वर, लक्ष्मीनारायण, काशीविश्वनाथ, शरणेश्वर कपिलेश्वर और गङ्गेश्वरके दर्शन करके विष्णुपुरी लौटकर भगवान् विष्णुके दर्शन करे। यहीं कपिलजी, वरुण, वरुणेश्वर, नीलकण्ठेश्वर तथा कर्दमेश्वर होकर मार्कण्डेय-आश्रम जाकर मार्कण्डेयशिला और मार्कण्डेश्वरके दर्शन करे।

मुख्य स्थान

विष्णुपुरीमें अमलेश्वरजी तथा भगवान् विष्णुके मन्दिर दर्शनीय हैं। विष्णुपुरीसे नर्मदा पार करनेपर मान्धाता द्वीपमें मुख्य मन्दिर श्रीओंकारेश्वरजीका मिलता है। उसके अतिरिक्त द्वीपपर कावेरी-संगमके पास रणमुक्तेश्वर-मन्दिरके समीप गौरी-सोमनाथका मन्दिर प्राचीन है। इसमें सोमनाथ लिङ्ग विशाल है। इससे थोड़ी दूरपर सिद्धेश्वरका प्राचीन मन्दिर है। यह भी विशाल एवं प्राचीन मन्दिर है।

आसपासके स्थान

चौबीस अवतार—ओंकारेश्वरसे (नर्मदाजीके ऊपरकी ओर) लगभग १ मील दूर जहाँ कावेरी-धारा नर्मदाजीसे पृथक् हुई है, यह स्थान है। यहाँ चौबीस अवतार तथा पशुपतिनाथजीका मन्दिर है। कुछ दूरपर पृथ्वीपर लेटी रावणमूर्ति है। यह स्थान दूसरे दिनकी यात्रामें आता है ओंकारेश्वरकी दूसरे दिनकी यात्रामें इसका उल्लेख है।*

कुबेर भंडारी—चौबीस अवतारसे १ मील आगे यह स्थान है। यहाँ कावेरी नर्मदामें मिलती है। नर्मदाके दक्षिण-तटपर कावेरी-संगमपर शंकरजीका प्राचीन मन्दिर है। कहते हैं यहाँ कुबेरने तपस्या की थी। इसीसे यह शिव-मन्दिर कुबेरेश्वर-मन्दिर कहा जाता है। कावेरी-संगमसे ४ मील पश्चिम च्यवनाश्रम है।

सातमात्रा—कुबेर भंडारीसे लगभग तीन मील दूर यह स्थान नर्मदाके दक्षिण-तटपर है। ओकारेश्वरसे यात्री प्रायः यहाँ नौकासे आते हैं। यहाँ वाराही, चामुण्डा, ब्रह्माणी, वैष्णवी, इन्द्राणी, कौमारी और माहेश्वरी—इन सप्तमातृकाओंके मन्दिर हैं।

सीता-वाटिका—सातमात्रासे लगभग सात मील दूर नर्मदाजीके उत्तर-तटसे लगभग ३ मील दूर है। कहा जाता है यहाँ महर्षि वाल्मीकिका आश्रम था। यहीं श्रीजानकीजीने निवास किया था। यहाँ ६४ योगिनियों और ५२ भैरवोंकी विशाल मूर्तियाँ हैं। पासमें सीताकुण्ड, रामकुण्ड और लक्ष्मणकुण्ड हैं।

धावड़ीकुण्ड

सीता-वाटिकासे सघन जंगलके रास्ते यह स्थान ६ मील दूर है। ओंकारेश्वर-रोड स्टेशनसे यह २० मील और उसके पासके स्टेशन सनावदसे १६ मील दूर है। मध्य-रेलवेकी बंबई-दिल्ली लाइनपर खंडवासे २१ मीलपर बीर स्टेशन है। वहाँसे १५ मील पुनासा गाँवतक पक्की सड़क है, आगे ५ मील पैदल मार्ग है।

* (श्रीवृन्दावनप्रसाद नारायणप्रसादजी पाराशरके लेखसे सहायता ली गयी है।)

636 Tirthank_Section_12_1_Back

यहाँ नर्मदाजीका सबसे बड़ा प्रपात है। लगभग ५० फुट ऊँचेसे जल गिरता है। यहाँ आसपास वन है। प्रपातके नीचे कुण्ड है। इस कुण्डसे बाणलिङ्ग निकलते हैं। अधिकांश नर्मदेश्वर-लिङ्ग लोग यहींसे ले जाते हैं। यहाँ अनेक बार बहुत सुन्दर नर्मदेश्वर लिङ्ग मिलते हैं।

कोटेश्वर—ओंकारेश्वरसे ४ मील दूर नर्मदाजीके प्रवाहकी दिशामें उत्तर-तटपर कोटेश्वर महादेवका मन्दिर है। ओंकारेश्वरसे १ मीलपर नीलगढ़ मिलता है। यहाँ करञ्जेश्वर महादेवका मन्दिर है। कहते हैं दनुके पुत्र करञ्ज दानवने यहाँ तप करके शङ्करजीको प्रसन्न किया था। ओंकारेश्वरसे उधरका मार्ग वन-पर्वतोंका है।

चरुकेश्वर—कोटेश्वरसे एक मीलपर नर्मदामें चोरल नदी मिलती है। उसके संगमपर चरुकेश्वर (चरु-संगमेश्वर) मन्दिर है। यह स्थान बड़वाहा स्टेशनसे ४ मील है।

बड़वाहा—ओंकारेश्वर-रोड स्टेशनसे नर्मदा-पुल पार करनेके बाद बड़वाहा स्टेशन मिलता है। यह एक छोटा नगर है। यहाँ चोरल नदीके किनारे जयन्ती-देवीका मन्दिर है। नगरमें नागेश्वर कुण्ड है। उसके बीचमें शिव-मन्दिर है। इस नगरसे नर्मदाजीका घाट दो मील है।

भस्मटीला—बड़वाहा स्टेशनसे २ मील नर्मदाजीके घाटतक जाकर या ओंकारेश्वर-रोडसे एक मील नर्मदाजीका रेलवे-पुल पार करके, नर्मदा-किनारे जानेपर काड़ा ग्रामके पास यह स्थान मिलता है। कहा जाता है कि यहाँ भूमिसे सुगन्धित यज्ञ-भस्म निकलती थी; किन्तु कई बार नर्मदाजीकी बाढ़का जल इसके ऊपर बह चुका है, इससे अब वहाँ कुछ नहीं है।

विमलेश्वर महादेव—बड़वाहा स्टेशनसे ५ मील और भस्मटीलेवाले घाटसे ३ मील दूर यह मन्दिर है। पासमें टीलेपर चन्द्रेश्वर महादेवका मन्दिर है।

गोमुखघाट—विमलेश्वरसे ५ मील दूर नर्मदाजीके दक्षिण-तटपर नीलगङ्गा-कुण्ड, है, जिससे गोमुखद्वारा जल गिरकर नर्मदामें आता है। वहाँ नीलकण्ठेश्वर-मन्दिर है।

गङ्गेश्वर—गोमुखसे लगभग ३ मील दूर नर्मदाजीके मध्यमें एक पक्के चबूतरेपर गङ्गेश्वर महादेव हैं। यहाँ किनारोंपर तो नर्मदाजी पश्चिम बहती हैं, किन्तु चबूतरेके पास उनकी धारा पूर्वकी ओर है। कहा जाता है कि यहीं मतङ्ग ऋषिका आश्रम था। गङ्गेश्वरसे १ मील दूर नर्मदाके उत्तर-तटपर खुलार नदीका संगम है। उसके पास दारुकेश्वर मन्दिर है। कहा जाता है श्रीकृष्णचन्द्रके सारथि दारुकने यहाँ शिवजीकी आराधना की थी। इस मन्दिरमें आर्धनारीश्वर-मूर्ति है। मन्दिरके पास एक गुफा है।

मर्दाना—गङ्गेश्वरसे लगभग ११ मील दूर नर्मदाजीके दक्षिण-तटपर यह स्थान है। यहाँ मयूरेश्वर शिव-मन्दिर है। कहा जाता है राजा मयूरध्वजकी यहीं राजधानी थी बड़वाहा स्टेशनसे यह स्थान २० मील है।

पिप्पलेश्वर—मर्दानासे ६ मील दूर नर्मदाके उत्तर तटपर पिप्पलेश्वर-मन्दिर है।

मण्डलेश्वर—पिप्पलेश्वर (पीतामली गाँव) से १२ मील दूर है। यहाँ गुप्तेश्वर महादेव और श्रीरामचन्द्रजीके मन्दिर हैं। बड़वाहा स्टेशन या खरगोलसे यहाँतक पक्की सड़क है।

माहिष्मती (महेश्वर)

(लेखक—श्रीशिवचैतन्यजी ब्रह्मचारी)

पश्चिम-रेलवेकी अजमेर-खंडवा लाइनपर ओंकारेश्वर-रोडके पास बड़वाहा-स्टेशन है। बड़वाहासे महेश्वर ३५ मील दूर है। पक्की सड़क है। मोटर-बस चलती है।

महेश्वर मध्यभारतका प्रसिद्ध नगर है। यह नर्मदाके उत्तर-तटपर बसा है। यहीं अहल्याबाईकी समाधि है और राजराजेश्वर-मन्दिर है।

महेश्वर नगरका प्राचीन नाम माहिष्मती पुरी है। यह कृतवीर्यके पुत्र सहस्रार्जुनकी राजधानी थी। जगद्गुरु शंकराचार्यसे शास्त्रार्थ करनेवाले मण्डनमिश्र भी यहीं रहते थे।

महेश्वर नगरसे पूर्व थोड़ी दूरपर महेश्वरी नदी नर्मदामें मिलती है। संगमपर महेश्वरीके दोनों ओर

कालेश्वर और ज्वालेश्वर मन्दिर हैं। नगरके पश्चिम मतङ्ग ऋषिका आश्रम तथा मातङ्गेश्वर-मन्दिर हैं। मन्दिरके समीप भर्तृहरि-गुफा है। पास ही मङ्गलागौरी-मन्दिर है। नर्मदाजीके द्वीपमें बाणेश्वर-मन्दिर है। वहीं सिद्धेश्वर और रावणेश्वर लिङ्ग भी हैं।

पञ्चपुरियोंकी गणनामें प्रभास, कुरुक्षेत्र, माया (हरिद्वार), अवन्तिका और महेश्वरपुरके नाम आते हैं। कहा जाता है महिष्मान् नामक चन्द्रवंशी नरेशने इसे बसाया था। महिष्मान्के वंशमें ही सहस्रार्जुन हुए थे।

यहाँपर सहस्रार्जुनका समाधि-मन्दिर है, आदिकेशव तथा साक्षीविनायकके प्राचीन मन्दिर हैं। माहेश्वर-लिङ्ग तो नर्मदाजीके भीतर है, केवल गर्मियोंमें उसके दर्शन होते हैं। यहाँ भवानी माताका प्राचीन मन्दिर है। उसमें स्वाहा देवीकी मूर्ति है। यह स्थान देवीके अष्टोत्तरशत पीठोंमें गिना जाता है।

महेश्वरी-संगमपर ज्वालेश्वर-मन्दिर है। उससे थोड़ी दूरपर कदम्बेश्वर-मन्दिर है और संगमपर ही सप्त मातृकाओंका मन्दिर है। इनके अतिरिक्त यहाँ और अनेक मन्दिर हैं—जैसे जगन्नाथ, रामेश्वर, बदरीनाथ, द्वारिकाधीश, पंढरीनाथ, परशुराम, अहल्येश्वर आदि-आदि। यह माहिष्मती पुरी गुप्तकाशी कही जाती है। काशीके समान ही इसका महत्त्व है।

सहस्रधारा—महेश्वरसे तीन मील आगे सहस्रधारा स्थान है। यहाँ नर्मदाजी चट्टानोंके मध्यसे बहती हैं। गर्मीमें उनकी धारा अनेक भागोंमें बँट जाती है, इससे इस स्थानको सहस्रधारा कहते हैं।

माण्डवगढ़

पश्चिम-रेलवेकी अजमेर-खंडवा लाइनपर इंदौरसे १३ मील दूर महू स्टेशन है। महूसे माण्डवगढ़ ३४ मील है और धार नगरसे २२ मील। दोनों स्थानोंसे माण्डवगढ़तक पक्की सड़क है। महूसे मोटर-बस जाती है। माण्डवगढ़ पर्वतके ऊपर है।

माण्डवगढ़में रेवाकुण्ड है। लोगोंका विश्वास है कि इस कुण्डमें नर्मदाजीका जल आता है। इसलिये नर्मदा-परिक्रमा करनेवाले माण्डवगढ़ इस कुण्डमें स्नान करने आते हैं। माण्डवगढ़में सोनद्वारकी ओर नीलकण्ठेश्वर शिव-मन्दिर है। श्रीराम-मन्दिर प्राचीन है। उसके पास आल्हाके हाथकी साँग गड़ी है।

आस-पासके तीर्थ

पगारा—माण्डवगढ़से (नर्मदा-प्रवाहके ऊपरकी ओर) १० मील दूर यह स्थान है। वक्रतुण्ड गणेशजीका मन्दिर है। नर्मदाजीकी धारा यहाँसे ७ मील दूर है।

धर्मपुरी—पगारासे ८ मील नर्मदाके उत्तर-तटपर नर्मदामें यहाँ इस नामका द्वीप भी है। धर्मपुरी नगरसे थोड़ी दूरपर कुब्जा नदीका संगम है। यहाँ नागेश्वर तथा भगवान् विष्णुकी मूर्तियाँ और कुब्जाकुण्ड है। धर्मपुरी द्वीपमें बिल्वामृत-तीर्थ है। कहा जाता है वहाँ महर्षि दधीचिका आश्रम था। महर्षिने यहीं देवताओंको अपनी अस्थियाँ दी थीं। द्वीपमें बिल्वामृतेश्वर शिव-मन्दिर है।

खलघाट—धर्मपुरीसे ७ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। कहा जाता है यह ब्रह्माका तप:स्थल है। यहाँ यज्ञकुण्डसे कपिला गौ प्रकट हुई थी। इस स्थानको कपिलतीर्थ कहा जाता है। इसके पास ही साटक नदीका संगम है। संगमके पास नर्मदामें ६० शिवलिङ्ग हैं।

जलकोटी—खलघाटसे ३ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर इस ग्रामके पास नर्मदामें कारम और बूटी नामक नदियाँ मिलती हैं। इसे त्रिवेणीतीर्थ कहते हैं।

हतनोरा—धर्मपुरीसे (नर्मदा-प्रवाहकी दिशामें) ३ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ दारुक नामक ऋषि वानप्रस्थाश्रम स्वीकार करके रहे थे। नर्मदामें एक पत्थरका हाथी है।

ब्राह्मणगाँव—हतनोरासे २ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। इससे कुछ ऊपर बुराढ़ नदीका संगम है। इस तीर्थको ब्रह्मावर्त भी कहते हैं। कहा जाता है ब्रह्माजीने यहाँ तप किया और ब्रह्मेश्वर (गुप्तेश्वर) शिवकी स्थापना की थी। चित्रसेन गन्धर्वके पुत्र पत्रेश्वरने भी यहाँ तप किया था।

शुक्लेश्वर—हतनोरासे ५ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। इसे सौरतीर्थ कहते हैं। यहाँ कुश नामक ऋषिने सूर्यकी आराधना की थी।

लोहारया—ब्राह्मणगाँवसे ९ मील, नर्मदाके दक्षिण-

तटपर। इस ग्रामसे २ मील नैर्ऋत्य कोणमें पाण्डवोंने वनवासके समय यज्ञ किया था। पर्वतपर नर्मदेश्वर, कालेश्वर, मारुतेश्वर और शिवयोगेश्वरके मन्दिर हैं।

ऋद्धेश्वर—लोहारयासे थोड़ी दूर आगे नर्मदाके उत्तर-तटपर। इसे अदितितीर्थ कहते हैं। देवमाता अदितिने यहाँ तप किया था।

बड़ावरदा—ऋद्धेश्वरसे १ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ वाराहेश्वर-शिवमन्दिर है। पृथ्वी-उद्धारके बाद वाराहभगवान्‌ने यहाँ शिवार्चन किया था। यहाँसे थोड़ी दूरपर काड़िया नदीका सङ्गम है। उसे विष्णुतीर्थ कहते हैं।

मोहिपुरा—लोहारयासे ४ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यह स्थान सहस्रयज्ञ-तीर्थ कहा जाता है। महर्षि भार्गवका यहाँ आश्रम था।

दतवारा—मोहिपुरासे २ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। इसे कपालमोचन-तीर्थ कहते हैं। कपालेश्वर-शिवमन्दिर है।

सेमरदा—दतवारासे २ मील, नर्मदाके उत्तर तटपर। यह दीप्तिकेश्वर-तीर्थ कहा जाता है। दीप्तिकेश्वर, नर्मदेश्वर, अमरेश्वर, शुक्लेश्वर तथा मोक्षदा भवानीके मन्दिर हैं।

छोटा वरदा—सेमरदाके सामने नर्मदाके दक्षिण-तटपर। कहा जाता है यहाँ अग्निदेवने तप किया था। इससे यहाँ अग्नितीर्थ मानते हैं।

अकलवाड़ा—सेमरदासे २ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ वागु नदीका संगम है। इसे वागीश्वरतीर्थ कहते हैं। राजा ब्रह्मदत्तने यहाँ कई यज्ञ किये थे।

गांगली—अकलवाड़ासे २ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। इससे थोड़ी दूरपर बगाड़ नदीका संगम है। वहाँ नन्दीने तपस्या की और नन्दिकेश्वर शिवकी स्थापना की थी।

कसरोद—गांगलीसे २ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। दक्ष प्रजापतिके पुत्रोंने यहाँ सहस्र यज्ञ किये थे। इससे इसे सहस्रयज्ञ-तीर्थ भी कहते हैं।

बोधवाड़ा—गांगलीसे ४ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ देवपथ-लिङ्ग है। आदिकल्पमें देवताओंने यहींसे नर्मदा-परिक्रमा प्रारम्भ की थी। यहाँसे थोड़ी दूरपर देवमय-तीर्थ है, जहाँ परिक्रमाके लिये देवता एकत्र हुए थे।

चिखलदा—बोधवाड़ासे २ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ नीलकण्ठेश्वर और हर-हरेश्वरके मन्दिर हैं। सप्तर्षियोंने यहाँ तपस्या की थी। उनके द्वारा स्थापित अग्नीश्वर यहाँ हैं।

राजघाट—चिखलदाके सामने नर्मदाके दक्षिण-तटपर। बड़वानी नगरसे स्थान लगभग ३ मील है। बड़वानीसे यहाँतक पक्की सड़क है। यहाँ अनेकों मन्दिर हैं, जिनमें गणपति, कालिका, अगस्त्यमुनि और तुलसीदासके मन्दिर मुख्य हैं। इस स्थानको बावनगङ्गा और रोहिणीतीर्थ भी कहते हैं।

कोटेश्वर—चिखलदासे ७ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर उरी बागली नदीका संगम है। संगमके पास कोटेश्वरतीर्थ है। यहाँ कुण्डेश्वर-शिवमन्दिर है। विश्रवाके पुत्र कुण्डने यहाँ तपस्या करके भगवान् शंकरको संतुष्ट किया था।

मेघनादतीर्थ—कोटेश्वरसे दो मील, नर्मदाके दोनों तटोंपर प्राचीन शिवलिङ्ग हैं। उनमेंसे एक मेघनाद द्वारा स्थापित है। पास ही रावण और कुम्भकर्णके तपःस्थान हैं।

भौतिघाट—मेघनादतीर्थसे १ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ गोयद नदीका संगम है। इसे मनोरथतीर्थ कहते हैं। अनङ्गेश्वर शिव-मन्दिर है।

बीजासेनतीर्थ—भौतिघाटसे लगभग ३ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। कहा जाता है रावणकी किसी बीजासेनी नामक पुत्रीने यहाँ तप किया था। गर्भनाशसे रक्षाके लिये स्त्रियाँ यहाँ स्नान-दानादि करती हैं। यहाँसे २ मीलपर पाण्डवोंका निवास स्थान है।

धर्मरायतीर्थ—बीजासेनसे २ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ धर्मेश्वर-मन्दिर है। धर्मराजने यहाँ यज्ञ किया था।

हिरनफाल—धर्मरायतीर्थसे ३ मील। मार्ग घोर जंगलका है। नर्मदाजी चट्टानोंके बीचसे बहती हैं। उनकी धारा इतनी सँकरी हो गयी है कि उसे हिरन फाँद सकता है। कहा जाता है कि दैत्य हिरण्याक्षने यहाँ तप किया था।

देवझरीकुण्ड

(लेखक—श्रीकालूरामजी नायक)

मध्य-रेलवेके खंडवा स्टेशनपर उतरकर वहाँसे जो मोटर बस खरगौन जाती है, उससे टेमरनी गाँवमें उतरना चाहिये। टेमरनीसे यह स्थान तीन मील उत्तर है।

मध्यभारतके नीमाड़ जिलेमें सगूर-भगूर नामक गाँवोंके बीचमें देवझरीकुण्ड है। यहाँ दुर्गाजीका मन्दिर है।

कहते हैं कि धन्वन्तरिजी यहाँसे किसी समय निकले थे। उनके शिष्योंद्वारा ही देवझरीकुण्डका निर्माण हुआ था। यह कुण्ड पक्का है। आश्विन-अमावस्याको मेला लगता है। कहा जाता है यहाँ पाँच-सात मङ्गलवारको स्नान करनेसे असाध्य रोगोंमें भी लाभ होता है।

नागरा

(लेखक—श्रीझिंठ मोहना कलार)

मध्यप्रदेशके गोंदिया नगरसे ३ मील दूर गोंदिया-बालाघाट-मोटर-रोडपर नागरा ग्राम है। ग्रामके पश्चिम हनुमान्‌जीका एक छोटा मन्दिर है। पासमें एक कुआँ है। यह मन्दिर और कुआँ एक टीलेको खोदनेसे निकले हैं। उसके पास ही भगवान् शङ्करका प्राचीन मन्दिर है। पहले यहाँ आस-पास जंगल था। मन्दिरका केवल शिखर दूरसे दीखता था। नागरा गाँव तो मन्दिरके पता लगनेके बाद बसा। मन्दिर काले पत्थरका है। उसमें बहुत-सी मूर्तियाँ खुदी हैं। मन्दिरमें भीतर जो शिवलिङ्ग है, वह अपने अर्घेसे अभिन्न है। लिङ्ग-मूर्तिमें नीचेके भागमें चारों ओर चार मुख बने हैं। प्रत्येक मुखके बीचमें एक नाग बना है। मन्दिरमें एक ओर गणेश-पार्वती तथा नागदेवताकी मूर्तियाँ हैं।

इस मन्दिरके पास एक हनुमान्‌जीका मन्दिर है। इसमें हनुमान्‌जीकी मूर्तिके अतिरिक्त एक शिवलिङ्ग भी है। यहाँ एक खंभा है, जिसमें चारों ओर देवमूर्तियाँ खुदी हैं। मन्दिरके पश्चिम सरोवर है। वहाँ एक टीलेपर कालभैरव-मन्दिर है। ये सब मूर्तियाँ प्रायः भूमि खोदनेपर समय-समयपर निकली हैं। यहाँ भूमि खोदनेपर कई कूप तथा भग्न-मूर्तियाँ मिली हैं। यहाँ शिवरात्रिपर, कार्तिकमें मेला लगता है।

सिहारपाट

(लेखक—श्रीनन्दलालजी खरे)

मध्य-रेलवेकी एक लाइन गोंदियासे बालाघाटतक गयी है। बालाघाटसे ३२ मील दूर बैहर कस्बा है। वहाँतक मोटर-बस चलती है। वहाँसे पास ही पश्चिम ओर सिहारघाट स्थान है। यहाँ चैत्र-शुक्ला नवमीसे वैशाख-कृष्णा द्वितीयातक मेला लगता है।

यहाँ मुख्य मूर्ति एक सिंहकी है। उसीकी पूजा होती है। वैसे ग्राममें एक श्रीराम-मन्दिर भी है। यह मन्दिर विशाल एवं भव्य है। सिंहमूर्तिवाले मन्दिरको सिहारपाट मन्दिर कहते हैं।

भंडारा

(लेखक—श्रीसुरेशसिंहजी)

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-नागपुर लाइनपर नागपुरसे ३९ मील दूर भंडारा-रोड स्टेशन है। स्टेशनसे भंडारा-बाजारतक पक्की सड़क है। भंडारामें दो शिवमन्दिर तीर्थस्वरूप हैं—

हिरण्येश्वर—यह मन्दिर तो नवीन है, किन्तु यहाँतक शिवलिङ्ग प्राचीन हैं। सन् १९१३ में एक स्त्रीको नदी-किनारे एक जलहरी और शिवलिङ्ग दीखा। पीछे वहाँ

मध्यप्रदेशके कुछ पवित्र स्थल

शिव-मन्दिरका बहिर्भाग, नागरा
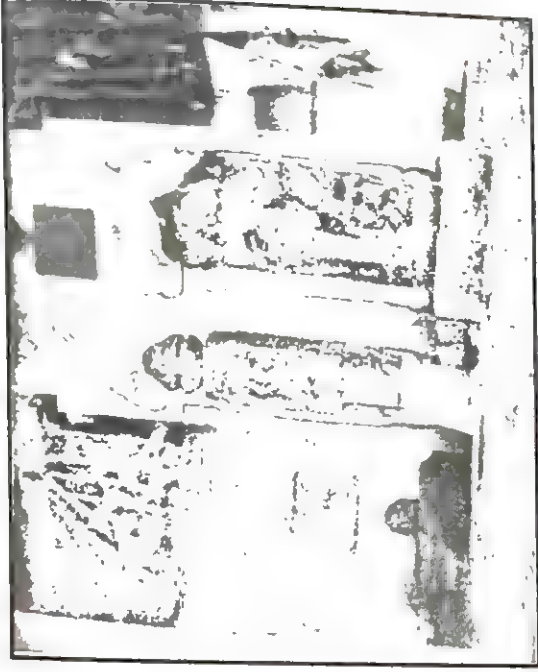
श्रीहनुमान्‌जीके मन्दिरका भीतरी दृश्य, नागरा
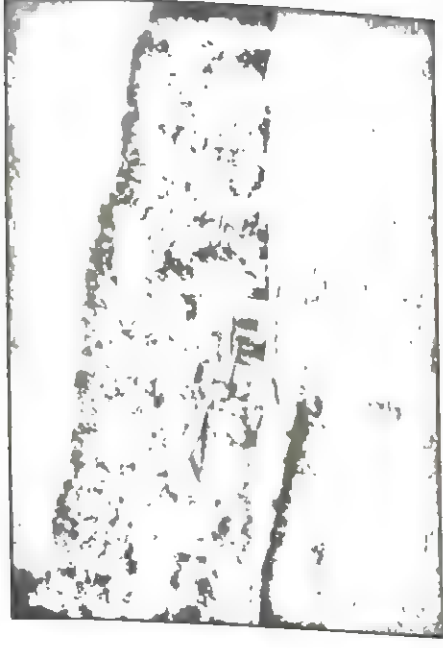
अंबालासागरका एक दृश्य, रामटेक

श्रीराम-मन्दिर, रामटेक

श्रीअम्बिकादेवी-मन्दिर, कुण्डलपुर

कुण्डलपुरका वह स्थान, जहाँ भीष्मककी राजधानी थी

लोणारका जलप्रपात

संततीर्थ, अमलनेर
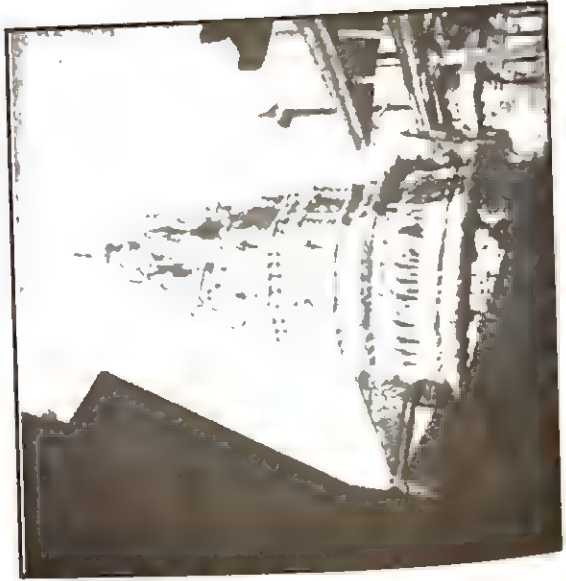
श्रीनानझरी-क्षेत्रके मन्दिर

श्रीतुलजाभवानी-मन्दिर, तुलजापुर

श्रीतुलजाभवानी, तुलजापुर

श्रीमहाकाली, कोल्हापुर

एक शिलामें ५ शिवलिङ्ग और पासका टीला खुदवाते समय मिले। यहाँ हनुमान्‌जीके मन्दिरकी प्रतिष्ठा इन लिङ्गमूर्तियोंके प्राप्त होनेके पश्चात् हुई थी। यहाँ शिवरात्रि और वसन्तपञ्चमीको मेला लगता है।

दतलेश्वर

बस्तीसे पूर्व नदी-पार दतला नालेके किनारे जंगलमें दतलेश्वरका स्थान है। वहाँ बहुतसे शिवलिङ्ग हैं। यहाँ यह स्थान नालेके प्राय: बीचमें ही है। घोर जंगल होनेसे कम ही लोग जाते हैं। कोई मन्दिर नहीं है। केवल चबूतरे-सी भूमिपर लिङ्ग-मूर्तियाँ हैं।

रामटेक

(लेखक—श्रीविश्वनाथप्रसादजी गुप्त 'चन्द्रभान')

पूर्वी रेलवेकी एक शाखा नागपुरसे रामटेकतक जाती है। नागपुरसे रामटेक स्टेशन २६ मील है। स्टेशनसे बस्ती १ मील और मन्दिर लगभग २॥ मील दूर है। नागपुरसे मोटर-बस भी जाती है। रामटेक स्टेशनके पास धर्मशाला है। बस्तीमें भी धर्मशाला है। वहाँ रामनवमी तथा कार्तिक-पूर्णिमाको मेला लगता है।

रामटेक गाँवके पास रामगिरि पर्वत है। पर्वतपर जानेके दो मार्ग हैं। प्राय: यात्री सरोवरके पासके मार्गसे जाकर गाँवके पासके मार्गसे उतरते हैं। सरोवरके पाससे पर्वतपर जानेको सीढ़ियाँ बनी हैं। मार्गमें विश्राम-स्थान हैं, छोटे-छोटे मन्दिर हैं। मध्यमार्गमें एक बावली है।

पर्वत-शिखरपर श्रीराम-मन्दिर है। मन्दिरमें राम-लक्ष्मण-जानकीकी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरके सामने ही वाराहभगवान्‌की एक बड़ी मूर्ति है।

रामटेक बस्तीसे लगभग दो मीलपर रामसागर तथा अंबालासागर सरोवर हैं। ये दोनों सरोवर पवित्र माने जाते हैं। इनके किनारे कई मन्दिर हैं। पासमें एक पहाड़ीपर पुराना किला है। वहाँ एक बावली तथा मन्दिर है। रामटेकमें एक जैन-मन्दिर भी है।

कहा जाता है भगवान् श्रीराम पञ्चवटी जाते समय यहाँ पर्वतपर टिके थे। कालिदासने मेघदूतमें इसी पर्वतको रामगिरि माना है।

कुण्डलपुर

(लेखक—पं० श्रीरामचन्द्रजी शर्मा छांगाणी)

मध्य-रेलवेमें वर्धासे आगे पुलगाँव स्टेशन है। पुलगाँवसे एक लाइन आर्वी जाती है। आर्वी अच्छा नगर है। इस स्थानसे कुण्डलपुर ६ मील दूर है। आर्वीसे यहाँतक सड़क है। सवारियाँ मिलती हैं।

कुण्डलपुरका प्राचीन नाम कुण्डिनपुर है। यह राजा भीष्मककी राजधानी था। राजा भीष्मककी पुत्री रुक्मिणीजी थीं। भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने कुण्डिनपुरमें ही रुक्मिणीजीका हरण किया था। यह स्थान वर्धा नदीके किनारे है।

यहाँ वह अम्बिका-मन्दिर अब भी है, जिसकी पूजा करने श्रीरुक्मिणीजी पधारी थीं। यह अम्बिका-मन्दिर कुण्डलपुरसे पास ही एक टीलेपर है। इसमें भगवतीकी चार फुट ऊँची मूर्ति है। इसी मन्दिरकी खिड़कीके पाससे रुक्मिणी-हरण हुआ था।

कुण्डलपुरमें मुख्य मन्दिर श्रीविट्ठल-रुख्माईका है। इस मुख्य मन्दिरके अतिरिक्त यहाँ श्रीसदारामजी महाराजकी समाधि है। श्रीसदारामजी इस ओरके प्रख्यात संत हो गये हैं। उनके समाधि-मन्दिरमें ही उनके गुरु श्रीबालकदासजीकी भी समाधि है।

कहा जाता है पंढरपुरसे श्रीपंढरीनाथ आषाढ़ी एवं कार्तिकी पूर्णिमाको कुण्डलपुर आ जाते हैं। इन दोनों तिथियोंपर यहाँ मेला लगता है।

इन मन्दिरोंके अतिरिक्त पञ्चमुखी महादेवका एक प्राचीन मन्दिर है। एक दूसरा महादेवमन्दिर भी है, जिसके दो ओर दो गुफाएँ हैं। गुफाओंमें अन्धकारमें शिवलिङ्ग है। वैसे यहाँ कुल मिलाकर लगभग २५ मन्दिर हैं। एक धर्मशाला है।

अमरावती

भुसावल-नागपुर लाइनपर बडनेरा स्टेशन है। बडनेरासे अमरावतीतक एक लाइन जाती है। बडनेरासे अमरावती ६ मील है।

अमरावती मध्यप्रदेशका अच्छा नगर है। नगरमें दो प्राचीन मन्दिर देवीके हैं। ये दोनों मन्दिर पास-पास हैं। नदीके एक तटपर एकवीरा देवीका मन्दिर है। नदीके दूसरे तटपर अम्बाजीका मन्दिर है। इन मन्दिरोंकी यहाँ बहुत मान्यता है।

कुछ लोगोंके मतसे रुक्मिणीजी यहीं देवी-पूजन करने आयी थीं और यहींसे भगवान् श्रीकृष्णने उनका हरण किया था।

करञ्जतीर्थ—अमरावती जिलेके बरारक्षेत्रमें यह तीर्थ है। यहाँ नीललोहित महादेव मन्दिर है। आस-पास और भी देवताओंके छोटे मन्दिर हैं। कहा जाता है यहाँ करञ्ज नामके ऋषि देवीकी उपासना करके रोगमुक्त हुए थे।

ऊनकेश्वर

(लेखक—श्रीरुद्रदेव केशवराम मुनगेलवार)

मध्यरेलवेकी भुसावल-नागपुर लाइनमें मुर्तिजापुरसे एक लाइन यवतमाल जाती है। यवतमाल स्टेशन उतरकर मोटर-बससे पांढरकवढ़ा, वहाँसे दूसरी मोटर-बससे आदलाबाद और वहाँसे ऊनकेश्वर जाते हैं। आदलाबादसे आगे कच्ची सड़क है। वर्षामें मोटर-बस बंद रहती है।

ऊनकेश्वरमें गरम पानीका कुण्ड है। कहा जाता है इस जलमें कुछ समयतक नियमित स्नान करनेसे कुष्ठ दूर हो जाता है। कुष्ठके रोगी यहाँ बहुत आते हैं। यहाँ ऊनकेश्वर-शिवमन्दिर है।

कहा जाता है कि यहाँ शरभङ्ग ऋषिका आश्रम था। भगवान् श्रीराम वनवासके समय यहाँ पधारे और ऋषिके शरीरमें हुए कुष्ठ रोगको दूर करनेके लिये बाण मारकर पृथ्वीसे यह उष्ण जलधारा प्रकट की।

माहुरगढ़

(लेखक—श्रीयुत आर० के० जोशी)

मध्य-रेलवेकी भुसावल-नागपुर लाइनपर मुर्तिजापुर स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन यवतमालतक जाती है। यवतमालसे माहुर-क्षेत्र समीप है।

माहुरक्षेत्रमें अनसूया-दत्त पर्वतपर महर्षि जमदग्निकी समाधि है, रेणुकादेवीका मन्दिर है और परशुरामकुण्ड है।

कहा जाता है भगवान् दत्तात्रेयका आश्रम यहीं था। दत्तात्रेयजी जमदग्नि ऋषिके गुरु थे। गुरुकी आज्ञासे महर्षि जमदग्नि अपनी पत्नी रेणुकादेवीके साथ यहाँ आये और यहीं उन्होंने तथा रेणुकाजीने समाधि ली। किलेके भीतर महाकालीका मन्दिर तथा सरोवर है।

लोणार

(लेखक—श्रीनिहालचंद आनन्दजी वक्काणी 'विशारद')

मध्य-रेलवेकी भुसावल-नागपुर लाइनके अकोला स्टेशनपर उतरकर वहाँसे ६७ मील मोटर-बससे मेहकर गाँव जाना पड़ता है। मोटर-बस बराबर चलती है। मेहकर बुलडाना जिलेकी तहसील है। मेहकरसे लोणार १५ मील है। लोणारके लिये मेहकरसे प्रायः सदा मोटर-बस चलती है।

कहा जाता है लोणार लवण नामक राक्षसका स्थान था, जिसे भगवान् विष्णुने मारा और मारकर एक जलधारा प्रकट करके उसमें स्नान किया। आज भी वह प्रपात पुण्यतीर्थ माना जाता है। हाथीकी सूँड़के समान प्रपात एक कुण्डमें गिरता है। कुण्डमें उतरनेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। पासमें ही गणेशजी, भगवान् विष्णु तथा शङ्करजीके मन्दिर हैं। यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। गङ्गा-दशहरापर मेला लगता है।

लोणारसे पहाड़ीके नीचे जानेपर एक छोटा प्रपात मिलता है—उसे सीता-नहानी कहते हैं। कहा जाता है श्रीजानकीजीने वहाँ स्नान किया था। उसके पास अँधियारा-महादेवका प्राचीन मन्दिर है। उससे आगे जाकर क्षार-सरोवर मिलता है। उसके चारों ओर कई शिव-मन्दिर तथा एक देवी-मन्दिर है। यहाँके गाँवमें लेटे हनुमान्‌जीकी विशाल मूर्ति है, जिनके मस्तकके पास श्रीराम, लक्ष्मण, सीताजी आशीर्वाद देते खड़े हैं। इसी गाँवमें दैत्यसूदन-भगवान्‌का सुन्दर मन्दिर है। उसके पास ही एक दूसरे मन्दिरमें भगवान् विष्णु, ब्रह्माजी तथा गरुड़की मूर्तियाँ हैं।

वाशिम

नागपुर-भुसावल लाइनपर अकोला प्रसिद्ध स्टेशन तथा नगर है। वहाँसे वाशिम ५२ मील है। अकोलासे वहाँतक सवारी जाती है। वाशिममें धर्मशाला है। कहा जाता है कि यहाँ पहले वत्सऋषि रहते थे।

बस्तीके बाहर पद्मतीर्थ है। यह बहुत प्रसिद्ध है। इस ओरके बहुत यात्री यहाँ स्नान करने आते हैं। नगरमें बालाजीका सुन्दर मन्दिर है। उसके समीप भी सरोवर है।

मेहकर (मेघङ्कर)

(लेखक—श्रीलक्ष्मण रामासा सावजी)

मेघंकर-तीर्थ-माहात्म्य

तीर्थं मेघंकरं नाम स्वयमेव जनार्दनः।
यत्र शार्ङ्गधरो विष्णुर्मेखलायामवस्थितः॥

(मत्स्यपुराण २२। ४०)

'मेघंकरतीर्थ साक्षात् भगवान् जनार्दनका ही स्वरूप है। इसकी मेखलामें शार्ङ्गधनुष धारण किये हुए भगवान् विष्णु अवस्थित हैं।'

यहाँ स्नान करनेका बड़ा माहात्म्य है। इसका वर्णन ब्रह्मपु० ९३। ४६; पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, अ० १७५, अ० १८१। ४, १ आदि कितने स्थलोंमें आता है।

मेहकर

खामगाँव स्टेशनसे यह स्थान ५० मील है। स्टेशनसे यहाँतक बसें जाती हैं। तीर्थस्थानमें यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

यह स्थान पैनगङ्गाके तटपर है। कहते हैं सृष्टिके आदिमें ब्रह्माजीके यज्ञमें प्रणीतापात्रसे इस नदीकी उत्पत्ति हुए थी। यह पवित्र नदी यहाँ पश्चिमवाहिनी होनेके कारण और पुण्यप्रद मानी जाती है। यहाँ श्राद्ध करना बहुत महत्त्वपूर्ण माना गया है।

नदीके तटपर खूब ऊँचाईपर श्रीशार्ङ्गधरभगवान्‌का अत्यन्त प्राचीन भव्य मन्दिर है। इसका सभामण्डप विशाल एवं कलापूर्ण है। इस मन्दिरमें जो भगवान् शार्ङ्गधरकी मूर्ति है, वह एक भवनकी नींव खोदते समय काष्ठकी पेटीमें पूजा-सामग्रीसहित पायी गयी थी। वह स्थान एक प्राचीन खँडहर था। कई और भी मूर्तियाँ वहाँ मिलीं; किन्तु उस समयके अंग्रेज अधिकारियोंने उन्हें लंदन-म्यूजियमके लिये भेज दिया। जनताके आग्रहके कारण भगवान् शार्ङ्गधरकी मूर्ति रख ली गयी। इस मूर्तिकी उसी समय प्रतिष्ठा हुई। भगवान्‌की यह मूर्ति ११ फुटकी शालग्राम-शिलासे बनी है। भगवान्‌के समीप श्रीदेवी, भूदेवी तथा जय-विजयकी छोटी मूर्तियाँ हैं। कलाकी दृष्टिसे यह परम सुन्दर मूर्ति है।

पुराणोंमें जिन शार्ङ्गधरभगवान्‌के दर्शनका उल्लेख है, यह वही प्राचीन मूर्ति है। मार्गशीर्ष-शुक्ला पञ्चमीसे पूर्णिमातक यहाँ महोत्सव होता है।

श्रीक्षेत्र नागझरी

(लेखक—श्रीपुरुषोत्तम हरि पाटिल)

मध्य-रेलवेकी भुसावल-नागपुर लाइनपर श्रीक्षेत्र नागझरी स्टेशन शेगाँवसे ५ मील दूर है। यह स्थान मोहना नदीके तटपर है। नदीमें गोपालकुण्ड, रामकुण्ड आदि कुण्ड हैं। नदीके पूर्व ऊपरकी ओर गोमुखकुण्ड है। उसके पास ही शिव-मन्दिर है। इस कुण्डका स्नान पवित्र माना जाता है। पर्वोंके समय स्नानार्थियोंका मेला लगता है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं।

गोमुखकुण्डके पास ही संत क्षेमाजी महाराजका मन्दिर है। मन्दिरके ऊपरी भागमें शिवलिङ्ग तथा क्षेमाजी महाराजकी चरणपादुकाएँ हैं। नीचे गुफा है, जिसमें महाराज भजन करते थे। पासमें ही संत गोमाजी महाराजका समाधि-मन्दिर है। उसके पूर्व ओर चार शिवालय हैं तथा एक शिवलिङ्ग ऊपर है। इस प्रकार यह पञ्चलिङ्ग-क्षेत्र है। यहाँसे पूर्णा नदी १४ मील दूर है; किन्तु गोमुखकुण्डमें संत गोमाजीकी तपस्याके प्रभावसे पूर्णाकी धारा गिरती है। यहाँ प्राचीन नागेश्वर मन्दिर है। इसी मन्दिरके समीप झरने हैं। इनके कारण ही इस क्षेत्रका नाम नागझरी पड़ा।

शेगाँव

(लेखक—श्रीपुण्डलीक रामचन्द्र पाटील)

मध्य-रेलवेकी भुसावल-नागपुर लाइनपर शेगाँव प्रसिद्ध स्टेशन है; महाराष्ट्रके प्रख्यात संत श्रीगजानन महाराजने शेगाँवमें बहुत दिन निवास किया और यहीं उन्होंने समाधि ले ली। उनके समाधि-स्थानपर विशाल मन्दिर है। समाधि-मन्दिरमें चारों ओर देवमूर्तियाँ खुदी हैं। मन्दिरमें श्रीराम-लक्ष्मण जानकीकी मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। उनके आगे श्रीगजानन महाराजकी पादुकाएँ हैं। मन्दिरके निचले भाग (तलघर) में समाधि है। समाधिके ऊपर गजानन महाराजकी मूर्ति है। मन्दिरके साथ ठहरनेकी व्यवस्था है। रामनवमीको मेला लगता है। इस मन्दिरके पास ही गर्गाचार्य नामक प्राचीन शिव-मन्दिर है।

अमलनेर

(लेखक—पं० श्रीनत्थूलाल केदारनाथजी शर्मा)

पश्चिम-रेलवेकी सूरत-भुसावल लाइनपर सूरतसे १६० मील दूर अमलनेर स्टेशन है। अमलनेर बोरी नदीके दोनों तटोंपर बसा है। नदीके बीचमें संत सखारामजी तथा उनकी गद्दीपर बैठनेवाले महापुरुषोंकी समाधियाँ हैं। नदीके किनारे सखारामजीकी बाड़ी है। उसमें रुक्मिणी-पाण्डुरङ्गकी युगलमूर्ति प्रतिष्ठित है।

श्रीसखारामजी इधरके प्रख्यात संत हो गये हैं, यहाँ वैशाख शुक्ला ११ से वैशाख पूर्णिमातक विशेष समारोह होता है।

अमलनेरसे दो मील दूर एक टीलेपर अम्बरीषका स्थान है। वहाँ वरुणेश्वर शिव-मन्दिर है। निकटवर्ती गाँवके समीप खारटेश्वर-मन्दिर है। आषाढ़ शुक्ला १२ को मेला लगता है।

उनपदेव—यह गाँव अमलनेरसे ४० मील है। मोटर-बस जाती है। वहाँ सरकारी धर्मशाला है। पहले शरभङ्ग-ऋषिका आश्रम था। गरम पानीका झरना वहाँ है।

पद्मालय—अमलनेरसे दूसरी ओर ४० मील। यहाँ गणपतिका प्रसिद्ध मन्दिर है। उसके पास ही सरोवर है।

प्रकाश

पश्चिम-रेलवेकी सूरत-भुसावल लाइनपर सूरतसे ११५ मील दूर रनाला स्टेशन है। स्टेशनसे प्रकाश पास ही पड़ता है। गाँवके पूर्व गौतमेश्वर महादेवका मन्दिर है। यह मन्दिर बहुत प्राचीन है। गाँवके पास ही तापी नदीका संगम है। बृहस्पतिके सिंहराशिमें आनेपर यहाँ गौतमेश्वरके दर्शन करने बहुत यात्री आते हैं।

कवेश्वर

(लेखक—श्रीसबलसिंहजी)

मध्य-रेलवेकी बंबई-दिल्ली लाइनपर खंडवासे १० मील दूर तलवाड़िया स्टेशन है। वहाँसे ५ मील दूर कवेश्वर स्थान है। इस स्थानसे मध्यप्रदेशकी वह कावेरी नदी निकली है, जो ओंकारेश्वरके पास नर्मदामें मिली है। (यह दक्षिणकी काबेरीसे भिन्न है।)

यह स्थान सह्याद्रिकी तराईमें घोर जंगलमें है। नदीके उद्गमपर एक पक्का कुण्ड है। कुण्डके समीप शिव-मन्दिर है। कहा जाता है कि यह राजा नलद्वारा स्थापित लिङ्ग है। पासमें दो हनुमान्‌जीके मन्दिर हैं। महाशिवरात्रिपर मेला लगता है।

समीपमें कावेरी ग्राम है, जहाँ दत्तात्रेय-आश्रम है। यहाँ भगवान् दत्तात्रेयने तप किया था, ऐसा लोग मानते है।

ऊन

(लेखक—श्रीकैलासनारायणजी बिल्लौरे 'विशारद')

पश्चिमी रेलवेकी अजमेर-खंडवा लाइनपर खंडवासे ३३ मील पहले सनावद स्टेशन है। सनावदसे मोटर-बसद्वारा खरगौन जाना चाहिये। खरगौनसे ऊन दो मील दूर है।

कहा जाता है यहाँ ९९ मन्दिर, ९९ सरोवर तथा ९९ बावलियाँ थीं। प्रत्येक सौमें एक कम होनेसे इस ग्रामका नाम ऊन (अर्थात् एक कम) पड़ा। यहाँ भग्नमन्दिर बहुत हैं और कुएँ भी बहुत हैं।

इस ग्राममें श्रीनीलकण्ठेश्वर, महाकालेश्वर, हाटकेश्वर, भगवान् शङ्कर तथा बल्लालेश्वरके प्राचीन मन्दिर अब भी हैं। ये मन्दिर अत्यन्त कलापूर्ण हैं, किन्तु इनके सभामण्डपादि अब गिर रहे हैं।

ऊन ग्रामसे कुछ दूरीपर महालक्ष्मी-मन्दिर है। इसमें महालक्ष्मीकी विशाल मूर्ति है। कहा जाता है यह मूर्ति प्रातः, मध्याह्न, सायं तीन रूपकी प्रतीत होती है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। ऊन गाँवसे मन्दिरतक सड़क है।

जैनतीर्थ (पावागिरि)

ऊन जैनतीर्थ भी है। इसे पावागिरिजी कहते हैं। इसे अतिशयक्षेत्र कहा जाता है। यहाँ एक जैन-धर्मशाला है और नवीन जैन-मन्दिर है। कई प्राचीन जैन-मन्दिर जीर्ण दशामें हैं। उनमें एक शान्तिनाथ-मन्दिर है, जिसमें शान्तिनाथ, अवहरनाथ और कुन्तनाथकी मूर्तियाँ हैं।

जानापाव

(लेखक—श्रीआर० के० जोशी)

पश्चिम-रेलवेकी अजमेर-खंडवा लाइनपर इंदौरसे १३ मील दूर महू स्टेशन है। महूसे १४ मील दूर जानापाव पर्वत है। महूसे बंबई-आगरा रोडपर मोटर-बससे १० मील आनेपर फिर दो मील सीधा मार्ग है और दो मील पहाड़की चढ़ाई है। पहाड़पर एक छोटी धर्मशाला है।

यहाँ पर्वतपर एक कुण्ड है और जनकेश्वर महादेव तथा भैरवनाथके मन्दिर हैं। कुछ लोगोंके मतसे महर्षि जमदग्निका यहीं आश्रम था। इसी स्थानपर परशुरामजीका जन्म हुआ था। यहींपर पिताकी आज्ञासे परशुरामजीने माताका वध किया और फिर पितासे वरदान माँगकर माताको जीवित कर दिया।

केवड़ेश्वर (शिप्रा-उद्गम)

(लेखक—श्रीघनश्यामजी लहरी)

इंदौरसे ५ मीलपर कस्तूरबा ग्राम है। वहाँसे एक सड़क पूर्वकी ओर केवड़ेश्वरतक जाती है। यह स्थान इंदौरसे १२ मील है। केवड़ेश्वरसे ही शिप्रा नदी निकलती है। यहाँ एक धर्मशाला है। एक कुण्ड है। स्थान जंगलमें है, किन्तु यहाँ कुछ साधु बराबर रहते हैं। एक गुफामें केवड़ेश्वर-मूर्ति है। प्रकाश लेकर भीतर जाना पड़ता है। मूर्तिपर सदा बूँद-बूँद जल गिरता है। पासमें एक केवड़ेके वृक्षकी जड़से शिप्रा नदी निकलती है। उद्गमके पास कुण्ड है, जिसमें लोग स्नान करते हैं। सोमवती अमावस्यापर मेला लगता है।

देवास

पश्चिम-रेलवेकी अजमेर-खंडवा लाइनमें इंदौर अच्छा स्टेशन और मुख्य नगर है। इंदौरसे देवास २० मील दूर है। यह पहले मरहठे नरेशोंकी राजधानी थी। मोटर-बसका मार्ग है। देवासके समीप एक पहाड़ीपर चामुण्डा देवीका मन्दिर है। पास ही एक पर्वतीय गुफामें भी देवीकी विशाल मूर्ति है। पहाड़ीके नीचे सरोवर है और वहाँ भगवान् शङ्करका मन्दिर है। देवास नगरमें भी बहुत-से देवमन्दिर हैं।

धार

इंदौरसे १३ मीलपर महू स्टेशन है। वहाँसे ३३ मीलपर धार नगर है। मोटर-बसें चलती हैं। यह इतिहासप्रसिद्ध राजा भोजकी राजधानी धारा नगरी है। यहाँ प्राचीन ध्वंसावशेष बहुत हैं। यहाँके पुराने मन्दिर मुसल्मानी राज्यके समय मसजिद बना दिये गये।

कहा जाता है कि गुरु गोरखनाथके शिष्य राजा गोपीचंदकी राजधानी भी धार ही है।

धारमें जैन-मन्दिर है। उसमें पार्श्वनाथजीकी स्वर्णमूर्ति है। नगरमें हिंदू-मन्दिर भी बहुत-से हैं।

गङ्गेश्वर

(लेखक—श्रीबालाराम भागीरथजी)

ग्राम सुलतानपुरसे आध मीलपर दक्षिण ओर गङ्गेश्वर महादेवका मन्दिर है। यहाँ बहुत बड़ी गुफा है। गुफामें ही मन्दिर है। पासमें पानीकी धारा ऊपरसे गिरती है। शिवरात्रिको मेला लगता है।

धारसे मोटर-बसद्वारा बोदवाड़ातक आना चाहिये। वहाँसे यह स्थान २ मील दूर है।

अमझेरा

गङ्गेश्वर महादेवसे साढ़े चार मीलपर यह स्थान है। धारसे यहाँतक मोटर-बस आती है। यहाँ भी जलधारा गिरती है। देवीका और वैजनाथ महादेवका प्राचीन मन्दिर है। कुछ लोग इसे रुक्मिणीजीकी जन्मभूमि कुण्डिनपुर मानते हैं।

विश्वकर्मा-मन्दिर, रुनीजा

(लेखक—मिस्त्री श्रीशंकरलाल आत्मारामजी)

रतलामसे १९ मील दूर दक्षिण रुनीजा ग्राम है। रतलाम-इन्दौरके मध्य रतलामसे १९ मीलपर रुनीजा स्टेशन है। स्टेशनसे ग्राम पौन मील दूर है। रतलामसे मोटर-बसका भी मार्ग है।

यहाँ विश्वकर्माका मन्दिर है। बढ़ई और लुहार इसे पवित्र क्षेत्र मानते हैं। कहा जाता है कि यहाँकी विश्वकर्माकी मूर्ति एक बढ़ईको लगभग सौ वर्ष पहले किसी कार्यसे भूमि खोदते समय प्राप्त हुई थी। माघशुक्ला त्रयोदशीको यहाँ समारोह होता है। चैत्रशुक्ला तृतीयाको भी मेला लगता है।

सुखानन्द-तीर्थ

(लेखक—पं० श्रीबद्रीदत्तजी भट्ट 'सिद्धान्तरत्न' तथा श्रीरामप्रसाद मक्खनलालजी)

मध्यभारतके मंदसौर जिलेमें जावद एक प्रसिद्ध स्थान है। वहाँसे कुछ दूर पर्वतकी तराईमें यह प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ 'शौकी*' गङ्गाका प्रवाह है। कहा जाता है यह महामुनि शुकदेवजीकी तपःस्थली है और यह गङ्गाकी धारा शुकदेवजीने अपने तपोबलसे यहाँ प्रकट की थी। इस स्थानपर भगवान् शङ्करका मन्दिर है। शुकदेवजीकी मूर्ति भी प्रतिष्ठित है। संत बालानन्दगिरिका यहाँ मठ है। संत बालानन्दजीने जीवित समाधि ली थी। उनकी समाधि भी है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं।

यहाँके प्रवाहमें लोग अस्थि-विसर्जन करते हैं। वे विसर्जित अस्थियाँ जलरूप हो जाती हैं। कहा जाता है दिल्लीसे गुप्त वेशमें महाराष्ट्र जाते समय छत्रपति शिवाजी यहाँ रुके थे। यहाँ वैशाखशुक्ला द्वादशीसे ज्येष्ठकृष्णा चतुर्दशीतक मेला रहता है।

एक पर्वतपर यह स्थान है। एक गुफाके भीतर मन्दिर है। मन्दिरके द्वारपर सुखानन्द स्वामीकी मूर्ति है। मन्दिरमें शिवमूर्ति है। वहाँ जलधारा उठती है, जो शिवलिङ्गपर पड़ती है। मन्दिरके बाहर एक जल-प्रपात है। प्रपात गिरनेके स्थानपर बहुत-सी देवमूर्तियाँ हैं। आगे एक और झरना है। उससे आगे पर्वतमें एक गुफा है, जिससे गङ्गाकी धारा प्रकट हुई है। इस गुफामें लोग स्नान करते हैं।

पारेश्वर

(लेखक—श्रीशिवसिंहजी)

मंदसौर जिलेकी मनासा तहसीलसे मोटर-बसका मार्ग है। केवल दो मील पैदल चलना पड़ता है।

यहाँ एक कुण्ड है। कुण्डके भीतर जलमें पारेश्वर महादेवकी पाँच मूर्तियाँ हैं। यहाँ शिवरात्रिको मेला लगता है। इस कुण्डका जल खाज (कण्डू)-नाशक कहा जाता है। पहले प्रति सोमवारको कुण्डसे जल बहता था, किंतु अब ऐसा नहीं होता।

ब्रह्माणी (भादवा माता)

(लेखक—श्रीनारायणसिंहजी शक्तावत बी० ए०, एल्-एल्०बी०)

नीमच स्टेशनसे बारह मील पूर्व भादवा ग्राममें एक चबूतरेपर सिंदूरचर्चित देवीकी सात मूर्तियाँ हैं। यहाँ समीपमें एक बावली है। शीतलाके प्रकोपसे त्रस्त व्यक्ति यहाँ आकर बावलीमें स्नान करके देवीकी पूजा करनेसे स्वस्थ हो जाते हैं। यहाँ दूसरे रोगोंके रोगी भी रोगमुक्तिके लिये धरना देकर पड़े रहते हैं। चैत्र-वैशाखमें मेला लगता है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं। पास ही पीपला गाँवमें लक्ष्मीनारायण-मन्दिर तथा शिव-मन्दिर हैं। इन मन्दिरोंके बीचमें सरोवर है।

* शुकसे सम्बद्ध होनेके कारण ही—इसे 'शौकी' कहते हैं।

माहेजी

बंबई-भुसावल लाइनपर पाचोरा जंकशनसे नौ मील दूर माहेजी स्टेशन है। स्टेशनसे दो मीलपर माहेजी ग्राम है। यहाँ माहेजी नामक देवीका मन्दिर है। पौष महीनेमें पूरे महीने-भर यहाँ मेला लगता है। मेलेके अतिरिक्त समयमें यहाँ ठहरने या भोजनादिकी सुविधा नहीं है। माहेजी गाँव बहुत छोटा है।

गौतमी (गोदावरी)-माहात्म्य

ततो गोदावरीं प्राप्य नित्यसिद्धनिषेविताम्।
राजसूयमवाप्नोति वायुलोकं च गच्छति।

(महा० वन० ८५। ३३। पद्म० आ० ३९। ३१)

अमृतं* जाह्नवीतोयममृतं स्वर्णमुच्यते।
अमृतं गोभवं चाज्यममृतं सोम एव च॥
गङ्गाया वारिणाऽऽज्येन हिरण्येन तथैव च।
सर्वेभ्योऽप्याधिकं दिव्यममृतं गौतमीजलम्॥

(ब्रह्मपु० १३३। १६-१७)

ब्रह्मपुराणमें गौतमी-माहात्म्यपर पूरे १०६ बड़े अध्याय हैं। उसमें गोदावरीकी अतुल महिमा कही गयी है। महर्षि गौतमने शंकरजीकी कृपासे पृथ्वीपर इन्हें अवतरित किया था। अतएव इन्हें गौतमी कहा जाता है। ब्रह्मवैवर्तके अनुसार एक ब्राह्मणी ही योगाभ्यास तथा तप करते-करते गोदावरी बनकर बह गयी। यह पश्चिमी घाटकी पर्वतश्रेणी त्र्यम्बकपर्वतसे निकलकर ९०० मील पूर्व-दक्षिण ओर बहकर पूर्वी घाटनामक पर्वतश्रेणीके पास बंगोपसागरमें मिल जाती है। आयुर्वेदके मतानुसार इसका जल गङ्गाजीके ही जल-जैसा है और वह पित्त, वायु एवं कुष्ठादि रोगोंको नष्ट करती है। इसके तटपर ४-४ अंगुलपर तीर्थ कहे गये हैं। तटवर्ती तीर्थोंमें ब्रह्मपुराणके अनुसार वाराहतीर्थ, नीलगङ्गा, कपोततीर्थ, दशाश्वमेधिक तीर्थ, जनस्थान, अरुणा-वरुणा-संगम, गोवर्धनतीर्थ, श्वेततीर्थ, चक्रतीर्थ श्रीरामतीर्थ, तपस्तीर्थ, लक्ष्मीतीर्थ एवं सारस्वततीर्थ मुख्य हैं। अन्तमें गोदावरी सात भागोंमें विभक्त हो जाती है। यहाँ स्नानका अद्भुत माहात्म्य है। यहाँ नियत आहार-विहारसे रहकर स्नान करनेवालेको महापुण्यकी प्राप्ति होती है और वह देवलोकको जाता है—

सप्तगोदावरीं स्नात्वा नियतो नियताशनः।
महापुण्यमवाप्नोति देवलोकं च गच्छति॥

(महा० वन० तीर्थ० ८५। ४३। पद्म० आ० ३९। ४१)

गोदावरीकी ये सात धाराएँ वसिष्ठा, कौशिकी, वृद्धगौतमी, गौतमी, भारद्वाजी, आत्रेयी तथा तुल्या नामसे प्रसिद्ध हैं।

नासिक-त्र्यम्बक

नासिक-त्र्यम्बक क्षेत्र भारतके प्रमुख तीर्थोंमें है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें त्र्यम्बकेश्वरकी गणना है। यहीं पञ्चवटीमें भगवान् श्रीरामने वनवासका दीर्घकाल व्यतीत किया और यहीं श्रीजानकीका रावणने हरण किया। गोदावरी नदी भारतकी सात पवित्र नदियोंमें है। उसका उद्गम भी यहीं है। इस प्रकार यहाँ तीर्थोंका एक बड़ा समूह है। प्रति बारहवें वर्ष जब बृहस्पति सिंह राशिमें होते हैं, नासिकमें कुम्भपर्व होता है। बृहस्पतिके सिंहस्थ होनेपर पूरे वर्षभर यहाँ गोदावरी-स्नान महापुण्यप्रद माना जाता है। नासिकमें और त्र्यम्बकमें भी प्रत्येक यात्रीको ॥) यात्री-कर देना पड़ता है। यह कर नगरसे बाहर जाते समय नगरपालिकाके अधिकारी लेते हैं।

मार्ग

मध्य-रेलवेकी बंबईसे दिल्ली जानेवाली दिल्ली मुख्य लाइनपर नासिक-रोड प्रसिद्ध स्टेशन है। स्टेशनसे नासिक चार मील और पञ्चवटी पाँच मील दूर है। स्टेशनसे नासिकतक मोटर-बस चलती है। ताँगे तथा टैक्सियाँ पर्याप्त मिलती हैं।

ठहरनेके स्थान

नासिक, पञ्चवटी तथा त्र्यम्बकमें भी यात्री पंडोंके

* गङ्गाजल अमृत है, सोना अमृत है, गायका घी अमृत है तथा सोमरस भी अमृत है; किन्तु गोदावरीका जल तो गङ्गाजल, घी, सुवर्ण तथा सोमरससे भी अधिक दिव्य अमृत है।

यहाँ और देवालयोंमें भी ठहर सकते हैं। इनके अतिरिक्त निम्न अच्छी धर्मशालाएँ नासिक-पञ्चवटी क्षेत्रमें हैं। १-महाराज कपूरथलाकी, पञ्चवटीमें। २-गाडगे महाराजकी धर्मशाला, पञ्चवटी। ३-नरोत्तमभुवन, पञ्चवटी। ४-सिंघानिया-धर्मशाला, पञ्चवटी। ५-मारवाड़ी धर्मशाला, पञ्चवटी। ६-शालवाला धर्मशाला, पञ्चवटी। ७-झवेरी आरोग्य-भवन, पञ्चवटी। ८-लड्डा-धर्मशाला, पञ्चवटी। ९-तुलसीभवन पञ्चवटी। १०-क्रिया-धर्मशाला[1]। ११-श्मशान धर्मशाला[2]। १२-सिंधी धर्मशाला। १३-चाँदवड़कर-धर्मशाला। १४-किबे-धर्मशाला।

नासिक-पञ्चवटी

नासिक और पञ्चवटी वस्तुतः एक ही नगर हैं। इस नगरके बीचमें गोदावरी बहती है। गोदावरीके दक्षिण-तटपर नगरका मुख्य भाग है, उसे नासिक कहते हैं और गोदावरीके उत्तर-तटपर जो भाग है, उसे पञ्चवटी कहा जाता है। गोदावरीके दोनों तटोंपर देवालय हैं। यात्री प्रायः पञ्चवटीमें ठहरते हैं; क्योंकि वहाँसे तपोवन तथा दूसरे तीर्थोंका दर्शन करनेमें सुविधा होती है।

गोदावरी—गोदावरीका उद्गम तो त्र्यम्बकके पास है; किन्तु यात्री पञ्चवटीमें गोदावरी-स्नान करते हैं। यहाँ वर्षाके बाद गोदावरीमें बहुत अधिक जल नहीं रहता, यद्यपि प्रवाह अच्छा रहता है। गोदावरीपर दो पुल बने हैं; किन्तु नीचेसे भी धाराको पार करनेकी सुविधा है। गोदावरीमें कई कुण्ड बनाये गये हैं। उन्हें पवित्र तीर्थ माना जाता है।

गोदावरीमें यहाँ रामकुण्ड, सीताकुण्ड, लक्ष्मणकुण्ड, धनुषकुण्ड आदि तीर्थ हैं। स्नानका मुख्य स्थान रामकुण्ड है। रामकुण्डमें शुक्लतीर्थ माना जाता है। रामकुण्डके वायव्य कोणपर गोमुखसे अरुणाकी धारा गोदावरीमें गिरती है। इसे अरुणा-संगम कहते हैं। यहाँ एक वस्त्र पहनकर स्नानकी विधि है। इसके पास सूर्य, चन्द्र तथा अश्विनी तीर्थ हैं। यहाँ यात्री मुण्डन कराके पितृश्राद्ध करते हैं। रामकुण्डके दक्षिण अस्थिविलय-तीर्थ है, वहाँ मृतपुरुषोंकी अस्थियाँ डाली जाती हैं। रामकुण्डके उत्तर पासमें ही प्रयागतीर्थ माना जाता है।

रामकुण्डके पीछे सीताकुण्ड है। उसे अहल्याकुण्ड और शार्ङ्गपाणि-कुण्ड भी कहते हैं। उसके दक्षिण दो मुखवाले हनुमान् (अग्निदेव) की प्रतिमा है। उसके सामने हनुमान्कुण्ड है। आगे दशाश्वमेध तीर्थ है। नारोशंकर-मन्दिरके सामने गोदावरीमें रामगया-कुण्ड है। कहा जाता है यहाँ भगवान् श्रीरामने श्राद्ध किया था। उसके आगे पेशवाकुण्ड है, कहते हैं यहाँ गोदावरीमें वरुणा, सरस्वती, गायत्री, सावित्री और श्रद्धा नदियाँ मिलती हैं। आगे खंडोबा-कुण्ड है, उससे दक्षिण ओक-कुण्ड और उसके आगे वैशम्पायन-कुण्ड है। पञ्चवटीमें अरुणा नदीके किनारे इन्द्रकुण्ड है। कहा जाता है महर्षि गौतमके शापसे इन्द्रके शरीरमें छिद्र हो गये थे, यहाँ स्नान करनेसे वे छिद्र दूर हो गये। इस कुण्डके बाद मुक्तेश्वरका अन्तिम कुण्ड है। वहाँ मेधातिथि-तीर्थ तथा कोटितीर्थ हैं। ये सब कुण्ड गोदावरीमें ही हैं। गोदावरीमें ही आगे अहल्या-संगम तीर्थ है और उससे आगे तपोवन है।

देवमन्दिर—यहाँके अधिकांश मन्दिर गोदावरीके दोनों तटोंपर ही हैं। रामकुण्डके ऊपर ही गङ्गाजीका मन्दिर है। वहीं पासमें गोदावरी-मन्दिर है। यह गोदावरी-मन्दिर बारह वर्षमें केवल एक बार बृहस्पतिके सिंहराशिमें आनेपर खुलता है और उस समय वर्षभर खुला रहता है। गोदावरी-मन्दिरके सामने बाणेश्वर शिवलिङ्ग है। गङ्गामन्दिरके बगलमें एक मन्दिरमें गणेश, शिव, देवी, सूर्य और विष्णुभगवान्की मूर्तियाँ हैं। गोदावरी-मन्दिरके पीछे विठ्ठल-भगवान्का मन्दिर है।

रामकुण्डके पास ही राम-मन्दिर है और उसके पास ही एक शिवालय है। इसे अहल्याबाईका राम-मन्दिर कहते हैं। कहा जाता है इसमें जो श्रीराम, लक्ष्मण, जानकीकी मूर्तियाँ हैं, वे रामकुण्डमें मिली हैं।

कपालेश्वर—रामकुण्डसे थोड़ी दूरपर पचास सीढ़ियाँ ऊपर कपालेश्वर-शिवमन्दिर है। कहा जाता है यहाँ शंकरजीके हाथमें चिपका कपाल (ब्रह्माका सिर) गोदावरी-स्नानसे दूर हुआ।

राममन्दिर—कपालेश्वरके दर्शन करके जाते समय सीढ़ियोंके पास बीचमें गोदावरी-मन्दिर पड़ता है। कपालेश्वरसे पञ्चवटी बस्तीकी ओर जाते यह मन्दिर समीप ही पड़ता है।

---

१. यहाँ परलोकगत आत्माओंके ग्यारहवें दिनके क्रियाकर्म (नारायणबलि आदि) किये जाते हैं।

२. यहाँ मृत पुरुषोंके दाह-संस्कार आदि करनेके लिये आये हुए लोग विश्राम करते हैं।

काला राम-मन्दिर—गोदावरीसे लगभग दो फर्लांगपर पञ्चवटी बस्तीमें यह मुख्य राम-मन्दिर है। यह मन्दिर विशाल है। इसमें श्रीराम-लक्ष्मण-सीताकी मूर्तियाँ हैं।

पञ्चवटी—काला राम-मन्दिरसे आगे (गोदावरी-तटसे लगभग आध मीलपर) एक वटवृक्ष है। इसी स्थानको लोग पञ्चवटी कहते हैं। अब यहाँ वटके पाँच वृक्ष हैं। वटवृक्षोंके पास ही एक मकान है, जिसमें सीतागुफा है। भूगर्भके कमरेमें सीढ़ियोंसे जानेपर राम-लक्ष्मण-सीताकी छोटी मूर्तियाँ मिलती हैं।

शारदा-चन्द्रमौलीश्वर—यह मन्दिर सीतागुफाके पास ही है। इसमें भगवान् शंकरकी नटराज-मूर्ति है।

रामेश्वर—यह मन्दिर गोदावरी-तटपर ही रामकुण्डसे आगे रामगया-तीर्थके पास है। इसे नारोशंकर-मन्दिर भी कहते हैं। यह विशाल मन्दिर बड़ा भव्य दीखता है।

इनके अतिरिक्त भी पञ्चवटीमें कई मन्दिर उत्तम हैं। पञ्चवटीमें श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक भी है।

सुन्दर-नारायणमन्दिर—यह मन्दिर नासिकसे पञ्चवटी जानेवाले पुलके पास नासिकमें है। इसमें भगवान् नारायणकी सुन्दर मूर्ति है। यहाँसे सामने गोदावरी-पार कपालेश्वर-मन्दिर दीखता है।

सुन्दर-नारायणके सामने गोदावरीमें ब्रह्मतीर्थ है और नैर्ऋत्यकोणमें बदरिका-संगम तीर्थ है। कहा जाता है यहाँ ब्रह्माजीने स्नान किया था।

उमा-महेश्वर—सुन्दर-नारायणसे आगे यह मन्दिर है। इसमें भगवान् शंकरकी मूर्ति है, जिसके दोनों ओर गङ्गा तथा पार्वतीकी मूर्तियाँ हैं।

नीलकण्ठेश्वर—रामकुण्डके सामने नासिकमें यह शिव-मन्दिर है। इसके सामने ही दशाश्वमेध-तीर्थ है। कहा जाता है महाराज जनकने यहाँ यज्ञ करके इस मूर्तिकी स्थापना की थी।

पञ्चरत्नेश्वर—नीलकण्ठेश्वरके पीछे ४८ सीढ़ी ऊपर यह मन्दिर है। यहाँ शिवलिङ्गके ऊपर पाँच चाँदीके मुख लगाये रहते हैं।

गोराराममन्दिर—पञ्चरत्नेश्वर-मन्दिरके पास ही यह मन्दिर है। इसमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीकी संगमरमरकी मूर्तियाँ हैं।

मुरलीधर—गोरा राम-मन्दिरके दक्षिण यह श्रीकृष्णमन्दिर है। इसके पास ही लक्ष्मीनारायण तथा तारकेश्वर मन्दिर हैं।

तिलभांडेश्वर—इसमें पाँच फुट घेरेका दो फुट ऊँचा शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित है।

भद्रकाली—यह मन्दिर घरके समान है (शिखर नहीं है)। सिंहासनपर नवदुर्गाओंकी मूर्तियाँ हैं। उनमें मध्यमें भद्रकालीकी ऊँची मूर्ति है।

इनके अतिरिक्त नासिकमें मुक्तेश्वर, बालाजी, मोदकेश्वर गणपति, एकमुखीदत्त, मुरडेश्वर आदि कई उत्तम एवं दर्शनीय मन्दिर हैं।

तपोवन

(**लेखक—पं० श्रीनागनाथ गोपाल शास्त्री महाशब्दे**)

पञ्चवटीसे लगभग डेढ़ मील दूर गोदावरीमें कपिला नामकी नदी मिलती है। इस कपिला-संगम-तीर्थपर ही तपोवन है। कहा जाता है महर्षि गौतमकी यही तपःस्थली है। यहीं शूर्पणखाकी नाक लक्ष्मणजीने काटी थी।

कपिला-संगमके पास महर्षि कपिलका आश्रम कहा जाता है। यहाँ आठ तीर्थ हैं—१. ब्रह्मतीर्थ, २. शिवतीर्थ, ३. विष्णुतीर्थ, ४. अग्नितीर्थ, ५. सीतातीर्थ, ६. मुक्तितीर्थ, ७. कपिलातीर्थ और ८. संगमतीर्थ।

ब्रह्मतीर्थ, शिवतीर्थ, विष्णुतीर्थको ब्रह्मयोनि, रुद्रयोनि और विष्णुयोनि भी कहते हैं। ये सटे हुए तीन कुण्ड हैं, जिनमें जल नहीं है और इनकी भित्तियोंमें एकसे दूसरेमें जानेका संकीर्ण मार्ग है। यात्री इनमें उसी मार्गसे प्रवेश करके बाहर निकलते हैं।

इनके पास ही अग्नितीर्थ है, जिसमें जल भरा रहता है। यह गहरा कुण्ड है। कहा जाता है यहीं श्रीरामजीने सीताजीको अग्निमें गुप्त कर दिया था और छाया-सीताको साथ रखा—जिन्हें रावण हर ले गया था।

पासमें कपिला नदी है। उसे कपिलातीर्थ कहते हैं। वहीं कपिल मुनिका आश्रम कहा जाता है। लक्ष्मणजीने यहाँ शूर्पणखाकी नाक काटकर उसे गोदावरीके दक्षिण फेंक दिया था।

यहाँ आसपास तथा पञ्चवटीके मार्गमें लक्ष्मणजीका मन्दिर, लक्ष्मीनारायण-मन्दिर, गोपाल-मन्दिर, विष्णु-मन्दिर, राम-मन्दिर आदि कई मन्दिर हैं।

नासिकके आस-पासके तीर्थ

गङ्गापुर-प्रपात—नासिकसे ६ मीलपर गोवर्धन-गङ्गापुर गाँव है। यहाँ गोदावरीका प्रपात था। एक धर्मशाला भी है। गोदावरीका प्रवाह टूट जानेसे अब

नासिक-त्र्यम्बकके कुछ पवित्र स्थल
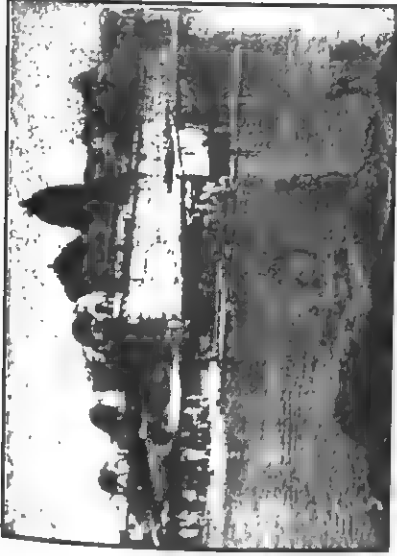
गोदावरी-तटके मन्दिर, नासिक

श्रीराम-मन्दिर, नासिक

तीर्थराज कुशावर्त, त्र्यम्बक
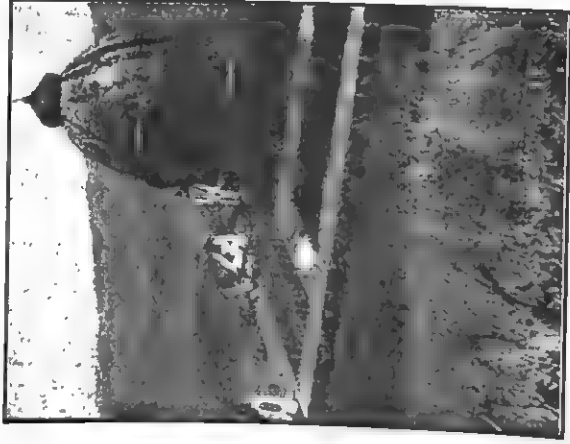
ब्रह्मगिरिपर श्रीशङ्करजीका मन्दिर

श्रीत्र्यम्बकेश्वर-मन्दिर
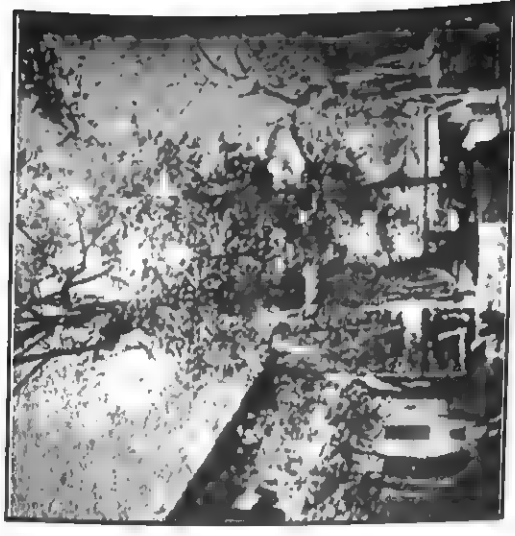
पञ्चवटी, नासिक
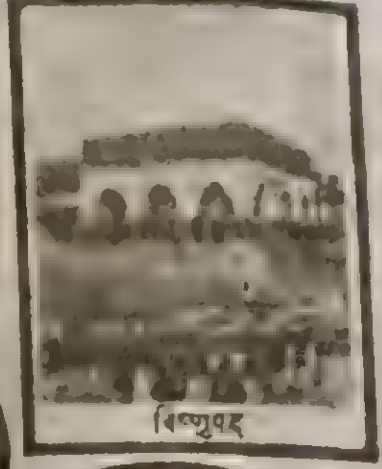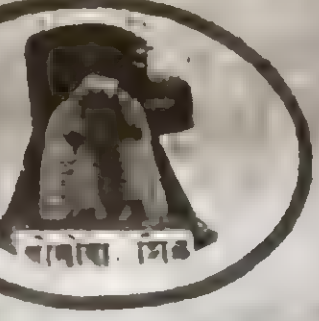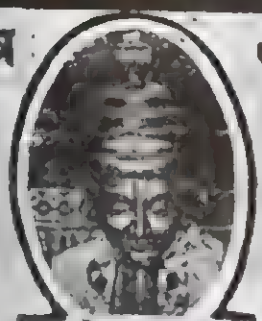
श्रीक्षेत्र पंढरपुरके श्रीविग्रह तथा पवित्र स्थल

प्रपात नहीं है। यहाँ गोवर्धन-तीर्थ है। यहाँसे नासिकतक मार्गमें क्रमशः पितृतीर्थ, गालवतीर्थ, ब्रह्मतीर्थ, ऋणमोचन-तीर्थ, क्षुधातीर्थ, (एक मीलपर) सोमेश्वर महादेव, पापनाशन-तीर्थ, विश्वामित्र-तीर्थ, श्वेततीर्थ, कोटेश्वर महादेव, कोटितीर्थ तथा अग्नितीर्थ (मल्हार टेकरीके पास) पड़ते हैं।

सीता-सरोवर—यह स्थान नासिकसे ४ मील दूर है। एक ओर नदी है और दूसरी ओर ४-५ कुण्ड हैं, जिनमें यात्री स्नान करते हैं।

टाकली—नासिकसे ३ मील दूर टाकली गाँव है। यहाँका मार्ग खराब है। समर्थ रामदास स्वामीद्वारा स्थापित हनुमान्‌जीकी मूर्ति है। यह मूर्ति गोबरकी बनी है। पासमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीकी मूर्तियाँ मन्दिरमें हैं। एक गुफामें नीचे शिवाजी और रामदास स्वामीकी मूर्ति हैं।

रामशय्या—नासिकसे ६ मील दूर पहाड़ीपर यह स्थान है। कहा जाता है यहींसे रावणने सीताका अपहरण किया था। पर्वतपर ऊपर रामशय्या है। दो-तीन गुफाएँ हैं।

पाण्डव-गुफा—नासिकसे ५ मीलपर (रामशय्यासे उलटी दिशामें) पर्वतपर यह स्थान है। इन गुफाओंका पाण्डवोंसे कोई सम्बन्ध नहीं है। यहाँ कुल २३ गुफाएँ हैं। इनमें कइयोंमें बुद्धकी मूर्तियाँ हैं। एक चैत्यगुफा है।

मृगव्याधेश्वर—इसे मध्यमेश्वर भी कहते थे। यह स्थान निफाड़ तहसीलमें था। अब यह क्षेत्र बाँधके भीतर आनेसे जलमग्न हो गया है। कहा जाता है कि यहीं श्रीरामने मारीचको मारा था।

जटायुक्षेत्र—इगतपुरी नासिकरोडके मध्य नासिक-रोडसे २६ मील और इगतपुरीसे ६ मीलपर घोटी स्टेशन है। वहाँसे १० मील दूर जंगलमें वह स्थान है, जहाँ भगवान् श्रीरामने गृध्रराज जटायुका अन्तिम संस्कार किया था। यहाँ श्रीराम-मन्दिर है। श्रीरामने जटायुके तर्पणके लिये बाण मारकर पृथ्वीसे जल प्रकट किया था। उसे सर्वतीर्थकुण्ड कहा जाता है। उस कुण्डमें सभी ऋतुओंमें जल एक ही स्तरपर रहता है।

अगस्त्याश्रम—मनमाडसे धौंड जानेवाली मध्य-रेलवेकी लाइनपर मनमाडसे ९ मील दूर अनकई स्टेशन है। वहाँसे ३ मीलपर महर्षि अगस्त्यका आश्रम है।

शिरडी—अनकईसे १७ मील (मनमाडसे २६ मील) दूर कोपरगाँव स्टेशन है। वहाँसे शिरडी १० मील दूर है। नासिक तथा मनमाडसे शिरडीके लिये मोटर-बस चलती है। शिरडीके संत साईं बाबा बहुत प्रख्यात हो चुके हैं। उनकी यहाँ समाधि है।

त्र्यम्बकेश्वर

(लेखक—पं० श्रीभालचन्द्र विनायक मुळेशास्त्री काव्यतीर्थ)

नासिकसे लगभग १७ मील दूर त्र्यम्बकेश्वर बस्ती है। यह स्थान पहाड़की तलहटीमें है।

महर्षि गौतम इस क्षेत्रमें तपस्या कर रहे थे। उन्होंने ही भगवान् शङ्करको प्रसन्न करके गोदावरीको प्रकट किया। गोदावरीका उद्गम ब्रह्मगिरिपर है; किन्तु वहाँ वह गुप्त हो गयी हैं। वहाँसे फिर वे गङ्गा-द्वारपर प्रकट हुईं और वहाँ भी गुप्त हो गयीं। नीचे गौतम ऋषिने कुशोंके घेरेसे गोदावरीके प्रवाहको रुद्ध किया। वह स्थान कुशावर्त कहा जाता है। इस प्रकार गोदावरी मूलस्थान ब्रह्मगिरिपर प्रकट होकर भी बार-बार गुप्त होती रही हैं। ब्रह्मगिरिपर या गङ्गाद्वारमें बूँद-बूँद जल गिरता है। गोदावरीका प्रत्यक्ष उद्गम तो चक्रतीर्थ है, जो त्र्यम्बकेश्वरसे पर्याप्त दूर वनमें है।

कुशावर्त—त्र्यम्बकेश्वर-मन्दिरसे थोड़ी दूरपर ही यह सरोवर है। इसमें नीचेसे गोदावरीका जल आता है। सरोवरमें स्नान नहीं किया जाता। उसका जल लेकर बाहर स्नान करते हैं। यहाँ स्नान करके तब देव-प्रदर्शन किया जाता है। लोग कुशावर्तकी परिक्रमा भी करते हैं।

कुशावर्तसे त्र्यम्बकेश्वर दर्शनके लिये जाते समय मार्गमें नीलगङ्गा-संगमपर संगमेश्वर, कनकेश्वर, कपोतेश्वर, विसंध्यादेवी और त्रिभुवनेश्वरके दर्शन करते जाना चाहिये।

त्र्यम्बकेश्वर—यही यहाँका मुख्य मन्दिर है। पूर्वद्वारसे मन्दिरमें प्रवेश करके सिद्धविनायक और नन्दिकेश्वरके दर्शन करते हुए मन्दिरमें भीतर जानेपर त्र्यम्बकेश्वरके दर्शन होते हैं। त्र्यम्बकेश्वरमें केवल अर्घा दीखता है।

ध्यानसे देखनेपर वहाँ तीन छोटे-छोटे शिवलिङ्ग दृष्टिगोचर होते हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु एवं महेशके प्रतीक माने जाते हैं; किन्तु पूजाके पश्चात् चाँदीका पञ्चमुख वहाँ चढ़ा दिया जाता है और उसीके दर्शन होते हैं। एक दूसरा पञ्चमुख सोनेका है, जो प्रति सोमवारको पालकीमें कुशावर्त लाया जाता है। वहाँ उसकी सविधि अर्चा होती है। मन्दिरके पीछे परिक्रमा-मार्गमें अमृतकुण्ड नामक एक कुण्ड है।

अन्य मन्दिर—कुशावर्त सरोवरके पास ही गङ्गा-मन्दिर है, उसके पास श्रीकृष्ण-मन्दिर है। बस्तीमें श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर, श्रीराम-मन्दिर, परशुराम-मन्दिर हैं। कुशावर्तके पास केदारेश्वर, इन्द्रालयके पास इन्द्रेश्वर, त्र्यम्बकेश्वरके पास गायत्री-मन्दिर और त्रिसंध्येश्वर, काञ्चनतीर्थके पास काञ्चनेश्वर और ज्वरेश्वर, कुशावर्तके पीछे बल्लालेश्वर, गौतमालयके पास गौतमेश्वर, रामेश्वर, महादेवीके पास मुकुन्देश्वर, काशी-विश्वेश्वर, भुवनेश्वरी, त्रिभुवनेश्वर आदि अनेक छोटे-बड़े मन्दिर यहाँ हैं।

श्रीनिवृत्तिनाथकी समाधि—महाराष्ट्रके प्रसिद्ध संत ज्ञानेश्वरजीके बड़े भाई तथा गुरु श्रीनिवृत्तिनाथजीकी समाधि बस्तीके एक किनारे पर्वतके नीचे है। गङ्गाद्वार जाते समय सीढ़ियोंके प्रारम्भ-स्थानसे कुछ दूर दाहिने जानेपर यह स्थान मिलता है। मन्दिरके आस-पास धर्मशालाएँ हैं। वारकरी सम्प्रदायका यह मुख्य तीर्थ है। पौष वदी ११ को यहाँ मेला लगता है। कुशावर्तके अतिरिक्त यहाँ अनेक तीर्थ हैं, जिनमें मुख्य ये हैं—

गङ्गा-सागर—यह ब्रह्मगिरिके नीचे है। गोदावरी पहले यहाँ प्रकट होकर तब कुशावर्तमें जाती हैं। इसीके पास निवृत्तिनाथकी समाधि है।

इन्द्रतीर्थ—यह कुशावर्तके पास ही है।

कनखल—यह यहाँके पञ्चतीर्थोंमें एक है। कुशावर्तसे पूर्व पड़ता है।

बिल्वतीर्थ—यह नीलपर्वतसे उत्तर है।

बल्लालतीर्थ—इसके पास बल्लालेश्वर-मन्दिर है।

प्रयागतीर्थ—त्र्यम्बकेश्वरसे १ मीलपर नासिकके मार्गमें है।

अहल्यासंगम—त्र्यम्बकेश्वरसे पूर्व दो फर्लांगपर है। यहाँ जटिला नदी गोदावरीमें मिली है।

गौतमालय—यह सरोवर रामेश्वर-मन्दिरके पास है। इसके तटपर गौतमेश्वर-मन्दिर है।

इनके अतिरिक्त मोतिया तालाब, बिसोबा-तालाब आदि कई सरोवर हैं।

परिक्रमा

त्र्यम्बकेश्वरकी परिक्रमा कुशावर्तसे प्रारम्भ होकर त्र्यम्बकेश्वर, प्रयागतीर्थ, रामतीर्थ, बाणगङ्गा, निर्मलतीर्थ, वैतरणी, धवलगङ्गा, शालातीर्थ, पद्मतीर्थ, भुजंगतीर्थ, गणेशतीर्थ, नरसिंहतीर्थ, बिल्वतीर्थ, नीलाम्बिकादेवी, मुकुन्दतीर्थ होकर त्र्यम्बकेश्वर और कुशावर्तमें आकर समाप्त होती है।

त्र्यम्बकेश्वरके तीन पर्वत—त्र्यम्बकेश्वरके समीप तीन पर्वत पवित्र माने जाते हैं—१-ब्रह्मगिरि, २-नीलगिरि, ३-गङ्गाद्वार। इनमेंसे अधिकांश यात्री केवल गङ्गाद्वार जाते हैं।

ब्रह्मगिरि—इस पर्वतपर त्र्यम्बकेश्वरका किला है। यह किला आज जीर्ण दशामें है। पर्वतपर जानेके लिये ५०० सीढ़ियाँ हैं। यहाँ एक जलपूरित कुण्ड है और उसके पास त्र्यम्बकेश्वर-मन्दिर है। पास ही गोदावरीका मूल उद्‌गम है। समीपमें शिलाओंपर भगवान् शङ्करके जटा फटकारनेके चिह्न हैं। यहाँ मन्दिरकी परिक्रमाका मार्ग डरावना है। ब्रह्मगिरिको शिवस्वरूप माना जाता है। कहते हैं कि ब्रह्माके शापसे भगवान् शङ्कर यहाँ पर्वतरूपमें स्थित हैं। इस पर्वतके पाँच शिखर हैं। उनके नाम सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष और ईशान हैं।

नीलगिरि—इस पर्वतपर २५० सीढ़ी चढ़कर जाना पड़ता है। यह ब्रह्मगिरिकी वाम गोद है। यहाँ नीलाम्बिकादेवीका मन्दिर है। कुछ लोग इन्हें परशुरामजीकी माता रेणुकादेवी कहते हैं। नवरात्रमें मेला लगता है। पास ही गुरु दत्तात्रेयका मन्दिर है। वहीं नीलकण्ठेश्वर-मन्दिर भी है। इसे सिद्धतीर्थ कहा जाता है।

गङ्गाद्वार—इस पर्वतपर ७५० सीढ़ी चढ़कर जाना पड़ता है। इसे कौलगिरि भी कहते हैं। ऊपर गङ्गा (गोदावरी) का मन्दिर है। मूर्तिके चरणोंके समीप धीरे-धीरे बूँद-बूँद प्रायः जल निकलता है। यह जल समीपके एक कुण्डमें एकत्र होता है। पञ्चतीर्थोंमें यह एक तीर्थ है।

गङ्गाद्वारके पास ही उत्तर ओर कौलाम्बिकादेवीका मन्दिर है। यहाँसे थोड़ी दूरपर पर्वतमें एक स्थानपर १०८ शिवलिङ्ग खुदे हैं। पर्वतमें दो-तीन गुफाएँ हैं, जिनमें एक गोरखनाथजीकी गुफा है। कहते हैं कि

गोरखनाथजीने यहाँ तप किया था। एक गुफा, जिसमें राम-लक्ष्मणकी मूर्तियाँ हैं, वाराहगुफा कही जाती है।

मार्गमें सीढ़ियोंपर आधेसे कुछ अधिक ऊपर जाकर दाहिनी ओर एक मार्ग जाता है। वहाँ अनोपान-शिला है। यह शिला गोरखनाथजीके नाथ-सम्प्रदायमें अत्यन्त पवित्र मानी जाती है। इसपर अनेक सिद्धोंने तपस्या की है। यह गोरखनाथ सम्प्रदायकी तीर्थभूमि है। वहाँ एक बड़ी बावली और एक गोशाला है। गङ्गाद्वारसे लगभग आधा मार्ग उतरनेपर मार्गमें राम-लक्ष्मण-कुण्ड मिलता है।

चक्रतीर्थ—यह स्थान त्र्यम्बकसे ६ मील दूर जंगलमें है। यहाँकी यात्रा करना हो तो एक मार्गदर्शक साथ ले लेना चाहिये। कहा जाता है कुशावर्तसे गुप्त हुई गोदावरी यहाँ आकर प्रकट हुई हैं। गोदावरीका प्रत्यक्ष उद्‌गम तो यही है। यहाँ अत्यन्त गहरा कुण्ड है और उससे निरन्तर जल-धारा बाहर निकलती है। यही धारा गोदावरीकी है, जो नासिक आयी है।

सप्तशृङ्ग

नासिकसे लगभग २४ मील उत्तर यह स्थान है। वहाँतक मोटर-बस जाती है। सप्तशृङ्ग पर्वतके नीचे साधारण बाजार और धर्मशाला है। गाँवमें एक देवीमन्दिर है। इसे सप्तशृङ्गी देवीका नीचेका स्थान कहते हैं।

पर्वतके नीचे वणी नामक ग्राम है। वहाँसे आगे पैदल मार्ग प्रारम्भ होता है। यहाँसे पर्वतकी चढ़ाई प्रारम्भ होती है। तीन मील जानेके पश्चात् सीढ़ियाँ मिलती हैं। सीढ़ियोंसे ३ मील और जानेपर गणेशकुण्ड मिलता है। कुण्डके पास गणेशजीका मन्दिर है। आगे समतलप्राय मार्ग है। मार्गमें कई कुण्ड मिलते हैं। इस मार्गसे आगे जानेपर मुख्य शिखरके नीचे धर्मशाला तथा छोटा-सा गाँव मिलता है। वहाँसे ७५० सीढ़ी चढ़नेपर मुख्य शिखर आता है।

सप्तशृङ्गी देवीका कोई बड़ा मन्दिर नहीं है। पर्वतमें एक गुफा है—साधारण। उसमें दस फुट ऊँची अष्टादशभुजा सिन्दूरचर्चिता देवीकी खड़ी मूर्ति है। चैत्र-पूर्णिमा तथा आश्विन-पूर्णिमाको यहाँ महोत्सव होता है। जगदम्बाका मूल पीठ-स्थान तो बहुत ऊँचे पतले शिखरपर है। वहाँ जाना अत्यन्त कठिन है। वहाँ कोई जाता नहीं। मूर्ति जहाँ गुफामें स्थित है, वहींतक यात्री आते हैं। उच्च शिखरपर केवल उत्सवके समय एक व्यक्ति ध्वजा लगाने जाता है।

यह सप्तशृङ्ग-पीठ प्रणवका अर्धमात्रा-स्वरूप दिव्यपीठ माना जाता है। कहते हैं कि राजा सुरथ तथा समाधि वैश्यपर यहीं देवीकी कृपा हुई थी।

सप्तशृङ्गपर्वतके पास ही मार्कण्डेयशिखर है। उसके ऊपर मार्कण्डेयतीर्थ है। कहते हैं कि मार्कण्डेय ऋषिका आश्रम उसीपर था।

परशुराम-क्षेत्र

रत्नगिरि जिलेके चिपलूण तालुकेके चिपलूण ग्रामसे एक मील दूर पहाड़ीपर यह स्थान है।

चिपलूणसे दो मीलपर समुद्रकिनारे गोवलकोट बंदरगाह है। बंदरगाहसे चिपलूणतक ताँगे आदि जाते हैं। बंबईसे दाभोल बंदरगाह होकर एक स्टीमर प्रतिदिन गोवलकोट जाता है।

पहाड़ीके ऊपर समतल स्थान है। वहाँ छोटा-सा गाँव है और धर्मशाला है। गाँवके मध्यमें परशुरामजीका भव्य मन्दिर है। मुख्य मन्दिरमें भार्गव राम, परशुराम तथा काला राम—इस तीन नामोंकी परशुरामजीकी तीन मूर्तियाँ हैं।

वैशाखकी अक्षय-तृतीयाको परशुराम-जयन्तीका बड़ा समारोह यहाँ होता है। इस मन्दिरके मार्गमें माता रेणुकाका छोटा मन्दिर है। उसके पास ही एक झरना है। पहाड़ीपर आगे शिखरपर दत्तात्रेयका एक छोटा मन्दिर है।

राजापुर

यहाँ जानेके लिये रेलवे या सड़कका कोई मार्ग नहीं। यह स्थान कोङ्कण प्रान्तके रत्नागिरि जिलेमें है। बंबईसे स्टीमरद्वारा जैतापुर बंदरगाह जाकर वहाँसे १९ मील पैदल जाना पड़ता है।

राजापुरसे अग्निकोणमें लगभग दो मील दूर गङ्गातीर्थ तथा उष्णतीर्थ हैं। यहाँ १४ कुण्ड हैं। इनमें सबसे बड़े कुण्डको काशीकुण्ड कहते हैं। इसमें एक गोमुखसे जल आता है।

यहाँके चौदह कुण्डोंमें किसीका जल कम और किसीका अधिक गरम है। यहाँ गोमुखका प्रवाह सदा नहीं बहता। जब-कभी अचानक उससे जलधारा निकलने लगती है और अचानक ही बंद हो जाती है। प्रायः तीन वर्षमें एक बार प्रवाह प्रकट होता है। एक बार प्रवाह प्रकट होनेपर डेढ़-दो महीने रहता है। उस समय यहाँ मेला लगा रहता है। राजापुरमें धर्मशाला है।

रायगढ़

यह छत्रपति महाराज शिवाजीका प्रसिद्ध ऐतिहासिक दुर्ग है। यहीं छत्रपतिकी समाधि है। इसलिये एक महान् वीरतीर्थ तो यह है ही। साथ ही यहाँ शिवाजी तथा समर्थ स्वामी रामदासद्वारा स्थापित-पूजित देवविग्रह हैं।

कोङ्कणप्रान्तके कुलाबा जिलेमें सह्याद्रिके एक शिखरपर यह दुर्ग है। यहाँ जानेके लिये बम्बईसे स्टीमरद्वारा बाणकोट बंदरगाह जाना चाहिये। वहाँसे नौकाद्वारा सावित्री नदीकी खाड़ीमें दासगाँव जाना होता है। वहाँसे चार मील पैदल जानेपर महाडास गाँव मिलता है। महाडास गाँवमें धर्मशाला है। यहाँ वीरेश्वर शिवमन्दिर है। यह मन्दिर प्राचीन है।

महाडाससे उत्तर अठारह मीलपर रायगढ़ है। चौदह मील जानेपर शिवाजीकी माता जीजाबाईका भवन मिलता है, जो अब भग्नदशामें है। यह भवन पाचाड गाँवमें है। वहाँसे चढ़ाई प्रारम्भ हो जाती है। आगे दुर्गके द्वार मिलते हैं। तोपखानेके आगे उसके मुख्याधिकारी मदारशाहकी कब्र है। आगेका मार्ग विकट है। यह दो मीलका कठिन मार्ग पार होनेपर महाद्वार आता है। उसके आगे तो अनेक स्मारक हैं।

आगे गङ्गासागर सरोवर है। सरोवरके ईशानकोणमें जगदम्बाका मन्दिर है। यह शिवाजीकी आराध्य भवानीका मन्दिर है। सरोवरके समीप आस-पास शिवाजीका भवन, राजसिंहासन आदि अनेक स्मारक स्थल हैं। यहाँ अनेक सभागृह हैं।

इस दुर्गमें शिवाजी महाराजके समयके अनेक भवन, सरोवर, सभागृह, राजमार्ग आदि हैं। कुशावर्त नामक सरोवरके पास गोंदेश्वरका छोटा मन्दिर है।

दुर्गका मुख्य मन्दिर श्रीजगदीश्वर-मन्दिर है। यह मन्दिर अत्यन्त कलापूर्ण है। इसके गर्भगृहमें भगवान् शंकरकी लिङ्गमूर्ति है। मन्दिरके गर्भगृहके सम्मुख नन्दीके सुन्दर मूर्ति है। मन्दिरके पश्चिम-द्वारकी ओर समर्थ रामदास स्वामीद्वारा स्थापित मारुतिमूर्ति है। इस मन्दिरके महाद्वारके दाहिनी ओर छत्रपति शिवाजीका अठपहलू समाधिमन्दिर है।

इस मन्दिरसे पाव मीलपर भवानीशिखर है। वहाँ भवानीगुफा है, जिसमें गणेश, मारुति आदि देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। इस शिखरपर जानेका मार्ग बहुत विकट है।

वैशाखशुक्ला द्वितीयाको शिवाजी-जयन्तीके समय रायगढ़में उत्सव होता है। उस समय यहाँ बहुत यात्री आते हैं। शेष समय तो यह दुर्ग सुनसान पड़ा रहता है।

बेलापुर

(लेखक—श्रीयुत एम० सुखदास तुलसीराम)

अहमदनगर जिलेकी श्रीरामपुर तहसीलमें बेलापुर ग्राम है। यहाँ श्रीकेशवगोविन्दका प्राचीन मन्दिर है। इसी नामके मन्दिर श्रीबन और उक्कल गाँवोंमें भी हैं। प्रवरा नामकी नदी इन मन्दिरोंके पाससे बहती है। श्रीबन तथा उक्कल गाँवोंके मध्यमें प्रवरा नदीके तटपर बिल्व-तीर्थ है। यह तीर्थ भगवान् शङ्करद्वारा

निर्मित है।

श्रीबनके पास ही हरिहरेश्वर-मन्दिर है। इसमें हरिहरेश्वर-लिङ्गमूर्ति है। यह अनादि स्वयम्भूलिङ्ग है। इसी लिङ्गमूर्तिको 'केशवगोविन्द' भी कहा जाता है।

यहाँपर ब्रह्मेश्वर, कालिकेश्वर, सूर्येश्वर, रामेश्वर, बिल्वेश्वर, अमलेश्वर, नीलेश्वर-लिङ्ग भी हैं। कहा जाता है कि ये क्रमशः ब्रह्मा, कालिका, सूर्य, परशुराम, इन्द्र, वायु तथा कुबेरद्वारा स्थापित हैं।

उक्कल गाँवमें केशवगोविन्द-मन्दिरमें केशव और गोविन्द नामके दो लिङ्ग स्थापित हैं। कुछ दूर उमेश्वर लिङ्ग भी है। प्रवरा नदी इस लिङ्गकी प्रदक्षिणा करती उत्तरवाहिनी होकर बेलापुर आती है।

नेवासा

बेलापुरसे थोड़ी दूरपर प्रवरा नदीके किनारे नेवासा अच्छा कस्बा है। कहा जाता है कि इसका पुराना नाम श्रीनिवासक्षेत्र है। अमृत-मन्थनके पश्चात् भगवान् विष्णुने असुरोंको मोहित करनेके लिये यहीं मोहिनी अवतार धारण किया था। यहाँ प्रवरा नदीके तटपर मोहिनीराज (भगवान् विष्णु) की भव्य मूर्ति है। भगवान्‌की यह मोहिनीराज-मूर्ति प्राचीन है। संत ज्ञानेश्वरने अपनी ज्ञानेश्वरी (गीताकी टीका) की रचना यहीं प्रारम्भ की थी। उस समय उन्होंने शिलाओंपर ज्ञानेश्वरी अङ्कित करायी। उस समयकी वे शिलाएँ यहाँ अबतक हैं। यहाँ धर्मशाला है।

टोंक

यह छोटा-सा गाँव गोदावरी-प्रवराके संगमपर बसा है। यहाँ सिद्धेश्वर-शिवमन्दिर है। कहा जाता है कि त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्गका यह एक उपलिङ्ग है। यहाँ और भी कई मन्दिर हैं।

पुणताम्बे

मध्य-रेलवेकी धौंड़-मनमाड लाइनपर मनमाडसे ४१ मील दूर पुनताम्बा स्टेशन है। इस स्थानका प्राचीन नाम पुण्यस्तम्भ है। यह बाजार गोदावरी-किनारे है। महायोगी चाँगदेव, जो पीछे ज्ञानेश्वरजीके शरणापन्न हो गये थे, दीर्घ कालतक यहाँ रहे थे। गोदावरीके किनारे चाँगदेवकी समाधि है। नगरके पूर्व एक विशाल अश्वत्थ वृक्ष है। उसीके नीचे चाँगदेवकी समाधि है। उसके सम्मुख श्रीविठोबाका मन्दिर है। समीप ही विश्वेश्वर-शिवमन्दिर है। आस-पास और भी कई शिव-मन्दिर हैं। बाजारमें श्रीव्यङ्कटेश-मन्दिर है।

कोपरगाँव

धौंड-मनमाड लाइनपर मनमाडसे २६ मील दूर कोपरगाँव स्टेशन है। ग्रामके पास ही गोदावरी नदीके तटपर शुक्रेश्वर महादेवका प्रसिद्ध मन्दिर है। वह मन्दिर प्राचीन है। मन्दिरके आसपास धर्मशालाएँ हैं। कहा जाता है दैत्यगुरु शुक्राचार्यका यहाँ आश्रम था। मन्दिरके बाहर शुक्राचार्यकी कन्या देवयानीका स्थान है। गाँवमें गोवर्धनधारी (श्रीकृष्ण) का मन्दिर है।

यहाँ गोदावरीपर घाट बँधे हैं। पास ही भगवान् विष्णुका मन्दिर है। गोदावरीके दूसरे तटपर कचेश्वर-शिवमन्दिर है। यह देवगुरु बृहस्पतिके पुत्र कचद्वारा स्थापित बताया जाता है।

कार्तिक-पूर्णिमा तथा महाशिवरात्रिको यहाँ मेला लगता है।

चाँदवड

मनमाड स्टेशनसे चाँडवड जानेके लिये सवारियाँ मिलती हैं। इस स्थानका प्राचीन नाम चन्द्रवट है। यहाँ धर्मशाला है। गाँवके पास रेणुकातीर्थ नामक सरोवर है। उसके समीप ही रेणुकादेवीका मन्दिर है। कहा जाता है परशुरामजीकी माता रेणुकाजीने यहाँ तप किया था। गाँवके पास पहाड़ीपर काली-मन्दिर है।

पूना

यह महाराष्ट्रका प्रसिद्ध नगर बंबईसे ११९ मील है। यह बहुत बड़ा नगर है। स्टेशनके पास तेजपाल गोकुलदासकी धर्मशाला है।

पूनामें मोटा और मूला नदियोंका संगम है। संगमके पास अनेकों देव-मन्दिर हैं। बुधवारपेठके पास तुलसीबागमें श्रीराम-मन्दिर है और बेलबागमें श्रीलक्ष्मी-नारायण-मन्दिर है। बैतालपेठमें, शोलापुर-बाजारमें तथा लश्कर-बाजारमें जैन-मन्दिर हैं।

पार्वती-मन्दिर

पूनासे ४ मील दूर एक पर्वतपर पार्वती-मन्दिर है। पर्वतपर जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। यह मन्दिर विशाल है। मन्दिरके प्राङ्गणमें एक ओर विष्णु, सूर्य, दुर्गा और स्कन्दके छोटे मन्दिर हैं। पार्वती-मन्दिरमें चाँदीकी शङ्करजीकी मूर्ति है। शङ्करजीके वामभागमें स्वर्णकी पार्वती-मूर्ति गोदमें विराजमान है। दाहिनी ओर गोदमें स्वर्णकी गणपतिमूर्ति है। यहाँ श्रावणमें मेला लगता है। पर्वतके नीचे पार्वती-सरोवर है।

आलंदी

पूनासे आलंदी १३ मील दूर है। आलंदीमें ही ज्ञानेश्वर महाराजने जीवित समाधि ली थी। यहाँ उनका समाधि-मन्दिर है। यहाँ वह दीवार भी नगरसे बाहर है, जिसे ज्ञानेश्वरजीने योगी चाँगदेवसे मिलनेके लिये चलाया था। आलंदीमें इन्द्रायणी नदी है। इसमें स्नान करना पुण्यप्रद माना जाता है। यहाँ धर्मशाला है।

देहू

बंबई-रायचूर लाइनपर पूनासे १५ मील दूर देहू-रोड स्टेशन है। वहाँसे देहू ३ मील है। पूना स्टेशनसे एक मीलपर ही शिवाजी-नगर स्टेशन है। पूनासे विभिन्न दिशाओंमें जानेवाली मोटर-बसोंका केन्द्र यहीं स्टेशनके पास है। यहाँसे देहू मोटर-बस जाती है। बस-मार्गसे देहू १३ मील है।

देहू संत तुकारामजीकी जन्मभूमि है। यहाँ तुकारामजी-द्वारा प्रतिष्ठित विठोबा-मन्दिर है।

खंडोबा

दक्षिण-रेलवेकी बँगलोर-पूना लाइनपर पूनासे ३२ मील दूर जेजूरी स्टेशन है। यहाँ खंडोबाका मन्दिर है। खंडोबा एक नरेश थे, जिन्हें शङ्करजीका अवतार मानते हैं। महाराष्ट्रमें खंडोबाकी बहुत मान्यता है, यहाँ महाराष्ट्रके भक्त बड़ी संख्यामें आते हैं।

भीमशङ्कर

भीमशङ्कर द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक है। इसका स्थान एक तो आसाममें (गोहाटीके पास ब्रह्मपुत्रमें पहाड़ीपर) बताया जाता है और एक बंबईसे लगभग दो सौ मील दूर दक्षिण-पूर्वमें सह्याद्रि पर्वतके एक शिखरपर। इस शिखरको डाकिनी-शिखर कहते हैं।

भीमशङ्करका स्थान वनके मार्गसे पर्वतपर है। वहाँतक पहुँचनेका कोई भी सीधा सुविधापूर्ण रास्ता नहीं है। केवल शिवरात्रिपर पूनासे भीमशङ्करके पासतक बस जाती है। दूसरे समय जाना हो तो नासिकसे बसद्वारा ८८ मील जा सकते हैं। आगे ३६ मीलका मार्ग बैलगाड़ी, पैदल या टैक्सीसे तय करना पड़ता है। दूसरा मार्ग बंबई-पूना लाइनपर ५४ मील दूर नेरल स्टेशनसे है; किन्तु यह मार्ग केवल पैदलका है। बंबईसे ९८ मील दूर तलेगाँव स्टेशन उतरें तो वहाँसे मोटर-बसके मार्गसे भीमशङ्कर १०० मील दूर है। तलेगाँवसे मंचरतक रेलवेकी ही मोटर-बस चलती है। मंचरसे आँवा गाँवतक बस मिल जाती है। आँवा गाँवसे मार्गदर्शक तथा भोजनादि लेकर पैदल या बैलगाड़ीसे लगभग १६ मील जाना पड़ता है। बीचमें एक गाँव है, वहाँ स्कूलमें रात्रिको ठहर सकते हैं।

भीमशङ्करके समीप कई धर्मशालाएँ हैं, किन्तु वे सूनी पड़ी रहती हैं। पासमें ४-६ झोपड़ियोंके घर हैं। उनमें पंडोंके यहाँ भी ठहर सकते हैं और धर्मशालामें भी। भीमशङ्करसे लगभग एक फर्लांग पहले ही शिखरपर देवी-मन्दिर है। वहाँसे नीचे उतरनेपर भीमशङ्कर-मन्दिर मिलता है।

भीमशङ्कर-मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है। मन्दिरके सम्मुखका जगमोहन बीचसे टूट गया है। मन्दिर कलापूर्ण है, किन्तु जीर्ण होनेसे भग्न होता जा रहा है। मन्दिरके पास ही भीमा नदीका उद्गम है। मन्दिरके

पीछे दो कुएँ और एक कुण्ड है।

कहते हैं त्रिपुरासुरको मारकर भगवान् शङ्करने यहाँ विश्राम किया था। उस समय यहाँ 'भीमक' नामक एक नरेश तपस्या करता था। शङ्करजीने उसे दर्शन दिया और उसकी प्रार्थनापर यहाँ लिङ्गमूर्तिके रूपमें स्थित हुए।

सासवड

पूनासे ७ मीलपर सासवड-रोड स्टेशन है। स्टेशनसे सासवड ११ मील है। यह एक अच्छा बाजार है। नगरके मध्यमें भैरवमन्दिर है। यह मन्दिर इधर बहुत प्रसिद्ध है। नगरके दक्षिण करहा और चाँवली नदियोंका संगम है। संगमपर संगमेश्वर शिवका भव्य मन्दिर है। नगरमें धर्मशाला है।

नगरके नैर्ऋत्यकोणमें थोड़ी दूरपर वृक्षके नीचे वटेश्वर महादेवका स्थान है। सासवडमें ही संत ज्ञानेश्वरजीके भाई सोपानदेवकी समाधि है। यह समाधि-मन्दिर भव्य है। वैशाख शु० ११ को यहाँ महोत्सव होता है।

पुरन्दरगढ़—सासवडसे ६ मील नैर्ऋत्यकोणमें इतिहास-प्रसिद्ध पुरन्दरगढ़ है। यह किला एक पहाड़ीपर है। इस दुर्गके भीतर केदारेश्वर तथा पुरन्देश्वर—ये दो प्राचीन शिव-मन्दिर हैं।

गढ़के नीचे पूर नामका गाँव है। वहाँ श्रीनारायणेश्वर नामक अत्यन्त प्राचीन शिव-मन्दिर है। यहाँ महाशिवरात्रिको बड़ा मेला लगता है।

सिंहगढ़

पूनासे १७ मील नैर्ऋत्यकोणमें यह इतिहासप्रसिद्ध दुर्ग है। बहुत-से लोग यह प्राचीन ऐतिहासिक स्थान देखने जाते हैं। यहाँ आनेके कई मार्ग हैं, उन मार्गोंमें कई स्थानोंपर सुप्रसिद्ध मन्दिर हैं। उनका वर्णन दिया जा रहा है—

कोणपुर—सिंहगढ़के कल्याणद्वारसे लगभग डेढ़ मीलपर यह गाँव है। यहाँ देवीका मन्दिर है। यह मन्दिर इधर बहुत मान्यताप्राप्त है। मार्गशीर्ष-पूर्णिमासे १५ दिनतक यहाँ मेला लगा रहता है।

भोर—पूनासे यह स्थान ४० मील है। यह गाँव नीरा नदीके तटपर है। नदी-तटपर मुरलीधर (श्रीकृष्ण) का भव्य मन्दिर है। गाँवके मध्यमें मारुति-मन्दिर है। यह मन्दिर बड़ा है। यहाँ नवरात्रमें रामनवमीके समय ५ दिन महोत्सव होता है। इस मन्दिरसे थोड़ी दूरीपर भोरेश्वर नामक भव्य शिव-मन्दिर है।

नसरापुर—पूनासे २२ मीलपर भोरके मार्गमें यह स्थान है। गाँवसे थोड़ी दूरपर केतकीवन है और वहाँ वनेश्वर शिव-मन्दिर है। वनेश्वर-लिङ्ग स्वयम्भू-लिङ्ग कहा जाता है। मन्दिरके समीप सरोवर है। मन्दिरमें शिवलिङ्गके पाससे बराबर जल निकलता रहता है।

शिवनेरी

यह वह प्राचीन दुर्ग है, जहाँ छत्रपतिशिवाजी महाराजका जन्म हुआ था। पूनासे मोटर-बसद्वारा खेड़ होकर जुन्नेर आना चाहिये। जुन्नेरके पास होनेके कारण इस स्थानको जुन्नेरका किला भी कहते हैं।

जुन्नेरसे शिवनेरी दुर्ग लगभग आध मील दूर है। जुन्नेरके पश्चिमसे किलेको मार्ग जाता है। किलेके ऊपर चढ़नेपर प्रथम शिवाई-देवीका मन्दिर मिलता है। इन्हीं देवीकी आराधनासे जीजाबाईको पुत्र हुआ, इसलिये देवीके नामपर उन्होंने पुत्रका नाम शिवाजी रखा।

मन्दिरसे और ऊपर जानेपर गङ्गा-यमुना नामक जलकुण्ड मिलते हैं।

सातारा

यह प्राचीन नगर है। सातारा-रोड स्टेशनसे नगरके लिये सवारियाँ मिलती हैं। यह नगर महाराष्ट्र राज्यकी राजधानी रहा है। नगरके विभिन्न भागोंमें अनेक प्रेक्षणीय देवमन्दिर हैं। मंडीके पास श्रीराम-मन्दिर, नगरके उत्तरी भागमें कोटेश्वर शिव-मन्दिर, भगवतीका जल-मन्दिर (सरोवरके मध्यमें), नगरके पश्चिम कृष्णेश्वर शिव-मन्दिर, मङ्गलवार-पेठमें काला राम-मन्दिर, किलेके समीप ढोल्या-गणपति, शनिवार-पेठमें मारुति-मन्दिर आदि अनेकों भव्य मन्दिर नगरमें हैं।

नगरके पश्चिमी भागसे लगभग दो मील दूर एक पहाड़ीपर येवतेश्वर-मन्दिर है। यह बहुत प्राचीन मन्दिर है। प्रत्येक सोमवारको यहाँ भीड़ होती है।

नगरके दक्षिण किलेके दूसरी ओर गणेश-मन्दिर है। इसमें गणपतिकी स्वयं प्रकट हुई मूर्ति स्थापित है।

सज्जनगढ़

सातारासे सज्जनगढ़को मोटर-बस जाती है। समर्थ स्वामी रामदासजीकी यहाँ समाधि है। यहाँ परली नामका एक गाँव है। गाँवके पास पहाड़ीपर सज्जनगढ़ दुर्ग है। पौन मीलकी चढ़ाईके बाद दुर्गका पहला द्वार मिलता है। उसके आगे ऊपर जानेको सीढ़ियाँ बनी हैं। सीढ़ियोंसे ऊपर जानेपर महाद्वार मिलता है। महाद्वारसे कुछ आगे जानेपर बलभीमाका छोटा-सा मन्दिर है। वहाँ पास ही सुविस्तृत सरोवर है। सरोवरसे आगे जानेपर श्रीसमर्थमठका बहिर्द्वार मिलता है।

श्रीसमर्थमठ विस्तीर्ण है। इसमें श्रीराम-मन्दिर तथा समर्थ स्वामी रामदासजीका समाधि-मन्दिर—ये दो मुख्य मन्दिर हैं। श्रीराम-मन्दिरमें श्रीरामके सम्मुख दास-हनुमान्‌की सुन्दर मूर्ति है। इस मूर्तिके पास ही सिद्धविनायक-मन्दिर है। ये दोनों मूर्तियाँ राम-मन्दिरके सभामण्डपमें हैं। कुछ सीढ़ियाँ चढ़नेपर मुख्य मन्दिरमें सिंहासनपर श्रीराम, लक्ष्मण, जानकीकी पञ्चधातु-निर्मित मूर्तियोंके दर्शन होते हैं। ये मूर्तियाँ श्रीसमर्थद्वारा प्रतिष्ठित पूजित हैं।

श्रीराम-मन्दिरके उत्तर श्रीसमर्थका समाधि-मन्दिर है। श्रीसमर्थकी समाधि कुछ सीढ़ियाँ नीचे उतरनेपर मिलती है। समाधिके उत्तर गङ्गा तथा यमुना नामक कुण्ड हैं। यहाँ माघकृष्णा नवमीको महोत्सव होता है। उस समय बड़ा मेला लगता है।

गढ़के दक्षिण भागमें जो आगे नोक-सा निकला भाग है, उसपर अंगलाई देवीका मन्दिर है। देवीकी मूर्ति श्रीसमर्थको अंगापुरकी नदीमें मिली थी। उसे यहाँ लाकर उन्होंने ही स्थापित किया। इस मन्दिरका उत्सव नवरात्रमें होता है।

माहुली

यह स्थान सातारासे ५ मील पूर्व कृष्णा और वेणी नदियोंके संगमपर है। सातारासे यहाँतक मोटर-बस आती है। यहाँ कृष्णा नदीके दोनों तटोंपर घाट एवं देव-मन्दिर हैं। संगमका यह क्षेत्र पुण्यतीर्थ माना जाता है।

जरंडा

यह स्थान सातारासे पूर्व ११ मीलपर है। सातारा-रोड स्टेशनसे दक्षिण यह १ मील दूर है। यहाँ जरंडा पर्वत है। उसपर जानेका मार्ग अटपटा है। पर्वतपर मुख्य मन्दिर श्रीहनुमान्‌जीका है। उसके पास ही श्रीराम-मन्दिर है। मन्दिरके पास धर्मशाला है। चैत्रपूर्णिमाको महोत्सव होता है। पर्वतपर दूकान आदि नहीं है। भोजन-सामग्री नहीं मिलती।

कहा जाता है त्रेतामें श्रीराम-रावण-युद्धके समय लक्ष्मणजीको शक्ति लगनेपर हनुमान्‌जी जब द्रोणाचल ले जा रहे थे, तब उसका एक खण्ड यहाँ गिर पड़ा था। इस पर्वतपर बहुत प्रकारकी वनौषधियाँ मिलती हैं।

शिंगणापुर

बँगलोर-पूना लाइनपर सातारा-रोडसे ६ मील पहले कोरेगाँव स्टेशन है। यहाँसे ४० मील दूर शम्भु-महादेव नामक पर्वत है। उसके शिखरपर शम्भु-महादेवका मन्दिर है। स्टेशनसे लगभग बीस मीलपर फलटण नामक नगर है। फलटणतक स्टेशनसे बसें जाती हैं। फलटणमें भी श्रीराम-मन्दिर और सिद्धेश्वर-मन्दिर दर्शनीय हैं। वहाँ धर्मशाला भी है।

फलटणसे लगभग बस मीलपर जावली गाँव है। गाँवमें भगवान् शंकर तथा भैरवनाथके मन्दिर हैं। इनमें भैरव-मन्दिर प्राचीन है। इस गाँवसे तीन मील दूर नदी पार करनेपर शिंगणापुर गाँव मिलता है। गाँवके पास पर्वत है। उसके ऊपरतक जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। पर्वतके नीचे शिवतीर्थ नामक सरोवर है।

पर्वतपर चढ़ते समय मार्गके दोनों ओर छोटे-बड़े कई मन्दिर मिलते हैं। पर्वतपर ऊपरतक जानेके लिये मोटरका मार्ग भी है। ऊपर शम्भु-महादेव-मन्दिरमें गर्भगृहमें दो शिवलिङ्ग स्थापित हैं। इस शम्भु-महादेव शिखरको दक्षिण-कैलास कहते हैं। महाराष्ट्रके बहुत-से लोगोंके ये शंकरजी कुलदेवता हैं। शिवरात्रिपर यहाँ बड़ा मेला लगता है।

यहाँ मुख्य मन्दिरके समीप अमृतेश्वर-मन्दिर है। मुख्य मन्दिरके घेरेमें और भी कई मन्दिर हैं। इनमें भैरव-मन्दिर भव्य है।

पंढरपुरसे भी शिंगणापुरतक मोटर-बस जाती है। इस स्थानका पुराना नाम सिंघमपुर है। यह गाँव सह्याद्रिके ऊपर बसा है। इस शिखरको धवलाद्रि या स्वर्णाद्रि कहते हैं। मोटर-बस ऊपरतक जाती हैं। ऊपर एक विस्तृत सरोवर है। उसके समीप भगवान् शंकरके दो प्राचीन मन्दिर हैं। दोनोंमें हरि और हरके प्रतीक दो-दो शिवलिङ्ग हैं। एक मन्दिरके शिवलिङ्गको शम्भु-महादेव और दूसरे मन्दिरवालेको अमृतेश्वर कहते हैं।

कहा जाता है शम्भु-महादेवका फाटक शिवाजी महाराजके पितामहका बनवाया हुआ है। ये शिवाजी एवं उनके पूर्वजोंके आराध्य हैं। इस शम्भु-महादेव-मन्दिरके सामने कई नन्दी-मूर्तियाँ हैं। मन्दिरके दक्षिण ओर शिवाजीके पिता शाहजीकी समाधि है। यहाँ चैत्र-प्रतिपदासे पूर्णिमातक मेला लगता है।

यहाँ आस-पास गुप्तलिङ्ग, बिल्वलिङ्ग, बाणलिङ्ग, उदितलिङ्ग, भैरवलिङ्ग, स्तम्बलिङ्ग, गौरी-हरलिङ्ग और उदुम्बरलिङ्ग हैं, जो आवरण-देवता माने जाते हैं। गुप्तलिङ्ग शम्भु-महादेवसे तीन मील दूर अग्निकोणमें है, यह स्थान पर्वतके मध्यमें है। पर्वतकी दीवारसे लगा छोटा-सा मन्दिर है। प्रकाश लेकर जानेसे दर्शन होता है। मन्दिरमें एक छोटा गड्ढा है, जिसमें सदा जल भरा रहता है। उसमें हाथ डालनेपर शिवलिङ्गका स्पर्श होता है। मन्दिरके पास एक गोमुखकुण्ड है, इसमें पर्वतसे जलधारा गिरती है। उससे ऊपर एक और कुण्ड है, उसे भागीरथी-कुण्ड कहते हैं। उसके ऊपर जटाकुण्ड है।

गुप्तलिङ्गके समान ही शम्भु-महादेवसे विभिन्न दिशाओंमें दो-से-चार मीलकी दूरीमें अन्य आवरण-लिङ्ग हैं।

धावडसी

बँगलोर-पूना लाइनपर सातारा-रोड स्टेशन है। वहाँसे साताराके लिये सवारियाँ जाती हैं। सातारासे छः मील उत्तर यह छोटा गाँव है। सातारासे यहाँके लिये सवारी मिल जाती है।

यहाँ संत ब्रह्मेन्द्रस्वामीकी समाधि है। श्रीब्रह्मेन्द्रस्वामी अठारहवीं शताब्दीमें महाराष्ट्रके प्रसिद्ध संत हुए हैं। छत्रपति साहूजी इनके शिष्य थे। ये महात्मा भगवान् परशुरामके उपासक थे। एक ही मन्दिरमें भीतर ब्रह्मेन्द्रस्वामीकी समाधि और परशुरामजीकी मूर्ति है। मन्दिरके समीप ही ब्रह्मेन्द्रस्वामीका बँधवाया हुआ सरोवर है। मन्दिर उत्तराभिमुख है। मन्दिरके प्रथम भागमें परशुरामजीकी मूर्ति है। उसके दो द्वार भीतर मध्य-मन्दिरमें ब्रह्मेन्द्रस्वामीकी समाधि है। द्वारके दोनों ओर सिद्धविनायक तथा देवीकी मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।

महाराष्ट्रमें ब्रह्मेन्द्रस्वामीकी शिष्य-परम्परा बहुत बड़ी है। उनकी समाधिका दर्शन करने प्रान्तके प्रायः सभी भागोंसे यात्री आते रहते हैं।

बाठर

यह स्टेशन पूनासे चौदह मील तथा सातारा-रोडसे नौ मील दूर है। कृष्णा नदीके किनारे यह अत्यन्त पवित्र तीर्थ माना जाता है। यहाँ बीस मन्दिर हैं, जिनमें गणेश, शिव, माधवजी तथा लक्ष्मीजीके मन्दिर मुख्य हैं। यहाँ पर्वतपर पाण्डुगढ़ नामक किला है।

महाबलेश्वर

वाठर स्टेशनसे महाबलेश्वर मोटर-बस जाती है। पूनासे भी महाबलेश्वर मोटर-बसद्वारा जा सकते हैं। महाबलेश्वर वाठर स्टेशनसे ४० मील और पूनासे ७८ मील दूर है।

महाबलेश्वर बंबई-सरकारका पहले ग्रीष्म-कालीन आवास रहा है। यहाँ वर्षामें बहुत अधिक वर्षा होती है। यहाँ पासमें ही एक पर्वतसे कृष्णा नदी निकलती है। पर्वतसे धारा एक कुण्डमें आती है और कुण्डमेंसे गोमुखसे बाहर निकलती है। कृष्णाका उद्‌गम होनेसे यह पवित्र तीर्थ है। यहाँ महाबलेश्वरका प्राचीन मन्दिर है। दूसरा मन्दिर गोटेश्वर शिवका है।

मूल महाबलेश्वर तथा नवीन महाबलेश्वरमें तीन मीलका अन्तर है। मूल महाबलेश्वरके सम्बन्धमें कहा जाता है कि यहाँ सृष्टिके प्रारम्भमें ब्रह्मा, विष्णु तथा महेशने तपस्या की थी। तपस्याके पश्चात् ब्रह्माजीने यज्ञ किया। यज्ञ करते समय महाबल तथा अतिबल नामके दो दैत्योंने विघ्न प्रारम्भ किया। इसमें अतिबलको तो भगवान् विष्णुने मार दिया, किन्तु महाबल तपोबलसम्पन्न था। वह किसी पुरुषके द्वारा अवध्य था। इसलिये देवताओंकी प्रार्थनापर आदिमायाने प्रकट होकर उसे मारा। उस समय मृत्युसे पूर्व महाबल दैत्यने त्रिदेवोंसे वहाँ स्थित रहने तथा इस क्षेत्रके अपने नामसे प्रसिद्ध होनेका वरदान माँग लिया। इसके पश्चात् ब्रह्माका यज्ञ पूर्ण हुआ। सबने हरिहरमें अवभृथ-स्नान किया।

यहाँ महाबलेश्वर-रूपसे भगवान् शङ्करने, अतिबलेश्वर-रूपसे भगवान् विष्णुने तथा कोटीश्वर-रूपसे ब्रह्माजीने नित्य निवास किया।

यहाँ पाँच नदियोंका उद्‌गम है—सावित्री, कृष्णा, वेण्या, ककुद्मती (कोयन) और गायत्री। इनमें कृष्णा भगवान् विष्णुके, वेण्या शङ्करजीके और ककुद्मती ब्रह्माके अंशसे उत्पन्न मानी जाती हैं।

यहाँ महाबलेश्वर-मन्दिरमें महाबलेश्वर-लिङ्गपर रुद्राक्षके आकारके छिद्र हैं, जो जलपूरित रहते हैं। उनसे बराबर जल निकलता रहता है। कहा जाता है उसी जलसे पाँचों नदियोंका उद्‌गम होता है।

ब्रह्माजीने जहाँ यज्ञ किया था, वह स्थान वनमें है। उसे ब्रह्मारण्य कहा जाता है। महाबलेश्वर-मन्दिरसे यह स्थान तीन मील दूर है। यह वन बहुत भयंकर दीखता है। यहाँ वन्यपशुओंका भय रहता है। वहाँ एक गुफा है। कहा जाता है इसीमें यज्ञवेदी थी।

महाबलेश्वरमें महाबलेश्वर, अतिबलेश्वर तथा कोटीश्वर—ये तीन प्राचीन मन्दिर तो हैं ही, कृष्णाबाईका मन्दिर भी प्राचीन है। कृष्णाबाई-मन्दिरके पास बलभीम-मन्दिर है। इसमें समर्थ रामदास स्वामीद्वारा श्रीमारुतिकी स्थापना हुई थी। पास ही अहल्याबाईका बनवाया रुद्रेश्वर-मन्दिर है। यहाँ रुद्रतीर्थ, चक्रतीर्थ, हंसतीर्थ, पितृमुक्ति-तीर्थ, अरण्य-तीर्थ, मलापकर्ष-तीर्थ आदि अनेकों तीर्थस्थल हैं।

कृष्णाबाई-मन्दिरके पास एक बड़ी धर्मशाला है। कृष्णाबाई-मन्दिरके पास ही ब्रह्मकुण्ड-तीर्थ है। इसमें स्नान महापुण्यप्रद माना जाता है। इस कुण्डमें पाँच नदियोंका प्रवाह आता है। उपर्युक्त पाँच नदियोंके अतिरिक्त यहाँ भागीरथी और सरस्वती नदियाँ भी मानी जाती हैं; किन्तु उनमें केवल वर्षामें जल रहता है।

यद्यपि कृष्णाबाई-मन्दिरमें (ब्रह्मकुण्डमें) सातों नदियोंका उद्गम एक स्थानपर दीखता है, तो भी इनके उद्गम प्रत्यक्षरूपमें विभिन्न स्थानोंपर प्रकट हुए हैं।

इस क्षेत्रका मुख्य मन्दिर महाबलेश्वर-मन्दिर है। ऊपर बताया गया है कि महाबलेश्वर-स्वयम्भूलिङ्गसे सात नदियाँ प्रकट हुई हैं। मूर्तिपर चढ़ाया शृङ्गार भीग न जाय, इसलिये मूलमूर्तिपर आवरण चढ़ाकर तब शृङ्गार किया जाता है। मूलमन्दिरके बाहर कालभैरवकी मूर्ति है। उसके पास ही नन्दीकी मूर्ति है।

यह महाबलेश्वर-क्षेत्र महाराष्ट्रका अत्यन्त प्रसिद्ध तीर्थस्थान है।

कोलनृसिंह

बँगलोर-पूना लाइनपर पूनासे १२४ मील दूर कराड (कर्हाड) स्टेशन है। इस स्टेशनसे थोड़ी दूरपर कृष्णा तथा कोयना (ककुद्मती) नदियोंका संगम है। दोनों नदियाँ आमने-सामने आकर मिलती हैं। यह संगम-स्थान पुण्यक्षेत्र है। स्टेशनसे यह स्थान दो मील दूर है। यहाँ धर्मशाला है।

कर्हाडसे १० मीलपर कोलनृसिंह गाँव है। यहाँ एक गुफामें षोडशभुजी नृसिंह-मूर्ति है। कहा जाता है कि महर्षि पराशरने यह मूर्ति स्थापित की थी। पास ही कृष्णा नदीपर पक्के घाट बने हैं।

वाई

बँगलोर-पूना लाइनपर मीरजसे ८६ मील दूर वाठर स्टेशन है। यहाँसे २० मीलपर वाई पुराणप्रसिद्ध तीर्थस्थान है। स्टेशनसे यहाँ जानेके लिये सवारियाँ मिलती हैं। यहाँ धर्मशालाएँ हैं। वाई अच्छा नगर है।

यह तीर्थ कृष्णा नदीके किनारे है। जैसे बृहस्पतिके सिंहस्थ होनेपर नासिकमें वर्षभर गोदावरी-स्नान महापुण्यप्रद माना जाता है, वैसे ही बृहस्पतिके कन्याराशिमें होनेपर वाईके पास कृष्णाका स्नान वर्षभर पुण्यप्रद माना जाता है। यह वैराज-क्षेत्र है।

यहाँ कृष्णा नदीपर अनेक घाट हैं। पेशवाघाटपर यज्ञेश्वर-शिव तथा मारुति-मन्दिर हैं। पास ही काशी-विश्वेश्वरका छोटा मन्दिर है। आगे भानुघाट, जोशीघाट हैं। भानुघाटके पास ही मण्डपमें सिंहासन है, जिसमें उत्सवके समय कृष्णा (नदीकी अधिदेवी) की मूर्ति स्थापित की जाती है। इस स्थानके पीछे मारुति-मन्दिर है। यहाँसे कुछ उत्तर उमा-महेश्वर-मन्दिर है। यह मन्दिर सुविस्तृत तथा भव्य है। मुख्य मन्दिरके चारों दिशाओंमें सूर्य, गणेश, लक्ष्मी तथा नारायणकी मूर्तियाँ हैं।

इस मन्दिरसे थोड़ी दूरीपर काला राम-मन्दिर है। इसमें श्यामवर्णकी श्रीराममूर्ति है। कुछ आगे जानेपर मुरलीधरका छोटा मन्दिर मिलता है। इनके अतिरिक्त इस गङ्गापुरी मुहल्लेमें बहिरोबा-मन्दिर, दत्तमन्दिर आदि दर्शनीय हैं।

वाईके मधलीआली मुहल्लेको सत्यनाथपुरी कहते हैं। यहाँ कृष्णा-तटपर कटिंजन-घाट विस्तृत है। घाटपर संध्यादि करनेके लिये दुमंजिला भवन है। उसमें गणपति, भगवान् विष्णु तथा महिषासुरमर्दिनी देवीकी मूर्तियाँ हैं। इस घाटके समीप दूसरा घाट है, जिसपर ओंकारेश्वर-मन्दिर है। पास ही धर्मशाला है। धर्मशालाके समीप राम-मन्दिर है। काशीविश्वेश्वर-मन्दिर भी पास ही है।

गणपतिआली मुहल्लेमें भी कृष्णापर विस्तृत घाट है। घाटके पास गङ्गा-रामेश्वर-मन्दिर है। यह मन्दिर प्राचीन है। इसके समीप भुवनेश्वर-मन्दिर है। इस मुहल्लेका मुख्य मन्दिर गणपतिका है। उसमें ७ फुट ऊँची, ६ फुट चौड़ी गणेशजीकी विशाल मूर्ति है। इनको 'सढोल्या गणपति' कहते हैं। यह मन्दिर विशाल है। इसके समीप काशीविश्वेश्वर-मन्दिर है। यह मन्दिर भी बड़ा है। इस मन्दिरकी नन्दीमूर्ति बहुत सुन्दर है। इस विश्वेश्वर-मन्दिरके १४ शिखर हैं। इनके अतिरिक्त इस मुहल्लेमें गोविन्द, रामेश्वर, मुरलीधर तथा दत्तके मन्दिर हैं।

धर्मपुरी मुहल्लेमें घाटपर रामेश्वरमन्दिर है। उसके समीप ही बादामी-कुण्ड है। उसके समीप पाँच कुण्ड और हैं। रामेश्वर-मन्दिरके उत्तर मारुति-घाट तथा मारुति-मन्दिर हैं। रामेश्वर-मन्दिरसे आगे कृष्णाका मन्दिर है। इसके उत्तर धर्मशाला तथा दक्षिण त्रिशूलेश्वरका स्थान है। इसके आगे एक छोटे मन्दिरमें विशाल शिवलिङ्ग है। उसके समीप नरहरिका स्थान है। समीप ही अष्ट-विनायकमूर्ति एक चबूतरेपर है। यहाँसे उत्तर हरिहरेश्वर तथा दत्तात्रेय—ये दो मन्दिर हैं, हरिहरेश्वर-मन्दिर विशाल है। दत्त-मन्दिर प्राचीन है और उसमें कृष्णवर्ण दत्तमूर्ति बहुत भव्य है।

दत्त-मन्दिरके पश्चिम पञ्चमुख-मारुति-मन्दिर और नागोब-मन्दिर हैं। इनके अतिरिक्त धर्मपुरीमें व्यङ्कटेश-मन्दिर, राम-मन्दिर तथा महालक्ष्मी, महाविष्णु आदिके

हैं—गयातीर्थ, ओंकारतीर्थ, सर्वपुण्यतीर्थ, कपिलतीर्थ, भीमतीर्थ, ऋषितीर्थ, व्यासतीर्थ, सविधानतीर्थ आदि।

यहाँसे पाँच मील दूर पश्चिम ओर गणेश-गया है। यह पितृतीर्थ है। कर्हा नदीके तटपर यह स्थान है। यहाँ अष्टादशपदाङ्कित गणेश-शिला है। पितृश्राद्धका यहाँ विधान है।

सौन्दे

पूनासे उसी बंबई-रायचूर लाइनपर ९४ मील दूर जेऊर स्टेशन है। यह स्टेशन कुर्दूवाड़ीसे २१ मील पहले पड़ता है। स्टेशनसे ७ मील दूर सौन्दे ग्राम है। पैदलका मार्ग है। इसका पुराना नाम संवित् है। यहाँ बालनाथ (कालभैरव) का प्रसिद्ध मन्दिर है। प्रेतबाधा-पीड़ित लोग यहाँ प्रायः बाधा-निवारणार्थ आते हैं।

कहा जाता है कि कालभैरव काशीसे हरिहर पधारे। वहाँसे उनको देवर्षि नारदजीने ले आकर सौन्देमें प्रतिष्ठित किया।

पंढरपुर

पंढरपुर महाराष्ट्रका प्रधान तीर्थ है। महाराष्ट्रके संतोंके आराध्य हैं श्रीपंढरीनाथ। देवशयनी और देवोत्थानी एकादशीको वारकरी सम्प्रदायके लोग यहाँ यात्रा करने आते हैं। इस यात्राको ही 'वारी' देना कहते हैं। उस समय यहाँ बहुत अधिक भीड़ होती है। भक्त पुण्डरीक तो इस धामके प्रतिष्ठाता ही हैं। उनके अतिरिक्त संत तुकारामजी, नामदेव, राँका-बाँका, नरहरिजी आदि संतोंकी यह निवासभूमि रही है। पंढरपुर भीमा नदीके तटपर है, जिसे यहाँ चन्द्रभागा भी कहते हैं।

मार्ग—मध्य-रेलवेकी बंबई-पूना-रायचूर लाइनपर पूनासे ११५ मील दूर कुर्दूवाड़ी स्टेशन है। यह स्टेशन मीरज-लाटूर लाइनपर भी है। कुर्दूवाड़ीसे मीरज-लाइनपर ३३ मील दूर पंढरपुर स्टेशन है। स्टेशनसे पंढरपुर लगभग डेढ़ मील दूर है। शोलापुर, परली वैद्यनाथ आदिसे पंढरपुरतक मोटर-बसका भी मार्ग है।

ठहरनेके स्थान

पंढरपुरमें अनेकों धर्मशालाएँ हैं। यात्री पंडोंके यहाँ भी ठहरते हैं।

श्रीविट्ठल-मन्दिर—पंढरपुरका यही मुख्य मन्दिर है। यह मन्दिर विशाल है। मन्दिरमें कमरपर दोनों हाथ रखे भगवान् पंढरीनाथ खड़े हैं। मन्दिरके घेरेमें ही श्रीरखुमाई (रुक्मिणीजी) का मन्दिर है। इसके अतिरिक्त बलरामजी, सत्यभामा, जाम्बवती तथा श्रीराधाके मन्दिर भी भीतर हैं।

श्रीविट्ठल-मन्दिरमें प्रवेश करते समय द्वारके सामने चोखा मेलाकी समाधि है। प्रथम सीढ़ीपर ही श्रीनामदेवजीकी समाधि है और द्वारके एक ओर अखा भक्तकी मूर्ति है।

पंढरपुरमें चन्द्रभागाके किनारे चन्द्रभागातीर्थ, सोमतीर्थ आदि स्थान हैं। वहाँ बहुत-से मन्दिर हैं। इस स्थानको नारदकी रेती कहते हैं। श्रीनारदजीका मन्दिर है। एक स्थानपर दस शिवलिङ्ग हैं। एक चबूतरेपर भगवान्के चरण-चिह्न हैं, जिन्हें विष्णुपद कहते हैं। यहाँ गोपालजी, जनाबाई, एकनाथ, नामदेव, ज्ञानेश्वर तथा तुकारामजीके मन्दिर हैं।

पंढरपुरमें कोदण्डराम तथा लक्ष्मीनारायणजीके मन्दिर हैं। चन्द्रभागाके उस पार श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है।

पंढरपुरसे लगभग ३ मील दूर एक गाँवमें जनाबाईकी वह चक्की है, जिसे भगवान्ने चलाया था।

भक्त पुण्डरीक माता-पिताके परम सेवक थे। वे माता-पिताकी सेवामें लगे हुए थे, उस समय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र उन्हें दर्शन देने पधारे। पुण्डरीकने भगवान्को खड़े होनेके लिये एक ईंट सरका दी, किंतु माता-पिताकी सेवा छोड़कर वे उठे नहीं; क्योंकि वे जानते थे कि माता-पिताकी सेवासे प्रसन्न होकर ही भगवान् उन्हें दर्शन देने पधारे थे। इससे भगवान् और भी प्रसन्न

हुए। माता-पिताकी सेवाके पश्चात् पुण्डरीक भगवान्‌के समीप पहुँचे और वरदान माँगनेके लिये प्रेरित किये जानेपर उन्होंने माँगा—'आप सदा यहाँ इसी रूपमें स्थित रहें।' तबसे प्रभु वहाँ श्रीविग्रहरूपमें स्थित हैं।

आस-पासके स्थान

गौरी-शंकर—पंढरपुरसे शिंगणापुर जाते समय सड़कसे आधमील दूर गौरीशंकर महादेवका मन्दिर मिलता है। इसमें अर्धनारीश्वरकी बड़ी सुन्दर मूर्ति है। कहते हैं किसीने मूर्तिका अँगूठा काटा तो वहाँसे रक्त निकला। कटे स्थानपर हड्डी आज भी दीखती है।

नरसिंहपुर—पंढरपुरसे कुर्दूवाड़ी स्टेशन लौट आयें तो कुर्दूवाड़ीसे १७ मीलपर नरसिंहपुर गाँव मिलता है। यह गाँव भीमा और नीरा नदियोंके बीचमें है। ये नदियाँ आगे जाकर मिल गयी हैं। उस संगम-स्थानको त्रिवेणी कहते हैं। इधरके लोग नरसिंहपुरको महाराष्ट्रका प्रयाग और पंढरपुरको काशी मानते हैं।

यहाँ भगवान् नरसिंहका विशाल मन्दिर है। उसमें प्रह्लादजीकी भी मूर्ति है। इस मन्दिरकी परिक्रमामें बहुत-सी देवमूर्तियाँ हैं। मन्दिरके पूर्व एक मण्डपमें गरुड़की उग्र मूर्ति है। मन्दिरके उत्तर भगवान् शंकरका मन्दिर है। इस मन्दिरमें धातुकी बनी दशावतारकी मूर्तियाँ आलमारियोंमें रखी हैं। इनकी झाँकी सुन्दर है।

कहा जाता है कि यह प्रह्लादजीकी जन्मभूमि है। यहाँ देवर्षि नारदका आश्रम था, जहाँ कयाधूके गर्भसे प्रह्लाद उत्पन्न हुए। कुछ लोग इसे प्रह्लादजीकी तपोभूमि मानते हैं।

निंबरगी

पंढरपुरसे लगभग चालीस मीलपर यह स्थान है। पंढरपुरसे यहाँतक बस जाती है। गाँवके पास नदीके किनारे एक कोट है। कोटके भीतर मन्दिर है। मन्दिरमें भगवान् रामकी मूर्ति है। उसके समीप ही शिवलिङ्ग स्थापित है। लोगोंकी धारणा है कि यह स्वयम्भू लिङ्ग है। कहा जाता है कि एक ही शिलामें श्रीरामकी मूर्ति और शिवलिङ्ग हैं। इस स्थानको हरि-हरात्मक माना जाता है। मन्दिरके आस-पास धर्मशालाएँ हैं।

कहते हैं यहाँ हनुमान्‌जीने बहुत समयतक तपस्या करके भगवद्दर्शन प्राप्त किया था। उस समय भगवान्—श्रीराम तथा शिव, इन दोनों रूपोंमें प्रकट हुए थे। इसलिये यह श्रीमारुति-क्षेत्र कहा जाता है। यहाँकि श्रीविग्रह बहुत लोगोंके कुलदेवता हैं। यहाँकी सब सेवा-पूजा मारुतिके नामसे—उन्हींकी ओरसे होती है।

मन्दिरके पास नदीमें राम-तीर्थ है। चैत्र तथा माघमें यहाँ समारोह होता है।

वार्सी

(लेखक—श्रीछोटालाल विट्ठलदास संघवी)

मध्य-रेलवेकी मीरज-लाटूर लाइनमें कुर्दूवाड़ीसे एक ओर पंढरपुर है और दूसरी ओर वार्सी। कुर्दूवाड़ी स्टेशनसे २१ मीलपर वार्सी-टाउन स्टेशन है। स्टेशनसे मन्दिर एक मील दूर है।

यहाँ भगवान् नारायणका विशाल मन्दिर है। वहाँ मन्दिरमें राजा अम्बरीषकी भी छोटी मूर्ति है। राजा अम्बरीष हाथ जोड़े खड़े हैं। भगवान्‌का एक हाथ उनके ऊपर अभयमुद्रामें है।

यहाँ उत्तरेश्वर महादेवका बड़ा मन्दिर है, जो दुर्वासा ऋषिका स्थान कहा जाता है। यह मन्दिर अष्टलिङ्गोंमें माना जाता है। यहाँके भक्तश्रेष्ठ भाऊ साहबकी समाधि यहीं है। यहाँसे पास ही मल्लिकार्जुन-मन्दिर है और नीलकण्ठ महादेवका मन्दिर है।

वार्सीमें पुष्पावती नदी थी, जो महर्षि दुर्वासाके शापसे गुप्त है। वार्सी महाराज अम्बरीषकी राजधानी है। महर्षि दुर्वासाके क्रोधसे भगवान्‌ने अम्बरीषकी रक्षा की और भगवान्‌का चक्र दुर्वासाके पीछे दौड़ा, यह कथा श्रीमद्भागवतमें प्रसिद्ध है।

कोल्हापुर

करवीर-माहात्म्य

योजनं दश हे पुत्र काराष्ट्रो देशदुर्धरः।
तन्मध्ये पञ्चक्रोशञ्च काश्याद्यादधिकं भुवि॥
क्षेत्रं वै करवीराख्यं क्षेत्रं लक्ष्मीविनिर्मितम्।
तत्क्षेत्रं हि महत्पुण्यं दर्शनात् पापनाशनम्॥
तत्क्षेत्रे ऋषयः सर्वे ब्राह्मणा वेदपारगाः।
तेषां दर्शनमात्रेण सर्वपापक्षयो भवेत्॥

(स्कन्दपुराण, सह्याद्रिखण्ड, उत्तरार्ध अ० २। २४—२७)

'काराष्ट्र देशका विस्तार दस योजन है। यह देश दुर्गम है। उसीके बीच काशी आदिसे भी अधिक पवित्र श्रीलक्ष्मीनिर्मित करवीर-क्षेत्र है। यह क्षेत्र बड़ा ही पुण्यमय तथा दर्शनमात्रसे पापोंका नाश करनेवाला है। यहाँ वेदपारगामी ब्राह्मण तथा ऋषिगण वास करते हैं, उसके दर्शनमात्रसे सारे पापोंका क्षय हो जाता है।'

कोल्हापुर

कुर्दूवाड़ीसे पंढरपुर जानेवाली लाइन मीरज स्टेशनतक जाती है। मीरजसे सांगली-मीरज-कोल्हापुर लाइनपर कोल्हापुर ३६ मील पड़ता है। कोल्हापुर पुराणप्रसिद्ध करवीर-क्षेत्र है। यहाँ महालक्ष्मीका नित्य निवास माना गया है। यहाँका महालक्ष्मी-मन्दिर ५१ शक्तिपीठोंमें है। सतीके तीनों नेत्र यहीं गिरे थे।

महालक्ष्मी—कोल्हापुर नगरमें पुराने राजमहलके पास खजाना-घर है। उसके पीछे महालक्ष्मीका विशाल मन्दिर है। इसे लोग अम्बाजीका मन्दिर भी कहते हैं। मन्दिरका घेरा बहुत बड़ा है। उस घेरेमें महालक्ष्मीजीका निज-मन्दिर है। मन्दिरका प्रधान भाग नीले पत्थरोंसे बना है। मन्दिरके पास पद्मसरोवर, काशीतीर्थ और मणिकर्णिका-तीर्थ हैं। यहाँ काशी-विश्वनाथ, जगन्नाथजी आदि देव-मन्दिर हैं। जैनलोग इसे अपनी इष्टदेवी पद्मावतीका मन्दिर बतलाते हैं।

अन्य मन्दिर—पनालाके किलेके पास जानेवाली सड़कके समीप ज्योतिबा पहाड़ी है। पहाड़ीपर बहुत-से मन्दिर हैं, जिनमें तीन शिव-मन्दिर मुख्य हैं। वहाँ पहाड़ खोदकर कुछ कोठरियाँ (गुफाएँ) भी बनायी गयी हैं।

ज्योतिबा पहाड़ीके पास पावलाकी गुफा है। यह बौद्ध गुफा है। इसमें एक चैत्य-गुफा भी है।

रानीबागके पास शंभाजी, शिवाजी (तृतीय), ताराबाई और आई-बाईके समाधि-मन्दिर हैं।

शिरोल

कोल्हापुरसे लगभग ३० मील पूर्व पञ्चगङ्गा नदीके तटपर यह गाँव है। यहाँ यात्रियोंके ठहरने आदिकी व्यवस्था है।

यहाँ 'भोजनपात्र' नामक श्रीदत्तात्रेयका मन्दिर है। यहाँ श्रीगुरुस्वामी नामके संत हुए हैं। उनके भोजन करनेका पात्र श्रीदत्तमन्दिरमें सुरक्षित है। इस पात्रके कारण इस मन्दिरका नाम ही भोजनपात्र प्रसिद्ध हो गया है।

नृसिंहवाड़ी

शिरोलसे ३ मीलपर नृसिंहवाड़ी क्षेत्र है। यहाँ (कांसारी, कुम्भी, तुलसी, भोगावती तथा सरस्वती नामक नदियोंके मिलनेसे बनी) पञ्चगङ्गा नदी कृष्णासे मिली है। इस क्षेत्रका प्राचीन नाम अमरपुर है और यहाँ अमरेश्वर महादेवका मन्दिर है, किन्तु श्रीनृसिंहसरस्वती (गुरुस्वामी महाराज) ने यहाँ तपस्या की, इससे इस स्थानका नाम नृसिंहवाड़ी हो गया। संगमके पास कृष्णाके घाटपर गुरु दत्तात्रेयका मन्दिर है। इस मन्दिरमें चरणपादुकाएँ हैं।

यह स्थान इधर बहुत प्रसिद्ध है; किन्तु वर्षामें कृष्णा और पञ्चगङ्गाके बढ़ जानेपर मन्दिरमें जल आ जाता है और यह स्थान एक द्वीप बन जाता है। वर्षामें यहाँकी यात्रा नहीं होती। प्रत्येक पूर्णिमाको यहाँ उत्सव होता है। मार्गशीर्ष-पूर्णिमा तथा माघ-पूर्णिमाको विशेष महोत्सव होता है।

येडूर

हरिहर-पूना लाइनमें मीरज स्टेशनपर ३१ मील पहले रायबाग स्टेशन है। रायबागसे येडूर जानेको सवारी मिलती है। नृसिंहवाड़ीसे लगभग ६ मील आग्नेयकोणमें येडूर नामक छोटा-सा गाँव है। यहाँ गाँवके समीप कृष्णानदीके तटपर वीरभद्रेश्वर शिव-मन्दिर है। कहा जाता है कि यहीं दक्षप्रजापतिने यज्ञ किया था। उस समय उस यज्ञकुण्डसे विरूपाक्ष नामक शिवलिङ्ग प्रकट हुआ था। वीरभद्रेश्वर-मन्दिरमें वही विरूपाक्ष स्वयम्भूलिङ्ग प्रतिष्ठित है। फाल्गुन-पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है।

औदुम्बरक्षेत्र

मीरजसे १६ मील आगे भिलवाड़ी स्टेशनसे यह स्थान ३ मील दूर है। यह स्थान कृष्णानदीके पूर्व-तटपर स्थित है। भिलवाड़ीसे कृष्णा पार करके यहाँ जाना पड़ता है। यहाँ श्रीदत्तात्रेयका मन्दिर है। यह प्राचीन दत्तक्षेत्र है। श्रीदत्तमन्दिरमें चरणपादुकाएँ हैं। और भी कई मन्दिर यहाँ हैं। यहाँ धर्मशाला है। इस क्षेत्रके पास ही नदीके दूसरे तटपर भुवनेश्वरी देवीका मन्दिर है।

शोलापुर

मध्य-रेलवेकी बंबई-रायचूर लाइनपर कुर्दूवाड़ीसे ४९ मीलपर शोलापुर स्टेशन है। शोलापुर पर्याप्त बड़ा नगर है।

यहाँ नगरमें रणछोड़रायजी, लक्ष्मीनारायणजी, सत्यनारायण तथा बालाजीके मन्दिर दर्शनीय हैं। नगरके दक्षिण, स्टेशनसे एक मीलपर पुराना किला है और उसके समीप सरोवरके मध्यमें सिद्धेश्वर-मन्दिर है।

छोटी तुलजा

शोलापुरके पास एक गाँवमें यह मन्दिर है। यहाँ एक भक्त थे, जो प्रतिदिन तुलजापुर जाकर दर्शन करते थे। वृद्ध होनेपर जब ये चलनेमें असमर्थ हो गये, तब तुलजा-भवानी स्वयं इनके यहाँ पधारीं और दर्शन देकर अपनी एक छोटी प्रतिमा दी। वह भगवतीद्वारा दी हुई प्रतिमा यहाँ प्रतिष्ठित है।

तुलजापुर

तुलजा भवानी महाराष्ट्रकी कुलस्वामिनी हैं। छत्रपति महाराज शिवाजीकी ये आराध्या हैं। कहा जाता है कि इन्होंने शिवाजी महाराजको प्रत्यक्ष दर्शन देकर खड्ग प्रदान किया था। ये 'त्वरिता' देवी हैं। त्वरिताका ही तुलजा हो गया।

तुलजापुर शोलापुर स्टेशनसे २४ मील दूर है। शोलापुरसे यहाँके लिये मोटर-बसें चलती हैं। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। लोग पंडोंके यहाँ भी ठहरते हैं। तुलजापुर पहाड़ीपर बसा है। इस पहाड़ीको यमुनाचल कहते हैं।

तुलजा-भवानीके मन्दिरका घेरा बहुत बड़ा है। यहाँ सीढ़ियोंसे नीचे उतरना पड़ता है। कुछ सीढ़ी उतरनेपर देवर्षि नारदकी मूर्तिके दर्शन होते हैं। वहाँसे नीचे कल्लोलतीर्थ नामक कुण्ड है, जिसमें एक दीवारमें बने गोमुखसे बराबर जल गिरा करता है। यात्री इसमें स्नान करके देवीके दर्शन करते हैं।

श्रीतुलजा-भवानीके मन्दिरमें एक स्वर्णजटित मण्डप है। उस मण्डपमें देवीका श्यामवर्ण श्रीविग्रह प्रतिष्ठित

है। सामने पीतलकी सिंहमूर्ति है। पास ही एक दूसरे मन्दिरमें देवीकी शय्या है। तुलजा-माताके ठीक सामने एक मन्दिर है। उसमें भवानी-शङ्करकी मूर्ति है। मन्दिरके आसपास गणेशजी, दत्तात्रेय आदिकी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरके बाहर दक्षिण टोल भैरवका मन्दिर है। उसके सामने टीलेपर कालभैरव मन्दिर है। उत्तर ओर मातंगीदेवीका मन्दिर है।

यहाँ श्रीरामवरदायिनी, श्रीराम तथा हनुमान्‌जीके मन्दिर हैं और मुद्गलतीर्थ, नृसिंहतीर्थ, नागझरीतीर्थ आदि कई कुण्ड हैं। यहाँ सोमेश्वर-शिवलिङ्ग श्रीरामद्वारा स्थापित कहा जाता है।

रामलिङ्ग

यह स्थान तुलजापुरसे २२ मील दूर है और बार्सी-टाउन स्टेशनसे भी इतना ही दूर है। यह स्थान पहाड़ियोंके बीचमें है। शिखरके पासकी समतल भूमितक मोटरका मार्ग है। वहाँसे सीढ़ीसे नीचे उतरना पड़ता है। वर्षाके अतिरिक्त यहाँ जलका कष्ट रहता है। कहा जाता है कि भगवान् श्रीरामने दण्डकारण्यमें घूमते समय यहाँ शिवलिङ्गकी स्थापना करके पूजा की थी।

यहाँका मन्दिर विस्तृत है। उसके आँगनमें ठहरनेको स्थान है। कोठरियाँ भी हैं। मन्दिरमें शिवजीकी प्राचीन लिङ्गमूर्ति है। यहाँ दूरतक जंगल और पर्वत है। पास पर्वतपर जानेका एक पगडंडी मार्ग है। पर्वतपर दो-एक कुण्ड हैं।

नीलकण्ठेश्वर

यदि वार्सीसे रामलिङ्गम् जायँ तो मार्गमें सड़कपर नागरी गाँव मिलता है। वहाँ पर्वतसे लगा नीलकण्ठेश्वर-मन्दिर है। यह मन्दिर प्राचीन है। इसमें स्वयम्भूलिङ्ग है।

अक्कलकोट

बम्बई-रायचूर लाइनपर शोलापुरसे २२ मील दूर अक्कलकोट-रोड स्टेशन है। स्टेशनसे अक्कल-कोटतक सवारियाँ जाती हैं। वहाँ ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

गाँवके उत्तर नृसिंहसरस्वती (अक्कलकोट स्वामी) नामक प्राचीन संतका मन्दिर है। मन्दिरमें उनकी चरण-पादुकाएँ हैं। यह स्थान इधर बहुत प्रख्यात है। चैत्रशुक्ला १४ को यहाँ बड़ा मेला लगता है।

गाँवके दक्षिण स्वामीजीकी समाधि है। नगरमें राजभवनके पास सिद्धविनायकका प्राचीन मन्दिर है।

बदामी

दक्षिण-रेलवेकी एक लाइन शोलापुरसे गदगतक गयी है। इसपर शोलापुरसे बदामी १४१ मील है। बदामीकी बस्ती दो पहाड़ियोंके बीचमें है। पासमें एक सरोवर है।

बदामी गाँवके पूर्वोत्तर एक किला है। उसमें प्रवेश करनेपर बायीं ओर हनुमान्‌जीका मन्दिर मिलता है। वहाँसे कुछ ऊपर जानेपर एक शिव-मन्दिर दीख पड़ता है। उससे और आगे दो-तीन मन्दिर हैं।

दक्षिणकी पहाड़ीके ऊपर एक और किला है। इसमें पश्चिम ओर चार गुफामन्दिर हैं, जिनमें तीन गुफाएँ सनातन धर्मकी और एक जैनोंकी है। इनमें पहली गुफामें १८ भुजावाली शिवमूर्ति, गणेशमूर्ति तथा गणोंकी मूर्तियाँ हैं। उसमें आगे भगवान् विष्णु, लक्ष्मीजी तथा शिव-पार्वतीकी मूर्तियाँ हैं। पिछली दीवारमें महिषासुरमर्दिनी, गणेश तथा स्कन्दकी मूर्तियाँ हैं।

दूसरी गुफामें भगवान् वामन, वाराह, गरुडारूढ़ नारायण, शेषशायी नारायणकी मूर्तियाँ तथा कुछ अन्य मूर्तियाँ हैं। तीसरी गुफा ही सबसे उत्तम एवं विस्तृत है। इसमें अर्धनारीश्वर, शिव, पार्वती, नृसिंह, नारायण, वाराह आदिकी मूर्तियाँ हैं।

जैनगुफामें जैन तीर्थङ्करोंकी मूर्तियाँ हैं।

बनशंकर

बदामीसे २ मील दूर बनशंकर गाँव है। वहाँ पार्वतीजीका मन्दिर है। मन्दिरके पास ही सरोवर है।

मलपर्वा

बदामीसे ५ मील दूर (पार्वती-मन्दिरसे ३ मील) मलपर्वा नदी है। उसके किनारे तथा वहाँ गाँवमें बहुत-से मन्दिर हैं। उनमें एक मन्दिर पापनाथ महादेवका है। यहाँ कई जैनमन्दिर भी हैं।

ऐबल्ली

बदामीसे ५ मील पूर्वोत्तर ऐबल्ली ग्रामके पास पर्वतमें गुफा-मन्दिर हैं। इनमें भी हिंदू तथा जैन-गुफाएँ हैं।

सुरोवन

शबरीजीका आश्रम वैसे तो किष्किन्धामें पम्पासरोवर ६० मीलपर है; किन्तु वहाँ जानेका मार्ग बदामीसे ही है। बदामीसे मोटर-बसद्वारा रामद्रुग (रामदुर्ग) जाना चाहिये। रामद्रुगसे मोटर-बस सुरोवनतक जाती है।

सुरोवनमें श्रीराम-मन्दिर है। उसमें श्रीराम-लक्ष्मणकी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरमें शबरीकी भी मूर्ति है।

गाणगापुर

उसी बम्बई-रायचूर लाइनपर शोलापुरसे ५३ मील आगे गाणगापुर स्टेशन है। यह दत्ततीर्थ है। यहाँ स्टेशनसे कुछ दूरीपर धर्मशाला है। गुरु दत्तात्रेयका मन्दिर ही यहाँका मुख्य मन्दिर है। यहाँ प्रत्येक पूर्णिमाको मेला लगता है।

श्रीक्षेत्र छाया-भगवती

(लेखक—श्रीसंजीवरावजी देशपांडे)

मध्य-रेलवेकी बंबई-रायचूर लाइनपर गुलबर्गा स्टेशन है। गुलबर्गासे नारायणपुर ग्रामतक पक्की सड़क है। वहाँसे २ मील दूर कृष्णवेणी नदीके किनारे यह स्थान है। शोलापुर-हुबलीके मध्य आली मिट्टी नामक स्टेशनपर उतरनेसे यह स्थान ३० मील पड़ता है। वहाँसे मोटर-बस मिलती है इस स्थानतकके लिये।

यहाँ श्रीछाया-भगवतीका मन्दिर है। यह क्षेत्र इधरके पुण्य क्षेत्रोंमें प्रसिद्ध है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

माणिक-नगर

(लेखक—श्रीकोटप्पा रा० बक्कस)

गुलबर्गा स्टेशनसे ४० मील दूर, बंबई-हैदराबाद मोटर-रोडके ऊपर ग्राम हुमनाबादसे माणिक-नगर एक मील दूर है।

यह स्थान संत माणिकजीके सम्प्रदायके अनुयायियोंका प्रधान स्थान है। यहाँ श्रीदत्तात्रेयका मन्दिर है। संत माणिक प्रभुका मन्दिर है।

मलखेड़

(लेखक—श्रीकृष्णराय निलोगल एम्० ए०)

मध्य-रेलवेकी वाड़ी-बैजवाड़ा लाइनपर वाडीसे १६ मील दूर मलखेड़रोड स्टेशन है। स्टेशनसे ३ मील मलखेड़ दुर्ग है। यहाँपर संत श्रीजयतीर्थजीकी समाधि है। यह समाधि-मन्दिर 'वृन्दावन' कहा जाता है। श्रीजयतीर्थजी श्रीमध्वाचार्यके ग्रन्थोंके सम्मान्य टीकाकार हुए हैं। यहीं श्रीजयतीर्थजीके गुरु श्रीअक्षोभ्यतीर्थजीकी भी समाधि है। माध्व सम्प्रदायका यह तीर्थस्थल है। श्रावण-कृष्णमें यहाँ यात्री आते हैं।

सगराद्रि

(लेखक—श्रीयुत सगर कृष्णाचार्य बी० ए०, बी० एड्०)

मध्य-रेलवेकी बंबई-रायचूर लाइनपर वाड़ीसे २४ मील दूर यादगिरि स्टेशन है। वहाँसे २१ मील दूर शाहपुर नगर है। स्टेशनसे शाहपुरतक मोटर-बस चलती है। शाहपुरका पुराना नाम 'सगर' है। यह महाराज सगरकी राजधानीका नगर है। शाहपुरके पास ही सगराद्रि पर्वत है। इस पर्वतपर मन्दाकिनी और सिद्धपुष्करिणी तीर्थ हैं।

मन्दाकिनी—यह सौ गज लंबा और २५ गज चौड़ा सरोवर है। इससे पश्चिम थोड़ी दूरपर पद्म-सरोवर है। दक्षिण ओर एक गुफामें श्रीरङ्गनाथकी मूर्ति है। उत्तरमें शिव-मन्दिर है।

सिद्धपुष्करिणी—मन्दाकिनीके निकट ही यह तीर्थ है। इसके समीप दो शिव-मन्दिर हैं। पूर्वमें मोनप्पाका मन्दिर और पाण्डव-शिला हैं।

सगराद्रि पर्वतपर महाराज सगरका प्राचीन दुर्ग था। बीजापुरके नरेशोंने भी इसपर किला बनाया। पूरे पर्वतपर देव-मन्दिर, सरोवर तथा समाधियाँ हैं।

पर्वतके नीचे नाग-तीर्थ है। वहाँ वीरशैव संत बसय्याकी समाधि है।

सन्नतिक्षेत्र

शाहपुरसे ९ मीलपर यह स्थान है। यहाँ श्रीसन्नति-चन्द्रका विशाल मन्दिर है। यात्रियोंके ठहरनेकी व्यवस्था देवस्थानके पास ही है।

कोप्पर

कृष्णा नदीके तटपर यह स्थान रायचूर जिलेमें है। यहाँ श्रीकोप्पर लक्ष्मी-नृसिंहका विशाल मन्दिर है। यात्रियोंके ठहरनेकी वहीं व्यवस्था है।

कृष्णा

शोलापुरसे १४४ मील आगे कृष्णा स्टेशन है। स्टेशनके पास मारवाड़ी धर्मशाला है। स्टेशनसे कृष्णा ग्राम आध मील है। ग्राममें भी धर्मशाला है। बंबईकी ओरसे आनेवाले यात्री यहाँ कृष्णा नदीमें स्नान करनेके लिये उतरते हैं।

कुरुगड्डी (कुखपुर)

(लेखक—श्री मा० परांडे)

कृते जनार्दनो देवस्त्रेतायां रघुनन्दनः।
द्वापरे रामकृष्णौ च कलौ श्रीपादवल्लभः॥

भगवान् दत्तात्रेयका अवतार 'श्रीपादवल्लभ' नामसे पीठापुरमें हुआ था। एक भक्त ब्राह्मणीने प्रभुसे उनके समान पुत्रका वरदान माँगा, यही इस अवतारका कारण है। पीठापुरसे तीर्थयात्राके लिये निकलनेपर भगवान् श्रीपादवल्लभ कुखपुरमें आये। यह स्थान अब कुरुगड्डी कहा जाता है।

कृष्णा स्टेशनसे १८ मील दूर कृष्णा नदीके बीचमें द्वीपपर यह स्थान है। यहाँ पैदल या बैलगाड़ीसे आ सकते हैं। वर्षामें यहाँकी यात्रा नहीं हो सकती।

यहाँ जिस गुफामें श्रीपादजी निवास करते थे, उसमें एक शिवलिङ्ग है। दत्ततीर्थोंमें चरणपादुकाओंकी ही पूजा होती है। केवल यहीं लिङ्गमूर्ति है। श्रीपादजी यहीं अदृश्य हुए। आश्विनकृष्णा द्वादशीको यहाँ सबसे बड़ा उत्सव होता है।

धृष्णेश्वर (घुश्मेश्वर)

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे यह एक ज्योतिर्लिङ्ग है। यह भारतकी प्रसिद्ध इलोरा-गुफाओंके समीप ही है। इलोरा नाम अंग्रेजोंका दिया हुआ है। वस्तुतः वहाँ वेरूल गाँव है और गुफाओंको भी वेरूल-गुफाएँ कहा जाता है।

मध्य-रेलवेकी काचीगुड़ा (हैदराबाद)-मनमाड लाइनपर मनमाडसे ७१ मील दूर औरंगाबाद स्टेशन है। इससे ८ मील पहले दौलताबाद स्टेशन तथा १४ मील पहले एलोरारोड स्टेशनोंसे भी धृष्णेश्वर जा सकते हैं; क्योंकि एलोरारोड स्टेशनसे धृष्णेश्वर ७ मील और दौलताबाद स्टेशनसे १२ मील दूर है; किन्तु इन स्टेशनोंसे सवारी मिलना कठिन रहता है। एलोरा और दौलताबाद भी औरंगाबादसे ही जाना सुविधाजनक है।

औरंगाबादसे धृष्णेश्वर १८ मील दूर है। औरंगाबाद मोटर-बस-सर्विसका केन्द्र है। स्टेशनके पास ही धृष्णेश्वर जानेके लिये बस मिलती है। औरंगाबाद स्टेशनके पास ही समर्थ (गुजराती) धर्मशाला है।

वेरूल गाँवके पास धृष्णेश्वरका भव्य मन्दिर है। मन्दिर एक घेरेके भीतर है। वहाँ पास ही सरोवर है। मन्दिरके घेरेमें ही यात्रियोंके ठहरनेकी भी व्यवस्था है। वैसे यात्री गाँवमें पंडोंके यहाँ भी ठहर सकते हैं।

कथा—देवगिरिके पास सुधर्मा ब्राह्मणने संतानहीन होनेके कारण दूसरा विवाह किया। उसकी दूसरी पत्नी घुश्मा प्रतिदिन १०८ पार्थिव-लिङ्गोंकी पूजा करके उन्हें सरोवरमें विसर्जित कर देती थी। भगवान्की कृपासे उसे पुत्र हुआ। ब्राह्मणकी पहली पत्नी सुदेहासे सौतका पुत्र-लाभ देखा नहीं गया। उसने बालकको मारकर सरोवरमें फेंक दिया। घुश्मा जब पूजन करके पार्थिवलिङ्ग सरोवरमें विसर्जित करके लौटने लगी, तब उसका पुत्र जीवित होकर उसके पास आ गया। भगवान् शङ्करने प्रकट होकर उसे दर्शन दिया। वरदान माँगनेको प्रेरित किये जानेपर घुश्माने भगवान्से वहाँ नित्य स्थित रहनेकी प्रार्थना की। तबसे ज्योतिर्लिङ्गरूपमें भगवान् शङ्कर वहाँ स्थित हैं। इस ज्योतिर्लिङ्गको घुश्मेश्वर या धृष्णेश्वर कहा जाता है।

इलोरा

इसका ठीक नाम वेरूल है, यह ऊपर कहा जा चुका है। घृष्णेश्वरसे ये गुफाएँ लगभग आध मील दूर हैं। औरंगाबादसे बस या किसी अन्य सवारीके द्वारा आनेपर पहले ये गुफाएँ मिलती हैं और आगे वेरूल गाँव तथा घृष्णेश्वर-मन्दिर मिलते हैं।

वेरूलकी ये गुफाएँ पर्वत काटकर बनायी गयी हैं। इनका विस्तार लगभग एक मीलतक है। संख्या १ से १३ तककी गुफाएँ बौद्ध-धर्मकी हैं। इनमेंसे एक गुफा विशाल है। उसमें महायान-सम्प्रदायकी अनेकों मूर्तियाँ बनी हैं। इनमें प्रायः सभी गुफाओंमें बुद्धकी मूर्तियाँ हैं। सं० १४ से २९ तक पौराणिक गुफाओंका समुदाय है। इनमें 'कैलास-मन्दिर' अत्यन्त प्रसिद्ध है। पूरे पर्वतको काटकर चार खण्डोंका मन्दिर, प्राङ्गण आदि बनाये गये हैं। इसमें भगवान् शङ्करकी लीला-मूर्तियाँ तथा अन्य अवतार-चरितकी मूर्तियाँ खुदी हैं। इसकी कला सर्वप्रशंसित है। रामेश्वर तथा सीता-नहानी गुफाएँ भी उत्कृष्ट कलाकी प्रतीक हैं। सं० ३० से ३४ तथा जैन-गुफा-मन्दिर हैं। इनमें इन्द्र-गुफा, छोटा कैलास तथा जगन्नाथ-सभा विशेष द्रष्टव्य हैं।

दौलताबाद

दौलताबाद स्टेशनसे दौलताबाद ४ मील दूर है। सवारी कठिनाईसे मिलती है। औरंगाबादसे घृष्णेश्वर (इलोरा) जाते समय दौलताबादका किला मार्गमें ही मिलता है। औरंगाबादसे यहाँ आना सुविधाजनक है। यह स्थान औरंगाबादसे ६ मील है। यहाँका प्राचीन किला दर्शनीय है। किलेमें पहाड़ीके ठेठ ऊपर श्रीजनार्दन स्वामीकी समाधि है। एकादशीको यहाँ मेला लगता है।

दौलताबादका पुराना नाम देवगिरि है। यह यादवराजकी राजधानी था। यादवनरेशके ही प्रधान मन्त्री हेमाद्रि थे, जिन्होंने 'चतुर्वर्गचिन्तामणि' नामक धर्मशास्त्रका विशाल एवं सर्वमान्य ग्रन्थ लिखा है।

औरंगाबाद

औरंगाबादमें पंचक्की नामक स्थानके पास पर्वतपर छोटी-छोटी ९ बौद्ध-गुफाएँ हैं। इनमेंसे दोमें मनुष्यके बराबर पुरुष एवं स्त्री-मूर्तियाँ बुद्धभगवान्का पूजन करती दिखायी गयी हैं। एक गुफामें अवलोकितेश्वरकी बड़ी मूर्ति है।

नागतीर्थ

(लेखक—श्रीमधुकर वंशीधरजी वैद्य)

औरंगाबादसे २० मील उत्तर पालग्राममें यह तीर्थ है। यहाँ भगवान् शङ्करका मन्दिर है। मन्दिरके पीछे नागतीर्थ सरोवर है। इसमें भूमिसे बराबर जल निकलता है और सरोवरसे निकलकर वह जलधारा समीपकी गिरिजा नदीमें मिल जाती है। प्रति सोमवारको यहाँ यात्री आते हैं। कार्तिक-पूर्णिमाको मेला लगता है।

अजंता

मध्य-रेलवेकी बंबई-दिल्ली लाइनपर मनमाड-भुसावलके बीच मनमाडसे १९९ मील दूर जलगाँव स्टेशन है। जलगाँवसे अजंता-गुफा ३७ मील है। जलगाँव और औरंगाबादके लगभग बीचमें अजंता-गुफा है। दोनों स्थानोंसे मोटर-बसें जाती हैं। बहुत-से यात्री औरंगाबादमें उतरकर वहींसे इलोरा तथा अजंता जाते हैं। जलगाँवसे अजंता और वहाँसे औरंगाबाद या औरंगाबादसे अजंता और वहाँसे जलगाँव मोटर-बसें सरलतासे

मिलती हैं। अजंता चारों ओरसे पर्वतोंके बीचमें है। वहाँ ठहरनेको स्थान या भोजनादि मिलनेकी व्यवस्था नहीं है। भोजन-सामग्री साथ ले जाना चाहिये।

यहाँ पर्वत अर्धचन्द्राकार है। नीचे बाघोरा नदी बहती है। पर्वतके मध्यभागमें अर्थात् शिखर तथा पादतलके बीचमें पर्वतको काटकर २९ गुफाएँ बनायी गयी हैं। इनमेंसे ९, १०, १९ और २६ संख्याकी गुफाएँ चैत्य हैं और शेष विहार हैं। अजंताकी गुफाएँ अपने भित्तिचित्रोंके लिये विश्वमें प्रसिद्ध हैं। यद्यपि वे चित्र अब धुँधले पड़ गये हैं, फिर भी उनके रंग एवं उनकी कला आश्चर्यजनक हैं। पर्वतकी भित्तिपर एक प्रकारका लेप करके ये चित्र बनाये गये हैं। यहाँ जिन गुफाओंमें अँधेरा है और चित्र अधिक हैं, उनमें बिजलीका प्रबन्ध है; किन्तु पहलेसे लिखा-पढ़ी करके अनुमति ले लेनेपर तथा विद्युत्का व्यय देनेपर शक्तिशाली बत्तियाँ जलाकर चित्रोंके देखनेकी सुविधा प्रबन्धकोंद्वारा की जाती है। अजंतामें सब बौद्ध-गुफाएँ ही हैं। यहाँ १, २, ९, १०, १२, १६, १७, १९ तथा २६ संख्याकी गुफाएँ विशेष दर्शनीय हैं।

अजंताके आस-पासके तीर्थ

(लेखक—श्रीजंगूलाल तुलसीराम गुप्त)

सिवना—यह ग्राम अजंतासे पूर्व १० मील दूर मोटर-रोडपर ही है। यहाँ ज्ञानवापी-तीर्थ तथा श्रीखोलेश्वर महादेव और शिवाबाईके मन्दिर हैं।

कहा जाता है कि शिवा नामक एक गोपनारी परम शिवभक्ता थी। वह खोलेश्वर महादेवकी आराधना करती थी। उसे उमा-महेश्वरने प्रत्यक्ष दर्शन दिया। उस गोपनारीने वरदानरूपमें पार्वतीजीको ही पुत्रीरूपमें चाहा। कालान्तरमें उसे एक कन्या हुई। यह साक्षात् पार्वती थी। इस कन्याने पाँचवें वर्ष माताको बताया कि वह प्रकटरूपमें न रहकर अप्रत्यक्ष उनके साथ रहेगी और खोलेश्वर महादेवके पास प्रतिमारूपमें स्थित रहेगी। इतना कहकर वह अन्तर्हित हो गयी। शिवाबाईके रूपमें उसीकी मूर्ति है।

दहिगाँव—सिवनासे ४ मील पूर्व यह गाँव है। यहाँ श्रीहनुमान्जीका प्रसिद्ध मन्दिर है। पास ही भैरवजीका मन्दिर है। यहाँ सर्पदंशसे पीड़ित व्यक्तिको ले आनेपर उसका विष दूर हो जाता है।

पिंपलगाँव—सिवनासे १० मील पूर्व। यहाँ परशुरामजीकी माता रेणुकादेवीका मन्दिर है। चैत्र-पूर्णिमाको मेला लगता है।

सुरंगली—सिवनासे १० मील दक्षिण। यहाँ काशीतीर्थ है। एक तपस्वी ब्राह्मणने यहाँ तपस्या करके भगवान् शङ्करको प्रसन्न किया और काशीक्षेत्रको प्रकट करनेका वरदान माँगा। यहाँ एक वापीमें काशीमें बहनेवाली गङ्गाकी धारा प्रकट हुई।

अनवा—सिवनासे ६ मील दक्षिण। यह संत-तीर्थ है। आजुबाई नामक संत नारी यहाँ हुई हैं। कहा जाता है कि एक भक्त ब्राह्मणने तपस्या करके तुलजा भवानीको प्रसन्न किया और वरदान माँगनेको प्रेरित किये जानेपर उन्हींको पुत्रीरूपमें माँगा। उस ब्राह्मणकी पुत्रीरूपमें आजुबाई नामसे तुलजा भवानी ही प्रकट हुईं। यहाँ देवीका मन्दिर है। पासमें कल्लोलतीर्थ है। ग्राममें एक प्राचीन शिवमन्दिर है।

कोदा—सिवनासे ४ मील दक्षिण। यहाँ कोदेश्वरका विशाल मन्दिर है। यहाँ शङ्करजीकी आराधना विद्याप्राप्तिके लिये की जाती है। यहाँ दो छोटी नदियोंका संगम है।

सायहरि—सिवनासे वायव्यकोणमें दो मीलपर यह गाँव था। अब वहाँ बस्ती नहीं है। वहाँ सर्वेश्वर-मन्दिर है और उसके पास गोमुखकुण्ड है, जिससे बराबर जल गिरता रहता है। यहीं माधवानन्द महाराजकी समाधि भी है।

आमसरी—सिवनासे दो मील उत्तर। इस गाँवमें अमृतेश्वर-मन्दिर है। यहाँ नदीका प्रपात है। प्रपातमें स्नान करके यात्री अमृतेश्वर महादेवका दर्शन करते हैं।

नाटवी—यह गाँव सिवनासे ईशानकोणमें दो मीलपर है। यहाँ अर्धनारीश्वरका विशाल मन्दिर है। मन्दिरके सामने एक छोटी नदी है।

जाइकादेव—सिवनासे पूर्व यह स्थान पर्वतोंमें है। यह दत्तात्रेयका मन्दिर है। यह मानभाऊ लोगोंका मन्दिर है। यहाँ आस-पास इस मन्दिरकी बड़ी प्रतिष्ठा है।

पैठण—औरंगाबादसे पैठण ३२ मील है। मोटर-बसें बराबर जाती हैं। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। चैत्र-कृष्णा ६-७ को यहाँ मेला लगता है।

पैठण शालिवाहनकी राजधानी था। प्राचीन खँडहरोंके चिह्न यहाँ अब भी हैं। यह नगर महाराष्ट्रका प्राचीन विद्याकेन्द्र था।

पैठणमें संत एकनाथजीका घर अब भी विद्यमान है। एकनाथजीके आराध्य भगवान् तो हैं ही, वह जल भरनेका कुण्ड तथा वह चन्दनकी चौकी भी सुरक्षित है, जिसमें श्रीखंड्याके नामसे वेश बदलकर एकनाथजीके घर सेवक बनकर रहते समय भगवान् जल भरते थे या चन्दन घिसते थे। श्रीएकनाथजीकी समाधि पैठण ग्रामसे बाहर गोदावरी-तटपर है। गोदावरी-तटके नागघाटपर संत ज्ञानेश्वरजीने भैंसेके मुखसे वेदमन्त्रोंका उच्चारण कराया था। वहाँ भैंसेकी मूर्ति है। प्रसिद्ध संत श्रीकृष्णदयार्णवजीका घर भी यहाँ है। उनके आराध्यकी मूर्ति दर्शनीय है। उनकी समाधि भी यहीं है।

पैठणमें दो शिवमन्दिर प्राचीन तथा मान्य हैं। एक गोदावरीके मध्यमें सिद्धेश्वर-मन्दिर है, जो ब्रह्माजीद्वारा प्रतिष्ठित है। दूसरा ढोलेश्वर-मन्दिर है। कहा जाता है ढोलेश्वर मूर्तिमें जंजीर बाँधकर औरंगजेबने उसे तोड़नेका विफल प्रयत्न किया था। मूर्तिमें जंजीर बाँधनेके चिह्न हैं।

योगेश्वरी

(लेखक—श्रीमाधवराव वडवे पंढरपुरकर)

पैठणसे यह स्थान ३ मील है। यहींसे पैठणकी पञ्चक्रोशी परिक्रमा प्रारम्भ होती है। यहाँ गोदावरीमें बेलगङ्गा और वर्धा नदियाँ मिलती हैं, इस कारण इसे त्रिवेणी कहते हैं। त्रिवेणी-संगमपर योगेश्वरी देवीका मन्दिर है। यहींपर वृद्धेश्वर महादेवका भी मन्दिर है। समीपमें श्रीराम तथा हनुमान्‌जीके मन्दिर हैं। दो संतोंकी समाधियाँ हैं। यहाँ धर्मशाला भी है।

राजूर

(लेखक—श्रीशिवनाथजी झँवर)

मनमाडसे हैदराबाद जानेवाली लाइनपर जालना स्टेशन है। वहाँसे राजूर बस जाती है। राजूरमें एक टेकरीपर गणेशजीका मन्दिर है। लगभग सौ सीढ़ी चढ़ना पड़ता है। गणपतिपीठोंमेंसे यह एक पीठ है। यह नाभि-पीठ माना जाता है। प्रत्येक कृष्णपक्षकी चतुर्थीको मेला लगता है।

नलिनी खुर्द

जालना स्टेशनसे मोटर-बसद्वारा केदारखेड़ा जाकर फिर ५ मील पूर्व पैदल या बैलगाड़ीसे जाना पड़ता है। यहाँ संत कालूरामजीका स्थान है। देवोत्थानी एकादशीको बड़ा मेला लगता है।

मुद्गलतीर्थ

(लेखक—श्रीभगवंत श्रीपतराव मानवलकर)

काचीगुडा-मनमाड लाइनपर परभनीसे १७ मील दूर मानवत-रोड स्टेशन है। वहाँसे २० मीलपर यह तीर्थ है। यहाँ गोदावरी नदीके मध्यमें मुद्गलऋषिका मन्दिर है। कहा जाता है कि महर्षि मुद्गलने यहाँ तपस्या की थी। इस स्थानपर गोदावरी पूर्ववाहिनी हैं। नदीमें ही एक गणपति-मन्दिर भी है। पासमें ओंकारेश्वर-मन्दिर है। यहाँ गोदावरीमें पुत्रतीर्थ, मुद्गलतीर्थ, तारातीर्थ, गणेशतीर्थ आदि अष्टतीर्थ हैं।

अवढ़ा नागनाथ (नागेश)

(लेखक—श्रीदेवीदास केशवराव कुलकर्णी)

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें नागेश-लिङ्ग यही है। बहुत-से विद्वान् सौराष्ट्रमें द्वारिका (गोपीतालाब) के समीप स्थित नागनाथ-मन्दिरको नागेश-ज्योतिर्लिङ्ग मानते हैं; किंतु नागेशलिङ्गका 'दारुकावन' में होना वर्णित है। दारुकावन यही है। द्वारिकाके आसपास तो किसी वनके कभी होनेका वर्णन नहीं मिलता।

काचीगुडा-मनमाड लाइनपर औरंगाबादसे ११० मील दूर परभनी स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन पुरली-बैजनाथतक जाती है। इस लाइनपर परभनीसे १४ मील दूर धौंडी स्टेशन है। वहाँसे अवढ़ा नागनाथ १२ मील हैं। स्टेशनसे वहाँतक बस जाती है। यहाँ धर्मशाला है।

नागनाथ-मन्दिर विशाल है। मन्दिरमें ४ सीढ़ी नीचे उतरनेपर एक हाथ ऊँचे शिवलिङ्गके दर्शन होते हैं। सीढ़ियोंपरसे ही दर्शन करना पड़ता है। मन्दिरके पास ही एक कुण्ड है और धर्मशाला है। यहाँ नन्दी-मूर्ति मन्दिरके सामने न होकर मन्दिरके पीछे है।

यहाँ नीलकण्ठ-भण्डारेश्वर तथा पाण्डवोंके भी मन्दिर हैं। जोशीगलीमें वासुकितीर्थ नामक वापी है। इस क्षेत्रमें ६८ तीर्थ थे, जिनमेंसे बहुत-से लुप्त हो गये हैं। प्राप्त तीर्थ ये हैं—नागतीर्थ, ऋणमोचन-तीर्थ, हरिहर-तीर्थ (इसमें अष्टतीर्थ हैं, सूर्यतीर्थ, गयातीर्थ, जलाशय-तीर्थ, रामतीर्थ, वसिष्ठतीर्थ, वरुणतीर्थ, गणेशतीर्थ, अमृततीर्थ, विष्णुतीर्थ, नृसिंहतीर्थ, गरुड़तीर्थ, अमृत-संजीवनतीर्थ, लक्ष्मीतीर्थ, मार्कण्डेय-तीर्थ, हनुमान्-तीर्थ, कृत्तिकातीर्थ आदि।

यहाँ दत्तात्रेय-मन्दिर, नीलकण्ठ-मन्दिर और दुग्धा नदी है। यहाँ सब तीर्थ एवं मन्दिर एक मीलके भीतर ही हैं।

यहाँसे पास जंगलमें कनकेश्वरी-खाण्डेश्वरी तथा पद्मावती देवीके मन्दिर हैं। नगरमें बलेश्वर-मूर्ति है। ये दारुकावनके रक्षक हैं। इनका दर्शन किये बिना यात्रा पूर्ण नहीं होती।

कहा जाता है नागेश्वर-ज्योतिर्लिङ्ग सरोवरमें था। पाण्डव यहाँ पधारे, तब उसका पता लगा; किन्तु मूर्ति इतनी तेजोमयी थी कि उसका तेज मनुष्यके लिये असह्य था। इसलिये युधिष्ठिरने मूर्तिके ऊपर गण्डकी नदीकी वालुकाकी पिण्डी स्थापित की और शिलाका पीठ बैठाया। तभीसे मूर्तिका वह रूप है, जो इस समय उपलब्ध है।

दारुका नामकी एक राक्षसीने तपस्या करके पार्वतीजीसे वरदान पाया था कि वह अपने निवास-स्थलको साथ ले जा सकेगी। वह राक्षसी इस प्रकार अपने स्थलको चाहे जहाँ उतारकर जनपदोंको नाश करने लगी। एक बार उसने एक वैश्यको पकड़कर बंद कर दिया। वह वैश्य शिव-भक्त था। वह कारागारमें भी मानसिक शिवार्चन करता था। राक्षसी जब उसे मारनेको उद्यत हुई, तब भगवान् शङ्करने प्रकट होकर उसका नाश कर दिया। भक्त-वैश्यकी प्रार्थनापर शङ्कर भगवान् वहाँ ज्योतिर्लिङ्गके रूपमें स्थित हुए।

पुरली-बैजनाथ—परभनीसे पुरली-बैजनाथ स्टेशन ४० मील है। स्टेशनसे लगभग आध मील दूर पर्वतके नीचे बैजनाथ-मन्दिर है। इधरके लोग इसीको वैद्यनाथ-ज्योतिर्लिङ्ग मानते हैं। पुरली-बैजनाथ अच्छा बाजार है। यहाँ मन्दिरके पास धर्मशाला है।

श्रीबैजनाथ-मन्दिर विशाल है। मन्दिरके एक ओर तो परली बाजार है और दूसरी ओर सरोवर है तथा एक नदी है। बाजारमें कई और मन्दिर भी हैं।

नान्देर—काचीगुडा-मनमाड लाइनपर ही परभनीसे ३३ मील दूर नान्देर स्टेशन है। यह सिखतीर्थ है। गुरु गोविन्दसिंहका शरीर यहीं छूटा था। स्टेशनसे नान्देर-बाजार २ मील है। गोदावरी नदीका यह नाभिस्थान माना जाता है।

गोदावरी नदीमें नगीनाघाट है। कहा जाता है कि गुरु गोविन्दसिंहको वहाँ उनके शिष्योंने नगीना (रत्न) भेंट किया था। वहाँसे गुरु गोविन्दसिंहजीने निशाना लेकर बाण चलाया था। वह बाण जहाँ गिरा, वहीं इस समय गुरुद्वारा है। यहाँका गुरुद्वारा संगमरमरका बना भव्य है। मन्दिरका शिखर स्वर्गमण्डित है।

गुरुद्वारेमें गुरु गोविन्दसिंहका सिंहासन (समाधि) है। उसपर गुरुका रत्नजटित मुकुट स्थापित है। सिंहासनसे नीचे गुरुका चित्र है। सिंहासनको रात्रिमें एक बजे स्नान कराया जाता है। यहाँ गुरुकी तलवार तथा अन्य शस्त्र सुरक्षित हैं।

झरनी-नृसिंह

(लेखक—श्रीगुण्डेरावजी)

मध्य-रेलवेकी पुरली-बैजनाथसे बिकाराबाद जानेवाली लाइनपर मोहम्मदाबाद बीद स्टेशन है। वहाँसे १ मील दूर झरनी-नृसिंहतीर्थ है। यह स्थान एक पर्वतीय गुफामें है। गुफा सर्पाकार मोड़ोंसे भरी है। उसमें अन्धकार है और कमरसे ऊपरतक जल भरा रहता है। गुफामें एक फलांग भीतर प्रकाश लेकर जाना पड़ता है। वहाँ भगवान् नृसिंह विराजमान हैं। यहाँ गुफाके बाहर धर्मशालाएँ हैं।

नानक-झरना—झरनी-नृसिंहसे दो मीलपर है। यहाँ गुरुद्वारा है। झरनेसे कुछ दूरीपर पापनाशन शिव-मन्दिर है। यहाँ स्नानादिके लिये एक कुण्ड है।

केतकी-संगम

(लेखक—श्रीभीमराम शिवराम नाइक)

बिकाराबादसे पुरली-बैजनाथ जानेवाली लाइनमें जहीराबाद स्टेशन है। वहाँसे यह क्षेत्र ८ मील है। पक्की सड़क है। मोटर-बस चलती है।

यहाँका मुख्य मन्दिर संगमनाथजीका है। मन्दिरमें लिङ्गमूर्ति तथा पार्वतीजीकी मूर्ति है। मन्दिरके पश्चिम अमृतकुण्ड सरोवर है। सरोवरमें नैर्ऋत्यकोणसे जलधारा आती है। सरोवरकी आठ दिशाओंमें इन्द्र, नारायण, धर्म, दत्त, वरुण, सप्तर्षि, सोम और रुद्रके नामोंसे जुड़े आठ तीर्थ हैं। मन्दिरके पास ब्रह्मा नामकी नदी है।

कहा जाता है सृष्टिके प्रारम्भमें ब्रह्माजीने यहाँ तपस्या करके भगवान् शङ्करका दर्शन पाया था। संगमेश्वर (संगमनाथ) लिङ्ग ब्रह्माजीद्वारा स्थापित है। यहाँ शङ्करजीपर केतकी-पुष्प चढ़ते हैं, जो अन्यत्र वर्जित हैं।

मन्दिरकी पौरीमें काशिराजकी समाधि है। मन्दिरके पास पाण्डुरङ्गका भी मन्दिर है। यहाँ धर्मशाला है। महाशिवरात्रिपर मेला लगता है।

अनन्तगिरि

(लेखक—श्रीसद्‌गुरुप्रसादजी)

मध्य-रेलवेकी वाड़ी-बैजवाड़ा लाइनपर वाड़ीसे ७० मीलपर बिकाराबाद स्टेशन है। वहाँसे ५ मीलपर अनन्तगिरि पर्वत है। यह पर्वत मार्कण्डेय-ऋषिकी तपोभूमि है। पर्वतपर भगवान् अनन्तका प्राचीन मन्दिर है। इस मन्दिरके समीप पर्वतकी गुफामें मार्कण्डेयजीकी मूर्ति है। पहाड़के नीचे दो कुण्ड हैं। कुण्डोंके समीप छोटे-छोटे शिव-मन्दिर हैं। कहा जाता है आषाढ़-शुक्ला १२ को इन कुण्डोंमें गङ्गाजी आती हैं। पहाड़के नीचे धर्मशाला है। पहाड़में भी बहुत-से कमरे खुदे हैं। यहाँके मन्दिरकी मूर्ति केवल आषाढ़-शुक्ला १२ को मन्दिरमें लायी जाती है। वर्षके शेष समय मूर्ति पासके ग्राम आलमपल्लीमें रहती है।

मध्यभारत-राजस्थानके कुछ जैनतीर्थ

माँगी-तुंगी—मध्य-रेलवेकी बंबईसे दिल्ली जानेवाली मुख्य लाइनपर मनमाड़ स्टेशन पड़ता है। वहाँसे माँगी-तुंगी जानेके लिये ६० मील मोटर-बसद्वारा जाना पड़ता है। यह सिद्धक्षेत्र है। यहाँसे ९९ करोड़ मुनिजन मोक्ष गये हैं। यहाँ नीचे ठहरनेके लिये धर्मशालाएँ हैं।

यह स्थान पर्वत एवं वनका है। पहाड़की तलहटीमें दो प्राचीन मन्दिर हैं। माँगी पर्वतकी चढ़ाई तीन मीलकी है। पर्वतपर चार मन्दिर हैं, उनमें मूल नायक भद्रबाहु स्वामीकी प्रतिमा है। अन्य प्रतिमाएँ भट्टारकोंकी हैं।

यहाँसे दो मील दूर तुंगीपर्वत है। चढ़ाई कठिन है।

यहाँ तीन मन्दिर हैं। मूल नामक श्रीचन्द्रप्रभु स्वामीकी प्रतिमा इनमें प्रमुख है। मार्गमें उतरते समय 'अद्भुत' जी स्थान मिलता है। वहाँ भी अनेक उत्तम मूर्तियाँ हैं।

गजपंथा—माँगी-तुंगीसे यहाँतक बस चलती है। यह स्थान नासिकरोड स्टेशनसे ९ मीलपर मसरूल ग्रामके पास पर्वतपर है। यह सिद्धक्षेत्र है। यहाँसे नौ करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं। माघ-शुक्ला १३ से तीन दिनतक मेला रहता है। पर्वतसे नीचे धर्मशाला तथा जैनमन्दिर हैं।

धर्मशालासे १॥ मील दूर गजपथ पर्वत है। नीचे बंजीबाबाका मन्दिर और भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्तिकी समाधि है। यहींसे ऊपर जानेका मार्ग है। पहले दो नये मन्दिर मिलते हैं। इनके पास दो प्राचीन गुफा-मन्दिर हैं।

कापरडा

(लेखक—श्रीमानचंद भंडारी जैन)

जोधपुरसे बिलाड़ा जानेवाली मोटर-बस लाइनपर यह स्थान पड़ता है। यहाँ चौमुखा, चौमंजिला विशाल श्वेताम्बर जैन-मन्दिर है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। चैत्रशुक्ला पञ्चमीको मेला लगता है। तीर्थके अधिष्ठातृ-देवता भैरवजीकी इधर बहुत मान्यता है।

गाँगाणी—कापरडासे २० मील दूर गाँगाणी-जैन-तीर्थ है। यहाँ प्राचीन जैन-मन्दिर है। जोधपुरसे नागौर जानेवाली बस गाँगाणीसे ४ मील दूर दहीकड़ा गाँवके पास रुकती है।

नाकोडा पार्श्वनाथ

(लेखक—जैनाचार्य श्रीभव्यानन्दविजयजी व्याकरण-साहित्यरत्न)

राजस्थानमें लूनी-पुनाकाव लाइनपर बालोतरा स्टेशन है। वहाँसे ६ मीलपर पहाड़ोंमें यह स्थान है। ग्यारहवीं शताब्दीमें नाकोडा नामक छोटे-से गाँवमें भूमि खोदते समय श्रीपार्श्वनाथकी मनोहर प्रतिमा मिली थी और उसे मन्दिर बनवाकर स्थापित किया गया था। अब यहाँ एक विशाल घेरेमें तीन भव्य जैन-मन्दिर हैं और चार भूमिगृह हैं। पास ही एक सुन्दर शिव-मन्दिर है। इस तीर्थके अधिष्ठातृ-देवता भैरवजी हैं। उनकी पूजा करने सभी भेद-भाव छोड़कर आते हैं।

बालोतरा स्टेशनपर जैन-धर्मशाला है और तीर्थ-स्थानमें भी है। बालोतरासे नाकोडातक सड़क है। सवारियाँ आती हैं। पौषकृष्णा नवमीसे एकादशीतक मेला लगता है।

लोद्रवाजी

राजस्थानमें सबसे अधिक रेतीला प्रदेश जैसलमेरका है। जैसलमेरकी पुरानी राजधानी लोद्रवा है। यह जैसलमेरसे दस मील दूर पाकिस्तानकी सीमापर है। इस स्थानमें सात जैन-मन्दिर हैं। ये सातों ही तिनमंजिले हैं। यहाँ मुख्य मन्दिर सहस्त्रफणपार्श्वनाथका है। यह मूर्ति अत्यन्त भव्य एवं कलापूर्ण है।

राणकपुर

अहमदाबाद-दिल्ली लाइनमें फालनासे ९ मीलपर रानी स्टेशन है। इसके आस-पास कई जैन-तीर्थ हैं। रानी स्टेशनसे ही राणकपुर जाते हैं। यहाँके जैन-मन्दिरको 'त्रैलोक्य-दीपक' मन्दिर कहते हैं। यह विशाल मन्दिर चार मंजिलका है और इसकी कलाकृति अनुपम है। इस मन्दिरमें मुख्य मूर्ति श्रीआदिनाथजीकी है। मुख्यमन्दिरके चारों ओर द्वार हैं और प्रत्येक द्वारके सम्मुख बगलमें एक बड़ा मन्दिर है। इस प्रकार

मन्दिरोंका एक समुदाय ही यहाँ है। बारह मन्दिर तथा ८६ देवकुलिकाएँ (मठियाँ) हैं। इनकी निर्माणकला देखने दूर-दूरके यात्री आते हैं। यहाँ धर्मशाला है।

बरकाणा—यहाँ पार्श्वनाथजीका प्राचीन एवं विशाल मन्दिर है। धर्मशाला मन्दिरके पास ही है।

माडोल—बरकाणासे लगभग तीन मीलपर इस ग्राममें पद्मप्रभुजीका भव्य मन्दिर है।

नाडलाई—यहाँ गाँवमें ९ जैन-मन्दिर हैं और गाँवके पास दो पर्वत-शिखरोंपर दो मन्दिर हैं। ये मन्दिर प्राचीन हैं।

घाणेराव—यहाँ दस जैन-मन्दिर हैं। इस स्थानसे डेढ़ मीलपर 'मछाला महावीर' नामक श्रेष्ठ मन्दिर है।

केशरियानाथ

राजस्थानमें उदयपुरसे ४० मीलपर धुलेव गाँव अतिशयक्षेत्र है। नदीके पास कोटके भीतर प्राचीन मन्दिर है और धर्मशालाएँ बनी हैं। यहाँ आदिनाथ (ऋषभदेवजी) का मन्दिर है। यहाँ केशर बहुत अधिक चढ़ायी जाती है, इसीसे विग्रहका नाम केशरियानाथ पड़ गया है। मन्दिरके सामने फाटकपर गजारूढ़ महाराज नाभि और मेरुदेवीकी मूर्तियाँ बनी हैं। कहा जाता है कि स्वप्नादेश पाकर धूलिया नामक भीलने गर्भसे आदिनाथकी प्रतिमा निकाली।

बीजोल्या-पार्श्वनाथ

बीजौल्या ग्रामके पास यह अतिशयक्षेत्र है। यहाँ श्रीपार्श्वनाथजीके ५ मन्दिर हैं। यहाँके कुण्डोंमें स्नान करने दूर-दूरसे यात्री आते थे।

सिद्धवरकूट

पश्चिम-रेलवेकी अजमेर-खंडवा लाइनपर खंडवासे ३४ मील पहले सनावद स्टेशन है। वहाँसे ६ मील दूर यह सिद्धक्षेत्र है। यहाँसे दो चक्रवर्ती और साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं।

यहाँ एक कोटके भीतर आठ मन्दिर और चार धर्मशालाएँ हैं। एक जैन-मन्दिर जंगलमें भी है। यह स्थान नर्मदाके समीप है।

बड़वानी (बावनगजा)

उसी रेलवेपर इंदौरसे १८ मील पूर्व अजनोद स्टेशन है। वहाँसे यह स्थान १२ मील है। इस स्थानका नाम सिद्धनगर भी है। यह सिद्धक्षेत्र है। यहाँसे साढ़े पाँच करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं।

बड़वानीसे दक्षिण चूलगिरि है। पर्वतके नीचे दो जैन-मन्दिर और दो जैन-धर्मशालाएँ हैं। एक मन्दिरमें बावनगजाजी (आदिनाथजी) की पहाड़में खोदी ८४ फुट ऊँची मूर्ति है। लोक इसे कुम्भकर्णकी मूर्ति कहते हैं। पासमें इन्द्रजीतकी नौगजी मूर्ति है। पर्वतपर २२ जैन-मन्दिर और एक चैत्यालय है।

मकसी-पार्श्वनाथ

मध्य-रेलवेकी भोपाल-उज्जैन लाइनपर भोपालसे ८९ मील दूर मकसी स्टेशन है। वहाँसे एक मील दूर कल्याणपुर ग्राममें दो जैन-मन्दिर और धर्मशालाएँ हैं। यह अतिशयक्षेत्र है। मन्दिरके आस-पास ५२ छोटे मन्दिर हैं।

अन्तरिक्ष-पार्श्वनाथ

मध्य-रेलवेकी भुसावल-नागपुर लाइनपर अकोला स्टेशनसे १९ मील दूर शिरपुर ग्रामके पास यह अतिशयक्षेत्र है। शिरपुरमें दो जैन-मन्दिर हैं। इनमें एक प्राचीन है। उसके भूगर्भमें २६ जैन-मूर्तियाँ हैं। यहाँ पार्श्वनाथकी ढाई हाथ ऊँची प्रतिमा जमीनसे एक अंगुल ऊपर अधरमें स्थित है।

मुक्तागिरि

मध्य-रेलवेकी एक लाइन मुर्तिजापुरसे एलिचपुर जाती है। वहाँसे मुक्तागिरि ९ मील दूर है। यह सिद्धक्षेत्र है। यहाँसे साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं।

पर्वतकी तलहटीमें एक जैन-धर्मशाला और एक जैन-मन्दिर है। पर्वतपर दो फर्लांगकी चढ़ाई है। सीढ़ियाँ बनी हैं। पर्वतपर २८ मन्दिर हैं। शान्तिनाथजीके मन्दिरके समीप एक जलप्रपात है।

द्रोणगिरि

मध्य-रेलवेकी बीना-कटनी लाइनपर सागर स्टेशन है। सागरसे द्रोणगिरि जाया जाता है। यह सिद्धक्षेत्र है। सेंदप्पा ग्रामके पास द्रोणगिरि है। यहाँसे गुरुदत्तादि मुनि मोक्ष गये हैं। सेंदप्पामें एक जैन-मन्दिर है और द्रोणगिरिपर २४ जैन-मन्दिर हैं। पर्वतके पास एक गुफा है, जिसे निर्वाण-स्थान बताया जाता है।

नैनागिरि

सागर स्टेशनसे यह स्थान ३० मील है। यह सिद्धक्षेत्र है। यहाँसे वरदत्तादि पाँच मुनि मोक्ष गये हैं। नैनागिरि गाँवके पास ही पर्वत है। पर्वतके शिखरपर २५ जैन-मन्दिर और नीचे ६ मन्दिर हैं।

देवगढ़

मध्य-रेलवेकी बंबई-दिल्ली लाइनपर बीनासे २९ मील दूर जाखलौन स्टेशन है। वहाँसे आठ मील दूर देवगढ़ अतिशयक्षेत्र है। ग्राममें नदी-किनारे धर्मशाला है। वहाँसे पर्वत एक मील है। पर्वतपर एक विशाल कोटके भीतर पैंतालीस मन्दिर हैं। यह स्थान उत्तरीय जैन-बदरी कहा जाता है। सिद्धगुफा नामकी एक गुफा यहाँ है।

चाँदपुर

जाखलौनसे ५ मीलपर यह स्थान है। यहाँके जैन-मन्दिरमें श्रीशान्तिनाथ स्वामीकी प्रतिमा है।

चँदेरी

जाखलौनसे १० मील आगे ललितपुर स्टेशन है। वहाँसे मोटर-बसके रास्ते २० मील दूर चँदेरी है। यहाँ तीन कलापूर्ण मन्दिर हैं। एक मन्दिरमें २४ तीर्थंकरोंकी मूर्तियाँ हैं। यहाँकी मूर्तियाँ तीर्थंकरोंके शरीरके रंगकी हैं।

बूढ़ी चँदेरी

चँदेरीसे ९ मील दूर बूढ़ी चँदेरी है। यहाँ जैन-धर्मशाला है। यहाँ आस-पास प्राचीन जैन-मन्दिरोंके भग्नावशेष हैं। जहाँ अत्यन्त कलापूर्ण मूर्तियाँ पायी गयी हैं। यहाँके मन्दिरोंकी छत प्रायः एक ही पत्थरकी है। कई मन्दिरोंका जीर्णोद्धार हुआ है। एक मूर्ति-संग्रहालय भी है।

खंदार

चँदेरीसे एक मील दूर खंदार पहाड़ी है। यहाँ गुफामन्दिर हैं, जिनमें कलाकी दृष्टिसे श्रेष्ठ मूर्तियाँ हैं।

गुरीलागिरि

यह स्थान चँदेरीसे ८ मील पूर्वोत्तर है। यहाँ भी प्राचीन जैन-मन्दिरोंके भग्नावशेष हैं। २४ तीर्थंकरोंकी मूर्तियाँ एक ही स्थानपर हैं, किन्तु वे खण्डित हैं।

थूवोनजी

चँदेरीसे यह स्थान ९ मील दूर है। यहाँ २५ जैन-मन्दिर हैं। एक मन्दिरमें आदिनाथकी २५ फुट ऊँची मूर्ति है।

थोबनजी

चँदेरीसे १२ मील दूर। यहाँ १६ जैन-मन्दिर हैं।

पपौरा

टीकमगढ़से यह स्थान तीन मील है। वहाँ ८० जैनमन्दिर हैं। एक मन्दिरमें सात गज ऊँची प्रतिमा है। सबसे प्राचीन मन्दिरमें भूगर्भस्थित मूर्तियाँ हैं।

अहार

टीकमगढ़से १२ मील पूर्व अहार अतिशय-क्षेत्र है। यहाँ चार जैन-मन्दिर हैं। मुख्य मन्दिरमें शान्तिनाथजीकी १८ फुट ऊँची मूर्ति है। यहाँ ११ फुट ऊँची प्रतिमा श्रीकुन्थुनाथजीकी भी है।

कुण्डलपुर

मध्य-रेलवेकी बीना-कटनी लाइनपर दमोह स्टेशन है। वहाँसे २० मील दूर ईशानकोणमें कुण्डलपुर अतिशयक्षेत्र है। यहाँ पर्वतपर और नीचे कुल ५९ जैन-मन्दिर हैं। इनमें मुख्य मन्दिर महावीर-स्वामीका है। महावीर-स्वामीका समवशरण यहाँ आया था।

भोपावर

धार नगरसे यह स्थान २४ मील है। कहा जाता है कि श्रीरुक्मिणीजीके बड़े भाई रुक्मीद्वारा बसाया यही भोजकट नगर है। इस नगरके पास ही 'अमका-झमका' देवीका मन्दिर है। लोग कहते हैं इन्हीं देवीके दर्शन करके निकलनेपर रुक्मिणीजीका श्रीकृष्णचन्द्रने हरण किया था।

यहाँके विशाल जैन-मन्दिरमें श्रीशान्तिनाथजीकी १२ फुट ऊँची मूर्ति प्रतिष्ठित है। मन्दिरमें और भी कई तीर्थंकरों एवं गणधरोंकी मूर्तियाँ हैं।

सोनागिरि

झाँसीसे २३ मील दूर सोनागिरि स्टेशन है। स्टेशनसे ३ मील दूर सोनागिरि पर्वत है। यह सिद्धक्षेत्र है। यहाँ नंग-अनंग कुमार साढ़े पाँच करोड़ मुनियोंके साथ मोक्ष गये हैं।

यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं। पर्वतके नीचे १६ मन्दिर और पर्वतपर ६० मन्दिर हैं। पर्वतपर चन्द्रप्रभु स्वामीका मन्दिर सबसे बड़ा और प्राचीन है। यहाँ मन्दिरोंपर नंबर पड़े हैं, जिससे क्रमवार दर्शन-वन्दना की जाय।

श्रीमहावीरजी

सवाई माधोपुरसे ६१ मीलपर श्रीमहावीरजी स्टेशन है। वहाँसे अतिशय-क्षेत्र महावीरजी ४ मील दूर है। यहाँ विशाल जैन-मन्दिरमें महावीरस्वामीजीकी पद्मासन-स्थित प्रतिमा है। यह प्रतिमा एक ग्वालेको नदीकिनारे भूमिमें मिली थी। उत्तर-भारतमें इस क्षेत्रकी बहुत मान्यता है।

चमत्कारजी

पश्चिम-रेलवेकी बंबईसे दिल्ली जानेवाली मुख्य लाइनपर कोटासे ६७ मील दूर सवाई माधोपुर स्टेशन है। सवाई माधोपुरमें तीन जैन-मन्दिर और एक चैत्यालय है। वहाँसे १२ मील दूर रणथम्भौरके प्रसिद्ध किलेमें एक जैन-मन्दिर है।

सवाई माधोपुरसे दो मील दूर अतिशयक्षेत्र चमत्कारजी है। यहाँ विशाल मन्दिर है। यहाँ एक स्फटिककी प्रतिमा एक बगीचेमें मिली थी।

कुंथलगिरि

मध्य-रेलवेकी मीरज-पंढरपुर-लाटूर लाइनपर कुर्दूवाड़ीसे २१ मील दूर बार्सी-टाउन स्टेशन है। बार्सी-टाउनसे कुंथलगिरि २१ मील है। शोलापुरसे भी यहाँ मोटर-बस आती है। यह सिद्धक्षेत्र है। यहाँसे देशभूषण और कुलभूषण मुनि मोक्ष गये हैं।

यह छोटा-सा पर्वत है। चोटीपर दस जैन-मन्दिर हैं। यहाँ माघमें मेला लगता है।

दहीगाँव

बंबई-रायचूर लाइनपर कुर्दूवाड़ीसे ५ मील पहले टवलस स्टेशन है। वहाँसे २२ मीलपर दहीगाँवमें मध्य जैन-मन्दिर है। मन्दिरमें महावीरस्वामीकी प्रतिमा स्थापित है। मन्दिरकी कला उत्कृष्ट है।

कुण्डल

सातारा जिलेमें कुण्डल स्टेशनसे यह क्षेत्र दो मील है। गाँवमें पार्श्वनाथजीका एक मन्दिर है। गाँवके पास पर्वतपर दो मन्दिर हैं। एक मन्दिर झरी-पार्श्वनाथ कहा जाता है; क्योंकि इसमें प्रतिमापर जलवृष्टि होती है। दूसरा मन्दिर गिरिपार्श्व-नाथ है।

उखलद

काचीगुडा-मनमाड लाइनपर पूर्णा जंकशनसे १७ मील दूर पिंगली स्टेशन है। वहाँसे ४ मीलपर पूर्णा नदीके किनारे उखलद गाँव है। यहाँ नेमिनाथजीका प्राचीन मन्दिर है। माघ महीनेमें यहाँ मेला लगता है।

आष्टे

शोलापुरसे ४२ मीलपर दुधनी स्टेशन है। वहाँसे कुछ दूरीपर आलंदसे लगभग १६ मील हैदराबाद राज्यमें आष्टे अतिशयक्षेत्र है। यहाँ एक प्राचीन मन्दिरमें पार्श्वनाथकी प्रतिमा है, जिन्हें विघ्नहर पार्श्वनाथ कहा जाता है।

भद्रावती (भाँदक)

वर्धा-काजीपेट लाइनपर वर्धासे ५९ मील दूर भाँदक स्टेशन है। भाँदकका प्राचीन नाम भद्रावती है। गाँवसे थोड़ी दूर एक पहाड़ीपर तीन ओर गुफाएँ हैं। इन गुफाओंमें प्राचीन मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं, जो अब भग्नदशामें हैं। इन्हें विंझासनकी गुफा कहते हैं।

यहाँ एक प्राचीन चण्डिका-मन्दिर है। यह मन्दिर भग्नावस्थामें है। देवीकी प्रतिमा तथा अन्य अनेक देवमूर्तियाँ हैं; किन्तु खण्डित हैं।

चण्डिका-मन्दिरसे थोड़ी ही दूरीपर एक टेकरीपर पार्श्वनाथ-जैनमन्दिर है। यहाँ पौषकृष्णा दशमीको मेला लगता है। इस टेकरीके समीप ही सुविस्तृत सरोवर है। इस सरोवरकी खुदाईमें बहुत मूर्तियाँ निकली थीं, जो पुरातत्त्व-विभागने ले लीं। यहाँ आस-पास बहुत-से भग्नावशेष हैं। एक स्वप्नादेशके अनुसार ढूँढ़नेपर श्रीपार्श्वनाथजीकी मूर्ति प्राप्त हुई थी। मन्दिरमें वही प्रतिमा प्रतिष्ठित है। मुख्य मूर्तिके अतिरिक्त अन्य तीर्थङ्करोंकी भी प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। पास ही ऋषभदेवजीका मन्दिर तथा 'दादाजीका मन्दिर' है। मुख्य मन्दिरके शिखर-भागमें चौमुखी प्रतिमा विराजमान है।

यहाँ धर्मशाला है। यात्रियोंके ठहरने आदिकी पूरी सुव्यवस्था है।

कुलपाक

वाडी-बैजवाड़ा लाइनपर सिकन्दराबादसे ४२ मील दूर अलीर स्टेशन है। स्टेशनसे ४ मीलपर यह प्राचीन क्षेत्र है। यहाँके जैनमन्दिरमें आदिनाथ (ऋषभदेव)-जीकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। उसे 'माणिकस्वामी' कहा जाता है।

कुम्भोज

सांगली-कोल्हापुर लाइनपर मीरजसे १७ मील दूर हाट-कनगले स्टेशन है। स्टेशनसे ४ मीलपर कुम्भोज गाँवमें एक जैनमन्दिर है। पासमें पर्वतपर पाँच जैनमन्दिर हैं। उनमें बाहुबलि स्वामीकी चरणपादुकाएँ हैं।

नोट-मध्यभारत, मध्यप्रदेश, मालवा तथा राजस्थानमें बहुत अधिक स्थानोंपर जैनमन्दिर हैं। इनमें अनेक स्थानोंके मन्दिर प्राचीन हैं, कलापूर्ण हैं, विशाल हैं; किन्तु सब स्थानोंका उल्लेख करना सम्भव नहीं है। केवल तीर्थस्थानों (सिद्धक्षेत्रों और मुख्य अतिशयक्षेत्रों) का वर्णन लिया गया है। उनके साथ थोड़े-से अन्य क्षेत्रोंकी चर्चा आ गयी है। इसमें श्वेताम्बर तथा दिगम्बर दोनों सम्प्रदायोंके तीर्थोंका विवरण है।*

करौली

पश्चिम-रेलवेकी बंबई-दिल्ली लाइनके कोटा-जंकशन स्टेशनसे १३४ मीलपर 'हिंडौन सिटी' स्टेशन है। यहाँसे करौलीके लिये मोटर-बस जाती है। भरतपुरसे करौली ५० मील दक्षिण है। यह नगर एक पहाड़ी भूमिपर बसा है। नगरके समीप एक छोटी नदी है। यहाँ नगरमें धर्मशाला है।

मदनमोहनजी—नगरके समीप राजमहलमें श्रीमदन-मोहनजीका मन्दिर है। यह मूर्ति यवन-उपद्रवके समय वृन्दावनसे यहाँ लाकर प्रतिष्ठित की गयी थी। यह श्रीसनातन गोस्वामीजीका आराध्य विग्रह है। समीप ही यहाँके नरेशके आराध्य श्रीकृष्णका दूसरा मन्दिर भी है।

नगरके बाहर कैलासी देवीका मन्दिर है। इनकी इधर बहुत मान्यता है। नवरात्रमें यहाँ मेला लगता है।

* जैन-तीर्थोंका यह वर्णन श्रीकामताप्रसादजी जैनकी पुस्तक 'जैनतीर्थ और उनकी यात्रा' तथा श्रीश्यामलालजी जैनके लेखसे तथा कुछ अन्य लेखोंसे संकलित किया गया है।

कैला माता

(लेखक—श्रीमनोहरलालजी अग्रवाल और पं० श्रीवंशीलालजी)

यह स्थान करौलीसे १८ मील दूर घने जंगलमें है। पर्वतके ऊपर श्रीकैलादेवीका मन्दिर है। चैत्रकृष्णा ११ से चैत्र-पूर्णिमातक मेला लगता है। दूर-दूरके यात्री आते हैं। यह सिद्ध देवीपीठ माना जाता है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। मन्दिरके पास पर्वतमें बड़ी गुफा है।

गुड़गाँव

अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर दिल्लीसे १९ मील दूर यह स्टेशन है। यह एक प्रसिद्ध नगर है। स्टेशनसे नगर ३ मील दूर है। इसका प्राचीन नाम गुरुग्राम है। यहाँ देवीका प्रसिद्ध मन्दिर है। इसे लोग सिद्धपीठ मानते हैं। यहाँ बच्चोंके मुण्डन-संस्कार कराने दूर-दूरके लोग आते हैं। नवरात्रमें बड़ा मेला लगता है।

मार्गपुर

गुड़गाँवसे ६ मील आगे गढ़ी-हरसरू स्टेशन है दिल्ली-बीकानेर लाइनपर। वहाँसे थोड़ी दूरपर मार्गपुर ग्राम है। यहाँ भी देवीका प्रख्यात मन्दिर है। गुड़गाँवके समान यहाँ भी लोग मुण्डन-संस्कारके लिये बालकोंको ले आते हैं।

ढोसी

(लेखक—श्रीबनवारीशरणजी)

पश्चिम-रेलवेकी रेवाड़ी-फुलेरा शाखापर रेवाड़ीसे ३२ मील दूर नारनौल स्टेशन है। नारनौलसे ढोसी चार मील दूर है।

ढोसीमें संत श्रीचिमन महाराजका स्थान है। यहाँ पर्वतके ऊपर चन्द्रकूप है। इस कूपसे पर्वतपर एक जलधारा आती है। पर्वतपर चढ़ते एक मार्गसे हैं, उतरते दूसरे मार्गसे हैं। चढ़नेके मार्गमें सूर्यकुण्ड और उतरनेके मार्गमें शिवकुण्ड मिलता है। सोमवती अमावस्याको यहाँ मेला लगता है।

रामनाथ-काशी

नारनौल स्टेशनसे ६ मील दक्षिण कमानियाँ ग्राम है। उनके समीप यह तीर्थ-स्थान है। यहाँ मुख्य मन्दिरमें भगवान् शङ्करका स्वयम्भूलिङ्ग है। आस-पास सैकड़ों शिवलिङ्ग हैं। श्रीसाकेतबिहारी, अमरनाथ, दुर्गाजी, हनुमान्जी आदि देवताओंके यहाँ अनेकों मन्दिर हैं। शिवरात्रिपर बड़ा मेला लगता है।

ढाकोड़ा

नारनौलसे १५ मील दक्षिण यह स्थान है। यहाँ श्रीराधाकृष्णका मन्दिर है। चैत्र-कृष्णा पञ्चमीको बड़ा मेला लगता है। समीपमें कई सरोवर हैं। यह स्थान जंगलमें है। ठहरनेके लिये धर्मशाला है। यहाँ मन्दिरके पास शमीवृक्षमें पीपलका वृक्ष निकला है। शमीगर्भ अश्वत्थकी लकड़ी ही यज्ञमें अग्नि प्रकट करनेकी अरणि बनानेके लिये काम आती है। यहाँसे तीन मील पश्चिम बनहाड़ी ग्राममें दुर्गाजीका मन्दिर है, जो इधर प्रख्यात पीठ माना जाता है।

रैनागिरि

(लेखक—श्रीविप्र तिवारी)

पश्चिम-रेलवेकी मुख्य लाइनपर अलवर और रेवाड़ी स्टेशनोंके बीचमें दो स्टेशन हैं—खैरथल और हरसौली। खैरथलसे रैनागिरि ५ मील और हरसौलीसे ४ मील दूर है। मार्ग पैदलका है और रेतीला है।

रैनागढ़ ग्रामके पार रैनागिरि पर्वत है। पर्वतकी तलहटीमें बेनामी पंथका मुख्य तीर्थ रैनागिरि है। महात्मा

शीतलदासजीने यहाँ तपस्या की थी। पर्वतसे झरने गिरते हैं। पगडंडीके मार्गसे पर्वतके ऊपर जानेपर परशुरामकुण्ड मिलता है। कहा जाता है कि वहाँ भगवान् परशुरामने तपस्या की थी। रेणुकागिरिका ही बदलकर अब रैनागिरि नाम हो गया है।

पर्वतकी तलहटीमें महात्मा शीतलदासका समाधि-मन्दिर है। बेनामी पंथके लोग प्रायः यहाँ दर्शनार्थ आया करते हैं।

मेहदीपुर घाटा

(लेखक—श्रीरामशरणदासजी)

बाँदीकुई स्टेशनसे मेहदीपुर घाटा लगभग १७ मील है। मोटर-बस जाती है। यहाँ मन्दिरके पास कई धर्मशालाएँ हैं।

चारों ओर पर्वतोंसे घिरा यह सुन्दर स्थान है। यहाँका मुख्य मन्दिर श्रीबालाजी (हनुमान्‌जी) का है। हनुमान्‌जीके मन्दिरमें ही एक ओर भैरवजीका मन्दिर है। प्रायः यहाँ प्रेतबाधा-पीड़ित लोग आते हैं। प्रेतबाधा दूर करनेकी अनेक क्रियाएँ यहाँ होती हैं।

नरैना

पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर अजमेरसे ४३ मील दूर नरैना स्टेशन है। यह स्थान दादूपंथी सम्प्रदायका मुख्य स्थान है। महात्मा दादूजीने यहाँ अपने सम्प्रदायका प्रवर्तन किया। यहाँ एक बड़ा सरोवर तथा दादूपंथका मन्दिर है। साँभरके पास बरहनामें महात्मा दादूजीकी समाधि है।

देवयानी

नरैनासे ६ मील आगे फुलेरा स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन कुचामन-रोडतक जाती है। इस लाइनपर फुलेरासे ५ मील दूर साँभर-लेक स्टेशन है। साँभरसे दो मील दूर देवयानी गाँव है।

यहाँ एक सरोवरके पास कई देव-मन्दिर हैं। इनमें शुक्राचार्य तथा देवयानीकी भी मूर्तियाँ हैं। वैशाख-पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है। कहा जाता है कि यहीं दैत्य-दानवोंके आचार्य शुक्रका आश्रम था। इसी सरोवरमें स्नान करते समय भूलसे दैत्यराज वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठाने आचार्य शुक्रकी कन्या देवयानीका वस्त्र पहिन लिया, जिससे दोनोंमें विवाद हुआ। यह कथा श्रीमद्भागवतमें आती है।

जयपुर

राजस्थानका यह प्रसिद्ध नगर और वर्तमान राजधानी है। अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर यह मुख्य स्टेशन है। यह नगर बहुत सुन्दर बना है। नगरके चारों ओर कोट है, उसमें बाहर जानेके ७ द्वार हैं।

ठहरनेके स्थान—१-पंचायती धर्मशाला, स्टेशनके पास; २-भाई साहबकी, चाँदपोल; ३-बख्शीजीकी, नगरमें; ४-रामभवन, साँगानेर दरवाजेके बाहर; ५-सूरजमलकी, रामगंज बाजार; ६-प्रतापजीकी, रामगंज बाजार; ७-सेठ बनजीलाल ठोल्याँकी, जौहरी-बाजार।

मुख्य मन्दिर

श्रीगोविन्ददेवजी—राजमहलके सामने उत्तर ओर यह मन्दिर है। श्रीगोविन्ददेवजीका मन्दिर वृन्दावनमें था; किन्तु बादशाह औरंगजेबके समयमें मन्दिरपर यवन-आक्रमणकी सम्भावना देखकर गोविन्ददेवजीको जयपुर लाया गया। ये श्रीरूपगोस्वामीजीके आराध्य ठाकुर हैं।

श्रीगोकुलनाथजी—यह श्रीविग्रह श्रीवल्लभाचार्य

महाप्रभुको यमुनाकिनारे रेतमें मिला था। इनकी प्रतिष्ठा महाप्रभुने गोकुलमें की थी। यवन-उत्पातकी आशङ्कासे यह मूर्ति भी गोकुलसे जयपुर लायी गयी।

इनके अतिरिक्त मदनमोहनजी, गोपीनाथजी, राधा-दामोदर, रामचन्द्रजी तथा विश्वेश्वर महादेव आदि कई मन्दिर जयपुरमें दर्शनीय हैं। विश्वेश्वर-मन्दिर संगमरमरका बना है। उसमें शिवलिङ्गके अतिरिक्त गणेश, पार्वती, काल-भैरव एवं नन्दीकी मूर्तियाँ भी हैं।

गलताजी

जयपुर नगरके सूर्यपोलके बाहर पूर्वकी पहाड़ियोंके मध्यमें गलताजीका स्थान है। यहाँ पयहारीजीका मन्दिर और उनकी धूनी है। यहींपर नीचेके कुण्डसे सदा गरम पानी बहता रहता है। यही गलताजी-तीर्थ है। राजस्थानमें यह तीर्थ प्रख्यात है। पर्वपर यहाँ मेला लगता है।

कहा जाता है गालव ऋषिने यहाँ तपस्या की थी। कुण्डके बाहर पयहारीजीकी गुफा है। गुफामें दो मन्दिर हैं। यहाँसे ऊपर जानेके लिये दो पहाड़ियोंके मध्यसे मार्ग है। इस मार्गमें 'गऊधार' कुण्ड मिलता है।

सूर्य-मन्दिर—गऊधार कुण्डसे आगे जाकर दो मार्ग हो गये हैं। यहाँ ऊपरके मार्गसे जानेपर पर्वतशिखरपर सूर्य-मन्दिर मिलता है।

आमेर (अम्बर)

जयपुरसे ५ मील दूर यह कस्बा है। जयपुर राज्यकी प्राचीन राजधानी अम्बरमें ही थी। यहाँ पुराना महल है। किलेके पास ही सरोवर है। महलमें काली-मन्दिर है और सुखनिवासके पास विष्णु-मन्दिर है। यहाँ एक गलता-टीला है। यह गालव ऋषिकी तपोभूमि है। टीलेके ऊपर सात कुण्ड हैं और शङ्करजीका मन्दिर है। इस टीलेमेंसे जलका झरना सदा गिरता रहता है।

डिग्गी

(लेखक—पं० श्रीराधेश्यामजी शर्मा)

यह स्थान जयपुरसे दक्षिण-पश्चिम ५० मीलपर है। जयपुरसे यहाँतक मोटर-बस चलती है। देवली, कोटा, किशनगढ़, अजमेर तथा सवाई माधोपुरसे भी मोटर-बसें आती हैं।

डिग्गीमें अनेकों सरोवर हैं। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। यहाँका प्रसिद्ध मन्दिर श्रीकल्याणरायजीका है। यह मूर्ति द्वारिकासे लाकर यहाँ प्रतिष्ठित की गयी थी। श्रीकल्याणरायजीका मन्दिर विशाल है।

त्रिवेणी

(लेखक—श्रीप्रभुदानसिंहजी)

यह स्थान जयपुरसे ४७ मील दक्षिण है। जयपुरसे अजीतगढ़ मोटर-बस चलती है। अजीतगढ़से लगभग दो मील पूर्व यह धारा है। यह धारा श्रीजगदीशजीके चरणोंसे निकली है और पवित्र तीर्थ मानी जाती है। जहाँसे धारा प्रारम्भ होती है, वहाँ कई मन्दिर हैं। एक कुण्ड भी है। वहाँसे एक मीलपर जगदीशजीका मन्दिर है। यहाँ पर्वतपर महाकालीका मन्दिर है और पासके कस्बे अमरसरमें श्रीगोपीनाथजीका मन्दिर है।

पासमें गोपालगढ़में पर्वतपर ब्रह्माणीदेवीका मन्दिर है। वहाँ धर्मशाला भी है। चैत्रकृष्णा २ को मेला लगता है।

चौथकी माता

(लेखक—श्रीश्यामसुन्दरलालजी)

सवाई माधोपुरसे जयपुर जानेवाली लाइनपर 'चौथका बरवाड़ा' स्टेशन है। स्टेशनके पास धर्मशाला है। वहाँसे थोड़ी दूर एक पहाड़ीपर चौथ माताजीका मन्दिर है। पहाड़ीपर ६०० सीढ़ी चढ़ना पड़ता है। माताजीके समीप ही गणेशजीकी मूर्ति है। गणेशजीके पास अखण्ड ज्योति है, जो कई शताब्दियोंसे जल रही है। मन्दिरके पीछे गोरे और काले भैरवकी मूर्तियाँ हैं। माघकृष्णा चतुर्थीको यहाँ मेला लगता है।

यहाँसे लगभग एक फर्लांगपर गुप्तेश्वर शिवका स्थान एक गुफामें है, जिसका रास्ता एक नालेमेंसे होकर गया है। यह सिद्ध स्थान माना जाता है। इसी नालेसे ६ मील आगे एक दूसरी गुफा है। उसमें एक संतका स्थान है। वहाँसे आगे भागवतगढ़ कस्बेसे आध मीलपर पञ्चकुण्ड हैं। यह तीर्थ घने वनमें है। वहाँसे १२ मीलपर बनास नदीमें एक गहरा ह्रद है। वह तीर्थ माना जाता है।

रणथम्भौर—सवाई माधोपुरसे मोटर-बसके मार्गपर ६ मील दूर यह किला है। किलेमें गणेशजीकी विशाल मूर्ति है। वहाँ पर्वतपर अमरेश्वर-शैलेश्वरके मन्दिर प्राचीन हैं तथा दर्शन करने योग्य हैं। उनसे आगे कमलधार और फिर एक प्रपातके पास झरनेश्वर-मन्दिर है। आगे आमली स्टेशनके पास सीताजीका मन्दिर है। श्रीसीताजीके सामने (चरणोंमेंसे) पानी बहकर क्रमशः दो कुण्डोंमें जाता है। वह जल पहले कुण्डमें काला रहता है, पर दूसरे कुण्डमें आकर श्वेत हो जाता है।

श्यामजी (खाटू)

(लेखक—श्रीजगदीशप्रसादजी)

राजस्थानमें 'खाटूके श्यामजी' प्रसिद्ध हैं। यहाँ आस-पासके मनौती करनेवालोंकी भीड़ अधिक लगती है।

मार्ग

१-पश्चिम-रेलवेकी सवाई-माधोपुर-लोहारू लाइनपर रींगस, पलसाना स्टेशन हैं। रींगससे खाटू १० मील है। यहाँसे खाटूके लिये पैदल या ऊँटसे जाना पड़ता है। रींगससे २२ मील आगे पलसाना स्टेशनसे खाटू ८ मील है। यहाँसे भी पैदल या ऊँटसे जाना होता है।

२-पश्चिम-रेलवेकी रिवाड़ी-फुलेरा लाइन भी रींगस स्टेशन होकर जाती है। इस लाइनपर रींगससे ११ मील दूर बधाल स्टेशन है। बधालसे खाटू ८ मील है। पैदल या ऊँटसे जाना पड़ता है।

ठहरनेके स्थान

१-बड़ी धर्मशाला (श्यामविद्यालयके पीछे) २-छोटी धर्मशाला (बाजारमें), ३-गाँवके बाहर पूर्वकी ओर एक धर्मशाला है।

दर्शनीय स्थान

यहाँका प्रसिद्ध मन्दिर श्यामजीका है। उनके अतिरिक्त रघुनाथजी, गोपीनाथजी, गङ्गाजी, सीताराम, श्रीरामकुमार, रत्नविहारी, माधोपुरके गोपीनाथ आदि अनेकों मन्दिर यहाँ हैं।

ज्येष्ठ-शुक्ला १२, कार्तिक-शुक्ला १२ तथा फाल्गुन-शुक्ला १२ को यहाँ मेला लगता है। वैसे शुक्लपक्षकी सभी द्वादशियोंको भीड़ होती है।

कहा जाता है कि भीमसेनके पुत्र घटोत्कचके पुत्र बर्बरीक ही श्यामजी हैं। भगवान् श्रीकृष्णने बर्बरीकका मस्तक महाभारत-युद्धके पूर्व ही काट लिया था, किंतु फिर बर्बरीकको कलियुगमें पूजित होनेका वरदान भी दिया।

रैनवाल

(लेखक—श्रीचौथमल भँवरीलाल लखेरा)

राजस्थानमें जयपुरसे टोडा-रायसिंहतक जो रेलवे-लाइन जाती है, उसमें जयपुरसे १८ मीलपर चितोरा-रैनवाल स्टेशन है। जयपुरसे रैनवालतक पक्की सड़कका भी मार्ग है।

रैनवालका श्रीहनुमान्‌जीका मन्दिर राजस्थानमें प्रसिद्ध है। मन्दिरके पास सरोवर है। यहाँ वैशाख-शुक्ला षष्ठीको बड़ा मेला लगता है।

श्रीहनुमान्‌जीके मन्दिरसे थोड़ी दूरपर भगवान् वामनका मन्दिर है, यहाँ वामनद्वादशीको मेला लगता है।

विराट

जयपुरसे ४१ मील उत्तर विराट नगरके पुराने खँडहर हैं। यहाँ एक गुफामें भीमके रहनेका स्थान कहा जाता है। अन्य पाण्डवोंकी गुफाएँ भी हैं। पाण्डवोंने वनवासका अन्तिम अज्ञातवासका एक वर्ष यहाँ बिताया था। जयपुर तथा अलवर दोनों स्थानोंसे यहाँ मार्ग जाता है। ५१ शक्तिपीठोंमें एक पीठ विराटमें कहा गया है। शक्तिपीठके ठीक स्थानका पता नहीं है। विराटमें सतीके वाम पैरकी अँगुली गिरी थी—ऐसा वर्णन मिलता है।

बाघेश्वर

(लेखक—पं० श्रीजगन्मोहनजी मिश्र शास्त्री)

राजपुतानेमें सिंहाना, खेतड़ी, जसरापुर तथा खरकड़ा ग्रामोंके पास पर्वतमें यह स्थान है। यहाँ बराबर पर्वतसे झरना गिरता है। यह प्रवाह ही मुख्य तीर्थ है। ग्रहण, सोमवती अमावस्या तथा पर्वोंपर मेला लगता है।

भगवान् नृसिंहका यहाँ प्राचीन मन्दिर है। मन्दिरकी दीवालमें शिव-पार्वती, राधा-कृष्ण, पाण्डव तथा अन्य देवताओंकी मूर्तियाँ बनी हैं। दूसरा श्रीराम-मन्दिर है। पासमें कोटाद्रि पर्वत है।

नारनौल स्टेशनसे बाघेश्वरतक मोटर-बस आती है।

सालासर

राजस्थानके सीकर रेलवे-स्टेशनसे ३२ मील दक्षिण-पश्चिममें यह स्थान है। मोटर-बस सीकरसे यहाँतक आती हैं। आश्विन-शुक्ला पूर्णिमाको मेला लगता है। प्रत्येक मङ्गलवारको भी दूर-दूरसे लोग आते हैं। कई धर्मशालाएँ हैं।

सालासरमें हनुमान्‌जीका मन्दिर प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि इस तीर्थमें चोरी आदि दुष्कर्म हो नहीं पाते। कोई असदाचरण करनेपर तत्काल हानि होती है।

जीणमाता

सीकर स्टेशनसे १० मील दक्षिण तथा गोरियाँ स्टेशनसे ६ मील दक्षिण-पश्चिम पर्वतमें यह देवी-मन्दिर है। यह सिद्धपीठ माना जाता है। आस-पासके लोग कहते हैं कि औरंगजेब बादशाह मन्दिर नष्ट करने आकर सेनाके साथ यहाँ इतना त्रस्त हुआ कि उसने देवीको स्वर्ण-छत्र चढ़ाया। सवा मन तेल दिल्लीके मुसल्मान शासकोंकी ओरसे यहाँ दीपक जलानेके लिये प्रतिवर्ष आता था। नवरात्रमें मेला लगता है।

शाकम्भरी

सवाई-माधोपुर-लुहारू लाइनपर जयपुरसे ८४ मील दूर नवलगढ़ स्टेशन है। वहाँसे २५ मील दक्षिण-पश्चिम पर्वतीय प्रदेशमें यह स्थान है। पैदल या ऊँटपर जाया जा सकता है। जंगलमें पर्वतके ऊपर शाकम्भरी देवीका मन्दिर है। यह सिद्धपीठ कहा जाता है। यहाँ धर्मशाला है। सब समय यात्री आते हैं। वैसे नवरात्रमें मेला लगता है।

गणेश्वर

जयपुर राज्यके 'नीमका थाना' नामक ग्रामसे

६ मील पूर्व दिशामें गाँवड़ी ग्राम है। वहाँ पर्वतके पास गणेश्वर शिवका मन्दिर है। पर्वतमें ऊँचाईसे एक गरम पानीका झरना गिरता है। यह जल एक कुण्डमें आकर कुण्डसे बाहर जाता है। दूर-दूरके यात्री यहाँ आते हैं। श्रावणके प्रत्येक सोमवारको तथा शिवरात्रिमें मेला लगता है।

लोहार्गल (लोहागरजी)

(लेखक—पं० श्रीरामकिशोराचार्यजी काव्यतीर्थ, साहित्यभूषण)

पश्चिम-रेलवेकी एक लाइन राजस्थानमें सवाई माधोपुरसे लुहारूतक गयी है। इस लाइनपर सीकर या नवलगढ़ स्टेशनपर उतरना चाहिये। वहाँसे २० मील दूर यह तीर्थस्थल है। ऊँटोंकी सवारी मिलती है।

लोहार्गल राजस्थानका प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहाँ दूर-दूरसे लोग अस्थि-विसर्जन करने आते हैं। यहाँके जलमें अस्थियाँ कुछ ही घंटोंमें जलरूप हो जाती हैं। यहाँ चैत्रमें सोमवती अमावस्याको और भाद्रपद-अमावस्याको मेला लगता है।

यहाँ ठहरनेके लिये बहुत-से स्थान हैं। गरीबों तथा साधुओंके लिये अन्नसत्र हैं। मन्दिर बहुत-से हैं, जिनमें खाकीजीका मन्दिर मुख्य है। श्रीरामानन्द-सम्प्रदायका यहाँ बड़ा स्थान है।

यहाँका मुख्य तीर्थ पर्वतसे निकलनेवाली सात धाराएँ हैं। कहा जाता है कि पर्वतके नीचे ब्रह्महृद है। उसीसे ये धाराएँ निकलती हैं।

(लेखक—श्रीरामप्रतापजी वैद्य)

लोहार्गल जाते समय दो मील पहले चेतनदासजीकी बावड़ी मिलती है। इसपर ५२ भैरव स्थापित हैं। आगे ज्ञानवापी-तीर्थ मिलता है। इस स्थानपर भीमसेनद्वारा स्थापित भीमेश्वर-मन्दिर है। बावड़ीके सामने दुर्गाजीका मन्दिर है। दुर्गा-मन्दिरके ऊपर दो-तीन गुफाएँ हैं, जिनमें महात्माओंने तपस्या की है। यहाँ आस-पास मार्गमें बहुत-से मन्दिर मिलते हैं। शिवकुण्डके पास महाराज युधिष्ठिरद्वारा स्थापित शिव-मन्दिर है। यह लोहार्गलके मुख्य मन्दिरोंमें है। इसके ठीक सामने सूर्य-मन्दिर है।

लोहार्गलके प्रधान देवता सूर्य हैं। सूर्य-मन्दिर तथा शिव-मन्दिरके मध्यमें भी एक कुण्ड है। इसे सूर्यकुण्ड कहते हैं। आस-पास लगभग ४५ मन्दिर और हैं।

यहाँके सबसे ऊँचे शिखरपर दुर्गम स्थानमें वनखण्डीनाथकी छतरी है। वहाँ जलका एक टाँका है। कम ही यात्री वहाँ जाते हैं। लोहार्गलसे १ मीलपर मालकेतुजीका मन्दिर पर्वतपर है। मार्ग सुगम है। यह मन्दिर बहुत भव्य है। लोहार्गलकी परिक्रमा भाद्रपद-कृष्णा ९ से पूर्णिमातक होती है।

पौराणिक इतिहास

ब्रह्महृद-तीर्थ देवताओंका अत्यन्त प्रिय तीर्थ था। कलियुगमें पापप्रवण लोग स्नान करके इस तीर्थको दूषित न कर दें, इस आशङ्कासे देवताओंने ब्रह्माजीसे इस तीर्थकी रक्षा करनेकी प्रार्थना की। ब्रह्माजीके आदेशसे हिमालयने अपने पुत्र केतु नामक पर्वतको यहाँ भेजा। केतुने अपनी आराधनासे तीर्थके अधिदेवताको प्रसन्न किया और उनकी आज्ञासे तीर्थको आच्छादित कर लिया। इस प्रकार ब्रह्महृद-तीर्थ पर्वतके नीचे लुप्त हो गया, किन्तु उनकी सात धाराएँ पर्वतके नीचेसे प्रवाहित होने लगीं। वे धाराएँ अब भी हैं।

महाभारतके युद्धके पश्चात् पाण्डवोंके मनमें महासंहारका दुःख था। वे पवित्र होना चाहते थे। भगवान् श्रीकृष्णने उन्हें बताया कि 'तीर्थाटन करते हुए भीमसेनकी अष्टधातुकी गदा जहाँ गलकर पानी हो जाय, समझ लेना कि वहाँ सब लोग शुद्ध हो गये।' पाण्डव तीर्थाटन करने निकले। वे सभी तीर्थोंमें अपने शस्त्र धोते थे। तीर्थाटन करते हुए वे पुष्कर आये और वहाँसे घूमते हुए यहाँ आ गये। यहाँ स्नानके पश्चात् शस्त्र धोते समय भीमसेनकी वह गदा और सबके शस्त्र पानी हो गये। इसलिये इस तीर्थका नाम तभीसे लोहार्गल पड़ गया।

परिक्रमा—लोहार्गलकी परिक्रमा सूर्यकुण्डमें स्नान

करनेके अनन्तर सूर्यभगवान्‌का पूजन करके प्रारम्भ की जाती है। चिराणा होते किरोड़ी (कोटितीर्थ) जाते हैं, यहाँ सरस्वती नदी तथा दो कुण्ड हैं। एकमें गरम तथा एकमें शीतल जल रहता है। यहाँ कोटीश्वर-शिवमन्दिर है। कहते हैं यहाँ कर्कोटक नागने तपस्या की थी; यहाँ गिरिधारीजीका प्राचीन मन्दिर है। आगे कोट नामक गाँवमें शाकम्भरी देवीका मन्दिर है। वहाँ शर्करा नदी है। यहाँ रात्रिविश्राम होता है। आगे संध्या नदी मिलती है। फिर केरुकुण्ड तथा रावणेश्वर-शिवमन्दिर मिलते हैं। आगे नागकुण्ड है। वहाँसे आगे टपकेश्वर-मन्दिर है, जहाँ मूर्तिपर पर्वतमेंसे जल टपकता रहता है। उससे आगे संत कालाचारीकी घाटी और शोभावती नदी है। आगे बारह तिबारामें रात्रिविश्राम होता है। अन्तिम दिन रघुनाथगढ़से आगे खेरीकुण्ड मिलता है, यह वाराहतीर्थ है। यहाँसे आगे भीमेश्वर होते लोहार्गल पहुँच जाते हैं।

रानी सती (झूँझनू)

सवाई माधोपुरसे लुहारूतक जानेवाली लाइनपर जयपुरसे १०७ मील दूर झूँझनू स्टेशन है। यह राजस्थानका एक अच्छा नगर है। नगरके पास ही रानी सतीका मन्दिर है। यह सती-स्थान राजस्थानमें बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ बारह सतियाँ और हुई हैं—१-सीता सती, २-मादिसती, ३-मनोहरी सती, ४-मनभावनी सती, ५-जमुना सती, ६-ज्ञानी सती, ७-पूरा सती, ८-पिरागी (प्रयागी) सती, ९-उलमेला (उर्मिला) सती, १०-टीली सती, ११-बाली सती, १२-गूजरी सती। इन सतियोंके भी स्थान यहाँ बने हैं। रानी सतीको तो जगदम्बाका स्वरूप ही मानकर अर्चा-पूजा होती है।

रानी सतीका नाम नारायणीबाई था। उनके श्वशुर सेठ जालीरामजी अग्रवाल पहले हिसार रहते थे, किन्तु वहाँके नवाबसे झगड़ा हो जानेके कारण झूँझनू चले आये। सेठ जालीरामजीके ज्येष्ठ पुत्र तनधनदासजीका विवाह सेठ गुरसामलजीकी पुत्री नारायणीबाईसे हुआ था। झूँझनू आ जानेके पश्चात् तनधनदासका द्विरागमन हुआ। वे जब द्विरागमन कराके पत्नीके साथ लौट रहे थे, तब वनमें हिसारके नवाबकी सेनाने अचानक आक्रमण कर दिया। युद्धमें तनधनदास मारे गये, किन्तु नवविवाहिता नारायणीबाईने शस्त्र उठा लिया और शत्रुदलको मार भगाया। युद्धके उपरान्त वे वहीं पतिदेहके साथ सती हो गयीं। सतीकी आज्ञासे एक सेवक घोड़ेपर उनकी चिताभस्म लेकर झूँझनू चला। झूँझनूके पास जहाँ घोड़ा रुक गया, वहीं सतीका मन्दिर बनाया गया।

कोटा

मध्य-रेलवेकी एक लाइन बीनासे कोटा जाती है। पश्चिम-रेलवेकी बम्बई-दिल्ली लाइनपर नागदासे १४० मील दूर कोटा है। यह राजस्थानका एक प्रसिद्ध नगर है। स्टेशनसे नगर दो मील है। यहाँके राजा परम्परासे वल्लभकुलके शिष्य होते आये हैं।

कोटामें वल्लभसम्प्रदायके कई मन्दिर हैं। यहाँ छोटे मथुरेशजी, श्रीनवनीतप्रियाजी, मदनमोहनजी, गोकुलनाथजी, व्रजेशजी, बालकृष्णजी आदिके मन्दिर हैं। राजकीय गढ़में भी चार मन्दिर हैं। नगरके पूर्व किशोरसागर नामका बड़ा सरोवर है। उसके समीप मथुरियाजी (मथुरेशजी) का बड़ा मन्दिर है। आसपास और भी कई मन्दिर हैं। मथुरेशजी अब जतीपुरा (व्रजमें) पधार गये हैं।

बूँदी-कोटाके कुछ तीर्थ

(लेखक—श्रीओम् आनन्दी)

कुमारिकाक्षेत्र

कोटासे ४४ मीलपर इन्द्रगढ़ स्टेशन है। वहाँसे ६ मील पूर्वोत्तर एक झील है। यह प्राचीन कुमारिकाक्षेत्र है। यहाँ प्राचीन भग्नावशेष मिलते हैं। झीलके पश्चिम भगवान् शङ्करका मन्दिर है। वहाँ एक कुण्ड शीतल जलका और एक गरम जलका है। कार्तिक पूर्णिमा तथा सोमवती अमावस्याको मेला लगता है।

क्षेमकरी देवी

यह देवी-मन्दिर इन्द्रगढ़ स्टेशनसे ५ मील दूर है। मोटर-बस चलती है। यहाँ देवीका विशाल मन्दिर है। नवरात्रमें मेला लगता है।

रामेश्वर

बूँदीसे ९ मील पश्चिमोत्तर रामेश्वरनाला स्थान है। यहाँ पर्वतपर रामेश्वर-मन्दिर है। मन्दिरतक सड़क गयी है। शिवरात्रिपर मेला लगता है।

भीम-लात

बूँदीसे १२ मील दक्षिण-पश्चिम भीम-लात प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ एक प्रपात पर्वतमेंसे निकलता है। कहा जाता है कि वनवासके समय पाण्डव यहाँ पधारे थे। प्यास लगनेपर जल नहीं मिला तो भीमसेनने पर्वतपर पदाघात करके (लात मारकर) यहाँ धारा प्रकट की।

चार चौमा

कोटासे २० मील दूर 'चार चौमा' स्थान है। यहाँ दो-दो कोस दूर 'चौमा' नामक चार गाँव हैं। उनके मध्यमें भगवान् शङ्करका मन्दिर है। मन्दिरके पास धर्मशाला तथा कुण्ड है।

केथुन

कोटासे ९ मील पूर्व यह स्थान है। यहाँ विभीषणकी मूर्ति है। कहा जाता है कि यह भगवान् श्रीरामद्वारा स्थापित है।

सिद्धगणेश

सवाई माधोपुर स्टेशनसे ५ मील दूर एक पर्वतशिखर-पर सिद्ध-गणेशका मन्दिर है। यहाँ भाद्र-कृष्ण चतुर्थीको मेला लगता है। कहा जाता है कि ये गणेशजी मेवाड़के इतिहास-प्रसिद्ध राणा हमीरके आराध्य हैं।

श्रीकेशवराय-पाटण

(लेखक—श्रीघनश्यामलाल गुप्त)

यह नगर राजस्थानके कोटा-डिवीजनमें पड़ता है। राजस्थान सरकारके अनेक प्रमुख कार्यालय यहाँ हैं। यह एक प्राचीन तीर्थक्षेत्र है, जो कालके प्रभावसे नष्ट हो चुका था। यहाँका प्राचीन नगर तो मिट्टीके नीचे दबा पड़ा है। अब जो नगर है, वह नवीन है।

मार्ग

पश्चिम-रेलवेकी बंबई-दिल्ली लाइनपर कोटा जंकशन स्टेशन है। वहाँसे केशवराय-पाटण केवल ५ मील दूर है। कोटासे नौकाद्वारा नदी पार करके वहाँ जा सकते हैं। कोटासे ८ मीलपर बूँदी-रोड स्टेशन है। वहाँसे केशवराय-पाटण ३ मील दूर है। मोटर-बसें चलती हैं। कार्तिक-पूर्णिमाके मेलेके समय खूब भीड़ होती है।

तीर्थ-दर्शन

चर्मण्वती (चंबल) नदीके तटपर यह प्राचीन जम्बू-अरण्यक्षेत्र है। पट्टनपुर ग्रामसे दक्षिण चर्मण्वती नदी धनुषाकार पूर्व-वाहिनी है। वहाँ लगभग एक मीलतक नदीपर पक्के घाट हैं। मन्दिरके पास यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

श्रीकेशवराय—चर्मण्वती नदीमें विष्णुतीर्थ है। वहाँ नदीसे ५९ सीढ़ी ऊपर मन्दिरका द्वार है। २० सीढ़ी और ऊपर मन्दिर है। भगवान् श्रीकेशवरायकी चतुर्भुज मूर्ति मुख्य पीठपर स्थित है। यहीं एक छोटे मन्दिरमें श्रीचारभुजाजीकी श्रीमूर्ति है।

मुख्य-मन्दिरके चारों ओर मण्डपोंमें गणेश, शेषजी,

अष्टभुजा, सूर्य तथा गङ्गाजी आदि देवता हैं। भगवान् केशवके सम्मुख चौकमें गरुड़स्तम्भ है। मन्दिरके नीचे चर्मण्वतीको मार्ग जाता है, जिसे 'तुला' कहते हैं।

जम्बुमार्गेश्वर—यह भगवान् शङ्करका प्राचीन मन्दिर है। जब केशवराय-पट्टण नगर नहीं था, केवल वन था, तब यहाँ यही मन्दिर था। यह मन्दिर श्रीकेशवराय-मन्दिरके पास ही है।

इस मन्दिरके पास एक मण्डपमें हनुमान्‌जी और दूसरेमें अञ्जनी माताकी प्रतिमा है।

परिक्रमा—इस क्षेत्रकी परिक्रमा अब केवल ५ कोस (१० मील) की है। यह परिक्रमा चर्मण्वती नदीके किनारे विष्णुतीर्थसे प्रारम्भ होती है। चर्मण्वतीके पश्चिम-तटके तीर्थोंका दर्शन करते सौपर्णतीर्थसे आगे नदीके मध्यमें नीलकण्ठेश्वर-मन्दिर मिलता है। गर्मियोंमें यहाँ नौकासे दर्शन करने लोग जाते हैं। यह स्थान नगरसे एक मील दूर है। वहाँसे उत्तर मुड़ते हैं।

उत्तर एक बागमें राजराजेश्वर, बटुकभैरव तथा रामेश्वरके दर्शन होते हैं। श्रीराजराजेश्वर एवं पार्वतीकी मूर्तियाँ मनोहर हैं। आगे कालीदेवरीमें अभयनाथ महादेव और ग्रामके वायव्य कोणमें भगवान् वाराहके दर्शन होते हैं। यहाँ एक शीतल जलका कुण्ड है। आगे चामुण्डा देवीका मन्दिर है और पूर्वमें महर्षि मैत्रावरुणिका (वसिष्ठ) आश्रम है। वहाँ शिव-मन्दिर तथा सरोवर है। आगे रोहिणीदेवी तथा श्वेतवाहन महादेवके मन्दिर आते हैं। वहीं ब्रह्मकुण्ड है। आगे दक्षिणमें श्रीराममन्दिर तथा विश्रामतीर्थ है, यहाँ एक बावड़ी है। दक्षिणमें नदीतटपर श्वेतवाहन तथा सुखेश्वरके स्थान हैं। इनके दर्शन नौकासे जाकर किये जाते हैं। वहाँसे तटवर्ती तीर्थोंके दर्शन करते विष्णुतीर्थपर आकर परिक्रमा पूर्ण की जाती है।

इतिहास

कहा जाता है कि केशवराय-पट्टणका स्थान पहले वन था। यहाँ अज्ञातवासके समय विराटनगर जाते समय पाण्डव कुछ काल ठहरे थे। पाण्डवोंने यहाँ श्रीजम्बूमार्गेश्वरके पास अपने पाँच शिवलिङ्ग और स्थापित किये थे—गुप्तेश्वर, केदारेश्वर सहस्रलिङ्ग आदि। पाण्डवोंके ठहरनेका स्थान पाण्डव-यज्ञशाला कहा जाता है। यह यज्ञशाला आज भी है। वहाँ एक पाण्डव-गुफा तथा दो मन्दिर हैं। पाण्डवोंके शिवलिङ्ग उन्हीं दोनों मन्दिरोंमें हैं। इन मन्दिरोंमें अब ब्रह्मा, गणेश, दुर्गा तथा शनिकी भी मूर्तियाँ हैं।

महाराज रन्तिदेव एक स्वप्नादेशके अनुसार चर्मण्वती (चंबल) के किनारे-किनारे यहाँ आये। यहाँ उन्होंने तपस्या की और स्वप्नादेशके अनुसार चर्मण्वतीमें खोज करनेपर उन्हें दो पाषाण मिले। उन पाषाणोंको तोड़नेपर एकमेंसे श्रीचारभुजाजीकी श्यामवर्ण चतुर्भुज मूर्ति और दूसरेमेंसे श्रीकेशवरायजीकी श्वेतवर्ण चतुर्भुज मूर्ति निकली। ये दोनों मूर्तियाँ राजा रन्तिदेवने चर्मण्वतीके तटपर एक मन्दिरमें स्थापित कर दीं।

भगवान् परशुरामने जब २१ बार पृथ्वीको क्षत्रियहीन किया, तब अन्तमें उन्होंने यहाँ आकर तपस्या की। समयानुसार इस पवित्रभूमिमें अन्य देवताओं तथा ऋषियोंने भी तपस्या की। उनके तपःस्थान चर्मण्वतीके तटपर तीर्थ कहे जाते हैं। इनमें सौपर्णतीर्थ, अग्नितीर्थ, पञ्चरुद्रतीर्थ, गौ-तीर्थ, स्वर्गद्वार, ऋणमोचन, पापमोचन, रुद्रतीर्थ, विष्णुतीर्थ, ब्रह्मतीर्थ, सुखतीर्थ आदि हैं। इनके अतिरिक्त बहुतसे शिवलिङ्ग, साधुओंकी समाधि तथा सैकड़ों सती-चबूतरे हैं।

पहले यह नगर तीन भागोंमें विभक्त था। जम्बूमार्गेश्वरके पास शिवपुरी, श्रीकेशवरायजी तथा चारभुजाजीके पास विष्णुपुरी और ब्रह्मतीर्थके पास ब्रह्मपुरी थी; किन्तु वटपुरके पहाड़पर रहनेवाले धूँधलाजी नामक महात्माके शापसे धूलिकी वर्षा होकर नगर नष्ट हो गया। धूँधलाजीका स्थान त्रिवेणी नदीके तटपर वटपुरमें पर्वतपर है, जहाँ उनकी मूर्ति है। उनके दो शिष्य नोगना और जोगनाकी मूर्तियाँ पट्टनपुरसे एक मीलपर बूँदी-रोडके मार्गमें हैं।

श्रीकेशवरायजीका वर्तमान मन्दिर सं० १६९८ में राजा शत्रुशल्यजीने बनवाया था और पुराने मन्दिरसे श्रीकेशवरायजी तथा श्रीचारभुजाजीको लाकर श्रीकेशवरायजीको इसमें तथा श्रीचारभुजाजीको उसके पीछे छोटे मन्दिरमें विराजमान किया। राजा रन्तिदेवके पुराने मन्दिरमें दूसरी नयी प्रतिमा स्थापित की।

जैनमन्दिर

यहाँ एक प्राचीन विशाल जैनमन्दिर है, जिसमें पृथ्वीके भीतर गुफामें मूर्ति है।

लोयचा (दुपहरिया पानी)

पश्चिमी रेलवेकी बंबई-दिल्ली लाइनपर कोटा-जंकशनसे आगे बूँदी-रोड स्टेशन है। बूँदी नगरसे लोयचा मोटर-बसका मार्ग है। बूँदीसे उत्तर १७ मीलपर निमाणा ग्रामके पास यह स्थान है।

ग्रामसे बाहर गोराजी भैरवका मन्दिर है। मन्दिरके पास उत्तर ओर एक सरोवर है और मन्दिरसे लगा पश्चिम ओर एक कुण्ड है। कुण्डका जल उत्तम है। कुण्डसे जल सदा बहता रहता है। कुण्डसे थोड़ी दूरपर बाणगङ्गा है। पासमें पथरीली भूमिपर दुपहरिया महादेवका मन्दिर है। इस मन्दिरके सामने एक चट्टानमें दरार है। यह दरार एक हाथ लंबी है। प्रत्येक वैशाख महीनेमें प्रातः सूर्योदयसे लगभग १० बजे दिनतक इस दरारसे थोड़ा-थोड़ा पानी निकलता है। दोपहरके बाद जल बंद हो जाता है। उस समय यहाँ मेला लगता है। लोग उस जलमें वस्त्र भिगोकर शरीर पोंछ लेते हैं। कभी-कभी लुटिया भर जाय, इतना जल भी निकलता है। कहा जाता है कि यहाँ लोमश ऋषिने तपस्या की थी। ग्रहण, सोमवती आदि पर्वोंपर भी मेला होता है और लोग बाणगङ्गा या गोराजीकुण्डमें स्नान करते हैं।

सीतावाड़ी

(लेखक—पं० श्रीजीवनलालजी शर्मा)

कोटा-शिवपुरी बस-लाइनपर यह स्थान है। कोटासे बराबर बसें चलती हैं। यहाँ महर्षि वाल्मीकिका आश्रम है। श्रीलक्ष्मणजी तथा सीताजीके मन्दिर हैं। जलके यहाँ सात कुण्ड हैं—१-लक्ष्मणकुण्ड, २-सीताकुण्ड, ३-भरतकुण्ड, ४-सूर्यकुण्ड, ५-चरितकुण्ड, ६-बालाकुण्ड, ७-सत्यदेवकुण्ड।

कहा जाता है कि महर्षि वाल्मीकिका यहाँ आश्रम था। द्वितीय वनवासके समय श्रीजानकीजी यहीं रही थीं। वैशाख पूर्णिमासे ज्येष्ठ-अमावस्यातक मेला रहता है।

कवलेश्वर

(लेखक—पं० श्रीरामगोपालजी त्रिवेदी तथा श्रीउच्छ्रबदासजी दिगंबर)

कोटा-दिल्ली रेलवे-लाइनपर इन्द्रगढ़ स्टेशन है। वहाँसे यह स्थान ८ मील पूर्वकी ओर है। कवलेश्वरका प्राचीन नाम कृतमालेश्वर है। यह स्थान पर्वतोंसे घिरा है। यहाँ दो कुण्ड हैं, जिनसे बराबर जल बाहर जाता रहता है। उनमें बड़े कुण्डका जल शीतल और छोटे कुण्डका जल गरम रहता है। यहाँ एक त्रिवेणी नामक नदी है। यहाँ कार्तिक-पूर्णिमाको मेला लगता है। कुण्डके समीप ही शिव-मन्दिर है। मन्दिरके पास धर्मशाला है। श्रावणमें यहाँ बहुत-से विद्वान् ब्राह्मण अभिषेक करने आते हैं।

यहाँ लोग दूर-दूरसे अपराधोंका प्रायश्चित्त करने आते हैं। कहा जाता है कि यहाँके जलमें स्नान करनेसे बूँदीनरेश महाराज अजीतसिंहका कुष्ठ दूर हो गया था। उन्होंने ही यह मन्दिर और कुण्ड बनवाया।

मालादेवी—कवलेश्वरसे ३ मील दक्षिण मालादेवीका प्रसिद्ध मन्दिर है। मार्ग विकट पहाड़ियोंका है। मन्दिरके पास एक झरना, कुण्ड तथा गुफा हैं।

चंदवासा

(लेखक—श्रीभेरूलाल राधाकृष्ण गावरी)

यहाँ जानेके लिये बंबई-कोटा दिल्ली लाइनके शामगढ़ स्टेशनपर उतरकर वहाँसे ६ मील मोटर-बससे जाना पड़ता है।

यहाँपर पर्वतीय गुफामें श्रीधर्मराजेश्वर महादेवका मन्दिर है। यह गुफा-मन्दिर बहुत प्राचीन तथा सुन्दर है। महाशिवरात्रिपर यहाँ मेला लगता है।

कालेश्वर पृथ्वीनाथ

चंदवासासे यहाँतक ५ मील पैदलका मार्ग है। साठखेड़ामें यह प्रसिद्ध मन्दिर है। यह स्थानकी इधर बहुत अधिक मान्यता है। यात्रियोंका समुदाय प्राय: आता रहता है। मन्दिरके पास कई धर्मशालाएँ हैं। यहाँ संगमरमरसे बना भव्य मन्दिर है। आश्विन-शुक्ला ८-९ को मेला लगता है।

शङ्खोद्धार

कालेश्वर पृथ्वीनाथसे ७ मीलपर यह तीर्थ है। यहाँ वैशाखी तथा कार्तिकी पूर्णिमाको चम्बल-स्नानका मेला लगता है।

रामपुरा

शङ्खोद्धारसे ८ मीलपर रामपुरा है। यहाँ पर्वतपर श्रीकेदारेश्वरजीका मन्दिर एक गुफामें है। मन्दिरमें एक झरना गिरता है, उसकी धारा शिवलिङ्गपर पड़ती है। चैत्र-शुक्ला त्रयोदशीको मेला लगता है।

भिल्याखेड़ी

चंदवासासे ८ मील दूर भिल्याखेड़ी गाँव है। यहाँ भी गुफामें शिवलिङ्ग है। शङ्करजीके ऊपर एक झरनेका जल गिरता रहता है। इस मूर्तिको नालेश्वर महादेव कहते हैं। गुफामें पार्वती, गणेश, स्वामिकार्तिक, नन्दी तथा हनुमान्‌जीकी मूर्तियाँ भी हैं।

आँभी माता

चंदवासासे लगभग १६ मीलपर (भिल्याखेड़ीसे ८ मीलपर) आँतरी ग्राममें आँभी माताका प्रसिद्ध मन्दिर है। पौष-पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है। इस ओर इसकी मान्यता बहुत है।

इसी स्थानपर रेतम नदीके तटपर शङ्करजीका मन्दिर तथा महात्मा अनूपनाथजीकी समाधि है। इन महात्माने जीवित समाधि ली थी। चैत्र-शुक्ला ११ को समाधिपर मेला लगता है।

फलौदी माता-खैराबाद

(लेखक—श्रीसकलपंचजी मेड़तवाल)

नागदा-कोटाके मध्य रामगंज-मंडी स्टेशन है। स्टेशनसे १ मील पश्चिम यह स्थान है। माताजीकी मूर्ति मेड़ताके फलौदी ग्राममें प्रकट हुई थी। वहाँसे रथपर यहाँ लायी गयी। यहाँ माताजीका भव्य मन्दिर है। मन्दिरके सामने कुण्ड है। पास ही धर्मशाला है। मन्दिरमें माताजीकी मनोहर मूर्ति है। पास ही बालमुकुन्दकी प्रतिमा है। सिंहस्थमें मेला लगता है।

चारभुजाजी

खैराबादसे १४ मील पश्चिम जंगलमें चारभुजाजीका मन्दिर है। धर्मशाला भी वहाँ है। जन्माष्टमीको मेला लगता है। समीपमें कुण्ड है। आस-पास अनेक मन्दिरोंके भग्नावशेष हैं।

ताखेश्वर

खैराबादसे ७ मील दक्षिण-पश्चिम एक प्राकृतिक कुण्डसे ताखली नदी निकलती है। कुण्डके ऊपरसे जल गिरता है। समीप ही ताखेश्वरका मन्दिर है। यह प्राचीन मन्दिर कलापूर्ण है। वैशाख-पूर्णिमापर मेला लगता है।

शङ्खोद्धार-तीर्थ

(लेखक—पं० श्रीरामनिवासजी शर्मा)

झालावाड़ जिलेमें झालरापाटनके दक्षिण चन्द्रभागा नदीके तटपर यह शङ्खोद्धार तीर्थ है। स्कन्दपुराणके अनुसार प्राचीन कालमें अन्धक नामका महाप्रतापी असुर था। जब देवता उसके अत्याचारसे तंग आ गये और उसने स्वर्गपर आक्रमण कर दिया, तब भगवान् शङ्करने उसका वध किया। असुरको मारकर जहाँ खड़े होकर भगवान् शङ्करने शङ्खध्वनि की थी, वही क्षेत्र शङ्खोद्धार-तीर्थ है। चतुर्दशी और अष्टमीको यहाँ स्नानका विशेष माहात्म्य है।

यहाँ एक प्राचीन सूर्य-मन्दिर है। कहा जाता है कि इन्द्रसे अर्जुनने सूर्य-प्रतिमा प्राप्त की और उसे यहाँ स्थापित किया था। इस मन्दिरकी कलाको देखने देश-विदेशसे दूर-दूरके यात्री आते रहते हैं।

बदराना

(लेखक—स्वामी श्रीहरदेवपुरीजी)

राजस्थानमें झालावाड़से कुछ मील दूर बदराना गाँव है। यहाँ दो नदियोंके संगमपर श्रीहरि-हरेश्वरजीका मन्दिर है। इस मन्दिरकी श्रीमूर्तिका आधा भाग शिव-स्वरूप तथा आधा विष्णुस्वरूप है। दाहिनी ओर दो भुजा हैं, जिनमेंसे ऊपरके हाथमें भस्मका गोला और नीचेके हाथमें त्रिशूल है। इस भागमें कटिमें एक सर्प लिपटा है और मस्तकपर जटामें गङ्गाजी हैं, ललाटमें चन्द्रमा हैं। वाम भागमें ऊपरके हाथमें चक्र तथा नीचेके हाथमें शङ्ख है। मन्दिरमें ही नन्दीश्वर तथा गरुड़की मूर्तियाँ हैं।

इस मन्दिरके समीप मारुति-मन्दिर है और उसके पास धर्मशाला है। इस स्थानके दक्षिण श्रीनीलकण्ठ महादेवका मन्दिर है।

यहाँ अन्नकूट, होली तथा चैत्रशुक्ला प्रतिपदाको मेला लगता है। उदयपुरसे यहाँतक बस आती है।

गोपेश्वर

बदरानासे दक्षिण ४ मीलपर मगवास नामक ग्राम है। यहाँसे पूर्व १ मील दूर पर्वतपर गोपेश्वर-शिवमन्दिर है। यह मन्दिर पर्वतको काटकर बनाया गया है। पर्वतकी शिलाको ही काटकर पूरा मन्दिर, खंभे तथा शिव-पार्वती एवं नन्दिकेश्वरकी मूर्तियाँ भी बनायी गयी हैं।

कमलनाथ

मगवाससे ६ मील दूर पर्वतपर कमलनाथ महादेवका मन्दिर है। दो मील पर्वतीय चढ़ाईका मार्ग है। मन्दिरके पास धर्मशाला है। वैशाख-शुक्ला पूर्णिमाको मेला लगता है। कहा जाता है कि महाराणा प्रताप अपने वनमें रहनेके दिनोंमें कुछ समय यहाँ रहे थे।

गोविन्द-श्याम

उदयपुरसे मगवासतक मोटर-बस आती है। इस मार्गमें ही बीचावेड़ा ग्राम मिलता है। यहाँपर श्रीगोविन्द-श्यामजीका मनोहर मन्दिर है। बीकानेर राजवंशके महाराज गोविन्दसिंहजी पैदल द्वारिका यात्रा कर रहे थे, तब यहाँ रात्रिमें रुके थे। रात्रिमें उन्होंने एक स्वप्न देखा। उस स्वप्नके अनुसार भूमि खुदवानेपर पर्याप्त धन निकला। उसी धनसे महाराजने यह मन्दिर बनवाकर उसमें ठाकुरजीकी चतुर्भुज मूर्ति स्थापित की।

अनादि कल्पेश्वर

(लेखक—श्रीभँवरसिंहजी)

इनको लोग धौलेश्वर भी कहते हैं; क्योंकि यह स्थान धवलागिरिपर है। बंबई-दिल्ली रेलवे-लाइनपर नागदासे २५ मील दूर विक्रमगढ़ अलोट स्टेशन है। स्टेशनसे १½ मील दूर यह स्थान है।

एक कुण्डमेंसे एक जलधारा बराबर निकलती है। कुण्डमें १० फुटकी ऊँचाईसे जल गिरता है। कुण्डके पास ही अनादि कल्पेश्वरका मन्दिर है। यह स्वयम्भूलिङ्ग है। यहाँ कुण्डका जल अनेक चर्मरोगोंका नाशक कहा जाता है।

नागेश्वर

(लेखक—पं० श्रीरतनलालजी द्विवेदी)

बंबई-दिल्ली लाइनपर नागदासे ३० मील दूर थुरिया स्टेशन है। स्टेशनसे दो मील दूर उन्हैल गाँवके उत्तर नागेश्वरकी मूर्ति है। यह १२ फुट ऊँची प्रतिमा है, जिसके मस्तकपर नागफण है। मूर्तिके दाहिने-बायें बहुत-सी छोटी-छोटी मूर्तियाँ हैं। जैन इसे अपना मन्दिर मानते हैं। सनातनधर्मी और जैन दोनों ही दर्शन-पूजन करने आते हैं। ठहरनेको धर्मशाला है। यहाँ गाँवमें दाऊजी, श्रीराम, सत्यनारायण, नृसिंह, शङ्कर, महाकाली तथा हनुमान्‌जीके मन्दिर हैं।

किशनगढ़

(लेखक—पं० श्रीश्यामसुन्दरजी गौड़ 'विशारद')

अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर अजमेरसे १८ मील दूर किशनगढ़ स्टेशन है। किशनगढ़में श्रीव्रजराजजीका मन्दिर है तथा वल्लभ-सम्प्रदायके कई मन्दिर हैं। श्रीमथुराधीशजी, मदनमोहनजी और गोकुलचन्द्रमाजीकी बैठकें हैं। यहाँ जैनोंका चिन्तामणिजीका मन्दिर है।

किशनगढ़ पिछले दिनोंतक राठौर वंशके राजाओंकी राजधानी रहा है, जो परम्परासे वल्लभकुलके शिष्य होते आये हैं। प्रसिद्ध भक्त राजा सावंतसिंहजी (नागरीदासजी) उसी परम्परामें थे।

(सिलोरा) गाल

किशनगढ़से ३ मील दूर सिलोरा स्थान है। पक्की सड़कका मार्ग है। यहाँ श्रीकल्याणरायजीका मन्दिर है। श्रीकल्याणरायजी (श्रीकृष्ण) का श्रीविग्रह व्रजमें गोवर्धनसे यहाँ यवनोंके शासन-कालमें लाया गया था।

यहाँपर श्रीवल्लभाचार्यजीका वह चित्रपट है, जिसे अकबर बादशाहने बनवाया था। यह चित्रपट कल्याणरायजीके मन्दिरमें ही विराजमान है। श्रीवल्लभाचार्यजीका यह एकमात्र वास्तविक हस्तचित्र है।

नाथद्वारा जाते समय यहाँ श्रीनाथजी वसन्तपञ्चमीसे दोलोत्सवतक विराजे थे। उस स्थानपर श्रीनाथजीकी बैठक है। पासमें गोपालजीका मन्दिर तथा कुण्ड है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं।

सलेमाबाद (परशुरामपुरी)

यह स्थान किशनगढ़से १० मील है। मोटर-बसका मार्ग है। यहाँ निम्बार्क-सम्प्रदायकी आचार्यगद्दी है। श्रीसर्वेश्वरजी तथा श्रीराधा-माधवके प्रसिद्ध मन्दिर हैं।

देवपुरी

किशनगढ़से ८ मील दूर यह ग्राम है। मोटर-बस चलती है। यहाँका सतीस्थान प्रसिद्ध है। दूर-दूरसे लोग दर्शनार्थ आते हैं।

पुष्कर

पुष्कर-माहात्म्य

दुष्करं पुष्करं गन्तुं दुष्करं पुष्करे तपः।
दुष्करं पुष्करे दानं वस्तुं चैव सुदुष्करम्॥
त्रीणि शृङ्गाणि शुभ्राणि त्रीणि प्रस्रवणानि च।
पुष्कराण्यादिसिद्धानि न विद्मस्तत्र कारणम्॥

(पद्मपुरा०आदिखं० ११। ३४-३५ महा० वन०— ८२। ८३, ३७)

'पुष्करमें जाना बड़ा कठिन है (बड़े सौभाग्यसे होता है)। पुष्करमें तपस्या दुष्कर है। पुष्करका दान भी दुष्कर है और पुष्करमें वास करना तो और भी दुष्कर है। पापोंके नाशक, देदीप्यमान तीन पुष्करक्षेत्र हैं, इनमें सरस्वती बहती है। ये आदिकालसे सिद्धतीर्थ हैं। इनके तीर्थ होनेका कोई (लौकिक) कारण हम नहीं जानते।'

जिस प्रकार देवताओंमें मधुसूदन सर्वश्रेष्ठ हैं, वैसे ही तीर्थोंमें पुष्कर आदितीर्थ है। कोई सौ वर्षोंतक लगातार अग्निहोत्रकी उपासना करे या कार्तिकी पूर्णिमाकी एक रात पुष्करमें वास करे, दोनोंका फल समान है—

यथा सुराणां सर्वेषामादिस्तु पुरुषोत्तमः।
तथैव पुष्करं राजंस्तीर्थानामादिरुच्यते॥

मध्यप्रदेश तथा राजस्थानके कुछ पवित्र स्थल

जैनतीर्थ, कुण्डलपुर
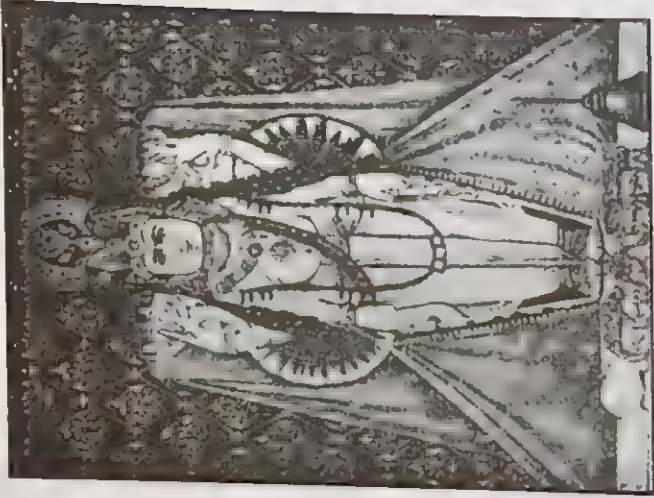
श्रीकल्याणजी महाराज, डिग्गी

श्रीखेजड़ाजी, नैरना

पश्चिमी भागसे लिया गया श्रीगलताजीका विहङ्गम-दृश्य

श्रीफलोदी माताजी, खैराबाद

श्रीश्यामजीका मन्दिर, खाटू

राजस्थानके कुछ पवित्र स्थल
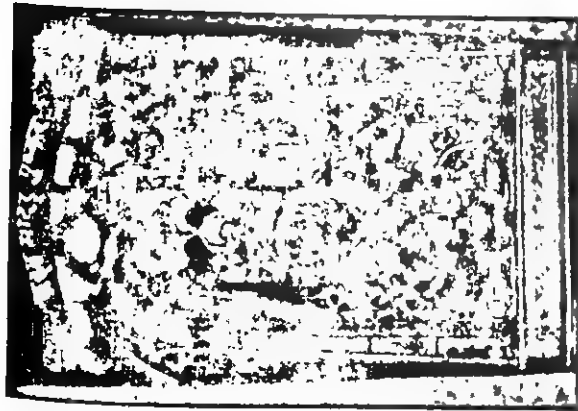
ब्रह्मा-मन्दिरके श्रीब्रह्माजी, पुष्कर

श्रीकरणीजीके मन्दिरका अग्रभाग, देशनोक
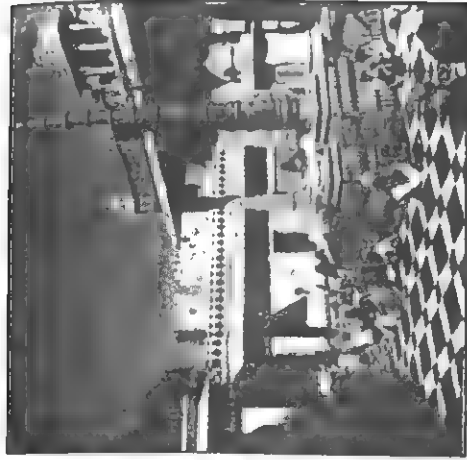
श्रीरङ्ग-मन्दिर, पुष्कर

भगवान् श्रीसर्वेश्वरजी (शालग्राम)
परशुरामपुरी

पुष्करराजका सरोवर
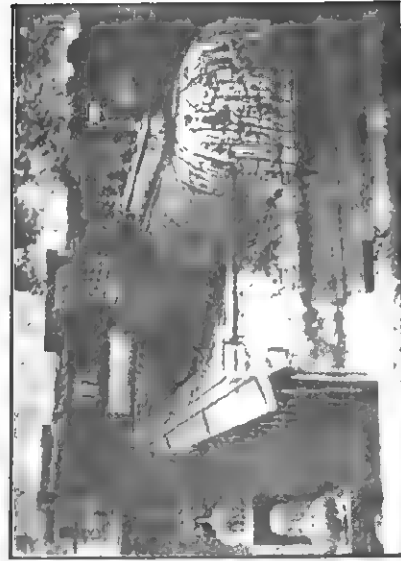
श्रीरामधामके दिव्य दर्शन, सिंहस्थल

यस्तु वर्षशतं पूर्णमग्निहोत्रमुपाचरेत्।
कार्तिकीं वा वसेदेकां पुष्करे सममेव तत्॥

(पद्म० आदि० ११। महा० तीर्थया० ८२)

पुष्कर

पुष्कर तीर्थोंके गुरु माने जाते हैं—उसी प्रकार जैसे प्रयाग तीर्थराज हैं। इसलिये लोग इस तीर्थको पुष्करराज भी कहते हैं। पुष्करकी गणना पञ्चतीर्थोंमें भी है और पञ्चसरोवरोंमें भी। पञ्चतीर्थ ये हैं १-पुष्कर, २-कुरुक्षेत्र, ३-गया, ४-गङ्गाजी, ५-प्रभास। पञ्चसरोवरोंके नाम इस प्रकार हैं—१-मानसरोवर (तिब्बतीय क्षेत्रमें हिमालयपर), २-पुष्कर, ३-बिन्दुसरोवर (सिद्धपुर), ४-नारायण-सरोवर (कच्छ), ५-पम्पा-सरोवर (हासपेटके पास अनागन्दी ग्रामसे २ मील)।

मार्ग—पश्चिमी रेलवेकी अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर अजमेर स्टेशन है। अजमेरसे पुष्कर ७ मील दूर है। अजमेरसे पुष्कर जानेके लिये ताँगे तथा मोटर-बसें भी जाती हैं। पुष्करतक पक्की सड़क है।

ठहरनेके स्थान

अजमेरमें—१-टीकमचंद सोनीकी धर्मशाला, स्टेशनके पास; २-रोलावालोंकी स्टेशनके पास; ३-श्रीउम्मेद-अभय धर्मशाला, स्टेशनके पास।

पुष्करमें—१-कामठीवालोंकी, वाराहघाट। २-बेरी-वालोंकी, बाराहघाट। ३-सौरियोंकी, श्रीरमावैकुण्ठ-मन्दिरके पास।

दर्शनीय स्थान

पुष्करके किनारोंपर गौघाट, ब्रह्मघाट, कपालमोचनघाट, यज्ञघाट, बदरीघाट, रामघाट और कोटितीर्थ-घाट पक्के बँधे हैं। पुष्कर सरोवरसे सरस्वती नदी निकलती है, जो साबरमतीसे मिलनेके बाद लूनी नदी कही जाती है।

पुष्कर सरोवर तीन हैं, ज्येष्ठ (प्रधान) पुष्कर, मध्य (बूढ़ा) पुष्कर और कनिष्ठ पुष्कर। ज्येष्ठपुष्करके देवता ब्रह्माजी हैं, मध्यपुष्करके देवता भगवान् विष्णु हैं और कनिष्ठपुष्करके देवता रुद्र हैं।

पुष्करका मुख्य मन्दिर ब्रह्माजीका मन्दिर है। यह सरोवरसे थोड़ी ही दूरीपर है। मन्दिरमें चतुर्मुख ब्रह्माजीकी दाहिनी ओर सावित्रीदेवी तथा बायीं ओर गायत्रीदेवीका मन्दिर है। पास एक ओर सनकादि मुनियोंकी मूर्तियाँ हैं। एक छोटे मन्दिरमें वहीं नारदजीकी मूर्ति है। एक मन्दिरमें हाथीपर बैठे कुबेर तथा नारदजीकी मूर्तियाँ हैं।

पुष्करका दूसरा मन्दिर श्रीबदरीनारायणजीका मन्दिर है। यहाँका प्राचीन वाराह-मन्दिर मुसलमान बादशाहीके समय नष्ट कर दिया गया था। अब जो वाराह-मन्दिर है, वह उसके बादका बना है। यहाँ बस्तीके बाहर आत्मेश्वर महादेवका मन्दिर भी मुख्य मन्दिरोंमें है। इन्हें लोग कपालेश्वर या अटपटेश्वर महादेव भी कहते हैं। इस मन्दिरमें जानेके लिये गुफाके समय सँकरे रास्तेसे होकर जाना पड़ता है। इन मन्दिरोंके अतिरिक्त श्रीरमावैकुण्ठ-मन्दिर उत्तम है। इसे श्रीरङ्गजीका मन्दिर कहा जाता है। पुष्करके किनारे अन्य अनेक मन्दिर हैं। लोग पुष्करकी परिक्रमा करते हैं। इस परिक्रमामें श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक आ जाती है। यह बैठक सरोवरके दूसरे किनारे है। पुष्करके पास शुद्धवापी नामका गया-कुण्ड है। यहाँपर लोग श्राद्ध करते हैं।

पुष्कर सरोवरसे एक ओर एक पर्वतकी चोटीपर सावित्री देवीका मन्दिर है। उसमें तेजोमयी सावित्री देवीकी प्रतिमा है। दूसरी ओर दूसरी पहाड़ीकी चोटीपर गायत्री-मन्दिर है। यह गायत्री-मन्दिर ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ सतीका मणिबन्ध गिरा था।

पुष्कर तीर्थसे कुछ दूर यज्ञ पर्वत है। यज्ञ पर्वतके पास अगस्त्यऋषिका आश्रम है और अगस्त्यकुण्ड है। पुष्करमें स्नान करके अगस्त्यकुण्डमें स्नान करनेसे ही पुष्करकी यात्रा पूर्ण मानी जाती है। यज्ञ पर्वतके ऊपरसे निकलते जलस्रोतका उद्‌गम परम पवित्र माना जाता है। उसका दर्शन ही पापनाशक कहा गया है। यहाँ गोमुखसे पानी गिरता है। यज्ञ पर्वतमें नीचे एक स्थानपर नागतीर्थ है, वहाँ नागकुण्ड है। नागपञ्चमीको नागकुण्डमें स्नान करके दूध चढ़ानेका माहात्म्य है। यहाँ नागकुण्ड, चक्रकुण्ड, सूर्यकुण्ड, पद्मकुण्ड तथा गङ्गाकुण्ड हैं।

पुष्करमें सरस्वती नदीके स्नानका सर्वाधिक महत्त्व है। यहाँ सरस्वतीका नाम प्राची सरस्वती है। यहाँ वे पाँच नामोंसे बहती हैं—१-सुप्रभा, २-काञ्चना, ३-प्राची, ४-नन्दा और ५-विशालिका। पुष्करका स्नान कार्तिक पूर्णिमाको सर्वाधिक पुण्यप्रद माना गया है। कार्तिक शुक्ला एकादशीसे पूर्णिमातक यहाँ मेला रहता है। पहले पुष्करमें बहुत मगर थे, किंतु अब वे निकाल दिये गये हैं। अब मगरोंका कोई भय नहीं है।

ज्येष्ठ (मुख्य) पुष्करसे दो मील दूर मध्यम (बूढ़ा) तथा कनिष्ठ पुष्कर हैं। बूढ़ा पुष्कर सरोवर विशाल है और बहुत गहरा है, उसके एक किनारे घाट बना है।

पुष्करतीर्थकी चार परिक्रमाएँ हैं। पहली (अन्तर्वेदी) परिक्रमा ६ मीलकी है। दूसरी (मध्यवेदी) परिक्रमा १० मीलकी, तीसरी (प्रधानवेदी) परिक्रमा २४ मीलकी और चौथी (बहिर्वेदी) परिक्रमा ४८ मीलकी है। इन परिक्रमाओंमें ऋषि-मुनियोंके आश्रम-स्थान हैं।

पुष्करसे लगभग १२ मील दूर प्राची सरस्वती और नन्दानदियोंका संगम होता है। पुष्करके पास नाग पर्वतपर बहुत-सी गुफाएँ हैं। उनमें भर्तृहरि-गुफा दर्शनीय है। वहीं भर्तृहरि-शिला भी है।

पौराणिक कथा

पद्मपुराणके अनुसार सृष्टिके आदिमें पुष्करतीर्थके स्थानमें वज्रनाभ नामक राक्षस रहता था। वह बालकोंको मार दिया करता था। उसी समय ब्रह्माजीके मनमें यज्ञ करनेकी इच्छा हुई। वे भगवान् विष्णुकी नाभिसे निकले कमलसे जहाँ प्रकट हुए थे, उस स्थानपर आये और वहाँ अपने हाथके कमलको फेंककर उन्होंने उससे वज्रनाभ राक्षसको मार दिया। ब्रह्माजीके हाथका कमल जहाँ गिरा था, वहाँ सरोवर बन गया। उसे पुष्कर कहते हैं।

चन्द्रनदीके उत्तर, सरस्वती नदीके पश्चिम, नन्दनस्थानके पूर्व तथा कनिष्ठ पुष्करके दक्षिणके मध्यवर्ती क्षेत्रको यज्ञवेदी बनाया। इस यज्ञवेदीमें उन्होंने ज्येष्ठपुष्कर, मध्यमपुष्कर तथा कनिष्ठपुष्कर—ये तीन पुष्करतीर्थ बनाये। ब्रह्माके यज्ञमें सभी देवता तथा ऋषि पधारे। ऋषियोंने आसपास अपने आश्रम बना लिये। भगवान् शङ्कर भी कपालधारी बनकर पधारे।

यज्ञारम्भमें सावित्रीदेवीने आनेमें देर की। यज्ञमुहूर्त बीता जा रहा था, इससे ब्रह्माजीने गायत्री नामकी एक गोपकुमारीसे विवाह करके उन्हें यज्ञमें साथ बैठाया। जब सावित्रीदेवी आयीं, तब गायत्रीको देखकर रुष्ट हो वहाँसे पर्वतपर चली गयीं, और वहाँ उन्होंने दूसरा यज्ञ किया। कहा जाता है कि यहीं भगवान् वाराह ब्रह्माजीके नासाछिद्रसे प्रकट हुए थे। अतः तीनों पुष्करतीर्थोंके अतिरिक्त ब्रह्माजी, वाराहभगवान्, कपालेश्वर शिव, पर्वतपर सावित्रीदेवी और ब्रह्माजीके यज्ञके प्रधान महर्षि अगस्त्य—ये इस क्षेत्रके मुख्य देवता हैं।

श्रीकरणीदेवी

बीकानेरसे मारवाड़ जंकशन जानेवाली लाइनपर बीकानेरसे २० मील दूर देशनोक-स्टेशन है। स्टेशनके पास ही श्रीकरणीदेवीका मन्दिर है। श्रीकरणीजी महामायाका अवतार मानी जाती हैं। स्टेशनके पास ही धर्मशाला है।

जोधपुरके सुआप गाँवमें लगभग ५०० वर्ष पूर्व मेहोजी नामके एक देवीभक्त चारण रहते थे। उनके ६ पुत्रियाँ थीं, पर पुत्र कोई नहीं था। पुत्र-प्राप्तिकी इच्छासे उन्होंने हिंगलाज जाकर देवीकी आराधना की। उनकी भक्तिसे प्रसन्न होकर देवीने दर्शन देकर वरदान माँगनेको कहा तो उन्होंने माँगा—'मेरा नाम चले।' देवीने 'एवमस्तु' कह दिया।

मेहोजीकी सप्तम पुत्रीके रूपमें स्वयं देवीने अवतार लिया। नवजात बालिकाने प्रसूति-गृहमें ही अपनी माताको चतुर्भुजरूपमें दर्शन दिया। इस बालिकाका नाम रिधुबाई रखा गया। रिधुबाईका ही एक नाम 'करणी' था। वही नाम प्रसिद्ध हो गया। बचपनसे ही करणीजीने अनेकों चमत्कार दिखाये।

युवा होनेपर पिताने करणीजीका विवाह साठीग्रामके दीपोजीसे कर दिया। विवाहके पश्चात् करणीजीने दीपोजीको अपने देवीरूपका दर्शन देकर बता दिया कि उन्हें वंश चलानेके लिये दूसरा विवाह करणीजीकी बहिनसे कर लेना चाहिये। दीपोजीने उनकी बहिन गुलाबसे विवाह कर लिया, जिससे उन्हें चार पुत्र हुए।

एक अकालके समय गायोंके साथ करणीदेवी साठी ग्राम छोड़कर नेड़ी स्थानपर आयीं, जो देशनोकके निकट ही है। वहाँ वे कुछ काल रहीं। वहाँ उन्होंने अपनी नेड़ी (मथानी) गाड़ दी थी, जो हरी हो गयी। वह खेजड़ी वृक्षके रूपमें आज भी वर्तमान है। वहाँसे वे देशनोक आयीं। इस स्थानपर वे ५० वर्ष रहीं।

जैसलमेर-नरेशकी पीठमें फोड़ा हो गया था, जो असाध्य था। नरेशने देवीजीको बुलवाया। इस यात्रामें चारणबास गाँवके पास एक सरोवरके जलसे स्नान

करके देवीजीने शरीर त्याग दिया। वहाँ देवीजीका स्मारक है।

देवीजीकी आज्ञासे जैसलमेरके बन्ना नामक सुथार (बढ़ई) ने उनकी मूर्ति बनाकर देशनोक पहुँचायी। वही मूर्ति देशनोकमें प्रतिष्ठित है।

श्रीकरणीजीके बहुत अधिक चमत्कार लोकमें परिचित हैं। उन्हींके आशीर्वादसे बीकानेर-राज्यकी स्थापना हुई थी। बीकानेर-नरेशोंकी वे कुलदेवी हैं। श्रीकरणीजीका मन्दिर विशाल है। प्रवेशद्वारसे भीतर जाते ही योगमायाके दर्शन होते हैं। स्वर्णके सिंहासनपर करणीजीकी मूर्ति विराजमान है। इस मन्दिरमें चूहे बहुत अधिक हैं। उनको दबनेसे बचाकर चलना पड़ता है। वे पवित्र माने जाते हैं। यात्री इन्हें भोजन देते हैं। चूहोंको काबा कहा जाता है।

सतलाना

मारवाड़ जंक्शनसे बीकानेर जानेवाली लाइनपर लूनी स्टेशनसे एक लाइन मुनाबावतक गयी है। इस लाइनपर लूनीसे ३ मील दूर सतलाना स्टेशन है। यहाँ सरोवरके ऊपर श्रीनीलकण्ठ महादेवका मन्दिर है। इस मन्दिरका शिवलिङ्ग हरे वर्णका है और उसमें चन्द्रमा तथा त्रिपुण्ड्र नैसर्गिक रूपमें बने हैं। ऐसी दिव्य मूर्ति अन्यत्र दुर्लभ है। यह स्वयम्भू-लिङ्ग है।

जोधपुरके दो तीर्थ

(लेखक—पं० श्रीलेखराजजी शास्त्री साहित्यरत्न)

समुजेश्वर

यह स्थान जोधपुरसे ३२ मील पश्चिम है। जोधपुरसे बाड़मेर और रानी-बाड़ा जाते समय बीचमें धुंदाड़ा स्टेशन पड़ता है। उक्त स्टेशनसे यह स्थान ४ मील दूर है।

यहाँसे १ मील उत्तर लूनी नदी है। समुजेश्वरका मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है। मन्दिरके आसपास कई शिलालेख और भग्न मूर्तियाँ मिलती हैं। यहाँ श्रावणके प्रथम सोमवारको मेला लगता है।

यहाँ श्रावणमें मूर्तिपर चाहे जितना जल चढ़े, मन्दिरसे बाहर नहीं आता, किन्तु अन्य महीनोंमें जल चढ़ाये बिना भी जल मूर्तिके नीचेसे निकलता रहता है।

धुंदाड़ा

यहाँ वेरीश्वर और लूणकेश्वर—ये दो मन्दिर हैं। यहाँसे ४ मील दूर योगेन्द्र भारतीका प्रसिद्ध मठ है। यह मठ लूनी नदीके बीचमें है। धुंदाड़ासे दो मील दक्षिण-पश्चिम रामपुरा है। यहाँ रामदेवजीका मन्दिर है, जिन्हें लोग रामसा पीर कहते हैं।

ओसियाँ

(लेखक—श्रीअचलदासजी बुरड़)

राजस्थानमें जोधपुर-पोकरण लाइनपर जोधपुरसे ३९ मील दूर ओसियाँ स्टेशन है। स्टेशनसे आध मीलपर ओसियाँ ग्राम है। इस स्थानके प्राचीन नाम अकेश, उरकेश, नवनेरी तथा मेलपुरपत्तन हैं। यह स्थान पुरातत्त्व-विभागकी सूचीमें होनेसे देशी-विदेशी पर्यटक यहाँ आते रहते हैं। यात्रियोंके ठहरनेकी उत्तम व्यवस्था है।

यहाँ प्राचीन मन्दिरोंके अनेक भग्नावशेष हैं। यहाँ शिव, विष्णु, सूर्य, ब्रह्मा, अर्धनारीश्वर, हरिहर, नवग्रह, दिक्पाल, श्रीकृष्ण तथा देवीके अनेक रूपोंकी मूर्तियाँ विभिन्न मन्दिरोंमें मिलती हैं। ओसियाँसे जोधपुर जानेवाली सड़कके पास दोनों ओर बहुत-से प्राचीन मन्दिर हैं। इन मन्दिरोंमें श्रीकृष्णलीलाकी बड़ी सुन्दर मूर्तियाँ हैं। ओसियाँ ग्रामके अंदर सूर्यमन्दिर और पिप्पलाद माताके मन्दिर प्रमुख माने गये हैं। इनमें गान्धार कलाका उत्तम आदर्श है।

हिंदू-मन्दिरोंमें यहाँ अब अच्छी दशामें एक सचिया माताका मन्दिर ही है। यहाँ आस-पासके लोग बच्चोंका मुण्डन-संस्कार कराने आते हैं। यह मन्दिर ऊँची पहाड़ीपर परकोटेसे घिरा है। महिषमर्दिनी देवीको ही यहाँ सचिया माता कहते हैं। इस मन्दिरके आस-पास अनेक प्राचीन मन्दिर जीर्ण दशामें हैं।

जैनतीर्थ

ओसियाँ ओसवाल जैनोंका उत्पत्तिस्थान है। जैन-मन्दिरोंमें भी अब अच्छी दशामें श्रीमहावीरका मन्दिर ही है, यह मन्दिर परकोटेसे घिरा है। इस प्राचीन मन्दिरका तोरण अत्यन्त भव्य है। स्तम्भोंपर तीर्थंकरोंकी प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं।

खेड़पा-रामधाम

(लेखक—श्रीहरिदासजी दर्शनायुर्वेदाचार्य, बी० ए०)

जोधपुरसे नागौर जानेवाली पक्की सड़कपर यह स्थान जोधपुरसे ३७ एवं नागौरसे ४७ मील दूर है। बराबर मोटर-बस चलती है। तीर्थमें यात्रियोंके ठहरनेकी सुविधा है। यह रामस्नेही-सम्प्रदायका तीर्थ है। रामस्नेही-सम्प्रदायके आचार्य श्रीरामदास महाराज, दयाल महाराज आदिकी यह तप:स्थली है।

यहाँ राम-मन्दिरमें आचार्य श्रीरामदासजीकी चरण-पादुकाएँ, माला तथा शरीरके वस्त्र प्रतिष्ठित हैं। उनकी पूजा होती है। यहाँ अखण्ड दीप जलता है। पास ही दिव्य देवल है, जिसमें आचार्यचरण तथा उनके शिष्योंकी समाधियाँ हैं। यहाँ एक स्तम्भमें कई करोड़ लिखित रामनाम प्रतिष्ठित हैं। पासमें एक कुण्ड है। पासके पर्वतमें एक गुफा है। श्रीदयालजीने उसमें तपस्या की थी। होलीपर यहाँ मेला लगता है।

खेड़ (क्षीरपुर)

(लेखक—श्रीरामकर्णजी गुप्त, बी०काम०, एल्-एल्० बी०, एडवोकेट)

वह स्थान जोधपुर राज्यमें उत्तर-रेलवेकी लूनी-मुनाबाव लाइनपर लूनीसे ५० मील दूर बालोतरा स्टेशनसे लगभग ५ मील पश्चिम लूनी नदीके किनारे है। अब खेड़मन्दिर-हाल्ट स्टेशन मन्दिरके पास बन गया है। बालोतरासे खेड़मन्दिरतक पक्की सड़क है। मन्दिरके पास यात्रियोंके ठहरनेके लिये कोठरियाँ हैं।

किसी समय खेड़ एक विशाल नगर और महान् तीर्थ था। यहाँके खँडहर और भग्न मूर्तियाँ इस बातकी साक्षी हैं। वर्तमान समयमें यहाँ श्रीरणछोड़रायजीका विशाल मन्दिर है और उसके आस-पास तीन छोटे जीर्ण मन्दिर हैं।

श्रीरणछोड़रायजीके मन्दिरमें श्रीकृष्णकी चतुर्भुज संगमरमरकी मनोहर मूर्ति है। मन्दिरके गर्भगृहके परिक्रमा-मार्गमें आठों दिक्पाल, वाराह, नृसिंह, गणेश, दत्तात्रेय, सूर्य एवं चन्द्रकी मूर्तियाँ हैं। गवाक्षोंके स्तम्भोंपर अष्ट सिद्धियोंकी कलापूर्ण मूर्तियाँ थीं, जिनमेंसे तीन अब टूट चुकी हैं।

रणछोड़जीके सभामण्डपसे बाहर ब्रह्माजीका तथा शङ्करजीका मन्दिर है। सामने दीवारसे लगी भगवान् विष्णुकी शेषशायी मूर्ति है। उत्तर एक मन्दिरमें हनुमान्‌जीकी विशाल मूर्ति है। मुख्य मन्दिरके शिखरके मध्यमें एक छोटी खिड़की है, जिसे 'पाप-पुण्य' की बारी कहते हैं। इससे प्राय: लोग पार निकलते हैं। मन्दिरसे कुछ दूरीपर पापेलाव सरोवर है।

मन्दिरसे दक्षिण एक भग्न मन्दिरमें पञ्चमुख शिवलिङ्ग है। समीप ही चामुण्डा देवीका मन्दिर था। उसमें अष्टभुजा देवीकी दो मूर्तियाँ थीं। उस मन्दिरके नष्ट हो जानेसे दोनों देवी-मूर्तियाँ अब श्रीरणछोड़रायजीके मन्दिरके चौकमें स्थापित हैं।

प्रत्येक पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है। माघ मासमें रबारी जातिके लोग यहाँ अपने बालकोंका मुण्डन-संस्कार कराने आते हैं। वे लोग रणछोड़जीको 'भूरियाबाबा' और हनुमान्‌जीको 'खोड़ियाबाबा' कहते हैं।

रामदेवरा

(लेखक—पं० श्रीराधाकृष्णजी पुरोहित)

राजस्थानमें उत्तर-रेलवेकी एक शाखा जोधपुरसे-पोकरणतक गयी है। पोकरणसे ७ मील पहिले रामदेवरा स्टेशन है। यहाँ संत रामदेवजीकी समाधि है। एक रास्ता बीकानेरसे भी है। वहाँसे लोग बैलगाड़ियोंद्वारा अथवा मोटर-बससे रामदेवरा जाते हैं। इन्हें लोग द्वारकाधीश-भगवान्का अवतार मानते हैं। यहाँ संत रामदेवजीने जीवित समाधि ली थी। स्टेशनसे समाधि-मन्दिर पास ही है। यह स्थान इधर बहुत प्रसिद्ध है। दूर-दूरके यात्री आते हैं। समाधि-मन्दिरके पास सरोवर है, जिसे रामसरोवर कहते हैं और जो स्वयं रामदेवजीका बनवाया हुआ बताया जाता है। भाद्र-शुक्लपक्ष तथा माघशुक्लपक्षमें प्रतिपदासे एकादशीतक मेला लगता है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं।

कहा जाता है कि भगवान् श्रीरामने समुद्र-शोषणके लिये जो बाण धनुषपर चढ़ाया था, समुद्रकी प्रार्थनापर उन्होंने उसे समुद्रके उत्तरतटके राक्षसोंके बधार्थ छोड़ दिया। वह बाण यहीं गिरा था। उससे पाताल फटकर जलधारा निकली। वह धारा अब भी विद्यमान है। वहाँ जलतक जानेको सीढ़ियाँ बनीं हैं।

पोकरन—रामदेवरासे ६ मील दक्षिण यह स्थान है। मोटर-बस जाती है। यहाँ संत योगी बालानाथजीका मठ तथा धूनी है। बालानाथजी संत रामदेवजीके गुरु थे।

हुणगाँव

(लेखक—श्रीशिवसिंह मल्लारामजी चोयल)

उत्तरी रेलवेकी मारवाड़ जंकशनसे बीकानेर जानेवाली लाइनपर जोधपुरसे १९ मीलपर पीपाड़रोड स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन बिलाड़ातक गयी है। बिलाड़ासे १८ मील दूर हुणगाँव एक छोटा ग्राम है। यहाँकी होली प्रसिद्ध है।

हुणगाँवमें होलीका डाँड़ा—होली जलानेके लिये गाड़ी गयी खेजड़ी शमीकी डाल—हरा हो गया और वह अबतक हरा वृक्ष है। यहाँ श्यामजीका प्राचीन मन्दिर है। कहा जाता है कि यह चतुर्भुजमूर्ति भूगर्भमें पायी गयी थी। एक कुम्हार-कन्याको आदेशके द्वारा ज्ञात हुआ कि भूमिमें मूर्ति है। उसके बताये स्थानको खोदनेसे मूर्ति मिली। यह घटना कई सौ वर्ष पूर्वकी है। श्यामजीके मन्दिरमें भक्त नामदेवजीद्वारा स्थापित श्यामजीकी एक मूर्ति और भी है। यहाँ आश्विन-पूर्णिमाको मेला लगता है।

हुणगाँवके पास जोगेसरों (योगेश्वरों) की समाधियाँ हैं। ये समधियाँ सरोवरके पास हैं। यहाँ दो योगियोंने जीवित-समाधि ली थी। यहाँ समाधिके दर्शन तथा मयूरोंको दाना चुगाने लोग आते हैं।

बाणगङ्गा-बिलाड़ा

(लेखक—श्रीसिरेहमलजी पंचोली)

मार्ग-पीपाड़रोडमें एक लाइन बिलाड़ातक जाती है। स्टेशनसे बाणगङ्गा एक मील दूर है। सवारियाँ मिलती हैं।

दर्शनीय स्थान—बाणगङ्गा एक सरोवर है, जो चारों ओरसे पक्का बँधा है। इसमें भूमिके नीचेसे जल आता रहता है, जो एक नहरद्वारा १६-१७ मीलतक जाता है। सरोवरके आस-पास गङ्गेश्वर महादेव और कालीजीके मन्दिर हैं तथा और कई मन्दिर हैं। कार्तिक-पूर्णिमाको यहाँ मेला लगता है।

कहा जाता है कि यह प्रह्लादजीके पुत्र दैत्यराज विरोचनका स्थान है। यह भी कहा जाता है कि विरोचनकी नौ रानियाँ उनके साथ सती हो गयी थीं। उनकी स्मृतिमें चैत्र-अमावस्याको यहाँ नौ सतियोंका मेला लगता है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशालाएँ हैं।

बिलाड़ाके पास एक पहाड़ी है, जिसे राजा बलिकी टेकरी कहते हैं। विरोचनके पुत्र बलिने वहाँ ५ अश्वमेध

यज्ञ किये थे—ऐसी मान्यता है। टेकरीपर घृत-तलाई है। बलिने ही बाण मारकर बाणगङ्गा प्रकट की है, ऐसा लोग मानते हैं।

सोजत

बिलाड़ासे १६ मीलपर यह कस्बा है। यहाँके लोग मानते हैं कि बलिके पुत्र बाणासुरकी राजधानी शोणितपुर यही है। यहीं बाणासुरकी पुत्री ऊषासे अनिरुद्धका विवाह हुआ था। यहाँ बालेश्वर (बाणेश्वर) महादेवका मन्दिर है। माघमें मेला लगता है।

रेण

(लेखक—श्रीआनन्दरामजी रामसनेही)

मारवाड़-जंकशनसे बीकानेर जानेवाली रेलवे-लाइनपर मेड़तारोड स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन कुचामन-रोड जाती है। इस लाइनपर मेड़तारोडसे १२ मीलपर 'रेन' स्टेशन है। स्टेशनसे एक मील दूर दरियावजी महाराजकी समाधि है। पासमें लाखोला रामसरोवर है। यह स्थान रामसनेही सम्प्रदायका आचार्यपीठ है। समाधिस्थान विशाल है। मार्गशीर्ष तथा चैत्रकी पूर्णिमाओंको महोत्सव होता है।

कहते हैं महात्मा दादूजी जब यहाँ पधारे थे, तभी उन्होंने यहाँ एक संतके उत्पन्न होनेकी भविष्यवाणी की थी। उसके सात वर्ष बाद यहाँ दरियावजी महाराजका जन्म हुआ। यहीं उनकी तपोभूमि भी है।

दधिमती

(लेखक—पं० श्रीनरसिंहदासजी दाधीच और पं० श्रीहनुमद्दत्तजी शास्त्री)

उत्तर-रेलवेकी मारवाड़ जंकशन-बीकानेर जानेवाली लाइनके नागौर स्टेशनपर उतरकर मोटर-बससे रोलगाँवतक जाया जा सकता है। रोलगाँवसे दधिमती-मन्दिर ६ मील है। यह मन्दिर गोटमाँगलोद गाँवके पास है। दोनों नवरात्रोंमें यहाँ मेला लगता है।

गोटमाँगलोद गाँवके पास कपालकुण्ड-तीर्थ है। यह पक्का सरोवर है। उसके पास ही दधिमती देवीका मन्दिर है।

कहा जाता है कि महर्षि दधीचिका आश्रम मिश्रिख (नैमिषारण्य) में था। दधिमती देवी महर्षि दधीचिकी आराध्या हैं; जिन्होंने देवताओंको अस्थि-दान किया था।

कथा है कि विकटासुर नामक दैत्य संसारके समस्त पदार्थोंका सार तत्त्व चुराकर दधिसागरमें जा छिपा था। देवताओंकी प्रार्थनापर महर्षि अथर्वाकी पत्नी शान्तिकी गोदमें स्वयं आदिशक्ति कन्यारूपसे अवतरित हुईं। उन्होंने दधिसागरका मन्थन करके विकटासुरका वध किया। इससे सब पदार्थ पुनः सत्त्वयुक्त हुए।

ये ही देवी त्रेतायुगमें महाराज मान्धाताके यज्ञकुण्डसे माघशुक्ला ७ को प्रकट हुईं। वह यज्ञकुण्ड ही अब कपालतीर्थ कहा जाता है। यह कुण्ड सर्वतीर्थस्वरूप है। यहाँ मन्दिरमें देवीका केवल शिरोभाग प्रतिष्ठित है, इससे इसे कपालपीठ कहते हैं। नवरात्रोंमें मेले लगते हैं। मन्दिरमें ही यात्रियोंके ठहरनेका स्थान है। इसे गायत्रीका सिद्धक्षेत्र कहा जाता है।

कौलायत

बीकानेरसे एक रेलवे-लाइन कौलायततक जाती है। स्टेशनका नाम श्रीकौलायतजी है। यहाँ बहुत बड़ा सरोवर (झील) है। यहाँका मुख्य-मन्दिर श्रीकपिलमुनिका मन्दिर है। उसके अतिरिक्त और भी कई मन्दिर तथा धर्मशालाएँ हैं। कहा जाता है, यहाँ भगवान् कपिलका आश्रम था। राजस्थानका यह प्रख्यात तीर्थस्थान है। इसका प्राचीन नाम कपिलायतन है, जो पुराणप्रसिद्ध है। कार्तिकी पूर्णिमाको बहुत बड़ा मेला लगता है। यहाँ महाराष्ट्रके प्रसिद्ध संत श्रीज्ञानेश्वर महाराज तथा नामदेवजी भी पधारे थे।

पासमें ही जागेरी नामका तालाब है। यहाँ याज्ञवल्क्य मुनिका आश्रम था—ऐसी लोगोंकी मान्यता है।

राजस्थानके कुछ पवित्र स्थल

श्रीद्वारकाधीश-मन्दिर, काँकरोली

श्रीकौलायत (कपिलायतन)-तीर्थ
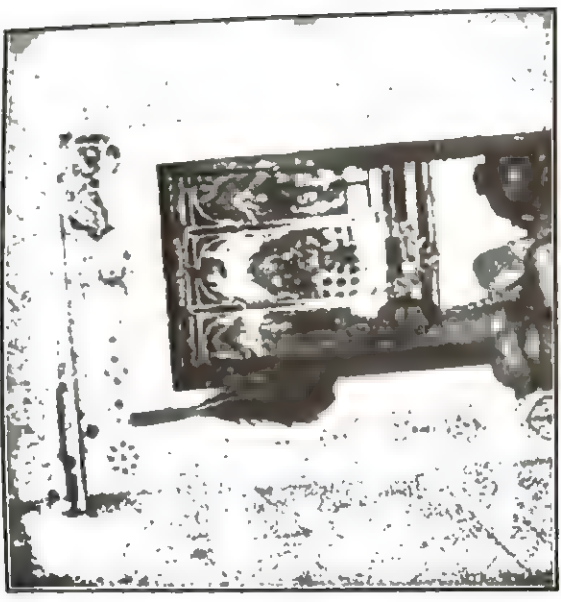
श्रीकौलायतजीका श्रीकपिलदेव-मन्दिर
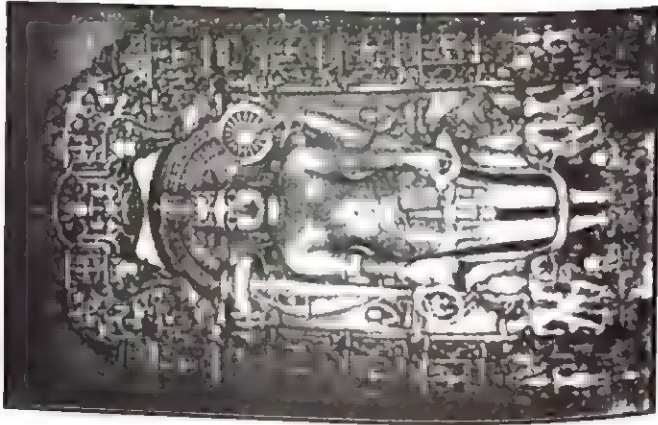
श्रीरणछोड़रायजी, खेड

श्रीसाँभरा माता, खेड (क्षीरपुर)

रामद्वारा, शाहपुराका मुख्य भवन

मेवाड़के कुछ पवित्र स्थल

श्रीएकलिङ्ग-मन्दिर, उदयपुर

जौहरका स्थान, चित्तौड़गढ़
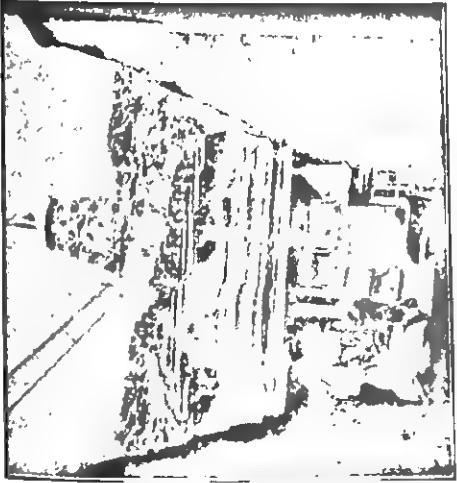
महाराना कुम्भाका वाराह-मन्दिर, चित्तौड़गढ़
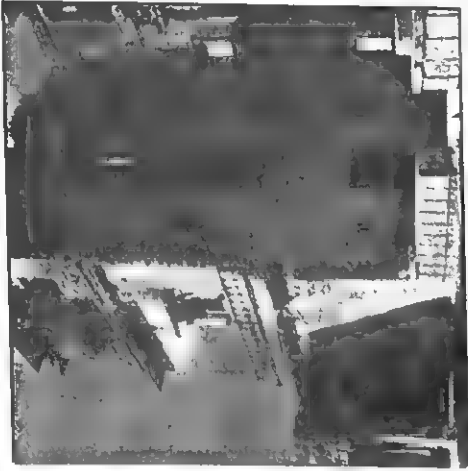
महाराणा प्रतापका जन्म-स्थान, चित्तौड़गढ़
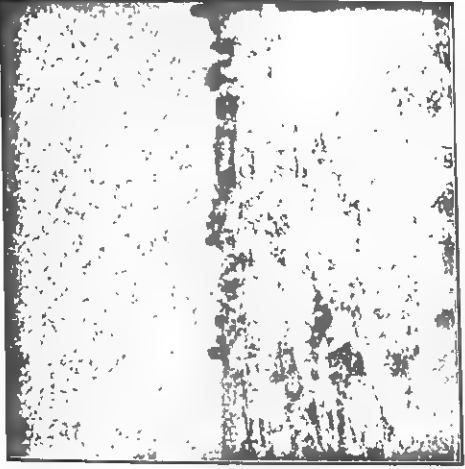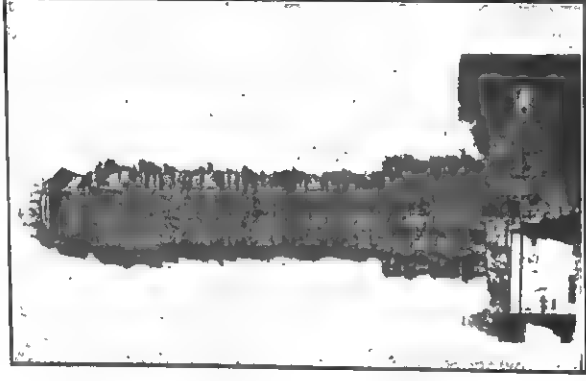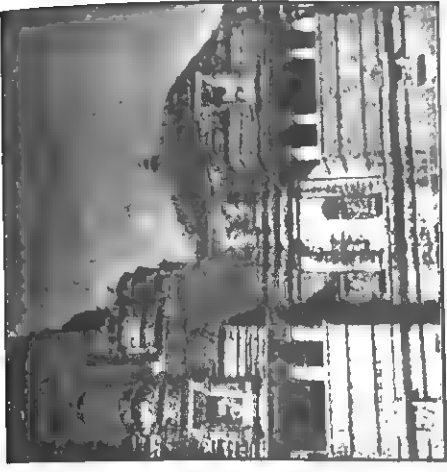
विजयस्तम्भ, चित्तौड़गढ़

मीराबाईका मन्दिर, चित्तौड़गढ़

सिंहस्थल

(लेखक—श्रीभगवद्दासजी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य)

बीकानेरसे दिल्ली जानेवाली लाइनपर बीकानेरसे १७ मील दूर नापासर स्टेशन है। स्टेशनसे २ मील पूर्व सींथल (सिंहस्थल) ग्राम है। रामस्नेही सम्प्रदायका यह प्रधान तीर्थ है। यहाँ आचार्य श्रीहरिरामदासजीने अपना प्रायः पूरा जीवन व्यतीत किया है। यहीं उनका साकेतवास हुआ। यहाँ उन्हींका मन्दिर है, जिसमें उनका दुपट्टा तथा पगड़ी सुरक्षित हैं। पासमें ही श्रीहरिरामदासजी महाराजकी समाधि है। चैत्र नवरात्रमें विशेष समारोह होता है।

कोडमदेसर

बीकानेरसे १४ मील पश्चिम मोटर-रोडपर कोडमदेसर ग्राम है। विशाल सरोवरके समीप संत माधवदासजी महाराजकी धूनी है। यहाँ श्रीमाधवदासजीकी समाधि है तथा उनकी धूनी है और भैरवका प्रसिद्ध मन्दिर है। भैरवजीके दर्शन करने दूर-दूरसे यात्री आते हैं। यहाँ बीकानेरके तथा आसपासके लोग अपने बालकोंका मुण्डन कराते तथा मनौती मानते हैं। भाद्र शुक्ला १२ को बड़ा मेला लगता है।

पूनरासर

देहरी-बीकानेर लाइनपर बीकानेरसे ३१ मील पहिले सूडसर स्टेशन है। वहाँसे १० मील पूर्व यह स्थान है। यहाँ श्रीहनुमान्‌जीका विशाल मन्दिर है। इस मन्दिरके हनुमान्‌जीकी मान्यता इस प्रदेशमें बहुत है। यहाँ यात्रियोंके रहनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं। स्टेशनसे इस स्थानतक कच्ची सड़क है। हनुमज्जयन्तीपर मेला लगता है।

डीडवाना

राजस्थानमें डेगाना-रतनगढ़ लाइनपर सुजानगढ़से २४ मील दूर डीडवाना स्टेशन है। डीडवाना संस्कृत-विद्याका प्राचीन केन्द्र है। यहाँ श्रीजानकीवल्लभजीका मन्दिर बड़े स्थानके नामसे विख्यात है। यह बहुत प्राचीन मन्दिर है। स्वामी श्रीहरिरामाचार्यजीने इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा की थी। इस मन्दिरको लोग झालरिया-मन्दिर भी कहते हैं। निज-मन्दिरमें श्रीजानकीवल्लभजीका भव्य श्रीविग्रह प्रतिष्ठित है।

बड़ी सादड़ी

(लेखक—श्रीसूरचंदजी प्रेमी 'डाँगीजी')

अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर मारवाड़ जंक्शनसे एक लाइन मावलीको गयी है और मावलीसे एक लाइन बड़ी सादड़ीतक जाती है। बड़ी सादड़ी प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। यहाँका बड़ा मन्दिर अपनी भव्यताके लिये प्रसिद्ध है। दूर-दूरके यात्री यहाँ आते हैं।

मन्दिरमें प्रवेश करते ही तुलसीचौरेके आगे भगवान् शङ्करके लिङ्ग-विग्रहका दर्शन होता है। उनके दाहिनी ओर हनुमान्‌जी तथा बायीं ओर गणेशजीकी मूर्तियाँ हैं। निजमन्दिरमें भगवान् नारायण तथा राधा-कृष्णकी श्रीमूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।

मन्दिरके ऊपरी भागमें श्रीकृष्णचन्द्रकी रासलीलाके दृश्य अङ्कित हैं। मन्दिरके पीछेके भागमें सूर्य तथा लक्ष्मीजीके पृथक् मन्दिर बने हैं।

आस-पास उपवन, वापियाँ, सरोवर तथा अन्य अनेकों भवन हैं।

नाथद्वारा

पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर मारवाड़ जंकशन है। मारवाड़से एक लाइन मावलीतक जाती है। मावलीसे १० मील पहले नाथद्वारा है और नाथद्वारासे ९ मीलपर कौकरोली स्टेशन है। नाथद्वारा स्टेशनसे नगर लगभग ४ मील दूर है। स्टेशनसे नगरतक बस चलती है। उदयपुरसे मोटर-बस नाथद्वारा आती है। रास्तेमें श्रीनाथजीकी बहुत बड़ी गोशाला है। नाथद्वारामें यात्रियोंके ठहरनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं। बारहों महीने यहाँ यात्रियोंकी बड़ी भीड़ रहती है।

यहाँका मुख्य मन्दिर श्रीनाथजीका है। यह वल्लभसम्प्रदायका प्रधान पीठ है। भारतके प्रमुख वैष्णव पीठोंमें इसकी गणना है। यहाँके आचार्य श्रीवल्लभाचार्यजीके वंशजोंमें तिलकायित माने जाते हैं। यह मूर्ति गोवर्धनपर व्रजमें थी। श्रीवल्लभाचार्यजीके सामने ही यह श्रीविग्रह स्वयं प्रकट हुआ था। स्वयं आचार्य महाप्रभु, उनके पुत्र गुसाईंजी श्रीविट्ठलनाथजी तथा उनके अनेक शिष्य-प्रशिष्योंके साथ श्रीनाथजीने साक्षात् अनेकों लीलाएँ की हैं, जिनका वर्णन वार्ता ग्रन्थोंमें मिलता है। मुसल्मानी शासनकालमें आक्रमणकी आशङ्का होनेपर व्रजसे यह मूर्ति मेवाड़ आयी। कहा जाता है यहाँ दिलवाड़ा ग्रामके पास श्रीनाथजी जिस गाड़ीमें आ रहे थे, उसके पहिये भूमिमें धँस गये। इससे समझा गया कि श्रीनाथजीके यहीं रहनेकी इच्छा है। इसलिये वहीं मन्दिर बना। यहाँ बनास नामकी एक छोटी नदी भी है।

श्रीनाथजीकी सेवा-पूजा बड़े भावसे, बड़ी विधिपूर्वक होती है। समय-समयपर थोड़ी देरके लिये दर्शन खुलते हैं और उस समयके अनुरूप शृङ्गारके दर्शन होते हैं। मन्दिरपर लाखों रुपये प्रतिवर्ष व्यय होते हैं। दर्शनके समय बाहर उसी भावके पद सुमधुर स्वरमें गाये जाते हैं। श्रीनाथजीका भोग लगा प्रसाद बाजारमें बिकता है। प्रसाद प्रचुर मात्रामें लगता है। यहाँ यात्री बहुत कम व्ययमें उत्तम भगवत्प्रसाद बाजारसे पा जाते हैं। जगन्नाथजीकी भाँति यहाँका महाप्रसाद भी परम पवित्र तथा स्पर्श दोषसे मुक्त माना जाता है।

श्रीनाथजीके मन्दिरके आस-पास ही श्रीनवनीतलालजी, विट्ठलनाथजी, कल्याणरायजी, मदनमोहनजी और वनमालीजीके मन्दिर तथा महाप्रभु श्रीहरिरायजीकी बैठक है। एक मन्दिर मीराबाईका भी है। श्रीनवनीतलालजी और विट्ठलनाथजीकी वल्लभ-सम्प्रदायके सात उपपीठोंमें गणना है। श्रीनाथजीके मन्दिरमें एक हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थोंका सुन्दर पुस्तकालय भी है। नाथद्वारा-पीठकी ओरसे एक विद्याविभाग भी है, जहाँसे सम्प्रदायके ग्रन्थोंका प्रकाशन होता है।

काँकरोली

नाथद्वारेसे मोटरके रास्ते काँकरोली ११ मील है। नाथद्वारा स्टेशनसे काँकरोली स्टेशन ९ मील है। वहाँ स्टेशनसे नगर लगभग ३ मील दूर है। सवारी मिलती है। स्टेशनके पास और नगरमें भी धर्मशालाएँ हैं। वल्लभ-सम्प्रदायके सात उपपीठोंमें काँकरोली एक प्रमुख पीठ है। मथुराका द्वारिकाधीश मन्दिर भी यहींके अधीन है।

काँकरोलीका मुख्य मन्दिर श्रीद्वारिकाधीशजीका है। कहा जाता है कि महाराज अम्बरीष इसी मूर्तिकी आराधना करते थे। मन्दिरमें भी यात्री ठहर सकते हैं। मन्दिरके पास रायसागर नामक बहुत बड़ा सरोवर है। नाथद्वारेकी भाँति यहाँ भी एक विद्याविभाग है, जहाँ पुष्टिमार्गके प्राचीन ग्रन्थोंकी महत्त्वपूर्ण खोज एवं प्रकाशनका कार्य होता है।

यहाँ आस-पास श्रीबालकृष्णलाल, लालबाबा, व्रजभूषणलालजी आदिके मन्दिर हैं। मेवाड़के राणा यहाँके आचार्योंके शिष्य होते आये हैं।

काँकरिया

यह स्थान नाथद्वारा-काँकरोलीके मध्यमें है। काँकरिया बहुत बड़ा सरोवर है। बनास और खारी नदियाँ मार्गमें मिलती हैं। यहाँ पर्वतके ऊपर श्रीद्वारिकाधीश तथा मथुरानाथजीका भव्य मन्दिर है—मन्दिरके पास और पर्वतके नीचे भी धर्मशाला है।

चारभुजाजी

यह स्थान काँकरोलीसे ६ मील दूर है, मोटरका मार्ग है। सड़कसे थोड़ी दूरपर एक गाँवमें चारभुजाजीका मन्दिर है। मन्दिर ऊँचाईपर है। भगवान् श्रीकृष्णकी सुन्दर चतुर्भुज मूर्ति है।

उदावड़

चारभुजाजीसे ७ मील दूर यह गाँव है। पगडंडीका मार्ग है। यहाँ पर्वतपर परशुराम महादेवका मन्दिर है। शिवरात्रिपर मेला लगता है।

श्रीरूपनारायणजी

(लेखक—श्रीभँवरलाल गणेशलाल माहेश्वरी)

चारभुजाजीसे यह स्थान ६ मील दूर है। नाथद्वारेसे काँकरोली, चारभुजाजी होते यहाँतक मोटर-बस आती है।

यहाँ श्रीरामचन्द्रजी ही श्रीरूपनारायण नामसे प्रसिद्ध हैं। पासमें पर्वतसे एक नदी निकलती है, जिसे गोमती कहते हैं। श्रीरूपनारायणजीका मन्दिर विशाल है। मन्दिरमें भगवान्‌की श्यामवर्ण श्रीमूर्ति है।

यहाँ पहले देवाजी नामके परम भक्त पुजारी थे। उस समय महाराणा उदयपुर यहाँ नित्य दर्शन करने आते थे और पुजारी उन्हें भगवान्‌की धारण की हुई माला प्रसादरूपमें देते थे। एक दिन महाराणाके आनेमें देर हुई। पुजारीने भगवान्‌को शयन करा दिया और प्रसादी माला स्वयं धारण कर ली। इतनेमें महाराणा पधारे। संकोचवश पुजारीने वह अपनी पहिनी माला छिपाकर गलेसे निकालकर महाराणाको पहिना दी; किन्तु मालामें पुजारीका एक श्वेतकेश रह गया। उसे देखकर महाराणाने पूछा—'क्या प्रभुके केश श्वेत होने लगे? वे वृद्ध हो गये?' भयवश पुजारीने 'हाँ' कह दिया। महाराणाने दूसरे दिन आकर स्वयं जाँच करनेको कहा। पुजारीको भयके मारे रातमें निद्रा नहीं आयी। वे भगवान्‌से प्रार्थना करते रहे, रोते रहे। दूसरे दिन सचमुच भगवान्‌के केशोंमें कुछ श्वेत केश दीख पड़े। भक्तवत्सलने भक्तकी लज्जा रखी। महाराणा दर्शन करने आये तो उन्हें संदेह हुआ कि श्वेत केश ऊपरसे चिपकाये गये हैं। उन्होंने एक केश उखाड़ा। उसके साथ श्रीविग्रहसे रक्तकी बूँद निकली। उस रात महाराणाको स्वप्नादेश हुआ कि कोई राणा गद्दीपर बैठनेके पश्चात् रूपनारायणजीका दर्शन नहीं कर सकेगा। गद्दीपर बैठनेसे पूर्व दर्शन करने युवराज जाया करते हैं।

एकलिङ्गजी

उदयपुरसे नाथद्वारा जाते समय मार्गमें हल्दीघाटी और एकलिङ्गजीका स्थान आता है। अब जो मोटर-बसका मार्ग है, उसमें हल्दीघाटी नहीं पड़ती। हल्दीघाटीके लिये अलग उदयपुर या नाथद्वारेसे मोटर-बसद्वारा जा सकते हैं। नाथद्वारेसे भी मोटर-बसद्वारा एकलिङ्गजीके दर्शन करने आ सकते हैं। उदयपुरसे एकलिङ्गजी १२ मील दूर हैं।

श्रीएकलिङ्गजीका मन्दिर विशाल है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। एकलिङ्गजीकी मूर्ति (लिङ्गमूर्ति) में चारों ओर मुख हैं। मन्दिरके पश्चिमद्वारके पास पीतलकी नन्दी मूर्ति है। वर्तमान मन्दिरका जीर्णोद्धार पंद्रहवीं शताब्दीमें महाराणा कुम्भने करवाया था।

एकलिङ्गजी मेवाड़के राणाओंके आराध्यदेव हैं। मेवाड़के संस्थापक वाप्पारावलने इनकी आराधना की है। कहा जाता है कि पहले यहाँ लिङ्गमूर्ति थी। डूँगरपुर राज्यकी ओरसे वह बाणलिङ्ग इन्द्रसागरमें पधरा दिये जानेके पश्चात् यह चतुर्मुख मूर्ति स्थापित हुई। एकलिङ्गजीका शृङ्गार प्रतिदिन विभिन्न रत्नोंसे

किया जाता है। यहाँ पुजारियोंद्वारा दिये हुए चोगे धारण करके ही भीतर जाकर दर्शन करनेकी आज्ञा मिलती है।

मन्दिरसे थोड़ी दूरपर इन्द्रसागर नामक सरोवर है। सरोवरके आस-पास गणेश, लक्ष्मी हुंटेश्वर, धारेश्वर आदि कई मन्दिर हैं। एकलिङ्गजीके मन्दिरके आस-पास भी छोटे-बड़े बहुत-से मन्दिर हैं। थोड़ी दूरपर वनवासिनी देवीका मन्दिर है।

चित्तौड़गढ़

पश्चिम-रेलवेकी अजमेर-खंडवा लाइनपर चित्तौड़गढ़ स्टेशन है। यहाँ स्टेशनके पास पुलदरवाजेके भीतर ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

चित्तौड़ भारतका महान् सांस्कृतिक तीर्थ है। यहाँका कण-कण मातृभूमिके गौरव तथा हिंदुत्वकी रक्षाके लिये बहाये हुए वीरोंके रक्तसे सिञ्चित है। एक-दो बार नहीं, अनेकों बार धर्म एवं जातिके लिये यहाँके मानधनी राजपूतोंने आत्माहुति दी है। यहाँ 'जौहर-व्रत' लेकर एक साथ एक प्रज्वलित चितामें शत-शत नारियाँ सती हुई हैं। चित्तौड़की भूमि सर्वत्र पवित्र है। वहाँ सर्वत्र त्याग-धर्मपर प्राणदानका पावन-संदेश मिलता है।

चित्तौड़का दुर्ग स्टेशनसे तीन मील दूर है। उसमें जानेका एक ही मार्ग है। यह दुर्ग अब उजाड़ हो रहा है। इसके महत्त्वपूर्ण स्थान अब खँडहर बन गये हैं।

दुर्गके भीतर महाराणा प्रतापका जन्मस्थान, रानी पद्मिनी, पन्ना धाय तथा मीराबाईके महल, कीर्तिस्तम्भ, जयस्तम्भ, जटाशङ्करमहादेवका मन्दिर, गोमुखकुण्ड, रानी पद्मिनी तथा अन्य राजपूत वीराङ्गनाओंके सती होनेकी विस्तृत भूमि, कालिका माताका मन्दिर आदि स्थान दर्शनीय हैं।

यहाँका कीर्तिस्तम्भ कलाकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण तो है ही; इस दृष्टिसे भी उसका महत्त्व है कि उसीके नीचे महाराणा प्रतापको राजपूत-गौरवकी महान् प्रेरणा मिली थी।

मीराबाईके श्रीगिरधर-गोपालका मन्दिर यहाँ है और उसके समीप ही देवीका मन्दिर है।

चित्तौड़के दुर्ग-द्वारमें जयमल और फत्ताके बलिदानके स्मारक स्थल हैं।

चित्तौड़गढ़के शम्भुकुञ्जमें श्रीचारभुजा रघुनाथजीका मन्दिर है। परम भक्त श्रीभवनजीके ये रघुनाथजी आराध्य रहे हैं।

मन्दिरमें श्रीराम-जानकीका श्रीविग्रह है। इस कुञ्जमें ही श्रीमुरलेश्वरमहादेवका मन्दिर है। श्रीरघुनाथजीकी चतुर्भुज मूर्ति इस स्थानकी मुख्य विशेषता है।

उदयपुर

पश्चिम-रेलवेकी अजमेर-खंडवा लाइनपर चित्तौड़गढ़से एक लाइन उदयपुर गयी है। उदयपुर राजस्थानका प्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक नगर है तथा मेवाड़के राणाओंकी राजधानी रह चुका है। यह वीरतीर्थ है, सती-तीर्थ है और भगवत्-तीर्थ भी है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये यहाँ सूरजपोल दरवाजेके भीतर महंत माधवदासकी धर्मशाला है।

वीरतीर्थ—उदयपुर महाराणा प्रतापकी निवास-भूमि रही है। यहाँ महाराणा प्रतापका खड्ग, कवच, भाला तथा अन्य शस्त्रास्त्र सुरक्षित हैं। महाराणाके प्रिय अश्व चेतककी जीन यहाँ है और इन सबसे महत्त्वपूर्ण है बाप्पा रावलका खड्ग, जो भगवान् एकलिङ्गसे प्राप्त हुआ था।

उदयपुरसे कुछ ही मील दूर हल्दीघाटीकी प्रसिद्ध युद्धस्थली है। उस वीर-रक्तरञ्जित भूमिके नामसे तो इतिहासका प्रत्येक विद्यार्थी परिचित है।

सती-तीर्थ—राजस्थानका—विशेषतः मेवाड़का कण-कण वीरोंके पावन बलिदान और सखियोंकी लोकोत्तर आत्माहुतिसे परिपूत है। उदयपुरसे पश्चिम झीलके किनारे महासती-स्थान है; यहाँ सती हुई महारानियोंकी छतरियाँ हैं।

भगवत्तीर्थ—उदयपुरके राजप्रासादके रनिवासकी ड्योढ़ीमें श्रीपीताम्बररायजीके मन्दिरमें मीराबाईके उपास्य श्रीगिरिधरलालजीकी मूर्ति विराजित है।

निम्बार्क-वैष्णवसम्प्रदायका उदयपुरमें मुख्य स्थान है। यहाँ श्रीबाईजीराज-कुण्डपर श्रीनवनीतरायजीका मन्दिर है। यह श्रीनवनीतरायजी आचार्य श्रीनारायणशरण देवाचार्यजीके आराध्य हैं। मन्दिरमें श्रीविग्रहके सम्मुख ही हाथ जोड़े दास-हनुमान्‌जीकी मूर्ति है। मन्दिरके घेरेमें एक स्वच्छ पक्का सरोवर है।

श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायके आचार्य श्रीनारायणशरण देवाचार्यजी मारवाड़ त्यागकर यहाँ होते हुए गुजरात जा रहे थे, किन्तु तत्कालीन महाराणा जयसिंहके अनुरोधपर यहीं रुक गये। यहाँसे उक्त निम्बार्काचार्यका गोलोकवास होनेपर उनके ज्येष्ठ पुत्र सलेमाबाद चले गये और कनिष्ठ पुत्र यहाँ रहे। इस प्रकार निम्बार्कसम्प्रदायका आचार्यपीठ सलेमाबाद और महंत-गादी उदयपुरमें रही।

उदयपुर नगरमें श्रीजगन्नाथजीका सुन्दर और विशाल मन्दिर है। उसके समीप ही वल्लभ-सम्प्रदायके तीन मन्दिर हैं।*

शाहपुरा

यह स्थान अजमेर-खंडवा लाइनपर स्थित भीलवाड़ा स्टेशनसे ३२ मील दूर है। मोटर-बस चलती है। यहाँ रामस्नेही सम्प्रदायकी एक शाखाका प्रधान पीठ है। इस शाखाके संस्थापक स्वामी श्रीरामचरणजी महाराज सन् १८२६ में शाहपुरा पधारे और यहाँ उन्होंने रामद्वारा स्थापित किया। श्रीरामचरणजीका देहावसान भी यहीं हुआ। यहाँ उनकी समाधि है। यहाँ श्रीरामचरणजीकी निर्वाण-तिथिपर मेला लगता है।

पिण्डेश्वर

(लेखक—श्रीनाथूलालजी जायसवाल)

पश्चिम-रेलवेकी अजमेर-खंडवा लाइनपर चित्तौड़गढ़से ८६ मील दूर धोधर स्टेशन है। वहाँसे यहाँतक १० मील पैदल मार्ग है। चमलावती, मलेनी तथा पिङ्गला नदियोंका यहाँ संगम है, इससे इसे त्रिवेणी कहते हैं। संगमपर पिण्डेश्वर महादेवका मन्दिर है। यहाँ वैशाखी पूर्णिमाको ८ दिनका मेला लगता है। यहाँ लोग श्राद्ध-तर्पणादि करते हैं।

गौतमपुरा

(लेखक—श्रीबैजनाथप्रसादजी)

अजमेर-खंडवा लाइनपर गौतमपुरा-रोड स्टेशन है। स्टेशनसे गौतमपुरा ३ मील है। यहाँ ग्रामके पास ही श्रीअचलेश्वर महादेवका मन्दिर है। श्रीअचलेश्वर स्वयम्भू लिङ्ग है।

मन्दिरसे लगे हुए क्रमशः ५ कुण्ड हैं। कहा जाता है कि इन कुण्डोंमें शिप्राका जल आता है। योगी संतोषनाथजीने यहाँ शिप्राकी धारा प्रकट की थी। प्रथम कुण्डमें धारा प्रकट होती है और वह आगेके चार कुण्डोंमें होती एक नालेके रूपमें एक मील दूर चम्बलमें मिल जाती है।

आस-पास लक्ष्मी-नारायणमन्दिर, सत्य-नारायणमन्दिर तथा माताजीका स्थान है। यहाँ एक शनिदेवका मन्दिर भी है।

परशुराम-महादेव

(लेखक—श्रीद्वारिकादासजी गुप्त)

अहमदाबाद-दिल्ली लाइनमें मारवाड़-जंक्शनसे ४१ मील पहले फालना स्टेशन है। वहाँसे १९ मीलपर राजपुर गाँवतक बस आती है। आगे २॥ मील कच्ची सड़कसे चलनेपर परशुरामकुण्ड आता है। परशुराम-महादेवके लिये

* इस विवरणमें ब्रह्मचारी श्रीलाड़िलीशरणजीके लेखसे सहायता ली गयी है।

चलते समय भोजन तथा पूजनकी सामग्री साथ ले जाना चाहिये। परशुरामकुण्डके पास दो-तीन धर्मशालाएँ हैं। वहाँ स्नान करके ऊपर चढ़ना पड़ता है। पर्वतके शिखरपर परशुराम महादेवका मन्दिर है। यह एक गुफा है, जिसमें शिवलिङ्ग स्थित है। गुफामें ऊपर गायके थनका आकार बना है। उससे शिवलिङ्गपर बूँद-बूँद जल टपकता रहता है। शिवरात्रि तथा कार्तिक-पूर्णिमाको मेला लगता है। मन्दिरके पास भी एक छोटी धर्मशाला है।

हरगङ्गा

फालनासे ५ मील बाली है। वहाँसे बीजापुरतक बैलगाड़ी जा सकती है। आगे २ मीलतक दुर्गम पहाड़ी मार्ग है। पर्वतोंके बीचमें एक गोमुखसे जल आता रहता है। वहाँ एक कुण्ड है। यात्री उसीमें स्नान करते हैं। ग्रहणके समय यहाँ बहुत यात्री आते हैं। पासमें धर्मशाला है।

दान्तेश्वर

बालीसे लगभग तीन मील दूर एक पहाड़ीपर दान्तेश्वर मन्दिर है। मन्दिरमें एक कुण्डी बनी है। उसमें एक छोटे घड़े-जितना पानी रहता है। जल निकाल लेनेपर तुरन्त भर जाता है। कहा जाता है कि रजस्वला स्त्री वहाँ आ जाय तो इस कुण्डीमें जल आना बंद हो जाता है और कुण्डका पूजन करनेपर फिर आता है।

बाली

यहाँ खाकीजीकी बगीचीमें गोपालजीका सुन्दर मन्दिर है। आश्विन-शुक्ला १ से ७ तक महोत्सव होता है।

नीमानाथ

फालनासे २ मीलपर सूकड़ी नदीके किनारे वह विशाल शिव-मन्दिर है। शिवरात्रिपर यहाँ बड़ा मेला लगता है। मन्दिरके पास ही ठहरनेके स्थान हैं।

काम्बेश्वर

आबू-रोडसे ५७ मीलपर (एरिन-पुरारोडसे ५ मील पहले) मोरीबेरा स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग डेढ़ मील दूर पर्वतपर यह स्थान है। ४८३ सीढ़ी चढ़ना पड़ता है। ऊपर दो शिव-मन्दिर हैं तथा जलकुण्ड है। नीचे एक बावली तथा धर्मशाला है। यहाँ पौष-पूर्णिमा तथा शिवरात्रिको मेला लगता है। यहाँसे १ मील ऊपर सिद्धनाहरपुरीकी धूनी है। वहाँका मार्ग दुर्गम है और हिंस्र पशुओंका भय भी है।

निम्बेश्वर

फालना स्टेशनसे निम्बेश्वर ३ मील है। पक्की सड़कका मार्ग है। इस स्थानकी शिवमूर्तिका पता निम्बा नामक रैबारी (चरवाहे) द्वारा लगा, इससे शङ्करजीको निम्बेश्वर कहते हैं।

यहाँ भगवान् शङ्करका मन्दिर है। शिवरात्रिको मेला लगता है। मन्दिरमें ब्रह्माजीकी भी मूर्ति है। आस-पास कई धर्मशालाएँ हैं। यह क्षेत्र इधर बहुत मान्य है।

दक्षिण भारत
(रेलवे-मार्ग)
हैदराबाद
मद्रास
कोचीन
त्रिचूर
मदुरा
रामेश्वर
कन्याकुमारी
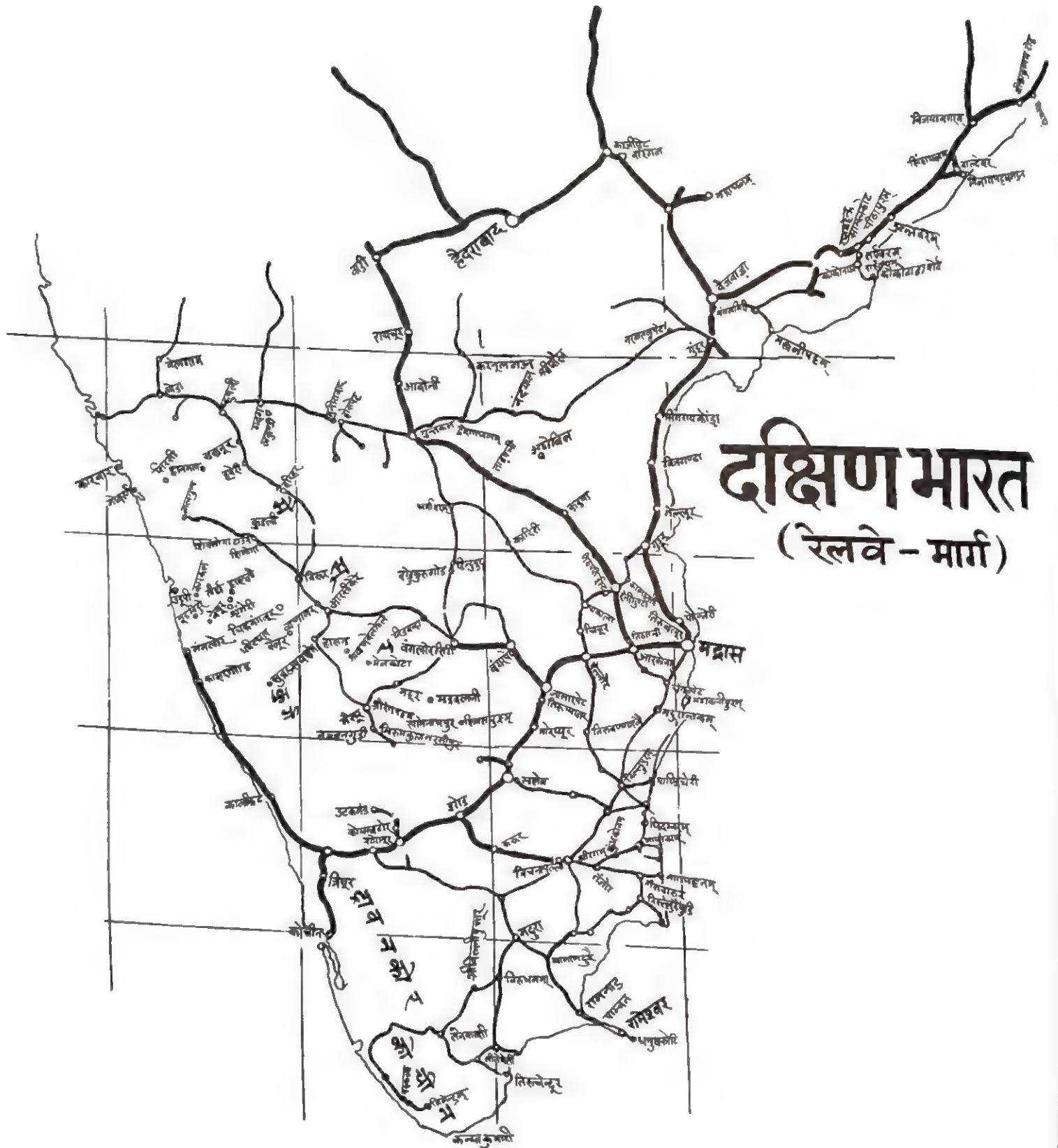
दक्षिण-भारतकी यात्रा

सबसे पहले इस बातको निश्चित रूपसे जान लेना चाहिये कि भाषा, वेश तथा रहन-सहनके सामान्य अन्तरोंके कारण उत्तर और दक्षिण—ये दो भेद भारतके नहीं किये जा सकते। भारत एक है, अखण्ड है। सम्पूर्ण भारतमें एक सनातन दैनिक संस्कृति है। सम्पूर्ण भारतके हिंदू अनादिकालसे एक मूल आर्य जातिके हैं। इसके विरुद्ध जो कुछ कहा जाता है, सब राजनीतिक दाव-पेच है, सब मिथ्या है। यह निश्चित है कि ऐसे कल्पित उद्देश्योंसे फैलाये गये भ्रम एक बार चाहे जितने बड़े दीख पड़ें, वे पानीके बुलबुलेके समान क्षणस्थायी एवं सत्त्वहीन हैं।

कौन-सा उत्तर-भारतीय हिंदू है, जिसके मनमें श्रीरामेश्वर, श्रीरङ्गनाथ, श्रीजगन्नाथके दर्शनोंकी लालसा नहीं होती? और कौन-सा दक्षिण-भारतीय है, जो भगवान् विश्वनाथ, अयोध्या, वृन्दावन, चित्रकूट तथा बद्रीनाथके दर्शनोंकी अभिलाषा नहीं रखता? दक्षिणमें स्थान-स्थानपर काशीविश्वनाथके मन्दिर क्या यह नहीं बतलाते कि दक्षिणको काशीसे पृथक् करनेकी बात निरी मूर्खतापूर्ण है?

भगवान् शङ्करके धाम हैं कैलास और काशी। भगवान् श्रीराम अयोध्यामें और श्रीकृष्णचन्द्र मथुरामें प्रकट हुए। व्यास-वाल्मीकि आदि महर्षियोंका आविर्भाव भी उत्तरमें हुआ। दक्षिण-भारतके क्या इनसे भिन्न कोई आराध्य या ज्ञानदाता हैं या रहे हैं? इसी प्रकार शङ्कराचार्य, रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, मध्वाचार्य, वल्लभाचार्य—ये चारों ही आचार्य दक्षिण-भारतने दिये हैं। उत्तर-भारतके क्या कोई अन्य मार्गदर्शक बन सकते हैं?

हमारा धर्म हमारी संस्कृति एक है। हमारे आराध्य एक हैं। हमारे शास्त्र एक हैं। हमारे आचार्य एक हैं। हम उत्तरमें रहते हों या दक्षिणमें, प्रातःस्मरणमें हम पूरे भारतके पुण्यश्लोक महापुरुषोंका, सप्तपुरियों और चारों धामोंका स्मरण करते हैं। स्नानके समय हम स्नानीय जलमें गङ्गा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, सिन्धु, कावेरीका आवाहन करते हैं*। इस प्रकार हमारा दैनिक जीवन परस्पर घुला-मिला है। हम एक हैं—सदासे एक हैं और सदा एक रहेंगे। उत्तर-भारत तथा दक्षिण-भारतमें दो संस्कृतियोंकी बात सर्वथा निराधार है। यह तो दो सगे भाइयोंमें फूट डालनेके लिये अपनायी हुई घृणित चालमात्र है।

सामान्य अन्तर

भारत बहुत विस्तृत देश है। यहाँ ग्रीष्ममें भी अत्यन्त शीतल रहनेवाले प्रदेश हैं और शीतकालमें केवल लँगोटी बाँधकर रहा जा सके, ऐसे भी प्रदेश हैं। जल-वायुके अन्तरसे वेश तथा रहन-सहनमें अन्तर होना स्वाभाविक है। उत्तर-प्रदेश एक प्रान्त है; किन्तु इस प्रान्तके ही पर्वतीय भाग एवं काशीके आस-पासके लोगोंके रंग-रूप, आकार, भाषा, वेश आदिमें पर्याप्त अन्तर है। इस प्रकारका अन्तर तो एक बड़े देशमें होना स्वाभाविक है।

जल-वायुके कारण रंग-रूप, रहन-सहनमें अन्तर पड़ता है, उपजमें अन्तर पड़ता है और उससे खान-पानमें अन्तर पड़ता है। भाषाएँ तो इस बड़े देशमें बहुत अधिक हैं ही। हिंदूधर्ममें प्रत्येक कुलके आचारमें कुछ विशिष्टता रहती है। इसीलिये गृह्यसूत्रोंका निर्माण हुआ कि कुलाचार बने रहें। अतएव आचार, पूजापद्धति आदिमें कुछ अन्तर होना कोई अद्भुत बात नहीं है, किन्तु उत्तर एवं दक्षिणमें कोई मौलिक अन्तर नहीं है।

विशेषता

दक्षिण-भारतको विधर्मियोंके आक्रमणोंका आखेट कम होना पड़ा, जब कि उत्तर-भारत बार-बार आक्रान्त होता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि उत्तर-भारतमें प्राचीन मन्दिर प्रायः नहीं रह गये। प्राचीन तीर्थोंका लोप हुआ। वेश-भूषा भी प्रभावित हुई और रहन-सहन भी। उधर दक्षिण-भारतके तीर्थोंकी परम्परा अक्षुण्ण रही। वहाँके विशाल मन्दिर दर्शकको चकित कर देते हैं।

दक्षिणमें आज भी प्राचीन परम्पराके अनुसार गोखुर-प्रमाण शिखा लोग रखते हैं, जब कि उत्तरमें पढ़े-लिखे युवक तो शिखा रखनेमें ही लज्जा अनुभव करने लगे हैं। प्रायः लोग बहुत सूक्ष्म-सी शिखा रखते हैं। यहाँ तिलक अथवा चन्दन लगाने एवं भस्म-धारणकी प्रथा बहुत कम लोगोंमें रह गयी है, परन्तु दक्षिणमें भस्म धारण एवं वैष्णवोंमें बड़े-बड़े तिलक लगाना अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगोंके लिये भी एक सामान्य बात है।

दक्षिणमें खुले-शरीर रहना कोई लज्जाकी बात नहीं

* आवाहनका मन्त्र इस प्रकार है—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

है। अच्छे सुशिक्षित लोग भी नंगे पैर चलते हैं और नित्य नियमपूर्वक देव-मन्दिरोंका दर्शन करने जाते हैं। देव-मन्दिर दर्शन करते हुए अपने कार्यालय जाना है, इसलिये जूता या चप्पल पहिनकर जाना वहाँ उचित नहीं माना जाता।

सबसे बड़ी विशेषता दक्षिणकी यह है कि अभी वहाँ संस्कृतके—वेदोंके विद्वान् हैं और ऐसे विद्वान् हैं, जिनमें आदर्श नम्रता है। विद्या-विनय-सम्पन्न ब्राह्मण पृथ्वीपर साक्षात् देवस्वरूप माने जाते हैं और ऐसे विद्वान् ब्राह्मणोंका दर्शन दक्षिणमें अब भी स्थान-स्थानपर होता है।

यात्रीके कामकी बातें

दक्षिण-भारतमें शीत कम पड़ती है, क्योंकि प्रायः सभी तीर्थस्थानोंसे समुद्र कुछ ही दूर रहता है। इसलिये दक्षिण-भारतकी यात्रामें ऊनी कपड़े और कम्बल, रजाई आदि ले जाना अनावश्यक है; किन्तु यदि शीतकालमें यात्रा करनी हो तो एक गरम स्वेटर तथा एक कम्बल अवश्य साथ रखनी चाहिये। क्योंकि वर्षा हो जानेपर तथा कन्याकुमारी जैसे समुद्रके अत्यन्त निकटके स्थानोंमें रात्रिको कुछ ठंड पड़ती है।

ग्रीष्मकालमें दक्षिण-भारतके अनेक स्थानोंमें जलकी कमी रहती है। गर्मी अधिक पड़ती है। यद्यपि मुख्य मुख्य तीर्थोंमें जलका कष्ट नहीं होता; फिर भी कहीं-कहीं संकोच तो रहता ही है। बहुत-से पवित्र सरोवरोंमें उन दिनों अत्यल्प जल रह जाता है। नहर निकाल लिये जानेके कारण कावेरी कई स्थलोंमें सूखी रहती है। कई अन्य छोटी नदियोंमें भी जल नहीं रहता। इसलिये तीर्थमें पहुँचनेपर पता लगा लेना चाहिये कि जलकी कहाँ कैसी स्थिति है।

मद्रास, तिरुपति, काञ्ची, श्रीरङ्गम्, मदुरा, रामेश्वर, कन्याकुमारी-जैसे मुख्य तीर्थोंमें, जहाँ यात्री प्रायः जाते ही रहते हैं; हिंदी भाषा बोलने-समझनेवाले मिल जाते हैं। बाजारोंमें आवश्यक शाक-सब्जी भी मिलती है। पूड़ीकी दूकानें भी ऐसे स्थानोंमें मिल जाती हैं। प्रयत्न करनेपर आटा भी मिल सकता है।

जहाँ यात्री कम जाते हैं, ऐसे तीर्थोंमें कठिनाइयाँ होती हैं। हिंदीका दक्षिण-भारतमें प्रचार हो रहा है; किंतु अभी छोटे स्थानोंमें उसके समझनेवाले यदा-कदा ही मिलते हैं। यही दशा अंग्रेजीकी है। बड़े नगरोंमें तो अंग्रेजीसे काम चल जाता है, किन्तु छोटे बाजारों एवं ग्रामोंमें जनसाधारण अंग्रेजी नहीं समझते। ढूँढ़नेपर संस्कृत जाननेवाले ब्राह्मण विद्वान् प्रायः सब कहीं एकाध निकल आते हैं।

साधारण नगरोंमें भी आटा नहीं मिलता। चावल, दाल, शाक-सब्जी सभी कहीं मिलता है। दूकानोंमें बड़े नगरोंमें भी यदि कहीं आप पूड़ी या मिठाई खाना चाहेंगे तो आपको नारियलके तेलमें बनी पूड़ी या मिठाई मिलेगी। छोटे बाजारोंमें इनको पानेकी आशा नहीं करनी चाहिये। पान प्रायः सब कहीं मिलता है, किन्तु तीर्थयात्रामें पान खानेका व्यसन छोड़ देना चाहिये। दक्षिण-भारतके कुछ भागोंमें तो पानमें चूना लगाकर एक पुड़िया दे दी जाती है, जिसमें सुपारी आदि कुछ मसाला होता है; परन्तु अधिकांश भागमें शुद्ध पान ही खाया जाता है। पानमें कत्था लगानेकी प्रथा नहीं है। पानके छः सात पत्ते और उनमें एक पत्तेपर लगा चूनेका तनिक-सा पानी, एक कच्ची सुपारीका छोटा-सा टुकड़ा—बस। इस प्रकारका पान इधरके लोगोंको रुचिकर नहीं हो सकता। यात्रामें सभी दृष्टियोंसे इसका छूट जाना ही उत्तम है।

केला और नारियल—ये दक्षिण-भारतके मुख्य फल हैं। ये दक्षिणमें सब कहीं मिलते हैं। कन्याकुमारीके आस-पास प्रायः सभी ऋतुओंमें पके आम मिल जाते हैं। पके कटहल भी सभी समय कुछ भागोंमें मिलते हैं।

केला, नारियल, सुपारी और धान—यह दक्षिणकी मुख्य उपज है। धानकी निश्चित ऋतु नहीं है। एक खेतमें धान पक गया है, कट रहा है, दूसरेमें हरा लहरा रहा है और तीसरेमें रोप लगाये जा रहे हैं, यह आप प्रायः दक्षिणमें देख सकते हैं।

दक्षिणकी यात्रामें यात्रीको स्वयं भोजन बनाना चाहिये। अथवा अपने साथ भोजन बनानेवाला व्यक्ति रखना चाहिये। जो लोग बाजारमें भोजन कर लेते हैं, उन्हें भी यहाँ कठिनाई होगी। बाजारमें जलपानके लिये नारियलके तेलमें बने कई प्रकारके बड़े स्थान-स्थानपर बिकते हैं। चावलसे बने एक-दो पदार्थ भी बिकते हैं। उनमें चीले-जैसे पदार्थको दोसा कहते हैं, जो सेंक कर बनाया जाता है। भापसे उबाले चावलोंसे बना पदार्थ 'इडली' कहा जाता है।

यहाँका मुख्य भोजन चावल है। चावलको दालके

साथ तो कम ही खाते हैं। टमाटर-कुम्हड़ा आदि शाकसे युक्त एक प्रकारकी दाल बनाते हैं, जिसे सांबर कहते हैं। उसमें खूब लाल मिर्च डालते हैं। उसके अतिरिक्त मट्ठा या दही और 'रसम्'—ये भोजनके मुख्य अंग हैं। रसम् इमलीके पानी तथा कुछ और वस्तुओंको मिलाकर बनाया जानेवाला पेय पदार्थ है। यहाँ भोजन भारतके अन्य भागोंके लोगोंके लिये अनुकूल नहीं पड़ सकता। प्याजका प्रयोग शाक, चटनी आदि सबमें प्रचुर मात्रामें होता है, यह भी ध्यानमें रखनेयोग्य बात है।

मन्दिरोंमें भी भगवान्‌को प्रायः चावलसे बने पदार्थोंका ही भोग लगता है। इसमें दही मिलाकर बना खट्टा भात तथा और कई प्रकारके चावलसे बने पदार्थ खिचड़ी-जैसे होते हैं। भगवत्प्रसाद जहाँ मिल सकता हो, वहाँ उससे भोजनका काम चला लेना चाहिये।

ठहरनेके लिये मुख्य तीर्थोंमें धर्मशालाएँ हैं। कई स्थानोंमें सरायके ढंगसे 'चौल्ट्री' (यात्री-निवास) हैं। इनमें यात्रीको प्रत्येक दिनके हिसाबसे किराया देना पड़ता है। प्रायः दस या पाँच रुपये पहले जमा कर देना पड़ता है। उसकी रसीद मिल जाती है। जाते समय किराया काटकर शेष पैसा लौटा देते हैं।

दक्षिण-भारतकी धर्मशालाओंमें बरतन या बिछानेके लिये चटाई आदिकी व्यवस्था प्रायः नहीं होती। कन्याकुमारीमें तथा एक-दो और स्थानोंमें भोजन बनानेके बर्तन मिल जाते हैं। जहाँ दक्षिण-भारतके लोगोंकी ही धर्मशालाएँ हैं, वहाँ अन्य प्रान्तोंके यात्रियोंको ठहरानेमें संकोच किया जाता है। इसलिये जहाँ ऐसी स्थिति हो, चोल्ट्रीमें ठहरना चाहिये। दक्षिणमें धर्मशाला नाम नहीं समझा जाता। 'सत्रम्' या 'छत्रम्' कहते हैं धर्मशालाको और 'चोल्ट्री' को भी इस 'सत्रम्' से ही समझ लेते हैं। वैसे 'चौल्ट्री' शब्द सब कहीं समझा जाता है।

यात्रीको अपने सामानकी सँभाल स्वयं करनी चाहिये। समाजका नैतिक स्तर सभी कहीं गिर गया है। दक्षिण भी उससे अछूता नहीं है। भीड़-भाड़में सावधानी न रखनेपर जेब कट जाने, सामान खो जानेकी घटनाएँ तो सब कहीं होती हैं।

समुद्र-स्नान करते समय यात्रीको सावधानी रखना चाहिये। समुद्रकी लहरें कई बार गिरा देती हैं और शरीरमें रगड़ लग जाती है। समुद्रमें कई स्थानोंपर पैरमें घाव कर देनेवाले कंकड़-पत्थर होते हैं। मद्रासके पासके समुद्रमें शार्क (समुद्री सिंह) नामक हिंसक मछलियाँ हैं, जो एक ही आघातसे मनुष्य-शरीरको दो टुकड़े कर सकती है। वे कभी-कभी किनारे भी आ जाती हैं। पांडिचेरीके समुद्रमें कई बार समुद्रीसर्प किनारेतक आ जाते हैं।

मन्दिर

दक्षिण-भारतमें केवल रामेश्वर तथा गोकर्णमें पंडे हैं और वहाँ पंडोंके यहाँ ठहरा जा सकता है। वे तीर्थ-यात्रीको दर्शन करा देते हैं। अन्य तीर्थोंमें पंडे नहीं हैं। रामेश्वरके पंडोंके आदमी तो दूर-दूरके नगरोंसे यात्रीको ले आते हैं; किन्तु अन्य तीर्थोंमें स्टेशनपर पंडे नहीं मिलेंगे। मथुरामें तथा एक दो अन्य तीर्थोंमें मार्ग-दर्शक (गाइड) मिल जाते हैं। छोटे स्थानोंमें वे भी नहीं मिलते।

दक्षिणमें मन्दिरको कहीं 'कोविल' या कोइल और कहीं 'गुडी' कहते हैं। मन्दिरोंके उच्च गोपुर दूरसे दिखायी देते हैं। मन्दिरमें पहुँचनेपर वहाँ पुजारी आदि मिल जाते हैं।

विशालता और गोपुर—ये दो दक्षिणके मन्दिरोंकी विशेषताएँ हैं। छोटे-से-छोटे मन्दिरमें भी एक ऊँचा गोपुर अवश्य होता है और मन्दिर परकोटेके भीतर होता है। दक्षिण-भारतके छोटे मन्दिर भी उत्तर-भारतके अच्छे बड़े मन्दिरों-जितने बड़े घेरेमें होते हैं।

दक्षिण भारतके अधिकांश मन्दिरोंमें एकाधिक परकोटे होते हैं। एक परकोटेके भीतर दूसरा, दूसरेके भीतर तीसरा। कहीं-कहीं मुख्य मन्दिर सात परकोटोंके भीतर होता है। इन परकोटोंके बीचमें मकान, दूकानें, सरोवर और अनेकों मन्दिर होते हैं।

किसी भी मन्दिरमें दर्शन करनेके पश्चात् निज-मन्दिरकी परिक्रमा अवश्य करनी चाहिये। परिक्रमामें प्रायः सब कहीं अनेकों देव-मन्दिर होते हैं। शिव-मन्दिरमें पार्वती और विष्णु-मन्दिरमें लक्ष्मीजीका मन्दिर भी उस बड़े मन्दिरके घेरेमें ही रहता है। पार्वती या लक्ष्मीजीका मन्दिर कहीं निज-मन्दिरसे दाहिनी ओर, कहीं बायीं ओर होता है। उसमें जाकर दर्शन करना चाहिये। उसकी भी प्रदक्षिणा करनी चाहिये। उसकी प्रदक्षिणामें भी कई देव-मन्दिर होते हैं। मदुरा, चिदम्बरम् आदि कुछ स्थानोंमें पार्वती-मन्दिर निजमन्दिरके घेरेसे

अलग है; किंतु है बड़े घेरेके भीतर। मुख्य देवता तथा उनकी जो शक्ति हों; उनके मन्दिरकी परिक्रमा करके तब दूसरे घेरेमें परिक्रमा करनी चाहिये। दूसरे घेरेमें भी प्राय: बहुत-से मन्दिर होते हैं। अधिकांश मन्दिरोंमें यह दो परिक्रमा होती हैं और दोनोंमें मन्दिर होते हैं। जहाँ तीन या उससे अधिक परिक्रमा हों, वहाँ तीसरी परिक्रमा (भीतरसे तीसरी) में भी मन्दिर रहते हैं। अतएव तीसरी परिक्रमा करना भी उत्तम है।

इस प्रकार एक मन्दिरके श्रीविग्रहोंके दर्शन करनेमें एक घंटेसे अधिक ही समय लगता है। कहीं-कहीं तीनों परिक्रमा करनेमें दो मील चलना पड़ जाता है। बहुत छोटे मन्दिरोंमें केवल एक परिक्रमा होती है।

दक्षिणके मन्दिरोंके गोपुर अपनी विशेषता रखते हैं। ये मुख्य मन्दिरके शिखरसे बहुत ऊँचे होते हैं। मन्दिरका शिखर ऊँचाईकी दृष्टिसे साधारण ही रहता है, किन्तु अधिकांश मुख्य मन्दिरोंके शिखर स्वर्णमण्डित होते हैं। गोपुर छोटे मन्दिरोंमें भी एक तो होता ही है, भले छोटा हो। उसपर भी सुन्दर मूर्तियाँ बनी होती हैं। अनेक मन्दिरोंके गोपुर पाँचसे ग्यारह मंजिलोंके होते हैं। मन्दिरके बाहरी परकोटेके मुख्य द्वारपर तो गोपुर होगा ही। अधिकांश मन्दिरोंके परकोटोंमें चारों ओर द्वार होते हैं और चारों द्वारोंपर गोपुर होते हैं। भीतरी परकोटोंके द्वारोंपर भी बहुत-से स्थानोंमें गोपुर होते हैं।

यह आवश्यक नहीं कि सब ओरके गोपुर समान ऊँचे हों। बाहरके चारों गोपुर समान भी हो सकते हैं, ऊँचे-नीचे भी हो सकते हैं। बाहर एक या दो ही द्वारपर गोपुर हों, यह भी हो सकता है। गोपुरोंके पृथक्-पृथक् नाम होते हैं। उनपर ऊपरसे नीचे द्वारकी ऊँचाईतक चारों ओर मूर्तियोंकी पङ्क्तियाँ होती हैं। इन गोपुरोंके निर्माणमें मन्दिर-निर्माण जितना व्यय होता है। भारतके अन्य प्रान्तोंमें गोपुर बनानेकी प्रथा नहीं है। इससे यात्रीको पहले गोपुरमें ही मुख्य-मन्दिरका भ्रम हो जाता है।

कालहस्तीमें एक गोपुर बाजारके बीचमें अकेला है। वह बहुत ऊँचा है, किन्तु उसका किसी मन्दिर या द्वारसे सम्बन्ध नहीं है। तिरुपति बालाजीके पर्वतीय मार्गमें सीढ़ियोंपर बीच-बीचमें ऊँचे गोपुर बने हैं। इस प्रकार मार्गोंमें मन्दिरसे दूर भी गोपुर होते हैं। अधिकांश गोपुरोंपर रात्रिमें बिजलीकी बत्तीका प्रकाश रहता है।

दक्षिण-भारतके मन्दिरोंमें निजमन्दिर पर्याप्त भीतर होते हैं। सभामण्डप, नाट्यमण्डप आदि एकके बाद दूसरे मण्डपों और कमरोंमें होकर जाना पड़ता है। मूर्ति फिर भी प्राय: दूर रहती है, कई चौखट भीतर। यात्री मूर्तिका स्पर्श या पूजन स्वयं नहीं कर सकते। पुजारीद्वारा ही पूजन कराया जाता है। आचार एवं पवित्रताकी दृष्टिसे तथा विधर्मियों अथवा शत्रुओंद्वारा आक्रमण होनेपर मुख्य विग्रहकी सुरक्षाकी दृष्टिसे भी यह प्रथा उत्तम है।

मन्दिरमें सर्वत्र बिजली होनेपर भी प्राय: निजमन्दिरके भीतर बिजलीबत्तीका प्रकाश नहीं होता। एक-दो मन्दिर ही इसके अपवाद हैं। श्रीमूर्तिके पास विद्युत्का तीव्र प्रकाश अनुचित माना जाता है। वहाँ प्राय: तेलके दीपक जलते हैं। इससे अन्धकार रहता है। इसलिये यात्रीको अपने साथ प्रत्येक मन्दिरमें कपूर ले जाना चाहिये। बिना कपूरकी आरती कराये श्रीमूर्तिके ठीक दर्शन नहीं होते। मुख्यमन्दिर, पार्वती-मन्दिर या लक्ष्मी-मन्दिरमें तथा परिक्रमाके अन्य भी कुछ मन्दिरोंमें कर्पूर-आरती करानेकी आवश्यकता पड़ती है।

पूजाके लिये नारियल, कपूर, केले, रोली, तथा धूपबत्ती साथ ले जायी जाती है। धूपबत्ती बिना बाँसकी होनी चाहिये। बाँसकी डंडीवाली धूपबत्ती जलानेका शास्त्रोंमें निषेध है। अच्छे पुरुष कम ही स्थानोंमें मिलते हैं। कई स्थानोंमें गुलाब आदिके बहुत सुन्दर हार मिलते हैं। दक्षिणमें जैसे सुन्दर एवं कलापूर्ण हार गूँथे जाते हैं, वैसे उत्तर-भारतमें प्राय: देखनेको नहीं मिलते। तुलसी मन्दिरमें ही रहती है। ४-६ आने दक्षिणा लेकर पुजारी सामने ही मन्त्रोच्चारणपूर्वक अष्टोत्तरशत अर्चना अथवा सहस्रार्चन कर देते हैं। अनेक मन्दिरोंमें दर्शन करने तथा नारियल चढ़ानेका शुल्क निश्चित है। कार्यालयमें शुल्क देकर रसीद ले लेना पड़ता है। ऐसे स्थानोंपर विभिन्न प्रकारकी पूजा करानेके भी अलग-अलग शुल्क निश्चित होते हैं।

मन्दिरोंमें प्रत्येक यात्री कर्पूर-आरती करा सकता है। सभी मन्दिरोंमें नारियल चढ़ता है। देवी-मन्दिरोंमें प्राय: रोली-प्रसाद, शङ्करजीके मन्दिरोंमें चन्दन तथा भस्म एवं विष्णु-मन्दिरोंमें चन्दन-प्रसाद एवं तुलसी-चरणामृत यात्रियोंको पुजारी देते हैं।

दक्षिणके मन्दिरोंकी पूजा-पद्धति उत्तरसे भिन्न है।

यहाँ पाञ्चरात्र तथा अन्य आगम-ग्रन्थोंके अनुसार पूजा होती है। श्रीविग्रहोंका तैलाभिषेक भी होता है। अन्य ग्रन्तोंमें श्रीविग्रहपर तेल चढ़ानेकी प्रथा नहीं है। कुछ स्थानोंपर तो मूर्तिपर जल चढ़ता ही नहीं, केवल तैलाभिषेक ही होता है। कई स्थानोंके श्रीविग्रह आगम-ग्रन्थोंमें बतायी विधिसे भीतर शालग्राम-शिला रखकर कुछ मसालोंसे बने हैं।

कई स्थानोंपर श्रीविग्रहको शालग्रामकी माला पहनायी गयी है। कुछ आचार्यगण भी छोटे शालग्रामोंकी माला धारण करते हैं।

तिरुनेलवेली (टिनेवली) से त्रिवेन्द्रम्-जनार्दनतक (विशेषकर मलाबारमें) तथा और भी कुछ मन्दिरोंमें पुरुष दर्शकोंको—यहाँतक कि छोटे बालकोंको भी कपड़े उतारकर, केवल धोती पहनकर दर्शन करने जाने दिया जाता है। जाँघिया, पतलून, पाजामा अथवा कोट, कमीज, कुर्ता, टोपी एवं बनियान आदि कोई सिला वस्त्र पहनकर भीतर नहीं जा सकते। कमरसे ऊपरका भाग चादरसे भी ढका नहीं रख सकते। कुछ थोड़े मन्दिरोंमें तो कुर्ता-कोट आदि बाहर रखकर जाना पड़ता है; किन्तु अधिकांशमें वस्त्र साथमें, झोलेमें, हाथमें या गठरीमें लिये रह सकते हैं। बालिकाओं तथा महिलाओंपर ये प्रतिबन्ध नहीं होते।

सिले वस्त्र अपवित्र हैं—इस मान्यताको लेकर यह नियम नहीं है। भगवान्के सामने वस्त्रोंसे शरीर ढककर शानसे जाना उचित नहीं, दीन बनकर जाना चाहिये—ऐसी मान्यता है। इसीलिये काञ्ची-शृङ्गेश्वरके शङ्कराचार्य या अन्य किसी पीठाचार्यके दर्शन करते समय भी उनके सम्मुख कटिसे ऊपरके वस्त्र उतारकर जाना तथा धोती पहनकर जाना शिष्टाचार माना जाता है, यद्यपि आचार्योंके यहाँ यह नियम कठोरतासे नहीं चलता, वे व्यवहारमें उदार होते हैं। दर्शक इस शिष्टताका पालन करे तो अच्छा है। उसे बाध्य नहीं किया जाता।

दक्षिण-भारतकी यात्रा रेलकी अपेक्षा मोटरसे या मोटर-बससे अधिक अच्छी प्रकार हो सकती है। प्रायः सब बड़े कस्बोंमें मोटर-बसें पहुँचती हैं। इस प्रकार पूरे दक्षिणमें पक्की सड़कें हैं।

नगरोंमें टैक्सियाँ मिलती हैं। घोड़ेवाले ताँगे-इक्के कम मिलते हैं। बैलोंसे चलनेवाले ताँगे मिलते हैं। उन्हें बंडी कहते हैं।

जो लोग दक्षिणके केवल मुख्य-मुख्य तीर्थोंका दर्शन करना चाहते हैं, उन्हें सिंहाचलम्, राजमहेन्द्री (गोदावरी-स्नान), बैजवाड़ा (पनानृसिंह), कालहस्ती, तिरुपतिबालाजी, काञ्ची, तिरुवण्णमलै (अरुणाचलक्षेत्र), तिरुवल्लूर, भूतपुरी (श्रीपेरुम्भुदूर), चिदम्बरम्, मायावरम्, तिरुवारूर, शियाळी, मन्नारगुडी, कुम्भकोणम्, तंजौर, श्रीरङ्गम्, रामेश्वरम्, मदुरा, श्रीबिल्लीपुत्तूर, तिरुनेलवेली (टिनेवली), तिरुचेंदूर, कन्याकुमारी, त्रिवेन्द्रम्, जनार्दन, नंजनगुड, श्रीरङ्गपट्टन, मैसूर, मेलकोट, बेलूर, शृङ्गेरी, उदीपी, गोकर्ण, हास्पेट (किष्किन्धा) तथा हरिहर—इन क्षेत्रोंकी यात्रा कर लेनेका प्रयत्न करना चाहिये।

दक्षिणी भारतमें उड़ीसा प्रान्तके पश्चात् लगभग मद्रासतक तेलुगु भाषा है। उसके पश्चात् मदुरासे आगे कन्याकुमारीतक तमिळ बोली जाती है। त्रिवेन्द्रम् तथा पश्चिम समुद्रके निकटके प्रदेशोंमें मळयालम् बोली जाती है। किष्किन्धाके आस-पास हैदराबादमें तथा कालहस्ती एवं तिरुपति-बालाजीके क्षेत्रोंमें तेलुगु बोली जाती है। मैसूर-राज्यमें तथा उसके आसपास एवं उत्तर कनाड़ा तथा दक्षिण कनाड़ाके जिलोंमें कन्नड प्रचलित है।

हॉसपेट (किष्किन्धा)

हुबली-बैजबाड़ा मसुलीपटम लाइनपर गदग तथा बेलाड़ीके बीचमें हॉसपेट स्टेशन है। यह अच्छा नगर है और इसके पास ही तुङ्गभद्राका प्रसिद्ध बाँध होनेसे यात्री भी यहाँ प्रायः आते ही रहते हैं। यहाँ स्टेशनके पास ही एक अच्छी धर्मशाला है; किन्तु उसमें प्रायः अधिक भीड़ रहती है। हॉसपेटमें लोग या तो तुङ्गभद्रा-बाँध देखने आते हैं या हम्पीके प्राचीन मन्दिर।

हम्पी

विजयनगर-राज्यकी इस प्राचीन राजधानीको अब हम्पी कहा जाता है। इसका घेरा २४ मीलमें है। हम्पीके मध्यमें विरूपाक्ष-मन्दिर है, जिसे स्थानीय लोग हम्पीश्वर कहते हैं। विरूपाक्ष-मन्दिर हॉसपेटसे ९ मील दूर है। हॉसपेटसे वहाँतक मोटर-बस जाती है। इस मन्दिरको केन्द्रमें रखकर हम्पीका वर्णन करना अधिक सुविधाजनक होगा।

विरूपाक्ष-मन्दिर—मोटर-बस जहाँ हॉसपेटसे लाकर उतारती है, वहाँसे बायीं ओर कुछ ही दूर जानेपर विरूपाक्ष-मन्दिरकी मुख्य सड़क मिल जाती है। यह सड़क मन्दिरके द्वारसे लगभग आध मीलतक सामने गयी है। चैत्र-पूर्णिमाको इस सड़कपर भगवान् विरूपाक्षका रथ निकलता है। सड़कके दोनों ओर कुछ दूकानें हैं। यात्री यहाँ मन्दिरके घेरेमें ठहर सकते हैं। इसी सड़कके पास काष्ठनिर्मित दो ऊँचे रथ खड़े रहते हैं।

पूर्वके गोपुरसे मन्दिरमें जानेपर दो बड़े-बड़े, आँगन मिलते हैं। पहले आँगनके चारों ओर मकान बने हैं, जिनमें यात्री ठहरते हैं। आँगनमेंसे ही तुङ्गभद्राकी नहर बहती है। आँगनके पश्चिम ओर गणेशजी और देवीके मन्दिर हैं।

इस आँगनसे आगे छोटे गोपुरसे भीतर जानेपर बड़ा आँगन मिलता है। इसमें चारों ओर बरामदे तथा भवन बने हैं। इन मण्डपों एवं भवनोंमें विभिन्न देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। आँगनके मध्यमें सुविस्तृत सभामण्डप है और उससे लगा हुआ विरूपाक्ष-मन्दिर है। निजमन्दिरपर स्वर्णकलश चढ़ा है। यहाँ दो द्वार पार करनेपर विरूपाक्ष शिवलिङ्गके दर्शन होते हैं। पूजाके समय शिवलिङ्गपर स्वर्णकी शृङ्गार-मूर्ति स्थापित कर दी जाती है।

विरूपाक्षके निजमन्दिरके उत्तरवाले मण्डपमें भुवनेश्वरी-देवीकी मूर्ति है और उनसे पश्चिम पार्वतीजीकी प्रतिमा है। उनके समीप ही गणेशजी तथा नवग्रह हैं।

पश्चिमवाले आँगनके पश्चिम भागमें एक द्वारके भीतरसे कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जानेपर मन्दिरके पिछले भागमें दो आँगन और मिलते हैं। इनमेंसे पहले आँगनमें एक मण्डपमें स्वामी विद्यारण्य (श्रीमाधवाचार्य)-की समाधि है। वहाँ श्रीमाधवाचार्यकी मूर्ति है।

विरूपाक्ष-मन्दिरके बाहर—मन्दिरके पिछले हिस्सेसे एक द्वार बाहर जानेका है। बाहर जानेपर एक सरोवर मिलता है, जिसके चारों ओर पक्के घाट हैं। वहाँ एक शिव-मन्दिर है।

मन्दिरके पिछले हिस्सेसे बाहर न जाकर फिर मुख्य मन्दिरके पास लौट आयें और सभामण्डपके सामनेके गोपुरसे बाहर जायँ तो तुङ्गभद्रा-तटपर जानेका मार्ग मिलता है। इस मार्गमें दाहिनी ओर एक सरोवर है, आगे तुङ्गभद्राका प्रवाह है। यात्री प्रायः तुङ्गभद्रामें स्नान यहीं करके तब विरूपाक्ष-दर्शन करते हैं। तुङ्गभद्राके प्रवाहमें स्थान-स्थानपर शिलाएँ हैं। एक शिलापर एक नन्दी-मूर्ति है।

विरूपाक्ष-मन्दिरके उत्तर भागमें हेमकूट नामक एक पहाड़ी है। उसपर कई देव-मन्दिर हैं।

विरूपाक्ष-मन्दिरसे अग्निकोणमें पास ही ऊँची भूमिपर एक मण्डपमें लगभग १२ हाथ ऊँची गणेशजीकी मूर्ति है। इनकी सूँडका कुछ भाग भग्न है। एक ही पत्थरकी गणेशजीकी इतनी बड़ी मूर्ति अन्यत्र कदाचित् ही मिले।

उक्त बड़े गणेशजीके पश्चिम एक ऊँची पहाड़ी है। ऐसा लगता है जैसे बड़ी-बड़ी चट्टानें उठाकर धर दी गयी हों। वहाँ एक गुफाद्वार है। उससे भीतर जानेपर सुन्दर गुफा मिलती है। कुछ छोटी कोठरियोंके पश्चात् एक विस्तृत आँगन है और कुछ नये बनवाये कमरे हैं। यहाँ महात्मा शिवरामजीकी समाधि है। एक चबूतरेपर महात्माजीकी मूर्ति स्थापित है। ये बड़े भगवद्भक्त निःस्पृह संत थे। इस गुफाके आँगनमेंसे दो द्वार हैं। एक द्वारसे कुछ दूर जानेपर सरोवर मिलता है। दूसरे द्वारसे कुछ सीढ़ी नीचे उतरनेपर एक वेदी मिलती है। उसे रामशिला कहते हैं। कहा जाता है कि भगवान् श्रीराम इसपर शयन करते थे। वेदिकाके सम्मुख बहुत चौड़ा स्थान है। यह स्थान दो चट्टानोंके मिलनेसे बना है, जिनपर एक बड़ी चट्टान ऊपर रखी है। कुछ आगे जाकर गुफासे बाहर जानेका द्वार है। बाहरसे देखनेपर अनुमान भी नहीं हो सकता कि इन चट्टानोंके ढेरके नीचे इतना सुन्दर स्थान बना है।

पूरे हम्पीक्षेत्रमें स्थान-स्थानपर पहाड़ियाँ हैं और उनमें अधिकांश इसी प्रकार बड़ी चट्टानोंकी ढेरीमात्र हैं।

उन चट्टानोंके भीतर अनेकों गुफाएँ हैं। इन हजारों मनकी चट्टानोंको इतने व्यवस्थित ढंगसे रखना आश्चर्यकी ही बात है। कहा जाता है कि श्रीहनुमान्‌जी तथा वानरोंने भगवान् श्रीरामके निवास-विश्राम आदिके लिये इस प्रकार चट्टानें रखकर गुफाएँ बनायी थीं।

बड़े गणेशजीसे थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम एक छोटे मण्डपमें छोटे गणेशजीकी भग्नमूर्ति है। यह स्मरण रखनेकी बात है कि यह हम्पीनगर दक्षिणके वैभवशाली राज्य विजयनगरकी राजधानी था। दक्षिणके मुसल्मानी राज्योंके सम्मिलित आक्रमणसे यह राज्य ध्वस्त हुआ। आक्रमणकारियोंने उसी समय और पीछे भी यहाँके मन्दिरों तथा मूर्तियोंको नष्ट-भ्रष्ट किया।

छोटे गणेशसे दक्षिण-पूर्व लगभग ५० गज दूर श्रीकृष्णमन्दिर है। यहाँसे एक मार्ग विजयनगर-राजभवनको जाता है। यह मन्दिर बहुत बड़े घेरेमें है; किन्तु इसमें अब कोई मूर्ति नहीं है। इसके विशाल प्राकार, गोपुर आदिकी कला यात्रीको मुग्ध कर लेती है। इस मन्दिरके सामने मैदान है, जिसे किलेका मैदान कहते हैं।

यहाँसे दक्षिण-पश्चिम खेतोंके किनारे थोड़ी दूर जानेपर एक घेरेके भीतर नृसिंह-मन्दिर मिलता है। इसमें भगवान् नृसिंहकी विशाल मूर्ति है। नृसिंह-भगवान्‌के मस्तकपर शेषनागके फणका छत्र लगा है। शेषके फणतक मूर्ति लगभग १५ हाथ ऊँची है। यह मूर्ति अपने सिंहासन तथा शेषनागसहित एक ही पत्थरमें बनी है।

नृसिंह-मन्दिरके पास उत्तर ओर एक छोटे मन्दिरमें बहुत बड़ा और स्थूल शिवलिङ्ग स्थापित है। उसका अरघा भूमिसे ४ हाथ ऊँचा है। अरघेके चारों ओर भूमिमें जल भरा रहता है। यह विशाल शिवलिङ्ग प्रणवाङ्कित है। इस स्थानसे कुछ दूरीपर श्रीसीतारामजीका मन्दिर है।

माल्यवान् पर्वत (स्फटिकशिला)—विरूपाक्ष मन्दिरसे ४ मील पूर्वोत्तर माल्यवान् पर्वत है। इसके एक भागका नाम प्रवर्षणगिरि है। इसीपर स्फटिकशिला-मन्दिर है। हॉसपेटसे यहाँतक सीधी सड़क आती है। मोटर-बससे सीधे स्फटिकशिला आ सकते हैं। श्रीराम-लक्ष्मणने वर्षाके चार महीने यहाँ व्यतीत किये थे।

सड़कके पाससे ही पहाड़ीपर जानेको मार्ग है। वहाँ गोपुरसे भीतर जानेपर एक परकोटेके भीतर सुविस्तृत आँगनके मध्यमें सभामण्डप दिखायी देता है। सभामण्डपसे लगा श्रीराम मन्दिर है। मन्दिरमें श्रीराम-लक्ष्मण तथा जानकीजीकी बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ हैं। सप्तर्षियोंकी भी मूर्तियाँ हैं। यह मन्दिर एक शिलामें गुफा बनाकर बनाया गया है और शिवाके ऊपर शिखर बना दिया गया है। शिखरके नीचे शिलाका भाग स्पष्ट दीखता है।

मन्दिरके दक्षिण-पश्चिम कोणपर 'रामकचहरी' नामक एक सुन्दर मण्डप है। पासमें एक जलका कुण्ड है। कहते हैं इसे श्रीरामने बाण मारकर प्रकट किया था। मन्दिरके पिछले भागमें कुछ ऊँचाईपर लक्ष्मणबाण नामक स्थान है। कहा जाता है कि लक्ष्मणजीने बाण मारकर यहाँ जल प्रकट किया था और श्रीरामने वहाँ पितृश्राद्ध किया था। यहाँ पर्वतमें एक चौड़ी दरार है, जिसमें जल भरा रहता है। इसके पास बहुत-सी शिलापिण्डियाँ हैं। इस स्थानके पास ही एक छोटा-सा गुफामन्दिर है। यहाँ गुफामें शिवलिङ्ग स्थापित है।

मन्दिरके पूर्वभागमें पर्वतके ऊँचे शिखरपर दो छोटे मण्डप बने हैं। एकको रामझरोखा और दूसरेको लक्ष्मण-झरोखा कहते हैं।

स्फटिकशिलाके इस मन्दिरके सामनेकी पक्की सड़कसे ही एक मील आगे जानेपर सुग्रीवका मधुवन मिलता है।

ऋष्यमूक पर्वत—विरूपाक्ष-मन्दिरके सम्मुख जो सड़क है, उससे सीधे चले जायँ तो वह मार्ग आगे कुछ ऊँचा नीचा अवश्य मिलता है, किन्तु ऋष्यमूक पर्वतके पासतक ले जाता है। यहाँ तुङ्गभद्रा नदी धनुषाकार बहती है, अतः वहाँ नदीमें चक्रतीर्थ माना जाता है। यहाँ नदीकी गहराई अधिक है। उसमें मगर-घड़ियाल आदि भी इस स्थानपर प्रायः रहते हैं।

चक्रतीर्थके पास पहाड़ीके नीचे श्रीराम-मन्दिर है। इस मन्दिरमें श्रीराम, लक्ष्मण तथा सीताजीकी बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ हैं।

श्रीराम-मन्दिरके पासकी पहाड़ीको मतंगपर्वत कहते हैं। यह ऋष्यमूकका ही भाग है। इसपर एक मन्दिर है। कहा जाता है कि इसी शिखरपर मतङ्ग ऋषिका आश्रम था। इसके पास ही चित्रकूट और जालेन्द्र नामके शिखर हैं। यहीं तुङ्गभद्राके उस पार दुन्दुभि पर्वत दीख पड़ता है।

चक्रतीर्थसे आगे—चक्रतीर्थसे आगे जानेपर गन्धमादनके नीचे वह मण्डप दिखायी देता है। उसकी एक भित्तिमें भगवान् विष्णुकी मूर्ति खुदी है। उसके पाससे गन्धमादन-शिखरपर जानेका मार्ग है। कुछ ऊपर एक गुफामें श्रीरङ्गजी (भगवान् विष्णु)-की शेषशायी मूर्ति है।

वहाँसे नीचे उतरकर आगे जानेपर सीताकुण्ड मिलता है। उसके तटपर श्रीसीताजीके चरणचिह्न हैं। कहते हैं लङ्कासे लौटकर श्रीजानकीजीने यहाँ स्नान किया था। कुण्डके पश्चिमतटपर गुफाके पासतक शिलापर श्रीसीताजीकी साड़ीका चिह्न है। गुफामें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीकी मूर्तियाँ हैं।

विट्ठल-मन्दिर—सीताकुण्डसे आगे कुछ दूर तुङ्गभद्राके दक्षिण-तटपर कुछ ऊँचाईपर भगवान् विट्ठलके चरण-चिह्न हैं। दोनों चरणोंके अग्रभाग परस्पर विपरीत हैं। कहते हैं कि भगवान् विट्ठल यहाँसे एक डगमें पण्ढरपुर गये और वहाँसे फिर लौटे।

इस स्थानसे कुछ पूर्व हम्पीक्षेत्रका सबसे विशाल एवं कलापूर्ण विट्ठलस्वामी-मन्दिर है। इस मन्दिरका घेरा बहुत बड़ा है। इसमें कोई मूर्ति नहीं है। इसके कल्याणमण्डपकी निर्माण-कला अद्भुत है। मन्दिरके घेरेमें अनेकों मण्डप तथा मन्दिर हैं। उनकी कारीगरी दर्शकको चकित कर देती है। मन्दिरके आँगनमें पत्थरका बना सुन्दर ऊँचा गजरथ खड़ा है। उसमें बारीक खुदाईका काम देखने ही योग्य है।

राजभवन—विरूपाक्ष-मन्दिरसे लगभग ३ मील दक्षिणपूर्व विजयनगर-नरेशका राजभवन है। इसकी निर्माणकला देखने योग्य है। वहाँ भवन, स्नानागार आदि बने हैं।

हजार-राम-मन्दिर—राजभवनसे उत्तर कुछ ही दूरीपर यह मन्दिर बहुत बड़े घेरेमें स्थित है। मन्दिरमें कोई आराध्य विग्रह नहीं है। इसकी दीवारोंपर श्रीरामचरितकी पूरी लीला पत्थरकी मूर्तियोंमें खुदी है। सहस्रों लीलाओंकी मूर्तियाँ अङ्कित हैं। श्रीकृष्णावतार तथा अन्य देवताओंकी भी मूर्तियाँ बनी हैं।

हम्पीके पूरे २४ मीलके विस्तारमें कहीं सुविस्तृत सरोवर, कहीं नहर, कहीं राजभवन, कहीं गुफाएँ और कहीं अद्भुत शिलापूर्ण मन्दिर हैं। ये भवन तथा मन्दिर अब सुनसान पड़े हैं, प्रायः भग्नदशामें हैं; किन्तु वे अपने महान् गौरवके जाग्रत् प्रतीक हैं।

किष्किन्धा—विट्ठलस्वामी-मन्दिरसे लगभग एक मील पूर्व आकर उत्तरकी ओर मुड़ता है। स्फटिकशिलासे सीधे आनेवाला मार्ग यहाँ विट्ठलस्वामी-मन्दिर जानेवाले मार्गसे मिलता है। इस मार्गसे कुछ ही दूरीपर सामने तुङ्गभद्रा नदी है।

तुङ्गभद्राकी धारा यहाँ तीव्र है। नदीको पार करनेके लिये यहाँ नौकाएँ नहीं बनतीं, नाविक लोग चमड़ेसे मढ़ा एक गोल टोकरा रखते हैं। छोटे टोकरेमें ४-५ आदमी बैठ सकते हैं। बड़े टोकरेमें १५-२० आदमी बैठते हैं। इस टोकरेसे ही नदी पार करनी पड़ती है।

तुङ्गभद्रा-पार लगभग आध मीलपर अनागुंदी ग्राम है। इसीको प्राचीन किष्किन्धा कहा जाता है। इस गाँवके दक्षिण-पूर्व तुङ्गभद्राके तटपर कुछ मन्दिर हैं। उनमें वालीकी कचहरी, लक्ष्मीनृसिंह-मन्दिर तथा चिन्तामणिगुफा-मन्दिर मुख्य हैं।

कुछ आगे सप्ततालवेधका स्थान है। यहाँ एक शिलापर भगवान् रामके बाण रखनेका चिह्न है। इस स्थानके सामने तुङ्गभद्राके पार बालिवधका स्थान कहा जाता है। वहाँ सफेद शिलाएँ हैं, जिनको वालीकी हड्डियाँ कहते हैं। तुङ्गभद्राके उसी पार तारा, अङ्गद एवं सुग्रीव नामक तीन पर्वत-शिखर हैं।

सप्ततालवेधसे पश्चिम एक गुफा है। कहते हैं कि भगवान् श्रीरामने वहाँ बालिवधके पश्चात् विश्राम किया था। गुफाके पीछे हनुमान्-पहाड़ी है।

पम्पासर—तुङ्गभद्रा पार होनेपर अनागुंदी ग्राम जाते समय गाँवसे बाहर ही एक सड़क बायीं ओर पश्चिम जाती है। उस सड़कसे लगभग दो मीलपर पम्पा-सरोवर है। मार्गमें पहले सड़कसे कुछ दूर पश्चिम पहाड़के ऊपर, पर्वतके मध्यभागमें गुफाके अंदर श्रीरङ्गजी तथा सप्तर्षियोंकी मूर्तियाँ हैं। आगे पूर्वोत्तर पहाड़के पास ही पम्पा-सरोवर है। यह एक छोटा-सा सरोवर है। उसके पास मानसरोवर नामक एक और छोटा सरोवर है। पम्पा-सरोवरके पास पश्चिम एक पर्वतपर कई जीर्ण मन्दिर हैं। उनमेंसे एकमें श्रीलक्ष्मी-नारायणकी युगल मूर्ति है। एक मण्डपमें भगवान्के चरण-चिह्न हैं। उसी पर्वतपर एक गुफा है, उसे शबरी-गुफा कहते हैं। कुछ विद्वानोंका मत है कि पम्पासर वहाँ था, जहाँ आज हॉसपेट नगर है। ऊँचाईसे देखनेपर

नगरकी पूरी भूमि नीची दीखती है।

अञ्जनी-पर्वत—पम्पा-सरोवरसे एक मील दूर अञ्जनी-पर्वत है। यह पर्वत पर्याप्त ऊँचा है और ऊपर चढ़नेका मार्ग अच्छा नहीं है। पर्वतपर एक गुफामन्दिर है। उसमें माता अञ्जनी तथा हनुमान्‌जीकी मूर्तियाँ हैं। कहते हैं माता अञ्जनीका यहीं निवास था।

व्याघ्रेश्वरी

(लेखक—श्रीयुत एच०वि० शास्त्री)

मार्ग—दक्षिण-रेलवेकी मसुलीपटम्-बैजवाड़ा-हुबली लाइनपर हॉसपेट स्टेशनसे ३ मील और उससे आगेके मुनीराबाद स्टेशनसे यह स्थान १ मील दूर है। मुनीराबादसे तुङ्गभद्रा-बाँध लगभग ३ मील है।

दर्शनीय स्थान—तुङ्गभद्रा नदीके एक तटपर देवीके मस्तककी और दूसरे तटपर धड़की पूजा होती है। इन्हें लोग श्रीरामचण्डीश्वरी भी कहते हैं। इनको इधरके लोग परशुरामजीकी माता मानते हैं। परशुरामजीने पिताकी आज्ञासे माताका शिरश्छेदन किया था और फिर पितासे उन्हें जीवित करनेका वरदान माँग लिया था। उसी समयके स्मारकरूपमें मस्तक तथा धड़की भिन्न-भिन्न स्थानोंपर पूजा होती है।

यह क्षेत्र किष्किन्धिाक्षेत्रमें सबसे प्राचीन माना जाता है। यहाँ वैशाख शुक्ला पञ्चमीसे नवमीतक मेला लगता है। इधरके लोगोंमें व्याघ्रेश्वरी देवीका बड़ा सम्मान है।

लकुंडी

हासपेटसे ५३ मील आगे गदग स्टेशन है। वहाँसे ८ मील दक्षिण-पूर्व लकुंडी बस्ती है। इस स्थानका पुराना नाम लोकोकंडी था। यहाँ प्राचीन मन्दिर बहुत हैं।

नगरके पश्चिम द्वारके पास दो मन्दिर हैं। इनमें काशी विश्वनाथका मन्दिर स्थापत्य-कलाका अच्छा नमूना है। पश्चिम द्वारके बाहर एक सरोवर है। उसके पास नन्दीश्वर शिवमन्दिर है। सरोवरके पूर्वी किनारेपर बासवेश्वरका मन्दिर है। नगरमें मल्लिकार्जुन-शिवमन्दिर मुख्य है। उसके समीप ही महेश्वरका भग्न मन्दिर है। वहाँसे समीप ही एक बावली है। उसमें तीन ओर सीढ़ियाँ बनी हैं। बावलीसे पश्चिम कुछ दूरीपर मणिकेशव (श्रीकृष्ण)-मन्दिर है। मन्दिरके समीप ही एक सरोवर है।

लकुंडीके मन्दिर बहुत प्राचीन हैं। अब वे जीर्ण दशामें हैं, किन्तु उनकी निर्माण-कला उत्तम है।

श्रीक्षेत्र सिद्धेश्वर

(लेखक—श्रीयुत पी० विजयकुमार)

बंगलोर—हरिहर-पूना लाइनपर बेलग्राम प्रसिद्ध स्टेशन है। बेलग्राम नगरसे तीन मील दूर कणबर्गी ग्राम है। बेलग्रामसे यहाँतक बसें चलती हैं। ग्रामसे आध मील दूर पर्वतपर देवालय है।

पर्वतके ऊपर सिद्धेश्वरजीका मन्दिर है। मन्दिर विशाल है। मन्दिरमें भगवान् शङ्करकी लिङ्गमूर्ति स्थित है। कहा जाता है कि यह महर्षि जैगीषव्यद्वारा आराधित मूर्ति है। शोलापुरके प्रसिद्ध संत रेवणसिद्धने भी यहाँ तपस्या की है।

सिद्धेश्वर-मन्दिरसे दो फर्लांगपर रामतीर्थ है। कहते हैं वनवासके समय भगवान् श्रीराम वहाँ पधारे थे और शिवलिङ्गकी स्थापना करके पूजन किया था। रामलिङ्ग-मन्दिरके पास ही रामतीर्थ-कुण्ड है। उसके पास श्रीलक्ष्मी-नारायणका मन्दिर है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है।
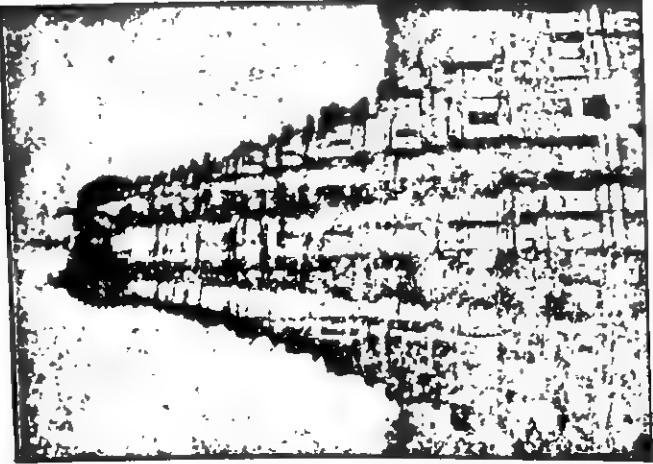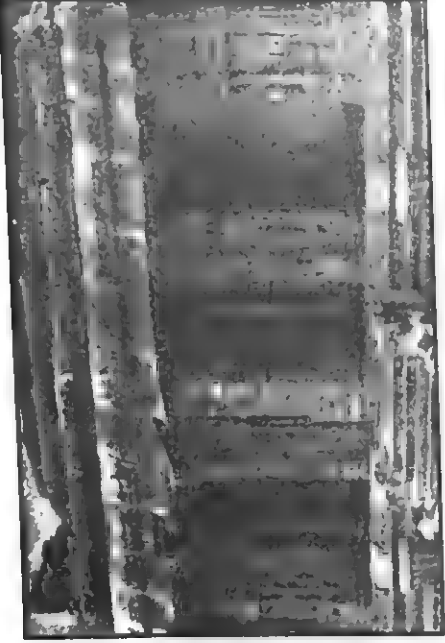
हम्पी-मन्दिर

श्रीविरूपाक्ष-मन्दिर

श्रीविट्ठल-मन्दिर

स्फटिक-शिला, प्रवर्षण गिरिपर रघुनाथ-मन्दिर

श्रीकोदण्डराम स्वामी—चक्रतीर्थ

श्रीहजारा राम-मन्दिर

श्रीउग्र-नृसिंह

दक्षिण-भारतके पवित्र स्थल
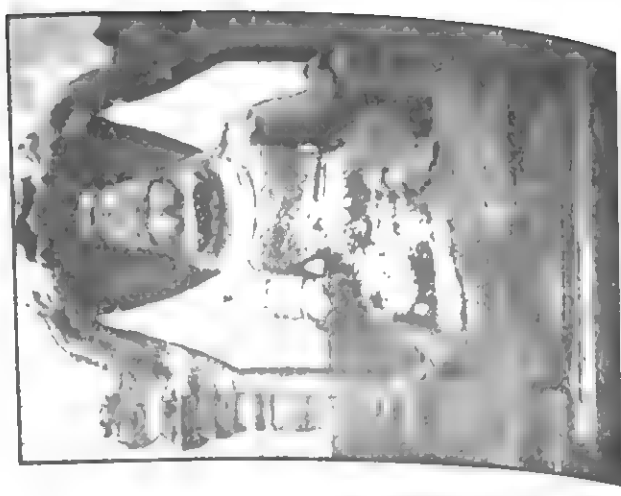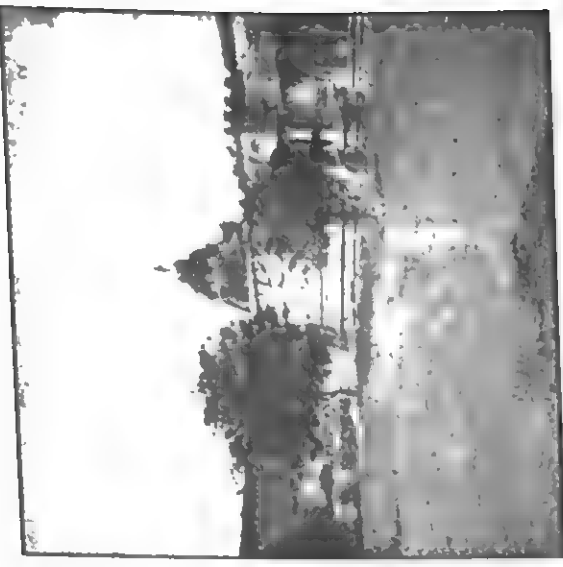
शान्तादुर्गा, कैवल्यपुर (गोआ)

श्रीलयराई देवी, शिरोग्राम (गोआ)
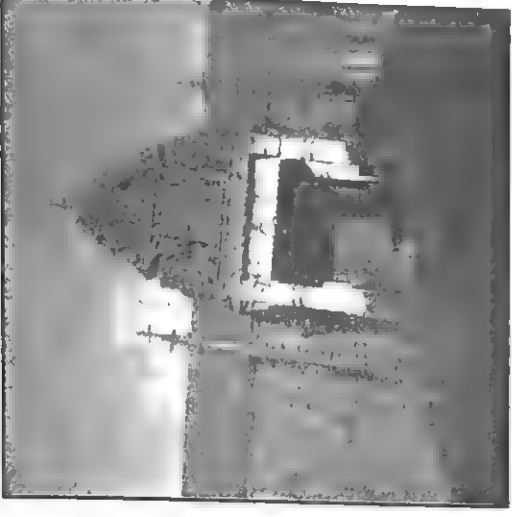
श्रीकृष्ण-मन्दिर-द्वार, उडुपी
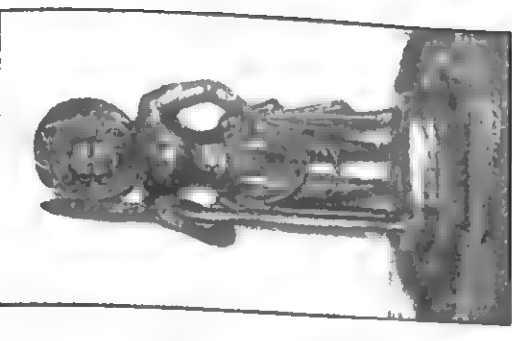
श्रीकृष्ण-विग्रह, उडुपी
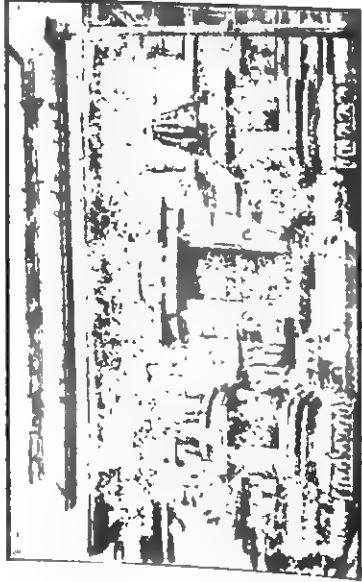
श्रीचेन्नकेशव-मन्दिर, बेलूर
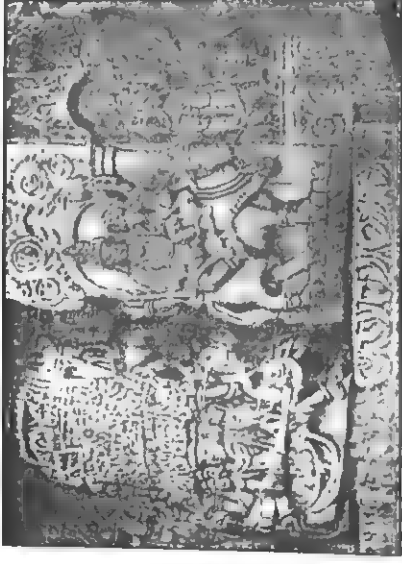
श्रीहायसलेश्वर-मन्दिर, हालेबिद
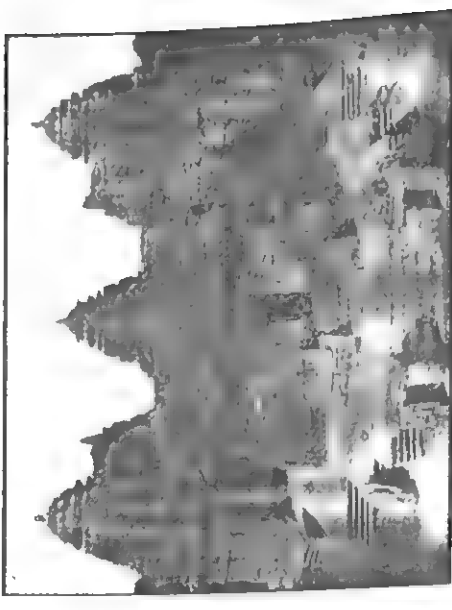
श्रीकेशव-मन्दिर, सोमनाथपुर

सोंडा

(लेखक—डॉ० श्रीकृष्णमूर्ति नायक)

यहाँ श्रीवादिराज स्वामीका विशाल मठ है तथा भगवान् श्रीत्रिविक्रमका मन्दिर है। कहा जाता है कि श्रीवादिराज स्वामीको यहाँ भगवान् हयग्रीवके दर्शन हुए थे, अतः मठमें भगवान् हयग्रीवका मन्दिर है। भगवान् श्रीत्रिविक्रमकी मूर्ति बदरीनारायणजीसे लायी गयी थी।

मार्ग

दक्षिण-रेलवेकी बंगलोर-पूना लाइनपर हरिहरसे ३५ मील दूर हवेरी स्टेशन है। सोंडा जानेके लिये यहाँ उतरना पड़ता है। यहाँसे सिरसी होते हुए सोंडा मोटर-बसद्वारा जाना पड़ता है। सिरसी हवेरीसे ३५ मील है तथा सिरसीसे सोंडा १२ मील पड़ता है।

यात्रियोंके भोजन और ठहरनेकी व्यवस्था मन्दिरद्वारा की जाती है तथा भोजन बिना मूल्य वितरित होता है। होलीके पर्वपर यहाँ रथ-यात्राका उत्सव होता है। उस समय यहाँ हजारों यात्री आते हैं। लोग अपने विवाह, यज्ञोपवीत-संस्कार आदि भी यहाँ सम्पन्न कराते हैं।

आस-पासके स्थान

रिट्टी—हवेरी स्टेशनसे १६ मीलपर स्थित है। बसें चलती हैं। रिट्टीमें श्रीधीरेन्द्रस्वामीका मठ है। यहाँ श्रीधीरेन्द्रस्वामीके मन्त्रालय मठ (रायचूर डिस्ट्रिक्ट)-की शाखा है। वरदा नदी मठके पाससे ही बहती है। धर्मशालामें यात्री ठहरते हैं। सेवा तथा पञ्चामृतके लिये रुपया देना पड़ता है। भोजनके लिये पुजारीसे कहनेपर मन्दिरसे व्यवस्था हो जाती है।

सवांणूर—बंगलोर-पूना लाइनपर हवेरीसे ४६ मील दूर है। यहाँ श्रीसत्यबोध स्वामीका मठ है। प्रतिवर्ष होलीके समय यहाँ तीन दिनतक विशेष समारोह होता है, जिसमें चार-पाँच हजार यात्री एकत्रित होते हैं।

सिरसी

बंगलोर-पूना लाइनके हवेरी या हुबली स्टेशनपर उतरकर मोटर-बससे यहाँ जाना पड़ता है। हवेरीसे यह स्थान ५४ मील है। इसे श्रीक्षेत्र कहा जाता है। यहाँ चामुण्डा देवीका मन्दिर है, जो सिद्धपीठ माना जाता है। फाल्गुन शुक्ला अष्टमीको यहाँ महोत्सव होता है। बहुत बड़ा मेला लगता है। सिरसी अच्छा बाजार है। धर्मशाला है।

हानगल—सिरसीसे २५ मील ईशान-कोणमें हानगल बाजार है। यहाँ धर्मशाला है। बाजारसे आधे मीलपर धर्मनदीके किनारे तारकेश्वर-मन्दिर है। इस स्थानको तारक-क्षेत्र कहते हैं।

जयन्ती-क्षेत्र—सिरसीसे १६ मील अग्निकोणमें वनोशिला गाँव है। यह प्राचीन जयन्ती-क्षेत्र है। यह गाँव वरदा नदीके तटपर बसा है। यहाँपर मधुकेश्वर-शिवमन्दिर बहुत प्राचीन है। कहा जाता है कि यहाँ मधु तथा कैटभ नामके दैत्योंने तप किया था। मधुकेश्वरकी स्थापना मधुने ही की थी। इस गाँवसे ६ मीलपर कैटभेश्वर-मन्दिर है। यहाँ धर्मशाला है। आस-पास और कई मन्दिर हैं।

कुमारस्वामी

बंगलोर-पूना लाइनके हुबली स्टेशनसे मोटर-बसद्वारा सुंडूर आना चाहिये। सुंडूरसे यहाँतक ६ मीलका पैदल मार्ग है। इसी लाइनपर बिलाड़ीसे २० मील दूर तोरनगल्लू स्टेशन है। वहाँसे भी सुंडूर बस जाती है।

यहाँ पर्वतपर स्वामिकार्तिकका भव्य मन्दिर है। इस पर्वतको क्रौञ्चगिरि कहते हैं। दक्षिण-भारतके स्वामिकार्तिक (सुब्रह्मण्य)-तीर्थोंमें यह प्रधान माना जाता है। पाँच गोपुरोंके बाद एक विस्तृत प्राङ्गण मिलता है। उसके पश्चात् एक गोपुर और पार करनेपर कुमारस्वामीका निज-मन्दिर दृष्टिगोचर होता है। स्वामिकार्तिककी मूर्ति भव्य है। मुख्य मन्दिरके आस-पास हेरम्ब (गणपति)-का मन्दिर तथा तीन-चार और मन्दिर हैं। कार्तिक-पूर्णिमाको यहाँ बड़ा मेला लगता है।

कहा जाता है कि गणेशजी और स्वामिकार्तिकमें

कुछ विवाद हो गया था। गणेशजीका विवाह ऋद्धि-सिद्धिसे पहले हो गया। इससे रुष्ट होकर स्वामिकार्तिक कैलास छोड़कर दक्षिण चले आये और यहाँ क्रौञ्चगिरिपर उन्होंने निवास कर लिया। पीछे स्वामिकार्तिकके स्नेहवश भगवान् शङ्कर तथा पार्वतीजी भी कैलाससे दक्षिण आकर श्रीशैलपर स्थित हुए।

गोकर्ण

गोकर्ण-माहात्म्य

अथ गोकर्णमासाद्य त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
समुद्रमध्ये राजेन्द्र सर्वलोकनमस्कृतम्॥
यत्र ब्रह्मादयो देवा मुनयश्च तपोधनाः।
भूतयक्षाः पिशाचाश्च किन्नराः समहोरगाः॥
सिद्धचारणगन्धर्वा मानुषाः पन्नगास्तथा।
सरितः सागराः शैला उपासत उमापतिम्॥
तत्रेशानं समभ्यर्च्य त्रिरात्रोपोषितो नरः।
दशाश्वमेधानाप्नोति गाणपत्यं च विन्दति॥
उपोष्य द्वादशरात्रं कृतार्थो जायते नरः।
तस्मिन्नेव तु गायत्र्याः स्थानं त्रैलोक्यविश्रुतम्॥
त्रिरात्रमुषितस्तत्र गोसहस्रफलं लभेत्।

(महा०वन०तीर्थ०८५। २४—२९; पद्म०आ०स्व० ३९। २२—२७)

'गोकर्णकी ख्याति तीनों लोकोंमें है। वह समुद्रमें स्थित है तथा सभी लोकोंसे नमस्कृत है। वहाँ ब्रह्मा आदि देवगण, तपोधन मुनिगण, भूत, यक्ष, पिशाच, किंनर, नाग, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, मनुष्य एवं सागर, सरिताएँ, पर्वत आदि भगवान् भवानीनाथ शङ्करजीकी उपासना करते हैं। वहाँ जो शङ्करजीकी अर्चना करके तीन रातका उपवास करता है, उसे दस अश्वमेध यज्ञोंका फल मिलता है तथा वह (शिवजीके) गणोंका स्वामी होता है और बारह रात्रियोंतक उपवास करे, तब तो वह कृतार्थ ही हो जाता है। गोकर्णमें ही त्रिलोक-विख्यात गायत्रीदेवीका स्थान है। वहाँ तीन रात्रियोंतक उपवास करनेवाला प्राणी हजार गोदानका फल पाता है।'

गोकर्ण

बंगलोर-पूना लाइनपर हुबली ही गोकर्ण जानेका सबसे उपयुक्त स्टेशन है। हुबलीसे गोकर्ण १०० मील है, किन्तु वहाँतक सीधी मोटर-बस जाती है। वैसे कुंदापुर (शृङ्गेरी, उदीपी)-से भी गोकर्ण जा सकते हैं, किन्तु कुंदापुरवाले मार्गमें कई नदियाँ पड़ती हैं। समुद्र-तटपर छोटी पहाड़ियोंके बीचमें गोकर्ण एक छोटा नगर है।

गोकर्णमें भगवान् शङ्करका आत्मतत्त्व-लिङ्ग है। मन्दिर बहुत सुन्दर है। मन्दिरके भीतर पीठ-स्थानपर यात्रीको केवल अरघा दीखता है। अरघेके भीतर आत्मतत्त्वलिङ्गके मस्तकका अग्रभाग दृष्टिमें आता है और उसीकी पूजा होती है। प्रति बीस वर्षपर यहाँ अष्टबन्ध-महोत्सव होता है। उस समय इस महाबल (आत्मतत्त्वलिङ्ग)-के सप्तपीठों और अष्टबन्धोंको निकालकर नवीन अष्टबन्ध बैठाये जाते हैं। इस अष्टबन्ध-महोत्सवके समय आत्मलिङ्गका स्पष्ट दर्शन होता है। यह मूर्ति मृगशृङ्गके समान है, किन्तु अष्टबन्धोंसे वह आच्छादित है। इस आत्मतत्त्वलिङ्गका नाम महाबलेश्वर है। इसीसे लोग गोकर्णको महाबलेश्वर भी कहते हैं।

कहा जाता है कि पातालमें तपस्या करते हुए रुद्र-भगवान् गोरूपधारिणी पृथ्वीके कर्णरन्ध्रसे यहाँ प्रकट हुए। इसीसे इस क्षेत्रका नाम गोकर्ण पड़ा। पासमें ही कलकलेश्वर लिङ्ग-विग्रह है।

महाबलेश्वर-मन्दिरमें आत्मतत्त्वलिङ्गके दर्शन करके गर्भगृहसे बाहर आनेपर सभामण्डपमें गणेश तथा पार्वतीकी मूर्तियाँ मिलती हैं। उनके मध्यमें नन्दीकी मूर्ति है। महाबलेश्वर तथा चन्द्रशालाके मध्यमें शास्त्रेश्वर लिङ्ग-मूर्ति है। उसके पूर्व वीरभद्रकी मूर्ति है। महाबलेश्वर-मन्दिरके पास ४० पदपर सिद्ध गणपतिकी मूर्ति है। इसमें गणेशजीके मस्तकपर रावणद्वारा आघात करनेका चिह्न है। इनका दर्शन-पूजन करके ही आत्मतत्त्वलिङ्गके दर्शन-पूजनकी विधि है।

महाबलेश्वर-मन्दिरके अग्निकोणमें कोटितीर्थ है। यहाँ सप्तकोटीश्वर-लिङ्ग तथा नन्दीमूर्ति है। कोटितीर्थके पश्चिम कालभैरव-मन्दिर है। कोटितीर्थके पास ही एक शङ्कर-नारायणकी मूर्ति छोटे मन्दिरमें है। इस मूर्तिका आधा भाग शिवका तथा आधा विष्णुका है। समीप ही वैतरणी-तीर्थ है।

कोटितीर्थके दक्षिण अगस्त्य मुनिकी गुफा है। आगे भीमगदातीर्थ, ब्रह्मतीर्थ तथा विश्वामित्रेश्वर लिङ्ग-मूर्ति और विश्वामित्र-तीर्थ हैं।

यहाँ ताम्राचल नामक एक पहाड़ीसे ताम्रपर्णी नदी निकली है। नदीके पास ताम्रगौरीका छोटा-सा मन्दिर है। उसके उत्तर रुद्रभूमि नामक श्मशानस्थली है। कहते

हैं कि पातालसे निकलकर भगवान् रुद्र इसी स्थलपर खड़े हुए थे।

गोकर्ण ग्रामके मध्यमें श्रीवेङ्कटरमण नामक भगवान् विष्णुका मन्दिर है। वे भगवान् नारायण चक्रपाणि होकर इस पुरीके भक्तोंके रक्षार्थ स्थित हैं, ऐसा माना जाता है। गोकर्ण-क्षेत्रकी रक्षिका देवी भद्रकाली हैं। इनका मन्दिर गोकर्णके द्वार-देशपर दक्षिणाभिमुख है। वहाँ आसपास दुर्गाकुण्ड, कालीह्रद तथा खड्गतीर्थ हैं।

यहाँ समुद्र-किनारे शतशृङ्ग पर्वत है। वहाँ कमण्डलु-तीर्थ, गरुडतीर्थ, अगस्त्यतीर्थ तथा गरुडमण्डप और अगस्त्यमण्डप हैं। वहीं समुद्र-तटपर एक कोटितीर्थ है। पासमें विधूत-पापस्थली (पितृस्थली)-तीर्थ है।

परिक्रमा—इस क्षेत्रकी परिक्रमा की जाती है। परिक्रमामें क्षेत्रके भीतरके सब स्थान आ जाते हैं। उन स्थानोंकी नामावली यहाँ दी जा रही है—रुद्रपाद, हरिहरपुर (शङ्कर-नारायण), पट्टविनायक, उमावन, उमाह्रद, उमामहेश्वर, ब्रह्मकुण्ड, ब्रह्मेश्वर, कालभैरव, श्रीनृसिंह, श्रीकृष्णक्षेत्र, केतकीविनायक, सिद्धेश्वर, मणिभद्र, भूतनाथ, कुमारेश्वर, सुब्रह्मण्य, गुहातीर्थ, नागेश्वर-तीर्थ, नागेश्वर, गोगर्भ, अघनाशिनी, कामेश्वर, दत्तात्रेय-पादुका, कुबेरेश्वर, इन्द्रेश्वर, मणिनाग, शाल्मली और गङ्गावली नदियाँ, रामतीर्थ, रामेश्वर, भीमकुण्ड, कपिलतीर्थ, अशोकतीर्थ, अशोकेश्वर, मार्कण्डेयतीर्थ, मार्कण्डेश्वर, योगेश्वर, चक्रखण्डेश्वर, चक्रतीर्थ, महोन्मज्जनी-तीर्थ, वैतरणी-वनदुर्गा, गायत्री-सावित्री-सरस्वतीकुण्ड, सुमित्रेश्वर, गङ्गाधर, सोमतीर्थ, सूर्यतीर्थ आदि।

इनमें अधिकांश स्थान समुद्र-तटपर हैं। कुछ तीर्थस्थल अब लुप्त भी हो गये हैं।

कथा

भगवान् शङ्कर एक बार मृग-स्वरूप बनाकर कैलाससे अन्तर्हित हो गये थे। ढूँढ़ते हुए देवता उस मृगके पास पहुँचे। भगवान् विष्णु, ब्रह्माजी तथा इन्द्रने मृगके सींग पकड़े। मृग तो अदृश्य हो गया, किन्तु तीनों देवताओंके हाथमें सींगके तीन टुकड़े रह गये। भगवान् विष्णु तथा ब्रह्माजीके हाथके टुकड़े—सींगका मूलभाग तथा मध्यभाग गोला-गोकर्णनाथ तथा शृङ्गेश्वरमें स्थापित हुए। (इन तीर्थोंके वर्णनमें उनकी कथा है।) इन्द्रके हाथमें सींगका अग्रभाग था। इन्द्रने उसे स्वर्गमें स्थापित किया। रावणके पुत्र मेघनादने जब इन्द्रपर विजय प्राप्त की, तब रावण स्वर्गसे वह लिङ्ग-मूर्ति लेकर लङ्काकी ओर चला।

कुछ विद्वानोंका मत है कि रावणकी माता कैकसी बालूका पार्थिवलिङ्ग बनाकर पूजन करती थी। समुद्र-किनारे पूजन करते समय उसका बालुकालिङ्ग समुद्रकी लहरोंसे बह गया। इससे वह दुःखी हो गयी। माताको संतुष्ट करनेके लिये रावण कैलास गया। वहाँ तपस्या करके उसने भगवान् शङ्करसे आत्मतत्त्वलिङ्ग प्राप्त किया।

दोनों कथाएँ आगे एक हो जाती हैं। रावण जब गोकर्ण क्षेत्रमें पहुँचा, तब संध्या होनेको आ गयी। रावणके पास आत्मतत्त्वलिङ्ग होनेसे देवता चिन्तित थे। उनकी मायासे रावणको शौचादिकी तीव्र आवश्यकता हुई। देवताओंकी प्रार्थनासे गणेशजी वहाँ रावणके पास ब्रह्मचारीके रूपमें उपस्थित हुए। रावणने उन ब्रह्मचारीके हाथमें वह लिङ्गविग्रह दे दिया और स्वयं नित्य-कर्ममें लगा। इधर मूर्ति भारी हो गयी। ब्रह्मचारी बने गणेशजीने तीन बार नाम लेकर रावणको पुकारा और उसके न आनेपर मूर्ति पृथ्वीपर रख दी।

रावण अपनी आवश्यकताकी पूर्ति करके शुद्ध होकर आया। वह बहुत परिश्रम करनेपर भी मूर्तिको उठा नहीं सका। खीझकर उसने गणेशजीके मस्तकपर प्रहार किया और निराश होकर लङ्का चला गया। रावणके प्रहारसे व्यथित गणेशजी वहाँसे चालीस पद जाकर खड़े रह गये। भगवान् शङ्करने प्रकट होकर उन्हें आश्वासन दिया और वरदान दिया कि 'तुम्हारा दर्शन किये बिना जो मेरा दर्शन-पूजन करेगा, उसे उसका पुण्यफल नहीं प्राप्त होगा।'

आसपासके स्थान

कुमटा—गोकर्णसे थोड़ी दूरपर यह अच्छा बाजार है। गोकर्णसे यहाँतक बस-मार्ग है। इस स्थानमें शान्ता-कामाक्षीका मुख्य मन्दिर है। दो मन्दिर और भी हैं।

कारवार—यह गोकर्णसे थोड़ी दूरपर समुद्रके पश्चिमी तटका अच्छा बंदरगाह है। यहाँ सिद्धेश्वर-मन्दिर प्रसिद्ध है।

मुरुडेश्वर—यही नाम बाजारका और यहाँके शिव-मन्दिरका भी है। यहाँ मेलेके अवसरपर आस-पासके यात्री आते हैं।

सिराली—कुंदापुरसे गोकर्ण जाते समय मोटर-बसके मार्गपर सिराली बाजार आता है। यह गणपतितीर्थ है। यहाँके मन्दिरमें महागणपतिका श्रीविग्रह है।

शान्तादुर्गा—कैवल्यपुर

गोवाप्रान्तके फोंडा महालके कवले ग्राममें यह स्थान है। बाफरके दुर्भाट नामक बंदरगाहके समीप पड़ता है।

शान्तादुर्गाका आदि स्थान तिरहुत (मिथिला) है। जब परशुरामजी अपने यज्ञके लिये तिरहुतसे ब्राह्मणोंको लाये, तब ये ब्राह्मण अपनी आराध्य-मूर्ति भी साथ ले आये। यहाँके कोशी गाँवमें दुर्गाजीकी स्थापना हुई; किंतु पुर्तगाली जब यहाँ आये और अत्याचार करने लगे, तब देवीकी मूर्ति कैवल्यपुरमें लाकर स्थापित की गयी। अब इस स्थानको कवले ग्राम कहा जाता है। देवीका मन्दिर विशाल है। देवीकी बड़ी मान्यता है। यहाँ सभी पर्वोंपर महोत्सव होते हैं।

मांगीश या मंगेश महादेव

गोवाके प्रियोल नामक ग्राममें श्रीमंगेश महादेवका मन्दिर है। इनका वास्तविक नाम 'मांगीश' है। ये महाराष्ट्रमें बसे हुए पञ्चगौड़ ब्राह्मणोंमेंसे वत्स और कौण्डिन्य-गोत्रीय सारस्वत ब्राह्मणोंके कुलदेवता हैं।

पहले कुशस्थल ग्राममें (जो आजकल कुडथाल या कुट्ठाल कहा जाता है) श्रीमंगेशका विशाल मन्दिर था। श्रीमंगेश स्वयम्भूलिङ्ग उसीमें स्थापित था; किन्तु गोमान्तक प्रदेश (गोवा)-में जब पुर्तगालियोंने प्रवेश करके उपद्रव प्रारम्भ किया, तब भावुक भक्त श्रीमंगेशको पालकीमें विराजित करके 'प्रियोल' गाँव ले आये। वहीं कुछ दिन पश्चात् मन्दिर बन गया।

कहा जाता है कि भगवान् परशुरामद्वारा यज्ञकार्य सम्पन्न करनेके लिये सह्याद्रि पर्वतकी तराईमें जो ब्राह्मण-परिवार तिरहुतसे लाये गये थे, उन्हींमेंसे एक परम शिवभक्त शिवशर्माके लिये भगवान् शङ्कर स्वयं इस लिङ्गरूपमें प्रकट हुए। भगवती दुर्गा एक बार इस लिङ्गमूर्तिके दर्शनार्थ पधारीं। विनोदके लिये भगवान् शङ्करने उस समय एक भयानक पशुका रूप धारण करके दुर्गाजीको डरा दिया। भीत पार्वतीने पुकारना चाहा—**'मां गिरीश पाहि' कैलासनाथ!** मुझे बचाओ! किन्तु भयवश उनके मुखसे निकला 'मांगीश'। भगवान् शिव तत्काल प्रकट हो गये। तभीसे शिवलिङ्गका नाम मांगीश हो गया।

लयराई देवी

गोवा प्रदेशके शिरोग्राममें लयराई देवीका स्थान अत्यन्त प्रसिद्ध है। ये वैष्णवी देवी हैं। इनका इधर इतना सम्मान है कि इस गाँवमें कोई भी घोड़ेपर चढ़कर नहीं निकलता।

वैशाख शुक्ला पञ्चमीको यहाँ बड़ा मेला लगता है। पञ्चमीकी रात्रिमें गाँवके बाहर एक वटवृक्षके नीचे लकड़ियोंका ढेर एकत्र करके उसमें अग्नि लगा दी जाती है। कई घंटोंमें जब लकड़ियाँ जल जाती हैं, लपट तथा धुआँ नहीं रहता, तब अङ्गारोंके ऊपरसे नंगे पैर वे सब लोग चलते हैं, जो उस दिन देवीकी पूजाके लिये व्रत किये रहते हैं। ऐसे लोगोंकी संख्या कई सौ होती है। किसीका न पैर जलता न कोई कष्ट होता। यह अद्भुत दृश्य देखने दूर-दूरसे विधर्मी लोग भी आते हैं।

हरिहर

(लेखक—श्रीयुत के० हनुमंतराव हरणे)

दक्षिण-रेलवेकी एक लाइन बंगलोरसे हरिहर होते पूनातक गयी है। तुङ्गभद्रा नदीके किनारे हरिहर एक अच्छा नगर है। इस क्षेत्रका प्राचीन नाम गुहारण्य है। स्टेशनसे हरिहर-मन्दिर लगभग आध मील दूर है। मन्दिरके पीछे ही तुङ्गभद्रा नदी है। यहाँ माघ-पूर्णिमाको रथोत्सव होता है।

हरिहर-मन्दिर प्राचीन है। मन्दिरके आस-पास कई शिलालेख हैं। मन्दिरमें हरि-हरात्मक भगवत्-मूर्ति है। मूर्तिका दाहिना भाग शिवरूप है। इस ओरके मस्तकके भागमें रुद्राक्षका मुकुट तथा ऊपरके हाथमें त्रिशूल है। बायाँ भाग विष्णुस्वरूप है। उधर ऊपरके हाथमें चक्र है। नीचेके दोनों ओरके हाथोंमें अभयमुद्रा है। मन्दिरके पास ही एक छोटा मन्दिर देवीका है,किन्तु उसमें प्रतिमा प्राचीन नहीं है।

यहाँ तुङ्गभद्रा नदीमें ११ तीर्थ माने जाते हैं (उनके चिह्न अब नहीं हैं)-१—ब्रह्मतीर्थ, २-भार्गवतीर्थ, ३-नृसिंहतीर्थ, ४-वह्नितीर्थ, ५-गालवतीर्थ, ६-चक्रतीर्थ, ७-रुद्रपादतीर्थ, ८-पापनाशन-तीर्थ, ९-पिशाचमोचन-तीर्थ, १०-ऋण-मोचनतीर्थ और ११-वटच्छाया-तीर्थ।

कथा

पूर्वकालमें गुह नामक राक्षस यहाँ निवास करता था। उसका वन होनेसे वह गुहारण्य कहा जाता था। उस राक्षसने कठोर तपस्या करके ब्रह्माजीसे वरदान प्राप्त कर लिया कि वह सभी देवताओंसे अवध्य रहेगा। वरदान पाकर वह मदोन्मत्त हो गया और अत्याचार करने लगा।

गुहके अत्याचारोंसे पीड़ित देवता ब्रह्माजीके पास गये। ब्रह्माजीने उन्हें कैलास भेजा और कैलाससे शङ्करजीने वैकुण्ठ जानेको कहा। देवताओंकी प्रार्थना सुनकर भगवान् विष्णुने उन्हें अभयदान दिया। ब्रह्माजीके वरदानकी मर्यादा रखनेके लिये भगवान् विष्णु कैलास आये और वहाँ उन्होंने अपने दाहिने अङ्गमें भगवान् शङ्करको स्थित किया। इस प्रकार हरि-हररूपसे प्रभु गुहारण्यमें पधारे।

घोर संग्रामके पश्चात् दैत्य गुहको भूमिपर गिराकर भगवान् उसके वक्षःस्थलपर खड़े हुए। उस समय गुहने भगवान्की प्रार्थना करके उन्हें संतुष्ट किया और उनसे वरदान माँग लिया कि प्रभु इसी रूपमें वहाँ स्थित रहें।

बाणावर

बंगलोर-पूना लाइनपर आरसीकेरेसे १० मील दूर बाणावर स्टेशन है। यहाँ भी प्राचीन होयसलेश्वर-मन्दिर एक घेरेमें है। मन्दिरमें विशाल शिवलिङ्ग तथा पार्वतीकी मूर्ति है। पासमें ही केदारेश्वर मन्दिर है। ये दोनों मन्दिर हालेविदके हौसलेश्वर मन्दिरकी शैलीपर ही बने हैं। इनकी कला भी उत्कृष्ट है।

बेलूर

मैसूर-राज्यके तीर्थोंमें बेलूरका विशिष्ट स्थान है। मैसूर-आरसीकेरे दक्षिण-रेलवेकी लाइनके हासन रेलवे स्टेशनसे २५ मील दूर है। बंगलोर-हरिहर-पूना लाइनके बाणावर स्टेशनसे यह १८ मील दक्षिण-पश्चिममें है। बाबाबूदन पहाड़ीसे निकली मागची नदी बेलूरको छूती हुई बहती है। हालेबिदसे मोटर-बसके रास्ते यह १० मील दूर है। यह स्थान मोटर-बसोंका केन्द्र है। यहाँसे आरसीकेरे, हालेबिद, बाणावर, चिकमगलूर आदिको बसें जाती हैं। ठहरनेके लिये यहाँ एक डाकबँगला है।

चेन्नकेशवका मन्दिर ही यहाँका मुख्य मन्दिर है। विष्णुवर्द्धन हायसलने इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा की थी। मन्दिर नक्षत्रकी आकृतिका है। प्रवेशद्वार पूर्वाभिमुख है। मुख्य द्वारसे प्रवेश करनेपर एक चतुष्कोण मण्डप आता है। यह मण्डप खुला है। भगवान्‌की मूर्ति लगभग ७ फुट ऊँची चतुर्भुज है। उनके साथ उनके दाहिने भूदेवी और बायें लक्ष्मीदेवी, श्रीदेवी हैं। शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म उनके हाथोंमें हैं।

इस मन्दिरके अतिरिक्त कप्पे चेन्निंगरायका मन्दिर भी है, जो इस मन्दिरके दक्षिणमें स्थित है। इसका निर्माण विष्णुवर्द्धनकी महारानीने कराया था। इसमें पाँच मूर्तियाँ हैं। श्रीगणेश, श्रीसरस्वती, श्रीलक्ष्मीनारायण, लक्ष्मी-श्रीधर और दुर्गा महिषासुरमर्दिनी। इनके अतिरिक्त एक मूर्ति श्रीवेणुगोपालकी है।

यह मन्दिर एक ऊँची दीवारके घेरेमें चबूतरेपर स्थित है। यहाँकी मूर्तिकला अद्‌भुत है। मन्दिरके पिछले एवं बगलकी भित्तियोंमें जो मूर्तियाँ अङ्कित हैं, वे सजीव-सी लगती हैं। इतनी सुन्दर मूर्तियाँ अन्यत्र कठिनाईसे मिलती हैं। मन्दिरके जगमोहनमें भी बहुत

बारीक खुदाईका काम है। पूरा मन्दिर निपुण कलाका एक श्रेष्ठ प्रतीक है।

इस मन्दिरके घेरेमें ही कई मन्दिर और हैं। एक लक्ष्मीजीका मन्दिर है और एक शिव-मन्दिर है, जिसमें सात फुटसे भी ऊँचा शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित है। बेलूरका प्राचीन नाम वेलापुर है।

हालेबिद

मैसूरके तीर्थोंमें भगवान् हायसलेश्वरका प्रमुख स्थान है। इन्हें विष्णुवर्द्धनने प्रतिष्ठित किया था। हायसलेश्वरका मन्दिर दक्षिणके मन्दिरोंमें कला और संस्कृतिकी दृष्टिसे निराला स्थान रखता है।

मार्ग—बंगलोर-आरसीकेरे रेलवे-लाइनपर बाणावर रेलवे-स्टेशन है। हालेबिद बाणावरसे १८ मील दूर एक छोटा ग्राम है। बेलूरके उत्तर-पूर्वमें यह दस मीलपर स्थित है। बेलूर तथा बाणावर दोनों स्थानोंसे ही यहाँके लिये बस मिलती है। यहाँ एक प्रवासी-भवन (डाकबँगला) ठहरनेके लिये है।

हालेबिदका पुराना नाम द्वारसमुद्र है। यहाँ सनातनधर्मी तथा जैन दोनोंके मन्दिर हैं। बेलूर और हालेबिदके मन्दिर एक ही कारीगरके बनाये लगते हैं। इनकी कला समानरूपसे भव्य है।

एक घेरेके भीतर ५ फुट ऊँचे चबूतरेपर १६० फुट लंबा, १२२ फुट चौड़ा यहाँका मुख्य मन्दिर भगवान् हायसलेश्वरका है, जो दो समान भागोंमें विभाजित है। प्रत्येकमें अपने-अपने नवरङ्ग-कोष्ठ तथा नन्दी-मण्डप है। इन मण्डपोंके आगे बरामदे हैं। उत्तरके भागमें जो शिवलिङ्ग स्थापित है, वह संतलेश्वरके नामसे विख्यात है तथा दक्षिणभागका शिवलिङ्ग हायलेश्वरके नामसे विख्यात है। मुख्य मन्दिरके आगे एक बड़ा कोष्ठ है तथा उसके आगे नन्दीकी प्रतिमा है। नन्दी-मण्डपके दक्षिण मण्डपमें भगवान् सूर्यदेवकी मूर्ति है। इस मन्दिरकी कलाकृतियाँ इतनी सुन्दर है—दीवालोंपर जो चित्र अङ्कि किये गये हैं, वे इतने उत्कृष्ट हैं कि उनकी तुलना नहीं हो सकती।

भगवान् हायसलेश्वरके मन्दिरके अतिरिक्त यहाँ एक और छोटा मन्दिर है, जो भगवान् केदारेश्वरका है। इसकी भी कलाकृतियाँ अत्यन्त सुन्दर हैं।

जैनमन्दिर

हायसलेश्वरके मन्दिरसे दो फर्लांगकी दूरीपर जैनोंके तीन मन्दिर हैं।

इनमें सबसे पश्चिममें स्थित प्रमुख मन्दिर पार्श्वनाथजीका है। इस मन्दिरमें पारसनाथके अतिरिक्त २४ तीर्थंकरोंकी भी मूर्तियाँ हैं। यहाँके स्तम्भोंपर इस प्रकारकी चमक है कि उन्हें जलसे गीला करके दर्शक अपना मुखतक देख सकते हैं।

मध्यका मन्दिर श्रीआदिनाथका है तथा तीसरा मन्दिर जैन-तीर्थंकर शान्तिनाथजीका है।

अन्य मन्दिर

इनके अतिरिक्त बेनेगुडा पहाड़ीपर करीकल रुद्रका मन्दिर है। वहाँ एक वीरभद्रका भी मन्दिर है।

श्रीरङ्गनाथजीके मन्दिरमें पहले भगवान् शिवका मन्दिर था, जो श्रीबूचेश्वरके नामसे प्रसिद्ध थे; परन्तु अब वहाँ भगवान् विष्णुकी प्रतिमा है।

यहाँसे उत्तर-पूर्वमें दो मीलकी दूरीपर श्रीनरसिंहजीका मन्दिर है। उत्तर-पूर्वमें श्रीछत्तेश्वरका मन्दिर है। पुष्पगिरिकी पहाड़ियोंमें श्रीमल्लिकार्जुनका मन्दिर है। पुष्पगिरिके पूर्वमें भैरवजीका मन्दिर है।

बिरूर

बंगलोर-पूना लाइनपर आरसीकेरेसे २८ मील दूर बिरूर प्रसिद्ध स्टेशन है। यहाँ पासमें बाबाबूदन नामक पहाड़ी है। इसके पास ही भगवान् दत्तात्रेयका प्रसिद्ध मन्दिर है। यह मन्दिर इधर बहुत प्रसिद्ध है। दूर-दूरके यात्री दर्शनार्थ आते हैं।

636 Tirthank_Section_15_2_Front

कुडली

विरूर-तालगुप्प लाइनपर शिमोगा-टाउन स्टेशन है। वहाँसे कुडली लगभग १० मील दूर ईशानकोणमें है। शिमोगासे बसें चलती हैं। कुडलीमें तुङ्गा और भद्रा नदियाँ मिलती हैं। आगे नदीका नाम तुङ्गभद्रा हो जाता है। इन नदियोंका यह संगम-क्षेत्र पवित्र तीर्थ माना गया है। संगमपर घाट बने हैं और वहाँ संगमेश्वर शिव-मन्दिर है। इनके अतिरिक्त वहाँ विश्वेश्वर, रामेश्वर आदि कई मन्दिर हैं। यहाँ भगवान् नृसिंहका मन्दिर प्राचीन एवं विख्यात है। कुडलीमें शङ्कराचार्यजीका मठ है। उसमें विद्या-तीर्थ महेश्वर तथा शारदादेवीका मन्दिर है। यह मठ शृङ्गेरीपीठके नियन्त्रणमें है।

शालग्राम-क्षेत्र

उदीपीसे कुंदापुर बसद्वारा आते समय मार्गमें शालग्राम-बाजार मिलता है। इसे शालग्राम क्षेत्र कहते हैं। यहाँ भगवान् नारायणका विशाल मन्दिर है। दूसरा मन्दिर यहाँ कोटीश्वर महादेवका है।

गंगोली

कुंदापुर-गोकर्ण बस-मार्गमें गंगोलीबाजार पश्चिम समुद्रतटपर मिलता है। इस स्थानका नाम गंगोली या गङ्गावली है। इसका अर्थ है—नदियोंका समूह। यहाँ पाँच नदियाँ परस्पर मिलती हैं। सम्भवतः यही पञ्चाप्सरस्-तीर्थ है, किन्तु अब यह तीर्थरूपमें प्रख्यात नहीं रहा। केवल आस-पासके लोग यहाँ श्राद्धादि करने आते हैं।

अगस्त्याश्रम

गंगोलीसे आगे चलनेपर देखा जाता है कि पश्चिमीघाटके पर्वत समुद्रके पास हो गये हैं। पर्वतोंकी सीधी पङ्क्ति चली गयी है। पर्वतोंके नीचे गंगोली नदी है। नदी और समुद्रके मध्यमें बहुत सँकरी भूमि मीलोंतक चली गयी है। इसी भूमिपरसे सड़क गयी है। यह भूमि कहीं-कहीं केवल कुछ गज चौड़ी है। इसी सँकरे मार्गमें एक स्थानपर नृसिंह-वाराहका मन्दिर है और उसके आगे गङ्गेश्वर शिव-मन्दिर है। ये मन्दिर छोटे हैं, अप्रसिद्ध हैं; किन्तु यह तीर्थ पुराण-वर्णित नृसिंह-वाराहक्षेत्र है। कहा जाता है कि नृसिंह-वाराह तथा गङ्गेश्वरकी मूर्तियाँ महर्षि अगस्त्यद्वारा स्थापित हैं। इनसे आगे जहाँ मध्यभूमि कुछ चौड़ी हो गयी है,समुद्रके समीप अगस्त्याश्रम है। वहाँ अगस्त्येश्वर शिव-मन्दिर है।

मूकाम्बिका

उदीपी या शृंगेरीसे मोटर-बसें कुंदापुर जाती हैं। कुंदापुर बस-लाइनोंका एक केन्द्रस्थान है। वहाँसे ३० मीलपर कुल्लूर है। कुंदापुर या चिकमगलूरसे वहाँ बसमें जा सकते हैं। कुल्लूरमें मूकाम्बिका देवीका मन्दिर है। परशुरामजीद्वारा स्थापित सात मुक्ति क्षेत्रोंमें एक यह क्षेत्र है। मूकाम्बिका-देवी सिद्धपीठ माना जाता है। यहाँका मन्दिर विशाल है। इस प्रदेशके लोग यहाँ दर्शनार्थ आते ही रहते हैं।

यह प्रधान शक्तिपीठ है। यहाँ स्वर्णरेखाङ्कित साम्ब-सदाशिव-लिङ्ग है। कहा जाता है कि इसकी स्थापना आदि शङ्कराचार्यने की थी। यहाँ सौपर्णिका नदी है।

तीर्थहाल्ली

बिरूर तालगुप्प लाइनपर शिमोगा स्टेशन है। वहाँसे ३० मीलपर तुङ्गा नदीके किनारे यह प्रसिद्ध तीर्थ है। गाँवके पास नदीमें प्रपात है, उसे परशुराम-तीर्थ कहते हैं। पासमें ही परशुरामेश्वर शिव-मन्दिर है। पासमें और भी कई मन्दिर हैं। सोमवती अमावास्याको यहाँ बड़ी भीड़ होती है। मार्गशीर्षमें यहाँ तीन दिन मेला लगता है। यहाँ धर्मशाला है। शिमोगासे यहाँतक पहुँचनेके लिये सवारी मिलती है।

636 Tirthank_Section_15_2_Back

अम्बुतीर्थ

(लेखक—श्रीअगुण्डू भट्ट)

अम्बुतीर्थ शिरावती नदीके उद्गमस्थानको कहते हैं, जो मैसूर-राज्यके शिमोगा जिलेमें तीर्थहाल्ली तालुकमें स्थित है। कहते हैं यह नदी श्रीरामके बाणसे निकली थी। इसके नीचे श्रीरामेश्वर-लिङ्ग है, जिसकी स्थापना श्रीरामचन्द्रजीने की थी।

मार्ग—विरूर तालगुप्प लाइनके शिमोगा स्टेशनसे अम्बुतीर्थ ४५ मील दूर है। बसें समय-समयपर चलती हैं।

ठहरनेका स्थान—वहाँ यागशालाके नामसे एक धर्मशाला है तथा श्रीराम-मन्दिरमें भी रहनेकी व्यवस्था है।

दर्शनीय स्थान

यहाँ अभिषेक-सरोवर है। इस सरोवरसे नदी बहती हुई एक ऊँचाईसे जोग-कूप नामक स्थानपर गिरती है, इसे जोग-निर्झर भी कहते हैं। तब यह नदी अरबसागरमें मिल जाती है।

चैतमें श्रीरामनवमी तथा कार्त्तिकमें दीपोत्सवके दिन यहाँ हजारों यात्री एकत्र होते हैं।

जोग-निर्झर

इसे 'जोगफाल' या जरसोपा कहते हैं। तालगुप्प स्टेशनसे इस प्रपातको मार्ग जाता है। यह विश्वका सबसे बड़ा प्रपात है। शरावती नदीका जल आधमील चौड़ाईमें ९६० फुट ऊँचेसे १३२ फुट गहरे कुण्डमें गिरता है। अमेरिकाका नियागरा प्रपात भी इतना भव्य नहीं है। यहाँ चार स्थानोंमें प्रपात है। इनमें पहला प्रपात ही सबसे बड़ा है। दूसरा प्रपात गर्जनेवाला प्रपात कहा जाता है। तीसरा प्रपात अग्निबाण (राकेट) प्रपातके नामसे पुकारा जाता है। इसमें जलकी धारा फुहारा बनकर बाणोंके समान गिरती है। चौथा सुकुमार प्रपात बहुत ही सुन्दर तथा कोमल दीख पड़ता है।

यह स्थान जंगलमें है। वन्य पशुओंका भी कुछ भय रहता है। प्रपातके पास डाकबँगला है।

तालकुण्ड

शिमोगा जिलेका यह प्रसिद्ध स्थान है। तालगुप्प स्टेशनसे पास ही है। यहाँका प्रणवेश्वर-शिवमन्दिर मैसूर-राज्यका सबसे प्राचीन मन्दिर कहा जाता है। मन्दिरमें केवल एक गोपुर है, किन्तु इसके गर्भगृहका शिवलिङ्ग भग्न हो गया है। इस मन्दिरमें नन्दीके स्थानपर भोग-नन्दीश्वर शिव-मन्दिर बना है। इस मन्दिरसे दक्षिण अरुणाचलेश्वर-शिवमन्दिर है। दोनों मन्दिरोंके बीचमें एक छोटा मन्दिर और है। हालेबिदका हायलेश्वर-मन्दिर इसी ढंगका बना है। इन मन्दिरोंकी भित्तियों तथा छतोंपर अनेक कलापूर्ण देवमूर्तियाँ बनी हैं। दोनों मन्दिरोंके मध्यके छोटे मन्दिरको उमा-महेश्वर-मन्दिर कहते हैं। उसमें शिव-पार्वतीकी धातुमयी मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। मन्दिरके सामने कलापूर्ण कल्याणमण्डप हैं। प्राकार (परकोटे)-में दो मन्दिर हैं, जिसमेंसे एकमें 'प्रसन्नपार्वती' की ६ फुट ऊँची मूर्ति है। नन्दी-मन्दिर भी बहुत सुन्दर है।

साँकरी पाटण

बस-केन्द्र चिकमगलूरसे यह स्थान ईशानकोणमें १५ मीलपर है। यहाँ श्रीरङ्गजीका प्रसिद्ध मन्दिर है। कहते हैं राजा रुक्माङ्गदकी यहीं राजधानी थी। यहाँकी श्रीरङ्गजीकी प्रतिमा रुक्माङ्गदद्वारा पूजित है।

शृंगेरी

बंगलोर-पूना लाइनपर बिहार स्टेशनसे शृंगेरी ६० मील है। बिरूरसे मोटर-बसद्वारा चिकमगलूर और वहाँसे शृंगेरी आ सकते हैं। मंगलोरसे भी बसद्वारा आ सकते हैं। यहाँ ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

शृङ्गेरी श्रीशङ्कराचार्यके मुख्य पीठोंमेंसे है। यह छोटा-सा नगर है, जो तुङ्गा नदीके किनारे बसा है। नदीपर पक्के घाट हैं। घाटके ऊपर ही श्रीशङ्कराचार्य-मठ है। मठके घेरेमें श्रीशारदाजीका और विद्या-तीर्थ महेश्वरका मन्दिर

है। कहा जाता है कि इन दोनों देवताओंकी स्थापना आदिशङ्कराचार्यने की थी। दोनों ही मन्दिर पृथक्-पृथक् हैं। भगवती शारदाकी मूर्ति भव्य है। विद्या-तीर्थ महेश्वर शिव-मन्दिर है। उसमें लिङ्ग-मूर्ति स्थापित है। यहाँ नवरात्रमें विशेष समारोह होता है। इनके अतिरिक्त मठमें श्रीचन्द्रमौलीश्वरका पूजन होता है। वर्तमान शङ्कराचार्यजी तुङ्गा नदीके दूसरे तटपर बने आश्रममें निवास करते हैं।

शृंगेरी नगरके एक किनारे समीप ही एक छोटी पहाड़ी है। उसपर जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। पहाड़ीके ऊपर एक भव्य शिव-मन्दिर है। उसमें विभाण्डकेश्वर शिवलिङ्ग है। शृङ्गी ऋषिके पिता विभाण्डक ऋषिका यहाँ आश्रम था और उन्होंने ही इस शिवलिङ्गकी स्थापना की थी, ऐसी मान्यता है। यह शृंगेरीक्षेत्र पुराना विभाण्डकाश्रम है। विभाण्डकेश्वरके दर्शन करके नीचे उतरनेपर पास ही धर्मशाला मिलती है।

शृङ्गगिरि

शृंगेरीसे ९ मील पश्चिम यह पर्वत है। यहाँ शृङ्गी ऋषिका जन्मस्थान है। वैसे इस पर्वतका प्राचीन नाम वाराह पर्वत है। इस पर्वतमें विभिन्न स्थानोंपर तुङ्गा, भद्रा, नेत्रावती तथा वाराही—इन चार नदियोंके उद्गम हैं। तुङ्गा और भद्रा नदियाँ शिमोगाके पास मिल जाती हैं और आगे उनका नाम तुङ्गभद्रा हो जाता है। नेत्रावती और वाराही मंगलोरकी ओर जाकर पश्चिम समुद्रमें मिलती हैं। इन चारों नदियोंके उद्गमस्थान पवित्र तीर्थ माने जाते हैं। विभाण्डक ऋषिका आश्रम वाराह पर्वतसे शृंगेरीतक बताया जाता है।

उदीपी

पूर्वमें पश्चिमीघाट हैं तथा पश्चिममें अरबसागर है। इसके बीचमें जो सँकरा भूमितल उत्तरमें गोकर्ण तथा दक्षिणमें कन्या-कुमारीतक है, वह परशुराम-क्षेत्र है। इसी परशुराम-क्षेत्रके, अन्तर्गत दक्षिण कनाड़ामें उदीपी स्थित है। इसका पुरातन नाम उडुपा था, जो आगे चलकर उडूपी (उदीपी) हो गया। उडुका अर्थ है नक्षत्र तथा 'पा' पालकको कहते हैं। इस तरह इसका अर्थ हुआ नक्षत्रोंका पालक अर्थात् चन्द्रमा। कहते हैं यहाँ चन्द्रमाने स्वयं तपस्या की थी तथा भगवान् शिवने उन्हें चन्द्रमौलीश्वरके रूपमें दर्शन दिया था। इसके पुरातन कालमें और भी नाम थे—जैसे रजतपीठपुर, रौप्यपीठपुर एवं शिवाली।

मार्ग

उदीपीका निकटतम रेलवे स्टेशन मंगलोर है। मंगलोरसे उदीपीको बराबर बसें चलती हैं, जो चार घंटेमें उदीपी पहुँचा देती हैं। मंगलोरसे उदीपी ३७ मील है। दूसरा मार्ग उदीपीके लिये शृंगेरीसे है। विरूर-तालगुप्प लाइनपर सागर स्टेशन है, वहाँसे कुंदापुर बस आती है, किन्तु यह मार्ग पर्याप्त लंबा है।

उदीपीमें मध्वाचार्यके ८ मठ हैं। उन मठोंमें यात्रियोंके ठहरनेकी सुविधा है।

दर्शनीय स्थान

श्रीमध्वाचार्य, जिन्होंने द्वैतमतका प्रतिष्ठापन किया, उदीपीसे ६ मील दूर वेल्ले नामक ग्राम (पजक क्षेत्रमें) उत्पन्न हुए थे। इन्होंने उदीपीमें शास्त्रोंका अध्ययन किया तथा श्रीअनन्तेश्वर-मन्दिरके अच्युतप्रकाशाचार्यको अपना गुरु बनाया। अपने गुरुके ब्रह्मलीन हो जानेपर इन्होंने श्रीअनन्तेश्वर-मन्दिरकी गद्दी सम्हाली।

श्रीकृष्ण-मठ—अनन्तेश्वर-मन्दिरके उत्तर-पूर्वमें स्थित है। मन्दिरका मुख्यद्वार दक्षिण दिशाकी ओर है। द्वारमें घुसते ही मध्य-सरोवर दिखायी पड़ता है। मन्दिरकी छतपर चाँदीका पत्र चढ़ा है तथा सोनेकी फूल-पत्तियाँ बनी हैं। दीवारोंपर भगवान् विष्णुके अवतारोंके चित्र अङ्कित हैं। मन्दिरमें घुसते ही श्रीमध्वाचार्यकी मूर्ति दीख पड़ती है। मुख्य मूर्तियोंमें श्रीगरुड़का मन्दिर है तथा इसके ठीक विपरीत दिशामें मुख्य प्राणका मन्दिर है। कहते हैं ये दोनों मूर्त्तियाँ श्रीवादिराज स्वामी अयोध्यासे लाये थे। मुख्यमन्दिरमें श्रीकृष्णकी शालग्राम-शिलाकी अत्यन्त सुन्दर मूर्ति है, जो दाहिने हाथमें मक्खन बिलोनेकी मथानी लिये हुए हैं तथा बायें हाथमें मन्थन-रज्जु (नेत) धारण किये हैं।

इसके चारों ओर पीतलके दीप-पात्र बने हैं, जो सदा जलते रहते हैं। कहते हैं, इनमेंसे एक श्रीमध्वाचार्यजीका जलाया अबतक जल रहा है। घण्टामणि, काष्ठ-पीठ, रजतका अक्षय-पात्र एवं दीप-पात्र आदि कई वस्तुएँ श्रीमध्वाचार्यके समयकी हैं।

मन्दिरका पूर्वी द्वार विजया दशमीके अतिरिक्त कभी नहीं खुलता—केवल विजया दशमीके दिन ही धानके भार इस दरवाजेसे लाये जाते हैं। श्रीचेन्नकेशवकी मूर्ति इसी द्वारके पास दो द्वारपालकोंके सहित स्थित है।

मध्य-सरोवरके मध्यमें एक छोटा मण्डप है, जो किनारेसे एक पत्थरके पुलसे जुड़ा हुआ है। गङ्गादेवीकी छोटी मूर्ति सरोवरके दक्षिण-पश्चिम किनारेपर है।

श्रीकृष्णमठसे बाहर आते ही श्रीअनन्तेश्वरका मन्दिर दिखायी पड़ता है। श्रीअनन्तेश्वरके मन्दिरके पूर्वमें श्रीचन्द्रमौलीश्वरका मन्दिर स्थित है। पहले यहाँ एक बड़ा सरोवर था, जहाँ भगवान् शिवने साक्षात् प्रकट होकर तपस्या करते हुए चन्द्रमाको कृतार्थ किया था। रथयात्राके दिन श्रीअनन्तेश्वर और चन्द्रमौलीश्वर दोनोंकी प्रतिमाएँ एक ही रथमें साथ-साथ विराजती हैं। श्रीकृष्णकी रथयात्राके दिन भी एक दूसरे रथमें श्रीचन्द्रमौलीश्वर और अनन्तेश्वर भी विराजते हैं।

श्रीकृष्णमठके चारों ओर उदीपीके अन्य आठ मठ स्थित हैं। श्रीमध्वाचार्यके शिष्य श्रीकृष्णमठके चारों ओर रहा करते थे। उन्हींके निवास-स्थान अब मठोंमें परिवर्तित हो गये हैं।

श्रीहृषीकेशतीर्थ, जो श्रीमध्वाचार्यजीके शिष्य थे तथा अष्टोत्कृष्ट कहाते थे, उनकी शिष्य-परम्परामें पालीमार-मठ है। श्रीअडमार-मठ उन श्रीनृसिंहतीर्थकी शिष्य-परम्पराद्वारा निर्मित है, जिन्हें श्रीमध्वाचार्यने पूजा करनेके लिये श्रीकालियमर्दन कृष्णकी मूर्ति दी थी। श्रीकृष्णपुर-मठकी श्रीजनार्दन-तीर्थ और उनके शिष्योंने प्रतिष्ठा की।

श्रीउपेन्द्रतीर्थ श्रीमध्वाचार्यजीके आदेशसे श्रीविट्ठलकी पूजा किया करते थे, उनकी शिष्य-परम्पराने पुत्तिगे-मठकी स्थापना की। श्रीवामनतीर्थ भी श्रीविट्ठलकी पूजा किया करते थे। इनके शिष्योंने शिरूर-मठ स्थापित किया। श्रीविष्णुतीर्थाचार्य श्रीमध्वाचार्यजीके छोटे भाई थे। इनकी शिष्य-परम्पराने सोड़े-मठ स्थापित किया। श्रीरामतीर्थ और उनकी शिष्य-परम्पराने कणियूर-मठ स्थापित किया। श्रीअधोक्षजतीर्थ और उनकी शिष्य-परम्पराने पेजावर-मठ स्थापित किया।

इन मुख्य मठोंके सिवा और भी कई मठ उदीपीमें हैं— श्रीराघवेन्द्रस्वामी-मठ, श्रीव्यासराय-मठ, श्रीउत्तरादि्र-मठ, श्रीभीमनाकट्टे-मठ, भंडारकेरी-मठ, मुलबागल-मठ, श्यामाचार्यका मठ इत्यादि। इनके अतिरिक्त आस-पासके निम्नलिखित दर्शनीय स्थान हैं—

अब्जारण्यतीर्थ—कहते हैं चन्द्रमाने यहाँ तपस्या की थी तथा भगवान् शिवने प्रकट होकर उन्हें वरदान दिया था।

इन्द्राणी—उदीपीसे तीन मील पूर्वमें है। कहते हैं शचीने यहाँ तप किया था। यहाँ एक पहाड़ीपर श्रीदुर्गाका पाँच स्वयं-प्रादुर्भूत शालग्रामसे युक्त मन्दिर है। पहाड़ीके नीचे एक निर्झर प्रवाहित होता रहता है। मारुतिका मन्दिर इस झरनेके सम्मुख ही है।

दुर्गा-मन्दिर—उदीपीसे एक मील दक्षिण बेलूरमें स्थित है। पश्चिममें एक मील दूर कानारपदीमें दूसरा दुर्गा-मन्दिर है। तीसरा दुर्गामन्दिर दो मील उत्तरमें पुत्तूरमें स्थित है तथा चौथा कडियालीमें उदीपीसे तीन-चौथाई मीलकी दूरीपर है, जो उदीपीसे कारकलके राहमें मोटर-बसके रास्तेमें पड़ता है।

सुब्रह्मण्य-मन्दिर—उदीपीके चारों कोणोंपर चार मन्दिर हैं—ये (१) मनगोदु, (२) तनगोदु, (३) मुचिलकोदु (४) अरिथोदुके नामसे प्रसिद्ध हैं।

बडा भाण्डेश्वर—यह ४ मील दूर समुद्रके किनारे स्थित है। ग्रहण, अमावस्या आदि पर्वोंपर यहाँ बहुत लोग समुद्र-स्नान करने आते हैं। यहाँ श्रीमध्वाचार्यद्वारा प्रतिष्ठित श्रीबलरामजीकी मूर्ति है।

पजकक्षेत्र—उदीपीसे ७ मील दक्षिण-पूर्वमें स्थित है। यह श्रीमध्वाचार्यका जन्मस्थान है, किन्तु अब यहाँ मन्दिर या मठ नहीं है।

विमानगिरि—यहाँ श्रीदुर्गाका मन्दिर है। यह पादुकाक्षेत्रसे दो मील दक्षिणमें स्थित है। श्रीपरशुरामजीका भी यहाँ मन्दिर है।

सुब्रह्मण्य-मठ—उदीपीसे १०४ मील दूर है। मंगलोरसे पुत्तूर होते हुए सुब्रह्मण्यमठके लिये बस जाती है। इसे

श्रीविष्णुतीर्थाचार्यने स्थापित किया था।

मध्यवट-मठ—यह उदीपीसे ५० मील दक्षिण-पूर्वमें कराकल तालुकमें है। यहाँ श्रीमध्वाचार्य दुपहरीमें विश्राम करते थे।

कण्वतीर्थ-मठ—मंगलोरसे १० मील तथा उदीपीसे ४७ मील दूर श्रीमंजेश्वरके निकट है। श्रीमध्वाचार्यजीने यहाँ चातुर्मास्य किया था। यहाँ रामतीर्थ और कण्वतीर्थके तालाब हैं। कहते हैं श्रीविभीषण यहाँ श्रीआचार्यके दर्शन करने आये थे।

तलकावेरी—श्रीअगस्त्यऋषिद्वारा प्रतिष्ठापित महेश्वर यहाँ हैं। कहते हैं सप्त-ऋषि ब्रह्मगिरि नामक सह्याद्रिकी चोटीपर रहते थे।

भागमण्डल—तलकावेरीसे चार मीलपर स्थित है, जहाँ भगण्डऋषिने तपस्या की थी।

कथा

कहा जाता है, परशुरामजीने पश्चिमसमुद्र-तटपर जो नवीन प्रदेश समुद्रसे भूमि लेकर निर्माण किया, उसमें सात मुक्तिप्रद क्षेत्र बनाये। १-रजतपीठ, २-कुमाराद्रि, ३-कुम्भकाशी, ४-ध्वजेश्वर, ५-शङ्करनारायण, ६-गोकर्ण और ७-मूकाम्बा। इसमें भी रजतपीठ प्रधान है। इस रजतपीठ-क्षेत्रमें चन्द्रमाने भगवान् शङ्करकी आराधना की। उस आराधनासे प्रसन्न होकर भगवान् शङ्करने चन्द्रमाको अपने मस्तकपर धारण किया। चन्द्रमाद्वारा आराधित वह लिङ्गमूर्ति चन्द्रमौलीश्वर कही जाती है।

भगवान् परशुरामने भी यहाँ शङ्करजीकी आराधना की थी। उनके द्वारा आराधित एवं स्थापित शिवलिङ्ग अनन्तेश्वर कहा जाता है। इसी अनन्तेश्वर-मन्दिरके पास श्रीमध्वाचार्यजीने भी पहले उपासना की थी।

शिवगङ्गा

इसे दक्षिण-काशी भी कहते हैं। यह मैसूर-राज्यमें है तथा तीर्थयात्राका एक प्रमुख केन्द्र है। यहाँके पर्वत ककुद्-गिरिकी शोभा चारों ओरसे देखने योग्य है। पर्वत समुद्र-सतहसे प्रायः ५ हजार फुट ऊँचा है। गङ्गाधरेश्वर-मन्दिर पर्वतकी उत्तरी ढालपर है। यह एक विशाल गुफा-मन्दिर है। मन्दिरका रुख उत्तर ओर है। यहाँ ब्रह्मचण्डिकेश्वरकी प्रतिमा दर्शनीय है। यहाँ स्वर्णाम्बादेवीका मन्दिर भी देखनेयोग्य है। ये मन्दिर, बड़ी-बड़ी गुफाएँ काटकर बनाये गये हैं। विष्णुवर्द्धननिर्मित संतेश्वरतीर्थ भी दर्शनीय है। इसमें रामायणकी सारी कथा-वस्तु, विशेषकर शृङ्गीऋषिकी वनसे अयोध्या ले जाये जानेकी घटना दीवालोंपर अङ्कित है। पर्वतपर पातालगङ्गा, चक्रतीर्थ, मैत्रेयतीर्थ, गङ्गातीर्थ तथा अगस्त्यतीर्थ नामके कई कुण्ड तथा सरोवर भी हैं।

तिरुप्पत्तूर

मद्रास-मंगलोर लाइनपर जलारपेटसे ५ मील दूर तिरुप्पत्तूर-जंकशन स्टेशन है। यहाँपर ब्रह्मेश्वर-शिवमन्दिर है। मन्दिर सुन्दर है। मुख्य मन्दिरमें ब्रह्मेश्वर-शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित है। मन्दिरमें ही पृथक् पार्वतीजीका मन्दिर है। परिक्रमामें अनेक देवताओंके दर्शन हैं।

कोराटी

तिरुप्पत्तूरसे ५ मीलपर यह गाँव है। यहाँका शिव-मन्दिर भी प्रसिद्ध है। तिरुप्पत्तूरसे यहाँके लिये सवारी मिल जाती है।

तीर्थ-मलय

मद्रास-मंगलोर लाइनपर जालारपेटसे ३४ मीलपर मोरप्पूर स्टेशन है। वहाँसे १७ मील पूर्व तीर्थ-मलय नामक पर्वत है। उसके शिखरपर श्रीरामनाथ नामक प्रसिद्ध शिव-मन्दिर है। तीर्थमलयके शिखरसे एक बड़ा प्रपात नीचे गिरता है। इसे पवित्र माना जाता है। इसमें स्नान करके यात्री शिखरपर मन्दिरमें दर्शन करते हैं। पर्वतके नीचे तीर्थ-मलय गाँव है। वहाँ धर्मशाला है।

नन्दीदुर्ग

यह मैसूरके कोलर जिलेमें है और बंगलोरसिटी-बंगरपेट लाइनके नन्दी रेलवे-स्टेशनसे कुल ३ मीलकी दूरीपर है। इसके उत्तरमें स्कन्दगिरि, दक्षिण-पश्चिममें वाराहगिरि और पश्चिमोत्तरमें चेन्नकेशव हैं। उत्तर-पिनाकिनी, अर्कावती, दक्षिण-पिनाकिनी, पापाग्निके चित्रावती आदि कई नदियाँ यहींसे निकलती हैं। आस-पासकी जनतामें इसका नाम शृङ्गीपर्वत तथा कूष्माण्डपर्वत भी विख्यात है। पर्वतकी उपत्यकामें अरुणाचलेश्वर तथा भोगनन्दिकेश्वरके दो मन्दिर हैं। दोनों ही मन्दिर नवीं शतीके बने हैं। इनकी दीवालोंपर हनुमान्‌जीका वीणा बजाते तथा (रामेश्वरके) सैकत-लिङ्गको उखाड़ते, विष्णुभगवान्‌का सोमकको वध करते तथा श्रीकृष्णभगवान्‌की माखन-चोरीके चित्र अङ्कित हैं।

करूर

त्रिचनापल्ली-ईरोड लाइनपर त्रिचनापल्लीसे ४७ मील दूर करूर स्टेशन है। करूरको तिरुआनिलै भी कहते हैं; क्योंकि यहाँके अधिष्ठाता तिरुआनिलै महादेव (भगवान् पशुपतीश्वर) हैं। यह अमरावती नदीके बायें तटपर बसा है। अमरावती-कावेरीका संगम-स्थल यहाँसे कुल ६ मीलके अन्तरपर है। किसी समय यह चेर राजाओंकी राजधानी रहा है। चोल-नरेश (जिनका इस क्षेत्रपर पीछे आधिपत्य हुआ) अपनेको सूर्यवंश-प्रसूत कहते रहे हैं और इस कारण करूरको भास्करपुरम् या भास्करक्षेत्र भी कहा जाता है। यहाँका पशुपतीश्वर-मन्दिर बड़ा ही कलापूर्ण है।

तिरुच्चेनगोड

यह स्थान अपने अर्द्धनारीश्वर-मन्दिरके लिये विख्यात है। मद्रास-मंगलोर लाइनपर सेलमसे २४ मील दूर शङ्करी-दुर्ग रेलवे-स्टेशन है। वहाँसे ७ मील दूर सेलम जिलेमें एक पर्वतपर स्थित है। प्रतिमा पुरुष तथा प्रकृतिका सम्मिलित रूप है। यह ऋषियोंद्वारा निर्मित कही जाती है और यह किस धातुकी बनी है, इसका कोई पता नहीं चलता। भगवती पार्वतीने यहाँ देवतीर्थमें तपस्या की थी। यह पर्वत भी मेरुपर्वतका रूप माना जाता है और इसका नाम नागाचल है। मन्दिरके मार्गमें एक ३५ फुट ऊँचा सर्प बना है। यहाँ सुब्रह्मण्य तथा नन्दीकी भी प्रतिमाएँ हैं।
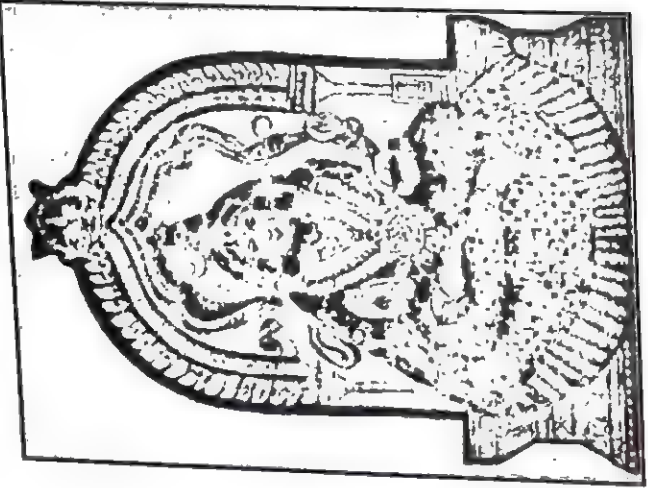
दक्षिणभारतके कुछ मन्दिर—३

श्रीशारदाम्बा, शृंगेरी-मठ
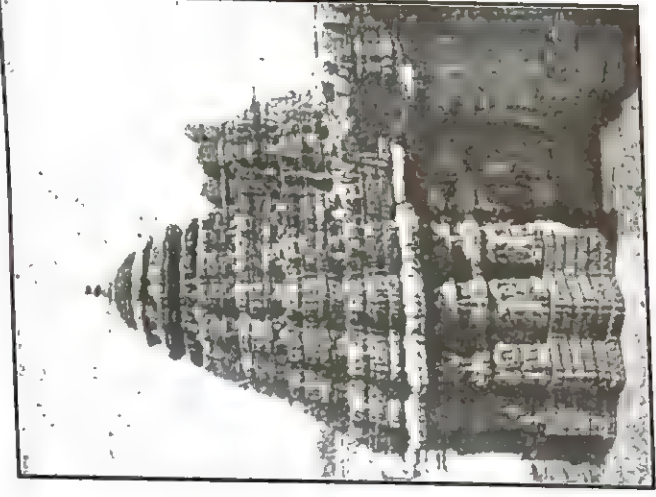
श्रीकेशव-मन्दिर, सोमनाथपुर

श्रीयोगनृसिंह-भगवान्, यादवाद्रि

पर्वतपर श्रीयोगनृसिंहका मन्दिर, यादवाद्रि

श्रीसम्पत्कुमार, यादवाद्रि

वेद-पुष्करिणी, यादवाद्रि

दक्षिणभारतके कुछ मन्दिर—४
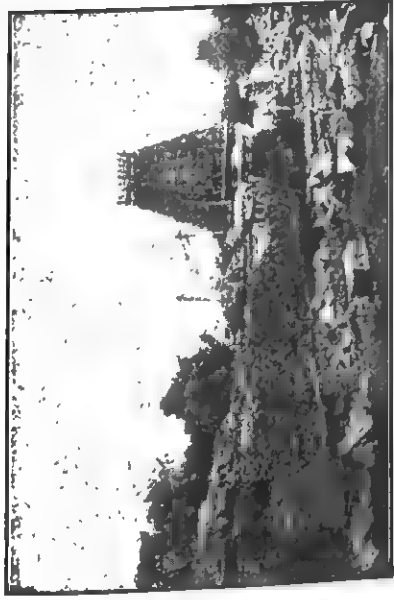
श्रीपशुपतीश्वर-मन्दिर, करूर

श्रीअर्द्धनारीश्वर-मन्दिरका मण्डप, तिरुच्चेन्गोड
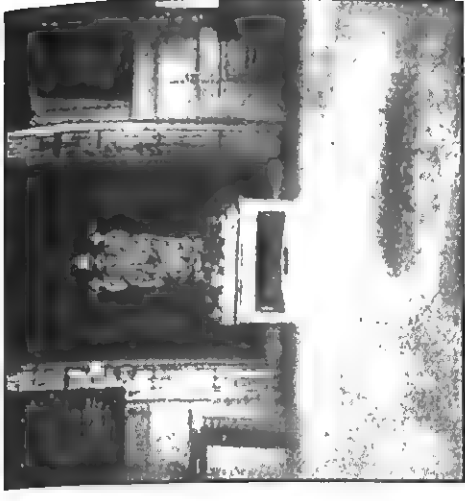
श्रीसत्यनारायण-मन्दिरके श्रीसत्य-नारायण, बंगलोर
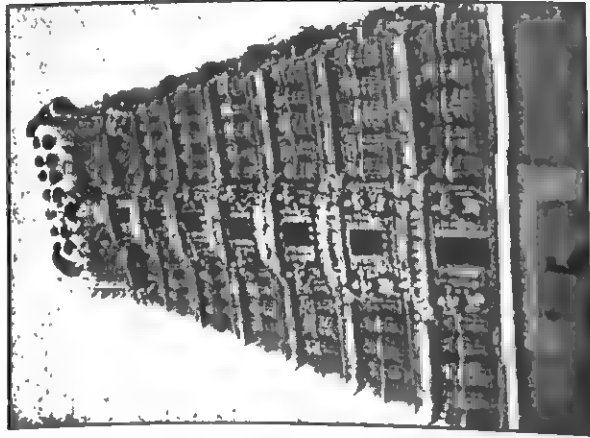
श्रीचामुण्डादेवी-मन्दिरका गोपुर, मैसूर
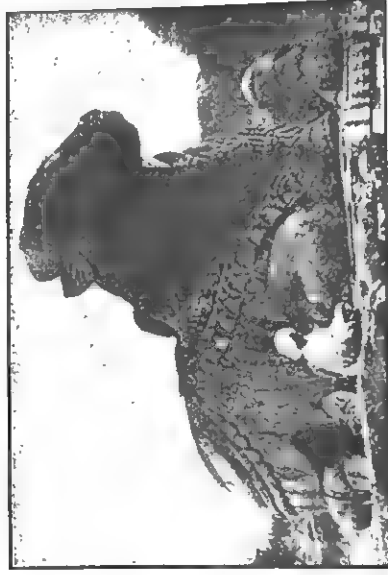
चामुण्डा-मन्दिरके रास्तेमें विशाल नन्दी
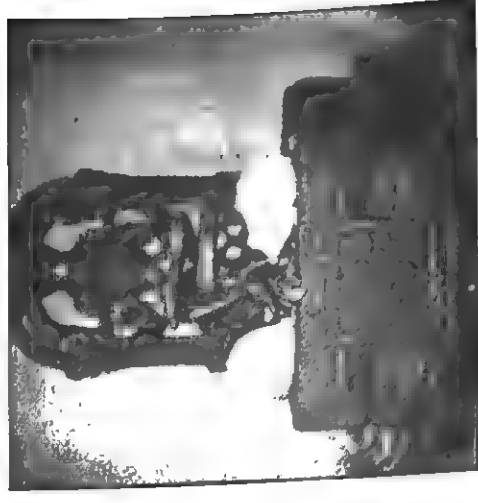
भगवान् श्रीदक्षिणामूर्ति, चामुण्डा-मन्दिर

मेलचिदम्बरम्

मद्रास-मंगलोर लाइनपर ईरोडसे ५९ मील आगे कोयम्बटूर स्टेशन है। यहाँसे लगभग ४ मील दूर पेरूरमें मेलचिदम्बरम्-मन्दिर है। चिदम्बरम्से भी अधिक महत्ता इस तीर्थकी मानी जाती है। कोयम्बटूरसे यहाँतक बस चलती है।

यहाँ श्रीचिदम्बरम्-मन्दिर विशाल है। उसमें मुख्य पीठपर शिवलिङ्ग विराजमान है। मन्दिरके घेरेमें ही पार्वती-मन्दिर है। यहाँ पार्वतीजीको मरकतवल्ली या मरकतम्बा कहते हैं।

मन्दिरके द्वारके समीप ध्वजस्तम्भ खड़ा है। स्तम्भके पास गोस्तन बना है। वहाँ दूध डालनेपर स्तनोंसे दूध निकलता है और मन्दिरमें शिवलिङ्गपर गिरता है। यह यहाँका अद्भुत शिल्प-कौशल है।

त्रिचूर

शोरानूरसे कोचीन हारबर-टर्मिनस जानेवाली लाइनपर शोरानूर स्टेशनसे २१ मील दूर त्रिचूर स्टेशन है। यह अच्छी बस्ती है। इसे परशुरामक्षेत्र कहा जाता है। भगवान् परशुरामने समुद्रसे स्थान लेकर यह क्षेत्र बसाया था। वहाँ 'वादुकुन्नाथ' नामक भगवान् शङ्करका विशाल मन्दिर है। इस मन्दिरके उत्सवके समय यहाँ बड़ा मेला लगता है। नगरमें धर्मशाला है।

गुरुवायूर

(लेखक—श्रीम० क० कृष्ण अय्यर)

गुरुवायूर त्रिचूर रेलवे-स्टेशनसे २० मील दूर पड़ता है तथा मोटर-बसद्वारा वहाँ जाया जाता है। यहाँ भगवान् श्रीगुरुवायूरप्पाका मन्दिर है तथा किराया लेकर मन्दिरके अधिकारी ही यात्रियोंके रहनेकी व्यवस्था करते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

भगवान् श्रीकृष्णने अपने परम मित्र उद्धवको एक बार देवगुरु बृहस्पतिके पास एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संदेश देकर भेजा। संदेश यह था कि समुद्र द्वारकाको डुबा दे, इससे पूर्व ही वह मूर्ति जिसकी श्रीकृष्णके पिता वसुदेव और माता देवकी पूजा किया करते थे, किसी सुरक्षित और पवित्र स्थानमें प्रतिष्ठित हो जाय। भगवान्ने उद्धवको समझाया कि यह मूर्ति कोई साधारण प्रतिमा नहीं है, कलियुगके आनेपर वह उनके भक्तोंके लिये अत्यन्त कल्याणदायक और वरदानरूप सिद्ध होगी। संवाद पाकर देवगुरु बृहस्पति द्वारिका गये, किन्तु उस समयतक द्वारिका समुद्रमें लीन हो चुकी थी। उन्होंने अपने शिष्य वायुकी सहायतासे उस मूर्तिको समुद्रमेंसे निकाला। तत्पश्चात् वे मूर्तिकी प्रतिष्ठाके लिये उपयुक्त स्थान खोजते हुए इधर-उधर घूमने लगे। वर्तमानमें जहाँ यह मूर्ति प्रतिष्ठित है, वहाँ उस समय सुन्दर कमलपुष्पोंसे युक्त एक झील थी, जिसके तटपर परमेश्वर भगवान् शिव और माता पार्वती पवित्र जलक्रीड़ा करते हुए इस अत्यन्त पवित्र मूर्तिकी प्रतीक्षा कर रहे थे। बृहस्पतिजी वहाँ पहुँचे और भगवान् शिवकी आज्ञासे उन्होंने और वायुदेवने इस मूर्तिकी उचित स्थानमें प्रतिष्ठा की। तभीसे इस स्थानका नाम गुरुवायूर हो गया।

इस स्थानके पास ही ममीयूर नामक स्थानपर भगवान् शिवका मन्दिर है। कहते हैं, स्वयं धर्मराजने इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा की थी। ममीयूरमें भगवान् शिव ममीयूरप्पन नामसे प्रख्यात हैं। कहते हैं, इन्होंने ही गुरुवायूरप्पन्की प्रतिष्ठा की थी।

मन्दिरका मूलतः निर्माण देवताओं और विश्वकर्माका किया हुआ है, इसीलिये कला अत्यन्त उत्कृष्ट और मानवोत्तर कौशलयुक्त है।

पाँच सौ वर्ष पूर्व पाण्ड्यदेशके राजाको किसी ज्योतिषीने कहा कि वह बतलायी हुई निश्चित तिथिपर सर्प-दंशसे मर जायगा। राजाने यह सुनकर तीर्थयात्रा प्रारम्भ की तथा वह गुरुवायूर पहुँचा। इस समय मन्दिर अत्यन्त ध्वस्त अवस्थामें था। राजाने उसके पुनर्निर्माणका आदेश दिया और मन्दिर-निर्माणके पूर्व ही वह राजधानीको

चला आया। इधर जब निश्चित तिथि बीत गयी और राजाकी मृत्यु नहीं हुई, तब राजाने ज्योतिषीको बुलाया तथा झूठी बात कहनेका कारण पूछा। ज्योतिषीने कहा—'महाराज! आपकी मृत्युके ठीक समय आप एक अत्यन्त पवित्र मन्दिरकी पुनर्निर्माण-योजनामें व्यस्त थे, उस समय आपको सर्पने काटा भी था; किन्तु कार्यमें अत्यन्त एकाग्र होनेके कारण आपको ज्ञात नहीं हो सका। देखिये, यह सर्पके काटे जानेका घाव है। यह तो जिनके मन्दिरका आप निर्माण करा रहे थे, उसकी अपूर्व कृपाका फल है कि आप मृत्युसे बच गये। अब आपको पुनः वहीं जाना चाहिये।

इसके पश्चात् मन्दिरमें कई बार कुछ सुधार और परिवर्तन कतिपय स्थानीय भक्तोंने किये।

मूर्तिका इतिहास

सर्वप्रथम भगवान् विष्णुने अपनी साक्षात् मूर्ति ब्रह्माको उस समय प्रदान की, जब वे सृष्टि-कार्यमें संलग्न हुए। जब ब्रह्मा सृष्टि-निर्माण कर चुके, उस समय स्वायम्भुव-मन्वन्तरमें प्रजापति सुतपा और उनकी पत्नी पृश्निने उत्तम पुत्र-प्राप्तिके लिये ब्रह्माकी आराधना की। ब्रह्माने उन्हें यह मूर्ति प्रदान की तथा उन्हें उपासना करनेका आदेश दिया। बहुत कालकी आराधनाके पश्चात् भगवान् प्रकट हुए तथा उन्हें स्वयं पुत्ररूपमें उनके गर्भसे जन्म लेनेका वचन देकर अन्तर्धान हो गये। तत्पश्चात् भगवान् पृश्निगर्भके रूपमें अवतरित हुए। दूसरे जन्ममें सुतपा कश्यप बने और पृश्नि अदिति। उस समय भगवान्ने वामनरूपमें अवतार लिया। तीसरे जन्ममें सुतपा वसुदेव बने और पृश्नि देवकी बनी, तब भी भगवान्ने श्रीकृष्णरूपमें इनकी कोखसे जन्म लिया। यह मूर्ति वसुदेवको धौम्य ऋषिने दी थी तथा उन्होंने इसे द्वारकामें प्रतिष्ठित कराके इसकी पूजा की थी।

सर्पयज्ञके पश्चात् जनमेजयको गलित कुष्ठ हो गया, तब उन्होंने इन्हीं भगवान्की आराधना की तथा भगवान्की कृपासे रोगके साथ-ही-साथ भव-रोगसे मुक्ति पायी।

श्रीआद्यशंकराचार्य इस मन्दिरमें कुछ काल रुके थे। उन्होंने यहाँकी पूजा-पद्धतिमें कुछ संशोधन किये थे। अबतक पूजा उस संशोधित विधिसे ही होती है।

श्रीलीलाशुक (बिल्वमङ्गल)-ने अपने आराधना-कालका बहुत-सा समय यहाँ व्यतीत किया था। कहते हैं उनके साथ भगवान् बालरूप धारण करके क्रीड़ा करते थे। और भी अनेक सुप्रसिद्ध संतों एवं भक्तोंका सम्बन्ध यहाँसे रहा है।

सींग-लगे नारियल

एक किसानने नारियलकी खेती की। पहली फसलके कुछ नारियलोंको लेकर वह भगवान् गुरु वायूरप्पन्को चढ़ाने चला। मार्गमें वह एक डाकूके चंगुलमें फँस गया। उसने डाकूसे प्रार्थना की कि वह और सब कुछ ले ले, पर भगवान्के निमित्त लाये हुए नारियलोंको अलग रहने दे। इसपर डाकूने ताना मारते हुए कहा—'क्या गुरु वायूरप्पन्के नारियलोंमें सींग लगे हैं।' डाकूका इतना कहना था कि सचमुच उन नारियलोंपर सींग उग आये। डाकू इस चमत्कारको देखकर घबराकर चुपचाप चला गया। ये सींग-लगे नारियल अद्यावधि मन्दिरमें हैं।

कालडि

(लेखक—श्रीएन० एल० मेनन)

शोरानूर स्टेशनसे कोचीन-हार्बर-टर्मिनस जानेवाली लाइनपर शोरानूरसे ४९ मील दूर अंगमालि स्टेशन है। अंगमालिसे कालडिको सड़क जाती है। मोटर-बस चलती है। स्टेशनसे कालडि ५ मील दूर है। यह छोटा नगर है। यहाँ रहनेके लिये सरकारी धर्मशाला है।

कालडि आद्यशंकराचार्यकी जन्मभूमि है। यहाँ श्रीशंकराचार्यजी तथा उनकी माताका मन्दिर है। इन मन्दिरोंका प्रबन्ध शृंगेरीमठद्वारा होता है। पेरियार नदीके तटपर यहाँके दोनों मन्दिर हैं। श्रीशंकराचार्य-जयन्तीके समय यहाँ दूर-दूरसे यात्री आते हैं।

कासरागोड

(लेखक—श्रीम० व० केशव शिनाय)

मद्रास-मंगलोर रेलवे-लाइनपर मंगलोरसे २८ मील पहले कासरागोड स्टेशन है। पयस्विनी नदीके तटपर यह स्थान है। श्रीसमर्थ स्वामी रामदास, पुरन्दरदास आदि संत इस स्थानपर आये और रहे हैं। यहाँके प्रमुख मन्दिर ये हैं—

(१) श्रीमहागणपति-मन्दिर, माधुरे—यह मन्दिर माधुरे नामक स्थानपर स्थित है, जो रेलवे-स्टेशनसे ५ मील दूर है। कहते हैं, यह प्रतिमा स्वयं उद्भूत है। एक हरिजन स्त्री घासके मैदानमें घास काट रही थी। अचानक उसका हंसिया प्रतिमासे जा टकराया। उस समय गणपतिकी प्रतिमा ३'×१ $\frac{1}{2}$' बाहर निकली हुई थी। हँसिया लगनेसे कहते हैं उनके रक्त बहने लगा। स्त्री अत्यन्त आश्चर्यमें पड़ गयी और उसने लोगोंको बुलाया। लोगोंने उसी समय वहाँपर भगवान्का गर्भ-गृह बना दिया और पूजा प्रारम्भ हो गयी। यह आठ सौ वर्ष पुरानी घटना है। तबसे मूर्ति लगातार बढ़ती जाती है। अब वह १०'×४ $\frac{1}{2}$' है तथा उसने समूचे गर्भ-गृहको रोक लिया है।

(२) श्रीलक्ष्मीवेङ्कटेश्वर—यह मन्दिर एक शताब्दी पूर्वका है। मन्दिरकी मूर्ति वेङ्कटाचल-तिरुपतिकी है। यहाँपर सात दिनोंका उत्सव मनाया करते हैं, जिसे 'सप्ताहम्' बोलते हैं।

(३) श्रीमल्लिकार्जुनका मन्दिर—यह भगवान् शिवका मन्दिर है, जो शहरके बीचमें है। यहाँ वार्षिक यात्राका पाँच दिनका उत्सव महत्त्वपूर्ण होता है।

(४) श्रीअन्यकात्यायनी-मन्दिर—यह महादेवी भगवतीका मन्दिर है, जो ७५ वर्ष पुराना है। नवरात्रके दिनोंमें यहाँ ९ दिनोंतक विशेष उत्सव होता है।

मंगलोर

मद्रास-मंगलोर लाइनका यह अन्तिम स्टेशन पश्चिम-समुद्रके तटपर है। यह एक बंदरगाह तथा नगर है। मंगलोरसे अनेक स्थानोंको मोटर-बसें चलती हैं। मैसूर, उदीपी आदिको बसोंसे जाया जा सकता है।

यहाँ नगरके पूर्वमें मङ्गलादेवीका विख्यात मन्दिर है। देवीके नामपर ही इस नगरका नाम मंगलोर (मङ्गलपुर) पड़ा है। इस ओर मङ्गलादेवीका स्थान सिद्धपीठ माना जाता है। नगरमें कई और भी मन्दिर हैं।

धर्मस्थल

(लेखक—श्रीभास्करम् शेषाचार्य)

कर्नाटकमें श्रीधर्मस्थल एक विख्यात और पवित्र तीर्थस्थान है। यह एक धर्मक्षेत्र है। यह तीर्थ पवित्र नदी नेत्रावलीके किनारेपर अवस्थित है, जो पश्चिमीघाटकी पहाड़ियोंसे निकलकर अरब-सागरमें गिरती है। यहाँका पुरातन प्रसिद्ध मन्दिर मञ्जुनाथेश्वरका है।

यह क्षेत्र दक्षिण-कनाड़ा जिलेके बेलथनगडी तालुकमें पड़ता है। यह मैसूर-राज्यमें मंगलोरसे ४६ मीलपर स्थित है। मंगलोर ही इसके पासका रेलवे-स्टेशन है। मंगलोरसे चारमढ़ीको एक मुख्य सड़क जाती है। बीचमें उजरे नामक एक स्थान आता है। इस स्थानसे एक छोटी सड़क जाती है। यहाँसे धर्मस्थल ६ मील पड़ता है। बसें आवागमनके लिये पर्याप्त चलती हैं। चिकमगलूरसे भी यहाँ बसें आती हैं।

पूर्व कालमें इस मन्दिरमें श्रीमञ्जुनाथेश्वर-लिङ्गकी स्थापना आदिशंकराचार्यने की थी, किन्तु पश्चात् सन् १६३५ में श्रीवादिराज स्वामिपादने, जो उदीपीके सोदेमठसे आये थे, इनकी उपासना की और तबसे यहाँकी उपासना एवं सेवा श्रीमध्वाचार्यके द्वैतमतानुसार होती है।

कार्तिकमें बहुला-दशमीसे अमावस्यातक यहाँ लक्षदीप-दानोत्सव होता है। हजारों यात्री इस कालमें दर्शनार्थ आते हैं। इस समय यहाँ सर्वधर्मसम्मेलन होता है।

मेषमें संक्रमणके दिन श्रीमञ्जुनाथेश्वरकी रथयात्रा ९ दिनके लिये होती है।

यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशालाकी व्यवस्था है। वैसे गेस्ट-हाउस (अतिथि-भवन) भी हैं।

सुब्रह्मण्य-क्षेत्र

यह क्षेत्र मैसूर-राज्यके अन्तर्गत दक्षिण कनाड़ा जिलेमें पुत्तूर तालुकाके पूर्वी छोरपर है। इसे कौमारक्षेत्र भी कहते हैं। स्कन्दपुराणमें इसकी बड़ी महत्ता बतायी गयी है और श्रीपरशुरामक्षेत्रके सप्त तीर्थोंमें इसकी गणना है। यहाँ मयूरवाहन भगवान् सुब्रह्मण्यका विशाल मन्दिर है। यह मन्दिर सुब्रह्मण्य नामक ग्राममें बसा हुआ है।

नागरिक क्षेत्रोंसे दूर जंगलके सहारे बसा होनेके कारण यहाँ आने-जानेमें बड़ी कठिनाई पड़ती है। केवल नवम्बरसे मईतक बस और मोटरोंसे लोग आते-जाते हैं। बरसातमें तो आवागमन बाढ़के कारण बिलकुल बंद-सा रहता है। रास्तेमें छोटी-बड़ी छः-सात नदियाँ पड़ती हैं, जिनपर पुल आदिकी कोई व्यवस्था नहीं है।

यहाँसे निकटतम रेलवे-स्टेशन मंगलोर ६७ मील है। वहाँसे बसें दिनमें दो बार आती-जाती हैं। लगभग पाँच घंटेका रास्ता है। मैसूरसे आनेवाले यात्री हासन शहरसे होकर आते हैं। सुब्रह्मण्य ग्राम और हासन शहरकी दूरी लगभग १०० मील है। इस रास्ते बसें प्रतिदिन नहीं आतीं, केवल उत्सवादि विशेष दिवसोंपर ही इस मार्गसे बसोंद्वारा आवागमनकी सुविधा है।

यहाँके प्रमुख मन्दिर ये हैं—(१) श्रीसुब्रह्मण्यस्वामी, (२) कुक्के-लिङ्ग, (३) भैरव-मन्दिर, (४) श्रीउमा-महेश्वर, (५) वेदव्यास-सम्पुट और नृसिंह-मन्दिर, (६) होसलौंगाम्मा, (७) अग्रहर सोमनाथ-मन्दिर।

श्रीसुब्रह्मण्यस्वामीका मन्दिर—इस मन्दिरका सिंहद्वार पूर्वकी ओर है। मुख्यद्वारके सम्मुख भगवान् सुब्रह्मण्य-स्वामीका देवालय है। देवालयके ऊपरी चबूतरेपर भगवान् षडाननकी मूर्ति है। मध्यभागमें सर्पराज वासुकिकी प्रतिमा है और निम्नभागमें भगवान् शेष प्रतिष्ठित हैं। देवालयके सम्मुख गरुड़-स्तम्भ है। कहते हैं, नागराज वासुकिकी भीषण विष-ज्वालाको शान्त करनेके हेतु ही इस गरुडस्तम्भकी गरुड़मन्त्रद्वारा प्रतिष्ठा की गयी थी।

श्रीभैरव-मन्दिर—प्रमुख देवालयके दक्षिणकी ओर यह मन्दिर प्रतिष्ठित है। प्रदोष आदि प्रमुख अवसरोंपर इनकी विशेष पूजा होती है।

श्रीउमामहेश्वर-मन्दिर—यह मन्दिर प्रमुख देवालयसे उत्तर-पूर्वकी ओर भीतरी आँगनमें है। यह मन्दिर अति प्राचीन कहा जाता है। बारहवीं शताब्दीमें भगवान् मध्वाचार्य जब यहाँ पधारे थे, उस समय यह स्थान अद्वैतमतके माननेवाले 'भट्टाचार्य-संस्थान' के देख-रेखमें था। उस समय यहाँ सूर्य, अम्बिका, गणेश, महेश्वर तथा भगवान् नृसिंहकी पूजा की जाती थी; वे ही प्राचीन मूर्तियाँ अद्यावधि वर्तमान हैं।

वेदव्यास-सम्पुट और नृसिंह-मन्दिर—प्रमुख मन्दिरके भीतरी आँगनमें दक्षिण-पूर्वकी ओर यह मन्दिर स्थित है। वैशाख मासमें यहाँ तीन दिनतक प्रतिवर्ष नृसिंह-जयन्ती बड़े समारोहसे मनायी जाती है।

होसलीगम्मा-मन्दिर—प्रमुख मन्दिरके प्राङ्गणके बाहरकी ओर दक्षिण दिशामें यह मन्दिर स्थित है। यहाँ होसलीथया और पुरुषरय नामक दो गणोंकी प्रतिदिन सविधि पूजा होती है।

कादिरी

गुंतकलसे बंगलोर-सिटी जानेवाली लाइनपर धर्मावरम् स्टेशन गुंतकलसे ६३ मील दूर है। वहाँसे एक लाइन पकालातक जाती है। इस लाइनपर पकालासे ४२ मील दूर कादिरी स्टेशन है। यहाँ भगवान् नृसिंहका विशाल मन्दिर है। प्रतिवर्ष पौषमें यहाँ महोत्सव होता है।

दोडकुरुगोड

उपर्युक्त लाइनपर हिंदूपुरसे २२ मीलपर यह स्टेशन है। यहाँ ग्रामके पास नदी है। नदीके तटपर 'विदुराश्वत्थ' नामक एक प्राचीन पीपलका वृक्ष है। कहा जाता है कि यह वृक्ष धृतराष्ट्र तथा पाण्डुके छोटे भाई महात्मा विदुरजीका लगाया हुआ है। इस वृक्षके दर्शन करने दूर-दूरके यात्री आते हैं। स्टेशनसे लगभग एक मीलपर दो धर्मशालाएँ हैं।

निडवांडा

बंगलोर-सिटीसे जानेवाली पूना-लाइनमें बंगलोर-सिटी स्टेशनसे ३० मीलपर निडबंदा स्टेशन है। स्टेशनके पास ही एक पर्वत है। पर्वतके ऊपर पातालगङ्गा नामक कुण्ड है। कुण्डके पास भगवान् शङ्करका मन्दिर है। कुछ लोग इस पर्वतको शिवगङ्गा-शिखर कहते हैं। यहाँ दो धर्मशालाएँ तथा कितने ही मण्डप हैं। मकर-संक्रान्तिके समय यहाँ बड़ा मेला लगता है।

बंगलोर

यह प्रसिद्ध नगर है। मद्रास, हैदाराबाद, ईरोड, मैसूर आदिसे रेलवे-लाइन बंगलोरतक आती हैं। यह नगर बहुत बड़ा है। नगरमें अनेकों मन्दिर हैं। शृंगेरीके शङ्कराचार्य-पीठका यहाँ एक मठ है। मठमें भगवान् आदिशंकराचार्यकी सुन्दर मूर्ति है। मठके ठीक सामने देवीका भव्य मन्दिर है। नगरका सत्यनारायण-मन्दिर दर्शनीय है। यहाँ किलेसे नैर्ऋत्यकोणमें लगभग एक मीलपर गङ्गाधरेश्वर नामक प्राचीन शिव-मन्दिर है। यह मन्दिर बहुत सुन्दर है।

मद्दूर

बंगलोर-मैसूर लाइनपर बंगलोरसे ४६ मील दूर मद्दूर स्टेशन है। स्टेशनके पास चोल्ट्री है। स्टेशनसे लगभग एक मील दूर मद्दूर बाजार है। मद्दूर-बाजारसे कई दिशाओंमें मोटर-बसें जाती हैं।

मद्दूरमें श्रीवरदराज (भगवान् विष्णु) तथा योगनृसिंहके प्राचीन मन्दिर हैं। इनमें योगनृसिंह-मन्दिर बड़ा है। उसके गोपुरके भीतर वाटिका है, किन्तु उत्सवके समयके अतिरिक्त ये मन्दिर प्रायः सुनसान ही रहते हैं। अब मन्दिर जीर्णदशामें हैं।

सोमनाथपुर

मद्दूरसे मोटर-बसद्वारा १० मील मडवल्ली आना पड़ता है। वहाँसे सोमनाथपुर १२ मील दक्षिण-पश्चिम है। मडवल्लीसे मोटर-बस आती है।

एक ही स्थानपर सोमनाथपुरमें तीन बड़े मन्दिर हैं। मध्यमें प्रसन्नचेन्नकेशव-मन्दिर है। उसके दक्षिण गोपाल-मन्दिर और उत्तर जनार्दन-मन्दिर हैं। ये मन्दिर बेलूरके होयसलेश्वर मन्दिरके निर्माता शिल्पकारोंद्वारा ही निर्मित हैं। बेलूर-मन्दिरके समान ही इनका शिल्प अत्यन्त सुन्दर है। तीनों मन्दिरोंमें ऊपरसे नीचेतक बारीक कारीगरी है। मन्दिरके बाहरी भागमें महाभारत, रामायण तथा भागवतकी बहुत-सी घटनाओंकी सैकड़ों भव्य मूर्तियाँ अङ्कित की गयी हैं। मन्दिरके बाहर बहुत-सी भग्न प्रतिमाएँ बिखरी पड़ी हैं। सोमनाथपुरमें एक बहुत पुराना और विशाल शिव-मन्दिर है; किंतु यह मन्दिर जीर्णदशामें है।

रामगिरि

मद्दूरसे १२ मील दूर रामगिरि पर्वत है। इस पर्वतपर कोदण्डराम-स्वामीका मन्दिर है। मन्दिरमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीकी मूर्तियाँ विराजमान हैं। कहा जाता है सुग्रीवका मधुवन यहीं था।

शिवसमुद्रम्

मद्दूरसे १७ मील दूर मडवल्ली-बाजार है। मद्दूरसे वहाँतक मोटर-बस जाती है। मडवल्लीसे दूसरी बस शिवसमुद्रम् जाती है। मद्दूरसे भी एक मडवल्ली होती शिव-समुद्रम् जाती है। मडवल्लीसे शिवसमुद्रम् १२ मील है।

शिवसमुद्रम् कावेरीकी दो धाराओंके मध्य एक मध्यरङ्गम् नामक द्वीप है। इसे मध्यरङ्गम् भी कहते हैं। यह द्वीप ३ मील लंबा, पौन मील चौड़ा है। द्वीपके अन्तिम किनारे कावेरीकी दोनों धाराएँ २०० फुट नीचे गिरकर परस्पर मिल जाती हैं। यह प्रपात दर्शनीय है। यहाँ कावेरीकी दोनों धाराओंपर पुल है। कावेरीका यह प्रपात शिवसमुद्रम् द्वीपके उत्तरी छोरपर है। यहाँ पश्चिमवाली धाराको गगनचुक्की कहते हैं। इसे लोग गगनच्युततीर्थ मानते हैं। इसका जल एक छोटे द्वीपका चक्कर काटकर वेगपूर्वक शब्द करता हुआ नीचे गिरता है। पूर्ववाली शाखा बड़चुक्की कही जाती है। इसका प्रपात फैला हुआ है। ग्रीष्ममें इसकी अनेक धाराएँ हो जाती हैं, इससे इसे यहाँ सप्तधारा तीर्थ कहते हैं।

शिवसमुद्रम्में श्रीरङ्ग-मन्दिर है। उसमें श्रीरङ्गजी (भगवान् नारायण)-की शेषशायी मूर्ति विराजमान है। भगवान् शेषशय्यापर पूर्वाभिमुख शयन कर रहे हैं।

श्रीनिवास

शिवसमुद्रम्-द्वीपसे लगभग तीन मील दक्षिण विडिगिरिरङ्ग नामक पर्वत है। पर्वतपर चम्पकारण्य-क्षेत्रमें श्रीनिवास-मन्दिर है। इस मन्दिरमें भगवान् विष्णुकी खड़ी चतुर्भुज मूर्ति है। यहाँ भार्गवी नदी है, जो पवित्र मानी जाती है। कहते हैं, भगवान् परशुरामने यहाँ तपस्या की थी।

श्रीरङ्गपट्टन

बंगलोर-मैसूर लाइनमें मैसूरसे ९ मीलपर श्रीरङ्गपट्टन स्टेशन है। यहाँ स्टेशनसे दो फर्लांगपर चोल्ट्री है।

तीन स्थानोंपर कावेरीमें दो धाराएँ हुई हैं और वे आगे परस्पर मिल गयी हैं। इस प्रकार कावेरीके पूरे प्रवाहमें तीन द्वीप बने हैं। ये तीनों ही द्वीप अत्यन्त पवित्र माने जाते हैं। इनमेंसे प्रथम द्वीपको आदिरङ्गम्, द्वितीयको मध्यरङ्गम् तथा तृतीयको अन्तरङ्गम् या श्रीरङ्गम् कहा जाता है। इनमें श्रीरङ्गम् बहुत प्रख्यात है। श्रीरङ्गपट्टन ही आदिरङ्ग है। मध्यरङ्गम्का उल्लेख ऊपर हो चुका है। श्रीरङ्गम्का वर्णन आगे किया जायगा। इन तीनों ही रङ्गद्वीपोंमें श्रीरङ्गजीके मन्दिर हैं और उनमें भगवान् नारायणकी शेषशायी-मूर्ति है। तीनों ही स्थानोंपर तीन-चार मीलपर श्रीनिवास मन्दिर है।

कावेरीकी दो धाराओंके मध्य वह द्वीप तीन मील लंबा और एक मील चौड़ा है; क्योंकि रेलवे-स्टेशन चौड़ाईके बीचमें है, अतः स्टेशनके दोनों ही ओर कावेरीकी धारा समीप ही मिलती है।

स्टेशनके समीप ही श्रीरङ्ग-मन्दिर है। कावेरीमें स्नान करके यात्री श्रीरङ्गजीके दर्शन करते हैं। शेषशय्यापर श्रीनारायण शयन कर रहे हैं। यह मूर्ति वैसी ही है, जैसी श्रीरङ्गम्में है; किंतु विस्तारमें उससे छोटी है। कहते हैं, यहाँ महर्षि गौतमने तपस्या की थी तथा उन्होंने ही श्रीरङ्गमूर्तिकी स्थापना की थी।

श्रीरङ्ग-मन्दिरके सामने ही श्रीलक्ष्मीनृसिंह-मन्दिर है। इस मन्दिरका पृष्ठ-भाग श्रीरङ्ग-मन्दिरके सम्मुख पड़ता है। इस मन्दिरमें भगवान् नृसिंहकी मूर्ति है।

श्रीनिवास—श्रीरङ्गपट्टनसे तीन मील पूर्व करगिट्टा पर्वतपर श्रीनिवास-भगवान्का मन्दिर है। मन्दिर छोटा ही है। इसमें भगवान् विष्णुकी खड़ी चतुर्भुज मूर्ति है।

तिरुमकुल नरसीपुर

श्रीरङ्गपट्टनसे यह स्थान २४ मील दक्षिण-पूर्व है। यहाँ कपिला तथा कावेरी नदियोंका संगम है। यह संगम-स्थान पवित्र माना जाता है। संगमके पास ही गुञ्जानृसिंहका मन्दिर है।

मैसूर

बंगलोरसे एक लाइन मैसूरतक गयी है और आरसीकेरेसे भी एक लाइन मैसूरतक जाती है। मैसूर सुप्रसिद्ध नगर है। यह मैसूरके क्षत्रिय राजाओंकी राजधानी रहा है। यहाँ स्टेशनसे दो फर्लांगपर चोल्ट्री (यात्रीनिवास) है। उसमें किरायेपर कमरे मिल जाते हैं।

मैसूर नगरमें शृंगेरी-शङ्कराचार्यपीठका एक मठ है। मठमें भी यात्री ठहर सकते हैं। नगरमें अन्य कई मठ हैं।

मैसूर स्टेशनसे लगभग डेढ़ मीलपर राजभवन है। राजमहलसे २ मील दूर चामुण्डा-पर्वत है। पर्वतके ऊपर चामुण्डादेवीका मन्दिर है। पर्वतपर ऊपरतक चढ़नेको सीढ़ियाँ बनी हैं। मन्दिरतक ऊपर जानेको मोटर-बसका भी मार्ग है। सड़कके मार्गसे मन्दिरतक जानेमें पर्वतपर साढ़े पाँच मील चलना पड़ता है। स्टेशनसे मोटरके रास्ते चामुण्डा मन्दिर नौ मील तथा पैदल मार्गसे लगभग ४॥ मील पड़ता है। सामान्यतः प्रति मंगलवारको ऊपरतक बसें चलती हैं; क्योंकि उस दिन मन्दिरमें अधिक यात्री जाते हैं।

पर्वत-शिखरतक एक घेरेमें खुले स्थानपर महिषासुरकी ऊँची मूर्ति बनी है। उससे कुछ आगे चामुण्डादेवीका विशाल मन्दिर है। मन्दिरका गोपुर खूब ऊँचा है। गोपुरके भीतर कई द्वार पार करके अंदर जानेपर देवीकी भव्य मूर्तिके दर्शन होते हैं। ये चामुण्डा-देवी महिषमर्दिनी कही जाती हैं। चामुण्डा-मन्दिरसे थोड़ी दूरपर एक प्राचीन शिव-मन्दिर है। उस मन्दिरमें शिवलिङ्ग मुख्य मन्दिरमें है, एक ओर पार्वतीजीका मन्दिर है तथा परिक्रमामें अन्य अनेक देव-मूर्तियाँ हैं।

चामुण्डा-मन्दिरको जानेवाली सीढ़ियोंके पैदल मार्गमें ऊपरसे लगभग एक तिहाई ऊँचाई उतर आनेपर नन्दीकी विशाल मूर्ति मिलती है। एक ही पत्थरकी १६ फुटकी यह मूर्ति अपनी विशालता, सुन्दरता तथा कारीगरीकी दृष्टिसे बहुत प्रसिद्ध है।

कहते हैं, मैसूर ही महिषासुरकी राजधानी था। यहीं देवीने प्रकट होकर उसका संहार किया था।

नंजनगुड

मैसूर-चामराजनगर लाइनपर मैसूरसे १६ मीलपर नंजनगुड-टाउन स्टेशन है। स्टेशनसे एक मीलपर नंजुंडेश्वर (नीलकण्ठ) का विशाल मन्दिर है। यह एक विख्यात शिवक्षेत्र है। १०८ शैव दिव्य देशोंमें इसकी गणना है। इसे गरलपुरी और दक्षिणकाशी भी कहते हैं। यह स्थान कव्यानी और गुण्डल नदियोंके तटपर है। चामुण्डा पहाड़ीसे दो मील दूर है। यहाँ प्रति महीनेकी पूर्णिमाको रथयात्रा-उत्सव होता है। चैत्र तथा मार्गशीर्षके रथयात्रा-उत्सवके समय बड़ा मेला लगता है।

नंजुंडेश्वर-मन्दिर विशाल है। उसमें भगवन् शंकरकी लिङ्गमूर्ति है। मन्दिरमें ही पार्वतीजीका भी मन्दिर है। मन्दिरकी परिक्रमामें अन्य अनेक देव-मूर्तियाँ हैं।

मेलूकोटे (यादवगिरि)

(लेखक—श्रीयुत मे० वो० सम्पत्कुमाराचार्य)

इसका प्राचीन नाम यादवाद्रि या यादवगिरि है। दक्षिणके प्रधान चार वैष्णवक्षेत्र हैं—१-श्रीरङ्गम्, २-तिरुपति, ३-काञ्चीपुरम् और ४-मेलूकोटे। १०८ वैष्णव दिव्यदेशोंमें यादवगिरि सारभूत माना जाता है। श्रीरामानुजाचार्यने ही इस क्षेत्रका पुनरुद्धार किया और वे यहाँ १६ वर्ष रहे।

मेलूकोटे मैसूरसे ३० मील दूर है। मोटर-बसका मार्ग है। बंगलोर-मैसूर लाइनपर पाण्डवपुर स्टेशन है। वहाँसे मेलूकोटे १८ मील है। वहाँसे भी मोटर-बस मिलती है। मेलूकोटेमें धर्मशाला है। यात्रियोंके ठहरनेकी पूरी सुविधा है।

मेलूकोटेमें सम्पत्कुमार स्वामीका विशाल-मन्दिर है। वस्तुतः सम्पत्कुमार यहाँकी उत्सवमूर्तिका नाम है। मुख्य मूर्ति भगवान् नारायणकी है। मन्दिरके समीप

ही पञ्चतरणीतीर्थ (सरोवर) है। उसे वेद-पुष्करिणी भी कहते हैं। उसके पास ही परिधानशिला है। सम्पत्कुमार स्वामीका मन्दिर दक्षिणके मन्दिरोंकी परम्पराके अनुसार सुविस्तृत एवं विशाल है। मेलूकोटेके पास पर्वतपर योगनृसिंहका मन्दिर है।

परिधानशिला—कहा जाता है कि भगवान् दत्तात्रेयने इसी शिलापर संन्यास लिया था। इस शिलापर श्रीरामानुजाचार्यने काषाय तथा दण्ड रखकर फिरसे उन्हें ग्रहण किया था। अब भी सभी संन्यासी इसपर अपने काषायवस्त्र तथा दण्डको रखकर फिर ग्रहण करते हैं।

अन्य पुण्यस्थल—श्रीनारायण-मन्दिरके सामने एक पुराना बेरका वृक्ष है। उसे पवित्र माना जाता है और उसकी पूजा की जाती है।

श्रीनृसिंह-मन्दिर, ज्ञानाश्वत्थ, पञ्चभागवत-क्षेत्र, वाराहक्षेत्र तथा अष्टतीर्थ यहाँ प्रख्यात हैं। इनमें दर्शन तथा स्नान किया जाता है।

उत्सव—मीन मासके पुष्यनक्षत्रमें यहाँका विशेष उत्सव होता है। वर्षमें समय-समयपर कई उत्सव होते हैं।

आविर्भावकी कथा—श्रीरामानुजाचार्यजी अपने प्रवास-कालमें इस ओर आये और तोण्डनूर (भक्तपुरी)-में ठहरे थे। आचार्यके पास तिलक करनेकी श्वेतमृत्तिका (तिरुमण)-का अभाव हो गया था। वे उसके सम्बन्धमें सोचते हुए सो गये। स्वप्नमें उन्होंने देखा कि श्रीनारायण कह रहे हैं—"मेरे समीप बहुत 'तिरुमण' है। मैं वहाँ तुलसीवनके बीच वल्मीकमें आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" प्रात:काल होते ही आचार्य उठे। उन्होंने उस स्थानके नरेश तथा अन्य सेवकोंको साथ लिया। स्वप्नमें निर्दिष्ट स्थलको खोदनेपर भगवान् नारायणकी मूर्ति प्राप्त हुई। मन्दिर बनवाया गया और आचार्यने श्रीविग्रहको प्रतिष्ठित किया।

उस समय मन्दिरमें उत्सवमूर्ति नहीं थी। पता लगानेपर ज्ञात हुआ कि दिल्लीके बादशाहने जब यहाँका मन्दिर तोड़ा था, तब कुछ मूर्तियाँ दिल्ली ले गया था। उनमें एक मूर्ति श्रीनारायणकी उत्सवमूर्ति भी थी। आचार्य उस मूर्तिकी खोजमें दिल्ली गये। बादशाहने उन्हें वह मूर्ति देना स्वीकार कर लिया, किन्तु पीछे पता लगा कि वह मूर्ति शाहजादी अपने पास रखती है। श्रीरामानुजाचार्यजीके बुलानेपर वह मूर्ति स्वयं उनके पास चली आयी। इस प्रकार श्रीसम्पत्कुमारको लेकर श्रीआचार्य यादवगिरि आये। शाहजादी भी साथ आयी और उसका शरीर यहीं छूटा।*

दक्षिण भारतके कुछ जैन-तीर्थ

अर्प्पाकम्

काजीवरम् स्टेशनसे नौ मील दक्षिण यह स्थान है। यहाँ एक छोटा प्राचीन जैन-मन्दिर है। उसमें आदिनाथ स्वामीकी मूर्ति प्रतिष्ठित है।

पेरुमंडूर

मद्रास-धनुष्कोटि लाइनपर चिंगलपेटसे ४१ मीलपर तिंडिवनम् स्टेशन है। वहाँसे ४ मील दूर पेरुमंडूर कस्बा है। ग्राममें दो जैन-मन्दिर हैं, जिनमें सहस्राधिक मूर्तियाँ हैं। जब मैलापुर समुद्रमें डूबने लगा, तब उस स्थानकी मूर्तियाँ यहाँ लाकर रखी गयीं।

पोन्नूर

तिंडिवनम् स्टेशनसे २५ मील दूर पहाड़की तलहटीमें यह ग्राम है। यहाँ पर्वतपर पार्श्वनाथजीका मन्दिर है। यह स्थान कुन्द-कुन्द स्वामी (एलाचार्य) की तपोभूमि है। पर्वतपर उनकी चरणपादुकाएँ हैं। प्रति रविारको पर्वतपर यात्रा होती है। पोन्नूरमें धर्मशाला है।

तिरुमलय

पोन्नूरसे ६ मील दूर पर्वत है। पर्वत साढ़े तीन सौ फुट ऊँचा है। सौ फुट ऊपर चार मन्दिर मिलते हैं। उनके आगे एक गुफा है। गुफामें भी दो जैन-प्रतिमाएँ हैं। वहाँ

* श्रीसम्पत्कुमारके ले आनेकी यह कथा जितनी प्रख्यात है, उतनी ही विवादास्पद भी है; क्योंकि श्रीरामानुजाचार्यका शरीर सन् ११३७ ई० के पश्चात् नहीं रहा और सन् ११९१ ई० तक दिल्लीमें पृथ्वीराज सिंहासनासीन थे। सन् ११९१ ई० में ही उन्होंने सरहिंदपर भी अधिकार कर लिया था। उस समयतक भारतके दक्षिण प्रान्तपर किसी दिल्लीस्थ यवन शासकका आक्रमण नहीं हुआ था और न भारतमें कहीं मुसल्मानी शासन था। —सम्पादक

वृषभसेनकी चरणपादुकाएँ भी हैं। पर्वतकी चोटीपर तीन जैन-मन्दिर हैं। ऊपर एक सुन्दर यक्षिणी-मूर्ति है।

चितंबूर

तिंडिवनम्से १० मील वायव्यकोणमें यह स्थान है। यहाँ दो प्राचीन जैन-मन्दिर हैं। इनमें एक डेढ़ सहस्र वर्ष प्राचीन कहा जाता है। चैत्र मासमें यहाँ रथोत्सव होता है।

पुंडी

विल्लुपुरम्-गुडूर लाइनपर विल्लुरपुरम्से ७२ मीलपर आरणीरोड स्टेशन है। वहाँसे लगभग तीन मीलपर पुंडी कस्बा है। यहाँ एक विशाल जैन-मन्दिर है। इस मन्दिरमें श्रीआदिनाथ तथा पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमाएँ विराजमान हैं। इस मन्दिरकी आदिनाथजी मूर्ति दो शिकारियोंको भूमि खोदते समय मिली थी। यहाँका मन्दिर बहुत प्राचीन है।

बंगलोर

यहाँ दिगम्बर जैन-मन्दिरमें ६ मूर्तियाँ सुन्दर हैं। यहाँ जैन-धर्मशाला भी है।

आरसीकेरे

बंगलोर-पूना लाइनपर आरसीकेरे स्टेशन है। मैसूरसे भी एक लाइनपर आरसीकेरेतक जाती है।

आरसीकेरेमें सहस्रकूट नामक जैन-मन्दिर जीर्णदशामें होनेपर भी सुन्दर है। इससे गोम्मट स्वामी (बाहुबली) की धातु-मूर्ति है। आसपास और भी जैन-मन्दिरोंके भग्नावशेष हैं।

श्रवणबेलगोल

(लेखक—श्रीगुलाबचंदजी जैन)

दक्षिण-रेलवेकी बंगलोर-हरिहर-पूना लाइनके आरसीकेरे स्टेशनसे ४२, मैसूरसे ६२, बंगलोरसे १०२ और हासनसे ३१ मील दूर यह स्थान है। इन सभी स्थानोंसे श्रवणबेलगोलके लिये सीधी मोटर-बसें चलती हैं। इसे 'गोम्मट-तीर्थ' भी कहा जाता है। यहाँ जैन-धर्मशाला है। यहाँसे जैन-तीर्थ मूलबदरी, हालेविद, वेणूर, कारकलको, मोटर-बसें जाती हैं।

यहाँ अन्तिम श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु स्वामीने समाधिमरण किया था। यहाँ श्रीभद्रबाहु स्वामी (बाहुबलीजी)-की ५७ फुट ऊँची मूर्ति पर्वतके शिखरपर है, जो कई मील दूरसे दीखती है।

श्रवणबेलगोल गाँव दो पर्वतोंके बीचमें बसा है। एक ओर विन्ध्यगिरि (इन्द्रगिरि) है और दूसरी ओर चन्द्रगिरि। पर्वतोंके नीचे गाँवमें एक झील है। दोनों पर्वतोंमेंसे विन्ध्यगिरि कुछ अधिक ऊँचा है। पर्वतपर चढ़नेको लगभग ५०० छोटी सीढ़ियाँ बनी हैं। पर्वतपर चढ़ते समय पहले एक मन्दिर आता है, उसमें ऊपरके खण्डमें पार्श्वनाथ स्वामीकी मूर्ति है। पर्वतके ऊपर पहुँचनेपर एक पुरानी दीवारका घेरा मिलता है। उस घेरेके भीतर कई मन्दिर हैं। पहले ही एक छोटा मन्दिर 'चौबीस तीर्थंकर बसती' मिलता है। इसके उत्तर-पश्चिम एक कुण्ड है। कुण्डके पास 'चेन्नण्ण बसती' नामका दूसरा मन्दिर है। इसमें चन्द्रनाथ स्वामीकी मूर्ति है। उससे आगे चबूतरेपर एक सुन्दर मन्दिर है। उसमें आदिनाथ, शान्तिनाथ तथा नेमिनाथकी मूर्तियाँ हैं।

इस स्थानसे आगे घेरेमें ऊपर जानेका द्वार है। यहाँ द्वारके पास बाहुबलीजीका छोटा मन्दिर तथा उनके भाई भरतका मन्दिर है। कुछ और मूर्तियाँ भी हैं। आगे एक घेरेके भीतर श्रीबाहुबलीजी (भद्रबाहु स्वामी) की विशाल मूर्ति है। यह ५७ फुट ऊँची दिगम्बरमूर्ति विश्वकी सबसे बड़ी मूर्ति है। मूर्ति पर्वत-शिखरको काटकर बहुत सुडौल बनायी गयी है और भव्य है। यह मूर्ति चामुण्डरायजीद्वारा बनवायी गयी थी।

श्रवणबेलगोलके दूसरी ओर चन्द्रगिरि है। यह पर्वत विन्ध्यगिरिसे छोटा है। इसपर चढ़नेके लिये सीढ़ियाँ ऊपरतक नहीं हैं। केवल साधारण मार्ग है। यह पर्वत हरा-भरा है, किन्तु विन्ध्यगिरि एक पूरी शिलाके समान ऊपरतक है। इस पर्वतपर एक घेरेके भीतर कई जैन-

मन्दिर हैं। पर्वतपर चढ़ते समय भद्रबाहु स्वामीकी गुफा पहले मिलती है। उसमें चरण-चिह्न हैं। शिखरपर और भी मुनियोंके चरण चिह्न हैं। घेरेके भीतर छोटे-बड़े दस-ग्यारह मन्दिर हैं। इनकी निर्माण-कला प्रशंसनीय है। इनमें तीर्थंकरोंकी मूर्तियाँ हैं।

पर्वतोंसे नीचे गाँवमें कई जैन-मन्दिर हैं। यात्री एक दिनमें दोनों पर्वतों तथा ग्रामके मन्दिरोंके दर्शन सरलतासे कर सकते हैं।

वेणूर

श्रवणबेलगोल या हालेबिदसे मोटर-बसद्वारा यहाँ जा सकते हैं। हालेबिदसे यह स्थान ६० मील दूर है। मैसूर-आरसीकेरे लाइनपर हासन स्टेशन आरसीकेरेसे २१ मीलपर है। जैन-यात्री प्रायः हासनसे मूळविदुरे (मूलबदरी) जाते हैं। मूळविदुरेके मार्गमें ही वेणूर पड़ता है।

यहाँ गुरुपर नदीके किनारे एक घेरेमें बाहुबली (गोम्मट स्वामी) की ३७ फुट ऊँची मूर्ति है। घेरेमें प्रवेश करते ही दो मन्दिर मिलते हैं। उनके पीछे एक बड़ा मन्दिर है। बड़े मन्दिरमें बहुत अधिक मनोहर मूर्तियाँ हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ चार जैन-मन्दिर और हैं।

मूळविदुरे

वेणूरसे १२ मील आगे यह स्थान है। जैन इसे मूलबदरी-क्षेत्र मानते हैं। यहाँ जैन-धर्मशाला है। यहाँ चन्द्रनाथ स्वामीका मन्दिर कलाकी दृष्टिसे बहुत उत्कृष्ट है। मन्दिर पीतलका ढला हुआ और प्रतिमा पञ्चधातुकी है, जो देखनेपर स्वर्णकी लगती है। यह प्रतिमा पूरे ५ गज ऊँची है। यहाँ यही सबसे श्रेष्ठ मन्दिर है। मन्दिर चार भागोंमें बँटा है। एक खण्डमें चैत्यालय है। उसमें साँचेमें ढली १००८ मूर्तियाँ हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ १८-१९ मन्दिर और हैं।

इस स्थानके 'सिद्धान्त-बसती' मन्दिरमें जैन सिद्धान्त-ग्रन्थ तथा हीरा, पन्ना आदि रत्नोंकी ३५ मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियोंके दर्शन पंचोंकी आज्ञासे भंडारमें कुछ द्रव्य अर्पित करनेपर होते हैं।

'गुरु-बसती' नामक मन्दिरमें पार्श्वनाथजीकी ८ गज ऊँची मूर्ति है।

कारकल

मूळविदुरेसे १० मीलपर कारकल है। मोटर-बस मूळविदुरेसे कारकल होते हरिहर स्टेशन जाती है। यहाँ १२ जैन-मन्दिर हैं, जो अत्यन्त कुशल कारीगरीके प्रतीक हैं। पूर्वकी ओर एक छोटी पहाड़ीपर बाहुबली स्वामीकी ४२ फुट ऊँची मूर्ति है। यहीं एक दूसरी पहाड़ीपर 'चतुर्मुख-बसती' नामक विशाल मन्दिर है। इसमें चारों ओर चार द्वार हैं तथा सात-सात गजकी १२ मूर्तियाँ हैं। यहाँसे पश्चिम ११ सुन्दर मन्दिर हैं।

वारंग

कारकलसे ३४ मीलपर वारंग है। मोटर-बस जाती है। वारंगसे लौटते समय फिर मूळविदुरे होकर हासन स्टेशन ही आना पड़ता है। वारंग न जानेवाले यात्री कारकलसे हरिहर चले जाते हैं।

यहाँ नेमीश्वर-बसती नामका एक मन्दिर कोटके भीतर है। उसके समीप ही सरोवरमें एक जल-मन्दिर है। उसके दर्शन करने नौकाओंमें बैठकर जाना पड़ता है। उस मन्दिरमें चौमुखी मूर्ति है।

कंतालम्

मद्रास-रायचूर लाइनपर रायचूरसे ४३ मील दूर आदोनी स्टेशन है। वहाँसे वायव्यकोणमें १३ मीलपर कंतालम् छोटा-सा गाँव है। यहाँ श्रीरङ्गमन्दिर प्रसिद्ध है। यहाँ ठहरने आदिकी कोई सुविधा नहीं है, किन्तु इस ओर यह मन्दिर मान्यता-प्राप्त है। प्रायः यात्री यहाँ आते रहते हैं।

मल्लिकार्जुन

मल्लिकार्जुन-माहात्म्य

मल्लिकार्जुनसंज्ञश्चावतारः शंकरस्य वै।
द्वितीयः श्रीगिरौ तात भक्ताभीष्टफलप्रदः॥
संस्तुतो लिङ्गरूपेण सुतदर्शनहेतुतः।
गतस्तत्र महाप्रीत्या स शिवः स्वगिरेर्मुने॥
ज्योतिर्लिङ्गं द्वितीयं तद्दर्शनात् पूजनान्मुने।
महासुखकरं चास्ते मुक्तिदं नात्र संशयः॥

(शिवपुराण, शतरु० सं० ४१। १२)

'श्रीशैलपर मल्लिकेश्वर नामका द्वितीय ज्योतिर्लिङ्ग है। ये भगवान् शिवके अवतार हैं। इनके दर्शन-पूजनसे भक्तोंको अभीष्ट फल मिलता है। स्कन्दने जब शंकरजीकी प्रार्थना की, तब वे अत्यन्त प्रेमसे कैलास छोड़कर लिङ्गरूपमें पुत्रको देखनेकी इच्छासे वहाँ पधारे थे*। मुने! यह दूसरा ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन-पूजन आदिसे बहुत सुख देता है और अन्तमें मोक्ष भी प्रदान करता है, इसमें कोई संशय नहीं है।'

मल्लिकार्जुन

मल्लिकार्जुन द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक है। यह ज्योतिर्लिङ्ग श्रीशैलपर है। वहाँ ५१ शक्तिपीठोंमेंसे एक शक्तिपीठ भी है। सतीके देहका ग्रीवा-भाग जहाँ गिरा, वहाँ भ्रमराम्बा देवीका मन्दिर है। वीरशैव मतके पञ्चाचार्योंमेंसे एक जगद्गुरु श्रीपति पण्डिताराध्यकी उत्पत्ति-मल्लिकार्जुन-लिङ्गसे ही मानी जाती है।

श्रीशैलपर घोर जंगल है। इस जंगलमें बहुत अधिक शेर, चीते, रीछ आदि हैं। इनके अतिरिक्त यह जंगली भीलोंका प्रदेश है, जो सुविधा होनेपर लूटने एवं हत्या करनेमें हिचकते नहीं। इन कठिनाइयोंके कारण मल्लिकार्जुनकी यात्रा शिवरात्रिके अवसरपर या आश्विन-नवरात्रमें ही शक्य है। दूसरे समय यहाँकी यात्रा सशस्त्र कुछ लोग भोजनादिकी सामग्री साथ लेकर ही कर सकते हैं। फाल्गुन-कृष्णा ११ से यात्री श्रीशैलपर पहुँचने लगते हैं।

मार्ग

मनमाड-काचीगुडा लाइनके सिकन्दराबाद स्टेशनसे एक लाइन द्रोणाचलम्तक जाती है। इस लाइनपर कर्नूल-टाउन स्टेशन है। वहाँसे श्रीशैल ७७ मील दूर है। मोटर-बसें कुछ दूरतक जाती हैं। कर्नूल-टाउनमें धर्मशाला है।

मसुलीपटम-हुबली लाइनपर द्रोणाचलम्से ४८ मील पहले (गुंटूरसे २१७ मीलपर) नंदयाल स्टेशन है। इस स्टेशनसे श्रीशैल ७१ मील दूर है।

कर्नूल-टाउन या नंदयाल—चाहे जिस स्टेशनसे चलें, सामान्य समयमें मोटर-बसें आत्माकूर गाँवतक ही जायँगी। नंदयालसे आत्माकूर गाँव २८ मील है, यहाँ धर्मशाला है। आत्माकूरसे नागाहुटी १२ मील है। आगे श्रीशैल ३१ मील रह जाता है। आत्माकूरसे आगे बैलगाड़ीपर जाना पड़ता है। शिवरात्रिके समय बसें नागाहुटीसे लगभग २५ मील आगेतक जाती हैं। केवल ६ मील पर्वतीय चढ़ाईका मार्ग पैदल तय करना पड़ता है।

आत्माकूरसे बैलगाड़ियाँ 'पदेपिचेरू' (पिचेरू तालाब)-तकके लिये मिलती हैं। यह तालाब जगलके बीचमें है। यात्रीको तालाबका ही जल पीना पड़ता है। आत्माकूरसे बैलगाड़ीके मार्गसे यह स्थान २७ मील है। पैदल मार्ग नागाहुटी होकर १८ मील है, किन्तु मार्गसे परिचित यात्री ही पैदल आ सकते हैं। पिचेरू तालाबपर

* यह कथा स्कन्दपुराणमें विस्तारसे आयी है। विवाहकी बातको लेकर कुमार (स्कन्द) रुष्ट होकर श्रीशैलपर जाकर रहने लगे थे। अन्तमें जब उन्होंने विह्वल होकर पिताको स्मरण किया, तब वे यहाँ पधार गये।

वृक्षोंके नीचे ही रहना पड़ता है। शिवरात्रि मेलेके समय मोटर-बसें पिचेरू तालाबसे कुछ आगेतक जाती हैं। मेलेके समय पिचेरू सरोवरपर आगे जानेके लिये टट्टू तथा डोलियाँ भी किरायेपर मिलती हैं।

पिचेरू सरोवरसे पैदल मार्ग लगभग १० मील है। मार्गमें दोनों ओर घना वन है। केवल दो स्थानोंपर जल मिलता है। आगे भीमकोलातक (आधे मार्गतक) सामान्य उतार है। भीमकोलासे एक मील चढ़ाईका मार्ग है। चढ़ाई पूर्ण होनेपर श्रीशैलके दर्शन होते हैं। भीमकोलामें एक छोटा शिव-मन्दिर है। चढ़ाई पूरी होनेके बाद मार्ग समान मिलता है। शिखरपर समतल भूमि है।

मल्लिकार्जुन-दर्शन

श्रीशैलके शिखरपर वृक्ष नहीं है। दक्षिणी मन्दिरोंके ढंगका पुराना मन्दिर है। एक ऊँची पत्थरकी चहारदीवारी है, जिसपर हाथी-घोड़े बने हैं। इस परकोटेमें चारों ओर द्वार हैं। द्वारोंपर गोपुर बने हैं। इस प्राकारके भीतर एक प्राकार और है। दूसरे प्राकारके भीतर श्रीमल्लिकार्जुनका निज-मन्दिर है। यह मन्दिर बहुत बड़ा नहीं है। मन्दिरमें मल्लिकार्जुन-शिवलिङ्ग है। यह शिवलिङ्ग-मूर्ति लगभग ८ अंगुल ऊँची है और पाषाणके अनगढ़ अरघेमें विराजमान है।

मन्दिरके बाहर एक पीपलका सम्मिलित वृक्ष है। इसके चारों ओर पक्का चबूतरा है। मेलेके समय यहाँ ठहरनेके स्थानका बड़ा कष्ट रहता है। आसपास बीस-पचीस छोटे-छोटे शिव-मन्दिर हैं। उनमें ही यात्री किराया देकर ठहरते हैं। मन्दिरके चारों ओर बावलियाँ हैं और दो छोटे सरोवर भी हैं।

श्रीमल्लिकार्जुन-मन्दिरके पीछे पार्वतीदेवीका मन्दिर है। यहाँ इनका नाम मल्लिकादेवी है। श्रीमल्लिकार्जुनके निज-मन्दिरका द्वार पूर्वकी ओर है। द्वारके सम्मुख सभामण्डप है। उसमें नन्दीकी विशाल मूर्ति है। मन्दिरके द्वारके भीतर नन्दीकी एक छोटी मूर्ति और है। शिवरात्रिको यहाँ शिव-पार्वती-विवाहोत्सव होता है।

पातालगङ्गा—मन्दिरके पूर्वद्वारसे एक मार्ग कृष्णा नदीतक गया है। उसे यहाँ पातालगङ्गा कहते हैं। पातालगङ्गा मन्दिरसे लगभग पौने दो मील है, किन्तु मार्ग बहुत कठिन है। आधा मार्ग सामान्य उतारका है और उसके पश्चात् ८५२ सीढ़ियाँ हैं। ये सीढ़ियाँ खड़े उतारकी हैं। बीच-बीचमें चार स्थान विश्राम करनेके लिये बने हैं। पर्वतके पाददेशमें कृष्णा नदी है। यात्री वहाँ स्नान करके चढ़ानेके लिये जल ले आते हैं। ऊपर लौटते समय खड़ी चढ़ाई बहुत कष्टकर होती है।

यहाँ पासमें कृष्णामें दो नाले मिलते हैं। उस स्थानको लोग त्रिवेणी कहते हैं। कृष्णा-तटपर पूर्वकी ओर जानेपर एक कन्दरा मिलती है। उसमें देवी तथा भैरवादि देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। कहा जाता है कि यह गुफा पर्वतमें कई मील भीतरतक चली गयी है।

आस-पास तथा मार्गके तीर्थ

शिखरेश्वर तथा हाटकेश्वर—मल्लिकार्जुनसे ६ मील दूर शिखरेश्वर तथा हाटकेश्वरके मन्दिर हैं। मार्ग कठिन है। कुछ यात्री शिवरात्रिके पूर्व वहाँतक जाते हैं। शिखरेश्वरसे मल्लिकार्जुन-मन्दिरके कलश-दर्शनका ही महत्त्व माना जाता है। कहते हैं श्रीशैलके शिखरका दर्शन करनेसे पुनर्जन्म नहीं होता।

अम्बाजी—मल्लिकार्जुन-मन्दिरसे पश्चिम लगभग दो मीलपर भ्रमराम्बादेवीका मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमेंसे एक है। अम्बाजीकी मूर्ति भव्य है। आसपास प्राचीन मठादिके अवशेष हैं।

बिल्ववन—शिखरेश्वरसे लगभग ६ मील आगे (मल्लिकार्जुनसे १२ मीलपर) यह स्थान है। यहाँ एकमा देवीका मन्दिर है, किन्तु दिनमें भी यहाँ हिंस्रपशु घूमते हैं। बिना मार्ग-दर्शक तथा आवश्यक सुरक्षाके इधर नहीं आना चाहिये।

कर्नूल-टाउन—इस नगरके सामने तुङ्गभद्राके पार एक शिव-मन्दिर तथा रामभट्ट-देवल नामक राम-मन्दिर है।

आलमपुर—कर्नूल-टाउनसे ४ मील पहले आलमपुर-रोड-स्टेशन है। कर्नूल-टाउनसे आलमपुरतक ताँगे आदि जाते हैं। यहाँ तुङ्गभद्राके तटपर भगवान् शङ्कर तथा भगवतीके मन्दिर हैं। यह स्थान इधर पवित्र तीर्थ माना जाता है। इन मन्दिरोंकी इस ओर बहुत प्रतिष्ठा है।

महानदी—यह स्थान नंदयाल स्टेशनसे १० मील दूर है। यहाँ भगवान् शङ्करका मन्दिर है। एक ओंकारेश्वर मन्दिर भी है। यह तीर्थ भी इधर प्रख्यात है।

कथा

'पहले विवाह किसका हो' इस बातको लेकर

दक्षिण-भारतके कुछ मन्दिर—५
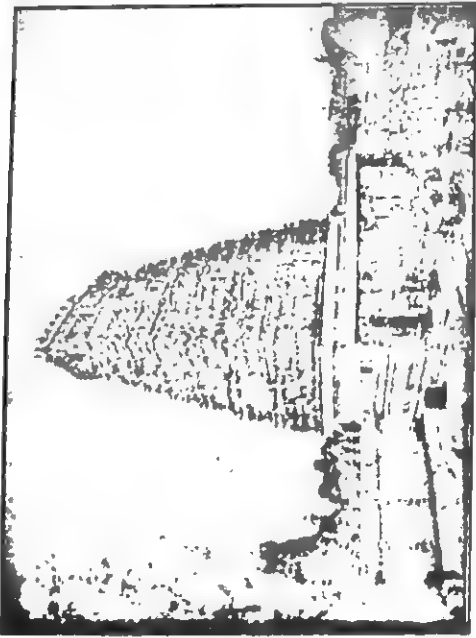
नञ्जुण्डेश्वर-मन्दिर, नंजनगुड
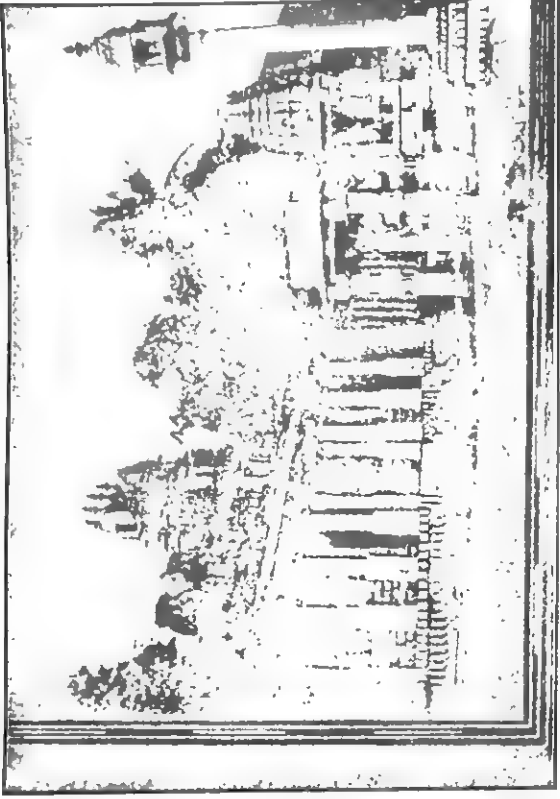
जैन-मन्दिर, श्रवणबेलगोल

श्रीगोम्मट स्वामी, श्रवणबेलगोल
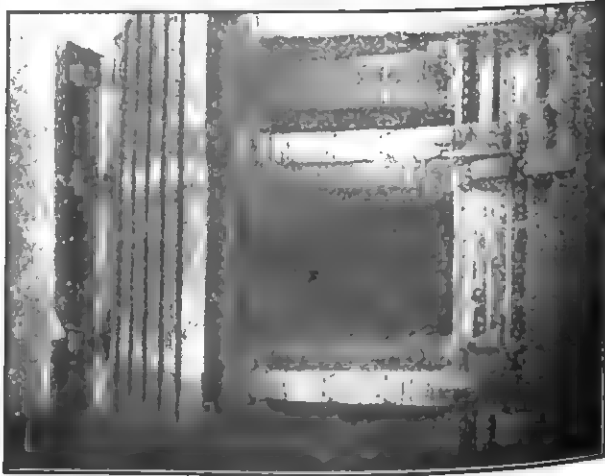
कारकलका एक जैन-मन्दिर
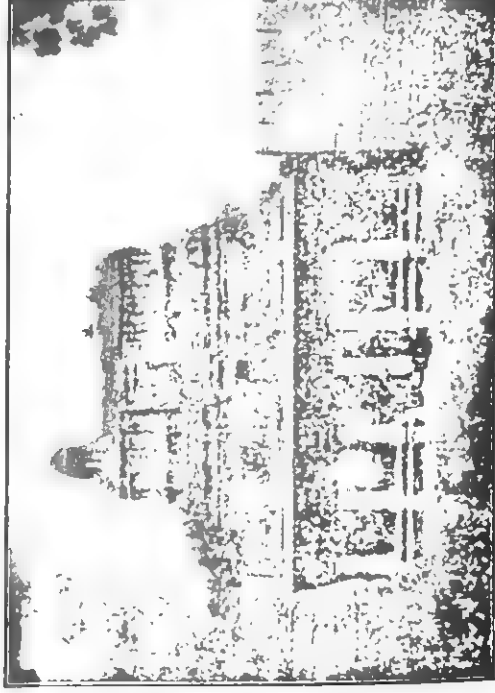
श्रीमल्लिकार्जुन-मन्दिर, श्रीशैलम्

श्रीनृसिंह-मन्दिर,

दक्षिण-भारतके कुछ मन्दिर—६
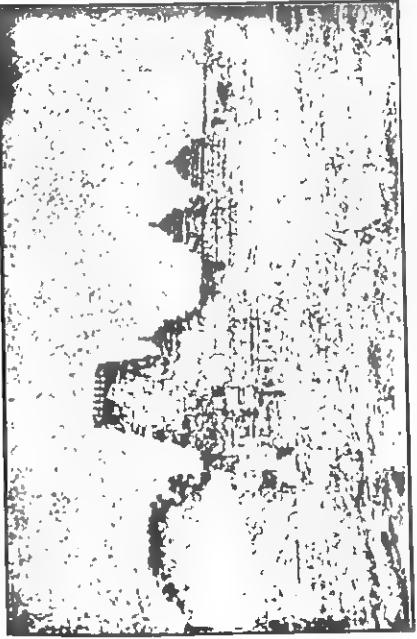
श्रीपुष्पगिरि-मन्दिर, पुष्पगिरि

श्रीकूर्म-मन्दिर, श्रीकूर्मम्
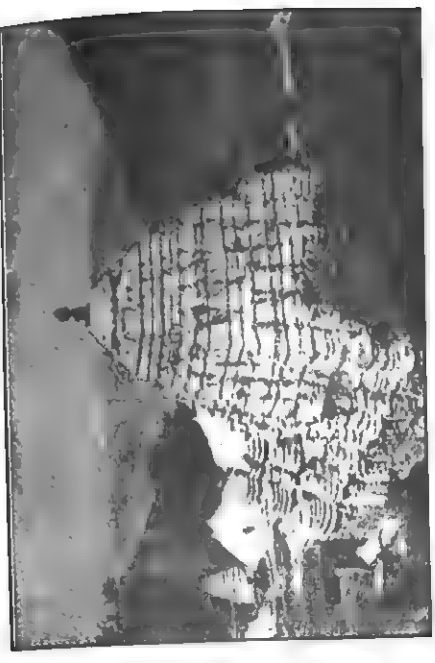
श्रीवाराह-लक्ष्मीनृसिंह स्वामी-मन्दिर, सिंहाचलम्
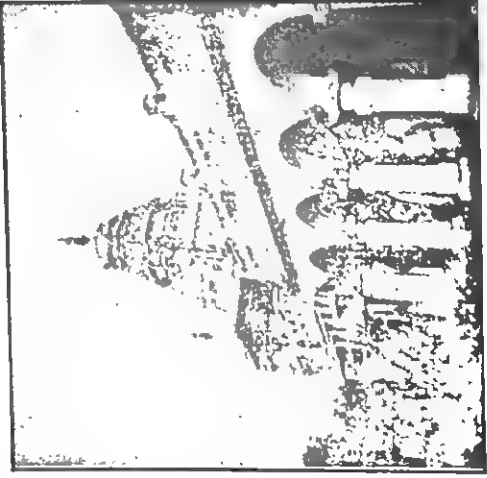
श्रीसत्यनारायण-मन्दिर, अन्नावरम्

श्रीभीमेश्वर-मन्दिर, द्राक्षारामम्
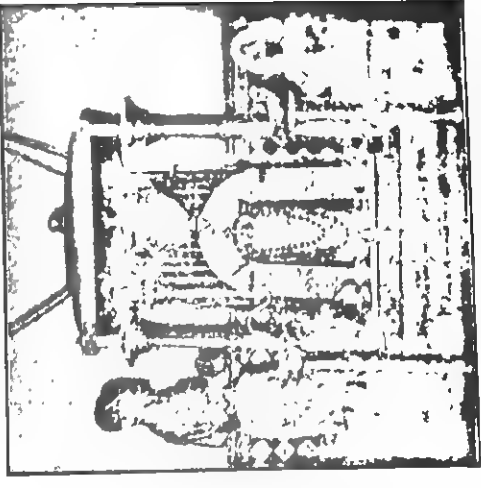
श्रीभीमेश्वर महादेव, द्राक्षारामम्

स्वामिकार्तिक एवं गणेशजीमें परस्पर विवाद हो गया। गणेशजीने पृथ्वी-प्रदक्षिणाका प्रसङ्ग आनेपर माता-पिताकी प्रदक्षिणा कर ली अतएव उनका विवाह पहले हो गया। इससे स्वामिकार्तिक रुष्ट होकर कैलास छोड़कर श्रीशैलपर आ गये।

पुत्रके वियोगसे माता पार्वतीको बड़ा दुःख हुआ। वे स्कन्दसे मिलने चलीं। भगवान् शङ्कर भी उनके साथ श्रीशैलपर पधारे, किंतु स्वामिकार्तिक माता-पितासे मिलना नहीं चाहते थे। वे उमा-महेश्वरके पहुँचते ही श्रीशैलसे तीन योजन दूर कुमार-पर्वतपर जा विराजे। वह स्थान अब **कुमार-स्वामी** कहा जाता है। भगवान् शङ्कर तथा पार्वतीजी श्रीशैलपर स्थित हुए। यहाँ शिवजीका नाम अर्जुन तथा पार्वतीदेवीका नाम मल्लिका है। दोनों नाम मिलकर मल्लिकार्जुन होता है।

अहोबिल

नंदयाल स्टेशनसे २२ मील अल्लागड्डातक बसें जाती हैं। वहाँसे १२ मील पैदल या बैलगाड़ीसे जाना पड़ता है।

मद्रास-रायचूर लाइनपर आरकोनम्से ११९ मीलपर कड़पा स्टेशन है, वहाँसे भी अहोबिल जाया जाता है।

अहोबिल श्रीरामानुज-सम्प्रदायके आचार्य-पीठोंमेंसे एक मुख्य पीठ है। यहाँके आचार्य शठकोपाचार्य कहे जाते हैं।

यहाँ शृङ्गबेल नामक कुण्ड है। कुण्डके पास ही भगवान् नृसिंहका मन्दिर है। अहोबिल बस्तीके पास एक पहाड़ी है। वहाँ एक मन्दिर पहाड़ीके नीचे, एक पहाड़ीके मध्यभागमें और एक पहाड़ीके ऊपर है। ये तीनों ही मन्दिर प्राचीन हैं। इस क्षेत्रमें भवनाशिनी नदी तथा अनेकों तीर्थ हैं।

कहा जाता है कि यहीं हिरण्यकशिपुकी राजधानी थी। यहीं भगवान् नृसिंहने प्रकट होकर प्रह्लादकी रक्षा की थी। यहाँ आस-पास प्रह्लादचरितके स्मारक कई स्थानोंमें बने हैं।

यह क्षेत्र स्वयं व्यक्त क्षेत्रोंमें माना जाता है। भगवान् श्रीरामने वनवास-कालमें पधारकर नृसिंहभगवान्का मंगल-शासन (स्तवन) किया था। अर्जुनने भी यहाँ नृसिंहभगवान्की आराधना की थी। आळवार संत तथा आचार्यगण भी यहाँ पधारे हैं।

यहाँ तीन पर्वत हैं—गरुडाद्रि, वेदाद्रि और अचलच्छायामेरु। गरुडाद्रिपर गरुड़ने भगवान् नृसिंहको प्रसन्न किया था। वेदाद्रिपर भगवान्ने वेदोंको वरदान दिया था। अचलच्छायामेरुपर नृसिंहभगवान्ने अवतार लिया था।

यह क्षेत्र नव-नृसिंहक्षेत्र कहा जाता है। यहाँ नृसिंह-भगवान्के नौ विग्रह हैं—१. ज्वालानृसिंह, २. अहोबिलनृसिंह, ३. मालोलनृसिंह (लक्ष्मीनृसिंह), ४. क्रोडाकारनृसिंह, ५. करञ्जनृसिंह, ६. भार्गवनृसिंह, ७. योगानन्दनृसिंह, ८. छत्रवटनृसिंह, ९. और पावननृसिंह।

पुष्पगिरि

यह स्थान मद्रास-रायचूर लाइनपर नंदलूरसे २५ मील आगे कड़पा स्टेशनसे १० मील उत्तर-पश्चिमकी ओर पेनम् नदीके तटपर बसा है। यह वैष्णवों तथा शैव दोनों मतोंका गढ़ है। वैष्णव इसे 'तिरुमल मध्य अहोविलम्' कहते हैं और शैव 'मध्य-कैलासम्' (चिदम्बरम् तथा काशीका मध्यम केन्द्रबिन्दु)।

इसके सम्बन्धमें यह कथा आती है कि गरुड़जी जब अपनी माताको दासीपनेसे मुक्त करनेके लिये अमृतकलश लिये आ रहे थे, इन्द्रने उनपर आक्रमण कर दिया। फलतः अमृतका एक बूँद उछलकर यहाँके तालाबमें गिर पड़ा। अतः इसके जलमें अमृतके गुण आ गये। तब नारदजीने हनुमान्जीको इस तालाबको एक पर्वतसे ढँक देनेकी सलाह दी। हनुमान्जीने जब ऐसा किया, तब पर्वत डूबनेके बदले तालाबमें तैरने लग गया। वह ऐसा लगता था मानो एक पुष्प जलके ऊपर तैर रहा हो। तभीसे इसका नाम पुष्पगिरि पड़ा।

पर्वतपर श्रीकाशी-विश्वनाथ, राघवस्वामी, वैद्यनाथ, त्रिकोटीश्वर, भीमेश्वर, इन्द्रेश्वर, कमलसम्भवेश्वर, केशव

स्वामी तथा भगवान् शङ्करके आठ विशाल मन्दिर हैं, जिनमें अन्तिम दो देवता एक ही मन्दिरमें विराजते हैं। इसके अतिरिक्त दर्जनों छोटे-छोटे मन्दिर हैं। मन्दिरोंकी भित्तियोंपर रामायण, महाभारत एवं गीतासे सम्बद्ध (पार्थसारथ अर्जुनको पाशुपतास्त्रदान आदि) कई कलापूर्ण चित्रकारियाँ भी हैं।

ताड़पत्री

मद्रास-रायचूर लाइनपर कड़पासे ६६ मील (मद्राससे २२८ मील) दूर यह स्टेशन है। यहाँ श्रीराम-मन्दिर, शिव-मन्दिर तथा चिन्ताराय-मन्दिर—ये तीन प्राचीन मन्दिर हैं। इनकी निर्माणकला उत्कृष्ट है। मन्दिरोंकी भित्तियोंपर दशावतारोंकी तथा अन्य देवताओंकी मनोहर मूर्तियाँ बनी हैं।

श्रीकूर्मम्

पूर्वी रेलवेकी हबड़ा-वाल्टेयर लाइनपर नौपाड़ासे २९ मील दूर श्रीकाकुलम्-रोड स्टेशन है। स्टेशनसे श्रीकाकुलम् बस्ती ८ मील दूर है। मोटर-बस जाती है। श्रीकाकुलम् बाजारसे श्रीकूर्मम् ९ मील है। श्रीकाकुलम् बाजारसे बस जाती है।

इस स्थानको लोग कूर्माचल भी कहते हैं; किन्तु यहाँ कोई पर्वत नहीं है। यहाँ मन्दिर बहुत प्राचीन है। मन्दिरमें यात्रीको दो आने शुल्क देना पड़ता है। यहाँ श्रीकूर्मभगवान्‌की मूर्ति है। यह मूर्ति कूर्माकार शिला है, जिसमें आकृति अस्पष्ट है। पासमें श्रीगोविन्दराज (भगवान् विष्णु)-का श्रीविग्रह है। भगवान्‌के समीप श्रीदेवी और भूदेवी दोनों ओर विराजमान हैं।

आरसविल्ली

श्रीकाकुलम् बाजारसे श्रीकूर्मम् जाते समय मार्गमें दो मीलपर ही यह ग्राम मिलता है। यहाँ सूर्यनारायणका मन्दिर है। मन्दिरका घेरा विशाल है। मन्दिरमें भगवान् सूर्यकी श्यामवर्ण प्रभावोत्पादक मूर्ति है। भारतमें सूर्य-मन्दिर अनेक स्थानोंमें हैं, किन्तु प्रायः सूर्य-मन्दिरोंमें मूर्तियाँ नहीं हैं या खण्डित हैं। यहाँ सूर्य-मूर्ति ठीक दशामें है और सूर्यभगवान्‌की नियमपूर्वक पूजा भी होती है। आरसविल्ली या श्रीकूर्मम्‌में धर्मशाला नहीं है।

रामतीर्थ

हबड़ा-वाल्टेयर लाइनपर वाल्टेयरसे ३८ मील पहले विजयानगरम् स्टेशन है। विजयानगरम् प्रसिद्ध नगर है। विजयानगरम्‌से ७ मीलपर रामतीर्थ है। कहा जाता है कि वनवासके समय भगवान् श्रीराम यहाँ कुछ समय रहे थे। यहाँ श्रीराम-मन्दिर है। उसमें श्रीराम-लक्ष्मणके श्रीविग्रह हैं।

सिंहाचलम्

भगवान् श्रीवाराह-लक्ष्मी-नृसिंह स्वामीका मन्दिर होनेके कारण सिंहाचलम् एक अत्यन्त प्रसिद्ध तीर्थ है। कहते हैं पुराने समयमें हिरण्यकशिपुने अपने पुत्र प्रह्लादको समुद्रमें गिराकर उसके ऊपर इस पर्वतको आरोपित कर दिया था, किन्तु भगवान् विष्णुने स्वयं प्रकट होकर इस पर्वतको धारण किये रखा और प्रह्लादको बचा लिया। तब प्रह्लादने स्वयं इस मूर्तिकी उपासना की थी।

मार्ग

हबड़ा-वाल्टेयर लाइनपर वाल्टेयरसे केवल ५ मील पहले सिंहाचलम् स्टेशन है। स्टेशनसे मन्दिरकी पहाड़ी २$\frac{1}{2}$ मील दूर है।

सिंहाचलम् मन्दिर समुद्रकी सतहसे ८०० फुट ऊपर है। विशाखापत्तनम्से उत्तर दस मीलपर यह स्थित है। विशाखापत्तनम्से मोटर-बस चलती है।

पहाड़ीपर ऊपर जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। उनमें बीच-बीचमें बैठकर विश्राम करनेके स्थान भी बने हैं।

ठहरनेके स्थान

यहाँ पर्वतके नीचे धर्मशालाएँ बनी हैं, किन्तु नीचे स्थान गदा है। पहाड़ीके ऊपर मन्दिरके पास जो धर्मशालाएँ हैं, वे स्वच्छ हैं।

दर्शनीय स्थान

मन्दिरमें यहाँ श्रीमूर्ति है। वह वाराह-मूर्ति-जैसी दीखती है, किन्तु उसे नृसिंह-मूर्ति कहा जाता है। यह मूर्ति बारहों-महीने चन्दनसे ढकी रहती है। वैशाख मासमें अक्षयतृतीयाके दिन इस मूर्तिका चन्दन हटाया जाता है। उसी दिन इसके दर्शन हो सकते हैं। निजस्वरूपका दर्शन करनेपर भक्तोंकी मान्यता है कि निश्चित मुक्ति प्राप्त होती है। मन्दिरकी चहारदीवारीमें गोपुरोंकी रचना की गयी है। मुख्य मण्डपके पश्चात् सोलह खंभोंका मण्डप है। इसके बरामदेमें अत्यन्त सुन्दर आभूषणोंसे जटित काले रंगके पत्थरका रथ है, जिसे दो घोड़े खींच रहे हैं। मन्दिरके उत्तरमें कल्याणमण्डप है, इस मण्डपमें चैत्रशुक्ला एकादशीके दिन प्रत्येक वर्ष भगवान्का विवाह सम्पन्न किया जाता है। उस दिन भगवान् विष्णुके अवतार मत्स्य, धन्वन्तरि, वरुण और भगवान् नृसिंहकी अनेक मूर्तियाँ इस मण्डपमें रखी जाती हैं।

इस पहाड़ीमें झरना है, जिसे गङ्गाधार कहते हैं। यहाँके अनेक यात्री इस झरनेमें स्नान करते हैं। मन्दिरमें भी इसीका जल प्रयोगमें आता है।

अक्षय तृतीयाके अतिरिक्त भगवान्की मूर्ति चन्दनसे ढकी रहती है। उस समय वह एक बहुत बड़े कुम्भ या गोल चन्दनस्तूपके समान दीखती है। यात्री उसी चन्दनाच्छादित बृहत् पिण्डकी पूजा एवं दर्शन करते हैं। यहाँ मन्दिरमें प्रवेश करनेके लिये प्रत्येक यात्रीको छः आने शुल्क देना पड़ता है।

शोलिङ्गम्

वाल्टेयरसे विशाखापत्तनम्के लिये मोटर-बसें जाती हैं। वहाँसे शोलिंगम् मोटर-बस चलती है। यह स्थान विशाखापत्तनम्के बालजापेठ तालुकामें है। नगरमें शङ्करजीका एक मन्दिर है। उसमें स्वयम्भू शिवलिङ्ग है। दूसरा मन्दिर भगवान् विष्णुका है। उन्हें भक्त-वत्सल कहा जाता है। नगरसे एक मील दूर पर्वतपर नृसिंह-मन्दिर, हनुमान्जीका मन्दिर और लक्ष्मीजीका मन्दिर है। यहाँ लक्ष्मीजीका नाम अमृतवल्ली है। कहते हैं कि कुबेरने यहाँ लक्ष्मीजीका विग्रह स्थापित करके उनकी आराधना की थी। ऐसा भी कहते हैं कि यहाँ नृसिंहजीके समीप कश्यप, अत्रि आदि सप्तर्षियोंने तपस्या की है।

बलिघाटम्

मद्रास-वाल्टेयर लाइनपर वाल्टेयरसे ४६ मील दूर नरसापट्टनम्-रोड स्टेशन है। उससे थोड़ी दूरीपर बलिघाटम् ग्राम पेंडरू नदीके किनारे है। नदीके किनारे ब्रह्मेश्वर-मन्दिर है। यहाँ पेंडरू नदी उत्तरवाहिनी है। कहा जाता है कि यहाँ राजा बलिने यज्ञ किया था। महाशिवरात्रिपर यहाँ बड़ा मेला लगता है।

अन्नावरम्

दक्षिण-रेलवेकी वाल्टेयर-मद्रास लाइनपर वाल्टेयरसे ७० मील दूर अन्नावरम् स्टेशन है। स्टेशनसे दो मीलपर पम्पा नदीके किनारे अन्नावरम् एक छोटा-सा कस्बा है। यहाँ म्युनिसिपल चोल्ट्री (यात्री-निवास) है, जिसमें किरायेपर कमरे मिलते हैं। यहाँ मुख्य तीर्थ पम्पा नदी ही है। उसमें लोग स्नान, तर्पण, श्राद्धादि करते हैं। एक

पहाड़ीपर श्रीसत्यनारायणभगवान्का मन्दिर है। ऊपरतक जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। मन्दिर लगभग ४२८ सीढ़ी ऊपर है। पर्वतके ऊपर सुविस्तृत स्थान है। एक बड़ा-सा दीवारोंसे घिरा घेरा है, जो पूरा पक्का कर दिया गया है। घेरेके भीतर सत्यनारायणजीका मन्दिर है। सत्यनारायणभगवान्का श्रीविग्रह मनोहर है।

पीठापुरम्

अन्नावरम्से १६ मील आगे पीठापुरम् स्टेशन है। अन्नावरम्से पीठापुरम् मोटर-बस भी चलती है। यह पादगयाक्षेत्र है। भारतमें पाँच पितृतीर्थ प्रधान माने जाते हैं—१-गया (गय-शिरःक्षेत्र), २-याजपुर-वैतरणी (उड़ीसामें नाभि-गयाक्षेत्र), ३-पीठापुरम् (पादगयाक्षेत्र), ४-सिद्धपुर (गुजरातमें मातृगयाक्षेत्र), ५-बदरीनाथ (ब्रह्मकपाली)।

यहाँ अधिकांश यात्री पिण्डदान—श्राद्ध करने आते हैं। नगरके एक ओर महापादगया नामक विस्तृत सरोवर है। सरोवरके समीप एक घेरेके भीतर लोग पिण्डदानादि करते हैं। वहाँ कुक्कुटेश्वर शिव-मन्दिर है। इधरके लोग इस मन्दिरको कुट्टण्ण या कुट्टुस्वामी कहते हैं। सरोवरके समीप (घेरेसे बाहर) मधुस्वामी-मन्दिर है। इसमें भगवान् नारायणकी मूर्ति है। मधुस्वामी-मन्दिरके पास माधवतीर्थ नामक सरोवर है। यहाँ महाशिवरात्रिपर मेला लगता है। उस समय कुट्टुस्वामी-मन्दिरका रथयात्रा-महोत्सव होता है। मधुस्वामी-मन्दिरका महोत्सव शिवरात्रिसे पंद्रह दिनतक होता रहता है।

कहा जाता है कि यहाँ भगवान् उमा-महेश्वरने कुछ काल कुक्टुट-दम्पतिका स्वरूप धारण करके निवास किया है। पीठापुरम्में कोई अच्छी धर्मशाला नहीं है।

सामलकोट

पीठापुरम्से ७ मीलपर सामलकोट स्टेशन है। सामलकोट अच्छा नगर है। यहाँ भीमेश्वर नामक शिव-मन्दिर है। मन्दिर सुन्दर एवं सुविस्तृत है। मन्दिरके समीप ही एक सरोवर है।

सर्पावरम्

सामलकोटसे एक लाइन कोकानाडा-पोर्ट जाती है। इस लाइनपर सामलकोटसे ६ मील दूर सर्पावरम् स्टेशन है। इसे सर्पापुरी भी कहते हैं। यहाँ भावनारायण-स्वामीका मन्दिर है। मन्दिरके समीप मुक्तिकासार तीर्थ है। ग्रामके बाहर नारदकुण्ड नामक सरोवर है।

कहा जाता है कि देवर्षि नारद यहाँ नारदकुण्डमें स्नान करते ही स्त्री हो गये। पीछे भगवान् विष्णुने ब्राह्मणरूप धारण करके स्त्रीत्वको प्राप्त नारदजीको मुक्ति-कासारमें स्नान करनेको कहा। उसमें स्नान करके नारदजी फिर अपने पुरुषरूपमें आ गये।

द्राक्षारामम्

सामलकोटसे एक लाइन कोकानाडातक जाती है। सामलकोटसे कोकानाडा-पोर्ट स्टेशन १० मील दूर है। पीठापुरम्से मोटर-बसके रास्ते सीधे आनेपर पीठापुरम्से भी कोकानाडा १० मील है। कोकानाडासे द्राक्षारामम्के लिये बसें जाती हैं। दूरी १५ मील है।

द्राक्षारामम्में एक विस्तृत सरोवर है। उसे सप्तगोदावरी तीर्थ कहते हैं। सरोवरके समीप ही भीमेश्वर-मन्दिर है। मन्दिरसे लगी हुई एक अच्छी धर्मशाला है। भीमेश्वर-मन्दिर एक घेरेके भीतर है। भगवान् शंकरकी लिङ्गमूर्ति इतनी विशाल है कि पहले भूमिवाले भागमें उसके निचले अंशके दर्शन होते हैं। इस अंशको 'मूलविराट' कहते हैं। सीढ़ियोंसे ऊपरकी मंजिलपर जानेपर मूर्तिका शिरोभाग दृष्टिगोचर होता है। पूजन अपर तथा मूलविराटका भी होता है। यहाँ लोगोंकी मान्यता है कि प्रजापति दक्षका यज्ञ यहीं हुआ था, जिसमें सतीने देहोत्सर्ग किया था। यह क्षेत्र इस ओर बहुत प्रख्यात है।

कोटिपल्ली

द्राक्षारामम्से ७ मील दूर समुद्रके किनारे यह तीर्थ है। द्राक्षारामम्से यहाँतक बसें चलती रहती हैं। इस स्थानका वास्तविक नाम कोटिवल्ली-तीर्थ है। यहाँ गोदवरी-सागर-संगम है। इस संगमक्षेत्रमें स्नानका बहुत माहात्म्य पुराणोंमें कहा गया है। इस स्थानपर बाजार है। संगमके पास ही (सोमेश्वर) शिव-मन्दिर है। मन्दिरके पास धर्मशाला भी है। यहाँ स्नान-दर्शन करके फिर द्राक्षारामम् लौटना पड़ता है।

धवलेश्वरम्

द्राक्षारामम्से मोटर-बसके रास्ते २४ मीलपर धवलेश्वरम् है। राजमहेन्द्री यहाँसे केवल ४ मील दूर है। सामलकोटसे धवलेश्वरम् स्टेशन २७ मील दूर है। यहाँ केवल सवारी गाड़ियाँ खड़ी होती हैं। यह अच्छा बाजार है। यहाँ धर्मशाला है।

धवलेश्वरम् गोदावरी नदीके किनारे बसा है। यहाँ गोदावरीकी दो शाखाएँ हो गयी हैं। वस्तुतः धवलेश्वरम्से लेकर राजमहेन्द्रीके गोदावरी स्टेशनके आगेतक यह पूरा सप्तगोदावरी-तीर्थ है; क्योंकि इस क्षेत्रमें गोदावरीकी सात धाराएँ हो जाती हैं। इसे 'रामपादुलु' भी कहते हैं। लङ्का-यात्राके समय श्रीराम यहाँ रुके थे।

गोदावरी-तटके समीप ही एक ऊँचे टीलेपर श्रीजनार्दनस्वामी (भगवान् विष्णु)-का मन्दिर है। इस टीलेके नीचे धवलेश्वर महादेवका मन्दिर है। यहाँ अञ्जनेयस्वामी-मन्दिर, सत्यनारायण-मन्दिर, पाण्डुरङ्ग-मन्दिर एवं श्यामलाम्बा-मन्दिर दर्शनीय हैं।

राजमहेन्द्री

धवलेश्वरम्से केवल ४ मीलपर राजमहेन्द्री स्टेशन है और उससे दो मील आगे गोदावरी स्टेशन है। तीर्थयात्रीके लिये गोदावरी स्टेशनपर उतरना अधिक उपयुक्त है; क्योंकि गोदावरी वहाँसे पास है और दर्शनीय स्थान भी पास है।

राजमहेन्द्री अच्छा बड़ा नगर है। यहाँ नगरमें कई धर्मशालाएँ हैं। गोदावरी स्टेशनके पास ही मारवाड़ी धर्मशाला है।

गोदावरी स्टेशनके पास गोदावरीकी ४ धाराएँ हो गयी हैं। एक धारा और ऊपर पृथक् हुई है तथा दो धाराएँ धवलेश्वरम्के पास हुई हैं। समुद्रमें मिलते समय गोदावरीकी सात धाराएँ हो जाती हैं। इसीलिये गोदावरी स्टेशनसे कोटिपल्लीतकका क्षेत्र सप्तगोदावरी तीर्थ कहलाता है। गोदावरीकी धाराओंके नाम हैं—तुल्यभागा, आत्रेयी, गौतमी, वृद्धगौतमी, भरद्वाजा, कौशिकी और वसिष्ठा।

गोदावरी स्टेशनसे एक मील दूर कोटितीर्थ है। वहाँ शिव-मन्दिर है, जिसमें कोटिलिङ्ग नामक शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित है।

आन्ध्रदेशका सबसे बड़ा मेला उत्तर-भारतके कुम्भ-मेलेके समान बारह वर्षमें एक बार होता है। इसे पुष्कर-महोत्सव कहते हैं। यह मेला कोटिलिङ्ग-क्षेत्रमें ही लगता है। गोदावरीको नौका या स्टीमरसे पार करके उस पार जानेपर गोदावरी-तटपर ही कोटितीर्थ गोदावरीमें है। वहाँ तटपर भगवान् शंकरका मन्दिर है। इस मन्दिरके बाहर महर्षि गौतमकी मूर्ति है। गोदावरी-पार कोव्वूर नामक स्टेशन है। स्टेशनसे यह कोटितीर्थ लगभग एक मील दूर (कुब्बूर बस्तीसे बाहर) है।

कहा जाता है, यहाँ महर्षि गौतमने भगवान् शंकरकी आराधना की थी। यहाँका शिवलिङ्ग उनके द्वारा ही स्थापित एवं आराधित है। राजमहेन्द्री नगरमें कई दर्शनीय मन्दिर हैं। उनमें मार्कण्डेय-घाटपर मार्कण्डेय-मन्दिर, वेणुगोपाल-मन्दिर, जनार्दनस्वामी-मन्दिर विशेषरूपसे दर्शनीय हैं।

भद्राचलम्

राजमहेन्द्रीसे भद्राचलम् लगभग ८० मील है। राजमहेन्द्रीसे स्टीमर जाता है। गोदावरी-तटपर भद्राचलम् अच्छा बाजार है। गोदावरीके किनारे भगवान् श्रीरामका प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर एक परकोटेके भीतर है। मुख्य मन्दिरके आस-पास बीस-पच्चीस छोटे मन्दिर हैं। मुख्य मन्दिरमें श्रीराम, लक्ष्मण, जानकीकी मूर्तियाँ हैं। अन्य मन्दिरोंमें हनुमान्, गणेशादि देवता प्रतिष्ठित हैं। यह मन्दिर विस्तृत है और उसकी निर्माणकला भव्य है। यहाँ रामनवमीपर मेला लगता है। इस मन्दिरको इस ओर बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त है, दूर-दूरके यात्री पहुँचते हैं। इसे संत रामदासने बनवाया था।

विजयवाड़ा

राजमहेन्द्रीसे ९३ मीलपर बेजवाड़ा (विजयवाड़ा) स्टेशन है। विजयवाड़ा एक प्रसिद्ध नगर है। स्टेशनके पास ही श्रीरामदयालजी हैदराबादवालोंकी मारवाड़ी-धर्मशाला है। यह नगर कृष्णानदीके किनारे बसा है। तीर्थकी दृष्टिसे यहाँ कृष्णाका स्नान ही मुख्य है। स्टेशनसे नदीके स्नानका घाट लगभग एक मील दूर है।

कृष्णाके घाटसे थोड़ी ही दूर, पर्वतपर मन्दिर दिखायी पड़ते हैं। यहाँ पर्वतके तीन शिखरोंपर तीन मन्दिर हैं। ये मन्दिर प्राचीन तो नहीं, किन्तु कलापूर्ण हैं। पर्वतपर ऊपर जानेको सीढ़ियाँ बनी हैं। मुख्य मन्दिर कनकदुर्गाका है। दुर्गाजीकी मूर्ति आकर्षक है। कनकदुर्गाके दर्शन करके पर्वतके ऊपरसे ही शिव-मन्दिरमें जानेका मार्ग है। यह मन्दिर भी सुन्दर है। वहाँसे नीचे उतरनेको अलग सीढ़ियोंका मार्ग है। पर्वतके एक अन्य शिखरपर सत्यनारायणभगवान्का मन्दिर है। उसपर चढ़नेकी भी सीढ़ियाँ बनी हैं।

विजयवाड़ेमें एक पर्वतपर पुराना जीर्ण-शीर्ण किला है। उसमें चट्टान काटकर कई बौद्ध-गुफाएँ बनी हैं। विजयवाड़ा नगरके पूर्वोत्तर बड़ी पहाड़ीके पादमूलमें एक छोटी गुफामें गणेशजीकी मूर्ति है। उसके आगे कई कोठरियाँ और एक बड़ा सभा-मण्डप है।

विजयवाड़ामें कृष्णा नदीका पाट चौड़ा है। नदीपर पुल है। कृष्णापार सीतानगर बाजार है। सीतानगरमें भगवान् विष्णुका मन्दिर तथा हनुमान्जीका मन्दिर कृष्णाके पुलके पास ही हैं।

सीतानगरके पश्चिम अंडावली गाँव है। वहाँ पासके पर्वतमें अंडावलीके गुफा-मन्दिर हैं। इनमेंसे एक गुफामें अनन्तस्वामी (भगवान् विष्णु)-की मूर्ति है। एक गुफामें सीता-हरण, श्रीरामद्वारा सीतान्वेषण तथा रावणवधकी मूर्तियाँ बनी हैं।

पना-नृसिंह

मसुलीपटम्-बेजवाड़ा-हुबली लाइनमें बेजवाड़ासे ७ मीलपर मङ्गलगिरि स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग आध मील दूर नगरमें लक्ष्मीनृसिंहका मन्दिर है। इसे भोगनृसिंह-मन्दिर भी कहते हैं। मन्दिर विशाल है। मन्दिरोंमें गोपुर बनानेकी दक्षिण भारतकी परम्परा यहाँसे प्रारम्भ हो जाती है। यहाँ मन्दिरमें मूर्तितक जानेके लिये निश्चित शुल्क देना पड़ता है।

लक्ष्मीनृसिंहके मन्दिरके पाससे ही पर्वतपर जानेको सीढ़ियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं। ४४८ सीढ़ी चढ़नेपर ऊपर पनानृसिंह-मन्दिर मिलता है। पना (पानक)-का अर्थ है शर्बत। पना-नृसिंहका अर्थ होता है शर्बत पीनेवाले नृसिंहभगवान्। ऊपर कोई दूकान नहीं है। वहाँ शर्बत बनानेके लिये जलका भी मूल्य देना पड़ता है; क्योंकि जल नीचेसे ही आता है। ऊपर कोई सामग्री नहीं मिलती। गुड़ या चीनी तथा पूजाके लिये नारियल, धूपबत्ती, पुष्पादि नीचेसे ही ले जाना चाहिये। कुछ लोग जल भी स्वयं नीचेसे ले जाते हैं। मन्दिरमें दर्शनके लिये दो पैसे और पूजनके लिये छः आने शुल्क देना पड़ता है।

मन्दिरमें एक भित्तिमें भगवान् नृसिंहका धातुमुख

बना है। कहते हैं, मुखके भीतर शालग्राम-शिला है। पुजारी शङ्खसे नृसिंहभगवान्‌को शर्बत पिलाता है। आधा शर्बत वह पिला देता है और आधा प्रसादरूपमें छोड़ देता है। प्रसाद छोड़नेके लिये वह इस ढंगसे मूर्तिके मुखमें शर्बत डालता है कि शर्बत भीतरके शालग्रामसे लगकर बाहर आने लगता है। पुजारी कहता है— 'भगवान् आधा ही पीते हैं।' पूरे मन्दिरमें चारों ओर भूमिमें शर्बतका चीकट फैला रहता है, किन्तु वहाँ मक्खी या चींटी कहीं दीखती नहीं, यह चमत्कार ही है। कहते हैं भगवान् विष्णु हिरण्यकशिपु दैत्यको मारकर यहाँ स्थित हुए थे। माघमें कृष्णपक्षकी एकादशीसे पूर्णिमातक विशेष समारोह होता है।

मङ्गलगिरिसे १३ मीलपर गुंटूर नगर है। यहाँ श्रीरामनाम क्षेत्रम् प्रसिद्ध स्थान है।

वारंगल (एकशिला नगरी)

(लेखक—श्रीमगनलालजी समेजा)

मध्य-रेलवेकी वाड़ी-बेजवाड़ा लाइनपर काजीपेटसे ६ मील दूर वारंगल स्टेशन है। यह एक बड़ा नगर है। इस वारंगल नगरका प्राचीन नाम एकशिला नगरी है।

नगरमें अनेकों मन्दिर हैं, जिनमें मुख्य हैं— सहस्रस्तम्भ-मन्दिर, पद्माक्षी-मन्दिर, सिद्धेश्वर-मन्दिर और भद्रकाली-मन्दिर।

भद्राकाली-मन्दिर सबसे प्राचीन है। यह एक छोटे पर्वतपर स्थित है। नगरसे यह एक मील दूर है। मन्दिरके पास यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। कहा जाता है कि सम्राट् हर्षवर्धनने यहाँ भद्राकाली देवीकी अर्चना की थी। मन्दिरके पास बहुत बड़ा सरोवर है। उसे भद्री-सरोवर कहते हैं।

भद्राकाली देवीका मन्दिर विशाल है। मन्दिरमें भद्रकाली देवीकी बैठी हुई मूर्ति है, यह प्रतिमा नौ फुट ऊँची और नौ ही फुट चौड़ी है। अष्टभुजा देवीकी ऐसी विशाल मूर्ति देशमें कदाचित् कहीं नहीं है। देवी एक राक्षसके ऊपर बैठी हैं। उनका वाम चरण नीचे लटका है। यह मूर्ति काकतीय राजवंशकी इष्टदेवी रही हैं। प्राचीन भद्राकाली-मन्दिरका अब जीर्णोद्धार हो गया है। यहाँ भद्रकाली-मन्दिरके पास एक शिव-मन्दिर भी बन गया है।

कोटाप्पाकोंडा

मसुलीपटम्-हुबली लाइनपर गुंटूरसे २८ मील दूर नरसारावुपेट स्टेशन है। वहाँसे आठ मीलपर कोटाप्पाकोंडा एक गाँव है। गाँवके पास छोटी पहाड़ी है, जिसके ऊपर एक सुन्दर शिव-मन्दिर है। महाशिवरात्रिपर यहाँ कई सहस्र यात्री एकत्र होते हैं।

कीर-पंढरपुर

(लेखक—श्रीवेङ्कटरत्न गारु)

दक्षिण-रेलवेकी हुबली-वेजवाड़ा-मसुलीपटम् लाइनपर मसुलीपटम्‌से ३ मील दूर चीकलकलापुडि स्टेशन है। यह स्टेशन मसुलीपटम्‌का ही अंश है। यहाँ बेजवाड़ासे मोटर-बस भी चलती है। इसी चीकलकलापुडिमें स्टेशनसे लगभग आध मील दूर समुद्रतटपर कीर-पंढरपुर क्षेत्र है।

कीर-पंढरपुरमें एक भक्त नरसिंहदासजी हो चुके हैं। उनकी भक्तिसे प्रसन्न होकर वहाँ श्रीपंढरीनाथ (पाण्डुरङ्ग) श्रीविग्रहरूपमें स्वयं प्रकट हुए। महाराष्ट्रके प्रसिद्ध धाम पंढरपुरके समान ही यहाँ श्रीपाण्डुरंग (विट्ठल)-का मन्दिर है और उसमें पंढरपुरके समान ही कटिपर हाथ रखे श्रीविट्ठल खड़े हैं। उसी वेशमें रुक्मिणीजीकी भी मूर्ति है। यहाँ भी दर्शनार्थी भगवान्‌के श्रीचरणोंपर मस्तक रखते हैं। आषाढ़शुक्ला दशमीसे पूर्णिमातक और कार्तिकशुक्ला दशमीसे पूर्णिमातक यहाँ महोत्सव होता है। यात्रियोंके ठहरनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं।

यहाँका पाण्डुरङ्ग-मन्दिर विशाल है। मुख्य मन्दिरके

श्रीकुक्कुटेश्वर शिव-मन्दिर, पीठापुरम्
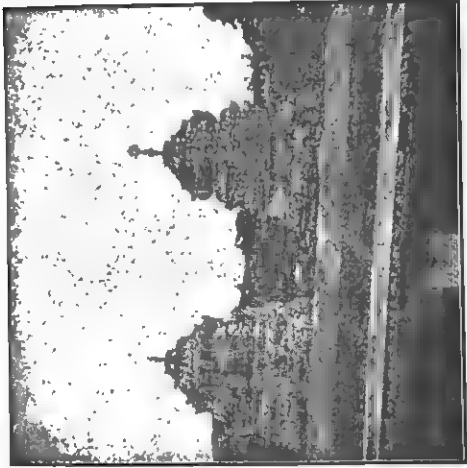
श्रीकोटिलिङ्ग-मन्दिर, गोदावरी
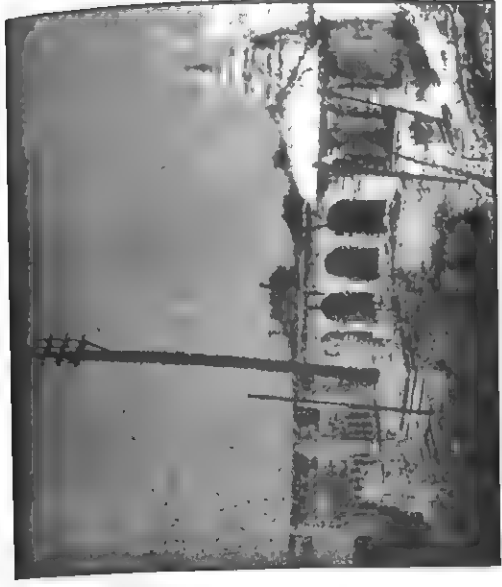
श्रीजनार्दनस्वामी-मन्दिर, राजमहेन्द्री

श्रीमार्कण्डेश्वर-मन्दिर, राजमहेन्द्री
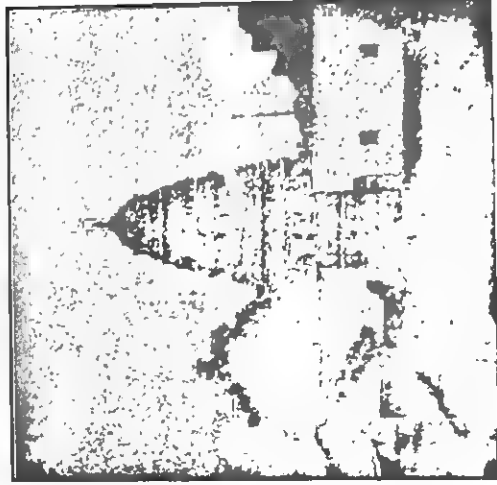
कनकदुर्गाके पासका शिव-मन्दिर, विजयवाड़ा
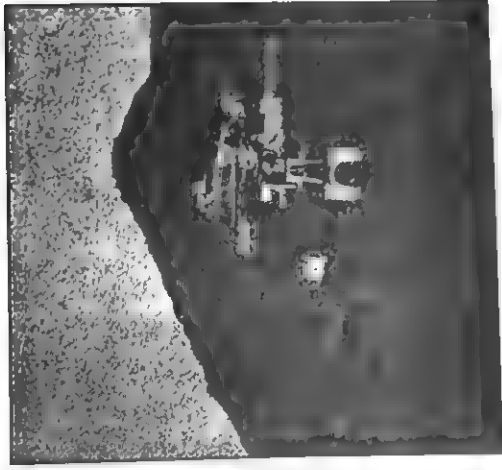
श्रीपनानृसिंह-मन्दिर, मङ्गलगिरि

636 Tirthank_Section_16_1_Front

दक्षिण भारतके कुछ मन्दिर—८
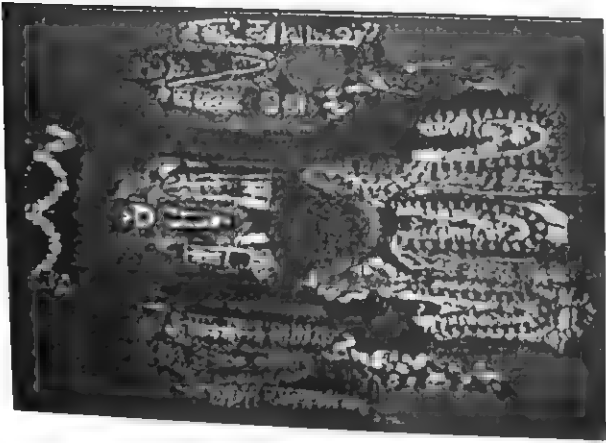
श्रीकोदण्डराम स्वामी,
श्रीराम-नाम-क्षेत्रम्, गुंटूर

श्रीशिव-पार्वती-मूर्ति तथा श्रीभद्रेश्वर
जललिङ्ग, एकशिलानगरी

श्रीभद्रकाली देवी, एकशिलानगरी
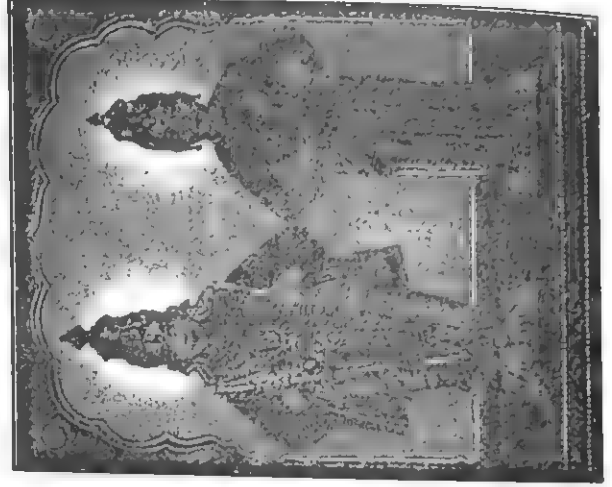
(विट्ठल)-मन्दिर, कीर पंढरपुर

श्रीविट्ठल-रुक्मिणी, कीर पंढरपुर

चन्द्रभागा-सरोवर, कीर पंढरपुर

636 Tirthank Section 16_1_B

चारों ओर प्रसिद्ध संतों एवं देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। उनके एक सौ आठ छोटे मन्दिर ही बने हैं। इन मन्दिरोंके कारण यह क्षेत्र देवधानी बन गया है। मन्दिरके पास ही चन्द्रभागा-सरोवर है। उसमें स्नान करना चन्द्रभागा-स्नानके समान ही पुण्यप्रद माना जाता है।

दक्षिण-भारतमें भक्त नरसिंहदासजीकी भक्ति एवं उत्कण्ठासे यह दूसरा पंढरपुर धाम ही व्यक्त हो गया है।

सत्यपुरी तारकेश्वर

(लेखक—श्रीरमणदासजी)

यह स्थान बेजवाड़ा-मद्रास लाइनके पडुगुपाडु स्टेशनके समीप है। पडुगुपाडु या नेल्लोर स्टेशनपर उतरकर वहाँसे गाड़ीसे सत्यानन्दाश्रम जाना चाहिये। सत्यानन्द-आश्रम तो नवीन है; किन्तु कहा जाता है कि वहाँ जो भगवान् शङ्करकी लिङ्गमूर्ति स्थापित है, वह प्राचीन है। इस मूर्तिको तारकेश्वर या तारकनाथ कहा जाता है। यह मूर्ति पश्चिम-गोदावरी जिलेके ठंगटूरसे लाकर यहाँ स्थापित की गयी है।

नेल्लोर

मद्रास-बेजवाड़ा लाइनपर गूडूरुसे २४ मील दूर नेल्लोर स्टेशन है। नेल्लोर नगरके दक्षिण एक विस्तृत सरोवर है। सरोवरके समीप भगवान् नृसिंहका मन्दिर है।

नेल्लोरसे १० मीलपर वचीरेडीपालम् कस्बा है। वहाँ कोदण्डराम-मन्दिर है। प्रतिवर्ष चैत्र-रामनवमीपर वहाँ मेला होता है।

नेल्लोर जिलेके कवाली तालुकेमें चित्रघण्टा गाँव है। वहाँ वेङ्कटेश स्वामी (भगवान् विष्णु)-का मन्दिर है।

इसी जिलेके भीमावरम् गाँवके पास एक पहाड़ीपर भगवान् नृसिंहका मन्दिर है; कहते हैं यह मन्दिर महर्षि अगस्त्यद्वारा स्थापित है। वहीं पहाड़ीपर एक गुफा है, जिसका मुख एक बड़ी मूर्तिसे बंद है। यहाँ भी चैत्र नवरात्रमें मेला लगता है।

नेल्लोरसे इन सभी स्थानोंको बसद्वारा जा सकते हैं।

सिंगरायकोंडा

मद्रास-वाल्टेयर लाइनपर मद्राससे १६४ मील दूर सिंगरायकोंडा स्टेशन है। समुद्र-तटसे यह स्थान ४ मील है। स्टेशनके पास ही धर्मशाला है। यहाँ भगवान् नृसिंह और भगवान् वाराहका मन्दिर है। चैत्र-वैशाखमें महोत्सवके समय यहाँ बड़ा मेला लगता है।

बित्रगुंटा

मद्रास-वाल्टेयर लाइनपर मद्राससे ३३१ मील दूर यह स्टेशन है। यहाँसे लगभग तीन मील दूर पर्वत-शिखरपर श्रीवेङ्कटेश्वरका मन्दिर है। स्टेशनसे मन्दिरतक जानेके लिये सवारियाँ मिलती हैं। पर्वतपर चढ़नेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं; किन्तु यहाँ रात्रिमें रहनेकी सुविधा नहीं है। इस मन्दिरके ब्रह्मोत्सवके समय यहाँ अच्छा मेला लगता है।

पोन्नेरी

मद्रास-वाल्टेयर लाइनपर मद्राससे २२ मील दूर यह स्टेशन है। यहाँ एक भगवान् विष्णुका और एक शंकरजीका मन्दिर है। दोनों ही मन्दिर विशाल हैं। वैशाखमें विष्णु-मन्दिरका महोत्सव दस दिन चलता रहता है। श्रावण, माघ तथा महाशिवरात्रिपर शिव-मन्दिरके महोत्सव होते हैं।

636 Tirthank_Section_16_2_Front

मद्रास

भारतके प्रमुख नगरोंमें यह महानगर है। इस महानगरका परिचय देना आवश्यक नहीं है। भारतकी सभी दिशाओंसे रेलगाड़ियाँ यहाँ आती हैं। जो उत्तर-भारतीय यात्री मद्रास होते हुए दक्षिण-भारतकी यात्रा करने जाते हैं, वे प्रायः यहाँ रुकते भी हैं। मद्राससे पक्षितीर्थ, काञ्ची, तिरुवल्लूर, भूतपुरी, कालहस्ती, तिरुपति आदिके लिये मोटर-बसें भी जाती हैं।

मद्रासके त्यागरायनगरमें 'दक्षिण-भारत हिंदी-प्रचार-सभाका' मुख्य कार्यालय है। यह संस्था दक्षिण-भारतमें हिंदी-प्रचारका कार्य बड़ी तत्परतासे कर रही है। संस्थाका प्रधान कार्यालय देखनेयोग्य है। यदि कोई चाहे तो संस्था उसके लिये दक्षिण-भारतकी यात्रामें दुभाषियेका प्रबन्ध सामान्य व्ययमें कर देती है।

ठहरनेके स्थान

अन्य महानगरोंके समान मद्रासमें भी ठहरनेकी व्यवस्था स्थान-स्थानपर है। अनेकों धर्मशालाएँ हैं। कुछ अच्छी धर्मशालाओंके नाम दिये जा रहे हैं १-राम स्वामी मुदालियरकी धर्मशाला, पार्क स्टेशनके सामने। २-सेठ बंशीलाल अबीरचंदकी, साहुकार-पेठ। ३-परमानन्द छोटादासकी, स्टेशनके पास। ४-दिगम्बर जैन धर्मशाला, सुब्रह्मण्य मुदालियर स्ट्रीट, चङ्गा बाजार।

देव-मन्दिर

मद्रासमें बहुत अधिक देव-मन्दिर हैं। प्रायः प्रत्येक मुहल्लेमें एक-दो मन्दिर हैं। मुख्य मन्दिरोंका परिचय ही दिया जा सकता है।

बालाजी—मद्रासका यह प्रसिद्ध मन्दिर है। साहुकार-पेठके समीप ही यह मन्दिर है। मन्दिर बहुत विशाल नहीं है, किन्तु सुन्दर है। मन्दिरमें बाहरकी ओर श्रीराम-लक्ष्मण-जानकी, राधा-कृष्ण तथा श्रीलक्ष्मी-नारायणके श्रीविग्रह हैं। भीतरी भागकी परिक्रमामें श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर है। परिक्रमामें ही उत्सवके समयके सुनहले वाहन हैं तथा एक छोटे-से मन्दिरमें नृसिंहजीकी मूर्ति है। भीतर निज-मन्दिरमें भगवान् वेङ्कटेश्वर (बालाजी)-की मूर्ति है। भगवान्के दोनों ओर श्रीदेवी तथा भूदेवी हैं।

अम्बाजी—बालाजीसे कुछ दूरीपर साहुकार-पेठमें 'चेनाम्बा' का मन्दिर है। इनको मद्रासपुरीकी रक्षिका माना जाता है।

शिव-मन्दिर—अम्बाजीके मन्दिरसे कुछ ही दूरीपर एक साधारण-सा मन्दिर है। उसमें भगवान् शंकरकी लिङ्गमूर्ति है। मन्दिरमें ही पार्वतीजीकी मूर्ति अलग मन्दिरमें है। नवग्रह, शिवभक्त-गण, गणेशजी आदि देवताओंकी मूर्तियाँ भी जगमोहन तथा परिक्रमामें हैं।

साधारण दीखनेपर भी यह मन्दिर बहुत मान्यता-प्राप्त है। यहाँ प्रत्येक अतिथिको तीन समय बिना मूल्य भोजन दिया जाता है। यह मन्दिर बहुत प्राचीन है। कहते हैं राजा विक्रमादित्यपर जब शनिकी दशा आयी थी, तब यहाँ आकर उन्होंने देवाराधन करके ग्रहशान्ति करायी थी। इस मन्दिरके देव-विग्रह उन्हींके द्वारा प्रतिष्ठित हैं।

सुब्रह्मण्यम्—प्लावरमार्केट (पुण्यबाजार) में स्वामि-कार्तिकका यह मन्दिर सुन्दर है।

पार्थसारथि—मद्रासका सर्वश्रेष्ठ मन्दिर यही है। यह मन्दिर ट्रिप्लीकेनके समीप है। मन्दिरके पास एक विस्तृत सरोवर है। मन्दिर विशाल है। गोपुरसे भीतर जानेपर एक स्वर्णजटित स्तम्भ मिलता है। यहाँ भीतर निजमन्दिरमें भगवान् पार्थसारथि (श्रीकृष्ण)-की मूर्ति है। मूर्ति पर्याप्त ऊँची है। साथमें रुक्मिणी, बलराम, सात्यकि, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्धकी भी मूर्तियाँ हैं। इनके अतिरिक्त इस मन्दिरमें भगवान् नृसिंह तथा बालाजीकी भी मूर्तियाँ हैं। समीप ही एक मन्दिरमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीजीके श्रीविग्रह हैं।

कपालीश्वर—मेइलापुर मुहल्लेमें यह मन्दिर है। मन्दिरके सम्मुख एक सुविस्तृत सरोवर है। यहाँ प्रधान मन्दिरमें कपालीश्वर शिव-लिङ्ग प्रतिष्ठित है। मन्दिरमें ही पार्वतीजी तथा सुब्रह्मण्य स्वामीके पृथक्-पृथक् मन्दिर हैं। मुख्य-मन्दिरकी परिक्रमामें सुब्रह्मण्य, पार्वती, नटराज, नायनार (शिवभक्तगण), गणेश, दक्षिणामूर्ति आदिके दर्शन हैं। बाहरी परिक्रमामें एक छोटे-से मन्दिरमें मयूरेश्वर-लिङ्ग है, वहाँ मयूरीके रूपमें पार्वतीजी भगवान् शंकरकी आराधना करती दिखायी गयी हैं।

अडियार—मद्राससे १४ मील दूर आडियार नदीके उस पार यह स्थान है। एक पुलके द्वारा उसपर जाया जाता है। यहाँ थियासाफिकल सोसायटीका प्रधान केन्द्र

636 Tirthank_Section_16_2_Back

है। हालमें श्रीकृष्ण, जरथुस्त्र, गौतमबुद्ध एवं ईसामसीहकी सुन्दर मूर्तियाँ हैं। एक दूसरे हालमें सोसायटीका बृहत् पुस्तकालय है। उसीमें एक ओर भगवान् शिव एवं गणेशजीके सुन्दर चित्र हैं। यहाँ एक प्रकाशन-मन्दिर भी है, जहाँसे कई प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों—उपनिषद् आदिके शुद्ध एवं सुन्दर संस्करण निकले हैं।

तिरुवत्तियूर

मद्राससे लगभग ८ मील दूर यह छोटा-सा कस्बा है। वैसे मद्रासका इसे उपनगर ही कहना चाहिये। मद्राससे यहाँ मोटर-बस आती है। अन्य सवारियाँ भी आनेके लिये मिलती हैं।

यहाँ आदिपुरीश्वर शिव-मन्दिर बहुत प्राचीन है। कहा जाता है मद्रास नगरके बसनेसे भी पूर्वका यह मन्दिर है। यहाँ एक स्थानपर मन्दिरकी भित्तिसे कान लगानेपर एक प्रकारकी ध्वनि सुनायी पड़ती है। लोगोंका विश्वास है कोई ऋषि यहाँ सहस्रों वर्षसे अलक्षित रहते हुए तप कर रहे हैं। यह उन्हींके मुखसे निकलती प्रणव-जपकी ध्वनि है।

मन्दिरका घेरा विशाल है। घेरेके मध्यमें श्रीआदिपुरीश्वरका मन्दिर है। इसमें आदिपुरीश्वर शिव-लिङ्ग स्थापित है। घेरेके भीतर ही त्यागराज एवं काशी-विश्वनाथके सुन्दर मन्दिर हैं। घेरेके भीतर ही द्वारके समीप त्रिपुरसुन्दरी देवीका भव्य मन्दिर है। त्रिपुरसुन्दरी-भगवतीकी मूर्ति अत्यन्त प्रभावोत्पादक है।

तिरुवल्लूर

(लेखक—स्वामीजी श्रीराघवाचार्यजी)

मद्रास-अरकोणम् लाइनपर मद्राससे २६ मील दूर त्रिवेल्लोर स्टेशन है। यहाँ मद्रास प्रदेशका सबसे विशाल मन्दिर श्रीवरदराज-मन्दिर है। यहाँ भगवान्का नाम श्रीवीरराघव है। मन्दिर तीन परकोटोंके भीतर है। भीतरी परकोटेमें निज-मन्दिर है, जिसमें श्रीवीरराघव प्रभुकी शेषशायी श्रीमूर्ति है। भगवान्का श्रीमुख पूर्वकी ओर, मस्तक दक्षिण तथा चरण उत्तर ओर हैं। भगवान्का दाहिना हाथ महर्षि शालिहोत्रके मस्तकपर स्थित है। मन्दिरमें ही श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर है, जिन्हें कनकवल्ली या वसुमती कहते हैं।

इस क्षेत्रको पुण्यावर्त क्षेत्र कहते हैं। यहाँ मन्दिरके पास जो सरोवर है, उसका नाम हत्तापनाशन तीर्थ है। इस सरोवरके समीप शङ्करजीका विशाल मन्दिर है। यह मन्दिर भी तीन परकोटोंका है। सबसे भीतर निजमन्दिरमें लिङ्गमूर्ति है। इस मन्दिरमें ही अलग पार्वती-मन्दिर है।

कथा

सृष्टिके प्रारम्भमें मधु-कैटभ नामके दैत्य यहाँके वीक्षारण्यमें छिपे थे। यहीं भगवान् नारायणने उनका अपने चक्रसे संहार किया। सत्ययुगमें शालिहोत्र नामक ब्राह्मणने एक वर्ष उपवास करके तपस्या की। पारणके दिन वे कुछ शालि-कणोंको चुनकर नैवेद्य बनाकर भगवान्को भोग लगाकर जब प्रसाद ग्रहण करनेको उद्यत हुए, तब स्वयं श्रीहरि ब्राह्मणवेशमें उनके यहाँ अतिथि होकर पधारे। शालिहोत्रने पूरा अन्न अतिथिको अर्पित कर दिया। भोजनसे तृप्त होकर विश्रामके लिये अतिथिने पूछा '**किं गृहम्**' शालिहोत्रने अपनी कुटियाकी ओर संकेत कर दिया। अतिथि कुटियामें चले गये; लेकिन जब शालिहोत्र कुटियामें गये, तब उन्हें साक्षात् शेषशायी श्रीहरिके दर्शन हुए। वरदान माँगनेको कहनेपर शालिहोत्रने प्रभुसे वहीं उसी रूपमें नित्य स्थित रहनेका वरदान माँगा। तदनुसार उसी रूपमें श्रीविग्रहरूपसे प्रभु अब भी स्थित हैं।

वीक्षारण्यनरेश धर्मसेनके यहाँ साक्षात् लक्ष्मीजीने उनकी कन्याके रूपमें अवतार धारण किया। महाराजने पुत्रीका नाम वसुमती रखा था। वसुमतीके विवाहयोग्य होनेपर भगवान् वीरराघव राजकुमारके वेशमें राजा धर्मसेनके यहाँ पधारे। राजकुमारके प्रस्ताव करनेपर नरेशने उनसे अपनी कन्याका विवाह कर दिया। विवाहके पश्चात् जब वर-वधू भगवान् वीरराघवके मन्दिरमें दर्शनार्थ लाये गये, तब दोनों अपने श्रीविग्रहोंमें लीन हो गये। पौषमासके भाद्रपद नक्षत्रमें तिरुकल्याणोत्सव

इस विवाहके मङ्गल-स्मरणमें ही होता है। भगवान् इस समय मक्षिकावन पधारते हैं, जहाँ महाराज धर्मसेनकी राजधानी धर्मसेनपुर नगरी थी।

सत्ययुगमें प्रद्युम्न नामक राजाने संतान-प्राप्तिके लिये इस क्षेत्रमें दीर्घकालतक तपस्या की। उन्हें भगवद्दर्शन हुए। नरेशने भगवान्से वरदान माँगा कि 'यह पुण्यक्षेत्र हो।' उसी समय यहाँ हत्तापनाशन-तीर्थ व्यक्त हुआ। उसमें पौषकी अमावास्याका स्नान महामहिमाशाली है।

दक्ष-यज्ञ-विध्वंस करके दक्षको वीरभद्रद्वारा मरवा देनेसे शङ्करजीको ब्रह्महत्या लगी। उस ब्रह्महत्यासे छुटकारेके लिये शङ्करजीने हत्तापनाशन तीर्थमें स्नान किया; तभीसे इस तीर्थके वायव्यकोणमें तीर्थेश्वररूपसे शिवजी स्थित हैं।

भूतपुरी

त्रिवेल्लोर स्टेशनसे ११ मील दक्षिण भूतपुरी नामकी बस्ती है। इसका वहाँका नाम है 'श्रीपेरुम्भुदूर'। यह श्रीरामानुजाचार्यकी जन्मभूमि है। यहाँ अनन्त-सरोवरके समीप श्रीरामानुज स्वामीका विशाल मन्दिर है। मन्दिरमें श्रीरामानुज स्वामीकी मूर्ति दक्षिण-मुख विराजमान है।

भूतपुरीमें ही दूसरा मन्दिर केशवभगवान्का है। इसमें भगवान् नारायणकी शेषशायी मूर्ति है। इनके अतिरिक्त श्रीलक्ष्मीजी तथा श्रीरामके भी अलग-अलग मन्दिर हैं।

वहाँसे थोड़ी दूरीपर भूतेश्वर महादेवका मन्दिर है। यह मन्दिर छोटा है, किंतु बहुत प्राचीन है।

कथा—सृष्टिके प्रारम्भमें भगवान् शङ्कर अपने शरीरमें भस्म लगाकर नृत्य कर रहे थे। उस समय उनके कुछ पार्षद भूतगण हँस पड़े। उनके अविनयसे क्रुद्ध होकर शङ्करजीने उन्हें अपने पार्षदत्वसे पृथक् कर दिया। वे भूतगण दुःखी होकर ब्रह्माजीके पास गये। ब्रह्माजीने उन्हें वेङ्कटगिरिसे दक्षिण सत्यव्रत-तीर्थमें केशवभगवान्की आराधना करनेका आदेश दिया। भूतगणोंने आज्ञा-पालन किया। उन्होंने सहस्र वर्षतक आराधना की। भगवान् केशवने उन्हें दर्शन दिया। भगवान्के अनुरोधपर शङ्करजीने उन्हें पुनः स्वीकार किया।

भगवान् केशवके आदेशपर अनन्तभगवान्ने यहाँ अनन्त-सरोवर प्रस्तुत किया। उसमें स्नान करके भूतगणोंने भगवान् शङ्करकी प्रदक्षिणा की। उसी समयसे इस सत्यव्रत तीर्थका नाम भूतपुरी हो गया।

जिंजी

यह नगर आरकाट जिलेके दक्षिण भागमें मद्रास-धनुष्-कोटि लाइनपर मद्राससे ७६ मील दूर तिंडिवनम् स्टेशनसे २० मील पश्चिम है। यों तो इस पूरे नगरकी ही बड़ी सुदृढ़ किलेबंदी की गयी है, पर दुर्ग तो अत्यन्त सुदृढ़ है। इसका गौरव प्राचीन गाथाओंमें भरा पड़ा है।

इस दुर्गके नीचे ७ टीले हैं, उनमेंसे राजगिरि, श्रीकृष्णगिरि तथा चान्द्रायणदुर्ग—ये तीन पहाड़ियाँ प्रमुख हैं। राजगिरिके दुर्गमें रंगनाथ-मन्दिर मुख्य है। दुर्गके अंदर श्रीविष्णुगोपाल-मन्दिरमें भगवान् श्रीकृष्णकी विभिन्न भावमयी अनेक प्रतिमाएँ हैं। उनकी कला देखते ही बनती है। श्रीवेङ्कटरमण-मन्दिरके दीवालोंपर रामायणकी घटनाओं तथा दशावतारका सुन्दर चित्रण है। पट्टाभिराम स्वामीके मन्दिरकी भी चित्रकला बड़ी सुन्दर है। परम्पराओंके आधारपर यह दुर्ग तथा मन्दिर काशिराज सूरशर्माके बनाये कहे जाते हैं। कहा जाता है कि वे तीर्थयात्राकी दृष्टिसे दक्षिणभारत आये थे। इधर आनेपर उनकी इच्छा यहीं बस जानेकी हुई और फिर उन्होंने इन मन्दिरों तथा दुर्गका निर्माण कराया। नगरकी स्थापना कजीवरम्-निवासी तुपक्कल कृष्णापाके द्वारा हुई कही जाती है।

दक्षिण भारतके कुछ मन्दिर—९
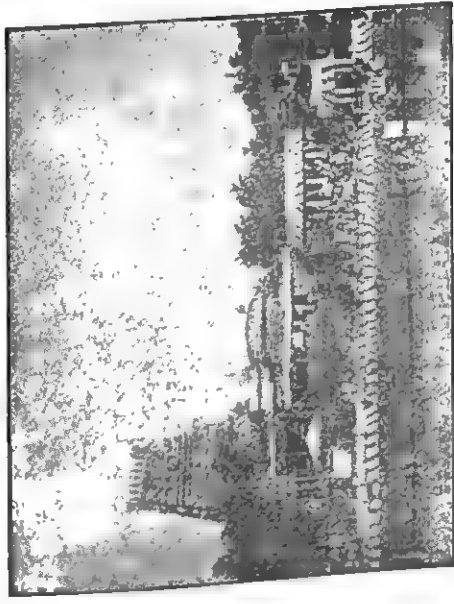
श्रीपार्थसारथि-मन्दिर, ट्रिप्लिकेन, मद्रास
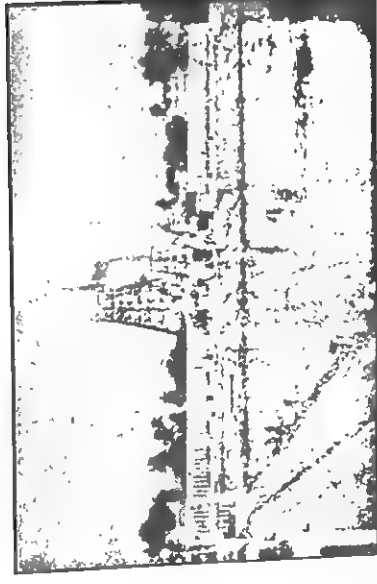
श्रीकपालीश्वर-मन्दिर और उसका सरोवर, मद्रास

श्रीआदिपुरीश्वर-मन्दिर, तरुवत्तियर
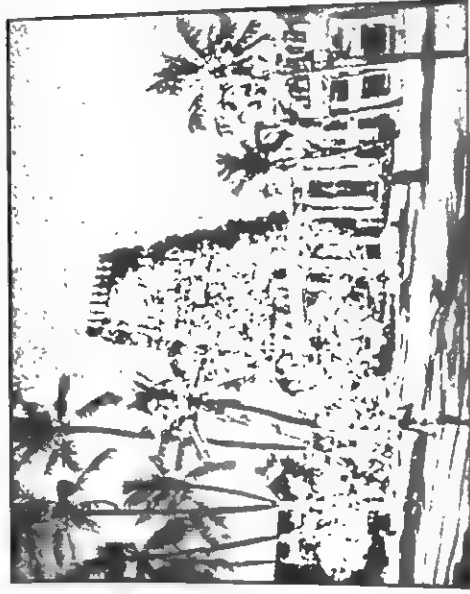
श्रीरामानुजस्वामी-मन्दिर, पेरुम्भुदूर
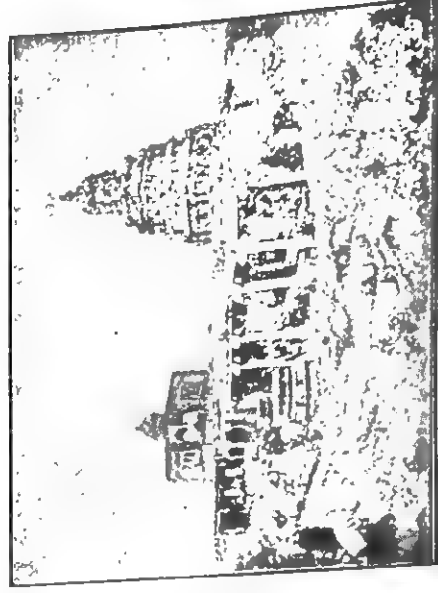
कृष्णगिरि पर्वतपर श्रीरंगनाथ-मन्दिर, जिञ्जी
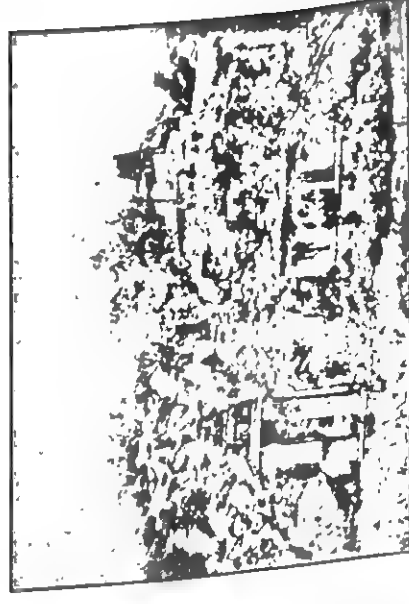
श्रीरंगनाथ-मन्दिर, सिंगावरम् (जिञ्जी)

वे किसीको दर्शन देने नहीं आते। पुजारी लोगोंको इन पक्षियोंको नैवेद्य लगानेके लिये प्रेरित करता है और उसके लिये दक्षिणा लेता है। जिन लोगोंकी नैवेद्य लगानेको दक्षिणा दी हुई होती है, उन्हें पक्षियोंके जानेपर उनका उच्छिष्ट प्रसाद देता है; किन्तु इन गंदे पक्षियोंकी जूठन लेना कदापि उचित नहीं है।

कहा जाता है कि भगवान् शङ्करकी आज्ञासे नन्दीश्वरने कैलासके तीन शिखरोंको पृथ्वीपर स्थापित किया। उनमें एक श्रीशैल, दूसरा कालहस्तीमें और तीसरा यह वेदगिरि है। इन तीनों पर्वतोंपर भगवान् शङ्कर नित्य निवास करते हैं।

यहाँ करोड़ रुद्रोंने भगवान् शिवकी पूजा की है तथा अनेक ऋषि, मुनि एवं देवताओंने तपस्या की है। नन्दीने भी यहाँ तप किया है। यहाँ वेदाचलके पूर्वमें इन्द्रतीर्थ, अग्निकोणमें रुद्रकोटि-तीर्थ, दक्षिणमें वसिष्ठतीर्थ, नैर्ऋत्यकोणमें अगस्त्यतीर्थ, मार्कण्डेयतीर्थ तथा विश्वामित्रतीर्थ, पश्चिममें नन्दीतीर्थ, वरुणतीर्थ और पश्चिमोत्तरमें अकलिकातीर्थ है।

महाबलीपुरम्

पक्षितीर्थसे ९ मील दूर, समुद्र-किनारे यह प्रसिद्ध स्थान है। पक्षितीर्थसे बसें महाबलीपुरम्तक जाती तथा फिर चेंगलपट लौटती हैं।

महाबलीपुरम्के गुफा-मन्दिरोंका क्षेत्र ४ मीलतक फैला हुआ है। एक गाँवके पास पत्थर काटकर लंगूरके समान बंदरोंका एक समूह बनाया गया है। वहाँसे समुद्रकी ओर एक धर्मशाला है। उसके पास ही दुर्गाजीकी मूर्ति है। उनके पास सात और देवी-मूर्तियाँ हैं। वहाँसे थोड़ी दूरपर एक साढ़े चार फुट ऊँचा शिवलिङ्ग है, जिसमें नक्काशी की हुई है। उस लिङ्गमूर्तिसे कुछ गजपर नन्दीकी मूर्ति है।

इसी मार्गसे लगभग सवा मील जानेपर समुद्र-किनारे मन्दिर मिलता है, यह शिव-मन्दिर है। मन्दिरके द्वारपर शिव-पार्वतीकी युगल मूर्ति बनी है। एक दीवारमें एक अष्टभुज मूर्ति है। मन्दिरका द्वार समुद्रकी ओर है। मन्दिरके पश्चिमद्वारमें ११ फुट ऊँची विष्णुभगवान्की मूर्ति है। यहाँ कई मन्दिर थे, जो समुद्रके गर्भमें चले गये।

इस मन्दिरसे पश्चिम एक मण्डप है। उसके दक्षिण एक सुन्दर सरोवर है। सरोवरके बीचमें भी एक मण्डप है।

इस स्थानसे पश्चिमोत्तर लगभग १ मीलपर वाराह-स्वामीका मण्डप है। इसमें हिरण्याक्ष दैत्यके ऊपर अपना एक चरण रखे वाराहभगवान् खड़े हैं। सामनेकी दीवारमें भगवान् वामन (त्रिविक्रम)-की विशाल मूर्ति है। भगवान्का एक चरण ऊपर उठा है स्वर्गादि नापनेके लिये। दोनों चरणोंके पास बहुत-सी देवमूर्तियाँ बनी हैं। यहाँ भित्तियोंमें गङ्गा, लक्ष्मी, भगवान् विष्णु आदिकी मूर्तियाँ हैं।

इस स्थानसे उत्तर गणेशजीका गुफा-मन्दिर है। वहाँसे दक्षिण-पूर्व जानेपर एक ऊँची चट्टान मिलती है। उसे लोग अर्जुनकी तपोभूमि कहते हैं। वहाँसे दाहिने कमरेमें हाथीके ऊपर सवार स्त्री-पुरुषकी मूर्ति तथा बहुत-से बंदरोंकी मूर्तियाँ हैं। बायें कमरेमें बहुत-सी मूर्तियाँ हैं। उनमें एक मूर्ति अर्जुनकी कही जाती है।

इस मन्दिरके पास एक छोटा मन्दिर है। उसके आगे विष्णुकी एक मूर्ति है। उसके पूर्व थोड़ी चढ़ाईपर रमणजीका मन्दिर है।

इस स्थानसे डेढ़ मीलपर समुद्रकी ओर विमान नामक मन्दिरोंका एक समूह है। यहाँ द्रौपदी, अर्जुन, भीम और धर्मराजके मन्दिर हैं। वहाँसे पौन मील दूर एक चट्टानपर दुर्गादेवीका मन्दिर है। इसमें महिषमर्दिनी सिंहारूढ़ा देवीकी मूर्ति है। पासमें भगवान् विष्णुकी मूर्ति भी है। इस मन्दिरसे लगभग ५६ फुट ऊपर कठिन चढ़ाईपर एक छोटा-सा मन्दिर है।

महाबलीपुरम्के मन्दिर वहींकी चट्टान काटकर बनाये गये हैं। समुद्री वायुसे इनके पत्थर बहुत कुछ खराब हो चुके हैं। ये मन्दिर पल्लववंशके नरेशोंद्वारा बनवाये गये हैं। यहाँ मन्दिरोंको दिखाने और उनका परिचय बतानेवाले दिग्दर्शक (गाइड) मिल जाते हैं और थोड़े पैसोंमें साथ घूमकर सब स्थान दिखा देते हैं।

मदुरान्तकम्

चेंगलपटसे १५ मील आगे यह स्टेशन है। मद्राससे ५० मील दक्षिण चेंगलपट जिलेमें ही यह छोटा-सा नगर है। मद्रास और चेंगलपटसे मोटर-बसें जाती हैं।

मदुरान्तकम् नगरका वास्तविक नाम मधुरान्तकम् है और इस क्षेत्रका पुराना नाम तो बकुलारण्य है। इस नगरमें भगवान् कोदण्ड-रामका मन्दिर है। यह मन्दिर बहुत प्राचीन है। इसका जीर्णोद्धार हुआ है।

मन्दिरमें श्रीकरुणाकर-भगवान् (भगवान् विष्णु) तथा श्रीराम, लक्ष्मण और सीताजीके श्रीविग्रह हैं। यहाँके मुख्य देवता करुणाकर भगवान् ही हैं। इन मुख्य मूर्तियोंके समीप ही उत्सव-विग्रह हैं।

मन्दिरके प्राङ्गणमें बकुलका एक वृक्ष है। यह वृक्ष रामानुजीय वैष्णवोंके लिये बोधिवृक्षके समान आदरणीय है। इसी वृक्षके नीचे श्रीरामानुजाचार्यने महापूर्ण स्वामीसे दीक्षा ली थी। यहाँ महापूर्ण स्वामी और रामानुजाचार्यकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ श्रीरामानुजाचार्यकी मूर्तिको श्वेतवस्त्र धारण कराये जाते हैं। वहींपर एक चाँदीके थालमें श्रीकृष्णकी मूर्ति तथा शङ्ख और चक्र अङ्कित हैं। मन्दिरकी एक भूगर्भस्थित गुफामें ये वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं। विश्वास किया जाता है कि श्रीरामानुजाचार्यकी दीक्षामें इस शङ्ख एवं चक्रका उपयोग हुआ था। मन्दिरके पास ही सरोवर है।

कथा

बकुलारण्यमें विभाण्डक ऋषिका आश्रम था। भगवान् नारायणने मानसपुत्रोंको अपना करुणाकर-विग्रह देकर उस आश्रमके पास आराधना करनेकी आज्ञा दी। ब्रह्माके पुत्र उस विग्रहकी आराधना करके मुक्त हुए। त्रेतामें लङ्कासे लौटते समय भगवान् श्रीराम यहाँ रुके थे। वे करुणाकर-मूर्ति अपने साथ अयोध्या ले गये; किन्तु परधाम-गमनसे पूर्व उन्होंने वह मूर्ति हनुमान्जीको देकर उसे पूर्वस्थानपर स्थापित करनेका आदेश दिया। हनुमान्जीने मूर्ति लाकर प्रतिष्ठित कर दी। हनुमान्जीको सरोवरमें स्नान करते समय श्रीराम-लक्ष्मण-सीताजीकी मूर्तियाँ प्राप्त हुईं। वे मूर्तियाँ भी श्रीकरुणाकरजीके पास प्रतिष्ठित हो गयीं।

श्रीरामानुजाचार्य महापूर्णस्वामीसे दीक्षा लेने श्रीरङ्गम् जा रहे थे। उसी समय महापूर्णस्वामी श्रीरङ्गम्से काञ्चीको चल पड़े थे। यहाँ कोदण्डराम-मन्दिरपर दोनों परस्पर मिले। श्रीरामानुजाचार्यका आग्रह था कि उन्हें अविलम्ब दीक्षा दी जाय। उनका आग्रह देखकर महापूर्णस्वामीने वहीं मन्दिरके प्राङ्गणमें बकुल वृक्षके नीचे पञ्चसंस्कार सम्पन्न करके दीक्षा दे दी। पञ्च संस्कार हैं—ताप (तप्तमुद्राङ्कन), पुण्ड्र (तिलक), नामधेय (नामकरण), मन्त्रदान और यज्ञ।

कोदण्डराम-मन्दिरके श्रीजनकवल्ली अम्बा (जानकीजी)-के मन्दिरमें तमिळ-तेलुगुमें एक विस्तृत शिलालेख है। उसमें एक घटनाका वर्णन है। शिलालेखका सारांश यह है—'मथुरान्तकम्के बड़े जलाशयका बाँध प्रतिवर्ष वर्षामें टूट जाता था। सन् १७७५ ई० में लायनल प्लेसने बाँधको सुदृढ़ बनवाया; किन्तु बड़े भारी व्ययसे बना बाँध वर्षामें टूट गया। बाँध फिर बनाया गया, पहलेसे अधिक व्यय हुआ; किन्तु वर्षामें फिर टूट गया। एक दिन मिस्टर प्लेसकी एक वैष्णवसे भेंट हुई। वैष्णवने बताया कि वे वहाँ एक श्रीजानकी-मन्दिर बनवाना चाहते हैं। मिस्टर प्लेसने व्यङ्ग किया कि 'देवी-मन्दिर बनानेसे क्या लाभ, जब वे बाँधकी रक्षा करके ग्रामके लोगोंकी हानि नहीं रोकतीं।' वैष्णवने प्रतिवाद किया। अन्तमें मिस्टर प्लेस भी वैष्णवके साथ मन्दिरके सम्मुख गये। उन्होंने प्रार्थना की—'मैं बाँध बनवा रहा हूँ। इस वर्ष वर्षामें वह खड़ा रहा तो मैं देवी-मन्दिर बनवा दूँगा।'

बाँध फिर बनवाया गया। वह सन् १७७८ की घटना है। इस वर्ष सबसे भयानक वर्षा हुई। बाँध ऊपरतक भर गया था और वर्षा बंद नहीं हो रही थी। वर्षाके कम होनेपर रात्रिमें ही मिस्टर प्लेस बाँध देखने निकले। उन्हें आशा थी कि बाँध टूट गया होगा; किन्तु उन्हें वहाँ बाँधको रोके एक महान् बंदर (लंगूर) दीख पड़ा। बाँधपर उन्हें धनुष-बाण लिये दो श्याम-गौर ज्योतिर्मय कुमार दीखे। प्लेसने उन्हें घुटने टेककर प्रणाम किया। दूसरे दिन सबेरेसे स्वयं खड़े होकर मिस्टर प्लेस श्रीजानकी-मन्दिर बनवाने लगे।

तिरुत्तणि

मद्रास-रायचूर लाइनपर अरकोनम्से ८ मील दूर तिरुत्तणि स्टेशन है। दक्षिण-भारतमें सुब्रह्मण्य स्वामी (स्वामिकार्तिक) के ६ प्रधान क्षेत्र माने जाते हैं। उनमेंसे एक तिरुत्तनी है।

यहाँपर स्वामिकार्तिकका विशाल मन्दिर है। प्रत्येक महीनेमें इधरके यात्री अधिक संख्यामें यहाँ आते रहते हैं।

अथिरला

मद्रास-रायचूर लाइनपर रेनीगुंटासे ७८ मील दूर कडपा स्टेशन है। कडपा अच्छा नगर है। कडपा जिलेमें ही अथिरला स्थान है। कडपासे अथिरला मोटर-बस जाती है।

अथिरलामें एक पवित्र सरोवर है। सरोवरके किनारे भगवान् शङ्करका मन्दिर है। इस ओरके लोगोंकी मान्यता है कि इस सरोवरमें स्नान करके परशुरामजी मातृहत्याके दोषसे विमुक्त हुए थे। शिवरात्रिके समय यहाँ तीन दिनोंतक मेला लगता है।

तिरुपति-बालाजी

वेङ्कटाचल-माहात्म्य

श्रीनिवासपरा वेदाः श्रीनिवासपरा मखाः।
श्रीनिवासपराः सर्वे तस्मादन्यन्न विद्यते॥
सर्वयज्ञतपोदानतीर्थस्नाने तु यत् फलम्।
तत् फलं कोटिगुणितं श्रीनिवासस्य सेवया॥
वेङ्कटाद्रिनिवासं तं चिन्तयन् घटिकाद्वयम्।
कुलैकविंशतिं धृत्वा विष्णुलोके महीयते॥

(स्कन्दपुराण० वैष्णवखं०, भूमिवाराहखं०, वेङ्कटा० माहा०३८—४०)

'सभी वेद भगवान् श्रीनिवासका ही प्रतिपादन करते हैं। यज्ञ भी श्रीनिवासकी ही आराधनाके साधन हैं। अधिक क्या, सभी लोग श्रीनिवासके ही आश्रित हैं, उनसे भिन्न कुछ नहीं है। अतः सभी यज्ञ, तप, दानोंके अनुष्ठान तथा तीर्थोंमें स्नानका जो फल है, उससे करोड़गुना अधिक फल श्रीनिवासकी सेवासे होता है। उन वेङ्कटाचलनिवासी भगवान् श्रीहरिका दो घड़ी चिन्तन करनेवाला मनुष्य भी अपनी इक्कीस पीढ़ियोंका उद्धार करके विष्णुलोकमें सम्मानित होता है।'

तिरुपति-बालाजी

मद्रास-रायचूर लाइनपर मद्राससे ८४ मीलपर रेनीगुंटा स्टेशन है। रेनीगुंटामें गाड़ी बदलकर विल्लुपुरम्से गूडूरतक जानेवाली गाड़ीमें बैठनेपर रेनीगुंटासे ६ मील दूर तिरुपति ईस्ट स्टेशन मिलता है। मद्रास, कालहस्ती, काञ्ची, अरुणाचलम्, चेंगलपट आदिसे मोटर-बसद्वारा भी तिरुपति आ सकते हैं।

ठहरनेकी व्यवस्था

स्टेशनके पास ही देवस्थानम्-ट्रस्टकी बड़ी विस्तृत धर्मशाला है। तिरुपतिमें यात्रियोंके ठहरने आदिकी जैसी सुव्यवस्था देवस्थानम्-ट्रस्टकी ओरसे है, ऐसी व्यवस्था दूसरे किसी तीर्थमें नहीं है। देवस्थानम्-ट्रस्टकी ही एक धर्मशाला आगे बालाजीके मार्गमें पर्वतके नीचे है और पर्वतपर बालाजीके समीप तो कई धर्मशालाएँ हैं।

इन धर्मशालाओंमें यात्री बिना किसी शुल्कके अपना सामान रखकर निश्चिन्त जा सकते हैं। सामान रखनेकी व्यवस्था अलग है। ठहरनेके लिये कमरे हैं, जिनमें बिजलीका प्रकाश है। अपने-आप भोजन बनानेवालोंको बर्तन भी मिलता है।

वेङ्कटाचल पूरा पर्वत भगवत्स्वरूप माना जाता है, अतः उसपर जूता लेकर जाना उचित नहीं माना जाता। पैदल जानेवालोंका जूता नीचेके गोपुरके पास वे रखना चाहें

तो रखनेकी व्यवस्था है। पर्वतपर बस-अड्डेपर ही जूता-छड़ी आदि रखनेका स्थान बस-कार्यालयमें भी है।

बालाजीके पास पर्वतपर पैदल जानेका मार्ग ७ मीलका है, जिसमें ५ मील पर्वतकी कठिनाई चढ़ाई है। दूसरा मार्ग मोटर-बसका है। देवस्थानम्-ट्रस्टकी बसें ऊपर जाती हैं। ये बसें स्टेशनके समीपकी धर्मशालाके घेरेके भीतरसे ही चलती हैं। इनका टिकट लेनेके लिये पहले धर्मशाला-कार्यालयसे एक चिट्ठी लेनी पड़ती है, जो तत्काल सरलतासे मिल जाती है। यात्रियोंकी भीड़ प्राय: प्रतिदिन अधिक रहती है। बसोंमें स्थान कुछ कठिनाईसे प्रतीक्षाके बाद मिलता है।

यात्राका क्रम—यहाँकी यात्राका नियम यह है कि पहले कपिल-तीर्थमें स्नान करके कपिलेश्वरका दर्शन करना चाहिये। फिर वेङ्कटाचलपर जाकर बालाजीके दर्शन तथा ऊपरके तीर्थोंका दर्शन करके तब नीचे आकर तिरुपतिमें गोविन्दराज आदिके दर्शन करके तिरुच्चानूरमें जाकर पद्मावतीदेवीका दर्शन करना चाहिये। इस यात्राके क्रमसे ही आगे वर्णन किया जा रहा है।

कपिलतीर्थ

जो लोग मोटर-बससे वेङ्कटाचलपर बालाजीके दर्शन करने जाते हैं तथा मोटर-बससे ही लौटते हैं, उन्हें तो यह तीर्थ मिलता नहीं। तीर्थके पाससे बसें चली जाती हैं। तिरुपतिमें देवस्थानम्-ट्रस्टकी धर्मशालासे लगभग दो मील दूर वेङ्कटाचल पर्वतकी चढ़ाई प्रारम्भ होती है। चढ़ाई प्रारम्भ होनेसे पहले पर्वतके नीचे ही यह तीर्थ है।

कपिलतीर्थ यह सुन्दर सरोवर है। इसमें पर्वतपरसे जलधारा गिरती है। सरोवरमें पक्की सीढ़ियाँ बनी हैं। सरोवरके तटपर संध्यावन्दन-मण्डप बने हैं। तीर्थमें चारों कोनोंपर चार स्तम्भोंमें चक्रके चिह्न अङ्कित हैं। पूर्व दिशामें संध्या-वन्दन-मण्डपके ऊपर भागमें कपिलेश्वर-मन्दिर है। सरोवरके दक्षिण नम्माळवारका मन्दिर है और उत्तर-पश्चिम नृसिंह-मूर्ति है।

तिरुमलैका मार्ग

श्रीबालाजी (वेङ्कटेश्वरभगवान्)-का स्थान जिस पर्वतपर है, उसे तिरुमलै कहते हैं। कपिलतीर्थमें स्नान एवं कपिलेश्वरभगवान्का दर्शन करके यात्री पर्वतपर चढ़ते हैं।

इस पर्वतका नाम वेङ्कटाचल है। कहते हैं, साक्षात् भगवान् शेष यहाँ पर्वतरूपमें स्थित हैं। इसीलिये इसे शेषाचल भी कहते हैं। कहा जाता है कि प्राचीन कालमें प्रह्लाद तथा राजा अम्बरीष इस पर्वतको नीचेसे ही प्रणाम करके चले गये थे। पर्वतको भगवत्स्वरूप मानकर वे ऊपर नहीं चढ़े थे। श्रीरामानुजाचार्य पर्वतपर दण्डवत्-प्रणाम करते हुए गये थे। अब भी पर्वतपर अहिंदू नहीं जा पाते। पर्वतके नीचे पहला गोपुर बहुत ऊँचा बना है। वहाँसे आगे केवल हिंदू जा सकते हैं। गोपुरके पास बालाजीकी पादुकाके चिह्न बने हैं। मर्यादा यही है कि उससे आगे जूता चप्पल न ले जाया जाय। इस पहले गोपुरसे ही चढ़ाई प्रारम्भ होती है। पूरे मार्गपर पर्वतमें बिजलीकी बत्ती लगी है, अत: रात्रिके अन्धकारमें भी ऊपर जाने या ऊपरसे लौटनेमें कोई कठिनाई नहीं है। कई स्थानोंपर मार्गके दोनों ओर वन हैं; कोई यहाँके वनमें भयकी कोई बात नहीं।

प्रारम्भमें लगभग १॥ मीलतक कड़ी चढ़ाई मिलती है। उसके पश्चात् वैकुण्ठद्वार आता है; इस बीचमें एक और गोपुर मिलता है। कई छोटे द्वार मिलते हैं। वैकुण्ठ-द्वारपर तीसरा गोपुर है। यहाँ श्रीवैकुण्ठनाथजीका मन्दिर है। श्रीराम-लक्ष्मण-सीता तथा श्रीराधा-कृष्ण-ललिता-विशाखादिकी मूर्त्तियाँ हैं।

आगे लगभग तीन मीलतक सीढ़ियाँ नहीं हैं। मार्ग कुछ उतराई-चढ़ाईका है, परन्तु प्राय: समतल है। आगे फिर आध मील उतराई और उतनी ही चढ़ाई पड़ती है। इस एक मीलमें सीढ़ियाँ बनी हैं। फिर आगे बालाजीतक डेढ़ मील बराबर मार्ग है।

पैदल यात्रीको भले ठीक अनुमान न हो, किन्तु इस सात मीलकी यात्रामें उसे सात पर्वत मिलते हैं। श्रीबालाजी सातवें पर्वतपर हैं। इस मार्गकी पैदल यात्रा पुण्यप्रद मानी जाती है।

पैदलके इस मार्गमें दो मन्दिर मिलते हैं—एक नरसिंहभगवान्का मन्दिर है, जो तिरुपतिसे ४ मील दूर है। दूसरा श्रीरामानुजस्वामीका मन्दिर मिलता है।

तिरुमलै—इस पर्वतके नाम तिरुमलै तथा वेङ्कटाचल हैं। तिरु=श्रीमान्, मलै=पर्वत अर्थात् श्रीयुक्त पर्वत। इसी

प्रकार वेङ्क=पाप, कट-नाशक अर्थात् पापनाशक पर्वत।

जो लोग मोटर-बससे आते हैं, उन्हें १५ मील घुमावदार पहाड़ी मार्ग पार करना पड़ता है। बसें ऊपर मन्दिरसे थोड़ी ही दूरपर खड़ी होती हैं।

तिरुमलैपर अच्छा बाजार है। धर्मशालाएँ हैं। ठहरनेकी पूरी सुविधा है। मोटर-बससे आनेवाले अपने जूते आदि बस-कार्यालयके निश्चित स्थानमें रख देते हैं।

कल्याणकट्ट—तीर्थराज प्रयागकी भाँति वेङ्कटाचलपर भी मुण्डन-संस्कार प्रधान कृत्य माना जाता है। वहाँ केश-मुण्डनका इतना माहात्म्य है कि सौभाग्यवती स्त्रियाँ भी मुण्डन कराती हैं। उच्चवर्णोंकी सौभाग्यवती स्त्रियाँ केवल एक लट कटवा देती हैं। जहाँ मोटर-बसें खड़ी होती हैं, उस स्थानपर देवस्थानम् कमेटीका कार्यालय है। वहाँसे निश्चित शुल्क देकर मुण्डन करानेकी चिट्ठी ले लेनी चाहिये। उस स्थानके सामने ही एक घेरा है, जिसमें एक अश्वत्थका वृक्ष है। इस स्थानका नाम कल्याणकट्ट है। इसी स्थानपर मुण्डन कराया जाता है। यहाँ बहुत-से नाई मुण्डन करनेके लिये नियुक्त हैं।

स्वामिपुष्करिणी—श्रीबालाजीके मन्दिरके समीप ही स्वामिपुष्करिणी नामक विस्तृत सरोवर है। सभी यात्री इसमें स्नान करके ही दर्शन करने जाते हैं। कथा ऐसी है कि वराहावतारके समय भगवान् वराहके आदेशसे वैकुण्ठसे इस पुष्करिणीको वेङ्कटाचलपर वराहभगवान्के स्नानार्थ गरुड़ ले आये। यह वैकुण्ठकी क्रीड़ा-पुष्करिणी है, जिसमें भगवान् नारायण श्रीदेवी एवं भूदेवी आदिके साथ स्नान-क्रीड़ा करते हैं। इसका स्नान समस्त पापोंका नाशक माना जाता है। पुष्करिणीके मध्यमें एक मण्डप है, जिसमें दशावतारोंकी मूर्तियाँ खुदी हैं। मार्च-अप्रैलमें यहाँ 'तेप्पोत्सव' नामक महोत्सव मनाया जाता है।

वराह-मन्दिर—स्वामिपुष्करिणीके पश्चिम वराह-भगवान्का मन्दिर है। भगवान् वराहकी मूर्ति भव्य है। नियमानुसार तो वराहभगवान्के दर्शन करके तब बालाजीके दर्शन करना चाहिये; किंतु अधिकांश यात्री बालाजीका दर्शन करके तब वराहभगवान्का दर्शन करते हैं। वाराह-मन्दिरके पास ही एक नवीन श्रीकृष्ण-मन्दिर है। उसमें श्रीराधा-कृष्णकी सुन्दर मूर्तियाँ हैं।

वराह-मन्दिर जाते समय स्वामिपुष्करिणीके पश्चिम-तटपर ही एक पीपलका वृक्ष है। उसके नीचे बहुत-सी मूर्तियाँ हैं।

श्रीबालाजी

भगवान् श्रीवेङ्कटेश्वरको ही उत्तर-भारतीय बालाजी कहते हैं। भगवान्के मुख्य दर्शन तीन बार होते हैं। पहला दर्शन विश्वरूप-दर्शन कहलाता है। यह प्रभातकालमें होता है। दूसरा दर्शन मध्याह्नमें तथा तीसरा दर्शन रात्रिमें होता है। इन सामूहिक दर्शनोंके अतिरिक्त अन्य दर्शन हैं, जिनके लिये विभिन्न शुल्क निश्चित हैं। इन तीन मुख्य दर्शनोंमें कोई शुल्क नहीं लगता; किन्तु इनमें भीड़ अधिक होती है। वैसे पंक्ति बनाकर मन्दिरके अधिकारी दर्शन करानेकी व्यवस्था करते हैं।

श्रीबालाजीका मन्दिर तीन परकोटोंसे घिरा है। इन परकोटोंमें गोपुर बने हैं, जिनपर स्वर्ण-कलश स्थापित हैं। स्वर्णद्वारके सामने तिरुमहामण्डपम् नामक मण्डप है। एक सहस्रस्तम्भ मण्डप भी है। मन्दिरके सिंहद्वार नामक प्रथमद्वारको पडिकावलि कहते हैं। इस द्वारके भीतर वेङ्कटेश्वरस्वामी (बालाजी)-के भक्त नरेशों एवं रानियोंकी मूर्तियाँ बनी हैं।

प्रथम द्वार तथा द्वितीय द्वारके भव्यकी प्रदक्षिणाको सम्पङ्गि-प्रदक्षिणा कहते हैं। इसमें 'विरज' नामक एक कुआँ है। उसीकी धारा इस कूपमें आती है। इसी प्रदक्षिणामें 'पुष्पकूप' है। बालाजीको जो तुलसी-पुष्प चढ़ता है, वह किसीको दिया नहीं जाता। वह इसी कूपमें डाला जाता है। केवल वसन्तपञ्चमीपर तिरुच्चानूरमें पद्मावतीजीको भगवान्के चढ़े पुष्प अर्जित किये जाते हैं।

द्वितीय द्वारको पार करनेपर जो प्रदक्षिणा है, उसे विमान-प्रदक्षिणा कहते हैं। उसमें योगनृसिंह, श्रीवरदराज-स्वामी (भगवान् विष्णु), श्रीरामानुजाचार्य, सेनापतिनिलय, गरुड़ तथा रसोईघरमें बकुलमालिकाके मन्दिर हैं।

तीसरे द्वारके भीतर भगवान्के निज-मन्दिर (गर्भगृह) के चारों ओर एक प्रदक्षिणा है। उसे वैकुण्ठ-प्रदक्षिणा कहते हैं। यह केवल पौषशुक्ला एकादशीको खुलती है। अन्य समय यह मार्ग बंद रखा जाता है।

भगवान्के मन्दिरके सामने स्वर्णमण्डित स्तम्भ है।

उसके आगे तिरुमह-मण्डपम् नामक सभामण्डप है। द्वारपर जय-विजयकी मूर्तियाँ हैं। इसी मण्डपमें एक ओर हुंडी नाम बंद हौज है, जिसमें यात्री बालाजीको अर्पित करनेके लिये लाया द्रव्य एवं आभूषणादि डालते हैं।

जगमोहनसे मन्दिरके भीतर ४ द्वार पार करनेपर पाँचवेंके भीतर श्रीबालाजी (वेङ्कटेश्वर स्वामी)-की पूर्वाभिमुख मूर्ति है। भगवान्‌की श्रीमूर्ति श्यामवर्ण है। वे शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म लिये खड़े हैं। यह मूर्ति लगभग सात फुट ऊँची है। भगवान्‌के दोनों ओर श्रीदेवी तथा भूदेवीकी मूर्तियाँ हैं। भगवान्‌को भीमसेनी कपूरका तिलक लगता है। भगवान्‌के तिलकसे उतरा यह चन्दन यहाँ प्रसादरूपमें बिकता है। यात्री उसे (मन्दिरसे) अञ्जनके काममें लेनेके लिये ले जाते हैं।

श्रीबालाजीकी मूर्तिमें एक स्थानपर चोटका चिह्न है। उस स्थानपर दवा लगायी जाती है। कहते हैं, एक भक्त प्रतिदिन नीचेसे भगवान्‌के लिये दूध ले आता था। वृद्ध होनेपर जब उसे आनेमें कष्ट होने लगा, तब भगवान् स्वयं जाकर चुपचाप उसकी गायका दूध पी आते थे। गायको दूध न देते देख उस भक्तने एक दिन छिपकर देखनेका निश्चय किया और जब सामान्य मानव वेशमें आकर भगवान् दूध पीने लगे, तब उन्हें चोर समझ भक्तने डंडा मारा। उसी समय भगवान् प्रकट होकर उसे दर्शन दिया और आश्वासन दिया। वही डंडा लगनेका चिह्न मूर्तिमें है।

यहाँ मुख्य दर्शनके समय मध्याह्नमें प्रत्येक दर्शनार्थीको भगवान्‌का भात-प्रसाद निःशुल्क मिलता है। इस प्रसादमें स्पर्श आदिका दोष नहीं माना जाता है। यहाँ मन्दिरमें मध्याह्नके दर्शनके पश्चात् प्रसाद बिकता भी है।

वेङ्कटाचलके अन्य तीर्थ

वेङ्कटाचल पर्वतपर ही पाण्डवतीर्थ, पापनाशन-तीर्थ, आकाशगङ्गा, जाबालितीर्थ, वैकुण्ठतीर्थ, चक्रतीर्थ, कुमारधारा, राम-कृष्ण-तीर्थ, घोणतीर्थ आदि तीर्थ-स्थान हैं। ये पर्वतमेंसे गिरते झरते हैं, जो तिरुमलै बस्तीसे दो-तीन मीलके घेरेमें हैं। इनमेंसे मुख्य तीर्थोंका विवरण दिया जा रहा है—

आकाशगङ्गा—बालाजीके मन्दिरसे दो मील दूर वनमें यह तीर्थ है। यह पर्वतमेंसे एक झरना आता है। उसका जल एक कुण्डमें एकत्र होता है। यात्री उस कुण्डमें स्नान करते हैं। यहाँका जल प्रतिदिन बालाजीके मन्दिरमें पूजाके लिये जाता है।

पापनाशन-तीर्थ—आकाशगङ्गासे एक मील और आगे यह तीर्थ है। दो पर्वतोंके मध्यसे एक बहती धारा आकर एक स्थानपर ऊपरसे दो धाराएँ होकर नीचे गिरती है। इसको साक्षात् गङ्गा माना जाता है। यहाँ यात्री साँकल पकड़कर स्नान करते हैं।

इस मार्गमें बालाजीसे १ मीलपर संत हाथीराम बाबाकी समाधि है। उसके पास श्रीराधाकृष्ण-मन्दिर है।

वैकुण्ठतीर्थ—बालाजीसे दो मील पूर्व पर्वतमें वैकुण्ठ-गुफा है। उस गुफासे जो जलधारा निकलती है, उसे वैकुण्ठ-तीर्थ कहते हैं।

पाण्डवतीर्थ—बालाजीसे दो मील उत्तर-पश्चिम एक झरना है, जो पाण्डवतीर्थ कहा जाता है। यहाँ एक सुन्दर गुफा है, जिसमें द्रौपदीसहित पाण्डवोंकी मूर्तियाँ हैं।

जाबालितीर्थ—पाण्डवतीर्थसे एक मील और आगे जाबालितीर्थ है। यहाँ झरनेके पास हनुमान्‌जीकी मूर्ति है।

तिरुपति

तिरुमलैपर श्रीवेङ्कटेश्वर (बालाजी)-के दर्शन करके यात्री नीचे आते हैं। नीचे स्टेशनके समीप जो नगर है, उसीको तिरुपति कहा जाता है। तिरुपतिमें देवस्थान-कमेटीकी धर्मशालाके समीप ही सुविस्तृत सरोवर है। सरोवरके पास श्रीगोविन्दराजजीका मन्दिर है।

श्रीगोविन्दराज-मन्दिर विशाल है। इसमें मुख्य मूर्ति शेषशायी भगवान् नारायणकी है। इस मूर्तिकी प्रतिष्ठा श्रीरामानुजाचार्यने की थी। इस मन्दिरके आस-पास छोटे-छोटे १५ देव-मन्दिर हैं। इन्हींमें श्रीगोदा अम्बाका मन्दिर है। उनकी प्रतिष्ठा भी श्रीरामानुजाचार्यने ही की है। इस मन्दिरमें वैशाखमें ब्रह्मोत्सव नामक महोत्सव होता है।

श्रीरामानुजाचार्यके अष्ट प्रधान पीठोंमेंसे यह एक पीठस्थल है। यहाँकी रामानुजगद्दीके आचार्य श्रीवेङ्कटाचार्य

कहे जाते हैं।

तिरुपतिका दूसरा मुख्य मन्दिर कोदण्डराम-मन्दिर है। यह मन्दिर तिरुपतिकी उत्तरी दिशामें फूलबाग धर्मशालाके पास है। यहाँ भगवान् श्रीराम, लक्ष्मण तथा जानकीजीके श्रीविग्रह प्रतिष्ठित हैं।

इनके अतिरिक्त तिरुपतिमें और कई मन्दिर हैं।

तिरुच्चानूर

तिरुपतिसे ३ मीलपर तिरुच्चानूर बस्ती है। इसे मंगापट्टनम् भी कहते हैं। यहाँ पद्मसरोवर नामका पुण्यतीर्थ है। सरोवरके पास ही पद्मावतीका मन्दिर है। पद्मावती लक्ष्मीजीका स्वरूप मानी जाती हैं। उनको यहाँ 'अलवेलुमंगम्मा' कहते हैं। यह मन्दिर भी विशाल है।

भगवान् वेङ्कटेश जब वेङ्कटाचलपर निवास करने लगे, तब उनकी नित्य प्रिया श्रीलक्ष्मीजी तिरुच्चानूरमें आकाशराजके यहाँ कन्यारूपसे प्रकट हुईं। वे पद्मसरोवरमें एक कमलपुष्पमें प्रकट हुई बतायी जाती हैं, जिन्हें आकाशराजने अपने घर ले जाकर पुत्री बनाकर पालन किया। उनका विवाह श्रीबालाजी (वेङ्कटेशस्वामी)-के साथ हुआ।

कहा जाता है कि तिरुच्चानूरमें शुकदेवजीने भी तपस्या की थी।

कालहस्ती

दक्षिण-भारतमें भगवान् शङ्करके जो पञ्चतत्त्वलिङ्ग माने जाते हैं, उनमेंसे कालहस्तीमें वायुतत्त्वलिङ्ग है। यहाँ ५१ शक्तिपीठोंमें एक शक्तिपीठ भी है। यहाँ सतीका दक्षिण स्कन्ध गिरा था। कालहस्तीमें कोई धर्मशाला नहीं है। ठहरनेके लिये छोटे-छोटे किरायेके कमरे मन्दिरके पास घरोंमें मिलते हैं। उनका किराया एक दिनका डेढ़ रुपयेसे कई रुपयेतक वे लोग लेते हैं।

मार्ग—मद्रास, चेंगलपट एवं तिरुपतिसे कालहस्ती मोटर-बस चलती है। विल्लुपुरम्-गूडूरलाइनपर रेनीगुंटासे १५ मील (तिरुपति ईस्टसे २१ मील)-पर कालहस्ती स्टेशन है। स्टेशनसे कालहस्ती लगभग डेढ़ मील दूर है।

दर्शनीय स्थान—स्टेशनसे लगभग एक मीलपर स्वर्णमुखी नदी है। नदीमें जल कम रहता है। नदीके पार तटपर ही श्रीकालहस्तीश्वर-मन्दिर है। नदीको पक्के पुलसे पार करके मन्दिरतक आनेमें दूरी डेढ़ मील होती है; किन्तु सीधे नदी पार करके आनेपर दूरी मीलभरसे अधिक नहीं है।

नदी-तटके पास ही एक पहाड़ी है। उसे कैलासगिरि कहते हैं। नन्दीश्वरने कैलासके जो तीन शिखर पृथ्वीपर स्थापित किये, उन्हींमेंसे यह एक है। पहाड़ीके नीचे उससे सटा हुआ कालहस्तीश्वरका विशाल मन्दिर है। मन्दिरका घेरा विस्तृत है। उसमें दो परिक्रमाएँ तो बाहर ही हैं। वहाँ दर्शनके लिये सवा आना और पूजनके लिये छः आने शुल्क देना पड़ता है।

मन्दिरमें मुख्य स्थानपर भगवान् शङ्करकी लिङ्ग-मूर्ति है। यह वायुतत्त्वलिङ्ग है, अतः पुजारी भी इसका स्पर्श नहीं करते। मूर्तिके पास स्वर्णपट्ट स्थापित है, उसीपर माला आदि चढ़ायी जाती तथा पूजा होती है। इस मूर्तिमें मकड़ी, सर्पफण तथा हाथीके दाँतोंके चिह्न स्पष्ट दीखते हैं। कहा जाता है, सर्वप्रथम मकड़ी, सर्प तथा हाथीने यहाँ भगवान् शङ्करकी आराधना की थी। उनके नामपर ही (**श्री**—मकड़ी, **काल**—सर्प, **हस्ती**—हाथी) श्रीकालहस्तीश्वर यह नाम पड़ा है।

मन्दिरमें ही भगवती पार्वतीका पृथक् मन्दिर है। परिक्रमामें गणेशजी, चार शिव-लिङ्ग, कार्तिकेय, सहस्रलिङ्ग, चित्रगुप्त, यमराज, धर्मराज, चण्डिकेश्वर, नटराज, सूर्य, बालसुब्रह्मण्य, काशी-विश्वनाथलिङ्ग, रामेश्वर, लक्ष्मी-गणपति, बालगणपति, तिरुपति-बालाजी, सीताराम, हनुमान्, परशुरामेश्वर, शनैश्चर, भूतगणपति, कनकदुर्गा, नटराज, शिवभक्तवृन्द, अविमुक्तलिङ्ग, कालभैरव तथा दक्षिणामूर्ति आदिकी मूर्तियाँ हैं।

मन्दिरमें ही गाण्डीवधारी अर्जुन तथा पशुपति भगवान् शिवकी मूर्तियाँ भी हैं। अर्जुनकी मूर्तिको पंडे कण्णप्पकी मूर्ति कहते हैं।

कालहस्तीश्वर-मन्दिरके अग्निकोणमें चट्टान काट-

काटकर बनाया हुआ एक मण्डप है, जिसे मणिगण्णिय-गट्टम् कहते हैं। इस नामकी एक भक्ता हो गयी हैं, जिनके दाहिने कानमें मृत्युके समय भगवान् शंकरने तारक-मन्त्र फूँका था—ठीक उसी प्रकार, जैसे भगवान् विश्वनाथ काशीमें मरनेवाले प्रत्येक व्यक्तिको तारक-मन्त्र देते हैं। उन्हीं भक्त महिलाके नामसे यह मण्डप विख्यात है। आज भी श्रद्धालु लोग अपने मरणासन्न सम्बन्धियोंको यहाँ लाकर दाहिनी करवट इस तरह लिटा देते हैं, जिससे उनका दाहिना कान पृथ्वीपर टिक जाय। कहा जाता है कि ठीक मृत्युके क्षण उन मरणासन्न व्यक्तियोंका शरीर अपने-आप घूमकर बायें करवट हो जाता है और उनके दाहिने कानके छिद्रमेंसे प्राण-पखेरू उड़ जाते हैं। काशीके सम्बन्धमें भी ऐसी ही बात सुनी गयी है।

मन्दिरके पास ही पहाड़ी है। कहा जाता है इसी पहाड़ीपर अर्जुनने तपस्या करके भगवान् शङ्करसे पाशुपतास्त्र प्राप्त किया था। यहाँ ऊपर जो शिव लिङ्ग है, वह अर्जुनके द्वारा प्रतिष्ठित है। पीछे कण्णप्पने उसका पूजन किया, इसलिये उसका नाम कण्णप्पेश्वर हो गया।

पहाड़ीपर जानेके लिये सीढ़ियाँ नहीं हैं, किन्तु थोड़ी ही दूर ऊपर जाना पड़ता है। इसमें कोई कठिनाई नहीं होती। ऊपर एक छोटा-सा घेरा है। घेरेके भीतर कण्णप्पेश्वर शिव-लिङ्ग मन्दिरमें है। घेरेके बाहर एक छोटे मन्दिरमें कण्णप्प भीलकी मूर्ति है।

इस पहाड़ीसे उतरते समय एक मार्ग बायें हाथकी ओर कुछ आगे जाता है। वहाँ एक सरोवर है। पहाड़ीपरसे वह सरोवर दीखता है। कहा जाता है कि कण्णप्प शिवलिङ्गपर चढ़ानेके लिये वहींसे जल मुखमें भरकर ले आता था। सरोवर पवित्र तीर्थ माना जाता है।

कण्णप्प-पहाड़ीके ठीक सामने बस्तीके दूसरे सिरेपर एक और पहाड़ी है। इस पहाड़ीपर दुर्गा-मन्दिर है। यह स्थान ५१ शक्तिपीठोंमेंसे एक है, किन्तु अब उपेक्षित हो गया है। बहुत कम लोग इस पहाड़ीपर जाते हैं। सुवर्णरेखा नदीपर मोटर-बसोंके आनेके लिये जो पक्का पुल बना है, उसके समीप ही एक गलीमें होकर कुछ गज आगे जानेपर पहाड़ीपर जानेका मार्ग मिल जाता है। मार्ग साधारण ही है। पहाड़ीके ऊपर एक घेरेके भीतर छोटा-सा मन्दिर है। मन्दिरमें देवीकी मूर्ति बहुत प्रभावोत्पादक हैं। उन्हें दुर्गाम्बा या ज्ञानप्रसू कहते हैं।

कालहस्ती बाजारके एक ओर एक तीसरी पहाड़ी है। उस पहाड़ीके ऊपर सुब्रह्मण्य (स्वामिकार्तिक)-का मन्दिर है।

कण्णप्पकी कथा—प्राचीन कालमें दो भील-कुमार वनमें आखेट करने आये। उनमें एकका नाम नील और दूसरेका फणीश था। उन्होंने वनमें एक पहाड़ीपर भगवान् शङ्करकी लिङ्ग-मूर्ति देखी। पूर्वजन्मोंके संस्कारवश नील हठपूर्वक उस मूर्तिकी रक्षाके लिये वहीं रह गया और फणीश अपने साथीको जब समझा न सका, तब लौट गया।

नीलने धनुष-बाण लेकर रात्रिभर मूर्तिका इसलिये पहरा दिया कि कोई वनपशु भगवान्‌को कष्ट न दे। प्रातः वह वनमें चला गया। जब वह दोपहरके लगभग लौटा, तब उसके एक हाथमें धनुष था, दूसरेमें भुना मांस था, मस्तकके केशोंमें कुछ फूल खोंसे हुए थे और मुखमें जल भरा था। दोनों हाथ रिक्त न होनेसे भीलकुमार नीलने पैरसे ही मूर्तिपर चढ़े बिल्वपत्र तथा पुष्प हटाये। मुखके जलसे कुल्ला करके भगवान्‌को स्नान कराया। बालोंमें लगे पुष्प मूर्तिपर चढ़ा दिये तथा वह भुने मांसका दोना भोग लगानेके लिये रख दिया। स्वयं धनुष-बाण लेकर मन्दिरके बाहर पहरा देने बैठ गया।

दूसरे दिन सबेरे जब नील जंगलमें गया हुआ था, मन्दिरके पुजारी आये। उन्होंने मन्दिरको मांसखण्डोंसे दूषित देखा। उन्हें बड़ा दुःख हुआ। नीचेसे जल लाकर पूरा मन्दिर धोया और पूजा करके चले गये। उनके जानेपर नील वनसे लौटा। उसने अपने ढंगसे पहले दिनके समान पूजा की। कई दिन यह क्रम चलनेपर पुजारीको बड़ा दुःख हुआ कि प्रतिदिन कौन मन्दिर दूषित कर जाता है। वे पूजाके पश्चात् मन्दिरमें ही छिपकर बैठ गये उसे देखनेके लिये।

उस दिन नील लौटा तो उसे मूर्तिमें भगवान्‌के नेत्र दीखे। एक नेत्रसे रक्तधारा बह रही थी। क्रोधके मारे नीलने दोना भूमिपर रख दिया और धनुष चढ़ाकर भगवान्‌को आघात पहुँचानेवालेको ढूँढ़ने निकला। जब उसे कोई न मिला, तब वह जड़ी-बूटियोंका ढेर ले आया। उसने अपनी जानी-बूझी सब जड़ी-बूटियाँ लगा देखीं; किन्तु भगवान्‌के नेत्रका रक्तप्रवाह बंद नहीं हुआ। सहसा नीलको स्मरण आया कि वृद्ध भील कहते हैं—

'मनुष्यके घावपर मनुष्यका ताजा चमड़ा लगा देनेसे घाव शीघ्र भर जाता है।' नीलकी समझमें आया कि नेत्रके घावपर नेत्र लगाना चाहिये। उसने बिना हिचक बाणकी नोक घुसाकर अपनी एक आँख निकाल ली और मूर्तिके नेत्रपर रखकर उसे दबा दिया। मूर्तिके नेत्रसे रक्त बहना बंद हो गया। पुजारी तो उसके इस अद्भुत त्यागको देखकर दंग रह गया।

सहसा नीलने देखा कि मूर्तिके दूसरे नेत्रसे रक्त बहने लगा है। औषध ज्ञात हो चुकी थी। नीलने मूर्तिके उस नेत्रपर अपने पैरका अँगूठा रखा, जिससे दूसरा नेत्र निकाल लेनेपर अंधा होकर भी उस स्थानको वह पा सके। बाणकी नोक उसने अपने दूसरे नेत्रमें लगायी। इतनेमें तो मन्दिर प्रकाशसे भर गया। भगवान् शङ्कर साक्षात् प्रकट हो गये थे। उन्होंने नीलका हाथ पकड़ लिया। भीलकुमार नीलको भगवान् अपने साथ शिवलोक ले गये। नीलका नाम उसी समयसे कण्णप्प हुआ। (तमिड़में। 'कण्ण' नेत्रको कहते हैं) पुजारी भी भगवान्‌के तथा उनके भोले भक्तके दर्शन करके धन्य हो गया।

भक्त कण्णपकी प्रशंसामें भगवान् आदिशङ्कराचार्यका निम्नलिखित श्लोक स्मरणीय है—

मार्गावर्तितपादुका पशुपतेरङ्गस्य कूर्चायते
गण्डूषाम्बुनिषेचनं पुररिपोर्दिव्याभिषेकायते।
किंचिद् भक्षितमांसशेषकवलं नव्योपहारायते
भक्तिः किं न करोत्यहो वनचरो भक्तावतंसायते॥

(शङ्कराचार्यकृत शिवानन्दलहरी ६३)

'रास्तेमें ठुकरायी हुई पादुका ही भगवान् शङ्करके अङ्ग झाड़नेकी कूची बन गयी, आचमन (कुल्ले) का जल ही उनका दिव्याभिषेक-जल हो गया और उच्छिष्ट मांसका ग्रास ही नवीन उपहार—नैवेद्य बन गया। अहो भक्ति क्या नहीं कर सकती! इसके प्रभावसे एक जंगली भील भी भक्तावतंस—भक्तश्रेष्ठ बन गया।'

वेङ्कटगिरि

विल्लुपुरम्-गूडूर लाइनमें रेनीगुंटासे ३० मील (कालहस्तीसे १५ मील) दूर वेङ्कटगिरि स्टेशन है। स्टेशनसे वेङ्कटगिरि बाजार दो मील है।

यहाँ काशीपेठ (मुहल्ले) में काशीविश्वेश्वर शिव-मन्दिर है। इस मन्दिरकी लिङ्गमूर्ति काशीसे लाकर प्रतिष्ठित की गयी थी। मन्दिरमें ही पृथक् विशालाक्षी (पार्वती) देवीका मन्दिर है। मन्दिरके परिक्रमा-मार्गमें अन्नपूर्णा, कालभैरव, सिद्धविनायक आदि देवताओंकी मूर्तियाँ भी हैं। मन्दिरके पास कैवल्या नामक छोटी नदी बहती है।

यहाँपर कोदण्डराम, हनुमान्, चेंगलराजस्वामी, वरदराज (विष्णु) भगवान् आदिके मन्दिर भी हैं। राजमहलके पास ग्रामदेवी पोलेरअम्बाका मन्दिर है।

वेल्लोर

विल्लुपुरम्-गूडूर लाइनपर ही तिरुवण्णमलै और तिरुपति ईस्टके बीचमें वेल्लोर-छावनी तथा वेल्लोर-टाउन ये दो स्टेशन हैं। मद्रास देशके आरकाट जिलेमें वेल्लोर एक प्रधान स्थान है।

वेल्लोरमें जालन्धरेश्वर शिव-मन्दिर है। दक्षिण-भारतके कुछ विशाल मन्दिरोंमें इसकी गणना है। इसका गोपुर सात मंजिलोंका सौ फुट ऊँचा है। गोपुरसे भीतर जानेपर कल्याण मण्डप-मिलता है। मण्डपके सामने एक कूप है। मन्दिरके भीतर श्रीजलन्धरेश्वर-शिवलिङ्ग है। एक दूसरे मन्दिरमें (मन्दिरके घेरेमें ही) पार्वतीजीकी मूर्ति है। यहाँ भी परिक्रमामें बहुत-से देवताओंकी मूर्तियाँ हैं।

यादमारी

विल्लुपुरम्-गूडूर लाइनपर ही वेल्लोर-छावनीसे २७ मील दूर चित्तूर स्टेशन है। वहाँसे पाँच मील दक्षिण यादमारी (इन्द्रपुरी) बस्ती है। मोटर-बस जाती है। यहाँ वरदराज स्वामी (भगवान् विष्णु) तथा कोदण्डरामके दो प्रसिद्ध मन्दिर हैं। चैत्र-वैशाखमें यहाँ दस दिनतक मेला लगता है।

तिरुवण्णमलै (अरुणाचलम्)

अरुणाचल-माहात्म्य

अस्ति दक्षिणदिग्भागे द्राविडेषु तपोधन।
अरुणाख्यं महाक्षेत्रं तरुणेन्दुशिखामणेः॥
योजनत्रयविस्तीर्णमुपास्यं शिवयोगिभिः।
तद् भूमेर्हृदयं विद्धि शिवस्य हृदयंगमम्॥
तत्र देवः स्वयं शम्भुः पर्वताकारतां गतः।
अरुणाचलसंज्ञावानस्ति लोकहितावहः॥
सुमेरोरपि कैलासादप्यसौ मन्दरादपि।
माननीयो महर्षीणां यः स्वयं परमेश्वरः॥

(स्कन्दपुरा० माहे०, अरुणा० मा० उत्तरा० ३। १०—१४)

'तपोधन! दक्षिणदिशामें द्राविड़देशके अन्तर्गत भगवान् चन्द्रशेखरका अरुणाचल नामक एक महान् क्षेत्र है। इसका विस्तार तीन योजन है। शिवभक्तोंको इसका अवश्य सेवन करना चाहिये। उसे आप पृथ्वीका हृदय ही समझें। भगवान् शिव उसे अपने हृदयमें रखते हैं। लोकहितकी दृष्टिसे साक्षात् भगवान् शङ्कर ही यहाँ पर्वतरूपमें प्रकट होकर अरुणाचल नामसे प्रसिद्ध हैं। स्वयं परमेश्वरस्वरूप होनेके कारण यह क्षेत्र महर्षियोंके लिये सुमेरु, कैलास तथा मन्दराचलसे भी अधिक माननीय है।'

दक्षिणके पञ्चतत्त्वलिङ्गोंमें अग्निलिङ्ग अरुणाचलम्में माना जाता है। अरुणाचलम्का ही तमिळ नाम तिरुवण्णमलै है। यह पर्वत बड़ा पवित्र माना जाता है। नन्दीश्वरने पृथ्वीपर कैलासके जो तीन शिखर स्थापित किये थे, उनमें एक अरुणाचलम् भी है। इसकी बहुत लोग परिक्रमा करते हैं। पर्वतके चारों ओर परिक्रमा-मार्ग बना है।

कार्तिक-पूर्णिमासे कई दिन पहलेसे पूर्णिमातक पर्वतके शिखरपर एक शिलापर तथा एक बड़े पात्रमें बराबर ढेर-का-ढेर कपूर जलाया जाता है। उस समय मनों कपूर जलाया जाता है। कपूरकी ऊँची अग्निशिखा पर्वत-शिखरपर उठती रहती है। उस अग्नि-शिखाको ही भगवान् शङ्करका अग्नितत्त्वलिङ्ग मानते हैं। कार्तिक-पूर्णिमाके समय यहाँ बहुत बड़ी भीड़ होती है। लोग अरुणाचलम्की परिक्रमा करते हैं और नीचेसे ही शिखरपर उठती अग्निशिखाके दर्शन करके उसे प्रणाम करते हैं। पर्वतपर जहाँ कपूर जलाते हैं, एक शिलामें चरणचिह्न बने हैं। अरुणाचलम्के ऊपर सुब्रह्मण्य स्वामी तथा देवीकी मूर्तियाँ हैं।

मार्ग

विल्लुपुरम्-गूडूर लाइनपर विल्लुपुरम्से ४२ मील दूर तिरुवण्णमलै स्टेशन है। स्टेशनसे अरुणाचलम् लगभग पौन मील दूर है।

काञ्ची, तिरुपति आदिसे मोटर-बसद्वारा भी यहाँ आनेकी सुविधा है। अरुणाचलम् अच्छा बाजार है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं।

अरुणाचलेश्वर

अरुणाचल पर्वतके नीचे पर्वतसे लगा हुआ अरुणाचलेश्वरका विशाल मन्दिर है। कहा जाता है इस मन्दिरका गोपुर दक्षिण-भारतका सबसे चौड़ा गोपुर है। दस मंजिल ऊँचे चार गोपुर मंदिरके चारों ओर हैं। भीतर भी कई छोटे गोपुर हैं।

गोपुरके भीतर प्रवेश करनेपर निज-मन्दिरतक पहुँचनेके पूर्व तीन आँगन मिलते हैं। पहले आँगनके दक्षिण भागमें एक सरोवर है। यात्री इसीमें स्नान करते हैं। सरोवरके घाटपर सुब्रह्मण्य स्वामीका मन्दिर है।

एक छोटे गोपुरको पार करनेपर दूसरा आँगन मिलता है। इसके भी दक्षिण भागमें पक्का सरोवर है।

दक्षिण भारतके कुछ मन्दिर—११
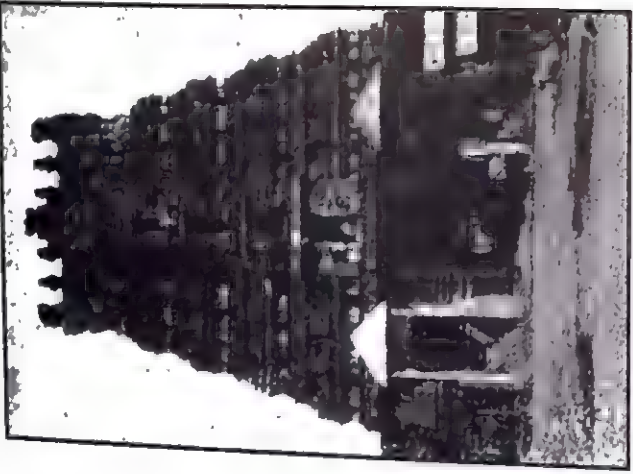
श्रीवेङ्कटेश-मन्दिरका गोपुर, तिरुमलै

श्रीवेङ्कटेश-मन्दिरके निकट स्वामि-पुष्करिणी, तिरुमलै

तिरुपतिसे तिरुमलै जानेवाली सड़कपर पुराना गोपुर

श्रीकालहस्तीश्वर-मन्दिर, कालहस्ती

श्रीअरुणाचलेश्वर-मन्दिर, तिरुवण्णमलै

श्रीरमणाश्रम, तिरुवण्णमलै

दक्षिण भारतके कुछ मन्दिर—१२
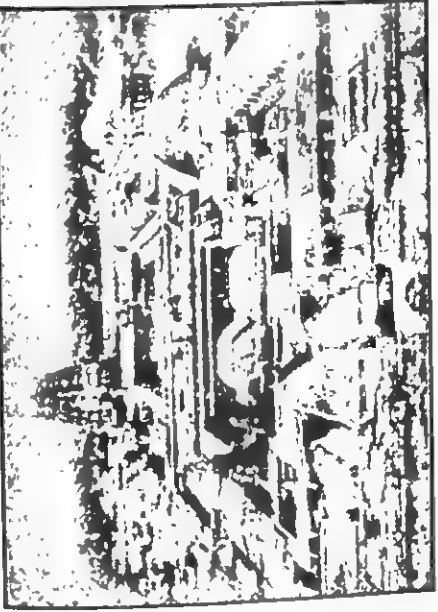
श्रीनटराज-मन्दिर, चिदम्बरम्‌का विहङ्गम-दृश्य
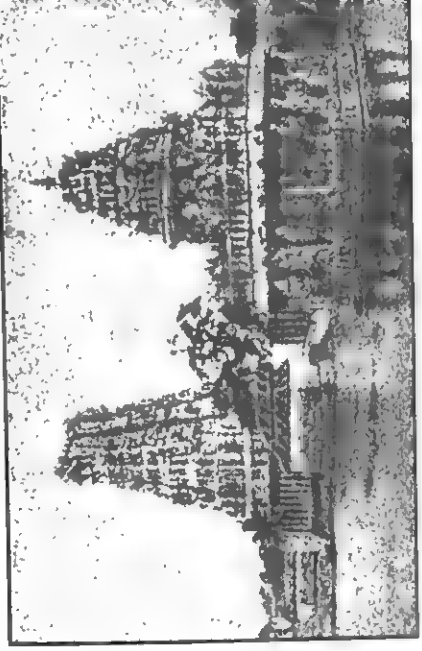
चिदम्बरम्-मन्दिरका एक दृश्य

शिवगङ्गा-सरोवर, नटराज-मन्दिर, चिदम्बरम्

श्रीअरविन्दकी समाधि, श्रीअरविन्दाश्रम (पाण्डिचेरि)
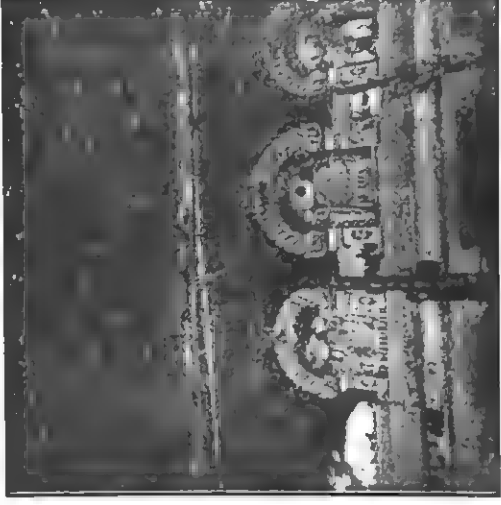
ज्ञानसम्बन्ध-मन्दिरके विमान, शियाळी

श्रीवैद्यनाथ-मन्दिर, वैदीश्वरम्

इसमें स्नान नहीं करने दिया जाता। इस सरोवरका जल पीनेके काममें आता है। सरोवरके अतिरिक्त इस आँगनमें कई मण्डप हैं। उनमें गणेशादि देवताओंकी मूर्तियाँ हैं।

एक और छोटे गोपुरको पार करनेपर तीसरा आँगन आता है, जिसमें अरुणाचलेश्वरका निज-मन्दिर है। निज-मन्दिरमें पाँच द्वारोंके भीतर शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित है। इस मन्दिरकी परिक्रमामें पार्वती, गणेश, नवग्रह, दक्षिणामूर्ति, शिवभक्तगण, नटराज आदि देवताओंके दर्शन होते हैं।

भगवान् अरुणाचलेश्वरके निज-मन्दिरके उत्तर श्रीपार्वतीजीका बहुत बड़ा मन्दिर उसी घेरेमें है। इस मन्दिरमें कई द्वारोंके भीतर श्रीपार्वतीजीकी भव्य मूर्ति प्रतिष्ठित है।

रमणाश्रम

तिरुवण्णमलै बाजारसे लगभग दो मीलपर अरुणाचलम्‌की परिक्रमामें ही महर्षि रमणका आश्रम है। दक्षिण-भारतके इस युगके संतोंमें श्रीरमण महर्षि बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। इन्होंने अरुणाचलम्‌पर कई स्थानोंमें कठोर तप तथा योग-साधन किया था। पर्वतके उन स्थानोंपर महर्षिके चित्र स्थापित हैं। बहुत-से श्रद्धालु यात्री पर्वतकी कठिन चढ़ाईका श्रम उठाकर उन स्थानोंका दर्शन करने जाते हैं। महर्षिका आश्रम पर्वतके नीचे सड़कसे लगा हुआ है। आश्रममें महर्षि रमणद्वारा पूजित देवीकी भव्य मूर्ति मुख्य मन्दिरमें प्रतिष्ठित है। वहीं महर्षिकी मूर्ति भी प्रतिष्ठित है। मुख्य मन्दिरके पास ही आश्रमके घेरेमें ही एक जगह महर्षिके निर्वाणका स्थान तथा दूसरे कमरेमें उनकी समाधि है। दूर-दूरके यात्री आश्रमके दर्शन करने आते हैं। यहाँ दर्शनार्थियों तथा साधकोंके ठहरने आदिकी उत्तम व्यवस्था है।

पांडिचेरी

विल्लुपुरम्‌से एक लाइन पांडिचेरीतक जाती है। यह नगर भारतमें फ्रांसीसी उपनिवेशोंकी राजधानी था। भारतमें फ्रांसीसी उपनिवेशोंका विलयन हो जानेपर भी यहाँ फ्रेंच सभ्यताके चिह्न हैं। नगर स्वच्छ तथा विशाल है। इसकी सड़कें खूब चौड़ी हैं।

पांडिचेरी समुद्रके किनारे बसा है, किन्तु यहाँ समुद्रस्नान निरापद नहीं है। यहाँके समुद्रमें अनेक बार समुद्री सर्प किनारेतक आ जाते हैं।

यहाँ धर्मशालाएँ नहीं हैं। बिना पूर्वानुमतिके यात्री अरविन्दाश्रममें भी ठहर नहीं सकते। नगरमें होटल हैं, जिनमें किरायेपर कमरे मिलते हैं।

पांडिचेरीकी प्रसिद्धि अरविन्दाश्रमके कारण ही हैं। श्रीरमण महर्षि तथा योगिराज अरविन्द—ये इस युगके दो महान् संत हो चुके हैं। समुद्रके किनारे अरविन्दाश्रमके कई पृथक् भवन हैं। इन्हींमेंसे एक भवनमें योगिराज श्रीअरविन्दकी समाधि है। यात्री समाधिके दर्शन करने जाते हैं। श्रीअरविन्दने इसी भवनमें २५ वर्षतक साधनामय जीवन व्यतीत किया है। आजकल आश्रमकी संचालिका तथा वहाँके साधकोंकी पथप्रदर्शिका श्रीमीरा नामकी एक वृद्धा फ्रेंच महिला है जिन्हें सभी आश्रमवासी माँ कहकर पुकारते हैं और उसी प्रकार आदर करते हैं।

अन्य मन्दिर

पांडिचेरीमें कई प्राचीन देव-मन्दिर हैं। इनमेंसे एक अत्यन्त प्राचीन गणेश-मन्दिर तो अरविन्दाश्रमके समीप ही है। यह मन्दिर छोटा है, किन्तु इसकी मूर्ति बहुत प्राचीन कही जाती है। इसके अतिरिक्त कालहस्तीश्वर तथा वेदपुरीश्वर—ये दो शिव-मन्दिर तथा श्रीवरदराजपेरुमाल वैष्णवमन्दिर नगरमें हैं। ये तीनों ही मन्दिर सुप्रतिष्ठित, प्राचीन और दर्शनीय हैं।

पांडिचेरीमें श्रीसुब्रह्मण्य भारत मेमोरियल भी दर्शनीय है। सुब्रह्मण्य भारती यहाँके राष्ट्रिय नेता तथा संत कवि हो गये हैं। उनकी स्मृतिमें यह संस्था स्थापित हुई है।

विल्लियनोर

पांडिचेरी आते समय पांडिचेरीसे ५ मील पहले विल्लियनोर स्टेशन आता है। पांडिचेरीसे यहाँ प्रायः आधे-आधे घंटेपर मोटर-बसें आती रहती हैं।

विल्लियनूर ही पांडिचेरी क्षेत्रका तीर्थस्थल है, जो आजकल उपेक्षित हो रहा है। यह एक साधारण बाजार है। बाजारमें श्रीत्रिकामेश्वर शिव-मन्दिर है। यह मन्दिर विशाल है, किन्तु प्रायः सुनसान पड़ा रहता है। मन्दिरके भीतर निज मन्दिरमें त्रिकामेश्वर-शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित है। मन्दिरके भीतर ही पार्वतीजीका मन्दिर है। यहाँ पार्वतीजीको कोकिलाम्बा कहते हैं।

विल्लियनूरके मन्दिरका इतना महत्त्व इस प्रदेशमें है कि उसके महोत्सवके समय फ्रेंच शासन-कालमें भी सभी सरकारी कार्यालयोंकी छुट्टी रहा करती थी।

विल्लियनूरमें ही त्रिकामेश्वर शिव-मन्दिरसे थोड़ी दूरपर एक विष्णु-मन्दिर भी है। यह मन्दिर त्रिकामेश्वर-मन्दिरसे छोटा है। यह भी प्रायः निर्जन ही रहता है।

काञ्ची

काञ्ची-माहात्म्य

रहस्यं सम्प्रवक्ष्यामि लोपामुद्रापते शृणु।
नेत्रद्वयं महेशस्य काशीकाञ्चीपुरीद्वयम्॥
विख्यातं वैष्णवं क्षेत्रं शिवसांनिध्यकारकम्।
काञ्चीक्षेत्रे पुरा धाता सर्वलोकपितामहः॥
श्रीदेवीदर्शनार्थाय तपस्तेपे सुदुष्करम्।
प्रादुरास पुरो लक्ष्मीः पद्महस्तपुरस्सरा॥
पद्मासने च तिष्ठन्ती विष्णुना जिष्णुना सह।
सर्वशृङ्गारवेषाढ्या सर्वाभरणभूषिता॥

(ब्रह्माण्डपुरा० ललितोपाख्या० ३५। १५—२०)

भगवान् हयग्रीव कहते हैं—'अगस्त्यजी! सुनिये, मैं बड़ी गुप्त बात बता रहा हूँ। काशी तथा काञ्चीपुरी—ये दोनों भगवान् शंकरके नेत्र हैं और वैष्णव-क्षेत्रके नामसे प्रसिद्ध हैं तथा भगवान् शंकरकी प्राप्ति करानेवाले हैं। काञ्चीक्षेत्रमें प्राचीनकालमें सर्वलोकपितामह श्रीब्रह्माजीने श्रीदेवीके दर्शनके लिये दुष्कर तपस्या की थी। फलतः भगवती महालक्ष्मी हाथमें कमल धारण किये उनके सामने प्रकट हुईं। वे कमलके आसनपर आसीन थीं तथा भगवान् विष्णुके साथ थीं। वे सभी आभरणोंसे आभूषित तथा सम्पूर्ण श्रृंगारसे युक्त थीं।'

काञ्ची

मोक्षदायिनी सप्तपुरियोंमें अयोध्या, मथुरा, द्वारावती (द्वारिका), माया (हरिद्वार), काशी और अवन्तिका (उज्जैन) की गणना है। इनमें काञ्ची हरि-हरात्मक पुरी है। इसके शिवकाञ्ची और विष्णुकाञ्ची ये दो भाग ही हैं।

काञ्ची ५१ शक्तिपीठोंमेंसे एक पीठ है। यहाँ सतीका कङ्काल (अस्थिपञ्जर) गिरा था। सम्भवतः कामाक्षी-मन्दिर ही यहाँका शक्तिपीठ है। दक्षिणके पञ्चतत्त्व-लिङ्गोंमेंसे भूतत्त्व-लिङ्गके सम्बन्धमें कुछ मतभेद हैं। कुछ लोग काञ्चीके एकाम्रेश्वर-लिङ्गको भूतत्त्व-लिङ्ग मानते हैं और कुछ लोग तिरुवारूरकी त्यागराज लिङ्गमूर्तिको पृथ्वीतत्त्व-लिङ्ग मानते हैं।

मार्ग

मद्रास-धनुष्कोटि लाइनपर मद्राससे ३५ मील दूर चेंगलपट स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन अरकोनम्‌तक जाती है। इस लाइनपर चेंगलपटसे २२ मील दूर कांजीवरम् स्टेशन है।

मद्रास, चेंगलपट, अरकोनम्, तिरुपति, तिरुवण्णमलै आदि सब प्रमुख स्थानोंको मोटर-बसें चलती हैं। इसलिये इधर यात्रीको मोटर-बससे आना अधिक सुविधाजनक होता है। उक्त किसी स्थानसे काञ्चीके लिये मोटर-बस मिल जाती है।

यहाँ स्टेशनका नाम तो कांजीवरम् है; किन्तु नगरका नाम काञ्चीपुरम् है। एक ही नगरके दो भाग माने जाते हैं—शिवकाञ्ची और विष्णुकाञ्ची है। ये भाग अलग-अलग नहीं हैं। नगरके दो मुहल्ले समझना चाहिये इनको। इनमें शिवकाञ्ची नगरका बड़ा भाग है। स्टेशनके पास यही भाग है। विष्णुकाञ्ची नगरका छोटा भाग है। यह स्टेशनसे लगभग तीन मील पड़ता है।

काञ्चीमें गर्मीके दिनोंमें बहुत-से कुएँ सूखे रहते हैं। यहाँ पीनेके लिये जलका संकोच रहता है। वैसे नगरमें नल लगे हैं।

शिवकाञ्चीमें ठहरनेके लिये गुजराती-धर्मशाला है। शिवकाञ्ची तथा विष्णुकाञ्चीमें भी और कई धर्मशालाएँ हैं। नगरसे लगभग ढाई मील दक्षिण पालार नदी है।

शिवकाञ्ची

सर्वतीर्थसरोवर—स्टेशनसे लगभग एक मील दूर सर्वतीर्थ नामक सुविस्तृत सरोवर है। यही शिवकाञ्चीमें स्नानके लिये सर्व मुख्यतीर्थ है। सरोवरके मध्यमें एक छोटा-सा मन्दिर है। सरोवरके चारों ओर अनेकों मन्दिर हैं। उनमें मुख्य मन्दिर काशी-विश्वनाथका है। बहुत-से यात्री सरोवरके तटपर मुण्डन कराते तथा श्राद्ध भी करते हैं।

एकाम्रेश्वर—शिवकाञ्चीका यही मुख्य मन्दिर है। सर्वतीर्थ-सरोवरसे यह पास ही (लगभग एक फर्लांग दूर) पड़ता है। यह मन्दिर बहुत विशाल है। मन्दिरके दक्षिण द्वारवाले गोपुरके सामने एक मण्डप है। इसके स्तम्भोंमें सुन्दर मूर्तियाँ बनी हैं।

मन्दिरके दो बड़े-बड़े घेरे हैं। पूर्वके घेरेमें दो कक्षाएँ हैं, जिनमें पहली कक्षामें प्रधान गोपुर, जो दस मंजिल ऊँचा है, मिलता है। यहाँ द्वारके दोनों ओर क्रमशः सुब्रह्मण्यम् तथा गणेशजीके मन्दिर हैं। दूसरी कक्षामें शिवगङ्गा-सरोवर है। इसमें ज्येष्ठके महोत्सवके समय उत्सव-मूर्तियोंका जलविहार होता है। उस समय यहाँ बड़ा मेला लगता है। इस सरोवरके दक्षिण एक मण्डपमें श्मशानेश्वर शिवलिङ्ग है। इस घेरेसे मिला मुख्य मन्दिरका द्वार है।

मुख्य मन्दिरमें तीन द्वारोंके भीतर श्रीएकाम्रेश्वर शिवलिङ्ग स्थित है। लिङ्गमूर्ति श्याम है। कहा जाता है यह वालुकानिर्मित है। लिङ्गमूर्तिके पीछे श्रीगौरीशङ्करकी युगल मूर्ति है। यहाँ एकाम्रेश्वरपर जल नहीं चढ़ता है। चमेलीके सुगन्धित तैलसे अभिषेक किया जाता है। प्रति सोमवारको भगवान्‌की सवारी निकलती है।

मुख्य मन्दिरकी दो परिक्रमाएँ हैं। पहली परिक्रमामें क्रमशः शिवभक्तगण, गणेशजी, १०८ शिवलिङ्ग, नन्दीश्वरलिङ्ग, चण्डिकेश्वरलिङ्ग तथा चन्द्रकण्ठबालाजीकी मूर्तियाँ हैं। दूसरी परिक्रमामें कालिकादेवी, कोटिलिङ्ग तथा कैलास-मन्दिर है। कैलास-मन्दिर एक छोटा-सा मन्दिर है, जिसमें शिव-पार्वतीकी स्वर्णमयी उत्सव-मूर्ति युगल विराजमान है। जगमोहनमें ६४ योगिनियोंकी मूर्तियाँ हैं। एक अलग मन्दिरमें श्रीपार्वतीजीका श्रीविग्रह है। उसके पश्चात् एक मन्दिरमें स्वर्ण-कामाक्षी देवी हैं। दूसरे मन्दिरमें अपनी दोनों पत्नियोंसहित सुब्रह्मण्य स्वामीकी मूर्ति है।

एकाम्रेश्वर मन्दिरके प्राङ्गणमें एक बहुत पुराना आमका वृक्ष है। यात्री इस वृक्षकी परिक्रमा करते हैं। इसके नीचे चबूतरेपर एक छोटे मन्दिरमें तपस्यामें लगी कामाक्षी पार्वतीकी मूर्ति है।

कहा जाता है कि एक बार पार्वतीने महान् अन्धकार उत्पन्न करके त्रिलोकीको त्रस्त कर दिया। इससे रुष्ट होकर भगवान् शङ्करने उन्हें शाप दिया। यहाँ एक आम्रवृक्षके नीचे तपस्या करके पार्वतीजी उस शापसे मुक्त हुईं और भगवान् शङ्करने प्रकट होकर उन्हें अपनाया। एकाम्रेश्वर-लिङ्ग पार्वतीजीद्वारा निर्मित वालुका-लिङ्ग है जिसकी वे पूजा करती थीं।

दूसरी परिक्रमाके पूर्ववाले गोपुरके पास श्रीनटराज तथा नन्दीकी सुनहरी मूर्तियाँ हैं। उस घेरेमें नवग्रहादि अन्य अनेक देव-विग्रह भी हैं।

कामाक्षी—एकाम्रेश्वर-मन्दिरसे लगभग दो फर्लांगपर (स्टेशनकी ओर) कामाक्षी देवीका मन्दिर है। यह दक्षिण-भारतका सर्वप्रधान शक्तिपीठ है। कामाक्षी देवी आद्याशक्ति भगवती त्रिपुरसुन्दरीकी ही प्रतिमूर्ति हैं। इन्हें कामकोटि भी कहते हैं।

कामाक्षी-मन्दिर भी विशाल है। इसके मुख्य मन्दिरमें कामाक्षी देवीकी सुन्दर प्रतिमा है। इसी मन्दिरमें अन्नपूर्णा तथा शारदाके भी मन्दिर हैं। एक स्थानपर आद्यशंकराचार्यकी मूर्ति है। कामाक्षी-मन्दिरके निज-द्वारपर कामकोटि-यन्त्रमें आद्यालक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, सौभाग्यलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, वीर्यलक्ष्मी तथा विजयलक्ष्मीका न्यास किया हुआ है। इस मन्दिरके घेरेमें एक सरोवर भी है।

कामाक्षीदेवीका मन्दिर श्रीआदिशंकराचार्यका बनवाया हुआ कहा जाता है। मन्दिरकी दीवारपर श्रीरूपलक्ष्मीसहित श्रीचोरमहाविष्णु (जिसकी १०९ वैष्णव दिव्यदेशोंमें गणना है) तथा मन्दिरके अधिदेवता श्रीमहाशास्ताके विग्रह हैं, जिनकी संख्या एक सौके लगभग होगी। शिवकाञ्चीके समस्त शैव एवं वैष्णव मन्दिर इस ढंगसे बने हैं कि उन सबका मुख कामकोटिपीठकी ओर ही है और उन देव-विग्रहोंकी शोभा-यात्रा जब-जब होती है, वे सभी इस पीठकी प्रदक्षिणा करते हुए ही घुमाये जाते हैं। इस प्रकार इस क्षेत्रमें कामकोटिपीठकी प्रधानता सिद्ध होती है।

वामन-मन्दिर—कामाक्षी मन्दिरसे दक्षिण-पूर्व थोड़ी ही दूरपर भगवान् वामनका मन्दिर है। इसमें वामन-भगवान्की विशाल त्रिविक्रम-मूर्ति है। यह मूर्ति लगभग दस हाथ ऊँची है। भगवान्का एक चरण ऊपरके लोकोंको नापने ऊपर उठा है। चरणके नीचे राजा बलिका मस्तक है। इस मूर्तिके दर्शन एक लंबे बाँसमें मशाल लगाकर पुजारी कराता है। मशालके बिना भगवान्के श्रीमुखका दर्शन नहीं हो पाता।

सुब्रह्मण्य-मन्दिर—वामनभगवान्के मन्दिरके सामनेकी ओर थोड़ी दूरीपर सुब्रह्मण्य-स्वामीका मन्दिर है। इसमें स्वामिकार्तिककी भव्य मूर्ति है। इस मन्दिरको यहाँ बहुत मान्यता प्राप्त है।

इनके अतिरिक्त शिवकाञ्चीमें और बहुत-से मन्दिर हैं। कहा जाता है शिवकाञ्चीमें १०८ शिव-मन्दिर हैं।

विष्णुकाञ्ची

वरदराज स्वामी—शिवकाञ्चीसे लगभग दो मीलपर विष्णुकाञ्ची है। यों तो यहाँ १८ विष्णु-मन्दिर बताये जाते हैं; किन्तु मुख्य मन्दिर श्रीदेवराजस्वामीका है, जिन्हें प्रायः वरदराजस्वामी कहा जाता है। भगवान् नारायण ही देवराज या वरदराज नामसे यहाँ सम्बोधित होते हैं।

श्रीवरदराज-मन्दिर विशाल है। भगवान्का निज-मन्दिर तीन घेरोंके भीतर है। इस मन्दिरके पूर्वका गोपुर ग्यारह मंजिल ऊँचा है। वैशाख-पूर्णिमाको इस मन्दिरका 'ब्रह्मोत्सव' होता है। यह दक्षिण-भारतका सबसे बड़ा उत्सव है।

पश्चिमके गोपुरसे प्रवेश करनेपर शतस्तम्भ-मण्डप मिलता है। इसकी निर्माणकला उत्तम है। इसके मध्यमें एक सिंहासन है। उत्सवके समय भगवान्की सवारी यहाँ पधरायी जाती है। इस मण्डपके उत्तर एक छोटा मण्डप और है।

मण्डपके पास ही कोटितीर्थ सरोवर है, जिसे 'अनन्तसर' भी कहते हैं। सरोवर पक्का बँधा है। सरोवरके मध्यमें एक मण्डप है। सरोवरके पश्चिम तटपर वराहभगवान्का मन्दिर है। वहाँ सुदर्शनका मन्दिर भी है। सुदर्शनके पीछे योगनृसिंहकी मूर्ति है।

सरोवरमें स्नान करके यात्री मन्दिरमें दर्शन करने जाते हैं। पश्चिम-गोपुरके भीतर, सामने ही स्वर्णमण्डित गरुड़स्तम्भ है। उसके दक्षिण एक मन्दिरमें श्रीरामानुजाचार्यका श्रीविग्रह है। यह स्मरण रखनेकी बात है कि श्रीरामानुजाचार्यके आठ प्रधान पीठोंमें एक पीठ यहाँ विष्णुकाञ्चीमें है। यहाँके आचार्य प्रतिवादि-भयंकर कहे जाते हैं।

गरुड़स्तम्भके पूर्व दूसरे घेरका गोपुर है। इस घेरेके दक्षिण-पश्चिम भागमें श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर है। श्रीलक्ष्मीजीकी झाँकी बहुत मनोरम है। यहाँ लक्ष्मीजीको श्रीपेरुदेवी कहते हैं।

इस घेरेके पश्चिम ओर भगवान्के विविध वाहन हैं। उत्सवके समय इन वाहनोंपर भगवान्की सवारी निकलती है। इनमें हनुमान्, हाथी, घोड़ा, गरुड़, मयूर, बाघ, सिंह, शरभ आदिकी चाँदी या सोनेसे मण्डित मूर्तियाँ हैं।

तीसरे घेरेमें भगवान् देवराज (श्रीवरदराज)-का निज-मन्दिर आँगनके बीचमें है। यह मन्दिर एक ऊँचे चबूतरेपर बना है। इस चबूतरेको हस्तिगिरि कहते हैं और ऐरावतका प्रतीक मानते हैं। इस चबूतरेमें सामने ही एक छोटा मन्दिर है। उसमें भगवान् नृसिंहकी सिंहासनपर बैठी मूर्ति है। इन्हें योगनृसिंह कहा जाता है।

योगनृसिंहके दर्शन करके परिक्रमा करते हुए विष्वक्सेनकी मूर्ति मिलती है। परिक्रमामें पीछेकी ओरसे हस्तिगिरि (चबूतरे) पर चढ़नेके लिये २४ सीढ़ियाँ बनी हैं। इन्हें गायत्रीके अक्षरोंका प्रतीक माना

काञ्चीपुरीकी एक झलक
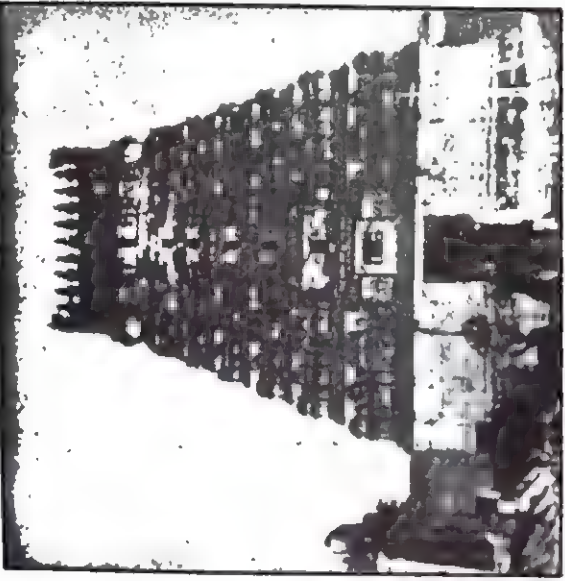
श्रीवरदराज-मन्दिर (विष्णुकाञ्ची)
प्रधान गोपुर

शतस्तम्भ-मण्डप (वरदराज-मन्दिर)

श्रीवरदराज-मन्दिर-भीतरी गोपुर
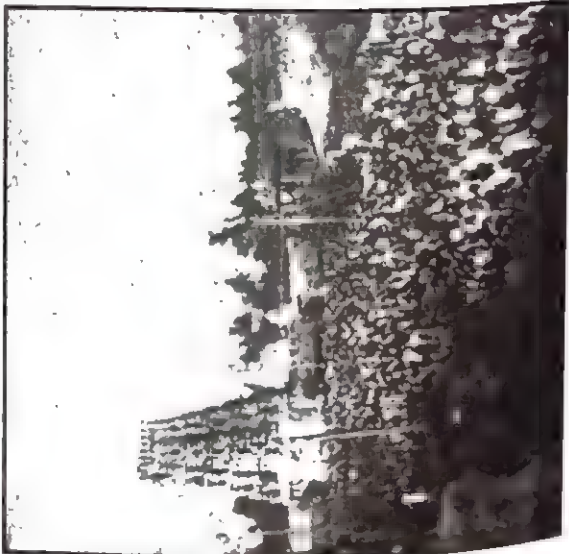
कच्छपेश्वर-मन्दिरका गोपुर (शिवकाञ्ची)

कोटि-तीर्थ सरोवर (विष्णुकाञ्ची)

त्रिविक्रम-मन्दिरका गोपुर तथा पुष्करिणी
(शिवकाञ्ची)

काञ्चीपुरीकी एक झलक (२)

सर्वतीर्थ-सरोवर

एकाम्रनाथ-मन्दिर तथा शिवगङ्गा-सरोवर
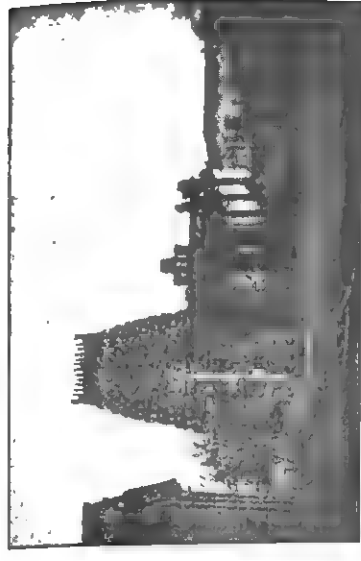
श्रीएकाम्रनाथ-राजगोपुर
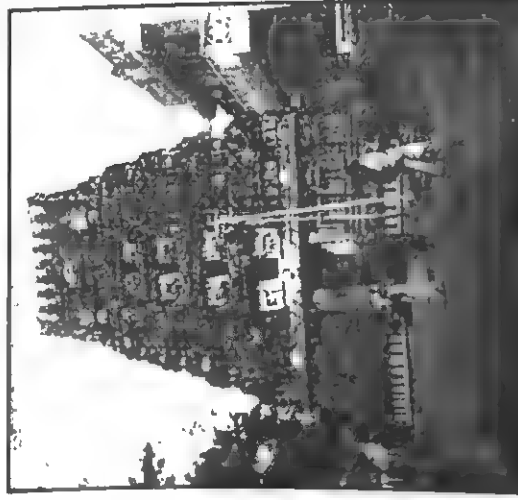
श्रीकामाक्षी-मन्दिर
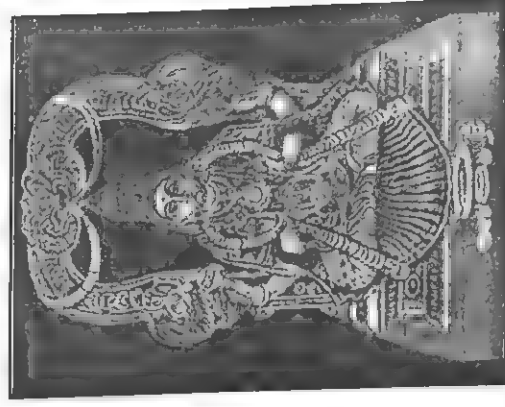
श्रीकामाक्षी देवी
(शुक्रवारके शृङ्गारमें)

श्रीकामाक्षी-मन्दिरमें आद्य-
शङ्कराचार्य-मूर्ति

जाता है। ऊपर एक द्वारसे भीतर जानेपर मन्दिरके चारों ओर जगमोहन दिखायी पड़ता है और छतके चारों ओर परिक्रमा-पथ है।

भगवान्‌के निज-मन्दिरको विमान कहते हैं। तीन द्वारोंके भीतर चार हाथ ऊँची श्रीवरदराज (भगवान् नारायण)-की श्यामवर्ण चतुर्भुज मूर्ति विराजमान है। भगवान्‌के गलेमें शालग्रामोंकी एक माला है। वहाँ भगवान्‌की मनोहर उत्सव-मूर्तियाँ भी हैं।

श्रीवरदराजभगवान्‌का दर्शन करके यात्री नीचे उसी मार्गसे उतरता है। निज-मन्दिरकी परिक्रमामें नीचे आंडाल, धन्वन्तरि, गणेशजी आदिकी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरकी परिक्रमाओंमें अन्य अनेक देव-मूर्तियाँ तथा कई मण्डप हैं।

महाप्रभुकी बैठक—विष्णुकाञ्चीमें ही श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है।

देवाधिराज—भगवान्‌की यह देवाधिराज (शेषशायी)-मूर्ति सरोवरके जलमें डूबी रहती है। २० वर्षमें केवल एक बार यह मूर्ति जलसे बाहर लायी जाती है। उस समय विष्णुकाञ्चीमें बहुत बड़ा महोत्सव होता है।

विष्णुकाञ्चीमें श्रीवरदराज-मन्दिरके समीप धर्मशाला है। यहाँ शंकराचार्यका कामकोटिपीठ है। यहाँ भगवान् आदिशंकराचार्य स्वयं विराजे थे और पीठकी स्थापना करके कैलासको सिधार गये। जगद्गुरु श्रीचन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती वहाँके वर्तमान वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध एवं तपोवृद्ध पीठाधिपति हैं। विष्णुकाञ्चीसे आधा मीलपर प्राचीन शिवास्थान है, जिसे आजकल 'तेनंपाक्कम्' कहते हैं। इसका जीर्णोद्धार वर्तमान पीठाधिपतिने किया है।

चिदम्बरम्

मद्रास-धनुष्कोटि लाइनमें विल्लुपुरम्‌से ५० मील दूर चिदम्बरम् स्टेशन है। यह दक्षिण-भारतका प्रमुख तीर्थ है। सुप्रसिद्ध नटराज शिवमूर्ति यहीं है। शङ्करजीके पञ्चतत्त्वलिङ्गोंमेंसे आकाशतत्त्वलिङ्ग चिदम्बरम्‌में ही माना जाता है। मन्दिर स्टेशनसे लगभग १ मील दूर है। यहाँ सेठ मँगनीरामजी रामकुमार बाँगड़की धर्मशाला है। दूसरी भी कई धर्मशालाएँ मन्दिरके पास हैं।

यहाँ नटराज शिवका मन्दिर ही प्रधान है। इस मन्दिरका घेरा लगभग १०० बीघेका है। इस घेरेके भीतर ही सब दर्शनीय मन्दिर हैं। पहले घेरेके पश्चात् ऊँचे गोपुर दूसरे घेरेमें मिलते हैं। पहले घेरेमें छोटे गोपुर हैं। दूसरे घेरेके गोपुर ९ मंजिलके हैं। उसपर नाट्य-शास्त्रके अनुसार विभिन्न नृत्यमुद्राओंकी मूर्तियाँ बनी हैं।

इन गोपुरोंमेंसे प्रवेश करनेपर एक और घेरा मिलता है। दक्षिणके गोपुरसे भीतर प्रवेश करें तो तीसरे घेरेके द्वारके पास गणेशजीका मन्दिर मिलता है। गोपुरके सामने उत्तर एक छोटे मन्दिरमें नन्दीकी विशाल मूर्ति है। इसके आगे नटराजके निजमन्दिरका घेरा है। यह निजमन्दिर भी दो घेरेके भीतर है। घेरेकी भित्तियोंपर नन्दीकी मूर्तियाँ थोड़ी-थोड़ी दूरीपर हैं। इस चौथे घेरेमें अनेक छोटे मन्दिर हैं। नटराजका निज-मन्दिर चौथे घेरेको पार करके पाँचवें घेरेमें है।

सामने नटराजका सभा-मण्डप है। आगे एक स्वर्ण-मण्डित स्तम्भ है। नटराज-सभाके स्तम्भोंमें सुन्दर मूर्तियाँ बनी हैं। आगे एक आँगनके मध्यमें कसौटीके काले पत्थरका श्रीनटराजका निज-मन्दिर है। इसके शिखरपर स्वर्णपत्र चढ़ा है। मन्दिरका द्वार दक्षिण दिशामें है। मन्दिरमें नृत्य करते हुए भगवान् शङ्करकी बड़ी सुन्दर मूर्ति है। यह मूर्ति स्वर्णकी है। नटराजकी झाँकी बहुत ही भव्य है। पासमें ही पार्वती, तुम्बुरु, नारदजी आदिकी कई छोटी स्वर्ण-मूर्तियाँ हैं।

श्रीनटराजके दाहिनी ओर काली भित्तिमें एक यन्त्र खुदा है। वहाँ सोनेकी मालाएँ लटकती रहती हैं। यह नीला शून्याकार ही आकाशतत्त्वलिङ्ग माना जाता है। इस स्थानपर प्रायः पर्दा पड़ा रहता है। लगभग ११ बजे दिनको अभिषेकके समय तथा रात्रिमें अभिषेकके समय इसके दर्शन होते हैं। यहाँ सम्पुटमें रखे दो शिवलिङ्ग हैं। एक स्फटिकका और दूसरा नीलमणिका। इनके अतिरिक्त एक बड़ा-सा दक्षिणावर्त शङ्ख है। इनके दर्शन अभिषेक-पूजनके समय दिनमें ११ बजेके लगभग होते हैं। स्फटिकमणिकी मूर्तिको चन्द्रमौलीश्वर तथा नीलमकी मूर्तिको रत्नसभापति कहते हैं।

श्रीनटराज-मन्दिरके सामनेके मण्डपमें जहाँ नीचेसे खड़े होकर नटराजके दर्शन करते हैं, वहाँ बायीं ओर

श्रीगोविन्दराजका मन्दिर है। मन्दिरमें भगवान् नारायणकी सुन्दर शेषशायी मूर्ति है। वहाँ लक्ष्मीजीका तथा अन्य कई दूसरे छोटे उत्सव-विग्रह भी हैं। श्रीगोविन्दराज-मन्दिरके बगलमें (नटराज-सभाके पास पश्चिम भागमें) भगवती लक्ष्मीका मन्दिर है। इसमें 'पुण्डरीकवल्ली' नामक लक्ष्मीजीकी मनोहर मूर्ति है।

नटराज-मन्दिरके चौथे घेरेमें ही एक मूर्ति भगवान् शङ्करकी है। शङ्करजीके बायीं ओर गोदमें पार्वती विराजमान हैं। एक हनुमान्जीकी चाँदीकी मूर्ति है। एक घेरेमें नवग्रह स्थापित हैं और एक स्थानपर ६४ योगिनियोंकी मूर्ति है। यहाँ चौथे घेरेमें दक्षिण-पश्चिमके कोनेपर पार्वतीजीका मन्दिर है। उसके दक्षिण नाट्येश्वरीकी मूर्ति है। नटेशका मन्दिर मध्यभागमें है। इस घेरेमें कई मन्दिर और मण्डप हैं।

नटराज-मन्दिरके निजी घेरेके बाहर (चौथे घेरेमें) उत्तर एक मन्दिर है। इस मन्दिरमें सामने सभामण्डप है। कई ड्योढ़ी भीतर भगवान् शंकरका लिङ्गमय विग्रह है। यही चिदम्बरम्का मूल विग्रह है। महर्षि व्याघ्रपाद तथा पतञ्जलिने इसी मूर्तिकी अर्चा की थी। उनकी आराधनासे प्रसन्न होकर भगवान् शंकर प्रकट हुए थे। उन्होंने ताण्डव-नृत्य किया। उस नृत्यके स्मारकरूपमें नटराजमूर्तिकी स्थापना हुई। आदि मूर्ति तो यह लिङ्गमूर्ति ही है। यहाँ इस मन्दिरमें एक ओर पार्वती-मूर्ति है।

नटराज-मन्दिरके दो घेरोंके बाहर पूर्वद्वारसे निकलें तो उत्तर ओर एक बहुत बड़ा शिवगङ्गा-सरोवर मिलता है। इसे हेमपुष्करिणी भी कहते हैं। शिवगङ्गा-सरोवरके पश्चिम पार्वती-मन्दिर है। पार्वतीजीको वहाँ शिवकाम-सुन्दरी कहते हैं। यह मन्दिर नटराजके निजमन्दिरसे सर्वथा पृथक् है और विशाल है। तीन ड्योढ़ी भीतर जानेपर भगवती पार्वतीके दर्शन होते हैं। मूर्ति मनोहर है। इस मन्दिरका सभामण्डप भी सुन्दर है।

पार्वती-मन्दिरके समीप ही सुब्रह्मण्यम्का मन्दिर है। इस मन्दिरके बाहर एक मयूरकी मूर्ति बनी है। सभामण्डपमें भगवान् सुब्रह्मण्यकी लीलाओंके अनेक सुन्दर चित्र दीवालोंपर ऊपरकी ओर अङ्कित हैं। मन्दिरमें स्वामिकार्तिककी भव्य मूर्ति है।

शिवगङ्गा-सरोवरके पूर्व एक पुराना सभामण्डप है। इसे 'सहस्रस्तम्भमण्डपम्' कहते हैं। यह अब जीर्ण अवस्थामें है। चिदम्बरम्-मन्दिरके घेरेमें एक ओर एक धोबी, एक चाण्डाल तथा दो शूद्रोंकी मूर्तियाँ हैं। ये शिवभक्त हो गये हैं, जिन्हें भगवान् शङ्करने दर्शन दिया था।

आस-पासके तीर्थ

तिरुवेट्कलम्—चिदम्बरम् स्टेशनके पूर्व विश्वविद्यालयके पास एक स्थान है। यहाँ भगवान् शंकरका मन्दिर है। उसमें पृथक् पार्वती-मन्दिर है। कहा जाता है कि अर्जुनने यहाँ भगवान् शंकरसे पाशुपतास्त्र प्राप्त किया था।

वरेमादेवी—चिदम्बरम्से १६ मील पश्चिम यह स्थान है। यहाँ वेदनारायणका मन्दिर है। वेदनारायणरूपमें भगवान् नारायण ही हैं। इस मन्दिरमें जो अलग लक्ष्मी मन्दिर है, उसकी लक्ष्मीजीको ही वरेमादेवी कहते हैं।

वृद्धाचलम्—वरेमादेवीके स्थानसे १३ मील पश्चिम वृद्धाचलम् है। विल्लुपुरम्से एक रेलवे-लाइन वृद्धाचलम्-लालगुडी होकर त्रिचनापल्ली जाती है। स्टेशनसे थोड़ी ही दूरीपर शिव-मन्दिर है। कहा जाता है कि यहाँ विभीषित नामके ऋषिने शङ्करजीकी आराधना की थी। यहाँ मुख्य मन्दिरमें शिवलिङ्ग तथा पार्वतीका मन्दिर तो हैं ही। उनके अतिरिक्त मन्दिरमें सात कालीकी मूर्तियाँ तथा २१ ऋषियोंकी मूर्तियाँ हैं।

श्रीमुष्णम्—यह स्थान चिदम्बरम्से २६ मील दूर है। मोटर-बस जाती है। यहाँ उत्तराद्रि-रामानुजकोटमें ठहरनेकी व्यवस्था है। कहा जाता है कि वराह-भगवान्का अवतार यहीं हुआ था। यहाँ मन्दिरमें यज्ञवाराहकी सुन्दर मूर्ति है। पासमें श्रीदेवी और भूदेवी हैं। इस मन्दिरके अतिरिक्त यहाँ एक बालकृष्ण-भगवान्का मन्दिर भी है। यहाँ सप्त कन्याओंके तथा अम्बुजवल्ली (लक्ष्मी) एवं कात्यायनपुत्री (दुर्गादेवी)-के भी मन्दिर हैं।

काट्टुमन्नारगुडी—चिदम्बरम्से १६ मील दक्षिण यह स्थान है। यहाँ भगवान् वीरनारायणका मन्दिर है। भगवान् नारायणके साथ श्रीदेवी तथा भूदेवी विराजमान हैं। मन्दिरमें राजगोपाल (श्रीकृष्ण), रुक्मिणी, सत्यभामा आदिकी भी मूर्तियाँ हैं। कहा जाता है कि यहाँ मतंग ऋषिने तपस्या की थी।

शियाली

चिदम्बरम्से १२ मीलपर शियाली स्टेशन है। स्टेशनसे थोड़ी ही दूरपर 'ताड़ारम्' नामक भगवान् विष्णुका सुन्दर मन्दिर है। इस मन्दिरके सामने ही हनुमान्जीका मन्दिर है।

स्टेशनसे लगभग एक मील दूर ब्रह्मपुरीश्वर शिव-मन्दिर है। यह मन्दिर बहुत विशाल है। गोपुरके भीतर जानेपर एक विशाल मण्डप मिलता है। इसमें पार्वती (त्रिपुरसुन्दरी) देवीका सुन्दर मन्दिर मण्डपसे लगा हुआ है। मण्डपके वामभागमें सरोवर है। मण्डपके सम्मुख खुले घेरेमें कई छोटे-छोटे मन्दिर हैं। घेरेके आगे बहुत बड़ा मन्दिर है। उसमें ब्रह्मपुरीश्वरम् शिवलिङ्ग है। परिक्रमामें भूकैलासनाथ, परमेश्वरम्, पार्वती, गणेश, सुब्रह्मण्यम्, नायनार भक्तगण, ब्रह्मा, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी और सत्यनारायणके श्रीविग्रह हैं।

तिरुज्ञानसम्बन्ध नामक शैवाचार्यकी यह जन्मभूमि है। वे कार्तिकेयके अवतार माने जाते हैं। कहते हैं साक्षात् माता पार्वतीने उनको स्तनपान कराया और भगवान् शङ्करने प्रत्यक्ष दर्शन देकर उन्हें ज्ञानोपदेश किया था। सरोवरके समीप उनकी भी मूर्ति है। मन्दिरमें भी उनकी मूर्ति है। उनका जन्म जिस घरमें हुआ था, वह भी सुरक्षित है। वह मन्दिरके बाहर शहरमें है।

वैदीश्वरन्-कोइल्

चिदम्बरम्-मायावरम्के बीचमें, चिदम्बरम्से १६ मीलपर यह स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग एक मील दूर वैद्येश्वर (वैद्यनाथ) मन्दिर है। यह मन्दिर बहुत बड़ा है। मन्दिरके दक्षिण सुन्दर सरोवर है। यहाँ गोपुरके भीतर एक स्वर्णमण्डित स्तम्भ है। मन्दिरके घेरेमें अनेकों मण्डप तथा मन्दिर हैं। मुख्य मन्दिरमें वैद्यनाथ नामक लिङ्गमूर्ति है। पास ही दूसरे मन्दिरमें भगवती पार्वतीकी मूर्ति है। इसका नाम बालाम्बिका है। एक अलग मन्दिरमें सुब्रह्मण्यम् (स्वामिकार्तिक)-का मनोहर श्रीविग्रह है। मन्दिरमें नटराज, नवग्रह तथा नायनार भक्तोंकी भी सुन्दर मूर्तियाँ हैं—यहाँ आस-पासके तथा दूरके लोग भी बच्चोंका मुण्डन-संस्कार कराते हैं।

तिरुपुंकूर

वैदीश्वरन्-कोइल्से दो मील दूर तिरुपुंकूर क्षेत्र है। यह प्रसिद्ध हरिजन शिवभक्त नन्दनारसे सम्बद्ध है।

तिरुवेन्काडु

तिरुवेन्काडुको श्वेतारण्य भी कहते हैं। यह चिदम्बरम्से १५ मील आगे वैदीश्वरन्-कोइल् स्टेशनसे कुछ मीलोंकी दूरीपर है। यहाँके मन्दिरमें अघोरमूर्ति (भगवान् शिवका एक रौद्र विग्रह) प्रमुख देवता हैं। कहा जाता है, जलन्धरका पुत्र मारुत्वासुर बड़ा दुष्ट था। उसने देवताओंको बड़ा कष्ट दिया। देवताओंने भगवान् शङ्करसे प्रार्थना की। उन्होंने नन्दीको असुर-निग्रहार्थ भेजा। नन्दीने असुरको उठाकर समुद्रमें फेंक दिया। इसपर मारुत्वने शंकरजीकी आराधना करके उनका त्रिशूल प्राप्त किया और उसे लेकर वह पुनः नन्दीपर दौड़ा। नन्दीने अपने स्वामीके आयुधको देखकर आक्रमणका साहस नहीं किया। इधर असुरने शूल चलाकर नन्दीकी पूँछ तथा सींग काट डाले। आज भी नन्दी वृषभकी एक इस प्रकारकी प्रतिमा यहाँ वर्तमान है। जब भगवान् शिवको यह बात विदित हुई, तब वे क्रुद्ध होकर उपर्युक्त अघोररूपमें वहाँ तत्काल पहुँचे और असुरराजको मार गिराया।

यहाँकी दीवालोंपर मन्दिरके अधिकांश वृत्तोंका (तमिळमें) उल्लेख है। इसपर खुदा है कि चौलनरेश राजरानीने सोनेका कटोरा तथा पद्मरागमाणिकी जंजीर भगवान्को अर्पण की।

मायवरम्

दक्षिण-रेलवेकी मद्राससे धनुष्कोटि जानेवाली लाइनपर मायावरम् प्रसिद्ध स्टेशन है। यह चिदम्बरम्से २३ मील है। 'मायवरम्' का प्राचीन संस्कृत नाम 'मायूरम्' है। तमिळमें इसे 'तिरुमयिलाडुतुरै' कहते हैं। यह नगर कावेरीके तटपर है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं।

मयूरेश्वर—मायवरम्का मुख्य मन्दिर श्रीमयूरेश्वर-मन्दिर है। इस मन्दिरमें भगवान् मयूरेश्वर शिवलिङ्गरूपमें स्थित हैं। मन्दिरमें पार्वती-मन्दिर है। पार्वतीजीका नाम यहाँ 'अभयाम्बा' है। तमिळमें उन्हें 'अञ्चला' कहते हैं। मन्दिरके घेरेमें ही बड़ा सरोवर है।

कथा

दक्षयज्ञके समय जब रुद्रगण यज्ञध्वंस करनेको उद्यत हुए, तब एक मयूर भागकर सतीकी शरणमें आया। सतीने उसे शरण दी। पीछे सतीने योगाग्निसे शरीर छोड़ा। उस समय उनके मनमें उस मयूरका स्मरण था, इससे वे मयूरी होकर उत्पन्न हुईं। मयूरीरूपमें यहाँ उन्होंने भगवान् शङ्करकी आराधना की। भगवान् शिवने उन्हें दर्शन दिया। उसी समय इस मयूरेश्वर-मूर्तिके रूपमें शङ्करजी स्थित हुए। मयूरी-देह त्यागकर सतीने हिमालयके यहाँ पार्वतीरूपमें शरीर धारण किया। मयूरको अभय देनेके कारण यहाँ देवीका नाम अभयाम्बिका है।

अन्य तीर्थ एवं मन्दिर

वृषभतीर्थ—यहाँ कावेरीपर वृषभतीर्थ है। नन्दीश्वरने यहाँ तपस्या की थी। कावेरी-तटपर ही गणेशजीका मन्दिर है।

ब्रह्मतीर्थ—मयूरेश्वर-मन्दिरमें ही है।

ऐयन्कुलम्—यह सरोवर मन्दिरके पूर्व है।

अगस्त्यतीर्थ—मन्दिरके भीतर दक्षिणामूर्तिके समीप यह चतुष्कोण-कूप है।

दक्षिणामूर्ति-मन्दिर—कावेरीके उत्तर दक्षिणामूर्तिशिव (आचार्यरूपमें भगवान् शङ्कर)-का प्रसिद्ध मन्दिर है। नन्दीश्वरको यहीं भगवान्ने ज्ञानोपदेश किया था।

सप्तमातृका—यह मन्दिर मयूरेश्वर-मन्दिरसे उत्तर सड़कपर है।

ऐय्यारप्पर्—यह शिव-मन्दिर ही है। मयूरेश्वर-मन्दिरसे यह पश्चिम है।

मारियम्मन्—शीतलादेवीका यह मन्दिर नगरके पास है।

ऐयनार्—इनका दूसरा नाम 'शास्ता' है। ये हरि-हरपुत्र कहे जाते हैं। इनका मन्दिर मयूरेश्वर-मन्दिरसे दक्षिण थोड़ी दूरपर है।

इनके अतिरिक्त कण्व, गौतम,अगस्त्य, भरद्वाज तथा इन्द्रने इस क्षेत्रमें तपस्या की थी। उनके द्वारा स्थापित पाँच शिवलिङ्ग अलग-अलग हैं।

मायावरम्में तिरुज्ञान-सम्बन्ध, तिरुनावुक्करशु, अरुणगिरि आदि अनेक शैवाचार्य पधारे हैं।

स्टेशनसे मयूरेश्वर-मन्दिरको सीधी सड़क गयी है। मार्गमें शार्ङ्गपाणिका एक छोटा मन्दिर मिलता है। उसमें शेषशायी भगवान् तथा श्रीदेवी एवं भूदेवीकी मूर्तियाँ हैं। कुछ आगे 'पुण्यकेश्वर' शिव-मन्दिर है। इसमें महादेव, पार्वती तथा नटराजके विग्रह हैं। इस स्थानसे मयूरेश्वर-मन्दिर डेढ़ मील दूर है। मयूरेश्वर-मन्दिरसे लगभग एक भीलपर काशी विश्वनाथ-मन्दिर है।

कावेरीके पार श्रीरङ्गनाथजीका मन्दिर है। यहाँ शेषशायी भगवान्की श्रीमूर्ति है। यह मन्दिर विशाल है। भगवान्के नाभि-कमलपर ब्रह्माकी मूर्ति है।

वाजूर

यह मायवरम् स्टेशनसे पाँच मील पश्चिम-दक्षिणकी ओर है। भगवान् शङ्कर यहाँ विराटेश्वरके रूपमें विराजमान हैं। कहा जाता है कि पूर्वकालमें ऋषियोंको शङ्करजीकी सर्वोत्कृष्टतापर संदेह हुआ और परीक्षाके लिये उन्होंने एक हाथी बनाकर भेजा। शङ्करजीने गजसंहारमूर्ति धारणकर हाथीको मार डाला और आभूषणके ढंगपर उसकी खाल (गजचर्म) ओढ़ ली। पार्वतीजी भगवान्के इस अद्भुत रूपको देखकर डर गयीं और स्कन्दको लेकर उनके बगलमें खड़ी हो गयीं। हाथी भगवान् विराटेश्वर (गजसंहार-मूर्ति) तथा नन्दीके बीचमें विराजमान है। भिक्षादान आदिकी धातुमूर्तियाँ भी इस मन्दिरमें हैं।

दक्षिणभारतके कुछ मन्दिर—१३
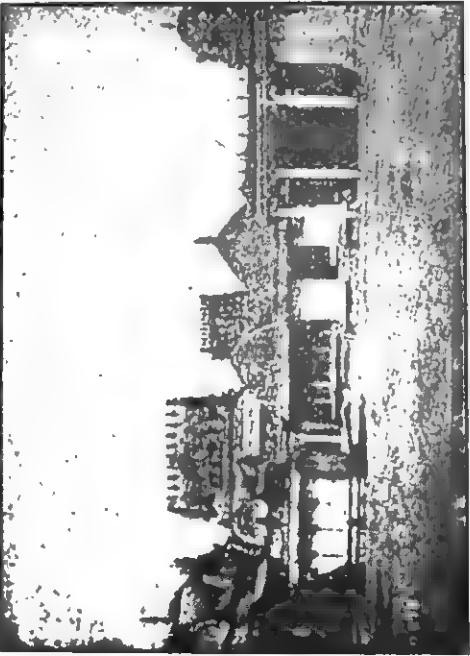
अघोरमूर्ति-मन्दिर, तिरुवेन्काडु
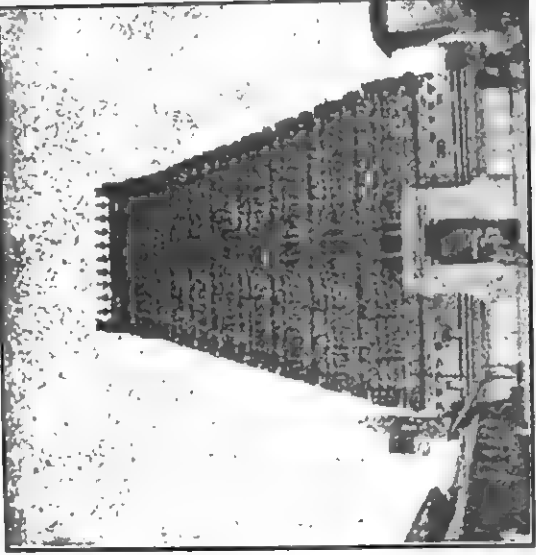
श्रीमयूरेश्वर-मन्दिरका गोपुर, मायवरम्
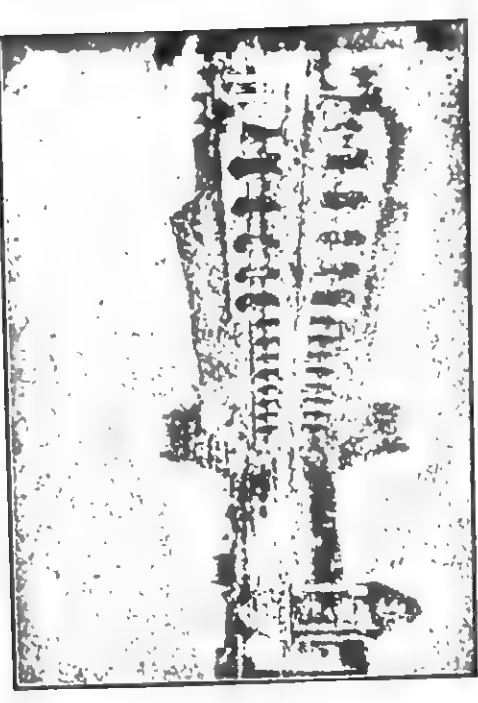
मयूरेश्वर-मन्दिरमें सरोवर, मायवरम्
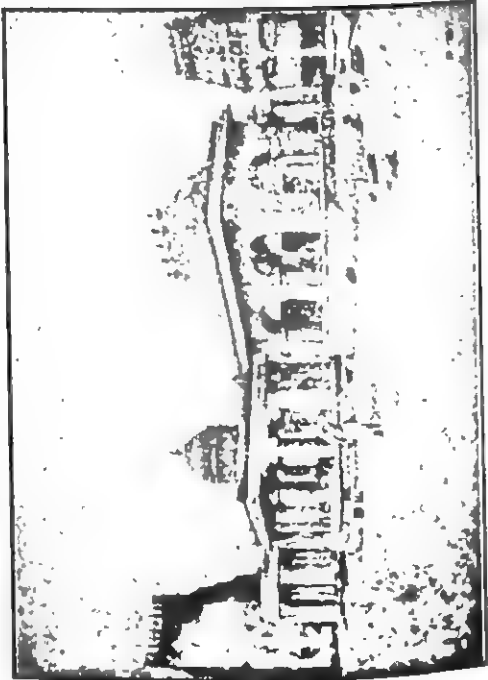
श्रीमहालिङ्गेश्वर-मन्दिर, तिरुवडमरुदूर
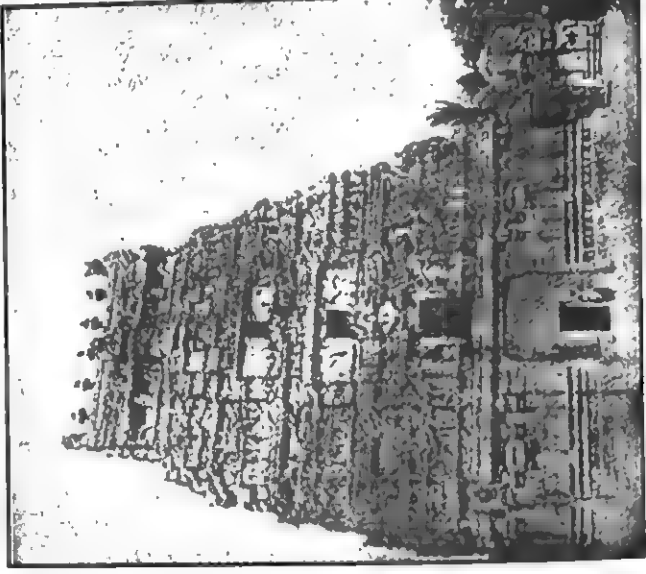
श्रीगणपतीश्वर-मन्दिर, तिरुच्चेनूगाट्टगुडि

श्रीवेदपुरीश्वर शिव-मन्दिर, वेदारण्यम्

दक्षिणभारतके कुछ मन्दिर—१४
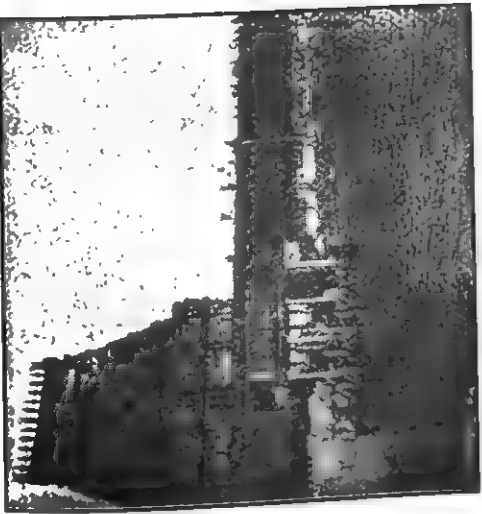
श्रीत्यागराज-मन्दिरका गोपुर, तिरुवारूर
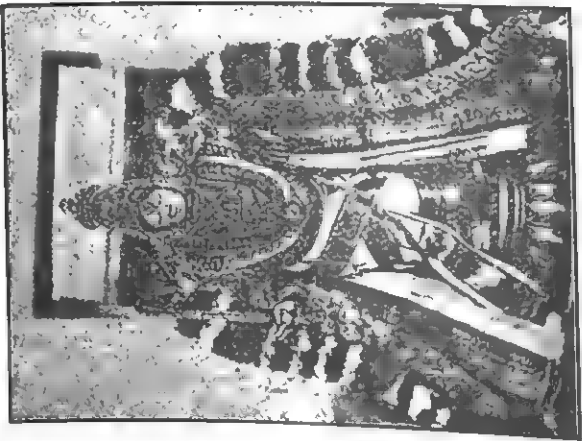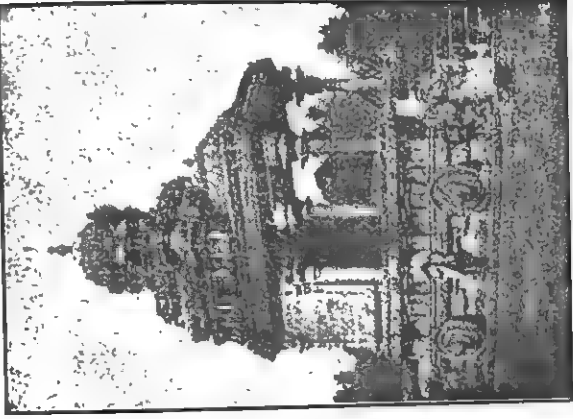
त्यागराज-मन्दिरके बाहरका मण्डप

नीलायताक्षी-अम्मन् मन्दिर, नागपत्तनम्

श्रीराजगोपाल-भगवान्, मन्नारगुडि
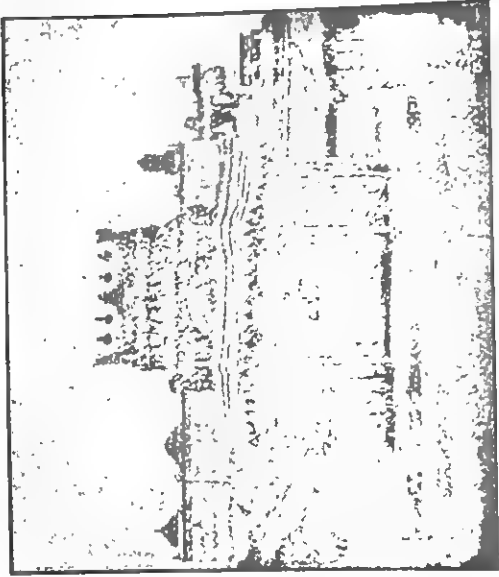
श्रीसुब्रह्मण्य-मन्दिर, स्वामिमलै
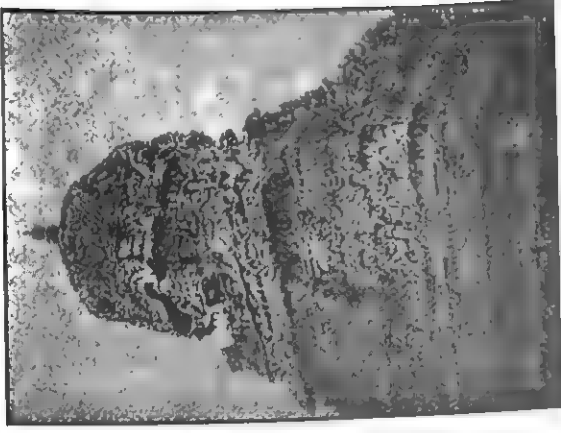
श्रीकल्याणसुन्दरेश-मन्दिर (नल्लूरका विमान)

636 Tirthank_Section_17_1_Front

तिरुक्कडयूर

यह स्थान मायवरम्से १२ मील दक्षिण तथा पूर्वकी ओर (अग्निकोणमें) है। यह शैवमतका दूसरा गढ़ है। मन्दिरके आराध्यदेव अमृतकरेश्वर नामसे विख्यात हैं। इनकी आराधना कभी दुर्गा, सप्तकन्याओं तथा वासुकि-नागने की थी। पुराणोंमें इनके सम्बन्धमें यह कथा आती है कि मार्कण्डेयजीकी यमराजसे रक्षा करनेके लिये भगवान् शङ्कर लिङ्गसे प्रकट हो गये थे। इसका चित्रण यहाँ ध्वजस्तम्भपर बड़ा ही रम्य हुआ है।

तिरुवडमरुदूर (मध्यार्जुनक्षेत्र)

मायवरम्से १५ मील (कुम्भकोणम्से ५ मील)-पर यह स्टेशन है। स्टेशनसे पास ही कावेरी-तटपर महालिङ्गेश्वर शिव-मन्दिर है। दक्षिण भारतमें यह मन्दिर चिदम्बरम्के समान आदरणीय माना जाता है। यह १०८ शैव दिव्य देशोंमेंसे है। मन्दिर विशाल है। उसमें भगवान् शङ्करकी लिङ्गमूर्ति है। पासके एक मन्दिरमें (घेरेमें ही) पार्वती-मूर्ति है। परिक्रमामें अनेक देवताओंकी मूर्तियाँ मिलती हैं।

मन्दिरके आँगनकी प्रदक्षिणाको अश्वमेध-प्रदक्षिणम् कहते हैं जिसके करनेसे सम्पूर्ण भारतवर्षकी प्रदक्षिणाका फल प्राप्त होता है। मानस रोगोंसे मुक्त होनेके लिये भी लोग इस क्षेत्रका आश्रय लेते है।

कहते हैं प्राचीन कालमें किसी चोलनरेशको ब्रह्महत्या लगी थी। उसने उससे छुटकारा पानेके लिये मन्दिर बनवाये, तीर्थयात्रा की; परन्तु जबतक वह किसी तीर्थकी सीमामें रहता, तबतक तो ब्रह्महत्या उससे दूर रहती; किन्तु यहाँसे हटते ही ब्रह्महत्या पुनः उसे आ पकड़ती और तंग करने लगती। इस तीर्थमें आते ही उसका उससे सर्वथा पिंड छूट गया। मदुराके वरगुण पाण्ड्य नामक नरेशके सम्बन्धमें भी ऐसी ही कथा कही जाती है। मन्दिरके द्वितीय द्वारके गोपुरपर ब्रह्महत्याकी एक मूर्ति खुदी हुई है, जो चोल ब्रह्महत्तिके नामसे प्रसिद्ध है। वह इस बातका संकेत करती है कि चोल-नरेशकी ब्रह्महत्या उस द्वारके भीतर प्रवेश नहीं कर पायी, द्वारके बाहर ही सदाके लिये स्थिर हो गयी।

प्रसिद्ध शैव संत पट्टिणत्तु पिल्लेपर कुछ कालतक भर्तृहरिके साथ इस क्षेत्रमें रहे हैं। शाक्त सम्प्रदायके भास्करराय भी जीवनके शेष कालमें यहाँ रहे थे।

तिरुनागेश्वरम्

मायवरम्से १७ मील (तिरुवडमरुदूरसे २ मील, कुम्भकोणम्से ३ मील) पर यह स्टेशन है। इस ग्रामका नाम उप्पली है, जो स्टेशनसे लगभग आध मील है। यहाँ भगवान् महाविष्णुका विशाल मन्दिर है। मन्दिरमें भगवान्की जो मूर्ति है, उसे इधर 'उप्पली अप्पन्' कहते हैं। मन्दिरमें ही श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर है। लक्ष्मीजीको 'अलमेलुमङ्गा' कहा जाता है। यह १०८ वैष्णव दिव्यदेशोंमेंसे एक है। एक ओर तिरुपतिके समान इसका सम्मान है।

तिरुच्चेन्गाट्टंगुडि

मायवरम्-कारैक्कुडी लाइनपर मायवरम्से १५ मील दूर नन्निलम् रेलवे-स्टेशन है। वहाँसे थोड़ी दूरपर यह स्थान है। यह अपने विनायक-मन्दिरके कारण बड़ा विख्यात है। यहाँ भगवान् विनायक गजवदन न होकर नरवक्त्र (मनुष्यके मुख) से ही विराजते हैं। प्रसिद्धि है कि गजमुखासुरका वध इन्हीं विनायकद्वारा हुआ था। इनकी आराधनासे सारे विघ्न दूर हो जाते हैं। संत शिरुतोण्डनायनार यहींके निवासी थे। उनके कारण भी इस तीर्थकी बहुत ख्याति रही है।

तिरुवारूर

मायवरम्से एक लाइन कारैक्कुडीतक जाती है। इस लाइनपर मायवरम्से २४ मीलपर तिरुवारूर स्टेशन है। तंजौरसे नागौर जानेवाली लाइनपर यह स्थान तंजौरसे ३४ मील दूर है। स्टेशनसे १ मीलपर मन्दिर है।

यहाँ भगवान् शङ्करका मन्दिर है। शिवमूर्तिको त्यागराज कहते हैं और मन्दिरमें जो पार्वती-विग्रह है, उसे नीलोत्पलाम्बिका कहते हैं। दक्षिणभारतका यह त्यागराज-मन्दिर बहुत प्रख्यात है। इस स्थलके उत्तर और दक्षिण दो नदियाँ बहती हैं। यहाँ मन्दिरके पास ही धर्मशाला है। दूसरी भी कई धर्मशालाएँ हैं। कहा जाता है कि त्यागराज-मन्दिरका गोपुर दक्षिणभारतके मन्दिरोंके गोपुरोंमें सबसे चौड़ा है।

मन्दिरके गोपुरके भीतर गणेश एवं कार्तिकेयके श्रीविग्रह हैं। भीतर नन्दिकेश्वरकी मूर्ति है। यह नन्दीमूर्ति अनेक पशु-रोगोंकी निवारक मानी जाती है। आगे तपस्विनीरूपमें पार्वती-मूर्ति है। उन्हें 'कमलाम्बाळ्' कहते हैं। यह पराशक्तिके पीठोंमेंसे एक पीठ माना जाता है। देवीकी मूर्ति चतुर्भुज है। उनके करोंमें वरमुद्रा, माला, पाश और कमल है। देवीकी परिक्रमामें 'अक्षरपीठ' मिलता है।

कमलाम्बिका-मन्दिरके आगे गणेश, स्कन्द, चण्डिकेश, सरस्वती, चण्डभैरव आदिकी मूर्तियाँ हैं। वहीं शङ्खतीर्थ नामक सरोवर है। उसमें चैत्र-पूर्णिमाको स्नान रोगनिवारक माना जाता है। प्रसिद्ध अर्वाचीन गायक संत त्यागराज, मुत्थस्वामी दीक्षितर तथा श्यामा शास्त्रीका जन्म यहीं हुआ था।

अचलेश्वर—यह एक शिव-मन्दिर है। कहा जाता है कि शिवलिङ्गकी छाया यहाँ केवल पूर्व दिशामें पड़ती है। इसके अतिरिक्त मन्दिरके घेरेमें ही हाटकेश्वर, आनन्देश्वर, सिद्धेश्वर आदि कई मन्दिर हैं।

सबसे मुख्य मूर्ति त्यागराजकी है। इनका 'अजपानटनम्' नृत्य बहुत प्रसिद्ध है। कहते हैं यह मूर्ति महाराज मुचुकुन्दके द्वारा स्वर्गसे लायी गयी थी।

त्यागराज-मन्दिरका जहाँ रथ है, वहाँ एक शिव-मन्दिर है। वहाँ एक दुर्वासाजीकी भी मूर्ति है। इस मन्दिरके पास ही 'दण्डपाणि' मन्दिर है। इनके अतिरिक्त 'तिरु नीलकण्ठ नायनार', 'परवै नाच्वियार्' 'राजदुगा' माता', कमलालय सरोवरके पास दुर्वासा ऋषिका 'तपोमन्दिर', कमलालय सरोवरके मध्यका मन्दिर, सरोवरके पूर्व 'गणेश-मन्दिर', 'माणिक्क नाच्वियार्' आदि कई मन्दिर यहाँ हैं।

यहाँ मन्दिरके पास विस्तृत कमलालय सरोवर है। यही यहाँका मुख्य तीर्थ है। उसमें ६५ घाट हैं। एक-एक घाटपर एक-एक तीर्थ है। उनमें देवतीर्थ-घाट सबसे मुख्य है। सरोवरके तीर्थोंके अतिरिक्त निम्न तीर्थ हैं—

१-शङ्खतीर्थ सहस्रस्तम्भ मण्डपके पास। यहाँ शङ्खमुनिने अपना काटा हुआ हाथ फिर पाया। २-गयातीर्थ मन्दिरके पूर्व १ मील। यहाँ पितृकर्म होता है। ३-वाणीतीर्थ-चित्र-सभामण्डपके सामने।

कहा जाता है, इस क्षेत्रमें जन्म लेनेसे ही मुक्ति* होती है। इस क्षेत्रका पौराणिक नाम कमलालय है। यहाँ पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती—तीनोंने तप किया है। श्रीज्ञान-सम्बन्ध, अप्पार तथा सुन्दरमूर्ति आदि शैवाचार्योंने इस स्थलका स्तवन किया है।

दक्षिण-भारतमें त्यागराजकी सात पीठस्थलियाँ हैं। उनमें भगवान् शिवकी नृत्य करती मूर्तियाँ हैं। नृत्योंके विभिन्न नाम हैं—

१-तिरुवारूर (मुख्य पीठ)—अजपानटनम्।
२-तिरुनल्लारु—उन्मत्तनटनम्।
३-तिरुनागैक्कारोणम् नागपत्तनम्—पारावारतरंगनटनम्।
४-तिरुक्कारायिल्—कुक्कुटनटनम्।
५-तिरुक्कुवलै—भृङ्गनटनम्।
६-तिरुवायमूर—कमलनटनम्।
७-वेदारण्यम्—हंसपादनटनम्।

---

* किसी पुराणका श्लोक है—

दर्शनादभ्रसदसि जन्मना कमलालये। काश्यां हि मरणान्मुक्तिः स्मरणादरुणाचले॥

'चिदम्बर क्षेत्रके (जहाँ आकाश-तत्त्व-लिङ्ग विराजमान है) दर्शनमात्रसे, कमलालयक्षेत्रमें जन्म लेनेसे, काशीमें मरनेसे और अरुणाचलक्षेत्रके स्मरणसे ही मुक्ति हो जाती है।'

थम्बिक्कोट्टै

मायवरम्-कारैक्कुडी लाइनपर मायवरम्से ५८ मील दूर थम्बिक्कोट्टै स्टेशन है। स्टेशनसे आध मीलपर एक छोटा गाँव है। स्टेशनसे ढाई मील वायव्यकोणमें एक उत्तम शिव-मन्दिर है। उसे यहाँ 'आवडयार कोइल' कहते हैं। कार्तिकमें प्रत्येक सोमवारको यहाँ मेला लगता है।

वेदारण्यम्

मायवरम्से तिरुवारूर आनेवाली लाइनपर आगे तिरुतुरैपुंडि स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन 'पाई कैलिमियर' स्टेशनतक जाती है। इसी लाइनपर तिरुतुरैपुंडीसे २२ मील दूर वेदारण्यम् छोटा-सा स्टेशन। स्टेशनसे लगभग १ मीलपर मन्दिर है।

वेदारण्यम्में वेदपुरीश्वरम् शिव-मन्दिर है। यह मन्दिर भी विशाल है। यहाँ जो भगवान् शङ्करकी लिङ्गमूर्ति है, उसे वेदपुरीश्वर कहते हैं। मन्दिरमें ही पार्वती-मूर्ति है। मन्दिरके आसपास अनेक देवताओंके मन्दिर घेरेमें ही हैं। पासमें एक उत्तम सरोवर है।

नागपत्तनम्

तंजौर-नागौर लाइनपर तिरुवारूरसे १५ मीलपर नेगापटम् स्टेशन है। यह बंदरगाह है। अच्छा नगर है। स्टेशनसे दो मीलपर धर्मशाला है। यहाँ नगरमें एक विशाल शिव-मन्दिर और एक सुन्दरराज भगवान् (विष्णु) का मन्दिर है। यहाँसे रामेश्वर जहाज जाता है। यहाँ समुद्रतटपर ब्रह्माजीका मन्दिर है। ब्रह्माजीको 'पेरुमल स्वामी' कहते हैं। एक नीलायताक्षीदेवीका भी मन्दिर है।

मन्नारगुडि

जो लोग मायवरम्से तिरुवारूर आते हैं, उन्हें वहाँ गाड़ी बदलकर नीडामङ्गलम् स्टेशन जाना पड़ता है। तंजौरसे तिरुवारूर आते समय नीडामङ्गलम् मार्गमें ही पड़ता है। नीडामङ्गलम्से मन्नारगुडितक एक लाइन गयी है। तंजौरसे मन्नारगुडितक मोटर-बस भी चलती है।

इस क्षेत्रको चम्पकारण्य तथा दक्षिण-द्वारिका कहा जाता है। यहाँका मुख्य मन्दिर श्रीराजगोपाल स्वामी (भगवान् वासुदेव) का है। यह मन्दिर स्टेशनसे लगभग एक मील दूर है। मन्नारगुडिके पास 'पाम्बणि' नामकी एक नदी बहती है। यह पवित्र मानी जाती है। यहाँपर कई धर्मशालाएँ हैं।

श्रीराजगोपाल-मन्दिरमें सात प्राकार हैं, जिनमें १६ गोपुर हैं। मन्दिरमें भगवान् वासुदेवकी शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारिणी चतुर्भुज-मूर्ति है। भगवान्‌के अगल-बगल श्रीदेवी तथा भूदेवी हैं। कहा जाता है, यह श्रीविग्रह ब्रह्माजीके द्वारा प्रतिष्ठित है।

मन्दिरमें रुक्मिणी-सत्यभामासहित श्रीराजगोपाल स्वामीकी उत्सवमूर्ति है। दूसरी उत्सवमूर्ति संतान राजगोपालकी है।

यहाँ मन्दिरमें ही श्रीलक्ष्मीजीका पृथक् मन्दिर है। लक्ष्मीजीका नाम यहाँ चम्पकलक्ष्मी है। उनकी उत्सवमूर्ति भी है।

मन्दिरके पश्चिम भागमें श्रीराम-लक्ष्मण-सीताजीकी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरके सामने सभामण्डपमें आळवार एवं आचार्योंकी प्रतिमाएँ हैं।

यहाँके अन्य तीर्थ

गोप्रलय-तीर्थ—मन्दिरसे आध मील दक्षिण यह सरोवर है। कहा जाता है कि यहाँ गोभिल ऋषिने यज्ञ किया था। रविवारको इसमें स्नान पुण्यप्रद है। अग्निने भी यहाँ तप किया था।

रुक्मिणी-तीर्थ—मन्दिरसे दक्षिण दो फर्लांगपर यह सरोवर है। इसमें श्रावणके सोमवारोंको स्नानका बड़ा महत्त्व है।

कृष्ण-तीर्थ—मन्दिरके आग्नेयकोणमें है। मार्गशीर्षमें

636 Tirthank_Section_17_2_Back

इसमें स्नानका महत्त्व है। इसके पास ही शङ्खतीर्थ, चक्रतीर्थ तथा दुर्वासा-तीर्थ हैं।

हरिद्रा-नदी—यह विस्तृत सरोवर मन्दिरसे उत्तर है। यही यहाँका मुख्य तीर्थ है। इसका जल कुछ पीला रहता है। कहते हैं, इसमें श्रीकृष्णचन्द्रने हल्दी लेकर जलक्रीड़ा की थी। इसके मध्यमें एक मन्दिर है। उसमें रुक्मिणी-सत्यभामासहित श्रीकृष्णचन्द्रकी मूर्ति है।

तिरुप्पाल्कडल(क्षीरसमुद्र)—स्टेशनसे आध मीलपर नदी-किनारे यह सरोवर है। कहते हैं महर्षि भृगुने यहीं लक्ष्मीजीको पुत्रीरूपमें पाया। सरोवरके पास लक्ष्मीनारायण-मन्दिर है। सूर्यके मकरराशिमें होनेपर शुक्रवारको यहाँ स्नान पुण्यप्रद है।

गोपीनाथ-तीर्थ—कन्याके सूर्य होनेपर बुधवारको यहाँ स्नानका माहात्म्य है।

सूर्यनार्-कोइल

यहाँ-परम्परासे भगवान् सूर्यकी आराधना होती आयी है। इस ओरके तीर्थोंमें यही एक सूर्यका मन्दिर है। यह स्थान मायवरम्से १५ मील आगे तिरुवडमरुदूर स्टेशनसे कुल दो मील दूर है। मन्दिरमें भगवान् सूर्यके सामने बृहस्पतिकी प्रतिमा है। यहीं एक दूसरे गृहमें चन्द्र-मङ्गलादि पूरे नवग्रह भी हैं। भगवान् सूर्यके सामने उनका वाहन अश्व खड़ा है। शिलालेखोंसे पता चलता है कि यह मन्दिर कुलोत्तुङ्ग प्रथमका बनाया हुआ है।

कुम्भकोणम्*

मायवरम्से २० मीलपर कुम्भकोणम् स्टेशन है। यह दक्षिण-भारतका एक प्रमुख तीर्थ है। प्रति बारहवें वर्ष यहाँ कुम्भका मेला लगता है। कई लाख यात्री उसमें एकत्र होते हैं। यह नगर कावेरीके तटपर है। यह स्मरण रहना चाहिये कि कावेरीसे नहर निकाल लिये जानेके कारण गर्मियोंमें कावेरी पूर्णतः सूखी रहती है। यहाँ मन्दिर तो बहुत हैं; किन्तु मुख्य मन्दिर पाँच हैं—१-कुम्भेश्वर (यह तीर्थका सर्व प्रमुख मन्दिर है), २-शार्ङ्गपाणि, ३-नागेश्वर, ४-राम-स्वामी, ५-चक्रपाणि। यहाँका मुख्य तीर्थ महामघम् सरोवर है। कुम्भकोणम्में स्टेशनसे पास चोल्ट्री है। उसमें किरायेपर कमरे ठहरनेको मिलते हैं।

स्टेशनसे लगभग डेढ़ मीलपर नगरके उत्तर कावेरी नदी है। यदि उसमें जल हो तो वहाँ स्नान किया जा सकता है। पक्का घाट है कावेरीपर। तटपर महाकालेश्वर महादेव तथा दूसरे अनेकों देव-मन्दिर हैं। यहाँसे पूर्वभागमें कुछ दूरीपर एक छोटा शिव-मन्दिर है। उसमें सुन्दरेश्वर शिवलिङ्ग तथा मीनाक्षी (पार्वती)-की मूर्ति है। कामकोटि-मठसे दक्षिण जानेवाली सड़कपर कुछ आगे जाकर दाहिने इन्द्रका और बायें महामायाका मन्दिर मिलता है। महामाया-मन्दिरमें जो महाकालीकी मूर्ति है, कहा जाता है कि वह स्वयं प्रकट हुई है। समयपुरम् नामक ग्रामके देवी-मन्दिरमें एक दिन पुजारीने देखा कि एक ओर भूमि फटी है और उससे एक मूर्तिका मस्तक दीख रहा है। धीरे-धीरे पूरी मूर्ति स्वयं ऊपर आ गयी। वही मूर्ति वहाँसे लाकर यहाँ महामाया-मन्दिरमें स्थापित की गयी।

महामघम्—यदि कावेरीमें जल न हो तो यात्री महामघम् सरोवरमें स्नान करते हैं। वैसे भी यहाँ स्नानके लिये यही पुण्यतीर्थ माना जाता है, यद्यपि सफाई न होनेके कारण उसके जलमें कीड़े पड़ जाते हैं। सरोवर बहुत बड़ा है। कुम्भपर्वके समय यात्री इसीमें स्नान करते हैं। सरोवर चारों ओरसे पूरा पक्का है। कहते हैं कि कुम्भपर्वके समय इस सरोवरमें गङ्गाजीका प्रादुर्भाव होता है। नीचेसे स्वयं जलधारा निकलती है। सरोवरके चारों ओर घाटोंपर मन्दिर हैं। इनकी संख्या १६ है। प्रधान मन्दिर सरोवरके

* 'कुम्भकोणम्' का संस्कृत नाम कुम्भघोणम् है। कहते हैं ब्रह्माजीने एक घड़ा (कुम्भ) अमृतसे भरकर रखा था। उस कुम्भकी नासिका (घोणा) अर्थात् मुखके समीप एक छिद्रसे अमृत चूकर बाहर निकल गया और उसमें यहाँकी पाँच कोसतककी भूमि भीग गयी। इसीसे इसका नाम कुम्भघोण (कुम्भकोण) पड़ गया—

कुम्भस्य घोणतो यस्मिन् सुधापूरं विनिस्सृतम्। तस्मात्तु तत्पदं लोके कुम्भघोणं वदन्ति हि॥

सूर्यनार कोइलकी नवग्रह-मूर्तियाँ

सूर्य चन्द्र मङ्गल बुध बृहस्पति

शुक्र शनि केतु राहु

दक्षिण-भारतके कुछ मन्दिर—१५
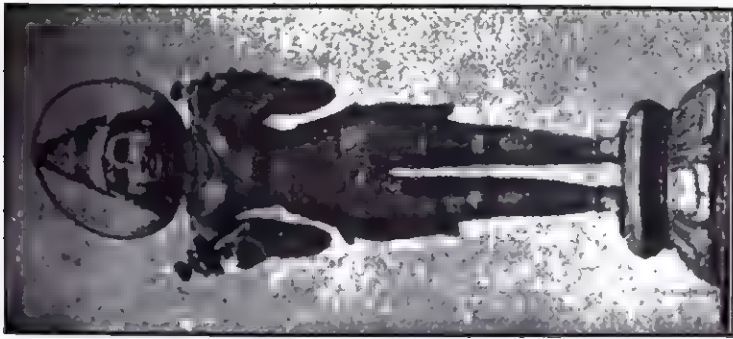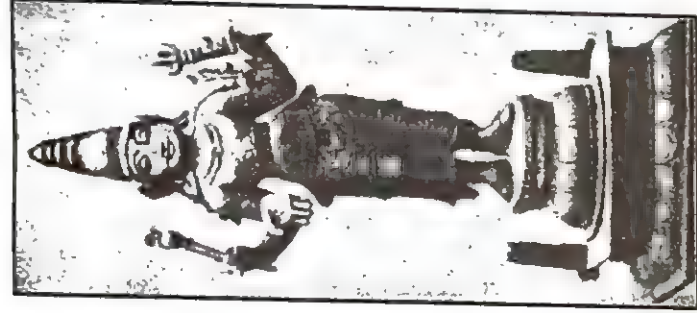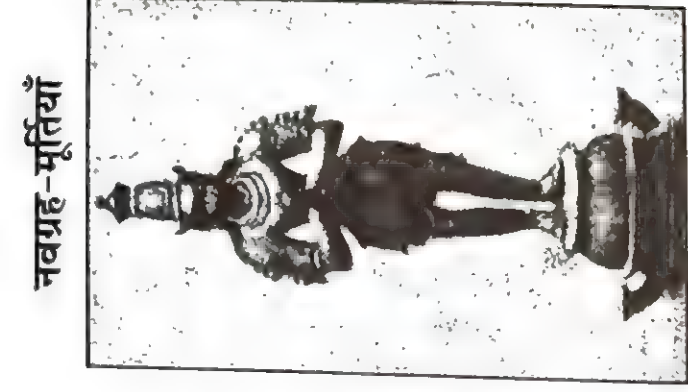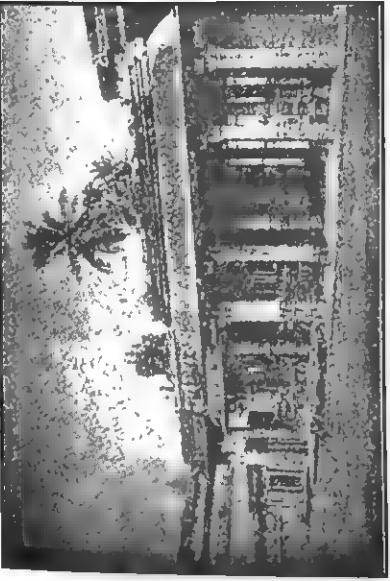
श्रीश्वेतविनायक-मन्दिर, तिरुवळंचुलि

महामघम्-सरोवर, कुम्भकोणम्

श्रीसूर्यनार-कोइलका विहङ्गम-दृश्य
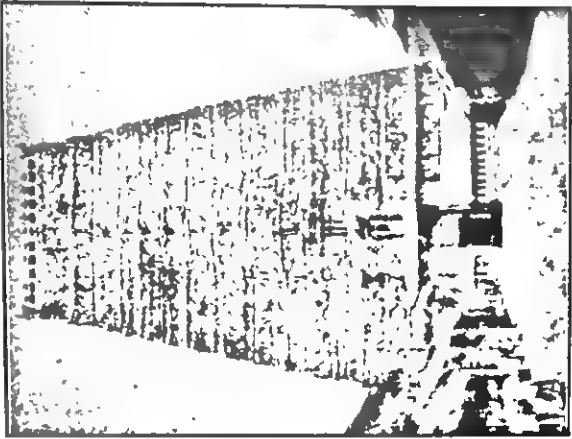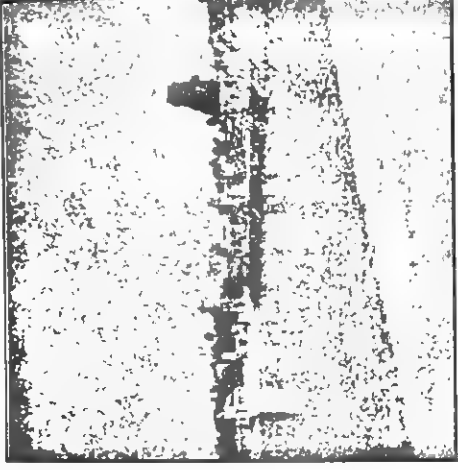
श्रीशार्ङ्गपाणि-मन्दिर, कुम्भकोणम्

हेम-पुष्करिणी (शार्ङ्गपाणि-मन्दिर), कुम्भकोणम्

श्रीआदिकुम्भेश्वर-मन्दिर (राजगोपुर), कुम्भकोणम्

उत्तर है। उसमें काशीविश्वनाथ तथा पार्वतीकी मूर्ति है। कहते हैं इस सरोवरमें कुम्भपर्वपर गङ्गा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी, महानदी, पयोष्णी और सरयू ये नौ नदियाँ—जो नौ गङ्गा कहलाती हैं—स्नान करने आती हैं। वे अपने जलमें अवगाहन करनेवालोंकी अनन्त पापराशिको, जो उनके अंदर संचित हो जाती है, यहाँ आकर प्रति बारह वर्षपर धोती हैं। इसीलिये इसका एक नाम नवगङ्गाकुण्ड भी है। यहाँ स्वयं भगवान् महाविष्णु, शिव तथा अन्यान्य देवता उस समय पधारकर निवास करते हैं।

नागेश्वर—महामघम् सरोवरसे कुम्भेश्वर-मन्दिरकी ओर जाते समय यह मन्दिर सबसे पहले मिलता है। इस मन्दिरमें भगवान् शङ्करकी लिङ्ग-मूर्ति है। पार्वतीजीका मन्दिर भीतर ही है। परिक्रमामें अन्य देव-मूर्तियाँ भी हैं। यहाँ सूर्यभगवान्का भी एक मन्दिर है। भगवान् सूर्यने यहाँ शङ्करजीकी आराधना की थी। इसके प्रमाणरूपमें नागेश्वर-लिङ्गपर वर्षमें किसी-किसी दिन सूर्यरश्मियाँ गिरती देखी जाती हैं। नागेश्वर-मन्दिरमें एक उच्छिष्ट गणपतिकी भी मूर्ति है।

कुम्भेश्वर—नागेश्वर-मन्दिरसे थोड़ी ही दूरीपर कुम्भेश्वर मन्दिर है। यही इस तीर्थका मुख्य मन्दिर है। इसका गोपुर बहुत ऊँचा है और मन्दिरका घेरा बहुत बड़ा है। इसमें कुम्भेश्वर लिङ्ग-मूर्ति मुख्य पीठपर है। यह मूर्ति घड़ेके आकारकी है। मन्दिरमें ही पार्वतीका मन्दिर है। पार्वतीजीको 'मङ्गलाम्बिका' कहते हैं। यहाँ भी गणेशजी, सुब्रह्मण्यम् आदिकी मूर्तियाँ परिक्रमामें हैं।

रामस्वामी—कुम्भेश्वर-मन्दिरसे थोड़ी दूरीपर यह मन्दिर है। इसमें श्रीराम, लक्ष्मण, सीताकी बड़ी सुन्दर झाँकी है। कहते हैं कि ये मूर्तियाँ दारासुरम् ग्रामके एक तालाबमें निकली थीं। इस मन्दिरमें श्रीराम-जन्मसे लेकर राज्याभिषेककालतककी सम्पूर्ण लीलाओंके तिरंगे चित्र दीवारोंपर बने हैं। खंभोंमें विविध लीलाओंको व्यक्त करनेवाली बहुत ही सुन्दर एवं कलापूर्ण मूर्तियाँ खुदी हैं। यह मन्दिर अपनी कलाके लिये प्रसिद्ध है।

शार्ङ्गपाणि—मार्ग ऐसा है कि पहले महामघम् सरोवरसे शार्ङ्गपाणि-मन्दिरके दर्शन करके तब कुम्भेश्वरके दर्शनार्थ जा सकते हैं या कुम्भेश्वरके दर्शन करके इस मन्दिरमें आ सकते हैं। नागेश्वर-मन्दिर पहले मिलता है; किन्तु शार्ङ्गपाणि, कुम्भेश्वर, रामस्वामी—ये मन्दिर पास-पास हैं। शार्ङ्गपाणि-मन्दिरके पीछे थोड़ी ही दूरपर कुम्भेश्वर-मन्दिर है।

शार्ङ्गपाणि-मन्दिर भी विशाल है। भीतर स्वर्णमण्डित गरुड़-स्तम्भ है। मन्दिरके घेरेमें अनेकों छोटे मन्दिर तथा मण्डप हैं। निज-मन्दिरमें भगवान् शार्ङ्गपाणिकी मनोहर चतुर्भुज मूर्ति है। यह शेषशायी भगवान् नारायणकी मूर्ति है। श्रीदेवी और भूदेवी भगवान्की चरण-सेवा कर रही हैं। परिक्रमामें श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर है। यहाँका मुख्य मन्दिर, जो घेरेके मध्यमें है, एक रथके आकारका है। जिसमें घोड़े और हाथी जुते हुए हैं। मन्दिरकी रथाकृति इस बातको घोषित करती है कि भगवान् शार्ङ्गपाणि इसी रथमें आसीन होकर वैकुण्ठधामसे यहाँ उतरे थे।

यहाँकी कथा यह है कि भृगुने जब भगवान्के वक्षःस्थलपर चरण-प्रहार किया और उसके लिये भगवान्ने भृगुको कोई दण्ड तो दिया ही नहीं, उलटे उनसे क्षमा माँगी, तब लक्ष्मीजी भगवान् नारायणसे रूठ गयीं। वे रूठकर यहाँ आयीं। यहाँ हेम नामक ऋषिके यहाँ कन्यारूपसे अवतीर्ण हुईं। भगवान् नारायण भी अपनी नित्यप्रिया लक्ष्मीजीका वियोग नहीं सह सके। वे भी यहाँ पधारे और ऋषिकन्यासे उन्होंने विवाह कर लिया। तभीसे शार्ङ्गपाणि और लक्ष्मीजी यहाँ श्रीविग्रहरूपमें स्थित हैं।

शार्ङ्गपाणि मन्दिरके पास एक सुन्दर सरोवर है। उसे हेम-पुष्करिणी कहते हैं।

सोमेश्वर—शार्ङ्गपाणि-मन्दिरके समीप ही एक छोटा-सा मन्दिर है। इसमें दो भिन्न-भिन्न मन्दिरोंमें सोमेश्वर शिवलिङ्ग तथा पार्वतीकी मूर्तियाँ हैं।

चक्रपाणि—यह मन्दिर बाजारके दूसरे सिरेपर है। इसमें भगवान् विष्णुकी मूर्ति है। पासमें ही श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर एक पृथक् चबूतरेपर है।

अन्य मन्दिर—इनके अतिरिक्त कुम्भकोणम्में विनायक अभिवृद्धेश्वर, कालहस्तीश्वर, बाणेश्वर, गौतमेश्वर आदि मन्दिर हैं।

वेदनारायण—यह मन्दिर कुम्भकोणम्के समीप ही है। कहा जाता है कि सृष्टिके प्रारम्भमें यहीं ब्रह्माने नारायणका यजन किया था। उस यज्ञमें वेदनारायण प्रकट हुए थे। भगवान्ने वहाँ अवभृथ-स्नानके लिये कावेरी नदीको बुला लिया था। वह अब भी वहाँ हरिहर नदीके रूपमें है।

भगवान् शंकराचार्यका कामकोटिपीठ यवन-कालमें काञ्चीसे यहाँ आ गया था और अब भी यहीं है। वर्तमान पीठाधिपति आजकल काञ्चीमें रहते हैं।

कथा

पुराणप्रसिद्ध कामकोष्णीपुरी कुम्भकोणम् ही है। कहते हैं प्रलयकालमें ब्रह्माजीने सृष्टिकी उपादानभूता मूलप्रकृतिको एक घटमें रखकर यहाँ स्थापित कर दिया था तथा सृष्टिके प्रारम्भमें यहाँ उस घटको लेकर सृष्टि-रचना की। एक मत यह भी है कि ब्रह्माजीके यज्ञमें यहाँ भगवान् शङ्कर अमृतकुम्भ लेकर प्रकट हुए थे।

त्रिभुवनम्

यह तंजौर जिलेमें कुम्भकोणम्के समीप एक छोटी-सी बस्ती है। मन्दिरके अधिष्ठाता श्रीकम्पहरेश्वर-देवके नामसे विख्यात हैं। कहा जाता है, यह नाम एक राजाके पिशाचजनित कम्पको दूर करनेसे पड़ा। राजासे अनजानमें एक ब्राह्मणकी हत्या हो गयी थी और इसीसे वह पिशाचग्रस्त हो गया। यहीं शरभदेव (भगवान् शिवके शरभावतार, जो नृसिंहभगवान्को शान्त करनेके लिये हुआ था) एक धातु-प्रतिमा है, जो अत्यन्त आकर्षक है।

दारासुरम्

दारासुरम्का ऐरावतेश्वर-मन्दिर कुम्भकोणम्से दक्षिण-पश्चिमकी ओर केवल दो मीलकी दूरीपर है। यह इधरके १८ प्रसिद्ध मन्दिरोंमेंसे एक है। इस विग्रहके सम्बन्धमें प्रसिद्ध है कि भगवान् शङ्कर यहाँ एक रुद्राक्ष वृक्षके रूपमें प्रकट हुए थे तथा पत्तियाँ विभिन्न ऋषि, महर्षि तथा देवताओंकी आकृतिकी थीं।

लोगोंकी धारणा है कि यहाँके सरोवरका जल भगवान् शिवके त्रिशूलसे प्रकट हुआ था। इसमें स्नान करनेसे यमराजके शापजनित दाहकी निवृत्ति हुई थी। उन्होंने भगवान्की आज्ञासे शिल्पिराज विश्वकर्माद्वारा फिर एक मन्दिर निर्माण कराया, यह मन्दिर वही है। तबसे यह तालाब यमतीर्थ कहा जाता है। यमके आशीर्वादसे इसमें स्नान करनेवालोंके सारे पाप धुल जाते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष आश्विन मासमें अमावस्यातक दस दिन मेला लगता है।

कहा जाता है कि यह मन्दिर पहले बड़ा था और इसमें श्रीरङ्गम्के मन्दिरकी भाँति सात आँगन थे। पर अब सब लुप्त होकर एक ही आँगन बच रहा है। तालाब वर्गाकार है और इसकी लंबाई-चौड़ाई २२८ फुट है। मन्दिरमें यमराज, सुब्रह्मण्यम् तथा सरस्वतीकी प्रतिमाएँ हैं। यहाँ भी शिवलिङ्ग अधिक संख्यामें हैं।

तिरुवळंचुलि

यह स्थान दारासुरम्से तीन मील दक्षिण-पश्चिममें है और (तंजौर जिलेमें) कावेरीके तटपर स्थित है। यहाँ भगवान् कपर्दीश्वर तथा बृहन्नायाजी देवी विराजती हैं। नन्दीके सामने सिद्धि-बुद्धिके साथ श्वेत-विनायक विराजते हैं। कहा जाता है कि समुद्र-मन्थनके अवसरपर देवतालोग गणपति-पूजन भूल गये। फलस्वरूप अमृतके स्थानपर विष निकल आया। जब देवताओंको अपनी भूल मालूम हुई, तब उन्होंने यह प्रतिमा स्थापित की। अभी भी यहाँ प्रतिवर्ष विनायक चतुर्थीको बड़ा भारी मेला लगता है।

स्वामिमलै

कुम्भकोणम्से ४ मीलपर यह स्टेशन है। स्टेशनसे नगर पास ही है। दक्षिणके मुख्य सुब्रह्मण्य-तीर्थोंमें इसकी गणना है। यहाँका मन्दिर विशाल है। नीचेके भागमें सुन्दरेश्वर शिवलिङ्ग तथा मीनाक्षी (पार्वती) की मूर्तियाँ है। सीढ़ियोंसे ऊपर जानेपर एक स्वर्णमण्डित स्तम्भ मिलता है। उसके सामने स्वामिकार्तिकका निज-मन्दिर है। उसमें स्वामिकार्तिककी सुन्दर मूर्ति है। उनके हाथमें सुवर्णमयी शक्ति है, जिसे 'वज्रवेलल' कहते हैं। उत्सवके अवसरोंपर यह रत्नजटित शक्ति मूर्तिके करोंमें धारण करायी जाती है। समीप एक छोटे मन्दिरमें सुब्रह्मण्य स्वामी (कार्तिक) की ही एक स्वर्णनिर्मित त्रिमुख-मूर्ति है।

उप्पिलि अप्पन्-कोइल

कुम्भकोणम्से दक्षिण-पूर्व लगभग ४ मीलपर यह स्थान है। यहाँ भगवान् श्रीनिवासका प्रसिद्ध मन्दिर है। भगवान्के वक्षःस्थलमें श्रीलक्ष्मीजीका स्पष्ट दर्शन होता है। मुख्य मूर्तिके पास श्रीदेवी और भूदेवीकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ मन्दिरमें मार्कण्डेय ऋषिकी भी मूर्ति है। कहते हैं भगवती लक्ष्मी यहाँ कन्यारूपमें तुलसी-वनमें प्रकट हुईं और ऋषि मार्कण्डेयने उनका पालन किया था। मार्कण्डेय मुनिने भगवान् विष्णुके साथ इस कन्याका विवाह करते समय उनसे यह वरदान माँगा था कि उसके बालचापलके लिये वे उसे क्षमा करते रहेंगे और यदि वह उन्हें अलोना नैवेद्य भी अर्पित करे तो वे उसे कृपापूर्वक स्वीकार कर लेंगे। तदनुसार आजतक भगवान्को अलोना भोग लगाया जाता है और कहते हैं वह बड़ा स्वादिष्ठ लगता है।

पट्टीश्वरम्

कुम्भकोणम्के नैर्ऋत्यकोणमें वहाँसे चार मीलपर पट्टीश्वरम् शिव-मन्दिर है। यहाँ पट्टिनामक गौने, जो कामधेनुके वंशमें थी, भगवान् शङ्करकी पूजा की थी।

तिरुनागेश्वरम्

श्रीनिवास-मन्दिरसे आध मील दूर यह शिव-मन्दिर है। इसमें नागेश्वर-शिवलिङ्ग तथा बृहदीश्वरी (पार्वती) की मूर्ति है। अन्य मूर्तियाँ यहाँ भी परिक्रमामें हैं। इसे जम्बकारण्य क्षेत्र भी कहते हैं। 'पेरिया-पुराणम्' (जिसमें ६३ शैव संतोंकी जीवनी है) रचयिता श्रीसेक्किलारकी यह निवासभूमि है। मन्दिरमें इनकी भी मूर्ति है।

तिरुप्पुरंवियम्

यह स्थान कुम्भकोणम्से ६ मील दूर है। यहाँ एक सरोवरके किनारे दक्षिणामूर्ति तथा गणपतिके मन्दिर हैं। यहाँके गणपतिका नाम 'प्रलयंकार्त विनायक' है। इन्होंने जगत्की प्रलयसे रक्षा की थी, ऐसा कहा जाता है। कहते हैं, यहाँ भगवान् शङ्करने एक हरिजन भक्तको दक्षिणा-मूर्ति-रूपमें प्रकट होकर ज्ञानोपदेश किया था। इन्हें आदित्येश्वर या साक्षीश्वर कहते हैं।

नल्लूर

यह स्थान तंजौर जिलेमें पापनाशम् रेलवे-स्टेशनसे तीन मील पूर्व है। यहाँका कल्याण-सुन्दरेश मन्दिर विख्यात है। यहाँके सम्बन्धमें पुराणोंमें यह कथा आती है कि जब भगवान् शङ्करका पार्वतीसे विवाह हो रहा था, तब महर्षि अगस्त्यने यहींसे उस महोत्सवका साक्षात् किया था। मन्दिरके सामनेका सरोवर बड़ा पवित्र माना जाता है। कहते हैं यहाँ पाण्डवोंकी माता कुन्तीने भगवद्दर्शनके पूर्व स्नान किया था। तालाबके बाँधके पत्थरोंपर इस घटनाका उल्लेख है।

तंजौर

कुम्भकोणम्से २४ मीलपर तंजौर स्टेशन है। यह बड़ा नगर कावेरीके तटपर बसा है। स्टेशनके पास चोल्ट्री है। उसमें किरायेपर ठहरनेको कमरे मिल जाते हैं।

बृहदीश्वर-मन्दिर ही यहाँका मुख्य मन्दिर है। तंजौरमें दो किले हैं। एक किला स्टेशनसे उत्तर है, उसे बड़ा किला कहते हैं; दूसरा किला स्टेशनसे पश्चिम है।

स्टेशनसे सीधे रास्ते (पगडंडीद्वारा) आनेपर यह बहुत निकट पड़ता है। सड़कके मार्गसे भी आध मील है। इस छोटे किलेमें ही बृहदीश्वर-मन्दिर है।

कहा जाता है कि चोलवंशके राजराजेश्वर नामक नरेशको स्वप्नमें आदेश हुआ कि 'नर्मदामें मेरा एक सैकत लिङ्गमय महान विग्रह है, उसे लाकर स्थापित करो।' उस स्वप्नादेशके अनुसार बृहदीश्वर लिङ्गमूर्ति नर्मदासे लायी गयी। सात वर्षमें मन्दिर बना। भगवान्‌की मूर्तिके अनुरूप नन्दीश्वरकी मूर्तिकी चिन्ता राजाको हुई। उस समय फिर स्वप्नमें नन्दी-मूर्तिका स्थान भगवान्‌ने ही बताया। उस स्वप्नके अनुसार नन्दीकी विशाल मूर्ति ४०० मील दूरसे यहाँ लायी गयी।

छोटे किलेका घेरा लगभग १ मीलका है। इसके दक्षिणमें कावेरीकी नहर है। किलेमें पूर्वद्वारसे प्रवेश होता है। किलेके तीन ओर गहरी खाई है। किलेमें ही एक ओर शिव-गङ्गा सरोवर है।

किलेमें प्रवेश करनेपर पहली कक्षाके मैदानके पश्चात् गोपुर है। गोपुरके भीतर एक चौकोर मण्डप है। उसमें चबूतरेपर विशाल नन्दी-मूर्ति है। यह नन्दी १६ फुट लंबा, १३ फुट ऊँचा, ७ फीट मोटा एक ही पत्थरका है। इसको ७०० मन भारी बताया जाता है। यह मूर्ति यहाँ ४०० मीलसे लायी गयी थी।

नन्दी-मण्डपके सामने ऊँचे चबूतरेपर विशाल बृहदीश्वर-मन्दिर है। मन्दिरमें सामने जगमोहन है, फिर दो बड़े विशाल कमरे हैं। उनके अन्तमें मुख्य मन्दिर है। इस मुख्य-मन्दिरका शिखर २०० फीट ऊँचा है। शिखरपर स्वर्ण-कलश है। यह कलश जिस पत्थरपर है, कहा जाता है वह २२०० मन वजनका है। उन दिनों, जब क्रेन आदि आधुनिक यान्त्रिक साधन नहीं थे, इतना भारी पत्थर इतने ऊँचे चढ़ाकर बैठा देना अद्‌भुत बात है। यह पत्थर भी अनुमानतः बहुत दूरसे लाया गया होगा; क्योंकि पूरे तंजौर जिलेमें (जो बहुत बड़ा है) तथा उसके आस-पास कोई पहाड़ी नामके लिये भी नहीं हैं। यह शिल्प-कौशल देखने देश-विदेशके यात्री आते हैं। मन्दिरमें भगवान् शङ्करकी विशाल, बहुत मोटी और भव्य लिङ्गमूर्ति है। मूर्तिको देखकर लगता है कि वृहदीश्वर नाम यहाँ उपयुक्त ही है।

शिव-मन्दिरके दक्षिण-पश्चिम गणेशजीका मन्दिर है। पश्चिमोत्तर भागमें सुब्रह्मण्यका सुन्दर मन्दिर है। उसमें षण्मुख स्वामिकार्तिककी भव्य मूर्ति है। सुब्रह्मण्य-मन्दिरके दक्षिण एक छोटे मन्दिरमें धूनी है। यहाँ एक सिद्ध महात्मा रहते थे। शिव-मन्दिरके पूर्वोत्तर चण्डी-मन्दिर है।

नन्दी-मण्डपके उत्तर पार्वतीजीका पृथक् मन्दिर है। इसका जगमोहन भी विस्तृत है। कई ड्योढ़ी पार करके पार्वतीजीकी भव्य झाँकी प्राप्त होती है।

बृहदीश्वर-मन्दिरकी परिक्रमामें दो ओर बरामदोंमें शिवलिङ्गोंकी पंक्तियाँ लगी हैं।

मन्दिरकी पहली कक्षाके उत्तरी द्वारसे जानेपर गोशाला मिलती है। उसी मार्गपर आगे शिव-गङ्गा सरोवर है। यह सरोवर विस्तृत है। उसपर पक्के घाट हैं। सरोवरका जल कुछ लाल रंगका है।

तंजौरका दूसरा तीर्थ अमृत-वापिका सरसी है। उसके किनारे महर्षि पराशरका स्थान है। कहा जाता है कि समुद्र-मन्थनके पश्चात् अमृत निकलनेपर अमृतकी कुछ बूँदें महर्षि पराशरको भी मिलीं। महर्षिने वे बूँदें लोक-कल्याणके लिये इस सरोवरमें डाल दीं।

इनके अतिरिक्त नगरमें भगवान् विष्णुका, श्रीराजगोपालका, श्रीरामचन्द्रजीका, नृसिंहभगवान्‌का तथा कामाख्यादेवीका मन्दिर है। ये सभी मन्दिर नगरके भिन्न-भिन्न भागोंमें हैं।

तंजौरके बड़े किलेमें यहाँका प्रसिद्ध सरस्वती-भवन पुस्तकालय है। इसमें केवल संस्कृत भाषाकी पचीस सहस्र हस्तलिखित पुस्तकें कही जाती हैं। बनारसके सरस्वती-भवनको छोड़कर ऐसा अनूठा एवं बृहत् संग्रह भारतमें दूसरा नहीं है। तमिळ, तेलुगु आदिकी पुस्तकोंका भी इसमें विपुल संग्रह है।

कथा

पुराणोंके अनुसार यह पाराशर-क्षेत्र है। पूर्वकालमें यह स्थान तञ्जन् नामक राक्षसका निवासस्थान था। उसके साथ और भी बहुत-से राक्षस रहते थे। देवासुर-संग्राममें वे सब राक्षस देवताओंद्वारा मारे गये। भगवान् विष्णुने नीलमेघ पेरुमाळ्के रूपमें तञ्जको युद्धमें मारा। मरते समय तञ्जने भगवान्‌से प्रार्थना की कि 'मेरी निवासभूमि मेरे नामसे प्रख्यात हो और पवित्रस्थली मानी जाय।' इसीके फलस्वरूप इस क्षेत्रका नाम तंजावूर (तञ्जौर) हुआ। यह 'तञ्जपुर' का ही तमिळ रूपान्तर है।

दक्षिण-भारतके कुछ मन्दिर—१६
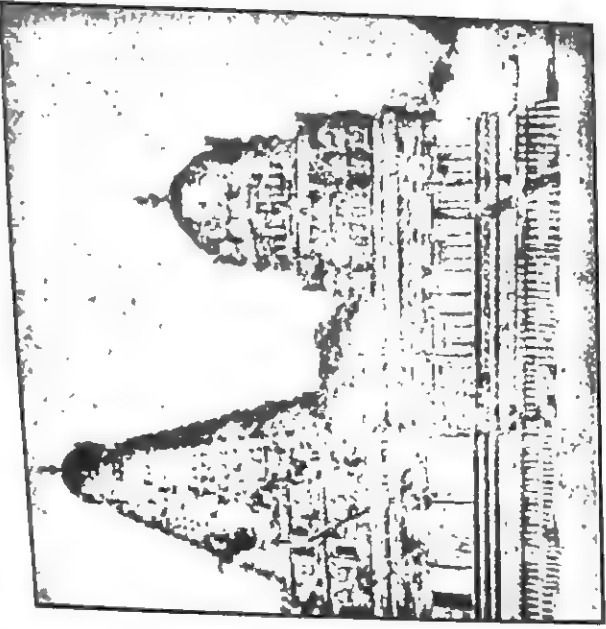
श्रीबृहदीश्वर-मन्दिर, तंजौर

श्रीबृहदीश्वरका विशाल नन्दी, तंजौर

श्रीबृहदीश्वर-मन्दिरकी एक दिशा, तंजौर
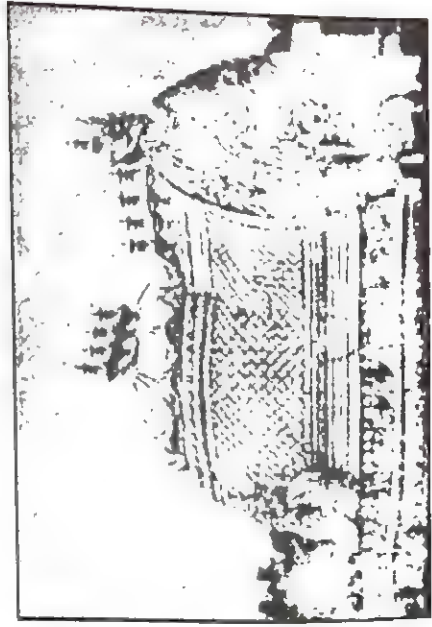
श्रीरङ्गनाथ-मन्दिरका विमान, श्रीरङ्गम्
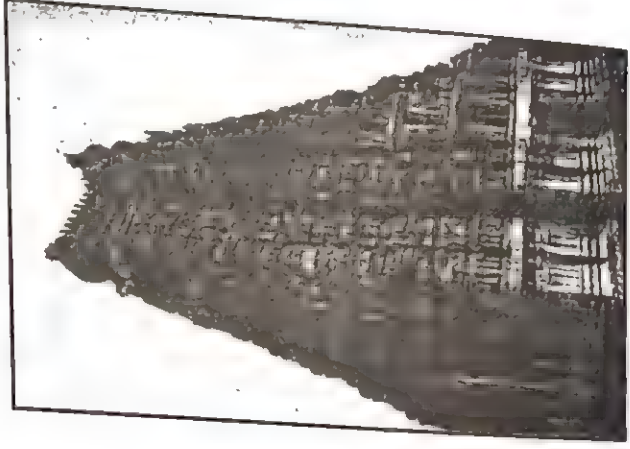
श्रीरङ्गनाथ-मन्दिरका गोपुर, श्रीरङ्गम्
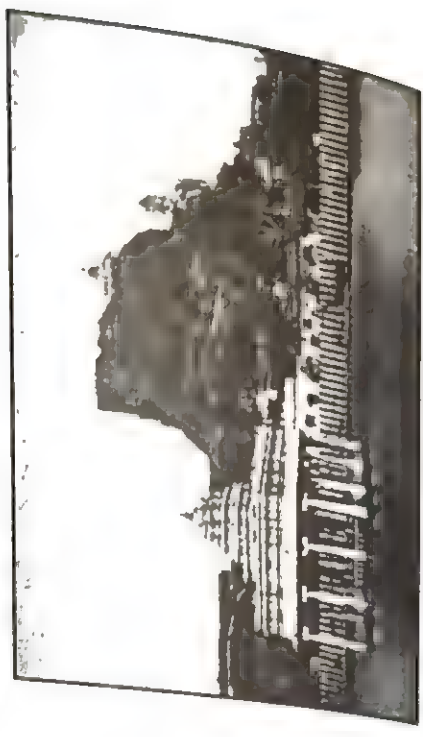
पहाड़ीपर गणेश-मन्दिर, त्रिचिनापल्ली

दक्षिण-भारतके कुछ मन्दिर—१७
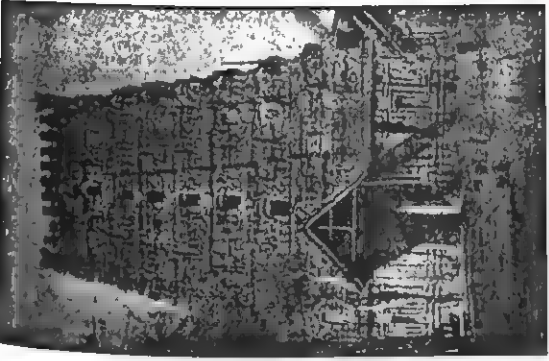
श्रीपंचनदीश्वर-मन्दिरका, गोपुर, तिरुवाडि

श्रीसुन्दरराज-मन्दिर, वृषभाद्रि
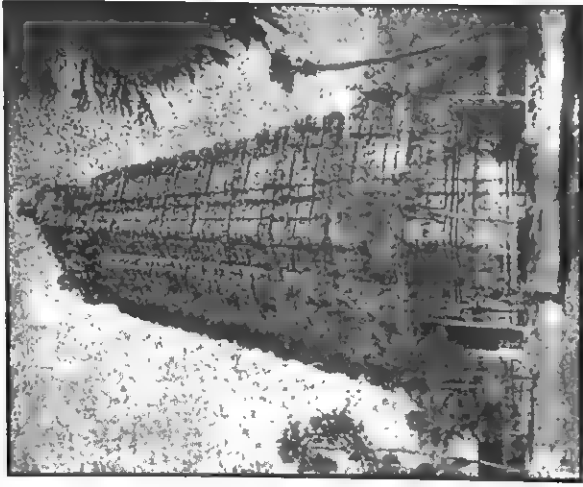
नवपाषाणम्, देवीपत्तन

श्रीसुब्रह्मण्य-मन्दिरके पीछेका गोपुर, पळणि
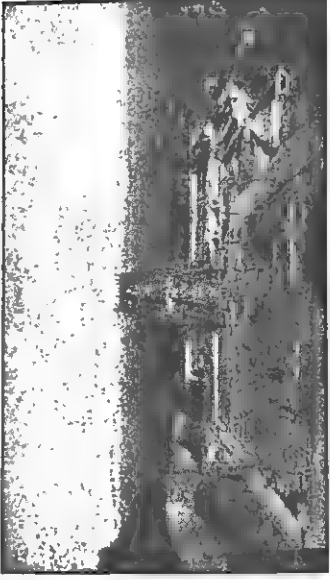
श्रीसुब्रह्मण्य-मन्दिर, पळणि
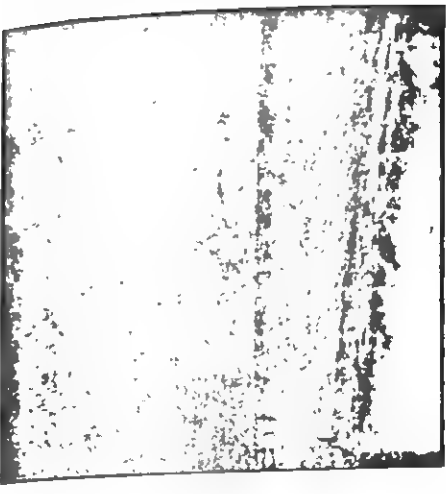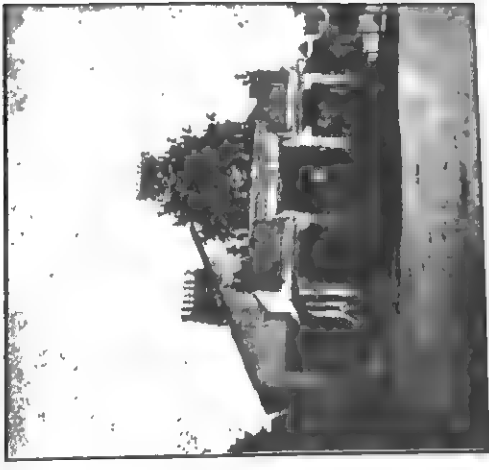
श्रीमहामाया-मन्दिर, समैवरम्

तिरुवाडी

तिरुवाडी कावेरी नदीके बायें तटपर है तथा तंजौर रेलवे-स्टेशनसे कुल सात मील उत्तर है। पुराणोंके एक श्लोकमें आता है कि तिरुवदी सप्तस्थलियों-सात पवित्र स्थलोंमें मुख्य है। तमिळमें इसको 'तिरुवैयारु' कहते हैं। यहाँ सूर्य-पुष्करिणी तीर्थ, गङ्गा-तीर्थम्, अमृतवाडी या चन्द्रपुष्करिणी, पालारु तथा नन्दी-तीर्थम्—ये पाँच पवित्र नदियाँ हैं। ये सब नन्दीके अभिषेकके लिये उत्पन्न कही जाती हैं। माना जाता है कि ये भीतर-ही-भीतर प्रवाहित होती हुई कावेरीमें मिल जाती हैं।

पञ्चनदीश्वर-मन्दिर यहाँका मुख्य मन्दिर है। यह स्वयम्भू-लिङ्ग है। पूर्वगोपुरसे प्रवेश करनेपर पहले आँगनमें दक्षिणकी ओर दक्षिण-कैलास तथा उत्तरकी ओर उत्तर-कैलास मिलता है। पुराणोंका कथन है कि सूर्यवंशी महाराज सुरथने इन मन्दिरोंका निर्माण कराया था। मन्दिरके शिलालेखोंसे, जो सर्वत्र भरे पड़े हुए हैं, इसका निर्माणकाल अत्यन्त प्राचीन युगमें हुआ ज्ञात होता है। मन्दिरके घेरेमें ही भगवान् पञ्चनदीश्वरकी पत्नी धर्मसंवर्धिनीदेवीका मन्दिर है। दक्षिण-भारतके प्रसिद्ध गायक एवं भक्त कवि त्यागराजने अपना अधिकांश जीवन यहीं व्यतीत किया था।

त्रिचिनापल्ली-श्रीरङ्गम्

यद्यपि त्रिचिनापल्ली और श्रीरङ्गम् दो स्टेशन हैं, किन्तु वे एक महानगरके ही दो स्टेशनोंकी भाँति हैं। नासिक और पञ्चवटीकी भाँति एक ही महानगरको मध्यमें बहकर कावेरी दो भागोंमें बाँट देती है। वैसे मुख्य नगर त्रिचिनापल्ली है और तीर्थ श्रीरङ्गम् है। श्रीरङ्गम् द्वीपका अधिकांश नगर श्रीरङ्गमन्दिरके भीतर या उसके आस-पास आ जाता है। त्रिचिनापल्लीको प्रायः लोग 'त्रिची' कहते हैं; किंतु इस नगरका शुद्ध तमिळ नाम 'तिरुचिरापल्ली' है। इसका प्राचीन संस्कृत-नाम त्रिशिरःपल्ली है। इसे रावणके भाई त्रिशिरा नामक राक्षसने बसाया था, जो बड़ा शिवभक्त था और जिसका भगवान् श्रीरामने उसके दो और भाई खर-दूषणके साथ वध किया था।

मार्ग

त्रिचिनापल्ली दक्षिणकी रेलवे-लाइनोंका केन्द्र है। मद्रास-धनुष्कोटि लाइनका यह मुख्य स्टेशन है। विल्लुपुरम्से एक लाइन और यहाँतक आती है। त्रिचिनापल्लीसे एक लाइन ईरोडकी ओर जाती है और एक लाइन मदुरा-त्रिवेन्द्रम्की ओर। एक लाइन त्रिचिनापल्लीसे श्रीरङ्गम्तक जाती है। त्रिचिनापल्लीसे श्रीरङ्गम् ८ मील है। विल्लुपुरम्-त्रिचिनापल्ली लाइनपर श्रीरङ्गम् स्टेशन त्रिचिनापल्लीसे पहले पड़ता है।

ठहरनेके स्थान

त्रिचिनापल्लीमें स्टेशनसे थोड़ी दूरपर म्युनिसिपल चोल्ट्री है, जिसमें किराया लेकर ठहरनेको कमरा दिया जाता है। नगरमें गणेश-मन्दिरके पास खेमराज श्रीकृष्णदासकी धर्मशाला है। श्रीरङ्गम्में कई धर्मशालाएँ हैं।

गणेश-मन्दिर—त्रिचिनापल्लीमें यही एक मुख्य मन्दिर है। वैसे त्रिचिनापल्ली किलेमें 'तेप्पकुलम्' सरोवर भी दर्शनीय है।

त्रिचिनापल्ली स्टेशनसे लगभग डेढ़ मील दूर नगरके उत्तर भागमें कावेरीके पास २३५ फुट ऊँची पत्थरकी एक चट्टान ऐसी लगती है जैसे विशाल नन्दी नगरके मध्य आ बैठा है। इसके एक भागमें नीचेसे ऊपरतक मन्दिर बने हैं। इसे कैलासका ही एक खण्ड बताया जाता है। इसीलिये इसे दक्षिण-कैलास कहा जाता है।

नगरकी सड़कपर एक साधारण गोपुर है। उसे पार करनेपर नगरके मध्यकी सड़क मिलती है। उसके एक ओर एक फाटक है। उसके भीतर प्रवेश करनेपर बहुत दूरतक सीढ़ियोंके ऊपर छत बनी दीखती है। यहाँ पहले सहस्रस्तम्भ मण्डप था; किन्तु सन् १७७२ में एक बड़े स्फोटसे मण्डपका अधिकांश भाग नष्ट हो गया। जो भाग बचा है, उसमें दूकानें हैं।

द्वारमें प्रवेश करनेपर जहाँ सीढ़ियाँ प्रारम्भ होती हैं, वहाँ दाहिने हाथ गणेशजीका मण्डप है। इस गणेश-मूर्तिकी आस-पासके लोग प्रतिदिन पूजा करते हैं। यहीं द्वारपालोंकी मूर्ति है। आगे कुछ सीढ़ियाँ चढ़नेपर एक सौ स्तम्भोंका मण्डप है। यह उत्सवमण्डप है। मण्डपमें

एक सुन्दर पीठिका बनी है।

मण्डपसे आगे जानेपर सीढ़ियाँ दो ओर जाती हैं। बायीं ओर ८६ सीढ़ी चढ़नेपर एक बड़ा शिव-मन्दिर मिलता है। इसमें कई छोटे-छोटे मण्डप और मन्दिर हैं। पहले पार्वतीजीका मन्दिर मिलता है। यहाँ वे सुगन्धि-कुन्तलाके नामसे विख्यात है। पार्वतीजीका श्रीविग्रह उद्दीप्त दिखायी देता है। पार्वती-मन्दिरसे कुछ ऊपर शिवजीका मन्दिर है। मन्दिरमें श्यामवर्ण विशाल मातृभूतेश्वर शिव-लिङ्ग है। यह लिङ्ग-मूर्ति अलगसे स्थापित नहीं है, इस शिलामेंसे ही बनी है।

यहाँ शङ्करजीको 'ता मानवर' कहते हैं, जिसका 'माता बननेवाले प्रभु' होता है। जिस भक्तने इस शिव-मन्दिरका जीर्णोद्धार कराया, उसका भी यही नाम था। कहा जाता है प्राचीन कालमें कोई वृद्धा शिवभक्ता अपनी पुत्रीकी ससुराल इसलिये जा रही थी कि पुत्री आसन्न प्रसवा थी, उस समय उसकी सेवा-शुश्रूषा करनी थी। मार्गमें नदी पड़ती थी और उसमें बाढ़ आयी थी। उस समय वह वृद्धा नदी-किनारे ही भगवान् आशुतोषका स्मरण करती बैठी रही। नदीका पूर उतरनेपर दूसरे दिन वह पुत्रीके यहाँ पहुँची। पुत्रीके बालक हो चुका था और उसकी इस वृद्धा माताके वेशमें स्वयं भगवान्ने वहाँ सेवा-सँभाल की थी। इसीलिये यहाँ भगवान् शङ्करका यह नाम पड़ा।

शिव और पार्वतीके—दोनों ही मन्दिरोंमें छतके नीचे सुन्दर तिरंगे चित्र बने हैं। मदुरामें, काञ्चीमें और यहाँ भारतीय शिल्पका अद्भुत कौशल देखनेको मिलता है। यह है पत्थरकी शृङ्खला। काञ्चीके वरदराज-मन्दिरमें कोटितीर्थके समीप मण्डपमें, मदुराके मीनाक्षी-मन्दिरमें सुन्दरेश्वर-मन्दिरके घेरेमें और यहाँ शिव-मन्दिरमें यह अद्भुत कला है। पत्थर काटकर ऐसी जंजीर बनायी गयी है, जिसकी कड़ियाँ घूम सकती हैं।

यहींपर सुब्रह्मण्यम्, गणेश, नटराज आदिके भी श्रीविग्रह हैं। शिव-मन्दिरके सामने चाँदीसे मढ़ी नन्दीकी विशाल मूर्ति है।

शिव-मन्दिरसे ८६ सीढ़ी उतरकर फिर वहाँ आ जाना चाहिये, जहाँसे दो मार्ग हुए हैं। अब सामनेकी सीढ़ियोंसे २०८ सीढ़ियाँ चढ़नेपर चट्टानके सबसे ऊपरी भागमें गणेशजीका मन्दिर दीख पड़ता है। वहाँ ऊपर सीढ़ियाँ नहीं बनी हैं। चट्टानमें ही सीढ़ियाँ काट दी गयी हैं। शिखरपर गणेशजीका मन्दिर तो छोटा है, किन्तु गणेशजीकी मूर्ति भव्य है और बहुत प्राचीन है। भाद्रपदमें गणेशचतुर्थीको यहाँ महोत्सव होता है।

श्रीरङ्गम्

गणेश-मन्दिरसे उतरकर कावेरीका पुल पार करके श्रीरङ्गद्वीपमें पहुँचना होता है। श्रीरङ्गम् स्टेशन तो है ही, त्रिचिनापल्ली स्टेशनसे श्रीरङ्ग-मन्दिरतक बसें आती हैं। गणेश-मन्दिरसे श्रीरङ्गमन्दिर लगभग डेढ़ मील है। वहाँसे भी बस मिलती है।

कावेरीकी दो धाराओंके मध्यमें श्रीरङ्गम्-द्वीप १७ मील लंबा तथा तीन मील चौड़ा है। कावेरीकी उत्तरधाराको कोलरून (कोळ्ळिडम्) तथा दक्षिणधाराको कावेरी कहते हैं। श्रीरङ्ग-मन्दिरसे लगभग ५ मील ऊपर दोनों धाराएँ पृथक् हुई हैं और लगभग १२ मील मन्दिरसे आगे जाकर परस्पर मिल गयी हैं।

श्रीरङ्ग-मन्दिरका विस्तार २६६ बीघेका कहा जाता है। श्रीरङ्गनगरके बाजारका बड़ा भाग मन्दिरके घेरेके भीतर आ जाता है। इतना विस्तारवाला मन्दिर भारतमें दूसरा नहीं है।

श्रीरङ्गजीका निजमन्दिर सात प्राकारोंके भीतर है। इन प्राकारोंमें छोटे-बड़े १८ गोपुर हैं। मन्दिरके पहले (बाहरी) घेरेमें बहुत-सी दुकानें हैं। बीचमें पक्की सड़क है। (बाहरसे) दूसरे घेरेमें चारों ओर सड़क है। इस घेरेमें पण्डों तथा ब्राह्मणोंके घर हैं। तीसरेमें भी ब्राह्मणोंके घर हैं।

चौथे (मध्यके) घेरेमें कई बड़े मण्डप बने हैं। इनमें एक सहस्र-स्तम्भ मण्डप है, जिसमें ९६० स्तम्भ हैं। इस घेरेके पूर्ववाले बड़े गोपुरके पश्चिम एक सुन्दर मण्डप और है। उसके स्तम्भोंमें सुन्दर घोड़े, घुड़सवार तथा अनेकों मूर्तियाँ बनी हैं।

पाँचवें घेरेमें दक्षिणके गोपुरके सामने उत्तरकी ओर गरुड़मण्डप है। उसमें बहुत बड़ी गरुड़जीकी मूर्ति है।

इससे और उत्तर एक चबूतरेपर स्वर्णमण्डित गरुड़-स्तम्भ है। इसी घेरेके ईशानकोणमें चन्द्रपुष्करिणी नामक गोलाकार सरोवर है। यात्री इसमें स्नान करते हैं। उसके पास महालक्ष्मीका विशाल मन्दिर है। कल्पवृक्ष नामक वृक्ष, श्रीराम-मूर्ति तथा श्रीवैकुण्ठनाथभगवान्का प्राचीन स्थान भी वहीं पास है। श्रीलक्ष्मीजीको यहाँ श्रीरङ्गनायकी कहते हैं। श्रीलक्ष्मीजीके मन्दिरके सामनेके मण्डपका नाम 'कम्बमण्डप' है। तमिळके महाकवि कम्बने यहीं अपनी कम्ब-रामायण जनताको सुनायी थी।

छठे घेरेके पश्चिम भागमें एक द्वार तथा दक्षिण भागमें मण्डप हैं। इसके भीतर सातवाँ घेरा है, जिसका द्वार दक्षिणकी ओर है। इसके उत्तरी भागमें श्रीरङ्गजीका निजमन्दिर है। इसका शिखर स्वर्णमण्डित है। मन्दिरके पीछेकी छतमें अनेकों देव-मूर्तियाँ हैं। निजमन्दिरके पीछे एक कूप और एक मन्दिर है। इस मन्दिरमें आचार्य श्रीरामानुज, विभीषण तथा हनुमान्जी आदिके श्रीविग्रह हैं। इसके पीछे भूमिमें एक पीतलका टुकड़ा जड़ा है। वहाँसे श्रीरङ्गजीके मन्दिरके शिखरका दर्शन होता है। थोड़ी दूर आगे एक दालानमें भी एक पीतलका टुकड़ा जड़ा है। वहाँसे मन्दिरके शिखरपर स्थित श्रीवासुदेव-मूर्तिके दर्शन होते हैं। शिखरके ऊपर जानेका मार्ग भी है। सीढ़ियाँ बनी हैं। ऊपर जाकर श्रीवासुदेव-मूर्तिके दर्शन किये जाते हैं।

श्रीरङ्गजीके निजमन्दिरमें शेषशय्यापर शयन किये श्याम-वर्ण श्रीरङ्गनाथजीकी विशाल चतुर्भुज मूर्ति दक्षिणाभिमुख स्थित है। भगवान्के मस्तकपर शेषजीके पाँच फणोंका छत्र है। बहुमूल्य वस्त्राभूषणोंसे मण्डित यह मूर्ति परम भव्य है। भगवान्के समीप श्रीलक्ष्मीजी तथा विभीषण बैठे हैं। श्रीदेवी, भूदेवी आदिकी उत्सव-मूर्तियाँ भी वहाँ हैं।

श्रीरङ्ग-मन्दिरसे दक्षिण लगभग आध मीलपर कावेरीकी मुख्य धारा है। यहाँ किनारे पक्का घाट बना है। इस मुख्य धारासे पहले कावेरीकी एक छोटी धारा श्रीरङ्गम् बाजारके पाससे बहती है। उसपर भी पक्के घाट हैं। बहुत-से लोग इस छोटी धारापर ही स्नान करते हैं। कावेरीकी कोलरून नामक उत्तरी धारा मन्दिरसे आध मील उत्तर है।

पौष-शुक्ला प्रतिपदासे एकादशीतक श्रीरङ्गम्में बहुत बड़ा महोत्सव होता है। इस एकादशीका नाम वैकुण्ठ-एकादशी है। उस दिन श्रीरङ्गजीके मन्दिरका वैकुण्ठद्वार खुलता है। भगवान्की उत्सव-मूर्ति उस द्वारसे बाहर निकलती है। उस द्वारसे पीछे यात्री बाहर निकलते हैं। वैकुण्ठद्वारसे निकलना बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

कथा

भगवान् नारायणने अपना साक्षात् श्रीविग्रह ब्रह्माजीको प्रदान किया था। वैवस्वत मनुके पुत्र इक्ष्वाकुने कठोर तपस्या करके ब्रह्माजीको प्रसन्न किया और उनसे विमानके साथ श्रीरङ्गजीकी मूर्ति प्राप्त की। तभीसे श्रीरङ्गजी अयोध्यामें विराजमान हुए और इक्ष्वाकुवंशीय नरेशोंके कुलाराध्य हुए।

त्रेतायुगमें चोलराज धर्मवर्मा अयोध्यानरेश महाराज दशरथके अश्वमेध यज्ञमें आमन्त्रित होकर अयोध्या गये। वहाँ उन्होंने श्रीरङ्गजीका दर्शन किया। उनका चित्त इस प्रकार श्रीरंगजीमें लग गया कि वे अपने यहाँ लौटकर श्रीरङ्गजीको प्राप्त करनेके लिये कठोर तप करने लगे; किंतु उन्हें सर्वत्र ऋषि-मुनियोंने यह कहकर तपस्यासे निवृत्त किया कि 'श्रीरङ्गजी स्वयं यहाँ पधारनेवाले हैं।'

लङ्का-विजयके पश्चात् मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजीका अयोध्यामें राज्याभिषेक हुआ। राज्योभिषेकके उपलक्ष्यमें प्रभु सबको मुँहमाँगी वस्तुएँ प्रदान कर रहे थे। जब सुग्रीवादिको उपहार देकर प्रभु विदा करने लगे, तब विभीषणने विदा होते समय रघुनाथजीसे इक्ष्वाकुवंशके आराध्य श्रीरङ्ग-विग्रहकी याचना की। उदार-चक्र-चूड़ामणि श्रीरघुनाथजीने विभीषणको श्रीरङ्ग-मूर्ति विमान (निजमन्दिर)-के साथ दे दी।

विभीषण उस दिव्य विग्रहको लेकर चले तो देवताओंको ऐसा लगा कि यह दिव्य मूर्ति लङ्का नहीं जानी चाहिये। लङ्का जानेके मार्गमें यहाँ कावेरीके द्वीपमें विभीषणने पूरे विमानको चन्द्रपुष्करिणीके तटपर रखा और स्वयं नित्य कर्ममें लग गये। नित्यकर्मसे निवृत्त होकर विभीषणने विमान उठानेका बहुत प्रयत्न किया, किंतु वे सफल नहीं हो सके। उस समय श्रीरङ्गजीने विभीषणसे कहा—'विभीषण! तुम खिन्न मत हो। यह कावेरीका मध्यद्वीप परम पवित्र है। राजा धर्मवर्माने मुझे पानेके लिये कठोर तपस्या की है और ऋषिगण उसे आश्वासन दे चुके हैं। इसलिये मेरी इच्छा यहाँ स्थित होनेकी है। तुम यहाँ आकर मेरा दर्शन कर जाया करो। मैं लङ्काकी ओर मुख करके दक्षिणमुख होकर यहाँ स्थित रहूँगा।'

विभीषण लौट गये। वे प्रतिदिन श्रीरङ्गधाम दर्शन करने आने लगे। एक दिन वे श्रीरङ्गजीका दर्शन करने उतावलीमें वेगपूर्वक रथसे आ रहे थे। धोखेमें उनके रथसे एक ब्राह्मण कुचला जाकर मर गया। इसपर यहाँके ब्राह्मणोंने विभीषणको पकड़ लिया और मार डालनेका प्रयत्न किया; किंतु विभीषणको तो भगवान् श्रीराम कल्पान्ततकके लिये अमर रहनेका वरदान दे चुके थे; विभीषण जब मरे नहीं तब ब्राह्मणोंने उन्हें एक भूगर्भ-स्थित स्थानमें बंद कर दिया।

देवर्षि नारदसे भगवान् श्रीरामको अयोध्यामें यह समाचार मिला। वे भक्तवत्सल पुष्पकविमानसे यहाँ पधारे। ब्राह्मणोंने उनका स्वागत किया और विभीषणका अपराध बताकर दण्ड देनेके लिये उन्हें प्रभुके सम्मुख उपस्थित किया। श्रीरामने कहा—'सेवकका अपराध तो स्वामीका ही अपराध माना जाता है। ये मेरे सेवक हैं। इन्हें आपलोग छोड़ दें, और मुझे दण्ड दें।' ब्राह्मण द्रवित हो गये प्रभुके भक्तवात्सल्यसे। विभीषणका छुटकारा हो गया। तबसे विभीषणजी प्रतिदिन श्रीरङ्गजीका दर्शन करने अलक्षितरूपमें आने लगे।

यहाँ शंकर-गुरुकुलम् नामका एक प्रसिद्ध प्राचीन पद्धतिका गुरुकुल तथा वाणी-विलास नामका मुद्रणालय है, जहाँसे प्रधानतया संस्कृतके प्राचीन शास्त्रीय ग्रन्थ बहुत शुद्ध एवं सुन्दर ढंगसे प्रकाशित होते हैं।

जम्बुकेश्वर

दक्षिण-भारतके पञ्चतत्त्वलिङ्गोंमें जम्बुकेश्वर आपोलिङ्गम् (जलतत्त्वलिङ्ग) माना जाता है। यह मन्दिर श्रीरङ्गम् स्टेशनके समीप ही है। श्रीरङ्गम-मन्दिरसे यह लगभग एक मील पूर्व है। यह मन्दिर श्रीरङ्गम्-मन्दिरसे भी प्राचीन है। श्रीरङ्गजीके इस द्वीपमें आनेके पूर्व यहाँ श्रीजम्बुकेश्वर ही थे।

जम्बुकेश्वर-मन्दिरका विस्तार भी सौ बीघेसे अधिक ही है। इसमें तीन आँगन हैं। पहले घेरेके द्वारसे, जिससे मन्दिरके पहले प्राङ्गणमें प्रवेश करना होता है, मार्ग सीधे एक मण्डपमें जाता है, जिसमें ४०० स्तम्भ हैं। आँगनमें दाहिनी ओर 'तेप्पाकुलम्' नामका सरोवर है। इसमें झरनेका पानी आता है। सरोवरके मध्यमें एक मण्डप है। वर्षमें एक बार श्रीरङ्ग-मन्दिरसे श्रीरङ्गजीकी उत्सवमूर्ति यहाँ लाकर पधरायी जाती है।

आँगनके वाम भागमें एक बड़ा मण्डप है। उसके आगे मन्दिरके दूसरे आँगनमें सहस्रस्तम्भमण्डप है और उसके पास एक छोटा सरोवर है।

श्रीजम्बुकेश्वर-मन्दिर पाँचवे घेरेमें है। यहाँ श्रीजम्बुकेश्वर-लिङ्ग एक जलप्रवाहके ऊपर स्थापित है। लिङ्गमूर्तिके नीचेसे बराबर जल ऊपर आता रहता है। निजमन्दिरमें जल भरा रहता है और अनेक बार उससे बाहरतक भी जल भर जाता है। जल निकलनेके लिये मार्ग बना है, जिससे मन्दिरमें भरा जल बाहर निकाला जाता है। जलके ऊपर मूर्तिके ऊपरी भागके दर्शन होते हैं।

जम्बुकेश्वर-मन्दिरके पीछे एक चबूतरेपर जामुनका एक प्राचीन वृक्ष है। इसी वृक्षके कारण मन्दिर तथा शिवलिङ्गका नाम जम्बुकेश्वर पड़ा। कहते हैं, आदि शंकराचार्यने जम्बुकेश्वरका पूजन-आराधन किया था। वहाँ शंकराचार्यकी मूर्ति भी है।

निजमन्दिरके बाहर मण्डपमें नटराज, सुब्रह्मण्यम्, दक्षिणामूर्ति आदि देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। जम्बुकेश्वर-मन्दिरकी तीसरी परिक्रमामें सुब्रह्मण्यम्का एक मन्दिर है।

इस मन्दिरमें अनेकों मण्डप हैं। उनमें मुख्य हैं—झूलनमण्डप, शतस्तम्भमण्डप, सहस्रस्तम्भमण्डप, नवरात्रिमण्डप, वसन्तमण्डप, ध्वजस्तम्भमण्डप, सोमास्कन्दमण्डप, नटराजमण्डप और त्रिमूर्तिमण्डप। इनमें सोमास्कन्दमण्डपकी शिल्पकला भव्य है। कहा जाता है यह मण्डप भगवान् श्रीरामका बनवाया हुआ है।

मन्दिरकी परिक्रमामें एक राजराजेश्वर-मन्दिर है। उसमें पञ्चमुखी शिवलिङ्ग प्रतिष्ठित है।

जम्बुकेश्वर-मन्दिरके प्राङ्गणके बायीं ओर एक फाटक है। उससे भीतर जानेपर भगवती जगदम्बाका मन्दिर मिलता है। यहाँ अम्बाको अखिलाण्डेश्वरी कहते हैं। यह मन्दिर विशाल है। इसका आँगन विस्तृत है। इस आँगनमें भी कई मण्डप मिलते हैं।

श्रीजगदम्बाके निज-मन्दिरके ठीक सामने गणेशजीका मन्दिर है। इसमें गणेशजीकी मूर्ति शङ्कराचार्यद्वारा प्रतिष्ठित है। यह मूर्ति इस ढंगसे स्थापित है कि

जगदम्बाके ठीक सामने पड़ती है।

अम्बाके निजमन्दिरमें भगवतीकी भव्य मूर्ति प्रतिष्ठित है। यह मूर्ति तेजोद्दीप्त है। कहा जाता है, यह मूर्ति पहले इतनी उग्र थी कि इनका दर्शन करनेवाला वहीं प्राण त्याग देता था। आद्यशङ्कराचार्य जब यहाँ पधारे, तब उन्होंने जगदम्बाके उग्र तेजको शान्त करनेके लिये उनके कर्णोंमें दो हीरकजटित श्रीयन्त्रके कुण्डल पहना दिये और सम्मुख गणेशजीकी मूर्ति स्थापित कर दी। सम्मुख पुत्रकी मूर्ति होनेसे जगदम्बाका तेज वात्सल्यके कारण सौम्य हो गया।

श्रीजगदम्बा-मन्दिरके सामने द्वारके समीप एक स्तम्भमें वृषभारूढ़ एकपाद त्रिमूर्ति महेश्वरकी अत्यन्त भव्य मूर्ति अङ्कित है।

कथा—पहले आसपास जामुनके ही वृक्ष थे। यहाँ एक ऋषि भगवान् शङ्करकी आराधना करते थे। जम्बूवनमें निवास करनेके कारण उनका नाम जम्बू ऋषि पड़ गया था। उनकी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान् शङ्करने उन्हें दर्शन दिया और उनकी प्रार्थनापर यहाँ लिङ्ग-विग्रहके रूपमें नित्य स्थित हुए।

आस-पासके जामुनके वृक्षोंके पत्ते शिवलिङ्गपर गिरा करते थे। इनसे उसे बचानेके लिये एक मकड़ी मूर्तिके ऊपर प्रतिदिन जाला बना देती थी। एक हाथी सूँड़में जल लाकर मूर्तिका अभिषेक करता था। भगवान्‌की मूर्तिपर मकड़ीका जाला देखकर हाथीको बुरा लगता था। उधर मकड़ीको भी बुरा लगता था कि हाथी पानी डालकर बार-बार उसका जाला तोड़ देता है। इस प्रकार दोनोंमें प्रतिस्पर्धा हो गयी। हाथीने एक दिन मकड़ीको मार डालनेके लिये सूँड़ बढ़ायी तो मकड़ी हाथीकी सूँड़में चली गयी। फल यह हुआ कि हाथी और मकड़ी दोनों मर गये। दोनोंके भाव शुद्ध थे। भगवान् शङ्करने दोनोंको अपने निज-जनके रूपमें स्वीकार किया।

श्रीजम्बुकेश्वर-मन्दिरके सामने मण्डपमें एक स्तम्भमें इस कथाके चित्र अङ्कित हैं। जम्बुकेश्वर-मन्दिर तथा जगदम्बा-मन्दिरमें कई शिलालेख तमिळमें हैं। उनमेंसे एकमें यह कथा उत्कीर्ण है।

श्रीनिवास—जैसे श्रीरङ्गपट्टन तथा शिवसमुद्रमें दोसे तीन मीलकी दूरीपर श्रीनिवास-मन्दिर हैं, वैसे ही श्रीरङ्गम्‌से १२ मीलपर कोणेश्वरम् नामक स्थानमें श्रीनिवास-मन्दिर है। यह मन्दिर छोटा ही है। यहाँ श्रीनिवासभगवान्‌की खड़ी चतुर्भुज मूर्ति है।

समयपुरम्—श्रीरङ्गम्‌से यह स्थान ४ मील दूर है। बस जाती है। यहाँ महामाया (मारी अम्मन्)-का मन्दिर है। मन्दिर विशाल है और देवीकी मूर्ति प्रभावमयी है। कहा जाता है, यहाँ देवी-मूर्तिकी स्थापना महाराज विक्रमादित्यने की थी। इस ओर इस मन्दिरकी बहुत प्रतिष्ठा है।

औरैयूर—यह स्थान श्रीरङ्गम्‌से ३ मील दूर है। यहाँ श्रीलक्ष्मीजीका भव्य मन्दिर है।

पळणि—त्रिचिनापल्ली-मदुरा लाइनपर त्रिचिनापल्लीसे ५८ मील दूर दिंडिगुल स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन कोयमबतूरतक जाती है। इस लाइनपर दिंडिगुलसे ३७ मील दूर पळणि स्टेशन है।

दक्षिण-भारतमें सुब्रह्मण्यम्‌के छः स्थान मुख्य हैं। वे हैं—तिरुत्तनी, पळणि, तिरुचेंदूर, तिरुप्परंकुन्रम्, पनमुदिर्‌शोलै और स्वामिमलै।

पळणिमें यात्रियोंके ठहरनेकी सुविधा है। धर्मशालाएँ हैं। पळणि एक अच्छा बाजार है।

यह पर्वतीय तीर्थोंमें, विशेषकर सुब्रह्मण्य (भगवान् कार्तिकेय)-सम्बन्धी तीर्थोंमें मुख्य है। पुराणोंमें इसका नाम तिरुवांविनंकुडि भी आता है। यहाँ श्रीलक्ष्मीदेवी, सूर्यदेव, भूदेवी तथा अग्निदेवने भगवान्‌की आराधना की थी।

मन्दिर अतिरम्य वाराहगिरि नामके पर्वतपर, जो कोडैक्कानल् पर्वतमालाकी एक श्रेणी है, स्थित है। पर्वतको मेरुपर्वतका अंश कहा जाता है। देवताओंने जब विन्ध्यावरोधके लिये अगस्त्यजीको आग्रहपूर्वक बुलाया था, तब उन्हें आवासके लिये इस पर्वतको दिया था।

रामेश्वरम् और उसके आसपासके तीर्थ

रामेश्वर-माहात्म्य

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं। ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं॥
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि। सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि॥
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि। भगति मोरि तेहि संकर देइहि॥
मम कृत सेतु जो दरसनु करिही। सो बिनु श्रम भवसागर तरिही॥

अस्ति रामेश्वरं नाम रामसेतौ पवित्रितम्।
क्षेत्राणामपि सर्वेषां तीर्थानामपि चोत्तमम्॥
दृष्टमात्रे रामसेतौ मुक्तिः संसारसागरात्।
हरे हरौ च भक्तिः स्यात्तथा पुण्यसमृद्धिता॥
कर्मणस्त्रिविधस्यापि सिद्धिः स्यान्नात्र संशयः॥

× × ×

गण्यन्ते पांसवो भूमेर्गण्यन्ते दिवि तारकाः।
सेतुदर्शनजं पुण्यं शेषेणापि न गण्यते॥
समस्तदेवतारूपः सेतुबन्धः प्रदर्शितः।
तद्दर्शनवतः पुंसः कः पुण्यं गणितुं क्षमः॥
सेतुं रामेश्वरं लिङ्गं गन्धमादनपर्वतम्।
चिन्तयन् मनुजः सत्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
सेतुसैकतमध्ये यः शेते तत्पांसुकुण्ठितः।
यावन्तः पांसवो लग्नास्तस्याङ्गे विप्रसत्तमाः।
तावतां ब्रह्महत्यानां नाशः स्यान्नात्र संशयः।

(स्कं० ब्रह्मखं० सेतुमा० १। १७-१९, २२, २३, २७; ४७-४८)

'भगवान् श्रीरामद्वारा बँधाये हुए सेतुसे जो परम पवित्र हो गया है, वह रामेश्वर-तीर्थ सभी तीर्थों तथा क्षेत्रोंमें उत्तम है। उस सेतुके दर्शनमात्रसे संसार-सागरसे मुक्ति हो जाती है तथा भगवान् विष्णु एवं शिवमें भक्ति तथा पुण्यकी वृद्धि होती है। उसके तीनों प्रकारके (कायिक, वाचिक, मानसिक) कर्म भी सिद्ध हो जाते हैं, इसमें कोई संशय नहीं है। भूमिके रज-कण तथा आकाशके तारे गिने जा सकते हैं, पर सेतुदर्शनजन्य पुण्यको तो शेषनाग भी नहीं गिन सकते। सेतुबन्ध समस्त देवतारूप कहा गया है। उसके दर्शन करनेवाले पुरुषके पुण्य कौन गिन सकता है? सेतु, श्रीरामेश्वरलिङ्ग तथा गन्धमादनपर्वत—इनका चिन्तन करनेवाला मनुष्य भी वस्तुतः सारे पापोंसे मुक्त हो जाता है। ब्राह्मणो! जो सेतुकी बालुकाओंमें शयन करता है, उसकी धूलिसे वेष्टित होता है, उसके शरीरमें बालूके जितने कण लग जाते हैं, उतनी ब्रह्महत्याओंका नाश हो जाता है—इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।'

रामेश्वर

चार दिशाओंके चार धामोंमें रामेश्वर दक्षिण दिशाका धाम है। यह एक समुद्री द्वीपमें स्थित है। समुद्रका एक भाग बहुत संकीर्ण हो गया है, उसपर पाम्बन स्टेशनके पास रेलवे-पुल है। यह पुल जहाजोंके आने-जानेके समय उठा दिया जाता है। कहा जाता है, समुद्रका यह भाग पहले नहीं था। रामेश्वर पहले भूमिसे मिला था। किसी प्राकृतिक घटनाके कारण इस अन्तरीपका मध्यभाग दब गया और वहाँ समुद्र आ गया। यह रामेश्वरद्वीप लगभग ११ मील लंबा और ७ मील चौड़ा है।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें श्रीरामेश्वरकी गणना है। भगवान् श्रीरामने इसकी स्थापना की थी। कहते हैं भगवान् श्रीराम जब यहाँ पधारे, तब उन्होंने पहले उप्पूर्में गणेशजीकी प्रतिष्ठा की। नवपाषाण्में उन्होंने नवग्रह-पूजन, स्नान आदि किया। देवीपत्तनम्के वेताल-तीर्थमें तथा पाम्बनके भैरव-तीर्थमें भी उन्होंने स्नान किया। एक स्थानपर वे एकान्तमें बैठे। फिर रामेश्वरम् जाकर उन्होंने रामेश्वर-स्थापनका पूजन किया।

भगवान् श्रीरामने जो सेतु बँधवाया था, वह अपार वानरसेनाको समुद्र-पार ले जानेयोग्य विस्तीर्ण था। उसकी चौड़ाई देवीपत्तनसे दर्भशयनतक थी। देवीपत्तनको सेतुमूल कहते हैं। सेतु सौ योजन लंबा था। धनुष्कोटिपर लङ्कासे लौटनेपर भगवान्ने धनुषकी नोकसे सेतु तोड़ दिया। इस प्रकार रामनाद (रामनाथपुरम्)-से धनुष्कोटितकका यह पूरा क्षेत्र परम पवित्र है। यह पूरा क्षेत्र भगवल्लीला-स्थल है। इसके विभिन्न तीर्थोंका परिचय आगे क्रमशः दिया जा रहा है।

इस क्षेत्रका नाम गन्धमादन था; किंतु कलियुगके प्रारम्भमें गन्धमादन पर्वत पाताल चला गया। उसका पवित्र प्रभाव यहाँकी भूमिमें है। यहाँ बार-बार देवता आते थे, अतः इसे देवनगर भी कहते हैं। महर्षि अगत्स्यका आश्रम यहीं पास था। अपनी तीर्थ-यात्रामें श्रीबलरामजी भी यहाँ पधारे थे। पाण्डव भी आये थे। इस प्रकार अनादि कालसे यह देवता, ऋषिगण एवं

महापुरुषोंकी श्रद्धाभूमि रहा है।

मार्ग—मद्राससे धनुष्कोटितक दक्षिण रेलवेकी सीधी लाइन है। इस लाइनपर पाम्बन् स्टेशनसे एक लाइन रामेश्वरम्तक जाती है। रेलवेकी व्यवस्था ऐसी है कि कुछ गाड़ियाँ सीधी रामेश्वर जाती हैं, कुछ धनुष्कोटि। गाड़ी सीधी धनुष्कोटि जाती हो तो पाम्बन्में उसे बदलकर रामेश्वर जाना पड़ता है। मदुरासे आनेवालोंको मानामदुरैमें गाड़ी बदलनेपर मद्रास-धनुष्कोटि लाइनकी गाड़ी मिलती है।

ठहरनेके स्थान—रामेश्वरम्के पंडोंके सेवक दूर-दूरसे यात्रियोंको साथ लाते हैं। पंडोंके यहाँ यात्रियोंके ठहरनेका पर्याप्त स्थान एवं सुविधा रहती है; किंतु रामेश्वरम्में इतनी धर्मशालाएँ हैं कि यात्री पंडोंके यहाँ ठहरें, यह आवश्यक नहीं। १-रामकुमारजी ज्वालादत्त पोद्दार धर्मशाला, मन्दिरके पास; २-बंशीलालजी अबीरचंदकी, मन्दिरसे थोड़ी ही दूर; ३-बलदेवदास दूधवेवालोंकी, स्टेशनसे थोड़ी दूर; ४-भगवानदासजी बागलाकी, रामझरेखाके मार्गपर; ५-तंजौरके राजाकी धर्मशाला, ६-वेंकटरायर धर्मशाला, ७-रामनाथपुर राजाकी धर्मशाला, (इसमें केवल मद्रासी ब्राह्मण रह सकते हैं।) आदि यहाँकी मुख्य धर्मशालाएँ हैं।

विशेष सुविधा—रामेश्वरम्में उत्तर भारतीय बराबर आते हैं, इससे यहाँ हिंदी-भाषा समझी जाती है। भाषा न समझनेकी असुविधा यहाँ नहीं होती।

लक्ष्मण-तीर्थ—रामेश्वर पहुँचकर यात्री प्रायः पहले लक्ष्मण-तीर्थमें स्नान करते हैं। यह तीर्थ रामेश्वर-मन्दिरसे सीधी सामने जानेवाली सड़कपर लगभग एक मील पश्चिम है। सड़कके दक्षिण भागमें यह विस्तृत सरोवर है। इसके चारों ओर पक्की सीढ़ियाँ बनी हैं। सरोवरके मध्यमें एक मण्डप है। लङ्कासे लौटकर भगवान् श्रीराम जब रामेश्वर आये, तब उन्होंने पहले यहीं स्नान किया था।

सरोवरके उत्तर एक मण्डप है। उससे लगा हुआ लक्ष्मणेश्वर शिव-मन्दिर है। कहा जाता है कि लक्ष्मणेश्वरकी स्थापना लक्ष्मणजीने की थी। यात्री यहाँ मण्डपमें मुण्डन कराते हैं। स्नान करके तर्पण-श्राद्धादि भी करते हैं तथा लक्ष्मणेश्वरका दर्शन-पूजन करते हैं।

सीता-तीर्थ—लक्ष्मण-तीर्थसे स्नानादि करके लौटते समय कुछ ही दूर सड़कके वामभागमें सीता-तीर्थ नामक कुण्ड मिलता है। इसमें आचमन-मार्जन किया जाता है। इसके पास ही एक मन्दिरमें पञ्चमुखी हनुमान्का मन्दिर है। उसके सामने मन्दिरमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीकी मूर्तियाँ हैं।

राम-तीर्थ—सीता तीर्थसे कुछ और आगे बढ़नेपर दाहिनी ओर रामतीर्थ नामक बड़ा सरोवर मिलता है। इसका जल खारा है। इसके चारों ओर पक्के घाट हैं। सरोवरके पश्चिम एक बड़ा मन्दिर है। इसमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीके श्रीविग्रह प्रतिष्ठित हैं। इसके श्रीविग्रह बड़ा और मनोहर हैं।

रामेश्वर-मन्दिर—रामेश्वर बाजारके पूर्व समुद्र-किनारे लगभग २० बीघे भूमिके विस्तारमें श्रीरामेश्वर-मन्दिर है। मन्दिरके चारों ओर ऊँचा परकोटा है। इसमें पूर्व तथा पश्चिम ऊँचे गोपुर हैं। पूर्वद्वारका गोपुर दस मंजिलका है। पश्चिमद्वारका गोपुर सात मंजिलका है।

पश्चिम गोपुरके भीतर तथा बाहर बाजारमें भी शङ्ख, सीपी, कौड़ी, माला, रंगीन टोकरियाँ आदि बिकती हैं। रामेश्वरमें शङ्ख तथा रंगीन टोकरियोंका बड़ा बाजार है। यहाँसे यात्री प्रायः ये वस्तुएँ साथ ले जाते हैं।

पश्चिमद्वारसे भीतर जानेपर तीन ओर मार्ग जाता है—सामने, दाहिने, बायें। सामने जायँ तो माधव-तीर्थ नामक सरोवर मिलता है। इसके चारों ओर पक्की सीढ़ियाँ हैं। इसमें स्नान-मार्जनादि किया जाता है। इसके पास सेतु-माधवका मन्दिर है।

माधव-तीर्थके उत्तर एक आँगनमें गन्धमादन-तीर्थ, गवाक्षतीर्थ, गवय-तीर्थ, नल-तीर्थ तथा नील-तीर्थ नामक कूप हैं। यहाँ कई छोटे मन्दिर हैं। यात्री अपने साथ रस्सी और बालटी लाते हैं और रामेश्वर-मन्दिरके भीतरके तीर्थोंमें एक ही दिन स्नान कर लेते हैं; पंडेके आदमी साथ हों तो वे रस्सी-बालटी साथ रखते हैं और तीर्थोंका जल निकालकर स्नान कराते जाते हैं। रामेश्वर-मन्दिरमें कुल २२ तीर्थ हैं, जिनमें उपर्युक्त माधव-तीर्थसे नील-तीर्थतक ६ तीर्थ मन्दिरकी सबसे बाहरी परिक्रमा (तीसरे प्राकार) में हैं। दो तीर्थ मन्दिरसे बाहर हैं। उनमें अग्नि-तीर्थ तो मन्दिरके पूर्वद्वारके आगे समुद्रको ही कहते हैं और वहाँसे किनारे-किनारे बायीं ओर कुछ बढ़नेपर समुद्र-तटके पास अगस्त्य-तीर्थ नामक वापी है।

मन्दिरके पश्चिमद्वारसे प्रवेश करके जो मार्ग बायें

गया है, उससे प्रदक्षिणा करते हुए आगे जाना चाहिये। इन मार्गोंके दोनों ओर ऊँचे बरामदे हैं और ऊपर छत है। इस मार्गसे आगे जानेपर बायीं ओर 'रामलिङ्गम्-प्रतिष्ठा' का दृश्य है। यह स्थान नवीन बनाया गया है। यहाँ शेषके फणके नीचे शिवलिङ्ग है। श्रीराम-जानकी उसे स्पर्श किये हैं। वहाँ नारद, तुम्बुरु, लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण, जाम्बवान्, अङ्गद, हनुमान् तथा दो अन्य मूर्तियाँ हैं।

मार्गमें दोनों ओर स्तम्भोंमें सिंहादिकी सुन्दर मूर्तियाँ बनी हैं। एक स्थानपर राजा सेतुपति तथा उनके परिवारके लोगोंकी मूर्तियाँ एक स्तम्भमें बनी हैं। उससे आगे उत्तरके मार्गमें ब्रह्महत्या-विमोचन-तीर्थ, सूर्य-तीर्थ, चन्द्र-तीर्थ, गङ्गा-तीर्थ, यमुना-तीर्थ और गया-तीर्थ नामक कुण्ड हैं। ये तीर्थ मन्दिरके दूसरे घेरेमें हैं। दूसरे घेरेमें ही पूर्वकी ओर चक्र-तीर्थ है। इस तीर्थके पास ही एक सुब्रह्मण्यम्-मन्दिर है। वहाँसे कुछ आगे समीप ही शङ्ख-तीर्थ है।

चक्र-तीर्थ और शङ्ख-तीर्थके मध्यमें रामेश्वरके निज-मन्दिरको जानेका फाटक है। यहाँ आगे बायीं ओर मन्दिरका कार्यालय है। कार्यालयमें गङ्गाजल विक्रयके लिये रखा रहता है। यहीं श्रीरामेश्वरपर गङ्गाजल चढ़ाने, पूजनादि करनेके लिये शुल्क देकर रसीद लेनी पड़ती है। श्रीरामेश्वरजीपर जल चढ़ानेके लिये जो ताँबे या पीतलका पात्र यात्री अर्पित करते हैं, उसे मन्दिरसे लौटाया नहीं जाता। गङ्गाजल कार्यालयसे खरीदना अधिक अच्छा है।

आगे श्रीरामेश्वर-मन्दिरके सम्मुख स्वर्ण-मण्डित स्तम्भ है। उसके पास ही मण्डपमें विशाल मृण्मयी श्वेतवर्ण नन्दी-मूर्ति है। यह नन्दी १३ फुट ऊँचा, ८ फुट लंबा और ९ फुट चौड़ा है। नन्दीके सामने रत्नाकर (अरब-सागर), महोदधि (भारतीय समुद्र) तथा हरबोला खाड़ीकी मूर्तियाँ हैं। नन्दीके वामभागके मण्डपमें हनुमान्जीके बालरूपकी मूर्ति है।

नन्दीसे दक्षिण शिव-तीर्थ नामक छोटा सरोवर है। नन्दीके उत्तर ही पूर्वोक्त गङ्गा, यमुना, सूर्य, चन्द्र तथा ब्रह्महत्या-विमोचन नामके तीर्थ हैं। नन्दीसे पश्चिम रामेश्वरजीके निज-मन्दिरके आँगनमें जानेका द्वार है। द्वारके वामभागमें गणेश तथा दक्षिणभागमें सुब्रह्मण्यम्के छोटे मन्दिर हैं।

फाटकके भीतर विस्तृत आँगन है। इस आँगनमें दक्षिण ओर सत्यामृत-तीर्थ नामक कूप है। आँगनके वामभागमें श्रीविश्वनाथ-मन्दिरके पास (मुख्य मन्दिरके चबूतरेके नीचे) कोटि-तीर्थ नामक कूप है। कोटि-तीर्थका जल रामेश्वरसे जाते समय यात्री साथ ले जाते हैं। पूरा रामेश्वरधाम तीर्थस्वरूप है। इसका प्रत्येक कण शिवरूप है। इस धाममें शौचादिद्वारा जो अपवित्रता विवशतावश यात्रीद्वारा लायी जाती है, उस अपराधका मार्जन कोटि-तीर्थके जलसे आचमन-मार्जन करनेपर होता है। इसलिये कोटि-तीर्थका जल यहाँसे जाते समय ही लिया जाता है। कोटि-तीर्थके एक कलश जलका चार आना शुल्क देना पड़ता है। श्रीरामेश्वर-मन्दिरके जगमोहनके वामभागके कोनेपर सर्वतीर्थ नामक कूप है।

श्रीरामेश्वरजीके मन्दिरके सम्मुख विस्तृत सभा-मण्डप है। श्रीरामेश्वर-मन्दिरके उत्तर ओर सटा हुआ श्रीविश्वनाथ (हनुमदीश्वर) मन्दिर है। यह हनुमान्जीका लाया हुआ है। नियम यही है कि कि पहले श्रीविश्वनाथका दर्शन-पूजन करके तब रामेश्वरका दर्शन करना चाहिये।

श्रीरामेश्वर-मन्दिरके सामने छड़ोंका घेरा लगा है। तीन द्वारोंके भीतर श्रीरामेश्वरका ज्योतिर्लिङ्ग प्रतिष्ठित है। इनके ऊपर शेषजीके फणोंका छत्र है। रामेश्वरजीपर कोई यात्री अपने हाथसे जल नहीं चढ़ा सकता। मूर्तिपर गङ्गोत्तरी या हरिद्वारसे लाया गङ्गाजल ही चढ़ता है और वह जल पुजारीको दे देनेपर पुजारी यात्रीके सम्मुख ही चढ़ा देते हैं। मूर्तिपर माला-पुष्प अर्पित करनेका कोई शुल्क नहीं है; किन्तु जल चढ़ानेका शुल्क २) है।

श्रीरामेश्वरजीका दुग्धाभिषेक करनेके लिये १॥) (इसमें दूधका मूल्य भी सम्मिलित है), नारियल चढ़ानेके लिये।), त्रिशतार्चनके लिये १॥), अष्टोत्तरार्चनके लिये।-), सहस्रार्चन, नैवेद्यके साथ ३)—इस प्रकार अनेक प्रकारकी अर्चा-पूजाके लिये अलग-अलग शुल्क निश्चित हैं। जो पूजा करानी हो, उसका शुल्क कार्यालयमें देकर रसीद ले लेनी चाहिये। रसीद पुजारीको देनेपर वह यात्रीके सामने ही उस प्रकारकी पूजा कर देते हैं।

श्रीरामेश्वरजीके तथा माता-पार्वतीके सोने-चाँदीके बहुतसे वाहन तथा रत्नाभरण हैं जिनका महोत्सवके समय उपयोग होता है। इनको देखनेकी इच्छा हो तो मन्दिरके कार्यालयमें वाहन-दर्शनके लिये ३) और

श्रीरामेश्वरम्की कुछ झाँकियाँ
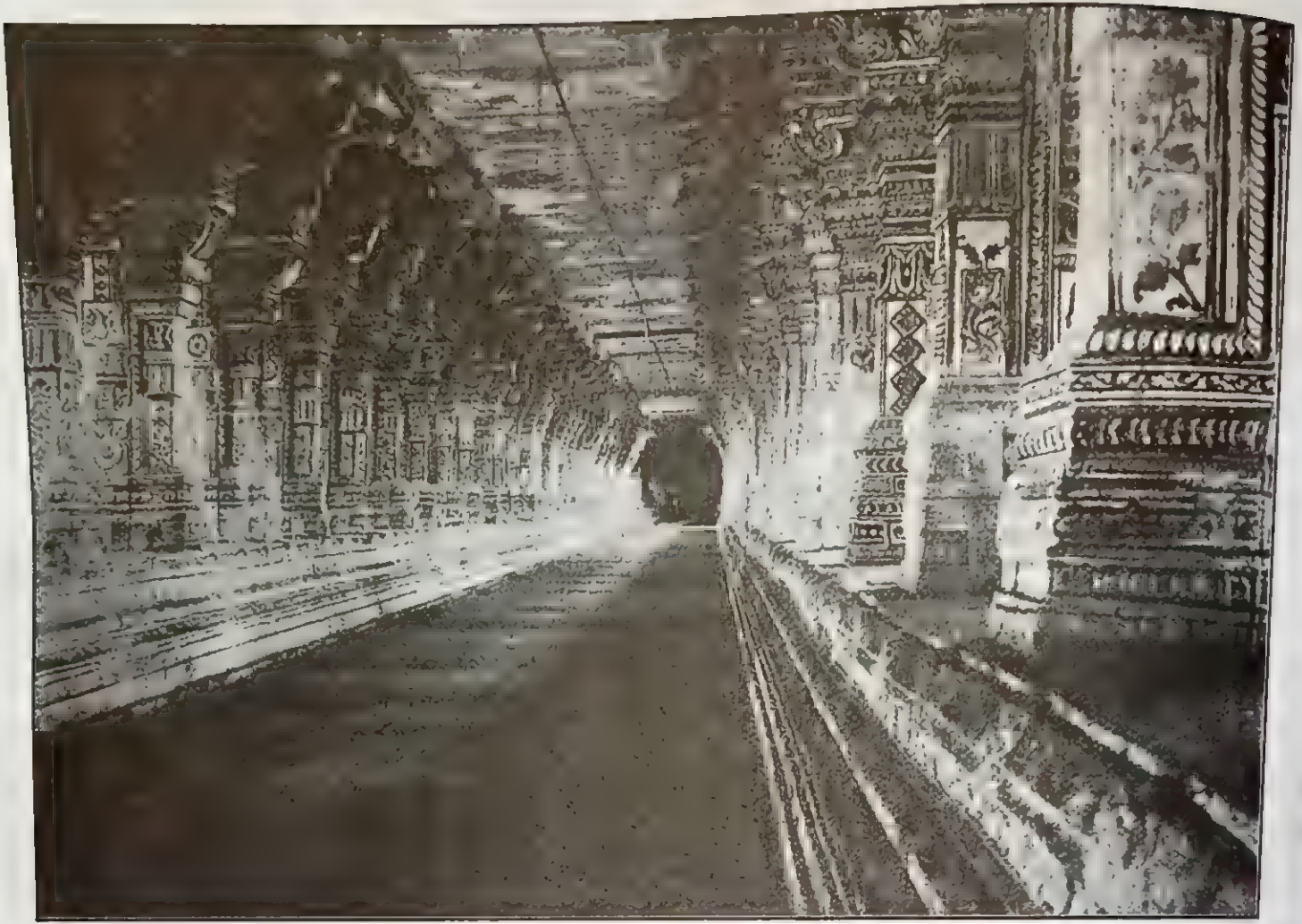
मुख्य मन्दिरकी एक प्रदक्षिणा

मुख्य मन्दिरका स्वर्णकलश

विशाल नन्दी-विग्रह

भगवान्‌का रजतमय रथ

श्रीरामेश्वरम्‌की कुछ झाँकियाँ (२)
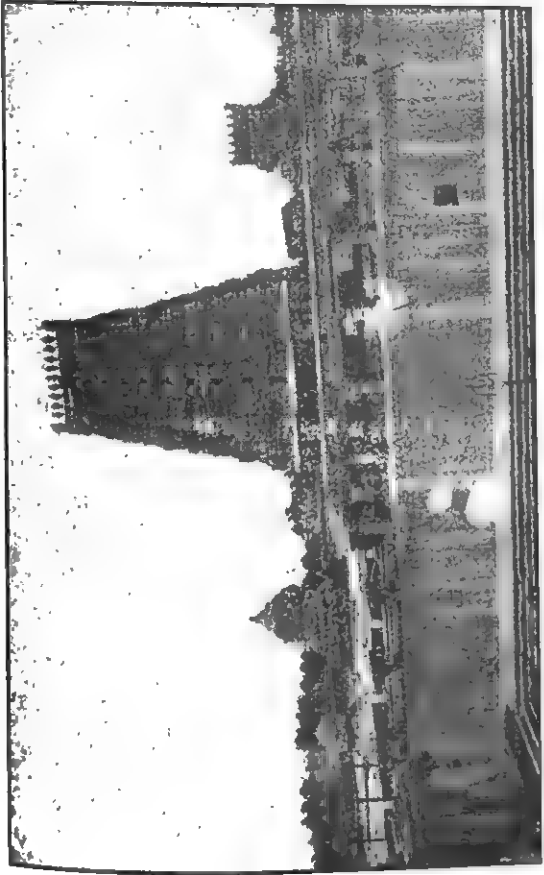
माधव-कुण्ड (मन्दिरके घेरेमें)

चौबीस कुण्ड (मन्दिरके घेरेमें)
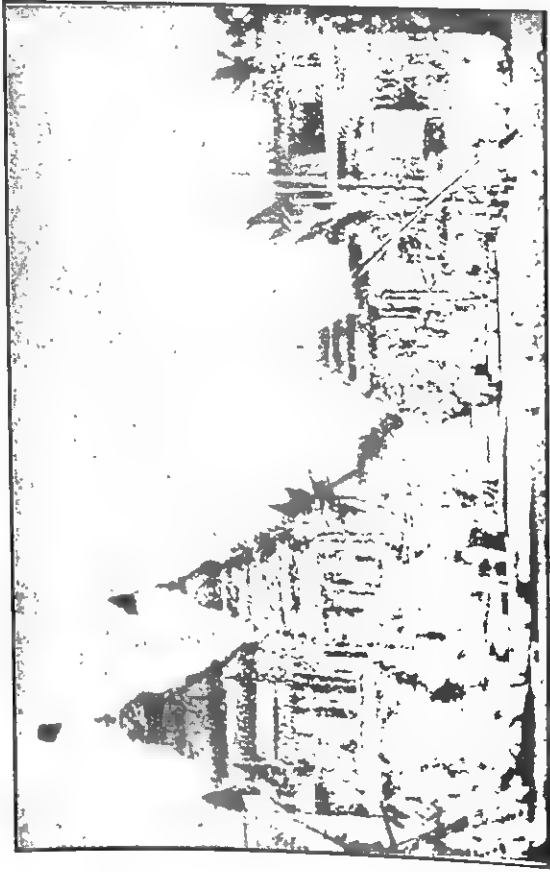
श्रीरामेश्वरम्‌की सवारी
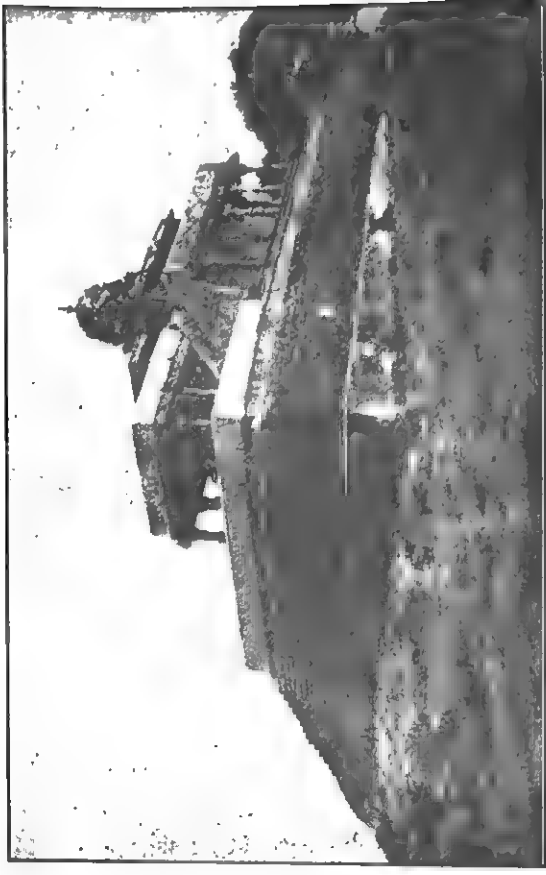
राम-झरोखा (रामेश्वरके समीप)

आभूषण-दर्शनके लिये १५) शुल्क देना पड़ता है और कुछ पहले सूचना कार्यालयमें देनी पड़ती है। इसी प्रकार जो लोग श्रीरामेश्वरजी तथा पार्वजीकी रथ-यात्राका महोत्सव कराना चाहे, उन्हें एक दिन पहले मन्दिर-कार्यालयमें सूचना देनी चाहिये। 'पञ्चमूर्ति-उत्सव' करानेका शुल्क १६०) है और 'रजतरथोत्सव' का ५००)। पञ्चमूर्ति-उत्सवमें शिव-पार्वतीकी उत्सव-मूर्तियाँ वाहनोंपर मन्दिरके तीनों मार्गों तथा मन्दिरके बाहरके मार्गमें घुमायी जाती हैं और रजतरथोत्सवमें वे यह यात्रा चाँदीके रथमें करती हैं। यात्राके समय रथमें बिजलीकी बत्तीका पूरा प्रकाश रहता है। यह रामेश्वरजीकी रथयात्रा अत्यन्त मनोहर होती है।

स्फटिकलिङ्ग—श्रीरामेश्वरजीका एक बहुत सुन्दर स्फटिकलिङ्ग है। इसके दर्शन प्रातःकाल ४॥ बजेसे ५ बजेतक होते हैं। यात्री सबेरे इसका दर्शन करके तब स्नानादि करने जाते हैं। यह स्फटिकलिङ्ग अत्यन्त स्वच्छ तथा पारदर्शी है। मन्दिर खुलते ही प्रथम इसकी पूजा होती है। इस मूर्तिपर दुग्धधारा चढ़ाते समय मूर्तिके स्पष्ट दर्शन होते हैं। पूजन हो जानेके पश्चात् मूर्तिपर चढ़ा दुग्धादि पंचामृत प्रसादरूपमें यात्रियोंको दिया जाता है।

श्रीरामेश्वरजीके जगमोहनमें छड़के घेरेके पास दो छोटे मन्दिर हैं। एकमें गन्धमादनेश्वर शिवलिङ्ग है। कहा जाता है, यह महर्षि अगस्त्यद्वारा स्थापित है। श्रीरामेश्वरकी स्थापनासे पूर्व भी यह था। दूसरे छोटे मन्दिरमें अनादिसिद्ध स्वयम्भूलिङ्ग है। उसे 'अत्रपूर्वम्' (यहाँ सबसे पहलेका) कहते हैं। अगस्त्यजीसे पूजित होनेके कारण उसका नाम अगत्स्येश्वर है।

रामेश्वर-मन्दिरसे सटा हुआ दक्षिण ओर एक छोटा मन्दिर है। उसमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीके श्रीविग्रह हैं।

श्रीरामेश्वरके निजमन्दिरकी परिक्रमामें कई देवताओंके दर्शन होते हैं। इस परिक्रमामें उत्तर भागमें बायीं ओर श्रीविशालाक्षीका मन्दिर है और उसके पास ही कोटि-तीर्थ कूप है।

रामेश्वर-मन्दिरके दक्षिण श्रीपार्वती-मन्दिरका द्वार है। यहाँ श्रीपार्वतीजीको 'पर्वतवर्द्धिनी' कहते हैं। यह मन्दिर भी बड़ा विशाल है। तीन ड्योढ़ीके भीतर श्रीपार्वतीकी भव्य मूर्ति है। मन्दिरका जगमोहन विस्तृत है। मन्दिरके जगमोहनके उत्तर-पूर्व एक भवनमें झूलनपर पार्वतजीकी छोटी-सी सुन्दर मूर्ति है। यह भवन शयनागार है। रात्रिकी आरतीके पश्चात् श्रीरामेश्वरजीकी उत्सवमूर्ति इस भवनमें लायी जाती है। यहाँ झूलनपर उस मूर्तिको पार्वतजीके समीप विराजमान कराके पूजन-आरती होती है। इस शयन-आरतीके दर्शनको कैलासदर्शन कहते हैं। प्रातःकाल यहीं मङ्गला-आरती होती है और यहाँसे श्रीरामेश्वरजीकी चल मूर्तिकी सवारी उनके निजमन्दिरमें ले जायी जाती है।

श्रीपार्वतीजीके मन्दिरकी परिक्रमामें पीछे संतान-गणपति तथा पळिळकोंड पेरुमाळ्के मन्दिर हैं। मन्दिरके जगमोहनके बाहर आँगन है। उसमें स्वर्णमण्डित स्तम्भ है। मन्दिरके द्वारके समीप अष्ट लक्ष्मियोंकी मूर्तियाँ हैं। उसके आगे गोपुरके पास कल्याणमण्डप है। उस मण्डपमें अनेकों मूर्तियाँ बनी हैं। कल्याणमण्डपके आसपास नटराज, देवी, सुब्रह्मण्य, गणेश, काशीलिङ्ग, नागेश्वर, हनुमान्जी आदिके छोटे-छोटे मन्दिर हैं।

श्रीरामेश्वर-मन्दिरके पूर्वद्वारके समीप हनुमान्जीका मन्दिर उत्तर ओर है। इनको नारियल आदि चढ़ानेके लिये भी मन्दिरके कार्यालयमें चार आना शुल्क देकर रसीद लेना पड़ता है। श्रीहनुमान्जी भगवान् श्रीरामके आदेशसे कैलाससे शिवलिङ्ग लाये थे, जो श्रीरामेश्वरके समीप विश्वनाथलिङ्ग नामसे स्थापित है। उसके पश्चात् अपने एक अंशसे श्रीविग्रहरूपसे हनुमान्जी यहाँ स्थित हुए। यह मूर्ति विशाल है। श्रीहनुमानजीके मन्दिरके सामने बागमें सावित्री-तीर्थ, गायत्री-तीर्थ और सरस्वती-तीर्थ हैं तथा पूर्वद्वारके सामने महालक्ष्मीतीर्थ है।

इनके अतिरिक्त श्रीरामेश्वर-मन्दिरकी परिक्रमामें कुण्डोंके समीप नवग्रह, दक्षिणामूर्ति, चन्द्रशेखर, एकादश रुद्र, शेषशायी नारायण, सौभाग्यगणपति, पर्वतवर्द्धिनीदेवी, कल्याणसुन्दरेश्वर, देवसभा-नटराज, कनकसभा नटराज, राजसभा नटराज, मारुति, कालभैरव, महालक्ष्मी, दुर्गा, लवणलिङ्ग, सिद्धगण आदि अनेकों मन्दिर तथा देव-विग्रह हैं।

श्रीरामेश्वरजीके मन्दिरके पूर्वके गोपुरसे निकलकर समुद्रकी ओर जानेपर समुद्र-तटपर महाकाली-मन्दिर मिलता है। समुद्रमें ही अग्नितीर्थ माना जाता है। कहते हैं किसी कल्पमें श्रीजानकीजीकी अग्निपरीक्षा यहीं हुई थी।

यात्री प्रायः श्रीरामेश्वरका दर्शन करके तब मन्दिरके तीर्थोंमें स्नान करते हैं। मन्दिरके भीतर २२ तीर्थ हैं और समुद्रका अग्नितीर्थ तथा उसके समीप अगस्त्य-तीर्थ ये

मिलाकर २४ तीर्थ हैं। इनमेंसे अग्नितीर्थ सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। बहुत-से यात्री प्रथम दिन समुद्र-स्नान ही करते हैं। इन तीर्थोंमें मधवतीर्थ और शिवतीर्थ ये सरोवर हैं, महालक्ष्मीतीर्थ और अगस्त्यतीर्थ बावलियाँ हैं। शेष १९ तीर्थ कूप हैं। इन सबके नाम यहाँ फिर दिये जा रहे हैं—१-माधवतीर्थ, २-गवयतीर्थ, ३-गवाक्षतीर्थ, ४-नलतीर्थ, ५-नीलतीर्थ, ६-गन्धमादन-तीर्थ, ७-ब्रह्महत्याविमोचन-तीर्थ, ८-गङ्गातीर्थ, ९-यमुनातीर्थ, १०-गयतीर्थ, ११-सूर्यतीर्थ, १२-चन्द्रतीर्थ, १३-शङ्खतीर्थ, १४-चक्रतीर्थ, १५-अमृतवापी-तीर्थ, १६-शिवतीर्थ, १७-सरस्वतीतीर्थ, १८-सावित्रीतीर्थ, १९-गायत्रीतीर्थ, २०-महालक्ष्मीतीर्थ, २१-अग्नितीर्थ, २२-अगस्त्यतीर्थ, २३-सर्वतीर्थ, २४-कोटितीर्थ। स्कन्दपुराणमें इन सब तीर्थोंकी उत्पत्ति-कथा है। इनके जलसे स्नान-मार्जनका बहुत माहात्म्य है।

विशेषोत्सव—श्रीरामेश्वर-मन्दिरमें यों तो उत्सव चलते ही रहते हैं। कुछ विशेषोत्सवोंके नाम ये हैं—महाशिवरात्रि, वैशाखपूर्णिमा, ज्येष्ठपूर्णिमा (रामलिङ्ग-प्रतिष्ठोत्सव), आषाढ़-कृष्णा अष्टमीसे श्रावणशुक्लातक 'तिरुकल्याणोत्सव' (विवाहोत्सव), नवरात्रोत्सव (आश्विन-शुक्ला प्रतिपदासे दशमीतक), स्कन्दजन्मोत्सव, आर्द्रादर्शनोत्सव (मार्गशीर्ष-शुक्ला षष्ठीसे पूर्णिमातक)।

इनके अतिरिक्त मकरसंक्रान्ति, चैत्रशुक्ला प्रतिपदा, कार्तिक महीनेकी कृत्तिका नक्षत्रके दिन तथा पौषपूर्णिमाको ऋषभादि वाहनोंपर उत्सवविग्रह दर्शन देते हैं। वैकुण्ठ-एकादशी तथा रामनवमीको श्रीरामोत्सव होता है।

प्रत्येक मासकी कृत्तिका नक्षत्रके दिन सुब्रह्मण्यकी चाँदीकी मयूरपर सवारी निकलती है। प्रत्येक प्रदोषको श्रीरामेश्वरकी उत्सव-मूर्ति वृषभवाहनपर मन्दिरके तीसरे प्राकारकी प्रदक्षिणामें निकलती है। प्रत्येक शुक्रवारको अम्बाजीकी उत्सवमूर्तिकी सवारी निकलती है।

कथा

एक कथा तो एक प्रसिद्ध ही है कि भगवान् श्रीरामने लङ्का जाते समय सेतु बँधवाया और सेतुके समीप श्रीरामेश्वरकी स्थापना की। सेतु बाँधनेसे पूर्व श्रीरघुनाथजीने उप्पूरमें गणेशजीकी स्थापना करके उनका पूजन किया। देवीपत्तनमें नवग्रहोंकी स्थापना तथा पूजन किया प्रभुने। यह स्वाभाविक है; क्योंकि किसी भी कार्यके प्रारम्भमें गणपति तथा नवग्रह-पूजन तो आवश्यक माना ही जाता है।

श्रीरामेश्वर-स्थापनकी एक कथा और आती है। इस ओरसे विद्वान् रामेश्वरकी स्थापना उसीके अनुसार मानते हैं और उस कथाके अनुसार ही रामेश्वर, हनुमदीश्वर तथा रामेश्वरधामके कई तीर्थोंकी संगति मनमें बैठती है। किसी कल्पकी कथा इसे मानना उपयुक्त ही है। यह कथा इस प्रकार है—

भगवान् श्रीराम लङ्कायुद्धमें विजयी होकर पुष्पक-विमानके द्वारा जब अयोध्याकी ओर चले, तब उनके मनमें यह खेद था कि 'रावण ब्राह्मण था। उसे और उसके कुलके लोगों मारना ब्रह्महत्याके पापके समान ही हुआ।' इसका प्रायश्चित्त जाननेके लिये भगवान्ने समुद्रपार अगस्त्यजीके आश्रमके पास विमानको उतार दिया और कई दिन वहाँ रुके रहे।

विभीषणकी प्रार्थनापर भगवान्ने समुद्रका सेतु धनुषकी नोकसे भङ्ग कर दिया। श्रीजानकीजीकी यहीं समुद्र-किनारे अग्निपरीक्षा हुई। अगस्त्यजीके आदेशसे रावण-वधके प्रायश्चित्तस्वरूप शिव-लिङ्गके स्थापनका प्रभुने निश्चय किया और हनुमान्जीको कैलास दिव्य लिङ्ग-मूर्ति लाने भेजा।

हनुमान्जी कैलास गये; किंतु उन्हें भगवान् शङ्करके दर्शन नहीं हुए। इससे हनुमान्जी तप करते हुए भगवान् शिवकी स्तुति करने लगे। अन्तमें भगवान् शङ्कर प्रकट हुए और उन्होंने हनुमान्जीको अपनी दिव्य लिङ्ग-मूर्ति दी।

इधर मूर्ति-स्थापनाका मुहूर्त बीता जा रहा था। श्रीजानकीजीने क्रीड़ापूर्वक एक बालुका-लिङ्ग बना लिया था। ऋषियोंके आदेशसे श्रीरघुनाथजीने उसीको स्थापित कर दिया। वही रामेश्वर-लिङ्ग है, जिसे स्थानीय लोग रामनाथलिङ्गम् भी कहते हैं।

श्रीहनुमान्जी लौटे तो उन्हें एक अन्य लिङ्गकी स्थापनासे बड़ा खेद हुआ। इससे प्रभुने कहा—'तुम यदि मेरे स्थापित लिङ्गको हटा सको तो मैं तुम्हारा लाया लिङ्ग-विग्रह ही यहाँ स्थापित कर दूँ।' हनुमान्जीने रामेश्वर-लिङ्गको पूँछसे लपेटकर उसे उखाड़नेका पूरा प्रयत्न किया; किन्तु वे सफल नहीं हुए। उलटे पूँछका बन्धन सिखक जानेसे दूर जा गिरे और मूर्च्छित हो गये। श्रीजानकीजीने उन्हें सचेत किया।

भगवान् श्रीरामने कहा—'जानकीके द्वारा निर्मित और मेरे द्वारा स्थापित मूर्ति तो अविचल है। वह हटायी

नहीं जा सकती। तुम अपनी मूर्ति पासमें स्थापित कर दो। जो इस तुम्हारी लायी मूर्तिके दर्शन नहीं करेगा, उसे रामेश्वर-दर्शनका फल नहीं होगा।' हनुमान्‌जीने कैलाससे लायी मूर्ति स्थापित कर दी। भगवान्‌ने उसका पूजन किया। वही मूर्ति काशी-विश्वनाथ (हनुमदीश्वर) कही जाती है।

श्रीरामेश्वरजीकी मूर्ति पहले वनमें ही थी। पीछे वहाँ किसी संतने झोपड़ी बना दी। आगे चलकर सेतुपति नरेशोंने वहाँ मन्दिर बनवाया। वर्तमान मन्दिर कई नरेशोंके श्रमसे कई बारमें इस रूपमें आया है। यहाँके तीर्थों एवं अन्य देवमूर्तियोंके स्थापनकी कथा भी पुराणोंमें मिलती है; किंतु विस्तारभयसे उन कथाओंको यहाँ नहीं दिया जा रहा है।

गन्धमादन (रामझरोखा)—यह स्थान श्रीरामेश्वर-मन्दिरसे १॥ मील दूर है। मार्ग कच्ची सड़कका है। केवल बैलगाड़ियाँ जा सकती हैं। इस मार्गमें जाते समय क्रमशः सुग्रीवतीर्थ, अङ्गदतीर्थ, जाम्बवान्‌तीर्थ और अमृततीर्थ मिलते हैं। इनमें सुग्रीवतीर्थ सरोवर है, शेष कूप हैं। यात्री इनके जलसे आचमन-मार्जन करते हैं। इनसे आगे हनुमानजीका एक मन्दिर है। इसमें हनुमान्‌जीके बालरूपकी सुन्दर मूर्ति है। यहाँ एक वैष्णवसाधु यात्रियोंको हनुमान्‌जीका प्रसादी चना बाँटते तथा जल पिलाते हैं। इस मार्गमें यहीं पीनेयोग्य अच्छा जल मिलता है। अमृततीर्थका जल भी उत्तम है।

इस स्थानसे कुछ आगे रामझरोखा है। यह एक टीला है। उसपर ऊपरतक जानेको सीढ़ियाँ बनी हैं। मन्दिरमें भगवान्‌के चरणचिह्न हैं। कहते हैं, यहींसे हनुमान्‌जीने समुद्रपार होनेका अनुमान किया था और श्रीरघुनाथजीने यहाँ सुग्रीवादिके साथ लङ्कापर चढ़ाईके सम्बन्धमें मन्त्रणा की थी।

यहाँसे नीचे उतरकर परिक्रमा करते हुए दूसरे मार्गसे रामेश्वर लौटते हैं। इस मार्गमें रामझरोखेके टीलेसे नीचे उतरते ही धर्मतीर्थ मिलता है। यह एक बावली है। इस तीर्थकी स्थापना युधिष्ठिरद्वारा हुई बतायी जाती है। आगे क्रमशः भीमतीर्थ, अर्जुनतीर्थ, नकुलतीर्थ, सहदेवतीर्थ और ब्रह्मतीर्थ थोड़ी-थोड़ी दूरीपर मिलते हैं। इन तीर्थोंके जलसे आचमन-मार्जन किया जाता है। ये सब तीर्थ सरोवर हैं। ब्रह्मतीर्थ बड़ा सरोवर है, जिसमें समुद्रका खारा पानी रहता है। इस कुण्डके पास भद्रकाली देवीका मन्दिर है। विजयादशमीके दिन रामेश्वर-मन्दिरसे गणेश, रामेश्वर एवं स्कन्दकी उत्सवमूर्तियोंकी सवारी यहाँ आती है और यहाँ शमी-पूजन होता है। आगे द्रौपदीतीर्थ है। यहाँ द्रौपदीकी मूर्ति है। इसके समीप एक बगीचेमें काली-मन्दिर है। द्वारपर गणेशमूर्ति है। मन्दिरके सामनेवाली तथा सुग्रीवकी मूर्तियाँ हैं। इस मन्दिरके पास दक्षिण हनुमान्-तीर्थ है। इस सरोवरके तटपर हनुमान्‌जीकी मूर्ति है।

साक्षी-विनायक—रामेश्वरसे पाम्बन् जानेवाली सड़कपर रामेश्वरसे लगभग डेढ़ मील दूर 'वन-विनायक' मन्दिर है। इसमें साक्षी-विनायककी मूर्ति है। रामेश्वरधामकी यात्रा करके चलते समय इनका दर्शन किया जाता है।

जटातीर्थ—रामेश्वरसे दो मील दूर यह तीर्थ है। कहा जाता है भगवान् श्रीराम लङ्का-विजयके पश्चात् जब अयोध्याकी ओर मुड़े, तब पहले यहाँ उन्होंने अपनी जटाएँ धोयी थीं।

सीता-कुण्ड—यह तीर्थ रामेश्वरसे लगभग पाँच मील दूर समुद्र-किनारे है। यहाँ कूपका जल मीठा है। कहते हैं सीताजी पूर्व-जन्ममें वेदवती थीं और उस समय उन्होंने यहीं तपस्या की थी। यह स्थान 'तंकच्चिमठम्' स्टेशनसे एक मील उत्तर है।

एकान्त राम-मन्दिर—यह मन्दिर रामेश्वरसे चार मील दक्षिण और 'तंकच्चिमठम्' स्टेशनसे एक मील पूर्वमें है। यहाँ मन्दिरमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीकी मूर्तियाँ हैं। कहा जाता है, भगवान् यहाँ एकान्तमें बैठे हैं; किंतु यह मन्दिर अब अत्यन्त जीर्ण दशामें है। यहाँके श्रीविग्रह ऐसी मुद्रामें हैं जैसे परस्पर बातचीत कर रहे हों।

मन्दिरमें अमृतवापिका-तीर्थ नामक एक कूप है। यहाँसे थोड़ी दूरीपर ऋणविमोचन-तीर्थ नामक छोटा सरोवर है और उससे पश्चिम मङ्गलतीर्थ नामक सरोवर है। इन तीर्थोंमें स्नान-मार्जनादि होता है।

नवनायकी अम्मन्—यह मन्दिर रामेश्वरसे दक्षिण दो मील दूर है। यहाँ देवीका मन्दिर है, जिसका स्थानीय नाम 'नविनायकि अम्मन्' है। यहीं वह जलाशय है, जहाँसे रामेश्वरमें नलद्वारा जल पहुँचाया जाता है।

कोदण्डराम स्वामी—रामेश्वरसे पाँच मील दूर उत्तर समुद्रके किनारे-किनारे जानेपर रेतके मैदानमें यह मन्दिर मिलता है। केवल पैदल जाना पड़ता है। यहाँ मन्दिरमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकी तथा विभीषणकी मूर्तियाँ

है। कहते हैं यहीं भगवान्ने विभीषणको समुद्र-जलसे राजतिलक किया था।

विल्लूरणि-तीर्थ—'तंकच्चिमठम्' रेलवे-स्टेशनके पूर्व पासमें ही समुद्र-जलके बीचमें एक मीठे पानीका सोता है। वहाँ एक कुण्ड-सा बना दिया गया है। भाटेके समय समुद्रका जल हट जानेपर इस तीर्थका दर्शन होता है। कहते हैं श्रीजानकीजीको प्यास लगनेपर श्रीरघुनाथजीने यहाँ धनुषकी नोक भूमिमें दबा दी, जिससे शुद्ध जलका स्रोत निकल आया।

भैरव-तीर्थ—यह तीर्थ पाम्बन् स्टेशनके पास है, जहाँ समुद्रपर पुल है। यहाँ समुद्रमें ही भैरव-तीर्थ माना जाता है। वहाँ स्नानकी विधि है।

धनुष्कोटि

धनुष्कोटि-माहात्म्य

दक्षिणाम्बुनिधौ पुण्ये रामसेतौ विमुक्तिदे।
धनुष्कोटिरिति ख्यातं तीर्थमस्ति विमुक्तिदम्॥
ब्रह्महत्यासुरापानस्वर्णस्तेयविनाशनम्।
गुरुतल्पगसंसर्गदोषाणामपि नाशनम्॥
कैलासादिपदप्राप्तिकारणं परमार्थदम्।
सर्वकाममिदं पुंसामृणदारिद्र्यनाशनम्॥
धनुष्कोटिर्धनुष्कोटिर्धनुष्कोटिरितीरणात्।
स्वर्गापवर्गदं पुंसां महापुण्यफलप्रदम्॥

(स्कं० सेतुमाहा० ३३। ६५—६८)

'दक्षिण-समुद्रके तटपर जो परम पवित्र रामसेतु है, वहीं धनुष्कोटि नामसे विख्यात एक परम उत्तम मुक्तिदायक तीर्थ है। वह ब्रह्महत्या, सुरा-पान, सुवर्णकी चोरी, गुरुशय्या-गमन तथा इन सबके संसर्गरूप महापातकोंका विनाश करनेवाला है। वह परम अर्थदायक तथा कैलासादि पदोंको प्राप्त करानेवाला है। वह मनुष्यकी सारी इच्छाओंको पूर्ण करनेवाला तथा ऋण, दारिद्र्य आदिका नाशक है। अधिक क्या, जो 'धनुष्कोटि', 'धनुष्कोटि', 'धनुष्कोटि'—इस प्रकार कहता है, उसे भी बड़ा पुण्य तथा स्वर्गादि लोकोंकी प्राप्ति हो जाती है।'

धनुष्कोटि

रेलके मार्गसे रामेश्वरसे पाम्बन् आकर फिर धनुष्कोटि जाना पड़ता है। रामेश्वरसे एक मार्ग पैदलका रामेश्वरम्-रोड स्टेशनतक है। रामेश्वरसे रामेश्वरम्-रोड स्टेशन लगभग ३ मील पैदल मार्गसे है। रामेश्वरम्-रोडसे धनुष्कोटिके लिये रेल जाती है।

धनुष्कोटि स्टेशनके पास मीठे जलका अभाव है। धर्मशाला स्टेशनके पास है। समुद्र-किनारे छाया नहीं है। स्टेशनके पास मछलियोंके भरे डिब्बे रहनेसे उनकी उग्र गन्ध भी आती रहती है। इसलिये यात्री समुद्र-स्नान करके यहाँसे रामेश्वर या रामनाद (रामनाथपुर) लौट जाते हैं।

धनुष्कोटिसे 'श्रीलङ्का' (सिलोन)-के लिये जहाज जाता है। रेलके कई डिब्बे जहाजपर चढ़ा दिये जाते हैं। लगभग चार घंटेमें यात्री श्रीलङ्का पहुँच जाते हैं।

स्टेशनसे लगभग एक मीलपर समुद्रके मध्यमें धनुष्कोटि प्रायद्वीपका अन्तिम छोर है। यहाँ प्रायद्वीपका सिरा बहुत कम चौड़ा है। उसके एक ओर समुद्रको बंगालकी खाड़ी तथा दूसरी ओरके समुद्रको महोदधि कहते हैं। मानते हैं कि यहाँ बंगालकी खाड़ी और महोदधि नामक समुद्रोंका सङ्गम है।

यहाँ स्नान करके लोग श्राद्ध-पिण्डदान भी करते हैं तथा स्वर्णके बने धनुषका दान करते हैं। यहाँ ३६ स्नान करनेकी विधि है। प्रायः यात्री एक ही दिनमें छत्तीस स्नान कर लेते हैं। प्रत्येक स्नानके पूर्व हाथमें बालूका पिण्ड तथा कुश लेकर 'कृत्या' नामक दानवीसे समुद्र-स्नानकी अनुमति माँगी जाती है और उसे भोजनके लिये हाथमें लिया बालुका-पिण्ड जलमें डालकर तब समुद्रमें डुबकी लगायी जाती है।

तटसे आध मीलपर भगवान् श्रीरामका एक मन्दिर है। उसमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीकी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरके बाहर बरामदेमें श्रीगणेशजी एवं श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीकी मूर्तियाँ हैं। एक दीवारमें हनुमान्जीकी मूर्ति है। रामझरोखे (रामेश्वर) के समीपके श्रीहनुमान्-मन्दिरके साधुकी ओरसे यहाँ भी यात्रियोंको चने प्रसादरूपमें दिये जाते हैं और जल पिलाया जाता है।

कथा—भगवान् श्रीराम जब लङ्का-विजय करके पुष्पकविमानसे चले, तब विभीषणने प्रार्थना की—'प्रभो! आपके द्वारा बनवाया यह सेतु बना रहा तो बार-बार भारतके प्रतापी नरेश लङ्कापर आक्रमण करेंगे। मुझे

भारतसे शत्रुता करते बीतेगा। विभीषणकी प्रार्थना सुनकर प्रभुने विमान नीचे उतारा और धनुषकी नोक (कोटि) से सेतुको भङ्ग करके समुद्रमें डुबा दिया। इसीसे इस स्थानका नाम धनुष्कोटि पड़ा।

विभीषण-तीर्थ—श्रीरामेश्वरसे ८ मील दूर समुद्रके बीचमें एक टापूपर यह स्थान है। पाम्बन्से समुद्रके पुलपरसे रेलद्वारा रामेश्वर आते समय दक्षिण-पश्चिम ओर एक टापूपर यह मन्दिर दीखता है। कुछ लोग मानते हैं कि विभीषणको भगवान्‌ने यहीं राजतिलक किया था। यहाँ नौकासे जाना पड़ता है।

दर्भ-शयन

रामेश्वर आते समय रामनाद स्टेशन मिलता है। यात्रीको रामनाद होकर ही लौटना भी पड़ता है। वस्तुतः इस स्थानका नाम रामनाथपुरम् है। यहींसे दर्भ-शयन और देवी-पत्तनको जानेके लिये बसें मिलती हैं।

रामनाथपुरमें 'सेतुपति' नरेशका राजभवन है। ये सेतुपति 'गुह' के वंशज हैं। कहा जाता है, भगवान् श्रीरामने ही सेतुपति-पदपर गुहका अभिषेक किया था। राजमहलमें 'रामलिङ्गविलास' नामक एक शिला है, जिसपर आदिसेतुपति गुहका अभिषेक किया गया है। राजमहलमें ही श्रीराजराजेश्वरी देवीका भव्य मन्दिर है।

रामनाथपुर (रामनाद) से दर्भ-शयन मन्दिर छः मील दूर है और उससे ३ मील आगे समुद्र है। रामनाथपुरसे वहाँतक बस जाती है। दर्भ-शयन मन्दिरके समीप धर्मशाला है।

दर्भ-शयनका यह मन्दिर बहुत सुन्दर और विशाल है। इसके निज-मन्दिरमें दर्भ-शय्यापर सोये भगवान्‌का द्विभुज, सुन्दर विशाल श्रीविग्रह है। मन्दिरके भीतरकी परिक्रमामें कोदण्डराम, कल्याण-जगन्नाथ तथा नृसिंहजीके मन्दिर हैं। इनके अतिरिक्त भी कई देवविग्रह मन्दिरमें हैं।

विभीषणकी सम्मतिसे श्रीराम यहाँ कुशोंका आसन बिछाकर तीन दिन व्रत करते हुए समुद्रसे लङ्का जानेके लिये मार्ग देनेकी प्रार्थना करते लेटे रहे। इसीके कारण इस स्थानको दर्भ-शयन करते हैं।

इस स्थानसे ३ मील आगे समुद्र-तटपर हनुमान्‌जीका मन्दिर है। वहीं लङ्का जलानेके पश्चात् हनुमान्‌जी कूदकर इस पार आये। इस स्थानपर यात्री समुद्र-स्नान करते हैं।

देवीपत्तन

रामनाथपुर (रामनाद) से देवीपत्तन १२ मील है। रामनाथपुरसे वहाँतक बस जाती है। कहा जाता है कि श्रीरामने यहीं नवग्रहोंका पूजन किया है और यहींसे सेतुबन्ध प्रारम्भ हुआ। इसलिये इसे मूलसेतु भी कहते हैं।

वह तीर्थ बहुत प्राचीन है। स्कन्दपुराणकी कथा है कि महिषासुर-युद्धके समय देवीके प्रहारसे पीड़ित असुर भागकर यहाँ धर्म-पुष्करिणीमें छिप गया। उसे ढूँढ़ते हुए जगदम्बा यहाँ पहुँचीं। उनके सिंहने पुष्करिणीका जल पिया और तब देवीने असुरको मारा।

यह धर्मपुष्करिणी धर्मने निर्मित की थी। यहाँ उन्होंने तपस्या की थी। उस तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान् शङ्करने उन्हें नन्दीरूपमें अपना वाहन बनाया। यह महर्षि गालवकी भी तपोभूमि है। उनपर एक राक्षसने आक्रमण किया था, तब भगवान्‌के चक्रने राक्षसका नाश किया। उस समय चक्र तीर्थ-जलमें प्रविष्ट हुआ। इससे वह तीर्थ चक्रतीर्थ हो गया।

वह प्राचीन धर्मपुष्करिणी बहुत विस्तृत थी। भगवान् श्रीरामने भी भूमिपर ही नवग्रह-पूजन किया था; किंतु पीछे वहाँ समुद्रका जल भर गया। यहाँ समुद्र बहुत उथला और शान्त है। एक सरोवर-जैसा ही वह लगता है।

इस तीर्थको 'नवपाषाणम्' भी कहते हैं; क्योंकि यहाँ समुद्रमें नौ पत्थरके स्तम्भ हैं। ये स्तम्भ छोटे-बड़े हैं। कहते हैं इन्हें नवग्रहके प्रतीकरूपमें भगवान् श्रीरामने स्थापित किया था। यात्री चक्र-तीर्थमें स्नान करके फिर समुद्रमें जाकर 'नवपाषाणम्' की प्रदक्षिणा करते हैं। समुद्रमें कटितक ही जल इन स्तम्भोंके पासतक है।

समुद्रतटके पास एक सरोवर है। उसीको चक्रतीर्थ

तथा धर्म-तीर्थ या धर्मपुष्करिणी कहा जाता है। चक्र-तीर्थके पश्चिम भगवान् वेङ्कटेश्वरका साधारण-सा मन्दिर है। इसमें श्रीदेवी और भूदेवीके साथ भगवान् नारायणकी मूर्ति है। इसके द्वारके पास काँटियोंसे युक्त पादुकाएँ हैं। इन्हें भगवान्‌की पादुका कहते हैं। यहाँ समुद्रके जलमें श्रीरामचन्द्रजीकी पादुकाएँ बतायी जाती हैं।

यहाँसे कुछ दूर महिषमर्दिनी देवीका मन्दिर है देवी-पत्तन बाजारमें शिव-मन्दिर है। उसमें प्रतिष्ठित लिङ्ग-मूर्तिको तिलकेश्वर तथा पार्वतीजीको सुन्दरी देवी कहते हैं।

वेताल-तीर्थ—चक्र-तीर्थसे दक्षिण कुछ दूर जानेपर यह तीर्थ एक साधारण जलाशयके रूपमें मिलता है। कपालस्फोट नामक वेतालपर इसके जलका छींटा पड़नेसे वह प्रेतयोनिसे छूट गया था।

पुलग्राम—यह स्थान देवीपत्तनसे पश्चिम है। यहाँ मुद्गल ऋषिने यज्ञ किया था। उस यज्ञमें भगवान् नारायण प्रकट हुए थे और उन्होंने ऋषिके लिये एक क्षीर कुण्ड प्रकट किया। यह क्षीर-कुण्ड तीर्थ भी अब सामान्य जलाशयमात्र है।

उप्पूर्—रामनाथपुर (रामनाद) से २० मील उत्तर यह ग्राम है। यहाँ रामनादसे बस जाती है। इस स्थानपर भगवान् विनायकका मन्दिर है। सेतुबन्धके पूर्व भगवान् श्रीरामने यहाँ गणेशजीके इस श्रीविग्रहकी स्थापना करके उनका पूजन किया था।

यात्राक्रम—नियमानुसार रामेश्वरयात्राका यह क्रम है कि पहले रामनाद उतरना चाहिये। वहाँसे उप्पूर् जाकर सर्वप्रथम गणेशजीका दर्शन करना चाहिये। उसके पश्चात् देवीपत्तन जाकर नवपाषाणम् तथा वहाँके मन्दिरोंके दर्शन-स्नान करना चाहिये। देवीपत्तनके पश्चात् दर्भ-शयन जाकर समुद्र-स्नान तथा दर्भशयन मन्दिरमें दर्शन करना चाहिये। इसके अनन्तर रामनादसे पाम्बन् जाकर भैरवतीर्थमें स्नान करके फिर सीधे धनुष्कोटि जाना चाहिये। वहाँ ३६ स्नान करके सर्वथा शुद्ध होकर तब रामेश्वर जाना चाहिये। रामेश्वरमें सब तीर्थोंके स्नान, सब मन्दिरों—आस-पासके मन्दिरोंके भी दर्शन करके, अन्तमें कोटितीर्थका जल लेकर तब साक्षी-विनायकका दर्शन करके इस धामकी यात्रा समाप्त करनी चाहिये।

श्रीलङ्का (सिंहल)

धनुष्कोटि स्टेशनसे रेलके दो डब्बे ही जहाजपर चढ़ा दिये जाते हैं और जहाजके तलैमन्नार पायर पहुँचनेपर वे डब्बे वहाँकी गाड़ीमें जोड़ दिये जाते हैं। जो लोग केवल तीर्थ-यात्रा करने जाते हैं, उन्हें पाम्बन् स्टेशनपर श्रीलङ्का जानेके लिये अनुमतिपत्र ले लेना चाहिये।

श्रीलङ्काको ही बहुत लोग पौराणिक लङ्का समझते हैं और वहाँ अशोकवाटिकादि तीर्थ-स्थान भी बना लिये गये हैं; किंतु रावणकी राजधानी लङ्का इस सिंहलद्वीपसे कहीं पृथक् थी, यह बात निश्चित है। श्रीमद्भागवतमें, महाभारतमें तथा वाल्मीकीय रामायणमें भी सिंहल और लङ्का—ये दो भिन्न-भिन्न द्वीपोंके नाम आते हैं। यहाँ तो वर्तमान सिंहलमें जो तीर्थ मान लिये गये हैं, उनका ही संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है।

धनुष्कोटिसे चला स्टीमर तलैमन्नार पायर नामक बंदरगाहमें लगता है। वहाँसे गाड़ी कोलम्बो जाती है। कोलम्बोमें श्रीराम-मन्दिर है। वहाँ हिंदू यात्री उतर और ठहर सकते हैं।

कैंडी—कोलम्बोसे यहाँतक गाड़ी जाती है। कैंडीमें भगवान् बुद्धका प्रसिद्ध मन्दिर है।

हेटन—कैंडीसे आगे उसी लाइनपर यह स्टेशन है। इस स्टेशनके पास सिगरी नामक गाँवमें प्राचीन लङ्काके खँडहर बताये जाते हैं। वहाँ आदम-पीक पर्वतपर एक प्राचीन शिव-मन्दिर है।

कैंडी स्टेशनसे मुरौलिया स्टेशन जाकर वहाँसे ८ मील मोटर-बसद्वारा जानेपर अशोकवाटिकाका स्थान मिलता है।

यहाँ **कदरगाम** नामका तीर्थ है, जो सिंहलद्वीपके तीर्थोंमें सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यह भगवान् सुब्रह्मण्यका एक प्रधान क्षेत्र है।

मदुरा

त्रिचिनापल्ली-तूतीकोरिन लाइनपर त्रिचिनापल्लीसे ९६ मील-दूर मदुरा (मधुरै) नगर है। जो यात्री रामेश्वर-यात्रा करके मदुरा आते हैं, उन्हें रामेश्वर-रामनादसे आगे मानामदुरै जंकशनपर गाड़ी बदलनी पड़ती है। मानामदुरैसे मदुरा रेल आती है। मानामदुरैसे मदुराकी दूरी ३० मील है। यह नगर वेगा नदीके किनारे है। संस्कृतग्रन्थोंमें इसका नाम 'मधुरा' मिलता है। इसे 'दक्षिणमथुरा' भी कहा गया है।

मदुरामें स्टेशनके सामने पासमें ही मँगनीरामजी रामकुमार बाँगड़की धर्मशाला है। पासमें 'मंगम्मा चोल्ट्री' नामकी एक पान्थशाला है, जिसमें किरायेपर कमरे मिलते हैं।

मीनाक्षी-मन्दिर

स्टेशनसे पूर्वदिशामें लगभग एक मीलपर मदुरा नगरके मध्यभागमें मीनाक्षीका मन्दिर है। यह मन्दिर अपनी निर्माण-कलाकी भव्यताके लिये सर्वत्र प्रसिद्ध है। मन्दिर लगभग २२ बीघे भूमिपर बना है। इसमें चारों ओर ४ मुख्य गोपुर हैं। वैसे सब छोटे-बड़े मिलाकर २७ गोपुर मन्दिरमें हैं। सबसे अधिक ऊँचा दक्षिणका गोपुर है और सबसे सुन्दर पश्चिमका गोपुर है। बड़े गोपुर ग्यारह मंजिल ऊँचे हैं।

सामान्यतः पूर्व-दिशासे लोग मन्दिरमें जाते हैं; किन्तु इस दिशाका गोपुर अशुभ माना जाता है। कहते हैं इन्द्रको वृत्रवधके कारण जब ब्रह्महत्या लगी, तब वे इसी मार्गसे भीतर गये और यहाँके पवित्र सरोवरमें कमल-नालमें स्थित रहे। उस समय यहीं द्वारपर ब्रह्महत्या इन्द्रके मन्दिरमेंसे निकलनेकी प्रतीक्षा करती खड़ी रही। इससे यह गोपुर अपवित्र माना जाता है। गोपुरके पासमें एक दूसरा प्रवेशद्वार बनाया गया है, जिससे लोग आते-जाते हैं।

गोपुरमेंसे प्रवेश करनेपर पहले एक मण्डप मिलता है, जिसमें फल-फूलकी दूकानें रहती हैं। उसे 'नगार-मण्डप' कहते हैं। उसके आगे अष्ट-शक्ति मण्डप है। इसमें स्तम्भोंके स्थानपर आठ लक्ष्मियोंकी मूर्तियाँ छतका आधार बनी हैं। वहाँ द्वारके दाहिने सुब्रह्मण्यम् तथा बायें गणेशकी मूर्ति है। इससे आगे मीनाक्षीनायकम्-मण्डप है। इस मण्डपमें दूकानें रहती हैं। इस मण्डपके पीछे एक 'अँधेरा मण्डप' मिलता है। उसमें भगवान् विष्णुके मोहिनीरूप, शिव, ब्रह्मा, विष्णु तथा अनसूयाजीकी कलापूर्ण मूर्तियाँ हैं।

अँधेरे मण्डपसे आगे स्वर्ण-पुष्करिणी सरोवर है। कहा जाता है ब्रह्महत्या लगनेपर इन्द्र इसी सरोवरमें छिपे थे तमिळमें इसे 'पोत्तामरै-कुलम्' कहते हैं। सरोवरके चारों ओर मण्डप हैं। इन मण्डपोंमें तीन ओर भित्तियोंपर भगवान् शङ्करकी ६४ लीलाओंके चित्र बने हैं।

मन्दिरके सम्मुखके मण्डपके स्तम्भोंमें पाँचों पाण्डवोंकी मूर्तियाँ (एक-एक स्तम्भमें एक-एककी) और शेष सात स्तम्भोंमें सिंहकी मूर्तियाँ हैं। सरोवरके पश्चिम भागका मण्डप 'किळिकुण्डु-मण्डप' कहा जाता है। इसमें पिंजड़ोंमें कुछ पक्षी पाले गये हैं। यहाँ एक अद्भुत सिंहमूर्ति है। सिंहके मुखमें एक गोला बनाया गया है। सिंहके जबड़ेमें अँगुली डालकर घुमानेसे वह गोला घूमता है। पत्थरमें इस प्रकारका शिल्प नैपुण्य देखकर चकित रह जाना पड़ता है।

पाण्डव-मूर्तियोंवाले मण्डपको 'पुरुष-मृगमण्डप' कहते हैं; क्योंकि उसमें एक मूर्ति ऐसी बनी है, जिसका आधा भाग पुरुषका और आधा मृगका है। इस मण्डपके सामने ही मीनाक्षीदेवीके निज-मन्दिरका द्वार है। द्वारके दक्षिण छोटा-सा सुब्रह्मण्य-मन्दिर है, जिसमें स्वामि-कार्तिक तथा उनकी दोनों पत्नियोंकी मूर्तियाँ हैं। द्वारपर दोनों ओर पीतलकी द्वारपाल-मूर्ति हैं।

कई ड्योढ़ियोंके भीतर श्रीमीनाक्षीदेवीकी भव्य मूर्ति है। बहुमूल्य वस्त्राभरणोंसे देवीका श्यामविग्रह सुभूषित रहता है। मन्दिरके महामण्डपके दाहिनी ओर देवीका शयन-मन्दिर है। मीनाक्षी-मन्दिरका शिखर स्वर्ण-मण्डित है। मन्दिरके सम्मुख बाहर स्वर्ण-मण्डित स्तम्भ है। मीनाक्षी-मन्दिरकी भीतरी परिक्रमामें अनेक देवमूर्तियोंके दर्शन हैं। निजमन्दिरके परिक्रमा-मार्गमें ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति, बलशक्तिकी मूर्तियाँ बनी हैं। परिक्रमामें सुब्रह्मण्यम्, मन्दिरके एक भागके निर्माता नरेश तिरुमल तथा उनकी दो रानियों आदिकी मूर्तियाँ हैं।

मीनाक्षी-मन्दिरसे दर्शन करके बाहर निकलकर

सुन्देश्वर मन्दिरकी ओर चलनेपर मीनाक्षी तथा सुन्देश्वर मन्दिरोंके मध्यस्थित द्वारके सामने गणेशजीका मन्दिर है। इसमें गणेशजीकी विशाल मूर्ति है। यह मूर्ति 'वंडीपूर' सरोवर खोदते समय भूमिमें मिली थी। वहाँसे लाकर यहाँ प्रतिष्ठित की गयी है।

सुन्देश्वर—सुन्दरेश्वर-मन्दिरके प्रवेशद्वारपर द्वारपालोंकी मूर्तियाँ हैं। इस प्रस्तरमूर्तियोंसे आगे द्वारपालोंकी दो धातु-प्रतिमाएँ हैं। सुन्दरेश्वर-मन्दिरके सम्मुख पहुँचनेपर प्रथम नटराजके दर्शन होते हैं। इन्हें 'केळ्ळी-अंबलम्' चाँदीसे मढ़ा हुआ कहते हैं। यह ताण्डव-नृत्य करती भगवान् शिवकी मूर्ति चिदम्बरम्की नटराज-मूर्तिसे बड़ी है। मूर्तिके मुखको छोड़कर सर्वाङ्गपर चाँदीका आवरण चढ़ा है। चिदम्बरम्में नटराज-मूर्तिका वामपद ऊपर उठा है और यहाँ दाहिना पद ऊपर उठा है।

सुन्दरेश्वर-मन्दिरके सामने भी स्वर्णमण्डित स्तम्भ है और मन्दिरका शिखर भी स्वर्णमण्डित है। कई ड्योढ़ियोंके भीतर अर्घेपर सुन्दरेश्वर स्वयम्भूलिङ्ग सुशोभित है। उसपर स्वर्णका त्रिपुण्ड्र लगा है।

मन्दिरके बाहर जगमोहनमें आठ स्तम्भ हैं, जिनपर भगवान् शङ्करकी विविध लीलाओंकी अत्यन्त सजीव मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इनका शिल्पनैपुण्य अद्भुत है। यहीं द्वारके सम्मुख चार स्तम्भोंका एक मण्डप है, जिसमें पत्थरमें ही शृङ्खला बनायी गयी है। इस शृङ्खलाकी कड़ियाँ लोहेकी शृङ्खलाके समान घूम सकती हैं। यहींपर वीरभद्र एवं अघोरभद्रकी विशाल उग्र-मूर्तियाँ शिवगणोंके सामर्थ्यकी प्रतीकके समान स्थित हैं।

इस मण्डपमें भगवान् शङ्करके ऊर्ध्वनृत्यकी अद्भुत कलापूर्ण विशाल मूर्ति है। ताण्डवनृत्य करते हुए शङ्करजीका एक चरण ऊपर कानके समीपतक पहुँच गया है। पास ही उतनी ही विशाल काली-मूर्ति है।

इसी मण्डपमें एक ओर 'कारैक्काल्अम्मा' नामक शिवभक्ताकी मूर्ति है। नवग्रह-मण्डपमें नवग्रहोंकी मूर्तियाँ हैं। निज-मन्दिरकी परिक्रमामें गणपति, हनुमान्जी, दण्डपाणि, सरस्वती, दक्षिणामूर्ति, सुब्रह्मण्यम्, आदि अनेक देवताओंके दर्शन होते हैं। परिक्रमामें प्राचीन कदम्ब वृक्षका अवशेष सुरक्षित है। उसके समीप ही दुर्गाजीका छोटा मन्दिर है। यहीं कदम्ब वृक्षके मूलमें भगवान् सुन्देश्वर (शिव) ने मीनाक्षीका पाणिग्रहण किया था।

मन्दिरके दक्षिण-पश्चिम उत्सवमण्डपमें मीनाक्षी-सुन्देश्वर, गङ्गा और पार्वतीकी स्वर्णमूर्तियाँ हैं। परिक्रमामें पश्चिम ओर एक चन्दनमय महालिङ्ग है।

मन्दिरके सम्मुख एक मण्डपमें नन्दीकी मूर्ति है। वहाँसे सहस्र-स्तम्भमण्डपमें जाते हैं। यह नटराजका सभामण्डप है। इस सहस्र-स्तम्भमण्डपमें मनुष्याकारसे भी ऊँची शिव-भक्तों तथा देव-देवियोंकी मूर्तियाँ हैं। इनमेंसे वीणाधारिणी सरस्वतीकी मूर्ति बहुत कलापूर्ण एवं आकर्षक है। इस मण्डपमें श्रीनटराजका श्याम-विग्रह प्रतिष्ठित है। इसी मण्डपमें शिवभक्त 'कण्णप्प' की भी खड़ी मूर्ति है।

बड़े मन्दिरके पूर्व एक शतस्तम्भमण्डप है। इसमें १२० स्तम्भ हैं। प्रत्येक स्तम्भमें नायकवंशके राजाओं तथा रानियोंकी मूर्तियाँ बनी हैं। द्वारके पास शिकारियों तथा पशुओंकी मूर्तियाँ हैं।

समीप ही मीनाक्षी-कल्याण-मण्डप है। चैत्र महीनेमें इसमें मीनाक्षी-सुन्देश्वरका विवाह महोत्सव होता है। इस उत्सवके समय मीनाक्षी-सुन्देश्वरविवाह हो जानेपर यहीं अनेक वर-वधुएँ बहुत अल्प-व्ययमें अपना विवाह सम्पन्न करा जाती हैं।

मन्दिरके पूर्व गोपुरके सामने 'पुदुमण्डप' है, जिसे 'वसन्त-मण्डप' भी कहते हैं। इसमें प्रवेशद्वारपर घुड़सवारों तथा सेवकोंकी मूर्तियाँ हैं। भीतर शिव-पार्वतीके पाणिग्रहणकी पूरे आकारकी मूर्ति है। पासमें भगवान् विष्णुकी मूर्ति है। नटराजकी भी इसमें मनोहर मूर्ति है।

पूर्व-गोपुरके पूर्वोत्तर सप्तसमुद्र नामक सरोवर है। कहा जाता है, मीनाक्षीकी माता काञ्चनमालाकी समुद्र-स्नानकी इच्छा होनेपर भगवान् शङ्करने इस सरोवरमें सात धाराओंमें सातों समुद्रोंका जल प्रकट कर दिया था।

उत्सव—मदुराको 'उत्सव-नगरी' कहा जाता है। यहाँ बराबर उत्सव चलते ही रहते हैं। चैत्र महीनेमें मीनाक्षी सुन्देश्वर-विवाहोत्सव होता है, जो दस दिनतक चलता है। इस समय रथ-यात्रा होती है। वैशाखमें शुक्लपक्षकी पञ्चमीसे आठ दिनतक वसन्तोत्सव होता है। अषाढ़-श्रावणके पूरे महीने उत्सवके हैं। आषाढ़में मीनाक्षी-देवीकी विशेष पूजा होती है। श्रावणमें भगवान् शङ्करकी ६४ लीलाओंके स्मरणोत्सव होते हैं। ये लीलाएँ भगवान् शङ्करने मीनाक्षीके साथ मदुरामें प्रत्यक्ष

दक्षिणभारतके कुछ मन्दिर—१८

मीनाक्षी-मन्दिरके विमानकी कलापूर्ण मूर्तियाँ
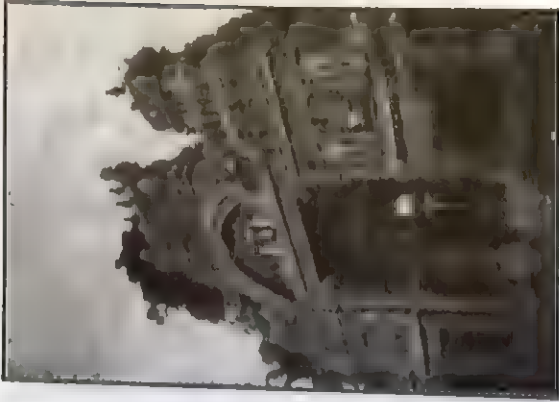
प्रवेशद्वार, मीनाक्षी-मन्दिर, मदुरा

मीनाक्षी-मन्दिरके गर्भगृहका स्वर्ण-मण्डप
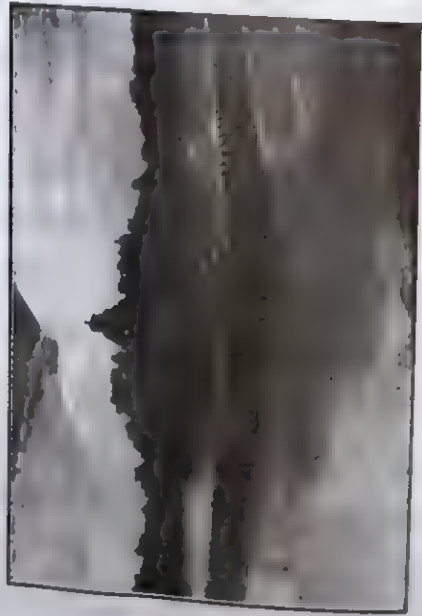
वंडियूर-सरोवर, मदुरा

स्वर्णपुष्करिणी, मीनाक्षी-मन्दिर

मीनाक्षी-मन्दिरका विमान

मीनाक्षी-मन्दिरके पूर्वका गोपुर

Tirthank_Section_18_1_Front
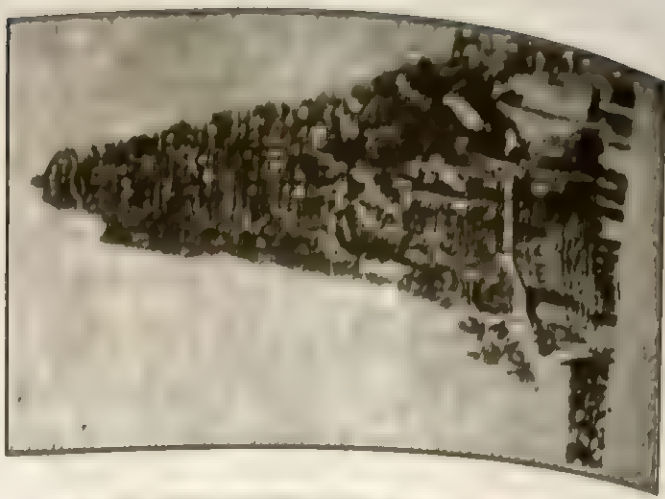
कुत्तालम्‌का जल-प्रपात
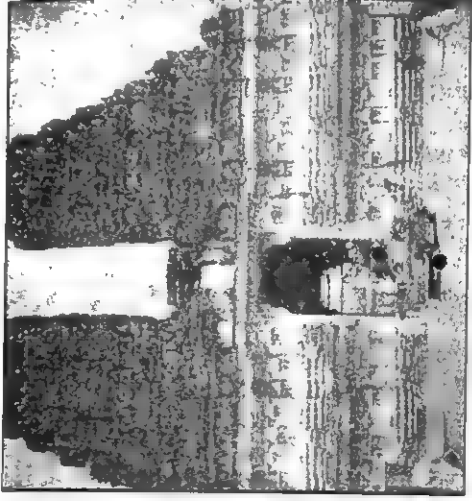
विश्वनाथ-मन्दिरका भग्न गोपुर, तेन्काशी

श्रीकुत्तालेश्वर-मन्दिर, कुत्तालम्
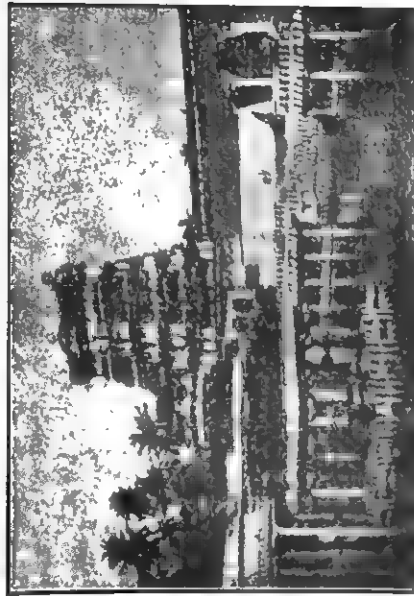
नेल्लियप्पार-मन्दिर, तिरुनेल्वेलि

श्रीसुब्रह्मण्यम्-मन्दिरका विहङ्गम दृश्य, तिरुच्चेन्दूर

वल्ली गुफा, तिरुच्चेन्दूर

की थीं, ऐसा माना जाता है। भाद्रपदमें तथा आश्विनमें नवरात्र महोत्सव एवं अमावास्या-पूर्णिमाके विशेषोत्सव होते हैं। मार्गशीर्षमें आर्द्रा नक्षत्रमें नटराजका अभिषेक होता है और अष्टमीको वे कालभैरव ग्रामकी रथयात्रा करते हैं। पौष-पूर्णिमाको मीनाक्षी-देवीकी रथयात्रा होती है। माघमें शिवभक्तोंके स्मरणोत्सव तथा फाल्गुनमें मदन-दहनोत्सव होता है। फाल्गुनमें ही सुब्रह्मण्यम्‌की विवाह-यात्रा मनायी जाती है।

कथा

कहा जाता है, पहले यहाँ कदम्ब वन था। कदम्बके एक वृक्षके नीचे भगवान् सुन्दरेश्वरका स्वयम्भूलिङ्ग था। देवता उसकी पूजा कर जाते थे। श्रद्धालु पाण्डव-नरेश मलयध्वजको इसका पता लगा। उन्होंने उस लिङ्गमूर्तिके स्थानपर मन्दिर बनवाने तथा वहीं नगर बसानेका संकल्प किया। स्वप्नमें भगवान् शङ्करने राजाके संकल्पकी प्रशंसा की और दिनमें एक सर्पके रूपमें स्वयं आकर नगरकी सीमाका भी निर्देश कर गये।

पाण्डव-नरेशके कोई संतान नहीं थी। राजा मलयध्वजने अपनी पत्नी काञ्चनमालाके साथ संतान-प्राप्तिके लिये दीर्घकालतक तपस्या की। राजाकी तपस्या तथा आराधनासे प्रसन्न होकर भगवान् शङ्करने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिया और आश्वासन दिया कि उनके एक कन्या होगी।

साक्षात् भगवती पार्वती ही अपने अंशसे राजा मलयध्वजके यहाँ कन्यारूपमें अवतीर्ण हुईं। उनके विशाल सुन्दर नेत्रोंके कारण माता-पिताने उनका नाम मीनाक्षी रखा। राजा मलयध्वज कुछ काल पश्चात् कैलासवासी हो गये। राज्यका भार रानी काञ्चनमालाने सँभाला।

मीनाक्षीके युवती होनेपर साक्षात् भगवान् सुन्दरेश्वरने उनसे विवाह करनेकी इच्छा व्यक्त की। रानी काञ्चनमालाने बड़े समारोहसे मीनाक्षीका विवाह सुन्दरेश्वर शिवसे कर दिया।

सुन्दरराज पेरुमाळ्

यह विष्णु-मन्दिर नगरके पश्चिम भागमें मीनाक्षी-मन्दिरसे लगभग आध मीलपर (स्टेशनसे भी इतनी ही दूर) है। इसे 'कुडल अवगर' भी कहते हैं। मन्दिरमें रामायणके कथा-प्रसङ्गोंके सुन्दर रंगीन चित्र दीवारोंपर बने हैं। यहाँ भगवान्‌का नाम 'सुन्दरबाहु' होनेसे इस मन्दिरको सुन्दरबाहु-मन्दिर भी कहा जाता है। भगवान् विष्णु मीनाक्षीका सुन्दरेश्वरके साथ विवाह कराने यहाँ पधारे थे और तभीसे विग्रहरूपें विराजमान हैं।

मन्दिरके भीतर निज-मन्दिरमें भगवान् विष्णुकी चतुर्भुज मूर्ति है। भगवान्‌के दोनों ओर श्रीदेवी तथा भूदेवी सिंहासनपर बैठी हैं। इस मन्दिरके ऊपर खूब ऊँचा स्वर्ण-कलश है। मन्दिरके शिखरके भागमें ऊपर जानेको सीढ़ियाँ बनी हैं। ऊपर सूर्यनारायणकी मूर्ति है। इसी मन्दिरमें भगवान् नृसिंहकी भी मूर्ति है।

इस मन्दिरके घेरेमें ही एक अलग लक्ष्मी-मन्दिर है। श्रीलक्ष्मीजीका पूरा मन्दिर कसौटीके चमकीले काले पत्थरका बना है। इसमें लक्ष्मीजीकी बड़ी भव्य मूर्तियाँ हैं। श्रीलक्ष्मीजीको यहाँ 'मधुवल्ली' कहते हैं।

श्रीकृष्ण-मन्दिर—मीनाक्षी मन्दिरसे सुन्दरराज पेरुमाळ्के मन्दिर आते समय सुन्दरराज पेरुमाळ्-मन्दिरसे थोड़े ही पहले श्रीकृष्ण-मन्दिर मिलता है। इसमें श्रीकृष्णचन्द्रकी बड़ी सुन्दर मूर्ति है।

तिरुप्परंकुन्रम्

मदुरासे ५ मील दक्षिण तिरुप्परंन्रम् स्टेशन है। मदुरासे यहाँतक बसें भी चलती हैं। स्टेशनसे दो फर्लांगपर एक पर्वत है। पर्वतको काटकर उसमें गुफा बनायी गयी है। यह गुफा छोटी-मोटी नहीं, अति विशाल मन्दिर है। बाहरसे देखनेपर मन्दिरके ऊपर पहाड़ी ऐसी दीखती है, जैसे छत्र लगा हो। मन्दिरका गोपुर ऊँचा है। मन्दिरमें कई बड़े-बड़े मण्डप हैं। मन्दिरके पूर्व एक पक्का सरोवर है।

यहाँ निजमन्दिरमें सुब्रह्मण्य स्वामीकी एक मुख भव्य मूर्ति है। मन्दिरमें सुब्रह्मण्य स्वामीकी चल-अचल अन्य कई मूर्तियाँ हैं। इनके अतिरिक्त महाविष्णु, शिव-पार्वती, गणेश आदिकी मूर्तियाँ भी मन्दिरमें हैं।

यहाँ एक ही मण्डपमें एक पंक्तिमें मयूर, नन्दी तथा मूषककी मूर्तियाँ बनी हैं। कहा जाता है, स्वामिकार्तिकका विवाह इसी तीर्थमें हुआ था। यहाँ धर्मशाला है।

इस स्थानसे ३ फर्लांगपर 'शरश्रवण' तालाब है। उसे पवित्र तीर्थ माना जाता है। उसके किनारे गणेशजीका मन्दिर है।

वंडियूर तेप्पकुळम्*

मदुरसे दो मील दूर वैगै (वेगवती) नदीके दक्षिण यह सुविस्तृत सरोवर है। इसी सरोवरसे वह विशाल गणपति-मूर्ति मिली थी, जो मीनाक्षी-मन्दिरसे सुन्दरेश्वर-मन्दिरमें जाते समय द्वारके सामने ही मिलती है। सरोवरके पास ही 'मार्यम्मन् कोइल' नामक एक देवी-मन्दिर है। यह सरोवर पवित्र माना जाता है। मीनाक्षी देवीकी रथ-यात्राके समय रथ यहाँतक आता है। उस समय चलमूर्तियोंका यहाँ जल-विहार होता है।

आनमलै

मदुरासे उत्तर-पूर्व ६ मीलपर यह तीर्थ है। मदुरासे यहाँतक मोटर-बस जाती है। जहाँ भगवान् नृसिंहका मन्दिर है। मन्दिरके सामने विशाल मण्डप है। मन्दिरके समीप ही सरोवर है। समीपमें धर्मशाला भी है। कुछ ही दूर एक छोटा पर्वत है। इसीका नाम आनमलै (हस्तिगिरि) है; क्योंकि देखनेमें यह हाथके समान है।

कालमेघ पेरुमाळ्

मदुरासे ९ मीलपर यह विष्णु-मन्दिर है। मन्दिरमें भगवान् विष्णुकी शेषशायी मूर्ति है। यहाँ मोहिनी, वृन्दा आदिकी मूर्तियाँ भी मन्दिरमें हैं।

वृषभाद्रि (तिरुमालिरुंचोलै)

(लेखक—श्रीरे० श्रीनिवास अय्यंगार)

मदुरासे १२ मील उत्तर यह एक प्राचीन क्षेत्र है। मदुरासे यहाँतक मोटर-बस जाती है। इसे स्थानीय लोग 'अळगर-कोइल' कहते हैं।

वृषभाद्रिपर एक पुराना किला है। किलेमें श्रीसुन्दरराजका विशाल मन्दिर है। दक्षिणके मन्दिरोंके विस्तार, उनके गोपुर एवं उनकी कलाका विस्तृत वर्णन यहाँ शक्य नहीं। यह मन्दिर भी विस्तृत है। इसमें कई परिक्रमा-मार्ग हैं और उनमें मुख्य-मुख्य देवमूर्तियाँ हैं। मुख्य मन्दिरमें भगवान् श्रीसुन्दरराज (श्रीनारायण) श्रीदेवी तथा भूदेवीके साथ विराजमान हैं।

इस वृषभाद्रि-क्षेत्रका माहात्म्य वाराहपुराण, वामनपुराण, ब्रह्माण्डपुराण तथा अग्निपुराणमें मिलता है। यहाँ यम-धर्मराजने वृषरूप धारण करके महाविष्णुकी आराधना की थी। यहीं उन्हें भगवद्दर्शन हुआ। इसीसे इस पर्वतको वृषभाद्रि कहते हैं।

यहाँ जब यमधर्मराजके सम्मुख भगवान् विष्णु प्रकट हुए, तब उनके नूपुरोंसे एक जलस्रोत प्रकट हुआ। उसे नूपुरगङ्गा कहते हैं। गङ्गाजीके समान ही नूपुरगङ्गाका जल पापनाशक माना जाता है। नूपुरगङ्गामें स्नान करके यहाँ श्रीसुन्दरराजका दर्शन-अर्चन किया जाता है। यमधर्मराजने ही भगवान् श्रीसुन्दरराजकी प्रतिष्ठा की थी।

मन्दिरका 'गर्भागार कब बना, प्रतिमा कब स्थापित हुई—इसका निश्चित पता नहीं; तथापि यह मन्दिर श्रीपोइगै आळवार, भूतत्ताळवार तथा पेयाळवारके समय तो था ही, जो द्वापरके आरम्भमें वर्तमान थे। उन लोगोंने इसका उल्लेख किया है। पाण्डव भी अपनी पत्नी द्रौपदीके साथ यहाँ पधारे थे और उन्होंने अळगरदेवकी उपासना की थी। वे यहाँ जिस गुफामें ठहरे थे, वह

* तेप्पकुलम् उसी सरोवरको कहते हैं, जहाँ देव-विग्रहोंका नौका-विहार होता है।

636 Tirthank_Section_18_2_Front

पाण्डव-शय्या कहलाती है।

यहाँ वर्षमें दो बार महामहोत्सव होता है। पहला महोत्सव चैत्र-शुक्ला चतुर्दशीको होता है। भगवान् सुन्दरराजकी चल-मूर्ति पालकीमें विराजमान होती है। इस समय भगवान् मदुरा पधारते हैं। चैत्र-पूर्णिमाको भगवान् घोड़ेकी सवारीपर मदुरासे चलकर वेगवती नदी पार करके नंदियूरमें रात्रिविश्राम करते हैं। तीसरे दिन तेनूर होते भगवान् रामरायर् मण्डपमें रात्रि व्यतीत करते हैं। चौथे दिन वहाँसे चलकर मैसूर-राजाके मण्डपमें रात्रि-विश्राम होता है। पाँचवें दिन प्रभु वृषभाद्रि लौटते हैं।

दूसरा महोत्सव आषाढ़-शुक्लमें पूर्णिमासे दस दिनतक होता है।

तिरुप्पुवनम्

मदुरासे मानामदुर जानेवाली लाइनपर मदुरासे १३ मील दूर तिरुप्पुवनम् स्टेशन है। स्टेशनसे थोड़ी ही दूरीपर वायव्यकोणमें यहाँका शिव-मन्दिर है। वैशाख-पूर्णिमाको इस मन्दिरका रथयात्रा-महोत्सव होता है। यहाँ धर्मशाला है। रामेश्वरसे लौटते समय प्रायः यात्री यहाँ दर्शनार्थ रुककर फिर मदुरा जाते हैं।

शिवकाशी

मदुरासे २७ मीलपर विरुधनगर स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन त्रिवेन्द्रम्तक जाती है। इस लाइनपर विरुधनगरसे १६ मील दूर शिवकाशी स्टेशन है। यहाँ भगवान् श्रीकृष्णका मन्दिर है। मन्दिरमें चतुर्भुज श्रीकृष्ण-मूर्ति है। इधरके विद्वान् मानते हैं कि यहाँ बाणासुरकी राजधानी थी। बाणासुरकी पुत्री ऊषाके साथ श्रीकृष्णके पौत्र अनिरुद्धका विवाह यहीं हुआ था। यहाँ भगवान् शङ्करका भी एक मन्दिर है।

श्रीविल्लिपुत्तूर्

विरुधनगरसे २६ मीलपर श्रीविल्लिपुत्तूर् स्टेशन है। स्टेशनसे श्रीविल्लिपुत्तूर् नगर प्रायः डेढ़ मील दूर है। यहाँ कोई धर्मशाला नहीं है। श्रीविष्णुचित्तस्वामी (पेरियाळ्वार) की यह जन्मस्थली है। उन्हींकी पुत्री आंडाळ् (गोदाम्बा) हुईं, जिन्हें श्रीलक्ष्मीजीका अवतार माना जाता है।

यहाँ श्रीरङ्गनाथजीका मन्दिर है। इसमें दीवारोंपर देवताओं, भगवल्लीलाओं तथा महाभारतकी घटनाओंके सुन्दर रंगीन चित्र बने हैं। यहाँ मन्दिरमें श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीके मनोहर श्रीविग्रह हैं। मुख्य स्थानपर गोदाम्बाके साथ श्रीरङ्गनाथजी (भगवान् विष्णु) की मूर्ति है। उन्हें यहाँ रङ्गमन्नार् (रङ्गप्रभु) कहते हैं।

इस मन्दिरसे लगा हुआ एक दूसरा विशाल मन्दिर है। दोनों मन्दिरोंके मुख्य द्वार, गोपुर पृथक्-पृथक् हैं; किन्तु दोनोंके मध्यकी दीवारमें एक द्वार कुण्डके समीप है, जिससे एकमें दर्शन करके यात्री दूसरे मन्दिरमें जाते हैं। इस मन्दिरमें नीचे भगवान् नृसिंहकी मूर्ति है। मन्दिरमें ऊपर शेषशायी भगवान् विष्णुका श्रीविग्रह है, जिनकी चरण-सेवामें लक्ष्मीजी लगी हैं। ऊपर ही वटपत्रशायी भगवान्की भी मूर्ति है। इनके अतिरिक्त यहाँ दुर्वासाजी तथा अन्य ऋषियोंकी मूर्तियाँ एवं गरुड़जीकी मूर्ति है।

श्रीरङ्गमन्नार् मन्दिरसे लगभग आध मीलपर बस्तीसे बाहर एक सरोवर है। कहते हैं आंडाळ् उसीमें स्नान किया करती थीं। गर्मियोंमें उसमें जलके नामपर प्रायः कीचड़ ही रहता है।

श्रीरङ्गमन्नार्-मन्दिरसे लगभग एक मील दूर भगवान् शङ्करका मन्दिर है। यह मन्दिर प्राचीन है। मन्दिरके पास रुद्र-सरोवर है। मन्दिरमें भगवान् शङ्करका लिङ्ग-विग्रह है तथा अलग मन्दिरमें पार्वतीजीकी मूर्ति है। यहाँ भगवान् शङ्करको विश्वनाथ कहते हैं। यहाँ शिवरात्रिको महोत्सव होता है।

श्रीरङ्गमन्नार्-मन्दिरसे ३ मील पश्चिमोत्तर एक पहाड़ीपर श्रीवेङ्कटेशका मन्दिर है। इसमें श्रीदेवी-भूदेवीके साथ श्रीवेङ्कटेशभगवान्की मूर्ति विराजमान है।

शङ्करनयनार्कोइल

श्रीविल्लिपुत्तूरसे २७ मील आगे शङ्करनयनार्कोइल स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग आध मीलपर 'शङ्कर-नारायण'-मन्दिर है। इस मन्दिरमें एक ओर भगवान् शङ्करका विग्रह है, दूसरी ओर श्रीनारायणकी मूर्ति है। दोनोंके मध्यमें हरि-हर मूर्ति है, जिसमें आधा भाग शिवस्वरूप तथा आधा नारायणस्वरूप है।

कहते हैं गोमतीने यहाँ कठोर तपस्या की थी। उसके तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान् शङ्कर तथा नारायण दोनोंने उसे दर्शन दिया और फिर दोनों एकाकार हो गये।

स्वयंप्रभा-तीर्थ

शङ्करनयनार्कोइलसे १३ मील आगे कडयनल्लूर स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग आध मीलपर श्रीराम-मन्दिर है। वहाँ श्रीहनुमान्‌जीकी एक विशाल मूर्ति है। मन्दिरके पास सरोवर है। पास ही पर्वतमें एक गुफा है, जो ३० फुट लम्बी है। कहा जाता है, सीतान्वेषणके समय वानर-समूह जब प्याससे व्याकुल हो गया, तब इसी स्थानपर एक गुफासे जलपक्षियोंको निकलते देख उसके भीतर गया। गुफामें वानरोंको तपस्विनी स्वयंप्रभाके दर्शन हुए। उसने वानरोंको अपनी योगशक्तिसे समुद्रतटपर पहुँचा दिया।

तेन्काशी

कडयनल्लूरसे १० मील (विरुधनगरसे ७६ मील) पर तेन्काशी स्टेशन है। इसे दक्षिण-काशी कहते हैं; क्योंकि तेन्‌का अर्थ दक्षिण होता है।

स्टेशनसे आध मीलपर काशी-विश्वनाथका मन्दिर है। इस मन्दिरके गोपुरका मध्यभाग बिजली गिरनेसे टूट गया है। गोपुरके भीतर एक छोटे मण्डपमें वीरभद्र, भैरव, कामदेव, रति, वेणुगोपाल, नटराज, शिव-ताण्डव, काली-ताण्डव तथा दो कालीकी सहचरियोंकी बहुत ही सुन्दर ऊँची मूर्तियाँ हैं।

मन्दिरके भीतर काशी-विश्वनाथ लिङ्ग प्रतिष्ठित है। शिव-मन्दिरके पार्श्वमें पार्वती-मन्दिर है। यह मन्दिर भी विशाल है। इसमें पार्वतीकी भव्य प्रतिमा है। मन्दिरमें और अनेक देवताओंकी मूर्तियाँ परिक्रमामें मिलती हैं।

कुत्तालम्

तेन्काशी स्टेशनसे ३½ मीलपर कुत्तालम् प्रपात है। यहाँ पर्वतके उच्चशिखरसे जलकी एक धारा नीचे गिरती है। प्रपात छोटा ही है। प्रपातके पास नीचे कुछ दूरीपर कुण्ड बना है। प्रपातसे थोड़ी दूरपर कुत्तालेश्वर शिव-मन्दिर है। यात्री प्रपातके नीचे स्नान करके दर्शन करने जाते हैं। स्टेशनसे यहाँतक मोटर-बस आती है।

कुत्तालेश्वर-मन्दिर विशाल है। इसमें कई मण्डप हैं। भीतर कई द्वारोंके अंदर शिवजीकी लिङ्ग-मूर्ति है। मुख्य मन्दिरके पार्श्वमें पार्वतीजीका मन्दिर है। पार्वतीजीकी मूर्ति तेजसे उद्दीप्त है। मन्दिरकी परिक्रमामें नटराज, गणेश, सुब्रह्मण्यम् आदिके श्रीविग्रह हैं।

तिरुनेल्वेली (तिन्नेवली)

त्रिचिनापल्ली-तूतीकोरन लाइनपर मदुरासे ७९ मील दूर मणिआची स्टेशन है। मणिआचीसे एक लाइन तेन्काशीशंकोट्टातक जाती है। इस लाइनपर मणिआचीसे १८ मील (तेन्काशीसे ४३ मील) पर तिरुनेल्वेली स्टेशन है। स्टेशनका नाम अंग्रेजीमें तो तिन्नेवली लिखा है और उसी बोर्डपर हिंदीमें तिरुनेल्वेली लिखा है। वस्तुतः इस नगरका नाम तिरुनेल्वेली ही है। यहाँ ठहरनेके लिये चोल्ट्री है।

ताम्रपर्णी नदीके किनारे तिरुनेल्वेली अच्छा नगर है। नगरका एक भाग बड़े स्टेशनके पास बसा है और दूसरा भाग वहाँसे लगभग १ मील दूर है। स्टेशनसे नगरके दूसरे भागको बसें जाती हैं।

ताम्रपर्णीमें स्नान करके नगरके स्टेशनके समीपवाले भागमें देवदर्शन पहले किया जाता है। इस भागमें ताम्रपर्णीतटके पास ही नगरमें भगवान् शङ्करका मन्दिर है। नगरके मध्यमें वरदराज (भगवान् विष्णु) का मन्दिर है और बसें जहाँ खड़ी होती हैं, उसके समीप ही सुब्रह्मण्यम्-मन्दिर है। यहाँ दर्शन करके पैदल या बससे नगरके दूसरे भागमें जाना चाहिये।

इस नगरका मुख्य मन्दिर नीलप्पेश्वर-मन्दिर है, जो नगरके दूसरे भागमें ही है। यह मन्दिर दो भागों बँटा हुआ है। एक भागमें शिव-मन्दिर और दूसरे भागमें पार्वती मन्दिर है।

मन्दिरमें भीतर जानेपर 'तेप्पकुळम्' सरोवर मिलता है। उसके वाम भागमें सहस्रस्तम्भ मण्डप है। निज मन्दिरके सम्मुख दो स्वर्ण-मण्डित स्तम्भ हैं। समीप ही नन्दीकी विशाल मूर्ति है। निजमन्दिरमें भूमिके स्तरसे कुछ नीचे उतरनेपर ताम्रेश्वर-लिङ्गका दर्शन होता है। सामने ही नटराज-मूर्ति है। बगलके दूसरे मन्दिरमें नीलप्पेश्वर नामक स्वयम्भू महालिङ्ग है। इस मन्दिरके द्वारपर गणेशजीकी मूर्ति है। गणेशजीके बगलमें शेषशायी भगवान् विष्णुकी विशाल मूर्ति है। समीप एक मन्दिरमें शिव-पार्वतीकी प्रतिमा है। यहाँ परिक्रमामें रावणकी मूर्ति है। आगे परिक्रमामें ही महालक्ष्मी तथा नटराजके दर्शन हैं।

मन्दिरके दूसरे भागमें पार्वतीजीका प्रधान मन्दिर है। उसके गोपुरके भीतर सरोवर है और सरोवरके समीप मण्डप है। इस मण्डपके स्तम्भ बहुत सुन्दर हैं। आगे स्वर्ण-मण्डित स्तम्भ है। निज मन्दिरमें श्रीपार्वतीजीकी मनोहर मूर्ति है। यहाँ पार्वतीजीको 'कान्तिमयी अम्बा' कहते हैं। इनकी परिक्रमामें चण्डेश्वर महादेव, सुब्रह्मण्यम् आदिके दर्शन हैं। सरोवरके पश्चिम एक विशाल मण्डप है। उसमें होकर शिव-मन्दिरसे पार्वती-मन्दिरमें आनेका मार्ग है। इस मण्डपके पश्चिम उपवन है। उस उपवनमें दक्षिणामूर्ति, गणेश, नन्दी तथा सुब्रह्मण्यम्की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।

पापनाशन-तीर्थ

तिरुनेल्वेली स्टेशनसे तेन्काशी जानेवाली लाइनपर २२ मील दूर अम्बासमुद्रम् नामक स्टेशन है। वहाँसे ५ मीलपर पश्चिम ताम्रपर्णी नदीका प्रपात है। यहाँ ताम्रपर्णी नदी पर्वतसे ८० फुट नीचे गिरती है। नीचे कुण्ड है। इस प्रपातको ही पापनाशन-तीर्थ कहते हैं। इसे कल्याणतीर्थ भी कहते हैं। तीर्थके समीप ही भगवान् शङ्करका मन्दिर है। शिवपुराण तथा कूर्मपुराणमें इस तीर्थका ऐसा माहात्म्य बताया गया है कि इसमें स्नान करनेसे मनुष्यके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

श्रीवैकुण्ठम्

तिरुनेल्वेली (तिन्नेवली)-से एक लाइन तिरुचेंदूर-तक जाती है। इस लाइनपर १८ मील दूर श्रीवैकुण्ठम् स्टेशन है। तिरुनेल्वेलीसे तिरुचेन्दूरतक बराबर बसें चलती हैं। यात्री बसोंसे सुविधापूर्वक यात्रा कर सकते हैं। यहाँ ठहरनेकी व्यवस्था है।

स्टेशनसे मन्दिर लगभग १ मील है। गोपुरके भीतर

गोपुरपर स्वर्णमण्डित स्तम्भ मिलता है। उसके आगे विशाल मण्डप है। निजमन्दिरमें शेषशायी भगवान् विष्णुका श्रीविग्रह प्रतिष्ठित है। समीप ही भगवान्‌की स्वर्णमण्डित चलमूर्ति है। श्रीदेवी तथा भूदेवीकी भी स्वर्ण-मूर्तियाँ हैं।

परिक्रमामें श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर है। वहाँसे आगे उत्सव-भवन है। इसमें खंभोंके सहारे आळ्वार भक्तोंकी मूर्तियाँ बनी हैं। आगे आण्डाळ् (गोदाम्बा) का मन्दिर है। परिक्रमामें उत्तरकी ओर वैकुण्ठ-भवन है, जहाँ भगवान्‌की सवारी रखी जाती है। उसके पूर्व एक विशाल मण्डपमें बने मन्दिरमें श्रीबालाजीकी मूर्ति है।

आळ्वार तिरुनगरी

श्रीवैकुण्ठम्‌से ३ मील आगे आळ्वार तिरुनगरी स्टेशन है। यहाँ भगवान् विष्णुका विशाल मन्दिर है। यहाँ भी ठहरनेकी व्यवस्था मन्दिरके पास है। यह क्षेत्र श्रीनम्माळ्वारका है। यहाँ वह इमलीका वृक्ष दिखाया जाता है, जिसके कोटरमें श्रीशठकोपस्वामी दीर्घकालतक रहे।

यहाँ निज-मन्दिरमें श्रीमहाविष्णुकी चतुर्भुज श्यामवर्ण भव्य खड़ी प्रतिमा है। भगवान्‌के समीप श्रीलक्ष्मीजी तथा आण्डाळ् (गोदाम्बा) की मूर्तियाँ हैं। वहाँ भी परिक्रमामें अनेकों देव-दर्शन हैं।

तिरुच्चेन्दूर

आळ्वार तिरुनगरीसे १७ मील (तिन्नेवलीसे ३८ मील) पर समुद्र-किनारे तिरुच्चेन्दूर स्टेशन है। दक्षिणभारतमें सुब्रह्मण्य स्वामीके प्रमुख ६ तीर्थोंमेंसे तिरुच्चेन्दूर प्रधान सुब्रह्मण्य-तीर्थ है।

समुद्रके किनारे ही सुब्रह्मण्य स्वामीका विशाल मन्दिर है। मन्दिरके सामने समुद्रतटकी ओर बहुत बड़ा मण्डप है। इस मण्डपमें होकर ही यात्री मन्दिरमें जाते हैं। कई द्वार पार करनेपर सुब्रह्मण्य स्वामीका निज-मन्दिर मिलता है। स्वर्ण-मण्डित सुब्रह्मण्य (स्वामिकार्तिक) की मूर्ति बहुत आकर्षक है। मन्दिरकी परिक्रमामें सुब्रह्मण्यम्‌के कई रूपोंके श्रीविग्रह हैं तथा और भी देव-मूर्तियाँ हैं।

तोताद्रि (नांगनेरी)

तिरुनेल्वेली (तिन्नेवली) से कुछ यात्री बसद्वारा सीधे कन्याकुमारी चले जाते हैं और कुछ यात्री मार्गके तीर्थोंका दर्शन करते जाते हैं। ये तीर्थ कन्याकुमारीके सीधे मार्गसे थोड़े ही इधर-उधर पड़ते हैं। तिन्नेवलीसे सीधे कन्याकुमारी बस जाती है और इन तीर्थोंमें होती बसें भी जाती हैं। तोताद्रिमें मन्दिरके पास ही अच्छी धर्मशाला है।

तिरुनेल्वेलीसे २० मीलपर नांगनेरी कस्बा है। यहाँ श्रीरामानुज-सम्प्रदायकी तोताद्रि नामक मूल गद्दी है। श्रीरामानुजाचार्यके ८ पीठोंमें यह प्रधान पीठ है। इसे 'मूलपीठ' भी कहते हैं। यहाँके गद्दीके आचार्य श्रीरामानुजाचार्य नामसे ही अभिहित होते हैं। यहाँ श्रीरामानुजाचार्यका उपदण्ड, पीठ (बैठनेका काष्ठासन) तथा शङ्ख-चक्र-मुद्राएँ अभीतक सुरक्षित हैं।

बस्तीके एक ओर क्षीराब्धि पुष्करिणी है। कहा जाता है, यहाँ मन्दिरमें भगवान्‌का जो श्रीविग्रह है, वह उस पुष्करिणीसे स्वयं प्रकट हुआ है। यहाँ मन्दिरमें स्वर्णमण्डित ऊँचा गरुड़स्तम्भ है। मन्दिरके भीतर कई मण्डप हैं। निज-मन्दिरमें शेष-फणोंके छत्रके नीचे भगवान् विष्णुकी श्रीमूर्ति विराजमान है। साथ ही श्रीदेवी-भूदेवीकी मूर्तियाँ हैं।

कहा जाता है, भगवान्‌की यह श्रीमूर्ति अनेक विषौषधियोंके संयोगसे बनी है। भगवान्‌का यहाँ तैलाभिषेक होता है। अभिषेकका यह तैल मन्दिरके पश्चिम भागमें बने एक बड़े कुण्डमें जाकर एकत्र होता है। इस कुण्डमें वर्षोंसे तैल संचित हो रहा है; यह तैल पुराना

ही लाभकारी होता है, इसलिये व्यवस्था यह है कि जो यात्री जितने तैलसे भगवान्‌का अभिषेक कराता है, उससे आधा तैल उसे प्रसादरूपमें कुण्डके पुराने तैलसे दे दिया जाता है। भगवान्‌को अभिषेक करानेके लिये तैल मन्दिरसे ही शुल्क देकर लिया जाता है। कुण्डसे लिया प्रसादका तैल अनेक चर्मरोगों तथा वायुके दर्दोंमें लाभकारी कहा जाता है। प्रायः यात्री यहाँसे तैल ले जाते हैं।

लंबे नारायण (तिरुक्कलंकुडि)

नांगनेरी (तोताद्रि) से ९ मीलपर तिरुक्कलंकुडि ग्राम है। तोताद्रिसे सीधे कन्याकुमारी बस जाती है। लंबे नारायणसे भी कन्याकुमारी बसें जाती हैं। तोताद्रि तथा लंबे नारायणके बीचमें भी बसें चलती हैं।

यहाँ भगवान्‌का नाम तो 'परिपूर्णसुन्दर' है; किंतु मूर्ति लंबी होनेसे लोगोंने 'लंबे नारायण' नाम रख दिया। यहाँका श्रीविग्रह अनादिसिद्ध है। वाराहपुराणमें उसका माहात्म्य है।

इस मन्दिरका घेरा बहुत विस्तृत है। फाटकके भीतर आगे जाकर गोपुर मिलता है। उसके भीतर दाहिनी ओर विशाल मण्डपमें श्रीरामानुजाचार्यकी मूर्ति है। उसके आगे दूसरा गोपुर पार करनेपर गरुड़स्तम्भके दर्शन होते हैं। इस मन्दिरमें कई सुन्दर मण्डप हैं। निज-मन्दिरके द्वारपर जय-विजयकी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरके भीतर भगवान् श्रीनारायण श्रीदेवी तथा भूदेवीके साथ खड़े हैं। तीनों ही विग्रह मनोहर हैं। ये मूर्तियाँ पर्याप्त ऊँची हैं, इसीसे लोग इन्हें लंबे नारायण कहते हैं।

इस निज-मन्दिरके बगलमें एक दूसरा मन्दिर है, जिसमें भगवान्‌की शेषशायी मूर्ति है। एक ओर मन्दिरमें श्रीदेवी-भूदेवीके साथ भगवान् नारायण विराजमान हैं। इनके अतिरिक्त भगवान् शङ्कर तथा भैरवजीकी मूर्तियाँ भी यहाँ छोटे मन्दिरोंमें हैं।

मन्दिरके बगलमें एक बृहत् मण्डप है। इसमें कुरंग-वल्ली, गोपा आदि चार माताओंकी मूर्तियाँ हैं। श्रीरामानुजसम्प्रदायके आचार्योंकी भी मूर्तियाँ हैं।

इस तिरुक्कलंकुडि ग्रामके समीप महेन्द्रगिरि नामक पहाड़ी है। उसके ऊपर भगवान् शङ्करका मन्दिर है। यहाँ शङ्करजीको महेन्द्र-शङ्कर कहते हैं। मन्दिरके समीप पुष्करिणी है। कहा जाता है, एक कौआ इस पुष्करिणीमें स्नान करके नित्य मन्दिरपर बैठकर भगवान्‌का स्मरण करता था, इससे वह मुक्त हो गया। वहाँ दीवारमें कौएकी मूर्ति बनी है।

यहाँसे १ मील दूर उडीवरगुडी नामक गाँवमें भी भगवान् विष्णुका सुन्दर मन्दिर है।

छोटे नारायण (पन्नगुडी)

लंबे नारायणसे ९ मीलपर पन्नगुडी ग्राम है। यहाँ धर्मशाला है। सड़कके पास पक्के घाटवाला सुन्दर सरोवर है।

छोटे नारायणका मन्दिर शिव-मन्दिर है। गोपुरके भीतर मण्डपमें एक ताम्रमय स्तम्भ है। आगे निज-मन्दिरमें रामलिङ्गेश्वर नामक शिव-लिङ्ग है। कहा जाता है, इनकी स्थापना महर्षि गौतमने की थी। शिव-मन्दिरके बगलमें पार्वती-मन्दिर है।

इस शिव-मन्दिरके बाहरी घेरेमें, मुख्य मन्दिरसे बाहर बगीचेमें एक छोटे-से मण्डपमें छोटे नारायणका श्रीविग्रह है। यह श्रीविग्रह छोटा होनेपर भी सुन्दर है। भगवान्‌के समीप श्रीदेवी और भूदेवीकी भी मूर्तियाँ हैं।

पडलूर

छोटे नारायणसे ९ मीलपर यह गाँव है। यह कन्या-कुमारीके मार्गमें नहीं पड़ता। यहाँ जाना हो तो छोटे नारायणसे अलग जाना पड़ता है।

पडलूरमें भगवान् शङ्करका मन्दिर है। यहाँ निज-मन्दिरमें नटराज-मूर्ति है। मन्दिरके भीतर ही पार्वतीजीका मन्दिर है। मन्दिरके समीप सरोवर है। यात्री यहाँ डमरू तथा शृंग बजाते हैं।

कन्याकुमारी

कन्याकुमारी-माहात्म्य

ततस्तीरे समुद्रस्य कन्यातीर्थमुपस्पृशेत्।
तत्तोयं स्पृश्य राजेन्द्र सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

(महा० वन० तीर्थयात्रा० ८५। २३, पद्मपुरा० आ० ३८। २३)

'(कावेरीमें स्नान करके) मनुष्य इसके बाद समुद्रतटवर्ती कन्यातीर्थमें स्नान करे। इस कन्याकुमारी तीर्थके जलका स्पर्श कर लेनेपर भी मनुष्य सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है।'

कन्याकुमारी

छोटे नारायणसे कन्याकुमारी लगभग ५२ मील है। तिनेवलीसे कन्याकुमारी लगभग ६० मील है; किंतु तोताद्रि, लंबे नारायण आदि स्थानोंमें घूमते हुए आनेसे यह दूरी अधिक होती है। कन्याकुमारी एक अन्तरीप है। यह भारतकी अन्तिम दक्षिणी सीमा है। इसके एक ओर बंगालकी खाड़ी, दूसरी ओर अरबसागर तथा सम्मुख हिंद-महासागर है। इस अन्तरीपपर अच्छी सरकारी धर्मशाला है। यात्री उसमें तीन दिन रह सकते हैं। धर्मशालाकी ओरसे भोजन बनानेको बर्तन भी मिलते हैं।

कन्याकुमारीमें जहाँ अरबसागर, हिंदमहासागर तथा बंगालकी खाड़ीके तीनों समुद्रोंका संगम है, वह पवित्र तीर्थ है। वहाँ स्नानके लिये समुद्रमें एक सुरक्षित घेरा बना है। समुद्रपर वहाँ पक्का घाट है और महिलाओंके वस्त्र-परिवर्तनके लिये एक ओर कमरे भी बने हैं। घाटके ऊपर एक मण्डप है। यात्री यहाँ श्राद्धादि करते हैं।

चैत्र-पूर्णिमाको सायंकाल यदि बादल न हों तो इस स्थानसे एक साथ बंगालकी खाड़ीमें चन्द्रोदय तथा अरबसागरमें सूर्यास्तका अद्भुत दृश्य दीख पड़ता है। उसके दूसरे दिन प्रातःकाल बंगालकी खाड़ीमें सूर्योदय तथा अरबसागरमें चन्द्रास्तका दृश्य भी बहुत आकर्षक होता है। वैसे भी कन्याकुमारीमें सूर्योदय तथा सूर्यास्तका दृश्य बहुत भव्य होता है। बादल न होनेपर समुद्र-जलसे ऊपर उठते या समुद्र-जलसे पीछे जाते हुए सूर्यबिम्बका दर्शन बहुत आकर्षक लगता है। इस दृश्यको देखनेके लिये प्रतिदिन प्रातः-सायं समुद्र-तटपर भीड़ होती है।

यहाँ बंगालकी खाड़ीके समुद्रमें सावित्री, गायत्री, सरस्वती, कन्याविनायक आदि तीर्थ हैं। देवी-मन्दिरके दक्षिण मातृतीर्थ, पितृतीर्थ और भीमातीर्थ हैं। पश्चिममें थोड़ी दूरपर स्थाणुतीर्थ है। कहा जाता है, शुचीन्द्रम्‌में शिवलिङ्गपर चढ़ा जल भूमिके भीतरसे यहाँ आकर समुद्रमें मिलता है।

समुद्रतटपर जहाँ स्नानका घाट है, वहाँ एक छोटा-सा गणेशजीका मन्दिर घाटसे ऊपर दाहिनी ओर है। गणेशजीका दर्शन करके कुमारी-देवीका दर्शन करने लोग जाते हैं। मन्दिरमें द्वितीय प्राकारके भीतर 'इन्द्रकान्त विनायक' नामक गणपति-मन्दिर है। इन गणेशजीकी स्थापना देवराज इन्द्रने की थी।

कई द्वारोंके भीतर जानेपर कुमारीदेवीके दर्शन होते हैं। देवीकी यह मूर्ति प्रभावोत्पादक तथा भव्य है। देवीके एक हाथमें माला है। विशेषोत्सवोंपर देवीका हीरकादि रत्नोंसे शृङ्गार होता है। रात्रिमें भी देवीका विशेष शृङ्गार होता है।

निजमन्दिरके उत्तर अग्रहारके बीचमें भद्रकालीका मन्दिर है। ये कुमारीदेवीकी सखी मानी जाती हैं। वस्तुतः यह ५१ पीठोंमेंसे एक शक्तिपीठ है। यहाँ सती-देहका पृष्ठभाग गिरा था।

मन्दिरमें और भी अनेक देव-विग्रह हैं। मन्दिरसे उत्तर थोड़ी दूरपर 'पापविनाशनम्' पुष्करिणी है। यह समुद्रके तटपर ही एक बावली है, जिसका जल मीठा है। यात्री इसके जलसे भी स्नान करते हैं। इसे 'मण्डूकतीर्थ' भी कहते हैं।

यहाँ समुद्रतटपर लाल तथा काली बारीक रेत मिलती है और श्वेत मोटी रेत भी मिलती है, जिसके दाने चावलोंके समान लगते हैं। समुद्रमें शङ्ख, सीपी आदि भी मिलते हैं।

कथा—बाणासुरने तपस्या करके भगवान् शङ्करको प्रसन्न किया और उनसे अमरत्वका वरदान माँगा। शङ्करजीने उसे बताया—'कुमारीकन्याके अतिरिक्त तुम सबसे अजेय रहोगे।' यह वरदान पाकर बाणासुर त्रिलोकीमें उत्पात करने लगा। उसके उत्पादसे पीड़ित देवता भगवान् विष्णुकी शरणमें गये। भगवान्‌ने उन्हें यज्ञ करनेका आदेश दिया। देवताओंके यज्ञ करनेपर यज्ञकुण्डकी चिद् (ज्ञानमय) अग्निसे दुर्गाजी अपने एक अंशसे कन्यारूपमें प्रकट हुईं।

कुमारी-अन्तरीप तथा उसके आस-पास

श्रीकुमारीदेवी-मन्दिर, कन्याकुमारी

स्नान-घाट, कन्याकुमारी

शुचीन्द्रम्-मन्दिर तथा सरोवर

कुमारीदेवी-मन्दिरका प्रवेश-द्वार

समुद्रपर सूर्योदयकी छटा, कन्याकुमारी

समुद्रपर सूर्यास्तकी छटा, कन्याकुमारी

समुद्रके बीच विवेकानन्द-शिला, कन्याकुमारी

दक्षिण-भारतके कुछ मन्दिर—२०

पद्मनाभस्वामी-मन्दिर, त्रिवेन्द्रम्

श्रीआदिकेशव-मन्दिर, तिरुवट्टार

पाण्डव-मूर्तियाँ, त्रिवेन्द्रम्

भगवान् पूर्णत्रयीश, तृप्पुणित्तुरै
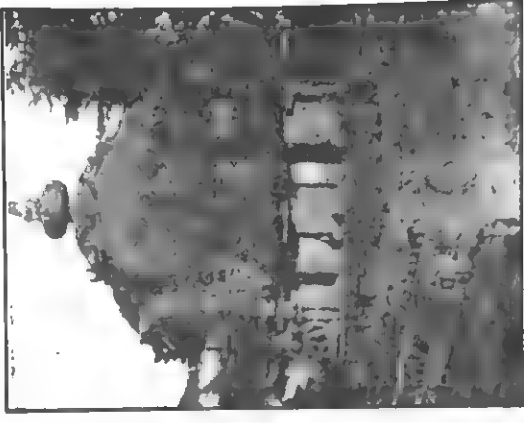
नागरकोइलके समीपवर्ती
मन्दिरका गुम्बज
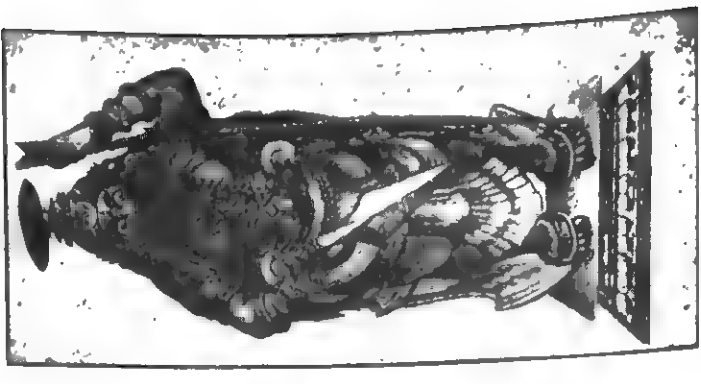
किरात-वेषमें भगवान् शिव, तृप्पुणित्तुरै

देवी प्रकट होनेके पश्चात् भगवान् शङ्करको पतिरूपमें पानेके लिये दक्षिण-समुद्रके तटपर तपस्या करने लगीं। उनकी तपस्यासे सन्तुष्ट होकर शङ्करजीने उनका पाणिग्रहण करना स्वीकार कर लिया। देवताओंको चिन्ता हुई कि यह विवाह हो गया तो बाणासुर मरेगा नहीं। देवताओंकी प्रार्थनापर देवर्षि नारदने विवाहके लिये आते हुए भगवान् शङ्करको 'शुचीन्द्रम्' स्थानमें इतनी देर रोक लिया कि सबेरा हो गया। विवाह-मुहूर्त टल जानेसे भगवान् शङ्कर यहीं स्थाणुरूपमें स्थित हो गये। विवाहके लिये प्रस्तुत अक्षतादि समुद्रमें विसर्जित हो गये। कहते हैं वे ही तिल, अक्षत, रोली अब रेतके रूपमें मिलते हैं। देवी फिर तपस्यामें लग गयीं। यह विवाह अब कलियुग बीत जानेपर सम्पन्न होगा।

बाणासुरने देवीके सौन्दर्यकी प्रशंसा अपने अनुचरोंसे सुनी। वह देवीके पास आया और उनसे विवाह करनेका हठ करने लगा। इस कारण देवीसे उसका युद्ध हुआ। युद्धमें देवीने बाणासुरको मारा।

यहाँके अन्य मन्दिर

समुद्र-तटपर गणपति-मन्दिरका वर्णन पहले कर चुके हैं। एक और गणपति-मन्दिर नगरमें है। ग्राममें दो शिव-मन्दिर हैं और ग्रामसे कुछ उत्तर काशी-विश्वनाथ-मन्दिर है। वहीं चक्र-तीर्थ है।

विशेषोत्सव—आश्विन-नवरात्रमें यहाँ विशेषोत्सव होता है। उसके अतिरिक्त चैत्र-पूर्णिमा, आषाढ़-अमावस्या आश्विन-अमावस्या, शिवरात्रि आदि पर्वोंपर भी विशेषोत्सव होते हैं।

यात्री निश्चित शुल्क देकर अपनी ओरसे देवीकी विभिन्न प्रकारकी अर्चा-पूजा भी करा सकते हैं।

विवेकानन्द-शिला—समुद्रमें जहाँ घाटपर स्नान किया जाता है, वहाँसे आगे बायीं ओर समुद्रमें दूर, जो अन्तिम चट्टान दीख पड़ती है, उसका नाम 'श्रीपादशिला' है। स्वामी विवेकानन्द जब कन्याकुमारी आये, तब समुद्रमें तैरकर उस शिलातक पहुँच गये। (साधारण यात्री इतनी दूर यहाँ वेगवान् समुद्रमें तैरनेका साहस नहीं कर सकता।) उस शिलापर तीन दिन निर्जल व्रत करके वे बैठे आत्मचिन्तन करते रहे। फिर नौकासे उन्हें लाया गया। तभीसे उस शिलाका नाम विवेकानन्द-शिला हो गया है।

कन्याकुमारी ग्राममें विवेकानन्दजीके नामपर एक सार्वजनिक पुस्तकालय तथा वाचनालय है, जिसमें धार्मिक पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है।

शुचीन्द्रम्

यात्रीके लिये सुविधाजनक यही होता है कि वह तिन्नेवलीसे कन्याकुमारी जाकर फिर वहाँसे मोटर-बसद्वारा त्रिवेन्द्रम् जाय अथवा त्रिवेन्द्रम्से कन्याकुमारी आकर फिर तिन्नेवली जाय। इस प्रकार दोनों ओरके मार्गोंमें आनेवाले तीर्थोंकी यात्रा हो जाती है। कन्याकुमारीसे त्रिवेन्द्रम्के सीधे मार्गमें तो केवल शुचीन्द्रम् और नागर-कोइल ही आते हैं। दूसरे तीर्थ मार्गसे अलग हैं; किंतु उनमें एकसे दूसरे तीर्थको बसें जाती हैं।

कन्याकुमारीसे शुचीन्द्रम् ८ मील है। इस स्थानको 'ज्ञानवनक्षेत्रम्' कहते हैं। गौतमके शापसे इन्द्रको यहीं मुक्ति मिली। यहाँ इन्द्र उस शापसे पवित्र हुए, इसलिये इस स्थानका नाम शुचीन्द्रम् पड़ा।

यहाँ भगवान् शङ्करका विशाल मन्दिर है। मन्दिरके समीप ही सुविस्तृत सरोवर है। इस सरोवरको 'प्रज्ञाकुण्ड' कहते हैं। शुचीन्द्रम्-मन्दिरमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश—इन तीनोंके अलग-अलग मन्दिर हैं।

गोपुरके भीतर भगवान् शङ्कर तथा भगवान् विष्णुके मन्दिर समान विशाल हैं। इनमें कोई मुख्य या गौण नहीं है। शिव-मन्दिरमें शिवलिङ्ग स्थापित है। इन्हें यहाँ (स्थाणु) कहते हैं। इस शिवलिङ्गके ऊपर मुखाकृति बनी है। मन्दिरके सामने नन्दीकी मूर्ति है। विष्णु-मन्दिरमें श्रीदेवी तथा भूदेवीके साथ भगवान् विष्णुकी मनोहर चतुर्भुज मूर्ति है। इस मन्दिरके सामने गरुड़जीकी उच्चाकृति मूर्ति है।

इस मन्दिरमें श्रीहनुमान्जीकी बहुत बड़ी मूर्ति एक स्थानपर है। इतनी बड़ी हनुमान्जीकी मूर्ति कदाचित् अन्यत्र नहीं है। इनके अतिरिक्त शिव-मन्दिरमें पार्वती, नटराज, सुब्रह्मण्य तथा गणेशकी और विष्णु-मन्दिरमें लक्ष्मीजी एवं भगवान् विष्णुकी चल प्रतिमाएँ हैं। भगवान् ब्रह्माका भी यहाँ पृथक् मन्दिर मन्दिरके घेरेमें ही है और वह भी प्रमुख मन्दिर है। तीनों ही मन्दिरोंकी परिक्रमामें अनेक देवताओंकी मूर्तियाँ हैं।

नागर-कोइल

शुचीन्द्रम्से नागर-कोइल ३ मील है। यह बड़ा नगर है। त्रिवेन्द्रम्, तिन्नेवली तथा आस-पासके अन्य स्थानोंको यहाँसे बसें जाती हैं। इस नगरमें शेषनाग तथा नागेश्वर महादेवके मन्दिर हैं।

आदिकेशव (तिरुवट्टार)

नागर-कोइलसे तिरुवट्टारको बस जाती है। कुछ यात्री त्रिवेन्द्रम् जाकर तब यहाँ आते हैं। त्रिवेन्द्रम्से तिरुवट्टार १२ मील पूर्व है। यह अच्छा बाजार है। यहाँ ताम्रपर्णी नदीके किनारे आदिकेशवका मन्दिर है। यहाँ धर्मशाला है। नागर-कोइलसे यह स्थान लगभग २० मील है।

आदिकेशव-मन्दिरमें भगवान् नारायणकी शेषशय्यापर लेटी भव्य मूर्ति है। यह मूर्ति १६ फुट लंबी है। एक द्वारमेंसे भगवान्के श्रीमुख, दूसरेमेंसे वक्षःस्थल तथा तीसरेमेंसे चरणोंके दर्शन होते हैं। शेषशय्याके नीचे एक राक्षस दबा है।

कहते हैं एक बार जब ब्रह्माजी तपस्या कर रहे थे, एक राक्षसने आकर उनसे भोजन माँगा। ब्रह्माजीने राक्षसको कदलीवनमें जानेका आदेश दिया। राक्षस कदलीवनमें आकर ऋषियोंको कष्ट देने लगा। ऋषियोंकी प्रार्थनापर भगवान् विष्णुने राक्षसको मारा। मरते समय राक्षसने वरदान माँगा कि 'आप मेरे शरीरपर स्थित हों।' भगवान्ने भी उसे वरदान दे दिया। इसीसे राक्षसके शरीरपर शेषजीको स्थित करके भगवान् नारायण स्वयं शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं।

पपनावरम्

नागर-कोइलसे आदिकेशव जाते समय मार्गमें पपनावरम् बस्ती पड़ती है। यहाँ एक बड़े घेरेके भीतर नीलकण्ठ शिवमन्दिर है। मन्दिर प्राचीन है, किंतु जीर्ण दशामें है। केरलके यात्री प्रायः इस तीर्थका दर्शन करने आते हैं।

नियाटेकरा

तिरुवट्टार (आदिकेशव) से १८ मीलपर ताम्रपर्णीके किनारे यह स्थान है। त्रिवेन्द्रम्से आदिकेशव आना हो तो पहले निपाटेकरा होकर आदिकेशव आते हैं। यहाँ ताम्रपर्णी नदीके किनारे श्रीकृष्णका भव्य मन्दिर है। मन्दिरमें श्रीकृष्णचन्द्रकी बड़ी सुन्दर प्रतिमा है।

कुमार-कोइल

यह सुब्रह्मण्य-क्षेत्र है। नागर-कोइलसे कुमार-कोइल होकर तब आदिकेशव जाया जाय या आदिकेशव होकर तब कुमार-कोइल आया जाय—दोनों मार्ग लगभग एक-से हैं। कोई अधिक चक्कर नहीं पड़ता। यहाँ एक बड़े घेरेके भीतर कुछ थोड़ी ऊँचाईपर स्वामिकार्तिकका मन्दिर है। मन्दिरके समीप ही सरोवर है।

त्रिवेन्द्रम्

इस नगरका शुद्ध नाम 'तिरुअनन्तपुरम्' है। पुराणोंमें इस स्थानका 'अनन्तवनम्'के नामसे उल्लेख मिलता है। यह प्राचीन त्रावणकोर राज्यकी तथा वर्तमान त्रावणकोर-कोचिन प्रदेशकी राजधानी है। नागर-कोइलसे यह नगर ४० मील (कन्याकुमारीसे ५१ मील) है। यह बहुत बड़ा नगर है। यहाँ 'राजसत्रम्' नामक राजाकी

चोल्ट्री तथा मन्दिरसे थोड़ी दूरपर मूलजी जेठाकी गुजराती धर्मशाला है।

स्टेशनसे लगभग आधे मीलपर नगरके मध्यमें यहाँके नरेशका किला है। किलेके सामने ही मोटर-बसोंका मुख्य केन्द्र है। किलेके द्वारमें प्रवेश करनेपर दाहिनी ओर सुविस्तृत सरोवर है, जिसमें यात्री स्नान करते हैं।

किलेके भीतर ही पद्मनाभभगवान्‌का मन्दिर है। इन्हें अनन्त-शयन भी कहते हैं। दूसरे गोपुरसे भीतर जानेपर बहुत बड़ा प्राङ्गण मिलता है। इसमें चारों किनारोंपर मण्डप बने हैं और बीचमें पद्मनाभ-भगवान्‌का मन्दिर है। भगवान्‌का निजमन्दिर भी बहुत बड़ा है। यह काले कसौटीके पत्थरका बना है।

निजमन्दिरमें शेषशय्यापर शयन किये भगवान् पद्मनाभकी विशाल मूर्ति है। यह मूर्ति इतनी विशाल है कि ऐसी बड़ी शेषशायीमूर्ति और कहीं नहीं है। भगवान्‌की नाभिसे निकले कमलपर ब्रह्माजी विराजमान हैं। भगवान्‌का दाहिना हाथ शिवलिङ्गके ऊपर स्थित है। इस मूर्तिके श्रीमुखका दर्शन एक द्वारसे, वक्षःस्थल तथा नाभिके दर्शन मध्यद्वारसे और चरणोंके दर्शन तीसरे द्वारसे होते हैं।

श्रीपद्मनाभभगवान्‌का दर्शन करके निजमन्दिरसे बाहर आकर पूरे मन्दिरकी प्रदक्षिणा की जाती है। मन्दिरके पूर्व-भागमें स्वर्णमण्डित गरुड़स्तम्भ है। उससे आगे एक बड़ा मण्डप है। पास ही एक कमरेमें अनेकों सुन्दर मूर्तियाँ हैं। मन्दिरके बाहर दक्षिण भागमें शास्ता (हरिहरपुत्र) का छोटा मन्दिर है। मन्दिरके पश्चिम भागमें श्रीकृष्ण-मन्दिर है। मन्दिरके दक्षिण-द्वारके पास एक शिशु-मूर्ति है। यहाँ उत्सव-विग्रहके साथ श्रीदेवी, भूदेवी और नीलादेवी भगवान्‌की इन तीन शक्तियोंकी मूर्तियाँ रहती हैं।

कथा—इस क्षेत्रका माहात्म्य ब्रह्माण्डपुराण, महाभारत तथा अन्य पुराणोंमें भी है। प्राचीन कालमें दिवाकर नामक एक विष्णुभक्त भगवान्‌के दर्शनके लिये तपस्या कर रहे थे। भगवान् विष्णु उनके यहाँ एक मनोहर बालकके रूपमें पधारे और कुछ दिन उनके यहाँ रहे। एक दिन अचानक भगवान् यह कहकर अन्तर्धान हो गये कि 'मुझे देखना हो तो 'अनन्तवनम्' आइये।'

श्रीदिवाकरजीको अब पता लगा कि बालकरूपमें उनके यहाँ साक्षात् भगवान् रहते थे। अब दिवाकरजी अनन्तवनम्‌की खोजमें चले। एक घने वनमें उन्हें शास्ता-मन्दिर और 'तिरुआयनपाडि' (श्रीकृष्ण-मन्दिर) मिला। ये दोनों मन्दिर आजकल पद्मनाभ-मन्दिरकी परिक्रमामें हैं। वहीं एक 'कनकवृक्ष' के कोटरमें प्रवेश करते एक बालकको दिवाकर मुनिने देखा। दौड़कर वे उस वृक्षके पास पहुँचे, किंतु उसी समय वृक्ष गिर पड़ा। वह गिरा हुआ वृक्ष अनन्तशायी नारायणके विराट्‌रूपमें मुनिको दीखा। वह नारायण-विग्रह ६ कोस लंबा था। आज त्रिवेन्द्रम्‌से ३ मीलपर भगवान्‌के मुख तथा दूसरी ओर ९ मीलपर चरणके दर्शन होते हैं। ये दर्शन उस विराट्‌रूपके चरण तथा मुखके स्थानोंपर स्मारकरूपमें हैं। वर्तमान पद्मनाभ-मन्दिर उस श्रीविग्रहके नाभि-स्थानपर है।

पीछे दिवाकर मुनिने एक मन्दिर बनवाया और उसमें उसी गिरे हुए वृक्षकी लकड़ीसे एक वैसी ही अनन्तशायी मूर्ति बनवाकर स्थापित की, जैसी मूर्तिके उन्हें वृक्षमें दर्शन हुए थे। कालान्तरमें वह मन्दिर तथा काष्ठमूर्ति भी जीर्ण हो गयी। उसके पुनरुद्धारकी आवश्यकता हुई। सन् १०४९ ई०में वर्तमान विशाल मन्दिर और एक ही पत्थरका मण्डप बना।

उसी समय शास्त्रीय विधिके अनुसार बारह हजार शालग्राम-खण्ड भीतर रखकर 'कटुशर्करयोग' नामक मिश्रणविशेषसे भगवान् पद्मनाभका वर्तमान श्रीविग्रह निर्मित हुआ। मन्दिरके दक्षिण द्वारके पास जो शिशुमूर्ति है, वह बड़ी मूर्तिके निर्माणके पश्चात् बचे हुए पदार्थोंसे निर्मित हुई। यह विवरण एक पत्थरवाले मण्डपके एक शिलालेखमें उत्कीर्ण है।

वाराह-मन्दिर—पद्मनाभ-मन्दिरसे आध मील दूर किलेके पीछेके मार्गपर भगवान् वाराहका मन्दिर है। मन्दिरके पास बहुत बड़ा सरोवर है। यह मन्दिर अपने पूरे आँगनके साथ भूमिके स्तरसे कुछ नीचे स्थानमें है। मन्दिरका घेरा पर्याप्त बड़ा है। उसके बीचमें भगवान् वराहका मन्दिर है। मन्दिर बड़ा नहीं है। मन्दिरके भीतर वराहभगवान्‌की बड़ी सुन्दर मूर्ति है।

इसके अतिरिक्त त्रिवेन्द्रम् नगरमें श्रीराम, सुब्रह्मण्यम्, शास्ता आदिके कई और मन्दिर हैं।

मत्स्यतीर्थ

त्रिवेन्द्रम्से ३ मीलपर तिरुत्तलम् गाँव है। पद्मनाभ-मन्दिरके सामनेसे ही तिरुत्तलम्को मोटर-बस जाती है। इस स्थानपर एक घेरेके भीतर छोटे-छोटे कई मन्दिर हैं। यहाँ मत्स्यतीर्थ नामक सरोवर है। घेरेके भीतर एक मन्दिरमें भगवान्के मुखारविन्दके दर्शन हैं। अन्य मन्दिरोंमें मत्स्यावतार, ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा परशुरामजीकी मूर्तियाँ हैं। कहा जाता है कि यहाँ परशुरामजीने श्राद्ध किया था।

कोळत्तूर

त्रिवेन्द्रम्से तिरुत्तलम्की विपरीत दिशामें ९ मीलपर कोलतूल गाँव है। पद्मनाभ-मन्दिरसे यहाँके लिये भी बसें जाती हैं। यहाँ धर्माधर्मकुण्ड नामक तीर्थ है। यहाँ एक छोटे-से मन्दिरमें भगवान्के श्रीचरणोंके दर्शन हैं।

जनार्दन

विरुधुनगर-तेन्काशी-त्रिवेन्द्रम् लाइनपर त्रिवेन्द्रम्से २६ मील दूर वरकला स्टेशन है। स्टेशनसे दो मीलपर जनार्दन बस्ती है। स्टेशनसे ताँगे जाते हैं। मन्दिरके पास ही मूलजी जेठाकी गुजराती धर्मशाला है। जनार्दनमें धूपकी खदान है। यहाँ धूप निकलती है। यहाँसे लोग धूप ले जाते हैं। कहते हैं यहाँकी धूप जलानेसे बच्चोंके दृष्टिदोष (नजर आदि) से उत्पन्न रोग दूर हो जाते हैं।

मन्दिरसे थोड़ी दूरपर समुद्र है। यहाँ लहरोंका वेग बहुत अधिक रहता है। पाससे ही बहकर आती एक छोटी नदी (नाला) समुद्रमें मिलती है। इस सङ्गमपर समुद्रमें तथा समुद्रके पास तटके कगारके गिरते झरनोंमें यात्री स्नान करते हैं। जहाँ छोटा नाला समुद्रमें मिला है, वहाँसे लगभग एक फलांग समुद्रके किनारे दाहिनी ओर जानेपर कगारपरसे थोड़ी-थोड़ी दूरीपर पाँच मीठे पानीके झरने गिरते हैं। इनको पापमोचन, ऋणमोचन, सावित्री, गायत्री और सरस्वती तीर्थ कहा जाता है। समुद्रस्नानके पश्चात् इनमें यात्री स्नान करते हैं।

समुद्रस्नान करके लौटनेपर ग्राममें पहले जनार्दन-मन्दिर मिलता है। मन्दिर ऊँचाईपर है। वहाँ नीचे सड़कके एक ओर सरोवर है और सीढ़ियोंके पास चक्रतीर्थ नामक कुण्ड है। सरोवरमें भी लोग स्नान करते हैं तथा चक्रतीर्थमें मार्जन करते हैं।

सीढ़ियोंके ऊपर जानेपर भगवान् जनार्दनका मन्दिर मिलता है। मन्दिरका घेरा बड़ा है। घेरेके मध्यमें मन्दिरमें भगवान् जनार्दनकी चतुर्भुज श्यामवर्ण सुन्दर मूर्ति है। इस मन्दिरकी परिक्रमामें शास्ता, शङ्करजी तथा वटवृक्षके दर्शन हैं।

इस मन्दिरसे नीचे उतरनेपर सरोवरके पास दाहिनी ओर (धर्मशालाके सामने) शास्ताका पृथक् मन्दिर है।

जनार्दन बाजारसे लगभग दो फर्लांगपर श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है।

कथा—सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी पश्चिम-समुद्रके तटपर यहाँ यज्ञ कर रहे थे। उस यज्ञमें स्वयं श्रीजनार्दन एक साधुके वेशमें पधारे और उन्होंने भोजन चाहा। ब्रह्माजीने उन्हें भोजन देना प्रारम्भ किया। साधुने भोजन अञ्जलिमें लेकर खाना प्रारम्भ किया। सब भोजनसामग्री समाप्त हो गयी; किंतु अद्‌भुत अतिथि तृप्त नहीं हुआ।

अब ब्रह्माजी सावधान हुए। वे अतिथिके चरणोंपर गिर पड़े। भगवान् अपने चतुर्भुजरूपमें प्रकट हो गये। ब्रह्माजीने प्रार्थना की—'आप मेरे इस यज्ञस्थलपर इसी रूपमें स्थित रहें।' ब्रह्माकी प्रार्थना भगवान्ने स्वीकार कर ली। वे श्रीविग्रहरूपसे वहाँ स्थित हुए।

ब्रह्माजीने जहाँ यज्ञ किया था, उसी स्थानसे जनार्दन-धूप निकलती है।

त्रिपुणित्तुरै

अर्नाकुलम्-साउथसे कोट्टयम् जानेवाली दक्षिण-रेलवेकी छोटी लाइनपर अर्नाकुलम्-साउथ जंकशनसे छः मील दूर त्रिपुणित्तुरै स्टेशन है। अर्नाकुलम् प्राचीन कोचिन राज्यकी राजधानी रहा है और त्रिपुणित्तुरैमें वहाँके नरेशोंके प्रासाद हैं। इसका प्राचीन संस्कृतनाम पूर्णत्रयी है। यहाँ शेषारूढ़ भगवान् विष्णु तथा किरातरूपमें प्रकट भगवान् शंकरके मन्दिर हैं। नीचे उद्धृत किये गये श्लोकोंमें उक्त दोनों विग्रहोंकी बड़ी सुन्दर झाँकी है।

धाराधरश्यामलाङ्गं छुरिकाचापधारिणम्।
किरातवपुषं वन्दे परमात्मानमीश्वरम्॥

'बादलके समान श्याम अङ्ग-कान्तिवाले, छुरिकाचापसे सुसज्जित किरात विग्रहधारी परमात्मा भगवान् शंकरकी मैं वन्दना करता हूँ।'

सव्यां संसारयादस्पतितरणितरिं पादयष्टिं प्रसार्य व्याकुञ्च्यान्यां च पाणिं निदधदहिपतौ वाममन्यं च जानौ।
पश्चादाभ्यां दधानो दरमरिदमनं चक्रमुद्यद्विभूषः श्रीमान् पीताम्बरोऽस्मान्नमदमरतरुः पातु पूर्णत्रयीशः॥

'जिन्होंने संसारसिन्धुको पार करनेके लिये नौका-तुल्य अपने वामपदको फैला रखा है तथा जो दाहिने पदकमलको मोड़े हुए हैं, जिनका दाहिना हाथ शेषनागपर तथा बायाँ अपने घुटनेपर है, जिन्होंने अपने शेष दोनों निचले हाथोंमें शङ्ख तथा शत्रुदमन चक्र धारण कर रखा है, वे श्रीमान् पीताम्बरधारी, भक्तकल्पतरु, पूर्णत्रयीश हमारी रक्षा करें।'

पश्चिम-भारतकी यात्रा

पश्चिम-भारतमें बंबई, गुजरात, काठियावाड़ और कच्छप्रदेश लिये गये हैं। इस खण्डके कुछ थोड़े भागोंमें मराठी बोली जाती है, शेष प्रायः पूरे भागकी भाषा गुजराती है। यद्यपि गुजरातीकी अपनी लिपि है, फिर भी वह देवनागरी लिपिसे बहुत मिलती-जुलती है। हिंदी इस पूरे भागमें समझ ली जाती है और जिसे हिंदी-भाषाभाषी समझ सके ऐसी हिंदी प्रायः सामान्य व्यक्ति भी बोल लेते हैं, भले वह शुद्ध हिंदी न कही जा सके। इस पूरे भागकी यात्रामें भाषा जाननेवालेके लिये कोई कठिनाई नहीं है।

इस भागमें समुद्रतटके स्थान तो समशीतोष्ण रहते हैं; किंतु शेष स्थानोंमें शीतलकालमें ठंड और ग्रीष्ममें अच्छी गर्मी पड़ती है। इसलिये शीतलकालमें यात्रा करना हो तो पर्याप्त पहनने, ओढ़ने, बिछानेके गरम कपड़े तथा कम्बल आदि साथ रखना चाहिये।

इस भागमें अनेक स्थानोंमें जलका कष्ट रहता है, विशेषतः कच्छमें। कच्छके तीर्थोंकी यात्रा गर्मियोंमें बहुत कष्टप्रद होती है। वहाँकी यात्राके उपयुक्त समय वर्षाका पिछला भाग तथा शीतकाल है। गुजरात-सौराष्ट्रमें भी यात्रामें जल साथ रहना चाहिये।

इस पूरे भागमें जहाँ बाजार हैं, वहाँ भोजनका सब सामान मिलता है। दूध-फल आदि भी मिलते हैं। प्रायः सभी तीर्थोंमें धर्मशाला है। इस भागमें जो धर्मशालाएँ हैं, उनमें यात्रीको भोजन बनानेके बर्तन मिलते हैं और वह चाहे तो बिछानेको गद्दे तथा ओढ़नेको रूईभरी रजाइयाँ भी मिल जाती हैं। इनके लिये धर्मशालाको बहुत थोड़े पैसे देने पड़ते हैं।

प्रायः सभी तीर्थोंमें पंडे मिलते हैं। यात्री पंडोंके घर भी भोजन कर सकते हैं। इधरके अनेक तीर्थोंमें पंडे या दूसरे ब्राह्मण यात्रीको अपने घर एक सम्मान्य अतिथिके समान पवित्रता, स्वच्छता तथा आदरसे भोजन करा देते हैं। उसके लिये यात्रीको सामान्य मूल्य देना पड़ता है। इस प्रकारकी सुविधा भारतके दूसरे मार्गोंकी यात्रामें मिलना कठिन है।

केवल यही भाग ऐसा है, जहाँ अनेक स्टेशनोंपर स्त्रियाँ भी कुलियोंका काम करती देखी जाती हैं।

गुजरातके लोग स्वभावसे भावुक, मिलनसार और मृदुप्रकृतिके होते हैं। यात्री तथा अतिथिके सम्मानकी भावना उनमें प्रचुर है। यात्री यदि अपनी मर्यादाका ध्यान रखकर व्यवहार करे तो इस पूरे भागमें उसे प्रायः सब कहीं सुविधा-सहायता मिल सकती है।

पश्चिम भारत

(रेलवे-मार्ग)

भारतका यह क्षेत्र विधर्मी—विदेशी आक्रमणसे बार-बार आक्रान्त हुआ है। समुद्रतटवर्ती भागोंमें तो जलदस्युओंके आक्रमण बहुत प्राचीन कालसे होते रहे हैं। फलतः बहुत विशाल एवं बहुत प्राचीन मन्दिर पानेकी आशा इस भागमें कम ही करना चाहिये; परन्तु जो मन्दिर हैं, कलापूर्ण, सुरुचिपूर्वक बने, सजे, स्वच्छ मिलते हैं। जैनधर्मका इधर सबसे अधिक प्राधान्य रहा, अतः जैन-तीर्थ इधर अधिक हैं और इस भागके जैन-मन्दिर अत्यन्त सुन्दर, विशाल तथा अपने कला-सौष्ठवके लिये विश्वमें ख्यात हैं। आबू, गिरनार तथा शत्रुञ्जय—ये तीन पवित्रतम पर्वतीय जैन-तीर्थ इसी भागमें है।

आबू, आरासुर, सिद्धपुर, बड़नगर, द्वारका, बेटद्वारका, पोरबंदर, प्रभास, जूनागढ़, आशापूरी, डाकोर, सुरपाणेश्वर, चणोद, सूरत एवं भरुच—ये इस भागके प्रधान तीर्थ हैं।

सिरोही

दिल्ली-अहमदाबाद लाइनपर, मरवाड़ जंकशनसे ७५ मील आगे सिरोही स्टेशन है। सिरोही एक अच्छा नगर है। यहाँ शरणेश्वर महादेवका उत्तम मन्दिर है। यह शरणेश्वर-मूर्ति सिद्धपुरके रुद्रमहालयसे लायी गयी थी। यह रुद्रमहालयकी रुद्धेश्वर-मूर्ति ही है।

आबू

अर्बुदाचल-माहात्म्य

ततो गच्छेत धर्मज्ञ हिमवत्सुतमर्बुदम्।
पृथिव्यां यत्र वै छिद्रं पूर्वमासीद् युधिष्ठिर॥
तत्राश्रमो वसिष्ठस्य त्रिषु लोकेषु विश्रुतः।
तत्रोष्य रजनीमेकां गोसहस्रफलं लभेत्॥

(महा०वन० तीर्थयात्रा० ८२। ५५-५६; पद्मपुराण आदि० २४। ३-४)

'धर्मज्ञ युधिष्ठिर! तदनन्तर हिमालय पर्वतके पुत्र अर्बुदाचल (आबू) पर्वतपर जाय, जहाँ पहले पृथ्वीमें (पाताल जानेके लिये) एक छिद्र (सुरंग) था। वहाँका महर्षि वसिष्ठका आश्रम तीनों लोकोंमें विख्यात है। वहाँ यदि मनुष्य एक रात भी निवास कर लेता है तो उसे हजार गो-दान करनेका पुण्य प्राप्त होता है।'

आबू

पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर आबूरोड प्रसिद्ध स्टेशन है। स्टेशनसे आबू पर्वत १७ मील दूर है। पक्की सड़क है। मोटर-बस चलती है।

आबू शिखर १४ मील लंबा और दोसे चार मील चौड़ा है। कहा जाता है यह अर्बुद गिरि हिमालयका पुत्र है। महर्षि वसिष्ठका यहाँ आश्रम था। मथुरासे द्वारका जाते समय भगवान् श्रीकृष्ण यहाँ पधारे थे।

आबू पर्वतपर जानेका दो मार्ग हैं—एक नया मार्ग और दूसरा पुराना। पुराने मार्गमें मानपुरसे आगे हृषीकेशका मन्दिर मिलता है। कहते हैं वहाँ श्रीकृष्णचन्द्रने रात्रि-विश्राम किया था। इस स्थानको द्वारकाका द्वार कहते हैं। यहाँ मन्दिरके पास दो कुण्ड हैं और आस-पास प्राचीन चन्द्रावती नगरके खण्डहर हैं। इस स्थानसे आगे महाराज अम्बरीषका आश्रम मिलता है। अम्बरीषने यहाँ तपस्या की थी। उससे कुछ आगे एक पत्थरपर बहुत-से मनुष्य एवं पशुओंके पदचिह्न हैं। इस स्थानसे लौटकर फिर नवीन मार्गसे आबू पर्वतपर जाना पड़ता है। चार मील आगे जानेपर पर्वतकी चढ़ाई प्रारम्भ होती है।

आबूके मार्गमें धर्मशाला है। वहाँसे कुछ आगे मणिकर्णिका तीर्थ तथा सूर्यकुण्ड हैं। यहाँ यात्री स्नान करते हैं। पास ही कर्णेश्वर शिव-मन्दिर है।

वसिष्ठाश्रम—तीन मील और आगे जाकर लगभग ७५० सीढ़ी नीचे उतरनेपर एक कुण्ड मिलता है। कुण्डमें गोमुखसे जल गिरता रहता है। यहाँ मन्दिरमें महर्षि वसिष्ठ तथा अरुन्धतीजीकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ वसिष्ठजीने तप किया था।

गौतमाश्रम—वसिष्ठाश्रमके सामने ३०० सीढ़ी नीचे नागकुण्ड है। यहाँ नागपञ्चमीको मेला लगता है। यहाँ महर्षि वसिष्ठकी ध्यानस्थ मूर्ति है। पास ही बछड़ेके साथ कामधेनु गौ तथा अर्बुदा देवीकी मूर्तियाँ है। कहा जाता है यहाँ महर्षि गौतमका आश्रम था। यहाँपर अब

मन्दिर है, जिसमें महर्षि गौतमकी मूर्ति है। कहते हैं इसी नागकुण्डके मार्गसे उत्तङ्कमुनि तक्षकका पीछा करते पातालतक गये थे; क्योंकि गुरुपत्नीको गुरुदक्षिणारूपमें देनेके लिये वे राजा सौदासकी रानीके जो कुण्डल माँग लाये थे, उन्हें चुराकर तक्षक नागलोक चला गया था। पीछे महर्षि वसिष्ठने इस कुण्डको भरवा दिया। यहाँतक आनेका मार्ग विकट है। थोड़े ही यात्री यहाँतक आते हैं।

देलवाड़ा जैन-मन्दिर—गोमुखसे लौटकर फिर नीचे उतरना पड़ता है। आबूके सिविल स्टेशनसे एक मील उत्तर पहाड़पर देलवाड़ामें पाँच जैन-मन्दिर हैं। ये मन्दिर अपनी उत्कृष्ट कारीगरीके लिये प्रख्यात हैं। यहाँ धर्मशालाएँ हैं।

यहाँ मध्यमें चौमुख मन्दिर है। उसमें आदिनाथ भगवान्‌की चतुर्मुख मूर्ति है। यह मन्दिर तीन-मंजिला है। इससे उत्तर आदिनाथका एक मन्दिर और है। पश्चिममें विमलशाहका बनवाया मन्दिर है। उसके पास वस्तुपाल एवं तेजपालका बनवाया मन्दिर है, जिसमें नेमिनाथजीकी मूर्ति है। विमलशाहके मन्दिरमें पार्श्वनाथकी मूर्ति है। उसका रत्नोंसे शृङ्गार होता है।

यहाँ एक देवरानी-जेठानीका मन्दिर और ढूँढ़िया-का मन्दिर है। संगमरमरके ये मन्दिर इतनी बारीक कारीगरीसे युक्त हैं कि इन्हें देखने दूर-दूरके यात्री आते हैं।

यज्ञेश्वर-देलवाड़ाके पास ही तीन पुरानी मठियाँ हैं। उन्हें कुँवारी कन्याका मन्दिर कहते हैं। थोड़ी दूर आगे पङ्गुतीर्थ है। यहाँ एक ब्राह्मणने तप किया था। समीपमें एक बावली है। आगे अग्नितीर्थ है और उसके आगे पापकटेश्वर शिव-मन्दिर है। अग्नितीर्थके पास यज्ञेश्वर शिवका मन्दिर है। वहाँ समीप ही पिण्डारक तीर्थ है।

कनखल—देलवाड़ासे ४ मीलपर ओरिया गाँवमें कनखल तीर्थ है। यहाँ सुमति नामक राजाने अपार दान किया था। पास ही जैनोंका महावीर स्वामीका मन्दिर है। उसके पास ही चक्रेश्वर महादेवका मन्दिर और चक्रतीर्थ हैं। यहाँ आषाढ़ शुक्ल ११ को मेला लगता है।

नागतीर्थ—ओरियासे थोड़ी दूर जावई ग्राममें नागतीर्थ है। यहाँ एक छोटा सरोवर और बाणगङ्गा हैं। नागपञ्चमीको मेला लगता है।

गुरु दत्तका स्थान—ओरियासे गुरु दत्त (भगवान् दत्तात्रेय) के स्थानको जाते समय मार्गमें केदारकुण्ड मिलता है। यहाँ केदारेश्वर शिव-मन्दिर है। गुरु दत्तका स्थान एक शिखरपर है। मार्ग विकट है। शिखरपर गुरु दत्तके चरणचिह्न हैं और एक घण्टा बँधा है।

अचलेश्वर—ओरिया ग्रामसे लगभग १ मील दूर जैनोंका शान्तिनाथ-मन्दिर है। यह मन्दिर विशाल है। इसके सामने ही अचलेश्वर शिव-मन्दिर है। पञ्चधातुकी बनी विशाल स्वयम्भू मूर्ति है। मूर्तिके पादाङ्गुष्ठकी पूजा होती है। मन्दिरके पीछे मन्दाकिनीकुण्ड है। कुण्डके पास अर्जुन और महिषासुरकी मूर्तियाँ हैं। इसके थोड़ी दूरपर रेवतीकुण्ड है।

भृगु-आश्रम—रेवतीकुण्डसे लगभग १ मील दूर गोमतीकुण्ड है। इसे भृगु-आश्रम कहते हैं। यहाँ शङ्करजीका मन्दिर है। ब्रह्माजीकी मूर्ति है। इस स्थानसे लौटते समय गोपीचंदकी गुफा मिलती है।

जैन-मन्दिर, अचलगढ़—अचलेश्वरसे आगे अचलगढ़ है। यहाँ चारों ओर पर्वतका कोट है। प्रवेशद्वारके समीप हनुमान्‌जीकी मूर्ति है। भीतर कर्पूरसागर नामक सरोवर है। ऊपर चढ़नेपर दूसरे द्वारके पास जैन-धर्मशाला मिलती है।

अचलगढ़के श्वेताम्बर जैनोंके मन्दिर हैं। यहाँके चौमुखजीके मन्दिरकी मुख्य मूर्ति १२० मनकी है। यह मूर्ति पञ्चधातुकी है। दूसरा मन्दिर नेमिनाथजीका है। समीप ही दो कुण्ड हैं और आगे भर्तृहरि-गुफा है।

नखीतालाब—आबू बाजारके पीछे यह सरोवर है। कहते हैं इसे देवताओंने नखसे खोदा था। सरोवरके पास दुलेश्वर महादेव-मन्दिर है। श्रीराम-मन्दिर है। आस-पास चम्पागुफा, रामकुण्ड, कपिलातीर्थ और कपालेश्वर शिव-मन्दिर दर्शनीय स्थान हैं। नखीतालाब मध्यमें है। यहाँसे दक्षिण रामकुण्ड, उत्तर अचलगढ़, अर्बुदादेवी आदि हैं।

कृष्णतीर्थ—अनंदा होकर ४ मील जानेपर यह स्थान मिलता है। इसे आमपानी भी कहते हैं। यहाँ कोटिध्वज शिव-मन्दिर है। श्रावण-पूर्णिमाको मेला लगता है। यहाँका मार्ग घनी झाड़ीमेंसे है।

अर्बुदादेवी—आबूके एक शिखरपर पर्वतकी गुफामें यह मूर्ति है। देवीकी खड़ी मूर्ति ऐसी लगती है जैसे भूमिका स्पर्श न करती हो। गुफाके बाहर शिव-मन्दिर है।

रामकुण्ड—नखीतालाबके दक्षिण एक शिखर है। यहाँ रामकुण्ड सरोवर तथा मन्दिर हैं। पासमें रामगुफा है।

आस-पासके तीर्थ

आरासुर अम्बाजी—आबूसे लौटकर आबूरोड बाजार आ जाना चाहिये। इस बाजारका नाम खरेडी है। यहाँ रात्रि-विश्राम करके सबेरे आरासुरकी यात्रा होती है। खरेड़ीसे आरासुर ग्राम लगभग २४ मील है। घोड़े आदि किरायेपर मिलते हैं। आरासुर ग्राममें कई धर्मशालाएँ हैं।

आरासुर ग्राममें अम्बाजीका मन्दिर है। मन्दिर छोटा ही है, किंतु सम्मुखका सभामण्डप विशाल है। मन्दिरमें कोई मूर्ति नहीं है। एक आलेमें वस्त्रालङ्कारसे इस प्रकार शृङ्गार किया जाता है कि सिंहपर बैठी भवानीके दर्शन होते हैं। मन्दिरके पीछे थोड़ी दूरपर मानसरोवर नामक तालाब है।

यात्रीको ब्रह्मचर्यपूर्वक रहना पड़ता है। कहते हैं आरासुरमें ब्रह्मचर्यके नियमका भङ्ग करनेसे यहाँ अनिष्ट होता है।

कोटेश्वर—आरासुरसे लगभग तीन मीलपर कोटेश्वर महादेवका मन्दिर है। यहाँ पर्वतमें गोमुखसे सरस्वती नदी निकलकर कुण्डमें गिरती है। कुण्डसे धारा आगे जाती है।

कुम्भारियाके जैन-मन्दिर—कोटेश्वर आते समय मार्गमें एक मील पहले कुम्भारिया नामक छोटा ग्राम मिलता है। यहाँ विमलशाहके बनवाये पाँच जैन-मन्दिर हैं। इन मन्दिरोंकी कारीगरी भी उत्तम है।

गब्बर—आरासुरसे तीन मीलपर गब्बर पर्वत है। यह पर्वत बीचमें कटा हुआ है। आरासुर अम्बाजीका मूल स्थान इसी पर्वतपर माना जाता है। पर्वतपर यात्री चढ़ते हैं। चढ़ाई कठिन है।

पर्वतपर चढ़ते समय मार्गमें एक शिलामें बनी देवीकी मूर्ति मिलती है। पर्वतके शिखरपर भगवतीकी प्रतिमा है। पास ही पारस-मणि नामका पीपल है। इस पीपलको भी पवित्र माना जाता है।

पर्वतपर दर्शन करके संध्या होनेसे पहले उतर आना चाहिये; क्योंकि यहाँ आस-पास वन्य पशुओंका भय रहता है।

जीरापल्ली

आबूसे १० मील पश्चिम यह स्थान है। यहाँ पार्श्वनाथजीकी दो मूर्तियाँ मुख्य मन्दिरमें हैं। प्राचीन मूर्ति आततायियोंके आक्रमणके कारण कुछ भग्न हो गयी है; किंतु उसी मूर्तिके सम्मुख यहाँ लोग मुण्डन-संस्कार कराते हैं। यह मूर्ति पहले भूमिमें मिली थी और इसके सम्बन्धमें भी श्रीनाथजी आदिकी तरह गायके वनमें जाकर मूर्तिके स्थानपर स्तनोंसे दूध स्वत: गिरा आनेकी बात कही जाती है। दुर्घटनामें मूर्ति नौ टुकड़े हो गयी, जिन टुकड़ोंके संधि-स्थान मूर्तिमें दीखते हैं। मुख्य स्थानपर दूसरी पार्श्वनाथजीकी मूर्ति प्रतिष्ठित है।

धरणीधर

(लेखक—श्रीबद्रीनारायण रामनारायण दवे)

पश्चिम-रेलवेकी एक लाइन पालनपुरसे कंडला जाती है। इस लाइनके भाभर स्टेशनपर उतरनेसे धरणीधरके लिये मोटर-बस मिलती है। तीर्थमें चार-पाँच धर्मशालाएँ हैं। बनासकाँठा जिलेके ढीमा गाँवमें यह तीर्थ है। प्राचीन समयमें यह स्थान वाराहपुरी कहलाता था।

पहले यहाँ भगवान् वाराहकी विशाल मूर्ति थी। वह मूर्ति यवन-आक्रमणमें भग्न हुई। वाराहमूर्तिके टूट जानेपर उस स्थानपर शालग्रामजीकी पूजा दीर्घकालतक होती रही। उस प्राचीन वाराहमूर्तिकी जङ्घासे एक शिवलिङ्ग बना, जो जाङ्घेश्वर महादेव नामसे प्रसिद्ध है। पीछे एक स्वप्नादेशके अनुसार बाँसवाड़ाकी एक पर्वतीय गुफासे धरणीधरजीकी श्रीमूर्ति लाकर यहाँ स्थापित की गयी। यह चतुर्भुज श्रीनारायणमूर्ति है।

मन्दिरके पास मानसरोवर नामक तालाब है। मुख्य मन्दिरके दाहिनी ओर शिव-मन्दिर और बायीं ओर लक्ष्मीजीका मन्दिर है। समीपमें हनुमान्जी, गणेशजी आदिके मन्दिर हैं।

ज्येष्ठ-शुक्ला ११ को यहाँका पाटोत्सव मनाया जाता है। उस समय बड़ा मेला लगता है। प्रत्येक पूर्णिमा तथा भाद्र-शुक्ला ११ को भी मेला लगता है।

भीलड़ी

पालनपुर-कंडला लाइनपर पालनपुरसे २८ मील दूर भीलड़ी स्टेशन है। ग्रामके पश्चिम एक भूगर्भस्थित मन्दिर है। इसीमें पार्श्वनाथकी प्राचीन प्रतिमा विराजमान है। मन्दिरमें गौतमस्वामी, नेमिनाथजी, पार्श्वनाथजी आदिकी और भी मूर्तियाँ हैं। पौष शुक्ला दशमीको यहाँ मेला लगता है। गाँवमें श्रीनेमिनाथस्वामीका मन्दिर है।

जसाली—भीलड़ीसे ६ मीलपर यह गाँव है। यहाँ ऋषभदेवजीका प्राचीन मन्दिर है।

रामसेण—भीलड़ीसे २४ मील दूर यह ग्राम है। यहाँके जैन-मन्दिरमें जो मूर्ति है, उसके साथका शिलालेख ग्यारवीं शताब्दीका है। नगरके पश्चिम भूगर्भ-मन्दिरमें चार सुन्दर मूर्तियाँ हैं।

थराद

भीलड़ीसे १७ मील आगे देवराज स्टेशन है। वहाँसे थराद मोटर-बस आती है। इस नगरका प्राचीन नाम स्थिरपुर है। यहाँ पहले बहुत विशाल जिनालय था। काल-क्रमसे वह ध्वस्त हो गया। नगरके आस-पास भूमि खोदते समय प्राचीन मूर्तियाँ प्रायः मिलती हैं। इस समय यहाँ एक भव्य जैन-मन्दिर है। भूमिमेंसे प्राप्त हुई २४ तीर्थंकरोंकी पञ्चधातुमयी प्रतिमाएँ इसमें प्रतिष्ठित हैं। इनमें अनेक मूर्तियाँ विशाल हैं। मुख्य मूर्ति वीरप्रभुकी चौमुख मूर्ति है। इनके अतिरिक्त भी अनेकों मूर्तियाँ, जो समय-समयपर भूमिमें मिली हैं, यहाँ जैन-मन्दिरमें स्थापित हैं।

भोरोल

थरादसे यह स्थान १० मील है। थरादसे यहाँ मोटर-बस आती है। यहाँ जैनमन्दिरमें श्रीनेमिनाथजीकी प्रतिमा मुख्य स्थानपर विराजमान है। यह प्रतिमा भूमिमें खुदाई करते समय पायी गयी थी। मन्दिरके पास ही धर्मशाला है। भाभर स्टेशनसे भी सीधी मोटर-बस यहाँ आती हैं।

गाँवके बाहर दो मन्दिर हैं। एकमें हिंगलाज माताकी मूर्ति है, दूसरेमें कालिकादेवीकी। दोनों मन्दिर अत्यन्त प्राचीन हैं, यह उनपर लगे शिलालेखसे जाना जाता है। यहाँ अनेक भव्य भवनोंके भग्नावशेष नगरके आस-पास हैं।

डुवा—भोरोलसे डुवा ऊँटकी सवारीसे जाना पड़ता है। यहाँ पार्श्वनाथका मन्दिर है। यहाँकी प्रतिमाको अमीझरा पार्श्वनाथ कहते हैं।

सिद्धपुर

(लेखक—श्रीमनु० ह० दवे)

धर्मारण्य-माहात्म्य

धर्मारण्यं हि तत्पुण्यमाद्यं च भरतर्षभ।
यत्र प्रविष्टमात्रो वै सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
अर्चयित्वा पितॄन् देवान् नियतो नियताशनः।
सर्वकामसमृद्धस्य यज्ञस्य फलमश्नुते॥

(महा० वन० तीर्थया० ८२। ४६-४७; पद्म० आदि० १२। ८-९)

'भरतश्रेष्ठ! वह धर्मारण्य पुण्यमय आदितीर्थ है, जहाँ व्यक्ति प्रवेश करते ही सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है। यहाँ मितभोजी पुरुष नियमपूर्वक रहता हुआ देवता-पितरोंकी पूजा करके सर्वमनोरथप्रद यज्ञका फल प्राप्त कर लेता है।'

सिद्धपुर

धर्मारण्य-क्षेत्रका केन्द्र स्थानीय सिद्धपुर नगर है। भारतमें जैसे पितृश्राद्धके लिये गया प्रसिद्ध है, वैसे ही मातृश्राद्धके लिये सिद्धपुर प्रसिद्ध है। इसे मातृगया-क्षेत्र कहा जाता है। इसका प्राचीन नाम श्रीस्थल है; किंतु पाटणनरेश सिद्धराज जयसिंहने अपने पिता गुर्जरेश्वर मूलराज सोलंकीद्वारा प्रारम्भ किये गये रुद्रमहालयको

पूरा किया, तभीसे इस स्थानका नाम सिद्धराजके नामपर सिद्धपुर हो गया। यह सिद्धपुर प्राचीन काम्यक-वनमें पड़ता है। महर्षि कर्दमका यहीं आश्रम था और यहीं भगवान् कपिलका अवतार हुआ।

यहाँ शुद्ध मनसे जो भी कर्म किया जाता है, वह तत्काल सिद्ध होता है। औदीच्य ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति यहींसे मानी जाती है। उनके कुल-देवता भगवान् गोविन्दमाधव हैं।

मार्ग—पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर मेहसाणा और आबूरोड स्टेशनोंके बीचमें सिद्धपुर स्टेशन पड़ता है। यह मेहसाणासे २१ मील और आबूरोडसे १९ मील है। स्टेशनसे लगभग एक मील दूर सरस्वती नदीके तटपर ही नगर है। सरस्वतीसे बिन्दु-सरोवर एक मील है, किंतु स्टेशनसे उसकी दूरी आध मीलसे भी कम है।

ठहरनेका स्थान—सिद्धपुर स्टेशनसे पास ही महाराजा गायकवाड़की धर्मशाला है।

तीर्थ-दर्शन

सरस्वती—यात्री पहले सरस्वती नदीमें स्नान करते हैं। सरस्वती समुद्रमें नहीं मिलती, कच्छकी मरुभूमिमें लुप्त हो जाती है। इसलिये वह कुमारिका मानी जाती है। नदीके किनारे पक्का घाट है तथा सरस्वतीका मन्दिर है, किंतु सरस्वतीमें जल थोड़ा ही रहता है। घाटसे धारा प्रायः हटी रहती है।

सरस्वतीके किनारे एक पीपलका वृक्ष है। नदीके किनारे ही ब्रह्माण्डेश्वर शिव-मन्दिर है, यात्री यहाँ मातृ-श्राद्ध करते हैं।

बिन्दु-सरोवर—सरस्वती-किनारेसे लगभग १ मील दूर बिन्दु-सरोवर है। बिन्दु-सरोवर जाते समय मार्गमें गोविन्दजी और माधवजीके मन्दिर मिलते हैं।

बिन्दु-सरोवर लगभग ४० फुट चौरस एक कुण्ड है। इसके चारों घाट पक्के बँधे हैं। यात्री बिन्दु-सरोवरमें स्नान करके यहाँ भी मातृ-श्राद्ध करते हैं। बिन्दु-सरोवरके पास ही एक बड़ा सरोवर है, उसे अल्पा-सरोवर कहते हैं। बिन्दु-सरोवरपर श्राद्ध करके पिण्ड अल्पा-सरोवरमें विसर्जित किये जाते हैं।

बिन्दु-सरोवरके दक्षिण किनारे छोटे मन्दिरमें महर्षि कर्दम, माता देवहूति, महर्षि कपिल तथा गदाधरभगवान्‌की मूर्तियाँ हैं। इनके अतिरिक्त पासमें शेषशायी भगवान् लक्ष्मी-नारायण, राम-लक्ष्मण-सीता तथा सिद्धेश्वर महादेवके मन्दिर और श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है।

ज्ञानवापी—बिन्दु-सरोवरसे थोड़ी ही दूरपर एक पुरानी बावली है। बिन्दु-सरोवरमें स्नानके पश्चात् यहाँ स्नान किया जाता है। माता देवहूति भगवान् कपिलसे ज्ञानोपदेश प्राप्त करके जलरूप हो गयी थीं। वही इस ज्ञानवापीका जल है।

रुद्रमहालय—गुर्जरेश्वर मूलराज सोलंकी और सिद्धराज जयसिंहद्वारा निर्मित यह अद्भुत एवं विशाल मन्दिर अलाउद्दीनने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। यह मन्दिर सरस्वतीके पास ही था। अब इसके कुछ भग्नावशेष सुरक्षित हैं और कुछ भाग मुसल्मानोंके अधिकारमें है। इस भागमें एक शिखरदार मन्दिर तथा मन्दिरका विस्तृत सभामण्डप और उसके सामनेका कुण्ड (सूर्यकुण्ड) अब मसजिदके रूपमें काममें लिये जाते हैं।

अन्य मन्दिर—सिद्धेश्वर, गोविन्दमाधव, हाटकेश्वर, भूतनाथ महादेव, श्रीराधा-कृष्ण-मन्दिर, रणछोड़जी, नीलकण्ठेश्वर, लक्ष्मीनारायण, ब्रह्माण्डेश्वर, सहस्रकला माता, अम्बा माता, कनकेश्वरी तथा आशापुरी माताके मन्दिर भी सिद्धपुरमें दर्शनीय हैं।

इतिहास

कहा जाता है, किसी कल्पमें यहीं देवता एवं असुरोंने समुद्र-मन्थन किया था और यहीं लक्ष्मीजीका प्रादुर्भाव हुआ। भगवान् नारायण लक्ष्मीके साथ यहाँ स्थित हुए, इससे इसे श्रीस्थल कहा गया।

सरस्वतीके तटके पास ही प्रथम सत्ययुगमें महर्षि कर्दमका आश्रम था। कर्दमजीने दीर्घकालतक तपस्या की। उस तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान् नारायण प्रकट हुए। महर्षि कर्दमपर अत्यन्त कृपाके कारण भगवान्‌के नेत्रोंसे कुछ अश्रु-बिन्दु गिरे, इससे वह स्थान बिन्दु-सरोवर तीर्थ हो गया।

स्वायम्भुवमनुने इसी आश्रममें आकर अपनी कन्या देवहूतिको महर्षि कर्दमको अर्पित किया। यहीं देवहूतिसे भगवान् कपिलका अवतार हुआ। कपिलने यहीं माता देवहूतिको ज्ञानोपदेश दिया और यहीं परमसिद्धि-प्राप्त माता देवहूतिका देह द्रवित होकर जलरूप हो गया।

कहा जाता है ब्रह्माकी अल्पा नामकी एक पुत्री माता देवहूतिकी सेवा करती थी। उसने भी माताके साथ कपिलका ज्ञानोपदेश सुना था, जिसका शरीर द्रवित होकर अल्पा-सरोवर बन गया।

पिताकी आज्ञासे परशुरामजीने माताका वध किया। यद्यपि पितासे वरदान माँगकर उन्होंने माताको जीवित करा दिया, तथापि उन्हें मातृ-हत्याका पाप लगा। उस पापसे यहाँ बिन्दु-सरोवर और अल्पा-सरोवरमें स्नान करके यहाँ मातृ-तर्पण करके वे मुक्त हुए। तभीसे यह क्षेत्र मातृ-श्राद्धके लिये उपयुक्त माना गया एवं मातृ-गयाके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

महाभारत-युद्धमें भीमसेनने दुःशासनका रक्त मुखसे लगाया था। श्रीकृष्णकी आज्ञासे यहाँ आकर सरस्वतीमें स्नान करके वे इस दोषसे छूटे।

दधिस्थली

सिद्धपुरसे ७ मीलपर देथली ग्राम है। इसका वास्तविक नाम दधिस्थली है। यहाँ सरस्वती-तटपर वटेश्वर महादेवका भव्य मन्दिर है। कहा जाता है वनवासके समय पाण्डव यहाँ एक वर्ष रहे थे। यहाँ महर्षि दधीचिका आश्रम था, यह भी कहा जाता है। सिद्धपुर तथा पाटणसे यहाँतक मोटर-बस चलती है।

ऊँझा

अहमदाबादसे दिल्ली जानेवाली पश्चिम-रेलवेकी मुख्य लाइनमें सिद्धपुरसे ८ मीलपर ऊँझा स्टेशन है। यहाँ कडबा कुनबी लोगोंकी कुलदेवी उमाका मन्दिर है। यहीं कडवा कुनबी लोग बालक-बालिकाओंके विवाहका समय निश्चित करते हैं।

हाटकेश्वर (वडनगर)

(लेखक—श्रीडाह्याभाई दामोदरदास पटेल)

हाटकेश्वर-माहात्म्य

आनर्तविषये रम्यं सर्वतीर्थमयं शुभम्।
हाटकेश्वरजं क्षेत्रं महापातकनाशनम्।
तत्रैकमपि मासार्द्धं यो भक्त्या पूजयेद्धरम्।
स सर्वपापयुक्तोऽपि शिवलोके महीयते॥
अत्रान्तरे नरा ये च निवसन्ति द्विजोत्तमाः।
कृषिकर्मोद्यताश्चापि यान्ति ते परमां गतिम्॥
अपि कीटपतंगा ये पशवः पक्षिणो मृगाः।
तस्मिन् क्षेत्रे मृता यान्ति स्वर्गलोकं न संशयः॥
पुनन्ति स्नानदानाभ्यां सर्वतीर्थान्यसंशयम्।
हाटकेश्वरजं क्षेत्रं पुनर्वासात्पुनाति च॥
वापीकूपतडागेषु यत्र यत्र जलं द्विजाः।
तत्र तत्र नरः स्नातः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

(स्कं० नागरखं० २७। ७६, ७७, ९१, ९२, ९५)

'आनर्तदेशमें परम मनोहर एवं सर्वतीर्थमय शुभ हाटकेश्वर क्षेत्र है, जो महापातकोंका भी नाश करनेवाला है। जो उस क्षेत्रमें पंद्रह दिन भी भक्तिपूर्वक भगवान् शंकरकी पूजा करता है, वह सभी पापोंसे युक्त होनेपर भी भगवान् शंकरके लोकमें सम्मानित होता है। यहाँके रहनेवाले खेती करनेवाले किसान भी परमगतिको प्राप्त होते हैं। (मनुष्यकी तो बात ही क्या), इस क्षेत्रमें मृत्युको प्राप्त हुए, कीट पतंग, पशु-पक्षी और मृग भी निस्संदेह स्वर्ग चले जाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि सभी तीर्थ स्नान-दान करनेसे पवित्र करते हैं; किंतु हाटकेश्वर क्षेत्र तो केवल रहनेमात्रसे पवित्र कर डालता है। ब्राह्मणो! यहाँ बावली, कुआँ, तालाब या जहाँ कहींके भी जलमें स्नान करनेवाला मनुष्य सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है।'

हाटकेश्वर (वडनगर)

भगवान् शङ्करके तीन मुख्य लिङ्गोंमें एक हाटकेश्वर है—**'पाताले हाटकेश्वरम्'** कहा गया है; हाटकेश्वरका मूल लिङ्ग तो पातालमें है। नागर ब्राह्मणोंके हाटकेश्वर कुलदेवता हैं। इसलिये जहाँ-जहाँ नागर ब्राह्मणोंने अपनी बस्ती बसायी, वहाँ-वहाँ उनके द्वारा स्थापित हाटकेश्वर महादेवका मन्दिर भी है। इस प्रकार देशमें हाटकेश्वर महादेवके मन्दिर बहुत अधिक हैं। सौराष्ट्र-

अर्बुदगिरि तथा सिद्धपुरके कुछ दर्शनीय स्थान
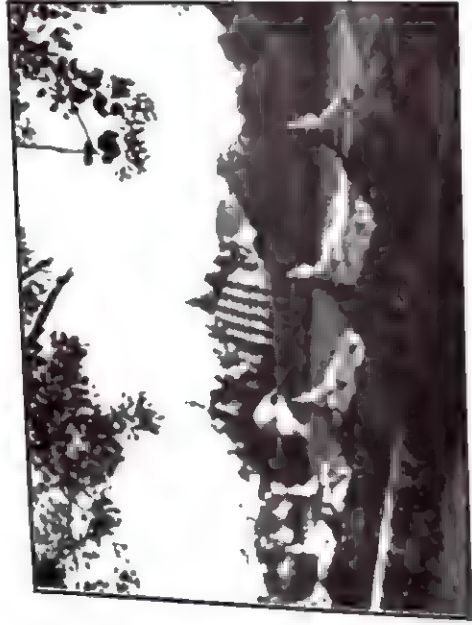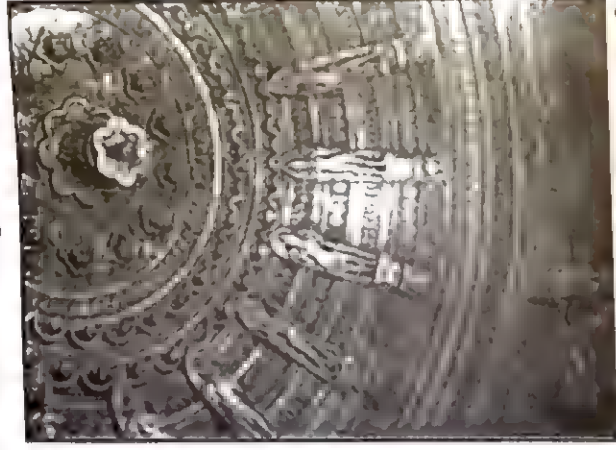
तेजपाल-मन्दिर, अर्बुदगिरि

विमल-मन्दिरके शिखरका भीतरी दृश्य, अर्बुदगिरि
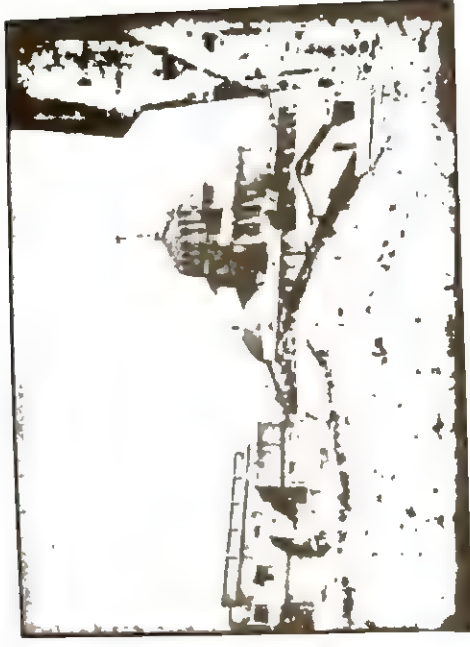
पारसनाथ-मन्दिर, अर्बुदगिरि

अर्बुदगिरिके मन्दिरोंका एक दृश्य

श्रीरुद्रमहालय, सिद्धपुर

श्रीरुद्रमहालय, सिद्धपुरका एक द्वार

गुजरातके कुछ दर्शनीय विग्रह तथा स्थान
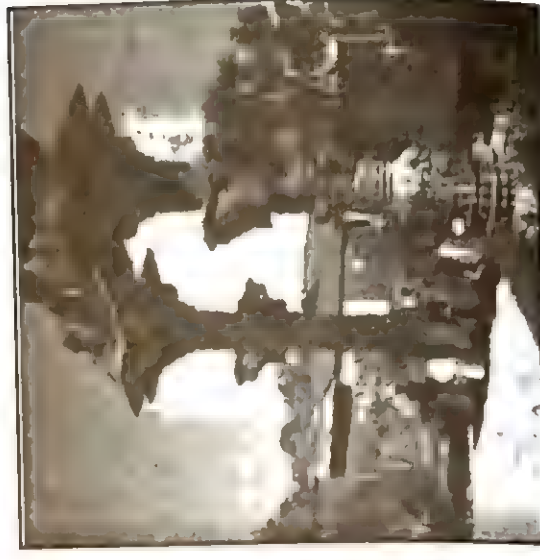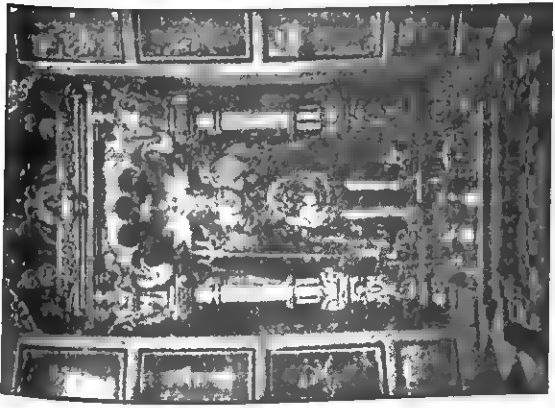
श्रीअम्बा माताकी झाँकी, अमथेर

श्रीअम्बा माताका मन्दिर, अमथेर

कीर्ति-स्तम्भ, हाटकेश्वर, वडनगर
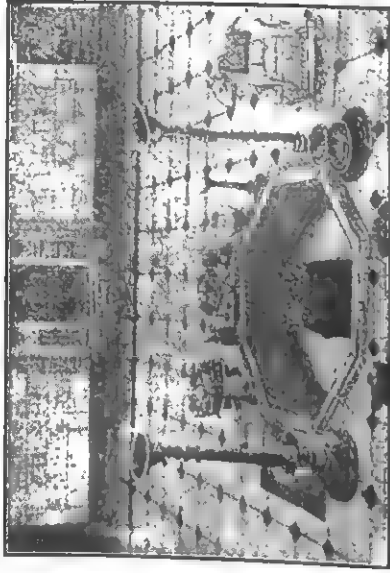
श्रीहाटकेश्वर महादेव, वडनगर

श्रीहाटकेश्वर-मन्दिर, वडनगर
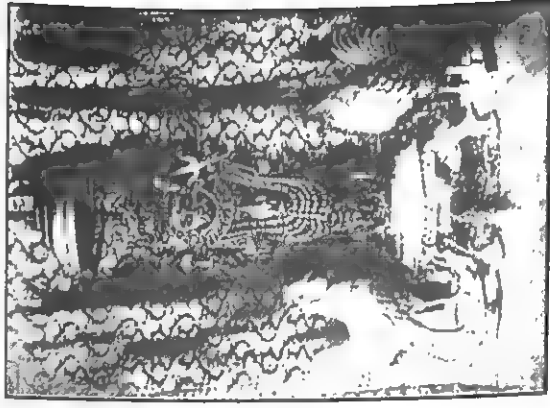
श्रीवहुचर बालाजी, चुँवाळपीठ

गुजरातमें तो गाँव-गाँवमें हैं; किंतु इनमें भी एक प्रधान मन्दिर है। स्कन्दपुराणमें इस प्रधान हाटकेश्वर-लिङ्गका बहुत माहात्म्य आया है।

पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर अहमदाबादसे ४३ मील दूर मेहसाणा स्टेशन है। मेहसाणासे एक लाइन तारंगाहिलतक जाती है। इस लाइनपर मेहसाणासे २१ मील दूर वडनगर स्टेशन है। (यह वडनगर रतलाम-इन्दौर लाइनपर पड़नेवाले वडनगर स्टेशनसे भिन्न है) इसी वडनगरमें हाटकेश्वरका मन्दिर है।

नागर ब्राह्मणोंका मूलस्थान यह वडनगर है। उनके कुलदेव हाटकेश्वर महादेवका यहाँ सबसे प्रधान मन्दिर है। उसके अतिरिक्त यहाँ अनेक देव-मन्दिर हैं। जैन-मन्दिर भी हैं।

कहते हैं त्रिलोकी मापते समय भगवान् वामनने पहला पद वडनगरमें ही रखा था। वडनगरका प्राचीन नाम चमत्कारपुर है। भगवान् श्रीकृष्ण परमधाम पधारनेसे पूर्व यहाँ पधारे थे। यहाँ यादवोंके साथ पाण्डव भी पधारे थे और उन्होंने यहाँ अनेक शिवलिङ्गोंकी स्थापना की थी। नरसी मेहताके पुत्र शामलदासका यहाँ विवाह हुआ था।

वडनगरका मुख्य मन्दिर हाटकेश्वर ग्रामके पश्चिम है। गाँवके पूर्वभागमें किलेमें देवी-मन्दिर है। इन्हें श्रीअमथेरमाताजी कहते हैं। इसके अतिरिक्त वडनगर-क्षेत्रमें ये मुख्य तीर्थ हैं—१-सप्तर्षि-आश्रम—विश्वामित्र-सरोवरके समीप सप्तर्षियोंकी मूर्तियाँ हैं; २-विश्वामित्र तीर्थ—यह सरोवर गाँवके पास है; ३-पुष्कर-तीर्थ—गाँवसे थोड़ी दूरपर कुण्ड है; ४-गौरीकुण्ड—यहाँ लोग मुख्य पर्वोंपर स्नान तथा श्राद्धादि करते हैं; ५-कपिला नदी—यह गाँवके पास है, किंतु वर्षामें ही इसमें जल रहता है; ६-नृसिंह-मन्दिर और अजपाल महादेव-मन्दिर। इनके अतिरिक्त गाँवमें बालाजी, श्रीराम, स्वामिनारायण, लक्ष्मी-नारायण, नर-नारायण, द्वारिकाधीश, तुलसी-मन्दिर, बलदेवजी, कुशेश्वर, ओंकारेश्वर, महाकाली, बहुचराजी, शीतला माता, वाराही माता, भुवनेश्वरी आदिके मन्दिर दर्शनीय हैं।

गाँवके आसपास शर्मिष्ठा-सरोवर, कुम्भेश्वर, महाकालेश्वर, जालेश्वर, सोमनाथके मन्दिर, रामटेकरी, नरसी मेहताकी वाव, पिठोरा माताका मन्दिर, नागधरा (शेषजीका मन्दिर), कीर्ति-स्तम्भ, आशापुरी देवी तथा अम्बाजीका मन्दिर, अमरकुण्ड-सरोवर, खोखा गणपति, भुरोड-छबीला और खोडीआर हनुमान्‌का मन्दिर—ये तीर्थ-स्थान हैं।

पाटण

(लेखक—श्रीगोवर्धनदासजी)

मेहसाणासे काकोसी-मेत्राणा रोड जानेवाली लाइनपर मेहसाणासे २५ मील दूर पाटण स्टेशन है। पाटण सोलंकी नरेशोंकी राजधानी रहा है। यह बड़ा समृद्ध नगर था। कहा जाता है द्वापरमें यही हिडिम्ब-वन था। वनवासके समय पाण्डव यहाँ आये थे। भीमसेनने हिडिम्ब नामक राक्षसको इसी वनमें मारा था। इसी विस्तृत वनमें भीमने वकासुर राक्षसको भी मारा था।

पाटणके एक द्वारका नाम वगवाड़ा द्वार है। उसके पास वगेश्वर (वकेश्वर) शिवका मन्दिर है। वहीं बलिया हनुमान्‌की मूर्ति थी, जो अब बलिया हनुमान्-मठमें प्रतिष्ठित है।

परसोडा

(लेखक—श्रीप्रभाकर ऋषिकुमार)

मेहसाणाके बीजापुर तालुकेमें साभ्रमती (साबरमती) के तटपर परसोडा गाँव है। यहाँ साबरमतीमें झर्झरी, सुरसरी तथा अम्मरवेली नदियोंका सङ्गम हुआ है। इस स्थानको ऋषितीर्थ कहा जाता है। विभाण्डक ऋषिके पुत्र शृङ्गी ऋषिका यहाँ आश्रम था। महाराज दशरथने अपनी पुत्री शान्ता अङ्गदेशके राजा अपने मित्र रोमपादको दत्तकरूपमें दे दी थी; क्योंकि रोमपादके कोई संतान नहीं थी। महाराज रोमपादने शान्ताका विवाह शृङ्गी ऋषिसे किया था। विवाहके पश्चात् शृङ्गी यहाँ आश्रम बनाकर रहे थे।

पर्वोंके समय यहाँ दूर-दूरसे यात्री स्नानार्थ आते हैं। पासमें एक टेकरीपर शृङ्गीऋषिके एवं गुरु दत्तात्रेयके

चरणचिह्न एवं श्रीमारुति तथा शङ्करजीके मन्दिर हैं।

साबरती नदीकी पञ्चक्रोशी परिक्रमा होती है। यह परिक्रमा ऋषितीर्थसे प्रारम्भ करके सागर-सङ्गमतक होती है। इसके अन्तर्गत सादरा गाँवमें छोगालिया महादेव, गलतेश्वर, मार्कण्डेश्वर, सूर्यकुण्ड तथा कोट्यतीर्थ मिलते हैं।

पानसर

अहमदाबाद-मेहसाणा लाइनपर कलोलके बाद ही पानसर स्टेशन है। स्टेशनसे आध मीलपर ऊँचे परकोटेके भीतर जैन-मन्दिर है। मन्दिरके चारों ओर धर्मशाला है। इस मन्दिरमें श्रीमहावीर स्वामीकी प्रतिमा है। मुख्य मन्दिरके आसपास अनेकों मन्दिर तथा देव-कुलिकाएँ हैं। मन्दिरके पीछे एक जल-मन्दिर है।

शेरीसाजी

अहमदाबादसे १६ मीलपर कलोल नगर है। कलोल स्टेशनसे पश्चिम चार मीलपर जैनोंका यह प्राचीन तीर्थ है। इसका प्राचीन नाम प्रज्ञापुर है। इस नगरके मुख्य मन्दिरमें पार्श्वनाथजीके तीन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। मन्दिरके पास ही धर्मशाला है। कलोलसे यहाँतक मोटर-बस आती है।

वरदायिनी-धाम

(लेखक—पं० श्रीनटवरप्रसादजी शास्त्री)

पश्चिमी रेलवेकी कलोल-आँबलियासन लाइनपर कलोलसे आठ मील दूर सोनीपुर-रूपाल स्टेशन है। स्टेशनसे रूपाल नगर दो मील है। कलोलसे रूपालतक मोटर-बसें भी चलती हैं।

रूपालनगरका पुराना नाम रूपावती है। यह रूपावती नगर अत्यन्त प्रसिद्ध क्षेत्र है। भगवान् श्रीराम दण्डकारण्यमें निवास करते समय यहाँ पधारे थे। पाण्डव विराट-नगर जाते समय यहाँ आर्या भगवतीका पूजन करके गये थे।

रूपावती नगरीका जैसे नाम अब रूपाल हो गया, वैसे ही आर्या भगवतीका नाम श्रीवरदायिनी हो गया। पाण्डवोंको वरदान देनेके कारण ही देवीका यह नाम पड़ा। यहाँ भगवतीका विशाल मन्दिर है। मन्दिरके पास मानसरोवर नामक सरोवर है। इस सरोवरमें घी-लगे कपड़े धोनेसे उनकी चिकनाई दूर हो जाती है। यहाँ आश्विनके नवरात्रमें बड़ा मेला लगता है।

माताजीके मन्दिरके आस-पास यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशालाएँ हैं।

यहाँसे पाँच-छः मील दूर साबरमती नदीके किनारे शृङ्गी-ऋषिका आश्रम है। श्रीवरदायिनी-मन्दिरसे दो मील दूर श्रीवैद्यनाथ महादेवका प्राचीन मन्दिर है। इसमें एकादश रुद्र लिङ्ग हैं।

वासणिया वैद्यनाथ

(लेखक—पं० श्रीनटवरप्रसादजी शास्त्री)

पश्चिम-रेलवेकी कलोल-आँवलियासन लाइनपर कलोलसे तेरह मील दूर वासण स्टेशन है। वहाँसे ग्राम तीन मील है। यह स्थान श्रीवरदायिनी-धामसे छः मील दूर है। यह सम्भवतः उत्तरभारतका सबसे बड़ा विशाल मन्दिर है। श्रीवैद्यनाथजीका यह मन्दिर दो सहस्र वर्ष प्राचीन है। मन्दिरमें सात मंजिलें हैं। ऊपर जानेके लिये चारों ओरसे सीढ़ियाँ बनी हैं।

मन्दिरके मुख्य देवालय स्वयम्भू वैद्यनाथजीके

अतिरिक्त दस और शिवालय हैं। इस प्रकार एकादश रुद्रोंकी यहाँ स्थापना है। किंतु मुख्य स्थानपर लिङ्ग-मूर्ति नहीं है। वहाँ एक गड्ढा है, जिसके भीतर गोखुरका चिह्न है।

मन्दिरके पास ही बाबा भावगिरिकी समाधि है। यहाँ एक छोटी धर्मशाला भी है।

भोयणी

कलोल-बेचराजी लाइनपर कलोलसे बीस मील दूर भोयणी स्टेशन है। स्टेशनके समीप ही धर्मशाला है। धर्मशालाके घेरेके भीतर ही जैन-मन्दिर है। इसमें श्रीमल्लिनाथ स्वामीकी प्रतिमा है। यह मूर्ति भी एक कुआँ खोदते समय भूमिसे निकली थी। माघ शुक्ला दशमीको मेला लगता है।

राँतेज

भोयणीसे बारह मील आगे राँतेज स्टेशन है। पहले यहाँ रत्नावली नगरी थी। यहाँ आस-पास अनेक प्राचीन भग्नावशेष हैं। एक कुनबीके घरकी नीवँ खोदते समय यहाँ अन्तिम तीर्थङ्कर श्रीमहावीर स्वामीकी प्रतिमा मिली थी। वह प्रतिमा यहाँके जिनालयमें प्रतिष्ठित है। इसी प्रकार एक स्वप्नादेशके अनुसार भूमि खोदनेपर बारह प्रतिमाएँ मिली थीं। मन्दिरमें मूलनायकके स्थानपर श्रीनेमिनाथजीकी प्रतिमा विराजमान है। मन्दिरके पास ही धर्मशाला है।

बहुचराजी

पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर अहमदाबादसे सोलह मीलपर कलोल स्टेशन है। कलोलसे एक लाइन बेचराजीतक जाती है। अहमदाबादसे सीधी रेल कलोल होकर बेचराजी स्टेशनतक जाती है।

बेचराजी स्टेशनसे थोड़ी ही दूरपर बहुचराजीका मन्दिर है। मन्दिर एक बड़े घेरेमें है। घेरेके भीतर ही धर्मशाला तथा सरोवर है। सरोवरको मानसरोवर कहते हैं।

बहुचराजीका मन्दिर विशाल है। मन्दिरमें कोई मूर्ति नहीं है। मुख्य पीठपर बालायन्त्र प्रतिष्ठित है। पासमें एक मूर्तिपर चित्रका आवरण चढ़ाया गया है।

मूल मन्दिरके पीछे एक वृक्षके नीचे माताजीका मूल स्थान है। वहाँ एक स्तम्भ है। यहाँ छोटा-सा मन्दिर है। उसके उत्तर मुख्य मन्दिरके सामने अग्नि-कुण्ड है।

देवीका वाहन मुर्गा है। गुजरातमें बहुचरादेवी बहुत-से लोगोंकी कुलदेवी हैं। बालकोंका यहाँ मुण्डन-संस्कार कराने लोग आते हैं। प्रेतादि-बाधासे पीड़ित लोग भी बाधा-निवृत्तिके लिये आते हैं। यहाँ प्रत्येक पूर्णिमाको मेला लगता है।

मोढेरा

(लेखक—श्रीरमणलाल लल्लूभाई)

पश्चिम-रेलवेकी एक लाइन कलोलसे बेचराजीतक जाती है। बेचराजी (बहुचराजी) से मोढेरा १८ मील दूर है। मोटर-बस जाती है। मातंगी-मन्दिरके पास ही धर्मशाला है।

पुराणप्रसिद्ध धर्मारण्य-क्षेत्रमें सिद्धपुर, मोढेरा आदि तीर्थ हैं। मोढेराका प्राचीन नाम मोढ़ेरक है। इसे ब्राह्मणोंकी उत्पत्तिका आदि महास्थान कहा गया है। ब्रह्माजीने ब्राह्मणोंकी यहीं सृष्टि पहले की थी।

श्रीमातंगी—यही यहाँका मुख्य देवस्थान है। इन्हें मोढेश्वरी कहा जाता है। कहा जाता है कर्णाट नामक दैत्यका वध करके श्रीमातंगीदेवी यहाँ स्थित हुई। अलाउद्दीनके आक्रमणके समय मातंगीदेवीकी मूर्ति बावलीमें पधरा दी गयी। वह मूर्ति बावलीमें ही है।

मातंगीदेवीका मन्दिर मोढेराके दक्षिणमें है। सिंहद्वारके भीतर एक बावली है, उसमें जानेके लिये मार्ग है। बावलीके ही एक आलेमें माताजीका मन्दिर है। वहाँ सिंहपर आसीन मातंगीदेवीकी अष्टादशभुजा मूर्ति है।

इस बावलीको धर्मेश्वरीवापी कहते हैं। बावलीके अन्तिम कोष्ठमें शिव-शक्तिकी युगल-मूर्ति है। मन्दिरके सिंहद्वारके सामने भट्टारिका देवीका मन्दिर है। भट्टारिका देवीके मन्दिरके पीछे धर्मेश्वर-महादेव तथा श्रीरामचन्द्रजीका मन्दिर है। वहाँ गणेशजीका मन्दिर भी है। अन्य देवी-देवताओंकी भी मूर्तियाँ हैं—जिनमें नागदेवता, सूर्यनारायण, नन्दादेवी, शान्तादेवी, विशालाक्षी, चामुण्डा, तारणा, दुर्गा, सिंहारूढ, निम्बजा, भट्टयोगिनी, ज्ञानजा, चन्द्रिका, छत्रजा, सुखदा, द्वारवासिनी, धर्मराज तथा हनुमान्‌जीकी मूर्तियाँ मुख्य हैं।

अन्य मन्दिर—मोढेरा गाँवके दक्षिण गणेशजीका मन्दिर है। इसमें सिद्धि और बुद्धिनामक पत्नियोंके साथ गणेशजीकी मूर्ति है।

मोडेरामें अत्यन्त पवित्र अप्सरा-तीर्थ है। कहा जाता है वहाँ उर्वशीने तप किया था। गाँवके उत्तर पुष्पावती नदी है। नदीके तटपर प्राचीन सूर्य-मन्दिर है। उसके पास सूर्यकुण्ड है। यह मन्दिर विशाल एवं कलापूर्ण है। गाँवके उत्तर ही देव-सरोवर है। गाँवमें मोढेश्वर महादेवका तथा श्रीरामका मन्दिर है। मोढेश्वर-महादेव सभी मोढ़ ब्राह्मणोंके आराध्य हैं। देव-सरोवरके किनारे श्रीहयग्रीवभगवान्‌का मन्दिर है।

कहा जाता है यहाँ श्रीरामने यज्ञ किया था और सूर्य-मन्दिरके पास जो यज्ञ-वेदियाँ तथा मण्डपादि हैं, वे उसी यज्ञ-मण्डपके ध्वंसावशेष हैं। यहाँ ब्रह्माकी यज्ञवेदी और सूर्यकी तपःस्थली भी कही जाती है।

दूधरेज

(लेखक—श्रीनारायणजी पुरुषोत्तम सांगाणी)

पश्चिम-रेलवेकी सुरेन्द्रनगर-भावनगर लाइनपर सुरेन्द्रनगरसे १० मील दूर बढ़वान-सिटी स्टेशन है। बढ़वानसे दो मील दूर दूधरेज स्थान है। यहाँ मार्गी पंथका मुख्य मन्दिर श्रीगोपीनाथजीका मन्दिर है। यहाँ रबारी लोगोंकी भीड़ सदा लगी रहती है।

यहाँ काठी राजपूतोंके इष्टदेव सूर्यनारायणका मन्दिर है। अतएव काठियावाड़के राजपूत तीर्थयात्रा करने प्रायः आते हैं।

भीमनाथ

पश्चिम-रेलवेकी सुरेन्द्रनगर-भावनगर लाइनपर सुरेन्द्रनगरसे ४२ मील दूर राणपुर स्टेशन है। वहाँसे धुन्धुकाके लिये मार्ग जाता है। धुन्धुकासे १६ मील दूर भीमनाथजीका स्थान है।

भीमनाथ महादेवका मन्दिर विशाल है। यहाँ शिवरात्रिको मेला लगता है। भीमनाथके दर्शन करने आस-पासके लोग प्रायः आते रहते हैं। यह इस ओरका प्रख्यात तीर्थ है।

गढ़पुर

(लेखक—श्रीमूलजी छगनलालजी पंजवाणी)

सुरेन्द्रनगर-भावनगर लाइनपर निंगरा स्टेशनसे एक लाइन गढड़ा स्वामिनारायण स्टेशनतक जाती है। गढड़ाका ठीक नाम गढ़पुर है। स्वामिनारायण-सम्प्रदायके संस्थापक स्वामी सहजानन्दजी यहाँ बहुत दिन रहे थे। उन्होंने ही यहाँ स्वामिनारायण-मन्दिरकी प्रतिष्ठा की थी। यह स्वामिनारायण-सम्प्रदायके लोगोंका मुख्य तीर्थ है। इसे वे अक्षरधाम कहते हैं। पासमें एक छोटी नदी है, जो उन्मत्त-गङ्गा कहलाती है। उसे पवित्र माना जाता है। स्वामिनारायण-मन्दिरमें श्रीगोपीनाथजीकी मूर्ति है, जिनके वामभागमें श्रीराधिकाजी हैं। एक ओर स्वामी सहजानन्दकी मूर्ति है। इस मन्दिरके अतिरिक्त गढ़पुरमें स्वामी सहजानन्दजीके कुछ और स्मारक हैं; वह स्थान है, जहाँ वे बैठकर उपदेश करते थे। स्वामी सहजानन्दकी समाधि है, जहाँ उनके शरीरका अन्त्येष्टि संस्कार हुआ। गाँवके बाहर राधावाव, भक्तिबाग, नारायणधारा, सहस्रधारा, नीलकण्ठ महादेव, टेकरिया हनुमान् आदि कई दर्शनीय मन्दिर हैं।

भालनाथ

(लेखक—श्रीपुरुषोत्तमदासजी)

यह स्थान भावनगरसे १६ मील दूर पर्वतपर है। तलाल स्टेशनसे भंडरिआ स्टेशन जानेपर दो मील पैदल चलना पड़ता है। पर्वतपर श्रीभालनाथ महादेवका मन्दिर है। समीपमें एक कुण्ड है। श्रावणमें मेला लगता है।

पञ्चतीर्थ

भावनगरसे १५ मील दूर निष्कलङ्क महादेव हैं। १४ मील बससे जाकर एक मील पैदल जाना पड़ता है। समुद्रमें एक मील भीतर भगवान् शङ्करकी लिङ्ग-मूर्ति एक शिलापर है। समुद्र भाटेके समय उतर जाता है, तब दर्शन होता है। वहाँसे चार मील आगे मीठा वारडी स्थान है। समुद्रतटपर मीठे पानीका झरना है। आगे छोटे गोपीनाथका स्थान है।

गोपनाथ

पश्चिम-रेलवेकी एक लाइन सुरेन्द्रनगरसे भावनगरतक जाती है। भावनगरसे गोपनाथतक मोटर-बस जाती है। कहा जाता है यहाँ नरसी मेहताने गोपनाथ महादेवकी आराधना की थी। भावनगरके गोहिल राजकुमारोंका चूडाकरण-संस्कार यहीं होता था। यहाँ धर्मशाला है।

गोपनाथ महादेवका सुन्दर मन्दिर है और उसके पास ही ब्रह्मकुण्ड सरोवर है। गोपनाथ-मन्दिर समुद्र-किनारे एक टीलेपर है।

शत्रुञ्जय (सिद्धाचल)

यह सिद्ध क्षेत्र है। यहाँसे आठ करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं। जैनोंमें ५ पवित्र पर्वत मुख्य माने जाते हैं—१-शत्रुञ्जय (सिद्धाचल), २-अर्बुदाचल (आबू), ३-गिरनार, ४-कैलास और ५-सम्मेतशिखर (पारसनाथ)।

मार्ग—पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबादसे दिल्ली जानेवाली मुख्य लाइनमें मेहसाणा स्टेशनसे एक लाइन सुरेन्द्रनगरतक जाती है। सुरेन्द्रनगरसे और एक लाइन भावनगरतक जाती है। इस सुरेन्द्रनगर-भावनगर लाइनमें सीहोर स्टेशनसे एक लाइन पालीताणातक जाती है।

पालीताणा स्टेशनसे लगभग एक मील दूर नदीके पास धर्मशाला है। यहाँ पालीताणा नगरमें श्रीशान्तिनाथजीका मन्दिर है। नगरसे शत्रुञ्जय या सिद्धाचल लगभग साढ़े तीन मील दूर है। वहाँतक पक्की सड़क है। ताँगे आदि सवारियाँ जाती हैं। पर्वतपर लगभग ३ मील चढ़नेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। पर्वतके नीचे तलहटीके पास धर्मशाला है।

पर्वतपर चढ़ते समय मार्गमें श्रीआदिनाथके मन्दिरके पास अनेक चरणपादुकाएँ मिलती हैं। ऊपर एक हनुमान्जीका छोटा मन्दिर है। वहाँसे ऊपर दो मार्ग हैं। पर्वतके दो शिखर हैं। दोनोंके मध्यमें झाड़ी है। दोनों शिखरोंपर कोट बना है।

पर्वतपर परकोटेके भीतर आदिनाथ, कुमारपाल, विमलशाह और चतुर्मुख-मन्दिर मुख्य मन्दिरोंमें हैं। चौमुख मन्दिरमें १२५ मूर्तियाँ हैं।

तारंगाजी

पश्चिम-रेलवेके मेहसाणा स्टेशनसे एक लाइनपर तारंगा-हिल स्टेशनतक जाती है। स्टेशनसे तारंगा पर्वत लगभग ४ मील दूर है। यह सिद्धक्षेत्र है। यहाँसे वरदत्तादि साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं।

तारंगा-हिल स्टेशनके पास जैन-धर्मशाला है और पर्वतके ऊपर भी धर्मशाला है। पर्वतपर एक कोटके भीतर मन्दिर बने हैं। धर्मशालाके पास १३ प्राचीन दिगम्बर जैन-मन्दिर हैं। यहाँ सहस्रकूट जिनालयमें ५२ चैत्यालय हैं।

श्रीसम्भवनाथजीके मन्दिरके पास श्वेताम्बर जैन-मन्दिर है। यह मन्दिर विशाल तथा कलापूर्ण है। धर्मशालासे उत्तर कोटिशिला नामक पर्वत है। मार्गमें दाहिनी ओर दो छोटी मठियाएँ हैं, जिनमें चरण-चिह्न हैं। मठियाके पास पर्वतकी खोहमें एक स्तम्भपर चतुर्मुख मूर्ति है। पर्वतके शिखरपर एक छोटा-सा मन्दिर है। उसमें प्रतिमा तथा चरण-चिह्न हैं।

दूसरी ओर १ मील ऊँची सिद्धशिला पहाड़ी है। ऊपर उसके दो शिखर हैं। पहलेपर श्रीपार्श्वनाथ तथा मुनि सुव्रतनाथकी प्रतिमा है। दूसरे शिखरपर श्रीनेमिनाथजीकी मूर्ति है। यहीं सुरेन्द्रकीर्तिजीके चरण-चिह्न हैं।

शङ्खेश्वर-पार्श्वनाथ

पञ्चाप्सर (शत्रुंजय)-से दस मील दूर यह स्थान है। यहाँका जैन-मन्दिर विशाल है। मुख्य मन्दिरके समीप मन्दिरोंका एक समूह है, जिनमें विभिन्न तीर्थंकरोंकी मूर्तियाँ हैं। मुख्य मन्दिरमें पार्श्वनाथकी मूर्ति है, जिन्हें शङ्खेश्वर-पार्श्वनाथ कहते हैं। मन्दिर नवीन है, किन्तु प्रतिमा अत्यन्त प्राचीन है। पुराने मन्दिरोंके विनष्ट हो जानेपर नवीन मन्दिर बनवाकर उसमें मूर्तिकी प्रतिष्ठा हुई है। यहाँ धर्मशाला है।

तरणेतर

सुरेन्द्रनगर-ओखा लाइनपर सुरेन्द्रनगरसे ३१ मील दूर थान स्टेशन है। थानसे लगभग ६ मीलपर यह स्थान है। यह जंगल-पहाड़से घिरा प्रदेश है। जंगलमें तरणेतरका प्राचीन मन्दिर है। कहा जाता है यह वासुकि नागकी भूमि है। यहाँ वासुकिका स्थान बना है। यहाँसे थोड़ी दूरपर एक कुण्ड है। तरणेतर शिव-मन्दिर एक कोटके भीतर है। यह प्राचीन मन्दिर कलापूर्ण है। यहाँसे थोड़ी दूर एक टीलेपर सूर्य-मन्दिर है। मन्दिरमें जो धातु-मूर्ति है, कहा जाता है वह पाण्डवोंद्वारा प्रतिष्ठित है। नागपञ्चमीको यहाँ मेला लगता है। सूर्यवंशी क्षत्रिय जो समीप हैं, वे बालकोंका मुण्डन यहाँ कराते हैं।

सामुद्री माता

सुरेन्द्रनगर-ओखा लाइनपर थान स्टेशनके पास सामुद्री माता (सुन्दरी भवानी)-का मन्दिर है। इधरके बहुतसे लोगोंकी ये कुल-देवी हैं। इसलिये दूर-दूरके लोग यहाँ आते हैं। यहाँ मन्दिरके पास यात्रियोंके लिये धर्मशाला है।

स्वयम्भू जडेश्वर

(लेखक—श्रीदलपतराम जगन्नाथ मेहता धर्मालङ्कार, वेदान्तभूषण)

पश्चिम-रेलवेकी सुरेन्द्रनगर-ओखा लाइनपर सुरेन्द्र-नगरसे ४८ मील दूर बाँकानेर जंकशन स्टेशन है। बाँकानेरसे ७ मील पश्चिम जंगलमें ऊँचे टेकरेपर श्रीजडेश्वरका मन्दिर है। बाँकानेरसे वहाँतक पक्की सड़क है। मोटर-बस चलती है।

यहाँपर श्रीजडेश्वर तथा श्रीरावलेश्वर—ये दो मुख्य मन्दिर हैं। इनके अतिरिक्त श्रीबहुचरादेवी, गायत्रीदेवी, अन्नपूर्णा, हनुमान्‌जी, सत्यनारायणभगवान्, नागदेवता आदिके अनेक मन्दिर आस-पास हैं।

यह स्थान जंगलमें होनेपर भी अब एक नगरके समान हो गया है। मन्दिरकी अपनी वाटरवर्क्स, पावर-हाउस आदिकी व्यवस्था है और यात्रियोंके ठहरनेके लिये यहाँ समुचित प्रबन्ध है।

जामनगर राज्यके आदि संस्थापक जाम साहबको यह स्वयम्भू-लिङ्ग एक वृक्षकी जड़के नीचे प्राप्त हुआ, इससे इनका नाम श्रीजडेश्वर पड़ गया। यह मूर्ति जामनगरके जाडेचा राजवंशकी कुलाराध्य है। इस प्रदेशमें दूर-दूरसे यात्री श्रीजडेश्वरभगवान्‌का दर्शन करने आते हैं।

प्रणामी-धर्मके तीर्थ

(लेखक—श्रीमिश्रीलालजी शास्त्री)

श्रीनवतनपुरी-धाम, खेजड़ा-मन्दिर—जामनगरमें खंभाली-द्वारके समीप यह मन्दिर स्थित है। श्रीनिजानन्द-स्वामीद्वारा आरोपित खेजड़ा (शमी) वृक्षके कारण यह खेजड़ा-मन्दिरके नामसे प्रसिद्ध है। यह स्थान श्रीदेवचन्द्रजीकी तपोभूमि एवं अन्तर्धान-भूमि है। यहीं स्वामी श्रीप्राणनाथजीकी जन्मभूमि है। यहींसे श्रीश्रीदेवचन्द्रजीने अपने धार्मिक सिद्धान्तोंके प्रचारका सूत्रपात किया था। यहाँ आश्विन-कृष्णा चतुर्दशीको श्रीप्राणनाथके जन्मोत्सवका मेला लगता है। जामनगर द्वारकाके मार्गपर रेलवे-स्टेशन है। रेलवे-स्टेशनसे यह स्थान करीब आध मीलकी दूरीपर है।

ब्रह्मतीर्थ मङ्गलपुरी—प्रणामी मोटा-मन्दिर, मङ्गलपुरी (सूरत) में स्वामी श्रीप्राणनाथजीकी आचार्यगद्दी है। इसी स्थानपर स्वामी श्रीप्राणनाथजीने अपनी अखण्डवाणीका उद्घाटन किया था। यहाँ एक ओर प्रणामी-मन्दिर है, जो गोपीपुरामें स्थित है। यह स्थान सूरत रेलवे-स्टेशनसे करीब पौन मीलपर स्थित है।

श्रीपद्मावतीपुरीधाम—पन्ना (विन्ध्यप्रदेश)

प्रणामी-धर्मके समस्त तीर्थोंमें यह स्थान प्रधान है। स्वामी श्रीप्राणनाथजीकी वाणीमें इस स्थानको परम मोक्षदाताके रूपमें वर्णन किया गया है। साम्प्रदायिक सिद्धान्तोंके अनुसार पद्मावतीपुरीकी पावन भूमिमें शरीर त्याग करनेपर केवल प्रणामी-धर्मानुयायियोंको परमहंस-दशा प्राप्त स्वीकृतकर गृहस्थ एवं विरक्त दोनोंको समानरूपेण समाधिस्थ किया जाता है। अन्यत्र शरीर-त्याग करनेवाले धर्मानुयायियोंके दाहकर्मके अनन्तर केवल 'पुष्प' (अस्थियाँ) ही यहाँ आते हैं, जिन्हें नियत स्थानपर समाधिस्थ किया जाता है। यह व्यवस्था केवल इसी क्षेत्रमें सम्पन्न की जाती है।

इस क्षेत्रके मुख्य स्थान—

श्रीगुम्मटजी—यहीं स्वामी श्रीप्राणनाथजीकी ब्रह्मयोग-समाधिका दिव्य स्थान है।

श्रीबंगलाजी—यह स्थान स्वामीजीका सभामण्डप है। इसी स्थानपर स्वामीजी अपने उपदेश प्रदान किया करते थे।

श्रीदेवचन्द्रजीका मन्दिर—इस स्थानमें सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजकी गद्दी है।

श्रीमहारानीजीका मन्दिर—यह स्वामी श्रीप्राणनाथजीकी धर्मपत्नी श्रीमहारानी श्रीतेजकुँवरजीका पुनीत स्थान है।

चौपड़ा-मन्दिर—यह स्थान मुख्य मन्दिरसे एक मील दूर किलकिला नदीके किनारे स्थित है। पहले यहीं छत्रसालका निवास-महल था। यहाँ स्वामीजीकी बैठक एवं चरण-कमल प्रतिष्ठित हैं। जलके चौपड़े हैं। जिनका जल पवित्र माना जाता है। यात्री इनके जलको बोतलोंमें भरकर अपने-अपने देशोंमें ले जाते हैं।

खेजड़ा-मन्दिर—सतना रोडपर मुख्य स्थानसे एक मीलकी दूरीपर यह स्थान है। इसी स्थानपर स्वामीजीने छत्रसालजीका राज्याभिषेक करके अपनी 'जलपुकार' नामक ज्ञानमयी तलवार भेंट की थी। अतएव प्राचीन प्रथानुसार महाराज छत्रसालके वंशज पन्ना-नरेशको प्रतिवर्ष दशहरेके दिन इसी स्थानपर तिलक, बीड़ा एवं तलवार भेंट की जाती है।

पुरानी शाला—यह स्थान ब्रह्मनिष्ठ परमहंस श्रीगोपालदासजी 'प्रेमसखी' की तपोभूमि है। बादमें शाहगढ़के नरेश महाराज बखतबलीके महलकी सेवा यहाँ पधरायी गयी और शाहगढ़से ही इसका प्रबन्ध चलता रहा।

द्वारका धाम

(लेखक—श्रीरामदेवप्रसादसिंहजी)

द्वारका-माहात्म्य

अपि कीटपतङ्गाद्याः पशवोऽथ सरीसृपाः।
विमुक्ताः पापिनः सर्वे द्वारकायाः प्रभावतः॥
किं पुनर्मानवा नित्यं द्वारकायां वसन्ति ये।
या गतिः सर्वजन्तूनां द्वारकापुरवासिनाम्।
सा गतिर्दुर्लभा नूनं मुनीनामूर्ध्वरेतसाम्॥

× × × ×

द्वारकावासिनं दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा चैव विशेषतः।
महापापविनिर्मुक्ताः स्वर्गलोके वसन्ति ते॥
पांसवो द्वारकाया वै वायुना समुदीरिताः।

पापिनां मुक्तिदाः प्रोक्ताः किं पुनर्द्वारकाभुवि॥

(स्कन्दपुरा० प्रभासखं० द्वारकामाहा० नवलकिशोर प्रेसका संस्करण, ३७। ७—९, २५,२६; वेंकटेश्वर प्रेसका संस्करण ३५। ७-८, २५, २६)

'द्वारकाके प्रभावसे कीट, पतङ्ग, पशु-पक्षी तथा सर्प आदि योनियोमें पड़े हुए समस्त पापी भी मुक्त हो जाते हैं, फिर वे प्रतिदिन द्वारकामें रहते और जितेन्द्रिय होकर भगवान् श्रीकृष्णकी सेवामें उत्साहपूर्वक लगे रहते हैं, उनके विषयमें तो कहना ही क्या है। द्वारकामें रहनेवाले समस्त प्राणियोंको जो गति प्राप्त होती है, वह ऊर्ध्वरेता मुनियोंको भी दुर्लभ है।

'द्वारकावासीका दर्शन और स्पर्श करके भी मनुष्य बड़े-बड़े पापोंसे मुक्त हो स्वर्गलोकमें निवास करते हैं। वायुद्वारा उड़ायी हुई द्वारकाकी रज पापियोंको मुक्ति देनेवाली कही गयी है; फिर साक्षात् द्वारकाकी तो बात ही क्या।'

द्वारका सब क्षेत्रों और तीर्थोंसे उत्तम कही गयी है। द्वारकामें जो होम, जप, दान और तप किये जाते हैं, वे सब भगवान् श्रीकृष्णके समीप कोटिगुना एवं अक्षय होते हैं।

द्वारका-यात्राकी विधि—श्रद्धालु यात्रीको चाहिये कि यात्राके लिये प्रस्थान करनेके एक दिन पूर्व तेल, उबटन लगाकर स्नान करके वैष्णवोंका पूजन कर उन्हें भोजन कराये। फिर भावनासे भगवदाज्ञा ग्रहण कर पक्वान्न भोजन करे तथा द्वारका एवं श्रीकृष्णका चिन्तन करता हुआ पृथ्वीपर शयन करे। फिर प्रातः सभीसे मिलकर प्रसन्नपूर्वक वैष्णवोंकी गन्ध-ताम्बूलसे पूजा कर भगवदाज्ञा ले गीत-वाद्य, स्तुति, मङ्गलपाठके साथ द्वारकाको प्रस्थान करे। मार्गमें विष्णुसहस्रनाम, श्रीमद्भागवत एवं पुरुषसूक्त आदिका पाठ करना चाहिये। उसे शान्ति, पवित्रता, ब्रह्मचर्य आदि नियमोंका पालन करना चाहिये। तीर्थयात्रीको परनिन्दा नहीं करनी चाहिये। जिसके हाथ, पैर और मन सुसंयत रहते हैं, उसे तीर्थयात्राका निश्चित फल प्राप्त होता है। फिर वहाँ पहुँचकर निर्दिष्ट तीर्थोंका दर्शन करना चाहिये। द्वारका-माहात्म्यके अनुसार द्वारकाके अन्तर्गत गोमती नदी, चक्रतीर्थ, रुक्मिणी-ह्रद, विष्णुपादोद्भवतीर्थ, गोपी-सरोवर, चन्द्र-सरोवर, ब्रह्मकुण्ड, पञ्चनद-तीर्थ, सिद्धेश्वर-लिङ्ग, ऋषि-तीर्थ, शङ्खोद्धार-तीर्थ, वरुणसरोवर, इन्द्रसरोवर तथा गदा आदि कई तीर्थ हैं, पर इनमेंसे बहुत-से तीर्थ घोर कलियुगके कारण समुद्रमें विलीन हो गये हैं। (स्कं० प्रभा० द्वारकामा० १०। १)

द्वारकाकी सात पुरियोंमें गणना है। भगवान् श्रीकृष्णकी यह राजधानी चारों धामोंमें एक धाम भी है; परन्तु आज द्वारका नामसे कई स्थान कहे जाते हैं। दो-तीन स्थान मूलद्वारका नामसे विख्यात हैं और गोमतीद्वारका तथा बेट-द्वारका—ये दो तो द्वारकापुरी हैं ही।

भगवान् श्रीकृष्णके अन्तर्धान होते ही द्वारकापुरी समुद्रमें डूब गयी। केवल भगवान्‌का निजी मन्दिर समुद्रने नहीं डुबाया। गोमतीद्वारका और बेटद्वारका एक ही विशाल द्वारकापुरीके अंश हैं, ऐसा माननेमें कोई दोष नहीं है। द्वारकाके जलमग्न हो जानेपर लोगोंने कई स्थानोंपर द्वारकाका अनुमान करके मन्दिर बनवाये और जब वर्तमान द्वारकाकी प्रतिष्ठा हो गयी, तब उन अनुमानित स्थलोंको मूलद्वारका कहा जाने लगा।

वर्तमान द्वारकापुरी गोमतीद्वारका कही जाती है। यह नगरी प्राचीन द्वारकाके स्थानपर प्राचीन कुशस्थलीमें ही स्थित है। यहाँ अब भी प्राचीन द्वारकाके अनेक चिह्न रेतके नीचेसे यदा-कदा उपलब्ध होते हैं।* यह नगरी काठियाबाड़में पश्चिम समुद्रतटपर स्थित है।

मार्ग

पश्चिम-रेलवेकी सुरेन्द्रनगर-ओखा लाइनपर द्वारिका स्टेशन है। अहमदाबाद-दिल्ली लाइनके मेहसाणा स्टेशनसे एक लाइन सुरेन्द्रनगर जाती है। बंबई-खाराघोड़ा लाइनपर वीरमगाममें गाड़ी बदलकर सुरेन्द्रनगर जा सकते हैं। बंबईसे समुद्री जहाजद्वारा द्वारका आनेपर जहाज समुद्रमें डेढ़ मील दूर खड़े होते हैं। वहाँसे नौकाद्वारा आना पड़ता है। जल-मार्गसे आनेवालोंको ओखापोर्टपर उतरना चाहिये। वहाँसे रेल या मोटर-बसद्वारा द्वारका आ सकते हैं। द्वारका स्टेशनसे

* डाक्टर जयन्तीलाल जमनादास ठाकरका 'द्वारका-दर्शन' लेख मिला था। विद्वान् लेखकने उस लेखमें भूगर्भ-शास्त्रके आधारपर तथा अन्य अनेक प्रमाणोंसे यह निरूपित किया था कि प्राचीन द्वारकाके स्थानपर ही नवीन द्वारका है। स्थानाभावसे यह लेख इस अङ्कमें नहीं आ सका।

द्वारकापुरी (गोमतीद्वारका) एक मील है।

ठहरनेके स्थान

यात्री पंडोंके यहाँ प्रायः ठहरते हैं। ठहरनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं।

१-हजारीमलजी दूधवेवालाकी, स्टेशनके पास; २-भाऊजी प्रेमजीकी मन्दिरके पास; ३-वसन्तलालजी, रामेश्वरलाल दुदुवेवालाकी मन्दिरके पास।

तीर्थ-दर्शन

गोमती-द्वारकामें पश्चिम और दक्षिण एक बड़ा खाल है, जिसमें समुद्रका जल भरा रहता है। इसे गोमती कहते हैं। यह कोई नदी नहीं है। इसीके कारण द्वारकाको गोमतीद्वारका कहते हैं। गोमतीके उत्तर-तटपर नौ पक्के घाट बने हैं—१-संगमघाट, २-नारायणघाट, ३-वासुदेवघाट, ४-गऊघाट, ५-पार्वतीघाट, ६-पाण्डवघाट, ७-ब्रह्माघाट, ८-सुरधनघाट और ९-सरकारी घाट।

गोमती और समुद्रके संगमके मोड़पर संगमघाट है। घाटके ऊपर संगम-नारायणका मन्दिर है। वासुदेवघाटपर हनुमान्‌जीका मन्दिर और उसके पश्चिम नृसिंह-भगवान्‌का मन्दिर है।

निष्पाप-सरोवर—सरकारी घाटके पास यह छोटा-सा सरोवर है, जो गोमतीके खारे जलसे भरा रहता है। यात्री पहले निष्पाप सरोवरमें स्नान करके तब गोमती-स्नान करते हैं। यहाँ अथवा गोमतीमें स्नान करनेकी एक आना सरकारी भेंट है, जो एक यात्रीको एक यात्रामें एक ही बार देनी पड़ती है। यहाँ पिण्डदान भी किया जाता है। निष्पाप-सरोवरके पास एक और छोटा कुण्ड है। उसके पास साँवलियाजीका मन्दिर, गोवर्धननाथजीका मन्दिर और वल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है। उसके आगे मीठे जलके पाँच कूप हैं। यात्री इन कूपोंके जलसे मार्जन तथा आचमन करते हैं। ये कूप गोमतीके दक्षिण-तटपर हैं।

श्रीरणछोड़रायजीका मन्दिर—यही द्वारकाका मुख्य मन्दिर है। इसे द्वारकाधीशका मन्दिर भी कहते हैं। गोमतीकी ओरसे ५६ सीढ़ी चढ़नेपर मन्दिर मिलता है। यह मन्दिर परकोटेके भीतर है, जिसमें चारों ओर द्वार हैं। मन्दिर सात-मंजिला और शिखरयुक्त है। इसका परिक्रमा-पथ दो दीवारोंके मध्यसे है। श्रीरणछोड़जीके मन्दिरपर पूरे थानकी ध्वजा उड़ती है। इसे चढ़ाते समय महोत्सव होता है। विश्वकी यह सबसे बड़ी ध्वजा है।

मन्दिरमें मुख्य पीठपर श्रीरणछोड़रायकी श्यामवर्ण चतुर्भुजमूर्ति है। निश्चित दक्षिणा देकर मूर्तिका चरण-स्पर्श भी किया जा सकता है। मन्दिरके ऊपरकी चौथी मंजिलमें अम्बाजीकी मूर्ति है।

द्वारकाकी रणछोड़रायकी मूल मूर्ति तो बोडाणा भक्त डाकोर ले गये। वह अब डाकोरमें है। उसके ६ महीने बाद दूसरी मूर्ति लाडवा ग्रामके पास एक वापीमें मिली। वही मूर्ति अब मन्दिरमें विराजमान है।

रणछोड़जीके मन्दिरके दक्षिण त्रिविक्रमभगवान्‌का मन्दिर है। इसमें त्रिविक्रमभगवान्‌के अतिरिक्त राजा बलि तथा सनकादि चारों कुमारोंकी छोटी मूर्तियाँ हैं। यहाँ एक कोनेमें गरुड़-मूर्ति भी है।

रणछोड़जीके मन्दिरके उत्तर प्रद्युम्नजीका मन्दिर है। इसमें प्रद्युम्नकी श्यामवर्ण प्रतिमा है। पास ही अनिरुद्धकी छोटी मूर्ति है। सभामण्डपके एक ओर बलदेवजीकी मूर्ति है। पहले यहाँ तप्तमुद्रा लगती थी, किंतु अब निश्चित दक्षिणा देनेपर चन्दनसे चरण-पादुकाकी छाप पुजारी पीठपर लगा देते हैं। मन्दिरके पूर्व दुर्वासाजीका छोटा मन्दिर है।

उत्तरके मोक्षद्वारके पास पश्चिम ओर कुशेश्वर शिव-मन्दिर है। यहाँ कुशेश्वरका दर्शन किये बिना द्वारका-यात्रा अधूरी मानी जाती है। मन्दिरके नीचे तहखानेमें कुशेश्वर-शिवलिङ्ग तथा पार्वतीकी मूर्ति है।

प्रधान मन्दिरमें पश्चिमकी दीवारके पास कुशेश्वरसे आगे अम्बाजी, पुरुषोत्तमजी, दत्तात्रेय, माता देवकी, लक्ष्मी-नारायण और माधवजीके मन्दिर हैं। पूर्वकी दीवारके पास दक्षिणसे उत्तर सत्यभामा-मन्दिर, शङ्कराचार्यकी गद्दी तथा जाम्बवती, श्रीराधा और लक्ष्मी-नारायणके मन्दिर हैं। यहाँ द्वारके पूर्व कोलाभक्तका मन्दिर है।

शारदामठ—श्रीरणछोड़रायके मन्दिरके पूर्व घेरेके भीतर मन्दिरका भंडार और उससे दक्षिण जगद्गुरु शङ्कराचार्यका शारदामठ है।

अन्य-मन्दिर—श्रीरणछोड़रायके मन्दिरके कोटके बाहर लक्ष्मीनारायण-मन्दिर है और उसके पास वासुदेव-मन्दिर है। यहाँ स्वर्ण-द्वारका नामक एक नवीन स्थान है, जहाँ दो आना लेकर प्रवेश मिलता है। उभरे हुए कलापूर्ण भित्तिचित्र इसमें देखने योग्य हैं।

परिक्रमा—श्रीरणछोड़जीके मन्दिरसे द्वारकापुरीकी परिक्रमा प्रारम्भ होती है। मन्दिरसे पश्चिम गोमतीके

636 Tirthank_Section_19_1_Back

घाटोंपर होते हुए संगमतक जाकर उत्तर घूमते हैं। यहाँ समुद्रमें चक्र-तीर्थ माना जाता है। आगे रत्नेश्वर महादेव, (नगरके बाहर) सिद्धनाथ महादेव, ज्ञानकुण्ड, जूनी रामवाड़ी और दामोदर-कुण्ड (यहीं भगवान्ने नरसी मेहताकी हुंडी स्वीकार की थी) हैं। आगे एक मीलपर रुक्मिणीमन्दिर तथा भागीरथीधारा, लौटनेपर कृकलास-कुण्ड (इसे लोग कैलास-कुण्ड कहते हैं, गिरगिट बने राजा नृग इसीमें गिरे थे), सूर्यनारायण-मन्दिर, भद्रकाली-मन्दिर, जय-विजय (नगरके पूर्व द्वारपर), निष्पाप-कुण्ड होते हुए रणछोड़रायके मन्दिरमें परिक्रमा समाप्त की जाती है।

आस-पासके स्थान—द्वारकासे ३ मीलपर राम-लक्ष्मण-मन्दिर है। उसमें अब महाप्रभु वल्लभाचार्यकी बैठक है। वहाँसे दो मीलपर सीतावाड़ी है, जिसमें पाप-पुण्यका छोटा द्वार है। द्वारकाके पास भेखड़खड़ीकी गुफा है, वहाँ भड़केश्वर शिव-मूर्ति है।

इतिहास—सत्ययुगमें महाराज रैवतने समुद्रके मध्यकी भूमिपर कुश बिछाकर यज्ञ किये थे, इससे इसे कुशस्थली कहा गया। पीछे यहाँ कुश नामक दानवने उपद्रव प्रारम्भ किया। उसे मारनेके लिये ब्रह्माजी राजा बलिके यहाँसे त्रिविक्रमभगवान्को ले आये। जब दानव शस्त्रोंसे नहीं मरा, तब भगवान्ने उसे भूमिमें गाड़कर उसके ऊपर उसीकी आराध्य कुशेश्वर लिङ्ग-मूर्ति स्थापित कर दी। दैत्यके प्रार्थना करनेपर भगवान्ने उसे वरदान किया कि 'कुशेश्वरका जो दर्शन नहीं करेगा, उसकी द्वारका-यात्राका आधा पुण्य उस दैत्यको मिलेगा।'

एक बार दुर्वासाजी द्वारका पधारे। उन्होंने अकारण ही रुक्मिणीजीको श्रीकृष्णसे वियोग होनेका शाप दिया। रुक्मिणीजीके दुखी होनेपर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने उन्हें आश्वासन दिया कि श्रीकृष्णचन्द्रकी मूर्तिका वियोग-कालमें वे पूजन कर सकेंगी। कहा जाता है वही श्रीरणछोड़रायकी मूर्ति है। वर्तमान मन्दिरका यद्यपि अनेकों बार जीर्णोद्धार हुआ है; किंतु उसकी प्रथम प्रतिष्ठा वज्रनाभद्वारा हुई मानी जाती है।

भगवान् श्रीकृष्णने विश्वकर्माद्वारा समुद्रमें (कुशस्थली-द्वीपमें) द्वारकापुरी बनवायी और मथुरासे सब यादवोंको यहाँ ले आये। श्रीकृष्णचन्द्रके लीला-संवरणके पश्चात् द्वारका समुद्रमें डूब गयी, केवल श्रीकृष्णचन्द्रका निज भवन नहीं डूबा। वज्रनाभने वहीं श्रीरणछोड़रायके मन्दिरकी प्रतिष्ठा की।

बेट-द्वारका

गोमती-द्वारकासे २० मील पूर्वोत्तर कच्छकी खाड़ीमें एक छोटा-द्वीप है। वेट (द्वीप) होनेसे इसे वेटद्वारका कहते हैं। द्वारकासे १८ मील दूर ओखा स्टेशन है। यहाँतक द्वारकासे मोटर-बस भी जाती है। ओखासे नौकाद्वारा समुद्रकी खाड़ी पार करके वेटद्वारका पहुँचना पड़ता है।

वेट-द्वारका द्वीप दक्षिण-पश्चिमसे पूर्वोत्तर लगभग ७ मील है। पूर्वोत्तरकी नोक हनुमान् अन्तरीप कही जाती है। वहाँ हनुमान्जीका मन्दिर है। वेटमें यात्रीको एक आना सरकारी टैक्स देना पड़ता है। वहाँ ठहरनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं।

श्रीकृष्ण-महल—द्वीपमें एक विशाल चौकमें दुमंजिले तीन तथा पाँच महल तीन मंजिलके हैं। द्वारमें होकर सीधे पूर्वकी ओर जानेपर दाहिनी ओर श्रीकृष्ण-भगवान्का महल मिलता है। इसमें पूर्वकी ओर प्रद्युम्नका मन्दिर है, मध्यमें रणछोड़जीका मन्दिर और उसके दूसरी ओर त्रिविक्रम (तीकमजी)-का मन्दिर है। इस मन्दिरके आगे एक ओर पुरुषोत्तमजी, देवकी माता तथा माधवजीके मन्दिर हैं। कोटके दक्षिण-पश्चिमकी ओर अम्बाजीका मन्दिर है। उसके पूर्व गरुड़-मन्दिर है।

रणछोड़जीके महलके समीप सत्यभामा और जाम्बवतीके महल हैं। पूर्वकी ओर साक्षीगोपालका मन्दिर है और उत्तर रुक्मिणीजी तथा श्रीराधिकाजीका मन्दिर है। जाम्बवतीके महलमें जाम्बवती-मन्दिरसे पूर्व लक्ष्मीनारायण-मन्दिर है। इसी प्रकार रुक्मिणीके महलमें मन्दिरके पूर्व गोवर्धननाथजीका मन्दिर है।

अन्य मन्दिर—वेट-द्वारकामें रणछोड़-सागर, रत्न-तालाब, कचारी-तालाब, शङ्ख-तालाब आदि कई जलाशय हैं और मुरली-मनोहर, हनुमान टेकरी, देवी-मन्दिर, नवग्रह-मन्दिर, नीलकण्ठ महादेव आदि कई मन्दिर हैं। हनुमान् अन्तरीपके हनुमान्-मन्दिरसे थोड़ी

श्रीद्वारकाधाम एवं उसके आस-पास
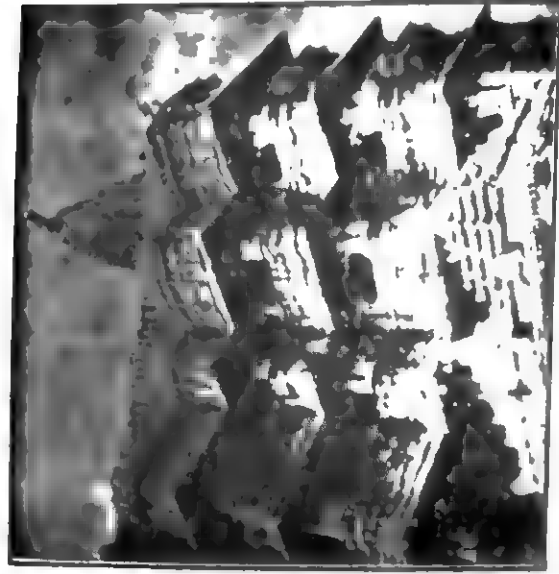
श्रीद्वारकाधीश-मन्दिरके सभामण्डप (लडवा-मन्दिर) का अगला भाग
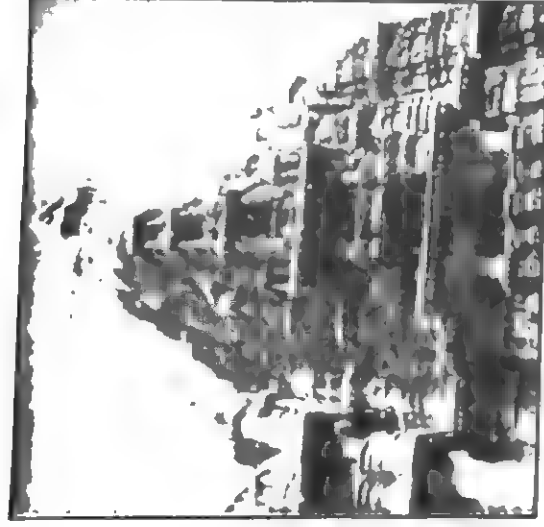
श्रीद्वारकाधीश-मन्दिर, द्वारका

शारदा-मठमें शारदा-मन्दिर, द्वारका

श्रीद्वारकाधीश-मन्दिर, मूल द्वारका
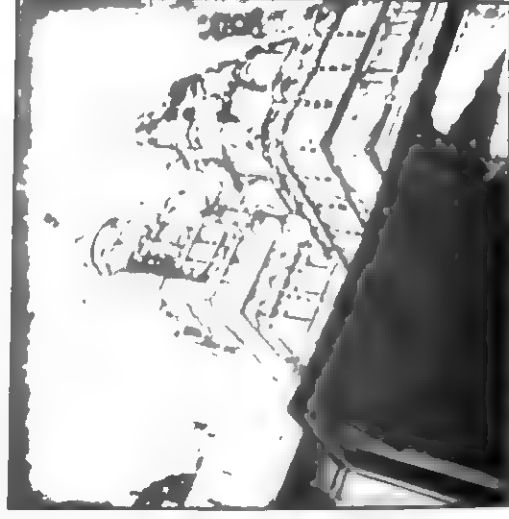
श्रीरणछोड़जीका मन्दिर, डाकोर

द्वारकाका निकटवर्ती गोपी-तालाब

Section_19_2_Back

सौराष्ट्र एवं मध्यप्रदेशके कुछ पवित्र एवं दर्शनीय स्थल
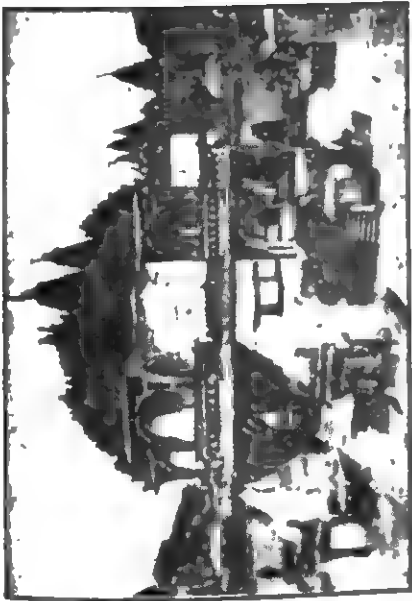
शत्रुञ्जय पहाड़ीका मुख्य जैन-मन्दिर

स्वामी श्रीप्राणनाथजीका मुख्य-मन्दिर, पद्मावती

श्रीसुदामा-मन्दिर, पोरबंदर

बापूका जन्म-स्थान (सूतिका-गृह, पोरबन्दर)
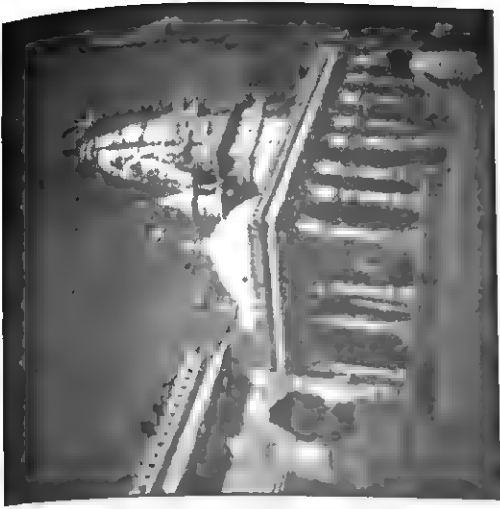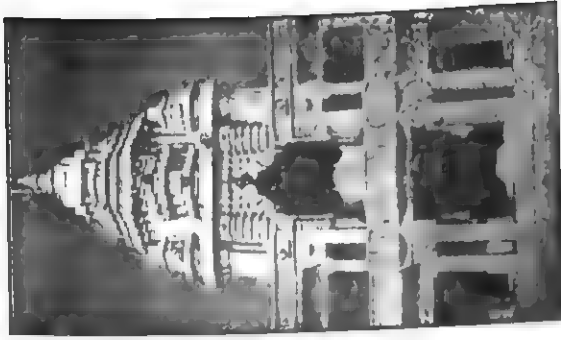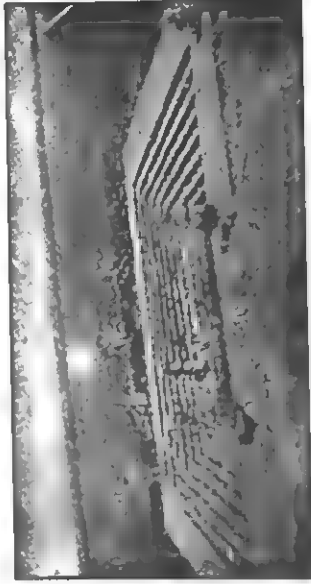
पिण्डतारक-कुण्ड, पिंडारा

गांधी-कीर्ति-मन्दिर, पोरबंदर

दूरपर योगासनके स्थान हैं और सात-आठ कुण्ड हैं।

शङ्खोद्धार—श्रीकृष्ण-महलसे लगभग आध मील दूर शङ्खोद्धार तीर्थ है। यहाँ शङ्ख-सरोवर और शङ्खनारायणका मन्दिर है। कहा जाता है यहीं श्रीकृष्णने शङ्खासुरको मारा था। शङ्खनारायणभगवान्‌की मूर्तिमें दशावतारोंकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है।

परिक्रमा—समुद्रके किनारे चरण-गोमती, नवग्रह-चरण, पद्मतीर्थ, पाँच कुआँ, कल्पवृक्ष, कालिय-नाग होते हुए शङ्खनारायणका दर्शन करके परिक्रमा पूर्ण की जाती है।

आस-पासके तीर्थ

गोपी-तालाब—बेट-द्वारकासे नौकाद्वारा ओखा-पोर्ट न उतरकर मेंदरडा ग्रामके पास उतरें तो वहाँसे २ मीलपर गोपी-तालाब मिलता है। ओखासे भी गोपी-तालाब जा सकते हैं, मोटर-मार्ग है। ओखासे गोमती-द्वारकाके मोटर-मार्गपर गोपी-तालाब तथा नागनाथ आते हैं। गोपी-तालाब गोमती-द्वारकासे १३ मील और बेट-द्वारकाकी खाड़ी (मेंदरडा) से २ मील है।

यहाँ गोपी-तालाब नामक कच्चा सरोवर है। सरोवरमें पीले रंगकी मिट्टी है, जिसे गोपी-चन्दन कहते हैं। यहाँ पासमें धर्मशाला, श्रीगोपीनाथजीका मन्दिर एवं श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक तथा श्रीराधाकृष्णका मन्दिर है।

नागनाथ—गोपीतालाबसे ३ मील और गोमती-द्वारकासे १० मीलपर नागेश्वर गाँव है। यहाँ नागनाथ शिवका छोटा मन्दिर है। कुछ लोग द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंके अन्तर्गत नागेशलिङ्ग इसीको मानते हैं।

पिंडारा—इस क्षेत्रका प्राचीन नाम पिण्डारक या पिण्डतारक है। यह स्थान द्वारकासे लगभग २० मील दूर है। द्वारका-जामनगर रेलवे-लाइनपर जामनगरसे ५४ मील दूर भोपालका स्टेशन है। यहाँसे पिंडारा १२ मील दूर है। मोटर-बस जाती है।

यहाँ एक सरोवर है। सरोवरके तटपर यात्री श्राद्ध करके दिये हुए पिण्ड सरोवरमें डाल देते हैं। वे पिण्ड सरोवरमें डूबते नहीं, जलपर तैरते रहते हैं। यहाँ कपालमोचन महादेव, मोटेश्वर महादेव तथा ब्रह्माजीके मन्दिर हैं। श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है।

कहा जाता है यहाँ महर्षि दुर्वासाका आश्रम था। महाभारत-युद्धके पश्चात् पाण्डव सभी तीर्थोंमें अपने मृत बान्धवोंका श्राद्ध करते यहाँ आये। यहाँ उन्होंने लोहेका एक पिण्ड बनाया और जब वह पिण्ड भी जलपर तैर गया, तब उन्हें अपने बान्धवोंके मुक्त होनेका विश्वास हुआ। कहते हैं, महर्षि दुर्वासाके वरदानसे इस तीर्थमें पिण्ड तैरते हैं।

माँगरोल

(लेखक—श्रीगोमतीदासजी वैष्णव)

यह गुजरातका प्रसिद्ध स्थान द्वारकासे १५ योजन दूर है। कहा जाता है भक्त नरसी मेहताके चाचा श्रीपर्वतराय मेहता माँगरोलसे प्रतिदिन तुलसी-मंजरी ले जाकर द्वारकामें श्रीरणछोड़रायको अर्पित करते थे। अड़सठ वर्षकी अवस्थामें जब उनके लिये इतनी लंबी यात्रा प्रतिदिन सम्भव न रही, तब स्वयं द्वारकानाथ श्रीविग्रहरूपमें माँगरोलमें प्रकट हुए और गोमतीतीर्थ भी प्रकट हुआ। माँगरोलमें उसी समयका श्रीभगवान्‌का मन्दिर है तथा पासमें गोमतीतीर्थ सरोवर है। यह स्थान समुद्रतटपर है।

कामनाथ—माँगरोलसे ६ मीलपर कामनाथ महादेवका मन्दिर है। श्रावणमें मेला लगता है।

नागह्रद—कामनाथसे एक मीलपर नागह्रद है। कहा जाता है यहाँ सर्पका काटा पहुँच जाय तो मरता नहीं।

माधवपुर—वहाँसे दो योजन दूर यह स्थान है। भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने रुक्मिणीजीके हरणके पश्चात् यहाँ विधिपूर्वक उनका पाणिग्रहण किया था। यहाँ माँगरोल, केशोद स्टेशन तथा पोरबंदरसे बस-सर्विस चलती है।

गढ़का—यह ग्राम राजकोटसे दो योजन दूर है। मूला नामक एक भक्तके लिये प्रभु रणछोड़राय द्वारकासे घोड़ेपर बैठकर यहाँ दर्शन देने पधारे थे। घोड़ेके और रणछोड़रायके चरण-चिह्न यहाँके मन्दिरमें हैं।

नारायण-सर

(लेखक—श्रीसुतीक्ष्णमुनिजी उदासीन)

कच्छ प्रदेशमें यह बड़ा प्राचीन तीर्थ समुद्र-तटपर है। यहाँपर पहुँचनेके लिये बंबईसे जहाजद्वारा मांडवी बंदरगाह होते हुए कच्छकी राजधानी भुज आकर भुजसे मोटरद्वारा आना होता है। भुजसे मोटर-बस सप्ताहमें दो दिन (मंगल तथा रविवारको) जाती है। भुजसे नारायणसर ८० मील है। यहाँ कार्तिक-पूर्णिमाके मेलेके अवसरपर जाना सुविधाजनक है।

नारायण-सर अच्छी छोटी-सी बस्ती है। ठहरनेको दो धर्मशालाएँ हैं। यहाँ आदि-नारायण, लक्ष्मीनारायण, गोवर्द्धननाथ, टीकमजी आदिके दर्शनीय मन्दिर हैं। श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक नारायण-सरोवरके पास ही है। आगे दो मीलपर कोटेश्वर-महादेवका स्थान है। पहले कच्छकी राजधानीका नाम कोटीश्वर था। कनिंघम तथा चीनी यात्री ह्वेनसांगने अपने वर्णनोंमें कच्छकी राजधानीका नाम कियेशिफाली लिखा है। उसका शुद्ध रूप अध्यापक लोशन कच्छेश्वर बतलाते हैं।

नारायण-सरसे २४ मील मोटर-मार्गसे आशापुरी देवीका प्रधान मन्दिर आता है। आशापुरी देवीकी धूप बच्चोंकी नजर उतारनेमें अच्छा काम देती है।

कोटेश्वर

नारायण-सरोवरसे आगे समुद्रतटपर बंदरगाह है। बस्तीसे एक मील दूर एक टीलेपर कोटेश्वर शिव-मन्दिर है। यहाँ एक नीलकण्ठ-मन्दिर भी है।

भुजसे १३ मील दूर खेटकोटमें एक प्राचीन शिव-मन्दिर है। कच्छके मरुस्थलके पास एक गाँवमें एक प्राचीन सूर्य-मन्दिर है।

भद्रेश्वर

कच्छ देशके इस तीर्थका मार्ग कठिन है। कच्छके रण (मरुभूमि)-को पार करके ही यहाँ पहुँचना होता है। प्रसिद्ध दानवीर झगड़ू साहका नगर भद्रावती यहीं है। यहाँ महावीरस्वामीका विशाल मन्दिर है। यह मन्दिर समुद्रतटके समीप है।

राणकपुरके मन्दिरके समान ही यह मन्दिर भी विशाल है और आस-पास मन्दिरोंका एक पूरा समूह है। यहाँ धर्मशाला और यात्रियोंके लिये अन्य आवश्यक सुविधाओंकी व्यवस्था है। फाल्गुन-शुक्ला पञ्चमीको मेला लगता है। मांडवी बंदरगाह होकर समुद्र-मार्गसे यहाँ आना सुविधाजनक है।

सुथरी—कच्छमें ही यह स्थान है। यहाँ शान्तिनाथ स्वामी तथा धृतपल्लव पार्श्वनाथजीके सुन्दर मन्दिर हैं।

कोठार—कच्छ प्रदेशका सबसे ऊँचा मन्दिर यहाँ है। यह जैन-मन्दिर ७४ फुट ऊँचा है।

रापर—कच्छमें मनफरासे २६ मील दूर यह स्थान है। यहाँ अत्यन्त प्राचीन विशाल जैनमन्दिर है। उसमें चिन्तामणि पार्श्वनाथकी मूर्ति मुख्य स्थानपर प्रतिष्ठित थी। इस मूर्तिके चोरी चले जानेपर पार्श्वनाथजीकी दूसरी प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी है।

अक्षरदेरी-गोंडल

(लेखक—श्रीहंसा बी० पटेल)

पश्चिम-रेलवेकी राजकोट-वेरावल लाइनपर राजकोटसे २४ मील दूर गोंडल स्टेशन है। गोंडल सौराष्ट्रका अच्छा नगर है। यहाँ अक्षरदेरी नामसे विख्यात स्वामिनारायण-सम्प्रदायका मन्दिर है। यह मन्दिर स्वामिनारायण-सम्प्रदायके द्वितीय आचार्य गुणातीतानन्द स्वामीके निर्वाण-स्थानपर बना है। इसमें उनकी समाधि है। समाधिके ऊपर विशाल मन्दिर बना है। अनेकों धर्मशालाएँ यहाँ हैं। गोंडलमें एक और भी स्वामिनारायण-मन्दिर है।

ओसमकी मातृमाता

काठियावाड़में गोंडलके महालगाम पाटणवालके समीप ओसम नामका पर्वत है। पर्वतका पूर्वभाग हिडिम्बा-टोंक कहा जाता है। इसीपर मातृमाताका मन्दिर है। पर्वतपर चढ़नेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। देवीका मन्दिर एक गुफामें है। गुफामें ही छत्तीस वर्गफुटका एक छोटा कुण्ड है, जिसका जल कभी नहीं सूखता है।

कहा जाता है प्रथम वनवासके समय माता कुन्तीके साथ पाण्डव यहाँ आये थे। यहाँ भीमसेनने हिडिम्ब राक्षसको मारा तथा उसकी बहिन हिडिम्बासे विवाह किया था। पर्वतके ऊपर धर्मशालाएँ बनी हैं। श्रावण-अमावस्याको यहाँ मेला लगता है।

पोरबंदर (सुदामापुरी)

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके मित्र विप्रवर सुदामाका धाम होनेसे यह तीर्थ-स्थान तो है ही, महात्मा गाँधीजीकी जन्मभूमि होनेसे अब यह भारतका राष्ट्रियतीर्थ भी हो गया है।

मार्ग

अहमदाबादसे वीरमगाम होकर या मेहसाणासे सीधे सुरेन्द्रनगर जाना पड़ता है। पश्चिम-रेलवेकी एक लाइन सुरेन्द्रनगरसे भावनगरतक गयी है। इस लाइनके धोला स्टेशनसे पोरबंदरतक एक लाइन और जाती है। पोरबंदर समुद्र-किनारेका नगर है। द्वारकासे पोरबंदर जानेवालोंको जामनगर, राजकोट, जेतलसर होकर पोरबंदर जाना चाहिये। जेतलसरसे बेरावळ ट्रेन जाती है। अतः वेरावळसे पोरबंदर जानेके लिये जेतलसरमें रेल बदलनी पड़ती है। बंबई, वेरावळ या द्वारकासे समुद्रके रास्ते जहाजद्वारा भी पोरबंदर जा सकते हैं।

ठहरनेका स्थान

स्टेशनके पास डोंगरसी भांटियाकी धर्मशाला है। स्टेशनसे नगर थोड़ी ही दूर है।

तीर्थ-दर्शन

पोरबंदर नगरमें महात्मा गाँधीका कीर्ति-मन्दिर है। उसमें वह कमरा सुरक्षित है, जिसमें उनका जन्म हुआ था।

सुदामा-मन्दिर—यह मन्दिर नगरसे बाहरके भागमें राणा साहबके बगीचेमें स्थित है। मन्दिरमें सुदामाजी और उनकी पत्नीकी मूर्तियाँ हैं। यह मन्दिर एक विस्तृत घेरेमें है। पासमें एक छोटा जगन्नाथजीका मन्दिर है। सुदामाजीके मन्दिरके पश्चिम भूमिपर चुनेकी पक्की लकीरोंसे चक्रव्यूह बना है। यहाँ आस-पास बिल्वेश्वर-मन्दिर, गायत्री-मन्दिर, हिङ्गलाज-भवानीका मन्दिर तथा गिरधरलालजीका मन्दिर है।

सुदामाजीके मन्दिरके पास केदार-कुण्ड है। वहाँ केदारेश्वर महादेवका मन्दिर है। केदार-कुण्डमें यात्री स्नान करते हैं। नगरमें श्रीराम-मन्दिर, श्रीराधाकृष्ण-मन्दिर, जगन्नाथ-मन्दिर, पञ्चमुखी महादेव और अन्नपूर्णाका मन्दिर है।

आस-पासके तीर्थ

मूलद्वारका—पोरबंदरसे १६ मीलपर बिसवाड़ा ग्राम है। यहाँ मूल-द्वारका मानी जाती है। यहाँपर रणछोड़रायका मन्दिर है और उसके आस-पास दूसरे छोटे अनेकों मन्दिर हैं। पोरबंदरसे यहाँतक मोटर जाती तो है, किंतु मार्ग अच्छा नहीं है।

हर्षद माता—मूल-द्वारकासे ८ मील दूर समुद्रकी खाड़ीके किनारे मियाँगाँव है। वहाँसे दो मील समुद्री खाड़ीको पार करके हर्षदमाता (हरसिद्धि) देवीका मन्दिर मिलता है। पुराना मन्दिर पर्वतपर था। अब मन्दिर पर्वतकी सीढ़ियोंके नीचे है। कहा जाता है पहले मूर्ति पर्वतपर थी; किंतु जहाँ समुद्रमें देवीकी दृष्टि पड़ती थी, वहाँ पहुँचते ही जहाज डूब जाते थे। गुजरातके प्रसिद्ध दानवीर झगड़ूसाहने अपनी आराधनासे संतुष्ट करके देवीको नीचे उतारा। अन्तमें झगड़ूसाह जब अपनी बलि देनेको उद्यत हुए, तब देवीका उग्ररूप शान्त हो गया। कहा जाता है महाराज विक्रमादित्य यहाँसे आराधना करके देवीको उज्जैन ले गये। उज्जैनके हरसिद्धि-मन्दिरमें देवी दिनमें और यहाँ रात्रिमें रहती हैं। दोनों स्थानोंमें मुख्यपीठपर यन्त्र हैं और उसके पीछेकी देवी-मूर्तियाँ दोनों स्थानोंकी सर्वथा एक-जैसी हैं। यहाँ छोटा बाजार है और मन्दिरके पास यात्रियोंके ठहरनेकी भी व्यवस्था है; किंतु मूल-द्वारकासे यहाँतकका मार्ग अच्छा नहीं है।

माधव-तीर्थ—पोरबंदरसे ४० मील दूर समुद्र-किनारे माधवपुर नामका बंदरगाह है। यहाँ मलुमती नदी

समुद्रमें मिलती है। यहाँ ब्रह्मकुण्ड है और श्रीकृष्ण तथा रुक्मिणीका मन्दिर है। यहाँके लोग इसी स्थानको रुक्मिणीजीके पिता भीष्मककी राजधानी कुण्डिनपुर मानते हैं। श्रीकृष्ण मन्दिरके थोड़ी दूरपर प्राचीन शिव-मन्दिर भी है।

काँटेला—पोरबंदरसे सात मीलपर समुद्र-किनारे यह छोटा ग्राम है। ग्रामके उत्तर रेवतीकुण्ड तथा रैवतेश्वर महादेवका मन्दिर है। यहाँ एक महाकालेश्वरका प्राचीन मन्दिर है।

श्रीनगर—यह पोरबंदरके पास एक छोटा-सा गाँव है। गाँवमें एक प्राचीन सूर्य-मन्दिर है।

बरडाकी आशापुरी

नवानगर राज्यके दक्षिण प्राचीन राजधानी धुमली है। माणवडसे ४ मील दक्षिण प्राचीन खँडहरोंके चिह्न पर्वत-शिखरतक देखे जाते हैं। पर्वत-शिखरपर एक दुर्ग है। पर्वतके सबसे उच्च शिखरपर आशापुरी देवीका मन्दिर है। यहाँ आनेका मार्ग पोरबंदरसे आगे साखपूर स्टेशनसे पैदलका है।

अन्य मन्दिर—यहाँके भग्न भवनोंमें नवलखा-मन्दिर मुख्य है। यह खँडहरोंके मध्यमें है। इस मन्दिरका शिवलिङ्ग अब पोरबंदरके केदारनाथ-मन्दिरमें है। इस मन्दिरकी कला उत्तम है।

पर्वतपर चढ़ते समय मार्गमें तीन प्राचीन मन्दिर मिलते हैं। ये मन्दिर भी ध्वस्तप्राय हैं। वहाँ कुछ भग्न मूर्तियाँ दीखती हैं।

रामपोलसे बाहर एक वापी है। वहाँसे आगे कंसारि-मन्दिर है। पासमें अन्य अनेक छोटे मन्दिर हैं।

बीलेश्वर—पोरबंदरसे १७ मीलपर साखपुर स्टेशन है। यहाँसे बैलगाड़ीमें या पैदल जाना पड़ता है। बरडाके प्रारम्भमें ही यह स्थान है। खोराणा स्टेशनसे (सुरेन्द्रनगर ओखा लाइनपर) यह स्थान दो मील दूर है।

बीलेश्वर (बिल्वेश्वर) प्राचीन तीर्थ-स्थान है। कहा जाता है भगवान् श्रीकृष्णने यहाँ तप करके भगवान् शङ्करको प्रसन्न किया था। यहाँ बिल्वेश्वर शिव-मन्दिर है। एक छोटी नदी पासमें है। बिल्वेश्वरका लिङ्ग फटा हुआ है। यहाँ श्रावणमें सोमवारको मेला लगता है।

कीलेश्वर—सुरेन्द्रनगर-ओखा लाइनपर जामनगर स्टेशनसे उतरकर यहाँ आया जा सकता है। इस मार्गसे आनेपर बहुत पर्वत लाँघने नहीं पड़ते। यहाँतक सड़कका मार्ग है। मोटर-बस जाती है।

कीलेश्वर नदीके किनारे कीलेश्वर-शिवमन्दिर है। यह मन्दिर प्राचीन है। अबतक यह जीर्णदशामें था, उसका जीर्णोद्धार हुआ है। कहा जाता है यह मन्दिर पाण्डवोंके समयका है।

गुप्त प्रयाग

(लेखक—शास्त्री श्रीगौरीशङ्कर भीमजी पुरोहित)

पश्चिमी रेलवेकी खिजड़िया-वेरावळ लाइनपर तलाला स्टेशनसे एक लाइन देलवाड़ातक जाती है। देलवाड़ासे गुप्त प्रयागतक पक्की सड़क जाती है।

गुप्त प्रयागका स्कन्दपुराणमें बहुत माहात्म्य आया है। यहाँ भगवान् माधवका मन्दिर है। गङ्गा, यमुना और सरस्वती नामके कुण्ड हैं। इनके अतिरिक्त शृगालेश्वर महादेवका मन्दिर तथा त्रिवेणी-संगम कुण्ड, ब्रह्मा-विष्णु तथा रुद्र नामके कुण्ड, मातृकाओंका मन्दिर, सिद्धेश्वर, गन्धर्वेश्वर, उरगेश्वर तथा उत्तरेश्वर महादेवके मन्दिर हैं। नृसिंहजीका प्राचीन मन्दिर और उससे लगा हुआ बलदेवजीका मन्दिर है। महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यकी बैठक है।

यात्रियों ठहरनेके लिये यहाँ चार धर्मशालाएँ हैं। यहाँ श्रावणी अमावास्याको मेला लगता है।

आस-पासके तीर्थ

ऊना—तलाला-देलवाड़ा लाइनपर ही देलवाड़ासे ४ मीलपर ऊना स्टेशन है। ऊना नगर है। यहाँ श्रीदामोदररायजीका मन्दिर है। भक्तप्रवर नरसी मेहताको श्रीदामोदररायजीके श्रीविग्रहने ही अपने गलेकी माला पहनायी थी।

ऊनासे आध मील दूर नरसी मेहताकी पुत्री कुँवरबाईका मामेरा है। यहींपर भगवान्ने कुँवरबाईका भात भरा था।

तुलसीश्याम

यह स्थान ऊना नगरसे २१ मील दूर है। ऊनासे यहाँतक मोटर-बस चलती है।

इसका प्राचीन नाम तलश्याम है। कहा जाता है

भगवान्‌ने यहाँ तल नामक दैत्यका वध किया था। यहाँ गरम पानीके सात कुण्ड हैं। यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

तुलसीश्यामसे ४ मील दूर 'भीमचास' नामक गरम पानीका स्थान है।

द्रोणेश्वर या दीपिया महादेव

तुलसीश्यामसे यह स्थान ८ मील है। सवारीकी सुविधा है। यहाँसे मोटर-बसद्वारा ऊना जाकर रेलद्वारा वडविमाला स्टेशन उतरकर वहाँसे ताँगेद्वारा जा सकते हैं।

यहाँ शङ्करजीकी लिङ्ग-मूर्तिपर पर्वतसे अखण्ड जलधारा गिरती रहती है। समीपमें एक धर्मशाला है।

देलवाड़ा

यह तो स्टेशन ही है। इसका पुराना नाम देवलपुर है। यहाँ ऋषितोया (मच्छुन्दी) नदी है। यहाँपर यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

यहाँपर नारदादित्य, साम्बादित्य, अपरनारायण तथा चतुर्मुख विनायकके मन्दिर हैं।

सारसिया

(लेखक—श्रीमहीपतराम एच० जोशी)

पश्चिम-रेलवेकी खिजड़िया-वेरावळ लाइनपर धारी स्टेशन है। वहाँसे सारसिया ग्राम जानेका मार्ग है।

सारसियामें भगवान् श्यामसुन्दरका मन्दिर है। इस मन्दिरमें दो प्रतिमाएँ श्रीश्यामसुन्दर तथा रुक्मिणीजीकी नीलमकी है। कहा जाता है स्वप्नादेश पाकर श्यामसुन्दर-मन्दिरके समीप भूमि खोदनेसे ये मूर्तियाँ निकली हैं। सूर्योदयसे सूर्यास्ततक मूर्तियोंसे किरणें निकलती हैं। सूर्यास्तके पश्चात् मूर्तियाँ श्याम दीखती हैं।

प्रभास (वेरावळ या सोमनाथ)

सोमनाथ-माहात्म्य

सोमलिङ्गं नरो दृष्ट्वा सर्वपापात् प्रमुच्यते।
लब्ध्वा फलं मनोऽभीष्टं मृतः स्वर्गं समीहते॥
यद्यत्फलं समुद्दिश्य कुरुते तीर्थमुत्तमम्।
तत्तत्फलमवाप्नोति सर्वथा नात्र संशयः॥
प्रभासं च परिक्रम्य पृथिवीक्रमसम्भवम्।
फलं प्राप्नोति शुद्धात्मा मृतः स्वर्गे महीयते॥

(शिवपुरा० कोटिरुद्र० १५। ५६—५८)

'(सोमनाथ ज्योतिर्लिङ्गोंमें प्रथम है) इसके दर्शन मात्रसे मनुष्य सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है और अभीष्ट फल प्राप्तकर मरनेपर स्वर्गको प्राप्त होता है। मनुष्य जिन-जिन कामनाओंको लक्ष्यमें रखकर इस तीर्थका सेवन करता है, वह उन-उन फलोंको प्राप्त कर लेता है—इसमें तनिक भी संशय नहीं है। प्रभासकी परिक्रमा करके मनुष्य पृथ्वीकी परिक्रमाका फल पाता है और वह शुद्धात्मा पुरुष मरनेपर स्वर्ग जाता है।'

भगवान् शङ्करके द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें सोमनाथ-लिङ्ग प्रभासमें है। यह स्थान लकुलीश-पाशुपत मतके शैवोंका केन्द्रस्थल रहा है। इसके पास ही भगवान् श्रीकृष्णके चरणमें जरा नामक व्याधका बाण लगा था। इस प्रकार यह शैव, वैष्णव दोनोंका ही महातीर्थ है। कालक्रमसे यहाँ आततायियोंके अनेक आक्रमण हुए और सोमनाथ-मन्दिर अनेक बार गिरा तथा बना है। इस स्थानको वेरावळ, सोमनाथपाटण, प्रभास या प्रभासपाटण कहते हैं।

मार्ग

सौराष्ट्रमें पश्चिमी रेलवेकी राजकोट-वेरावल और खिजड़िया-वेरावळ लाइनें हैं। दोनोंसे वेरावळ जाया जा सकता है। वेरावळ समुद्र-तटपर बंदरगाह है। यहाँ बंबईसे सप्ताहमें एक बार जहाज आता है। बंबईसे यहाँ हवाई जहाज भी आता है।

वेरावळ स्टेशनसे प्रभासपाटण ३ मील दूर है। स्टेशनसे पक्की सड़क है। बस चलती है।

वेरावळ स्टेशनके पास यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

तीर्थ-दर्शन

अग्नि-कुण्ड—प्रभासपाटण नगरके बाहर समुद्रका नाम अग्नि-कुण्ड है। यात्री यहाँ स्नान करके तब प्राची त्रिवेणीमें स्नान करने जाते हैं।

सोमनाथ—सोमनाथका प्राचीन मन्दिर तो बार-बार आततायियोंद्वारा नष्ट किया गया और बार-बार बना है। अब जो नवीन मन्दिर बना है, वह पुराने मन्दिरके भग्नावशेषको हटाकर पुराने मन्दिरके स्थानपर ही बना है। यह मन्दिर समुद्रके किनारे है। सरदार पटेलकी

प्रेरणासे इसका निर्माण प्रारम्भ हुआ। मन्दिर भव्य है।

अहल्याबाईका मन्दिर—सोमनाथगढ़ीमें सोमनाथ-मन्दिरसे कुछ ही दूरीपर अहल्याबाईका बनवाया सोमनाथ मन्दिर है। यहाँ भूमिके नीचे सोमनाथ-लिङ्ग है। भूगर्भमें होनेसे अँधेरा रहता है। वहाँ पार्वती, लक्ष्मी, गङ्गा, सरस्वती और नन्दीकी भी मूर्तियाँ हैं। लिङ्गके ऊपर भूमिके ऊपरी भागमें अहल्येश्वर-मूर्ति है। मन्दिरके घेरेमें ही एक ओर गणेशजीका मन्दिर है और उत्तरी द्वारके बाहर अघोर-लिङ्गमूर्ति है।

नगरके अन्य मन्दिर—अहल्याबाईके मन्दिरके पास ही महाकालीका मन्दिर है। इसके अतिरिक्त नगरमें गणेशजी, भद्रकाली तथा भगवान् दैत्यसूदन (विष्णु) के मन्दिर हैं। नगर-द्वारके पास गौरीकुण्ड नामक सरोवर है। वहाँ प्राचीन शिवलिङ्ग है।

प्राची त्रिवेणी—यह स्थान नगर-द्वारसे पौन मील दूर है। यहाँ जाते समय मार्गमें पहले ब्रह्मकुण्ड नामक बावली मिलती है। उसके पास ब्रह्मकमण्डलु नामक कूप और ब्रह्मेश्वर शिव-मन्दिर है। आगे आदि-प्रभास और जल-प्रभास—ये दो कुण्ड हैं। नगरके पूर्व हिरण्या, सरस्वती और कपिला नदियाँ समुद्रमें मिलती हैं। इसीसे इसे प्राची त्रिवेणी कहते हैं। कपिला सरस्वतीमें, सरस्वती हिरण्यामें और हिरण्या समुद्रमें मिलती है।

प्राची-त्रिवेणी-संगमसे थोड़ी दूर सूर्य-मन्दिर है। यह भग्नप्राय है। उससे आगे एक गुफामें हिंगलाज भवानी तथा सिद्धनाथ महादेवके मन्दिर हैं। पासमें एक वृक्षके नीचे बलदेवजीका मन्दिर है। कहा जाता है बलदेवजी यहाँसे शेषरूप धारण करके पाताल गये थे। पास ही श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है। यहाँ त्रिवेणी माता, महाकालेश्वर, श्रीराम, श्रीकृष्ण तथा भीमेश्वरके मन्दिर हैं। इसे देहोत्सर्गतीर्थ कहते हैं। श्रीकृष्णचन्द्र भालक-तीर्थमें बाण लगनेके बाद यहाँ पधार गये और यहाँसे अन्तर्धान हुए। कल्पान्तरकी कथा यह भी है कि यहाँ उनके देहका अग्नि-संस्कार हुआ।

यादव-स्थली—देहोत्सर्ग-तीर्थसे आगे हिरण्या नदीके किनारे यादव-स्थली है। यहाँ परस्पर युद्ध करके यादवगण नष्ट हुए। यहाँसे नगरमें पीछे लौटते समय नृसिंह-मन्दिर मिलता है।

बाण-तीर्थ—वेरावळ स्टेशनसे सोमनाथ आते समय मार्गमें समुद्र-किनारे यह स्थान मिलता है। यह स्टेशनसे लगभग १ मील दूर है। यहाँ शशिभूषण महादेवका प्राचीन मन्दिर है। बाण-तीर्थसे पश्चिम समुद्र-किनारे चन्द्रभागा-तीर्थ है। यहाँ बालूमें कपिलेश्वर महादेवका स्थान है।

भालक-तीर्थ—कुछ लोग बाण-तीर्थको ही भालक-तीर्थ कहते हैं। बाण-तीर्थसे डेढ़ मील पश्चिम भालुपुर ग्राममें भालक-तीर्थ है। यहाँ एक भालकुण्ड सरोवर है। उसके पास पद्मकुण्ड है। एक पीपलके वृक्षके नीचे भालेश्वर (प्रकटेश्वर) शिवका स्थान है। इसे मोक्ष-पीपल कहते हैं। कहते हैं यहीं पीपलके नीचे बैठे श्रीकृष्णके चरणमें जरा नामक व्याधने बाण मारा था। चरणमें लगा बाण निकालकर भालकुण्डमें फेंका गया। कर्दमेश्वर महादेवका मन्दिर तथा कर्दम-कुण्ड भी है। भालकुण्डके पास दुर्गाकूट गणेशका मन्दिर है।

इतिहास

सोमनाथ अनादि तीर्थ है। दक्ष प्रजापतिकी सत्ताईस कन्याएँ चन्द्रमासे ब्याही गयी थीं, किंतु उसमें चन्द्रमाका अनुराग केवल रोहिणीपर था। इस पक्षपातके कारण दक्षने चन्द्रमाको क्षय होनेका शाप दिया। अन्तमें चन्द्रमा प्रभास-क्षेत्रमें सोमनाथकी आराधना करके शापसे मुक्त हुए।

भगवान् ब्रह्माने भूमि खोदकर प्रभास-क्षेत्रमें कुक्कुटाण्डके बराबर स्वयम्भू स्पर्श-लिङ्ग सोमनाथके दर्शन किये। उस लिङ्गको दर्भ और मधुसे आच्छादित करके ब्रह्माने उसपर ब्रह्मशिला रख दी और उसके ऊपर सोमनाथके बृहल्लिङ्गकी प्रतिष्ठा की। चन्द्रमाने उस बृहल्लिङ्गका अर्चन किया।

भगवान् सोमनाथका वह प्राचीन मन्दिर कब नष्ट हुआ, पता नहीं। उसके स्थानपर दूसरा मन्दिर ६४९ ईसवी पूर्वमें बना; किंतु समुद्री आरब्य दस्युओंके आक्रमणमें वह भी नष्ट हो गया। तीसरा मन्दिर ईसाकी आठवीं शताब्दीमें बना और तब भी आततायियोंद्वारा नष्ट कर दिया गया, तब चौथा मन्दिर चालुक्य राजाओंने दसवीं शताब्दीके अन्तमें बनवाया। ११४४ ई०में मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ, किंतु अलाउद्दीन खिलजीने १२९६ ई० के आक्रमणमें इसे नष्ट कर दिया। अलाउद्दीनके लौटनेपर मन्दिर फिर बना और १४६९ ई०में महमूद बेधड़ाने उसे नष्ट किया। महमूदके ध्वंसपर मन्दिर फिर बन गया, किंतु वह मन्दिर भी टिक न सका। अन्तमें अहल्याबाईने उस मन्दिरसे कुछ दूरीपर नया सोमनाथ-मन्दिर बनवाया।

गुजरात एवं सौराष्ट्रके कुछ दर्शनीय विग्रह एवं स्थान

श्रीसोमनाथ-ज्योतिर्लिङ्ग, प्रभासपाटण

नवनिर्मित श्रीसोमनाथ-मन्दिर, प्रभासपाटण

भगवान् श्रीकृष्णके देहोत्सर्गका स्थान, प्रभासपाटण

भगवान् श्रीशुक्लनारायण, शुक्लतीर्थ

श्रीशामलाजीका मन्दिर—सामनेसे
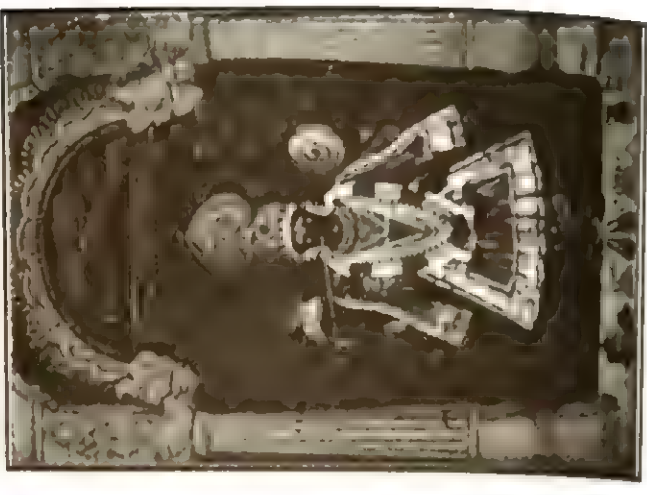
भगवान् श्रीदेव-गदाधर (शामलाजी)

जूनागढ़ तथा गिरनारके कुछ पवित्र स्थल

श्रीदत्त-पादुका, गिरनार

श्रीइन्द्रेश्वर-मन्दिर, जूनागढ़

श्रीअम्बाजी-मन्दिर, गिरनार
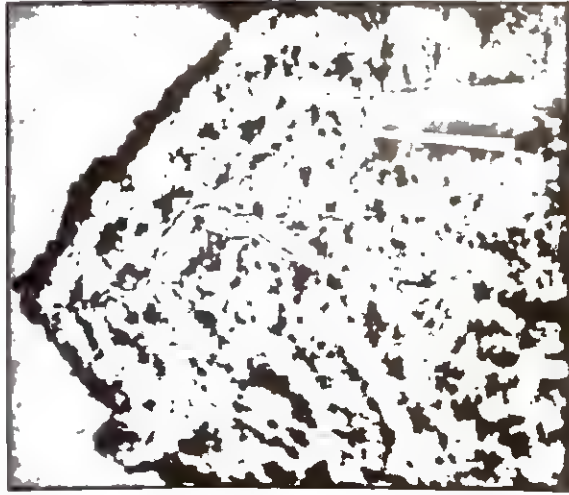
गिरनार पर्वतका एक दृश्य

गोरखमढ़ी, गिरनार

गिरनारके गगनभेदी जैन-मन्दिर

राजुलजीकी गुफा—कोटके बाहर १०० सीढ़ी बाद एक मार्ग राजुलजीकी गुफाको जाता है। वहाँ राजुलकी मूर्ति तथा नेमिनाथजीके चरण-चिह्न हैं। गुफामें बैठकर घुसना पड़ता है। मुख्यमार्गमें नेमिनाथजीका मन्दिर है और जटाशङ्कर हिंदू-धर्मशाला है।

सातपुड़ा—जटाशङ्कर धर्मशालासे आगे सातपुड़ा-कुण्ड है। यहाँ सात शिलाओंके नीचेसे जल आता है। यहाँ एक कुण्डसे अलग जल लेकर स्नान करनेकी सुविधा है। इस कुण्डको पवित्र तीर्थ मानते हैं। कुण्डके पास गङ्गेश्वर तथा ब्रह्मेश्वरके मन्दिर हैं। यहाँसे आगे दत्तात्रेयजीका मन्दिर और भगवान् सत्यनारायणका मन्दिर है। हनुमान्जी, भैरवजी आदिके भी स्थान हैं। उससे आगे महाकालीका मन्दिर है। इसे साचा काकाका स्थान भी कहते हैं। यहाँ यात्री ठहर सकते हैं।

अम्बिकाशिखर—महाकाली स्थानसे आगे अम्बिका-शिखर है। यह गिरनारका प्रथम शिखर है। यहाँ देवीका विशाल मन्दिर है। कहा जाता है भगवती पार्वती यहाँ हिमालयसे आगे निवास करती हैं। इस प्रदेशके ब्राह्मण विवाहके बाद वर-वधूको यहाँ देवीका चरणस्पर्श कराने ले जाते हैं। कुछ लोग इस स्थानको ५१ शक्तिपीठोंमें मानते हैं और कहते हैं यहाँ सतीका उदर-भाग गिरा था। जैन-बन्धु भी यहाँ दर्शन करने आते हैं और इसे अपना मन्दिर बतलाते हैं।

गोरक्षशिखर—अम्बिका शिखरसे थोड़े ऊपर यह शिखर है। यहाँ गोरखनाथजीने तपस्या की थी। यहाँपर गोरखनाथजीकी धूनी तथा उनके चरण-चिह्न हैं। यहाँ एक शिलाके नीचे लेटकर यात्री निकलते हैं। इसे योनिशिला कहते हैं। यहाँ नेमिनाथजीके चरण-चिह्न भी हैं।

दत्तशिखर—गोरक्ष-शिखरसे लगभग ६०० सीढ़ी नीचे उतरकर फिर ८०० सीढ़ी ऊपर चढ़ना पड़ता है। यहाँ गुरु दत्तात्रेयका तप:स्थान है। इस शिखरपर दत्तात्रेयजीकी चरण-पादुकाएँ हैं। यहाँ भी जैन-बन्धु आते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि यहींसे नेमिनाथजी मोक्ष गये थे। कुछ लोग उनका मोक्ष-स्थान आगेका शिखर मानते हैं और यहाँसे अन्य बहुत-से मुनि मोक्ष गये, ऐसा मानते हैं। एक शिलामें एक जैनमूर्ति यहाँ बनी है। यहाँ एक बड़ा घण्टा है।

नेमिनाथ-शिखर—गोरक्ष-शिखरसे नीचे उतरकर दत्तशिखरपर जानेसे पहले जैन यात्री इस शिखरपर जाते हैं। इसपर चढ़नेके लिये सीढ़ियाँ नहीं हैं। इसपर श्रीनेमिनाथजीकी काले पत्थरकी मूर्ति है और दूसरी शिलापर उनके चरण-चिह्न हैं। यहाँकी चढ़ाई कठिन है। कुछ लोग मानते हैं कि नेमिनाथजी यहाँसे मोक्ष गये हैं। कुछ लोग दत्तशिखरको उनके मोक्ष जानेका स्थान मानते हैं। यहाँसे उतरकर दत्त-शिखरपर जाना चाहिये।

जैन यात्री इस शिखरसे फिर गोरक्ष-शिखर लौटते हैं और वहाँसे अम्बिका-शिखर होते हुए सातपुड़ा (गोमुख) कुण्डके पाससे सहस्राम्रवन (सहसावन) जाते हैं। अधिकांश हिंदू यात्री भी दत्तशिखरसे लौट आते हैं। गोमुख-कुण्डसे दाहिनी ओर सहसावन है। वहाँ नेमिनाथजीने वस्त्राभूषण त्यागकर दीक्षा ग्रहण की थी।

महाकाली-शिखर—गोरक्ष-शिखरसे नीचे उतरकर दत्तात्रेय-शिखरपर चढ़नेसे पहले एक मार्ग दत्तशिखरके मार्गसे अलग दाहिनी ओर नीचे-नीचे आगे जाता है। यह मार्ग सीधे कमण्डलु-कुण्डपर जाता है। वहाँसे एक पर्वतीय पगडंडी महाकाली-शिखरपर जाती है। यह सप्तम शिखर है। यहाँ गुफामें महाकालीकी मूर्ति और उनका खप्पर है। यहाँतक यात्री कम ही आ पाते हैं।

पाण्डवगुफा—कमण्डलु-कुण्डसे एक मार्ग पाण्डव-गुफा जाता है। रास्ता बहुत खराब है। कहा जाता है पाण्डव वहाँ आये थे।

सीतामढ़ी—दत्तशिखरसे लौटकर अम्बिकाशिखरके नीचे सातपुड़ा (गोमुख) कुण्डसे एक मार्ग दाहिनी ओर जाता है। इस मार्गमें आगे सेवादासजीका स्थान है और उसके पास पत्थरचट्टी स्थान है। दोनों स्थानोंपर ठहरनेकी व्यवस्था है। वहाँसे नीचे जैन यात्रियोंका सहसावन है और उसके आगे सीतामढ़ी स्थान है। यहाँ श्रीराममन्दिर है तथा रामकुण्ड और सीताकुण्ड नामक कुण्ड हैं।

पोला आम—सीतामढ़ीसे आगे कुछ दूरीपर एक आमका वृक्ष है। उसका तना सर्वथा खोखला है। उसकी जड़में सदा जला भरा रहता है। लोग इस जलको औषधरूपसे काममें लाते हैं।

भरतवन—सहसावनसे आगे भरतवन नामका स्थान आता है। यहीं श्रीराममन्दिर है।

हनुमानधारा—सहसावनसे बायें हाथके मार्गसे जानेपर कुछ आगे यह स्थान है। यहाँ श्रीहनुमान्जीकी मूर्तिके मुखसे निरन्तर जलधारा निकलती रहती है। यहाँ एक हनुमान्जीका मन्दिर भी है।

जटाशङ्कर—यह आवश्यक नहीं कि सहसावनसे लौटकर सीढ़ियोंसे नीचे उतरा जाय। सहसावनकी

धर्मशालाके पाससे एक मार्ग तलहटीमें उतरता है। इस मार्गमें जटाशङ्कर महादेवका मन्दिर है। यहाँसे भवनाथ-मन्दिर होकर नगरमें पहुँच सकते हैं।

इन्द्रेश्वर—जूनागढ़ स्टेशनसे लगभग ३ मील दूर इन्द्रेश्वर शिव-मन्दिर है। यहाँतक सड़क है, किंतु मार्ग जंगलका है। इन्द्रेश्वरके पास साधुओंका स्थान है। वहाँ यात्री रह सकता है। यहाँ रात्रिमें हिंस्र वन्य पशु आस-पास आते हैं।

यहीं नरसी मेहताने भगवान् शङ्करके मन्दिरमें कई दिन व्रत किया था। उन समय मूर्ति फटी और उससे भगवान् शङ्कर प्रकट हुए। शङ्करजीने नरसी मेहताको गोलोकके दर्शन कराये। वह मूल मूर्ति अब भी खण्डित (फटी) लगती है। कहते हैं उसके ऊपर शिखर नहीं बन पाता था, इसलिये पासमें दूसरा शिवलिङ्ग स्थापित करके उसके ऊपर शिखर बना। मूल मूर्ति शिखरके नीचे न होकर बगलमें है। कहते हैं, देवराज इन्द्रने यहाँ तप किया था। यहाँ मन्दिरके पास एक छोटी बावली है।

जैनतीर्थ

गिरनार सिद्ध क्षेत्र है। यहाँसे नेमिनाथजी और ७२ करोड़ ७ सौ मुनि मोक्ष गये हैं। गिरनारकी पूरी यात्रा सनातनधर्मी और जैन दोनों ही करते हैं। दोनों ही दत्तशिखरतक जाते हैं। इसलिये यात्राका वर्णन एक साथ आ गया है।

परिक्रमा

प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला ११ से पूर्णिमातक गिरनारकी परिक्रमा होती है। परिक्रमामें एकादशीको स्नान तथा जूनागढ़ क्षेत्रके देव-मन्दिरोंके दर्शन होते हैं। द्वादशीको भवनाथ मन्दिरसे चलकर हस्नापुर होते हुए जीणाबाबाकी मढ़ीमें विश्राम करते हैं। त्रयोदशीको सूर्यकुण्ड होकर मारवेलामें निवास करते हैं। चतुर्दशीको गङ्गाजलियामें स्नान करके बोरदेवीमें निवास और पूर्णिमाको भवनाथ आकर गिरनार शिखरोंकी यात्रा की जाती है।

बिलखा

(लेखक—स्वामी श्रीचिदानन्दजी सरस्वती)

पश्चिम-रेलवेकी एक शाखा जूनागढ़के बीसावदरतक जाती है। इस लाइनपर जूनागढ़से १४ मील दूर बिलखा स्टेशन है। जूनागढ़से बिलखातक मोटर-बस भी चलती है।

इस समय बिलखामें आनन्दाश्रम नामक एक संस्था है, किंतु बिलखा एक तीर्थस्थान है। यहीं भक्तश्रेष्ठ सगालशा रहते थे, जिन्होंने अतिथि-सत्कारके लिये अपने पुत्रतकका बलिदान कर दिया।

बिलखामें आनन्दाश्रमके पास संत नूरसतसागरकी समाधि है। इन्होंने जीवित समाधि ली थी।

कहा जाता है राजा बलिने यहाँ यज्ञ किया था। 'बलिस्थान' से ही बिगड़कर इस स्थानका नाम बिलखा हो गया। यहाँ नाथगङ्गा नामकी नदी बहती है।

अहमदाबाद

यह गुजरातका प्रसिद्ध नगर और पश्चिम-रेलवेका प्रसिद्ध स्टेशन है। यहाँ स्टेशनके पास रेवाबाईकी धर्मशाला है। यह बहुत बड़ा औद्योगिक नगर है। अहमदाबादके पास साबरमती नदी है। साबरमती नदीके किनारे महात्मा गान्धीका साबरमती-आश्रम प्रसिद्ध स्थान है। नगरमें सबसे प्रसिद्ध मन्दिर जगन्नाथजीका है। उसके अतिरिक्त कालूपुरमें द्वारके बाहर श्मशानमें दुग्धेश्वर-मन्दिर है। कहा जाता है वहाँ महर्षि दधीचिका आश्रम था। वहाँसे आगे कैंपके मार्गमें साबरमती-किनारे भीमनाथ-मन्दिर है। वहाँसे आगे खड्गधारेश्वरका प्राचीन मन्दिर है। कैंपमें हनुमान्‌जीका मन्दिर प्रसिद्ध है। कालूपुर दरवाजेसे एक मील दूर श्रीनीलकण्ठेश्वर-मन्दिर है। पास ही महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यकी बैठक है। कालूपुर रोडपर श्रीवल्लभाचार्यके वंशज गोस्वामियोंकी हवेली है। नगरमें 'तीन दरवाजे' के सामने किलेमें भद्रकालीका मन्दिर है। हाजा पटेलकी पोलमें श्रीराम मन्दिर है। प्रेम-दरवाजेके पास महात्मा सरयूदासजीका आश्रम है। रायपुरमें श्रीराधावल्लभजीका मन्दिर है। पास ही काँकरोलीवाले श्रीबालकृष्णलालजीका मन्दिर है। इनके अतिरिक्त स्वामिनारायण-मन्दिर, बहुचराजीका मन्दिर, नृसिंहभगवान्‌का मन्दिर, रणछोड़जीका मन्दिर तथा और भी अनेकों मन्दिर हैं। कई जैन-मन्दिर भी हैं।

महर्षि कश्यपद्वारा जो कश्यपगङ्गाका अर्बुद-पर्वतपर अवतरण हुआ था, उसीका नाम साभ्रमती (साबरमती) है। यह पवित्र नदी है। इसके किनारे खड्गतीर्थमें स्नान करके खड्गधारेश्वरके दर्शनका बहुत माहात्म्य है। कार्तिक तथा वैशाखमें स्नानका विशेष महत्त्व है।

भद्रेश्वर

(लेखक—श्रीदेवशंकर व्रजलाल दवे)

अहमदाबादसे १४ मील नैर्ऋत्यकोणमें कासन्द्रा गाँव है। कहा जाता है इसका प्राचीन नाम कश्यपनगर है और यहाँ महर्षि कश्यपका आश्रम था। कासन्द्रा और वीसलपुर गाँवोंके बीचमें कोटेश्वर महादेवका प्राचीन मन्दिर साबरमती नदीके तटपर है।

कासन्द्राके दक्षिण साबरमतीके तटपर भद्रेश्वर-मन्दिर है। यह मन्दिर भी बहुत प्राचीन है।

अहमदाबादसे कासन्द्रा मोटर-बस जाती है। कोटेश्वर और भद्रेश्वर दोनों ही मन्दिर इस ओर बहुत प्राचीन तथा मान्यताप्राप्त हैं। भद्रेश्वरकी लिङ्ग-मूर्ति स्वयम्भू है।

मातर

अहमदाबादसे २६ मीलपर खेड़ा नगर है। वहाँसे ३ मीलपर मातर ग्राम है। यहाँतक अहमदाबादसे बस आती है। बाजारमें सुमतिनाथ स्वामीका भव्य मन्दिर है। मन्दिरके पास ही धर्मशाला है। यहाँके मन्दिरकी प्रतिमा पासके बारोट ग्राममें भूमिसे एक स्वप्नादेशके आधारपर मिली थी।

शामलाजी

पश्चिम-रेलवेकी एक लाइन अहमदाबादसे खेड़ब्रह्मा स्टेशनतक जाती है। इस लाइनपर अहमदाबादसे ३३ मील दूर तलोद स्टेशन है। आगे इसी लाइनमें हिम्मतनगर तथा ईडर स्टेशन है। शामलाजीका स्थान तलोदसे ५० मील, हिम्मतनगरसे ४० मील और ईडरसे ३० मील दूर है। इन सभी स्टेशनोंसे शामलाजीके लिये मोटर-बसें चलती हैं। शामलाजीमें मन्दिरके पास कई धर्मशालाएँ हैं।

मेश्वा नदीके किनारे भी लोडा ग्रामके पास शामलजीका स्थान है। इसका प्राचीन नाम हरिश्चन्द्रपुरी या कराम्बुकतीर्थ है। गदाधरपुरी भी इसे कहते हैं।

शामलाजी श्रीकृष्णभगवान्‌का नाम है। मन्दिरमें भगवान् श्रीकृष्णकी मूर्ति है। मन्दिरके आस-पास श्रीरणछोड़जी, गिरिधारीलाल तथा काशी-विश्वनाथके मन्दिर हैं और समीपमें विस्तृत सरोवर है। काशी-विश्वनाथका मन्दिर भूगर्भमें है। टेकरीपर भाई-बहिनका मन्दिर है। यहाँ अपने एक सौ एक पुत्रोंके साथ गान्धारीकी मूर्ति है। मेश्वा नदीमें नागधारा तीर्थ है। यहाँ भूगर्भमें गङ्गाजीका मन्दिर, राजा हरिश्चन्द्रकी यज्ञवेदी आदि दर्शनीय स्थान हैं। पासमें सर्वमङ्गला देवीका जीर्ण-मन्दिर है।

यह प्रदेश पहाड़ी एवं जंगली है। कहा जाता है यहाँ महाराज हरिश्चन्द्रने महर्षि वसिष्ठके आदेशसे पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। यहाँ रहनेवाले औदुम्बर ऋषिके सांनिध्यमें वह यज्ञ पूर्ण हुआ था।

शामलाजीको पहले गदाधरभगवान् कहते थे। यह भगवान् विष्णु (अथवा श्रीकृष्ण) की चतुर्भुज मूर्ति है। कहा जाता है यह राजा हरिश्चन्द्रद्वारा प्रतिष्ठित है। श्रीशामलाजी वैश्यों एवं ब्रह्माजीके एक बड़े वर्गके इष्ट देवता माने जाते हैं। यहाँ कार्तिकशुक्ला एकादशीसे मार्गशीर्षशुक्ला द्वितीयातक मेला रहता है।

नीलकण्ठ

अहमदाबादसे जो लाइन खेड़ब्रह्मातक जाती है, उसपर ईडर स्टेशन है। ईडरसे १० मील दूर मुटेडी ग्रामके पास जंगल-पहाड़ोंसे घिरे स्थानमें नीलकण्ठ महादेवका मन्दिर है। यह स्वम्भू लिङ्ग है, जिसकी ऊँचाई पाँच फुट है। एक ब्राह्मणको स्वप्नमें मन्दिर बनवानेका आदेश हुआ, जिससे यह मन्दिर बनवाया गया। श्रावणमें यहाँ मेला लगता है।

वीरेश्वर

विजयनगर-महीकाँठाकी सीमापर पर्वतोंसे घिरे भयानक वनमें यह प्राचीन स्थान है। मन्दिरमें स्वयम्भू बाणलिङ्ग है। मन्दिरके पश्चिम पर्वतपर एक विशाल उदुम्बर वृक्ष है। उसकी जड़से एक जलधारा बराबर निकलती रहती है और वह एक सरोवरमें गिरती है। सरोवरका जल बाहर निकलकर दो-तीन खेतोंसे आगे नहीं जाता। लोगोंका विश्वास है कि श्रीवीरेश्वर महादेवकी जय बोलनेसे यह जल बढ़ता है।

मुन्धेडा महादेव

ईडर-महीकाँठाके जादर ग्राममें यह मन्दिर है। ईडरसे ८ मीलपर जादर स्टेशन है। यहाँसे एक मीलपर ग्राम है। यहाँ मन्दिरके चारों ओर एक किलेबंदी है। मन्दिर एक निम्बवृक्षके नीचे है। नीमकी सब शाखाओंके पत्ते कड़वे हैं; किंतु उसी वृक्षकी जो शाखा मन्दिरके ऊपर गयी है, उसके पत्ते मीठे हैं। भाद्र-शुक्ल चतुर्थीको यहाँ मेला लगता है। नागपञ्चमीको यहाँ प्रायः लोगोंको मन्दिरमें एक भूरे रंगके नागके दर्शन होते हैं।

कोट्यर्क

अहमदाबाद-खेड़ब्रह्मा लाइनपर अहमदाबादसे ४१ मील दूर प्रान्तीज स्टेशन है। प्रान्तीजसे लगभग १२ मील दूर खड़ायत ग्राम है। खड़ायत ब्राह्मणों तथा खड़ायत वैश्योंके इष्टदेव कोट्यर्कके सूर्यदेव हैं।

यहाँ मन्दिरमें भगवान् सूर्यके गौरवर्ण चतुर्भुज मूर्ति है। पासमें त्रिकमराय, घनश्यामराय तथा लक्ष्मीजीकी मूर्तियाँ हैं। इस मन्दिरमें वल्लभकुलके अनुसार सेवा-पूजा होती है। यह मन्दिर साबरमती नदीके किनारे है।

इस खड़ायत ग्राममें खड़ायत ब्राह्मणोंकी सात और खड़ायत वैश्योंकी १२ कुलदेवियोंके मन्दिर हैं।

भुवनेश्वर

प्रान्तीजसे ३३ मील आगे ईडर स्टेशन है। वहाँसे १५ मील दूर भीलोडा ग्राम है और उस गाँवसे ४ मील दूर देसण ग्राममें सरोवरके किनारे भुवनेश्वर-मन्दिर है। इसे भवनाथ-मन्दिर भी कहते हैं। यहाँ महर्षि भृगुका आश्रम है। श्रावणमें यहाँ मेला लगता है। यहाँके सरोवरके पास विभूतिके समान मिट्टी है, उसे लोग ले जाते हैं। यहाँ धर्मशाला है।

खेड़ब्रह्मा

ईडरसे १५ मील आगे खेड़ब्रह्मा स्टेशन है। यहाँ हिरण्याक्षी नदी बहती है। नदीके पास ब्रह्माजीका मन्दिर है। उसमें चतुर्मुख ब्रह्माजीकी मूर्ति है। पासमें एक कुण्ड है।

ब्रह्माजीके मन्दिरसे आध मील दूर देवीका मन्दिर है। वहाँ मानसरोवर तालाब तथा एक धर्मशाला है। देवी-मूर्तिको क्षीरजाम्बा कहते हैं। भृगुनाथ महादेवका मन्दिर भी पास है। खेड़ब्रह्माके पास हिरण्याक्षी, कोसम्बी और भीमाक्षी नदियोंका संगम है। इसीलिये उसे त्रिवेणी कहते हैं। नदीपार सामने तटपर भृगु-आश्रम है।

कहा जाता है यहाँ ब्रह्माजीने यज्ञ तथा महर्षि भृगुने तप किया था। इसलिये इसे भृगुक्षेत्र भी कहते हैं। शिवरात्रिके समय १५ दिनतक मेला लगता है।

यहाँसे तीन मील दूर चामुण्डा देवीका और वहाँसे तीन मील दूर कोटेश्वर महादेवका मन्दिर है।

उत्कण्ठेश्वर

पश्चिम-रेलवेपर आनन्द और अहमदाबादके बीचमें नडिआद स्टेशन है। नडिआदसे एक लाइन कपड़वणजतक जाती है। उत्कण्ठेश्वर जानेके लिये कपड़वणज या उससे ४ मील पहले 'दासलवाड़ा-आँतरौली रोड' स्टेशन उतरना पड़ता है। उत्कण्ठेश्वर कपड़वणजसे १० मील दूर है।

कपड़वणजमें रत्नाकरी देवीका स्थान है तथा वैजनाथ एवं सोमनाथके मन्दिर हैं। उत्कण्ठेश्वरको इधरके लोग ऊँटडिया महादेव कहते हैं। मन्दिर एक ऊँचे टीलेपर है। मन्दिरके आस-पास धर्मशालाएँ हैं। यहाँका शिवलिङ्ग कोटिलिङ्ग है। उसमें छोटे-छोटे उभाड़ पूरी मूर्तिमें है। श्रावणमें यहाँ मेला लगता है। बृहस्पतिके सिंहराशिमें प्रवेश करते तथा राशिसे हटते समय इस मन्दिरकी ध्वजा बदली जाती है। उस समय भी मेला लगता है।

यहाँसे थोड़ी दूरपर जंगलमें केदारेश्वरका मन्दिर है। वहाँ झाँझर नदी है।

डाकोर

(लेखक—राजरत्न श्रीताराचन्द्रजी अडालजा)

पश्चिम-रेलवेकी आनन्द-गोधरा लाइनपर आनन्दसे १९ मील दूर डाकोर स्टेशन है। स्टेशनसे डाकोर नगर लगभग १ मील दूर है। सवारियाँ मिलती हैं।

ठहरनेके स्थान

डाकोरमें अनेकों धर्मशालाएँ हैं। स्टेशनके पाससे लेकर नगरके अन्तिम छोरतक धर्मशालाएँ मिलती हैं। मन्दिरके समीप मोरार-भवन, गायकवाड़की धर्मशाला, दामोदर-भवन, वल्लभनिवास आदि हैं। यात्री डाकोरमें गोर (पंडों) के यहाँ भी ठहरते हैं।

गोमती-तालाब—श्रीरणछोड़रायजीके मन्दिरके सामने गोमती-तालाब है। यह चार फर्लांग लंबा और एक फर्लांग चौड़ा है। इसके किनारे पक्के बँधे हैं। तालाबमें एक ओर कुछ दूरतक पुल बँधा है। उसके किनारे एक ओर छोटे-से मन्दिरमें श्रीरणछोड़रायकी चरण-पादुकाएँ हैं। तालाबके ईश्वरघाटपर श्रीडंकनाथ महादेव-मन्दिर, गणपति-मन्दिर और श्रीरणछोड़रायकी तुलाका स्थान है।

श्रीरणछोड़रायका मन्दिर—वही डाकोरका मुख्य मन्दिर है। मन्दिर विशाल है। मुख्य द्वारसे भीतर जानेपर चारों ओर खुला चौक है। बीचमें ऊँची बैठकपर मन्दिर है। मन्दिरमें मुख्य पीठपर श्रीरणछोड़रायकी चतुर्भुज मूर्ति पश्चिमाभिमुख खड़ी है। श्रीरणछोड़रायके सेवक तथा चरण-स्पर्श करनेवाले लोग उत्तर द्वारसे भीतर आकर दक्षिणद्वारसे बाहर जाते हैं। सामान्यतः यात्री पश्चिम-द्वारके सम्मुख सभामण्डपमें खड़े होकर दर्शन करते हैं। मन्दिरके दक्षिण शयन-गृह है। इस खण्डमें गोपाललालजी और लक्ष्मीजीकी मूर्तियाँ हैं।

माखणियो आरो—गोमती-सरोवरके किनारे यह स्थान है। रणछोड़रायजी जब डाकोर पधारे, तब आपने यहाँ भक्त बोडाणाकी पत्नीके हाथसे मक्खन, मिश्रीका भोग लिया था। तबसे रथयात्राके दिन गोपाललालजी यहाँ रुकते और मक्खन-मिश्रीका नैवेद्य ग्रहण करते हैं।

लक्ष्मी-मन्दिर—यह भी गोमती-सरोवरके किनारे है। श्रीरणछोड़रायजी पहले इसीमें थे। नवीन मन्दिरमें श्रीरणछोड़रायजीके पधारनेपर यहाँ लक्ष्मीजीकी मूर्ति प्रतिष्ठित की गयी। पर्वोंपर शोभायात्रामें गोपाललालजी यहाँ पधारते हैं।

रणछोड़जी डाकोर कैसे पधारे

श्रीरणछोड़जी द्वारकाधीश हैं। द्वारकाके मुख्य मन्दिरमें यही श्रीविग्रह था। डाकोरके अनन्यभक्त श्रीविजयसिंह बोडाणा और उनकी पत्नी गङ्गाबाई वर्षमें दो बार दाहिने हाथमें तुलसी लेकर द्वारका जाते थे। वही तुलसीदल द्वारकामें श्रीरणछोड़रायको चढ़ाते थे। ७२ वर्षकी अवस्थातक उनका यह क्रम चला। जब भक्तमें चलनेकी शक्ति नहीं रही, तब भगवान्‌ने कहा—'अब तुम्हें आनेकी आवश्यकता नहीं, मैं स्वयं तुम्हारे यहाँ आऊँगा।'

श्रीरणछोड़रायके आदेशसे बोडाणा बैलगाड़ी लेकर द्वारका गये। श्रीरणछोड़राय गाड़ीमें विराज गये। इस प्रकार कार्तिक पूर्णिमा सं० १२१२ को रणछोड़जी डाकोर पधारे। बोडाणाने मूर्ति पहले गोमती-सरोवरमें

छिपा दी। द्वारकाके पुजारी वहाँ मूर्ति न देखकर डाकोर आये, किंतु यहाँ लोभमें आकर मूर्तिके बराबर स्वर्ण लेकर लौटनेपर राजी हो गये। मूर्ति तौली गयी, बोडाणाकी पत्नीकी नाककी नथ और एक तुलसीदलके बराबर मूर्ति हो गयी। उधर स्वप्नमें प्रभुने पुजारियोंको आदेश दिया—'अब लौट जाओ। वहाँ द्वारकामें छः महीने बाद श्रीवर्धिनी बावलीसे मेरी मूर्ति निकलेगी।' इस समय द्वारकामें वही बावलीसे निकली मूर्ति प्रतिष्ठित है।

डाकोर गुजरातका प्रख्यात तीर्थ है। प्रत्येक पूर्णिमाको यहाँ यात्रियोंकी भीड़ होती है। शरत्पूर्णिमाके महोत्सवके समय तो इतनी भीड़ होती है कि स्पेशल गाड़ियाँ छूटती हैं।

आस-पासके तीर्थ

उमरेठ—कहा जाता है प्रभु स्वयं बोडाणाको सोनेके लिये कहकर बैलगाड़ी हाँककर यहाँतक लाये। यहाँ पहुँचनेपर प्रभुने बोडाणाको जगाया। यह गाँव डाकोरके पास है। वहाँ सिद्धनाथ महादेवका मन्दिर है। प्रभु जहाँ खड़े थे, वहाँ छोटेसे मन्दिरमें चरणपादुकाएँ हैं।

सीमलज—यह गाँव भी डाकोरके पास है। बोडाणाकी गाड़ीके यहाँ पहुँचनेपर प्रभु नीमकी एक डाल पकड़कर खड़े हो गये। पूरी नीमकी पत्तियाँ आज भी कड़वी हैं; किन्तु श्रीरणछोड़रायने जो डाल पकड़ी थीं, उस डालकी पत्तियाँ आज भी मीठी हैं।

लसुन्द्रा—डाकोरसे यह स्थान सात मील दूर है। यहाँ ठंढे और गरम पानीके कुण्ड हैं।

गलतेश्वर—डाकोरसे १० मीलपर अंगाड़ी स्टेशन है। इस स्टेशनसे दो मील पैदल कच्चे मार्गसे चलकर जहाँ गलता नाला मही नदीमें मिलता है, वहाँ पहुँचनेपर गलतेश्वरका प्राचीन मन्दिर मिलता है। मन्दिरका शिखर टूट गया है। यह कलापूर्ण मन्दिर है। कहा जाता है भक्त चन्द्रहासकी राजधानी यहीं थी। मन्दिरके पास वैष्णव साधुओंका स्थान है। आस-पास खेत तथा वन हैं।

टूवा—डाकोरसे २१ मीलपर टूवा स्टेशन है। यहाँ भी शीतल और गरम पानीके कई कुण्ड हैं। किसीमें जल खौलता है, किसीमें समशीतोष्ण है। कुण्डके आस-पास कई देव-मन्दिर हैं।

अगास

(लेखक—कविरत्न पं० श्रीगुणभद्रजी जैन)

पश्चिम-रेलवेकी आनन्द-खम्भात (कैम्बे) लाइनपर आनन्दसे ८ मील दूर आगास स्टेशन है। श्रीराजचन्द्रजी इस युगके एक विख्यात जैन महापुरुष हो गये हैं। इनकी स्मृतिमें ही यहाँपर श्रीराजचन्द्र-आश्रम बना है। इस आश्रमकी विशेषता यह है कि यहाँ मन्दिरमें ऊपरके भागमें दिगम्बर जैन-मूर्तियाँ हैं, मन्दिरके मध्यभागमें श्वेताम्बर जैन-प्रतिमाएँ हैं और नीचेके भागमें श्रीराजचन्द्रजीकी मूर्ति है। दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही यहाँ पूजादि करते हैं। अश्विनकृष्णा प्रतिपदा तथा कार्तिक-पूर्णिमाको अधिक लोग आते हैं। ठहरने आदिकी आश्रममें सुविधा है।

आशापूरी देवी

जैसे गुजरातमें स्थान-स्थानपर हाटकेश्वर-मन्दिर है, वैसे ही आशापूरी देवीके भी मन्दिर बहुत हैं; क्योंकि वे गुजरातके बहुत-से लोगोंकी कुलदेवी हैं, किंतु इनका मुख्य मन्दिर पेटलादके पास है।

पश्चिम-रेलवेपर बड़ौदाके आगे आनन्द मुख्य स्टेशन है। आनन्दसे एक लाइन खम्भाततक जाती है। इस लाइनपर आनन्दसे १४ मील दूर पेटलाद स्टेशन है, पेटलादसे ४ मीलपर ईसणाव और पीपलाव—ये दो गाँव पास-पास हैं। इनमें पीपलाव ग्रामके पास तालाब है। तालाबके किनारे आशापूरी देवीका विशाल मन्दिर है। कई धर्मशालाएँ हैं।

आशापूरी देवीकी मान्यता बहुत अधिक है। बहुत-से लोग बालकोंका यहाँ मुण्डन-संस्कार कराते हैं। भाद्र-शुक्ला अष्टमीको यहाँ बड़ा मेला लगता है।

काणीसाना

आनन्द-खम्भात लाइनपर पेटलादसे १४ मील आगे सायमा स्टेशन है। सायमासे २ मीलपर काणीसाना गाँव है। यहाँ एक कुण्ड है। कहा जाता है इस कुण्डमें स्नान करनेसे रक्त-पित्त दूर होता है। बालंद लोगोंकी कुलदेवी लीमच माताका यहाँ मन्दिर है। श्रावणमें यहाँ मेला लगता है।

खम्भात

सायमासे ४ मील (आनन्दसे ३२ और पेटलादसे १८ मील) पर खम्भात स्टेशन है। यह पुराण-प्रसिद्ध स्तम्बतीर्थ है। पहले यह बहुत प्रसिद्ध बंदरगाह था, किंतु अब तो यहाँका समुद्र अच्छे बंदरगाहके योग्य नहीं रहा।

खम्भात बार-बार समुद्री जल-दस्युओंका आखेट हुआ है। आरव्य दस्यु मन्दिरोंको ही मुख्य आक्रमण-लक्ष्य बनाते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि यहाँ शिखरदार मन्दिर बनने बंद हो गये। प्राचीन मन्दिर रहे नहीं। जो मन्दिर हैं भी, वे घरोंके भीतर हैं। बाहरसे उनकी आकृति मन्दिर-जैसी नहीं लगती।

खम्भातसे ४ मील दूर त्रम्बावती नगरी थी। वही प्राचीन स्तम्भतीर्थ है। वहाँ कोटेश्वर महादेवका मन्दिर है। मन्दिरके पास एक कुण्ड है। वहाँ मेला लगता है।

मही-सागर-संगम

मही-सागर-संगम-तीर्थका माहात्म्य

प्रभासदशयात्राभिः सप्तभिः पुष्करस्य च।
अष्टाभिश्च प्रयागस्य तत्फलं प्रभविष्यति॥
पञ्चभिः कुरुक्षेत्रस्य नकुलीशस्य च त्रिभिः।
अर्बुदस्य च यत् षड्भिस्तत्फलं च भविष्यति॥
वस्त्रापथस्य तिसृभिर्गङ्गायाः पञ्चभिश्च यत्।
कूपोदर्यश्चतुर्भिश्च तत्फलं प्रभविष्यति॥
काश्याः षड्भिस्तथा यत्स्याद्गोदावर्याश्च पञ्चभिः।
महीसागरयात्रायां भवेत्तच्चावधारय॥

(स्कं० माहे० कौमारि० ५८। ६१-६४ वेङ्कटे० संस्क०)

'प्रभासकी दस बार, पुष्करकी सात बार और प्रयागकी आठ बार यात्रा करनेसे जो फल प्राप्त होता है, वही फल इस महीसागर-संगम-तीर्थकी एक बार यात्रा करनेसे होता है। जो कुरुक्षेत्रकी पाँच बार, नकुलीशकी तीन बार, आबूकी छः बार, वस्त्रापथ (गिरनार) की तीन बार, गङ्गाकी पाँच बार, कूपोदरीकी चार बार, काशीकी छः बार तथा गोदावरीकी पाँच बार यात्रा करनेका फल है, वही (शनिवारयुक्त अमावस्याको) महीसागरकी यात्रा करनेसे होगा।'

(महीसागर-तीर्थके माहात्म्यसे प्रायः सम्पूर्ण कुमारिका-खण्ड ही भरा है, उसमें बड़ी ही अद्भुत कथाएँ हैं।)

खम्भातसे थोड़ी ही दूरपर मही नदी खम्भातकी खाड़ीमें गिरती है। मही-सागर-संगम अत्यन्त पवित्र तीर्थ माना गया है। बड़ौदासे यहाँतक बसें चलती हैं।

मही नदी

(लेखक—श्रीरेवाशंकरजी शुक्ल)

मही (माही) नदी मालवाके पहाड़से निकलती है और स्तम्भतीर्थके पास समुद्रसे मिलती है। उसके किनारेपर नौ नाथ और चौरासी सिद्ध रहते हैं, ऐसा कहा जाता है। इनके अतिरिक्त वासदगाँवमें 'विश्वनाथ', वेरामें 'धारनाथ', सारसामें 'वैजनाथ' और 'वारिनाथ', भादरवामें 'भूतनाथ' और 'सोमनाथ', खानपुरमें, 'कामनाथ', बाँकानेरमें 'त्र्यम्बकनाथ' तथा शीलीमें 'सिद्धनाथ'—इस प्रकार नौ शिव-मन्दिर हैं। तदुपरान्त भादरवाके पास ऋषीश्वर महादेव और बाँकानेरमें नन्दिकेश्वर महादेवके स्थान हैं। महादेवके अतिरिक्त बहुत-से देवियोंके स्थान भी हैं,

गुजरातके कुछ दर्शनीय विग्रह तथा पवित्र स्थल

श्रीगीता-मन्दिर, अहमदाबाद

सरयूदासजीके मन्दिरके श्रीविग्रह, अहमदाबाद
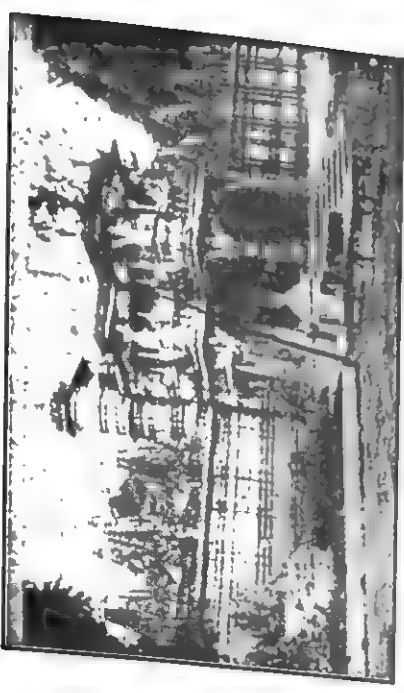
हठीसिंह-मन्दिर, अहमदाबाद

जैन-मन्दिर तथा स्वाध्याय-भवन
राजचन्द्र-आश्रम, अगास
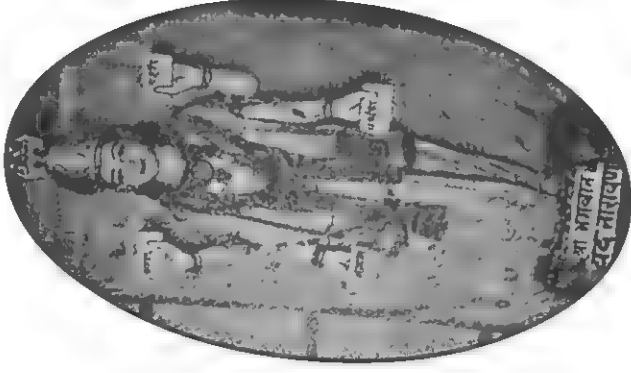
भगवान् वेदनारायण, वेद-मन्दिर, अहमदाबाद

श्रीभद्रेश्वर-मन्दिर, कासन्द्रा

गुजरातके कुछ दर्शनीय विग्रह तथा पवित्र स्थल

श्रीबहुचराजीका मन्दिर, पावागढ़
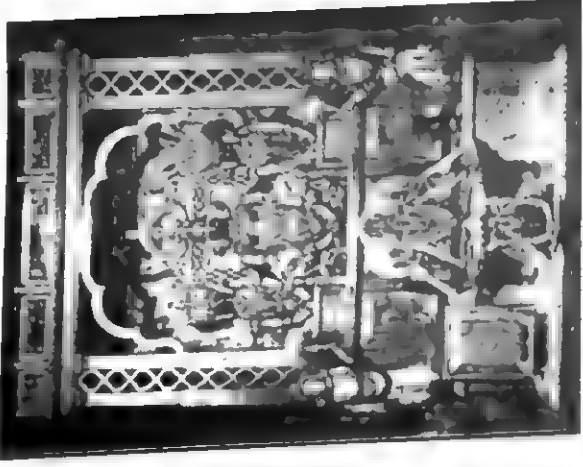
श्रीविट्ठलनाथजी, बड़ोदा
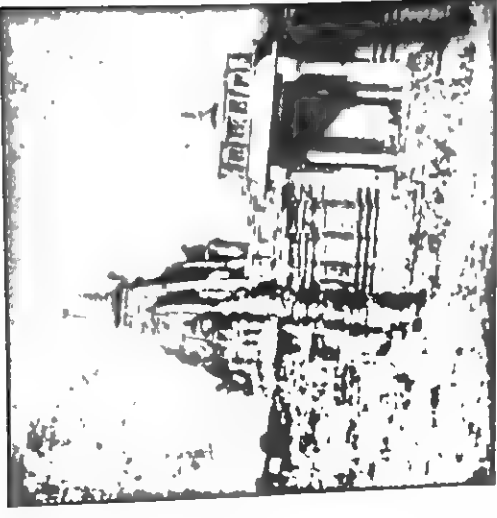
जैन-मन्दिर, पावागढ़
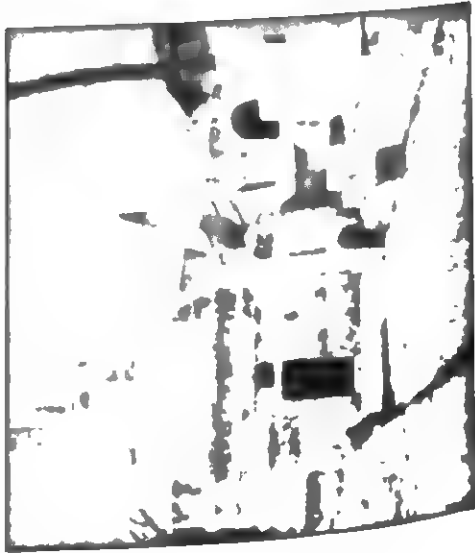
श्रीकुबेरेश्वर-मन्दिर, चाणोद

भगवान् शेषशायी, चाणोद
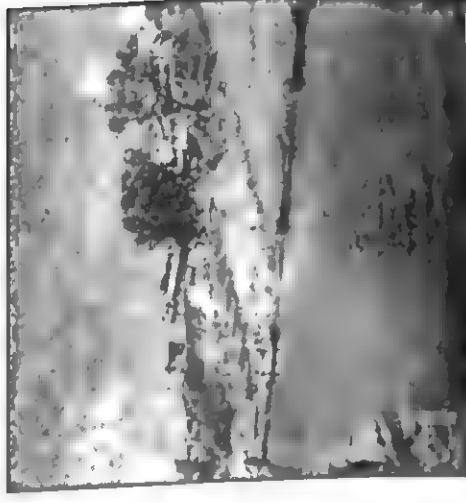
नर्मदाका एक दृश्य, चाणोद

जिनमें 'शत्रुघ्नी' माताका स्थान बड़ा ही अलौकिक है। उसके आस-पास दो-दो मीलतक कोई गाँव नहीं है। नदीके किनारे करारपर मन्दिर है। धारनाथसे शत्रुघ्नी माताके मन्दिरतकके स्थानको गुप्त-तीर्थ कहते हैं। महीमें रविवारके दिन स्नान करनेसे बड़ा पुण्य होता है—ऐसी मान्यता है। आस-पासके लोग ऊपरके स्थानोंमें रविवारको स्नानके लिये आते हैं। खास करके श्रावण मासमें और शिवरात्रिके दिन मेले लगते हैं और हजारों यात्री आते हैं। प्रत्येक स्थानका अलग-अलग माहात्म्य है। मही चारों युगकी देवी कहलाती है। शत्रुघ्नी माताके पास बड़ा गहरा पानी रहता है, मगर भी रहते हैं; इसलिये स्नान करते समय ध्यान रखना पड़ता है। गुजरातके लोग महीको बहुत मानते हैं। शत्रुघ्नी माताके स्थानमें बहुत-से श्रद्धालु लोग अपने लड़कोंका मुण्डन कराते हैं और माताजीका आशीर्वाद लेते हैं। कहा जाता है शत्रुघ्नी माताकी स्थापना मयूरध्वज राजाने की थी। वहाँ बड़ौदा जिलेके सावली स्टेशनसे जा सकते हैं। स्टेशनसे यह स्थान लगभग पाँच मील दूर है। रास्ता तीन मीलतक तो अच्छा है पर आगे खाल और कंदरामें होकर जाना पड़ता है।

वडताल-स्वामिनारायण

पश्चिम-रेलवेमें बड़ौदासे २२ मीलपर आनन्द एक प्रसिद्ध स्टेशन है। आनन्दसे एक लाइन वडताल-स्वामिनारायण स्टेशनतक जाती है। स्टेशनसे थोड़ी ही दूरपर मन्दिर है। यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है।

बडताल-स्वामिनारायण स्वामिनारायण-सम्प्रदायका मुख्य तीर्थ है। यहाँ स्वामिनारायणका विशाल मन्दिर है। मन्दिर खूब सजा हुआ है। मन्दिरमें स्वामिनारायणके द्वारा ही स्थापित श्रीलक्ष्मीनारायणकी मूर्ति है। इस मन्दिरमें नर-नारायण और स्वामी सहजानन्दकी भी मूर्तियाँ हैं।

बड़ौदा

बड़ौदा गुजरातका प्रसिद्ध नगर और पश्चिम-रेलवेका प्रमुख स्थान है। बड़ौदासे अहमदाबाद, चाणोद, पावागढ़ आदि विभिन्न स्थानोंकी यात्राके लिये यात्री जाते हैं।

देवमन्दिर—नगरमें श्रीविट्ठुलनाथजी और गायकवाड़की इष्टदेवी खंडोबाके मन्दिर हैं। इनके अतिरिक्त स्वामि-नारायण-मन्दिर, सिद्धनाथ, कालिकादेवी, रघुनाथजी, नृसिंहजी, गोवर्धननाथ, बलदेवजी, काशी-विश्वनाथ, गणपति, बहुचराजी, भीमनाथ, लाडबादेवी आदि बहुत-से मन्दिर नगरमें हैं।

भूतड़ीके पास श्रीनृसिंहाचार्यजीका मन्दिर है। ये एक प्रसिद्ध महात्मा हो गये हैं।

मांडवीके समीप घड़ियालीपोलके नाकेपर अम्बामाताका मन्दिर है। कहा जाता है महाराज विक्रमादित्य (प्रथम) का देहावसान यहीं हुआ था। इसीसे वेताल देवीकी ओर पीठ करके यहाँ बैठा है।

डभोई

बड़ौदेके प्रतापनगर स्टेशनसे डभोईको रेल जाती है। प्रतापनगरसे डभोई १७ मील है।

डभोईके चारों ओर दीवार थी, जो गिर गयी है। एक द्वारमें भगवान्‌की अवतार-मूर्तियाँ खुदी हैं। पूर्व-द्वारपर महाकाली-मन्दिर है। नगरमें नर-नारायण हैं। लक्ष्मी-वेङ्कटेशका मन्दिर स्टेशनके समीप है। यह जैन-तीर्थ भी है।

कलाली

(लेखक—श्रीजगन्नाथ जयशङ्कर उपाध्याय)

बड़ौदेसे लगभग ५ मील दूर विश्वामित्र नदीके किनारे यह गाँव है। बड़ौदेसे यहाँ मोटर-बसद्वारा आ सकते हैं। यहाँ स्वामिनारायण-सम्प्रदायका 'श्रीलालजी' महाराजका मन्दिर है।

कलाली आते समय मार्गके पूर्व श्रीजगन्नाथ महादेवका प्राचीन मन्दिर है। यह स्वयम्भूलिङ्ग कहा जाता है।

चाँपानेर (पावागढ़)

पश्चिम-रेलवेकी बंबई-दिल्ली लाइनमें बड़ौदासे २३ मील आगे चाँपानेर-रोड स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन पानी-माइन्सतक जाती है। इस लाइनपर चाँपानेर-रोडसे १२ मीलपर पावागढ़ स्टेशन है। स्टेशनसे पावागढ़ बस्ती लगभग एक मील दूर है। बड़ौदा या गोधरासे पावागढ़तक मोटर-बसद्वारा भी आ सकते हैं। पावागढ़ गाँवमें जैन-धर्मशाला तथा कंसारा-धर्मशाला है। पावागढ़ पर्वतपर लगभग मध्यमें भी एक अच्छी धर्मशाला तथा कुछ दूकानें हैं।

जिसे आज पावागढ़ कहते हैं, यह प्राचीन चाँपानेर दुर्ग है। यह गुर्जरकी राजधानी थी। चाँपानेरके उजड़नेपर ही अहमदाबाद, बड़ौदा आदि गुजरातके कई बड़े नगर बसे हैं। चाँपानेर दुर्गमें ऊपर और नीचे आस-पास प्राचीन भग्नावशेष हैं। अनेक दर्शनीय मसजिदें भी हैं, जो अब अरक्षित हैं।

पावागढ़ शिखर लगभग ढाई हजार फुट ऊँचा है। ऊपर चढ़नेके लिये सीढ़ियाँ तो नहीं हैं, किंतु मार्ग अच्छा है। चाँपानेर दुर्गके भग्नप्राय द्वारोंमें होकर ऊपर जाना पड़ता है। मार्गमें सात द्वार मिलते हैं।

पर्वतकी चढ़ाई ३ मील २ फर्लांग है। छठे द्वारके पश्चात् दूधिया तालाब मिलता है। मार्गमें और कई सरोवर मिलते हैं, किंतु यात्री इसी सरोवरमें स्नान करते हैं।

महाकाली

दूधिया सरोवरसे महाकाली-शिखर प्रारम्भ होता है। शिखरपर जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। लगभग सौ डेढ़ सौ सीढ़ी ऊपर शिखरपर महाकाली-मन्दिर है। मन्दिरमें जो मूर्ति है, लगता है भूमिमें प्रविष्ट हो रही है। गुजरातके चार देवी-स्थानोंमें यह एक प्रधान स्थान है। यहाँ नवरात्रमें मेला लगता है। वैसे भी यात्री आते रहते हैं।

कहा जाता है विन्ध्याचलमें जो महाकाली कालीखोहमें हैं, वे ही यहाँ भी निवास करती हैं। लोगोंको अनेक बार देवीके प्रत्यक्ष दर्शन हुए हैं।

भद्रकाली

महाकाली-शिखरसे नीचे उतरकर लगभग आध मील दूसरी ओर जानेपर एक छोटे शिखरपर भद्रकालीजीका छोटा मन्दिर मिलता है।

जैनतीर्थ

पावागढ़ सिद्ध क्षेत्र है। यहाँसे पाँच करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं। पावागढ़ बस्तीमें दो जैन-मन्दिर हैं। पावागढ़ पर्वतपर पाँचवें दरवाजेको पार करके आगे जानेपर जैन-मन्दिर मिलते हैं। ये जैन-मन्दिर दूधिया तालाबसे नीचेतक तेलिया तालाबके आस-पास हैं।

यहाँके कुछ जीर्ण जैन-मन्दिरोंका पुनरुद्धार हुआ है। अब भी कई मन्दिर भग्नदशामें हैं। ये मन्दिर कलापूर्ण हैं। अन्तिम द्वारके पास ही पाँच मन्दिर हैं। एक मन्दिर दूधिया तालाबके पास ही है। आस-पास और भी अनेक मन्दिर हैं। उनमें तीर्थङ्करोंकी मूर्तियाँ हैं।

पर्वतके महाकाली-शिखरपर एक ओर पर्वतकी नोकपर मुनियोंके निर्वाण-स्थान हैं।

नर्मदा-तटके तीर्थ

शूलपाणि (सुरपाणेश्वर)

नर्मदा-तटपर शूलपाणि या सुरपाणेश्वरतीर्थ बहुत प्रख्यात है; लेकिन यह स्थान घोर वनमें पड़ता है। इसलिये यहाँ सामान्यतः मेलेके समय यात्री अधिक जाते हैं। महाशिवरात्रिपर और चैत्र शुक्ला एकादशीसे अमावस्यातक यहाँ मेला लगता है। मेलेके अतिरिक्त समयमें यहाँ बाघ आदि वन्य पशुओंका भय रहता है।

सुरपाणेश्वरके आस-पास यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्म-शालाएँ हैं। यहाँ आनेके लिये या तो चाणोदसे नौकाद्वारा मार्ग है, या हिरनफालकी ओरसे पैदल मार्ग। हिरनफालतकका वर्णन (मध्यभारतके तीर्थोंमें) मांडवगढ़के वर्णनके साथ आ चुका है। इसलिये उससे आगेके तीर्थोंका वर्णन करते हुए शूलपाणिका वर्णन करना उपयुक्त है। यहाँ आनेका दूसरा मार्ग चाणोद होकर नौकाद्वारा है।

कतखेड़ाघाट—यह स्थान हिरनफालसे १२ मील दूर नर्मदाके उत्तर-तटपर है। बड़वानीसे राजघाटतक पक्की सड़क है और राजघाटसे ही शूलपाणिका वन प्रारम्भ हो जाता है। अतः आनेका यह सब मार्ग नर्मदा-किनारे पैदलका ही है। मार्ग झाड़ियोंके बीचसे जाता है। हिरनफालसे कतखेड़ाका मार्ग पर्वतका कठिन मार्ग है। यहाँ स्वामिकार्तिकने तप किया था।

हतनीसंगम—कतखेड़ासे ३ मील दूर, नर्मदाके उत्तरतटपर हतनी नदीका संगम है। यहाँ बैजनाथ-मन्दिर है। यहाँ पाण्डवोंने तथा ऋषियोंने यज्ञ किया था।

हापेश्वर—हतनी-संगमसे २२ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर मार्ग जंगल-पहाड़का है। मार्गमें कुछ पहाड़ी ग्राम मिलते हैं। इस स्थानको हंसतीर्थ भी कहते हैं। एक पर्वतपर हापेश्वर शिवका विशाल मन्दिर है। यहाँ वरुणने तप किया था।

देवली—हापेश्वरसे ४ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ बाणगङ्गा नदीका संगम है। इस संगम-स्नानका माहात्म्य माना जाता है।

शूलपाणि (सुरपाणेश्वर)—देवलीसे २४ मील दूर, नर्मदाके दक्षिण तटपर यह तीर्थ भृगुपर्वतपर है। यहाँ शूलपाणि शिवका प्राचीन मन्दिर है। मन्दिरके उत्तर कमलेश्वर तथा दक्षिण राजराजेश्वर मन्दिर है। मन्दिरके पीछे पाण्डवोंके छोटे मन्दिर हैं। कमलेश्वर-मन्दिरके दक्षिण सप्तर्षियोंके सात मन्दिर हैं। कहा जाता है भगवान् शङ्करने यहाँ पर्वतपर आघात करके सरस्वती गङ्गा प्रकट की थी, जो नर्मदामें मिली है। जहाँ त्रिशूल लगा, वहाँ कुण्ड बन गया है, जिसे चक्रतीर्थ कहते हैं। कुण्ड सदा नर्मदामें रहता है। कुण्डपर ब्रह्माद्वारा स्थापित ब्रह्मेश्वरलिङ्ग है। इसके दक्षिण शेषशायी भगवान् स्थित हैं। यहाँ एक लक्ष्मण-लोटेश्वर शिला है। कहा जाता है कि यहीं दीर्घतमा ऋषिका कुलसहित उद्धार हुआ और काशिराज चित्रसेनने यहीं भगवान् शङ्करकी कृपासे उनके गणका पद प्राप्त किया।

शूलपाणि-मन्दिरके दक्षिण भृगुतुङ्ग पर्वत है। उसकी परिक्रमा करके देवगङ्गा होते हुए जानेपर रुद्रकुण्ड मिलता है। रुद्रकुण्डके पास मार्कण्डेय-गुफा है। यहाँ महर्षि मार्कण्डेयने तप किया था। शूलपाणिसे एक मील दूर नर्मदाके दक्षिण-तटपर रणछोड़जीका प्राचीन मन्दिर है। रणछोड़जीकी मूर्ति विशाल है, किंतु मन्दिर अब जीर्ण दशामें है।

कपिल-तीर्थ—यह शूलपाणिके सामने नर्मदाके उत्तर तटपर है। कहा जाता है यहाँ कपिल मुनिने तप किया था। कपिलेश्वर-मन्दिर है और नर्मदामें पुष्करिणी-तीर्थ है।

मोखड़ी—शूलपाणिसे ४ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर, इसके पास मोक्षगङ्गा नदीका संगम है। यहाँ नर्मदामें एक छोटा प्रपात है। जो लोग चाणोदसे नौकाद्वारा शूलपाणि आते हैं, उन्हें यहाँ प्रपातसे थोड़ी दूरपर नौकासे उतरकर लगभग पौन मील पैदल चलना पड़ता है। आगे जाकर दूसरी नौकामें बैठकर सुरपाणेश्वर जा सकते हैं। प्रपातके समीप पौन मीलके भीतर नौका नहीं आ पाती।

बड़गाँव—मोखड़ीके सामने, कपिलतीर्थसे ४ मील, नर्मदाके उत्तर तटपर। यहाँ विमलेश्वर तीर्थ है। प्राचीन समयमें कोई गोपाल नामक ग्वाला यहाँ तप करके गोहत्याके पापसे मुक्त होकर शिवगण हो गया।

उलूकतीर्थ—मोखड़ीसे ४ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। कहा जाता है कोई उल्लू दावाग्निसे व्याकुल हो यहाँ गिरकर मर गया और दूसरे जन्ममें नरेश हुआ। फिर उसने यहीं आकर तप किया। उलूकतीर्थसे ४ मील आगे जाकर शूलपाणिका वन समाप्त होता है।

बागड़ियाग्राम—उलूकतीर्थसे थोड़ी दूरपर नर्मदाके पार उत्तरतटपर यह स्थान है। ग्रामके पास आदित्येश्वर और कम्बलेश्वरके मन्दिर हैं। यहाँ पाँच राक्षसोंको सप्तर्षियोंके दर्शन हुए, ऋषियोंके उपदेशसे तप करके वे मुक्त हुए। कम्बलेश्वरसे कुछ दूर पुष्करिणी तीर्थ है। यहाँ सूर्यभगवान्का नित्य निवास माना जाता है। ग्रहणोंपर यहाँ स्नानका माहात्म्य है।

पिपरिया—उलूकतीर्थसे ५ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यह पिप्लाद ऋषिकी तपोभूमि कही जाती है। अष्टमी और चतुर्दशीको यहाँ स्नान पुण्यप्रद है।

गमोणा—पिपरियासे १ मील, नर्मदाके उत्तरतटपर। यहाँ भीमकुल्या नदीका संगम है। वहाँ संगमेश्वर शिव-मन्दिर है। मार्कण्डेय ऋषिद्वारा स्थापित मार्कण्डेश्वर महादेवका भी मन्दिर है। उत्तर तटका शूलपाणिका वन यहाँ समाप्त होता है।

गरुड़ेश्वर—गमोणासे २ मील, नर्मदाके उत्तर तटपर। यहाँ कुमारेश्वर तीर्थ है। स्वामिकार्तिककी यह तपोभूमि है। कार्तिक शुक्ला १४ को पूजनका विशेष महत्त्व है। करोटेश्वर-मन्दिर है। गजासुर दैत्यकी खोपड़ी यहाँ नर्मदामें गिर पड़ी, जिससे वह मुक्त हो गया। यहाँ गुरु दत्तात्रेयका मन्दिर और स्वामी वासुदेवानन्दजीकी समाधि है।

इन्द्रवाणोग्राम—गरुड़ेश्वरके सामने नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ शक्रतीर्थ है, यहाँ इन्द्रने तप करके शक्रेश्वर महादेवकी स्थापना की थी।

रावेर—इन्द्रवाणोसे १ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ व्यासेश्वर तथा वैद्यनाथके मन्दिर हैं। व्यासजी तथा अश्विनीकुमारोंकी यह तपोभूमि है।

अकतेश्वर—रावेरके सामने थोड़ी दूर, नर्मदाके उत्तर-तटपर। कहा जाता है यहीं महर्षि अगस्त्यने विन्ध्याचलको बढ़नेसे रोका था। यहाँ अगस्त्येश्वर शिव-मन्दिर है। गाँवमें केदारेश्वर-मन्दिर है। कहा जाता है वह महर्षि शाण्डिल्यद्वारा प्रतिष्ठित है।

आनन्देश्वर—रावेरसे दो मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। दैत्य-नाश करके भगवान् शिवने यहाँ गणोंके साथ नृत्य किया था। यहाँ आनन्देश्वर-मन्दिर है।

साँजरोली—आनन्देश्वरके सामने थोड़ी दूरपर, नर्मदाके उत्तरतटपर। यह सूर्यनारायणकी तपोभूमि रवीश्वर-तीर्थ है।

सीनोर

चाणोदसे पश्चिम-रेलवेकी जो लाइन मालसरतक गयी है, उसपर डभोईसे ४० मीलपर सीनोर स्टेशन है। यह नगर नर्मदाके उत्तर-तटपर है। इसे शिवपुरी भी कहते हैं।

सीनोरमें धूतपापेश्वर, मार्कण्डेश्वर, निष्कलङ्केश्वर, केदारेश्वर, भोगेश्वर, उत्तरेश्वर और रोहिणेश्वर शिव-मन्दिर तथा चक्रतीर्थ हैं। कहा जाता है यहाँ स्कन्दने तप किया था। इस तपके पश्चात् वे देव-सेनापति हुए। भगवान् विष्णुने दैत्य-विनाशके बाद यहाँ चक्र डाला। चन्द्रमाकी स्त्री रोहिणीने यहाँ तप किया था। परशुरामजीने यहाँ निष्कलङ्केश्वरकी स्थापना की।

आस-पासके स्थान

सींसोदरा—(नर्मदाके ऊपरकी ओर) सीनोरके सामने नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ मुकुटेश्वर-शिवलिङ्ग है। कहा जाता है दक्षयज्ञमें सतीके देहत्यागके बाद भगवान् शङ्कर कैलासमें ही मुकुट छोड़कर यहाँ चले आये और लिङ्गरूपमें स्थित हुए। पीछे शिवगणोंने मुकुट लाकर चढ़ाया।

दावापुर—सींसोदराके सामने थोड़ी दूरपर, सीनोरसे १ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ धनदेश्वर-मन्दिर है। कुबेरने तप करके यहाँ धनाध्यक्षता तथा पुष्पक-विमान प्राप्त किया।

कंजेठा—दावापुरसे १ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ सौभाग्यसुन्दरी देवी, नागेश्वर, भरतेश्वर तथा करञ्जेश्वरके मन्दिर हैं। यहाँ दक्षपुत्री ख्याति, पुण्डरीक नाग, दुष्यन्तपुत्र महाराज भरत तथा मेधातिथि ऋषिके दौहित्र करञ्जने भिन्न-भिन्न समयमें तप तथा शिवार्चन किया था।

अम्बाली—कंजेठासे १ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँसे अनसूयाजीका स्थान एक मील आगे है। यहाँ अम्बिकेश्वर-मन्दिर है। काशिराजकी कन्या अम्बिकाने यहाँ तप किया था।

कंटोई—(नर्मदा-प्रवाहकी ओर) सीनोरसे २ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ देवताओंने सेनापति-पदपर स्कन्दका अभिषेक किया था। यहाँ कोटेश्वर-तीर्थ तथा

अङ्गिराका तपःस्थान आङ्गिरस-तीर्थ है।

काँदरोल—सीनोरसे लगभग ४ मील दूर नर्मदाके दक्षिणतटपर। स्कन्दने यहाँ भी तप किया था। स्कन्देश्वर-मन्दिर है। यहाँसे कुछ दूर कासरोला ग्राममें नर्मदेश्वर-मन्दिर है। वहाँसे कुछ दूरपर ब्रह्मशिला तथा ब्रह्मतीर्थ हैं। वहाँ ब्रह्माजीने यज्ञ किया था। ब्रह्माजीकी वेदीको, जो शिला हो गयी, ब्रह्मेश्वर कहते हैं।

मालसर—सीनोरसे आगे उसी रेलवे-लाइनपर मालसर स्टेशन है। यह नगर काँदरोलसे दो मील दूर नर्मदाके उत्तर-तटपर है। यहाँ अङ्गारेश्वर शिव-मन्दिर, पाण्डुतीर्थ तथा अयोनिज-तीर्थ हैं। यहाँ पाण्डु राजा एवं मङ्गल ग्रहने तप किया तथा अयोनिज तिज्यानन्द ऋषिकी भी यह तपोभूमि है।

बराछा—मालसरसे थोड़ी दूरपर नर्मदाके दक्षिण-तटपर। महर्षि वाल्मीकिने यहाँ तप किया था। वाल्मीकेश्वर-मन्दिर है।

आसा—बराछासे १ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ कपालेश्वर-मन्दिर है। भिक्षाटनके लिये घूमते हुए भगवान् शङ्करके हाथसे वहाँ कपाल गिर गया था।

माण्डवा—मालसरसे २ मील (आसाके सामने) नर्मदाके उत्तर-तटपर। राजा पुण्डरीकके पुत्र त्रिलोचनने यहाँ तप किया था। त्रिलोचन-मन्दिर है।

पञ्चमुख हनुमान्—यह मन्दिर आसासे १ मील दूर नर्मदाके दक्षिण-तटपर है।

तारकेश्वर—पञ्चमुख हनुमान्‌से १ मीलपर तारकेश्वर-मन्दिर है।

दीवेर—माण्डवासे दो मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। कपिल नामक एक ऋषिकुमारने यहाँ वेदपाठ करके शिवगणत्व पाया। कपिलेश्वर-मन्दिर है।

रणापुर—दीवेरसे १ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। हिरण्याक्षके पुत्र कम्बुकका यहीं जन्म हुआ था। उसने यहाँ कम्बुकेश्वरकी स्थापना की। यहाँ शङ्करजीको शङ्खसे जल चढ़ानेकी विधि है। अन्यत्र कहीं भी शिवलिङ्गपर शङ्खसे जल चढ़ाना निषिद्ध है।

कोठिया—रणापुरसे १ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। चन्द्रप्रभास तीर्थ है। चन्द्रेश्वर शिव-मन्दिर है। यहीं तप करके चन्द्रमा भगवान् शिवके शिरोभूषण बने।

इन्दौरघाट—कोठियासे २ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। इन्द्रेश्वर-मन्दिर है। वृत्रासुरके वधके बाद इन्द्रने यहाँ तप किया था।

फतेपुर—कोठियासे ४ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँसे थोड़ी दूरपर लोलोदके पास प्राचीन नर्मदेश्वर-मन्दिर है और कोहिना ग्राममें कोहिनेश्वर-मन्दिर है।

वेरुगाम—इन्दौरघाटसे ४ मील, नर्मदाके दक्षिणतटपर। कहते हैं महर्षि वाल्मीकिने गोदावरी-यात्रासे लौटकर यहाँ वालुकामय वालुकेश्वर-लिङ्गकी स्थापना करके पूजा की।

सायर—फतेहपुरसे ४ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ सागरेश्वर-मन्दिर है। गाँवमें कपर्दीश्वर-मन्दिर है, उसे नारेश्वर भी कहते हैं। यहाँ गणेशजीने तप किया है।

गौघाट—सायरसे १ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ गोदावरी-सङ्गम है। इसके पास सरसाड ग्राममें देवेश्वर तीर्थ है। वहाँ भगवान् विष्णुने शिवार्चन किया था। उससे थोड़ी दूरपर बड़वाना ग्राममें शक्रतीर्थ है और इन्द्रद्वारा स्थापित शक्रेश्वर-मन्दिर है।

कर्सनपुरी—गौघाटसे ३ मील, नर्मदाके दक्षिणतटपर। यहाँ नागेश्वर-मन्दिर है। सर्पोंने यहाँ तप किया है।

मोतीकोरल—कर्सनपुरीके सामने नर्मदाके उत्तर-तटपर। चाणोद-मालसर रेलवे लाइनपर चोरडा स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन 'मोतीकोरल' स्टेशनतक आयी है। यहाँ कुबेरेश्वर, आदिवाराह, कोटितीर्थ, ब्रह्मप्रसादज-तीर्थ, मार्कण्डेश्वर, भृग्वीश्वर, पिङ्गलेश्वर, अयोनिजा-तीर्थ तथा रवितीर्थ हैं। कुबेरेश्वरका मन्दिर प्राचीन है। वरुणेश्वर, वायव्येश्वर तथा याम्येश्वर-मन्दिर भी हैं। चारों लोकपालोंने यहाँ तप किया था। ब्रह्माजीने दस अश्वमेध यज्ञ किये हैं। मार्कण्डेय, भृगु, अग्नि तथा सूर्यने भी यहाँ तप किया है। आदित्येश्वर-मन्दिर कोरल ग्रामके पास है। आशापूरी देवीका भी मन्दिर है। इसे गुप्तकाशी कहते हैं।

दिलवाड़ा—कोरलसे १ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ सोमतीर्थ है। इन्द्रने तप करके गौतमके शापसे यहाँ त्राण पाया था। कर्कटेश्वर-मन्दिर है। इसे नर्मदा-तटकी अयोध्या कहते हैं।

भालोद—दिलवाड़ाके सामने नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ गौतमेश्वर, अहल्येश्वर एवं रामेश्वरके मन्दिर तथा मोक्षतीर्थ हैं। महर्षि गौतमने यहाँ तप किया था। भगवान् राम भी यहाँ पधारे थे। स्वायम्भुव मनुने यहाँ मोक्ष प्राप्त किया था।

चाणोद

बड़ोदाके प्रतापनगर स्टेशनसे पश्चिम-रेलवेकी जम्बूसरसे छोटा उदयपुर जानेवाली लाइनके डभोई स्टेशनको गाड़ी जाती है। डभोईसे चाणोदतक दूसरी गाड़ी जाती है। स्टेशनसे नगर लगभग आधी मील दूर नर्मदा-किनारे है। घाटसे ऊपर थोड़ी ही दूरीपर पेटलादवालोंकी धर्मशाला है, यात्री पंडोंके घर भी ठहरते हैं। यहाँ प्रत्येक पूर्णिमाको मेला लगता है। नगरमें शेष-नारायण, बालाजी आदि कई मन्दिर हैं। यहाँ सात तीर्थ हैं—

१. **चण्डादित्य**—चण्ड-मुण्ड नामक दैत्योंने यहाँ सूर्यकी उपासना की थी। उनके द्वारा स्थापित चण्डादित्य-मन्दिर नर्मदा-किनारे है। इन दैत्योंको देवोंने मारा था।

२. **चण्डिकादेवी**—चण्ड-मुण्डको मारनेवाली चण्डिकादेवीका मन्दिर चण्डादित्य-मन्दिरके पास ही है।

३. **चक्रतीर्थ**—कहा जाता है तालमेघ दैत्यको मारकर भगवान् विष्णुने यहाँ नर्मदामें चक्र धोया था। चक्रतीर्थके पास जलशायी नारायणका मन्दिर है।

४. **कपिलेश्वर**—मल्हाररावघाटपर कपिलेश्वर-मन्दिर है। कहा जाता है कपिलभगवान्‌ने यहाँ तप किया और यह मूर्ति स्थापित की थी। अष्टमी और चतुर्दशीको इनके पूजनका विशेष महत्त्व है।

५. **ऋणमुक्तेश्वर**—ऋषियोंने ऋणसे मुक्त होनेके लिये यह मूर्ति स्थापित करके पूजन किया था। यह मन्दिर बस्तीमें है।

६. **पिङ्गलेश्वर**—ओर नदीके संगमसे थोड़ी दूरपर नन्दाह्रद तीर्थके पास। यहाँ अग्निदेवताने तप करके यह मूर्ति स्थापित की थी।

७. **नन्दाह्रद**—ओर-संगमके पास। यहाँ देवी-मन्दिर है।

आस-पासके तीर्थ

कर्नाली—ओर नदीको नर्मदा-संगमके पास पार करना पड़ता है। इसमें सदा घुटनेसे नीचे जल रहता है। चाणोदसे लगभग एक मील दूर नर्मदाके उत्तर-तटपर (ऊपरकी ओर) यह स्थान है। ओर-संगमको लोग पश्चिम-प्रयाग भी कहते हैं। कर्नालीमें बहुत-से नवीन मन्दिर हैं; किन्तु प्राचीन मन्दिर सोमनाथका है। यह सोमेश्वर-तीर्थ है। चन्द्रमाने यहाँ तप किया था। चन्द्रग्रहण-स्नानका माहात्म्य है। सोमनाथ-मन्दिरसे लगभग दो फर्लांग आगे नर्मदा-तटपर कुबेरेश्वर-मन्दिर है। इसे लोग 'कुबेर भंडारी' कहते हैं। उससे थोड़ी दूर पूर्व पावकेश्वर-मन्दिर तथा नर्मदामें पावकेश-तीर्थ है। यहाँ कुबेर तथा अग्निने तपस्या की है। कर्नालीमें धर्मशाला भी है। यहाँ स्वामी विद्यानन्दजीद्वारा स्थापित प्रसिद्ध गीता-मन्दिर है।

पोयचा—कर्नालीसे लगभग तीन मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ पूतिकेश्वर-तीर्थ है। जाम्बवान्, सुषेण तथा नीलने यहाँ तप किया था। नाणोद नगरसे पोयचातक पक्की सड़क है।

कठोरा—पोयचासे दो मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ हनुमदीश्वर-मन्दिर है। हनुमान्‌जीने यहाँ तप किया था। पासमें कपिस्थितापुर ग्राम है।

बरवाड़ा—कर्नालीसे ५ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँसे १ मीलपर चूड़ेश्वर-मन्दिर है। बरवाड़ा और चूड़ेश्वरके बीच मधुस्कन्ध और दधिस्कन्ध तीर्थ हैं। बरवाड़ेमें वरुणेश्वर शिव-मन्दिर है। वरुणने यहाँ तप किया था। इससे कुछ पूर्व नन्दिकेश्वर-तीर्थ है, जो नन्दीकी तपःस्थली है।

जीगोर—बरवाड़ाके सामने नर्मदाके दक्षिण-तटपर, कठोरासे ४ मील। यहाँ ब्रह्माने तप किया था। उनके द्वारा स्थापित ब्रह्मेश्वर-मन्दिर है। मार्कण्डेय ऋषिने तप करके ९ दिनोंमें वेदोंका पारायण तथा कलश-पूजन किया था, उस कलशसे कुम्भेश्वर-लिङ्ग प्रकट हुआ। कुम्भेश्वर तथा मार्कण्डेश्वरके अलग-अलग मन्दिर हैं। शनिने यहाँ तप किया था। वहाँ शनैश्चरका मन्दिर (नानी-मोटी पनौती) है। यहाँसे थोड़ी दूरपर रामेश्वर-मन्दिर है। उसके आस-पास लक्ष्मणेश्वर, मेघेश्वर और मच्छकेश्वरके मन्दिर हैं। यहाँ अप्सरा-तीर्थ भी है।

बाँदरिया—जीगोरसे १ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। इस ग्रामके पास तेजोनाथ (बैद्यनाथ)-तीर्थ है। ग्राममें वानरेश्वर-मन्दिर है। कहा जाता है, गरुड़, अश्विनीकुमार तथा सुग्रीवने यहाँ तप किया था। ग्रहणके समय यह स्थान सर्वतीर्थरूप हो जाता है।

चूडेश्वर—बाँदरियाके सामने नर्मदाके उत्तर-तटपर यह चन्द्रमाकी तपोभूमि है। इसे गुप्त-प्रयाग भी कहते हैं। यहाँ रेवोरी नदीका संगम है। थोड़ी दूरपर नारदजीद्वारा

स्थापित नारदेश्वर-मन्दिर है। वटवीश्वर-मन्दिर तथा अश्वपर्णी-संगम-तीर्थ है।

तूमड़ी—चूड़ेश्वरसे दो मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ मुद्गल ऋषिने भीमव्रत किया था। भीमेश्वर-तीर्थ है। यहाँ गायत्री-जपका महत्त्व है।

सहराव—तूमड़ीसे १ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँसे थोड़ी दूरपर शङ्खचूड़ नागकी तपोभूमि है। वहाँ सर्पदंशसे मरनेवालोंका तर्पण होता है। वहाँसे थोड़ी दूरपर बदरी-केदार-तीर्थ है और उसके पास पाराशर-तीर्थ है। विभाण्डक आदि ऋषियोंकी आराधनासे यहाँ केदारनाथ प्रकट हुए। हर-गौरीका मन्दिर भी है।

तिलकवाड़ा—सहरावके सामने थोड़ी दूरपर मणि नदीके किनारे यह स्थान है। गौतम ऋषिने यहाँ तप किया था। गौतमेश्वर-मन्दिर है। यहाँ किसी मनुके पुत्र तिलकद्वारा स्थापित तिलकेश्वर शिव हैं। इसे मणितीर्थ कहा जाता है।

मणिनागेश्वर—तिलकवाड़ासे १ मील मणिनदीके दूसरे तटपर। यहाँ मणिनदी नर्मदामें मिलती है। संगमपर मणिनागेश्वरका मन्दिर है। मणिनागने यहाँ तप किया था। प्रसन्न होकर उसे शङ्करजीने अपना आभूषण बनाया।

गुवार—मणिनागेश्वरसे लगभग २ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ गोपारेश्वर-तीर्थ है। कामधेनुने अपने दूधसे यहाँ भगवान् शङ्करका अभिषेक किया था।

बासणा—मणिनागेश्वरसे दो मील (गुवारके सामने) नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ कपिलेश्वर-तीर्थ है। सगर राजाके पुत्रोंके भस्म होनेपर कपिलमुनिने यहाँ आकर तप किया था। यहाँ कपिलेश्वर-मन्दिर है।

माँगरोल—यहाँ मङ्गलेश्वर-मन्दिर है। वासणासे थोड़ी दूरपर नर्मदाके दक्षिण-तटपर यह स्थान है। मङ्गल ग्रहने यहाँ तप किया था।

रेंगण—माँगरोलसे १ मील नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ कामेश्वर-तीर्थ है। गणेशजीने यहाँ तप किया था।

रामपुरा—माँगरोलसे १ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। इसके पूर्व अनड़वाही नदीका संगम है। उस नदीके पश्चिम भीमेश्वरका पुराना मन्दिर है। पास ही अर्जुनेश्वर-मन्दिर है। यह सहस्रार्जुनद्वारा स्थापित है। वहीं समीप धर्मेश्वर-मन्दिर है।

इस ग्रामके समीप लुकेश्वर-मन्दिर है। कहा जाता है भस्मासुरके भयसे भागते हुए शङ्करजी यहाँ कुछ देर छिपे थे। पासमें कुबेरद्वारा स्थापित धनदेश्वर-मन्दिर है। कुबेरने यहाँ शिवार्चन किया है। समीप ही जटेश्वर-मन्दिर है।

सूरजवर—रामपुरसे दो मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। ग्रामके पूर्व मातृ-तीर्थ है। यहाँ सप्तमातृकाओंने तपस्या की थी। सप्तमातृकाओंके मन्दिर हैं। पासमें नर्मदाजीका मन्दिर है। ग्रामसे पश्चिम मुण्डेश्वर शिव-मन्दिर है। मुण्ड नामक शिवगणने वहाँ तप किया था।

यमहास—(नर्मदाजीके प्रवाहकी ओर) चाणोदसे १ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। वृत्रासुर-वधके बाद यमराज तथा अन्य देवताओंने यहाँ नर्मदामें स्नान किया था।

गङ्गनाथ—चाणोदसे २ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ गङ्गासप्तमीको मेला लगता है। पासमें नन्दिकेश्वर-मन्दिर है तथा समीपके नदौरिया ग्राममें नर-नारायण (बदरिकाश्रम)-तीर्थ है। कहते हैं बदरिकाश्रमसे यहाँ आकर नर-नारायणने कुछ काल तप किया था। यहाँ पक्का घाट है। टीलेपर गङ्गनाथ शिव-मन्दिर तथा गुफामें सरस्वती-मन्दिर है।

नरवाड़ी—यमहाससे २ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ नल वानरने तप किया था।

मालेथा—गङ्गनाथसे १ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ कोटेश्वर-तीर्थ है। यह महर्षि याज्ञवल्क्यकी तपोभूमि है।

रुंड—नरवाड़ीसे ३ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। करञ्ज्या नदीका संगम है। संगमपर नागेश्वर-मन्दिर है। यहाँ वासुकिनागने तप किया था। पास ही नर्मदामें रुद्र-कुण्ड है।

शुकेश्वर—रुंडसे १ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यह शुकदेवजीकी तपःस्थली है। यहाँ पहाड़ीपर शुकेश्वर शिवमन्दिर है। पासमें मार्कण्डेश्वर-मन्दिर है। यहाँ कर्णेश्वर तथा रणछोड़जीके मन्दिर भी हैं।

व्यास-तीर्थ—शुकेश्वरके सामने नर्मदाके उत्तर-तटपर। मालेथासे ४ मील दूर बरकाल ग्राम है। यहीं व्यास-तीर्थ है। यहाँ बलरामजीने तप किया था। इससे यहाँ संकर्षण-तीर्थ तथा यज्ञवट है। वहाँसे थोड़ी दूरपर सूर्यपत्नी प्रभाकी तपःस्थली और उनके स्थापित प्रेमेश्वर महादेवका मन्दिर है। वहाँ व्यासजीका आश्रम तथा उनके व्यासेश्वर शिवका मन्दिर है। कहा जाता है व्यासजीने अपने तपोबलसे नर्मदाकी एक धारा आश्रमके दक्षिण बहा दी। इस प्रकार

यह स्थान नर्मदाके द्वीपमें हो गया।

झाँझर—व्यास-तीर्थसे ४ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। इसके पास महाराज जनकने तप किया था। यहाँ जनकजीने यज्ञ किया था। जनकेश्वर शिव-मन्दिर है। ग्राममें ही मन्मथेश्वर-मन्दिर है। यह कामदेवद्वारा स्थापित कहा जाता है।

ओरी—झाँझरसे थोड़ी दूरपर नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ मार्कण्डेश्वर-मन्दिर है। मार्कण्डेय ऋषिकी आज्ञासे एक नरेशने यहाँ तप किया था।

कोटिनार—ओरीसे १ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ कोटीश्वर-मन्दिर है। घोर अकालके समय यहाँ शिवार्चन करनेसे प्रजाकी रक्षा हुई।

अनसूया—कोटीश्वरके सामने नर्मदाके द्वीपमें। चाणोदसे प्रायः यहाँतक यात्री नौकासे आते हैं। यहाँ महर्षि अत्रिका आश्रम था। यहाँ अनसूया माताका मन्दिर है। इसके सामने नर्मदाके उत्तर-तटपर सुवर्ण शिला ग्रामके पास एरंडी नदीका संगम है। उसे हत्याहरण-तीर्थ कहते हैं। वहाँ आश्विन शुक्ला ७ को मेला लगता है।

भरुच

पश्चिम-रेलवेकी बंबई-बड़ौदा लाइनपर भरुच स्टेशन है। यह प्रसिद्ध नगर है। नगर तीन मीलसे अधिक लंबा और एक मील चौड़ा है। इसे भृगुक्षेत्र कहते हैं। महर्षि भृगुका यहाँ आश्रम था। राजा बलिने दस अश्वमेधयज्ञ किये थे। यहाँ नर्मदाके किनारे-किनारे बहुतसे मन्दिर हैं। कहा जाता है यहाँ ५५ तीर्थ हैं। अधिक-मासमें यहाँ पञ्चतीर्थयात्रा होती है। मुख्य तीर्थ निम्न हैं।

१. **महारुद्र**—भरुचसे लगभग २ मील नर्मदाके ऊपरकी ओर उत्तर-तटपर। यहाँ सेंधवा (शांकरी) देवी और शाक्तकूप है। शाक्तकूपमें नर्मदा-जल रहता है। पिङ्गलेश्वर और भूतेश्वर महादेवके मन्दिर और देवखात सरोवर है।

२. **शङ्खोद्धार**—महारुद्रसे कुछ दूरपर। इस तीर्थको गङ्गावाह-तीर्थ भी कहते हैं। यहाँ शङ्खासुरका उद्धार हुआ तथा गङ्गाजीने यहाँ तप किया था।

३. **गौतमेश्वर**—शङ्खोद्धारसे थोड़ी दूर पश्चिम। गौतम तथा कश्यप ऋषियोंकी तपोभूमि है।

४. **दशाश्वमेध**—महाराज प्रियव्रतने यहाँ दस अश्वमेधयज्ञ किये थे।

५. **सौभाग्यसुन्दरी**—यह लक्ष्मी-तीर्थ है। इसके पास वृषादकुण्ड है।

६. **धूतपाप**—यहाँ धूतपापा देवीका मन्दिर तथा पासमें केदार-तीर्थ है; यह सौभाग्यसुन्दरी-तीर्थके पास ही है।

७. **एरंडी-तीर्थ**—धूतपापके पास। यहाँ कनकेश्वरी देवीका मन्दिर है।

८. **ज्वालेश्वर**—यह शिव-मन्दिर है; इसमें स्वयम्भूलिङ्ग है। मन्दिरके पास एक कुण्ड है।

९. **शालग्राम-तीर्थ**—ज्वालेश्वरके पास नारदजीद्वारा स्थापित शालग्राम हैं।

१०. **चन्द्रप्रभास**—शालग्रामसे थोड़ी दूरपर यह तीर्थ चन्द्रमाद्वारा निर्मित है। यहाँ सोमेश्वर-मन्दिर है। इसके पास वाराह-तीर्थ है।

११. **द्वादशादित्य**—चन्द्रप्रभासे लगा द्वादशादित्य-तीर्थ है। यहाँ सिद्धेश्वर-महादेव तथा सिद्धेश्वरी देवीके मन्दिर हैं।

१२. **कपिलेश्वर**—द्वादशादित्य-तीर्थसे थोड़ी दूरपर यह मन्दिर है। कपिलजीकी सात तपःस्थलियोंमें यह एक है। इसके पास त्रिविक्रमेश्वर-तीर्थ, विश्वरूप-तीर्थ, नारायण-तीर्थ, मूल श्रीपति-तीर्थ और चौल-श्रीपतितीर्थ है।

१३. **देव-तीर्थ**—कपिलेश्वरसे थोड़ी दूरपर। यह वैष्णवतीर्थ है।

१४. **हंस-तीर्थ**—देव-तीर्थसे लगा हुआ।

१५. **भास्कर-तीर्थ**—हंसतीर्थके आगे। इसके पास ही प्रभा-तीर्थ है।

१६. **भृग्वीश्वर**—महर्षि भृगुद्वारा प्रतिष्ठित शिवलिङ्ग। इसके पास ही कण्ठेश्वर, शूलेश्वर महादेव तथा शूलेश्वरी देवी हैं।

१७. **दारुकेश्वर**—भृग्वीश्वरसे आगे यह स्थान है। इससे थोड़ी दूरपर सरस्वती-तीर्थ है और दूसरी ओर अश्विनौ-तीर्थ है।

१८. **बालखिल्येश्वर**—दारुकेश्वरसे आगे। इसके पास सावित्री-तीर्थ है। उसीके पास गोनागोनी-तीर्थ है।

१९. **नर्मदेश्वर**—बालखिलेश्वरके पास यह प्राचीन

मन्दिर है।

२०. **मत्स्येश्वर**—नर्मदेश्वरसे थोड़ी दूरपर। इसके पास मातृ-तीर्थ है।

२१. **कोटेश्वर**—मत्स्येश्वरसे थोड़ी दूर। यहाँ कोटेश्वर और कोटेश्वरी देवीके मन्दिर हैं।

२२. **ब्रह्म-तीर्थ**—कोटेश्वरसे थोड़ी दूरपर।

२३. **क्षेत्रपाल-तीर्थ**—ब्रह्म-तीर्थसे थोड़ी दूर। ढुंढेश्वर महादेव हैं। इसके पास कुररी-तीर्थ है।

भरुचमें दशाश्वमेध-घाटपर नर्मदा-मन्दिर दर्शनीय है। भृग्वीश्वर-मन्दिर महर्षि भृगुके आश्रमके स्थानपर है। यह भी घाटसे थोड़ी दूरपर है। यहाँ नर्मदामें प्रतिदिन ज्वारभाटा आता है।

कावी

भरुचसे एक लाइन कावीतक जाती है। स्टेशनसे बाजार पास है। बाजारके दक्षिण-पश्चिम भागमें जैन-मन्दिर है और वहीं धर्मशाला है। यहाँ सास-बहूके बनवाये दो मन्दिर हैं—सासका बनवाया आदिनाथ-मन्दिर और बहूका बनवाया 'रत्न तिलक-मन्दिर'। पिछले मन्दिरमें श्रीधर्मनाथ स्वामीकी मूर्ति है। दोनों ही मन्दिरोंकी रचना अत्यन्त कलापूर्ण है। यहाँ आसपास अनेक प्राचीन भग्नावशेष पाये जाते हैं।

आस-पासके तीर्थ

अंदाड़ा—(नर्मदामें ऊपरकी ओर)—यह ग्राम नर्मदाजीसे दूर है और महारुद्रसे आगे है। यहाँ सिद्धेश्वर शिव और सिद्धेश्वरी देवीके मन्दिर हैं।

नौगवाँ—अंदाड़ासे १ मील पूर्व। यहाँ नाग-तीर्थ है। औदुम्बर नागने तप किया था। यह स्थान उदुम्बर नदीके तटपर है। पासके सामोर ग्राममें साम्बादि-तीर्थ है, नौगवाँके पास मांडवा-बुझरुक गाँवमें मार्कण्डेश्वर-तीर्थ है।

झाड़ेश्वर—भरुचसे ४ मील (महारुद्रसे २ मील) नर्मदाके उत्तर-तटपर। घोड़ेश्वर, वैद्यनाथ तथा रणछोड़जीके मन्दिर हैं। अश्विनीकुमारोंने यहाँ तप किया था।

गुमानदेव—भरुचसे ६ मीलपर अङ्कलेश्वर स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन राजपीपला गयी है। उस लाइनपर अङ्कलेश्वरसे १० मीलपर गुमानदेव स्टेशन है। यहाँ हनुमान्‌जीका बड़ा मन्दिर है। यह स्थान झाड़ेश्वरसे ३ मील, नर्मदाके दक्षिण तटपर है।

तवरा—झाड़ेश्वरसे २ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ कपिलेश्वर-मन्दिर है। कपिलजीने यहाँ तप किया था।

ग्वाली—तवराके सामने थोड़ी दूरपर, नर्मदाके दक्षिणतटपर। यहाँ गोपेश्वर-मन्दिर है। पुण्डरीक गोपने यहाँ तप किया था। इसके पास मोरद ग्राममें मार्कण्डेश्वर-मन्दिर है।

उचड़िया—ग्वालीसे २ मील, नर्मदाके दक्षिण-तटपर। सप्तर्षियोंकी तपोभूमि है। मोक्ष-तीर्थ है।

मोटासाँजा—उचड़ियासे १ मील; नर्मदा यहाँसे कुछ दूर हैं। यहाँ मधुमती नदी है, जो आगे नर्मदामें मिली है। संगमेश्वर-मन्दिर यहीं है। पासमें अनर्केश्वर और नर्मदेश्वर-मन्दिर हैं। वहीं सर्पेश्वर-मन्दिर है। कहा जाता है कुबेरने यहाँ गमेश्वरकी स्थापना की है।

कलोद—मोटासाँजासे लगभग १ मील, नर्मदाके उत्तरतटपर। गोपेश्वर और कोटेश्वर महादेवके मन्दिर हैं। कहा जाता है गोपराज नन्दजीने गोपेश्वरकी स्थापना की थी। कोटेश्वरकी स्थापना बाणासुरने की थी। भरुचसे शुक्लतीर्थ जानेवाले मोटर-बसके मार्गपर यह स्थान है।

कलकलेश्वर—मोटासाँजासे ३ मील, नर्मदाके दक्षिणतटपर। इसे जबरेश्वर भी कहते हैं। यहाँसे लगभग एक मीलपर 'नर्मदा रिवर-साइड' स्टेशन है।

शुक्ल-तीर्थ—यह नर्मदाके उत्तर तटपर कलकलेश्वरके सामने ही है। कडोदसे यह स्थान तीन मील है। भरुचसे शुक्ल तीर्थ १० मील है। भरुचसे यहाँतक पक्की सड़क है। बराबर मोटर-बसें चलती हैं। 'नर्मदा रिवर-साइड' स्टेशनसे पुलद्वारा नर्मदा पार करके यहाँ आ सकते हैं। नर्मदाका यह श्रेष्ठ तीर्थ है।

यहाँ नर्मदामें कवि, ओंकारेश्वर और शुक्ल नामके कुण्ड थे, जो लुप्त हो गये। यहाँका प्रधान मन्दिर शुक्लनारायण-मन्दिर है। मन्दिरमें ही पटेश्वर और सोमेश्वर लिङ्ग स्थापित हैं। नारायणकी श्वेत चतुर्भुज सुन्दर मूर्ति है। उनके दोनों ओर ब्रह्म तथा शङ्करकी मूर्तियाँ हैं। कहा जाता है यहाँ राजा चन्द्रगुप्त और चाणक्यने आकर स्नान किया था। यहाँ दूसरा मन्दिर ॐकारेश्वरका है, जिसे हुंकारेश्वर भी कहते हैं। इसके

पास ही शूलपाणीश्वरी मन्दिर है और उससे थोड़ी दूरपर आदित्येश्वर तीर्थ है। कहा जाता है यहाँ जाबालिने तपस्या की थी। यहाँ आदित्येश्वर-मन्दिर है। नगरमें ही गङ्गनाथ मन्दिर है। इन्हें गोपेश्वर भी कहते हैं।

कबीरवट—शुक्ल-तीर्थसे लगभग १ मीलपर नर्मदाके द्वीपमें कबीरवट है कहा जाता है। कबीरदासजीने यहाँ दातौन गाड़ दी थी, जो वृक्ष बन गयी। यह वट-वृक्ष अब वटवृक्षोंका समुदाय बन गया है। सब एक ही वृक्षकी जटाओंसे बने वृक्ष हैं। इनका विस्तार एक पूरे बगीचे-जितना हो गया है। यहाँ कबीरदासजीका मन्दिर हैं।

मङ्गलेश्वर—शुक्ल-तीर्थसे लगभग १ मीलपर नर्मदाके उत्तर-तटपर मङ्गलेश्वर ग्राम है। यहाँ वाराह तीर्थ है। यहाँ वराहभगवान्की मूर्ति है। भार्गलेश्वर शिव-मन्दिर है।

लाड़वा—मङ्गलेश्वरके सामने थोड़ी दूर नर्मदाके दक्षिणतटपर। यहाँ कुसुमेश्वर-तीर्थ है। कामदेवने यहाँ तप किया था।

निकोरा—लाड़वासे १ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ श्वेतवाराह-तीर्थ है। लिङ्गेश्वर शिव-मन्दिर है। यहीं अंकोल-तीर्थ है।

पोरा—निकोराके सामने नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ पराशरेश्वर-मन्दिर है। पराशर ऋषिने यहाँ तप किया है।

अङ्गारेश्वर—निकोरासे १ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ अङ्गारेश्वर-मन्दिर है। मङ्गल ग्रहने यहाँ तप किया था।

धर्मशाला—अङ्गारेश्वरसे दो मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। इसे पितृ-तीर्थ कहते हैं। यहाँ पितृतर्पण तथा श्राद्ध किया जाता है। नर्मदामें यहाँ वह्नि-तीर्थ है।

झीनोर—धर्मशालासे ३ मील नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ रुक्मिणी-तीर्थ, राम-केशव-तीर्थ, जयवराह-तीर्थ, शिव-तीर्थ और चक्र-तीर्थ है। कहते हैं यहाँ स्वयं शङ्करजीने हिरण्याक्षवधके पश्चात् वराहभगवान्का पूजन किया था।

नाँद—झीनोरसे २ मील, नर्मदाके उत्तर-तटपर। यहाँ नन्दा देवीका मन्दिर है। यहाँ देवीने महिषासुर-वधके बाद शङ्करजीकी पूजा की थी।

सिद्धेश्वर—यह सिद्धेश्वर-तीर्थ नर्मदाके दक्षिण-तटसे २ मील दूर वनमें है। पासमें वारुणेश्वर-तीर्थ भी है।

तरशाली—सिद्धेश्वरसे २ मील नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ तापेश्वर-तीर्थ है। वेदशिरा ऋषिने यहाँ शिवार्चन किया था।

त्रोटीदरा—तरशालीसे ९ मील नर्मदाके दक्षिण-तटपर। यहाँ सिद्धेश्वर-तीर्थ है। ब्रह्माजीने यहाँ यज्ञ किया था। भालोदसे यह स्थान २ मील है।

भरुचसे नर्मदा-प्रवाहकी ओर दक्षिण-तटके तीर्थ

अङ्कलेश्वर—भरुचसे और अंदाड़ासे भी ५ मील। अङ्कलेश्वर स्टेशन है। भरुचके पास और रेलगाड़ीके रास्ते भरुचसे ६ मील दूर है। अब नर्मदा यहाँसे तीन मील दूर है। पहले नर्मदाका प्रवाह यहीं था; किंतु महर्षि भृगुके तपके प्रभावसे नर्मदा उनके आश्रमके पास चली गयीं।

अङ्कलेश्वरमें माण्डव्येश्वरका प्राचीन मन्दिर है। यमराजको भी शाप देनेवाले माण्डव्य ऋषिका आश्रम यहीं था। पतिव्रता शाण्डिली यहीं रहती थीं। रामकुण्ड-तीर्थ यहाँ शाण्डिलीके लिये प्रकट हुआ। यहाँ अक्रूरेश्वर-मन्दिर तथा उसके पार झिरकुण्ड और रणछोड़जीका मन्दिर है। यहाँ रामकुण्डके पास धर्मशाला है।

भरोड़ी—अङ्कलेश्वरसे ५ मील। यहाँ नीलकण्ठ शिवकी चतुर्भुज मूर्ति है। पासमें सूर्यकुण्ड (बलबलाकुण्ड) है। यहाँ धर्मशाला है।

सहजोत—भरोड़ीसे ४ मील। यहाँ रुद्रकुण्ड है और उसके पास सिद्धरुद्रेश्वर, सिद्धनाथ तथा दत्तात्रेयके मन्दिर हैं। भगवान् शङ्करने यहाँ तप किया था।

मांटियर—सहजोतसे १ मील। यहाँ वैद्यनाथ-तीर्थ, सूर्यकुण्ड और सरोवरपर मातृका-तीर्थ है।

मोठिया—मांटियरसे १ मील। यहाँ मातृ-तीर्थ नामक कुण्ड है।

सीरा—मोठियासे १ मील। यहाँ नर्मदेश्वर-मन्दिर है।

उत्तरराज—सीरासे २ मील। यहाँ उत्तरेश्वर-मन्दिर है। राजा शशबिन्दुकी पुत्रीने यहाँ तप किया था।

हाँसोट—उत्तराजसे १ मील। अङ्कलेश्वरसे यहाँतक पक्की सड़क है। हंसेश्वर-मन्दिर है। उससे कुछ दूरपर तिलदेश्वर-तीर्थ है। यहाँ महर्षि जाबालिने तप किया था। यहाँसे नर्मदा-परिक्रमा करनेवालोंको समुद्र पार करनेके लिये नावकी चिट्ठी मिलती है। यहाँ सूर्यकुण्ड भी है।

वासनोली—हाँसोटसे ३ मील। यहाँ वसु-तीर्थ है तथा वासवेश्वर-मन्दिर है। यहाँ वसु देवताओंने तप किया था।

कतपुर—वासनोलीसे ४ मील। यहाँ कोटेश्वर महादेवका मन्दिर है।

बिसोद—कतपुरसे १ मील। यहाँ अलिकेश्वर-मन्दिर है। एक अलिका नामक गन्धर्वकन्याने यहाँ तप किया था।

विमलेश्वर—बिसोदसे २ मील। यहाँ इन्द्र, ऋष्यशृङ्ग, सूर्य, ब्रह्मा तथा शिवजीने तप किया था। यहाँ कुओंका जल भी खारा है। यहाँसे नर्मदा-परिक्रमा करनेवाले नौकामें बैठकर नर्मदाके उत्तर-तटपर जाते हैं।

भरुच नर्मदा-प्रवाहकी ओर उत्तर-तटके तीर्थ

दशान—भरुचसे २ मील। नर्मदाके दूसरे तटपर। यहाँ दशकन्या-तीर्थ है।

टिम्बी—दशानसे १ मील। यहाँ सुवर्णविन्देश्वर-तीर्थ है।

भारभूत—यह गाँव भरुचसे ८ मील (टिम्बीसे ४ मील) दूर है। भरुचसे यहाँतक मोटर-बसें चलती हैं। अधिकमास भाद्रपदमें हो तो यहाँ मेला लगता है। नर्मदा-तटपर भारभूतेश्वर शिव-मन्दिर है। पासमें अन्य कई मन्दिर हैं और एक सरोवर है। वहाँसे थोड़ी दूरपर बरुआ ग्राममें ऋणमोचन-तीर्थ है। यहाँ नर्मदा-जल खारा रहता है।

अमलेश्वर—भारभूतसे ४ मील। यहाँ अमलेश्वर शिव-मन्दिर है। नर्मदातटसे यह स्थान दूर है।

समनी—अमलेश्वरसे ४ मील दक्षिण। यहाँ मुंडीश्वर-तीर्थ है। कार्तिक-पूर्णिमापर मेला लगता है।

एकसाल—समनीसे २ मील। यहाँ अप्सरेश्वर शिव-मन्दिर है। इसके पास ही डिंडीश्वर स्वयम्भू-लिङ्ग है।

मेगाँव—एकसालसे ३ मील। कहते हैं यहाँ गणिता-तीर्थमें पराशक्तिका नित्य सांनिध्य है। यहाँ मार्कण्डेश्वर तीर्थ है। इसके पास मुनाड ग्राममें मुन्यालय-तीर्थ है।

कासवा—मेगाँवसे तीन मील। यहाँ कंथेश्वर-मन्दिर है।

कुजा—कासवासे १ मील। यहाँ मार्कण्डेश्वर, आषाढीश्वर, शृङ्गीश्वर और वल्कलेश्वर-मन्दिर है।

कलादरा—कुजासे १ मील। यहाँ कपालेश्वर-मन्दिर है। यहाँ शङ्करजीने हाथका कपाल रख दिया था।

बैंगणी—कलादरासे १ मील। यहाँ बैजनाथ-महादेवका प्राचीन मन्दिर है।

कोल्याद—बैंगणीसे १ मील। यहाँ एरंडी नदीका संगम है। संगमपर कपिलेश्वर-तीर्थ है।

सुआ—कोल्यादसे २ मील। यहाँ सोमेश्वरका प्राचीन मन्दिर है।

अमलेठा—सुआसे ३ मील पश्चिम। यहाँसे एक मील उत्तर नर्मदातटपर चन्द्रमौलीश्वर-मन्दिर और धर्मशाला है।

देज—अमलेठासे २ मील। यहाँ दधीचि-ऋषिका आश्रम है, दूधनाथ तथा भगवतीका स्थान है। अमलेठा और देजके बीचमें अमियानाथ, सोमनाथ और नीलकण्ठेश्वरके मन्दिर मिलते हैं।

भूतनाथ—देजसे १ मील। यहाँ भूतनाथ-मन्दिर है, जिसके पास-पास तीन लिङ्ग हैं। यहाँ जल नहीं है। चारों ओर बबूलके वृक्ष हैं।

लखीगाम—भूतनाथसे १ मील। यहाँ लुंठेश्वर (लक्ष्मण-लोटेश्वर)-मन्दिर है। लुंठेश्वर-लिङ्ग गोमुखके समान है। मन्दिरके सामने वृषखाद-कुण्ड है।

लोहारया—लखीग्रामसे २ मील दक्षिण। यहाँ जमदग्नि-ऋषिने तथा परशुरामजीने भी तप किया था। जमदग्नितीर्थ तथा परशुराम-तीर्थ पास-पास हैं। ये तीर्थ घोर वनमें हैं और वहाँ जल नहीं है।

रेवा-सागर-संगम

विमलेश्वरसे नौकामें बैठकर परिक्रमा-यात्री नर्मदा-सागर-संगमकी प्रदक्षिणा करके लोहारयाके पास नौकासे उतरते हैं। रेवा-सागर-संगम-तीर्थ विमलेश्वरसे १३ मील है और वहाँसे लोहारया १ मील है।

रेवा (नर्मदा) का समुद्रसे संगम कई मील ऊपर हो जाता है; किंतु नर्मदाकी धारा विमलेश्वरके ऊपरतक साफ दीखती है। यहाँ समुद्रमें ऊँची तरंगे उठती हैं। नौकासे यात्रा करनेपर प्रायः चक्कर आता है। कुछ लोगोंको उलटी भी आती है।

विमलेश्वरसे तेरह मीलकी यात्रा करनेपर उत्तरतटकी भूमि दृष्टि पड़ने लगती है। रेवा-सागर-संगम-तीर्थपर प्रकाशस्तम्भ (लाइटहाउस) है और उसके पास 'हरिका धाम' नामक स्थान है।

सूरत

पश्चिम-रेलवेमें सूरत प्रसिद्ध स्टेशन तथा इतिहास-प्रसिद्ध नगर है। तीर्थकी दृष्टिसे इसका महत्त्व इसलिये है कि सात पवित्र नदियोंमेंसे तापी सूरतके पाससे बहती है। सूरत नगरमें हनुमान्जीका मन्दिर, स्वामिनारायण-मन्दिर, श्रीकृष्ण-मन्दिर, महाप्रभुजीकी बैठक, बालाजीका मन्दिर तथा जैन-मन्दिर हैं।

सूरतसे तापी लगभग ३ मील दूर है। वहाँ अश्विनी-कुमार-घाटपर यात्री स्नान करते हैं। सूरत स्टेशनके पाससे अश्विनीकुमार-घाटतक मोटर-बसें चलती हैं। सूरतका पुराना नाम सूर्यपुर है। तापी सूर्यकन्या हैं और उनका नाम तपती है। पुराणकी कथा है कि एक बार सूर्यपुत्री यमुना तथा तपतीमें विवाद हो गया। दोनोंने एक दूसरीको जलरूप होनेका शाप दे दिया। उस समय भगवान् सूर्यने उन्हें वरदान दिया कि यमुनाजल गङ्गाके समान और तपतीजल नर्मदाके समान पवित्र होगा।

ताप्ती-किनारे अश्विनीकुमार-घाटपर कहा जाता है देववैद्य अश्विनीकुमारोंने तपस्या की थी। यहाँ इन दोनों देवताओंद्वारा स्थापित अश्विनीकुमारेश्वर शिवलिङ्ग है। उस मन्दिरको वैद्यराज-महादेव-मन्दिर या अश्विनीकुमार-मन्दिर कहते हैं। यहाँ एक देवी-मन्दिर तथा अन्य कई उत्तम मन्दिर हैं।

वैद्यराज-मन्दिरसे कुछ दूर पश्चिम ताप्ती-किनारे पाण्डवोंकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ वैद्यराज-मन्दिरसे पूर्व एक मन्दिरके घेरेमें एक पीपलके वृक्षके नीचे एक छोटा पतला वटवृक्ष लगा हुआ है। इसे तीन पत्तेका अक्षयवट कहकर प्रसिद्ध किया जाता और कई सौ वर्ष पुराना कहा जाता है। किंतु ध्यानसे देखनेपर यह बात सत्य नहीं लगती। उस वृक्षमें जो अन्य टहनियाँ निकलती हैं, उन्हें काट दिया जाता है और तीनसे अधिक पत्ते होनेपर उन्हें तोड़ दिया जाता है। वृक्ष भी सम्भवतः लोगोंसे छिपाकर बदला जाता है।

अम्बाजी-मन्दिर—सूरतमें अम्बाजी रोडपर अम्बा देवीका विशाल मन्दिर है। इसमें जो देवी-मूर्ति है, एक स्वप्नादेशके अनुसार चार सौ वर्ष पहले अहमदाबादसे सूरत लायी गयी थी। देवीकी मूर्ति कमलाकार पीठपर विराजमान है। यह मूर्ति एक रथपर स्थित है, जिसमें दो घोड़े तथा दो सिंहोंकी मूर्तियाँ बनी हैं। देवीके दाहिने गणेशजी और शंकरजी तथा बायीं ओर बहुचरा देवीकी मूर्ति है।

बुढ़ान—सूरतसे २ मील दूर ताप्तीके दूसरे तटपर राँदेर ग्राम है। उसके पास बुढ़ानमें एक बड़ा मन्दिर है। वहाँ बहुत-से यात्री जाते हैं।

उदवाड़ा

(लेखक—श्रीअंबाशंकर नारायण जोशी)

पश्चिम-रेलवेकी बंबई-बड़ौदा लाइनपर बलसाड़से १० मील पहले उदवाड़ा स्टेशन है। यहाँसे चार मील दूर श्रीरामेश्वर-मन्दिर है। यह मन्दिर प्राचीन है। यहाँ एक अश्वत्थवृक्षकी जड़से बराबर जलधारा निकलती है। वहाँ एक कुण्ड भी बना है। महाशिवरात्रिपर यहाँ मेला लगता है।

यहाँसे ६ मील दूर कोटेश्वर महादेवका प्राचीन मन्दिर है। वहाँ कलिका नामक छोटी नदी बहती है। पासके बगवाड़ा ग्राममें अम्बाजीका मन्दिर है।

कोटेश्वरसे तीन मील दूर कुता ग्राममें कुन्तेश्वर शिव-मन्दिर है। यह गुजरातके पवित्र तीर्थोंमें है।

इसी रेलवे-लाइनपर दाहानू-रोड स्टेशनसे १८ मील पूर्व महालक्ष्मी माताका धाम है। यहाँ चैत्र-प्रतिपदासे चैत्र पूर्णिमातक मेला लगता है।

बोधन

सूरत-भरुच लाइनपर सूरतसे १५ मील दूर कीम स्टेशन है। वहाँसे १३ मीलपर बोधन ग्राम है। यहाँ गौतमेश्वर महादेवका मन्दिर है। कहा जाता है महर्षि गौतमने यहाँ तपस्या की थी। महाशिवरात्रिको यहाँ मेला लगता है।

गुजरातके कुछ दर्शनीय विग्रह तथा पवित्र स्थल
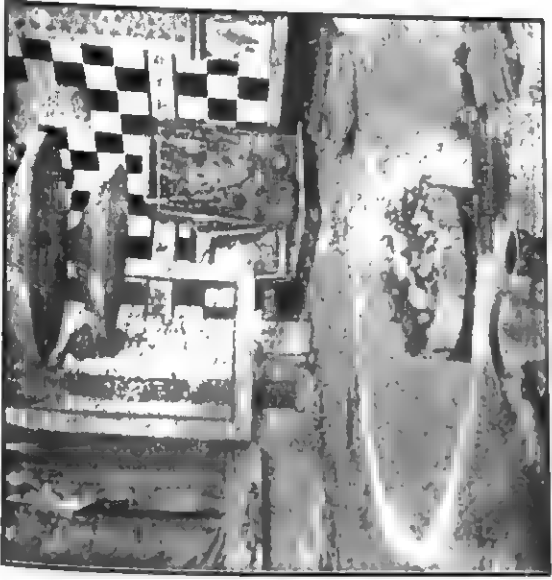
श्रीअश्विनीकुमार-मन्दिरका शिवलिङ्ग, सूरत
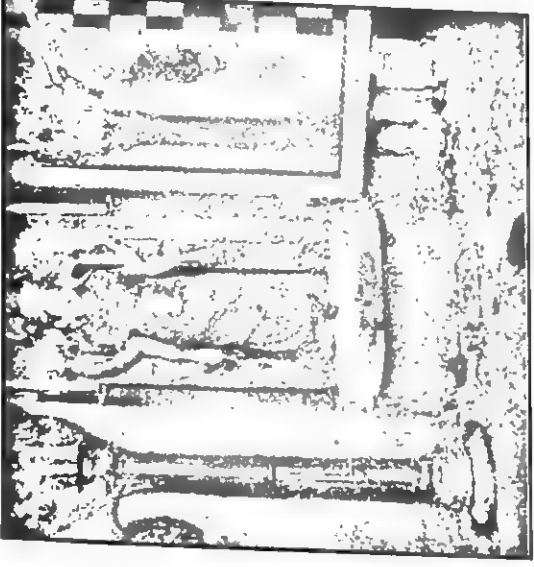
श्रीअश्विनीकुमार-मन्दिरकी माताजी, सूरत
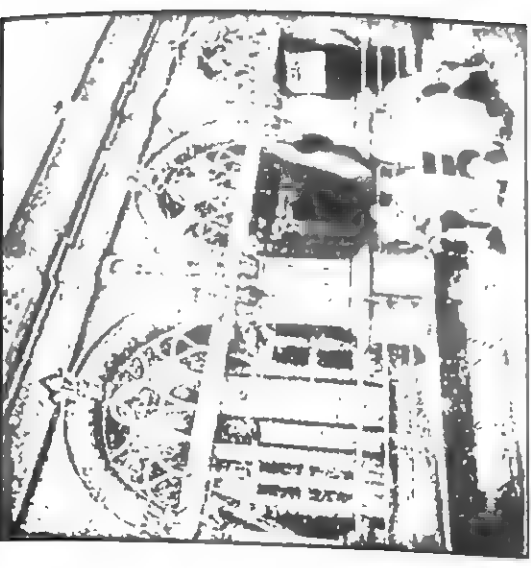
ताप्तीके तटपर श्रीमहाप्रभुजीकी बैठक, सूरत
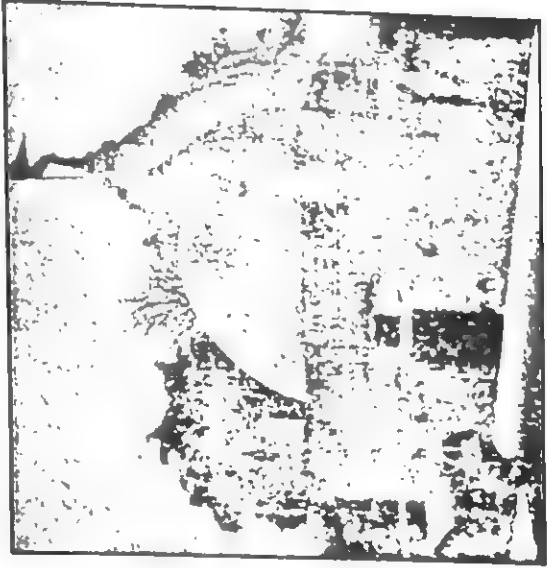
श्रीभारभूतेश्वर-मन्दिर, भरुच

श्रीअम्बादेवी, सूरत

श्रीधर्मनाथ जैन-मन्दिर, कावी

बंबई तथा सौराष्ट्रके कुछ दर्शनीय विग्रह एवं स्थान
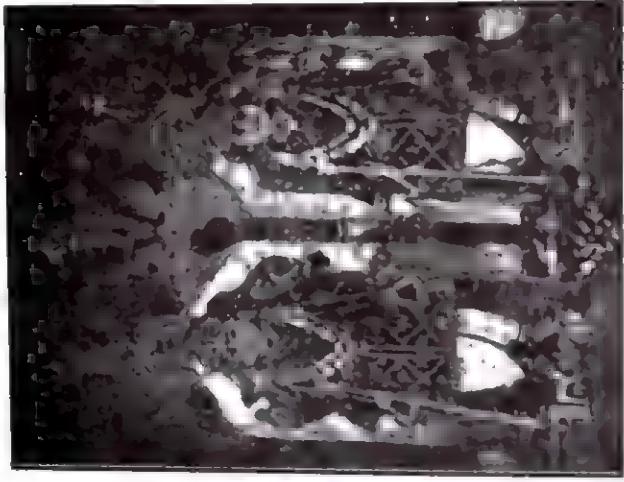
श्रीनर-नारायण-मन्दिरके नर-नारायण-विग्रह, बंबई

श्रीबालकृष्णलालजीके श्रीविग्रह, मोटा-मन्दिर, बंबई

श्रीकालबादेवी, बंबई
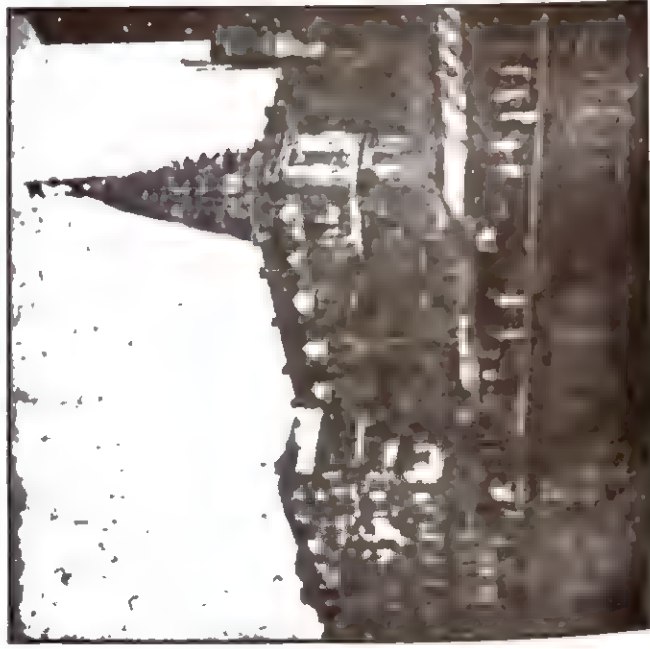
मुम्बादेवीका भव्य मन्दिर, बंबई

श्रीमहालक्ष्मी-मन्दिर, बंबई

स्वदेशी औषध-प्रयोगशाला, जामनगर

उनाईमाता

(लेखक—श्रीरमणगिरि अमृतगिरि)

पश्चिम-रेलवेकी बंबई-खाराघोड़ा लाइनपर वलसाडसे ११ मील दूर बिलीमोरा स्टेशन है। बिलीमोरासे एक लाइन वाघईतक जाती है। इस लाइनपर बिलीमोरासे २६ मील दूर उनाई-बाँसदारोड स्टेशन है। स्टेशनसे उनाई-तीर्थतक पक्की सड़क है। उनाईमें यात्रियोंके ठहरनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं।

उनाई उष्णतीर्थ है। यहाँ गरम पानीका कुण्ड है और उनाईमाताका मन्दिर है। देवी-मन्दिरके पास ही श्रीराम-मन्दिर है। इनके अतिरिक्त यहाँ शरभङ्गेश्वर शिव-मन्दिर है।

मुख्य उष्ण-कुण्डसे थोड़ी दूरपर एक और कुण्ड है। उसका भी जल गरम है। वहाँ भी देवीका मन्दिर है। इस नगरके पास अम्बिका नदीके तटपर शिलामें श्रीरामके चरणचिह्न तथा सूर्यका आकार बना है।

मङ्गलवार, रविवार और पूर्णिमाको यहाँ आस-पासके लोग आते हैं। मकर-संक्रान्ति और चैत्र-पूर्णिमापर मेला लगता है।

उनाईसे दो मील पुराणप्रसिद्ध पद्मावती नगरके खँडहर मिलते हैं। यहाँ एक प्राचीन शिव-मन्दिर है।

कहा जाता है उनाईके स्थानपर महर्षि शरभङ्गका आश्रम था। ऋषिको कुष्ठ-रोग हो गया था। भगवान् श्रीराम जब वनवासके समय यहाँ पधारे, तब बाण मारकर पृथ्वीसे उन्होंने यह उष्ण-जलका स्रोत उत्पन्न किया। उस जलमें स्नान करनेसे ऋषिका रोग दूर हो गया। माता सीताने भी उस जलमें स्नान किया था।

अनावल

उनास-बाँसदारोड स्टेशनसे ५ मील पहले ही अनावल स्टेशन है। वहाँ तीन नदियोंका त्रिवेणी-संगम है। संगमपर शुक्लेश्वर शिव-मन्दिर है। यहाँ महाशिवरात्रिपर मेला लगता है।

निर्मली

पश्चिम-रेलवेकी बंबई-वीरमगाम लाइनपर बंबई सेंट्रल स्टेशनसे ३० मील दूर 'बेसिन रोड' स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग तीन मीलपर नालासोपारा गाँव है और उस गाँवसे लगभग ५ मील पश्चिम निर्मली गाँव है।

निर्मली गाँवमें श्रीशङ्कराचार्यकी समाधि है। यहाँ कार्तिक कृष्णा ११ से आठ दिनतक बड़ा मेला लगता है। निर्मली गाँवमें और कई मन्दिर हैं। यहाँ चार धर्मशालाएँ हैं।

सोपारासे डेढ़ मीलपर गिरिधन नामक पहाड़ीमें प्राचीन गुफा-मन्दिर दर्शनीय हैं। सोपाराके समीप ही तुंगार नामक पर्वत है। इसके शिखरपर चार सुन्दर कलापूर्ण मन्दिर हैं।

बंबई

यह भारतका सुप्रसिद्ध नगर है। यहाँ रेल, सड़क, समुद्र तथा वायुयानसे पहुँचनेके सभी मार्ग प्रशस्त हैं। ठहरनेके लिये बंबईमें अनेक प्रकारकी व्यवस्था है। कुछ धर्मशालाओंके नाम दिये जा रहे हैं—

१-हीराबाग, सी० पी० टैंक, गिरगाँव; २-माधोबाग, सी० पी० टैंक; ३-सुखानन्दकी धर्मशाला, सी० पी० टैंकके पास; ४-बिड़ला-धर्मशाला, फानसवाड़ी; ५-पंचायती धर्मशाला, पिंजरापोल, दूसरी गली; (नं० ४ के लिये बलदेवदास शिवनारायण तथा नं० ५ के लिये ताराचंद घनश्यामदासकी कोठी, मारवाड़ी बाजारसे आज्ञा-पत्र लेना पड़ता है।) ६-सिंहानिया-वाड़ी, चीराबाजार।

देव-मन्दिर

बंबईमें बहुत अधिक मन्दिर हैं। नगरमें जो प्रसिद्ध मन्दिर हैं, केवल उनका नामोल्लेख मात्र यहाँ किया जाता है। १-लक्ष्मीनारायण-मन्दिर, माधवबागमें। यह बहुत सुन्दर नवीन मन्दिर है। २-महालक्ष्मी। परेलसे दक्षिण-पश्चिममें समुद्रतटपर यह प्राचीन मन्दिर है। ३-बालकेश्वर। मालाबार पहाड़ीके दक्षिणभागमें पश्चिम किनारे यह मन्दिर

है। यहाँ बाणगङ्गा नामक सरोवर है। यहाँके लोग कहते हैं कि भगवान् श्रीराम सीता-हरणके पश्चात् यहाँ पधारे थे। उन्होंने बाण मारकर बाण-गङ्गा प्रकट की और बालूका पार्थिव-लिङ्ग बनाकर पूजन किया। उस बालुकेश्वर मूर्तिको ही अब बालकेश्वर कहते हैं। ४-हनुमान्जी। माटुंगामें हनुमान्जीका प्रसिद्ध मन्दिर है। ५-मुम्बादेवी। मुम्बादेवीके नामसे ही इस नगरका नाम मुम्बई या बंबई पड़ा है। कालबादेवी रोडके पास मुम्बादेवीका मन्दिर है। वहाँ एक सरोवर भी था; किंतु उसे अब भरकर पार्क बना दिया गया है। मुम्बादेवीका मन्दिर विशाल है। उसमें शंकरजी, हनुमान्जी तथा गणेशजीके भी मन्दिर हैं। ६-कालबादेवी। कालबादेवी रोडपर स्वदेशी-बाजारके पास यह छोटा-सा मन्दिर है। इनके अतिरिक्त द्वारकाधीशका मन्दिर, नर-नारायण-मन्दिर, सूर्य-मन्दिर, बाबुलनाथ, लत्तामाशिव, बाँकेबिहारी, श्रीरघुनाथजी, अम्बाजी, बालाजी, भोलेश्वर शिव आदि बहुत-से मन्दिर विभिन्न स्थानोंमें हैं। यहाँ जैनोंके भी अनेक मन्दिर हैं तथा पारसियोंकी अगियारी और दोखमा (शव-विसर्जन-स्तम्भ) हैं।

आसपासके स्थान

योगेश्वरी-गुफा—बंबईसे स्थानीय गाड़ियाँ दूरतक चलती हैं। बंबईसे लगभग १४ मील दूर योगेश्वरी स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग १ मील दूर योगेश्वरी-गुफा है। अत्यन्त प्राचीन होनेके कारण इस गुफाकी मूर्तियाँ प्रायः नष्ट हो गयी हैं। केवल जीर्ण स्तम्भ और कहीं-कहीं मूर्तियोंके अस्पष्ट आकार रहे हैं। मध्यमें देवीका एक नवीन मण्डप है, जिसमें देवीमूर्ति प्रतिष्ठित है।

योगेश्वरगुफा—बंबईसे लगभग १८ मील दूर गोरेगाँव स्टेशन है। वहाँसे २१ मील दक्षिण अम्बोली गाँवके पास योगेश्वर गुफा-मन्दिर है। यह इलोराकी कैलास गुफाको छोड़कर भारतका सबसे बड़ा गुफा-मन्दिर है। यहाँ एक कमरेमें कुछ भग्न मूर्तियाँ हैं। मध्यका कमरा महादेवजीका निज मन्दिर है।

योगेश्वर-गुफासे ६ मील उत्तर मगथानाकी गुफा है।

मण्डपेश्वर—गोरेगाँवसे ४ मील (बंबईसे २२ मील) पर बोरेवली रेलवे-स्टेशन है। वहाँसे १ मील दूर कृष्णगिरिमें मण्डपेश्वर गुफा-मन्दिर है। यहाँ पर्वत काटकर तीन गुफा-मन्दिर बने हैं। पहले गुफा-मन्दिरके बाहर जलसे भरा कुण्ड है। दूसरे गुफा-मन्दिरकी दीवारमें अनेकों प्रतिमाएँ हैं। ये मूर्तियाँ गणोंके साथ शिवकी जान पड़ती हैं। तीसरे गुफा-मन्दिरमें कई कोठरियाँ हैं। दक्षिण ओरसे अधिक ऊँचाईपर गोलाकार गुंबज है। बाहरसे उसपर चढ़नेको सीढ़ी है। पूर्ववाली गुफाके दक्षिण-पश्चिम एक उजड़ा गिर्जाघर है।

कन्हेरी—बोरीवली स्टेशनसे यह स्थान ६ मील दूर है। ४ मीलतक सड़क है और आगे दो मीलतक पैदल मार्ग है। कृष्णगिरि पर्वतपर यहाँ बौद्ध-गुफाएँ हैं। अनेक गुफाएँ तो भिक्षु-आवास हैं। यहाँ चैत्य-गुफा भी है। कहा जाता है यहाँ १०९ गुफाएँ हैं। बहुत-सी गुफाओंमें बुद्धकी मूर्तियाँ हैं। यहाँ बुद्धदेवका एक दाँत था, इस कारण वह स्थान पवित्र माना जाता है।

वज्रेश्वरी—बंबईसे बसई स्टेशन और वहाँसे मोटर-बसद्वारा २६ मील जाना पड़ता है। यहाँ गन्धकके गरम पानीका कुण्ड है।

धारापुरी (एलिफेंटा)

यह स्थान समुद्रके मध्य एक द्वीपमें है। बंबईमें 'भाऊचा धक्का' नामक बंदरगाहसे प्रति रविवारको यहाँ स्टीमर जाता है। वहाँ गुफा-मन्दिरके बाहर एक हाथीकी मूर्ति थी (उस मूर्तिका धड़ अब बंबई-संग्रहालयमें है)। उसीके कारण इसका नाम अंग्रेजोंने एलिफेंटा (हाथी-गुफा) रख दिया। वस्तुतः यह प्राचीन धारापुरी है। यह द्वीप लगभग ४ मील घेरेका है। यहाँ शिवरात्रिको मेला लगता है।

जहाँ स्टीमर लगता है, उस स्थानसे लगभग एक मीलपर पर्वत काटकर गुफा-मन्दिर बने हैं। यहाँ ५ मन्दिर हैं, जिनमें एक ध्वस्त हो गया है। यहाँ पर्वत काटकर ही प्रतिमा, स्तम्भ, मन्दिर आदि बनाये गये हैं। कहीं जोड़ नहीं है।

इनमें त्रिमूर्ति-गुफा मुख्य है। यह विशाल गुफा है। इसमें पास-पास ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवकी मूर्तियाँ हैं। तेरह-तेरह फुट ऊँची द्वारपाल-मूर्तियाँ हैं। एक कमरेमें १६ फुट ऊँची अर्धनारीश्वर शिवकी मूर्ति है। उसके दाहिने कमलासनपर बैठे ब्रह्माजी हैं। अर्धनारीश्वरके बायें गरुड़पर विराजमान भगवान् विष्णुकी मूर्ति है। पश्चिमके कमरेमें शिव तथा पार्वतीकी ऊँची मूर्तियाँ हैं। एक कमरेमें शिव-पार्वतीके विवाहकी मूर्तियाँ हैं। एक अन्य कमरेमें शिवलिङ्ग स्थापित है। वहाँ द्वारपालोंकी बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ हैं। गुफाके पश्चिम कपालधारी शिवकी विशाल मूर्ति है। गुफामें रावणके कैलास उठाने

तथा दक्ष-यज्ञ-विनाशकी मूर्तियाँ हैं।

दूसरा गुफा-मन्दिर व्याघ्र-मन्दिर कहा जाता है। इसकी सीढ़ियोंपर दोनों ओर बाघ बने हैं। भीतर शिवलिङ्ग है तथा बहुत ही देवमूर्तियाँ हैं। अन्य गुफा-मन्दिर जीर्णदशामें हैं।

एक गुफा एलिफेंटा द्वीपकी दूसरी पहाड़ीपर है। गुफाओंकी मूर्तियोंको आततायियोंने तोड़ा है। प्रायः मूर्तियाँ अङ्ग-भङ्ग हैं।

कनकेश्वर

बंबईसे धरमतरी जानेवाले जहाजसे मांडेवा जाना पड़ता है। वहाँसे पैदल या बैलगाड़ीपर मापगाँव जाना होता है। यहाँ पर्वतपर कनकेश्वर शिव-मन्दिर है, पर्वतपर चढ़नेको सीढ़ियाँ बनी हैं। पर्वत समुद्रके किनारे है। यहाँ एक झरना तथा पानीका कुण्ड है।

उदवाड़ा (पारसी-तीर्थ)

बंबई-सेंट्रल स्टेशनसे १११ मील दूर पश्चिम-रेलवेकी बंबई-खाराघोड़ा लाइनपर उदवाड़ा स्टेशन है। स्टेशनसे बस्ती ४ मील है। यह पारसी लोगोंका प्रधान तीर्थ है। ईरानसे भारत आनेपर पारसी जो अग्नि साथ लाये थे, उसकी स्थापना उन्होंने उदवाड़ामें की थी। वह अग्नि कभी बुझने नहीं पायी। बराबर सुरक्षित रखी जाती है। यहाँ 'आदर' और 'अरदीवेहस्त' (पारसी महीनों) में पारसी लोग यात्रा करने आते हैं। यहाँ उनका प्राचीन अग्नि-मन्दिर है।

अम्बरनाथ

बंबईसे दूसरी ओर मध्यरेलवेकी बंबई-पूना-रायचूर लाइनपर बंबईसे ३८ मील दूर अम्बरनाथ स्टेशन है। स्टेशनसे १ मील पैदल मार्ग है। अच्छी सड़क है। यहाँ शिलाहारनरेश माम्बाणिका बनवाया कोङ्कण प्रदेशका सबसे प्राचीन मन्दिर है। इस मन्दिरकी कला उत्कृष्ट है। शिखर टूट गया है। अम्बरनाथ शिवका दर्शन करने आस-पासके बहुत लोग आते हैं। मूर्ति-दर्शनके लिये कुछ सीढ़ी नीचे जाना पड़ता है। यहाँ उमा-महेश्वरकी युगल-मूर्ति भी है। मन्दिरके दक्षिण काली-देवीकी मूर्ति है।

कार्ली और भाजाकी गुफाएँ

बंबई-पूना लाइनपर ही बंबईसे ८५ मील दूर मलावली स्टेशन है। इस स्टेशनके पाससे रेलवे-लाइनको पार करती दोनों ओर सड़क गयी है। एक ओर २॥ मील सड़कसे जाकर लगभग आध मील पर्वत चढ़नेपर कार्लीकी गुफा मिलती है। वहाँसे लौटकर रेलवे-लाइनके दूसरी ओर १ मील जानेपर आध मील पर्वतकी चढ़ाईके पश्चात् भाजाकी गुफा मिलती है।

कार्ली और भाजा दोनों ही बौद्ध-गुफाएँ हैं। दोनोंमें ही एक मुख्य चैत्य-गुफा तथा अन्य कई गुफाएँ हैं। इन गुफाओंको पर्वत काटकर बनाया गया है। गुफाओंमें स्थान-स्थानपर भगवान् बुद्धकी मूर्तियाँ हैं। कार्लीकी चैत्य-गुफा भाजाकी अपेक्षा अधिक विशाल तथा कलापूर्ण है।

कार्ली-गुफाओंमें चैत्यगुफासे बाहर ही एक वीरादेवीका मन्दिर है। देवीके दर्शन करने आस-पासके लोग आते हैं। देवीपीठ इधर पर्याप्त सम्मानित है।

भाजागुफाओंसे ऊपर पर्वतपर लोहगढ़ तथा ईशापुरीके दुर्ग हैं।

दधोव-गुफा

मलावली स्टेशनसे ११ मील आगे बड़गाँव स्टेशन है। स्टेशनसे ६ मील दूर वेदसा गाँव है। यहाँ भी कार्ली-भाजाके समान पर्वतमें बौद्ध-गुफाएँ हैं और उनमें एक चैत्यगुफा भी है।

जामनगर

राजकोटसे पश्चिम-रेलवेकी एक ब्रांच जामनगरको गयी है। इस लाइनपर राजकोटसे ५१ मील दूर जामनगर स्टेशन है। यह सौराष्ट्रका मुख्य नगर तथा जाड़ेचावंशके नरेशोंकी राजधानी रहा है। यहाँके राजा बड़े धार्मिक एवं परम वैष्णव होते थे। यहाँ वल्लभ-सम्प्रदायके तथा अन्य कई वैष्णव मन्दिर हैं। भवानीमाता तथा रोझीमाताकी यात्रा होती है। कई जैनमन्दिर भी हैं।

स्वदेशी औषध-प्रयोगशाला—भारत-सरकारने सन् १९५३ में यहाँ स्वदेशी औषधों तथा चिकित्साप्रणालीके अनुसंधानके लिये केन्द्रीय प्रयोगशाला स्थापित की थी। इसका सभी आधुनिक तथा प्राचीन चिकित्सा-केन्द्रोंसे निकटतर सम्बन्ध है। यहाँ औषधोंका निर्माण भी होता है, जो बाहर भेजी जाती तथा प्रयोगशालाके रोगियोंके उपयोगमें भी आती हैं। यहाँ एक ओषधियोंका विशिष्ट संग्रहालय भी है। जड़ी-बूटियोंका अनुसंधान अलगसे होता है। आजकल १२८ बूटियोंपर अनुसंधान चल रहा है। आजकल पाण्डुरोग-चिकित्सापर यहाँ विशेष ध्यान है। निकट भविष्यमें ही ग्रहणी-विकार, उदर-विकार तथा आमवातपर अनुसंधान चलेगा। साथ ही रसमाणिक्य, इन्द्रयव, काम्पिल्ल आदि ओषधियोंका भी अनुसंधान होगा। अभी दो वर्षके समयमें ही इस संस्थाने पर्याप्त कार्य किया है।

दक्षिणभारतके यात्री कृपया ध्यान दें

(लेखक—श्रीपिप्पलायन स्वामी)

१. अर्चना—किसी भी देवता या देवीको उनके अष्टोत्तरशतनाम या सहस्रनामसे तुलसीदल या पुष्पादि अर्पण करनेका नाम अर्चना है, जिसके लिये शुल्क निश्चित रहता है।

२. प्रसाद—किसी भी मन्दिरमें भोगलगा प्रसाद निश्चित दरसे क्रय किया जा सकता है।

३. कुळम् या तेप्पकुळम्—मन्दिरके समीपवर्ती बड़े या छोटे तालाब या सरोवरको कहते हैं, जिसमें मन्दिरके देवी-देवता उत्सवके दिनोंमें पधारकर नौका-विहार करते हैं।

४. मडप्पल्ली—मन्दिरके देव या देवीकी पाकशाला (रसोईघर) को कहते हैं।

५. समयाचार्य—शैवमन्दिरोंमें सिद्ध भक्तोंकी भी मूर्तियाँ रहती हैं। सिद्ध शैव भक्तोंकी संख्या प्रायः ६३ हैं, जिन्हें दक्षिणीभाषामें 'अरुबत्तु-मूवर समयाचार्य' कहते हैं। उनमें पाँच विशेष प्रसिद्ध हैं, जिन्हें नीचे प्रदर्शित किया गया है—

समयाचार्य—

संख्या नाम	जन्मस्थान	निकटतम स्टेशन
१-अप्परस्वामी	तिरुवदिकै	पनरुटी
२-ज्ञानसम्बन्दर	शियाळी	शियाळी
३-माणिक्यवाचक	तिरुवादवूर	मदुरै
४-सुन्दरमूर्ति स्वामी	तिरुवण्णैनल्लूर	वही स्टेशन है
५-सेक्किळार	कुण्ड्रत्तूर	मद्रासमें

६. आळवार—श्रीवैष्णवमन्दिरोंमें सिद्ध भक्तोंको कहते हैं। कोई-कोई दिव्य सूरि भी कहलाते हैं, जिनमें १२ विशेष प्रसिद्ध हैं। उन्हें द्रविड़भाषामें पन्निरुवर आळवार कहते हैं।

आळवार—

नाम	जन्मस्थान	निकटतम स्टेशन
१-भूतयोगी (भूतत्ताळवार)	महाबलीपुरम्	चेङ्गलपट
२-सरोयोगी (पोइगै आळवार)	तेरबेक्का	कांजीवरम्में
३-महायोगी (पेयाळवार)	मइलापुर	मद्रासमें
४-विष्णुचित्तस्वामी (पेरियाळवार)	श्रीविल्लिपुत्तूर	वही स्टेशन है
५-भक्तिसार (तिरुमळिशै-आळवार)	त्रिमौशी	कांजीवरम् / तिन्नानूर
६-कुलशेखर	त्रिमंजीकोड़म्	कोचिनमें
७-योगिवाहन (तिरुप्पणि-आळवार)	उरैयूर	त्रिचिनापल्ली फोट
८-भक्ताङ्घ्रिरेणु (तोंडरड़िपुड़ि)	तिरुमण्डंगुड़ि	स्वामिमलै
९-परकाळस्वामी (तिरुमंगै-आळवार)	परकालतीनगरी	शियाळी
१०-शठकोपस्वामी (नम्माळवार या पराङ्कुशमुनि)	आळवारतिरुनगरी स्टेशन है	

संख्या नाम	जन्मस्थान	निकटतम स्टेशन
११-गोदाम्बा (आण्डाळ या चूड़िक्कोडुत्त नाच्चिआर)	श्रीविल्लिपुत्तूर स्टेशन है	
१२-मधुरकवि	तिरुक्कोलूर	आळवार तिरुनगरी
अन्य भी—		
१३-वरवरमुनि (मणवाळ मामुनि)	आळवार-तिरुनगरी	.....
१४-कूरेशस्वामी (कूरत्ताळवार)	कूरम्	कांजीवरम्
१५-वेदान्तदेशिक	तिरुक्कोलूर	आळवार-तिरुनगरी
१६-स्वा०रामानुजाचार्य (उडैयवर)	भूतपुरी (श्रीपेरुम्मुदूर)	कांजीवरम्
१७-विष्वक्सेन (सेनै मुदाळवार)	....	....
१८-गणेशजी (तुम्बिक्कै-आळवार या पिळ्ळैयार)	तोताद्रिमें	भक्तश्रेणी
१९-गरुड़जी (पेरियत्तिरुवड़ि)	....	....
२०-काञ्चीपूर्णस्वामी (तिरुक्कच्चिनम्बि)	....	....
२१-इमलीवृक्ष (तिरुप्पुळि आळवार)	आळवार-तिरुनगरी	

७. तोताद्रि-मठ-(गाँवका नाम नांगनेरि है)। तिरुनेल्वेलि (तिन्नेवेली स्टेशन) से १८ मील दक्षिण है। यहाँ तैलकुण्डका दर्शन, मन्दिरके गर्भ-गृहकी परिक्रमा नं० १ में भक्तगणका दर्शन तथा नं० २ में शिवलीला-दर्शन अवश्य करना चाहिये।

८. लंबे नारायण—(गाँवका तिरुकुरंगुड़ि) में नम्बि नदीका स्नान है। पाँच जगह नम्बिनारायणका दर्शन है (नम्बि=पूर्ण)।

१-निन्न नम्बि-खड़े पूर्ण सुन्दर भगवान्		उसी मन्दिरमें
२-इरुन्द ,, -बैठे ,, ,, ,,		
३-किड़न्द ,, -लेटे हुए ,, ,, ,,		
४-तिरुपाल्-कडल ,, क्षीराब्धि-स्थित	,, ,,	गाँवके बाहर नदीपर।
५-मलै मले ,, -ऊँचे पर्वत-पर स्थित	,, ,,	५ मीलकी

चढ़ाई, यहाँका रतिमण्डपम् विशेष सुन्दर है।

९-छोटे नारायण-(गाँव पनगुड़ि) लंबे नारायणसे १० मील दक्षिणमें है। स्तम्भोंके चित्र दर्शनीय हैं।

१०-शुचीन्द्रम्-यहाँ वह प्राचीन वृक्ष है, जिसके नीचे अनसूयादेवीने त्रिदेवोंको बालक बना लिया था। बड़े हनुमान्‌जी, विष्णु-भगवान् (तिरुवेङ्कट पेरुमाळ) तथा अनन्तशयन भगवान्‌का भी दर्शन है। यहाँ सप्तस्वरवाले स्तम्भ हैं।

११-पद्मनाभपुरम्-इसके पास २ मीलपर कुमार-कोइलमें सुब्रह्मण्यम् स्वामीके सुन्दर दर्शन है। यहाँका श्रीविग्रह दक्षिणके अन्य ६ सुब्रह्मण्य-विग्रहोंसे बड़ा है। वे विग्रह निम्नलिखित स्थानोंमें हैं—

१-तिरुत्ताणि रेलवे स्टेशनके पास।

२-कुम्भकोणम्‌के पास स्वामिमलै स्टेशनपर।

३-तिरुप्परंकुन्रम् स्टेशनपर, जो मदुरासे दक्षिण है।

४-मैलम् स्टेशनपर, जो विल्लुपुरम् जंकशनसे उत्तर है।

५-मदुरा-कोयंबतूर लाइनके पळणि स्टेशनपर।

६-समुद्रतटके तिरुच्चेन्दुर स्टेशनपर, जहाँ तिन्नेवेली जंकशनसे मोटरद्वारा जाते हैं।

सुब्रह्मण्य स्वामीके सभी मन्दिर पहाड़ोंपर बने हैं।

१२-नटराज—शिवके पाँच स्थलोंमें सभा नामसे विख्यात ५ मन्दिर हैं—

१-रत्न-सभा-तिरवेलंगाडु, आरकोनम् स्टेशनके पास।

२-कनक-सभा—चिदम्बरेश्वर-मन्दिरमें, चिदम्बरम् स्टेशनके पास।

३-रजत-सभा-मीनाक्षी-मन्दिर, मदुरैमें (मदुरा स्टेशनके पास)।

४-चित्रै-सभा-तिरुकुर्तालम्, तेन्काशी जंकशनसे ३॥ मील।

५-ताम्रैसभा-शिवम्-कोइलमें, तिन्नेवेली जंकशनके पास।

चिदम्बरम्‌में ५ सभाएँ हैं—१ कनकसभा, २-रजतसभा, ३-नृत्यसभा (स्तम्भों एवं छतोंमें सभी जगह कई सहस्र मूर्तियाँ हैं), ४-देवसभा, ५-राजसभा (तेप्पकुळम्‌के पास सहस्रस्तम्भ-मण्डप)।

मदुरैमें भी ५ सभाएँ हैं—१-रत्नसभा, २-कनकसभा, ३-रजतसभा, ४-देवसभा और ५-चित्रैसभा-सहस्रस्तम्भ-मण्डप। यहाँके सभी स्तम्भ चित्रपूर्ण हैं।

विदेशोंके सम्मान्य मन्दिर

एक बात बहुत स्पष्ट है कि तीर्थभूमि तो भारत ही है। 'भारत' शब्दका अर्थ आजका विभाजित भारत नहीं है। पवित्र भारतभूमिका ही भाग पाकिस्तान बन गया है, यह जैसे आज सिद्ध करना आवश्यक नहीं है, वैसे ही नेपाल, भूटान तथा तिब्बतका कैलास-प्रदेश भारतके ही भाग हैं, यह सिद्ध करनेके लिये बहुत खोज आवश्यक नहीं। ये क्षेत्र भारतभूमिके ही हैं। इस पवित्र भारतभूमिसे बाहर प्राचीन 'हिंदू'तीर्थ' नहीं हैं; किंतु पूरी पृथ्वीपर जो मनुष्य-जाति बसती है, उसके इतिहासका अन्वेषण किया जाय तो पता लगेगा कि आर्य—वैदिक धर्मके अनुयायी ही सम्पूर्ण विश्वमें बसे थे। मनुष्यमात्रका धर्म एक ही था—सनातन वैदिक धर्म। भारतभूमिसे उसकी संतान जितनी दूर होती गयी, उसके खान-पान, रहन-सहनमें उतने ही परिवर्तन आते गये। इतना होनेपर भी बहुत दीर्घकालतक विश्वके प्रायः प्रत्येक भागका मनुष्य अपनेको श्रुतिका अनुयायी मानता रहा और पुराणप्रतिपादित देवताओंमेंसे अनेकोंकी आराधना करता रहा। भारतसे दूर होनेके कारण, शास्त्रमर्यादाके संरक्षक ब्राह्मणोंकी अप्राप्तिसे (क्योंकि ब्राह्मण भारतसे बाहर जाकर बस जाना स्वीकार करते नहीं थे) तथा देश-विदेशकी परिस्थितियोंके कारण मानवकी मान्यताएँ तथा रहन-सहन परिवर्तित होते रहे। लगभग साढ़े तीन, चार सहस्र वर्ष पूर्व विश्वके कुछ भागोंमें नवीन धर्मोंका उदय होने लगा। इस प्रकार विभिन्न धर्म, जो आज विश्वमें हैं, चार सहस्र वर्षसे प्राचीन नहीं हैं।

विश्वके मानव जहाँ भी विश्वमें थे, उन्होंने अपने आराध्य-मन्दिर भी बनाये थे। उनमें कुछ मन्दिर विख्यात भी हुए; किंतु जब नवीन धर्मोंका उदय हुआ और उनका प्रचार-प्रसार हुआ, तब प्राचीन आराधना छूट गयी। प्राचीन मन्दिर तथा स्थानीय तीर्थ नष्ट कर दिये गये या काल-क्रमसे नष्ट हो गये। कुछ भग्नावशेष यदि कहीं मिलते भी हैं तो वे केवल ऐसे प्रदेशोंमें हैं, जो अब भी आवागमनकी सुविधाओंके रहित दुर्गम स्थानोंमें हैं। उनकी ठीक स्थितिके विषयमें कुछ पता नहीं है।

जो स्थान भारतके आसपास थे, जिनसे भारतका आवागमनका सम्बन्ध इतिहासके ज्ञात समयमें भी चलता रहता था, उनमें बहुत अधिक देवमन्दिर थे; किन्तु उनमें भी अब बहुत थोड़े शेष रहे हैं। जिन देशोंमें सामूहिकरूपमें लोगोंका धर्म-परिवर्तन हो गया, वहाँके धार्मिक स्थान सुरक्षित रहेंगे, ऐसी आशा नहीं की जा सकती।

बहुत थोड़े विदेशीय स्थानोंके मन्दिरोंका विवरण उपलब्ध है। यह विवरण भी पिछले महायुद्धसे पूर्वका है। महायुद्धके प्रभाव-क्षेत्रमें जो देश थे, उनके प्राचीन स्थानोंकी स्थिति महायुद्धके पश्चात् कैसी है, यह कुछ कहा नहीं जा सकता।

ईरान

यह भारतका पड़ोसी देश है। यहाँकी अधिकांश प्रजा मुसल्मान है; किंतु ईरानके विभिन्न नगरोंमें जो हिंदू एवं सिख व्यापारी बस गये हैं, उनके मन्दिर और गुरुद्वारे वहाँ हैं। इस प्रकार ईरानके विभिन्न नगरोंमें देवालयों तथा गुरुद्वारोंकी संख्या पर्याप्त अधिक है। बहुत-से स्थानोंपर मन्दिर और गुरुद्वारा साथ-साथ हैं।

ईरानके दक्षिणी भागमें अब्बास नामक प्रसिद्ध नगर है। यहाँ नगरके मध्यमें एक विशाल मन्दिर है। मन्दिरके साथ ही गुरुद्वारा है। मन्दिर और गुरुद्वारेकी भूमिका विस्तार लगभग ६ बीघा है। मन्दिरमें शिवलिङ्ग स्थापित है। साथ ही भगवान् श्रीकृष्ण, हनुमान्‌जी तथा योगमायाकी मूर्तियाँ हैं। गुरुद्वारेमें ग्रन्थसाहब प्रतिष्ठित हैं। मन्दिर तथा गुरुद्वारेके सम्मिलित भागको 'हिंदू बाग' कहा जाता है। अब्बास नगरमें हिंदू तथा सिखोंकी संख्या अत्यल्प है; किन्तु वहाँकी स्थानीय जनता उनके प्रति भ्रातृत्व रखती है। देव-मन्दिरोंको लेकर वहाँ कोई विरोध कभी नहीं हुआ।

अनाम

दक्षिण अनाममें प्राचीन चम्पाराज्य था। यहाँके लोगोंको 'चाम' कहा जाता था। यह 'चाम' जाति हिंदू थी। इनका रहन-सहन सब हिंदुओंका-सा था। इनकी पहली राजधानी इन्द्रपुर (त्रा-क्यू) थी। यद्यपि यह 'चाम' जाति अनेक आक्रमणोंके कारण नष्ट हो चुकी है, फिर भी इस जातिके ग्रन्थ तथा कई मन्दिरोंके खँडहर विद्यमान हैं। ऐसे मन्दिरोंमें 'भी-सोन' का शिव-मन्दिर वास्तुशिल्पका उत्तम उदाहरण है। यहाँके मन्दिरमें जो शिवलिङ्ग है, उसे भद्रेश्वर कहा जाता था। अब यह लिङ्ग बुवन पर्वतपर

स्थापित है। इसके अतिरिक्त वहाँ 'मुखलिङ्ग' महादेव अत्यन्त प्राचीन हैं। कहा जाता है उनकी स्थापना द्वापरमें हुई थी।

कम्बोडिया

चम्पासे भी अधिक प्राचीन हिंदू-मन्दिरोंके अवशेष कम्बोजमें हैं। संख्या और शिल्प दोनोंकी दृष्टिसे यहाँका महत्त्व है। भारतीय देवताओंकी विशाल मूर्तियाँ यहाँके प्राचीन मन्दिरोंमें हैं। यहाँ 'स्दॉक काक थाम' में एक विस्तृत प्राचीन मन्दिर है। इस मन्दिरकी बाहरकी पूर्वी दीवारमें एक 'गोपुर है।' गोपुरसे भीतर जानेपर छोटी-सी खाई मिलती है, जिसपर पुल बना है। खाईके पार एक परिक्रमा-मार्गसे घिरा आँगन है। आँगनके मध्यमें मन्दिर है। यह मन्दिर अब भग्न हो चुका है। गर्भगृहके द्वारकी छतमें ऐरावतपर बैठे इन्द्रकी मूर्ति है। आस-पास अनेक देवमूर्तियोंके भग्नांश पड़े हैं। यहा एक स्तम्भपर शिलालेख खुदा है। उससे मन्दिरका इतिहास तथा यहाँके नरेशोंकी शिवभक्तिका परिचय मिलता है।

इसी देशमें 'अङ्कोर झील' पर 'बेयन' नामका मन्दिर है। इस मन्दिरमें शिवलिङ्ग स्थापित है। यह मन्दिर अब खँडहरके रूपमें है; किंतु इसमें अब भी बहुत-सी ऐसी बातें हैं, जो उसके पूर्व वैभवको सूचित करती हैं।

यवद्वीप (जावा)

दीर्घकालतक यह द्वीप हिंदूधर्मका अनुयायी रहा है। बौद्ध-धर्मका भी यहाँ प्रचार-प्रसार रहा है। मध्य यवद्वीपका 'बोरो-बुदर' चैत्य-मन्दिर भारतीय शिल्पका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

मध्य यवद्वीपमें प्राम्बनानका मन्दिर तो बहुत प्रख्यात है। यह मन्दिर एक चहारदीवारीसे घिरा है। प्राकारके भीतर ब्रह्मा, विष्णु तथा महेशके तीन मन्दिर हैं। शिव-मन्दिर मध्यमें और सबसे ऊँचा है। ब्रह्माजीके मन्दिरके सामने हंस, शिव-मन्दिरके सामने नन्दी और विष्णु-मन्दिरके सामने गरुड़की मूर्तियाँ बनी हैं। चहारदीवारीके चारों ओर छोटे-छोटे सैकड़ों शिव-मन्दिर बने हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवकी मूर्तियाँ अत्यन्त सुन्दर हैं। मन्दिरकी भित्तिपर श्रीराम तथा श्रीकृष्णकी लीलाओंकी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। भारतमें भी श्रीराम तथा श्रीकृष्णकी लीलाओंकी इतनी मनोहर मूर्तियाँ बहुत कम प्राप्य हैं।

यवद्वीपमें अन्यत्र कई स्थानोंपर शिव-मन्दिर पाये जाते हैं। यहाँके लोग महर्षि अगस्त्यको 'भट्टारक (बटार) शिवगुरु' कहते हैं। यवद्वीपमें महर्षि अगस्त्य ही वहाँकी संस्कृतिके संस्थापक माने जाते हैं। आज अधिकांश यवद्वीपवासी मुसल्मान हो गये हैं; किंतु उनके अब भी बहुत-से रीति-रिवाज हिंदुओंके हैं।

बालि

यह छोटा-सा द्वीप यवद्वीपके समीप ही है। अद्भुत है यह द्वीप। दीर्घकालीन विदेशी परतन्त्रता या विधर्मियोंके अथक प्रयत्नोंका जैसे यहाँकी भूमिपर कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता। यहाँके निवासी आज भी हिंदू हैं। उनमें वर्ण-व्यवस्था है, ब्राह्मणोंका विशेष सम्मान है। यहाँके लोगोंके आराध्य भगवान् शङ्कर हैं। द्वीप बहुत छोटा है, किंतु उसमें अनेकों मन्दिर हैं। दीर्घकालतक भारतीय समाजसे पृथक् रहनेके कारण यद्यपि बालिके लोगोंका रहन-सहन, रीति-रिवाज भारतसे बहुत भिन्न हो गया है, तथापि कोई विदेशी भी उन्हें देखते ही कह देगा—'ये हिंदू हैं।' इतना साम्य भी है उनका हिंदू-परम्परासे। उनके संस्कार बहुत कुछ भारतीय हिंदुओंके संस्कारोंसे मिलते-जुलते होते हैं।

मारीशस

(लेखक—श्रीवा० विष्णुदयालजी एम्० ए०)

दक्षिण भारतीय सागरमें मारीशस द्वीप बहुत छोटा द्वीप है, जो अफ्रीकाके समीप पड़ता है। अंग्रेजी शासनकालमें यहाँ भारतीय भेजे गये और अब तो यहाँ लगभग पौने तीन लाख भारतीय हो गये हैं। यह जनसंख्या यहाँकी पूरी जनसंख्याकी आधी है। भारतीय निवासियोंमें हिंदू ही अधिक हैं।

यहाँके भारतीय निवासियोंमें जो ब्राह्मण थे, उनकी सम्मतिसे पिछली शताब्दिके उतरार्धमें यहाँ एक तीर्थकी स्थापना हुई थी। उसका नाम 'परी-तालाब' रखा गया। सरोवरके किनारे भगवान् शङ्करका मन्दिर है। यहाँ भारतीय पर्वके समय परी-तालाबकी यात्रा करते हैं। तालाबका जल शङ्करजीपर चढ़ाया जाता है। यह तालाब अवस्थान नामक रेलवे-स्टेशनसे लगभग ४ मील है; किंतु अब रेलगाडी नहीं चलती, मोटर-बस तथा ट्राम चलती है।

शिवरात्रिके अवसरपर ४०-५० हजार यात्री वहाँ आ जाते हैं। वहाँ श्रीशिवदत्तसिंह रामदीनजीने एक भवन यात्रियोंकी सुविधाके लिये बनवा दिया है। शिवरात्रिपर लोग आते हैं, रात्रिभर विश्राम करते हैं और दूसरे दिन परी-तालाबका जल लेकर लौटते हैं, तब गाँव-गाँवमें पूजा होती है। अब मकरसंक्रान्तिपर

भी मेला लगने लगा है।

कुछ देशोंके शिवलिङ्ग तथा देवमूर्तियाँ

काशीके श्रीबेचूसिंह शाम्भवने 'शिव-निर्माल्य-रत्नाकर' नामका एक ग्रन्थ लिखा था, जो अब अप्राप्य हो गया है। ग्रन्थकी प्रस्तावनामें फ्रान्सके 'लुई' नामक विद्वान्के ग्रन्थोंके आधारपर अनेक देशोंमें शिवलिङ्ग पूजनका वर्णन है। उस वर्णनका संक्षिप्त सार नीचे दिया जा रहा है। वर्तमान समयमें इस वर्णनमें आयी मूर्तियोंकी स्थिति क्या है, इसका पता नहीं है।

इजिप्ट (मिश्र) के 'मेफिस' तथा 'अशीरस' नामक स्थानोंमें नन्दीपर विराजमान त्रिशूल-हस्त व्याघ्रचर्माम्बरधारी शिवकी अनेकों मूर्तियाँ हैं। स्थानीय लोग उनको दूधसे स्नान कराते हैं और उनपर बिल्वपत्र चढ़ाते हैं।

तुर्किस्तानके 'बाबिलन' नगरमें एक हजार दो सौ फुटका एक महालिङ्ग है। संसारमें यह सबसे बड़ा शिवलिङ्ग है। इसी प्रकार 'हेड्रापोलिस' नगरमें एक विशाल मन्दिर है, जिसमें तीन सौ फुट ऊँचा शिवलिङ्ग है।

मुसलमानोंके तीर्थ मक्कामें 'मक्केश्वर' लिङ्ग है, जिसे काबा कहा जाता है। वहाँके 'जम-जम' नामक कुएँमें भी एक शिवलिङ्ग है, जिसकी पूजा खजूरकी पत्तियोंसे होती है।

अमेरिकाके 'ब्राजिल' प्रदेशमें बहुत-से प्राचीन शिवलिङ्ग मिलते हैं। योरोपके 'कोरिय' नगरमें पार्वती-मन्दिर भी है। इटलीमें अनेक ईसाई पादरी शिवलिङ्ग पूजते रहे हैं। ग्लासगो (स्काटलैंड) एक सुवर्णाच्छादित शिवलिङ्ग है, जिसकी पूजा वहाँ बड़ी भक्तिसे लोग करते हैं। 'फीजियन्' के 'एटिस' या 'निनिवा' नगरमें 'एषीर' नामक शिवलिङ्ग है।

'पंचशेर' और 'पञ्चवीर' नामसे अफरीदिस्तान, चित्राल काबुल, बलख-बुखारा आदिमें शिवलिङ्ग ही पूजित होता है।

अनाम प्रदेशमें तो स्थान-स्थानपर शिव-मन्दिर हैं। 'ट्राक्य' ग्राममें शिवजीकी एक मनुष्यके परिमाणकी मूर्ति मिली है। 'डांगफुक' में एक अर्धनारीश्वर-मूर्ति है। अनामके कुछ प्रदेशोंमें विघ्नेश्वर तथा षण्मुख स्वामिकार्तिककी मूर्तियाँ हैं। 'पोनगर' में गणपति-मन्दिर हैं। वहाँ कुछ गणपतिमूर्तियोंपर शिवलिङ्ग धारण किया दिखाया गया है।

इक्कीस प्रधान गणपति-क्षेत्र

(लेखक—श्रीहेरम्बराज बाळ शास्त्री)

१. मोरेश्वर—गाणपत्य तीर्थोंमें यह सर्वप्रधान श्रीभूस्वानन्द क्षेत्र है। यहाँ 'मयूरेश गणेश' की मूर्ति है। पूनासे ४० मील और जेजूरी स्टेशनसे १० मील यह स्थान पड़ता है।

२. प्रयाग—यह प्रसिद्ध तीर्थ उत्तरप्रदेशमें है। यह ॐकार-गणपतिक्षेत्र है। यहाँ आदिकल्पके आरम्भमें ॐकारने वेदोंसहित मूर्तिमान् होकर गणेशजीकी आराधना एवं स्थापना की थी।

३. काशी—यहाँ ढुण्ढिराज गणेशका मन्दिर प्रसिद्ध है। यह ढुण्ढिराज-क्षेत्र है।

४. कलम्ब—यह चिन्तामणि-क्षेत्र है। महर्षि गौतमके शापसे छूटनेके लिये इन्द्रने यहाँ चिन्तामणि गणेशकी स्थापना करके पूजन किया था। इस स्थानका प्राचीन नाम कदम्बपुर है। बरारके यवतमाल नगरसे यहाँ मोटर-बस जाती है।

५. अदोष—नागपुर-छिंदवाड़ा रेलवे-लाइनपर सामनेर स्टेशन है। वहाँसे लगभग पाँच मीलपर यह स्थान है। इसे शमी-विघ्नेश-क्षेत्र कहा जाता है। महापाप, संकष्ट और शत्रु नामक दैत्योंके संहारके लिये देवताओं तथा ऋषियोंने यहाँ तपस्या की और भगवान् गणेशकी स्थापना की। वामनभगवान्ने भी बलियज्ञमें जानेसे पूर्व यहाँ गणेशजीकी आराधना की थी।

६. पाली—इस स्थानका प्राचीन नाम पल्लीपुर है। बल्लाल नामक वैश्य-बालककी भक्तिसे यहाँ गणेशजीका आर्विभाव हुआ, इसलिये इसे बल्लाल-विनायकक्षेत्र कहते हैं। यह मूल क्षेत्र तो सिन्धुदेशमें शास्त्रोंद्वारा वर्णित है; किंतु वह अब लुप्त हो गया है। अब तो महाराष्ट्रके कुलाबा जिलेमें पाली नामक क्षेत्र प्रसिद्ध है। वहाँतक मोटर-बस जाती है।

७. पारिनेर—यह मङ्गलमूर्ति-क्षेत्र है। मङ्गल ग्रहने यहाँ तपस्या करके गणेशजीकी आराधना की थी। ग्रन्थोंमें यह क्षेत्र नर्मदाके किनारे बताया गया है; किंतु

...का ठीक पता नहीं है।

८. गङ्गा मसले—यह भालचन्द्र-गणेशक्षेत्र है। ...माने यहाँ गणेशजीकी आराधना की है। काचीगुडा-...माड रेलवे-लाइनपर परभनीसे छब्बीस मील दूर ...स्टेशन है। वहाँसे पंद्रह मीलपर गोदावरीके मध्यमें भालचन्द्र-गणेश-मन्दिर है।

९. राक्षस-भुवन—काचीगुडा-मनमाड लाइनपर ही ...लना स्टेशन है। वहाँसे ३३ मीलपर गोदावरी-किनारे ...ह स्थान है। यह विज्ञान-गणेशक्षेत्र है। गुरु दत्तात्रेयने ...हाँ तपस्या की और विज्ञान-गणेशकी स्थापना-अर्चना ...है। विज्ञान-गणेशका मन्दिर यहाँ है।

१०. थेऊर—पूनासे पाँच मील दूर यह स्थान है। ...ह्माजीने सृष्टिकार्यमें आनेवाले विघ्नोंके नाशके लिये ...णेशजीकी यहाँ स्थापना की है।

११. सिद्धटेक—बंबई-रायचूर लाइनपर धौंड ...जंक्शनसे ६ मील दूर बोरीब्यल स्टेशन है। वहाँसे ...लगभग ६ मील दूर भीमा नदीके किनारे यह स्थान ...। इसका प्राचीन नाम सिद्धाश्रम है। भगवान् विष्णुने ...मधु-कैटभ दैत्योंको मारनेके लिये गणेशजीका पूजन ...किया था। द्वापरान्तमें व्यासजीने वेदोंका विभाजन ...निर्विघ्न सम्पन्न करनेके लिये भगवान् विष्णुद्वारा ...स्थापित इस गणपतिमूर्तिका पूजन किया था।

१२. राजनगाँव—इसे मणिपूर-क्षेत्र कहते हैं। शंकरजी ...त्रिपुरासुर-युद्धमें प्रथम भग्नमनोरथ हुए। उस समय इस ...स्थानपर उन्होंने गणेशजीका स्तवन किया और तब ...त्रिपुरध्वंसमें सफल हुए। शिवजीद्वारा स्थापित गणेशमूर्ति ...है। पूनासे राजनगाँव मोटर-बस जाती है।

१३. विजयपुर—अनलासुरके नाशार्थ यहाँ गणेशजीका ...आविर्भाव हुआ था। ग्रन्थोंमें यह क्षेत्र तैलंगदेशमें बताया ...है। स्थानका पता नहीं है। (मद्रास-मंगलोर ...लाइनपर ईरोडसे १६ मील दूर विजयमङ्गलम् स्टेशन ...। वहाँ गणपति-मन्दिर प्रख्यात है; किंतु यह वही ...है या नहीं, कहा नहीं जा सकता।—सं०)

१४. कश्यपाश्रम—यह क्षेत्र भी शास्त्रवर्णित है, ...स्थानका पता नहीं है। महर्षि कश्यपजीने अपने ...आश्रममें गणेशजीकी स्थापना-अर्चना की है।

१५. जलेशपुर—यह क्षेत्र भी अब अज्ञात है। मय-...दानवद्वारा निर्मित त्रिपुरके असुरोंने इस स्थानपर गणेशजीकी स्थापना करके पूजन किया था।

१६. लेह्याद्रि—पूना जिलेमें जूअर तलुका है। वहाँसे लगभग पाँच मीलपर यह स्थान है। पार्वतीजीने यहाँ गणेशजीको पुत्ररूपमें पानेके लिये तपस्या की थी।

१७. बेरोल—इसका प्राचीन नाम एलापुर-क्षेत्र है। औरंगाबादसे बेरोल (इलोरा) मोटर-बस जाती है। धृष्णेश्वर (घुश्मेश्वर) ज्योतिर्लिङ्ग यहाँ है। उसी मन्दिरमें गणेशजीकी भी मूर्ति है। तारकासुरसे युद्धमें स्कन्द विजय-लाभ करनेमें पहले सफल नहीं हुए। पश्चात् शंकरजीके आदेशसे इस स्थानपर गणेशजीकी स्थापना करके उनका अर्चन किया उन्होंने और तब तारकासुरको युद्धमें मारा। स्कन्दद्वारा स्थापित मूर्तिका नाम लक्षविनायक है।

१८. पद्मालय—यह प्राचीन प्रवाल-क्षेत्र है। बंबई-भूसावल रेलवे-लाइनपर पाचोरा जंकशनसे १६ मील दूर महसावद स्टेशन है। वहाँसे लगभग पाँच मील दूर पद्मालय-तीर्थ है। यहाँ कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) तथा शेषजीने गणेशजीकी आराधना की थी। दोनोंके द्वारा स्थापित दो गणपति-मूर्तियाँ यहाँ हैं। मन्दिरके सामने ही 'उगम' सरोवर है।

१९. नामलगाँव—काचीगुडा-मनमाड लाइनपर जालना स्टेशन है। जालनासे बीड़ जानेवाली मोटर-बससे घोसापुरी गाँवतक जाया जा सकता है। वहाँसे पैदल नामलगाँव जाना पड़ता है। यह प्राचीन अमलाकम क्षेत्र है। यम-धर्मराजने माताके शापसे छूटनेके लिये यहाँ गणेशजीकी आराधना की है। यमराजद्वारा स्थापित आशापूरक गणेशजीकी मूर्ति यहाँ है। यहाँपर 'सुबुद्धिप्रद तीर्थ' नामक कुण्ड भी है। भुशुण्डि योगीन्द्रकी भी यहाँ मूर्ति है।

२०. राजूर—जालना स्टेशनसे यह स्थान चौदह मील है। बस जाती है। इसे राजसदन-क्षेत्र कहते हैं। सिन्दूरासुरका वध करनेके पश्चात् गणेशजीने यहाँ वरेण्य राजाको 'गणेश-गीता' का उपदेश किया था। 'गणपतिका राजूर' इस नामसे यह क्षेत्र प्रख्यात है।

२१. कुम्भकोणम्—दक्षिण-भातका प्रसिद्ध तीर्थ है। यह श्वेत-विघ्नेश्वरक्षेत्र है। यहाँ कावेरी-तटपर सुधा-गणेशकी मूर्ति है। अमृत-मन्थनके समय जब पर्याप्त श्रम होनेपर भी अमृत नहीं निकला, तब देवताओंने यहाँ गणेशजीकी स्थापना करके पूजा की थी।

अष्टोत्तर-शत दिव्य शिव-क्षेत्र

अष्टोत्तरशतं भूमौ स्थितं क्षेत्रं वदाम्यहम्।
कैवल्यशैले श्रीकण्ठः केदारो हिमवत्यपि॥ १ ॥
काशीपुर्यां विश्वनाथः श्रीशैले मल्लिकार्जुनः।
प्रयागे नीलकण्ठेशो गयायां रुद्रनामकः॥ २ ॥
नीलकण्ठेश्वरः साक्षात् कालञ्जरपुरे शिवः।
द्राक्षारामे तु भीमेशो मायूरे चाम्बिकेश्वरः॥ ३ ॥
ब्रह्मावर्ते देवलिङ्गं प्रभासे शशिभूषणः।
वृषध्वजाभिधः श्रीमाञ्श्वेतहस्तिपुरेश्वरः॥ ४ ॥
गोकर्णेशस्तु गोकर्णे सोमेशः सोमनाथके।
श्रीरूपाख्ये त्यागराजो वेदे वेदपुरीश्वरः॥ ५ ॥
भीमारामे तु भीमेशो मन्थने कालिकेश्वरः।
मधुरायां चोक्कनाथो मानसे माधवेश्वरः॥ ६ ॥
श्रीवाञ्छके चम्पकेशः पञ्चवट्यां वटेश्वरः।
गजारण्ये तु वैद्येशस्तीर्थाद्रौ तीर्थकेश्वरः॥ ७ ॥
कुम्भकोणे तु कुम्भेशो लेपाक्ष्यां पापनाशनः।
कण्वपुर्यां तु कण्वेशो मध्ये मध्यार्जुनेश्वरः॥ ८ ॥
हरिहरपुरे श्रीशंकरनारायणेश्वरः।
विरिञ्चिपुर्यां मार्गेशः पञ्चनद्यां गिरीश्वरः॥ ९ ॥
पम्पापुर्यां विरूपाक्षः सोमाद्रौ मल्लिकार्जुनः।
त्रिमकूटे त्वगस्त्येशः सुब्रह्मण्येऽहिपेश्वरः॥ १०॥
महाबलेश्वरः साक्षान्महाबलशिलोच्चये।
रविणा पूजितो दक्षिणावर्तेऽर्केश्वरः स्वयम्॥ ११॥
वेदारण्ये महापुण्ये वेदारण्येश्वराभिधः।
मूर्तित्रयात्मकः सोमपुर्यां सोमेश्वराभिधः॥ १२॥
अवन्त्यां रामलिङ्गेशः काश्मीरे विजयेश्वरः।
महानन्दिपुरे साक्षान्महानन्दिपुरेश्वरः॥ १३॥
कोटितीर्थे तु कोटीशो वृद्धे वृद्धाचलेश्वरः।
महापुण्ये तत्र ककुद्गिरौ गङ्गाधरेश्वरः॥ १४॥
चामराज्याख्यनगरे चामराजेश्वरः स्वयम्।
नन्दीश्वरो नन्दिगिरौ चण्डेशो वधिराचले॥ १५॥
नञ्जुण्डेशो गरपुरे शतशृङ्गेऽधिपेश्वरः।
घनानन्दाचले सोमो नल्लूरे विमलेश्वरः॥ १६॥
नीडानाथपुरे साक्षान्नीडानाथेश्वरः स्वयम्।
एकान्ते रामलिङ्गेशः श्रीनागे कुण्डलीश्वरः॥ १७॥
श्रीकन्यायां त्रिभङ्गीश उत्सङ्गे राघवेश्वरः।
मत्स्यतीर्थे तु तीर्थेशस्त्रिकूटे ताण्डवेश्वरः॥ १८॥
प्रसन्नाख्यपुरे मार्गसहायेशो वरप्रदः।
गण्डक्यां शिवनाभस्तु श्रीपतौ श्रीपतीश्वरः॥ १९॥
धर्मपुर्यां धर्मलिङ्गं कन्याकुब्जे कलाधरः।
वाणिग्रामे विरिञ्चेशो नेपाले नकुलेश्वरः॥ २०॥
मार्कण्डेयो जगन्नाथे स्वयम्भूर्नर्मदातटे।
धर्मस्थले मञ्जुनाथो व्यासेशस्तु त्रिरूपके॥ २१॥
स्वर्णावत्यां कलिङ्गेशो निर्मले पन्नगेश्वरः।
पुण्डरीके जैमिनीशोऽयोध्यायां मधुरेश्वरः॥ २२॥
सिद्धवट्यां तु सिद्धेशः श्रीकूर्मे त्रिपुरान्तकः।
मणिकुण्डलतीर्थे तु मणिमुक्तानदीश्वर॥ २३॥
वटाटव्यां कृत्तिवासास्त्रिवेण्यां संगमेश्वरः।
स्तनिताख्ये तु मल्लेश इन्द्रकीलेऽर्जुनेश्वरः॥ २४॥
शेषाद्रौ कपिलेशस्तु पुष्पे पुष्पगिरीश्वरः।
भुवनेशश्चित्रकूटे तूज्जिन्यां कालिकेश्वरः॥ २५॥
ज्वालामुख्यां शूलटङ्को मङ्गल्यां संगमेश्वरः।
बृहतीशस्तञ्जापुर्यां रामेशो वह्निपुष्करे॥ २६॥
लङ्काद्वीपे तु मत्स्येशः कूर्मेशो गन्धमादने।
विन्ध्याचले वराहेशो नृसिंहः स्यादहोबिले॥ २७॥
कुरुक्षेत्रे वामनेशस्ततः कपिलतीर्थके।
तथा परशुरामेशः सेतौ रामेश्वराभिधः॥ २८॥
साकेते बलरामेशो बौद्धेशो वारणावते।
तत्त्वक्षेत्रे च कल्कीशः कृष्णेशः स्यान्महेन्द्रके॥ २९॥

(ललितागम, ज्ञानपाद, शिवलिङ्ग-प्रादुर्भाव-पटल)

भूमिपर स्थित १०८ शैव क्षेत्रोंको बतलाता हूँ। इस प्रकार हैं। कैवेल्य शैलपर भगवान् शिव श्रीकण्ठ नामसे विराजमान हैं। वे हिमालय पर्वतपर केदार नामसे तथा काशीपुरीमें विश्वनाथ नामसे विख्यात हैं। श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन, प्रयागमें नीलकण्ठेश, गयामें रुद्र, कालञ्जरमें नीलकण्ठेश्वर, द्राक्षाराममें भीमेश्वर तथा मायूरम् (मायवरम्) में वे अम्बिकेश्वर कहे जाते हैं। वे ब्रह्मावर्तमें देवलिङ्गके रूपमें, प्रभासमें शशिभूषण, श्वेतहस्तिपुरमें वृषध्वज, गोकर्णमें गोकर्णेश्वर, सोमनाथमें सोमेश्वर, श्रीरूपमें त्यागराज तथा वेदमें वेदपुरीश्वरके नामसे विख्यात हैं। भगवान् शिव भीमाराममें भीमेश्वर, मन्थनमें कालिकेश्वर, मधुरामें चोक्कनाथ, मानसमें माधवेश्वर, श्रीवाञ्छकमें चम्पकेश्वर, पञ्चवटीमें वटेश्वर, गजारण्यमें वैद्यनाथ तथा तीर्थाचलमें

तीर्थकेश्वर नामसे प्रसिद्ध हैं। वे कुम्भकोणम्‌में कुम्भेश, लेपाक्षीमें पापनाशन, कण्वपुरीमें कण्वेश तथा मध्यमें मध्यार्जुनेश्वर नामसे प्रतिष्ठित हैं। वे हरिहरपुरमें शङ्कर-नारायणेश्वर, विरिञ्चिपुरीमें मार्गेश, पञ्चनदमें गिरीश्वर, पम्पापुरीमें विरूपाक्ष, सोमगिरिपर मल्लिकार्जुन, त्रिमकूटमें आस्त्येश्वर तथा सुब्रह्मण्यमें अहिपेश्वर नामसे समादृत होते हैं। महाबल पर्वतपर वे महाबलेश्वर नामसे, दक्षिणावर्तमें साक्षात् सूर्यके द्वारा पूजित अर्केश्वर, वेदारण्यम्‌में वेदारण्येश्वर, सोमपुरीमें सोमेश्वर, उज्जैनमें रामलिङ्गेश्वर, कश्मीरमें विजयेश्वर, महानन्दिपुरमें महानन्दिपुरेश्वर, कोटितीर्थमें कोटीश्वर, वृद्धक्षेत्रमें वृद्धाचलेश्वर तथा अति पवित्र ककुद्‌पर्वतपर वे गङ्गाधरेश्वर नामसे विख्यात हैं। भगवान् शिव चामराज नगरमें चामराजेश्वर, नन्दिपर्वतपर नन्दीश्वर, वधिराचलपर चण्डेश्वर, गरपुरमें नञ्जुण्डेश्वर, शतशृङ्गपर्वतपर अधिपेश्वर, घनानन्द पर्वतपर सोमेश्वर, नल्लूरमें विमलेश्वर, नीडानाथपुरमें नीडानाथेश्वर, एकान्तमें रामलिङ्गेश्वर तथा श्रीनागमें कुण्डलीश्वर रूपमें विराजते हैं। वे श्रीकन्यामें त्रिभङ्गीश्वर, उत्सङ्गमें राघवेश्वर, मत्स्यतीर्थमें तीर्थेश्वर, त्रिकूट पर्वतपर ताण्डवेश्वर, प्रसन्नपुरीमें मार्गसहायेश्वर, गण्डकीमें शिवनाभ, श्रीपतिमें श्रीपतीश्वर, धर्मपुरीमें धर्मलिङ्ग, कान्यकुब्जमें कलाधर, वाणिग्राममें विरिञ्चेश्वर तथा नेपालमें नकुलेश्वर कहे जाते हैं। जगन्नाथपुरीमें वे मार्कण्डेश्वर, नर्मदा-तटपर स्वयम्भू, धर्मस्थलमें मञ्जुनाथ, त्रिरूपकमें व्यासेश्वर, स्वर्णावतीमें कलिङ्गेश्वर, निर्मलमें पन्नगेश्वर, पुण्डरीकमें जैमिनीश्वर, अयोध्यामें मधुरेश्वर, सिद्धवटीमें सिद्धेश्वर, श्रीकूर्माचलपर त्रिपुरान्तक, मणिकुण्डल तीर्थमें मणिमुक्तानदीश्वर, वटाटवीमें कृत्तिवासेश्वर, त्रिवेणीतटपर संगमेश्वर, स्तनिता-तीर्थमें मल्लेश्वर तथा इन्द्रकील पर्वतपर अर्जुनेश्वर रूपमें विराजमान हैं। वे शेषाचलपर कपिलेश्वर, पुष्पगिरिपर पुष्पगिरीश्वर, चित्रकूटमें भुवनेश्वर, उज्जैनमें कालिकेश्वर (महाकाल), ज्वालामुखीमें शूलटङ्क, मङ्गलीमें संगमेश्वर, तञ्जापुरी (तंजौर) में बृहती (दी) श्वर, पुष्करमें रामेश्वर, लङ्कामें मत्स्येश्वर, गन्धमादनपर कूर्मेश्वर, विन्ध्यपर्वतपर वराहेश्वर और अहोबिलमें नृसिंहरूपसे प्रकट हैं। प्रभु विश्वनाथ कुरुक्षेत्रमें वामनेश्वर रूपमें, कपिलातीर्थमें परशुरामेश्वर, सेतुबन्धमें रामेश्वर, साकेतमें बलरामेश्वर, वारणावतमें बौद्धेश्वर, तत्त्वक्षेत्रमें कल्कीश्वर तथा महेन्द्राचलपर कृष्णेश्वर-रूपमें व्यक्त हैं।

दो सौ चौहत्तर पवित्र शैव-स्थल

तमिळके पेरियापुराणम्‌के अनुसार भारतमें निम्नलिखित २७४ पवित्र शैव-स्थल हैं—

१. चिदम्बरम्—यह दक्षिण-रेलवेका प्रसिद्ध स्टेशन है। यहाँ भगवान् नटराजका विशाल मन्दिर है। भगवान्‌की आकाशरूपमें यहाँ पूजा होती है। पेरियापुराणम्‌की रचना इसी मन्दिरके सहस्रस्तम्भ-मण्डपमें हुई थी।

२. तिरुवेट्कलम्—चिदम्बरम्‌से दो मील पूर्व यह स्थान है। कहते हैं अर्जुनने भगवान् शिवसे पाशुपतास्त्र यहीं प्राप्त किया था।

३. शिवपुरी—चिदम्बरम्‌से तीन मील दक्षिण-पूर्वमें है।

४. तिरुक्कालिपालै—शिवपुरीके समीप, चिदम्बरम्‌से ७ मील दक्षिण-पूर्वमें स्थित है। यहाँका विग्रह पहले करैमेडु ग्राममें था, परन्तु कोलरून नदीमें बाढ़ आ जानेसे विग्रहको यहाँ स्थापित किया गया।

५. अच्छपुरम्—कोलरून रेलवे-स्टेशनसे तीन मील पूर्वकी ओर स्थित है। संत ज्ञान-सम्बन्धकी आत्मज्योति यहाँके लिङ्ग-विग्रहमें लीन हो गयी थी।

६. काइलडिप्पाळयम् (तिरुमायेन्द्रप्पाळयम्)—अच्छपुरम्‌से चार मील उत्तर-पूर्वमें है। संत मायेन्द्रने यहाँ भगवान्‌की आराधना की थी।

७. तिरुमुल्लवायल—शियाळी रेलवे-स्टेशनसे ८ मील पूर्वमें स्थित है। यहाँ भगवान्‌के द्वारा भगवतीकी दीक्षा हुई थी।

८. अन्नप्पन्पेट्टै-कालिक्कामूर—तिरुमुल्लवायलसे ३ मील दक्षिण-पश्चिमकी ओर है। पराशर मुनिने यहाँ भगवान्‌की आराधना की थी।

९. शायावनम्—शियाळी रेलवे-स्टेशनसे ९ मील दक्षिण-पूर्वकी ओर है। यहाँ शिव-भक्त उपमन्युने भगवान्‌की आराधना की थी। इसकी उन छः प्रधान शैव-क्षेत्रोंमें गणना है, जिन्हें काशीके समकक्ष माना गया है। अन्य पाँच क्षेत्रोंके नाम हैं—वेदारण्यम्, तिरुवाडि,

मायवरम्, तिरुवडमरुदूर और श्रीवंगीयम्।

१०. पल्लवणिचरम्—शायावनम्के बिल्कुल समीप है। यहाँ पल्लव-वंशके एक नरेशने मुक्ति प्राप्त की थी।

११. तिरुवेन्काडु—शियाळी रेलवे-स्टेशनसे ७ मील दक्षिण-पूर्वकी ओर स्थित है। यहाँकी अघोर-मूर्ति बड़ी तेजस्विनी है।

१२. तिरुक्काट्टपळ्ळि (पूर्व)—तिरुवेन्काडुसे १ मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ देवताओंने भगवान्‌की आराधना की थी।

१३. तिरुक्कुरुकावूर (तिरुक्कडवूर) शियाळीसे ४ मील पूर्व है। संत सुन्दरकी यह उपासना-स्थली है। सौर पौष-मासकी अमावस्याके दिन मन्दिरके सामने स्थित कूपका जल सफेद हो जाता है।

१४. शियाळी—यह संत ज्ञान-सम्बन्धकी जन्म-स्थली है। मन्दिरके घेरेमें ही एक छोटा-सा मन्दिर है, जिसमें इनकी मूर्ति स्थापित है।

१५. तिरुत्तलमुडयार-कोइल-शियाळीके समीप है। यहाँ संत ज्ञान-सम्बन्धके हाथोंमें आश्चर्यजनक रीतिसे एक सोनेकी करताल आ गयी थी।

१६. वैदीश्वरन्-कोइल—यह रेलवे-स्टेशन है; भगवान्‌का नाम वैद्येश्वर-वैद्यनाथ है। यहाँ बालकोंका मुण्डन-संस्कार होता है।

१७. तिरक्कन्नर्-कोइल—वैदीश्वरन्-कोइलसे तीन मीलपर है। यहाँ वामनरूपमें भगवान् विष्णुने शिवजीकी आराधना की थी और इन्द्रने भी एक पापसे छुटकारा पानेके लिय शङ्करजीकी उपासना की थी।

१८. कीळूर—अनताण्डवपुरम् रेलवे-स्टेशनसे ६ मील उत्तर-पूर्वकी ओर है। यहाँ ब्रह्माजीने भगवान्‌की आराधना की थी।

१९. तिरुनिंडियूर—अनताण्डवपुरम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील पूर्वोत्तरकी ओर है। यहाँ लक्ष्मीजीने भगवान् शिवकी आराधना की थी।

२०. तिरुपूंगूर—वैदीश्वरन्-कोइल रेलवे-स्टेशनसे दो मील पश्चिमकी ओर है। हरिजन भक्त नन्दनारकी यह आराधना-स्थली रही है।

२१. नीडूर—अनताण्डवपुरम् रेलवे-स्टेशनसे एक मील दक्षिण-पश्चिमकी ओर है। यहाँ भगवती कालीने भगवान् शङ्करकी आराधना की थी। संत मुनैगडुवारके भी ये आराध्य रहे हैं।

२२. पोन्नूर—अनताण्डवपुरम् रेलवे-स्टेशनसे चार मील दक्षिण-पश्चिमकी ओर है। यहाँ वरुण देवताने भगवान्‌की आराधना की थी।

२३. वेळिवक्कुडि—कुत्तालम् रेलवे-स्टेशनसे तीन मील उत्तरकी ओर है। यहाँ भगवान् शिवका विवाह हुआ है।

२४. तिरुमणंचेरि (पश्चिम)—वेळिवक्कुडिसे दो मील उत्तरकी ओर है। यहाँ भी भगवान् शिवका विवाह हुआ था।

२५. तिरुमणंचेरि (पूर्व)—उक्त स्थानके समीप ही है। यहाँ मन्मथने भगवान्‌की आराधना की थी।

२६. कुरुक्कै—पोन्नूरसे चार मील उत्तर-पश्चिमकी दिशामें है। यहाँ मदन-दहनकी लीला सम्पन्न हुई थी।

२७. तलैज्ञायर—तिरुप्पुंगूरसे तीन मील उत्तर-पश्चिमकी ओर है। यहाँ इन्द्रने भगवान्‌की आराधना की थी।

२८. कुरुक्कुक्का—तलैज्ञायरसे एक मील उत्तरकी ओर है। यहाँ हनुमान्‌जीने भगवान्‌की आराधना की थी।

२९. वलप्पुत्तूर—तिरुप्पुंगूरसे दो मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ एक केंकड़ेने भगवान्‌की आराधना की थी। यह अर्जुनकी भी आराधन-स्थली रही है।

३०. इलुप्पैपट्टु—वलप्पुत्तूरसे एक मील पश्चिमकी ओर है। यहीं भगवान्‌ने हालाहल-पान किया था।

३१. ओमम्पुलियूर—इलुप्पैपट्टुसे दो मील उत्तर-पश्चिमकी ओर है। शिवरात्रिकी कथासे सम्बद्ध व्याधकी यहीं मुक्ति हुई थी।

३२. कणत्तुमुल्लूर—ओमम्पुलियूरसे तीन मील पूर्वकी ओर है। महर्षि पतञ्जलिने यहाँ भगवान्‌की आराधना की थी।

३३. तिरुत्तैरयूर—चिदम्बरम्से दस मील दक्षिण-पश्चिमकी ओर है। अप्रकट 'देवारम्' नामक पदावलीको यहीं प्रकाशमें लाया गया था।

३४. कडम्बूर (पश्चिम)—ओमम्पुलियूरसे चार मील उत्तर-पश्चिमकी ओर है। यहाँ इन्द्रने अमृत-प्राप्तिके लिये भगवान्‌से प्रार्थना की थी।

३५. पंदनल्लूर—तिरुवडमरुदूर रेलवे-स्टेशनसे आठ मील ईशानकोणमें है। यहाँ कामधेनुने भगवान्‌की आराधना की थी।

३६. कंजनूर—तिरुवडमरुदूर रेलवे-स्टेशनसे छः

मील ईशानकोणमें है। हरिदत्त शिवाचार्यकी यह जन्मभूमि है। मन्दिरमें इनकी भी एक प्रतिमा स्थापित है। यहाँका श्रीविग्रह कंसका भी आराध्य रहा है।

३७. **तिरुक्कोडिकावल**—तिरुवडमरुदूर रेलवे-स्टेशनसे दो मील पूर्वकी ओर है। अनेकों ऋषियोंने यहाँ भगवान्‌की आराधना की है।

३८. **तिरुमङ्गलकुडि**—आडुतुरै रेलवे-स्टेशनसे तीन मील उत्तरकी ओर है। यहाँ भगवतीने एक मुर्देको जिलाया था।

३९. **तिरुप्पनन्ताल**—आडुतुरै रेलवे-स्टेशनसे सात मील उत्तरकी ओर है। यहाँ कुगिलियक्कलय नायनार नामक भक्तने आराधना की है। मन्दिरमें इनकी भी प्रतिमा है।

४०. **तिरुवाप्पडि**—तिरुप्पनन्तालसे दो मील पश्चिमकी ओर है। संत चण्डेशने यहाँ आराधना की है।

४१. **तिरुच्चैंगलूर**—तिरुवाप्पडिके समीप है। यहाँ भक्त चण्डेश और भगवान् सुब्रह्मण्यम्ने आराधना की थी।

४२. **तिरुन्तुतेवंगुडि**—तिरुवडमरुदूर रेलवे-स्टेशनसे चार मील वायव्यकोणमें है। एक केंकड़ेने यहाँ भी भगवान्‌की उपासना की थी।

४३. **तिरुविशलूर**—तिरुन्तुतेवंगुडिसे एक मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ लाये जाते हुए एक मुर्देके शरीरमें प्राणका संचार हो गया था।

४४. **कोट्टैयूर**—कुम्भकोणम् रेलवे-स्टेशनसे तीन मील वायव्यकोणमें है। हेरण्ड मुनिने भगवान् शङ्करकी यहाँ आराधना की थी। मन्दिरमें उनकी भी प्रतिमा है।

४५. **इन्नम्बूर**—कोट्टैयूरसे दो मील वायव्यकोणमें है। इन्द्रके वाहन ऐरावतने यहाँ भगवान्‌की उपासना की थी। मन्दिरका विमान अन्य विमानोंसे विलक्षण है।

४६. **तिरुप्पुरम्बियम्**—इनम्बूरसे दो मील वायव्यकोणमें है। यहाँका दक्षिणामूर्ति-विग्रह विशेषता रखता है।

४७. **विजयमंगै**—तिरुप्पुरम्बियम्के समीप है। यहाँ विजय (अर्जुन) ने भगवान्‌की आराधना की थी।

४८. **तिरुवैगावूर**—विजयमंगैसे एक मील पश्चिमकी ओर है। इसका भी शिवरात्रि-व्रतकी कथासे सम्बन्ध है।

४९. **कुरंगाडुतुरै (उत्तर)**—अय्यम्पेट रेलवे-स्टेशनसे चार मील वायव्यकोणमें है। यहाँ वानरराज वालीने भगवान्‌की आराधना की थी।

५०. **तिरुप्पळणम्**—कुरंगाडुतुरैसे तीन मील पश्चिमकी ओर है। संत अप्पर एवं अप्पूदि-अडिगळने यहाँ आराधना की है।

५१. **तिरुवाडि (तिरुवैयारु)**—तंजौर रेलवे-स्टेशनसे सात मील उत्तरकी ओर है। यहाँ कावेरी नदीकी पूर्ण छटा देखनेमें आती है। समुद्र-देवताने यहाँ भगवान्‌की आराधना की थी। यहाँका विग्रह एक भक्तको यमपाशसे छुड़ानेके लिये आविर्भूत हुआ था।

५२. **तिल्लैस्थानम्**—तिरुवाडिसे एक मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ देवी सरस्वतीने भगवान्‌की आराधना की थी।

५३. **पेरुम्बुलियूर**—तिरुवाडिसे दो मील वायव्यकोणमें है। यहाँ व्याघ्रपाद मुनिने भगवान्‌की आराधना की थी।

५४. **तिरुमळप्पाडि**—पेरुम्बुलियूरसे दो मील वायव्यकोणमें है। यहाँ नन्दीश्वरका विवाह हुआ था। कोलरून नदी यहाँ उत्तरकी ओर बहती है।

५५. **पळुवूर**—तिरुवाडिसे दस मील ईशानकोणमें है। यहाँ परशुरामजीने भगवान्‌की आराधना की है।

५६. **तिरुक्कनूर**—बूदलूर रेलवे-स्टेशनसे सात मील उत्तरकी ओर है। यहाँ भगवान् अग्निके रूपमें प्रकट हुए थे।

५७. **अन्बिल**—बूदलूरसे बारह मील उत्तरमें है। यहाँ भक्त वागीशने भगवान्‌की आराधना की है।

५८. **तिरुमन्दुरै**—त्रिचिनापळ्ळि रेलवे-स्टेशनसे तेरह मील ईशानकोणमें है। मरुत् नामके देवताओं तथा महर्षि कण्वने यहाँ भगवान्‌की आराधना की है।

५९. **तिरुप्पार्तुरै**—तिरुवेरम्बूर रेलवे-स्टेशनसे चार मील उत्तरकी ओर है। मार्कण्डेय मुनि जब यहाँ भगवान्‌की उपासना कर रहे थे, तब प्रचुर मात्रामें दूध यहाँ प्रकट हो गया था।

६०. **तिरुवानैक्का (जम्बुकेश्वर)**—त्रिचिनापळ्ळि रेलवे-स्टेशनसे चार मील उत्तरकी ओर है। यहाँ आपोलिङ्ग प्रतिष्ठित है।

६१. **तिरुप्पैंजिलि**—त्रिचिनापळ्ळि रेलवे-स्टेशनसे बारह मील ईशानकोणमें है। यहाँ संत अप्परने भगवान्‌की आराधना की है।

६२. **तिरुवाशी**—तिरुवानैक्कासे तीन मील वायव्य-कोणमें है। यहाँ नटराज-मूर्तिके मस्तकपर जटाएँ

सुशोभित हैं और असुर उनके बगलमें खड़ा है, जब कि वह अन्य नटराज विग्रहोंके चरण-तले दबा रहता है।

६३. **तिरुविंगनाथमलै**—कुळित्तलै रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील वायव्यकोणमें है। यहाँ अगस्त्य मुनिने भगवान्‌की आराधना की है।

६४. **रत्नगिरि**—कुळित्तलैसे सात मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ चोळवंशीय एक राजाके सामने भगवान्‌ने रत्नोंकी राशि प्रकट की थी।

६५. **कदम्बर-कोइल**—कुलित्तलैसे दो मील वायव्यकोणमें है। यहाँ कण्व-मुनिने भगवान्‌की आराधना की है।

६६. **तिरुप्पारैतुरै**—एलुमनूर रेलवे-स्टेशनसे दो मील वायव्यकोणमें है। यहाँ सप्तर्षियोंने भगवान्‌की आराधना की है।

६७. **उय्यकोण्डान**—त्रिचिनापळ्ळि रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील वायव्यकोणमें है। यहाँ सिंहलद्वीपके एक नरेशपर भगवान्‌ने कृपा की थी।

६८. **उरैयूर**—त्रिचिनापळ्लिसे दो मील पश्चिमकी ओर है। यहाँके लिङ्ग-विग्रहका रंग दिनमें पाँच बार नये-नये रूपमें बदलता जाता है।

६९. **त्रिचिनापळ्लि**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ किसी असहाय स्त्रीके सूतिका-गृहमें भगवान्‌ने दाई बनकर सेवा की थी। अतएव उनका नाम यहाँ मातृभूतेश्वर है।

७०. **तिरुवेरुम्बूर**—यह रेलवे-स्टेशन है। देवताओंने पिपीलिकाओंके रूपमें यहाँ भगवान्‌की उपासना की है।

७१. **तिरुनाट्टुंगुलम्**—तिरुवेरुम्बूरसे आठ मील अग्निकोणमें है। चोळनरेश वञ्जियनपर यहाँ भगवान्‌ने कृपा की है।

७२. **तिरुवकाटटुपळ्ळि (पश्चिम)**—बुदलूर रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील उत्तरमें है। चोळ-नरेश परान्तककी रानीपर यहाँ भगवान्‌ने कृपा की है।

७३. **तिरुवलंपोळिल**—तंजौर रेलवे-स्टेशनसे दस मील वायव्यकोणमें है। यहाँ अष्टवसुओंने भगवान्‌की आराधना की है।

७४. **तिरुप्पुंतुरुत्ति**—तंजौरसे आठ मील ईशानकोणमें है। यहाँ महर्षि कश्यपने भगवान्‌की आराधना की है।

७५. **कंडियूर**—तंजौरसे छः मील उत्तरकी ओर है। यहाँके मन्दिरमें ब्रह्मा और सरस्वतीके भी दर्शन होते हैं।

७६. **शोत्तुत्तुरै**—कंडियूरसे चार मील ईशानकोणमें है। यहाँ वर्षके कतिपय दिनोंमें लिङ्ग-विग्रहपर सूर्यकी रश्मियाँ पड़ती हैं।

७७. **तिरुवेदिकुडि**—कंडियूरसे दो मील पूर्वकी ओर है। यहाँ वेदोंने विग्रहवान् होकर भगवान्‌की आराधना की थी।

७८. **तिटटै**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ महर्षि गौतमने भगवान्‌की आराधना की है।

७९. **पशुपति-कोइल**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ किसी कल्पमें भगवान्‌ने हालाहल-पान किया था।

८०. **चक्रपळ्ळि**—अय्यम्पेट रेलवे-स्टेशनसे एक मील पश्चिमकी ओर है। सप्तमातृकाओंने यहाँ भगवान्‌की आराधना की है।

८१. **तिरुक्कलावूर**—पापनाशम् रेलवे-स्टेशनसे चार मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ देवीने दाई बनकर एक प्रसूता स्त्रीकी सेवा की थी।

८२. **तिरुप्पालैतुरै**—पापनाशम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील ईशानकोणमें है। यहाँ भगवान्‌ने एक सिंहका दमन किया था।

८३. **नल्लूर**—सुन्दरपेरुमाळ-कोइल रेलवे-स्टेशनसे दो मील दक्षिणकी ओर है। यहाँके भी लिङ्ग-विग्रहका वर्ण दिनमें पाँच बार बदलता है।

८४. **आवूर**—पापनाशम् रेलवे-स्टेशनसे आठ मील दूर अग्निकोणमें है। यहाँ कामधेनुने भगवान्‌की उपासना की थी।

८५. **शक्तिमुट्टम्**—पट्टीश्वरम्‌के समीप, दारासुरम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील नैर्ऋत्यकोणमें है। यहाँ भगवती लिङ्ग-विग्रहका आलिङ्गन करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं।

८६. **पट्टीश्वरम्**—शक्तिमुट्टम्‌के समीप है। यहाँ मन्दिरमें भगवान् श्रीरामका एक प्राचीन चित्र दृष्टिगोचर होता है, जिसमें वे शिवजीकी पूजा कर रहे हैं।

८७. **पळयारै**—पट्टीश्वरम्‌के समीप है। यहाँ चन्द्रदेवने भगवान्‌की आराधना की है।

८८. **तिरुवलंचुलि**—सुन्दर पेरुमाळ रेलवे-स्टेशनसे एक मील पूर्वकी ओर है। यहाँ हेरण्ड मुनिने भगवान्‌की आराधना की है। मन्दिरमें हेरण्डकी भी प्रतिमा है। यहाँका विनायक-विग्रह विशिष्ट तेजोमय है।

८९. **कुम्भकोणम्**—यह रेलवे स्टेशन है। महामघम्

यहाँका प्रसिद्ध सरोवर है। यहाँका कुम्भेश्वर-लिङ्ग खपड़ोंका बना है।

९०. **नागेश्वर-मन्दिर (कुम्भकोणम्)**—यहाँ वर्षके कतिपय दिनोंमें लिङ्गपर सूर्य-रश्मियाँ गिरती हैं।

९१. **काशी-विश्वनाथ (कुम्भकोणम्)**—यहाँ मन्दिरमें नौ नदियोंकी मूर्तियाँ कन्यारूपमें दृष्टिगोचर होती हैं।

९२. **तिरुनागेश्वरम्**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ नागराज वासुकिने भगवान्‌की उपासना की है।

९३. **तिरुवडमरुदूर**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ किसी पाण्डव-नरेशको भगवान्‌ने ब्रह्महत्यासे मुक्त किया था। यहाँ पौषकी पूर्णिमाके दिन विशेष उत्सव होता है।

९४. **आडुतुरै**—यह रेलवे-स्टेशन है। वानरराज सुग्रीव और हनुमान्‌ने यहाँ भगवान्‌की उपासना की है।

९५. **तेन्नल्कुडि**—आडुतुरैसे दो मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ वरुणदेवने भगवान्‌की उपासना की है।

९६. **वैगै (वैगन्मडल-कोहल)**—आडुतुरैसे चार मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ चोळनरेश कोचेनगानपर भगवान्‌ने कृपा की है।

९७. **कोनेरिराजपुरम् (तिरुनल्लम्)**—आडुतुरैसे पाँच मील अग्निकोणमें है। यहाँका नटराज-विग्रह बहुत विशाल एवं आकर्षक है।

९८. **तिरुक्कोळम्बम्**—नरसिंगम्पेट रेलवे-स्टेशनसे दो मील अग्निकोणमें है। भगवान्‌ने यहाँ इन्द्रद्वारा पीड़ित एक भक्तकी रक्षा की थी।

९९. **तिरुवाडुतुरै**—नरसिंगम्पेट रेलवे-स्टेशनसे दो मील अग्निकोणमें है। तिरुमल नायना नामक भक्तने यहाँ भगवान्‌की आराधना की है; उनकी भी प्रतिमा मन्दिरमें प्रतिष्ठित है।

१००. **कुत्तालम् (तिरुत्तुरुत्ति)**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ भगवान्‌ने वेदोंका तत्त्व प्रकट किया था।

१०१. **तेरळुन्दूर**—कुत्तालम्‌से तीन मील अग्निकोणमें है। यहाँ दिक्पालोंने भगवान्‌की आराधना की है।

१०२. **मायवरम् (मयिलाडुतुरै)**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ मयूरीके रूपमें भगवतीने भगवान्‌की आराधना की है। यहाँ एक निश्चित तिथिको गङ्गाजीकी धारा भीतर-ही-भीतर कावेरीमें आती है।

१०३. **विलनगर**—मायवरम्‌से चार मील पूर्वकी दिशामें है। यहाँ बाढ़में बहते हुए एक भक्तकी भगवान्‌ने रक्षा की है।

१०४. **पाराशलूर (तिरुप्पारियलूर)**—विलनगरसे दो मील अग्निकोणमें है। यहाँ दक्ष और वीरभद्रके दर्शन होते हैं।

१०५. **शेम्पनार-कोइल**—मायवरम्‌से सात मील पूर्व दिशामें है। यहाँ रतिने भगवान्‌से अपने पतिके प्राणोंके लिये प्रार्थना की थी।

१०६. **पुंजै (तिरुनानिपळ्ळि)**—शेम्पनार-कोइलसे दो मील ईशानकोणमें है। यहाँ संत ज्ञान-सम्बन्धका ननिहाल था।

१०७. **पेरुम्पळ्ळम् (पश्चिम)**—इसका दूसरा नाम तिरुवलम्पुरम् है। पुंजैसे ग्यारह मीलके अन्तरपर है। यहाँ भगवान् विष्णुने शिवजीकी आराधना करके उनसे शङ्ख प्राप्त किया था।

१०८. **तलैच्चेन्काडु**—पेरुम्पळ्ळम्‌से एक मील नैर्ऋत्य-कोणमें है। यहाँ भी भगवान् विष्णुने शिवजीकी पूजा की थी।

१०९. **आक्कूर**—मायवरम्‌से ग्यारह मील पूर्वकी दिशामें है। शिरप्पुलि नायनारने यहाँ आराधना की है।

११०. **तिरुक्कडयूर**—मायवरम्‌से तेरह मील अग्नि-कोणमें है। यहाँ भगवान्‌ने लिङ्गमेंसे प्रकट होकर मार्कण्डेयकी रक्षाके लिये यमराजको लात मारी थी। इस दृश्यको यहाँ मूर्तिरूपमें व्यक्त किया गया है।

१११. **मयनम्**—तिरुक्कडयूरसे एक मील अग्निकोणमें है। यहाँ ब्रह्माने भगवान्‌की आराधना की है।

११२. **तिरुवेट्टैकुडि**—पौरैयम् रेलवे-स्टेशनसे चार मील पूर्वकी ओर है। भगवान् यहाँ किरातरूपमें प्रकट हुए थे।

११३. **कोइल्पट्टु (तिरुतेलिचेरि)**—पोरैयार रेलवे-स्टेशनसे एक मील वायव्यकोणमें है। यहाँ वर्षके कतिपय दिनोंमें लिङ्गपर सूर्यकी किरणें पड़ती हैं।

११४. **धर्मपुरम्**—करैक्कल रेलवे-स्टेशनसे एक मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ यमराजने भगवान्‌की उपासना की थी।

११५. **तिरुनल्लार**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ निषध-देशके राजा नल शनिकी दशासे मुक्त हुए थे। यहाँका शनैश्चर-मदिर विशेष महत्त्व रखता है।

११६. **कोट्टारम्**—(तिरुक्कोट्टारु)—अम्बत्तूर रेलवे-स्टेशनसे दो मील ईशानकोणमें है। एलयंकुड़िमार

नायनारने यहाँ आराधना की है।

११७. अम्बार—पुंतोत्तम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील पूर्व-दिशामें है। यहाँ सोमसिमर नायनारने आराधना की है।

११८. अम्बर्माकलम्—कोट्टारम्के समीप है। यहाँ भगवती कालीने भगवान्की आराधना की है।

११९. तिरुमेयचूर—पेरलम् रेलवे-स्टेशनसे एक मील पश्चिमकी ओर है। पार्वतीके साथ हाथीपर विराजमान भगवान्की सूर्यदेवने यहाँ पूजा की है।

१२०. एलन्-कोइल—यह मन्दिर तेरुमेयचूर-मन्दिरके घेरेमें है। यहाँ भगवती कालीने शंकरजीकी आराधना की है।

१२१. तिलतैप्पाडि (कोईपट्टु)—पुंतोत्तम् रेलवे-स्टेशनसे एक मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ शिवलिङ्गपर वर्षके कतिपय दिनोंमें सूर्यकी रश्मियाँ पड़ती हैं।

१२२. तिरुप्पम्पुरम्—पुंतोत्तम् रेलवे-स्टेशनसे तीन मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ नागराज वासुकिके भी दर्शन होते हैं।

१२३. शिरुक्कुडि—यहाँ देवताओंने भगवान्की आराधना की है।

१२४. तिरुविळिमळलै—पेरलम् रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ पूजामें एक पुष्पकी कमी हो जानेपर भगवान् विष्णुने शंकरजीको अपना एक नेत्र चढ़ा दिया था।

१२५. अन्नूर (तिरुवण्णियूर)—तिरुविलिमळलैसे दो मील वायव्यकोणमें है। यहाँ अग्निदेवने भगवान्की आराधना की है।

१२६. करुविळि—अन्नूरसे दो मील नैर्ऋत्यकोणमें है। इन्द्रने देवताओंके साथ यहाँ भगवान्की आराधना की थी।

१२७. तिरुप्पन्दुरै—कुम्भकोणम् रेलवे-स्टेशनसे ग्यारह मील अग्निकोणमें है। यहाँ भगवान् सुब्रह्मण्यम्पर शंकरजीने कृपा की थी।

१२८. नारैयूर—तिरुप्पन्दुरैसे दो मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ सिद्धोंने भगवान्की आराधना की है।

१२९. अलगरपुत्तूर—नारैयूरसे दो मील वायव्यकोणमें है। पुगळतुनै नायनार नामक भक्तने यहाँ आराधना की है।

१३०. शिवपुरी—कुम्भकोणम् रेलवे-स्टेशनसे तीन मील अग्निकोणमें है। यहाँ विष्णुने वराहरूपमें भगवान्की उपासना की है।

१३१. शाक्कोट्टै (तिरुक्कलयनल्लूर)—कुम्भकोणम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील दक्षिणकी ओर है। प्रलयकालमें इस स्थानको भगवान्ने जलमें डूबनेसे बचाया था।

१३२. मरुदण्डनल्लूर (तिरुक्करुक्कुडि)—शाक्कोट्टैसे यह एक मील दक्षिण है। एक राजापर यहाँ भगवान्ने कृपा की है।

१३३. श्रीवाञ्चियम्—निन्निलम् रेलवे-स्टेशनसे सात मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ भगवान् विष्णुने शिवजीकी आराधना की है। एक मन्दिरमें यमराजकी भी मूर्ति है।

१३४. नन्निलम्—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ सूर्यदेवताने भगवान्की आराधना की है।

१३५. तिरुक्कडीश्वरम्—नन्निलम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ कामधेनुने भगवान्की उपासना की है।

१३६. तिरुप्पानैयूर—नन्निलम् रेलवे-स्टेशनसे एक मील अग्निकोणमें है। महर्षि पराशरने यहाँ भगवान्की आराधना की है।

१३७. विर्कुडि—वेट्टार रेलव-स्टेशनसे चार मील ईशानकोणमें है। यहाँ भगवान्ने चक्र धारण करके जलन्धर दैत्यका वध किया था। भगवान् शिवकी चक्रधर-मूर्तिके दर्शन होते हैं।

१३८. तिरुप्पुगलूर—नन्निलम्से चार मील पूर्वकी ओर है। यहाँ भगवान्की व्याघ्रके रूपमें संत अप्परको निगलती हुई मूर्तिके दर्शन होते हैं।

१३९. वर्तमणिचूरम्—यह मन्दिर तिरुप्पुगलूरके घेरेमें है। यहाँ मुरुग नायनारने आराधना की है।

१४०. रामणतिच्चुरम्—तिरुप्पुगलूरसे एक मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ श्रीरामने शिवजीकी उपासना की है।

१४१. पयत्तंगुडि—विर्कुडिसे तीन मील पूर्वकी ओर है। भैरव मुनिने यहाँ भगवान्की उपासना की है।

१४२. तिरुच्चेन्काट्टंगुडि—नन्निलम्से सात मील अग्निकोणमें है। शिरुत्तोण्ड नामक भक्तने यहाँ आराधना की है। मन्दिरमें उनकी भी प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यहाँ गणेशजीने गजमुखासुरका वध किया था।

१४३. तिरुमरुगल—तिरुच्चेन्काट्टंगुडिसे दो मील ईशानकोणमें है। साँपके विषसे मरी हुई एक बालिकाको

यहाँ भगवान्ने जिलाया था।

१४४. **सेय्यातमंगै**—तिरुमरुगलसे एक मील ईशानकोणमें है। संत तिरुनीलनक्क नायनारने यहाँ आराधना की है। उनकी प्रतिमा भी मन्दिरमें प्रतिष्ठित है।

१४५. **नागपट्टणम् (नेगापटम्)**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ आडिपट्ट नायनारने आराधना की है।

१४६. **सिक्कल**—यह रेलवे-स्टेशन है। वसिष्ठ मुनिने यहाँ भगवान्की आराधना की है।

१४७. **किळ्वेलूर**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ महर्षि अगस्त्यने भगवान्की आराधना की है। कुबेर और इन्द्रकी मूर्तियाँ भी यहाँ प्रतिष्ठित हैं।

१४८. **तेवूर**—किळ्वेलूरसे तीन मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ देवताओंने भगवान्की आराधना की है।

१४९. **अरिक्कारयन्पळ्ळि**—वेट्टार रेलवे-स्टेशनसे दो मील अग्निकोणमें है। यहाँ श्रीरामने भगवान् शिवकी आराधना की है।

१५०. **तिरुवारूर**—यह रेलवे-स्टेशन है। भगवती लक्ष्मीने यहाँ शिवजीकी आराधना की है। यह किसी समय चोळ-नरेशोंकी राजधानी रहा है। यहाँ भगवान् त्यागराजके नामसे विख्यात हैं।

१५१. **आरनेरि**—यह स्थान तिरुवारूर-मन्दिरके घेरेमें है। यहाँ नामिनन्दि-अडिगळ नायनार नामक संतने आराधना की है।

१५२. **तुलानायनार-कोइल**—यह भी तिरुवारूर-मन्दिरके पूर्वीय मुख्यद्वारके मार्गमें स्थित है। यहाँ दुर्वासा मुनिकी भी मूर्ति प्रतिष्ठित है।

१५३. **विलामर**—तिरुवारूरसे दो मील वायव्यकोणमें है। यहाँ महर्षि पतञ्जलि एवं व्याघ्रपाद मुनिकी मूर्तियाँ भी स्थापित हैं।

१५४. **कारयपुरम् (करवीरम्)**—कुलित्तलै रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील वायव्यकोणमें है। यहाँ महर्षि गौतमने भगवान्की आराधना की है।

१५५. **कटटूर अय्यम्पेट (पेरुवेलूर)**—यह कारयपुरम्से दो मील वायव्यकोणमें है। यहाँ भी महर्षि गौतमने आराधना की है।

१५६. **तलैआलंकाडु**—तिरुवारूरसे दो मील पश्चिमकी ओर है। संत कप्पिलरने यहाँ भगवान्की आराधना की है।

१५७. **कुडैवासल**—यह कोरड़ाचेरि रेलवे-स्टेशनसे आठ मील उत्तरकी ओर है। यहाँ गरुड़जीने शिवजीकी आराधना की है।

१५८. **उडैयार-कोइल (तिरुच्चेन्दुरै)**—कुडैवासलसे चार मील ईशानकोणमें है। धौमेयने यहाँ भगवन्की आराधना की थी।

१५९. **नालूरमयानम्**—कुडैवासलसे तीन मील ईशानकोणमें है। यहाँ आपस्तम्ब ऋषिने भगवान्की आराधना की है।

१६०. **आण्डार-कोइल**—सेय्यातमंगैसे चार मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ महर्षि कश्यपने भगवान्की आराधना की है।

१६१. **आलंकुडि (एरुम्पुलै)**—नीडामङ्गलम् रेलवे-स्टेशनसे चार मील उत्तरकी ओर है। यहाँ महर्षि विश्वामित्रने भगवान्की आराधना की है।

१६२. **हार्दिद्वारमङ्गलम्**—शालीयमङ्गलम् रेलवे-स्टेशनसे आठ मील ईशानकोणमें है। यहाँ भगवान् शंकरने वाराहावतारका दमन किया था।

१६३. **अवलिवनाल्लूर**—यहाँ भगवान्ने एक मनुष्यका रूप धारणकर किसी भक्तकी रक्षाके लिये न्यायालयमें गवाही दी थी। भगवान्की यह लीला पत्थरपर मूर्तिरूपमें उत्कीर्ण है।

१६४. **परित्तिअप्पर-कोइल**—तंजौर रेलवे-स्टेशनसे नौ मील अग्निकोणमें है। सूर्यदेवने यहाँ भगवान्की आराधना की है।

१६५. **कोइलवेण्णि (तिरुवेण्णि)**—यहाँका लिङ्ग-विग्रह विलक्षण ढंगका है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो कई डंडे बाँधकर रख दिये गये हैं।

१६६. **पूवानूर**—नीडामङ्गलम् रेलवे-स्टेशनसे तीन मील दक्षिणकी ओर है। शुक मुनिने यहाँ भगवान् शिवकी आराधना की है।

१६७. **पामणि (पाटलीचुरम्)**—मन्नारगुडि रेलवे-स्टेशनसे दो मील उत्तरकी ओर है। यहाँ धनंजय (अर्जुन) ने भगवान्की आराधना की है।

१६८. **तिरुक्कलार**—तिरुत्तुरैपुंडि रेलवे-स्टेशनसे नौ मील नैर्ऋत्यकोणमें है। यहाँ मन्दिरमें महर्षि दुर्वासाकी भी मूर्ति प्रतिष्ठित है।

१६९. **शित्ताम्बूर**—पोन्नेरि रेलवे-स्टेशनसे चार मील वायव्यकोणमें है। यहाँ वेदोंने मूर्तिमान् होकर भगवान् शंकरकी आराधना की है।

१७०. **कोइलूर**—मुतुपेट रेलवे-स्टेशनसे दो मील उत्तरकी ओर है। यहाँ श्रीरामने शैवीदीक्षा ली थी।

१७१. **इडिम्ब (हिडिम्ब)-वनम्**—तिरुत्तुरैपुण्डि रेलवे-स्टेशनसे दस मील नैर्ऋत्यकोणमें है। यहाँ हिडिम्ब राक्षसने भगवान्‌की आराधना की है।

१७२. **कर्पकनार-कोइल**—इडिम्बवनम्‌से एक मील पूर्वकी ओर है। यहाँ गणेशजीने बाजीमें एक आमका फल जीता था।

१७३. **तंडलैचेरि**—तिरुत्तुरैपुंडि रेलवे-स्टेशनसे दो मील उत्तरकी ओर है। यहाँ अरिवट्ट नायनार नामक भक्तने आराधना की है।

१७४. **कुट्टूर**—मन्नारगुडि रेलवे-स्टेशनसे दस मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ देवताओंने आराधना की है।

१७५. **तिरुवण्डुत्तुरै (तिरुवेन्दुरै)**—मन्नारगुडि रेलवे-स्टेशनसे छः मील पूर्वकी ओर है। भृङ्गी नामक गणने यहाँ भगवान्‌की आराधना की है।

१७६. **तिरुक्कळम्बूर (तिरुक्कोलम्बुदूर)**—नीड़ामङ्गलम् रेलवे-स्टेशनसे छः मील ईशानकोणमें है। यहाँ भक्त ज्ञान-सम्बन्धने भगवान्‌की आराधना की है।

१७७. **ओगै (पेरइल)**—तिरुनट्टियट्टंगुडि रेलवे स्टेशनसे तीन मील नैर्ऋत्यकोणमें है। यहाँ अग्निदेवने भगवान्‌की आराधना की है।

१७८. **कोळिळक्काडु**—पोन्नेरि रेलवे-स्टेशनसे चार मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ अग्निदेव एवं शनि ग्रहने भगवान्‌की आराधना की है।

१७९. **तिरुत्तेंगूर**—तिरुनेल्लिक्का रेलवे-स्टेशनसे दो मील नैर्ऋत्यकोणमें है। यहाँ नवग्रहोंने भगवान्‌की आराधना की है।

१८०. **तिरुनेल्लिक्का**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ वर्षके कतिपय दिनोंमें लिङ्ग-विग्रहपर सूर्य-रश्मियाँ पड़ती हैं।

१८१. **तिरुनट्टियट्टंगुडि**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ कोटपुलि नायनार नामक भक्तने भगवान्‌की आराधना की है। मन्दिरमें उनकी मूर्ति प्रतिष्ठित है।

१८२. **तिरुक्करैवाशल (तिरुक्कराइल)**—तिरुनट्टियट्टंगुडि स्टेशनसे तीन मील अग्निकोणमें है। इन्द्रने यहाँ भगवान्‌की आराधना की है। यहाँका त्यागराज-विग्रह महाराज मुचुकुन्दके द्वारा स्थापित है।

१८३. **कन्नप्पूर**—तिरुनट्टियट्टंगुडि स्टेशनसे छः मील पूर्वकी ओर है। यहाँ भगवान् एक काठकी खूँटीसे प्रकट हुए थे।

१८४. **वलिवलम्**—कन्नप्पूरसे दो मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ सूर्यदेवने भगवान्‌की आराधना की है।

१८५. **कैचिनम्**—तिरुनेल्लिक्का रेलवे-स्टेशनसे दो मील पूर्वकी ओर है। यहाँ इन्द्रने भगवान्‌की आराधना की है।

१८६. **तिरुक्कुवळै (तिरुक्कोलिलि)**—कैचिनम्‌से पाँच मील पूर्वकी ओर है। यहाँ भीम एवं बकासुरकी मूर्तियाँ स्थापित हैं।

१८७. **तिरुवाइमूर**—तिरुक्कुवळैसे तीन मील अग्निकोणमें है। सूर्यदेवने यहाँ भगवान्‌की उपासना की है। यहाँका त्यागराज-विग्रह मुचुकुन्दके द्वारा स्थापित किया हुआ है।

१८८. **वेदारण्यम् (तिरुमैरक्काडु)**—यह रेलवे-स्टेशन है। वेदोंने, महर्षि विश्वामित्र तथा श्रीरामने यहाँ भगवान्‌की उपासना की है।

१८९. **अगस्त्यम्पळिळ**—यह वेदारण्यम्‌से तीन मील दक्षिणमें है। यहाँ महर्षि अगस्त्यकी प्रतिमा भी स्थापित है।

१९०. **कुलगर-कोइल (कोडि)**—अगस्त्यम्पळिळसे सात मील दक्षिणमें है। यहाँके लिङ्ग-विग्रहका अमृतसे प्रादुर्भाव हुआ था।

१९१. **तिरुक्कोणमलै (त्रिंकोमाली)**—यह स्थान-सिंहलद्वीप (सिलोन) में है। यहाँ इन्द्रने भगवान्‌की आराधना की है।

१९२. **मठोत्तम्**—यह स्थान भी लङ्कामें है, यद्यपि अब वह खँडहरके रूपमें स्थित है। यहाँ महर्षि भृगुने भगवान्‌की आराधना की है।

१९३. **मदुरा**—यह रेलवे-स्टेशन है। भगवती मीनाक्षीने इस देशका शासन किया है। यहाँ भगवान्‌ने ६४ चमत्कार दिखलाये थे।

१९४. **तिरुवप्पनूर**—यह स्थान भी मदुरामें वैगै नदीके तटपर स्थित है।

१९५. **तिरुप्परंकुन्रम्**—यह रेलवे-स्टेशन है। भगवान् सुब्रह्मण्यम्‌ने यहाँ इन्द्रसुता देवसेनाका पाणिग्रहण किया था।

१९६. **तिरुवेडगम्**—शोलबन्दान रेलवे-स्टेशनसे तीन मील नैर्ऋत्यकोणमें है। संत माणिक्यवाचक और

कुलच्चै नायनारने यहाँ आराधना की है।

१९७. **पीरान्मलै (तिरुक्कोडुंकुन्रम्)**—अम्मयनायकनूर रेलवे-स्टेशनसे सोलह मील ईशानकोणमें है। यहाँ महोदर ऋषिने भगवान्‌की आराधना की है।

१९८. **तिरुप्पुत्तूर**—पिरान्मलैसे पंद्रह मील अग्निकोणमें है। यहाँ लक्ष्मीजीने शिवजीकी आराधना की है।

१९९. **तिरुप्पुवनवायल**—अरंतांगी रेलवे-स्टेशनसे इक्कीस मील अग्निकोणमें है। यहाँ वेदोंने मूर्तिमान् होकर भगवान्‌की आराधना की है।

२००. **रामेश्वरम्**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँका लिङ्ग-विग्रह भगवान् श्रीरामके द्वारा स्थापित है। यहीं सेतुबन्ध-तीर्थ है, यहाँ स्नानकी विशेष महिमा है।

२०१. **तिरुवडनै**—तिरुप्पुवनवायलसे बारह मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ महर्षि भृगुने भगवान्‌की आराधना की है।

२०२. **कलयार-कोइल**—तिरुवडनैसे इक्कीस मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ इन्द्र-वाहन ऐरावतने भगवान्‌की आराधना की है।

२०३. **तिरुप्पुवनम्**—यह रेलवे-स्टेशन है। भगवान् सुन्दरेशने यहाँ एक चमत्कार किया था।

२०४. **तिरुच्चुळियल**—तिरुप्पुवनम्‌से पंद्रह मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ महर्षि गौतमके पुत्र शतानन्दने भगवान्‌की आराधना की है।

२०५. **कुत्तालम्**—तेन्काशी रेलवे-स्टेशनसे तीन मील पश्चिमकी ओर है। महर्षि अगस्त्यने यहाँ भगवान्‌की आराधना की है।

२०६. **तिरुनेल्वेलि (तिन्नेवेलि)**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ भगवान् बाँसोंके झुरमुटमें प्रकट हुए थे।

२०७. **तिरुवाञ्चैक्कलम्**—इरिंजाकुडा रेलवे-स्टेशनसे चार मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ परशुरामजीने भगवान्‌की आराधना की है।

२०८. **अविनाशी (तिरुप्पुक्कुळि)**—तिरुप्पूर रेलवे-स्टेशनसे ग्यारह मील वायव्यकोणमें है। यहाँ भक्त सुन्दरने आराधना की है।

२०९. **तिरुमुरुगन्पूण्डि**—तिरुप्पूर रेलवे-स्टेशनसे आठ मील वायव्यकोणमें है। यहाँ श्रीसुब्रह्मण्यम्‌ने भगवान्‌की आराधना की है। बारह वर्षमें एक बार यहाँ एक चट्टानमेंसे पानी निकलता है।

२१०. **भवानी**—ईरोड रेलवे-स्टेशनसे नौ मील वायव्यकोणमें है। यहाँ भवानी और कावेरी नदियोंका सङ्गम है। महर्षि पराशरने भगवान्‌की आराधना की है।

२११. **तिरुच्चेन्गोड**—शंकरीदुर्ग रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील पूर्वकी ओर है। यहाँ अर्द्धनारीश्वरका विग्रह है।

२१२. **विञ्जामान्कुडै**—करूर रेलवे-स्टेशनसे बारह मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ राजा वेञ्जकी राजधानी थी।

२१३. **कोडुमुडि**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश—इन त्रिदेवोंका मन्दिर है।

२१४. **करूर**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ पुगल्शोल तथा हरिपट्टनायनार नामक भक्तने आराधना की है।

२१५. **अरत्तैर**—चिदम्बरम्‌से चौबीस मील वायव्यकोणमें है। यहाँ भक्त ज्ञान-सम्बन्धने आराधना की है।

२१६. **पेन्नाकडम्**—अरत्तुरैसे चार मील ईशानकोणमें है। कलिकम्ब नायनार नामक भक्तने यहाँ आराधना की है।

२१७. **कुडलै-आत्तूर**—चिदम्बरम् रेलवे-स्टेशनसे सोलह मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ भक्त सुन्दरने आराधना की है।

२१८. **राजेन्द्रपट्टणम् (एरुक्काट्टम्पुलियूर)**—चिदम्बरम् रेलवे-स्टेशनसे छब्बीस मील पश्चिम है। यहाँ तिरुनेलकाण्ड पेरुम्बन् नायनार नामक भक्तने आराधना की है।

२१९. **तीर्थनगरी (तिरुत्थिनैनगर)**—आलम्पाक्कम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील पूर्वकी ओर है। यहाँ महर्षि अगस्त्यने भगवान्‌की आराधना की है।

२२०. **त्यागवल्लिळ (तिरुच्चोरपुरम्)**—आलम्पाक्कम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील पूर्वकी ओर है। यहाँ महर्षि अगस्त्यने भगवान्‌की आराधना की है।

२२१. **तिरुवडिगै**—पन्रुटि रेलवे-स्टेशनसे दो मील पूर्वकी ओर है। यहाँ भगवान्‌ने त्रिपुर-वध किया था।

२२२. **तिरुनामनल्लूर (तिरुनावलूर)**—पन्रुटि रेलवे-स्टेशनसे बारह मील पश्चिमकी ओर है। यह संत सुन्दरकी जन्मस्थली है। यहाँ शुक्र ग्रहने भगवान्‌की आराधना की है।

२२३. **वृद्धाचलम्**—(तिरुमुटुकुन्रम्) कडलूर रेलवे-स्टेशनसे पैंतीस मील वायव्यकोणमें है। यह स्थानीय पर्वतोंसे भी प्राचीन स्थान है।

२२४. **नेयवेण्णै (नेल्वेण्णै)**—माम्बळप्पट्टुरेलवे-स्टेशनसे उन्नीस मील वायव्यकोणमें है। यहाँ सनकादि महर्षियोंने भगवान्‌की आराधना की है।

२२५. तिरुक्कोइलूर—यह रेलवे-स्टेशन है। अन्धकासुरका यहाँ भगवान्‌ने दमन किया था।

२२६. औरकण्डनल्लूर (औरयनिनल्लूर)—यह स्थान तिरुक्कोइलूरके समीप है। यहाँ पाण्डवोंने कुछ समय निवास किया था।

२२७. इडैयारु—माम्बळपट्टु रेलवे-स्टेशनसे नौ मील वायव्यकोणमें है। यहाँ शुकमुनिने भगवान्‌की आराधना की है।

२२८. तिरुवेण्णैनल्लूर—माम्बळपट्टु रेलवे-स्टेशनसे छः मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ भक्त सुन्दरने भगवान्‌की आराधना की है।

२२९. तिरुत्तालूर (तिरुत्तुरैयूर)—विरिञ्चिपाक्कम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ भक्त सुन्दरने भगवान्‌की आराधना की है।

२३०. आण्डारकोइल (वाडुकूर)—चिन्नबाबु समुद्रम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील पश्चिममें है। यहाँ भैरवने भगवान्‌की आराधना की है।

२३१. तिरुमणिकुळि—कडलूर रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ वामनरूपमें भगवान् विष्णुने शङ्करजीकी आराधना की है।

२३२. तिरुप्पापुलियूर—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ व्याघ्रपाद मुनिने भगवान्‌की आराधना की है।

२३३. किरामम् (तिरुमुंडिच्चुरम्)—यह तिरुवेण्णैनल्लूरसे तीन मील पूर्वकी ओर है। यहाँ ब्रह्माने भगवान्‌की आराधना की है।

२३४. पणयपुरम् (पानन्कट्टूर)—मुंडियम्पाक्कम् रेलवे-स्टेशनसे दो मील ईशानकोणमें है। राजा शिबिने यहाँ भगवान्‌की आराधना की है। वर्षके कतिपय दिनोंमें लिङ्ग-विग्रहपर सूर्यकी रश्मियाँ गिरती हैं।

२३५. तिरुवमत्तूर—विल्लुपुरम् रेलवे-स्टेशनसे चार मील वायव्यकोणमें है। यहाँ कामधेनु तथा भगवान् श्रीरामने शङ्करजीकी आराधना की है।

२३६. तिरुवण्णमलै—यह रेलवे-स्टेशन है। यह प्रसिद्ध अरुणाचलक्षेत्र है। अरुणाचलेश्वर लिङ्ग तेजोलिङ्ग है।

२३७. काञ्चीवरम् (काञ्चीपुरम्)—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँके एकाम्रेश्वर-लिङ्गकी बड़ी महिमा है।

२३८. मरालि—यह काञ्चीपुरीके ही अन्तर्गत है। यहाँ भगवान् विष्णुने शङ्करजीकी आराधना की थी। भक्त ज्ञान-सम्बन्धकी भी यह उपासना-स्थली है।

२३९. ओणकण्टकाण्टली—यह भी काञ्चीपुरीमें ही है। यहाँ दो असुरोंने भगवान्‌की आराधना की है।

२४०. अणोगटंगपडम्—यह भी काञ्चीपुरीमें है। यहाँ गणेशजीने भगवान्‌की आराधना की थी।

२४१. तिरुक्कलीश्वरम्-कोइल—यह भी काञ्चीपुरीमें ही है। यहाँ बुध ग्रहने भगवान्‌की आराधना की है।

२४२. कुरंगणिमुट्टम्—काञ्चीपुरीसे ६ मील दक्षिणमें है। यहाँ बालीने भगवान्‌की आराधना की है।

२४३. मगरल—यह काञ्चीपुरीसे दस मील दक्षिणकी ओर है। यहाँ इन्द्रने भगवान्‌की आराधना की है।

२४४. तिरुवोत्तूर—काञ्चीपुरीसे अठारह मील पश्चिमकी ओर है। यहाँ भगवान्‌ने वेदोंको प्रकट किया था। यहाँ एक शिलामय तालवृक्ष है।

२४५. तिरुप्पनंकाडु (पनंकाट्टूर)—यह काञ्चीपुरीसे नौ मील नैर्ऋत्यकोणमें है। यहाँ महर्षि अगस्त्यने भगवान्‌की उपासना की है।

२४६. तिरुवलम्—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ नवग्रहोंने भगवान्‌की उपासना की है।

२४७. तिरुमाल्पेरु—यह पालूर रेलवे-स्टेशनसे तीन मील नैर्ऋत्यकोणमें है। भगवान् विष्णुने यहाँ शङ्करजीको अपना एक नेत्र चढ़ाया था।

२४८. तक्कोलम्—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँके नन्दीविग्रहसे निरन्तर पानी निकलता रहता है।

२४९. इलम्पयम्-कोट्टूर—यह तक्कोलम्‌से दो मील नैर्ऋत्यकोणमें है। यहाँ देवकन्याओंने भगवान्‌की आराधना की है।

२५०. कुवम् (तिरुविर्कोलम्)—कडम्बत्तूर रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील नैर्ऋत्यकोणमें है। यहाँ भगवान्‌ने त्रिपुर-विजयके लिये यात्रा प्रारम्भ की थी। समय-समयपर लिङ्गका वर्ण बदलता रहता है, जिससे वर्षा और युद्धकी सूचना मिलती है।

२५१. तिरुवाळंगाडु—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ नटराजका विग्रह है। प्रसिद्ध महिलाभक्त करैक्कल अम्मलने यहाँ आराधना की है।

२५२. तिरुप्पसूर—तिरुवेल्लोर रेलवे-स्टेशनसे यह पाँच मील वायव्यकोणमें है। यहाँ भगवान्‌ने सर्पनृत्य किया था। यहाँ चन्द्रदेवपर भी भगवान्‌की कृपा हुई थी।

२५३. तिरुवलम्पुतूर (तिरुवेम्पाक्कम्)—तिरुवेल्लोर रेलवे-स्टेशनसे सात मील उत्तरकी ओर है। यहाँ संत

सुन्दरने आराधना की है।

२५४. **तिरुक्कल्लम्**—यह पोन्नेरि रेलवे-स्टेशनसे बारह मील नैर्ऋत्यकोणमें है। यहाँ महर्षि भृगुने भगवान्‌की आराधना की है।

२५५. **कालहस्ती**—यह रेलवे-स्टेशन है। यहाँ भगवान्‌का वायुलिङ्ग है। भक्त कण्णप्पका यह आराध्य विग्रह है।

२५६. **तिरुवोत्तियूर**—यह मद्रासके निकट रेलवे-स्टेशन है। यहाँ संत पट्टिणत्टु पिळ्ळेयारने भगवान्‌की आराधना की है।

२५७. **पाडि**-वल्लिवाकम् रेलवे-स्टेशनसे यह दो मील नैर्ऋत्यकोणमें है। यहाँ बृहस्पतिने भगवान्‌की आराधना की है।

२५८. **तिरुमुल्लैवायल (उत्तर)**—यह आवडि रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील ईशानकोणमें है। यहाँ श्रीसुब्रह्मण्यने भगवान्‌की आराधना की है। यहाँके मन्दिरमें दो प्राचीन विशाल स्तम्भ हैं।

२५९. **तिरुवेर्काडु**—यह आवडि रेलवे-स्टेशनसे चार मील अग्निकोणमें है। मुर्क नायनार नामक भक्तने यहाँ आराधना की है।

२६०. **मइलापुर**—यह मद्रासके अन्तर्गत है। यहाँ देवीने मयूरी बनकर भगवान्‌की उपासना की है। वायल नायनार नामक भक्तकी यह उपासना-स्थली है।

२६१. **तिरुवान्मियूर**—यह मइलापुरसे चार मील अग्निकोणमें है। यहाँ महर्षि वाल्मीकिने भगवान्‌की आराधना की है।

२६२. **अलक्कोइल**—सिंगपेरुमाळ-कोइल रेलवे-स्टेशनसे यह दो मील वायव्यकोणमें है। यहाँ भगवान् विष्णुने कच्छपरूपसे शङ्करजीकी आराधना की है।

२६३. **तिरुविडैचुरम्**—यह चेंगलपट रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील पूर्वकी ओर है। यहाँ सनत्कुमारने भगवान्‌की आराधना की है।

२६४. **तिरुक्कलिकुन्रम् (पक्षितीर्थ)**—यह चेंगलपेट रेलवे-स्टेशनसे नौ मील अग्निकोणमें है। यहाँ वेदोंने मूर्तिमान् होकर भगवान्‌की आराधना की है।

२६५. **अचरपाक्कम्**—यह रेलवे-स्टेशन है। कण्व एवं गौतम ऋषियोंने यहाँ भगवान्‌की आराधना की है।

२६६. **तिरुवक्करै**—यह पाण्डिचेरी रेलवे-स्टेशनसे तेरह मील पश्चिमकी ओर है। यहाँके लिङ्ग-विग्रहमें मुखाकृतियोंके दर्शन होते हैं।

२६७. **ओलिन्दियापट्टु**—यह पाण्डिचेरीसे सात मील ईशानकोणमें है। यहाँ ऋषि वामदेवने भगवान्‌की आराधना की है।

२६८. **इरुम्बैमकलम्**—यह पाण्डिचेरी रेलवे-स्टेशनसे पाँच मील ईशान-कोणमें है। यहाँ भक्त मकलने भगवान्‌की आराधना की है।

२६९. **गोकर्णम्**—यह बंबई प्रदेशके अन्तर्गत है। स्वयं शङ्करने यह लिङ्ग-विग्रह रावणको दिया था और उसे स्वयं गणेशजीने यहाँ स्थापित किया था।

२७०. **श्रीशैलम्**—नंदियाल रेलवे-स्टेशनसे इकहत्तर मील ईशानकोणमें है। नन्दीश्वर तथा महर्षि भृगुने यहाँके मल्लिकार्जुन-लिङ्गकी उपासना की है। इसकी द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें गणना है।

२७१. **इन्द्रनीलपर्वतम्**—सम्भवतः यह हिमालयका एक शिखर है।

२७२. **गौरीकुण्डम्**—यह भी हिमालयपर है। यहाँ सूर्य और चन्द्रमाने भगवान्‌की आराधना की है।

२७३. **केदारम्**—यह भी हिमालयका प्रसिद्ध शिव-क्षेत्र है। यहाँ भृङ्गी नामके गणने भगवान्‌की आराधना की है।

२७४. **कैलास-पर्वत**—यह हिमालयका एक शिखर है। यह भगवान् शङ्करका ही स्वरूप माना गया है।

नियतो नियताहारः स्नानजाप्यपरायणः।
व्रतोपवासनिरतः स तीर्थफलमश्नुते॥
अक्रोधनश्च देवेशि सत्यशीलो दृढव्रतः।
आत्मोपमश्च भूतेषु स तीर्थफलमश्नुते॥

जो मनुष्य नियम-पालनमें रत, नियत-आहार होकर स्नान-जप-परायण होता है तथा व्रत-उपवास करता रहता है, वह तीर्थ-फल प्राप्त करता है। जो क्रोध नहीं करता, सत्यपरायण है, दृढ़व्रत है, सब प्राणियोंको अपने समान देखता है, वह तीर्थ-फल प्राप्त करता है।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग

(लेखक—पं० श्रीदयाशङ्करजी दुबे एम्०ए०, श्रीभगवतीप्रसादसिंहजी एम्०ए०, श्रीपन्नालालसिंहजी, पं० श्रीरामचन्द्रजी शर्मा)

शिवपुराणमें आया है कि भूतभावन भगवान् शङ्कर प्राणियोंके कल्याणार्थ तीर्थ-तीर्थमें लिङ्गरूपसे वास करते हैं। जिस-जिस पुण्य-स्थानमें भक्तजनोंने उनकी अर्चना की, उसी-उसी स्थानमें वे आविर्भूत हुए और ज्योतिर्लिङ्गके रूपमें सदाके लिये अवस्थित हो गये। यों तो शिवलिङ्ग असंख्य हैं, फिर भी इनमें द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग सर्वप्रधान हैं। शिवपुराणके अनुसार ये निम्नलिखित हैं—

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारं परमेश्वरम्॥
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे॥
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥
यं यं काममपेक्ष्यैव पठिष्यन्ति नरोत्तमाः।
तस्य तस्य फलप्राप्तिर्भविष्यति न संशयः॥
एतेषां दर्शनादेव पातकं नैव तिष्ठति।
कर्मक्षयो भवेत्तस्य यस्य तुष्टो महेश्वरः॥

(शि० पु० ज्ञा० सं० अ० ३८)

अर्थात् (१) सौराष्ट्र-प्रदेश (काठियावाड़) में श्रीसोमनाथ, (२) श्रीशैलपर श्रीमल्लिकार्जुन, (३) उज्जयिनी (उज्जैन) में श्रीमहाकाल, (४) (नर्मदाके बीच) श्रीओंकारेश्वर अथवा अमरेश्वर, (५) हिमाच्छादित केदारखण्डमें श्रीकेदारनाथ, (६) डाकिनी नामक स्थानमें श्रीभीमशङ्कर, (७) वाराणसी (काशी) में श्रीविश्वनाथ, (८) गौतमी (गोदावरी)-तटपर श्रीत्र्यम्बकेश्वर, (९) चिताभूमिमें श्रीवैद्यनाथ, (१०) दारुकावनमें श्रीनागेश्वर, (११) सेतुबन्धपर श्रीरामेश्वर और (१२) शिवालयमें श्रीघुश्मेश्वर—ये द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग हैं, जिनका बड़ा माहात्म्य है। जो कोई नित्य प्रातःकाल उठकर इन नामोंका पाठ करता है, उसके सात जन्मोंके पाप क्षय हो जाते हैं। जिस-जिस कामनाको लेकर उत्तम जन इसका पाठ करेंगे, उनकी वह कामना फलीभूत हो जायगी—इसमें काई संशय नहीं। इनके दर्शनमात्रसे पापोंका नाश हो जाता है। जिसपर भगवान् शङ्कर प्रसन्न हो जाते हैं, उसके (शुभ-अशुभ दोनों प्रकारके) कर्म क्षय हो जाते हैं।

यह शिवपुराणका वर्णन है। अकेले शिवपुराणमें ही नहीं, रामायण, महाभारत तथा अन्य अनेक प्राचीन धर्मग्रन्थोंमें भी ज्योतिर्लिङ्ग-सम्बन्धी वर्णन भरा पड़ा है। स्कन्दपुराणान्तर्गत काशीखण्ड, सेतुबन्धखण्ड, रेवाखण्ड, अवन्तीखण्ड आर केदारखण्डमें काशी, रामेश्वर, महाकाल एवं केदारनाथ तीर्थका विस्तृत वर्णन है। अस्तु, अब इस विषयका अधिक विस्तार न करके इन द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंका संक्षिप्त परिचय देनेकी चेष्टा की जाती है।

(१) श्रीसोमनाथ

श्रीसोमनाथ महाराज काठियावाड़-प्रदेशान्तर्गत श्रीप्रभासक्षेत्रमें विराजमान हैं, जहाँ लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने यदुवंशका संहार तथा जरा नामक व्याधके बाणसे अपना पाद-पद्म-वेधन कराकर अपनी नरलीला संवरण की थी। इस पुण्य प्रभासक्षेत्रसहित श्रीसोमनाथका पौराणिक परिचय संक्षेपमें यह है कि दक्षप्रजापतिने अपनी सत्ताईसों कन्याओंका विवाह चन्द्रदेवके साथ किया था; परन्तु चन्द्रमाका अनुराग उनमेंसे एकमात्र रोहिणीके प्रति था। इस कारण अन्य छब्बीस दक्षकन्याओंको बड़ा कष्ट रहता था। उनके शिकायत करनेपर दक्षराजने चन्द्रमाको बहुत समझाया-बुझाया, पर उनपर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। अन्तमें दक्षने उन्हें यह शाप दिया—'जा, तू क्षयी हो जा।' फलतः चन्द्रमा क्षयग्रस्त हो गये। सुधाकरका सुधावर्षण-कार्य रुक गया। चराचरमें त्राहि-त्राहिकी पुकार होने लगी। चन्द्रमाके प्रार्थनानुसार इन्द्र आदि देता तथा वसिष्ठ आदि ऋषिमुनि कोई उपाय न देख पितामह ब्रह्माकी सेवामें उपस्थित हुए। ब्रह्मदेवने यह आदेश दिया कि चन्द्रमा देवादिके साथ प्रभासतीर्थमें मृत्युञ्जयभगवान्की आराधना करें, उनके प्रसन्न होनेसे अवश्य ही रोगमुक्ति हो सकती है। पितामहकी आज्ञाको सिर-माथे रख, चन्द्रमाने देवमण्डलीसहित प्रभासमें पहुँच मृत्युञ्जयभगवान्की अर्चनाका अनुष्ठान आरम्भ कर दिया। मृत्युञ्जय-मन्त्रसे पूजा और जप होने लगा। छः मासतक निरन्तर घोर तप किया, दस करोड़ मन्त्र-

जप कर डाला; फलतः आशुतोष संतुष्ट हुए। प्रकट होकर वरदान दे मृत्युञ्जयभगवान्ने मृत-तुल्य चन्द्रमाको अमरत्व प्रदान किया—कहा कि 'सोच मत करो'। कृष्णपक्षमें प्रतिदिन तुम्हारी एक-एक कला क्षीण होगी; पर साथ ही शुक्लपक्षमें उसी क्रमसे तुम्हारी एक-एक कला बढ़ जाया करेगी और इस प्रकार प्रत्येक पूर्णिमाको तुम पूर्णचन्द्र हो जाया करोगे।' इस प्रकार कलाहीन कलाधर पुनः कलायुक्त हो गये और सारे संसारमें सुधाकरकी सुधाकिरणोंसे प्राणसंचार होने लगा। पीछे चन्द्रादिकी प्रार्थना स्वीकारकर भवानीसहित भगवान् शङ्कर, भक्तोंके उद्धारार्थ, ज्योतिर्लिङ्गके रूपमें सदाके लिये इस क्षेत्रमें वास करने लगे। महाभारत, श्रीमद्भागवत और स्कन्दपुराण आदि पुण्यग्रन्थोंमें इस प्रभासक्षेत्रकी बड़ी महिमा गायी गयी है। कहा है कि पावन प्रभासमें प्रवाहित पूतसलिला सरस्वतीके संगमके दर्शन एवं सागर-संगीत अर्थात् समुद्रकी हिल्लोलध्वनिके श्रवणमात्रसे पापपुञ्ज उसी प्रकार पलायन कर जाते हैं, जिस प्रकार वनराज सिंहको देखते ही मृग-समुदाय।

प्राचीन सोमनाथ-मन्दिर, जिसे ई० सं० १०२४ में महमूद गजनवीने भ्रष्ट किया था, आज समुद्रके तटपर भग्नावशेषके रूपमें विद्यमान है। कहते हैं जब शिवलिङ्ग नहीं टूटा, तब उसके बगलमें भीषण अग्नि जलायी गयी। मन्दिरमें नीलमके ५६ खंभे थे और उनमें अमूल्य हीरे-मोती एवं अन्यान्य रत्न जड़े थे। बहुत-से तोड़कर लूट लिये गये। महमूदके बाद राजा भीमदेवने पुनः प्रतिष्ठा कराकर मन्दिरको पवित्र किया और सिद्धराज जयसिंहने (ई० सं० १०९३ से ११४२) भी मन्दिरकी पुनः प्रतिष्ठामें बड़ी सहायता दी। ई० सं० ११६८ में विजयेश्वर कुमारपालने प्रसिद्ध जैनाचार्य हेमचन्द्र सूरिके साथ सोमनाथकी यात्रा करके मन्दिरका सुधार किया। सौराष्ट्रपति राजा खंगारने भी मन्दिरकी श्रीवृद्धिमें सहायता की; परंतु मुसल्मानोंके अत्याचार इसके बाद भी बंद नहीं हुए। ई०सं० १२९७ में अलाउद्दीन खिलजीने पुनः सोमनाथका ध्वंस किया और उसके सेनापति नसरतखाँने उसे लूटा। ई०सं० १३९५ में गुजरातका सुल्तान मुजफ्फरशाह मन्दिर-ध्वंसके कार्यमें लगा और ई०सं० १४१३ में सुल्तान अहमदशाहने अपने पितामहका अनुकरण कर पुनः सोमनाथका ध्वंस किया। प्राचीन मन्दिरके ध्वंसावशेषपर ही भारतके स्वाधीन होनेपर स्वर्गीय सरदार पटेलकी प्रेरणा एवं उद्योगसे नवीन सोमनाथ-मन्दिरके निर्माणका पुनीत कार्य प्रारम्भ हुआ और अबतक चालू है। मन्दिरके गर्भगृह आदि बन चुके हैं और उसमें नवीन लिङ्ग-विग्रहकी प्रतिष्ठा हो गयी है।

यहाँ जानेके तीन मार्ग हैं—एक रेलका, दूसरा समुद्री और तीसरा हवाई।

रेलमार्ग—पटण (प्रभास) आनेके लिये पश्चिमी रेलवेका टर्मिनस वेरावळ है। सोमनाथ-मेल जो वेरावळको दोपहर १-१५ बजे आती है, उससे बंबई, अहमदाबाद, धोलका, धोला, जेतलसर, जूनागढ़ होकर आ सकते हैं तथा वीरमगाम, राजकोट जेतलसर, जूनागढ़ होकर भी यहाँ आ सकते हैं। देहलीकी ओरसे मेहसाणा, वीरमगाम, राजकोट, जेतलसर और जूनागढ़ होकर वेरावळ आते हैं।

समुद्री मार्ग—बंबईसे एक साप्ताहिक आगबोट गुरुवारके दिन वेरावळ पहुँचती है और रविवारके दिन बंबई लौटती है। बरसातमें यह सर्विस नहीं चलती।

हवाई मार्ग—बंबईसे केशोदको सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवारके दिन प्रति सप्ताह हवाई सर्विस है।

यातायातके साधन

वेरावळ-स्टेशनसे गाँव और प्रभासपट्टणके लिये घोड़ेके ताँगे मिलते हैं। सरकारके यातायात-विभागद्वारा एक बसका प्रबन्ध हुआ है, जो वेरावळसे पाटणतक सुबह ८ बजेसे सायं ६ बजेतक चलती है। वेरावळमें पाटणद्वारके समीप बस-स्टैंड है, जहाँसे पाटण जानेवाली बस छूटती है। वेरावळसे प्रभासपाटण लगभग ३ मीलकी दूरीपर है।

वेरावळ और पाटणमें यात्रियोंके ठहरनेके लिये वेरावळ-स्टेशनके पास (१) रामधर्मशाला (पाटण) (२) श्रीभाटिया-धर्मशाला (प्रभास) तथा (३) श्रीकंसारा-भुवन (गोवर्धन धर्मशाला) है।

जहाजपर जानेवालोंको रेलकी अपेक्षा किराया बहुत कम देना पड़ता है, किंतु उतरने-चढ़नेमें कष्ट अधिक होता है और जिन लोगोंको समुद्र-यात्राका अभ्यास नहीं, उन्हें वमन आदिकी तकलीफ भी हो सकती है।

इस समय सोमनाथके नामसे संवत् १८३१ में महारानी अहल्याबाईका बनवाया हुआ एक और मन्दिर है, जो समुद्रतटसे थोड़ी ही दूरपर बना है। सोमनाथका

ज्योतिर्लिङ्ग गर्भगृहके नीचे एक गुफामें २२ सीढ़ियाँ नीचे उतरनेपर दृष्टिगोचर होता है। वहाँ बराबर दीपक जलता रहता है।

(२) श्रीमल्लिकार्जुन

मद्रास-देशके कृष्णा जिलेमें तथा कृष्णा नदीके तटपर श्रीशैलपर्वत है, जिसे दक्षिणका कैलास कहते हैं। महाभारत, शिवपुराण तथा पद्मपुराण आदि धर्मग्रन्थोंमें इसका वर्णन मिलता है। महाभारतमें लिखा है कि श्रीशैलपर जाकर श्रीशिवका पूजन करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है। यही नहीं, ग्रन्थोंमें तो इसकी महिमा यहाँतक बतलायी गयी है कि श्रीशैलशिखरके दर्शनमात्रसे सब कष्ट दूरसे ही भाग जाते हैं और अनन्त सुखकी प्राप्ति होकर आवागमनके चक्रसे मुक्ति मिल जाती है।

श्रीशैलशिखरं दृष्ट्वा………………………।
……………………………पुनर्जन्म न विद्यते॥
दुखं हि दूरतो याति शुभमात्यन्तिकं लभेत्।
जननीगर्भसम्भूतं कष्टं नाप्नोति वै पुनः॥

इस स्थानके सम्बन्धमें एक पौराणिक इतिहास यह है कि शङ्कर-सुवन श्रीगणेश और श्रीस्वामिकार्तिक विवाहके लिये लड़ने लगे। एक चाहते थे कि मेरा पहले विवाह हो और दूसरे चाहते थे कि मेरा। अन्तमें भवानी-शङ्करने यह निर्णय दिया कि जो कोई पहले पृथिवी-परिक्रमा कर डालेगा, उसीका विवाह पहले होगा। सुनते ही स्वामिकार्तिक तो दौड़ पडे; श्रीगणेशजी ठहरे स्थूलकाय, वे कैसे दौड़ते। पर कोई बात नहीं; शरीरसे स्थूल थे तो क्या, बुद्धिसे तो स्थूल नहीं थे। झट एक उपाय ढूँढ़ निकाला। आपने माता पार्वती और पिता महेश्वरको आसनपर बैठा उन्हींकी सात बार परिक्रमा कर डाली और पूजन किया तथा—

पित्रोश्च पूजनं कृत्वा प्रक्रान्तिं च करोति यः।
तस्य वै पृथिवीजन्यं फलं भवति निश्चितम्॥

(रु० सं० खं ४ अ० १९)

—इस नियमके अनुसार पृथिवी-प्रदक्षिणाके फलको पानेके अधिकारी बन गये। इधर जबतक स्वामिकार्तिक परिक्रमा करके वापस आये, तबतक बुद्धिविनायक श्रीगणेशजीका विश्वरूप प्रजापतिकी सिद्धि और बुद्धि नामवाली दो कन्याओंके साथ विवाह भी हो चुका था। विवाह ही नहीं, बल्कि सिद्धिके गर्भसे 'क्षेम' और बुद्धिसे 'लाभ'—ये दो पुत्ररत्न भी उत्पन्न होकर उनकी गोदमें खेलने लगे थे। स्वाभाविक ही मङ्गल-कामनासे इधर-की-उधर लगानेमें कुशल देवर्षि नारद महाराजसे यह संवाद पाकर स्वामिकार्तिक जल उठे और माताके पैर छूनेका दस्तूर करके रूठकर क्रौञ्च-पर्वतपर चले गये। माता-पिताने नारदको भेजकर उन्हें वापस बुलाया, पर वे न आये। अन्तमें माताका हृदय व्याकुल हो उठा और जगदम्बा पार्वती श्रीशिवजीको लेकर क्रौञ्च-पर्वतपर पहुँचीं; किन्तु ये उनके आनेकी खबर पाते ही वहाँसे भी भाग खड़े हुए और तीन योजन दूर जाकर डेरा डाला। कहते हैं, क्रौञ्चपर्वतपर पहुँचकर श्रीशङ्करजी ज्योतिर्लिङ्गके रूपमें प्रकट हुए और तबसे श्रीमल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्गके नामसे प्रख्यात हैं।

एक दूसरी कथा यह भी कही जाती है कि किसी समय इस पर्वतके निकट चन्द्रगुप्त नामक राजाकी राजधानी थी। उसकी कन्या किसी विशेष विपत्तिसे बचनेके लिये अपने पिताके महलसे भाग निकली और उसने पर्वतराजकी शरण ली। वह वहीं ग्वालोंके साथ कन्द-मूल और दूधसे अपना जीवन-निर्वाह करने लगी। उसके पास एक सुन्दर श्यामा गौ थी। कहते हैं, कोई चुपचाप उस गायका दूध दुह लेता था। एक दिन संयोगसे चोरको दूध दुहते उसने देख लिया और क्रोधमें भरकर उसे मारने दौड़ी; पर गौके निकट पहुँचनेपर उसे शिवलिङ्गके अतिरिक्त और कोई न मिला। पीछे राजकुमारीने उक्त शिवलिङ्गपर एक सुन्दर मन्दिर बनवा दिया। यही शिवलिङ्ग आजकल मल्लिकार्जुनके नामसे प्रसिद्ध है। मन्दिरकी बनावट तथा सुन्दरतासे पुरातत्त्ववेत्ता अनुमान करते हैं कि इसको बने हुए कम-से-कम डेढ़-दो हजार वर्ष हुए होंगे। कहते हैं, इस पवित्र स्थानपर बड़े-बड़े राजा-महाराजातक सदासे आते रहे हैं। अबसे चार सौ वर्ष पूर्व श्रीविजयानगरम् राज्यके अधीश्वर महाराज कृष्णराय यहाँ पधारे थे और स्वर्ण-शिखरसहित एक सुदर मण्डप बनवा गये थे। उनके डेढ़ सौ वर्ष बाद, कहते हैं हिंदूराज्यके उद्धारक श्रीशिवाजी महाराज भी पधारे थे और एक धर्मशाला बनवा गये थे। इस स्थानपर अनेक शिवलिङ्ग मिला करते हैं। शिवरात्रिके अवसरपर यहाँ बड़ा भारी मेला लगता है। एक गाँव-सा बस जाता है। मन्दिरके निकट जगदम्बाका भी एक अलग स्थान है। श्रीपार्वतीको यहाँ 'भ्रमराम्बा' कहते हैं।

इस स्थानको जानेके लिये यदि कलकत्तेसे जाना हो तो दक्षिण-पूर्व-रेलवेसे प्रस्थान करके वाल्टेयर पहुँचे और वहाँसे मद्रास और दक्षिण-रेलवेके द्वारा बेजवाड़ा जाय। इस प्रकार वाल्टेयरसे १३८ मीलकी यात्रा करनेके बाद वहाँसे गुंटकल जानेवाली छोटी लाइन पकड़कर फिर १८८ मील चलकर नंदवाल स्टेशनपर उतर पड़े और वहाँसे मोटरमें बैठकर २८ मील दूर आत्माकूर ग्राम जाय। वहाँसे बैलगाड़ीपर बैठकर नागाहुटी स्थानपर जा पहुँचे, जो आत्माकूरसे बारह मील है और वहाँपर महादेव और वीरभद्र स्वामीके तथा कई पवित्र झरनोंके दर्शन करे। यहाँसे मल्लिकार्जुनका स्थान इकतीस मील दूर है। मार्ग दुर्गम पहाड़ी है, किन्तु साथ ही मनोरम भी है और लूट-पाटका डर रहता है। बीच-बीचमें विश्राम-स्थान भी बने हुए हैं। रास्तेमें पानी कम मिलता है, इसलिये यात्रियोंको चाहिये कि आत्माकूरसे अपने साथ कुछ मीठा पानी ले लें। मल्लिकार्जुनसे नीचे पाँच मीलकी उतराई समाप्त करनेपर कृष्णा नदीके स्नानका भी आनन्द मिलता है। कृष्णा यहाँ पाताल-गङ्गाके नामसे प्रसिद्ध है और उसमें स्नान करनेका शास्त्रोंमें बड़ा माहात्म्य है। मेलेके दिनोंमें रास्तेमें पुलिस इत्यादिका प्रबन्ध भी रहता है। हैदराबाद राज्यके निवासी निजाम-स्टेट-रेलवेके कुलनूल स्टेशनसे भी आत्माकूर जा सकते हैं।

(३) श्रीमहाकालेश्वर*

श्रीमहाकालेश्वर-ज्योतिर्लिङ्ग मालव-प्रदेशान्तर्गत, शिप्रा नदीके तटपर उज्जयिनी (उज्जैन) नगरीमें है। यह उज्जयिनी, जिसका एक नाम अवन्तिकापुरी भी है, भारतकी सुप्रसिद्ध सप्तपुरियोंके अन्तर्गत है। स्कन्दपुराणके आवन्त्य-खण्डमें इस नगरीके सम्बन्धमें विशद वर्णन है। महाभारत एवं शिवपुराणमें भी इसकी बड़ी महिमा गायी गयी है। लिखा है शिप्रा नदीमें स्नान करके ब्राह्मण-भोजन करानेसे समस्त पापोंका नाश हो जाता है, दरिद्रकी द्ररिद्रता जाती रहती है, आदि। यहाँ महाराज विक्रमादित्यका चौबीस खंभोंका दरबार-मण्डप, मङ्गल-ग्रहका जन्मस्थान मङ्गलेश्वर, भर्तृहरिकी गुफा और सांदीपनि ऋषिका आश्रम है, जहाँ कहते हैं, भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीबलरामजीने विद्याभ्यास किया था। यहाँ परमप्रतापी राजा विक्रमादित्यकी राजधानी थी, जिसके दरबारमें महाकवि कालिदासप्रभृति नवरत्न थे। यह स्थान ग्वालियर राज्यमें है और यहाँ प्रति बारह वर्ष पीछे बृहस्पतिके सिंहराशिमें आनेपर कुम्भका मेला लगता है।

महाकालेश्वर-लिङ्गकी स्थापनाके सम्बन्धमें इतिहास यह है कि एक समय उज्जैन नगरीमें चन्द्रसेन नामक राजा राज्य करता था। वह भगवान् शङ्करका बड़ा भक्त था। एक दिन जब वह शिवार्चनमें तन्मय हो रहा था, श्रीकर नामक एक पाँच वर्षका गोप-बालक अपनी माताके साथ वहाँ आ निकला। शिव-पूजनको देखकर उसे बड़ा कौतूहल हुआ और इसी प्रकार ही स्वयं भी करनेके लिये उत्कण्ठित हो उठा। घर लौटते समय रास्तेमें एक पत्थरका टुकड़ा उसने उठा लिया और घर आकर उसीको शिवरूपमें स्थापितकर पुष्प-चन्दनादिसे परम श्रद्धापूर्वक पूजा करने लगा और ध्यानमग्न हो गया। बहुत देर हो गयी। माता भोजनके लिये बुलाने आयी; पर वह टेरते-टेरते थक गयी, बालककी समाधि नहीं टूटी। अन्तमें झल्लाकर उसने पत्थरका टुकड़ा वहाँसे उठाकर दूर फेंक दिया और लड़केको जबरदस्ती घरमें लाने लगी। पर उसकी जबरदस्ती चली नहीं। सरलचित्त भक्त-बालकने विलाप करते हुए शम्भुको पुकारना शुरू किया। हताश होकर माता घर चली गयी, पर बच्चेका विलाप फिर भी जारी रहा। क्रन्दन करते-करते उसे मूर्च्छा हो गयी। अन्ततोगत्वा भोलानाथ प्रसन्न हुए और ज्यों ही वह होशमें आकर नेत्रपट खोलता है तो देखता क्या है कि सामने एक अति विशाल स्वर्णकपाटयुक्त रत्नजटित मन्दिर खड़ा है और उसके अंदर एक अति प्रकाशयुक्त ज्योतिर्लिङ्ग देदीप्यमान हो रहा है। बच्चा आश्चर्य-सागरमें डूब गया और फिर भगवान् शिवकी स्तुति करने लगा। पीछे माताने यह दृश्य देखा तो आनन्दोल्लाससे अपने लालको उठाकर गलेसे लगा लिया। उधर राजा चन्द्रसेनको जब इस अद्भुत घटनाका संवाद मिला, तब वह भी वहाँ दौड़ा आया और बात सच पाकर बच्चेका प्यार एवं सराहना करने लगा। इतनेमें अञ्जनिसुवन श्रीहनुमान्जी वहाँ प्रकट हो गये और उपस्थित जनोंसे कहने लगे—

'मनुष्यो! संसारमें शीघ्र कल्याण करनेवाला भगवान् शिवको छोडकर और कोई नहीं है। तुमलोग इस गोपबालकको प्रत्यक्ष देख रहे हो—इसने कौन-सी तपस्या की है। जो फल ऋषि-मुनि सहस्रों वर्षकी

* महाकालेश्वरका एक अति प्राचीन मन्दिर उदयपुर (मेवाड़) में भी है।

कठिन तपस्यासे भी नहीं पाते, वह इस बालकने अनायास ही प्राप्त कर लिया। यह आशुतोषभगवान्‌की दयाका ही फल है। इसलिये तुमलोग भी इनके दर्शनसे कृतार्थ होओ और यह स्मरण रखो कि इस बालकको आठवीं पीढ़ीमें महायशस्वी नन्द गोपका जन्म होगा, जिनके यहाँ भगवान् श्रीकृष्ण पुत्ररूपसे अनेक प्रकारकी अद्भुत लीलाएँ करेंगे।'

इतना कहकर महावीर हनुमान्‌जी अन्तर्धान हो गये और इन महाकाल-भगवान्‌की अर्चना करते-करते अन्तमें श्रीकर गोप और राजा चन्द्रसेन सपरिवार शिवधामको चले गये।

एक दूसरा इतिहास यह भी है कि किसी समय इस अवन्तिकापुरीमें एक अग्निहोत्री वेदपाठी ब्राह्मण रहता था, जो अपने देवप्रिय, प्रियमेधा, सुकृत और सुव्रत नामके चार पुत्रोंके साथ शिवभक्ति तथा धर्मनिष्ठाकी पताका फहरा रहा था। उसकी कीर्ति सुनकर ब्रह्माजीसे करप्राप्त एक महामदान्ध दूषण नामक असुर, जो रत्नमाल पर्वतपर निवास करता था, अपने दल-बलसहित चढ़ आया। लोगोंमें त्राहि-त्राहि मच गयी। अन्ततः उस ब्राह्मणकी शिवभक्तिके प्रतापसे भगवान् भूतभावन प्रकट हो गये और एक हुंकारसे ही असुरको इस दुनियासे विदा कर दिया; पीछे संसारके कल्याणार्थ सदा वहीं वास करनेका उस ब्राह्मणको वरदान देकर शिवजी अन्तर्धान हो गये। तबसे वे लिङ्गरूपमें वहाँ सदा विराजमान रहते हैं। ज्योतिर्लिङ्गके समीप ही माता पार्वती तथा गणेशजीकी भी मूर्तियाँ हैं। भगवान् वहाँ भयंकर 'हुंकार' सहित प्रकट हुए, इसलिये उनका नाम 'महाकाल' पड़ा। यह मन्दिर पँचमंजिला और बड़ा विशाल है तथा शिप्रा नदीसे थोड़ी ही दूर स्थित है। मन्दिरके ऊर्ध्वभागमें श्रीओंकारेश्वरकी प्रतिमा है और सबसे नीचेके मंजिलमें, जो पृथिवीकी सतहसे भी नीचा है, श्रीमहाकालेश्वर विराजते हैं। यात्रीलोग रामघाटपर तथा कोटितीर्थ नामक कुण्डमें स्नान एवं श्राद्ध करके पासमें ही अगस्त्येश्वर, कोटीश्वर, केदारेश्वर, हरिसिद्धि देवी (महाराज विक्रमादित्यकी कुलदेवी) आदिके दर्शन करते हुए महाकालेश्वर पहुँचते हैं। प्रातःकाल प्रतिदिन महाकालेश्वरको चिता-भस्म लगाया जाता है। उस समयका दर्शन प्रत्येक यात्रीको अवश्य करना चाहिये। यहाँ और भी अनेक मन्दिर हैं, जिनमेंसे अधिकांश महाराजा विक्रमादित्यके बनवाये हुए हैं।

मध्यरेलवेकी भोपाल-उज्जैन और आगरा-उज्जैन लाइनें हैं तथा पश्चिमी रेलवेकी नागदा-उज्जैन और फतेहाबाद उज्जैन लाइनें हैं। इनमें किसी लाइनसे उज्जैन पहुँच सकते हैं।

(४) ओङ्कारेश्वर, अमलेश्वर अथवा ओङ्कारेश्वर* मान्धाता

यह स्थान मालवा-प्रान्तमें नर्मदा नदीके तटपर अवस्थित है। उज्जैनसे खंडवा जानेवाली पश्चिम-रेलवेकी छोटी लाइनपर ओंकारेश्वर रोड नामका स्टेशन है, वहाँसे यह स्थान ७ मील दूर है। उज्जैनसे ओंकारेश्वर रोड ८९ मील और खंडवासे ३७ मील है। वहाँ नर्मदा नदीकी दो धाराएँ होकर बीचमें एक टापू-सा बन गया है, जिसे मान्धाता पर्वत या शिवपुरी कहते हैं। एक धारा पर्वतके उत्तरकी ओर बहती है और दूसरी दक्षिणकी ओर। दक्षिणकी ओर बहनेवाली प्रधान धारा समझी जाती है, इसे नावद्वारा पार करते हैं। किनारेपर पक्के घाट बने हुए हैं। नावपरसे दोनों ओरका दृश्य बहुत सुहावना मालूम होता है। इसी मान्धाता पर्वतपर ओङ्कारेश्वर अवस्थित हैं। प्रसिद्ध सूर्यवंशीय राजा मान्धाताने, जिनके पुत्र अम्बरीष और मुचुकुन्द दोनों प्रसिद्ध भगवद्भक्त हो गये हैं तथा जो स्वयं बड़े तपस्वी एवं यज्ञोंके कर्ता थे, इस स्थानपर घोर तपस्या करके शङ्करजीको प्रसन्न किया था। इसीसे इसका नाम मान्धाता पड़ गया। इस पर्वतके अधिकांश मन्दिर पेशवाओंके बनवाये हुए हैं। ओङ्कारजीका मन्दिर भी इन्हींका बनवाया हुआ बतलाते हैं। मन्दिरमें दो कोठरियोंमेंसे होकर जाना पड़ता है। भीतर अँधेरा रहनेके कारण दीपक बराबर जलता रहता है।

---

* द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें ओङ्कारेश्वर तो है ही, उसके साथ-साथ अमलेश्वरका नाम भी लिया जाता है। नाम ही नहीं, दोनोंका अस्तित्व भी पृथक्-पृथक् है; अमलेश्वरका मन्दिर नर्मदाजीके दक्षिण किनारेकी बस्तीमें है। पर दोनोंकी गणना एकहीमें की गयी है। इसका इतिहास यों है कि एक बार विन्ध्य पर्वतने पार्थिवार्चनसहित ओङ्कारनाथकी छः मासतक विकट आराधना की, जिससे प्रसन्न होकर शिवजी महाराज प्रकट हुए और उसे मनोवाञ्छित वर प्रदान किया। उसी समय वहाँ देवता और ऋषिगण भी पधारे, जिनकी प्रार्थनापर आपने ॐकार नामक लिङ्गके दो भाग किये। इनमेंसे एकमें आप प्रणवरूपसे विराजे, जिससे उसका नाम ओङ्कारेश्वर पड़ा और पार्थिवलिङ्गसे जो प्रकट हुए, वे परमेश्वर (अमरेश्वर या अमलेश्वर) नामसे प्रख्यात हुए।
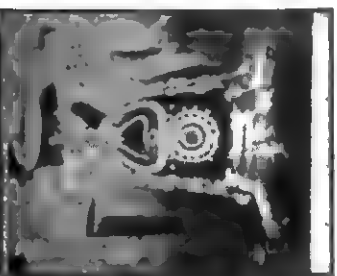
द्वादश ज्योतिर्लिंग—१

श्रीसोमनाथ
(प्रभासपाटण)

श्रीसोमनाथ
(अहल्या-मन्दिर)

श्रीमल्लिकार्जुन-मन्दिर, श्रीशैलम्
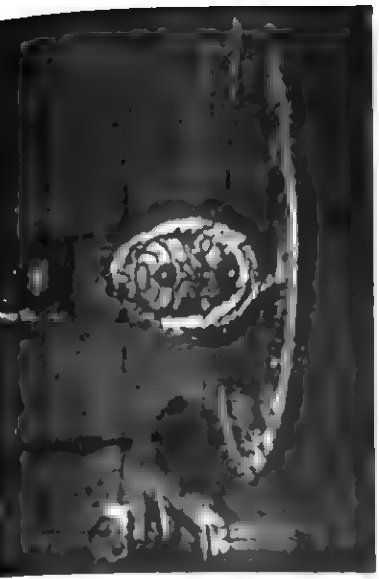
श्रीमहाकाल-ज्योतिर्लिङ्ग, उज्जैन
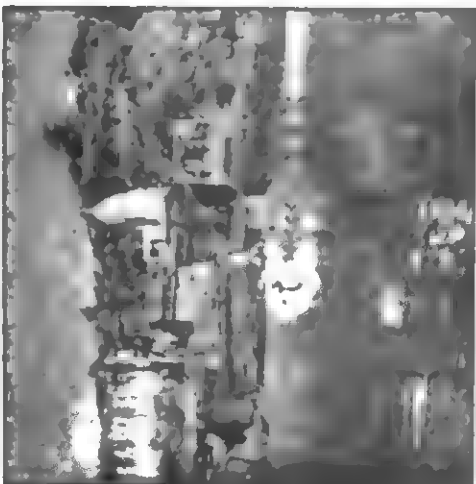
नर्मदा-तटपर श्रीओंकारेश्वर-मन्दिर

श्रीकेदारनाथ-मन्दिर

श्रीभीमशङ्कर-मन्दिर

9636 Tirthank_Section_21_1_Front
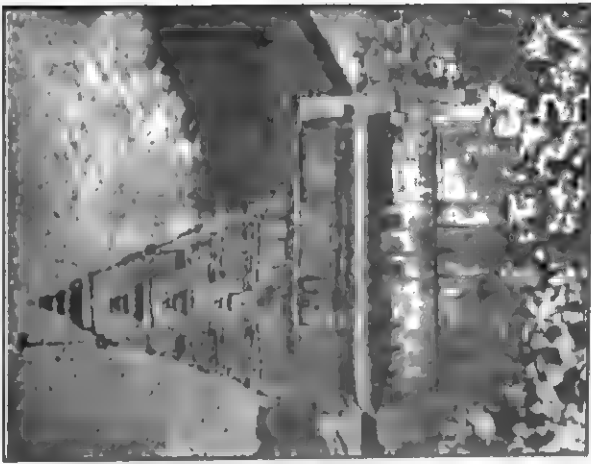
द्वादश ज्योतिर्लिंग—२

श्रीविश्वनाथ-ज्योतिर्लिङ्ग, वाराणसी

श्रीवैद्यनाथ-धाम

श्रीत्र्यम्बकेश्वर, नासिक

श्रीनागनाथ-मन्दिर

श्रीरामेश्वर-मन्दिर

श्रीघृष्णेश्वर-मन्दिर, वेरुल

636 Tirthank_Section_21_1_Back
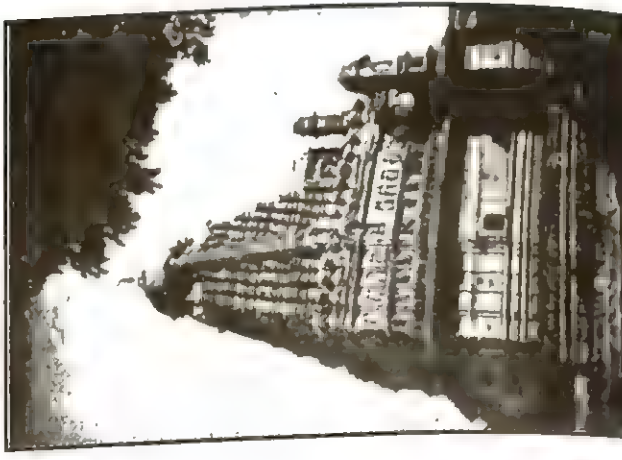
ओङ्कारेश्वरलिङ्ग गढ़ा हुआ नहीं है—प्राकृतिक रूपमें है। इसके चारों ओर हमेशा जल भरा रहता है। इस लिङ्गकी एक विशेषता यह भी है कि वह मन्दिरके गुम्बजके नीचे नहीं है और शिखरपर महाकालेश्वरकी मूर्ति है। कुछ लोग इस पर्वतको ओङ्काररूप मानते हैं और उसकी परिक्रमा करते हैं। प्राचीन मन्दिरोंमें सिद्धेश्वर महादेवका मन्दिर भी दर्शनीय है। परिक्रमामें और भी कई मन्दिर हैं, जिनके कारण इस पर्वतका दृश्य साक्षात् ओङ्कारस्वरूप ही दीखता है। ओङ्कारेश्वरका मन्दिर उस ओङ्कारमें चन्द्रस्थानीय मालूम होता है। मन्दिरमें शङ्करजीके समीप पार्वतीजीकी भी मूर्ति है। यहाँ लोग महादेवजीको चनेकी दाल चढ़ाते हैं। यात्रियोंको रात्रिकी शयन-आरतीके दर्शन अवश्य करने चाहिये। पैदल यात्रा करनेसे बीचमें एक खड़ी पहाड़ी मिलती है। कहते हैं पहले कुछ लोग सद्योमुक्तिकी अभिलाषासे इस पहाड़ीपरसे नदीमें कूदकर प्राण दे देते थे। सन् १८२४ ई०से अंग्रेज-सरकारने सती-प्रथाकी भाँति इस प्राणनाशकी प्रथाको भी, जिसे 'भृगुपतन' कहते थे, बंद करा दिया। पैदल यात्राका मार्ग पत्थर, कंकड़ और बालूमेंसे होकर गया है, जिससे यात्रियोंको कुछ कष्ट अवश्य होता है। कार्तिकी पूर्णिमाको इस स्थानपर बड़ा भारी मेला लगता है। शिवपुराणमें श्रीओङ्कारेश्वर और श्रीअमलेश्वरके दर्शन तथा नर्मदास्नानका बड़ा माहात्म्य वर्णित है। स्नान ही नहीं, नर्मदाके दर्शनमात्रसे पवित्रता मानी गयी है।

ओङ्कारेश्वर-रोडसे ओङ्कारेश्वर जानेके लिये मार्ग सघन वृक्षावलीसे घिरा हुआ होनेसे बडा ठंडा रहता है। दोनों ओर सागवानके बड़े-बड़े पेड़ हैं, जो ठेठ नर्मदाके तीरतक चले गये हैं। किनारेपर दो छोटी-छोटी पहाड़ियाँ अगल-बगलमें स्थित हैं। इन्हें 'विष्णुपुरी' और 'ब्रह्मपुरी' कहते हैं। इन दोनोंके बीचमें कपिलधारा नामक नदी बहती है, जो नर्मदामें जा मिलती है। 'ब्रह्मपुरी' और 'विष्णुपुरी' में पक्के घाट बने हुए हैं और कई मन्दिर भी हैं। बहुत-से लोग ओङ्कारेश्वरकी परिक्रमा नावपर ही करते हैं।

जान पड़ता है, किसी छिद्रद्वारा ओङ्कारजीकी जलहरीका सम्बन्ध नीचे नर्मदाजीसे है; क्योंकि भेंट-पूजाके समय पुजारीलोग अपना हाथ जलहरीमें लगाये रहते हैं और लोग जो कुछ चढ़ाते हैं, उसे तुरंत ले लेते हैं; अन्यथा वह कदाचित् सीधा नर्मदाजीमें जा पहुँचे। सोमवारके दिन ओङ्कारजीकी पञ्चमुखी स्वर्ण-प्रतिमा जलविहारके लिये नावपर घुमायी जाती है। यह स्थान स्वास्थ्यके लिये भी बहुत हितकर बताया जाता है।

(५) केदारनाथ

केदारेश्वरकी बड़ी महिमा है। उत्तराखण्डमें बदरीनाथ और केदारनाथ—ये दो प्रधान तीर्थ हैं, दोनोंके दर्शनोंका बड़ा महात्म्य है। केदारनाथके सम्बन्धमें लिखा है कि जो व्यक्ति केदारेश्वरके दर्शन किये बिना बदरीनाथकी यात्रा करता है, उसकी यात्रा निष्फल जाती है—

अकृत्वा दर्शनं वश्य! केदारस्याघनाशिनः।
यो गच्छेद् बदरीं तस्य यात्रा निष्फलतां व्रजेत्॥

(केदारखण्ड)

और केदारेश्वरसहित नर-नारायण-मूर्तिके दर्शनका फल समस्त पापोंके नाशपूर्वक जीवन्मुक्तिकी प्राप्ति बतलाया गया है—

तस्यैव रूपं दृष्ट्वा च सर्वपापैः प्रमुच्यते।
जीवन्मुक्तो भवेत् सोऽपि यो गतो बदरीवने॥
दृष्ट्वा रूपं नरस्यैव तथा नारायणस्य च।
केदारेश्वरनाम्नश्च मुक्तिभागी न संशयः॥

इस ज्योतिर्लिङ्गकी स्थापनाका इतिहास संक्षेपमें यह है कि हिमालयके केदार-शृङ्गपर विष्णुके अवतार महातपस्वी नर और नारायण ऋषि तपस्या करते थे। उनकी आराधनासे प्रसन्न होकर भगवान् शङ्कर प्रकट हुए और उनके प्रार्थनानुसार ज्योतिर्लिङ्गके रूपमें वहाँ सदा वास करनेका वर प्रदान किया।

केदारनाथ पर्वतराज हिमालयके केदारनामक शृङ्गपर अवस्थित हैं। शिखरके पूर्वकी ओर अलकनन्दाके सुरम्य तटपर बदरीनारायण अवस्थित हैं और पश्चिममें मन्दाकिनीके किनारे श्रीकेदारनाथ विराजमान हैं। अलकनन्दा और मन्दाकिनी—ये दोनों नदियाँ रुद्रप्रयागमें मिल जाती हैं और देवप्रयागमें इनकी संयुक्त धारा गङ्गोत्तरीसे निकलकर आयी हुई भागीरथी गङ्गाका आलिङ्गन करती है। इस प्रकार जब हम गङ्गास्नान करते हैं, तब हमारा सीधा सम्बन्ध श्रीबदरी और केदारके चरणोंसे हो जाता है। यह स्थान हरिद्वारसे लगभग १५० मील और ऋषिकेशसे १३२ मील दूर है। हरिद्वारसे ऋषिकेशतक रेल जाती है और मोटर-लारियाँ भी चलती रहती हैं। ऋषिकेशसे रुद्रप्रयागतक मोटर-बस जाती है, वहाँसे पैदल जाना पड़ता है। रुद्रप्रयागसे केदारजीका मार्ग दुर्गम

है। पैदल यात्राके अतिरिक्त कंडी या झप्पानसे, जिसे पहाड़ी कुली ढोते हैं, जा सकते हैं। बदरीनाथके यात्री प्रायः केदारनाथ होकर जाते हैं और जिस रास्तेसे जाते हैं, उसी रास्तेसे वापस न लौटकर रामनगरकी ओरसे लौटते हैं। यात्रामार्गमें यात्रियोंके सुविधार्थ बीच-बीचमें चट्टियाँ बनी हुई हैं। यहाँ गरमीमें भी सर्दी बहुत पड़ती है। कहीं-कहीं तो नदीका जलतक जम जाता है। श्रीकेदारेश्वर तीन दिशामें बर्फसे ढके रहते हैं और शीतकालमें तो वहाँ रहना असम्भव-सा ही है। कार्तिकी पूर्णिमाके होते-होते पंडेलोग केदारजीकी पञ्चमुखी मूर्ति लेकर नीचे 'ऊखी मठ' में, जहाँ रावलजी[१] रहते हैं, चले आते हैं और फिर छः मासके बाद मेष-संक्रान्ति लगनेपर बर्फको काटकर रास्ता बनाकर पुनः जाकर मन्दिरके पट खोलते हैं।

मन्दिर मन्दाकिनीके घाटपर पहाड़ी ढंगका बना हुआ है। भीतर घोर अन्धकार रहता है और दीपकके सहारे ही शङ्करजीके दर्शन होते हैं। दीपकमें यात्रीलोग घी डालते रहते हैं। शिवलिङ्ग अनगढ़ टीलेके समान है। सम्मुखकी ओर यात्री जल-पुष्पादि चढ़ाते हैं और दूसरी ओर भगवान्‌के शरीरमें घी लगाते हैं तथा उनसे बाँह भरकर मिलते हैं; मूर्ति चार हाथ लंबी और डेढ़ हाथ मोटी है। मन्दिरके जगमोहनमें द्रौपदीसहित पञ्च पाण्डवोंकी विशाल मूर्तियाँ हैं। मन्दिरके पीछे कई कुण्ड हैं, जिनमें आचमन तथा तर्पण किया जाता है।

केदारनाथके निकट 'भैरवझाँप' पर्वत है। पहले यहाँ कोई-कोई लोग बर्फमें गलकर अथवा ऊपरसे कूदकर शरीरपात करते थे; पर १८२९ से सती एवं भृगुपतनकी प्रथाओंकी भाँति सरकारने इस प्रथाको भी बंद करा दिया।

(६) श्रीभीमशङ्कर

भीमशङ्कर-ज्योतिर्लिङ्ग बंबईसे पूर्वकी ओर लगभग ७० मीलके अन्तरपर और पूनासे उत्तरकी ओर करीब ४३ मीलकी दूरीपर भीमा नदीके तटपर अवस्थित है।

भीमशङ्करका स्थान वनके मार्गसे पर्वतपर है। वहाँतक पहुँचनेका कोई भी सीधा सुविधापूर्ण रास्ता नहीं है। केवल शिवरात्रिपर पूनासे भीमशङ्करके पासतक बस जाती है। दूसरे समय जाना हो तो नासिकसे बसद्वारा ८८ मील जा सकते हैं। आगे ३६ मीलका मार्ग बैलगाड़ी, पैदल या टैक्सीसे तय करना पड़ता है। दूसरा मार्ग बंबई-पूना लाइनपर ५४ मील दूर नेरल स्टेशनसे है; किंतु यह मार्ग केवल पैदलका है। बंबईसे ९८ मील दूर तलेगाँव स्टेशन उतरें तो वहाँसे मोटरबसके मार्गसे भीमशङ्कर १०० मील दूर है। तलेगाँवसे मंचरतक रेलवेकी ही मोर-बस चलती है। मंचरसे आँवा गाँवतक बस मिल जाती है। आँवा गाँवसे मार्गदर्शक तथा भोजनादि लेकर पैदल या बैलगाड़ीसे लगभग १६ मील जाना पड़ता है। बीचमें एक गाँव है, वहाँ स्कूलमें रात्रिको ठहर सकते हैं।

भीमशङ्करके समीप कई धर्मशालाएँ हैं, किन्तु वे सूनी पड़ी रहती हैं। पासमें ४-६ झोपड़ियोंके घर हैं, उनमें पण्डोंके यहाँ भी ठहर सकते हैं और धर्मशालामें भी। भीमशङ्करसे लगभग एक फर्लांग पहले ही शिखरपर देवी-मन्दिर है। वहाँसे नीचे उतरनेपर भीमशङ्कर-मन्दिर है।

यहाँ **'डाकिन्यां भीमशङ्करम्'** इस वचनके अनुसार 'डाकिनी' ग्रामका तो कहीं पता नहीं लगता। शङ्करजी सह्याद्रि पर्वतपर अवस्थित हैं और भीमा नदी वहींसे निकलती है। मुख्य मूर्तिमेंसे थोड़ा-थोड़ा जल झरता है। मन्दिरके पास ही दो कुण्ड हैं, जिन्हें प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ नाना फडनवीसने बनवाया था। मन्दिरके आसपास एक छोटी-सी बस्ती है। यहाँके लोग कहते हैं कि जिस समय भगवान् शङ्करने त्रिपुरासुरका वध करके इस स्थानपर विश्राम किया, उस समय यहाँ अवधका भीमक नामक एक सूर्यवंशीय राजा तपस्या करता था। शङ्करजीने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिया और तभीसे यह ज्योतिर्लिङ्ग भीमशङ्करके नामसे प्रख्यात हुआ।

शिवपुराणकी एक कथाके आधारपर भीमशङ्करका ज्योतिर्लिङ्ग आसाम-प्रान्तके कामरूप जिलेमें पूर्वोत्तर-रेलवेपर गोहाटीके पास ब्रह्मपुर पहाड़ीपर अवस्थित बतलाया जाता है।[२] संक्षेपमें इतिहास यों है कि कामरूप-देशमें 'कामरूपेश्वर' नामक एक महाप्रतापी शिव-भक्त राजा हो गये हैं। वे बराबर शिवजीके

१. महंत।

२. कुछ लोग कहते हैं कि नैनीताल जिलेके उज्जनक नामक स्थानमें एक विशाल शिव-मन्दिर है, वही भीमशङ्करका स्थान है। उसका वर्णन अलग छपा है—सम्पादक

636 Tirthank_Section_21_2_Back

पार्थिव-पूजनमें तल्लीन रहते थे। उन्हीं दिनों वहाँ 'भीम' नामक एक महाराक्षस प्रकट हुआ और धर्मोपासकोंको त्रास देने लगा। कामरूपेश्वरकी शिव-भक्तिकी ख्याति सुनकर वह वहाँ आ धमका और ध्यानावस्थित राजाको ललकारकर कराल कृपाण दिखलाते हुए बोला—'रे दुष्ट! शीघ्र बतला कि क्या कर रहा है? अन्यथा तेरी खैर नहीं।' शिव-भक्त राजा ध्यानसे नहीं डिगा, उसने मन-ही-मन भगवान् शङ्करका स्मरण किया और निर्भीकतापूर्वक बोला—

भजामि शङ्करं देवं स्वभक्तपरिपालकम्।

अर्थात् हे राक्षसराज! मैं भक्तोंके प्रतिपालक भगवान् शङ्करका भजन कर रहा हूँ।

इसपर राक्षस शिवजीकी निन्दा करके राजाको उनकी पूजा करनेसे मना करने लगा और उनके किसी प्रकार न माननेपर उसने उनपर अपनी लपलपाती हुई तीखी तलवारका वार किया; पर तलवार पार्थिव-लिङ्गपर पड़ी और तत्क्षण भगवान् शङ्करने उसमेंसे प्रकट होकर उसका प्राणान्त कर दिया। सर्वत्र आनन्द छा गया। देव तथा ऋषिगण शिवसे वहीं निवास करनेके लिये प्रार्थना करने लगे, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया—

इत्येवं प्रार्थितः शम्भुर्लोकानां हितकारकः।
तत्रैव स्थितवान् प्रीत्या स्वतन्त्रो भक्तवत्सलः॥

(शि०पु०अ० २१ श्लो० ५४)

बस, तभीसे इस ज्योतिर्लिङ्गका नाम भीमशङ्कर पड़ा।

(७) श्रीविश्वेश्वर

श्रीविश्वेश्वर-ज्योतिर्लिङ्ग वाराणसी (बनारस) या काशीमें विराजमान है। यह नगरी उत्तर-रेलवेकी उस शाखापर अवस्थित है, जो मुगलसरायसे सहारनपुरको गयी है। यह स्थान पूर्वोत्तर-रेलवेका भी एक प्रधान स्टेशन है। उत्तर-रेलवेकी मुख्य लाइनसे यात्रा करनेवालोंको काशी जानेके लिये मुगलसराय स्टेशनपर गाड़ी बदलनी पड़ती है। इस पवित्र नगरीकी बड़ी महिमा है। कहते हैं प्रलयकालमें भी इसका लोप नहीं होता। उस समय भगवान् शङ्कर इसे अपने त्रिशूलपर धारण कर लेते हैं और सृष्टिकाल आनेपर इसे नीचे उतार देते हैं। यही नहीं, आदि सृष्टि-स्थली भी यही भूमि बतलायी जाती है। इसी स्थानपर भगवान् विष्णुने सृष्टि उत्पन्न करनेकी कामनासे तपस्या करके आशुतोषको प्रसन्न किया था और फिर उनके शयन करनेपर उनके नाभि-कमलसे ब्रह्मा उत्पन्न हुए, जिन्होंने सारे संसारकी रचना की। अगस्त्यमुनिने भी विश्वेश्वरकी बड़ी आराधना की थी और इन्हींकी अर्चासे श्रीवसिष्ठजी तीनों लोकोंमें पूजित हुए तथा राजर्षि विश्वामित्र ब्रह्मर्षि कहलाये। सर्वतीर्थमयी एवं सर्वसंतापहारिणी मोक्षदायिनी काशीकी महिमा ऐसी है कि यहाँ प्राणत्याग करनेसे ही मुक्ति मिल जाती है। भगवान् भोलानाथ मरते हुए प्राणीके कानमें तारक-मन्त्रका उपदेश करते हैं, जिससे वह आवागमनसे छूट जाता है, चाहे मृत प्राणी कोई भी क्यों न हो—

विषयासक्तचित्तोऽपि त्यक्तधर्मरतिर्नरः।
इह क्षेत्रे मृतः सोऽपि संसारे न पुनर्भवेत्॥

'विषयासक्त, अधर्मनिरत व्यक्ति भी यदि इस काशीक्षेत्रमें मृत्युको प्राप्त हो तो उसे भी पुनः संसार-बन्धनमें नहीं आना पड़ता।' आये कैसे? शिवजीके द्वारा दिये हुए तारक-मन्त्रके उपदेशसे अन्तकालमें उसका अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है और वह मोक्षका अधिकारी बन जाता है।

काशीमें अनेक तीर्थ हैं, जिनमेंसे प्रधान ये हैं—

विश्वेशं माधवं ढुण्डिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥

अर्थात् ज्योतिर्लिङ्ग, विश्वेश्वर, बिन्दुमाधव, ढुण्ढिराज गणेश, दण्डपाणि कालभैरव, गुहा, (उत्तरवाहिनी) गङ्गा, माता अन्नपूर्णा तथा मणिकर्णिका।

मत्स्यपुराणका मत है—

जपध्यानविहीनानां ज्ञानवर्जितचेतसाम्।
ततो दुःखहतानां च गतिर्वाराणसी नृणाम्॥
तीर्थानां पञ्चकं सारं विश्वेशानन्दकानने।
दशाश्वमेधं लोलार्कं केशवो बिन्दुमाधवः॥
पञ्चमी तु महाश्रेष्ठा प्रोच्यते मणिकर्णिका।
एभिस्तु तीर्थवर्यैश्च वर्ण्यते ह्यविमुक्तकम्॥

अर्थात् जप, ध्यान और ज्ञानसे रहित एवं दुःखोंद्वारा परिपीड़ित जनोंके लिये काशीपुरी ही एकमात्र गति है। विश्वेश्वरके आनन्द-काननमें दशाश्वमेध, लोलार्ककुण्ड, बिन्दुमाधव, केशव और मणिकर्णिका—ये पाँच मुख्य तीर्थ हैं और इन्हींसे युक्त यह 'अविमुक्त क्षेत्र' कहा जाता है।

काशीमें उत्तरकी ओर ॐकारखण्ड, दक्षिणमें केदारखण्ड और बीचमें विश्वेश्वरखण्ड है, जहाँ बाबा विश्वनाथका प्रसिद्ध मन्दिर है। कहा जाता है इस मन्दिरकी स्थापना अथवा पुनः स्थापना शङ्करके अवतार भगवान् आद्य शङ्कराचार्यने स्वयं अपने कर-कमलोंसे की थी। इस प्राचीन मन्दिरको प्रसिद्ध मूर्ति-संहारक बादशाह औरंगजेबने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और उसके स्थानमें एक मसजिद बनवा दी, जो अबतक विद्यमान है। प्राचीन मूर्ति ज्ञानवापीमें पड़ी हुई बतलायी जाती है। पीछेसे, उक्त मन्दिरसे थोड़ा हठकर परमशिवभक्ता महारानी अहल्याबाईने सोमनाथ आदि मन्दिरोंकी भाँति विश्वनाथका एक सुन्दर नया मन्दिर बनवा दिया और पंजाबकेसरी महाप्रतापी महाराजा रणजीतसिंहने इसपर स्वर्णकलश चढ़वा दिया।

काशीमें सुन्दर मन्दिरों और पुण्यसलिला जाह्नवीके तटवर्ती सुन्दर घाटोंके अतिरिक्त हिंदू-विश्वविद्यालय, बौद्धोंका सारनाथ आदि और भी कई दर्शनीय स्थान हैं।

(८) श्रीत्र्यम्बकेश्वर

यह ज्योतिर्लिङ्ग बंबई-प्रान्तके नासिक जिलेमें है। मध्य-रेलवेकी जो लाइन इलाहाबादसे बंबईको गयी है, उसपर बंबईसे एक सौ सतरह मील तथा अठारह स्टेशन इधर नासिक-रोड नामका स्टेशन है। वहाँसे छः मीलकी दूरीपर नासिक-पञ्चवटी है, जहाँ श्रीलक्ष्मणजीने रावणकी बहिन शूर्पणखाकी नाक काटी थी और जहाँ सीताहरण हुआ था। नासिक-रोडसे नासिक-पञ्चवटीतक बसें चलती हैं। नासिक-पञ्चवटीसे मोटरके रास्ते अठारह मील दूर त्र्यम्बकेश्वरका स्थान है। मार्ग बड़ा मनोरम है। यहाँके निकटवर्ती ब्रह्मगिरि नामक पर्वतसे पूतसलिला गोदावरी निकलती है। जो माहात्म्य उत्तर-भारतमें पाप-विमोचिनी गङ्गाका है, वही दक्षिणमें गोदावरीका है। दक्षिणमें यह गङ्गा-नामसे ही प्रख्यात हैं। जैसे इस अवनीतलपर गङ्गावतरणका श्रेय तपस्वी भगीरथको है, वैसे ही गोदावरीका प्रवाह ऋषिश्रेष्ठ गौतमकी घोर तपस्याका फल है, जो उन्हें भगवान् आशुतोषसे प्राप्त हुआ था।

भगीरथके प्रयत्नसे भूतलपर अवतरित हुई माता जाह्नवी जैसे भागीरथी कहलाती हैं, वैसे ही गौतम ऋषिकी तपस्याके फलस्वरूप आयी हुई गोदावरीका दूसरा नाम गौतमी है। इनकी भी महिमा बहुत अधिक है। बृहस्पतिके सिंहराशिमें आनेपर यहाँ बड़ा भारी कुम्भका मेला लगता है। इस कुम्भके अवसरपर गोदावरी-स्नानका बड़ा भारी माहात्म्य है। इन्हीं पुण्यतोया गोदावरीके उद्गम-स्थानके समीप अवस्थित त्र्यम्बकेश्वर-भगवान्‌की भी बड़ी महिमा है। गौतम ऋषि तथा गोदावरीके प्रार्थनानुसार भगवान् शिवने इस स्थानमें वास करनेकी कृपा की और त्र्यम्बकेश्वर नामसे विख्यात हुए। मन्दिरके अंदर एक छोटे-से गड्ढेमें तीन छोटे-छोटे लिङ्ग हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु और शिव—इन तीनों देवोंके प्रतीक माने जाते हैं। शिवपुराणके अनुसार त्र्यम्बकेश्वरके दर्शन और पूजन करनेवालेको इस लोक और परलोकमें सदा आनन्द रहता है। ब्रह्मगिरि पर्वतके ऊपर जानेके लिये चौड़ी-चौड़ी सात सौ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इन सीढ़ियोंपर चढ़नेके बाद 'रामकुण्ड' और 'लक्ष्मणकुण्ड' मिलते हैं और शिखरके ऊपर पहुँचनेपर गोमुखसे निकलती हुई भगवती गोदावरीके दर्शन होते हैं।

(९) वैद्यनाथ*

यह स्थान संथाल परगनेमें पूर्व-रेलवेके जसीडीह स्टेशनसे ३ मील दूर एक ब्रांच-लाइनपर है। इस लिङ्गकी स्थापनाका इतिहास यह है कि एक बार राक्षसराज रावणने हिमालयपर जाकर शिवजीकी प्रसन्नताके

* 'परल्यां वैद्यनाथं च' इस वचनके अनुसार कोई-कोई इसे असली वैद्यनाथ न मानकर हैदराबाद-राज्यके अन्तर्गत परली ग्रामके शिवलिङ्गको वैद्यनाथ-ज्योतिर्लिङ्ग मानते हैं; परंतु द्वादश-ज्योतिर्लिङ्गसम्बन्धी वर्णनमें शिवपुराणके अंदर जो इनकी तालिका दी गयी है, उसमें 'वैद्यनाथं चिताभूमौ' यह पद आता है, जिससे जसीडीहके पासवाला वैद्यनाथ-शिवलिङ्ग ही वास्तविक वैद्यनाथ-ज्योतिर्लिङ्ग सिद्ध होता है; क्योंकि चिताभूमि इसी स्थलको कहते हैं। जब भगवान् शङ्कर सतीके शवको कंधेपर रखकर उन्मत्तकी भाँति फिर रहे थे, सतीका हृत्पिण्ड तब इसी स्थानपर गिरा था, जिसका उन्होंने यहीं दाह-संस्कार किया था। फिर भी परली स्थानका भी कुछ परिचय दे देना उचित जान पड़ता है। बंबईसे प्रयागकी ओर जानेवाली मध्य-रेलवे-लाइनपर बंबईसे १६२ मील दूर प्रसिद्ध मनमाड स्टेशन है। वहाँसे पूर्णाको एक लाइन गयी है। उस लाइनपर परभनी एक जंकशन है, वहींसे परलीतक एक ब्रांच-लाइन गयी है। इस परली स्टेशनसे थोड़ी दूरपर परली ग्रामके निकट श्रीवैद्यनाथ-ज्योतिर्लिङ्ग है। मन्दिर बहुत पुराना है और इसका जीर्णोद्धार इन्दौरकी स्व० रानी अहल्याबाईका कराया हुआ है। मन्दिर एक पर्वतशिखरपर बना हुआ है, जिसके नीचेसे एक छोटी-सी नदी बहती है और छोटा शिव-कुण्ड है। शिखरपर चढ़नेके लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। बहुत-से लोगोंका यह निश्चित मत है कि परलीके वैद्यनाथ ही वास्तविक वैद्यनाथ-ज्योतिर्लिङ्ग हैं।

लिये घोर तपस्या की और अपने सिर काट-काटकर शिवलिङ्गपर चढ़ाने शुरू कर दिये। एक-एक करके नौ सिर चढ़ानेके बाद दसवाँ सिर भी काटनेको ही था कि शिवजी प्रसन्न होकर प्रकट हो गये। उन्होंने उसके दसों सिर ज्यों-के-त्यों कर दिये और फिर वरदान माँगनेको कहा। रावणने लङ्कामें जाकर उस लिङ्गको स्थापित करनेके लिये उसे ले जानेकी आज्ञा माँगी। शिवजीने अनुमति तो दे दी, पर इस चेतावनीके साथ कि यदि मार्गमें वह इसे पृथ्वीपर रख देगा तो वह वहीं अचल हो जायगा। अन्ततोगत्वा वही हुआ। रावण शिवलिङ्ग लेकर चला; पर मार्गमें यहाँ 'चिताभूमि' में आनेपर उसे लघुशङ्का-निवृत्तिकी आवश्यकता हुई और वह उस लिङ्गको एक अहीरको थमा लघुशङ्का-निवृत्तिके लिये चला गया। इधर उस अहीरने उसे बहुत अधिक भारी अनुभवकर भूमिपर रख दिया। बस, फिर क्या था; लौटनेपर रावण पूरी शक्ति लगाकर भी उसे न उखाड़ सका और निराश होकर मूर्तिपर अपना अँगूठा गड़ाकर लङ्काको चला गया। इधर ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओंने आकर उस शिव-लिङ्गकी पूजा की और शिवजीका दर्शन करके उनकी वहीं प्रतिष्ठा की और स्तुति करते हुए स्वर्गको चले गये। यह वैद्यनाथ-ज्योतिर्लिङ्ग महान् फलोंका देनेवाला है। इस स्थानका जलवायु बड़ा अच्छा है। अनेक रोगी रोग-मुक्तिके लिये यहाँ आते हैं। मन्दिरसे थोडी ही दूरपर एक तालाब है, जिसके चारों ओर पक्के घाट बने हुए हैं। तालाबके पास ही धर्मशाला है। लिङ्ग-मूर्ति ग्यारह अंगुल ऊँची है और अब भी उसपर जरा-सा गढ़ा है। यहाँ दूर-दूरसे लाकर जल चढ़ानेका बड़ा माहात्म्य बतलाते हैं। बहुत-से यात्री कंधोंपर काँवर लिये वैद्यनाथजी जाते हुए देखे जाते हैं। कुष्ठरोगसे मुक्त होनेके लिये भी बहुत-से रोगी यहाँ आते हैं।

(१०) नागेश्वर[1]

नागेश्वर-भगवान्‌का स्थान गोमती[2] द्वारकासे बेट-द्वारकाको जाते समय कोई बारह-तेरह मील पूर्वोत्तरकी ओर रास्तेमें मिलता है। द्वारकासे इस स्थानपर जानेके लिये मोटर तथा बैलगाड़ीका प्रबन्ध हो सकता है। द्वारकाको जानेके लिये राजकोटतक वही मार्ग है, जो वेरावळ (सोमनाथ) जानेके लिये ऊपर बताया जा चुका है। राजकोटसे पश्चिम-रेलवेकी नारमगाम-ओखा लाइनद्वारा द्वारका जाया जा सकता है।

लिङ्गकी स्थापनाके सम्बन्धमें यह इतिहास है कि एक सुप्रिय नामक वैश्य था, जो बड़ा धर्मात्मा, सदाचारी और शिवजीका अनन्य भक्त था। एक बार जब कि वह नौकापर सवार होकर कहीं जा रहा था, अकस्मात् दारुक नामके एक राक्षसने आकर उस नौकापर आक्रमण किया और उसमें बैठे हुए सभी यात्रियोंको अपनी पुरीमें ले जाकर कारागारमें बंद कर दिया। पर सुप्रियकी शिवार्चना वहाँ भी बंद नहीं हुई। वह तन्मय होकर शिवाराधन करता और अन्य साथियोंमें भी शिव-भक्ति जाग्रत् करता रहा। संयोगसे इसकी खबर दारुकके कानोंतक पहुँची और वह उस स्थानपर आ धमका। सुप्रियको ध्यानावस्थित देखकर, 'रे वैश्य! यह आँख मूँदकर तू कौन-सा षड्‌यन्त्र रच रहा है?' कहकर उसने एक जोरकी डाँट बतलायी, किंतु इतनेपर भी सुप्रियकी समाधि भङ्ग न होते देख उसने अपने अनुचरोंको उसकी हत्या करनेका आदेश दिया; परन्तु सुप्रिय इससे भी विचलित नहीं हुआ। वह भक्त-भयहारी शिवजीको ही पुकारने लगा। फलतः उस कारागारमें ही भगवान् शिवने एक ऊँचे स्थानपर एक चमकते हुए सिंहासनमें स्थित ज्योतिर्लिङ्गरूपसे दर्शन

१. नागेश्वर लिङ्ग भी दो और हैं। एक नागेश्वर-ज्योतिर्लिङ्ग हैदराबादके राज्यमें भी है; परन्तु शिवपुराणको देखनेसे उपरिलिखित द्वारका-मार्गके नागेश्वर ही प्रामाणिक मालूम होते हैं। तथापि इन दूसरे नागेश्वरका भी कुछ परिचय देना आवश्यक प्रतीत होता है। ये हैदराबादके अन्तर्गत अवढ़ाग्राममें स्थित हैं। मध्य-रेलवेकी मनमाडसे पूर्णातक जानेवाली लाइनपर परभनीसे १९ मील पूर्णा जंकशन है। वहाँसे हिङ्गोलीतक एक ब्रांचलाइन जाती है, उसके चोंडी स्टेशनसे कोई बारह मीलपर अवढ़ाग्राम है। वहाँ जानेके लिये बैलगाड़ी या मोटरकी व्यवस्था है।

कुछ लोगोंके मतानुसार अल्मोड़ासे १७ मील उत्तर-पूर्वमें स्थित यागेश (जागेश्वर) शिवलिङ्ग ही नागेश ज्योतिर्लिङ्ग है, इस विषयपर अलग (४२वें पृष्ठपर) लेख प्रकाशित है।—सम्पादक

२. इस समय दो द्वारकाएँ हैं। एक द्वारका तो स्थलसे लगी हुई है। उसके समीपवर्ती एक खाड़ीमें, जिसे गोमती कहते हैं, ज्वारभाटा आता है। यहाँ गोमती-चक्र भी मिलते हैं। इसीसे इसे 'गोमती द्वारका' कहते हैं। दूसरी द्वारका, जो बेट-द्वारका कहलाती है, गोमती-द्वारकासे २० मील हटकर एक द्वीपपर बसी हुई है।

दिया। दर्शन ही नहीं, उन्होंने उसे अपना पाशुपतास्त्र भी दिया और अन्तर्धान हो गये। इस पाशुपतास्त्रसे समस्त राक्षसोंका संहार करके सुप्रिय शिवधामको चला गया। भगवान् शिवके आदेशानुसार ही इस ज्योतिर्लिङ्गका नाम नागेश पड़ा। इसके दर्शनका बड़ा माहात्म्य है। कहा गया है कि जो आदरपूर्व इसकी उत्पत्ति और माहात्म्यको सुनेगा, वह समस्त पापोंसे मुक्त होकर समस्त ऐहिक सुखोंको भोगता हुआ अन्तमें परमपदको प्राप्त होगा—

एतद् यः शृणुयान्नित्यं नागेशोद्भवमादरात्।
सर्वान् कामानियाद् धीमान् महापातकनाशनान्॥

(शि० पु० को० रु० सं० अ० ३०। ४४)

(११) सेतुबन्ध-रामेश्वर

ग्यारहवाँ ज्योतिर्लिङ्ग सेतुबन्ध-रामेश्वर है। मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके कर-कमलोंद्वारा इसकी स्थापना हुई थी। लङ्कापर चढ़ाई करनेके लिये जाते हुए जब भगवान् रामचन्द्रजी यहाँ पहुँचे, तब उन्होंने समुद्रतटपर बालुकासे शिवलिङ्ग बनाकर उसका पूजन किया। यह भी कहा जाता है कि समुद्र-तटपर भगवान् श्रीराम जल पी रहे थे इतनेमें एकाएक आकाशवाणी सुनायी दी—'मेरी पूजा किये बिना ही जल पीते हो?' इस वाणीको सुनकर भगवान्ने बालुकाकी लिङ्गमूर्ति बनाकर शिवजीकी पूजा की और रावणपर विजय प्राप्त करनेका आशीर्वाद माँगा, जो भगवान् शङ्करने उन्हें सहर्ष प्रदान किया। उन्होंने लोकोपकारार्थ ज्योतिर्लिङ्गरूपसे सदाके लिये वहाँ वास करनेकी सबकी प्रार्थना भी स्वीकार कर ली। भगवान् श्रीरामने शङ्करजीकी स्थापना और पूजा करके उनकी बड़ी महिमा गायी—

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं।
ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं॥
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि।
सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि॥
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि।
भगति मोरि तेहि संकर देइहि॥
मम कृत सेतु जो दरसनु करिही।
सो बिनु श्रम भवसागर तरिही॥

(रामचरितमानस)

एक दूसरा इतिहास इस लिङ्गस्थापनके सम्बन्धमें यह है कि जब रावणका वध करके भगवान् श्रीराम श्रीसीताजीको लेकर दल-बलसहित वापस आने लगे, तब समुद्रके इस पार गन्धमादन-पर्वतपर पहला पड़ाव डाला। उसी समय मुनीश्वरगण आपके स्तुत्यर्थ वहाँ आ पहुँचे। पीछे श्रीरामजीने उनका सत्कार करते हुए कहा—'मुझे पुलस्त्यकुलका विनाश करनेके कारण ब्रह्महत्याका पातक लगा है; अतएव आपलोग कृपा कर बताइये कि इस पापसे मुक्ति पानेका क्या उपाय है?' मुनीश्वरोंने एक स्वरसे भगवद्-गुण-गान करते हुए यह व्यवस्था दी कि 'आप शिवलिङ्गकी स्थापना कीजिये, इससे यह सब पाप छूट जायगा।'

भगवान्ने अञ्जनानन्दन महावीर हनूमान्को कैलास जाकर लिङ्ग लानेका आदेश दिया। वे क्षणमात्रमें कैलासपर जा पहुँचे, पर वहाँ शिवजीके दर्शन नहीं हुए; अतएव वहाँ शिवजीके दर्शनार्थ तप करने लगे और पीछे उनके दर्शन देनेपर उनसे लिङ्ग प्राप्तकर वापस लौटे। इधर जबतक वे आये, तबतक ज्येष्ठ-शुक्ला दशमी बुधवारको अत्यन्त शुभ मुहूर्तमें शिवस्थापना हो भी चुकी थी। मुनियोंने हनूमान्के आनेमें विलम्ब समझकर कहीं पुण्यकाल निकल न जाय, इस आशङ्कासे तुरन्त लिङ्ग-स्थापन करनेकी प्रार्थना की और तदनुसार श्रीजानकीजी द्वारा बालुकानिर्मित लिङ्गकी स्थापना कर दी गयी। हनूमान्जीको यह सब देखकर बड़ा क्षोभ हुआ और वे अपने प्रभुके चरणोंपर गिर पड़े। भक्तपरायण भगवान्ने उनकी पीठपर हाथ फेरते-फेरते उन्हें समझाया—उनके आनेके पूर्व ही लिङ्ग-स्थापनाका कारण बतलाया और अन्तमें उनके संतोषार्थ बोले, 'अच्छा, तुम इस स्थापित लिङ्गको उखाड डालो। मैं इसके स्थानपर तुम्हारेद्वारा लाये गये लिङ्गको स्थापित कर दूँगा।' हनूमान्जी प्रसन्नतासे खिल उठे। स्थापित लिङ्ग उखाड़नेको झपटे; पर हाथ लगानेसे मालूम हुआ कि काम आसान नहीं है। बालूका लिङ्ग वज्र बन गया था। अपना समूचा बल लगाया, पर व्यर्थ! अन्तमें उसे अपनी लंबी पूँछसे लपेटा और फिर किलकारी मारकर जोरसे खींचा। पृथिवी डोल गयी, पर लिङ्ग टस-से-मस नहीं हुआ। उलटे हनूमान्जी ही धक्का खाकर एक कोस दूर मूर्च्छित होकर जा गिरे। उनके मुख आदि देहछिद्रोंसे रुधिर बहने लगा। श्रीरामचन्द्रजी आदि सभी व्याकुल हो गये। श्रीसीताजी भी उनके शरीरपर हाथ फेरती हुई रुदन करने लगीं। बहुत काल बाद उनकी मूर्छा दूर हुई। सम्मुखासीन भगवान्पर दृष्टि जानेपर साक्षात् परब्रह्मके रूपमें उनके दर्शन हुए। आत्मग्लानिपूर्वक वे झट उनके चरणोंपर पड़ स्तुति करने लगे। भगवान्ने उन्हें सान्त्वना देते हुए

कहा—'तुमने भूल की, जिससे इतना कष्ट मिला। मेरे स्थापित किये हुए इस लिङ्गको संसारकी समूची शक्ति भी नहीं उखाड़ सकती। महादेवके अपराधसे तुमको यह फल मिला। अब कभी ऐसा मत करना।'

पीछे भगवान्‌ने हनूमान्‌द्वारा लाये हुए लिङ्गको भी पास ही स्थापित करा दिया और उसका नाम रखा 'हनुमदीश्वर'। रामेश्वर और हनुमदीश्वर—इन दोनों शिवलिङ्गोंकी महिमा भगवान्‌ने अपने श्रीमुखसे इस प्रकार वर्णन की है—

स्वयं हरेण दत्तं तु हनुमन्नामकं शिवम्।
सम्पश्यन् रामनाथं च कृतकृत्यो भवेन्नरः॥
योजनानां सहस्रेऽपि स्मृत्वा लिङ्गं हनूमतः।
रामनाथेश्वरं चापि स्मृत्वा सायुज्यमाप्नुयात्॥
तेनेष्टं सर्वयज्ञैश्च तपश्चाकारि कृत्स्नशः।
येन दृष्टौ महादेवौ हनूमद्राघवेश्वरौ॥

(स्कं० पु० ब्र० खं० से० मा० अ० ४५)

अर्थात् स्वयं भगवान् शिवके दिये हुए हनुमन्नामक लिङ्गका तथा श्रीरामनाथेश्वरका दर्शन करके मनुष्य कृतार्थ हो जाता है। हजार योजनकी दूरीपरसे भी श्रीहनुमदीश्वर तथा श्रीरामनाथेश्वरका स्मरण करके मनुष्य शिवसायुज्यको प्राप्त होता है। जिसने हनुमदीश्वर तथा राघवेश्वर महादेवका दर्शन कर लिया, उसने सारे यज्ञ और सारे तप कर लिये।

श्रीरामेश्वरजीका मन्दिर प्रायः १००० फुट लंबा, छः सौ पचास फुट चौड़ा और एक सौ पचीस फुट ऊँचा है। इस विशाल मन्दिरमें श्रीशिवजीकी प्रधान लिङ्गमूर्तिके अतिरिक्त, जो लगभग एक हाथसे भी अधिक ऊँची है, और भी अनेक सुन्दर शिवमूर्तियाँ तथा अन्य मूर्तियाँ हैं। नन्दीकी एक बहुत बड़ी मूर्ति है। श्रीशङ्कर-पार्वतीकी चल-मूर्तियाँ भी हैं, जिनकी वार्षिकोत्सवके अवसरपर सोने और चाँदीके वाहनोंपर सवारी निकाली जाती है। चाँदीके त्रिपुण्ड्र तथा श्वेत उत्तरीयके कारण लिङ्गकी शोभा और भी बढ़ जाती है। मन्दिरके अंदर बाईस कुएँ हैं, जो तीर्थ कहलाते हैं। इनके जलसे स्नान करनेका माहात्म्य है। इन सब कुओंका जल मीठा है, किंतु मन्दिरके बाहरके सभी कुओंका जल खारा है। कहते हैं, भगवान्‌ने अपने अमोघ बाणोंद्वारा इन कूपोंका निर्माण किया था और उनमें भिन्न-भिन्न तीर्थोंका जल मँगवाकर डाला था। इनमेंसे कुछके नाम ये हैं—गङ्गा, यमुना, गया, शङ्ख, चक्र, कुमुद। इन कूपोंके अतिरिक्त श्रीरामेश्वरधामके अन्तर्गत करीब एक दर्जन तीर्थ और हैं। इनमें कुछके नाम हैं—रामतीर्थ, अमृतवाटिका, हनुमान्‌कुण्ड, ब्रह्महत्या-तीर्थ, विभीषणतीर्थ, माधवकुण्ड, सेतुमाधव, नन्दिकेश्वर और अष्टलक्ष्मीमण्डप।

गंगोत्तरीके गङ्गाजलको श्रीरामेश्वरपर चढ़ानेका बड़ा माहात्म्य है और इसके लिये २) कर लगता है। जिनके पास गङ्गाजल नहीं होता, वे मन्दिरके अधिकारियोंसे मूल्य देकर गङ्गाजल खरीद सकते हैं। श्रीरामेश्वरसे पंद्रह-बीस मील दूर धनुष्कोटि नामक स्थान है, जहाँ भारत-महासागर और बंगालकी खाड़ीका सम्मेलन होता है। यहाँ श्राद्ध होता है। धनुष्कोटितक रेल गयी है। कहते हैं, यहींपर श्रीरामचन्द्रजीने समुद्रपर कुपित होकर शर-संधान किया था। धनुष्कोटि बड़ा बंदरगाह भी है, जहाँसे वर्तमान लङ्का (सीलोन) को जहाज आया-जाया करते हैं। रामेश्वर जानेके लिये बंबई या कलकत्ते होते हुए मद्रास जाना चाहिये और मद्राससे दक्षिण-रेलवेद्वारा त्रिचिनापल्ली होते हुए रामेश्वर जाते हैं। लक्ष्मण-तीर्थमें मुण्डन और श्राद्ध, समुद्रमें स्नान तथा अर्घ्यदान और गन्धमादन-पर्वतपर स्थित 'रामझरोखे' से समुद्र एवं सेतुके दर्शनका बड़ा माहात्म्य बतलाया जाता है। सेतुके बीचमें बहुत-से तीर्थ हैं, जिनमेंसे मुख्य ये हैं—(१) चक्रतीर्थ, (२) वेतालवरद, (३) पापविनाशन, (४) सीतासर, (५) मङ्गलतीर्थ, (६) अमृतवापिका, (७) ब्रह्मकुण्ड, (८) अगस्त्यतीर्थ, (९) जयतीर्थ, (१०) लक्ष्मीतीर्थ, (११) अग्नितीर्थ, (१२) शुक्रतीर्थ, (१३) शिवतीर्थ (१४) कोटितीर्थ, (१५) साध्यामृततीर्थ, (१६) मानसतीर्थ।

(१२) घुश्मेश्वर

अब अन्तिम ज्योतिर्लिङ्ग घुश्मेश्वर, घुसृणेश्वर या धृष्णेश्वरका वर्णन किया जाता है। मध्य-रेलवेकी मनमाडपूर्णा लाइनपर मनमाडसे ६६ मील दूर दौलताबाद स्टेशन है। वहाँसे १२ मीलपर वेरुल गाँवके पास यह स्थान है। स्टेशनसे बैलगाड़ीकी सवारी मिलती है। मोटरसे जाना हो तो दौलताबाद न उतरकर औरंगाबाद स्टेशनपर उतरना चाहिये, जो दौलताबादसे अगला स्टेशन है। दौलताबाद स्टेशनसे गन्तव्य स्थानतक जानेका मार्ग

पहाड़ी और बड़ा सुहावना है। मार्गमें दौलताबादका किला है। यह दौलताबादका किला धृष्णेश्वरसे दक्षिण पाँच मीलपर एक पहाड़की चोटीपर है। यहाँ धारेश्वर शिवलिङ्ग और श्रीएकनाथजीके गुरु श्रीजनार्दन महाराजकी समाधि है। यहाँसे आगे इलोराकी प्रसिद्ध गुहाएँ दर्शनीय हैं। इलोरा जानेके लिये दौलताबादसे पूर्ववर्ती इलोरा-रोड स्टेशनपर उतरना चाहिये। इलोरामें कैलाश नामक गुहा सबसे श्रेष्ठ और सुन्दर है और पहाड़को काटकर बनायी हुई है। गुहा कारीगरीकी दृष्टिसे बहुत सुन्दर है। यह न केवल हिंदुओंका ही ध्यान अपनी ओर खींचती है, बल्कि अन्य धर्मावलम्बी एवं अन्य देशवासीजन भी इसकी अद्भुत रचनाको देखकर मुग्ध हो जात हैं। एक श्यावेल नामक पाश्चात्य सज्जन तो दक्षिण-भारतके सभी मन्दिरोंको इस कैलासके नमूनेपर बना हुआ बतलाते हैं। इलोरा इतना सुन्दर स्थान है कि बौद्ध और जैन तथा विधर्मी मुसल्मानतक इसकी ओर आकर्षित हो गये और उन्होंने इस सुरम्य पहाड़ीपर अपने-अपने स्थान बनाये हैं। कुछ लोग इलोराके कैलास-मन्दिरको ही घुश्मेश्वरका असली स्थान मानते हैं। श्रीधृष्णेश्वर शिव और देवगिरि दुर्गके बीच सहस्रलिङ्ग पातालेश्वर, सूर्येश्वर हैं तथा सूर्यकुण्ड और शिवकुण्ड नामक सरोवर हैं। यह बहुत प्राचीन स्थान है। अस्तु, अब हमें संक्षेपमें घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्गकी स्थापनाका इतिहास बतला देना है, जो इस प्रकार है—

दक्षिण देशमें देवगिरि पर्वतके निकट सुधर्मा नामक एक ब्राह्मण रहता था। उसकी पतिपरायणा पत्नीका नाम सुदेहा था। दोनोंमें परस्पर सद्भाव था, इस कारण वे बड़े सुखी थे; परंतु ज्यों-ज्यों दिन बीतने लगे, त्यों-त्यों उनके अंदर एक चिन्ता जाग्रत् होकर उस सुखमें बाधा पहुँचाने लगी। वह चिन्ता यह थी कि उनके पीछे कोई संतान नहीं थी। ब्राह्मण-देवताने ज्यौतिषकी गणना करके देखा कि सुदेहाकी कोखसे संतान उत्पन्न होनेकी कोई सम्भावना नहीं है। यह बात उसने अपनी पत्नीपर प्रकट भी कर दी, पर सुदेहा इसपर भी चुप नहीं बैठी। वह अपने पतिदेवसे दूसरा विवाह करनेका आग्रह करने लगी। सुधर्माने भरपूर समझाया कि इस झंझटमें मत पड़ो, परंतु सुदेहा किसी प्रकार भी नहीं मानती थी। उसने कहा—'तुम मेरी बहिन घुश्माके साथ विवाह कर लो। वह मेरी सहोदरा भगिनी है। उसके साथ मेरा अत्यन्त स्नेहका सम्बन्ध है, उसके साथ किसी प्रकारका मनोमालिन्य होनेकी आशङ्का बिल्कुल नहीं करनी चाहिये। हम दोनों परम प्रेमके साथ एक मन और दो तन होकर रहेंगी—आप निश्चिन्त रहें।'

अब और अधिक सुधर्मा अपनी पत्नीके आग्रहको न टाल सका। अन्ततोगत्वा वह इसके लिये राजी हो गया और एक निश्चित तिथिको घुश्माके साथ ब्याह करके उसे घर ले आया। दोनों बहनें प्रेमपूर्वक रहने लगीं। घुश्मा अतीव सुलक्षणा गृहिणी थी। वह अपने पतिकी सब प्रकारसे सेवा करती और अपनी ज्येष्ठा भगिनीको मातृवत् मानती। साथ ही वह शिवजीकी अनन्य भक्ता भी थी। प्रतिदिन नियमपूर्वक १०१ पार्थिव-शिवलिङ्ग बनाकर उनका विधिवत् पूजन करती। भगवान् शङ्करजीके प्रसादसे अल्पकालमें ही उसे गर्भ रहा और निश्चित समयमें उसकी गोदमें पुत्ररत्नके दर्शन हुए। सुधर्माके साथ-साथ सुदेहाके आनन्दकी सीमा न रही, परंतु पीछे चलकर उसपर न जाने कौन-सी राक्षसी वृत्तिने अधिकार किया। उसके अंदर ईर्ष्याका अङ्कुर उत्पन्न हुआ। अब उसे न अपनी सहोदरा भगिनीकी सूरत सुहाती और न उस शिशुके प्रति ही कुछ अनुराग रहा। उलटा उसे देख-देख वह मन-ही-मन कुढ़ती। ज्यों-ज्यों बालककी उम्र बढ़ने लगी त्यों-ही-त्यों ईर्ष्याङ्कुर भी वृद्धिगत होता गया और जब समय पाकर वह बच्चा ब्याह करके घरमें नववधूको लाया तबतक उसका ईर्ष्याङ्कुर भी फला-फूला वृक्ष बन गया। 'हाय! अब जो कुछ है, सब घुश्माका है। मेरा इस घरमें कुछ नहीं। यह पुत्र और पुत्रवधू हैं तो आखिर उसीके। मेरे ये कौन हैं—उलटे मेरी सम्पत्तिको हड़पनेवाले हैं।' इन सब कुविचारोंने उसके हृदयको मथ डाला। वह उनका क्षय चाहने लगी; यही नहीं, बच्चेके प्राणान्तका उपाय भी सोचने लगी और अन्ततोगत्वा एक दिन रात्रिमें जब वह अपनी पत्नीके साथ शयन कर रहा था, इस कुमतिग्रस्ता मौसीने चुपचाप उसकी हत्या कर डाली और उसके शवको ले जाकर उसी सरोवरमें छोड़ दिया, जिसमें घुश्मा जाकर पार्थिव शिवलिङ्गोंको छोड़ती थी। प्रातःकाल उसकी पत्नीने उठकर देखा कि पति पलँगपर नहीं है और पलँगपर बिछाये हुए वस्त्र खूनसे लथपथ हैं। अभागी चीख मारकर रो पड़ी, फलतः बात-की-

बातमें घरमें कुहराम मच गया। सुधर्माकी जो एक आँख थी, वह भी फूट गयी। पर घुश्मा कहाँ है? वह अपने पूजा-घरमें शिवजीकी सेवामें निरत है, उसे इस ओर ध्यान देनेकी फुरसत नहीं। उसने सदाकी भाँति नियमपूर्वक अपना नित्यकर्म समाप्त किया और फिर शिवलिङ्गोंको तालाबमें जाकर छोड़ा। भगवान्‌की लीला! एकाएक, सरोवरके अंदरसे उसका लाल; जो मर चुका था, भला-चंगा निकल आया और मातासे प्रार्थना करने लगा—'माता, मैं मरकर पुनः जीवित हो गया। ठहर, मैं भी चलता हूँ।' बच्चा आकर माताके चरणोंपर लोट गया; पर उसे ऐसा ही लगा मानो उसका लाल उसी प्रकार आकर उसके चरणोंपर पड़ा है जिस प्रकार वह सदा बाहरसे लौटकर पड़ता था। उसने न उसके मरनेपर शोक मनाया था और न अब उसके जी उठनेपर उसे हर्ष हुआ। अवश्य ही, सब कुछ शिवजीकी लीला समझकर वह आनन्दमें मग्न हो गयी। भगवान् भोलानाथ उसकी तन्मयता देख अब अधिक विलम्ब न कर सके। झट उसके सामने प्रकट हो गये और उससे वर माँगनेको कहने लगे। वह उसकी सौतकी काली करतूत भी नहीं सह सके और इसके लिये अपने त्रिशूलद्वारा उसका शिरश्छेद करनेको उद्यत हो गये; परन्तु धर्मपरायणा घुश्मा उनसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी—

'प्रभो! यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं तो कृपया मेरी बहिनको क्षमादान दें। अवश्य ही उसने घोर पाप किया है, पर अब आपके दर्शन करके यह उससे मुक्त हो गयी। भला! आपके दर्शन करके भी कोई पापी रह सकता है? भगवन्! उसे क्षमा करो। उसने जो किया सो किया; पर अब कृपया ऐसा करें कि उसके अकल्याणमें मैं किसी प्रकार निमित न बनूँ।' शिवजी उसकी वह उदारता देखकर उसपर और भी अधिक प्रसन्न हुए और उससे और कोई वर माँगनेको कहने लगे। घुश्माने निवेदन किया—'महेश्वर! आपसे मैं यह वरदान माँगती हूँ कि आप सदा ही इस स्थानपर वास करें, जिससे सारे संसारका कल्याण हो।'

भगवान् शङ्कर 'एवमस्तु' कहकर ज्योतिर्लिङ्गके रूपमें वहाँ वास करने लगे और घुश्मेश्वरके नामसे प्रसिद्ध हुए। उस तालाबका नाम भी तबसे शिवालय हो गया। इन घुश्मेश्वर भगवान्‌की बड़ी महिमा गायी गयी है—

ईदृशं चैव लिङ्गं च दृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते।
सुखं संवर्धते पुंसां शुक्लपक्षे यथा शशी॥

(शि० पु० ज्ञान० सं० अ० ५२ श्लो० ८२)

अर्थात् घुश्मेश्वर महादेवके दर्शनसे सब पाप दूर हो जाते हैं और सुखकी वृद्धि उसी प्रकार होती है जिस प्रकार शुक्लपक्षमें चन्द्रमाकी वृद्धि होती है।

भगवान् आद्य शङ्कराचार्यने घुश्मेश्वरकी निम्नलिखित शब्दोंमें स्तुति की है—

इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन्
समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम्।
वन्दे महोदारतरस्वभावं
घुश्मेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये॥

ये साधवो धनोपेतास्तीर्थानां स्मरणे रताः।
तीर्थे दानाच्च योगाच्च तेषामभ्यधिकं फलम्॥
ये दरिद्रा धनैर्हीनास्तीर्थानुगमने रताः।
तेषां यज्ञफलावाप्तिर्विनापि धनसंचयैः॥
सर्वेषामेव वर्णानां सर्वाश्रमनिवासिनाम्।
तीर्थं तु फलदं ज्ञेयं नात्र कार्या विचारणा॥
तीर्थानुगमनं पद्भ्यां तपः परमिहोच्यते।
तदेव कृत्वा यानेन स्नानमात्रफलं लभेत्॥

जो तीर्थोंका स्मरण करनेवाले धनी साधुस्वभावके पुरुष हैं, वे तीर्थमें दान-योग करके फल प्राप्त करते हैं। धनहीन गरीब तीर्थ जाकर बिना ही धनसंचयके यज्ञफलको प्राप्त होते हैं। सभी वर्ण तथा सभी आश्रमोंके लोगोंको तीर्थ फलदायक होता है। जो पैरोंसे पैदल चलकर तीर्थ जाते हैं, वे परम-तप करते हैं। जो सवारीसे यात्रा करते हैं उन्हें स्नान-मात्रका ही फल मिलता है।

श्रीशिवकी अष्टमूर्त्तियाँ

(लेखक—श्रीपन्नालालसिंहजी)

श्रीविष्णुपुराणमें लिखा है—

सृष्टिस्थित्यन्तकरणाद् ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकाम्।
स संज्ञां याति भगवानेक एव जनार्दनः॥

'एक ही भगवान् जनार्दन (१। २। ७२) सृष्टि, स्थिति और प्रलयके कर्ता होनेके कारण ब्रह्मा, विष्णु और शिव—इन तीन विभिन्न नामोंसे पुकारे जाते हैं।'

शिव परमात्मा या ब्रह्मका ही नामान्तर है। वे शान्त शिव अद्वैत और चतुर्थ (**'शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थम्'**—माण्डूक्योपनिषद्) हैं। वे विश्वाद्य, विश्वबीज, विश्वदेव, विश्वरूप, विश्वाधिक और विश्वान्तर्यामी हैं। **'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'**—यह सभी कुछ ब्रह्ममय है। तभी तो बृहदारण्यक उपनिषद्के अन्तर्यामीब्राह्मणमें कहा है—'जो सर्वभूतोंमें अवस्थित होते हुए भी सर्वभूतोंसे पृथक् हैं, सर्वभूत जिन्हें जानते नहीं, किन्तु सर्वभूत जिनके शरीर हैं और जो सर्वभूतोंके अन्दर रहकर सर्वभूतोंका नियन्त्रण करते हैं—वे ही (परम) आत्मा, वे ही अन्तर्यामी और वे ही अमृत हैं।'

भगवान्ने गीतामें कहा है—

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।

अर्थात् मेरी इस अव्यक्त मूर्त्तिद्वारा सारा संसार व्याप्त है।

शिवपुराणमें भी महादेव कहते हैं—

अहं शिवः शिवश्चायं त्वं चापि शिव एव हि।
सर्वं शिवमयं ब्रह्मञ्शिवात् परं न किञ्चन॥

'ब्रह्मन्! मैं शिव, यह शिव, तुम भी शिव, सब कुछ शिवमय है। शिवके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।'

पञ्चभूतोंमें जगत् संगठित है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, चन्द्र, सूर्य और जीवात्मा—इन्हीं अष्टमूर्त्तियोंद्वारा समस्त चराचरका बोध होता है। तभी महादेवका एक नाम 'अष्टमूर्त्ति' है।

शिवपुराणमें आया है—

तस्यादिदेवदेवस्य मूर्त्त्यष्टकमयं जगत्।
तस्मिन् व्याप्य स्थितं विश्वं सूत्रे मणिगणा इव॥
शर्वो भवस्तथा रुद्र उग्रो भीमः पशुपतिः।
ईशानश्च महादेवो मूर्त्तयश्चाष्ट विश्रुताः॥
भूम्यम्भोऽग्निमरुद्व्योमक्षेत्रज्ञार्कनिशाकराः।
अधिष्ठिता महेशस्य शर्वादेरष्टमूर्त्तिभिः॥
अष्टमूर्त्त्यात्मना विश्वमधिष्ठाय स्थितं शिवम्।
भजस्व सर्वभावेन रुद्रं परमकारणम्॥

'इन देवादिदेवकी अष्टमूर्त्तियोंसे यह अखिल जगत् इस प्रकार व्याप्त है, जिस प्रकार सूतके धागेमें सूतकी ही मणियाँ। भगवान् शंकरकी इन अष्टमूर्त्तियोंके नाम ये हैं—शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, महादेव और ईशान। ये ही शर्व आदि अष्टमूर्त्तियाँ क्रमशः पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, क्षेत्रज्ञ, सूर्य और चन्द्रमाको अधिष्ठित किये हुए हैं। इन अष्टमूर्त्तियोंद्वारा विश्वमें अधिष्ठित उन्हीं परमकारण भगवान्की सर्वतोभावेन आराधना करो।'

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः।
ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः।
ॐ रुद्राय अग्निमूर्त्तये नमः।
ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः।
ॐ भीमाय आकाशमूर्त्तये नमः।
ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः।
ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः।
ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः।

सूर्य और चन्द्र प्रत्यक्ष देवता हैं।

पृथ्वी, जल आदि पञ्च सूक्ष्मभूत हैं, जीवात्मा ही क्षेत्रज्ञ है। जीव ही यजमानरूपसे यज्ञ या उपासना करनेवाला है, इसलिये उसे यजमान भी कहते हैं। पाश या मायासे युक्त जीव ही पाशु या पशु है और जीवके उद्धारकर्त्ता होनेके कारण ही महादेव 'पशुपति' हैं। वे ही जीवका पाश-मोचन करते हैं—

ब्रह्माद्याः स्थावरान्ताश्च देवदेवस्य शूलिनः।
पशवः परिकीर्त्यन्ते संसारवशवर्त्तिनः॥
तेषां पतित्वाद्देवेशः शिवः पशुपतिः स्मृतः।
मलमायादिभिः पाशैः स बध्नाति पशून् पतिः॥
स एव मोचकस्तेषां भक्तानां समुपासितः।
चतुर्विंशतितत्त्वानि मायाकर्मगुणास्तथा।
विषया इति कथ्यन्ते पाशा जीवनिबन्धनाः॥

सर्वात्मनामधिष्ठात्री सर्वक्षेत्रनिवासिनी।
मूर्तिः पशुपतिर्ज्ञेया पशुपाशनिकृन्तनी॥

''ब्रह्मासे लेकर स्थावर (वृक्ष-पाषाणादि)-पर्यन्त जितने भी संसारवशवर्ती जीव हैं, सभी देवाधिदेव महादेवके पशु कहे जाते हैं और उन सबके पति होनेके कारण महादेव 'पशुपति' कहे जाते हैं। वे ही पशुपति ब्रह्मा आदि सब पशुओंको मल, मायादि अविद्याके पाशमें जकड़कर रखते हैं और फिर भक्तोंद्वारा पूजे जाकर उन्हें उक्त पाशसे मुक्त करते हैं। चौबीस तत्त्व और माया, एवं कर्मके गुण 'विषय' कहलाते हैं। ये विषय ही जीवको बन्धनमें डालनेवाले हैं, इसीलिये इन्हें 'पाश' कहते हैं। महादेव सब जीवोंके अधिष्ठाता और सर्वक्षेत्रोंमें वास करनेवाले ('**क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत**'—गीता) तथा पशु-पाशको काटनेवाले होनेके कारण पशुपति नामसे प्रख्यात हैं।''

शिवपुराणका कथन है कि परमात्मा शिवकी ये अष्टमूर्त्तियाँ समस्त संसारको व्याप्त किये हुए हैं। इस कारण जैसे मूलमें जल-सिञ्चन करनेसे वृक्षकी सभी शाखाएँ हरी-भरी रहती हैं, वैसे ही विश्वात्मा शिवकी पूजा करनेसे उनका जगद्रूप शरीर पुष्टि-लाभ करता है। अब हमें यह देखना है कि शिवकी आराधना क्या है। सब प्राणियोंको अभयदान, सबके प्रति अनुग्रह, सबका उपकार करना—यही शिवकी वास्तविक आराधना है। जिस प्रकार पिता पुत्र-पौत्रादिके आनन्दसे आनन्दित होता है, उसी प्रकार अखिल विश्वकी प्रीतिसे शङ्करकी प्रीति होती है। किसी देहधारीको यदि कोई पीड़ा पहुँचाता है तो इससे अष्टमूर्त्तिधारी महादेवका ही अनिष्ट होता है। जो इस प्रकार अपनी अष्टमूर्त्तियोंद्वारा अखिल विश्वको अधिष्ठित किये हुए हैं, उन्हीं परमकारण महादेवकी सर्वतोभावेन आराधना करनी चाहिये—

आत्मनश्चाष्टमी मूर्त्तिः शिवस्य परमात्मनः।
व्यापकेतरमूर्त्तीनां विश्वं तस्माच्छिवात्मकम्॥
वृक्षमूलस्य सेकेन शाखाः पुष्यन्ति वै यथा।
शिवस्य पूजया तद्वत् पुष्येत्तस्य वपुर्जगत्॥
सर्वाभयप्रदानं च सर्वानुग्रहणं तथा।
सर्वोपकारकरणं शिवस्याराधनं विदुः॥
यथेह पुत्रपौत्रादेः प्रीत्या प्रीतो भवेत् पिता।
तथा सर्वस्य सम्प्रीत्या प्रीतो भवति शङ्करः॥
देहिनो यस्य कस्यापि क्रियते यदि निग्रहः।
अनिष्टमष्टमूर्त्तेस्तत् कृतमेव न संशयः॥
अष्टमूर्त्त्यात्मना विश्वमधिष्ठाय स्थितं शिवम्।
भजस्व सर्वभावेन रुद्रं परमकारणम्॥

(शिवपुराण)

'सर्वभूतोंमें और आत्मामें ब्रह्म अथवा शिवका दर्शन अर्थात् '**सर्वं शिवमयं चैतत्**'—इस भावकी अनुभूति किये बिना जन्म-मरणसे मुक्ति नहीं होती।' इस भावकी उत्पत्तिके लिये ही इन अष्टमूर्त्तियोंकी पूजा कही गयी है। वास्तवमें जीव-देह ही देवालय है। मायासे मुक्त होनेपर जीव ही सदाशिव है। अज्ञानरूप निर्माल्यको त्यागकर सोऽहं भावसे उन्हीं सदाशिवकी पूजा करनी चाहिये—

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सदाशिवः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत्॥

इसी भावको हृदयस्थ कर आओ, आज हम महादेवके असंख्य मन्दिरोंमें उनका पूजन करें। आओ, हम अपने हृदय-कमलमें उन्हीं आत्मलिङ्गका अनुभव करके निर्मल चित्तसे श्रद्धारूपी नदीके जलसे समाधि सुमनोंद्वारा मोक्षप्राप्तिके लिये उनकी पूजा करें—

आराधयामि मणिसंनिभमात्मलिङ्गं
मायापुरीहृदयपङ्कजसंनिविष्टम्।
श्रद्धानदीविमलचित्तजलावगाहं
नित्यं समाधिकुसुमैरपुनर्भवाय॥

अष्टमूर्त्तिके तीर्थ

(१) सूर्य प्रत्यक्ष देवता हैं—

आदित्यं च शिवं विद्याच्छिवमादित्यरूपिणम्।
उभयोरन्तरं नास्ति ह्यादित्यस्य शिवस्य च॥

अर्थात् शिव और सूर्यमें कोई भेद नहीं है, इसलिये प्रत्येक सूर्य-मन्दिर शिव-मन्दिर ही है।

(२) चन्द्र—काठियावाड़का सोमनाथ-मन्दिर और बंगालका चन्द्रनाथ-क्षेत्र—ये दोनों महादेवकी सोममूर्तिके ही तीर्थ हैं।

सोमनाथका* मन्दिर प्रभासक्षेत्रमें है और चन्द्रनाथका पूर्वी बंगालके चटगाँव नगरसे ३४ मील उत्तर-पूर्वमें एक पर्वतपर स्थित है। स्थानका नाम सीताकुण्ड है। श्रीचन्द्रनाथका मन्दिर पर्वतके सर्वोच्च शिखरपर है, जो समुद्रकी सतहसे चार सौ गज ऊँचा है। देवीपुराणके चैत्र-माहात्म्यके अनुसार यह त्रयोदश ज्योतिर्लिङ्ग है, जो पहले गुप्त था और कलिमें लोकहितार्थ प्रकट हुआ है। काशी, प्रयाग, भुवनेश्वर, गङ्गा-सागर, गङ्गा और नैमिषारण्यके

* इसका वर्णन 'द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग' शीर्षक लेखमें अलग कर दिया गया है। —सम्पादक

दर्शनसे जो फल प्राप्त होता है, वह श्रीचन्द्रनाथ-क्षेत्रमें ज़ानेसे एक साथ प्राप्त हो जाता है।

श्रीचन्द्रनाथके निकट और भी अनेक तीर्थ हैं। उदाहरणार्थ—

(१) उत्तरमें लवणाक्षकुण्ड है, जिसमेंसे अग्निकी ज्वाला निकलती है; (२) पर्वतके नीचे गुरुधूनी है, जो पत्थरपर प्रज्वलित है; (३) बडवानल-कुण्ड है, जिसके जलपर सप्तजिह्वात्मक अग्नि सदा प्रज्वलित रहती है। इसके अतिरिक्त (४) तप्त-जलयुक्त ब्रह्म-कुण्ड, (५) सहस्रधारा-जलप्रपात, (६) कुमारीकुण्ड, (७) श्रीव्यासजीकी तपस्याभूमि, व्यासकुण्ड, (८) सीताकुण्ड, (९) ज्योतिर्मय, जहाँ पाषाणके ऊपर ज्योति प्रज्वलित है, (१०) काली, (११) श्रीस्वयम्भूनाथ, (१२) मन्दाकिनी नामका स्रोत, (१३) गयाक्षेत्र, जहाँ पितरोंको पिण्डदान दिया जाता है, (१४) श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर, (१५) क्षत्रशिला, जहाँ पत्थरकी गुहामें अनेक शिवलिङ्ग हैं, (१६) विरूपाक्ष-मन्दिर, (१७) हर-गौरीका विहार-स्थल, जो एक सुरम्य नीरव स्थानमें है तथा जहाँ सघन वृक्षावलीके होते हुए भी पशु-पक्षीगण बिलकुल शब्द नहीं करते तथा (१८) आदित्यनाथ—ये १५ तीर्थ और हैं।

(३) नेपालके पशुपतिनाथ महादेव यजमानमूर्तिके तीर्थ हैं—पशुपतिनाथ लिङ्गरूपमें नहीं, मानुषी विग्रहके रूपमें विराजमान हैं। विग्रह कटिप्रदेशसे ऊपरके भागका ही है। मन्दिर चीनी और जापानी ढंगका बना हुआ है। और नेपाल राज्यकी राजधानी काठमाण्डूमें बागमती नदीके दक्षिण तीरपर आर्याघाटके समीप अवस्थित है। मूर्त्ति स्वर्णनिर्मित पञ्चमुखी है। इसके आस-पास चाँदीका जँगला है, जिसमें पुजारीको छोड़कर और किसीकी तो बात ही क्या, स्वयं नेपाल-नरेशका भी प्रवेश नहीं हो सकता। नेपाल राज्यमें भी बिना पासपोर्टके बाहरके लोगोंका प्रवेश बंद है; पर महाशिवरात्रिके अवसरपर लोग पासके बिना भी जाकर पशुपतिनाथके दर्शन कर सकते हैं। नेपाल महाराज अपनेको श्रीपशुपतिनाथजीका दीवान कहते हैं।

(४) शिवकाञ्चीका क्षितिलिङ्ग—पञ्चमहाभूतोंके नामसे जो पाँच लिङ्ग प्रसिद्ध हैं, वे सभी दक्षिण-भारतके मद्रास देशमें हैं। इनमेंसे एकाम्रेश्वरका क्षितिलिङ्ग शिव-काञ्चीमें है। इस मूर्तिपर जल नहीं चढ़ाया जाता, चमेलीके तेलसे स्नान कराया जाता है। मन्दिर बहुत विशाल और सुन्दर है। अंदर अनेक देवमूर्तियोंके साथ एक पाषाणमूर्ति भगवान् शङ्कराचार्यकी भी है। मन्दिरके 'गोपुरम्' पर हैदरअलीके गोलोंके चिह्न अबतक मौजूद हैं। अप्रैल मासमें यहाँका प्रधान वार्षिकोत्सव होता है, जो पंद्रह दिनतक रहता है। यहाँ ज्वरहरेश्वर, कैलासनाथ तथा कामाक्षीदेवी आदिके मन्दिर भी दर्शनीय हैं। इसकी सप्त मोक्षदा पुरियोंमें गणना है।

इस तीर्थका इतिहास यह है कि एक समय पार्वतीने कौतूहलवश चुपचाप पीछेसे आकर दोनों हाथोंसे भगवान् शङ्करके तीनों नेत्र बंद कर लिये। श्रीमहेश्वरके लोचनत्रय आच्छादित हो जानेसे सारे संसारमें घोर अंधकार छा गया; क्योंकि सूर्य, चन्द्र और अग्नि जो संसारको प्रकाशित करते हैं, वे शङ्कर (के नेत्रों) से ही प्रकाश पाते हैं—

तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।

(कठोपनिषद्)

अतः ब्रह्माण्डलोपकी नौबत आ पहुँची। इस प्रकार श्रीशिवके अर्द्धनिमेषमात्रमें संसारके एक करोड़ वर्ष व्यतीत हो गये। असमय ही देवीके इस प्रलयंकर अन्यायकार्यको देखकर श्रीशिवजीने इसके प्रायश्चित्त-स्वरूप श्रीपार्वतीजीको तपस्या करनेका आदेश दिया। अतएव वे महादेवजीकी आज्ञासे काञ्चीपुरीमें कम्पा नदीके तटपर आकर एक आम्रवृक्षकी छायामें जटा-वल्कलधारिणी एवं भस्मविभूषिता तपस्विनीका वेश धारणकर, कम्पाकी बालुकासे लिङ्ग बना, विधिपूर्वक पूजा और तपस्या करने लगीं। जब श्रीपार्वतीको कठिन तपस्या करते कुछ काल बीत गया, तब शङ्करजीने गौरीकी भक्ति और एकनिष्ठकी परीक्षाके लिये नदीमें बाढ़ ला दी, जिससे उनके चारों ओर जल-ही-जल हो गया। भगवतीने आँख खोलकर देखा तो उन्हें यह आशङ्का हुई कि नदीके वर्द्धमान प्रबल प्रवाहमें कहीं वह बालुकालिङ्ग विलीन न हो जाय, जिससे उनकी तपस्यामें विघ्न उपस्थित हो और इसी आशङ्कासे वे चिन्तित हो उठीं। समस्त कामनाओंके त्यागपूर्वक भगवान्‌को अपना मन समर्पण करके उनका भजन करनेसे कोई भी विघ्न भक्तका अनिष्ट नहीं कर सकता। भगवती शिवलिङ्गको छातीसे चिपटाकर ध्यानमग्न हो गयीं। उन्होंने जल प्रवाहके भँवरमें पड़कर भी उस लिङ्गका परित्याग नहीं किया। तब भगवान् शङ्कर प्रकट

होकर बोले—

विमुञ्च बालिके लिङ्गं प्रवाहोऽयं गतो महान्।
त्वयार्चितमिदं लिङ्गं सैकतं स्थिरवैभवम्॥
भविष्यति महाभागे वरदं सुरपूजितम्।
तपश्चर्यां तवालोक्य चरितं धर्मपालनम्॥
लिङ्गमेतन्नमस्कृत्य कृतार्थाः सन्तु मानवाः॥

'हे बालिके! नदीमें जो बाढ़ आयी थी, वह अब चली गयी है। तुम लिङ्गको छोड़ दो। तुमने इस स्थिर-वैभवयुक्त सैकत-लिङ्गकी पूजा की है, अतएव हे महाभागे! यह सुरपूजित पार्थिव लिङ्ग वरदाता बन गया। अर्थात् जो कोई इसकी जिस कामनाके साथ उपासना करेगा, उसकी वह कामना पूर्ण होगी। तुम्हारी तपश्चर्या और धर्मपालनका दर्शन और श्रवण एवं इस लिङ्गकी आराधना करके लोग कृतार्थ होंगे।'

अनेषं तैजसं रूपमहं स्थावरलिङ्गताम्।

'यहाँ मैं अपने ज्योतिर्मय रूपको त्यागकर स्थावरलिङ्गमें परिणत हो गया हूँ। तुम गौतमाश्रम, अरुणाचल (तिरुवण्णमलै) तीर्थमें जाकर तपस्या करो। वहाँ मैं तेजोरूपमें तुमसे मिलूँगा।'

शिवकाञ्चीका एकाम्रनाथ-क्षितिलिङ्ग ही महादेवीद्वारा प्रतिष्ठित स्थावर लिङ्ग है।

अम्बिकाने काञ्चीसे चलते समय तपस्याके लिये आये हुए देवताओं और ऋषियोंको वर प्रदान किया—

तिष्ठतात्रैव वै देवा मुनयश्च दृढव्रताः।
नियमांश्चाधितिष्ठन्तः कम्पारोधसि पावने॥
सर्वपापक्षयकरं सर्वसौभाग्यवर्द्धनम्।
पूज्यतां सैकतं लिङ्गं कुचकङ्कणलाञ्छनम्॥
अहं च निष्कलं रूपमास्थायैतद्दिवानिशम्।
आराधयामि मन्त्रेण महेश्वरं वरप्रदम्॥
मत्तपश्चरणाल्लोके मद्धर्मपरिपालनात्।
मन्निदर्शनाच्च तथा सिद्ध्यन्त्वष्टविभूतयः॥
सर्वकामप्रदानेन कामाक्षीमिति कामतः।
मां प्रणम्यात्र मद्भक्ता लभन्तां वाञ्छितं वरम्॥

'हे दृढव्रत देवताओ और मुनियो! नियमाधिष्ठित होकर आपलोग पवित्र कम्पा-तटपर निवास कीजिये और सर्वपापक्षयकर तथा सर्वसौभाग्यवर्द्धक मदीयकुच-कङ्कणलाञ्छित इस सैकतलिङ्गकी पूजा कीजिये। मैं भी निष्कल (अव्यक्त) रूपसे अवस्थित होकर अहर्निश इस स्थानपर वरद महेश्वरकी आराधना करूँगी। मेरे तपस्या-प्रभाव एवं धर्मपालनके फलस्वरूप इस लिङ्गका दर्शन और पूजन करके मनुष्य अभिलषित ऐश्वर्य और विभूति लाभ करेंगे। मैं सर्वकाम प्रदान करती हूँ, मेरे भक्त मुझे कामदायिनी कामाक्षी मानकर कामनापूर्वक मेरी अर्चना करके अभिलषित वर लाभ करेंगे।'

(५) जम्बुकेश्वर—मद्रास-देशके त्रिचिनापल्ली जिलेमें 'श्रीरङ्गनाथ' से एक मीलपर जम्बुकेश्वर—'अप्'-लिङ्ग है। यहाँके शिवलिङ्गकी स्थिति एक जलके स्रोतपर है, अतः जलहरीके नीचेसे जल बराबर ऊपर उठता हुआ नजर आता है। स्थापत्य-शिल्पकी दृष्टिसे यह मन्दिर भी बहुत उत्तम बना है। मन्दिरके बाहर पाँच परकोटे हैं, तीसरे परकोटेमें एक जलाशय भी है, जहाँ स्नान किया जाता है। यहाँके जम्बु अर्थात् जामुनके पेड़का भी बड़ा माहात्म्य है। यह स्थान 'चिदम्बरम्' से पश्चिमकी ओर इरोद जानेवाली लाइनपर त्रिचिनापळ्ळीसे थोडी दूर आगे है।

(६) तिरुवण्णमलै वा अरुणाचल—यहाँ महादेवका तेजोलिङ्ग है। शिवकाञ्चीसे श्रीपार्वतीजीके तिरुवण्णमलै वा अरुणाचल-तीर्थ पहुँचकर कुछ काल और तपस्या करनेके पश्चात् अरुणाचल-पर्वतपर अग्निशिखाके रूपमें एक तेजोलिङ्गका आविर्भाव हुआ और उससे जगत्का वह अन्धकार दूर हुआ, जिसका वर्णन काञ्चीके क्षितिलिङ्गके इतिहासमें आया है। यही 'तेजोलिङ्ग' है। यहाँ हर और पार्वतीका मिलन हो गया। यह स्थान* चिदम्बरम्के उत्तर-पश्चिममें विल्लुपुरम्से आगे कटपाडि जानेवाली लाइनपर स्थित है।

(७) कालहस्तीश्वर—तिरुपतिबालाजीसे कुछ ही दूर उत्तर आर्कट जिलेमें स्वर्णमुखी नदीके तटपर

* यहाँका सबसे बड़ा उत्सव 'कार्तिकी' पूर्णिमाका है। इस उत्सवके अवसरपर मन्दिरके पुजारी एक बड़े-से पात्रमें बहुत-सा कपूर जलाकर उस पात्रको ऊपरसे ढक देते हैं और प्रज्वलित अवस्थामें ही उसे बाहर मण्डपमें ले आते हैं, जहाँ दक्षिणकी प्रथाके अनुसार भगवान्का दूसरा मानुषी विग्रह घुमा-फिराकर रखा जाता है। वहाँ उस पात्रको खोल दिया जाता है और उसी समय मन्दिरके शिखरपर भी बहुत-सा कपूर जला दिया जाता है और घीकी मशाल भी जला दी जाती है। कहते हैं, शिखरका यह प्रकाश दो दिन दो रात बराबर रखा जाता है। यही भगवान्का तेजोलिङ्ग कहलाता है और इसीके दर्शनके लिये लगभग एक लाख दर्शकोंकी भीड़ उत्सवपर जमा होती है।

कालहस्तीश्वर—वायुलिङ्ग है। मन्दिर बहुत ऊँचा और सुन्दर है और स्टेशनसे एक मील दूर नदीके उस पार है। मन्दिरके गर्भगृहमें वायु और प्रकाशका सर्वथा अभाव है। दर्शन भी दीपकके सहारे होते हैं। यह स्थान वायुलिङ्गका माना जाता है। लोगोंका विश्वास है कि यहाँ एक विशेष वायुके झोंकेके रूपमें भगवान् सदाशिव विराजमान रहते हैं। यहाँकी शिवमूर्ति गोल नहीं, चौकोर है। इस शिवमूर्तिके सामने एक मूर्ति कण्णप्प भीलकी है। कण्णप्प भील एक बहुत बड़ा शिवभक्त हो गया है। इसने भगवान् शङ्करको अपने दोनों नेत्र निकालकर अर्पण कर दिये थे। शिवजीने प्रसन्न होकर वर माँगनेको कहा, जिसपर इसने यही माँगा कि 'मैं सेवार्थ सदा आपके सामने उपस्थित रहा करूँ।'

स्वर्णमुखी नदीका सम्बन्ध शालग्रामकी मूर्तिसे बतलाया जाता है, अतः वे यात्री, जिनके पास शालग्रामकी मूर्ति होती है, इसमें एक रात्रिके लिये अवश्य निवास करते हैं। दाक्षिणात्यलोग इस तीर्थको 'दक्षिण काशी' कहते हैं। यहाँ एक मन्दिर मणिकुण्डेश्वर नामका है। लोग मरणासन्न व्यक्तियोंको इस मन्दिरके अंदर सुला देते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि वाराणसीकी भाँति यहाँ भी शिवजी मरनेवालोंके कानमें तारक-मन्त्र सुनाकर उन्हें मुक्त कर देते हैं। पास ही पहाड़ीपर एक भगवती दुर्गाका मन्दिर भी है। महाशिवरात्रिके अवसरपर यहाँ बड़ा भारी मेला लगता है, जो सात दिनतक रहता है।

(८) चिदम्बरम्-आकाशलिङ्ग—यह मन्दिर समुद्र-तटसे दो-तीन मीलके अन्तरपर कावेरी नदीके तटपर बड़े सुरम्य स्थानमें बना हुआ है। मन्दिरके चारों ओर एकके बाद दूसरा, इस क्रमसे चार बड़े-बड़े घेरे हैं। यहाँ मूल-मन्दिरमें कोई मूर्ति ही नहीं है। एक दूसरे ही मन्दिरमें ताण्डव-नृत्यकारी चिदम्बरेश्वर नटराजकी मनोहर मूर्ति विराजमान है। चिदम्बरम्का अर्थ है (चित्=ज्ञान+ अम्बर=आकाश) चिदाकाश। बगलमें ही एक मन्दिरमें शेषशायी विष्णुभगवान्के दर्शन होते हैं। शङ्करजीके मन्दिरमें सोनेसे मढ़ा हुआ एक बड़ा-सा दक्षिणावर्त शङ्ख रखा हुआ है, जो गजमुक्ता, सर्पमणि एवं एकमुखी रुद्राक्षकी भाँति अमूल्य और अलभ्य माना जाता है। मन्दिरमें एक ओर एक परदा-सा पड़ा हुआ है। परदा उठाकर दर्शन करनेपर स्वर्णनिर्मित कुछ मालाएँ दृष्टिगोचर होती हैं। इसके अतिरिक्त वहाँ निरा आकाश-ही-आकाश है, यही भगवान्का आकाशलिङ्ग है। निज-मन्दिरसे निकलकर बाहरके घेरेमें आते ही कनकसभा मिलती है, जिसके पूर्वीय और पश्चिमीय द्वारोंपर नाट्य-शास्त्रोक्त १०८ मुद्राएँ खुदी हुई हैं। इस मन्दिरका अनूठी कारीगरीसे तैयार किया हुआ प्रधान द्वार (गोपुर), सहस्र स्तम्भोंका मण्डप तथा शिवगङ्गा नामक सुन्दर सरोवर आदि द्राविड़ स्थापत्य या भास्कर्य शिल्पके अद्भुत नमूने हैं। गर्भ-मन्दिरके सामने ड्योढीपर पीतलकी एक विशाल चौखट बनी हुई है। यहाँपर रात्रिमें सैकड़ों दीपक जलाये जाते हैं। यहाँ जून तथा दिसम्बरके महीनोंमें दो बड़े-बड़े उत्सव होते हैं, जिन्हें क्रमशः 'तिरुमञ्जनम्' और 'अर्द्रादर्शनम्' कहते हैं। इन अवसरोंपर बड़ी धूम-धामसे भगवान्की सवारी निकलती है और कई दिनोंतक बड़ी भीड़-भाड़ रहती है।

दक्षिणमें ६३ शिवभक्त या 'आडियार' आविर्भूत हुए हैं, जिन्होंने 'द्राविड़देव' के नामसे तमिळ-प्रबन्ध लिखे हैं। चिदम्बरम् एवं पूर्वोक्त सब तीर्थ इन भक्तोंके लीला-क्षेत्र हैं। चिदम्बरम्में एक विश्वविद्यालय भी है। यहाँका पुस्तकालय बड़ा प्रसिद्ध है, इसमें संसारभरकी भाषाओंकी पुस्तकें संगृहीत हुई हैं।

अन्तमें, महाकवि कालिदासने अष्टमूर्तिकी जिस स्तुतिसे अपने विश्वविख्यात 'अभिज्ञानशाकुन्तल' नाटकका मङ्गलाचरण किया है, उसीके द्वारा हम भी सर्वान्तर्यामी श्रीमहादेवको प्रणामकर लेखको मङ्गलके साथ समाप्त करें—

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं
या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा
या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया
प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु व-
स्ताभिरष्टाभिरीशः ॥

प्रसिद्ध शिवलिङ्ग

(१) पशुपतिनाथ—नेपाल, (२) सुन्दरेश्वर—मदुरा, (३) कुम्भेश्वर—कुम्भकोणम्, (४) बृहदीश्वर—तंजौर, (५) पक्षितीर्थ—चेंगलपट, (६) महाबलेश्वर—पूनाके पास, (७) अमरनाथ—कश्मीर, (८) वैद्यनाथ—काँगड़ा, (९) तारकेश्वर—पश्चिम बंगाल, (१०) भुवनेश्वर—उत्कल, (११) कंडारिया शिव—खजुराहो, (१२) एकलिङ्ग—उदयपुर, (१३) गौरीशङ्कर—जबलपुर, (१४) हरीश्वर—मानसरोवरके पास, (१५) व्यासेश्वर—काशीके समीप, (१६) मध्यमेश्वर—काशी, (१७) हाटकेश्वर—वडनगरु, (१८) मुक्तपरमेश्वर—अरुणाचल, (१९) प्रतिज्ञेश्वर—क्रौञ्च पर्वत, (२०) कपालेश्वर—क्रौच पर्वत (२१) कुमारेश्वर—क्रौञ्च पर्वत, (२२) सर्वेश्वर—जयस्तम्भके पास (चित्तौड़), (२३) स्तम्भेश्वर—जयस्तम्भके पास (चित्तौड़), (२४) अजय अमरेश्वर—महेन्द्र पर्वतपर।

अष्टोत्तर-शत दिव्य विष्णुस्थान

अष्टोत्तरशतस्थानेष्वाविर्भूतं जगत्पतिम्।
नमामि जगतामीशं नारायणमनन्यधीः॥ १॥

श्रीवैकुण्ठे वासुदेवमामोदे कर्षणाह्वयम्।
प्रद्युम्नं च प्रमोदाख्ये सम्मोदे चानिरुद्धकम्॥ २॥

सत्यलोके तथा विष्णुं पद्माक्षं सूर्यमण्डले।
क्षीराब्धौ शेषशयनं श्वेतद्वीपे तु तारकम्॥ ३॥

नारायणं बदर्याख्ये नैमिषे हरिमव्ययम्।
शालग्रामं हरिक्षेत्रे अयोध्यायां रघूत्तमम्॥ ४॥

मथुरायां बालकृष्णं मायायां मधुसूदनम्।
काश्यां तु भोगशयनमवन्त्यामवनीपतिम्॥ ५॥

द्वारवत्यां यादवेन्द्रं व्रजे गोपीजनप्रियम्।
वृन्दावने नन्दसूनुं गोविन्दं कालियह्रदे॥ ६॥

गोवर्धने गोपवेषं भवघ्नं भक्तवत्सलम्।
गोमन्तपर्वते शौरिं हरिद्वारे जगत्पतिम्॥ ७॥

प्रयागे माधवं चैव गयायां तु गदाधरम्।
गङ्गासागरगे विष्णुं चित्रकूटे तु राघवम्॥ ८॥

नन्दिग्रामे राक्षसघ्नं प्रभासे विश्वरूपिणम्।
श्रीकूर्मे कूर्ममचलं नीलाद्रौ पुरुषोत्तमम्॥ ९॥

सिंहाचले महासिंहं गदिनं तुलसीवने।
घृतशैले पापहरं श्वेताद्रौ सिंहरूपिणम्॥ १०॥

योगानन्दं धर्मपुर्यां काकुले त्वान्ध्रनायकम्।
अहोबिले गारुडाद्रौ हिरण्यासुरमर्दनम्॥ ११॥

विट्ठलं पाण्डुरङ्गे तु वेङ्कटाद्रौ रमासखम्।
नारायणं यादवाद्रौ नृसिंहं घटिकाचले॥ १२॥

वरदं वारणगिरौ काञ्च्यां कमललोचनम्।
यथोक्तकारिणं चैव परमेशपुराश्रयम्॥ १३॥

पाण्डवानां तथा दूतं त्रिविक्रममथोन्नतम्।
कामासिक्यां नृसिंहं च तथाष्टभुजसंज्ञकम्॥ १४॥

मेघाकारं शुभाकारं शेषाकारं तु शोभनम्।
अन्तरा शितिकण्ठस्य कामकोट्यां शुभप्रदम्॥ १५॥

कालमेघं खगारूढं कोटिसूर्यसमप्रभम्।
दिव्यं दीपप्रकाशं च देवानामधिपं मुने॥ १६॥

प्रवालवर्णं दीपाभं काञ्च्यामष्टादशस्थितम्।
श्रीगृध्रसरसस्तीरे भान्तं विजयराघवम्॥ १७॥

वीक्षारण्ये महापुण्ये शयानं वीरराघवम्।
तोताद्रौ तुङ्गशयनं गजार्तिघ्नं गजस्थले॥ १८॥

महाबलं बलिपुरे भक्तिसारे जगत्पतिम्।
महावराहं श्रीमुष्णे महीन्द्रे पद्मलोचनम्॥ १९॥

श्रीरङ्गे तु जगन्नाथं श्रीधामे जानकीप्रियम्।
सारक्षेत्रे सारनाथं खण्डने हरचापहम्॥ २०॥

श्रीनिवासस्थले पूर्णं सुवर्णं स्वर्णमन्दिरे।
व्याघ्रपुर्यां महाविष्णुं भक्तिस्थाने तु भक्तिदम्॥ २१॥

श्वेतह्रदे शान्तमूर्तिमग्निपुर्यां सुरप्रियम्।
भर्गाख्यं भार्गवस्थाने वैकुण्ठाख्ये तु माधवम्॥ २२॥

पुरुषोत्तमे भक्तसखं चक्रतीर्थे सुदर्शनम्।
कुम्भकोणे चक्रपाणिं भूतस्थाने तु शार्ङ्गिणम्॥ २३॥

कपिस्थले गजार्तिघ्नं गोविन्दं चित्रकूटके।
अनुत्तमं चोत्तमायां श्वेताद्रौ पद्मलोचनम्॥ २४॥

पार्थस्थले परब्रह्म कृष्णकोट्यां मधुद्विषम्।
नन्दपुर्यां महानन्दं वृद्धपुर्यां वृषाश्रयम्॥ २५॥

असङ्गं सङ्गमग्रामे शरण्ये शरणं महत्।
दक्षिणद्वारकायां तु गोपालं जगतां पतिम्॥ २६॥

सिंहक्षेत्रे महासिंहं मल्लारिं मणिमण्डपे।
निबिडे निबिडाकारं धानुष्के जगदीश्वरम्॥ २७॥

मौहूरे कालमेघं तु मधुरायां तु सुन्दरम्।
वृषभाद्रौ महापुण्ये परमस्वामिसंज्ञकम्॥ २८॥

श्रीमद्वरगुणे नाथं कुरुकायां रमासखम्।
गोष्ठीपुरे गोष्ठपतिं शयानं दर्भसंस्तरे॥ २९॥
धन्विमङ्गलके शौरिं बलाढ्यं भ्रमरस्थले।
कुरङ्गे तु तथा पूर्णं कृष्णमेकं वटस्थले॥ ३०॥
अच्युतं क्षुद्रनद्यां तु पद्मनाभमनन्तके।
एतानि विष्णोः स्थानानि पूजितानि महात्मभिः॥ ३१॥
अधिष्ठितानि देवेश तत्रासीनं च माधवम्।
यः स्मरेत्सततं भक्त्या चेतसानन्यगामिना॥ ३२॥
स विधूयातिसंसारबन्धं याति हरेः पदम्।
अष्टोत्तरशतं विष्णोः स्थानानि पठता स्वयम्॥ ३३॥
अधीताः सकला वेदाः कृताश्च विविधा मखाः।
सम्पादिता तथा मुक्तिः परमानन्ददायिनी॥ ३४॥
अवगाढानि तीर्थानि ज्ञातः स भगवान् हरिः।
आद्यमेतत्स्वयं व्यक्तं विमानं रङ्गसंज्ञकम्॥
श्रीमुष्णं वेङ्कटाद्रिं च शालग्रामं च नैमिषम्॥ ३५॥
तोताद्रिं पुष्करं चैव नरनारायणाश्रमम्।
अष्टौ मे मूर्तयः सन्ति स्वयं व्यक्ता महीतले॥ ३६॥

एक सौ आठ स्थानोंमें आविर्भूत जगत्पति जगदीश्वर भगवान् नारायणको अनन्य मतिसे नमस्कार करता हूँ। वे श्रीवैकुण्ठमें वासुदेव, आमोदमें सङ्कर्षण, प्रमोदमें प्रद्युम्न, सम्मोदमें अनिरुद्ध, सत्यलोकमें विष्णु, सूर्यमण्डलमें पद्माक्ष, क्षीरसागरमें शेषशायी, श्वेतद्वीपमें तारक, बदरिकाश्रममें नारायण, नैमिषमें अविनाशी हरि, हरिक्षेत्रमें शालग्राम, अयोध्यामें राघवेन्द्र श्रीरामभद्र, मथुरामें श्रीबालकृष्ण, मायापुरीमें मधुसूदन, काशीमें भोगशयन, अवन्तिकामें अवनीपति, द्वारकामें यादवेन्द्र, व्रजमें गोपीजनवल्लभ, वृन्दावनमें नन्दनन्दन, कालियह्रदमें गोविन्द, गोवर्द्धनमें भवनाशक गोपवेषधारी भक्तवत्सल (गोवर्द्धननाथ), रोमन्थ (गोमन्त) पर्वतपर शौरि, हरिद्वारमें जगत्पति, प्रयागमें वेणी-माधव, गयामें गदाधर, गङ्गा-सागरसंगममें विष्णु, चित्रकूटमें राघव, नन्दिग्राममें राक्षसहन्ता, प्रभासमें विश्वरूप, श्रीकूर्ममें अचल कूर्म, नीलाचल (जगन्नाथपुरी) में पुरुषोत्तम, सिंहाचलमें महासिंह (पन-नृसिंह), तुलसीवनमें गदापाणि, घृतशैलमें पापहर, श्वेताचलमें सिंहस्वरूप, धर्मपुरीमें योगानन्द, काकुलमें आन्ध्रनायक, अहोबिलमें गरुडाद्रिपर हिरण्यकशिपुवधकारी नृसिंह, पाण्डुरङ्ग(पंढरपुर) में विट्ठल, वेङ्कटाचल (तिरुपति) में रमाप्रिय (श्रीनिवास-बालाजी), यादवाचल (मेलूकोटे) में नारायण, घटिकाचलमें नृसिंह, काञ्चीमें वारणाचलपर कमललोचन, (वरदराज), परमेशपुर (शिवकाञ्ची) में यथोक्तकारी (इसी काञ्चीमें) पाण्डवदूत त्रिविक्रम, कामसिकीमें अष्टभुज नृसिंह तथा मेघाकार, शुभाकार, शेषाकार एवं शोभन, कामकोटिमें शिति (नीलकण्ठ-मन्दिर) के अन्तर्गत शुभप्रद, कालमेघ, गरुड़ारूढ, कोटिसूर्यसमप्रभ, दिव्य तथा ऊँचे दीपप्रकाश, देवाधिप, प्रवालवर्ण, दीपाभ—ये अठारह काञ्चीमें विराजित हैं। श्रीगृध्रसरोवरके तटपर विजयराघव, अति पवित्र वीक्षारण्यमें (शेषशय्यापर लेटे हुए) वीरराघव, तोताद्रिमें तुङ्गशायी, गजस्थलमें गजार्तिनाशक, बलिपुरमें महाबली, भक्तिसारमें जगत्पति, श्रीमुष्णमें महावराह, महीन्द्रमें पद्मलोचन, श्रीरङ्गम्में जगन्नाथ (रङ्गनाथ), श्रीधाममें जानकीवल्लभ, सारक्षेत्रमें सारनाथ, खण्डनमें हरचापभञ्जक, श्रीनिवासस्थलमें पूर्ण, स्वर्णमन्दिरमें सुवर्ण, व्याघ्रपुरीमें महाविष्णु, भक्तिस्थानमें भक्तिदाता, श्वेतह्रदमें शान्तमूर्ति, अग्निपुरीमें सुरप्रिय, भार्गवस्थलमें भर्ग, वैकुण्ठमें माधव, पुरुषोत्तममें भक्तसखा, चक्रतीर्थमें सुदर्शन, कुम्भकोणम्में चक्रपाणि, भूतपुरीमें शार्ङ्गधर, कपिस्थलमें गजार्तिहर, चित्रकूटमें गोविन्द, उत्तमामें अनुत्तम, श्वेताचलमें पद्मलोचन, पार्थस्थलमें परब्रह्म, कृष्णकोटिमें मधुसूदन, नन्दपुरीमें महानन्द, वृद्धपुरीमें वृषाश्रय, सङ्गमग्राममें असङ्ग, शरण्यमें श्रीशरण, दक्षिणद्वारकामें जगत्पति गोपाल, सिंहक्षेत्रमें महासिंह, मणिमण्डपमें मल्लारि, निबिड़में निबिड़ाकार, धनुष्कोटिमें जगदीश्वर, मौहूरमें कालमेघ, मधुरा (मदुरै) में सुन्दर, परम पवित्र वृषभाचलपर परमस्वामी, श्रीवरगुणमें नाथ, कुरुकमें रमाप्रिय, गोष्ठीपुरमें गोष्ठपति, दर्भशयनमें दर्भशायी, धन्विमङ्गल (अन्बिल) में शौरि, भ्रमस्थलमें बलाढ्य, कुरङ्ग (पुर) में पूर्ण, वटस्थलमें श्रीकृष्ण, क्षुद्रनदीमें अच्युत और अनन्तपुरमें पद्मनाभ हैं।

ये विष्णुके स्थान वे हैं, जिनकी महात्माओंने पूजा की है। इनमें भगवान् माधव विराजित हैं। जो इन स्थानोंका तथा उनमें विराजमान भगवान् लक्ष्मीपतिका अनन्य चित्तसे भक्तिपूर्वक स्मरण करता है, वह संसार-बन्धनसे छूटकर भगवान्के परमपदको प्राप्त होता है। जो इन अष्टोत्तरशत विष्णुस्थानोंका स्वयं पाठ करता है, वह समस्त वेदोंके अध्ययन, सम्पूर्ण यज्ञोंके यजनका फल तथा परमानन्ददायिनी मुक्ति एवं समस्त तीर्थोंके स्नानका फल प्राप्त करता है और श्रीभगवान्को जान लेता है।

उपर्युक्त वर्णनमें—श्रीरङ्ग, श्रीमुष्ण, वेङ्कटस्थल, हरिक्षेत्रके शालग्राम, नैमिष, तोताद्रि, पुष्कर और बदरिकाश्रम—इन आठ स्थानोंमें पृथ्वीपर भगवान्के आठ श्रीविग्रह स्वयं प्रकट हुए हैं।

अष्टोत्तर-शत दिव्यदेश

(लेखक—आचार्यपीठाधिपति स्वामी श्रीराघवाचार्यजी)

दिव्यदेश कहलाता है वह स्थान, जो प्राकृत न होकर दिव्य—चिन्मय हो। इस दृश्यमान जगत्से परे भगवान्की नित्य विभूति है। वहाँ शुद्धसत्त्वकी स्थिति होती है। त्रिगुणात्मिका प्रकृतिका वहाँ प्रवेश नहीं होता। अतः उसे दिव्यदेश कहना ही चाहिये। संसारमें भगवान्के प्रकट होनेपर यह नित्यविभूति उनके साथ प्रकट होती है और उनके साथ रहती है। भगवान् प्रकट हुआ करते हैं व्यूह, विभव अथवा अर्चारूपमें। तीनों ही प्रकारोंमें नित्यविभूतिका स्थिर-साहचर्य रहता है। अतः इन सभी अवतार-स्थलों तथा संनिधान-स्थलोंको दिव्यदेशके नामसे सम्बोधित करना उचित एवं उपादेय है। इस प्रकार दिव्यदेशोंकी गणना नित्यविभूतिसे आरम्भ होती है और उन स्थानोंतक पहुँचती है, जहाँ भगवान्के दिव्य अर्चा-विग्रह विराजमान हों। फलस्वरूप दिव्यदेशोंकी संख्या अत्यधिक हो सकती है; किंतु इससे क्या? जब यह समस्त जगत् भगवान्की लीला-विभूति है, तब प्रकृतिका कण-कण और प्रत्येक जीवका अन्तस्तल दिव्यदेश बन सकता है। चाहिये इसके लिये साधककी साधना और भगवान्की करुणा। साधनाके द्वारा साधक कहीं भी दिव्यदेशका अनुभव कर सकता है और भगवान् कहीं भी स्वयंव्यक्त दिव्यदेशको अभिव्यक्त कर सकते हैं।

आळवार संतोंकी दिव्य सूक्तियोंके अनुशीलन करनेपर १०८ दिव्यदेशोंकी चर्चा मिलती है। यद्यपि किसी भी आळवारने दिव्यदेशोंके कुल १०८ नाम नहीं गिनाये हैं, तथापि समस्त आळवार संतोंने कुल मिलाकर जितने दिव्यदेशोंका मङ्गलाशासन किया है, उनकी संख्या १०८ ही मानी जाती है। इस मान्यताके अनुसार नित्यविभूति श्रीवैकुण्ठ और क्षीराब्धिके अतिरिक्त शेष १०६ दिव्यदेश इसी—भारतभूमिपर हैं। इनमेंसे चोळ-देशमें ४०, सं० ३ से ४२ तकपाण्ड्य देशमें (४३ से ६० तक) १८, केरलदेशमें (६१ से ७३ तक) १३, मध्यदेशमें (७४-७५) २, तुण्डीरमण्डल (काञ्ची-प्रदेश) में (७६ से ९७ तक) २२ तथा उत्तरदेशमें (९८ से १०८ तक) ११ मिलते हैं। यहाँपर क्रमशः इन १०८ दिव्यदेशोंका वर्णन करेंगे।

१०८ दिव्यदेशोंकी सूची

१-श्रीवैकुण्ठ, २-तिरुप्पाल्कडल (श्रीक्षीराब्धि), ३-तिरुवरङ्गम् (श्रीरङ्गम्), ४-उरैयूर, ५-तिरुवेळ्ळारै, ६-अन्बिल, ७-तिरुप्पेर-नगर, ८-करम्बनूर, ९-तञ्जैमा-मणिक्कोइल, १०-तिरुक्कण्डियूर, ११-कुडलूर, १२-कपिस्थलम्, १३-पुल्लभूदङ्कुडि, १४-आदनूर, १५-तिरुक्कुडन्दै (कुम्भकोणम्), १६-तिरुविण्णगर, १७-तिरुनारैयूर, १८-तिरुच्चैरै, १९-नन्दिपुरविण्णगरम् (नादन्-कोइल), २०-तिरुवेल्लियङ्कुडि, २१-तेरलुन्दूर, २२-तिरुविल्दलूर (तिरुवळु), २३-शिरुपुलियूर, २४-तिरुक्कण्णपुरम्, २५-तिरुक्कण्णमङ्गै, २६-तिरु-क्कण्णङ्कुडि, २७-तिरुनागै (नागपट्टणम्), २८-कालि-स्सीरामविण्णगरम् (शियाळी), २९-तिरुवालि-तिरुनगरी, ३०-मणिमाडक्कोइल, ३१-वैकुण्ठविण्णगरम्, ३२-अरिमेय-विण्णगरम्, ३३-वण्पुरुषोत्तमम्, ३४-सेम्पोन्सेय-कोइल, ३५-तिरुत्तेट्रियम्बलम्, ३६-तिरुमणिक्कूटम्, ३७-तिरु-क्कावलम्पाडि, ३८-तिरुदेवनार-तोकै, ३९-तिरुवेळ्ळक्कुळम् (अण्णन्-कोइल), ४०-पार्थन्पळ्ळि, ४१-तलैच्चन्काडु, ४२-तिल्लै-तिरुच्चित्रकूटम्, (चिदम्बरम्) ४३-तिरुक्कुडल (मदुरै), ४४-तिरुमोहूर, ४५-तिरुमालिरञ्चोलै (अळगर-कोइल), ४६-तिरुम्मेय्यम्, ४७-तिरुक्कोट्टियूर, ४८-तिरुप्पुल्लाणी, ४९-तिरत्तङ्गालूर, ५०-श्रीविल्लिपुत्तूर, ५१-श्रीवरमङ्गै (तोताद्रि), ५२-तिरुक्कुरुङ्कुडि, ५३-तिरुक्कुरुकूर, ५४-तुलैविल्लिमङ्गलम्, ५५-श्रीवैकुण्ठम्, ५६-वरगुणमङ्गै, ५७-तिरुप्पुलिङ्कुडि, ५८-तिरुक्कुळन्दै, ५९-तिरुप्पैरै, ६०-तिरुक्कोलूर, ६१-तिरुवनन्तपुरम् (त्रिवेन्द्रम्), ६२-तिरुवाट्टारु, ६३-तिरुवण्परिसारम् (तिरुपतिसारम्), ६४-तिरुञ्चेङ्कुनूर (त्रिचूर), ६५-कुट्टनाडु (तिरुप्पुलियूर), ६६-तिरुवण्वण्डूर, ६७-तिरुवळ्ळ वाळ, ६८-तिरुक्कडित्तानम्, ६९-तिरुवारन्विलै, ७०-तिरुक्काट्करै, ७१-तिरुमूळिक्कलम्, ७२-विट्टुवक्कोडु, ७३-तिरुनावाय्, ७४-तिरुवयिन्दिरपुरम्, ७५-तिरुक्कोवलूर, ७६-तिरुवल्लिक्केणि (ट्रिप्लिकेन), ७७-तिरुनिन्रवूर, ७८-तिरुवेव्वलूर, ७९-तिरुक्कडिकै, ८०-तिरुनीर्मलै, ८१-तिरुविडवेन्दै (तिरुविडंतै), ८२-तिरुक्कडल्मलै (महाबलिपुरम्), ८३-हस्तिगिरि (काञ्चीपुरी), ८४-तिरुवेक्का, ८५-अष्टभुजम्, ८६-तिरुत्तङ्का (दीपप्रकाशक), ८७-वेलुक्कै, ८८-उरगम्, ८९-नीरकम्, ९०-कारकम्, ९१-कार्वानम्, ९२-तिरुक्कल्वनूर, ९३-पाटकम्, ९४-निलात्तिङ्गल्तुण्डम्, ९५-पवळवर्णम्,

९६-परमेश्वरविण्णगरम् (वैकुण्ठपेरुमाळ-कोइल), ९७-तिरुप्पुक्कुळि, ९८-तिरुवेङ्कटम् (वेङ्कटाद्रि), ९९-सिङ्गवेल्कुन्रम् (अहोबिल), १००-तुवरै (द्वारका), १०१-अयोध्या, १०२-नैमिषारण्य, १०३-मथुरा, १०४-तिरुवाइप्पाडि (गोकुलम्), १०५-देवप्रयाग (कण्डम्), १०६-तिरुप्पिरिदि (जोशीमठ), १०७-बदरिकाश्रम, १०८-शालग्रामम्।

१-श्रीवैकुण्ठ (परमपद)

श्रीवैकुण्ठधाम नित्य विभूति है। यह जगत्से परे है। यहाँपर वासुदेव—नारायण-भगवान् श्रीमहालक्ष्मी-समेत अनन्ताङ्ग-विमानमें दक्षिणाभिमुख विराजमान हैं। यहाँकी नदी विरजा, पुष्करिणी ऐरम्मद, सोम-सवन वृक्ष और श्रीफल फल है। अनन्त, गरुड़, विष्वक्सेन आदि नित्यसूरि एवं मुक्तात्मा इस धामका साक्षात्कार करते हैं। आळवार संत सरोयोगी, महायोगी, भक्तिसार, शठकोप, कुलशेखर, भक्ताङ्घ्रिरेणु एवं मुनिवाहनने इस दिव्य धामका मङ्गलाशासन किया है। आचार्य श्रीयामुन मुनिने स्तोत्ररत्नमें, आचार्य श्रीरामानुज मुनिने श्रीवैकुण्ठगद्यमें तथा श्रीवत्सचिह्न मिश्रने श्रीवैकुण्ठस्तवमें इसका चिन्तन किया है।

२-श्रीक्षीरसागर (तिरुप्पाल्कडल)

सप्त-द्वीपवती पृथिवीपर सात समुद्र हैं और उनमें क्षीरसमुद्र एक है। यहाँ व्यूहमूर्ति क्षीराब्धिनाथ क्षीराब्धिनायकी लक्ष्मीसमेत अष्टाङ्ग विमानमें दक्षिणाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ अमृत-तीर्थ है। ब्रह्मा, रुद्र आदि देवता यहाँ भगवान्का साक्षात्कार करते हैं। आळवार संत सरोयोगी, भूतयोगी, महायोगी, भक्तिसार, शठकोप, कुलशेखर, विष्णुचित्त, गोदा, भक्ताङ्घ्रिरेणु एवं परकालने इस दिव्यदेशका मङ्गलाशासन किया है। ध्यान रहे कि शरणागति-मन्त्रके देवताके रूपमें क्षीराब्धिनाथ श्रीलक्ष्मीनारायणका ही ध्यान किया जाता है।

३-श्रीरङ्ग

श्रीरङ्ग इस भूतलका वैकुण्ठधाम है। दक्षिणभारतमें त्रिशिर:पल्ली (तिरुचिरापळ्ळि) नगरसे तीन मील उत्तर यह स्थित है। यहाँ श्रीरङ्गनाथ (नम्पेरुमाळ)-भगवान् श्रीरङ्गलक्ष्मीसमेत प्रणवाकार विमान (गर्भगृह) में दक्षिणाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ कावेरी नदी, चन्द्र-पुष्करिणी और पुन्नाग वृक्ष है। चन्द्र, धर्मवर्मा और रविवर्माने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया है। आळवार संत सरोयोगी, भूतयोगी, महायोगी, भक्तिसार, शठकोप, कुलशेखर, विष्णुचित्त, गोदा, भक्ताङ्घ्रिरेणु, मुनिवाहन एवं परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है। कहना न होगा कि यही एक ऐसा दिव्यदेश है, जिसके सम्बन्धमें सबसे अधिक अर्थात् १०-१० गाथाओंवाले १३ पदिकम् (पद) मिलते हैं। पूर्वाचार्योंमें आचार्य श्रीरामानुजने 'श्रीरङ्गगद्य', श्रीपराशरभट्टार्यने 'श्रीरङ्ग-राजस्तव' एवं 'श्रीरङ्गनाथस्तोत्र', श्रीवेदाचार्य भट्टने 'क्षमा-षोडशी' तथा श्रीवेदान्तदेशिकने 'भगवद्-ध्यान-सोपान' तथा 'अभीतिस्तव' के द्वारा भगवान् श्रीरङ्गनाथका मङ्गलाशासन किया है।

'श्रीरङ्ग-माहात्म्य' से ज्ञात होता है कि श्रीरङ्गनाथ-भगवान् प्रणवस्वरूपी विमानमें विराजमान होकर सत्यलोकमें प्रकट हुए थे और वहाँ पितामह ब्रह्माने पाञ्चरात्र-आगमके अनुसार भगवान्की आराधना आरम्भ की थी। कालान्तरमें यह विमान सूर्यवंशीय मनुको प्राप्त हुआ और उनकी वंश-परम्पराके द्वारा श्रीराघवेन्द्रके समयतक इस विमानमें अधिष्ठित भगवान्की पूजा होती रही। भक्तवर विभीषणपर प्रसन्न होकर श्रीराघवेन्द्रने प्रणवाकार विमानसे युक्त श्रीरङ्गनाथ-भगवान्को उन्हें प्रदान कर दिया। विभीषण विमानको लेकर लङ्काके लिये चले। मार्गमें श्रमनिवारणार्थ उन्होंने इस विमानको गणेशजीको दिया और उन्होंने इस विमानको उभय कावेरीके मध्यमें विराजमान कर दिया। विभीषण इसको उठानेमें सफल न हो सके और श्रीरङ्गनाथ-भगवान् यहीं विराजित हो गये। इस प्रकार भगवान् चोळदेश एवं चोळराजके आराध्यदेव बने। विभीषणको प्रसन्न करनेके लिये भगवान्ने दक्षिणाभिमुख रहना और उनकी एक दिनकी पूजासे तृप्त होना स्वीकार किया। कहा जाता है, वर्षमें एक निश्चित दिन विभीषण अब भी आकर श्रीरङ्गनाथ-भगवान्की पूजा करते हैं। ध्यान रहे कि श्रीवाल्मीकीय रामायणमें श्रीरङ्गनाथको जगन्नाथके नामसे स्मरण किया गया है।

वर्तमान युगके इतिहासकी ओर मुड़नेपर पता लगता है कि कई आळवार संतोंका जीवन इस दिव्यदेशसे बँधा हुआ है। आळवार सत श्रीमुनिवाहन 'अमलनादिप्पिरान्' गाते-गाते भगवान् श्रीरङ्गनाथमें लीन हो गये। भक्तिमयी गोदाको भगवान् श्रीरङ्गनाथने अङ्गीकार कर लिया। आळवार श्रीपरकालने दिव्यदेशके निर्माण और व्यवस्थापनमें सक्रिय सहयोग देनेके अतिरिक्त

द्राविडवेदके साथ उसका स्थायी सम्बन्ध स्थापित किया और अध्ययनोत्सवकी व्यवस्था की। आचार्य श्रीनाथमुनिसे लेकर श्रीवरवरमुनीन्द्रके समयतक यही दिव्यदेश श्रीसम्प्रदायका केन्द्र रहा है और आज भी समस्त श्रीवैष्णव-जगत्में '**श्रीमन् श्रीरङ्गश्रियमनुपद्रवामनुदिनं संवर्धय**' के द्वारा प्रतिदिन श्रीरङ्गलक्ष्मीका स्मरण किया जाता है। आचार्य श्रीमहापूर्ण, पराशरभट्ट, कृष्णपाद एवं पिळ्लै लोकाचार्यका यह अवतारस्थल है। आचार्य श्रीरामानुजकी महासमाधि यहीं है।

यहाँपर यह बता देना अनुचित न होगा कि मुस्लिम-शासनकालमें कुछ वर्षोंके लिये ऐसा अवसर आया जब कि श्रीरङ्गनाथ भगवान्‌के दिव्य मङ्गलविग्रहको श्रीरङ्गके बाहर ले जाया गया। मुस्लिम-आक्रमणसे भयभीत होकर श्रीवैष्णवोंने आचार्य श्रीलोकाचार्यके नेतृत्वमें श्रीरङ्गनाथ-भगवान्‌को लेकर दक्षिणकी ओर प्रस्थान किया। इस यात्रामें वृद्ध श्रीलोकाचार्यने तिरुक्कोट्टियूरमें अपनी जीवन-लीला संवरण की। इसके अनन्तर श्रीरङ्गनाथ-भगवान् कुछ समयतक तिरुनारायणपुरम्‌में तथा कुछ समयतक तिरुपतिमें विराजमान रहे। बादमें आचार्य श्रीवेदान्तदेशिकके तत्त्वावधानमें जिञ्जीके राज्यपाल श्रीगोप्पणार्यने श्रीरङ्गनाथ-भगवान्‌की श्रीरङ्गमें पधरावनी की और यथापूर्व प्रतिष्ठित किया।

४-कोळियूर—निचुळापुरी (उरैयूर)

यह त्रिशिरःपल्ली नगरसे एक मील पश्चिमकी ओर स्थित है। यहाँ अळकिय मणवाळ (सुन्दर जामाता)-भगवान् वासलक्ष्मी निचुलापुर-नायकीसमेत कल्याण-विमानमें उत्तराभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। कावेरी नदीके अतिरिक्त कुडमुरुट्टि (घटपतनजा) नदी तथा कल्याण-तीर्थ यहाँ है। तैंतीस कोटि देवताओं एवं रविवर्माने इस दिव्य देशका साक्षात्कार (प्रत्यक्ष) किया है। आळवार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है। आळवार संत श्रीमुनिवाहनका यह अवतारस्थल है।

इस स्थलके इतिहासका अन्वेषण करनेपर ज्ञात होता है कि प्राचीन कालमें एक धर्मवर्मा नामके राजा थे। उनकी धर्मपत्नी निचुलाके नामपर इसका नाम निचुलापुरी पड़ा। इन्हीं राजाकी कन्याके रूपमें लक्ष्मीने अवतार ग्रहण किया था। लक्ष्मीके यहाँ अवतार लेनेसे इस स्थानका नाम उरैयूर पड़ गया। इस अवतारमें लक्ष्मी वासलक्ष्मीके नामसे प्रसिद्ध हुईं और उन्होंने श्रीरङ्गनाथ-भगवान्‌को वरण किया। आजकल भी मीनमासमें आदिमें ब्रह्मोत्सवके छठे दिन श्रीरङ्गनाथ-भगवान् यहाँ पधारते हैं और विवाह-महोत्सव मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त श्रीरङ्गलक्ष्मीके समान ही वासलक्ष्मीके अध्ययनोत्सव आदि होते हैं।

५—तिरुवेळ्ळारै (श्वेतगिरि)

श्रीरङ्गसे १० मील उत्तरकी ओर यह दिव्यदेश है। यहाँ श्रीपुण्डरीकाक्ष भगवान् पङ्कजवल्ली एवं चम्पकवल्ली लक्ष्मीसमेत विमलाकृति विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े रहकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँके तीर्थ हैं—कुश-तीर्थ, मणिकर्णिकातीर्थ, चक्र-तीर्थ, दिव्यपुष्करिणी-तीर्थ, पुष्कल-तीर्थ, पद्मतीर्थ और वराह-तीर्थ। पुष्करिणियाँ हैं—स्कन्द-पुष्करिणी और क्षीरपुष्करिणी। भूदेवी, गरुड़, मार्कण्डेय तथा महाराज शिबिने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया है। श्रीविष्णुचित्त और श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है। आचार्य श्रीपद्माक्ष (उय्यक्कोण्डार) और आचार्य श्रीविष्णुचित्त (एङ्कळाळ्वार) का यह अवतार-स्थल है।

६—अन्बिल (धन्विनःपुर)

यह त्रिशिरःपल्लीके निकटवर्ती स्टेशन लाल्गुडिसे पाँच मील पूर्वकी ओर स्थित है। यहाँ तिरुवडि अळकिय नम्बि (सुन्दरराज) भगवान् अळकियवल्ली (सुन्दरवल्ली) लक्ष्मीसमेत शेषशय्यापर पूर्वाभिमुख शयन कर रहे हैं। पितामह ब्रह्मा तथा महर्षि वाल्मीकिने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया है और आळवार संत भक्तिसारने इसका मङ्गलाशासन किया है।

७—तिरुप्पेर-नगर (कोविलडि, श्रीरामनगर)

यह दिव्यदेश तंजौरसे दक्षिण ११ मीलपर स्थित बूदलूर स्टेशनसे उत्तर-पश्चिमकी ओर १० मील दूर है। अन्बिल दिव्यदेशसे यहाँ जाया जा सकता है। यहाँ अप्पकुडत्तान् (पूपप्रिय रङ्गनाथ)-भगवान् रङ्गनायकी लक्ष्मीसे युक्त इन्द्रविमानमें शेषशय्यापर पश्चिमाभिमुख शयन कर रहे हैं। यहाँ इन्द्रतीर्थ है, कावेरी नदी है। महर्षि उपमन्यु एवं पराशरने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळवार संत भक्तिसार, शठकोप, विष्णुचित्त एवं श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

८—करम्बनूर (उत्तमर-कोइल, कदम्बपुर)

यह श्रीरङ्गसे उत्तरकी ओर तिरुवेळ्ळारै जानेके मार्गमें ३ मीलपर है। इसके पश्चिममें दस मीलपर अन्बिल है। यहाँ श्रीपुरुषोत्तम-भगवान् पूर्वादेवी लक्ष्मीसमेत उद्योगविमानमें पूर्वाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ कदम्बतीर्थ है और कदली वृक्ष है। कदम्ब ऋषि,

उपरिचर वसु, सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार तथा आळवार परकालने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया है। आळ्वार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन भी किया है।

९-तञ्जैमामणिक्कोइल (शरण्यनगर)

यह स्थल तञ्जौर स्टेशनसे ढाई मील उत्तरकी ओर है। तञ्जौर नगरसे यह स्थल दो मील पड़ता है। यहाँ तीन पृथक्-पृथक् मन्दिर हैं। इन तीन मन्दिरोंको तीन दिव्यदेश कहा जा सकता है। तथापि १०८ दिव्यदेशोंकी गणनामें तीनोंको मिलाकर ही गिना गया है। इन तीन मन्दिरोंमें क्रमशः दर्शन इस प्रकार हैं—

क-श्रीनीलमेघ-भगवान् सेङ्कमलवल्ली (अरुण-कमलनायकी) लक्ष्मीसमेत सौन्दर्य-विमानमें पूर्वाभिमुख विराजमान हैं। इनसे सम्बन्धित हैं कन्यका-पुष्करिणी और अमृततीर्थ। महर्षि पराशरने इनका साक्षात्कार किया तथा आळवार संत भूतयोगी एवं श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

ख-श्रीनृसिंह-भगवान् तञ्जैनायकी लक्ष्मीसमेत वेदसुन्दर विमानमें पूर्वाभिमुख विराजमान हैं। इनसे सम्बद्ध हैं सूर्य-पुष्करिणी और रामतीर्थ। महर्षि मार्कण्डेयने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया है।

ग-मणिक्कुण्टप्पेरुमाळ (मणिकुण्डल) भगवान् अम्बुज-वल्ली लक्ष्मीसमेत मणिकूट विमानमें पूर्वाभिमुख विराजमान हैं। महर्षि मार्कण्डेयने इनका भी साक्षात्कार किया है।

इस स्थलके सम्बन्धमें यह ध्यान रखना आवश्यक है कि तञ्जासुरका वध भगवान्ने यहीं किया था। इसीलिये तञ्जौर (तञ्जावूर, तञ्जापुर) के नामसे इस नगरकी प्रसिद्धि हुई। यहाँपर वैशाख मासमें ब्रह्मोत्सव होता है, जिसमें चौथे दिन श्रीनीलमेघभगवान् गरुड़ारूढ़ होकर तञ्जासुरको मारनेकी लीला करते हैं।

१०-तिरुक्कण्डियूर (खण्डनगर)

तञ्जैमामणिक्कोइलसे उत्तरकी ओर साढ़े तीन मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ हर-शाप-मोचन भगवान् कमलवल्ली लक्ष्मीसमेत कमलाकृति विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े हुए हैं। कपालतीर्थ यहाँपर है। पितामह ब्रह्माके सिरका छेदन करनेपर कपाल शिवजीके हाथमें ही चिपट गया था, उसकी निवृत्ति इसी स्थानपर हुई। महर्षि अगस्त्यने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और आळवार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

११-कुडलूर (संगमपुर)

तिरुक्कण्डियूरसे उत्तरमें एक मीलपर तिरुवैयारु है। यहाँसे ७॥ मील पूर्व यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ वैयगम्-का (जगद्रक्षक) भगवान् पद्मासनवल्ली लक्ष्मीसमेत शुद्धसत्त्व विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े हैं। यहाँ कावेरी नदी है, चक्रतीर्थ है। महामुनि नन्दकने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और आळवार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

१२-कपिस्थलम्

यह कुडलूरसे चार मील पूर्व तथा पम्पासरसे दो मील उत्तरमें स्थित है। यहाँ श्रीगजेन्द्र-वरद भगवान् रामामणि लक्ष्मी एवं पोत्तमरै लक्ष्मीसमेत गगनाकृति विमानमें पूर्वाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ गजेन्द्र-पुष्करिणी है, कपिलतीर्थ है और कावेरी नदी है। गजेन्द्र और हनुमान्जीने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळवार संत श्रीभक्तिसारने इसका मङ्गलाशासन किया है।

कहा जाता है, इस क्षेत्रका नाम पहले 'चम्पकारण्य' था। बादमें श्रीहनुमान्जीके द्वारा इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किये जानेके कारण इसका नाम 'कपिस्थल' पड़ गया। गजेन्द्रकी रक्षाके लिये आदिमूल भगवान्का यहाँ प्राकट्य होनेके कारण इसको 'गजस्थल' भी कहा जाता है।

तिरुमण्डङ्कुडि

कपिस्थलसे चार मील उत्तर-पूर्व तिरुमण्डङ्कुडि है। जहाँ आळवार संत श्रीभक्ताङ्घ्रिरेणुका अवतार हुआ था।

१३-पुल्लभूदङ्कुडि

तिरुमण्डङ्कुडिसे एक मील पूर्व यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ वल्विल्लि राम (दृढ़चापधर राम) भगवान् पोत्तामरैयाल् (कमला) लक्ष्मीसमेत शोभन विमानमें पूर्वाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ गृध्रतीर्थ है। गृध्रराजने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और यहींपर मोक्ष प्राप्त किया। आळवार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

१४-आदनूर (गोपुरी)

पुल्लभूदङ्कुडिसे एक मील उत्तर-पूर्व यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ आण्डलक्कमायन् (भक्तानन्दमूर्ति)-भगवान् रङ्गनायकी लक्ष्मीसमेत प्रणव-विमानमें पूर्वाभिमुख शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। सूर्य-पुष्करिणी यहाँ है। कामधेनु गौ तथा आळवार संत श्रीपरकालने इस दिव्य-देशका साक्षात्कार किया।

१५-तिरुक्कुडन्दै (कुम्भकोणम्)

कुम्भकोणम् प्रसिद्ध नगर है। आदनूरसे पाँच मील पूर्व है यह। यहाँ आरावमुद-पेरुमाळ शार्ङ्गपाणि भगवान् कोमलवल्ली लक्ष्मीसमेत वैदिक विमानमें पूर्वाभिमुख होकर शयनके लिये उद्योग करते हुए दर्शन दे रहे हैं। यहाँ कावेरी नदी है, हेमपुष्करिणी है। हेम महर्षिने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और आळवार संत भूतयोगी, महायोगी, भक्तिसार, शठकोप, विष्णुचित्त तथा श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है। आळवार संत भक्तिसारका परमपदप्रयाणस्थल यही है। श्रीशार्ङ्गपाणि भगवान्‌के अतिरिक्त यहाँ श्रीचक्रपाणि, श्रीराम, श्रीवराह-भगवान् आदिके मन्दिर भी हैं।

यहाँपर इस दिव्यदेशकी एक अद्‌भुत विशेषताका उल्लेख कर देना अनुचित न होगा। वह यह है कि शेषशेषीभावके साथ यहीं भगवान् लीला करते हैं। सिद्धान्त यह है कि भगवान् शेषी हैं और जीवात्मा उनका शेषभूत। इसीके आधारपर भक्त भगवान्‌को अपनी आत्मा समझता है। भक्तपर प्रसन्न होकर भगवान् भी भक्तको अपनी आत्मा समझने लगते हैं। गीताचार्य भगवान् श्रीकृष्णने कहा है—'**ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्**' अर्थात् मेरे मतमें ज्ञानी (भक्त) मेरा आत्मा ही है। यही लीला श्रीशार्ङ्गपाणि भगवान्‌ने आळवार संत भक्तिसारके साथ की है। इसीलिये इस तिरुक्कुडन्दै दिव्यदेशमें भगवान् आरावमुदाळ्वार और आळ्वार भक्तिसार तिरुमळिशैप्पिरान् कहलाते हैं।

१६-तिरुविण्णगरम् (आकाशनगर)

कुम्भकोणम्‌से चार मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ श्रीउप्पिलियप्पन (लवणाभावतात) भगवान् भूमि-लक्ष्मीसमेत विष्णु-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ आर्ति (अहोरात्र)-पुष्करिणी है। गरुड़, महर्षि मार्कण्डेय, कावेरी एवं धर्मने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और आळ्वार संत महायोगी, शठकोप एवं श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

इस दिव्यदेशकी विशेषता यह है कि यहाँ भगवान्‌को लवणरहित ही भोग लगाया जाता है। इसका कारण यह है कि इस स्थलमें लक्ष्मीने महर्षि मार्कण्डेयकी कन्याके रूपमें अवतार ग्रहण किया था। भगवान्‌ने जब महर्षिसे कन्याकी याचना की, तब उनको उत्तर यह मिला कि कन्या अभी अबोध है, वह व्यञ्जनोंमें लवण भी ठीक-ठीक न डाल सकेगी। इसपर भगवान्‌ने सदा लवणरहित ही भोग लगानेकी व्यवस्था दे दी।

इस स्थलका नाम 'तुलसीवन' भी है। आळ्वार श्रीशठकोपने मङ्गलाशासनके अनुसार यहाँ पोन्नप्पन्, मुत्तप्पन्, एन्नप्पन् भगवान् भी विराजमान हैं।

१७-तिरुनारैयूर (सुगन्धगिरि)

यह दिव्यदेश कुम्भकोणम्‌से दक्षिण-पूर्वकी ओर ६ मीलपर स्थित है। यहाँ नम्बि (पूर्ण) भगवान् नम्बिक्कै (पूर्णा) लक्ष्मीसमेत श्रीनिवास-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ मणिमुक्ता नदी है। मेधावी मुनिने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार संत श्रीपरकालने १०० गाथाओंके द्वारा मङ्गलाशासन किया है।

इस दिव्यदेशमें भगवान्‌के प्रकट होनेका वृत्तान्त इस प्रकार है कि मेधावी मुनिकी कन्याको बलि नामक एक असुर पकड़ ले गया था। इस असुरको मारकर भगवान्‌ने कन्या लाकर मुनिराजको समर्पित की। राक्षसद्वारा अपहृत वैरमुडि (मणिमुक्ता-किरीट) को छीनकर जब गरुड़ इधरसे जा रहे थे, तब इस स्थलमें एक राक्षसने आकर गरुड़से संघर्ष किया। इस संघर्षमें किरीटके शिखरकी मणि निकलकर यहाँकी नदीमें गिर पड़ी। इसीलिये इस नदीका नाम मणिमुक्ता नदी पड़ गया। वैरमुडि तबसे अबतक शिखरहीन ही है। यहाँ श्रीगरुड़की सुन्दर प्रतिमा है, जो केवल दो अवसरोंपर बाहर निकलती है। यह आश्चर्यकी बात है कि उनके ढोनेवालोंको विभिन्न प्रकारका भार (वजन) मालूम होता है। भगवान्‌ने इस स्थानमें लक्ष्मीको प्रधानता दी है, इसलिये इसे नाच्चियार-कोइल भी कहा जाता है। आळ्वार संत श्रीपरकालका समाश्रयण यहीं हुआ और यहींपर वे स्तुति करते हुए नायिकाभावको प्राप्त हुए।

१८-तिरुच्चैरै (सारक्षेत्र)

तिरुनारैयूरसे दक्षिणकी ओर तीन मीलपर यह क्षेत्र स्थित है। यहाँपर सारनाथ-भगवान् सारलक्ष्मीसमेत सार विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ सार-पुष्करिणी है। कावेरीने यहाँ भगवान्‌की आराधना की थी। भगवान्‌ने प्रसन्न होकर कावेरीको यह वर दिया था कि तुलाकी संक्रान्ति (कार्तिक) में तुम्हारा माहात्म्य गङ्गासे भी अधिक रहेगा। आळ्वार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

१९-नन्दिपुरविण्णगरम्

यह दिव्यदेश कुम्भकोणम्‌से दक्षिणकी ओर तीन

मीलपर स्थित है। यहाँ विण्णगर, जगन्नाथ, नाथनाथ भगवान् चम्पकवल्ली लक्ष्मीसमेत मन्दार-विमानमें दक्षिणाभिमुख विराजमान होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ नन्दितीर्थ है। चक्रवर्ती महाराज शिबिने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

इस दिव्यदेशसे पूर्वकी ओर एक मीलपर नन्दिवन है, जहाँ एक मन्दिरका खँडहर है। कहा जाता है, नन्दिदेवने यहाँ भगवान्‌का साक्षात्कार किया था।

२०-तिरुवेल्लियङ्कुडि (भार्गवपुरी)

तिरविडमरुदूर स्टेशनसे उत्तरकी ओर पाँच मीलपर यह दिव्यदेश है। यहाँ कोलबिल्लि रामन् (विचित्र कोदण्डराम) मरकतवल्ली लक्ष्मीसमेत पुष्कलावर्तक विमानमें पूर्वाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ शुक्र पुष्करिणी है, ब्रह्म तीर्थ है। ब्रह्मा, इन्द्र, शुक्र एवं महर्षि पराशरने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और आळ्वार संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

शुक्राचार्यने इसी स्थानपर तपस्या कर अपने नेत्र पुनः प्राप्त किये थे। कथा है कि असुरराज बलिके यहाँ वामनभगवान्‌ने शुक्राचार्यके नेत्र फोड़ दिये थे। बलिके दानको रोकनेके लिये शुक्राचार्य जलके कुम्भमें घुसकर कुम्भके मुखमेंसे देख रहे थे। वामनने शुक्राचार्यके इस कृत्यको समझकर कुशको कुम्भमें डाला, जिससे शुक्राचार्यको अपने नेत्रोंसे हाथ धोना पड़ा।

सेङ्गनल्लूर—तिरुवेल्लियङ्कुडिसे एक मील उत्तर सेङ्गनल्लूर है, जहाँ श्रीपेरियवाच्चान् पिळ्ळैका जन्म हुआ था।

२१-तेरळुन्दूर (रथपात-स्थल)

मायवरम् जंकशनसे अगले कुत्तालम् स्टेशनके दक्षिणपूर्वकी ओर ३ मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ आमरुधि-अप्पन् (देवाधिराज) भगवान् सेङ्कमलवल्ली (अरुणकमलवल्ली) लक्ष्मीसमेत गरुड़-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ दर्शन-पुष्करिणी है। धर्म, उपरिचर वसु और कावेरीने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वार संत परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

ऋषियों और देवताओंके यज्ञविषयक विवादमें न्यायाधीश बनकर देवताओंका पक्ष ले लेनेके कारण जब उपरिचरवसुको ऋषियोंका कोप-भाजन बनना पड़ा, तब यहींपर उनका आकाशमार्गसे जानेवाला रथ भूमिपर गिर पड़ा था। द्राविड़ रामायणके रचयिता कवि-चक्रवर्ती कम्बका जन्म भी यहीं हुआ था।

२२-तिरुविन्दलूर (इन्द्रपुर)

मायवरम् जंकशनसे उत्तर-पूर्व ३ मीलपर यह दिव्यदेश है। यहाँ सुगन्ध-वननाथ, मरुविनिय मैन्दन्-भगवान् चन्द्रशापविमोचनवल्ली एवं पुण्डरीकवल्ली लक्ष्मीसमेत वेदचक्र विमानमें पूर्वाभिमुख होकर वीरशयन कर रहे हैं। यहाँ इन्दु पुष्करिणी है, कावेरी नदी है। चन्द्रमाने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

कहा जाता है, इन्द्र एवं चन्द्रमाको इसी स्थानपर शापसे छुटकारा मिला था।

२३-शिरुपुलियूर (व्याघ्रपुर)

पेरलम् जंकशनसे अगले स्टेशन कोल्लुमाङ्कुडिसे एक मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ अरुल्माकडल (कृपासमुद्र) भगवान् तिरुमामगल (समुद्र-कन्या) लक्ष्मीसमेत नन्दवर्धन विमानमें दक्षिणाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ अनन्त-सरोवर तथा मानस-पुष्करिणी है। महर्षि वेदव्यास एवं व्याघ्रपादने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

यहाँ भगवान्‌का बालरूपसे शेषशय्यापर शयन करना विशेष दर्शनीय है। ऐसे दर्शन अन्यत्र नहीं मिलते।

२४-तिरुक्कण्णपुरम् (श्रीकृष्णपुर, कण्वपुर)

पेरळम्‌से तिरुवारूर जानेके मार्गमें स्थित नन्निलम् स्टेशनसे पूर्वकी ओर लगभग चार मीलपर यह दिव्य देश है। यहाँ शौरिराज-भगवान् कण्णपुरनायकी (कृष्णपुर-नायकी) लक्ष्मीसमेत उत्पलावर्तक-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ नित्य पुष्करिणी है। महर्षि कण्वने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया है। आळ्वार संत श्रीशठकोप, कुलशेखर, विष्णुचित्त एवं परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

इसी स्थानमें आळ्वार संत श्रीपरकालने मन्त्रकी सिद्धि की थी। यहाँके भगवान्‌के मुखमण्डलमें चोटका चिह्न है, जिसकी कथा इस प्रकार है। कालिस्सीराम-विण्णगरम्, चित्रकूटम्, तिरुवारूर, तिरुण्णमलै आदि अनेकों विष्णु-मन्दिरोंको शैव-मन्दिरका रूप देनेवाला चोळराज कृमिकण्ठ जिन दिनों इस दिव्यदेशके ६ तलोंको तुड़वाकर उसके सामानसे तिरुमरुगल, तिरु-

पुगलूर आदि शिवालयोंका निर्माण करा रहा था, एक दिन और अरैयर (प्रबन्ध-गायक) ने इसकी चर्चा करते-करते आवेशमें आकर करताल भगवान्‌के मुखपर फेंककर मारी। गायकने कहा—'आपकी आँखोंके सामने सब कुछ हो रहा है और आप इस दुष्ट राजाको अपनी करनीका फल भी नहीं चखाते!' तुरन्त भगवान्‌के हाथके चक्रने कृमिकण्ठको मार दिया। करतालसे लगी चोटके चिह्नके अतिरिक्त भगवान्‌के हाथमें प्रयोग-चक्र है।

२५-तिरुक्कणणमङ्गै (कृष्ण मङ्गलपुर)

तिरुवारूर स्टेशनसे उत्तर-पश्चिमकी ओर एक मीलपर तिरुवारूर नगर है। वहाँसे पश्चिमकी ओर चार मील दूर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ भक्तवत्सल-भगवान् अभिषेकवल्ली लक्ष्मीसमेत उत्पल विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ दर्श-पुष्करिणी है। वरुणदेव और लोमश ऋषिने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और आळवार संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है। लोगोंका विश्वास है कि देवतालोग यहाँ स्वयं भगवदाराधना-पूजा करते हैं।

२६-तिरुक्कणणङ्कुडि (कृष्ण-कुटी)

तिरुवारूरसे पूर्वमें ८ मीलपर स्थित कीवलूर स्टेशनसे दो मील पूर्वकी ओर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ श्यामलमेनिप्पेरुमाळ (श्याम)-भगवान् अरविन्द-वल्ली लक्ष्मीसमेत उत्पल-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ रावण-पुष्करिणी है। महर्षि भृगु और गौतमने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और आळवार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

२७-तिरुनागै (नागपट्टणम्)

नेगापटम् स्टेशनसे उत्तर-पश्चिमकी ओर एक मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ सौन्दर्यराज-भगवान् सौन्दर्यवल्ली लक्ष्मीसमेत सौन्दर्य-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ सार-पुष्करिणी है। नागराज और आळवार संत श्रीपरकालने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और आळवार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

२८-कालिस्सीरामविण्णगरम् (त्रिविक्रमपुर)

शियाळी स्टेशनसे पूर्वकी ओर आध मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ ताटालन्—त्रिविक्रम-मूर्ति-भगवान् अमृतवल्ली लक्ष्मीसमेत पुष्कलावर्तक-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ चक्र तीर्थ है, शङ्ख पुष्करिणी है। महर्षि अष्टावक्रने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळवार संत परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

अवतारकालमें श्रीराघवेन्द्र इस स्थलमें पधारे थे।

२९-तिरुवालि-तिरुनगरी (परिरम्भपुर)

यह दिव्यदेश शियाळी स्टेशनसे दक्षिण-पूर्वकी ओर छः मीलपर स्थित है। यहाँ सुन्दरबाहु-भगवान् अमृतवल्ली लक्ष्मीसमेत अष्टाक्षर-विमानमें पश्चिमाभिमुख होकर विराजमान हैं। यहाँ इलाक्षणी और आह्लादिनी पुष्करिणी हैं। प्रजापति एवं आळवार संत परकालने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा संत परकालने ही इसका मङ्गलाशासन किया है। यहीं उनको अष्टाक्षर मन्त्रका उपदेश मिला था।

३०-मणिमाडक्कोइल (तिरुनागूर-नागपुरी)

कुडलूर जंकशनसे मायवरम् जंकशन जानेके मार्गमें स्थित वैदीश्वरम्-कोइल स्टेशनसे उत्तर-पूर्वकी ओर ४ मीलपर तिरुनागूरमें यह दिव्यदेश है। यहाँ नर-नारायण भगवान् पुण्ढरीकवल्ली लक्ष्मीसमेत प्रणव-विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ इन्द्र-पुष्करिणी एवं रुद्र-पुष्करिणी हैं। एकादश रुद्र तथा देवेन्द्रने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळवार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

३१-वैकुण्ठविण्णगरम् (वैकुण्ठपुर)

यह दिव्यदेश भी तिरुनागूरमें ही स्थित है। यहाँ श्रीवैकुण्ठनाथ पुण्डरीकाक्ष-भगवान् वैकुण्ठवल्ली लक्ष्मीसमेत अनन्तसत्यवर्धक-विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ लक्ष्मी-पुष्करिणी, उत्तङ्क-पुष्करिणी तथा विरजा हैं। उत्तङ्क मुनि तथा उपरिचरवसुने दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळवार संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

३२-अरिमेयविण्णगरम् (नभपुर)

यह दिव्यदेश भी तिरुनागूरमें ही है। यहाँ कूडमाडकूत्तप्पेरुमाल् (घटनर्तक)-भगवान् अरुणकमल-वल्ली लक्ष्मीसमेत उत्सृङ्ग विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। कोटितीर्थ और अमुद (अमृत)-तीर्थ यहाँ हैं। उत्तङ्क मुनिने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळवार संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

३३-वण्पुरुषोत्तमम् (पुरुषोत्तम)

यह दिव्यदेश भी तिरुनागूरमें ही है। यहाँ पुरुषोत्तम-भगवान् पुरुषोत्तम-नायकीसमेत सज्जीविग्रह विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ क्षीराब्धि-

पुष्करिणी है। उपमन्युने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळवार संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

३४-सेम्पोन्सेय्-कोइल (स्वर्णमन्दिर)

यह दिव्यदेश भी तिरुनागूरमें ही है। यहाँ स्वर्णरङ्गनाथ-भगवान् अल्लिमामलर् लक्ष्मीसमेत कनक विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ कनकतीर्थ है, नित्य-पुष्करिणी है। रुद्रदेवताने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

३५-तिरुत्तेट्रियम्बलम् (लक्ष्मी-रङ्गनाथ)

यह दिव्यदेश भी तिरुनागूरमें ही है। यहाँ सेङ्कण्ममाल् (अरुणाक्ष)-भगवान् सेङ्कमलवल्ली (अरुणकमलवल्ली) लक्ष्मीसमेत वेद विमानमें पूर्वाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ सूर्य-पुष्करिणी है। लक्ष्मी एवं शेषने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

३६-तिरुमणिक्कूडम् (मणिकूट)

यह दिव्यदेश तिरुनागूरसे आधे मील पूर्व स्थित है। यहाँ मणिकूटनायक-भगवान् तिरुमकळ लक्ष्मीसमेत मणिकूट विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ चन्द्रपुष्करिणी है। गरुड़ और चन्द्रमाने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

३७-तिरुक्कावलम्पाडि (तालवन)

यह दिव्यदेश तिरुमणिक्कूटम्से पूर्वकी ओर तीन मीलपर स्थित है। यहाँ गोपालकृष्ण-भगवान् रुक्मिणी-सत्यभामासमेत स्वयम्भू विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ पद्म-पुष्करिणी तीर्थ है। विष्वक्सेन, मित्रदेवता तथा रुद्र देवताने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

३८-तिरुद्देवनार-तोकै (कीळैच्चालै-देवनगर)

यह दिव्यदेश तिरुनागूरसे उत्तरकी ओर आध मीलपर है। यहाँ देवनायक-भगवान् कडलमकल (समुद्रकन्या) लक्ष्मीसमेत शोभन विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। शोभनपुष्करिणी है। महर्षि वसिष्ठने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

३९-तिरुवेळ्ळक्कुळम् (श्वेतहृद)

यह दिव्यदेश तिरुद्देवनार-तोकैसे पश्चिमकी ओर आध मीलपर है। यहाँ कृष्णनारायण-भगवान् पूर्वार्ति-रुमकल लक्ष्मीसमेत तत्त्वोदक विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ श्वेत-पुष्करिणी है। रुद्रदेवता तथा इक्ष्वाकुवंशीय श्वेतराजने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

४०-पार्थन्पळ्ळि (पार्थस्थल)

यह दिव्यदेश तिरुनागूरसे दक्षिण-पूर्वकी ओर दो मीलपर स्थित है। यहाँ कमलनयन-भगवान् तामरैनायकी (पद्मनायकी) लक्ष्मीसमेत पश्चिमाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ शङ्ख-पुष्करिणी है। वरुण देवता, एकादश रुद्र तथा पार्थ अर्जुनने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

४१-तलैच्चङ्कनाण्मदियम्-तलैच्चंकाडु (शङ्खपुर)

यह दिव्यदेश पार्थन्पळ्ळिसे पश्चिमकी ओर तीन मीलपर है। यहाँ नाण्मदियप्पेरुमाळ वेळसूडप्पेरुमाळ (चन्द्रपापविमोचन चन्द्रकान्त)-भगवान् तलैच्चंग-नाच्चियार सेङ्कमलवल्ली (अरुणकमलवल्ली) लक्ष्मीसमेत चन्द्र-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ चन्द्र-पुष्करिणी है। चन्द्रदेव एवं समस्त देववृन्दने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया है तथा आळवार संत भूतयोगी तथा परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

४२-तिल्लै-तिरुचित्रकूटम् (चिदम्बरम्)

यह दिव्यदेश चिदम्बरम् स्टेशनसे उत्तर-पश्चिमकी ओर एक मीलपर स्थित है। यहाँ गोविन्दराज-भगवान् पुण्डरीकवल्ली लक्ष्मीसमेत सात्त्विक-विमानमें पूर्वाभिमुख होकर शयन कर रहे हैं। यहाँ पुण्डरीक-सरोवर है। देवदेव शंकरने, ३००० दीक्षितोंने तथा महर्षि कण्वने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळवार कुलशेखर एवं श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

४३-तिरुक्कुडल (मथुरा)

यह दिव्यदेश मदुरा जंकशनसे १ मील पूर्वमें स्थित है। यहाँ कुडलळगर (सुन्दरराज)-भगवान् बकुलवल्ली, मरकतवल्ली, वरगुणवल्ली एवं मधुरवल्ली लक्ष्मियोंसमेत अष्टाङ्ग-विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ चक्रतीर्थ है। हेम-पुष्करिणी है। महर्षि भृगु, शौनक आदि ऋषीश्वर एवं आळवार विष्णुचित्तने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळवार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

४४-तिरुमोहूर (माहूर)

यह दिव्यदेश मदुरासे उत्तर-पूर्वकी ओर ७ मील-

पर स्थित है। यहाँ कालमेघ-भगवान् मोकूरवल्ली (मोहूरवल्ली) एवं मेघवल्ली लक्ष्मियोंसमेत केतकी-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ क्षीराब्धि-पुष्करिणी है। ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र आदि देवताओंने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वार श्रीशठकोप एवं श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

यहाँ मोहिनी-वेश धारणकर भगवान्ने देवताओंको अमृत वितरित किया था। कहा जाता है इसके बाद देवताओंकी प्रार्थनाके अनुसार भगवान्ने यह कालमेघरूप धारण किया था।

४५-तिरुमालिरंचोलै (वृषभाद्रि)

यह दिव्यदेश मदुरासे उत्तर-पूर्वकी ओर १२ मीलपर स्थित है। यहाँ अळगर माललंकारर्—सुन्दरबाहु-भगवान् सुन्दरवल्ली लक्ष्मीसमेत सोम-सुन्दर-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ शिलम्ब नदी है, वृषभ पर्वत है तथा चन्दन वृक्ष है। धर्मदेवता तथा पाण्ड्यराज मलयध्वजने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळ्वार संत भूतयोगी, महायोगी, शठकोप, विष्णुचित्त एवं परकालने इस दिव्यदेशका मङ्गलाशासन किया है।

४६-तिरुम्मेय्यम् (सत्यगिरि)

त्रिचिनापळ्ळिसे मानामदुरै जानेके मार्गमें तिरुमायम् स्टेशन है। यहाँ सत्यगिरिनाथ-भगवान् उय्यवन्दाल् लक्ष्मीसमेत सत्यगिरि-विमानमें दक्षिणाभिमुख खड़े होकर विराजमान हैं। यहाँ सत्यगिरि है, सत्यतीर्थ है, कदम्ब-पुष्करिणी है। सत्यदेवताने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

४७-तिरुक्कोट्टियूर (गोष्ठीपुर)

तिरुमायम् स्टेशनसे १५ मील दक्षिणमें स्थित तिरुप्पुत्तूरसे ५ मील दक्षिणमें यह दिव्यदेश है। यहाँ सौम्यनारायण-भगवान् तिरुमामगल (क्षीराब्धिजावल्ली) लक्ष्मीसमेत अष्टाङ्गविमानमें पूर्वाभिमुख होकर खड़े, बैठे, चलते, लेटे, नाचते इन सभी रूपोंमें दर्शन दे रहे हैं। यहाँ देव-पुष्करिणी है। कदम्ब महर्षि एवं देवेन्द्रने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वार संत भूतयोगी, महायोगी, भक्तिसार, विष्णुचित्त एवं परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

महर्षि कदम्बकी महिमाके फलस्वरूप यह स्थल ऐसा था, जिसपर असुरराज हिरण्यकशिपुका कोई अधिकार न था। अतएव दैवीसम्पत्तिवालोंका जमाव यहाँ हुआ था और इसी जमावके कारण इस स्थलका नाम गोष्ठीपुर पड़ गया। अष्टाक्षर मन्त्रका प्रतिनिधित्व करनेवाला यहाँ अष्टाङ्गविमान है, प्रणवके तीन अक्षरके समान इस विमानमें तीन तल हैं। नीचे सौम्यनारायण-भगवान् शयन कर रहे हैं, मध्यमें भगवान् खड़े हुए हैं और ऊपर परमपदनाथ आसीन हैं। सौम्यनारायण-भगवान्के नीचेकी ओर श्रीकृष्ण नृत्य कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त दो नृसिंहविग्रह हैं, जिनमें एक हिरण्यकशिपुको रोक रहे हैं और दूसरे उसका वध कर रहे हैं।

द्राविडवेदके आरम्भमें आनेवाले आळ्वार संत विष्णुचित्त-विरचित मङ्गलाशासनका इसी दिव्यदेशके साथ मूल सम्बन्ध है। यहीं श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीका अवतार-स्थल है। और यहीं श्रीभाष्यकारने श्रीगोष्ठीपूर्णसे रहस्यार्थका उपदेश ग्रहणकर दयापूर्वक उपदेश दिया था।

४८-तिरुप्पुल्लाणी (दर्भशयन)

यह दिव्यदेश रामनाथपुर स्टेशनसे पाँच मील दक्षिणकी ओर स्थित है। यहाँ कल्याण-जगन्नाथ देवस्सिलैयार भगवान् कल्याणवल्ली एवं देवस्सिलै लक्ष्मियोंके साथ कल्याण-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ हेमतीर्थ है, शुक्रतीर्थ है, अश्वत्थ वृक्ष है और दर्भारण्य है। महर्षि दर्भारणि एवं अश्वत्थ नारायणने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळवार संत श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

यहाँपर भगवान् श्रीरामने दर्भपर शयन किया था।

४९-तिरुत्तंकालूर (शीतोद्यानपुर)

शिवकाशी स्टेशनसे उत्तरकी ओर दो मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ अप्पन्, तणकालप्पन्-भगवान् अन्ननायकी और अनन्तनायकी लक्ष्मियोंसमेत देवचन्द्र विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ पापविनाश-तीर्थ है। पाण्ड्यराज शल्य, श्रीवल्लभ एवं व्याघ्र ऋषिने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वार संत भूतयोगी और परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

५०-श्रीविल्लिपुत्तूर

बिरुधुनगरसे तेन्काशी जानेके मार्गमें श्रीविल्लिपुत्तूर स्टेशन है। इसके उत्तर-पश्चिमकी ओर एक मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ वटपत्रशायी एवं रङ्गमन्नार-भगवान् आण्डाळ (गोदाम्बा) लक्ष्मी एवं गरुड़समेत संचन (मानस) विमानमें पूर्वाभिमुख क्रमशः वटपत्रपर शयन करते हुए एवं खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ तिरुमुक्कुलतीर्थ है। महर्षि मण्डूक तथा आळ्वार

विष्णुचित्तने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळ्वार संत विष्णुचित्तने इसका मङ्गलाशासन किया है। यह संत विष्णुचित्त एवं गोदाका अवतारस्थल है।

५१-श्रीवरमङ्गै

तिरुनेल्वेलि (तिनेवेली) से उत्तरकी ओर २० मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ वानमामलै पेरुमाळ (देवनायक तोताद्रि) भगवान् वरमङ्गै लक्ष्मीसमेत नन्दवर्धन-विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। श्रीदेवी, भूदेवी, नीलादेवी, विष्वक्सेन, गरुड़, चामरग्राहिणी, चन्द्रमा और सूर्य भी यहाँ हैं। सेत्तुतामरै और इन्द्र-पुष्करिणी यहाँ हैं। पितामह ब्रह्मा, देवेन्द्र, महर्षि भृगु, लोमश एवं मार्कण्डेयने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार श्रीशठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

क्षेत्र-माहात्म्यसे ज्ञात होता है कि इस स्थलके आराध्यदेवको भूमिमेंसे खोदकर बाहर निकालते समय भगवान्के शरीरमें फावड़ा स्पर्श कर गया था। उसकी स्मृतिमें प्रतिदिन भगवान्को तैल-स्नान कराया जाता है। आळ्वार श्रीशठकोप इस दिव्यदेशमें भगवान्की चरणपादुकाके अन्तर्भूत होकर विराजमान हैं। उनका स्वतन्त्र दिव्य मङ्गल-विग्रह नहीं है। इसीलिये श्रीसम्प्रदायके सभी मन्दिरोंमें भगवान्की चरणपादुकाओंको शठकोपके नामसे दर्शनार्थियोंके मस्तकपर रखा जाता है। श्रीतोताद्रि-मठका केन्द्र यहीं है।

५२-तिरुक्कुरुंकुडि (कुरङ्गनगर)

तोताद्रि (वानमामलै) से दक्षिण-पश्चिमकी ओर ८ मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ वैष्णवनम्बि, मलैमेलनम्बि, निन्रनम्बि, इरुन्दनम्बि, तिरुप्पाल्कडलनम्बि-भगवान् कुरुङ्कुडिवल्ली लक्ष्मीसमेत पञ्चकेत विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। शङ्करने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वार संत भक्तिसार, शठकोप, विष्णुचित्त एवं श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

यहाँ श्रीभाष्यकार उपदेशमुद्रामें विराजमान हैं। कहा जाता है, भगवान्ने स्वयं श्रीभाष्यकारसे रहस्यार्थ श्रवण किया था और इस प्रकार श्रीभाष्यकारके सार्वभौम आचार्यत्वकी प्रतिष्ठा की थी।

५३-तिरुक्कुरुकूर
(आळ्वार-तिरुनगरी—श्रीनगरी)

तिरुनेल्वेली और तिरुचेन्दूरके मध्यमें आळ्वार-तिरुनगरी स्टेशनसे पश्चिमकी ओर एक मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ आदिनाथ भगवान् पोलिन्दनिन्न पेरुमाळ आदिनाथ-नायकीके साथ गोविन्द विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ ताम्रपर्णी नदी है, ब्रह्मतीर्थ है।

पितामह ब्रह्मा, आळ्वार संत शठकोप एवं मधुरकविने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वारशिरोमणि शठकोपिने इसका मङ्गलाशासन किया है।

विष्णुभगवान्के नाभिकमलसे ब्रह्माके उत्पन्न होनेपर यह आकाशवाणी हुई थी 'हे क (ब्रह्मा)! कुरु (तपस्या करो)।' उसीकी स्मृतिमें इस स्थलका नाम कुरुकापुरी भी है। यह आळ्वार श्रीशठकोप तथा श्रीवरवरमुनीन्द्रका अवतारस्थल है।

५४-तुलैविवल्लिमङ्गलम् (धन्विमङ्गल)

दो दिव्यदेशोंका यह क्षेत्र आळ्वार-तिरुनगरी स्टेशनसे पूर्वकी ओर दो मीलपर है। यहाँ (१) देवनाथ-भगवान् करुन्दडङ्कण्णि लक्ष्मीसमेत कुमुद विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े हुए दर्शन दे रहे हैं और (२) अरविन्द-लोचन-भगवान् कुमुदाक्षिवल्ली लक्ष्मीसमेत कमलाकृत विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ वरुणतीर्थ है, ताम्रपर्णी नदी है। इन्द्र, वायु एवं वरुणने इन दिव्यदेशोंका साक्षात्कार और आळ्वार संत शठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

५५-श्रीवैकुण्ठम्

आळ्वार-तिरुनगरी स्टेशनसे अगला स्टेशन श्रीवैकुण्ठम् है। यहाँसे उत्तरकी ओर आध मीलपर यह दिव्यदेश है। यहाँ कल्लप्पिरान् श्रीवैकुण्ठनाथ-भगवान् वैकुण्ठवल्ली लक्ष्मीसमेत चन्द्र-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ ताम्रपर्णी नदी है, पृथुतीर्थ है। देवराज इन्द्र और चक्रवर्ती पृथुने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार शठकोपने इसका मङ्गलाशासन किया है।

५६-वरगुणमङ्गै (वरगुण)

यह दिव्यदेश श्रीवैकुण्ठम्से पूर्वकी ओर एक मीलपर स्थित है। यहाँ विजयासन-भगवान् वरगुणलक्ष्मीसमेत विजयकोटि विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ देव-पुष्करिणी है, अग्नितीर्थ है। अग्निदेवने इसका साक्षात्कार और आळ्वार श्रीशठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

५७-तिरुप्पुलिंकुडि (चिंचाकुटी)

यह दिव्यदेश वरगुणमङ्गैसे पूर्वकी ओर एक मीलपर स्थित है। यहाँ कार्याच्चनवेन्दन् (विरोधिनिरासक भूमिपाल)-भगवान् मलर्मङ्गै नाच्चियार (पद्मजावल्ली)

लक्ष्मीसमेत वेदसार विमानमें पूर्वाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ वरुणतीर्थ है, निर्ऋतितीर्थ है। निर्ऋति, वरुण एवं धर्मने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और श्रीशठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

५८-तिरुक्कुळन्दै (पेरुंकुळम्-बृहत्तडाग)

श्रीवैकुण्ठम् स्टेशनसे उत्तर-पूर्वकी ओर सात मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ मायकूत्तन् (चोरनाट्य)-भगवान् कुलन्दैवल्ली (घटवल्ली) लक्ष्मीसमेत आनन्द निलय विमानमें खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ पेरुंकुळम् (बृहत्तडाग)-तीर्थ है। बृहस्पतिने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और श्रीशठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

५९-तिरुप्पेरै (श्रीनामपुर)

आळ्वार-तिरुनगरीके दक्षिण-पूर्वकी ओर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ मकरनेडुङ्कुलैक्कादन् पेरुमाल-निगरिल मुगिलवण्णन् पेरुमाळ (मकरायितकर्णपाश) भगवान् पुलिङ्कुडिवल्लि नाच्चियार (मकरायितकर्णपाश-नायकी) लक्ष्मीसमेत भद्र विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ शुक्र-पुष्करिणी है। पितामह ब्रह्मा, ईशान रुद्र और शुक्रने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वार संत शठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

६०-तिरुक्कोलूर (महानिधिपुर)

यह दिव्यदेश तिरुप्पेरैसे पश्चिमकी ओर दो मीलपर स्थित है। यहाँ वैत्तमनिधि (निक्षेपनिधि)-भगवान् कोल्लूरवल्ली लक्ष्मीसमेत श्रीकर विमानमें पूर्वाभिमुख होकर शेष-शय्यापर शयन कर रहे हैं। कुबेर और आळ्वार संत मधुरकविने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा श्रीशठकोपने इसका मङ्गलाशासन किया।

६१-तिरुवनन्तपुरम् (अनन्तशयनम्)

यह दिव्यदेश तिरुवनन्तपुर (तिरुवेन्द्रम्) त्रिवेन्द्रम् स्टेशनसे पूर्वकी ओर दो मीलपर स्थित है। यहाँ अनन्तपद्मनाभ-भगवान् हरिलक्ष्मीसमेत हेमकूट विमानमें पूर्वाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ पद्मतीर्थ है, मत्स्यतीर्थ है। रुद्र, चन्द्रमा एवं देवराज इन्द्रने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वार-शिरोमणि शठकोपने इसका मङ्गलाशासन किया है।

तिरुवनन्तपुर तिरुवांकूर (त्रावणकोर)-कोचिन राज्यकी राजधानी है। यह राज्य अनन्तपद्मनाभ-भगवान्‌का राज्य माना जाता रहा।

जनार्दनम्— तिरुवनन्तपुर-क्किलनके मार्गमें वरकला स्टेशन है। यहाँ जनार्दनभगवान् यज्ञवर्द्धन विमानमें पूर्वाभिमुख विराजमान हैं।

६२-तिरुवाट्टारु (परशुरामक्षेत्र)

तिरुवनन्तपुरसे दक्षिण-पूर्व २४ मीलपर मार्तण्ड है। इसके उत्तर चार मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ आदिकेशवभगवान् मरकतवल्ली लक्ष्मीसमेत अष्टाङ्ग विमानमें पश्चिमाभिमुख शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ कडलवाय (क्षीराब्धि) तीर्थ है, रामतीर्थ है। चन्द्रमा और परशुरामने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळ्वार-शिरोमणि शठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

६३-तिरुवण्परिसारम् (रम्यस्थल)

तिरुवाट्टारुके पश्चिमकी ओर आठ मीलपर तक्कलै (पद्मनाथपुर) है। इसके दक्षिण-पूर्व १० मीलपर नागरकोइल है। इसके उत्तर-पूर्व दो मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ तिरुवाल मार्बन (रम्यवक्षःस्थल) वेङ्कटाचलपति भगवान् कमलवल्ली लक्ष्मीसमेत इन्द्रकल्याण विमानमें पूवाभिमुख आसीन हैं। यहाँ लक्ष्मीतीर्थ है। विन्दादेवी और कारि राजाने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळ्वार-शिरोमणि शठकोपने मङ्गलाशासन किया है। यहाँका समुद्र-स्नान बड़ा प्रशस्त माना गया है। कन्याकुमारी (कुमारी-अन्तरीप) यहाँसे कुल २० मील दक्षिण है।

६४-तिरुच्चेंकुनूर (सौरभपुर)

तिरुवनन्तरपुर विरुधुनगर रेलवे-मार्गमें कोट्टारकरा स्टेशन है। इससे ३० मील पश्चिम यह दिव्यदेश स्थित है।

यहाँ बालकृष्णभगवान् सेङ्कमलवल्ली (अरुण-कमलवल्ली) लक्ष्मीसमेत जगज्ज्योतिमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ तिरुचिट्टारु (चित्रा नदी) है, शङ्खतीर्थ है। पद्मासुरके वधार्थ शङ्करने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार-शिरोमणि शठकोपने इसका मङ्गलाशासन किया है।

६५-कुट्टनाडु (शार्दूलनगर)

यह दिव्यदेश तिरुच्चेङ्कुनूरसे दक्षिणकी ओर तीन मीलपर स्थित है। यहाँ मायप्पिगन् (आदिनाथ)-भगवान् पोर्कोटि (स्वर्णतन्तुवल्ली) लक्ष्मीसमेत पुरुषोत्तम विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ पूङ्कुनै (पापमोचन) तीर्थ है। सप्तर्षियोंने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळ्वार संत शठकोप एवं परकालने मङ्गलाशासन किया है।

६६-तिरुवण्वण्डूर

यह दिव्यदेश तिरुप्पुलियूरसे उत्तरकी ओर ३ मील-पर स्थित है। यहाँ पाम्पणैयप्पन् (पापनाशन)-भगवान् कमलवल्ली लक्ष्मीसमेत वेदालय विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ पापनाशन-तीर्थ है। महर्षि मार्कण्डेय एवं नारदने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळ्वार-शिरोमणि शठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

६७ तिरुवल्ळवाळ (केरलपुर)

यह दिव्यदेश तिरुवण्वण्डूरसे उत्तरकी ओर ४ मीलपर स्थित है। यहाँ कोलप्पिरान् (गोपालकृष्ण)- भगवान् सेल्वतिरुकोलुन्दु (बालकृष्ण-नायकी) लक्ष्मी-समेत चतुरङ्ग विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ घण्टाकर्ण-तीर्थ है, मणिमाला नदी है। घण्टाकर्णने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार-शिरोमणि शठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

६८-तिरुक्कडित्तानम् (गन्धनगर)

यह दिव्यदेश तिरुवल्ळवाळसे ७ मील उत्तरकी ओर स्थित है। यहाँ अद्भुत-नारायण कल्पवल्ली लक्ष्मीसमेत पुण्यकोटि विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ भूमितीर्थ है। महाराज रुक्माङ्गदने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळ्वार-शिरोमणि शठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

६९-तिरुवारन्विलै आरन्मुलै (समृद्धिस्थल)

यह दिव्यदेश तिरुच्चेङ्गनूरसे ७ मीलपर है। यहाँ तिरुक्कुरलप्पन् (शेषभोगासन)-भगवान् पद्मासना लक्ष्मी-समेत वामन विमानमें उत्तराभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ वेदव्यास-सरोवर और पम्पा नदी है। ब्रह्माने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया, अर्जुनने प्रतिष्ठा की और आळ्वार-शिरोमणि शठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

७०-तिरुक्काट्करै (मरुत्तट)

एर्णाकुलम्-शोरनूर रेलवे-मार्गमें इडैप्पल्ली स्टेशन है। इसके पूर्व दो मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ काट्करै-अप्पन् (मरुत्तटाधीश) भगवान् पेरुञ्चेल्पनायकी लक्ष्मीसमेत पुष्कल विमानमें दक्षिणाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ कपिल-तीर्थ है। महर्षि कपिलने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार संत शठकोपने मङ्गलाशासन किया है।

७१-तिरुमूळिक्कलम् (श्रीमूलिधाम)

एर्णाकुलम्-शोरनूर रेलवे-मार्गमें स्थित अङ्गमाली स्टेशनसे पश्चिमकी ओर ६ मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ तिरुमूळिकलत्तान (मूलिधामाधीश)-भगवान् मधुर वेणी लक्ष्मीसमेत सौन्दर्य विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ पेरुङ्कुलम् (बृहत्तडाग) तीर्थ है। महर्षि हारीतने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळवार संत शठकोप एवं परकालने मङ्गलाशासन किया है।

७२-विट्टुवक्कोडु (विद्वत्पुर)

शोरनूर-कालीकट रेलवे-मार्गमें स्थित पट्टाम्बि स्टेशनसे पश्चिमकी ओर दो मीलपर यह दिव्यदेश है। यहाँ उय्यवन्द-पेरुमाळ (विद्याह्वय)-भगवान् विट्टुवक्कोडुवल्ली (विद्यावर्धिनी) लक्ष्मीसमेत तत्त्वदीप विमानमें दक्षिणाभिमुख शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ चक्रतीर्थ है। महाराज अम्बरीषने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार कुलशेखरने मङ्गलाशासन किया है।

७३-तिरुनावाय् (नवपुर)

शोरनूर-कालीकट रेलवे-मार्गमें एडक्कोलम् स्टेशनसे दक्षिण एक मीलपर एक दिव्यदेश स्थित है। यहाँ नारायणभगवान् मलरमङ्गै (पुष्पवल्ली) लक्ष्मीसमेत वेद विमानमें दक्षिणाभिमुख आसीन हैं। यहाँ सेङ्कमलसरम् (अरुणकमल सरोवर) है। लक्ष्मी और गजेन्द्रने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वार संत शठकोप एवं परकालने मङ्गलाशासन किया है।

७४-तिरुवयिन्दिरपुरम् (अहीन्द्रपुर)

विल्लिपुरम्-तञ्जौर रेलवेमार्गमें कडलूर (नया नगर) स्टेशनसे तीन मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ देवनायक-भगवान् वैकुण्ठ-नायकी लक्ष्मीसमेत चन्द्र विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ गरुड़ नदी है, शेषतीर्थ है। चन्द्रमा और गरुड़ने भगवान्का साक्षात्कार किया और आळ्वार संत परकालने मङ्गलाशासन किया है। आचार्य श्रीवेदान्तदेशिकने इसी दिव्यदेशके आराध्यदेवकी स्तुतिमें 'देवनायकपञ्चाशत्' की रचना की है।

इस दिव्यदेशमें भगवत्सन्निधिके पृष्ठभागमें वह औषधगिरि है, जहाँ आचार्य श्रीवेदान्तदेशिकने श्रीहयग्रीवभगवान्का साक्षात्कार किया था।

७५-तिरुक्कोवलूर (देहलीपुर)

विल्लुपुरम्-काटपाडि रेलवे-मार्गमें तिरुकोइलूर स्टेशनसे एक मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ आयनार—

त्रिविक्रमभगवान् पूङ्कबल-नाच्चियार लक्ष्मीसमेत श्रीकर विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ कृष्ण-तीर्थ है। मृकण्डु मुनि और बलि चक्रवर्तीने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार संत सरोयोगी, भूतयोगी तथा परकालने मङ्गलाशासन किया है।

सरोयोगी, भूतयोगी एवं महायोगीने सम्मिलित रूपमें यहीं भगवान्का साक्षात्कार किया, मङ्गलाशासन आरम्भ किया और परमपदकी यात्रा की। आचार्य वेदान्तदेशिकने भी इस दिव्यदेशके भगवान्का मङ्गलाशासन देहलीशस्तुतिके द्वारा किया है।

७६-तिरुवल्लिक्केणि (वृन्दारण्यक्षेत्र)

यह दिव्यदेश मद्रास नगरमें है। यहाँ—

(१) पार्थसारथिभगवान् रुक्मिणी, लक्ष्मी, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, बलराम एवं सात्यकिके साथ आनन्दविमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर विराजमान हैं। महर्षि वेदव्यासने इनकी प्रतिष्ठा और महर्षि आत्रेयने इनकी आरम्भमें आराधना की है। अर्जुन, महाराज सुमति तथा तोण्डैमान् चक्रवर्तीने इनका साक्षात्कार किया है।

(२) मन्नाथभगवान् वेदवल्ली लक्ष्मीसमेत प्रणव विमानमें पूर्वाभिमुख शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। महर्षि भृगुने इनका साक्षात्कार किया है।

(३) तेल्लियसिंगर (नृसिंह)-भगवान् दैविक विमानमें पश्चिमाभिमुख आसीन हैं। महर्षि अत्रि और जाबालिने भगवान्का साक्षात्कार करके मोक्ष प्राप्त किया।

(४) चक्रवर्ती-तिरुमकन् (राम) भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न एवं जानकीके साथ पुष्पक विमानमें दक्षिणाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। महर्षि मधुमान्ने इनका साक्षात्कार किया है।

(५) देवपेरुमाळ—गरुड़ारूढ़ भगवान् शेष विमानमें पूर्वाभिमुख दर्शन दे रहे हैं। महर्षि सप्तरोमाने इनका साक्षात्कार किया है।

यहाँ इन्द्रतीर्थ, सोमतीर्थ, मीनतीर्थ, अग्नितीर्थ एवं विष्णुतीर्थ मिलकर कैरविणी सरोवरके रूपमें हैं। इसी दिव्यदेशमें महर्षि भृगु, अत्रि, मरीचि, मार्कण्डेय, सुमति, सप्तरोमा एवं जाबालिने तपस्या की है। आळ्वार संत महायोगी, भक्तिसार एवं परकालने इस दिव्यदेशका मङ्गलाशासन किया है।

७७-तिरुखून्नूर (तिन्ननूर)

मद्रास-अरकोणम् रेलवे-मार्गमें तिन्ननूर स्टेशन है। इससे एक मील दक्षिण यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ भक्तवत्सल भद्राविभगवान् एन्नैपेत्त तायार (जगज्जननी) लक्ष्मीसमेत श्रीनिवास—विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ वरुण-पुष्करिणी है। वृत्तक्षीर नदी है। वरुणदेवने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और संत श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

७८-तिरुवेव्वलूर (वीक्षारण्य)

मद्रास-अरकोणम् रेलवे-मार्गमें त्रिवेल्लूर स्टेशन है। उससे उत्तरकी ओर २ मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ वीरराघवभगवान् कनकवल्ली लक्ष्मीसमेत विजयकोटि विमानमें पूर्वाभिमुख शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ हृत्तापनाशिनी-तीर्थ है। महर्षि शालिहोत्रने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और आळ्वार संत भक्तिसार एवं श्रीपरकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

७९-तिरुक्कडिकै (घटिकाचल)

अरकोणम्-वाजारोड रेलवे-मार्गके मध्यमें स्थित शोलिंगूर स्टेशनसे उत्तर-पश्चिमकी ओर ८ मीलपर यह दिव्यदेश है। यहाँ पहाड़पर योग-नरसिंहभगवान् अमृतवल्ली लक्ष्मीसमेत सिंहगोष्ठ विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ अमृततीर्थ है। पहाड़के नीचे उत्सवार्थ अक्कारक्कनि-भगवान् हैं। तक्काल-पुष्करिणी है। हनुमान्ने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और महायोगी एवं श्रीपरकालने मङ्गलाशासन किया है।

प्रेतबाधा एवं व्याधि-निवृत्तिका यहाँ प्रत्यक्ष चमत्कार देखनेको मिलता है। पहाड़पर एक ओर नृसिंहभगवान् और दूसरी ओर हनुमान्जीका मन्दिर है।

८०-तिरुनीर्मलै (तोयाद्रि)

मद्रास (एगमूर)-चेंगलपट रेलवे-मार्गके पल्लावरम् स्टेशनसे दक्षिणकी ओर तीन मीलपर यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ—

(१) नीर्वर्णन् (नीलमेघवर्ण)-भगवान् अणि-मामलर्मङ्गैत्तायार (पद्महस्ता) लक्ष्मीसमेत पुष्पक विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ स्वर्ण-पुष्करिणी है। महर्षि वाल्मीकिने इनका साक्षात्कार किया है।

(२) रङ्गनाथभगवान् रङ्गनायकीसमेत तोयगिरि विमानमें दक्षिणाभिमुख शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ क्षीर-पुष्करिणी है। महर्षि भृगु एवं मार्कण्डेयने इनका साक्षात्कार किया है।

(३) शान्तनृसिंहभगवान् पूर्वाभिमुख शान्त विमानमें आसीन हैं। यहाँ कारुण्य-पुष्करिणी है। इनका साक्षात्कार प्रह्लादने किया है।

(४) उलगलन्द (त्रिविक्रम)-भगवान् ब्रह्माण्ड विभागमें विराजमान हैं। यहाँ शुद्ध-पुष्करिणी है। शङ्करने इनका साक्षात्कार किया है।

(५) चक्रवर्ती-तिरुमकन् (सम्राट्-पुत्र श्रीराम) पुष्पक-विमानमें विराजमान हैं। यहाँ स्वर्ण-पुष्करिणी है।

ये संनिधियाँ पर्वतपर हैं। इस दिव्यदेशका मङ्गलाशासन आळ्वार संत भूतयोगी और श्रीपरकालने किया है।

८१-तिरुविडवेन्दै (वाराहक्षेत्र)

मद्रास (एगमूर)-चेंगलपट रेलमार्गमें वण्डलूर स्टेशन है। इसके दक्षिण-पूर्व १६ मीलपर कोवलत्तै है, जिससे दो मील दक्षिण यह दिव्यदेश स्थित है। यहाँ भगवान् नित्य-कल्याण कोमलवल्ली-अखिलवल्ली लक्ष्मियोंसमेत कल्याण विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ कल्याणतीर्थ है। महर्षि मार्कण्डेयने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार संत परकालने मङ्गलाशासन किया है।

८२-तिरुक्कडल्मलै

यह दिव्यदेश चेंगलपटसे दक्षिण-पूर्वमें ९ मीलपर स्थित तिरुक्कुलकुन्रम्से उत्तरकी ओर ९ मीलपर है। यहाँ स्थलशयन-भगवान् नीलमङ्गै लक्ष्मीसमेत गगनाकृति विमानमें पूर्वाभिमुख शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ गरुड नदी है। महर्षि पुण्डरीकने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और आळ्वार संत भूतयोगी और परकालने मङ्गलाशासन किया है।

इस नगरको नरसिंहवर्मा नामक महामल्लने बसाया था। इसलिये इसको महामल्लपुर भी कहा जाता है। यही भूतयोगीका अवतारस्थल है।

८३-हस्तिगिरि

यह काञ्चीपुरम् स्टेशनसे २ मील दक्षिणमें है। यहाँ श्रीवरदराज-भगवान् पेरून्देवित्तायार लक्ष्मीसमेत पुण्यकोटि विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ अनन्त-सरोवर, शेषतीर्थ, वाराहतीर्थ, ब्रह्मतीर्थ, पद्मतीर्थ, अग्नितीर्थ और कुशलतीर्थ हैं; वेगवती नदी है। महर्षि भृगु, नारद, अनन्त शेष, गजेन्द्र और ब्रह्माने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया है। सत्ययुगमें ब्रह्माने भगवान् वरदराजकी आराधना की, त्रेतामें गजेन्द्रने और द्वापरमें बृहस्पतिने आराधना की है। कलियुगमें आदिशेष भगवान्‌की आराधना करते हैं। श्रीवरदराज-भगवान्‌के नीचे गुफामें अलकिय सिंह पेरुमाळ (नृसिंह)-भगवान् हरिद्रादेवी लक्ष्मीसमेत गुह विमानमें पश्चिमाभिमुख आसीन हैं। बृहस्पतिने इनका साक्षात्कार किया है।

हस्तिगिरि-माहात्म्यसे ज्ञात होता है कि पितामह ब्रह्माके यज्ञद्वारा यज्ञमें श्रीवरदराज भगवान्‌का प्रादुर्भाव हुआ। श्रीवैष्णव-सम्प्रदायके तीन प्रमुख दिव्यदेशोंमें श्रीरङ्गम्, एवं तिरुपति (बालाजी) के साथ इस दिव्यदेशकी गणना की जाती है। आळ्वार संत भूतयोगी और परकालने इस दिव्यदेशका मङ्गलाशासन किया है। आळ्वार-शिरोमणि शठकोपने वरदराज-भगवान्‌की चर्चा की है। श्रीकाञ्चीपूर्णके देवराजाष्टक, श्रीवत्सचिह्न मिश्रके वरद राजस्तव और श्रीवेदान्तदेशिकके वरदराजपञ्चाशत्‌में इस दिव्यदेशके आराध्यदेवकी स्तुति की गयी है।

८४-तिरुवेक्का (यथोक्तकारी)

श्रीवरदराजभगवान्‌की संनिधिसे पौन मील पश्चिम यह दिव्यदेश है। यहाँ श्रीयथोक्तकारिभगवान् कोमलवल्ली लक्ष्मीसमेत वेदसार-विमानमें पश्चिमाभिमुख होकर शेषशय्यापर शयन कर रहे हैं। यहाँ सरोयोगी-पुष्करिणी है। ब्रह्मा, सरस्वती, सरोयोगी और कनिष्ठ-कृष्णने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और संत सरोयोगी, महायोगी, भक्तिसार, शठकोप एवं परकालने मङ्गलाशासन किया है। सरोयोगीका यह अवतारस्थल है।

८५-अष्टभुजम्

यह श्रीवरदराजभगवान्‌की संनिधिसे पश्चिमकी ओर आध मीलपर है। यहाँ आदिकेशव चक्रधर भगवान् अलरमेलुमङ्गै लक्ष्मीसमेत गगनाकृति विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ गजेन्द्र-पुष्करिणी है। गजेन्द्रने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळ्वार संत सरोयोगी और परकालने मङ्गलाशासन किया है।

८६-तिरुत्तंका (दीपप्रकाश)

यह दिव्यदेश अष्टभुज-मन्दिरसे चौथाई मील पश्चिमकी ओर स्थित है। यहाँ विलक्कोलि पेरुमाळ (दीपप्रकाश) दिव्यप्रकाशभगवान् मरकतवल्ली लक्ष्मी-समेत श्रीकर विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ सरस्वती-तीर्थ है। सरस्वतीने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वार संत परकालने

इसका मङ्गलाशासन किया है। यह आचार्य श्रीवेदान्त-देशिकका अवतारस्थल है।

८७-वेलुक्कै (कामासिकी)

यह दिव्यदेश दीपप्रकाश-मन्दिरसे आध मीलपर है। यहाँ मुकुन्द नामक नृसिंहभगवान् वेलुनकैवल्ली (कामासिकावल्ली) लक्ष्मीसमेत कनक विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ कनकसरोवर है। महर्षि भृगुने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा महायोगी एवं परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

८८-उरगम् (त्रिविक्रम)

यह दिव्यदेश पेरिय-काञ्ची (बृहत्काञ्ची) में है। यहाँ उलगलन्द पेरुमाळ (त्रिविक्रम)-भगवान् अमुदवल्ली लक्ष्मीसमेत श्रीकर विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ नागतीर्थ है। आदिशेषने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा संत परकालने मङ्गलाशासन किया है। इस स्थलमें भगवान् उरग (सर्प) के रूपमें भी दर्शन दे रहे हैं। अतएव इसका नाम उरगम् प्रसिद्ध हुआ।

८९-नीरकम् (नीराकार)

इस दिव्यदेशके आराध्यदेव श्रीजगदीशभगवान् नीलमङ्गैवल्ली लक्ष्मीसमेत जगदीश्वर विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े हुए उरगम् दिव्यदेशके बाहरी प्राकारमें ही दर्शन दे रहे हैं। अक्रूरने इनका साक्षात्कार और संत परकालने मङ्गलाशासन किया है। यह दिव्यदेश और इसका अक्रूरतीर्थ अब लुप्त हो गया है।

९०-कारकम्

इस दिव्यदेशके आराध्यदेव करुणाकरभगवान् पद्मामणि लक्ष्मीसमेत वामन विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े हुए उरगम् दिव्यदेशके बाहरी प्राकारमें ही दर्शन दे रहे हैं। गार्ह ऋषिने इनका साक्षात्कार किया और संत परकालने मङ्गलाशासन किया है। यह दिव्यदेश और इसका आग्रायतीर्थ अब लुप्त हो गया है।

९१-कार्वानम्

इस दिव्यदेशके आराध्यदेव कल्वर (मेघाकार)-भगवान् कमलवल्ली लक्ष्मीसमेत पुष्कल विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े हुए उरगम् दिव्यदेशके बाहरी प्राकारमें ही दर्शन दे रहे हैं। पार्वतीने इनका साक्षात्कार और संत परकालने मङ्गलाशासन किया है। यह दिव्यदेश और इसका गौरीतड़ाग अब लुप्त हैं।

९२-तिरुक्कल्वनूर

इस दिव्यदेशके आराध्यदेव आदिवराह-भगवान् अञ्जिलैवल्ली लक्ष्मीसमेत वामन विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े हुए कामाक्षीदेवीके मन्दिरमें एक ओर दर्शन दे रहे हैं। इनका साक्षात्कार अश्वत्थनारायणने और मङ्गलाशासन संत परकालने किया है। यह दिव्यदेश और इसकी नित्य-पुष्करिणी अब लुप्त हैं।

९३-पाटकम् (पाण्डवदूत)

यह दिव्यदेश पेरिय-काञ्चीमें है। यहाँ पाण्डवदूत-भगवान् रुक्मिणी-सत्यभामासमेत भद्र विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ मत्स्यतीर्थ है। महर्षि हारीत और सम्राट् जनमेजयने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया और आळ्वार संत भूतयोगी, महायोगी, भक्तिसार एवं परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

९४-निलात्तिङ्गल्तुण्डम् (चन्द्रचूड)

इस दिव्यदेशके आराध्यदेव निलात्तिङ्गल्तुण्डत्तान् (चन्द्रचूड)-भगवान् नेरोरुवरिल्लावल्ली लक्ष्मीसमेत पुरुषसूक्त विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े होकर एकाम्बरेश्वर शिव-मन्दिरमें दर्शन दे रहे हैं। शिव-पार्वतीने इनका साक्षात्कार और आळ्वार संत परकालने मङ्गलाशासन किया है। यह दिव्यदेश और इसकी चन्द्रपुष्करिणी अब लुप्त हैं।

९५-पवळवर्णम् (प्रवालवर्ण)

यह दिव्यदेश पेरिय-काञ्चीमें है। यहाँ पवलवर्णप्पेरु-माळ (प्रवालवर्ण)-भगवान् पवलवल्ली (प्रवालवल्ली) लक्ष्मीसमेत प्रवाल विमानमें पश्चिमाभिमुख आसीन हैं। यहाँ चक्रतीर्थ है। अश्विनीकुमार देवताओं एवं पार्वतीने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार तथा आळ्वार संत परकालने मङ्गलाशासन किया है।

पच्चैवर्णयूर

यह पवलवर्णम् दिव्यदेशके समीप है। यहाँ पच्चैवर्णप्पेरुमाळ (हरितवर्ण) भगवान् मरकतवल्ली लक्ष्मी-समेत पूर्वाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ भृगुतीर्थ है। महर्षि भृगुने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया है।

९६-परमेश्वरविण्णगरम्

यह पेरिय-काञ्चीमें है। यहाँ परमपदनाथ-भगवान् वैकुण्ठवल्ली लक्ष्मीसमेत मुकुन्द विमानमें पश्चिमाभिमुख आसीन हैं। यहाँ ऐरम्मद-तीर्थ है। पल्लवरायने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और संत परकालने मङ्गलाशासन किया है।

इस दिव्यदेशमें तीन तल हैं। बीचके तलमें

वैकुण्ठनाथभगवान् शयन कर रहे हैं और ऊपरके तलमें भगवान् खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं।

९७-तिरुप्पुक्कुळि (गृध्रक्षेत्र)

यह दिव्यदेश पेरिय-काञ्चीपुरसे पश्चिमकी ओर ७ मीलपर स्थित है। यहाँ विजयराघव-भगवान् मरकतवल्ली लक्ष्मीसमेत विजयकोटि विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ जटायुतीर्थ है। जटायुने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार और संत परकालने मङ्गलाशासन किया है।

९८-तिरुवेङ्कटम् (तिरुपति, वेङ्कटाद्रि)

यह दिव्यदेश तिरुमलै पहाड़पर स्थित है। रेनीगुण्टा स्टेशनसे पश्चिमकी ओर ६ मीलपर तिरुपति स्टेशन है। यहाँसे पहाड़पर जाया जाता है। इसके तीन मार्ग हैं—एक सीढ़ियोंका पैदल मार्ग, दूसरा गाड़ी-मोटरका मार्ग और तीसरा चन्द्रगिरि स्टेशनसे जानेका मार्ग।

इस दिव्यदेशमें श्रीवेङ्कटेश श्रीनिवास-भगवान् अलर्मेलु-मङ्गा लक्ष्मीसमेत आनन्द-निलय विमानमें पश्चिमाभिमुख खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। यहाँ शेषाचल है, स्वामि-पुष्करिणी है, पापनाशन-तीर्थ है, कोनेरी-तीर्थ है, आकाशगङ्गा है, गोगर्भ-तीर्थ है, कुमारधारा है। स्कन्द और तोण्डैमान् चक्रवर्तीने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया तथा आळ्वार संत सरोयोगी, भूतयोगी, महायोगी, भक्तिसार, कुलशेखर, विष्णुचित्त, मुनिवाहन, शठकोप और परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

वेङ्कटाचल-माहात्म्यको देखनेसे पता लगता है कि सत्ययुगमें वृषभासुरकी प्रार्थनापर इस स्थलका नाम वृषभाचल पड़ा, त्रेतामें अञ्जना (हनुमान्‌जीकी माता) के यहाँपर तपस्या करनेके कारण इसका नाम अञ्जना पड़ा, द्वापरमें शेषांशकी स्मृतिमें इसका नाम शेषाचल पड़ा और कलियुगमें पापोंके नष्ट करनेके कारण इसका नाम वेङ्कटाचल हो गया है। विष्णुभगवान्‌की परीक्षा करनेके लिये महर्षि भृगुने जो पाद-प्रहार किया था, उससे क्रुद्ध होकर लक्ष्मीने भगवान्‌को अकेला छोड़ दिया था। तब भगवान्‌ने इसी स्थलपर एकान्तवास किया था। समयान्तरमें उन्होंने श्रीनिवासके रूपमें एक भक्तको दर्शन दिया; किंतु आपका दिव्य मङ्गलविग्रह संसारके सामने तब आया, जब गोमाताके द्वारा कराये जानेवाले दुग्धस्नानके संकेतसे भूमिमेंसे आपको बाहर निकालकर यहाँ विराजमान किया गया। कहा जाता है यह कार्य तोण्डैमान् महाराजके द्वारा हुआ था। बादमें श्रीनिवासभगवान्‌का आकाशराजकी कन्या पद्मावतीके साथ विवाह हुआ।

यहाँपर तिरुमलै पर्वतके नीचे तिरुपतिमें स्थित श्रीगोविन्दराजभगवान्‌की संनिधि और तिरुच्चुकनूर (तिरुच्चानूर) के श्रीअलरमेलुमङ्गै तायार (पद्मावती) लक्ष्मी-मन्दिरकी चर्चा कर देना आवश्यक है। कहा जाता है श्रीगोविन्दराजभगवान् तिल्लै-तिरुच्चित्रकूटम् (चिदम्बरम्)-से यहाँ लाये गये हैं। तिरुच्चानूर तिरुपतिसे ३ मील है। वहाँ पुष्करिणी है; स्वर्णमुखी नदी है। शुक-महर्षिने इस स्थानपर तपस्या की है।

९९-सिङ्गवेल्कुन्रम्

कडप्पा-गुण्टकल रेल-मार्गमें येर्रागुन्टला स्टेशन है। वहाँसे मोटर, बैलगाड़ीद्वारा अथवा पैदल इस क्षेत्रमें पहुँचा जा सकता है। इस क्षेत्रमें नृसिंहभगवान्‌के नौ रूप हैं। उनके नाम हैं—(१) ज्वाला-नृसिंह, (२) अहोबल नृसिंह, (३) मालोल नृसिंह, (४) क्रोडाकार नृसिंह, (५) कारञ्ज नृसिंह, (६) भार्गव नृसिंह, (७) योगानन्द नृसिंह, (८) छत्रवट-नृसिंह, (९) पावन नृसिंह। प्रधानतया नृसिंहभगवान् लक्ष्मीसमेत कुरुक विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ भगवान्‌ने हिरण्यकशिपुको मारकर प्रह्लादकी रक्षा की है। इस क्षेत्रमें तीन पर्वत हैं—गरुड़ाद्रि, वेदाद्रि और अचलच्छाय मेरु। भवनाशिनी नदी है। इस पुण्य-नदीके, किनारे-किनारे विभिन्न स्थानोंपर ये तीर्थ हैं—(१) नृसिंह-तीर्थ, (२) रामतीर्थ, (३) लक्ष्मणतीर्थ, (४) भीमतीर्थ, (५) शङ्खतीर्थ, (६) वराहतीर्थ, (७) सुदर्शनतीर्थ, (८) सूततीर्थ, (९) तारातीर्थ, (१०) गजकुण्ड, (११) वैनायकतीर्थ, (१२) भैरवतीर्थ और (१३) रक्तकुण्ड। आळ्वार संत परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

अहोबिल-माहात्म्यको देखनेसे पता लगता है कि इस क्षेत्रका महत्त्व गया, प्रयाग और काशीसे कम नहीं है। अहोबिल-क्षेत्रनायक श्रीनृसिंहभगवान्‌के आदेशानुसार श्रीअहोबिल-मठकी स्थापना हुई। श्रीनृसिंहभगवान्‌के उपर्युक्त नौ रूपोंमेंसे मालोल नृसिंहकी उत्सव-मूर्ति ही मठमें आराध्यदेवके रूपमें विराजान है।

१००-तुवरै (द्वारका)

इस क्षेत्रकी गणना सात मोक्षपुरियोंमें है। बंबईसे यहाँ जानेके लिये समुद्र-मार्ग है। अहमदाबाद-वीरमगाम-राजकोट होकर रेल-मार्ग है। यहाँ द्रौपदीने कल्याण-नारायण-भगवान्‌का कल्याणवल्ली लक्ष्मीसमेत पश्चिमाभि-

मुख हेमकूट विमानमें आसीनरूपमें साक्षात्कार किया। आळ्वार संत शठकोप, विष्णुचित्त, गोदा और परकालने इस क्षेत्रका मङ्गलाशासन किया है।

१०१-अयोध्या

यह भगवान् श्रीरामका अवतार-स्थल है। यहाँ सीतासमेत श्रीरामने पुष्पक विमानमें उत्तराभिमुख आसीन होकर भरत, देवताओं एवं मुनियोंको अपना साक्षात्कार कराया था। यहाँ सरयू नदी है। आळ्वार संत शठकोप, कुलशेखर, विष्णुचित्त, भक्ताङ्घ्रिरेणु और परकालने मङ्गलाशासन किया है। मोक्षपुरियोंमें अयोध्याका नाम सर्वप्रथम आता है।

१०२-नैमिषारण्य

यह स्वयंव्यक्त क्षेत्र है। यहाँ देवराजभगवान्ने हरिलक्ष्मी एवं पुण्डरीकवल्ली लक्ष्मियोंसहित हरि विमानमें उत्तराभिमुख खड़े होकर देवर्षि नारद, इन्द्रादि देवताओं तथा सुधर्माको अपना साक्षात्कार कराया था। यहाँ चक्रतीर्थ है। गोमती नदी है। आळ्वार संत परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

१०३-मथुरा

यह श्रीकृष्णका अवतार-स्थल है। यहाँ गोवर्धनेश-भगवान्ने सत्यभामाके साथ गोवर्धन विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर इन्द्र आदि देवताओंको अपना साक्षात्कार कराया था। यहाँ यमुना नदी है। आळ्वार संत शठकोप, विष्णुचित्त एवं मुनिवाहनने इसका मङ्गलाशासन किया है।

१०४-तिरुवाइप्पाडि

यह श्रीकृष्णका लीलास्थल रहा है। यहाँ नवमोहन कृष्णने रुक्मिणी-सत्यभामासमेत हेमकूट-विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर नन्दको दर्शन दिया था। विष्णुचित्त, गोदा और परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

१०५-देवप्रयाग (कण्डम्)

यह बदरिकाश्रम जानेके मार्गमें है। हरिद्वारसे ५८ मील है। यहाँ नीलमेघ पुरुषोत्तमभगवान्ने पुण्डरीकवल्ली लक्ष्मीसमेत मङ्गल विमानमें पूर्वाभिमुख खड़े होकर भरद्वाज ऋषिको अपना साक्षात्कार कराया था। आळ्वार संत विष्णुचित्तने इसका मङ्गलाशासन किया है।

१०६-तिरुप्पिरिदि (ज्योतिष्पीठ)

यह विष्णुक्षेत्र है और हरिद्वारसे १०६ मीलकी दूरीपर है। यहाँ परमपुरुषभगवान्ने परिमलवल्ली लक्ष्मीसमेत गोवर्धन विमानमें शेषशय्यापर पूर्वाभिमुख शयन करते हुए पार्वतीको दर्शन दिया था। आळ्वार संत परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

१०७-बदरिकाश्रम

यहाँ बदरीनारायणभगवान् अरविन्दवल्ली लक्ष्मीसमेत तप्तकाञ्चन विमानमें पूर्वाभिमुख आसीन हैं। यहाँ भगवान्ने नरऋषिको मूलमन्त्रका उपदेश दिया। यहाँ तप्तकुण्ड तीर्थ है। आळ्वार संत विष्णुचित्त और परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

१०८-शालग्रामम् (मुक्तिनारायण)

यह नैपाल राज्यमें है। यह गोरखपुरसे १०० मीलसे कुछ अधिक दूरीपर है। यहाँ श्रीमूर्तिभगवान् श्रीदेवीके समेत कनक विमानमें उत्तराभिमुख खड़े हैं। यहाँ चक्रतीर्थ है, गण्डकी नदी है। शालग्रामशिला यहीं मिलती है। ब्रह्मा, रुद्र आदि देवताओंने इस दिव्यदेशका साक्षात्कार किया है और आळ्वार संत विष्णुचित्त और परकालने इसका मङ्गलाशासन किया है।

गणनाका अन्य क्रम

यहाँपर यह बता देना अप्रासङ्गिक न होगा कि १०८ दिव्यदेशोंकी एक ऐसी भी गणना है, जिसमें (१) श्रीवैकुण्ठ, (२) क्षीराब्धिको छोड़ दिया गया है और (१०४) गोकुलके साथ वृन्दावन और गोवर्धनकी गणना करके १०८ की पूर्ति की गयी है। इसके अनुसार श्रीविष्णुचित्त और गोदाने गोवर्धनका और केवल गोदाने वृन्दावनका मङ्गलाशासन किया है।

विष्णुस्थलों और दिव्यदेशोंकी तुलना

ब्रह्माण्डपुराणोक्त १०८ विष्णुस्थलों एवं १०८ दिव्यदेशोंकी सूचियोंका तुलनात्मक अध्ययन करनेपर प्रकट होता है कि अनेकों विष्णुस्थल ऐसे हैं, जिनकी पुराणकारने तो गणना की है; किंतु आळ्वार संतोंने उनके मङ्गलाशासनमें किसी सूक्तिका प्रणयन नहीं किया है। इससे पुराणोक्त किसी भी विष्णुस्थलकी महिमा कम नहीं होती। कारण, आळ्वार संतोंको सभी विष्णुस्थल अभिमत थे।

दोनों सूचियोंमें नित्यविभूति वैकुण्ठका नाम पहला है। जब नित्यविभूति ही दिव्यदेशकी दिव्यताका मूल आधार है, तब फिर प्रथम दिव्यदेशके रूपमें उसकी गणना क्यों न हो। त्रिपाद्विभूति, परमपद, परमव्योम, परमाकाश, अमृतनाक आदि इसीके नाम हैं। पाञ्चरात्र

आगमके अनुसार यह विभूति चार प्रकारकी है—वैकुण्ठ, आमोद, प्रमोद और सम्मोद। विष्णुस्थलोंमें इन चारोंकी गणना की गयी है; किंतु नित्य विभूतिका केन्द्र वैकुण्ठ ही है।

नित्य विभूतिके पश्चात् दोनों सूचियोंकी एकता क्षीराब्धिके सम्बन्धमें उपलब्ध होती है। विष्णुस्थलोंकी गणनामें क्षीराब्धिनायक शेषशायी भगवान्‌के साथ-साथ सत्यलोकाधिष्ठित विष्णु, सूर्यलोकके पुण्डरीकाक्ष तथा श्वेतद्वीपके तारक विष्णुको भी ग्रहण किया गया है।

इसके अनन्तर विष्णुस्थलोंकी गणनामें उत्तर-भारतके ३३ स्थल गिनाये गये हैं। इनमें सर्वप्रथम तीन नाम आते हैं—बदरीधाम, नैमिष और शालग्राम। उत्तरदेशीय ११ दिव्यदेशोंकी गणनामें ये तीनों मौजूद हैं। इसके आगे विष्णुस्थलोंमें सात मोक्षपुरियोंमेंसे छ:के नाम हैं—अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, द्वारवती और अवन्तिका तथा सातवीं मोक्षपुरी काञ्चीका नाम आगे चलकर आया है। इन मोक्षपुरियोंकी गणनासे यह प्रमाणित होता है कि ये सभी विष्णुपुरियाँ हैं। दिव्यदेशोंकी गणनामें इनमेंसे मथुरा और द्वारवतीका ग्रहण है, अन्य तीनका नहीं। इसके आगे हैं विष्णुस्थल व्रज, वृन्दावन, कालिय-ह्रद, गोवर्धन पर्वत। ये श्रीकृष्णके लीलाक्षेत्रसे सम्बद्ध हैं। दिव्यदेशोंकी सूचीमें इनके बदले गोकुलका नाम है। विष्णुस्थलोंकी सूचीमें हरिद्वार, प्रयाग और गयाका नाम है। रामायणसे सम्बद्ध चित्रकूट और अयोध्याके समीपवर्ती नन्दिग्राम हैं। पश्चिम-समुद्रके निकटवर्ती प्रभास तथा पूर्व-समुद्रके निकटवर्ती गङ्गासागर, श्रीकूर्मम्, नीलाद्रि (जगन्नाथपुरी), सिंहाचल आदिके नाम हैं। दिव्यदेशोंकी सूचीमें ये नाम नहीं हैं। अहोबिलका नाम है, किंतु पाण्डुरङ्ग (पण्ढरपुर) का नहीं। अन्तमें वेङ्कटाद्रिका नाम दोनों सूचियोंमें है। सारांश यह कि पौराणिक अधिक विस्तृत है। फिर भी दिव्यदेशोंकी सूचीमें देवप्रयाग और तिरुप्पिरदि—ये दो नाम ऐसे हैं, जो विष्णुस्थलोंकी सूचीमें नहीं हैं।

इसके आगे विष्णुस्थलोंमें यादवाद्रिका नाम है। आळ्वार संतोंकी वाणी इसके सम्बन्धमें मौन है। इतिहास बताता है कि श्रीरामानुज मुनीन्द्रने इसकी पुन: प्रतिष्ठा की। यहाँकी मूलमूर्ति हैं तिरुनारायणभगवान् और उत्सवमूर्ति हैं सेल्वपिळ्ळै (सम्पत्कुमार)। यह स्थल बंगलोर-मैसूर रेलवे-मार्गमें स्थित फ्रेन्चराक्स स्टेशनसे १८ मील है।

तुण्डीरमण्डलके दिव्यदेशोंकी सूचीमें २२ नाम हैं। इनमेंसे काञ्चीमें ही १४ हैं। विष्णुस्थलोंकी सूचीमें २६ स्थल हैं, जिनमें काञ्चीमें १८ हैं। इनके अतिरिक्त घटिकाचल, गृध्रसर, वीक्षारण्य, तोताद्रि, (महा) बलिपुर ऐसे हैं जो दोनों सूचियोंमें मिलते हैं। अन्य विष्णुस्थल दिव्यदेशोंकी सूचीमें नहीं हैं और अन्य दिव्यदेश विष्णु-स्थलोंकी सूचीमें नहीं हैं। इस प्रसङ्गमें श्रीमुष्णम् विष्णुस्थल और वृन्दारण्य दिव्यदेश विशेष उल्लेखनीय हैं।

चोळदेशकी सीमामें पहुँचकर दोनों ही सूचियाँ श्रीरङ्गसे आरम्भ होती हैं; किंतु चोळदेशके विष्णुस्थलोंकी संख्या है ३० और दिव्यदेश हैं ४०। इनमें श्रीरङ्ग, श्रीधाम, सारक्षेत्र, खण्डनगर, स्वर्णमन्दिर, व्याघ्रपुरी, श्वेतह्रद, भार्गवस्थान, श्रीवैकुण्ठम्, पुरुषोत्तम, कुम्भकोण, कपिस्थल, दक्षिण चित्रकूट, श्वेताद्रि, पार्थस्थल, नन्दिपुर, संगमग्राम, शरण्यनगर ऐसे हैं, जिनका उल्लेख दोनों सूचियोंमें है।

पाण्ड्यदेशीय एवं केरलदेशीय दिव्यदेशोंकी संख्या मिलाकर ३१ होती है। विष्णुस्थलोंकी संख्या १४ तक पहुँचती है। इनमेंसे धन्विन:पुर, मौहूर, मधुरा, वृषभाद्रि, वरगुण, कुरुका, गोष्ठीपुर, दर्भशयन, धन्वीमंगल, कुरङ्गनगर और पद्मनाभ ऐसे हैं, जिनका उल्लेख दोनों सूचियोंमें है।

इस प्रकार दोनों सूचियोंकी तुलना करनेपर दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं। एक तो यह कि विष्णुस्थलोंकी सूची उत्तरसे दक्षिणकी ओर चलती है और दिव्यदेशोंकी सूची दक्षिणसे उत्तरकी ओर चलती है। दूसरी यह कि विष्णुस्थलोंकी सूचीमें उत्तरके स्थलोंकी संख्या अधिक है और दिव्यदेशोंकी सूचीमें दक्षिणके दिव्यदेशोंकी। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि जहाँ पुराणकारका कार्यक्षेत्र विशेषकर उत्तर-भारतसे सम्बद्ध रहा होगा, वहाँ आळ्वार संतोंकी लीलाभूमि दक्षिण-भारत ही थी।

अन्य दिव्यदेश

१०८ विष्णुस्थलों एवं दिव्यदेशोंकी चर्चासे इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि गणनाकी दृष्टिमें १०८ का प्राधान्य है। संख्या-विज्ञानकी दृष्टिमें १०८की संख्या पूर्ण है। भगवान्‌की व्याप्ति परिपूर्ण है। व्याप्तिकी इस पूर्णताका निदर्शन १०८ दिव्यदेशोंकी संख्या है। इसका अर्थ यह नहीं होता कि 'दिव्यदेश' शब्दका व्यवहार केवल इन

636 Tirthank_Section_22_2_Back

१०८ दिव्यदेशोंतक ही हो, जैसा कि आरम्भमें लिखा जा चुका है कि दिव्यदेशोंकी संख्या साधककी साधना और भगवान्‌की अनुकम्पापर निर्भर करती है। ऐसी स्थितिमें दिव्यदेश शब्दका उपर्युक्त १०८ दिव्यदेशोंके आगे बढ़ना स्वाभाविक है। इसका मार्ग १०८ विष्णुस्थलों और दिव्यदेशोंकी तुलनाने प्रशस्त कर दिया है। जिन स्थलों अथवा दिव्यदेशोंके सम्बन्धमें दोनों सूचियोंमें भेद है, उनकी संख्या जोड़नेपर गणना १०८ से आगे बढ़ जाती है।

दिव्यदेश-निर्माण

इस प्रकार बढ़नेवाली संख्यापर आगम-ग्रन्थोंने एक नियन्त्रण अवश्य लगाया है। यह नियन्त्रण है उस विधानका, जिसके अनुसार दिव्यदेशका निर्माण, प्रतिष्ठापन, आराधन एवं उत्सव होने चाहिये। दिव्यदेशके निर्माणका वर्णन आगमग्रन्थोंमें मिलता है। दिव्यदेशके निर्माणका कार्य प्रवेश-बलिसे आरम्भ होता है। इसके बाद वास्तु-होम होता है और कर्षण आदि कर्म होते हैं। फिर क्रमशः भूगर्भन्यास, प्रथमेष्टिका-स्थापन, प्रासाद-गर्भन्यास, अधिष्ठान-कल्पना, मूर्धेष्टिका-विधान, कलशस्थापन आदि कर्म होते हैं। भौतिक दृष्टिसे मन्दिरको दो भागोंमें विभाजित किया जाता है। एक प्रासाद और दूसरा विमान। भूमिसे छतपर्यन्त भागको प्रासाद और उसके ऊपरके भागको विमान कहते हैं। इस प्रकार निर्मित दिव्यदेशमें क्रमशः उपपीठ, उसके ऊपर अधिष्ठान, उसके ऊपर उपानह, उसके ऊपर पाद, उसके ऊपर प्रस्तर, उसके ऊपर ग्रीवा और सबके ऊपर शिखर होता है। एक तलके दिव्यदेशकी यह स्थिति है। जैसे-जैसे तलकी संख्या बढ़ती जाती है, इन अङ्गोंमें भी वृद्धि होती जाती है। इस प्रकार तलोंकी संख्या ११ तक पहुँचती है। प्रासादके भीतर केन्द्रमें गर्भ-गृह होता है, उसके आगे अर्धमण्डप, मण्डप आदि होते हैं। प्राकारमें पाकशाला, यज्ञशाला, संग्रहशाला आदि स्थान बनाये जाते हैं। कहना न होगा कि इस दिव्यदेशके निर्माणमें ब्रह्माण्डकी कल्पना की जाती है और इसके केन्द्रमें वैकुण्ठ-लोककी भावना की जाती है।

दिव्य मङ्गलविग्रह-निर्माण

मन्दिरके निर्माणके समान मूर्तिके निर्माणका भी क्रम आगमविहित है। अङ्ग-प्रत्यङ्गका प्रमाण तथा विशद वर्णन आगमग्रन्थोंमें मिलता है। उसीके अनुसार मूर्तिका निर्माण अनिवार्यतया अपेक्षित है। किस पदार्थकी मूर्ति होनी चाहिये, इसका भी निश्चित विधान है। दिव्यदेशके लिये मूर्तिका निर्माण किये जानेपर अन्य कई मूर्तियोंकी आवश्यकतानुसार कल्पना करनी पड़ती है। ६ प्रकारकी मूर्तियाँ होती हैं—मूलमूर्ति, उत्सवमूर्ति, स्नानमूर्ति, बलिमूर्ति, शयनमूर्ति और कर्मार्चामूर्ति। दिव्यदेशोंमें इनमेंसे प्रायः ५ और कम-से-कम दो तो होनी ही चाहिये। दिव्यदेशके गर्भगृहमें प्रधानरूपसे इसकी प्रतिष्ठा होती है। अन्य मूर्तियाँ इसके अङ्गके रूपमें होती हैं। समस्त उत्सव उत्सव-मूर्तिके किये जाते हैं। स्नानमूर्तिका विशेष स्नानमें, बलिमूर्तिका अङ्गाराधनरूप बलिप्रदानमें, शयनमूर्तिका शयन करानेमें तथा कर्मार्चामूर्तिका अन्य दिव्य देशीय कार्योंमें उपयोग किया जाता है।

प्रतिष्ठा

दिव्यदेश-निर्माण और मूर्ति-निर्माणके सम्पन्न हो जानेपर प्रतिष्ठाका कार्य होता है। प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे भगवान्‌के अर्चा-विग्रह पाँच प्रकारके होते हैं—स्वयंव्यक्त, दिव्य, सिद्ध, आर्ष और मानुष। स्वयंव्यक्त अर्चाविग्रह वे हैं, जिनमें भगवान् अपने संकल्पानुसार विराजमान रहते हैं। शालग्रामकी गणना स्वयंव्यक्त मूर्तियोंमें होती है। देवताओंद्वारा प्रतिष्ठापित अर्चाविग्रह दिव्य कहलाते हैं। इसी प्रकार सिद्ध पुरुषोंद्वारा प्रतिष्ठित सिद्ध, ऋषियोंद्वारा प्रतिष्ठित आर्ष और आचार्यों एवं विद्वानोंद्वारा प्रतिष्ठित मानुष कोटिमें आते हैं। कहना न होगा कि स्वयंव्यक्त, दिव्य आदिकी महत्ता मानुषकी अपेक्षा अधिक मानी जाती है। इसीलिये नवीन दिव्यदेशोंका प्राचीन दिव्यदेशोंके साथ सम्बन्ध स्थापित करनेका आचार चल पड़ा है। इसके अनुसार नवीन दिव्यदेशमें कोई-न-कोई अर्चाविग्रह किसी प्राचीन दिव्यदेशसे लाकर विराजमान किया जाता है। आचार्यों एवं विद्वानोंद्वारा जो प्रतिष्ठा की जाती है, उसमें आगमप्रोक्त विधानका अक्षरशः पालन किया जाना आवश्यक है।

इस प्रकार आगमोक्त विधानके अनुसार निर्मित एवं प्रतिष्ठापित दिव्यदेशोंकी पर्याप्त संख्या दक्षिण-भारतमें है। इस संख्यामें प्रधानता उनको दी जाती है, जिनका सम्बन्ध आळ्वार आचार्योंसे है। उदाहरणके लिये तुण्डीरमण्डलमें मदुरान्तक, तिरुमळिशै, श्रीपेरुम्भुदूर, पूबिरुन्दवल्ली, मधुरमङ्गलम्, कूरम् हैं। मदुरान्तक वह स्थान है, जहाँ श्रीरामानुज मुनीन्द्रका समाश्रयण हुआ था। तिरुमळिशै आळ्वार संत भक्तिसारका अवतार-स्थल है।

श्रीपेरुम्भुदूर श्रीरामानुज मुनीन्द्रका अवतार-स्थल है। पूबिरुन्दमल्ली श्रीकाञ्चीपूर्णका अवतार-स्थल है। मधुरमङ्गलम् आचार्य श्रीगोविन्दपादका अवतार-स्थल है और कूरम् श्रीकूरेश स्वामीका। वीरनारायणपुरमें राजमन्नार दिव्यदेश है। यह श्रीनाथमुनिका अवतार-स्थल है। इसी प्रकार अन्य अनेकों स्थल भी हैं। इनके अतिरिक्त अनेकों दिव्यदेश ऐसे हैं, जिनका निर्माण आराधनार्थ किया गया था। नगरोंसे ग्रामोंतक ऐसे दिव्यदेश मिलेंगे। ऐसे दिव्यदेशोंमें प्रधान और अप्रधानका भेद भी उपलब्ध होता है। प्रधान दिव्यदेश वे हैं, जहाँ दिव्यदेशकी रचनाके पश्चात् ग्राम या नगर बसा हो और अप्रधान दिव्यदेश वे हैं, जिनका बसे-बसाये ग्राम या नगरमें निर्माण किया गया हो।

उत्तर-भारतकी ओर आनेपर वृन्दावनधाम और पुष्करक्षेत्रमें दिव्यदेश मिलते हैं। वृन्दावनका दिव्यदेश, जो श्रीरङ्ग-मन्दिरके नामसे प्रसिद्ध है, गोवर्धनपीठाधिपति श्रीरङ्गदेशिक महाराजके आचार्योचित कैङ्कर्यका फल है। पुष्करक्षेत्र स्वयंव्यक्त क्षेत्र है। यहाँ प्रतिवादिभयंकर श्रीअनन्ताचार्य महाराजकी प्रेरणाके फलस्वरूप निर्मित श्रीरङ्गनाथ-दिव्यदेश है तथा श्रीरमा-वैकुण्ठ दिव्यदेश है, जो झालरिया-पीठाधिपति श्रीबालमुकुन्दाचार्य महाराजकी मूर्तिमती साधना है। इनके अतिरिक्त शेल, हैदराबाद, बंबई, डीडवाणा आदि स्थानोंमें भी दिव्यदेश हैं। बंबईका दिव्यदेश प्रतिवादिभयंकर-मठाधीश श्रीअनन्ताचार्य महाराजकी तपस्याका फल है। इन दिव्यदेशोंका सम्बन्ध परम्परागत आचारके अनुसार प्राचीन दिव्यदेशोंके साथ किया गया है और आराधन, उत्सव आदि क्रममें ये आगमग्रन्थोंका अनुसरण करते हैं।

अष्टोत्तर-शत दिव्य शक्ति-स्थान

वाराणस्यां विशालाक्षी नैमिषे लिङ्गधारिणी।
प्रयागे ललिता देवी कामाक्षी गन्धमादने॥
मानसे कुमुदा नाम विश्वकाया तथाम्बरे।
गोमन्ते गोमती नाम मन्दरे कामचारिणी॥
मदोत्कटा चैत्ररथे जयन्ती हस्तिनापुरे।
कान्यकुब्जे तथा गौरी रम्भा मलयपर्वते॥
एकाम्रके कीर्तिमती विश्वे विश्वेश्वरीं विदुः।
पुष्करे पुरुहूतेति केदारे मार्गदायिनी॥
नन्दा हिमवतः पृष्ठे गोकर्णे भद्रकर्णिका।
स्थानेश्वरे भवानी तु बिल्वके बिल्वपत्रिका॥
श्रीशैले माधवी नाम भद्रा भद्रेश्वरे तथा।
जया वराहशैले तु कमला कमलालये॥
रुद्रकोट्यां च रुद्राणी काली कालञ्जरे गिरौ।
महालिङ्गे तु कपिला मर्कोटे मुकुटेश्वरी॥
शालग्रामे महादेवी शिवलिङ्गे जलप्रिया।
मायापुर्यां कुमारी तु संताने ललिता तथा॥
उत्पलाक्षी सहस्राक्षे कमलाक्षे महोत्पला।
गङ्गायां मङ्गला नाथ विमला पुरुषोत्तमे॥
विपाशायाममोघाक्षी पाटला पुण्ड्रवर्धने।
नारायणी सुपार्श्वे तु विकूटे भद्रसुन्दरी॥
विपुले विपुला नाम कल्याणी मलयाचले।
कोटवी कोटितीर्थे तु सुगन्धा माधवे वने॥
कुब्जाम्रके त्रिसंध्या तु गङ्गाद्वारे रतिप्रिया।
शिवकुण्डे सुनन्दा तु नन्दिनी देविकातटे॥
रुक्मिणी द्वारवत्यां तु राधा वृन्दावने वने।
देविका मथुरायां तु पाताले परमेश्वरी॥
चित्रकूटे तथा सीता विन्ध्ये विन्ध्याधिवासिनी।
सह्याद्रावेकवीरा तु हरिश्चन्द्रे तु चन्द्रिका॥
रमणा रामतीर्थे तु यमुनायां मृगावती।
करवीरे महालक्ष्मीरुमादेवी विनायके॥
अरोगा वैद्यनाथे तु महाकाले महेश्वरी।
अभयेत्युष्णतीर्थेषु चामृता विन्ध्यकन्दरे॥
माण्डव्ये माण्डवी नाम स्वाहा माहेश्वरे पुरे।
छागलाण्डे प्रचण्डा तु चण्डिका मकरन्दके॥
सोमेश्वरे वरारोहा प्रभासे पुष्करावती।
देवमाता सरस्वत्यां पारावारतटे मता॥
महालये महाभागा पयोष्ण्यां पिङ्गलेश्वरी।
सिंहिका कृतशौचे तु कार्तिकेये यशस्करी॥
उत्पलावर्तके लोला सुभद्रा शोणसंगमे।
माता सिद्धपुरे लक्ष्मीरङ्गना भरताश्रमे॥
जालन्धरे विश्वमुखी तारा किष्किन्धपर्वते।
देवदारुवने पुष्टिर्मेधा काश्मीरमण्डले॥

भीमा देवी हिमाद्रौ तु पुष्टिर्विश्वेश्वरे तथा।
कपालमोचने शुद्धिर्माता कायावरोहणे॥
शङ्खोद्धारे ध्वनिर्नाम धृतिः पिण्डारके तथा।
काला तु चन्द्रभागायामच्छोदे शिवकारिणी॥
वेणायाममृता नाम बदर्यामुर्वशी तथा।
औषधी चोत्तरकुरौ कुशद्वीपे कुशोदका॥
मन्मथा हेमकूटे तु मुकुटे सत्यवादिनी।
अश्वत्थे वन्दनीया तु निधिर्वैश्रवणालये॥
गायत्री वेदवदने पार्वती शिवसंनिधौ।
देवलोके तथेन्द्राणी ब्रह्मास्येषु सरस्वती॥
सूर्यबिम्बे प्रभा नाम मातॄणां वैष्णवी मता।
अरुन्धती सतीनां तु रामासु च तिलोत्तमा॥
चित्ते ब्रह्मकला नाम शक्तिः सर्वशरीरिणाम्।
एतदुद्देशतः प्रोक्तं नामाष्टशतमुत्तमम्॥
अष्टोत्तरं च तीर्थानां शतमेतदुदाहृतम्।
यः पठेच्छृणुयाद् वापि सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
एषु तीर्थेषु यः कृत्वा स्नानं पश्यति मां नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः कल्पं शिवपुरे वसेत्॥

(देवीभागवत ७। ३०। ५५—८४; मत्स्यपुराण १३। २६—५६)

मङ्गलमयी कल्याणमयी पराम्बा जगज्जननी भगवती दुर्गा काशीमें विशालाक्षी रूपमें, नैमिषारण्यमें लिङ्गधारिणीके रूपमें, प्रयागमें ललिता नामसे, गन्धमादन पर्वतपर कामाक्षीरूपसे, मानसरोवरमें कुमुदा नामसे तथा अम्बर (आमेर) में विश्वकाया नामसे प्रसिद्ध हैं। वे गोमन्त पर्वतपर गोमती नामसे, मन्दराचलपर कामचारिणी, चैत्ररथवनमें मदोत्कटा, हस्तिनापुरमें जयन्ती, कान्यकुब्जमें गौरी, मलयाचलपर रम्भा, एकाम्रकक्षेत्रमें कीर्तिमती, विश्वमें विश्वेश्वरी, पुष्करमें पुरुहूता, केदारमें मार्गदायिनी, हिमाचल पर्वतपर नन्दा, गोकर्णमें भद्रकर्णिका, थानेश्वरमें भवानी, बिल्वकमें बिल्वपत्रिका, श्रीशैलपर माधवी, भद्रेश्वरमें भद्रा, वराह-शैलपर जया तथा कमलालय (तिरुवारूर) में कमला नामसे प्रसिद्ध हैं। वे रुद्रकोटिमें रुद्राणी नामसे, कालञ्जर पर्वतपर काली, महालिङ्गमें कपिला, मर्कोटमें मुकुटेश्वरी, शालग्राममें महादेवी, शिवलिङ्गमें जलप्रिया, मायापुरी (हरिद्वार) में कुमारी, संतानक्षेत्रमें ललिता, सहस्राक्षमें उत्पलाक्षी, कमलाक्षमें महोत्पला, गङ्गातटपर मङ्गला, पुरुषोत्तमक्षेत्रमें विमला, विपाशा (व्यासनदी) के तटपर अमोघाक्षी, पुण्ड्रवर्द्धनमें पाटला, सुपार्श्वमें नारायणी, विकूटमें भद्रसुन्दरी, विपुलमें विपुलेश्वरी, मलयाचलपर कल्याणी, कोटितीर्थमें कोटवी, माधववनमें सुगन्धा, कुब्जाम्रक (ऋषिकेश) में त्रिसंध्या, गङ्गाद्वार (हरिद्वार) में रतिप्रिया, शिवकुण्डमें सुनन्दा, देविकातटपर नन्दिनी, द्वारकामें रुक्मिणी, वृन्दावनमें राधा, मथुरामें देविका, पातालमें परमेश्वरी, चित्रकूटमें सीता, विन्ध्याचलपर विन्ध्यवासिनी, सह्याचलपर एकवीरा, हरिश्चन्द्रपर चन्द्रिका, रामतीर्थमें रमणा, यमुनातटपर मृगावती, करवीर (कोल्हापुर) में महालक्ष्मी, विनायकक्षेत्रमें उमादेवी, वैद्यनाथमें अरोगा, महाकालमें महेश्वरी, उष्णतीर्थोंमें अभया, विन्ध्य-कन्दरामें अमृता, माण्डव्यमें माण्डवी, माहेश्वरपुर (माहिष्मती) में स्वाहा, छागलाण्डमें प्रचण्डा, मकरन्दमें चण्डिका, सोमेश्वरमें वरारोहा, प्रभासमें पुष्करावती, सरस्वती-समुद्र-संगमपर देवमाता, महालयमें महाभागा, पयोष्णी-तटपर पिङ्गलेश्वरी, कृतशौचमें सिंहिका, कार्तिकेय-क्षेत्रमें यशस्करी, उत्पलावर्तमें लोला, शोण-गङ्गा-संगमपर सुभद्रा, सिद्धपुरमें माता लक्ष्मी, भरताश्रममें अङ्गना, जालन्धरमें विश्वमुखी, किष्किन्धा पर्वतपर तारा, देवदारुवनमें पुष्टि, काश्मीर-मण्डलमें मेधा, हिमाद्रिमें भीमा देवी, विश्वेश्वरमें पुष्टि, कपालमोचनमें शुद्धि, कायावरोहणमें माता, शङ्खोद्धारमें ध्वनि, पिण्डारकमें धृति, चन्द्रभागा-तटपर काला, अच्छोदमें शिवकारिणी, वेणा-तटपर अमृता, बदरीवनमें उर्वशी, उत्तरकुरुमें ओषधि, कुशद्वीपमें कुशोदका, हेमकूट पर्वतपर मन्मथा, मुकुटमें सत्यवादिनी, अश्वत्थ (पीपल) में वन्दनीया, कुबेरगृह (अलकापुरी) में निधि, वेदोंमें गायत्री, शिवके सांनिध्यमें पार्वती, देवलोकमें इन्द्राणी, ब्रह्माके मुखोंमें सरस्वती, सूर्य-मण्डलमें प्रभा, मातृकाओंमें वैष्णवी, पतिव्रताओंमें अरुन्धती, रमणियोंमें तिलोत्तमा तथा चित्तमें सभी देह-धारियोंकी शक्तिरूपसे विराजमान ब्रह्मकला हैं। यहाँ संक्षेपमें भगवतीके १०८ नाम कहे गये हैं तथा साथ ही १०८ तीर्थोंका निर्देश किया गया है। जो इन्हें पढ़ता या सुनता है, वह सब पापोंसे छूट जाता है। इन तीर्थोंमें स्नान करके जो मेरा दर्शन करता है, वह सभी पापोंसे सर्वथा निःशेषरूपमें मुक्त होकर कल्पपर्यन्त शिवलोकमें वास करता है।

इक्यावन शक्तिपीठ

पञ्चाशदेकपीठानि एवं भैरवदेवताः।
अङ्गप्रत्यङ्गपातेन विष्णुचक्रक्षतेन च॥
ब्रह्मरन्ध्रं हिङ्गुलायां भैरवो भीमलोचनः।
कोट्टरी सा महामाया त्रिगुणा या दिगम्बरी॥
करवीरे त्रिनेत्रं मे देवी महिषमर्दिनी।
क्रोधीशो भैरवस्तत्र सुगन्धायां च नासिका॥
देवस्त्र्यम्बकनामा च सुनन्दा तत्र देवता॥
काश्मीरे कण्ठदेशश्च त्रिसंध्येश्वरभैरवः।
महामाया भगवती गुणातीता वरप्रदा॥
ज्वालामुख्यां महाजिह्वा देव उन्मत्तभैरवः।
अम्बिका सिद्धिदानाम्नी स्तनो जालन्धरे मम॥
भीषणो भैरवस्तत्र देवी त्रिपुरमालिनी॥
हृद्यपीठं वैद्यनाथे वैद्यनाथस्तु भैरवः।
देवता जयदुर्गाख्या नेपाले जानुनी शिव॥
कपालो भैरवः श्रीमान् महामाया च देवता॥
मानसे दक्षहस्तो मे देवी दाक्षायणी हर।
अमरो भैरवस्तत्र सर्वसिद्धिविधायकः॥
उत्कले नाभिदेशस्तु विरजाक्षेत्रमुच्यते।
विमला सा महादेवी जगन्नाथस्तु भैरवः॥
गण्डक्यां गण्डपातश्च तत्र सिद्धिर्न संशयः।
तत्र सा गण्डकी चण्डी चक्रपाणिस्तु भैरवः॥
बहुलायां बामबाहुर्बहुलाख्या च देवता।
भीरुको भैरवस्तत्र सर्वसिद्धिप्रदायकः॥
उज्जयिन्यां कूर्परं च माङ्गल्यकपिलाम्बरः।
भैरवः सिद्धिदः साक्षाद् देवी मङ्गलचण्डिका॥
चट्टले दक्षबाहुर्मे भैरवश्चन्द्रशेखरः।
व्यक्तरूपा भगवती भवानी तत्र देवता॥
विशेषतः कलियुगे वसामि चन्द्रशेखरे॥
त्रिपुरायां दक्षपादो देवी त्रिपुरसुन्दरी।
भैरवस्त्रिपुरेशश्च सर्वाभीष्टप्रदायकः॥
त्रिस्रोतायां वामपादो भ्रामरी भैरवेश्वरः।
योनिपीठं कामगिरौ कामाख्या तत्र देवता।
यत्रास्ते त्रिगुणातीता रक्तपाषाणरूपिणी॥
यत्रास्ते माधवः साक्षादुमानाथोऽथ भैरवः।
सर्वदा विहरेद् देवी तत्र मुक्तिर्न संशयः॥

तत्र श्रीभैरवी देवी तत्र च क्षेत्रदेवता।
प्रचण्डचण्डिका तत्र मातङ्गी त्रिपुरात्मिका॥
बगला कमला तत्र भुवनेशी सुधूमिनी।
एतानि नव पीठानि शंसन्ति नवभैरवाः॥
सर्वत्र विरला चाहं कामरूपे गृहे गृहे।
गौरीशिखरमारुह्य पुनर्जन्म न विद्यते॥
करतोयां समासाद्य यावच्छिखरवासिनीम्।
शतयोजनविस्तीर्णं त्रिकोणं सर्वसिद्धिदम्।
देवा मरणमिच्छन्ति किं पुनर्मानवादयः॥
अङ्गुल्यश्चैव हस्तस्य प्रयागे ललिता भवः॥
जयन्त्यां वामजङ्घा च जयन्ती क्रमदीश्वरः॥
भूतधात्री महामाया भैरवः क्षीरकण्टकः।
युगाद्यायां महामाया दक्षाङ्गुष्ठः पदो मम॥
नकुलीशः कालिपीठे दक्षपादाङ्गुली च मे।
सर्वसिद्धिकरी देवी कालिका तत्र देवता॥
भुवनेशी सिद्धिरूपा किरीटस्था किरीटतः।
देवता विमलानाम्नी संवर्तो भैरवस्तथा॥
वाराणस्यां विशालाक्षी देवता कालभैरवः।
मणिकर्णीति विख्याता कुण्डलं च मम श्रुतेः॥
कन्याश्रमे च मे पृष्ठं निमिषो भैरवस्तथा।
शर्वाणी देवता तत्र कुरुक्षेत्रे च गुल्फतः॥
स्थाणुर्नाम च सावित्री मणिवेदिकदेशतः।
मणिबन्धे च गायत्री शर्वानन्दस्तु भैरवः॥
श्रीशैले च मम ग्रीवा महालक्ष्मीस्तु देवता।
भैरवः संवरानन्दो देशे देशे व्यवस्थितः॥
काञ्चीदेशे च कङ्कालो भैरवो रुरुनामकः।
देवता देवगर्भाख्या नितम्बः कालमाधवे॥
भैरवश्चासिताङ्गश्च देवी काली सुसिद्धिदा।
दृष्ट्वा प्रदक्षिणीकृत्य मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्॥
शोणाख्ये भद्रसेनस्तु नर्मदाख्ये नितम्बकम्।
रामगिरौ स्तनान्यं च शिवानी चण्डभैरवः॥
वृन्दावने केशजाल उमानाम्नी च देवता।
भूतेशो भैरवस्तत्र सर्वसिद्धिप्रदायकः॥
संहाराख्य ऊर्ध्वदन्ते देवी नारायणी शुचौ॥
अधोदन्ते महारुद्रो वाराही पञ्चसागरे॥

करतोयातटे तल्पं वामे वामनभैरवः।
अपर्णा देवता तत्र ब्रह्मरूपा करोद्भवा॥
श्रीपर्वते दक्षतल्पं तत्र श्रीसुन्दरी परा।
सर्वसिद्धीश्वरी सर्वा सुन्दरानन्दभैरवः॥
कपालिनी भीमरूपा वामगुल्फं विभाषके।
भैरवश्च महादेव सर्वानन्दः शुभप्रदः॥
उदरं च प्रभासे मे चन्द्रभागा यशस्विनी।
वक्रतुण्डो भैरवश्चोर्ध्वोष्ठो भैरवपर्वते॥
अवन्ती च महादेवी लम्बकर्णस्तु भैरवः॥
चिबुके भ्रामरी देवी विकृताक्ष जनस्थले।
भैरवः सर्वसिद्धीशस्तत्र सिद्धिरनुत्तमा॥
गण्डो गोदावरीतीरे विश्वेशी विश्वमातृका।
दण्डपाणिभैरवस्तु वामगण्डे तु रुक्मिणी॥
भैरवो वत्सनाभस्तु तत्र सिद्धिर्न संशयः॥
रत्नावल्यां दक्षस्कन्धः कुमारी भैरवः शिवः॥
मिथिलायां महादेवी वामस्कन्धे महोदरः॥
नलहाट्यां नलपातो योगीशो भैरवस्तथा।
तत्र सा कालिका देवी सर्वसिद्धिप्रदायिका॥
कर्णाटे चैव कर्णौ मे त्वभीरुर्नाम भैरवः।
देवता जयदुर्गाख्या नानाभोगप्रदायिनी॥
वक्त्रेश्वरे मनःपातो वक्त्रनाथस्तु भैरवः।
नदी पापहरा तत्र देवी महिषमर्दिनी॥
यशोरे पाणिपद्मं च देवता यशोरेश्वरी।
चण्डश्च भैरवस्तत्र यत्र सिद्धिमवाप्नुयात्॥
अट्टहासे चौष्ठपातो देवी सा फुल्लरा स्मृता।
विश्वेशो भैरवस्तत्र सर्वाभीष्टप्रदायकः॥
हारपातो नन्दिपुरे भैरवो नन्दिकेश्वरः।
नन्दिनी सा महादेवी तत्र सिद्धिर्न संशयः॥
लङ्कायां नूपुरं भैरवो राक्षसेश्वरः।
इन्द्राक्षी देवता तत्र इन्द्रेणोपासिता पुरा॥
विराटदेशमध्ये तु पादाङ्गुलिनिपातनम्।
भैरवश्चामृताख्यश्च देवी तत्राम्बिका स्मृता॥
मागधे दक्षजङ्घा मे व्योमकेशस्तु भैरवः।
सर्वानन्दकरी देवी सर्वानन्दफलप्रदा॥

(तन्त्रचूडामणिः)

शक्तिपीठोंका विवरण

प्रजापति दक्षने अपने 'बृहस्पति-सव' नामक यज्ञमें सब देवताओंको बुलाया; किंतु शङ्करजीको निमन्त्रित नहीं किया। पिताके यहाँ यज्ञका समाचार पाकर सती भगवान् शङ्करके विरोध करनेपर भी पितृगृह चली गयीं। दक्षके यज्ञमें शङ्करजीका भाग न देखकर और पिता दक्षको शिवकी निन्दा करते सुनकर क्रोधके मारे उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया। भगवान् शङ्कर सतीका प्राणहीन देह कंधेपर लेकर उन्मत्त-भावसे नृत्य करते त्रिलोकीमें घूमने लगे। यह देखकर भगवान् विष्णुने अपने चक्रसे सतीके शरीरको टुकड़े-टुकड़े करके गिरा दिया। सतीके शरीरके खण्ड तथा आभूषण ५१ स्थानोंपर गिरे। उन स्थानोंपर एक-एक शक्ति तथा एक-एक भैरव नाना प्रकारके स्वरूप धारण करके स्थित हुए। उन स्थानोंको 'महापीठ' कहा जाता है। उपर्युक्त श्लोकोंके आधारपर उन स्थानोंकी तालिका दी जा रही है।

तन्त्रचूडामणिमें निर्दिष्ट स्थान	अङ्ग या आभूषण	शक्ति	भैरव	वर्तमान स्थान
१-हिङ्गुला	ब्रह्मरन्ध्र	कोटरी (भैरवी)	भीमलोचन	हिंगलाज—बलोचिस्तानके लासबेला स्थानमें हिंगोस नदीके तटपर कराचीसे ९० मील उत्तर-पश्चिम (पश्चिम पाकिस्तान)। यहाँ गुफाके अंदर ज्योतिके दर्शन होते हैं।
२-किरीट	किरीट	विमला (भुवनेशी)—	संवर्त (किरीट)	हबड़ा-बरहरवा लाइनपर खगराघाट-रोड स्टेशनसे ५ मील दूर लालबाग-कोर्ट रोड स्टेशन है। वहाँसे ३ मील बटनगरके पास गङ्गातटपर।

भारतवर्षके प्रधान
शक्ति पीठ
हरिद्वार
देहली
पूर्णगिरि
आबू
चित्तौड़
प्रयाग
उज्जैन
काशी
मैहर
नागपुर
भुवनेश्वर
गौहाटी
द्वारिका
मुंबई
पूना
पंढरपुर
कोल्हापुर
श्रीशैल
मैसूर
मदुरा
भगवती प्रसाद सिंह

३-वृन्दावन	केश-कलाप	उमा	भूतेश	वृन्दावनमें मथुरा-वृन्दावन रोडपर वृन्दावनसे लगभग १॥ मील इधर भूतेश्वर महादेवका मन्दिर है।
४-करवीर	तीनों नेत्र	महिषमर्दिनी	क्रोधीश	कोल्हापुरका महालक्ष्मी-मन्दिर ही महिष-मर्दिनीका स्थान है। इसे लोग अम्बाजीका मन्दिर भी कहते हैं। मन्दिर बहुत बड़ा है। उसका प्रधान भाग नीले पत्थरोंसे बना है। यह राजमहलके खजानाघरके पीछे है। कोल्हापुर सांगली-मीरज-कोल्हापुर लाइनपर मीरजसे ३६ मील दूर है।
५-सुगन्धा	नासिका	सुनन्दा	त्र्यम्बक	पूर्वी पाकिस्तानके खुलना स्टेशनसे स्टीमरद्वारा बरीसाल जाना पड़ता है। वहाँसे १३ मील उत्तर शिकारपुर ग्राममें सुनन्दा नदीके तटपर सुनन्दा (उग्रतारा) देवीका मन्दिर है।
६-करतोया-तट	वामतल्प	अपर्णा	वामन	पूर्वी पाकिस्तानके बोगड़ा स्टेशनसे २० मील नैर्ऋत्य-कोणमें भवानीपुर ग्राममें।
७-श्रीपर्वत	दक्षिणतल्प	श्रीसुन्दरी	सुन्दरानन्द	पञ्जिकामें लद्दाख (कश्मीर) के पास बताया गया है। सिलहट (आसाम)-से दो मील नैर्ऋत्यकोणमें जैनपुर स्थानमें भी श्रीपर्वत कहा जाता है। पीठ-स्थानका ठीक पता नहीं है।
८-वाराणसी	कर्ण-कुण्डल	विशालाक्षी	कालभैरव	काशीमें मणिकर्णिकाके पास विशालाक्षी-मन्दिर है।
९-गोदावरी-तट	वाम गण्ड (कपोल)	विश्वेशी (रुक्मिणी) (विश्वमातृका)	दण्डपाणि (वत्सनाभ)	राजमहेन्द्रीके पास ही गोदावरी स्टेशन है। वहाँ गोदावरी-पार कुब्बूरमें कोटितीर्थ है। वहीं कहीं यह शक्तिपीठ होना चाहिये।
१०-गण्डकी	दक्षिण गण्ड (कपोल)	गण्डकी	चक्रपाणि	नैपालमें मुक्तिनाथ (गण्डकी-उद्गम-पर)।
११-शुचि	ऊर्ध्व दन्त-पङ्क्ति	नारायणी	संहार (संक्रूर)	कन्याकुमारीसे ८ मीलपर शुचीन्द्रम्‌में स्थाणु शिव-मन्दिर।
१२-पञ्च-सागर	अधोदन्त-पङ्क्ति	वाराही	महारुद्र	इस स्थानका ठीक पता नहीं लगता।
१३-ज्वालामुखी	जिह्वा	सिद्धिदा (अम्बिका)	उन्मत्त	ज्वालामुखी-रोड स्टेशन (पंजाब) से १३ मीलपर।
१४-भैरव पर्वत	ऊर्ध्व-ओष्ठ	अवन्ती	लम्बकर्ण	अभिधान-कोशमें उज्जैनमें शिप्रा-नदीके तटपर भैरवपर्वत बतलाया गया है। गिरनारके पास भी एक भैरव-पर्वत है।

१५-अट्टहास	अधरोष्ठ	फुल्लरा	विश्वेश	अहमदपुर-कटवा लाइनके लाभपुर स्टेशनके पास।
१६-जनस्थान	चिबुक	भ्रामरी	विकृताक्ष	नासिक-पञ्चवटीमें भद्रकाली-मन्दिर है।
१७-कश्मीर	कण्ठ	महामाया	त्रिसंध्येश्वर	अमरनाथ (कश्मीर)। अमरनाथ-गुफामें ही हिमका शक्ति-पीठ है।
१८-नन्दीपुर	कण्ठहार	नन्दिनी	नन्दिकेश्वर	हबड़ा-क्यूल लाइनपर सैंथिया स्टेशन है। वहाँसे अग्निकोणमें रेलवे-लाइनके पास ही वट-वृक्षके नीचे।
१९-श्रीशैल	ग्रीवा	महालक्ष्मी	संवरानन्द (ईश्वरानन्द)	श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन-मन्दिरके पास ही भ्रमराम्बा देवीका मन्दिर है। दक्षिण-भारतके नन्दयाल स्टेशनसे यहाँ जाते हैं। घोर वनका मार्ग है।
२०-नलहाटी	नला (उदरनली)	कालिका	योगीश	हबड़ा-क्यूल लाइनके नलहाटी स्टेशनसे २ मील नैर्ऋत्यकोणमें एक टीलेपर।
२१-मिथिला	वामस्कन्ध	उमा (महादेवी)	महोदर	शक्ति-पीठका ठीक पता नहीं है। पर यहाँ कई देवी-मन्दिर हैं। जनकपुरसे ३२ मील पूर्व उच्चैठमें दुर्गा-मन्दिर है, उच्चैठसे ९ मीलपर वन-दुर्गा-मन्दिर है, सहरसा स्टेशनके पास उग्रतारा-मन्दिर है और सलौना स्टेशनसे ६ मीलपर जयमङ्गला देवीका मन्दिर है।
२२-रत्नावली	दक्षिणस्कन्ध	कुमारी	शिव	बँगला पञ्जिकाके अनुसार यह पीठ मद्रासमें है।
२३-प्रभास	उदर	चन्द्रभागा	वक्रतुण्ड	गिरनार पर्वतपर अम्बाजीका मन्दिर तथा महाकाली-शिखरपर काली-मन्दिर है।
२४-जालन्धर	वामस्तन	त्रिपुरमालिनी	भीषण	जालंधर पंजाबका प्रसिद्ध नगर है।
२५-रामगिरि	दक्षिण-स्तन	शिवानी	चण्ड	चित्रकूट या मैहरका शारदा-मन्दिर।
२६-वैद्यनाथ	हृदय	जयदुर्गा	वैद्यनाथ	वैद्यनाथ-धाममें श्रीवैद्यनाथजीका मन्दिर है। मुख्य मन्दिरके सामने ही शक्ति-मन्दिर है।
२७-वक्त्रेश्वर	मन	महिषमर्दिनी	वक्त्रनाथ	ओंडाल-सैंथिया लाइनके दुबराजपुर स्टेशनसे ७ मील उत्तर श्मशानभूमिमें।
२८-कन्यकाश्रम	पृष्ठ	शर्वाणी	निमिष	कन्याकुमारीमें कुमारीदेवीके मन्दिरमें ही भद्रकाली-मन्दिर।
२९-बहुला	वामबाहु	बहुला (चण्डिका)	भीरुक	अहमदपुरसे एक लाइन कटवातक जाती है। कटवा स्टेशन (बंगाल) से पश्चिम केतुब्रह्म ग्राममें।

३०-चट्टल	दक्षिणबाहु	भवानी	चन्द्रशेखर	पूर्वी पाकिस्तानमें चटगाँवसे २४ मीलपर सीताकुण्ड स्टेशन है। उसके पास चन्द्रशेखर पर्वतपर भवानी-मन्दिर है।
३१-उज्जयिनी	कूर्पर (कोहनी)	माङ्गल्य-चण्डिका	कपिला-म्बर	उज्जैनमें रुद्रसागरके पास हरसिद्धि देवीका मन्दिर। इस मन्दिरमें कोई मूर्ति नहीं है, कोहनीकी ही पूजा होती है।
३२-मणिवेदिक	दोनों मणिबन्ध (कलाई)	गायत्री	शर्वानन्द	पुष्करके पास गायत्री पर्वतपर।
३३-मानस	दक्षिणपाणि (हथेली)	दाक्षायणी	अमर	मानसरोवर (तिब्बत) में।
३४-यशोर	वामपाणि (हथेली)	यशोरेश्वरी	चण्ड	पूर्वी पाकिस्तानके खुलना जिलेके ग्राम ईश्वरीपुरका प्राचीन नाम यशोहर (जैसोर) है।
३५-प्रयाग	हस्ताङ्गुलि	ललिता	भव	अलोपी देवीका स्थान। अक्षयवटके पास भी एक ललितादेवी हैं और एक ललिता देवीका मन्दिर नगरमें और भी है; किन्तु शक्तिपीठ इनमें कौन-सा है, यह कहना कठिन है।
३६-उत्कलमें	विरजा-क्षेत्र नाभि	विमला	जगन्नाथ	पुरीमें श्रीजगन्नाथ-मन्दिरमें ही विमला देवीका मन्दिर है। याजपुरमें विरजा देवीके मन्दिरको भी कुछ विद्वान् शक्तिपीठ मानते हैं।
३७-काञ्ची	अस्थि (कङ्काल)	देवगर्भा	रुरु	सप्तपुरियोंमें काञ्ची प्रसिद्ध है। शिवकाञ्चीमें काली-मन्दिर है।
३८-कालमाधव	वामनितम्ब	काली	असिताङ्ग	स्थानका पता नहीं लगता।
३९-शोण	दक्षिणनितम्ब	नर्मदा (शोणाक्षी)	भद्रसेन	अमरकण्टक (अमरकण्टकसे ही सोन और नर्मदा दोनों निकली हैं) में सोन-उद्गमके समीप। कुछ लोग डेहरी-आन-सोनके पास भी मानते हैं।
४०-कामगिरि	योनि	कामाख्या	उमानाथ	गौहाटी (आसाम) में कामाख्या प्रसिद्ध तीर्थ है।
४१-नैपाल	दोनों जानु (घुटने)	महामाया	कपाल	नैपालमें पशुपतिनाथमें बागमती नदीके तटपर गुह्येश्वरी देवी-मन्दिर।
४२-जयन्ती	वामजङ्घा	जयन्ती	क्रमदीश्वर	आसाममें शिलांगसे ३३ मील दूर जयन्तिया पर्वतपर बाउरभाग ग्राममें।
४३-मगध	दक्षिणजङ्घा	सर्वानन्दकरी	व्योमकेश	पटनामें बड़ी पटनेश्वरी देवीका मन्दिर।
४४-त्रिस्रोता	वामपाद	भ्रामरी	ईश्वर	बंगालके जलपाईगुडि जिलेके बोदा इलाकेमें शालवाड़ी ग्राममें तिस्ता (त्रिस्रोता) नदीके तटपर।

४५-त्रिपुरा	दक्षिणपाद	त्रिपुरसुन्दरी	त्रिपुरेश	त्रिपुरा राज्यके राधाकिशोरपुर ग्रामसे डेढ़ मील आग्नेयकोणमें पर्वतपर।
४६-विभाष	वाम-गुल्फ (टखना)	कपालिनी (भीमरूपा)	सर्वानन्द (कपाली)	बंगालके मिदनापुर जिलेमें पंचकुरा स्टेशनसे मोटर-बस तमलुक जाती है। तमलुकका काली-मन्दिर प्रसिद्ध है।
४७-कुरुक्षेत्र	दक्षिण-गुल्फ	सावित्री	स्थाणु	कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध तीर्थ है। वहाँ द्वैपायन सरोवरके पास शक्तिपीठ है।
४८-लङ्का	नूपुर	इन्द्राक्षी	राक्षसेश्वर	वर्तमान लङ्काद्वीपको पुराणोंमें सिंहल कहा गया है। प्राचीन लङ्काका ठीक पता नहीं है।
४९-युगाद्या	दक्षिण-पादाङ्गुष्ठ	भूतधात्री	क्षीरकण्टक (युगाद्या)	बर्दवान स्टेशनसे २० मील उत्तर क्षीरग्राममें।
५०-विराट	दाहिने पैरकी अँगुलियाँ	अम्बिका	अमृत	जयपुर (राजस्थान) से ४० मील उत्तर वैराट ग्राम।
५१-कालीपीठ	शेष पादाङ्गुलि	कालिका	नकुलीश	कलकत्तेका काली-मन्दिर प्रसिद्ध है। अनेक विद्वानोंके मतसे वस्तुतः शक्तिपीठ आदिकाली-मन्दिर है, जो कलकत्तेमें टालीगंजसे बाहर है।
५२-कर्णाट	दोनों कर्ण	जयदुर्गा	अभीरु	कर्णाटकमें निश्चित स्थानका पता नहीं।

तन्त्रचूड़ामणिमें स्थान तो ५३ गिनाये गये हैं; किन्तु वामगण्डके गिरनेके स्थानोंकी पुनरुक्ति छोड़ देनेपर ५२ स्थान ही रहते हैं। शिवचरित्र तथा दाक्षायणी-तन्त्र एवं योगिनीहृदय-तन्त्रमें इक्यावन ही पीठ गिनाये गये हैं। अन्य ग्रन्थोंमें शक्तिपीठोंकी संख्यामें तथा स्थानोंके नामोंमें भी अन्तर पड़ता है। हमने ऊपर तन्त्रचूड़ामणिके अनुसार बावन पीठोंकी तालिका दी है। गिरे हुए अङ्गों तथा आभूषणादिकी गणनामें 'तल्प' शब्द किसका वाचक है, यह ज्ञान नहीं हो सका। अतः वहाँ तल्प शब्दको ही ज्यों-का-त्यों देकर संतोष किया गया है। मूल श्लोक भगवतीके अङ्ग जैसे-जैसे गिरते थे, उस क्रमसे हैं; किंतु यह वर्णन शरीरके क्रमसे सिरसे आरम्भ कर क्रमशः पादाङ्गुलितकका है।

वस्तुलौल्याद्धि यः क्षेत्रे प्रतिग्रहरुचिस्तथा।
नैव तस्य परो लोको नायं लोको दुरात्मनः॥
अशक्तस्य तथान्धस्य पङ्गोर्यायावरस्य च।
विहितं कारणाद् दानमच्छिद्रे ब्राह्मणे कुतः॥

जो पुरुष तीर्थक्षेत्रमें लोभवश दान लेनेकी रुचि रखता है, उस दुरात्माके लिये न तो यह लोक सधता है, न परलोक ही। असमर्थ, अन्धा, पंगु और यायावर (एक गाँवमें एक रात्रिसे अधिक न ठहरनेवाला साधु) जो दूसरोंका अन्न लेनेके लिये विवश हैं, उनका प्रतिग्रह तो उचित है, सर्वाङ्ग सम्पन्न ब्राह्मणके लिये कैसे हो सकता है।

शक्तिपीठ-रहस्य

(लेखक—पू० अनन्त श्रीस्वामी करपात्रीजी महाराज)

कुछ दिन हुए एक विदुषी पाश्चात्य महिलाने इस आशयके कुछ प्रश्न किये थे—'५१ तीर्थ होते हैं। इस ५१ संख्याका क्या अभिप्राय है? सतीके शरीरके ५१ टुकड़े हुए; जहाँ-जहाँ एक टुकड़ा गिरा, वहाँ-वहाँ एक मन्दिर, एक तीर्थ बना। यहाँ सतीके शरीरके टुकड़े होनेका अभिप्राय क्या है? यह कथा किस तत्त्वको समझानेके लिये कही गयी है? विष्णुने चक्रसे सतीका शव काट दिया, ऐसा उन्होंने क्यों किया? पार्वतीका शव ले जाते हैं, उनके दुःखसे पृथ्वी नष्ट हो जाती है—इन बातोंका क्या अभिप्राय है? यह घटना किस तत्त्वकी, किस सिद्धान्तकी द्योतक है? शिवका अपमान होनेसे सती मर गयीं, यह क्यों? क्या लज्जासे? सती कौन हैं? उनकी मृत्यु किस तत्त्वके नष्ट हो जानेकी द्योतक है? सतीका पुनरुज्जीवन कब और कैसे होता है?' उपर्युक्त विषयोंपर कहना यही है कि अनन्त शक्तियोंकी केन्द्रभूता महाशक्ति ही 'सती' हैं, अनन्त ब्रह्माण्डाधीश्वर शुद्ध ब्रह्म ही 'शङ्कर' हैं। ब्रह्मसे ही माया-सम्बन्धके द्वारा सृष्टि हुई। ब्रह्माने दक्षादि प्रजापतियोंको निर्माणकर सृष्टिके लिये नियुक्त किया। दक्षने भी मानसी सृष्टिशक्तिसे बहुत-सी संतानें उत्पन्न कीं। परन्तु वे सब-की-सब श्रीनारदके उपदेशसे विरक्त हो गयीं। ब्रह्मादि सभी चिन्तित थे। किसी समय ब्रह्मासे एक परम मनोरम पुरुष उत्पन्न हुआ। उसके सौन्दर्यादि गुणोंपर सभी लोग मोहित हो उठे। ब्रह्माने उसे काम, कन्दर्प, पुष्पधन्वा आदि नामोंसे सम्बोधित किया। दक्षकन्या रतिके साथ उसका उद्वाह हुआ। वसन्त, मलय, कोकिला, प्रमदा आदि उसको सहायक मिले। ब्रह्माने उसे वरदान दिया कि 'तुम्हारे हर्षण, मोहन, मादन, शोषण आदि पञ्च पुष्पबाण अमोघ होंगे। मैं, विष्णु, रुद्र, ऋषि, मुनि—सभी तुम्हारे वशीभूत होंगे। तुम राग उत्पन्नकर प्राणियोंको सृष्टि बढ़ानेके लिये प्रोत्साहित करो।' कामने वर प्राप्तकर वहीं उसकी परीक्षा करनी चाही। उसी क्षण दैवात् ब्रह्मासे एक अत्यन्त लावण्यवती संध्या नामकी कन्या उत्पन्न हुई। कामने अपने पुष्पमय धनुषको तानकर, ब्रह्मापर बाण चलाया। ब्रह्माका मन विचलित हो उठा और वे संध्यापर मोहित हो गये। संध्यामें भी कामके वेगसे हाव-भाव आदि प्रकट हुए। श्रीशङ्करभगवान्‌ने इन सबकी चेष्टाओंको देखकर इन्हें प्रबोध कराया। ब्रह्मा लज्जित हो गये; उन्होंने कामको शाप दिया—'तुम शङ्करकी कोपाग्निसे भस्म हो जाओगे।' कामने कहा—'महाराज! आपने ही तो मुझे ऐसा वरदान दिया है, फिर मेरा क्या दोष है?' ब्रह्माने कहा—'कन्या-जैसे अयोग्य स्थानमें मुझे तुमने मोहित किया, इसीलिये तुम्हें शाप हुआ। अस्तु, अब तुम शिवको वशीभूत करो।' कामने कहा—'शिव-शृङ्गारयोग्य, उन्हें मोहित करनेवाली स्त्री संसारमें कहा है?' ब्रह्माने दक्षको आज्ञा दी—'तुम महामाया भगवती योगनिद्राकी आराधना करो। वह तुम्हारी पुत्रीरूपसे अवतीर्ण होकर शङ्करको मोहित करे।' दक्ष भगवतीकी आराधनामें लग गये। ब्रह्मा भी भगवतीकी स्तुतिमें संलग्न हुए। भगवती प्रकट हुईं और बोलीं—'वरदान माँगो!' ब्रह्माने कहा—'देवि!' भगवान् शिव अत्यन्त निर्मोह एवं अन्तर्मुख हैं। हम सब कामवश हैं, एक उन्हींपर कामका प्रभाव नहीं है। बिना उनके मोहित हुए सृष्टिका काम नहीं चल सकता। मैं उत्पादक, विष्णु पालक और वे संहारक हैं। तीनोंके सहयोग-बिना सृष्टिकार्य असम्भव है। सृष्टिके विघ्नरूप दैत्योंके हननमें भी कभी विष्णुका, कभी शिवका प्रयोजन होगा, कभी शक्तिसे यह काम होगा। अतः उनका कामासक्त होना आवश्यक है।' देवीने कहा—'ठीक है, मेरा विचार भी उन्हें मोहनेका था; परन्तु अब तुम्हारे प्रोत्साहनसे मैं अधिक प्रयत्नशील होऊँगी। मेरे बिना शङ्करको कोई मोहित नहीं कर सकता। मैं दक्षके यहाँ जन्म लेकर जब अपने दिव्यरूपसे शङ्करको मोहित करूँगी, तभी सृष्टि ठीक चलेगी।' यह कहकर देवीने दक्षके यहाँ जाकर उन्हें वर दिया और उनके यहाँ सतीरूपसे प्रकट हुईं। किञ्चित् बड़ी होते ही शिवप्राप्तिके लिये तप करने लग गयीं। इतनेमें ही ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओंने जाकर शङ्करकी स्तुति की और उन्हें विवाहके लिये राजी किया। उधर सतीकी आराधनासे शङ्कर प्रसन्न हुए और उन्होंने सतीको वर दिया कि 'हम तुम्हारे

पति होंगे।' फिर उनका सानन्द विवाह सम्पन्न हुआ और सहस्रों वर्षतक सती और शिवका शृङ्गार हुआ। उधर दक्षके यज्ञमें शिवका निमन्त्रण न होनेसे उनका अपमान जानकर सतीने उस देहको त्यागकर हिमवत्पुत्री पार्वतीके रूपमें शिवपत्नी होनेका निश्चय किया और योगबलसे देह त्याग दिया। समाचार विदित होनेपर शिवजीको बड़ा क्षोभ और मोह हुआ। दक्षयज्ञको नष्ट करके सतीके शवको लेकर शिवजी घूमते रहे। सम्पूर्ण देवताओंने या सर्वदेवमय विष्णुने शिवमोहशान्ति एवं साधकोंके सिद्धि आदि कल्याणके लिये शवके भिन्न-भिन्न अङ्गोंको भिन्न-भिन्न स्थलोंमें गिरा दिया; वे ही ५१ पीठ हुए।

हृदयसे ऊर्ध्व भागके अङ्ग जहाँ पतित हुए, वहाँ वैदिक एवं दक्षिण मार्गकी सिद्धि होती है और हृदयसे निम्न भागके अङ्गोंको पतनस्थलोंमें वाममार्गकी सिद्धि होती है। १-सतीकी योनिका जहाँ पात हुआ, वहाँ कामरूप नामक पीठ हुआ; वह 'अकार' का उत्पत्तिस्थान एवं श्रीविद्यासे अधिष्ठित है। यहाँ कौशलशास्त्रसे अणिमादि सिद्धियाँ होती हैं। लोमसे उत्पन्न इसके वंश नामक दो उपपीठ हैं, वहाँ शाबर-मन्त्रोंकी सिद्धि होती है। २-स्तनोंके पतनस्थलमें काशिकापीठ हुआ और वहाँसे 'आकार' उत्पन्न हुआ। वहाँ देहत्याग करनेसे मुक्ति प्राप्त होती है। सतीके स्तनोंसे दो धाराएँ निकलीं, वे ही असी और वरणा नदी हुईं। असीके तीरपर दक्षिण-सारनाथ एवं वरणाके उत्तरमें उत्तर-सारनाथ उपपीठ है। वहाँ क्रमशः दक्षिण एवं उत्तरमार्गके मन्त्रोंकी सिद्धि होती है। ३-गुह्यभाग जहाँ पतित हुआ; वहाँ नैपालपीठ हुआ; वहाँसे 'इकार'की उत्पत्ति हुई। वह पीठ वाममार्गका मूलस्थान है। वहाँ ५६ लाख भैरव-भैरवी, दो हजार शक्तियाँ, तीन सौ पीठ एवं चौदह श्मशान संनिहित हैं। वहाँ चार पीठ दक्षिण-मार्गके सिद्धिदायक हैं। उनमेंसे भी चारमें वैदिक मन्त्र सिद्ध होते हैं। नैपालसे पूर्वमें मलका पतन हुआ, अतः वहाँ किरातोंका निवास है। तीन हजार देवयोनियोंका वहाँ निवास है। ४-वामनेत्रका पतनस्थान रौद्रपर्वत है; वह महत्पीठ हुआ, 'ईकारकी' उत्पत्ति वहाँसे हुई। वामाचारसे वहाँ मन्त्रसिद्धि होकर देवताका दर्शन होता है। ५-वामकर्णके पतनस्थानमें काश्मीरपीठ हुआ, वहाँ 'उकार'का उत्पत्तिस्थान है। वहाँ सर्वविध मन्त्रोंकी सिद्धि होती है। वहाँ अनेक अद्भुत तीर्थ हैं, किन्तु कलिमें सब म्लेच्छोंद्वारा आवृत कर दिये जायँगे। ६-दक्षिणकर्णके पातस्थलमें कान्यकुब्जपीठ हुआ, और 'ऊकारकी' उत्पत्ति हुई। गङ्गा-यमुनाके मध्यमें अन्तर्वेदी नामक पवित्र स्थलमें ब्रह्मादि देवोंने स्वस्वतीर्थोंका निर्माण किया है। वहाँ वैदिक मन्त्रोंकी सिद्धि होती है। कर्णके मलके पतनस्थानमें यमुना-तटपर इन्द्रप्रस्थ नामक उपपीठ हुआ, उसके प्रभावसे विस्मृत वेद ब्रह्माको वहाँ पुनः उपलब्ध हुए। ७-नासिकाके पतनस्थानमें पूर्णगिरिपीठ है, वह 'ऋकारका' उत्पत्तिस्थल है। वहाँ योगसिद्धि होती है और मन्त्राधिष्ठातृदेव प्रत्यक्ष दर्शन देते हैं। ८-वामगण्डस्थलकी पतनभूमिपर अर्बुदाचल पीठ हुआ और 'ॠकारका' प्रादुर्भाव हुआ। वहाँ अम्बिका नामकी शक्ति है तथा वाममार्गकी सिद्धि होती है। दक्षिण-मार्गमें यहाँ विघ्न होते हैं। ९-दक्षिण गण्डस्थलके पतनस्थानमें आम्रातकेश्वरपीठ हुआ तथा 'लृकार' की उत्पत्ति हुई। वह धनदादि यक्षिणियोंका निवासस्थान है। १०-नखोंके निपतनस्थलमें एकाम्रपीठ हुआ तथा 'ॡकार' की उत्पत्ति हुई। वह पीठ विद्याप्रदायक है। ११-त्रिवलिके पतनस्थलमें त्रिस्रोतपीठ हुआ और वहाँ 'एकार'का जन्म हुआ। वस्त्रके तीन खण्ड उसके पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिणमें गिरे; वे तीन उपपीठ हुए। गृहस्थ द्विजको पौष्टिक मन्त्रोंकी सिद्धि वहाँ होती है। १२-नाभिकी पतनभूमि कामकोटिपीठ हुई, वहाँ 'ऐकार'का प्रादुर्भाव हुआ। समस्त काममन्त्रोंकी सिद्धि वहाँ होती है। उसकी चारों दिशाओंमें उपपीठ हैं, जहाँ अप्सराएँ निवास करती हैं। १३-अङ्गुलियोंके पतनस्थल हिमालय पर्वतमें कैलासपीठ हुआ तथा 'ओंकार' का प्राकट्य हुआ। अङ्गुलियाँ ही लिङ्गरूपमें प्रतिष्ठित हुईं। वहाँ करमालासे मन्त्रजप होनेपर तत्क्षण सिद्धि होती है। १४-दन्तोंके पतनस्थलमें भृगुपीठ हुआ, वहाँसे 'औकार' का प्रादुर्भाव हुआ। वैदिकादि मन्त्र वहाँ सिद्ध होते हैं। १५-दक्षिण करतलके पतनस्थानमें केदारपीठ हुआ। वहाँ 'अं'की उत्पत्ति हुई। उसके दक्षिणमें कङ्कणके पतनस्थानमें अगस्त्याश्रम नामक सिद्ध उपपीठ हुआ और उसके पश्चिममें मुद्रिकाके पतनस्थलमें इन्द्राक्षी उपपीठ हुआ। उसके पश्चिममें वलयके पतनस्थानमें रेवती-तटपर राजराजेश्वरी उपपीठ हुआ तथा १६-वामगण्डकी निपातभूमिपर चन्द्रपुरपीठ हुआ तथा 'अः' की उत्पत्ति हुई। सभी मन्त्र वहाँ सिद्ध होते हैं।

१७-जहाँ मस्तकका पतन हुआ, वहाँ श्रीपीठ हुआ तथा 'ककार' का प्रादुर्भाव हुआ। कलिमें पापी जीवोंका

वहाँ पहुँचना दुर्लभ है। उसके पूर्वमें कर्णाभरणके पतनसे उपपीठ हुआ, जहाँ ब्रह्मविद्या-प्रकाशिका ब्राह्मी शक्तिका निवास है। उससे अग्निकोणमें कर्णार्द्धाभरणके पतनसे दूसरा उपपीठ हुआ, जहाँ मुखशुद्धिकरी माहेश्वरीशक्ति है। दक्षिणमें पत्रवल्लीकी पातभूमिमें कौमारी शक्तियुक्त तीसरा उपपीठ हुआ। नैर्ऋत्यमें कण्ठमालके निपातस्थलमें ऐन्द्रजालविद्या-सिद्धिप्रद वैष्णवी-शक्तिसमन्वित चौथा उपपीठ हुआ। पश्चिममें नासा-मौक्तिकके पतनस्थानमें वाराही-शक्त्यधिष्ठित पाँचवाँ उपपीठ हुआ। वायुकोणमें मस्तकाभरणके पतनस्थानमें चामुण्डा-शक्तियुक्त क्षुद्रदेवता-सिद्धिकर छठा उपपीठ हुआ और ईशानमें केशाभरणके पतनसे महालक्ष्मीद्वारा अधिष्ठित सातवाँ उपपीठ हुआ। १८-उसके ऊपरमें कञ्चुकीकी पतनभूमिमें एक और पीठ हुआ, जो ज्योतिर्मन्त्र-प्रकाशक एवं ज्योतिष्मतीद्वारा अधिष्ठित है। वहाँ 'खकार'का प्रादुर्भाव हुआ। वह पीठ नर्मदाद्वारा अधिष्ठित है, वहाँ तप करनेवाले महर्षि जीवन्मुक्त हो गये। १९-वक्ष:स्थलके पातस्थलमें एक पीठ हुआ और 'गकार' की उत्पत्ति हुई। अग्निने वहाँ तपस्या की और देवमुखत्वको प्राप्त होकर ज्वालामुखीसंज्ञक उपपीठमें स्थित हुए। २०-वामस्कन्धके पतनस्थानमें मालवपीठ हुआ, वहाँ 'घकार'की उत्पत्ति हुई। गन्धर्वोंने रागज्ञानके लिये तपस्याकर वहाँ सिद्धि पायी। २१-दक्षिणकक्षका जहाँ पात हुआ, वहाँ कुलान्तकपीठ हुआ एवं 'ङकार' की उत्पत्ति हुई। विद्वेषण, उच्चाटन, मारणके प्रयोग वहाँ सिद्ध होते हैं। २२-जहाँ वामकक्षका पतन हुआ, वहाँ कोट्टकपीठ हुआ और 'चकार' का प्राकट्य हुआ। वहाँ राक्षसोंने सिद्धि प्राप्त की है। २३-जठरदेशके पतनस्थलमें गोकर्णपीठ हुआ तथा 'छकार'की उत्पत्ति हुई। २४-प्रथम वलिका जहाँ निपात हुआ, वहाँ मातुरेश्वरपीठ होकर 'जकार'की उत्पत्ति हुई; वहाँ शैवमन्त्र शीघ्र सिद्ध होते हैं। २५-अपर वलिके पतनस्थानमें अट्टहासपीठ हुआ तथा 'झकार' का प्रादुर्भाव हुआ; वहाँ गणेश-मन्त्रोंकी सिद्धि होती है। २६-तीसरी वलिका जहाँ पतन हुआ, वहाँ विरजपीठ हुआ और 'ञकार' की उत्पत्ति हुई। वह पीठ विष्णुमन्त्रोंका सिद्धिप्रदायक है। २७-जहाँ वस्तिपात हुआ, वहाँ राजगृहपीठ हुआ तथा 'टकार'की उत्पत्ति हुई। नीचे क्षुद्रघण्टिकाके पतनस्थलमें घण्टिका नामक उपपीठ हुआ; वहाँ ऐन्द्रजालिक मन्त्र सिद्ध होते हैं। राजगृहमें वेदार्थज्ञानकी प्राप्ति होती है। २८-नितम्बके पतनस्थलमें महापथपीठ हुआ तथा 'ठकार'की उत्पत्ति हुई। जातिदुष्ट ब्राह्मणोंने वहाँ शरीर अर्पित किया और दूसरे जन्ममें कलियुगमें देहसौख्यदायक वेदमार्ग-प्रलुम्पक अघोरादि मार्गको चलाया। २९-जघनका जहाँ पात हुआ, वहाँ कौलगिरिपीठ हुआ और 'डकार' की उत्पत्ति हुई। वन-देवताओंके मन्त्रोंकी वहाँ सिद्धि शीघ्र होती है। दक्षिण ऊरुके पतनस्थलमें एलापुरपीठ हुआ तथा 'ढकार'का प्रादुर्भाव हुआ। ३१-वाम ऊरुके पतनस्थानमें कालेश्वरपीठ हुआ तथा 'णकार' की उत्पत्ति हुई। वहाँ आयुर्वृद्धिकारक मृत्युञ्जयादि मन्त्र सिद्ध होते हैं। ३२-दक्षिण जानुके पतनस्थानमें जयन्तीपीठ होकर 'तकार' की उत्पत्ति हुई। वहाँ धनुर्वेदकी सिद्धि अवश्य होती है। ३३-वाम-जानु जहाँ पतित हुआ, वहाँ उज्जयिनीपीठ हुआ तथा 'थकार' प्रकट हुआ; वहाँ कवचमन्त्रोंकी सिद्धि होकर रक्षण होता है। अत: उसका नाम 'अवन्ती' है। ३४-दक्षिण जङ्घाके पतनस्थानमें योगिनीपीठ हुआ तथा 'दकार'की उत्पत्ति हुई। वहाँ कौलिकमन्त्रोंकी सिद्धि होती है। ३५-वामजङ्घाकी पतनभूमिपर क्षीरिकापीठ होकर 'थकार' का प्रादुर्भाव हुआ। वहाँ वैतालिक तथा शाबर मन्त्र सिद्ध होते हैं। ३६-दक्षिण गुल्फके पतनस्थानमें हस्तिनापुरपीठ हुआ तथा 'नकार' की उत्पत्ति हुई। वहीं नूपुरका पतन होनेसे नूपुरार्णवसंज्ञक उपपीठ हुआ; वहाँ सूर्यमन्त्रोंकी सिद्धि होती है।

३७-वामगुल्फके पतनस्थलमें उड्डीशपीठ होकर 'पकार'का 'प्रादुर्भाव हुआ। उड्डीशाख्य महातन्त्र वहाँ सिद्ध होता है। जहाँ दूसरे नूपुरका पतन हुआ, वहाँ डामर उपपीठ हुआ। ३८-देह-रसके पतन-स्थानमें प्रयागपीठ हुआ तथा 'फकार' की उत्पत्ति हुई। वहाँ मृत्तिका श्वेतवर्णकी दृष्टिगोचर होती है। वहाँ अन्यान्य अस्थियोंका पतन होनेसे अनेक उपपीठोंका प्रादुर्भाव हुआ। गङ्गाके पूर्वमें बगलोपपीठ एवं उत्तरमें चामुण्डादि उपपीठ, गङ्गा-यमुनाके मध्यमें राजराजेश्वरीसंज्ञक तथा यमुनाके दक्षिण-तटपर भुवनेशी नामक उपपीठ हुआ। इसीलिये प्रयाग तीर्थराज एवं पीठराज कहा गया है। ३९-दक्षिण पृष्णिके पतनस्थानमें षष्ठीशपीठ हुआ एवं 'बकार'का प्रादुर्भाव हुआ। यहाँ पादुकामन्त्रकी सिद्धि होती है। ४०-वामपृष्णिका जहाँ पात हुआ, वहाँ मायापुरपीठ हुआ तथा 'भकार' की उत्पत्ति हुई; समस्त मायाओंकी सिद्धि वहाँ होती है। ४१-रक्तके पतनस्थानमें मलयपीठ हुआ

एवं 'मकार' की उत्पत्ति हुई। रक्ताम्बरादि बौद्धोंके मन्त्र यहाँ सिद्ध होते हैं। ४२-पित्तकी पतनभूमिपर श्रीशैलपीठ हुआ तथा 'यकार'का प्रादुर्भाव हुआ। विशेषतः वैष्णव मन्त्र यहाँ सिद्ध होते हैं। ४३-मेदके पतनस्थानमें हिमालयपर मेरुपीठ हुआ एवं 'रकार' की उत्पत्ति हुई। स्वर्णाकर्षण भैरवकी सिद्धि वहाँ होती है। ४४-जहाँ जिह्वाग्रका पतन हुआ, वहाँ गिरिपीठ हुआ तथा 'लकार' की उत्पत्ति हुई। यहाँ जप करनेसे वाक्सिद्धि होती है। ४५-मज्जाके पतनस्थानमें माहेन्द्रपीठ हुआ, वह 'वकार'के प्रादुर्भावका स्थान है; यहाँ शाक्तमन्त्रोंके जपसे अवश्य सिद्धि होती है। ४६-दक्षिण अङ्गुष्ठके पातस्थलमें वामनपीठ हुआ एवं 'शकार'की उत्पत्ति हुई; यहाँ समस्त मन्त्रोंकी सिद्धि होती है। ४७-वामाङ्गुष्ठके निपतनस्थानमें हिरण्यपुरपीठ हुआ तथा 'षकार'की उत्पत्ति हुई। वहाँ वाममार्गसे सिद्धिलाभ होती है। ४८-रुचि (शोभा) के पतनस्थानमें महालक्ष्मीपीठ हुआ एवं 'सकार'का प्राकट्य हुआ। यहाँ सर्वसिद्धियाँ होती हैं। ४९-धमनीके पतनस्थलमें अत्रिपीठ हुआ; वहाँ 'हकार'की उत्पत्ति हुई तथा यावत् सिद्धियाँ होती हैं। ५०-छायाके सम्पातस्थानमें छायापीठ हुआ, एवं 'ळकार' की उत्पत्ति हुई। ५१-केशपाशके पतनस्थलमें क्षत्रपीठका प्रादुर्भाव हुआ, यहीं 'क्षकार'का उद्‌गम हुआ। यहाँ समस्त सिद्धियाँ शीघ्रतापूर्वक उपलब्ध होती हैं।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, लॄ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः। क, ख, ग, घ, ङ। च, छ, ज, झ, ञ। ट, ठ, ड, ढ, ण। त, थ, द, ध, न। प, फ, ब, भ, म। य, र, ल, व, श, ष, स, ह, ळ, क्ष। यही ५१ वर्णोंकी वर्णमाला है। यहाँ अन्तिम 'क्ष' मालाका सुमेरु है। इसी मालाके आधारपर सतीके भिन्न-भिन्न अङ्गोंका पात हुआ है। एतावता इतनी भूमि वर्ण-समाम्नायस्वरूप ही है। भिन्न-भिन्न वर्णोंकी शक्तियाँ और देवता भिन्न-भिन्न हैं। इसीलिये उन-उन वर्णों, पीठों, शक्तियों एवं देवताओंका परस्पर सम्बन्ध है, जिसके ज्ञान और अनुष्ठानसे साधकको शीघ्र ही सिद्धि होती है। मायाद्वारा ही परब्रह्मसे विश्वकी सृष्टि होती है। सृष्टि हो जानेपर भी उसके विस्तारकी आशा तबतक नहीं होती, जबतक चेतन पुरुषकी उसमें आसक्ति न हो। अतएव सृष्टि-विस्तारके लिये कामकी उत्पत्ति हुई। रजः-सत्त्वके सम्बन्धसे द्वैतसृष्टिका विस्तार होता है; परन्तु तम कारणरूप है, वहाँ द्वैतदर्शनकी कमीसे मोहकी कमी होती है। सत्त्वमय सूक्ष्मकार्यरूप विष्णु एवं रजोमय स्थूलकार्यरूप ब्रह्माके मोहित हो जानेपर भी कारणात्मा शिव मोहित नहीं होते; परन्तु जबतक कारणमें भी मोह नहीं, तबतक सृष्टिकी पूर्ण स्थिति नहीं होती। इसीलिये स्थूल-सूक्ष्म कार्यचैतन्योंकी ऐसी रुचि हुई कि कारण-चैतन्य भी मोहित हो। परन्तु वह अघटित-घटना-पटीयसी महामायाके ही वशकी बात है। इसीलिये सबने उसीकी आराधना की। देवी प्रसन्न हुईं, वे भी अपने पतिको स्वाधीन करना चाहती हैं। स्वाधीनभर्तृका स्त्री ही परमसौभाग्यशालिनी होती है। वही हुआ, महामायाने शिवको स्वाधीन कर लिया; फिर भी पिताद्वारा पतिका अपमान होनेपर उन्होंने उस पितासे सम्बन्धित शरीरको त्याग देना ही उचित समझा। महाशक्तिका शरीर उनका लीलाविग्रह ही है। जैसे निर्विकार चैतन्य शक्तिके योगसे साकार विग्रह धारण करता है, वैसे ही शक्ति भी अधिष्ठान-चैतन्ययुक्त साकार विग्रह धारण करती है। इसीलिये शिव-पार्वती दोनों मिलकर अर्द्धनारीश्वरके रूपमें व्यक्त होते हैं। अधिष्ठान-चैतन्यसहित महाशक्तिका उस लीलाविग्रह सतीशरीरसे तिरोहित हो जाना ही सतीका मरना है। प्राणीकी तपस्या एवं आराधनासे ही शक्तिको जन्म देनेका सौभाग्य एवं उसे परमेश्वरसे सम्बन्धितकर अपनेको कृतकृत्य करनेका सौभाग्य प्राप्त होता है। परन्तु यदि बीचमें प्रमादसे अहंकार उत्पन्न हो जाता है तो शक्ति उससे सम्बन्ध तोड़ लेती है और फिर उसकी वही स्थिति होती है, जो दक्षकी हुई। सतीका शरीर यद्यपि मृत हो गया, तथापि वह महाशक्तिका निवासस्थान था। श्रीशंकर उसीके द्वारा उस महाशक्तिमें रत थे, अतः मोहित होनेके कारण भी फिर उसको छोड़ न सके। यद्यपि परमेश्वर सदा स्वरूपमें ही प्रतिष्ठित होते हैं, फिर भी प्राणियोंके अदृष्टवश उनके कल्याणके लिये सृष्टि, पालन, संहरण आदि कार्योंमें प्रवृत्त-से प्रतीत होते हैं। उन्हींके अनुरूप महामायामें उनकी आसक्ति और मोहकी भी प्रतीति होती है। इसी मोहवश शंकर महाशक्तिके अधिष्ठानभूत उस प्रिय देहको लेकर घूमने लगे।

देवताओं और विष्णुने मोह मिटानेके लिये उस देहको शिवसे वियुक्त करना चाहा। साथ ही अनन्त शक्तियोंकी केन्द्रभूता महाशक्तिके अधिष्ठानभूत उस देहके अवयवोंसे लोकका कल्याण हो, यह भी सोचकर

भिन्न-भिन्न स्थानोंमें विभिन्न अङ्गोंको गिराया। भिन्न-भिन्न शक्तियोंके अधिष्ठानभूत भिन्न-भिन्न अङ्ग जिन स्थानोंमें पड़े, वहाँ उन शक्तियोंकी सिद्धि सरलतासे होती है। जैसे कपोत और सिंहके मांस आदिकोंमें भी उनकी विशेषता प्रकट होती है, वैसे ही सतीके भिन्न-भिन्न अवयवोंमें भी उनकी विशेषता प्रकट होती है। इसीलिये जैसे हिङ्गुके निकल जानेपर भी उसके अधिष्ठानमें उसकी गन्ध या वासना रहती है, वैसे ही सतीकी महाशक्तियोंके अन्तर्हित होनेपर भी उन अधिष्ठानोंमें वह प्रभाव रह गया। जैसे सूर्यकान्तपर सूर्यकी रश्मियोंका सुन्दर प्राकट्य होता है, वैसे ही उन शक्तियोंके अधिष्ठानभूत अङ्गोंमें उनका प्राकट्य बहुत सुन्दर होता है—यहाँतक कि जहाँ-जहाँ उन अङ्गोंका पात हुआ, वे स्थान भी दिव्य शक्तियोंके अधिष्ठान माने जाते हैं। वहाँ भी शक्तितत्त्वका प्राकट्य अधिक है। अतएव उन पीठोंपर शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त होती है। अङ्गसम्बन्धी कोई अंश या भूषण-वसनादिका जहाँ पात हुआ, वही उपपीठ है। उनमें भी उन-उन विशेष शक्तितत्त्वोंका आविर्भाव होता है। अनन्त शक्तियोंकी केन्द्रभूता महाशक्तिका जो अधिष्ठान हो चुका है, उसमें एवं तत्सम्बन्धी समस्त वस्तुओंमें शक्तितत्त्वका बाहुल्य होना ही चाहिये। वैसे तो जहाँ भी, जिस-किसी भी वस्तुमें जो भी शक्ति है, उन सबका ही अन्तर्भाव महामायामें ही है—

यच्च किंचित् क्वचिद् वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा॥

अपनी-अपनी योग्यता और अधिकारके अनुसार इष्ट देवता, मन्त्र, पीठ, उपपीठके साथ सम्बन्ध जोड़नेसे सिद्धिमें शीघ्रता होती है। तथा च—

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दरूपं यदक्षरम्।
प्रवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥

—इत्यादि वचनोंके अनुसार प्रणवात्मक ब्रह्म ही निखिल विश्वका उपादान है। वही शक्तिमय सती-शरीररूपमें और निखिल वाङ्मय प्रपञ्चके मूलभूत एकपञ्चाशत् वर्णरूपसे व्यक्त होता है। जैसे निखिल विश्वका शक्तिरूपमें ही पर्यवसान होता है, वैसे ही वर्णोंमें ही सकल वाङ्मय प्रपञ्चका अन्तर्भाव होता है; क्योंकि सभी शक्तियाँ वर्णोंकी आनुपूर्वीविशेष मात्र हैं। शब्द-अर्थका, वाच्य-वाचकका, असाधारण सम्बन्ध किं बहुना अभेद ही होता है; अतएव एकपञ्चाशत् वर्णोंके कार्यभूत सकल वाङ्मय प्रपञ्चका जैसे एकपञ्चाशत् वर्णोंमें अन्तर्भाव किया जाता है, वैसे ही वाङ्मय प्रपञ्चके वाच्यभूत सकल अर्थमय प्रपञ्चका उसके मूलभूत एकपञ्चाशत् शक्तियोंमें अन्तर्भाव करके वाच्य-वाचकका अभेद प्रदर्शित किया गया है। यही ५१ पीठोंका रहस्य है। ('सिद्धान्तसे')

भारतके बारह प्रधान देवी-विग्रह और उनके स्थान

काञ्चीपुरे तु कामाक्षी मलये भ्रामरी तथा। केरले तु कुमारी सा अम्बाऽऽनर्तेषु संस्थिता॥
करवीरे महालक्ष्मीः कालिका मालवेषु सा। प्रयागे ललिता देवी विन्ध्ये विन्ध्यनिवासिनी॥
वाराणस्यां विशालाक्षी गयायां मङ्गलावती। बङ्गेषु सुन्दरी देवी नेपाले गुह्यकेश्वरी॥
इति द्वादशरूपेण संस्थिता भारते शिवा। एतासां दर्शनादेव सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
अशक्तो दर्शने नित्यं स्मरेत् प्रातः समाहितः। तथाप्युपासकः सर्वैरपराधैर्विमुच्यते॥

(त्रिपुरारहस्य, माहात्म्य खं० अ० ४८। ७१—७५)

जगज्जननी भगवती महाशक्ति काञ्चीपुरमें कामाक्षीरूपसे, मलयगिरिमें भ्रामरी (भ्रमराम्बा) नामसे, केरल (मलाबार) में कुमारी (कन्याकुमारी), आनर्त (गुजरात) में अम्बा, करवीर (कोल्हापुर) में महालक्ष्मी, मालवा (उज्जैन) में कालिका, प्रयागमें ललिता (अलोपी) तथा विन्ध्यगिरिमें विन्ध्यवासिनीरूपसे प्रतिष्ठित हैं। वे वाराणसीमें विशालाक्षी, गयामें मङ्गलवती, बंगालमें सुन्दरी और नैपालमें गुह्यकेश्वरी कही जाती हैं। मङ्गलमयी पराम्बा पार्वती इन बारह रूपोंसे भारतमें स्थित हैं, इन विग्रहोंके दर्शनसे ही मनुष्य सभी पापोंसे छूट जाता है। दर्शनमें अशक्त प्राणी सावधान चित्तसे प्रतिदिन प्रातःकालमें इनका स्मरण करे। ऐसा करनेवाला उपासक भी सारे अपराधोंसे मुक्त हो जाता है।

इक्यावन सिद्धक्षेत्र

१-कुरुक्षेत्र, २-बदरिकाश्रमक्षेत्र, ३-नारायणक्षेत्र (बदरिकाश्रम), ४-गयाक्षेत्र, ५-पुरुषोत्तमक्षेत्र (जगन्नाथपुरी), ६-वाराणसीक्षेत्र, ७-वाराहक्षेत्र (अयोध्याके पास), ८-पुष्करक्षेत्र, ९-नैमिषारण्यक्षेत्र, १०-प्रभासक्षेत्र, ११-प्रयागक्षेत्र, १२-शूकरक्षेत्र (सोरों), १३-पुलहाश्रम (मुक्तिनाथ), १४-कुब्जाम्रकक्षेत्र (ऋषिकेश), १५-द्वारका, १६-मथुरा, १७-केदारक्षेत्र, १८-पम्पाक्षेत्र (हॉसपेट), १९-बिन्दुसर (सिद्धपुर), २०-तृणबिन्दुवन, २१-दशपुर (मालवेका वर्तमान मन्दसोर), २२-गङ्गा-सागर-संगम, २३-तेजोवन, २४-विशाखसूर्य (विशाखापत्तनम्), २५-उज्जयिनी, २६-दण्डक (नासिक), २७-मानस (मान-सरोवर), २८-नन्दाक्षेत्र (नन्दादेवी पर्वत), २९-सीता-श्रम (बिठूर), ३०-कोकामुख, ३१-मन्दार (भागलपुर), ३२-महेन्द्र (मंडासा), ३३-ऋषभ, ३४-शालग्रामक्षेत्र (दामोदर-कुण्ड), ३५-गोनिष्क्रमण, ३६-सह्य (सह्याद्रि), ३७-पाण्ड्य, ३८-चित्रकूट, ३९-गन्धमादन (रामेश्वर), ४०-हरिद्वार, ४१-वृन्दावन, ४२-हस्तिनापुर, ४३-लोहाकुल (लोहार्गल), ४४-देवशाल, ४५-कुमरि-क्षेत्र (कुमारस्वामी), ४६-देव-दारुवन (आसाम), ४७-लिङ्गस्फोट, ४८-अयोध्या, ४९-कुण्डिन (आर्वीके पास), ५०-त्रिकूट, ५१-माहिष्मती।

चार धाम

१—श्रीबदरीनाथ

उत्तर-रेलवेकी मुगलसरायसे अमृतसर जानेवाली मुख्य लाइनके लक्सर स्टेशनसे एक लाइन हरिद्वारतक जाती है। हरिद्वारसे एक दूसरी लाइन ऋषिकेश जाती है। ऋषिकेशसे १५४ मील जोशीमठतक मोटर-बसें चलती हैं। वहाँसे १९ मील पैदल जाना पड़ता है। हिमालयमें नर-नारायण पर्वतके नीचे श्रीबदरीनाथ धाम है।

२—श्रीद्वारका

पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबाद-दिल्ली लाइनके मेहसाणा स्टेशनसे एक लाइन सुरेन्द्रनगरतक गयी है। सुरेन्द्रनगरसे एक लाइन ओखाबंदरतक जाती है। इसी लाइनपर द्वारका स्टेशन है। बेटद्वारका और डाकोरजी भी द्वारकाके ही अङ्ग माने जाते हैं। ओखाबंदरसे समुद्रकी खाड़ीको नौकाद्वारा पार करके बेटद्वारका जाना पड़ता है। बंबई-खाराघोड़ा लाइनके आनन्द स्टेशनसे जो लाइन गोधरा जाती है, उस लाइनपर डाकोर स्टेशन है।

३—श्रीजगन्नाथ (पुरी)

पूर्व-रेलवेकी हबड़ा-वाल्टेयर लाइनके खुर्दा-रोड स्टेशनसे एक लाइन पुरीको जाती है। समुद्र-किनारे उड़ीसामें यह जगन्नाथपुरी-धाम है।

४—श्रीरामेश्वर

दक्षिण-रेलवेकी मद्रास-धनुष्कोटि लाइनके पाम्बन स्टेशनसे एक लाइन रामेश्वरम्तक गयी है। पाम्बनके पास समुद्रपर रेलवे-पुल है, जो रामेश्वरम् द्वीपको बड़े भूभागसे मिलाता है।

यदन्यत्र कृतं पापं तीर्थे तद् याति लाघवम्। न तीर्थकृतमन्यत्र क्वचिदेव व्यपोहति॥

दूसरे स्थानपर किया हुआ पाप तीर्थमें क्षीण हो जाता है, परन्तु तीर्थमें किया हुआ पाप अन्य स्थानोंमें कभी नष्ट नहीं होता।

मोक्षदायिनी सप्तपुरियाँ

काशी काञ्ची च मायाख्या त्वयोध्या द्वारवत्यपि।
मथुरावन्तिका चैताः सप्तपुर्योऽत्र मोक्षदाः॥

१-काशी

इसका नाम बनारस या वाराणसी भी है। उत्तर-रेलवेकी मुगलसरायसे अमृतसर तथा देहरादून जानेवाली मुख्य लाइनके मुगलसराय स्टेशनसे ७ मीलपर काशी और उससे ४ मील आगे बनारस-छावनी स्टेशन है। इलाहाबादके प्रयाग स्टेशनसे भी जंघई होकर एक सीधी लाइन काशी होती हुई बनारस-छावनीतक जाती है। पूर्वोत्तर-रेलवेकी एक लाइन भटनीसे तथा दूसरी छपरासे इलाहाबाद सिटीतक जाती है। उनसे भी बनारस सिटी होते हुए बनारस-छावनी जा सकते हैं। गङ्गा-किनारे यह भगवान् शङ्करकी प्रसिद्ध पुरी है।

सप्तपुरियाँ (१)

श्रीअयोध्यापुरी

श्रीमथुरापुरी
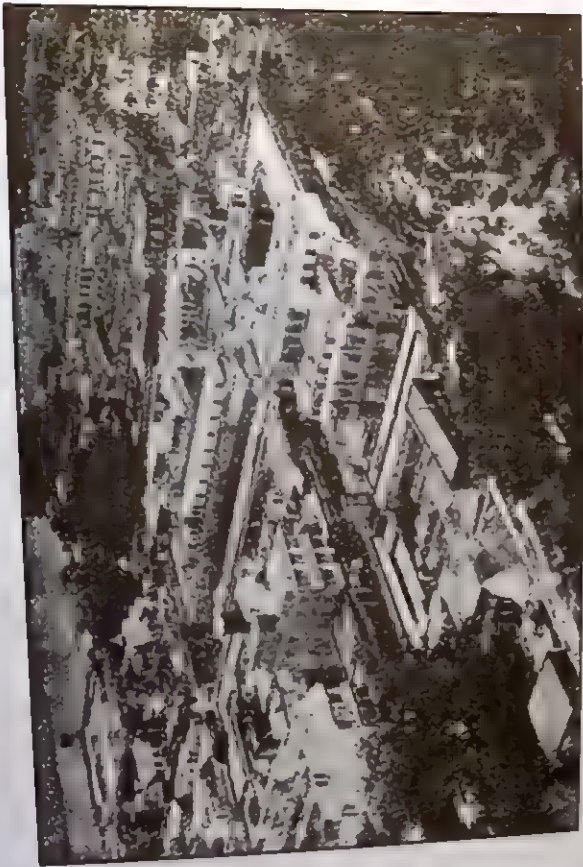
श्रीमायापुरी (हरिद्वार)

दशाश्वमेध-घाट (काशीपुरी)

सप्तपुरियाँ (२)

तिरुकुमारकोणम् (काञ्चीपुरम्)
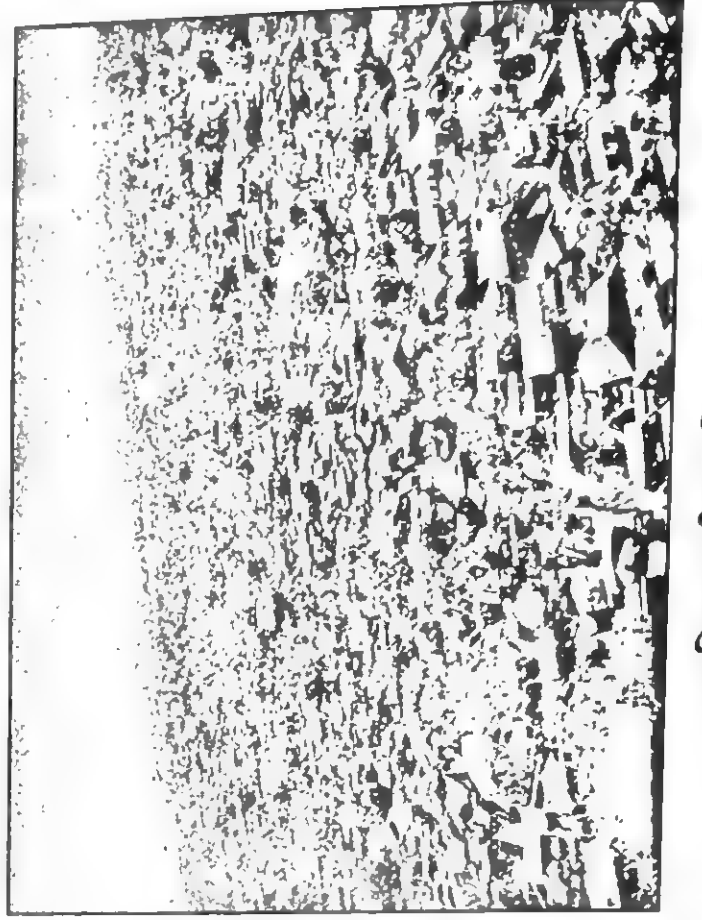
अवन्तिकापुरीका विहङ्गम दृश्य
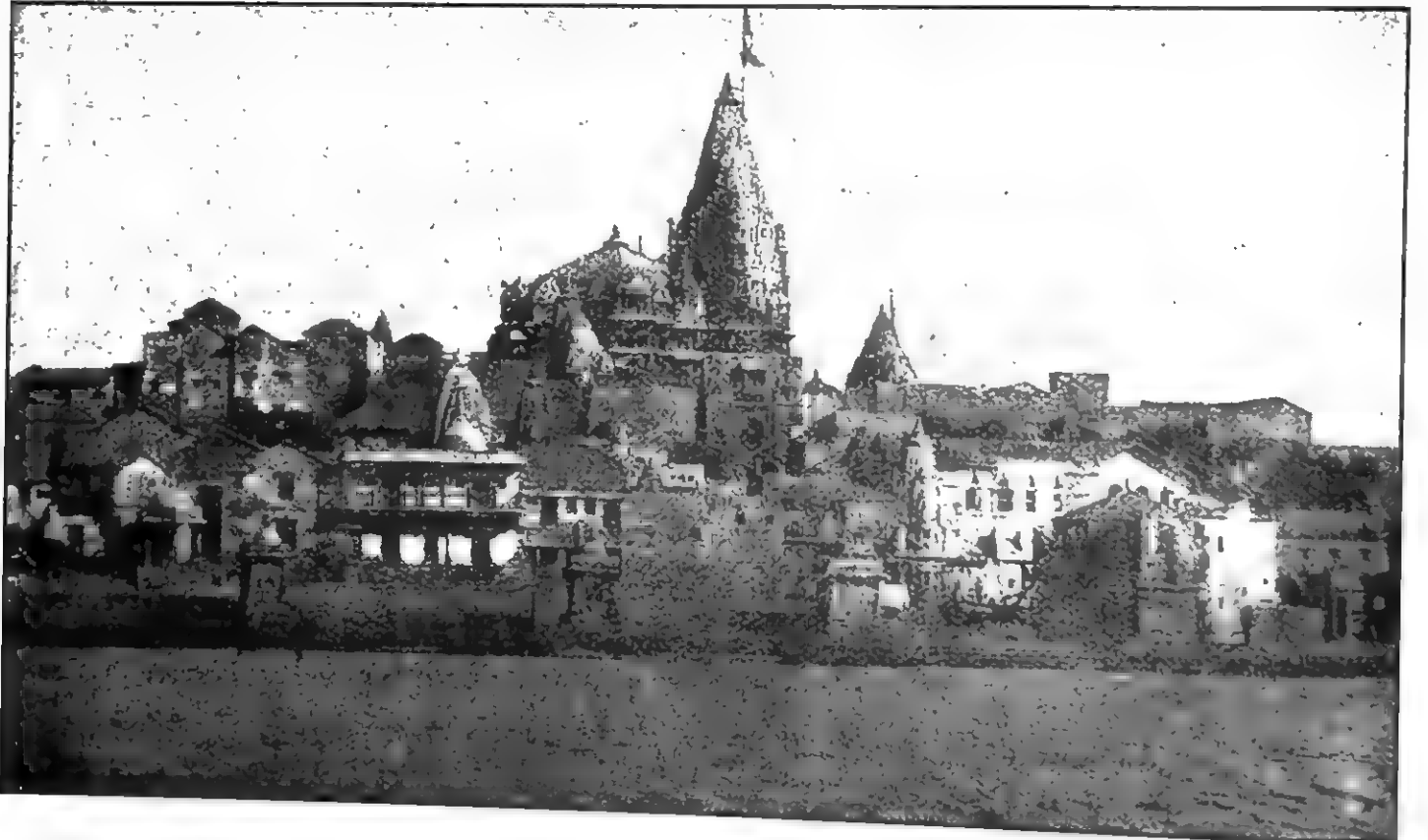
श्रीद्वारकापुरी

२-काञ्ची

दक्षिण-रेलवेकी मद्राससे धनुष्कोटि जानेवाली मुख्य लाइनके मद्रास स्टेशनसे ३५ मीलपर चेंगलपट स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन अरकोनम्‌तक जाती है। इस लाइनपर काञ्चीवरम् स्टेशन है। स्टेशनका नाम काञ्चीवरम् है; किन्तु नगरका नाम है काञ्चीपुरम्।

३-मायापुरी (हरिद्वार)

उत्तर-रेलवेकी मुगलसरायसे अमृतसर जानेवाली मुख्य लाइनपर लक्सर स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन हरिद्वारतक गयी है। गङ्गाजी यहीं पर्वतीय क्षेत्रको छोड़कर समतल भूमिमें प्रवेश करती हैं, इससे इसे गङ्गाद्वार भी कहते हैं।

४-अयोध्या

उत्तर-रेलवेकी मुगलसराय-लखनऊ लाइनके मुगलसराय स्टेशनसे १२८ मीलपर अयोध्या स्टेशन है। भगवान् श्रीरामकी यह पवित्र अवतार-भूमि सरयू-तटपर है।

५-द्वारावती (द्वारका)

यह चार धामोंमें एक धाम भी है। पश्चिम-रेलवेकी सुरेन्द्रनगर-ओखापोर्ट लाइनपर यह नगर समुद्र-किनारेका स्टेशन है।

६-मथुरा

पूर्वोत्तर-रेलवेकी आगरा-फोर्टसे गोरखपुर जानेवाली लाइनपर तथा पश्चिम-रेलवेकी बंबई-कोटा-दिल्ली लाइनपर मथुरा स्टेशन है। यमुना-तटपर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी अवतार-भूमिका यह पवित्र नगर स्थित है।

७-अवन्तिकापुरी (उज्जैन)

मध्य-रेलवेकी बंबई-भोपाल-दिल्ली लाइनके भोपाल स्टेशनसे एक लाइन उज्जैन जाती है। पश्चिम-रेलवेकी बंबई-कोटा-दिल्ली लाइनपर नागदा स्टेशनसे एक बड़ी लाइन भी उज्जैनतक गयी है। पश्चिम-रेलवेकी एक छोटी लाइन भी अजमेरसे खंडवातक जाती है। उक्त लाइनके महू स्टेशनसे भी एक लाइन उज्जैनको गयी है। यह नगर शिप्रा नदीके तटपर है।

यो न क्लिष्टोऽपि भिक्षेत ब्राह्मणस्तीर्थसेवकः।
सत्यवादी समाधिस्थः स तीर्थस्योपकारकः॥

तीर्थसेवी जो ब्राह्मण अत्यन्त क्लेश पानेपर भी किसीसे दान नहीं लेता, सत्य बोलता और मनको रोककर रखता है, वह तीर्थकी महिमा बढ़ानेवाला है।

पञ्च केदार

[भगवान् शङ्करने एक बार महिषरूप धारण किया था। उनके उस महिषरूपके पाँच विभिन्न अङ्ग पाँच स्थानोंपर प्रतिष्ठित हुए। वे स्थान 'केदार' कहे जाते हैं।]

१. श्रीकेदारनाथ

यह मुख्य केदारपीठ है। यहाँ महिषरूपधारी शिवका पृष्ठभाग प्रतिष्ठित है। इसे प्रथम केदार कहते हैं। केदारनाथकी यात्राका पूरा विवरण उत्तराखण्डके विवरणमें दिया गया है। उसीमें शेष चार केदारोंके भी स्थल एवं यात्रा-मार्ग दे दिये गये हैं; क्योंकि पाँचों केदार-क्षेत्र उत्तराखण्डमें ही हैं।

२. श्रीमध्यमेश्वर

मनमहेश्वर या मदमहेश्वर भी लोग इनको कहते हैं। यह द्वितीय केदार-क्षेत्र है। यहाँ महिषरूप शिवकी नाभि प्रतिष्ठित है। ऊषीमठसे मध्यमेश्वर १८ मील है। ऊषीमठसे ही वहाँतक एक मार्ग जाता है।

३. श्रीतुङ्गनाथ

यह तृतीय केदार-क्षेत्र है। यहाँ बाहु प्रतिष्ठित हैं। केदारनाथसे बदरीनाथ जाते समय तुङ्गनाथ मिलते हैं। तुङ्गनाथ-शिखरकी चढ़ाई ही उत्तराखण्डकी यात्रामें सबसे ऊँची चढ़ाई मानी जाती है।

४. श्रीरुद्रनाथ

यह चतुर्थ केदार क्षेत्र है। यहाँ मुख प्रतिष्ठित है। तुङ्गनाथसे रुद्रनाथ-शिखर दीखता है; किंतु मण्डलचट्टीसे रुद्रनाथ जानेका मार्ग है। एक मार्ग हेलंग (कुम्हारचट्टी) से भी रुद्रनाथको जाता है।

५. श्रीकल्पेश्वर

यह पञ्चम केदार-क्षेत्र है। यहाँ जटाएँ प्रतिष्ठित हैं। हेलंग (कुम्हारचट्टी) में मुख्य मार्ग छोड़कर अलकनन्दाको पुलसे पार करके ६ मील जानेपर कल्पेश्वरका मन्दिर मिलता है। इस स्थानका नाम उरगम है।

चार धाम

श्रीबदरीनाथ-धाम

श्रीजगन्नाथ-धाम (पुरी)

श्रीद्वारका-धाम

श्रीरामेश्वर-धाम
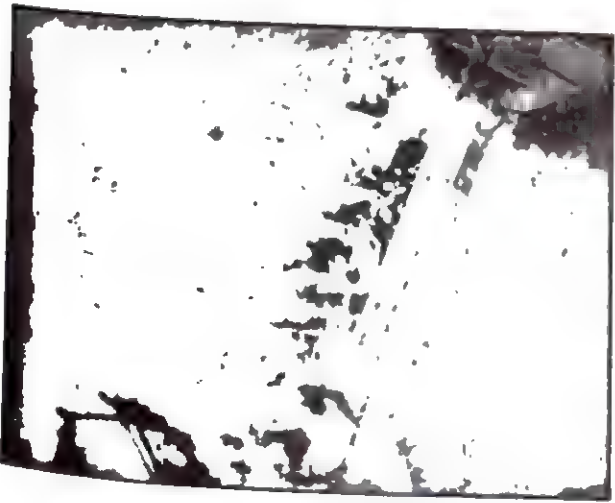
सप्त पवित्र नदियाँ

श्रीगङ्गाजी (वाराणसी)

श्रीयमुनाजी (विश्रामघाट, मथुरा)

श्रीगोदावरी (नासिक)

श्रीनर्मदा (होशंगाबाद)

श्रीसरस्वती (सिद्धपुर)

सिन्धुनद (सक्खर-सिंध)
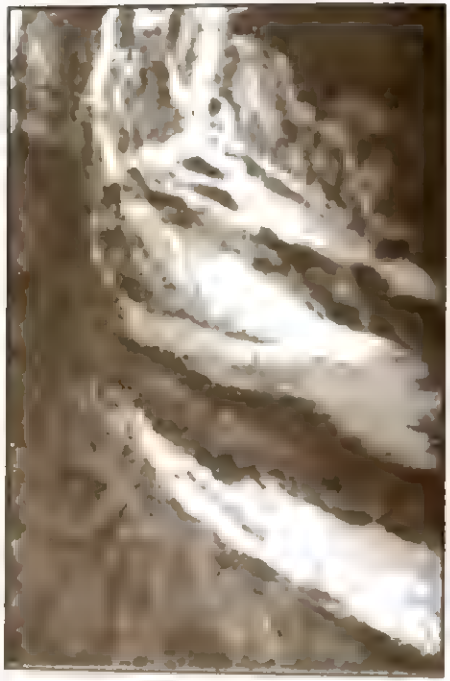
श्रीकावेरी (शिवसमुद्रम्का प्रपात)

सप्त बदरी

[भगवान् नारायण लोक-कल्याणार्थ युग-युगमें बदरीनाथके रूपमें स्थित रहते हैं। पञ्च केदारके समान ही ये बदरी-क्षेत्र भी हैं। इनमें पहले पाँच प्रधान हैं। ये सभी क्षेत्र उत्तराखण्डमें हैं।]

१. **श्रीबदरीनारायण**—बदरिकाश्रम-धाम प्रसिद्ध है। (देखिये पृष्ठ ९८)

२. **आदिबदरी**—उरगम ग्राम, कुम्हारचट्टीसे ६ मील। इन्हें ध्यानबदरी भी कहते हैं। (पृष्ठ ९७)

३. **वृद्धबदरी**—ऊषीमठ, कुम्हारचट्टीसे ढाई मील। (पृष्ठ ९७)

४. **भविष्यबदरी**—जोशीमठसे ११ मील। (पृष्ठ ९७)

५. **योगबदरी**—पाण्डुकेश्वरमें—इन्हें ध्यानबदरी भी कहते हैं। (पृष्ठ ९८)

इनके सिवा निम्नलिखित बदरी और भी हैं—

६. **आदिबदरी**—कैलासके मार्गमें शिवचुलम्से थुलिङ्गमठके बीचमें। (पृष्ठ ७५)

७. **नृसिंहबदरी**—जोशी-मठमें। (पृष्ठ ९७)

पञ्चनाथ

१. **उत्तर**—श्रीबदरीनाथ, श्रीबदरिकाश्रम (उत्तराखण्डमें)।

२. **दक्षिण**—श्रीरङ्गनाथ, श्रीरङ्गम्, (मद्रास-प्रदेश) में।

३. **पूर्व**—श्रीजगन्नाथ, श्रीनीलाचल—पुरी (उत्कल-प्रदेश)।

४. **पश्चिम**—श्रीद्वारकानाथ, श्रीद्वारका (सौराष्ट्र) में।

५. **मध्य**—श्रीगोवर्धननाथ, श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) में।

पञ्च काशी

		पृष्ठ
१. वाराणसी	....	१८७
२. गुप्तकाशी	....	९४
३. उत्तरकाशी	....	८८-८९
४. दक्षिणकाशी (तेन्काशी)	....	५१७
५. शिवकाशी	....	५१६

सप्त सरस्वती

(१) सुप्रभा-पुष्कर, (२) काञ्चनाक्षी-नैमिष, (३) विशाला-गया, (४) मनोरमा-उत्तर-कोसल, (५) ओघवती-कुरुक्षेत्र, (६) सुरेणु-हरिद्वार, (७) विमलोदका-हिमालय।

सप्त गङ्गा

(१) भागीरथी, (२) वृद्धगङ्गा, (३) कालिन्दी, (४) सरस्वती, (५) कावेरी, (६) नर्मदा, (७) वेणी।

सप्त पुण्य नदियाँ

(१) गङ्गा, (२) यमुना, (३) गोदावरी, (४) सरस्वती, (५) कावेरी, (६) नर्मदा, (७) सिन्धु।

सप्त क्षेत्र

(१) कुरुक्षेत्र (पंजाब), (२) हरिहरक्षेत्र (सोनपुर), (३) प्रभासक्षेत्र (वेरावळ), (४) रेणुकाक्षेत्र (उत्तरप्रदेश, मथुराके पास), (५) भृगुक्षेत्र (भरुच), (६) पुरुषोत्तमक्षेत्र (जगन्नाथपुरी), (७) सूकरक्षेत्र (सोरों)।

पञ्च सरोवर

(१) बिन्दु-सरोवर (सिद्धपुर), (२) नारायण-सरोवर (कच्छ), (३) पम्पा-सरोवर (मैसूर-राज्य), (४) पुष्कर-सरोवर (राजस्थान), (५) मानसरोवर (तिब्बत)।

नौ अरण्य

(१) दण्डकारण्य, (२) सैन्धवारण्य, (३) पुष्करारण्य, (४) नैमिषारण्य, (५) कुरु-जाङ्गल, (६) उत्पलावर्तकारण्य, (७) जम्बूमार्ग, (८) हिमवदरण्य, (९) अर्बुदारण्य।

चतुर्दश प्रयाग

नाम	सरिता-संगम	पृष्ठ-संख्या
१	प्रयागराज—गङ्गा-यमुना-सरस्वती	१७०
२	देवप्रयाग—अलकनन्दा-भागीरथी	८७
३	रुद्रप्रयाग—अलकनन्दा-मन्दाकिनी	९४
४	कर्णप्रयाग—पिण्डरगङ्गा-अलकनन्दा	१०२
५	नन्दप्रयाग—अलकनन्दा-नन्दा	९५
६	विष्णुप्रयाग—विष्णुगङ्गा-अलकनन्दा	९८
७	सूर्यप्रयाग—अलसतरङ्गिणी-मन्दाकिनी	९४
८	इन्द्रप्रयाग—भागीरथी-व्यासगङ्गा .... (इसे व्यासघाट भी कहते हैं। वृत्रासुरके भयसे यहाँ इन्द्रने शङ्करकी उपासना की थी)।	८७
९	सोमप्रयाग—सोमनदी-मन्दाकिनी .... (सोमद्वार, त्रियुगीनारायणसे सवा तीन मील)	९५
१०	भास्करप्रयाग .... (भटवारी, मल्लाचट्टीसे दो मील)	८९
११	हरिप्रयाग—हरिगङ्गा-भागीरथी .... (हरसिल, उत्तरकाशीसे गङ्गोत्तरीके मार्गमें)	८९
१२	गुप्तप्रयाग—नीलगङ्गा-भागीरथी .... (हरिप्रयागसे आध मील)	८९
१३	श्यामप्रयाग—श्यामगङ्गा-भागीरथी .... (गुप्तप्रयागसे पौने दो मील)	८९
१४	केशवप्रयाग—अलकनन्दा-सरस्वती .... (वसुधारासे ढाई मील नीचे)	१००

नोट—इनमें प्रथम ५ मुख्य हैं। जो लोग हिमालयके ही पञ्च प्रयाग मानते हैं, वे प्रयागराजको न लेकर छठा विष्णुप्रयाग लेते हैं। हिमालयके पञ्च प्रयागोंमें देवप्रयाग मुख्य है।

श्राद्धके लिये प्रधान तीर्थ-स्थान

नाम	श्राद्ध-स्थान	पृष्ठ-संख्या
१	देवप्रयाग (अलकनन्दा-भागीरथी-संगम) ..	८७
२	त्रियुगीनारायण (सरस्वतीकुण्ड)	९५
३	मदमहेश्वर (मध्यमेश्वर)	९६
४	रुद्रनाथ	९६
५	बदरीनाथ (ब्रह्मकपाल-शिला)	९९
६	हरिद्वार (हरिकी पैड़ी)	१०३
७	कुरुक्षेत्र (पेहेवा)	१३०
८	पिण्डारक-तीर्थ	१३३
९	मथुरा (ध्रुवघाट)	१४६
१०	नैमिषारण्य	१६५
११	धौतपाप (हत्याहरण-तीर्थ)	१६६
१२	बिठूर (ब्रह्मावर्त)	१६८
१३	प्रयागराज	१७०
१४	काशी (मणिकर्णिका)	१८८
१५	अयोध्या	२०५
१६	गया	२२९
१७	बोधगया	२३४
१८	राजगृह	२३७
१९	परशुरामकुण्ड	२६४
२०	याजपुर	२६७
२१	भुवनेश्वर	२६९
२२	जगन्नाथपुरी	२७५
२३	उज्जैन	२९९
२४	अमरकण्टक	३११
२५	नासिक	३३७
२६	त्र्यम्बकेश्वर	३४१
२७	पंढरपुर (चन्द्रभागा)	३५४
२८	लोहार्गल	३७८
२९	पुष्कर	३८५
३०	तिरुपति (बालाजी)	४६०
३१	शिवकाञ्ची—सर्वतीर्थ-सरोवर	४७२
३२	कुम्भकोणम्	४८५
३३	श्रीरङ्गम् (कावेरी-तट)	४९५
३४	रामेश्वरम् (लक्ष्मण-तीर्थ)	४९९
३५	धनुष्कोटि	५०७
३६	दर्भशयनम्	५०८
३७	सिद्धपुर	५३३
३८	द्वारकापुरी	५४४
३९	नारायण-सर	५५१
४०	प्रभास-पाटण (वेरावळ)	५५४
४१	शूलपाणि (सुरपाणेश्वर)	५७१
४२	चाणोद	५७४

भारतवर्षके मेले

[यों तो भारतवर्षमें लाखों मेले छोटे-बड़े विभिन्न स्थानोंमें होते ही रहते हैं, मुख्य-मुख्य कुछ स्थानोंके मेलोंमेंसे कुछके नाम नीचे दिये जाते हैं।]

कुम्भ-मेला

हरिद्वार—कुम्भराशिके गुरुमें, मेषके सूर्यमें।
प्रयाग—वृषराशिके गुरुमें, मकरके सूर्यमें।
उज्जैन—सिंहराशिके गुरुमें, मेषके सूर्यमें।
नासिक—सिंहराशिके गुरुमें, सिंहके सूर्यमें।

अन्य मेले

अमरनाथ (कश्मीर)—आश्विन-पूर्णिमा।
हरिद्वार—द्वादशवर्षीय कुम्भ, शिवरात्रि, चैत्र।
ज्वालामुखी (पूर्व-पंजाब)—चैत्र-आश्विन-नवरात्र।
बैजनाथ पपरोला (काँगड़ा)—महाशिवरात्रि।
रिबालसर—वैशाख-पूर्णिमा, माघ, फाल्गुन-शुक्ला सप्तमी।
भागसूनाथ—महाशिवरात्रि।
कुरुक्षेत्र—प्रति अमावस्या, सूर्य-ग्रहण।
हिसार—चैत्र, श्रावण।
सिरसा—आश्विन।
पेहेवा—कार्तिक-वैशाखकी अमावस्या।
मेरठ—चैत्र-नवरात्र।
गढ़मुक्तेश्वर—कार्तिक-पूर्णिमा।
राजघाट—कार्तिक-पूर्णिमा।
अलीगढ़—माघ-पूर्णिमा।
मथुरा—यमद्वितीया (कार्तिक-शुक्ला २, कार्तिक-पूर्णिमा)।
व्रजपरिक्रमा—भाद्र-शुक्ला ११ से आरम्भ।
राधाकुण्ड—कार्तिक-शुक्ला ६।
गोवर्धन—कार्तिक-शुक्ला १ (अन्नकूट एवं गोवर्धन-पूजा), मार्गशीर्ष अमावस्या।
बरसाना—कार्तिक-पूर्णिमा, राधा-अष्टमी (भाद्र-शुक्ला ८)।
नन्दगाँव—जन्माष्टमी (भाद्र-कृष्णा ८), होलिकापर्व।
वृन्दावन—श्रावण-शुक्ला १ से भाद्र-कृष्णा ८ तक, चैत्र, पौष।
गोकुल—श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी।
नैमिषारण्य—प्रति अमावस्या, पूरा फाल्गुन; माघ-अमावस्यासे माघ-पूर्णिमातक परिक्रमा।
धौतपाप (हत्याहरण)—भाद्रपद।
बिठूर (ब्रह्मावर्त)—कार्तिक-पूर्णिमा।
प्रयाग—द्वादशवर्षीय कुम्भ; प्रतिवर्ष माघ, मकर-संक्रान्ति।
बिल्लोर—(कानपुरसे जाना होता है)—वसन्त-पञ्चमी (इसमें स्त्रियाँ नहीं जा सकतीं, शाप है)।
लखनऊ (महावीरजीका मन्दिर)—ज्येष्ठका पहला मङ्गलवार।
आगरा—श्रावण।
सीताकुण्ड (सुलतानपुर गोमती नदी)—ज्येष्ठ और कार्तिक।
चित्रकूट—रामनवमी, सूर्य-ग्रहण।
काशी—श्रावण, नवरात्र, भाद्रपद, कार्तिक, महाशिवरात्रि, ग्रहण, फाल्गुन—पञ्चक्रोशी-यात्रा।
विन्ध्याचल—चैत्र-आश्विन-नवरात्र।
मिर्जापुर—वामन-द्वादशी (भाद्र-शुक्ला १२)।
अयोध्या—रामनवमी, कार्तिक-पूर्णिमा, श्रावण-झूला।
देवीपाटन—चैत्र-नवरात्र।
एकमा—महाशिवरात्रि।
सोनपुर (हरिहर-क्षेत्र)—कार्तिक-पूर्णिमा।
मुजफ्फरपुर—महाशिवरात्रि।
मोतीहारी (चम्पारन)—महाशिवरात्रि।
बेतिया—आश्विन।
नैपाल-काठमाण्डू—महाशिवरात्रि।
सीतामढ़ी—रामनवमी।
जनकपुर—रामनवमी।
गौतमकुण्ड—रामनवमी।
बकसर—मकर-संक्रान्ति।
ब्रह्मपुर—महाशिवरात्रि, वैशाख-कृष्णा त्रयोदशी।
डुमरावँ—रामनवमी, कृष्ण-जन्माष्टमी।
पटना—श्रावण।
गया—आश्विन, चैत्र (श्राद्धके लिये)।
बोधगया—आश्विन-चैत्र।
राजगृह—कार्तिक-पूर्णिमा, महाशिवरात्रि, ग्रहण।
मुँगेर—माघ।
अजगयबीनाथ—माघ, फाल्गुन।
मन्दारगिरि—मकर-संक्रान्ति।
विराटनगर—शिवरात्रि, नवरात्र।
कलकत्ता—नवरात्र (काली-मन्दिर)।

तारकेश्वर—महाशिवरात्रि, मेष-संक्रान्ति।
नवद्वीप—फाल्गुन-पूर्णिमा।
शान्तिपुर—कार्तिक-पूर्णिमा।
सिलचर—माघ।
ब्रह्मपुर (गौहाटी)—चैत्र, कार्तिक।
बाराह-क्षेत्र—कार्तिक-पूर्णिमा।
कामाख्या (गौहाटी)—चैत्र, आश्विन।
भुवनेश्वर—वैशाख।
कोणार्क—माघ-शुक्ल।
पुरी—आषाढ़-रथयात्रा, महाशिवरात्रि, गङ्गा-दशहरा, जन्माष्टमी।
उज्जैन (मध्यभारत)—महाशिवरात्रि, द्वादशवर्षीय कुम्भ।
गौरीशङ्कर—कार्तिक-पूर्णिमा।
शबरी-नारायण—माघ-पूर्णिमा।
अमरकण्टक—कार्तिक-पूर्णिमा।
मार्बलकी पहाड़ी (जबलपुर)—कार्तिक-पूर्णिमा।
धुआँधार (नर्मदातट)—कार्तिक-पूर्णिमा।
होशंगाबाद—कार्तिक-पूर्णिमा।
ओङ्कारेश्वर—कार्तिक-पूर्णिमा।
रामटेक (नागपुर)—रामनवमी, कार्तिक-पूर्णिमा।
बाँसवाड़ा—कार्तिक-पूर्णिमा।
नासिक—द्वादशवर्षीय कुम्भमेला, रामनवमी, श्रावण, नवरात्र, भाद्रपद, मकरसंक्रान्ति, महाशिवरात्रि, ग्रहण, अधिकमास।
त्र्यम्बक—नवरात्र, महाशिवरात्रि, ग्रहण।
भीमशङ्कर—महाशिवरात्रि।
पंढरपुर—आषाढ़, कार्तिक, चैत्र।
केशरियानाथ (जैनतीर्थ)—वैशाख पूर्णिमा।
गुड़गाँव (दिल्लीप्रदेश)—नवरात्र।
करौली—चैत्र-नवरात्र।
रामनाथ काशी (पंजाबमें नारनौलके समीप)—शिवरात्रि।
सालासर—हनुमज्जयन्ती।
लोहार्गल—भाद्र-अमावास्या।
रानी सती—भाद्र-अमावस्या।
पुष्करराज—कार्तिक-शुक्ला १ से १५।
रामदेवरा—भाद्र, माघ।
हुणगाँव—आश्विन।
कौलायतजी—कार्तिक।
धौलपुर—कार्तिक-पूर्णिमा।
नाथद्वारा—कार्तिक।
एकलिङ्गजी—महाशिवरात्रि।
दमोह—शिवरात्रि, वसन्तपञ्चमी।
चाँदा—वैशाख।
रामतीर्थ—कार्तिक-शुक्ल।
पूना—भाद्रपद, गणपति-उत्सव।
किष्किन्धा—चैत्र-पूर्णिमा।
आबू—श्रावण, फाल्गुन (जैनोंका मेला), सूर्यग्रहण।
गोकर्ण—महाशिवरात्रि।
मल्लिकार्जुन—महाशिवरात्रि।
कोटितीर्थ—बारह वर्षमें एक बार आन्ध्रदेशका पुष्कर-महोत्सव नामक सबसे बड़ा मेला।
भद्राचलम्—रामनवमी।
नेल्लोर—रामनवमी।
तिरुपति—(बालाजी) आश्विन।
कालहस्ती—महाशिवरात्रि।
अरुणाचल—मार्गशीर्ष-पूर्णिमा।
काञ्ची—ज्येष्ठ।
मायवरम्—कार्तिक।
कुम्भकोणम्—माघ, यहाँ कुम्भमेला भी होता है।
त्रिचिनापल्ली—भाद्रपद।
श्रीरङ्गम्—पौष, माघ।
रामेश्वरम्—महाशिवरात्रि, श्रावण, ज्येष्ठ, आषाढ़।
धनुष्कोटि—ग्रहण, आषाढ़-पूर्णिमा।
त्रिवेन्द्रम् (पद्मनाभ)—अनन्त-चतुर्दशी।
सिद्धपुर (सरस्वती नदी)—कार्तिक और वैशाखकी पूर्णिमा।
बहुचराजी—चैत्र और आश्विन।
भीमनाथ—श्रावण।
अम्बाजी (आरासुर)—भाद्र-पूर्णिमा।
गङ्गानाथ (नर्मदातट)—गङ्गासप्तमी (वैशाख शुक्ल ७)।
प्रभास-पाटण—कार्तिक, चैत्र और महाशिवरात्रि।
गिरनार—महाशिवरात्रि।
शामलाजी—कार्तिक-पूर्णिमा।
खेडब्रह्मा—प्रतिपूर्णिमा, कार्तिक-पूर्णिमा।
डाकोर—आश्विन-पूर्णिमा, कार्तिक-पूर्णिमा।
चाँपानेर (पावागढ़)—चैत्र तथा आश्विनके नवरात्र।
शूलपाणि (सुरपाणेश्वर)-महाशिवरात्रि।
चाणोद—कार्तिक-पूर्णिमा।

शुक्लतीर्थ—कार्तिक-पूर्णिमा।

भारभूतेश्वर—अधिक (पुरुषोत्तम-मास)।

इनके अतिरिक्त अमृतसर, व्यास नदी, धर्मशाला, कानपुर, गोरखपुर, छपैया, उनाई, छपरा, सम्मेतशिखर, चित्तौड़, काँकरोली, उदयपुर, नृसिंहगढ़, सागर, दौलताबाद, घुश्मेश्वर, परली-बैजनाथ, नागेशनाथ, हैदराबाद, वारंगल, बीदर, तुलजा भवानी, बीजापुर, बदामी, धारवाड़, कोल्हापुर, महाबलेश्वर, विशाखापट्टनम्, कोकनाडा, राजमहेन्द्री, मद्रास, महाबलिपुरम्, कृष्णा, कुमारस्वामी, रेणुगुंटा, तिरुवारूर, भूतपुरी, पक्षितीर्थ, चिदम्बरम्, नागपट्टनम्, मन्नारगुडि, तञ्जौर, जम्बुकेश्वर, रामनद, देवीपट्टनम्, दर्भशयनम्, तिरुच्चेन्दूर, तेन्काशी, तोताद्रि, लम्बे नारायण, शुचीन्द्रम्, कडलूर, कन्याकुमारी, मच्छीतीर्थ (मसुलीपटम्), कोयम्बतूर, उटाकामंड, बंगलोर, शिवसमुद्रम्, श्रीरङ्गपट्टन, मैसूर, श्रवणबेलगोल, बेलूर, शृंगेरी-मठ, हरिहर, गोकर्ण, माधवतीर्थ, द्वारका, जूनागढ़, नान्देड, धारवाड़ आदि अनेक स्थानोंमें मेले लगते हैं।

—सम्पादक

मुख्य जल-प्रपात

नाम	ऊँचाई	स्थिति
१-मोखड़ी	१० फुट	नर्मदा नदी, सुरपाणेश्वरके पास।
२-धुआँधार	६० ,,	नर्मदा, मार्बलकी पहाड़ीके पास।
३-कपिलधारा	३०० ,,	अमरकण्टकपर नर्मदाके प्राकट्य-स्थानसे कुछ दूर।
४-गङ्गापुर	२० ,,	नासिकसे ४ मील।
५-ताम्रपर्णी	८० ,,	पालमकोटासे २९ मील, पापनाशम् ग्राम।
६-खंडाला	३०० ,,	करजतसे ११ मील खंडाला स्टेशन।
७-शिवसमुद्रम्	२०० ,,	मडवल्ली (मदुरा) से १२ मील।
८-जरसोपान	८३० फुट	होनावरसे १८ मील। यहाँ जरसोपा नदीके ४ जलप्रपात हैं—१-जरसोपान, २-गर्जना, ३-अग्निबाण, ४-घूँघटवाली। इनमें पहला ८३० फुट ऊपरसे नीचे १३२ फुट गहरे कुण्डमें गिरता है।
९-गोकाक	१७५ ,,	गोकाक स्टेशनसे ४ मीलपर गतपर्वा नदी।

भारतकी प्रधान गुफाएँ

१-दार्जिलिंगकी गुफा—कचारी पहाड़में एक गुफा है, जो कहते हैं तिब्बततक गयी है।

२-हिंगलाज माता—कराचीसे ९० मील दूर (पाकिस्तानमें)।

३-बुद्धगयाके पासकी सात गुफाएँ—फल्गु नदीके पास सात पुरानी गुफाएँ हैं, इनमें एक ४१ फुट लंबी तथा २० फुट चौड़ी है।

४-उदयगिरि, खण्डगिरि या शंडगिरि—भुवनेश्वर (उड़ीसा) से पाँच मीलपर उदयगिरि, खण्डगिरि दो पर्वत हैं। उदयगिरिमें रानीकी गुफा, गणेशगुफा, स्वर्गद्वारीगुफा, हंसपुरी-गुफा, वैकुण्ठ-गुफा, पवन गुफा आदि कई गुफाएँ हैं। खण्डगिरिमें अनन्त-गुफा तथा आचार्य कलाचन्द्र और बालाचन्द्रकी गुफाएँ हैं। पहाड़के शिखरपर श्रीपार्श्वनाथजीका मन्दिर है।

५-भर्तृहरि-गुफा—पुष्कर।

६-उदयगिरिकी गुफाएँ—भेलसा, ग्वालियर।

७-अजन्ताकी गुफाएँ—जलगाँवसे ३७ मील। इनमें २९ बौद्ध-गुफाएँ विशेषरूपसे दर्शनीय हैं।

८-रामशय्या-गुफाएँ—नासिकसे ६ मील दूर एक पहाड़पर रामसेज है, यहाँ तीन-चार गुफाएँ हैं—एक सीतागुफा है। कहते हैं भगवान् रामने खर-दूषणसे युद्ध करते समय सीताजीको यहाँ रखा था।

९-पाण्डव-गुफाएँ—नासिकसे ५ मील दूर अंजनेरी पहाड़ीपर कुल २६ गुफाएँ हैं।

शिव-ताण्डवका दृश्य, इलोरा

कैलास-गुफामें शिव-पार्वती, इलोरा

कैलास-मन्दिरका गर्भगृह, इलोरा

रावणके मस्तकपर शिव-पार्वती, इलोरा

चैत्यगुफा, भाजा
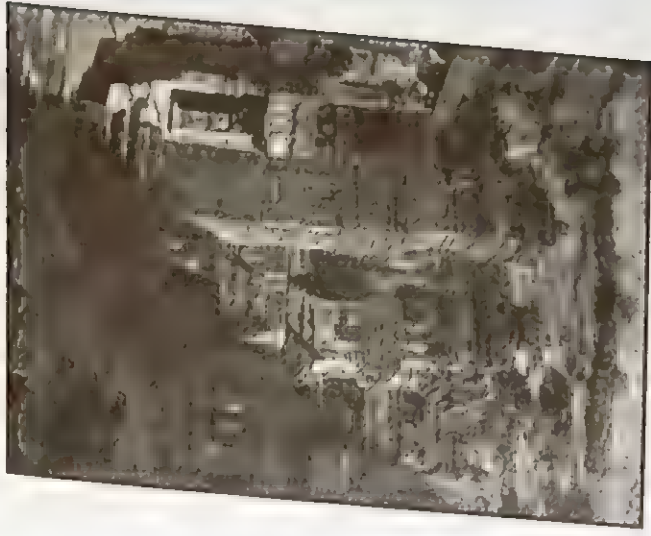
शिव-मन्दिर, इलोरा

भारतके कुछ प्रसिद्ध गुफा-मन्दिर—२
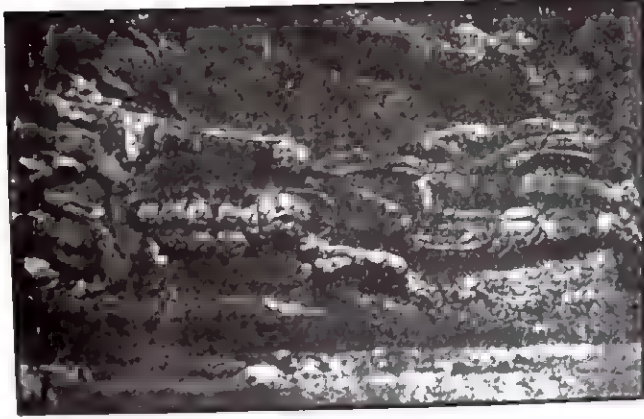
कन्हेरी-गुफामें पद्मपाणि-मूर्ति
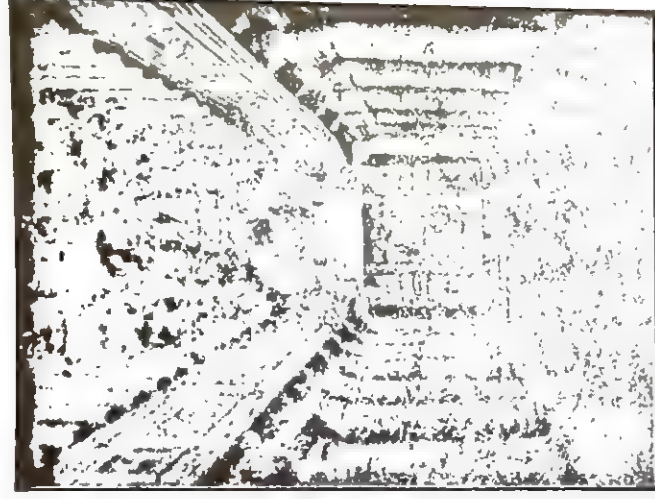
अजन्ता-गुफाका बुद्ध-मन्दिर
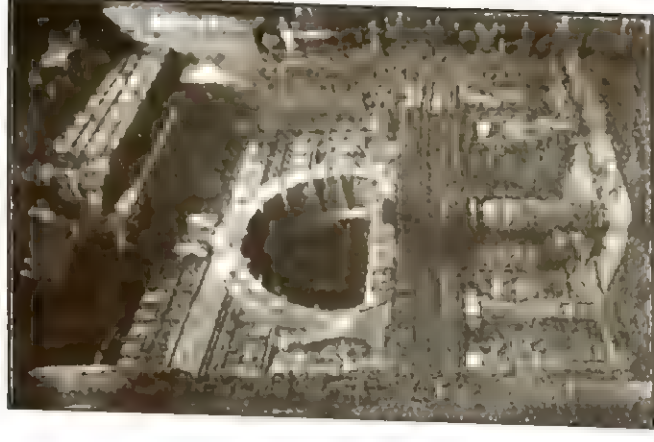
अजन्ता-गुफाका द्वारदेश

शिव-मन्दिर, एलीफटा
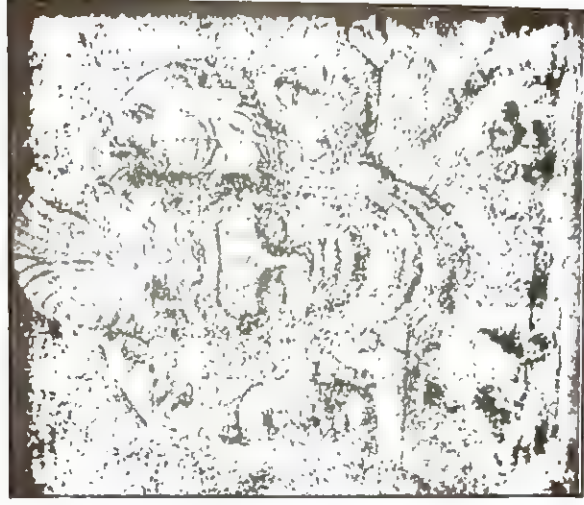
त्रिमूर्ति, एलीफेंटा

कार्ली-गुफाका अन्तरङ्ग

१०-चांभेरी-गुफा—नासिकसे उत्तर ५ मील दूर गजपंथी पहाड़ीपर कई गुफाएँ हैं।

११-वाराहतीर्थकी गुफा—त्र्यम्बकमें गङ्गाद्वारके पास। इसमें राम-लक्ष्मणकी मूर्तियाँ हैं।

१२-गोरखनाथकी गुफाएँ—वाराहतीर्थके पास दो गुफाएँ हैं; एकमें महादेवके १०८ लिङ्ग खुदे हैं, दूसरी गोरखनाथजीकी है।

१३-पनाला—कोल्हापुरके पास।

१४-बदामी—किलेमें चार गुफाएँ हैं, जिनमें तीन सनातनियोंकी और एक जैनोंकी है।

१५-इलोरा-गुफाएँ—औरंगाबादसे जाना होता है। ये गुफाएँ पर्वत काटकर बनायी गयी हैं। गुफाएँ एक मीलमें हैं। इनमें १ से १३ बौद्ध-धर्मकी, १४ से २९ पौराणिक और ३० से ३४ जैन गुफा हैं। दर्शनीय स्थान है।

१६-औरंगाबादकी गुफाएँ—पहाड़पर नौ बौद्ध-गुफाएँ हैं।

१७-विजयवाड़ाकी गुफाएँ—कृष्णा नदीके किनारे एक पुराने किलेमें ये गुफाएँ हैं।

१८-गोपीचन्द-गुफा—आबूमें।

१९-भर्तृहरि-गुफा— आबूमें।

२०-पाण्डव-गुफा ,,

२१-चम्पा-गुफा ,,

२२-राम-गुफा ,,

२३-अर्बुदादेवी-गुफा ,,

२४-दत्तात्रेय-गुफा ,,

२५-शीहोर (सौराष्ट्र)—गौतमेश्वरकी गुफा।

२६-तलाजा पर्वत—यहाँ एमल-मण्डलकी गुफाएँ हैं।

२७-गिरनार पर्वत—मुचुकुन्द-गुफा। कहते हैं यहाँ राजा मुचुकुन्द सोये थे। कालयवन यहीं भस्म हुआ था।

२८-धारापुरी या एलिफेण्टा-गुफा—बंबईसे जाना होता है।

२९-गोरेगाँव और योगेश्वरी-गुफा—बंबईसे जाना होता है।

३०-मगथान-गुफा—बंबईसे जाना होता है।

३१-मण्डपेश्वर-गुफा—गोरेगाँव, बंबईसे जाना होता है।

३२-कन्हेरी-गुफा—बोरीवली, बंबईसे जाना होता है।

३३-लोनावलाकी कारली गुफाएँ—बंबईके पास हैं।

स्वास्थ्यप्रद, ऊँचे शिखरवाले तथा तीर्थमाहात्म्ययुक्त पर्वतादि स्थान

पर्वत	ऊँचाई (फुटोंमें)	पर्वत	ऊँचाई (फुटोंमें)
माउंट एवरेस्ट	२९००२	गशेरब्रम-३	२६०९०
के-२	२८२५०	अन्नपूर्णा-२	२६०४१
काञ्चनजङ्घा-१	२८१४६	गशेरब्रम-४	२६०००
ल्होट्से	२७८९०	नन्दादेवी	२५६४५
काञ्चनजङ्घा-२	२७८०३	कामेट	२५४४७
मकालु	२७७९०	गुर्ला मान्धाता	२५३५५
चों यू	२६८६७	तिरिच मीर	२५२६३
धवलगिरि	२६७९५	मानाचोरी	२३८६०
नंगा पर्वत	२६६६०	दुनागिरि	२३७७२
मानस्लू	२६६५८	मुकुट-पर्वत	२३७६०
अन्नपूर्णा-१	२६४९२	गौरीशंकर	२३४४०
गशेरब्रम-१	२६४७०	चौखम्बा	२३४२०
चौड़ा शिखर	२६४००	त्रिशूल	२३४०६
गशेरब्रम-२	२६३६०	बदरीनाथ-शिखर	२३३९९
गोसाईं थान	२६२९१	सतोपथ	२३२४०

पर्वत	ऊँचाई (फुटोंमें)	पर्वत	ऊँचाई (फुटोंमें)
रामथंग	२३२००	पहलगाँव	७०००
केदार	२२७७२	कोडैकानल	७०००
पंच चूली	२२६५०	कुनूर	६७००
कैलास	२२०२८	मंसूरी	६६००
वन्दर पंच	२०७२०	नैनीताल	६३००
रानावन	२०१००	कसौली	६२००
हेमकुण्ड	१४२००	लैन्सडाउन	६०६०
अमरनाथ	१३०००	अल्मोड़ा	५५००
गङ्गोत्तरी	१००२०	क्वेटा	५५००
यमुनोत्तरी	१००००	श्रीनगर (काश्मीर)	५२००
गुलमर्ग	८७००	शिलंग	४९८०
डलहौजी	७८६७	आबू (अरवली)	४५००
मरीं	७७००	महाबलेश्वर (पश्चिमी घाट)	४५००
उटाकामंड (नोलगिरि)	७२२०	कलिम्पोंग (हिमालय)	४०००
		पंचमढ़ी (विन्ध्याचल)	३५००
दार्जिलिंग	७१६८	बंगलोर	३०००
शिमला	७०५७	राँची	२१००

दिगम्बर-जैनतीर्थक्षेत्र

(लेखक—श्रीकैलासचन्द्रजी शास्त्री)

साधारणतया यात्रीगण जिस स्थानकी पूज्य-बुद्धिसे यात्रा करनेके लिये जाते हैं, उसे तीर्थ कहते हैं। 'तीर्थ' शब्दका अर्थ घाट भी होता है, जहाँपर लोग स्नान करते हैं; किंतु जैनोंमें कोई स्नान-स्थान तीर्थरूपमें नहीं माना जाता। हाँ, भव-सागरसे पार उतरनेका मार्ग बतलानेवाला स्थान जैनोंमें तीर्थस्थान माना जाता है। इसलिये जिन स्थानोंपर जैन-तीर्थङ्करोंने जन्म लिया हो, दीक्षा धारण की हो, तपस्या की हो, पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया हो या मोक्ष प्राप्त किया हो, उन स्थानोंको जैन तीर्थ-स्थानके रूपमें पूजते हैं। इसी दृष्टिसे जहाँ तीर्थङ्करोंके सिवा अन्य ऋषि-महर्षियोंने तपस्या की हो या निर्वाण प्राप्त किया हो या कोई विशिष्ट मन्दिर या मूर्ति हो, वे स्थान भी तीर्थ माने जाते हैं। फलतः जैन-तीर्थोंकी संख्या बहुत अधिक है और वे प्रायः समस्त भारतमें फैले हुए हैं। उन सबका परिचय देना यहाँ शक्य नहीं है। अतः कतिपय प्रसिद्ध तीर्थोंका संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जाता है।

जैन-सम्प्रदायमें दो प्रमुख भेद हैं—दिगम्बर और श्वेताम्बर। बहुत-से तीर्थस्थानोंको दोनों ही सम्प्रदाय मानते हैं। अनेक तीर्थ ऐसे भी हैं, जिन्हें केवल दिगम्बर-सम्प्रदाय ही मानता है या केवल श्वेताम्बर-सम्प्रदाय ही मानता है। यहाँ केवल दिगम्बरमान्य तीर्थक्षेत्रोंका परिचय दिया जाता है। परिचयकी सुगमताके लिये यहाँ तीर्थङ्करोंका नाम दे देना उचित होगा। जैनधर्ममें चौबीस तीर्थङ्कर हुए हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

१. श्रीऋषभ, २. अजित, ३. सम्भव, ४. अभिनन्दन, ५. सुमति, ६. पद्मप्रभ, ७. सुपार्श्व, ८. चन्द्रप्रभ, ९. पुष्पदन्त, १०. शीतल, ११. श्रेयांस, १२. वासुपूज्य, १३. विमल, १४. अनन्त १५. धर्म, १६. शान्ति, १७. कुन्थु, १८. अर, १९. मल्लि, २०. मुनि सुव्रत, २१. नमि, २२. नेमि, २३. पार्श्व और २४. महावीर।

अयोध्या—जैन-परम्परामें अयोध्याका बहुत महत्त्व माना जाता है। यहाँ पाँच तीर्थङ्करोंने जन्म लिया था, जिनमें प्रथम तीर्थङ्कर भगवान् ऋषभदेवका नाम विशेषरूपसे

उल्लेखनीय है। उनके पुत्र चक्रवर्ती भरतकी यही राजधानी थी। यहाँ सरयूके तटपर जैन-मन्दिर बने हुए हैं।

श्रावस्ती—आजकल इसे सहेठ-महेठ कहते हैं। यह (गोंडा जिलेके) बलरामपुरसे दस मीलपर स्थित है। यह तीसरे तीर्थङ्कर सम्भवनाथकी जन्मभूमि है।

कौशाम्बी—इलाहाबाद-कानपुरके बीचमें उत्तरी-रेलवेपर भरवारी नामका स्टेशन है। वहाँसे २०-२५ मीलपर एक गाँवके निकट प्रभास नामक पहाड़ है। इस पहाड़पर छठे तीर्थङ्कर पद्मप्रभने तप किया था तथा यहीं उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था। इलाहाबादके निकट कौशाम्बी नगरीमें पद्मप्रभका जन्म हुआ था। यहाँ मन्दिर बने हुए हैं।

वाराणसी—यह नगरी सातवें (सुपार्श्वनाथ) और तेईसवें (पार्श्वनाथ) तीर्थङ्करोंकी जन्म-भूमि है। भदैनी मुहल्लेमें गङ्गा-तटपर स्थित मन्दिर सुपार्श्वनाथके जन्म-स्थानके स्मारक हैं और भेलूपुरमें स्थित जैन-मन्दिर पार्श्वनाथके जन्मस्थानकी स्मृतिमें निर्मित है।

सिंहपुर—इसे आजकल सारनाथ कहते हैं। यह वाराणसीसे छः मील दूर प्रसिद्ध बौद्धतीर्थ है। यह स्थान ग्यारहवें तीर्थङ्कर श्रेयांसनाथका जन्मस्थान है। बौद्धस्तूपके पास ही सुन्दर दिगम्बर-जैनमन्दिर तथा धर्मशाला है।

चन्द्रपुर—सारनाथसे नौ मीलपर चन्द्रवटी नामक ग्राम है। यह स्थान आठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभका जन्म-स्थान है। गङ्गाके तटपर मन्दिर बने हैं।

खखूंद—गोरखपुरसे ३९ मीलपर नूनखार स्टेशन है। वहाँसे तीन मील खखूंद है। यह पुष्पदन्त तीर्थङ्करका जन्मस्थान है।

रत्नपुर—फैजाबाद जिलेमें सोहावल स्टेशनसे १॥ मीलपर यह स्थान धर्मनाथ तीर्थङ्करका जन्मस्थान है।

कम्पिल—जिला फर्रुखाबादमें कायमगंज स्टेशनसे ८ मीलपर यह प्राचीन नगरी थी। यहाँ तेरहवें तीर्थङ्कर विमलनाथने जन्म लिया और तपस्या की थी।

हस्तिनापुर—मेरठ शहरसे २२ मीलपर स्थित इस प्राचीन नगरीमें शान्ति, कुन्थु और अर नामक तीन तीर्थङ्करोंने जन्म लिया था। प्रथम तीर्थङ्कर भगवान् ऋषभदेवने तपस्वी होनेके पश्चात् इसी नगरीमें इक्षु-रसका आहार ग्रहण किया था। वहाँ विशाल जैन-मन्दिर बने हुए हैं।

सौरीपुर—यमुनाके तटपर वटेश्वर नामक एक प्राचीन गाँव है। एक समय यह यादवोंकी भूमि थी। यहींपर यदुवंशमें बाईसवें तीर्थङ्कर नेमिनाथका जन्म हुआ था।

मथुरा—यह नगरी कुशान-वंशके राज्यकालसे भी पहलेसे जैनधर्मका प्रधान केन्द्र रही है। यहींके कंकाली टीलेसे जैनपुरातत्त्वकी प्राचीन सामग्री उपलब्ध हुई थी। नगरीसे बाहर चौरासी नामक स्थान है, जो तीर्थक्षेत्र है।

अहिच्छत्र—बरेली जिलेके आँवला नामक कस्बेसे ८ मीलपर रामनगर नामक गाँव है। यहाँ कभी प्राचीन अहिच्छत्र नगर था। यहाँपर तेईसवें तीर्थङ्कर पार्श्वनाथने घोर तपश्चरण करके केवल ज्ञान प्राप्त किया था। उक्त सब तीर्थ उत्तरप्रदेशमें अवस्थित हैं।

सम्मेदशिखर—बिहारप्रदेशमें सबसे प्रसिद्ध तथा पूज्य जैनतीर्थ सम्मेदशिखर है, जिसे पारसनाथ-हिल भी कहते हैं और जो दोनों सम्प्रदायोंको समानरूपसे मान्य है। पूर्वीय रेलवेकी ग्राण्डकार्ड लाइनपर हजारीबाग जिलेमें पारसनाथ नामक स्टेशन है। इस स्टेशनसे लगभग बीस मीलपर मधुवन नामक स्थान है। इस स्थानपर दोनों सम्प्रदायोंकी अनेक विशाल धर्मशालाएँ और जिनमन्दिर बने हुए हैं। यह स्थान सम्मेदशिखर पर्वतकी उपत्यका है। यहींसे यात्रार्थ पर्वतपर चढ़ना होता है। कुल यात्रा-मार्ग १८ मील है—६ मील पर्वतपर चढ़ना, ६ मील उतरना और ६ मील पर्वतकी यात्रा। इस पर्वतराजसे बीस तीर्थङ्करोंने और अनेकों जैन साधुओंने मुक्ति लाभ किया था। उन्हींकी स्मृतिमें पर्वतकी विभिन्न पहाड़ियोंपर मुक्त हुए तीर्थङ्करोंके चरण-चिह्न स्थापित हैं, उन्हींकी वन्दनाके लिये प्रतिवर्ष हजारों स्त्री-पुरुष जाते हैं।

पावापुर—नालन्दाके निकटवर्ती इस ग्रामसे भगवान् महावीरने निर्वाण लाभ किया था। उसकी स्मृतिमें एक सरोवरके मध्य बने जिनालयमें भगवान् महावीरके चरण-चिह्न स्थापित हैं। कार्तिक-कृष्णा अमावस्या अर्थात् दीपावलीके दिन प्रातः भगवान् महावीरका निर्वाण हुआ था। जैन लोग उसीके उपलक्ष्यमें दीपावली-पर्व मनाते हैं। प्रतिवर्ष उस दिन यहाँ बड़ा जैन-जनसमूह एकत्र होता है।

राजगृह—पूर्वीय रेलवेके बख्तियारपुर स्टेशनसे एक छोटी लाइन राजगृहतक जाती है। यह स्थान अपने गरम पानीके झरनोंके लिये भी प्रसिद्ध है। कभी यहाँ मगधकी राजधानी थी और इतिहासमें बिम्बसार सेणियके नामसे प्रसिद्ध शिशुनागवंशी राजा उसका स्वामी था। उसके पुत्रका नाम अजातशत्रु था। ये दोनों पिता-पुत्र भगवान् महावीरके परम उपासक थे। यहाँ चारों ओर पाँच पहाड़ हैं, इससे इसे पञ्चशैलपुर भी कहते थे—

आजकल पंचपहाड़ी कहते हैं। इन पञ्चपर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम विपुलाचल था। भगवान् महावीरकी प्रथम धर्मदेशना उसीपर हुई थी तथा यहाँ उनका बहुत अधिक विहार भी हुआ था। इससे यह स्थान बहुत पूज्य एवं पवित्र माना जाता है। पाँचों पर्वतोंपर जिनमन्दिर बने हुए हैं। यात्रा बड़ी कठिन है। राजगृहके मार्गमें सुप्रसिद्ध बौद्ध विद्याकेन्द्र नालन्दा पड़ता है। यहाँ भी प्राचीन जैनमन्दिर हैं।

चम्पापुर—प्राचीन समयमें यह नगरी अङ्गदेशकी राजधानी थी। वहाँ बारहवें तीर्थङ्कर वासुपूज्य स्वामीने जन्म लिया था तथा यहींसे उनका निर्वाण भी हुआ था। यह स्थान भागलपुरके निकट है। यहाँ जिनमन्दिर बने हुए हैं।

खण्डगिरि—उड़ीसाप्रदेशकी राजधानी भुवनेश्वरसे पाँच मील पश्चिम पुरी जिलेमें खण्डगिरि-उदयगिरि नामकी दो पहाड़ियाँ हैं। दोनोंपर अनेक प्राचीन गुफाएँ तथा मन्दिर हैं, जो ईस्वी सन्से लगभग ५० वर्ष पूर्वसे लेकर ५०० वर्ष पश्चात्‌तकके बने हुए हैं। उदयगिरिकी हाथीगुफामें कलिङ्गचक्रवर्ती जैनसम्राट् खारवेलका प्रसिद्ध शिलालेख अङ्कित है। अति प्राचीन समयसे ही यह स्थान जैनश्रमणोंका निवासस्थान रहा था।

कैलासपर्वत—यहाँसे आदि तीर्थङ्कर भगवान् ऋषभदेवने निर्वाण लाभ किया था।

गिरनार—सौराष्ट्रमें जूनागढ़के निकट गिरनार नामक पर्वत है। जब यादवगण आगरेके निकटवर्ती सौरीपुरसे द्वारका जा बसे, तब २२वें तीर्थङ्कर नेमिनाथका विवाह जूनागढ़की राजकुमारी राजुलसे होना निश्चित हुआ। नेमिनाथ दूल्हा बनकर जूनागढ़ पहुँचे। बारात जब राजमहलके निकट पहुँची, तब एक स्थानपर बहुत-से पशुओंको बँधा देखकर नेमिनाथने अपने सारथिसे उसका कारण पूछा। सारथिने उत्तर दिया कि आपकी बारातमें जो मांसभक्षी राजा आये हैं, उनके लिये इनका वध किया जायगा। यह सुनते ही नेमिनाथ विरक्त होकर गिरनार पर्वतपर तपस्या करने चले गये। वहींसे उन्होंने निर्वाण लाभ किया। इसीसे इस स्थानका महत्त्व सम्मेदशिखरके तुल्य माना जाता है।

माँगी-तुंगी—नासिकसे लगभग ८० मीलपर जंगलमें पास-पास माँगी और तुंगी नामके दो पर्वत-शिखर हैं। माँगी शिखरकी गुफाओंमें लगभग ३५० मूर्तियाँ और चरण-चिह्न अङ्कित हैं तथा तुंगीमें करीब तीस प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हुई हैं। पहाड़का मार्ग बड़ा संकीर्ण और कठिन है।

गजपन्था—नासिकके निकट मसरूल गाँवकी एक पहाड़ीपर यह स्थान है। यहाँसे कई यदुवंशी राजाओंने मोक्ष प्राप्त किया था।

कुंथलगिरि—दक्षिण-हैदराबादके बार्सी-टाउनसे लगभग २१ मील दूर एक छोटी-सी पहाड़ी है। इसपर अनेक मुक्त हुए महापुरुषोंके चरण-चिह्न अङ्कित हैं।

श्रवणबेलगोला—हासन जिलेके अन्तर्गत जिन तीन स्थानोंने मैसूर राज्यको विश्वविख्यात बनाया, वे हैं वेलूर, हालेविद और श्रवणबेलगोला। वेलूर और हालेविद मैसूर राज्यके हासन शहरसे उत्तरमें एक दूसरेसे दस-बारह मीलपर स्थित हैं। एक समय ये दोनों स्थान राजधानीके रूपमें प्रसिद्ध थे, आज कलाधानीके रूपमें ख्यात हैं। दोनों स्थानोंके आस-पास अनेक जैन-मन्दिर हैं, जो उच्चकोटिकी कारीगरीके नमूने हैं।

हासनसे पश्चिममें श्रवणबेलगोला नामक स्थान है; हासनसे यहाँ मोटरद्वारा ४ घंटेमें पहुँच सकते हैं। यहाँ चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि नामक दो पहाड़ियाँ हैं। दोनों पहाड़ियोंके बीचमें एक सरोवर है। इसका नाम बेलगोल अर्थात् श्वेत-सरोवर था; जैन-श्रमणोंके रहनेके कारण इस गाँवका नाम श्रवणबेलगोला पड़ गया। यह दिगम्बर जैनोंका महान् तीर्थस्थान है। यहाँकी एक गुफामें भद्रबाहुके चरण-चिह्न बने हुए हैं। इस पहाड़ीके ऊपर एक कोटके अंदर विशाल चौदह जिन-मन्दिर हैं। मन्दिरोंमें विशाल प्राचीन मूर्तियाँ विराजमान हैं। ऐतिहासिक दृष्टिसे भी यह पहाड़ी बहुत महत्त्व रखती है; क्योंकि इसपर अनेक प्राचीन शिलालेख उत्कीर्ण हैं, जो प्रकाशित हो चुके हैं।

दूसरे विन्ध्यगिरिपर गोमटेश्वर बाहुबलीकी विशालकाय मूर्ति विराजमान है। एक ही पत्थरसे निर्मित इतनी विशाल एवं सुन्दर मूर्ति विश्वमें अन्यत्र नहीं है। इसकी ऊँचाई ५७ फुट है। एक हजार वर्ष पूर्व गंगवंशके सेनापति और मन्त्री चामुण्डरावने इस मूर्तिकी स्थापना की थी। एक हजार वर्षसे धूप, हवा और वर्षाकी बौछारोंको सहते हुए भी मूर्तिका लावण्य खण्डित नहीं हुआ है।

मूळबिद्री—दक्षिण कनाड़ा जिलेमें यह एक अच्छा स्थान है। यहाँ १८ जैन-मन्दिर हैं, जिनमें त्रिभुवन-तिलक-चूड़ामणि नामक मन्दिर बहुत विशाल है। एक मन्दिर सिद्धान्त-वसति कहलाता है। इस मन्दिरमें दिगम्बर जैनोंके महान् सिद्धान्त-ग्रन्थ श्रीधवल, जयधवल और महाबन्ध ताड़पत्रपर लिखे हुए लगभग एक हजार

वर्षोंसे सुरक्षित हैं। इस मन्दिरमें पन्ना, पुखराज, गोमेद, नीलम आदि रत्नोंकी मूर्तियाँ हैं। एक मूर्ति मोतीकी बनी है।

कारकल—मूळबिद्रीसे दस मीलपर यह एक प्राचीन तीर्थ-स्थान है। यहाँ १८ जैन-मन्दिर हैं। एक पहाड़ीपर ३२ फुट ऊँची बाहुबली स्वामीकी मूर्ति स्थापित है। एक दूसरी पहाड़ीपर बने मन्दिरमें चारों ओर तीन-तीन विशाल मूर्तियाँ खड़ी मुद्रामें स्थित हैं।

केशरियाजी—उदयपुरसे लगभग ४० मीलपर श्रीऋषभदेवजीका विशाल मन्दिर बना है, इसमें भगवान् ऋषभदेवकी ६-७ फुट ऊँची पद्मासनयुक्त श्यामवर्णकी मूर्ति विराजमान है। मूर्तिपर बहुत अधिक केशर चढ़ानेसे इसका नाम केशरियाजी प्रसिद्ध है।

श्रीमहावीरजी—पश्चिमी रेलवेकी मथुरा-नागदा लाइनपर 'श्रीमहावीरजी' नामका स्टेशन है, वहाँसे यह क्षेत्र चार मील है। गाँवका नाम चान्दनगाँव है। यह अतिशय-क्षेत्र है। यहाँ अनेक विशाल धर्मशालाएँ हैं और मध्यमें विशाल मन्दिर है, जिसमें श्रीमहावीरजीकी मूर्ति विराजमान है। यह मूर्ति पासकी ही भूमिको खोदकर निकाली गयी थी। एक चमारकी गाय जब चरनेके लिये एक टीलेके पास जाती तो उसके थनोंसे दूध वहीं झर जाता था। एक दिन चमारने यह दृश्य देखा। रात्रिमें उसे स्वप्न हुआ। दूसरे दिन उसने उस मूर्तिको खोदकर निकाला और वहीं विराजमान कर दिया। कुछ दिनोंके पश्चात् भरतपुर राज्यके दीवान जोधराज किसी राजकीय मामलेमें पकड़े जाकर उधरसे निकले। वे जैन थे। उन्होंने इस मूर्तिका दर्शन करके यह संकल्प किया कि 'यदि मैं तोपके मुँहसे बच गया तो तेरा मन्दिर बनवाऊँगा। राजकीय दण्डमें उनपर तीन बार गोला दागा गया और तीनों बार वे बच गये। तब उन्होंने तीन शिखरोंका मन्दिर बनवाया। मीना-गूजर आदि सभी जातियाँ इस मूर्तिको पूजती हैं। दूर-दूरसे जैन और जैनेतर स्त्री-पुरुष उसके दर्शनोंके लिये जाते हैं।

सिद्धवरकूट—इन्दौर-खण्डवा लाइनपर ओंकारेश्वर-रोड नामक स्टेशन है। वहाँसे ओंकारेश्वरको जाते हैं, जो नर्मदाके तटपर है। नर्मदा पार करके सिद्धवरकूट जाते हैं। यहाँसे अनेक महापुरुष मुक्त हुए हैं।

बड़वानी—बड़वानीसे ५ मीलपर एक पहाड़ है, उसे चूलगिरि कहते हैं। इस पहाड़पर भगवान् ऋषभदेवकी ८४ फुट ऊँची एक विशालकाय मूर्ति खोदी हुई है। इसे बावनगजाजी कहते हैं। सं० १२२३ में इस मूर्तिका जीर्णोद्धार होनेका उल्लेख मिलता है। पहाड़पर २२ मन्दिर हैं। अब हम मध्यप्रदेशकी ओर आते हैं—

मुक्तागिरि—बरारके एलिचपुर नगरसे १२ मीलपर पहाड़ी जंगल है। वहाँ एक छोटी पहाड़ीपर अनेक गुफाएँ हैं, जिनमें अनेक प्राचीन प्रतिमाएँ हैं। गुफाओंके आस-पास ५२ मन्दिर हैं। यहाँसे अनेकों मुनियोंने मोक्ष-लाभ किया था।

थूवनजी—ललितपुर (झाँसी) से बीस मील दूर चँदेरी है। वहाँसे ९ मीलपर बूढ़ी चँदेरी है, वहाँ सैकड़ों मूर्तियाँ बड़ी ही सौम्य हैं; किंतु मन्दिर सब जीर्ण-शीर्ण हो गये हैं। घना जंगल होनेसे कोई जाता नहीं है। चँदेरीसे ८ मील थूवनजी हैं। यहाँ २५ मन्दिर हैं और प्रत्येक मन्दिरमें खड़ी मुद्रामें स्थित पत्थरोंमें उकेरी हुई २०-३० फुट ऊँची मूर्तियाँ हैं।

देवगढ़—ललितपुरसे १९ मीलपर बेतवाके किनारे एक छोटी पहाड़ी है, वहाँ अनेक प्राचीन मन्दिर और अगणित खण्डित मूर्तियाँ हैं। कलाकी दृष्टिसे यह क्षेत्र उल्लेखनीय है। कलाकारोंने पत्थरको मोम बना दिया है। यहाँ करीब २०० शिलालेख भी उत्कीर्ण हैं।

अहार—टीकमगढ़से नौ मील अहार गाँव है। वहाँसे करीब छः मीलपर एक ऊजड़ स्थानमें तीन मन्दिर बने हुए हैं, जिनमेंसे एकमें शान्तिनाथ-भगवान्‌की २१ फुट ऊँची अतिमनोज्ञ मूर्ति विराजमान है। यहाँ अगणित खण्डित मूर्तियाँ पड़ी हुई हैं। यवन-कालमें इस क्षेत्रका विध्वंस किया गया था।

पपौरा—टीकमगढ़से कुछ दूरीपर जंगलमें यह स्थान है। यहाँ एक कोटके भीतर ९० जिन-मन्दिर हैं।

कुण्डलपुर—सेंट्रल रेलवेकी कटनी-बीना लाइनपर दमोह स्टेशन है। वहाँसे लगभग २२ मीलपर एक कुण्डलके आकारका पर्वत है। पर्वतपर तथा उसकी तलहटीमें ५९ मन्दिर हैं। पर्वत-शिखरपर निर्मित मन्दिरोंमेंसे एक मन्दिरमें महावीरभगवान्‌की एक विशाल मूर्ति है, जो पहाड़को काटकर बनायी गयी है। यह पद्मासनमें स्थित है, फिर भी उसकी ऊँचाई ९-१० फुट है। इसकी उस प्रान्तमें बड़ी मान्यता है और उसके विषयमें अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। महाराज छत्रसालने इसका जीर्णोद्धार कराया था, ऐसा एक शिलालेखमें लिखा है।

नैनागिरि—सेंट्रल रेलवेके सागर स्टेशनसे ३० मीलपर जंगली प्रदेशमें एक छोटी-सी पहाड़ी है।

उसपर २५ मन्दिर बने हैं तथा ७-८ मन्दिर तलहटीमें हैं। वहाँसे अनेक मुनियोंने निर्वाणलाभ किया था।

द्रोणगिरि—छतरपुरसे सागर रोडपर सेंधपा नामक एक गाँव है। गाँवके निकट द्रोणगिरि नामक पहाड़ी है। यहाँसे अनेक मुनियोंने मोक्षलाभ किया है। पहाड़पर २४ मन्दिर हैं। प्राकृतिक दृश्य बड़ा सुहावना है।

खजुराहो—पन्ना-छतरपुर मार्गपर एक तिराहा आता है, वहाँसे ७ मीलपर खजुराहो है। खजुराहोके मन्दिर स्थापत्य-कलाकी दृष्टिसे सर्वत्र ख्यात हैं। यहाँ ३१ दिगम्बर जैन-मन्दिर हैं। वैष्णवमन्दिर तो और भी विशाल हैं।

सोनागिरि—ग्वालियर-झाँसीके मध्यमें सोनागिरि नामक स्टेशनसे २ मीलपर एक छोटी पहाड़ी है। यह कभी श्रमणगिरि कहलाती थी। यहाँ जैन-श्रमणोंका आवास बहुत था। उन्होंने यहाँसे मुक्ति-लाभ किया। पहाड़पर ७७ तथा तलहटीमें १७ जैन-मन्दिर हैं। इस क्षेत्रका बहुत माहात्म्य है।

श्वेताम्बर-जैनतीर्थ

(लेखक—श्रीअगरचन्द्रजी नाहटा)

जैन-धर्ममें तीर्थङ्करोंका बड़ा माहात्म्य है। तीर्थङ्करोंका महत्त्व इसीलिये सर्वाधिक है कि वे तीर्थकी स्थापना करते हैं। तीर्थके करनेवालेको ही 'तीर्थङ्कर' संज्ञा दी जाती है। कहा जाता है, तीर्थके प्रवर्तक होकर भी वे अपने प्रवचनके प्रारम्भमें **'नमो तित्थअ'** (तीर्थको नमस्कार हो)—इन शब्दोंद्वारा तीर्थके प्रति अपना आदर-भाव व्यक्त करते हैं। जैनधर्ममें दो तरहके तीर्थ माने गये हैं—एक जङ्गम और दूसरे स्थावर। जङ्गम तीर्थोंमें उन जैन-धर्मोपदेष्टा एवं प्रचारक महापुरुषोंका समावेश होता है, जो निरन्तर 'पादविहार' द्वारा ग्रामानुग्राम विचरकर जनताको सत्पथ प्रदर्शित करते रहते हैं। स्थावर तीर्थ तीर्थङ्कर आदि महापुरुषोंके च्यवन, जन्म, दीक्षा, कैवल्य-प्राप्ति और निर्वाण आदिके पवित्र स्थानोंको कहा जाता है। जिस स्थानमें जानेसे उन महापुरुषोंकी पावन स्मृतिद्वारा हृदय पवित्र होता है, भाव-विशुद्धि होती है, ऐसे सभी स्थान स्थावर तीर्थ कहलाते हैं। जङ्गमतीर्थ साधु-साध्वी माने जाते हैं। जिसके द्वारा संसार-समुद्रसे तैरा जा सके, उसे तीर्थ कहते हैं। जङ्गम और स्थावर दोनों प्रकारके तीर्थोंद्वारा मनुष्य शुभ और शुद्ध भावनाको प्रकट करके तथा अशुभ कर्मोंका नाश करते हुए भव-समुद्रसे पार पाता है; इसीलिये इन्हें 'तीर्थ' संज्ञा दी गयी है।

जङ्गम तीर्थ—साधु-साध्वी अनन्त हो गये हैं, उनमेंसे अधिकांशका उपकार बहुत महान् होते हुए भी उनके स्वल्प जीवनपर्यन्त ही होता है, जब कि स्थावर तीर्थरूप पवित्र भूमियाँ बहुत दीर्घकालतक मनुष्योंके लिये प्रेरणा-स्रोत बनी रहती हैं। जङ्गम तीर्थके अभावमें भी इनके द्वारा आत्मोत्थान करनेमें सहायता मिलती है। इसलिये उन पवित्र स्थानोंका बड़ा महत्त्व है। यहाँ श्वेताम्बर-जैनसम्प्रदायद्वारा मान्य सिद्ध तीर्थोंका संक्षिप्त परिचय कराया जा रहा है। वैसे दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों जैन-सम्प्रदाय २४ तीर्थङ्करोंके ही उपासक हैं, अतः तीर्थङ्करोंकी कल्याणक-भूमियाँ दोनोंके लिये समानरूपसे मान्य हैं और अन्य भी कई स्थान दोनों सम्प्रदायोंके लिये समान या न्यूनाधिक रूपमें मान्य हैं; पर कुछ स्थान—तीर्थ कई कारणोंसे दोनोंके अलग-अलग भी हैं। मध्यकालमें दिगम्बर-सम्प्रदायका अधिक प्रचार दक्षिण-भारतमें रहा और श्वेताम्बरोंका उत्तर-भारतमें; अतः दक्षिण-भारतमें दिगम्बर-तीर्थ अधिक हैं। कई तीर्थ-स्थानोंकी मूल भूमिकी विस्मृति हो चुकी है। भगवान् महावीरके समयमें जैन-धर्मका प्रचार बंगाल-बिहारमें अधिक था; किन्तु राजनीतिक एवं दुष्काल आदि विषम परिस्थितियोंके कारण आगे चलकर वहाँसे जैनोंको पश्चिम और दक्षिण भारतकी ओर हटना पड़ा। दीर्घकालके पश्चात् उन प्राचीन स्थानोंकी खोज की गयी तो कई स्थानोंको अनुमानसे निश्चित करना पड़ा और कई स्थानोंका तो आज ठीकसे पता भी नहीं है। पीछेसे जहाँ-जहाँ जैन जाकर बसे, वहाँ या आस-पासके स्थानोंमें कोई चमत्कार या विशेषता दृष्टिपथमें आयी, वहाँ भी तीर्थ स्थापित किये जाते रहे। इसलिये स्थावर तीर्थोंके भी कई प्रकार हो गये। तीर्थङ्करोंकी कल्याणक-भूमिके अतिरिक्त कई तीर्थ-स्थान अतिशय-क्षेत्रके रूपमें प्रसिद्ध हुए। जैन-समाज भारतके कोने-कोनेमें फैला हुआ है, अतः जैन-तीर्थ भी भारतके सभी भागोंमें पाये जाते हैं और उनकी संख्या सैकड़ोंपर है; अतः उन सबका यहाँ परिचय कराना सम्भव नहीं। उनके सम्बन्धमें

छोटे-बड़े शताधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी एक सूची मैंने प्रेमी-अभिनन्दन-ग्रन्थमें प्रकाशित 'जैन-साहित्यका भौगोलिक महत्त्व' शीर्षक निबन्धमें दी थी। उसके पश्चात् श्वेताम्बर-जैन तीर्थोंके सम्बन्धमें कई और स्वतन्त्र महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें गुजराती भाषाके दो बृहद्-ग्रन्थ विशेषरूपसे उल्लेखनीय हैं। पहला मुनि न्यायविजयजीद्वारा लिखित 'जैन-तीर्थों ना इतिहास' सन् १९४९ में सूरतके श्रीमगनभाई-प्रतापचन्दने प्रकाशित किया था, जिसमें २३१ जैन-तीर्थ स्थानोंका ऐतिहासिक परिचय दिया गया है। दूसरा सन् १९५३ में अहमदाबादमें सेठ आनन्दजी कल्याणजीके द्वारा प्रकाशित 'जैनतीर्थ-सर्वसंग्रह' नामक ग्रन्थ है, जो तीन जिल्दोंमें प्रकाशित हुआ है। इसमें समस्त भारतके श्वेताम्बर-जैनमन्दिरोंका, जिनकी संख्या ४४०० है, आवश्यक विवरण तथा पौने तीन सौ तीर्थ-स्थानोंका विशेष परिचय प्रकाशित हुआ है। पहली जिल्दमें गुजरात, सौराष्ट्र एवं कच्छके दो हजार जैन-मन्दिरोंकी सूची एवं विशिष्ट स्थानोंका परिचय है। दूसरी जिल्दमें राजस्थानके ११०० मन्दिरोंका और ९० स्थानोंका परिचय और तीसरी जिल्दमें मालवा, मेवाड़, पंजाब, सिंध, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत, मध्य-प्रदेश, उत्तर-प्रदेश, बिहार और बंगालके १३०० मन्दिरोंका विवरण और एक सौसे अधिक स्थानोंका विशेष परिचय दिया गया है। इससे जैन-तीर्थोंकी संख्याधिकता और व्यापकताका पाठक अनुमान लगा सकते हैं।

जैन-साहित्यके सबसे प्राचीन ग्रन्थ एकादश अङ्गादि आगम ग्रन्थ हैं। उनमेंसे एकमें अष्टापद, उज्जयन्त (गिरनार), गजाग्रपद, धर्मचक्र, अहिच्छत्र, पार्श्वनाथ, रथावर्त और चमरोत्पात स्थानोंको तीर्थभूत मानकर वन्दन किया गया है। उसके पश्चात् निशीथचूर्णिमें उत्तरापथके धर्मचक्र, मथुराके देवनिर्मित स्तूप, कोसलकी जीवन्त स्वामीकी प्रतिमा और तीर्थङ्करोंकी जन्मभूमि आदि तीर्थरूपमें उल्लिखित हैं। इनमेंसे अष्टापद कैलास या हिमालय है, जहाँ प्रथम तीर्थङ्कर भगवान् ऋषभदेवका निर्वाण हुआ। इसी स्थानमें जैन-मन्दिर था, पर उसका अब पता नहीं चलता। उज्जयन्त—सौराष्ट्रका गिरनार पर्वत आज भी तीर्थरूपमें विख्यात है, जहाँ २२वें तीर्थङ्कर भगवान् नेमिनाथकी दीक्षा, केवल-ज्ञान और निर्वाण हुआ। गजाग्रपदकी स्थिति दशार्णकूटमें बतलायी गयी है और तक्षशिलामें धर्मचक्रतीर्थ था। इन दोनोंके विषयमें भी अब ठीक पता नहीं है कि वहाँ जैन-मन्दिर कहाँ थे। अहिच्छत्र २३वें तीर्थङ्कर पार्श्वनाथका उपसर्ग-स्थान है, जहाँ कमठ नामक वैरी एवं दुष्ट देवने उनपर प्रबल वर्षा की, पर वे अपने ध्यानमें अविचल रहे। अतः धरणेन्दुने उनकी महिमा की। मथुराके देवनिर्मित स्तूपका ककलाटीलेकी खुदाईसे पता लग चुका है। रथावर्त, चमरोत्पात और कोसलमें स्थित जीवन्तस्वामी-प्रतिमाका पता नहीं है। अब वर्तमान समयमें पाये जानेवाले श्वेताम्बर-जैन-तीर्थोंका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है—

मालवा—मध्यभारत

मध्यप्रदेश और मालवामें तीर्थङ्करोंकी कल्याणक-भूमिके रूपमें तो कोई जैन-तीर्थ नहीं; पर वहाँ कई स्थानोंमें चमत्कारी मूर्तियाँ होनेके कारण वे तीर्थरूप माने जाते हैं। मालवेमें उज्जयिनी, धार और माण्डवगढ़में जैनियोंका प्रभाव बहुत रहा है; अतः उज्जैन, माण्डवगढ़, मकसीजी, लक्ष्मणीतीर्थ तथा अन्य कई स्थानोंकी कई चमत्कारी जैन-मूर्तियाँ तीर्थके रूपमें ही मानी जाती हैं। ग्वालियर-किलेकी मूर्तियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

मध्यप्रदेश—मध्यप्रदेशमें भाँदकजी और अन्तरिक्षजी—दो प्राचीन जैन-तीर्थ हैं। भाँदकजीका प्राचीन नाम भद्रावती था, वहाँ प्राचीन जैन-मूर्तियाँ मिलनेसे एक जैन-मन्दिर एवं धर्मशाला आदि बने हैं। वहाँकी मूर्ति अधर होनेसे अन्तरिक्षजीके नामसे प्रसिद्ध है।

दक्षिणभारत—दक्षिणभारतमें कुलपाकजी श्वेताम्बर-जैनतीर्थके रूपमें प्रसिद्ध है। दक्षिण हैदराबाद जानेवाली लाइनपर यह पड़ता है।

पंजाब—पंजाबमें यद्यपि जैन-तीर्थङ्करोंकी पुण्यभूमि नहीं है, तथापि लगभग १५०० वर्षसे पंजाब एवं सिंधमें जैनधर्मका अच्छा प्रचार रहा। फलतः अनेक स्थानोंमें जैन-मन्दिर थे और हैं, उनमेंसे नगरकोट-काँगड़ा जैनतीर्थके रूपमें प्रसिद्ध है। १४ वींसे १७ वीं शताब्दीतक यहाँ जैनयात्री पहुँचते थे और यहाँका राजा भी जैनी था; उसीने मन्दिर बनवाया था। यवन-आक्रमणोंके फलस्वरूप संवत् १६८५ के लगभग यहाँके जैन-मन्दिर नष्ट कर दिये गये। फिर भी प्राचीन जैन-मूर्ति आदिकी प्रसिद्धिसे पंजाबका जैन-संघ प्रतिवर्ष यहाँ पहुँचता है। तक्षशिला प्राचीन जैनतीर्थ रहा है, पर अब वहाँ कोई जैनावशेष न होनेसे कई शताब्दियोंसे वह विस्मृत हो चुका है।

श्वेताम्बर—जैनसमाजका सबसे अधिक निवास और प्रभाव राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र एवं कच्छमें है; अतः सबसे अधिक मन्दिर एवं तीर्थस्थान, जो बहुत ही अच्छी दशामें हैं, इन्हीं प्रदेशोंमें हैं।

सौराष्ट्र—सौराष्ट्रमें श्वेताम्बर-जैन समाजका सबसे

बड़ा तीर्थ सिद्धाचलमें है, जो पाली ताना स्टेशनके पास एक पहाड़ीपर है। एक तरहसे वह पहाड़ी जैन-मन्दिरोंका एक सुन्दर नगर है। बहुत बड़े-बड़े नौ जैन-मन्दिर नौ टून्कोंके नामसे प्रसिद्ध हैं। एक-एक मन्दिरमें सैकड़ों देरियाँ (देवालय) और हजारों प्रतिमाएँ हैं। मुसल्मानी साम्राज्यके समय कई बार इस तीर्थको बड़ी हानि पहुँची, पर प्रबल भक्तिके कारण जीर्णोद्धार होते गये। करोड़ों रुपये यहाँके जैन-मन्दिरोंको बनाने और उनके जीर्णोद्धारमें लगे हैं। श्वेताम्बरोंकी मान्यतानुसार यहाँ नेमिनाथके अतिरिक्त २३ तीर्थङ्कर पधारे थे। चैत्री पूर्णिमाको भगवान् ऋषभदेवके प्रथम गणधर पुण्डरीक ५ करोड़ मुनियोंके साथ मोक्ष गये और कार्तिकी पूर्णिमाको १० करोड़ मुनि मोक्ष पधारे। इन तिथियोंको यहाँ सारे भारतसे हजारों जैनयात्री पहुँचते हैं। सैकड़ों साधु-साध्वियाँ यहाँ रहती हैं और सैकड़ों ही श्रावक-श्राविकाएँ यहाँ चातुर्मास एवं यात्रा करनेको आती और रहती हैं। भगवान् ऋषभदेवने यहाँ वार्षिक तप किया था, उसकी स्मृतिमें एक वर्षतक एकान्तर उपवासकी तपस्या हजारों श्वेताम्बर-जैन और विशेषकर श्राविकाएँ करती हैं। वैशाख-शुक्ला ३ को भगवान् ऋषभदेवके वार्षिक तपका पारण हस्तिनापुरमें हुआ था। वार्षिक तप करनेवाले तपस्वी इस दिन यहाँ सैकड़ोंकी संख्यामें भारतके विभिन्न प्रदेशोंसे आते हैं; अतः चैत्री पूर्णिमा, कार्तिककी पूर्णिमा और अक्षयतृतीयाको यहाँ एक बहुत बड़ा मेला-सा लगा रहता है। श्वेताम्बरोंकी मान्यताके अनुसार शत्रुंजय पहाड़ीके कंकड़-कंकड़परसे मुनि मोक्ष पधारे थे, इसलिये इसको बहुत ही पवित्र और सबसे बड़ा तीर्थ माना जाता है। इस तीर्थके माहात्म्यका विशद वर्णन 'शत्रुंजय-माहात्म्य' नामक बृहद् ग्रन्थमें विस्तारसे वर्णित है। हजारों छोटी-बड़ी भक्तिपूर्ण रचनाएँ इस तीर्थके सम्बन्धमें मिलती हैं। श्वेताम्बर-जैनसमाजकी भक्तिका यह सबसे प्रधान केन्द्रस्थान है। मुख्य पहाड़ीकी प्रदक्षिणाकी दो अन्य पहाड़ियाँ पद्मगिरि और चन्द्रगिरि भी तीर्थरूपमें ही प्रसिद्ध हैं। पासमें बहती हुई शत्रुंजयनदी श्वेताम्बर-जैनसमाजके लिये गङ्गाके समान पवित्र मानी जाती है। तलहटीमें पचासों जैन-धर्मशालाएँ हैं और कई मन्दिर हैं।

सौराष्ट्रके वल्लभीपुरमें जैनाचार्य देवर्द्धि क्षमा-श्रमणने वीर-निर्वाणके ९८०वें वर्ष श्वेताम्बर-जैन आगमोंको लिपिबद्ध किया, अतः यह स्थान जैनोंके लिये महत्त्वपूर्ण है। भावनगरके पास घोघा एवं तलाजा भी जैन-तीर्थ हैं। इनमेंसे तलाजा (तालध्वज पहाड़ी) पहले बौद्ध-स्थान था। घोघा समुद्रके किनारे है। प्रभास-पाटण (सोमनाथ) आदि भी जैन-तीर्थ माने जाते रहे।

गुजरात—गुजरातमें सबसे अधिक जैन-मन्दिर पाटण और अहमदाबादमें हैं। ९वीं शताब्दीसे पाटण गुजरातकी राजधानी रहा। वहाँ जैनोंका प्रभाव बहुत ही प्रबल था। पाटणको बसानेवाला बंदाज चावड़ा जैनाचार्य शीलगुण-सूरिसे उपकृत था। वहाँके राजाओंके मन्त्री सेनापति आदि भी अधिकांश जैन ही रहे। सिद्धराज जयसिंह आचार्य हेमचन्द्रके बहुत बड़े प्रशंसक एवं भक्त थे। मुसल्मान-साम्राज्यने पाटणको बहुत क्षति पहुँचायी, फिर भी जैनोंके लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रहा; इसलिये यहाँ छोटे-बड़े लगभग २०० जैन-मन्दिर अब भी विद्यमान हैं तथा हेमचन्द्रसूरि-ज्ञानमन्दिर आदि भंडारोंमें सैकड़ों प्राचीन ताड़पत्रोंपर लिखित और हजारों कागजकी प्रतियाँ सुरक्षित हैं। इसलिये इसे भी जैनोंका एक तीर्थ-स्थान ही समझना चाहिये।

अहमदाबादमें भी गत ५०० वर्षोंसे जैनोंका बड़ा प्रभाव रहा। आज भी वह 'जैनपुरी' कहलाता है। शताधिक जैन-मन्दिर और कई ज्ञान-भंडार वहाँ हैं। हजारों जैनोंके घर हैं, जिनमें कई मिल-मालिक आदि धनपति हैं। सैकड़ों साधु-साध्वियाँ यहाँके विभिन्न मोहल्लोंके उपाश्रयोंमें रहकर चौमासे करते हैं। अतः यह नगर श्वेताम्बर-जैनोंका स्थावर और जङ्गम—दोनों प्रकारका तीर्थ है।

गुजरातमें वैसे तो अनेक तीर्थ हैं, पर खम्भात पार्श्वनाथकी चमत्कारी प्रतिमाके लिये प्रसिद्ध है। शङ्खेश्वर पार्श्वनाथ भी मान्य तीर्थ है। तारंगा पहाड़पर महाराजा कुमारपालका बनाया हुआ मन्दिर बहुत ही विशाल और ऊँचा है। भोयणी ग्राममें मल्लिनाथजीकी एक चमत्कारी प्रतिमा बहुत सुन्दर है, इसलिये वह भी तीर्थरूपमें प्रसिद्ध हो गया है।

कच्छका भद्रेश्वर-तीर्थ दर्शनीय है। वह अंजारसे २० मील दूर है।

राजस्थान

राजस्थान श्वेताम्बर-जैनजातियोंका उत्पत्तिस्थान है। यहाँके ओसियाँ नगरसे ओसवाल, श्रीमाल नगर (भीनमाल) से श्रीमाल और इस नगरके पूर्व दिशामें रहनेवाले पोरवाल कहलाते हैं। पाली नगरसे पल्लिवाल जातिने प्रसिद्धि पायी। अजमेरके म्यूजियममें वडलीसे प्राप्त वीर भगवान्के ८४ वें वर्षका सबसे प्राचीन शिलालेख

है; उसमें मज्यमिका स्थानका नाम आता है, जो चितौड़के पास एक नगर रहा है। इसमें राजस्थानसे जैन-समाजका सम्बन्ध बहुत प्राचीन सिद्ध होता है।

राजस्थानका सबसे प्रसिद्ध तीर्थ आबू है, जहाँ संवत् १०८८ ओर १२८७ में विमलशाह और वस्तुपाल तेजपालने १२ एवं १८ करोड़के कर्जसे ऋषभदेव और नेमिनाथके दो कलापूर्ण जैन-मन्दिर बनाये, जो अपने ढंगके अद्वितीय और विश्वप्रसिद्ध हैं। संगमरमरके कड़े पत्थरको कुशल कारीगरोंने मोमकी भाँति नरम बनाकर जो बारीक और सुन्दर कोरनी की है, उसे देखते ही चित्त प्रफुल्लित हो जाता है और एक-एक वस्तुको ध्यानसे देखें तो घंटों बीत जाते हैं। कलाके महान् केन्द्र ये जैन-मन्दिर जैन-समाजका ही नहीं, भारतका मुख उज्ज्वल करते हैं। पासमें ही और भी अनेक जैन-मन्दिर हैं। यहाँसे तीन कोस दूर अचलगढ़ पहाड़पर भी सुन्दर मन्दिर हैं, जिनमें पीतलकी १४ मूर्तियोंका वजन १४४४ मन माना जाता है। इतनी भारी और विशाल पीतलकी प्रतिमाएँ अन्यत्र नहीं मिलतीं।

आबूके निकटवर्ती प्रदेशमें जीरापल्ली-पार्श्वनाथ, हमीरपुर, ब्राह्मण-वारा आदि कई जैन-तीर्थ हैं और गोडवाड़ प्रदेशमें राणकपुर, घाणेराव, नाडलाई, नकाडोल और वरकाँठाकी पञ्चतीर्थी प्रसिद्ध है। इनमेंसे राणकपुरका त्रैलोक्य-दीपक प्रासाद तो अपने ढंगका अद्वितीय है। यह बहुत विशाल और ऊँचा है। इसमें १४४४ खंभे बताये जाते हैं। इसके निर्माणमें ९६ लाख रुपये १५ वीं शताब्दीके सस्ते युगमें लगे थे। अभी उसके जीर्णोद्धारमें लगभग १० लाख रुपये लगे हैं। कुंभारियाजी, आरासण, कोरटा, श्रीमाल, जालौर, कापरडा, नाकोड़ा, ओसियाँ, पाली, घंघाणी, फलोधी, व संतगढ़ आदि कई जैन-तीर्थ मारवाड़में बहुत ही प्रसिद्ध हैं। इनमेंसे ओसियाँ ओसवलोंका उत्पत्तिस्थान है। वहाँ लगभग ९ वीं शताब्दीका महावीर-स्वामीका मन्दिर है। मेड़ता-रोड स्टेशनके पास फलोधी-पार्श्वनाथ १२वीं शताब्दीसे भी बहुत पूर्वका प्रसिद्ध तीर्थ है। आरासणके जैन-मन्दिरोंकी कोरनी भी आबूकी भाँति उल्लेखनीय है। कापरडा-मन्दिरकी १७ वीं शताब्दीमें प्रसिद्धि हुई थी। वह भव्य मन्दिर है।

आबू-प्रदेशका वसंतगढ़ जैनोंका प्राचीन स्थान है। अब वह खंडहर-सा है। वहाँकी ९ वीं शताब्दीकी सुन्दर धातु-प्रतिमाएँ पीड़वाड़ेके जैन-मन्दिरमें रखी हुई हैं।

जालौरमें १२ वींसे १४वीं शताब्दीतक जैनोंका बड़ा प्रभाव रहा। जालौरके किलेमें महाराज कुमारपालके बनवाये हुए कई जैन-मन्दिर हैं। भीनमालमें भी गुप्तकालसे जैनधर्मका प्रचुर प्रभाव रहा।

साचौरमें, जिसका प्राचीन नाम सत्यपुर है, भगवान् महावीरका प्राचीन मन्दिर है। यहाँकी प्रतिमा बड़ी चमत्कारी मानी जाती रही है।

बालोतरा स्टेशनसे दो कोसके अन्तरपर मेवानगर है। वहाँ नाकोड़ा-पार्श्वनाथ प्रसिद्ध तीर्थ है, जहाँ मेला लगता है और आस-पासके जैन-यात्री जुटते हैं। बाड़मेरमें १४वीं शताब्दीमें श्वेताम्बर-जैनोंके खरतरगच्छ सम्प्रदायका पर्याप्त प्रभाव रहा। बाड़मेरमें उस समयके कुछ भग्न मन्दिर बड़े प्रभावोत्पादक हैं। समीप ही खेड, किराडू आदि कई अन्य प्राचीन तीर्थस्थान भी हैं।

उत्तर-रेलवेकी बीकानेर-जोधपुर लाइनके आसरनाड़ा-स्टेशनसे घंघाणी तीर्थको मार्ग जाता है। वहाँ सम्राट् अशोकके पौत्र सम्पतिका बनवाया हुआ पद्मप्रभु-जिनालय है। १७वीं शताब्दीमें यहाँ कई धातुमयी जैन-प्रतिमाएँ थीं, जिनपर सम्पति आदिके लेख होनेका उल्लेख महाकवि श्रीसमयसुन्दरने किया है। पर वे प्रतिमाएँ अब प्राप्त नहीं हैं। १०वीं शताब्दीकी मूर्तियाँ तो अब भी प्राप्त हैं।

जोधपुरके पास मण्डोर भी प्राचीन तीर्थस्थान है, जहाँ ८वीं शताब्दीका प्राकृतमें शिलालेख मिला है। मेड़ता, नागौर आदि भी कई प्राचीन स्थान हैं, जहाँ अब भी कई मन्दिर हैं और यात्रीलोग दर्शनार्थ पहुँचते हैं। हथंडीमुछाडाके राजा महावीरजी प्रसिद्ध हैं।

बीकानेरमें करीब ३५ जैन-मन्दिर हैं, जिनमें भाँडासरका मन्दिर त्रैलोक्य-दीपक (सुमति-जिनालय) राणकपुरका लघु अनुकरण है।

राजस्थानमें जैसलमेर जैन-समाजका कई शताब्दियोंतक बड़ा प्रमुख स्थान रहा। वहाँके किलेमें पीले पाषाणके जो ७ सुन्दर जैन-मन्दिर हैं, उनके तोरणादि एवं शिखरकी कारीगरी बहुत भव्य है। दो मन्दिरोंके बीच एक तलघरमें सुप्रसिद्ध प्राचीन ताड़पत्री जैन-भंडार है। जैसलमेरके ये मन्दिर १५वीं, १६ वीं शताब्दीके बने हुए हैं। जैसलमेरसे लाद्रवा, जो इस राज्यकी प्राचीन राजधानी थी, १० मील है; वहाँपर भी पार्श्वनाथका एक सुन्दर मन्दिर है। जयपुर राज्यमें महावीरजी, पद्मप्रभुजी और अलवरमें रावण-पार्श्वनाथ तीर्थ है।

मेवाड़में केसरियानाथजीका तीर्थ बहुत ही प्रसिद्ध है, जिसे श्वेताम्बर-दिगम्बर दोनों समान रूपसे मानते

हैं। भील आदि जैनेतर भी उनके प्रति बड़ा भक्तिभाव दिखाते हैं। यहाँके केसरियाजीकी श्याम प्रतिमा बहुत मनोहर है और मन्दिर भी कलापूर्ण है। मूर्ति ऋषभदेवजीकी है, परन्तु केसर बहुत चढ़नेसे उन्हें केसरियानाथजी कहते हैं। इस मूर्तिका प्रभाव बहुत अधिक है।

उदयपुरसे देलवाड़ा और नागदा बसद्वारा जाते हैं। नागदामें तो प्राचीन जैन-मन्दिरोंके खँडहर हैं और देलवाड़ामें १५वीं शताब्दीके मन्दिर हैं।

चित्तौड़ दुर्ग बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध है। यहाँ ८वीं शताब्दीमें सुप्रसिद्ध महान् जैन-विद्वान् हरिभद्र सूरि हुए थे। यहाँके किलेमें लगभग ३० जैन-मन्दिर थे, पर मुसल्मानोंके आक्रमणसे अधिकांश नष्ट-भ्रष्ट हो गये। कुछका जीर्णोद्धार हालमें ही हुआ है। चित्तौड़का जैन-कीर्तिस्तम्भ बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, जिसके अनुकरणमें महाराणा कुम्भाने अपना विख्यात कीर्तिस्तम्भ भी बनवाया।

चित्तौड़के पास करेड़ा-पार्श्वनाथ नामक जैनतीर्थ भी प्रसिद्ध है। यहाँकी प्रतिमा चमत्कारी और मन्दिर बहुत ही सुन्दर है।

राजसमुद्र नामक विशाल सरोवरके किनारेपर मन्त्री दयालदासका जैन-मन्दिर भी बहुत ही भव्य लगता है।

जैसा कि पहले कहा गया है, श्वेताम्बर-जैन तीर्थोंकी संख्या बहुत अधिक है। सौ वर्षसे अधिक प्राचीन मन्दिर और चमत्कारी मूर्तिवाले स्थानोंको ही अब तीर्थरूपमें माना जाने लगा है। इसलिये उन सबका परिचय इस छोटे-से लेखमें देना सम्भव नहीं था। जिन तीर्थों एवं स्थानोंका उल्लेख ऊपर किया गया है, उनमें भी एक-एक स्थानकी आवश्यक जानकारी देनेके लिये एक स्वतन्त्र लेखकी अपेक्षा होगी। इसलिये विशेष जानकारीके लिये पूर्व-सूचित दो ग्रन्थोंको ही देखना चाहिये।

प्रधान बौद्ध-तीर्थ

भगवान् बुद्धके अनुयायियोंके लिये चार ही मुख्य तीर्थ हैं—(१) जहाँ बुद्धका जन्म हुआ, (२) जहाँ बुद्धने 'बोध' प्राप्त किया, (३) जहाँसे बुद्धने संसारको अपना दिव्य-ज्ञान वितरित करना प्रारम्भ किया और (४) जहाँ बुद्धका निर्वाण हुआ।

१. लुम्बिनी—यहाँ बुद्धका जन्म हुआ था। गोरखपुरसे एक रेलवे-लाइन नौतनवाँतक जाती है। नौतनवाँ स्टेशनसे १० मील दूर नैपाल राज्यमें यह स्थान है।

२. बुद्धगया—यहाँ बुद्धने 'बोध' प्राप्त किया था। गया स्टेशनसे यह स्थान ७ मील दूर है।

३. सारनाथ—यहींसे बुद्धने अपने धर्मका उपदेश प्रारम्भ किया था। बनारस छावनीसे भटनी जानेवाली लाइनपर बनारस छावनीसे ६ मील दूर सारनाथ स्टेशन है।

४. कुशीनगर—यहाँ बुद्धका निर्वाण हुआ था। गोरखपुर-भटनी लाइनपर गोरखपुरसे ३० मील दूर 'देवरिया सदर' स्टेशन है। वहाँसे कुशीनगर २१ मील है। गोरखपुर या देवरियासे मोटर-बसद्वारा भी वहाँ जा सकते हैं।

मुख्य स्तूप

तथागतके निर्वाणके पश्चात् उनके शरीरके अवशेष (अस्थियाँ) आठ भागोंमें विभाजित हुए और उनपर आठ स्थानोंमें आठ स्तूप बनाये गये। जिस घड़ेमें वे अस्थियाँ रखी थीं, उस घड़ेपर एक स्तूप बना और एक स्तूप तथागतकी चिताके अङ्गार (भस्म) को लेकर उसके ऊपर बना। इस प्रकार कुल दस स्तूप बने।

आठ मुख्य स्तूप—कुशीनगर, पावागढ़, वैशाली, कपिलवस्तु, रामाग्राम, अल्लकल्प, राजगृह तथा बेटद्वीपमें बने। पिप्पलीय-वनमें अङ्गार-स्तूप बना। कुम्भ-स्तूप भी सम्भवतः कुशीनगरके पास ही बना। इन स्थानोंमें कुशीनगर, पावागढ़, राजगृह, बेटद्वीप (बेट-द्वारका) प्रसिद्ध हैं। पिप्पलीयवन, अल्लकल्प, रामग्रामका पता नहीं है। कपिलवस्तु तथा वैशाली भी प्रसिद्ध स्थान हैं।

उपर्युक्त चारके अतिरिक्त निम्नलिखित बौद्ध-तीर्थ आजकल और माने जाते हैं—

कौशाम्बी—इलाहाबाद जिलेमें भरवारी स्टेशनसे १६ मीलपर। यहाँ एक स्तूपके नीचे बुद्ध-भगवान्के केश तथा नख सुरक्षित हैं।

साँची—भोपालसे २५ मीलपर साँची स्टेशन है। इस स्थानका प्राचीन नाम विदिशा है। आजकल इसे भेलसा कहते हैं। यहाँ भी एक स्तूप है।

पेशावर—पश्चिमी पाकिस्तानमें प्रसिद्ध नगर है। यहाँ सबसे बड़े और ऊँचे स्तूपके नीचेसे बुद्ध-भगवान्की अस्थियाँ खुदाईमें निकलीं। यह स्तूप सम्राट् कनिष्कने बनवाया था।

जगद्गुरु शङ्कराचार्यके पीठ और उपपीठ

श्रीशङ्कराचार्यद्वारा स्थापित पाँच प्रधान पीठ

१-ज्योतिष्पीठ—हरिद्वारसे बदरीनाथ जाते समय ऋषिकेशसे जोशीमठतक मोटर-बस जाती है। जोशीमठमें श्रीशङ्कराचार्यजीका ज्योतिष्पीठ है। इसके वर्तमान आचार्य हैं—जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामीजी अनन्त श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज।

२-गोवर्धनपीठ—पुरी (श्रीजगन्नाथपुरी) में श्रीजगन्नाथ-मन्दिरसे स्वर्गद्वार (समुद्र) जाते समय एक मार्ग दाहिनी ओर श्रीशङ्कराचार्यके गोवर्धन-मठको जाता है। इसके वर्तमान आचार्य हैं—जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामीजी अनन्तश्रीभारतीकृष्ण तीर्थजी महाराज।

३-शारदापीठ—द्वारकामें श्रीद्वारकाधीशजी (श्री-रणछोड़रायजी) के मन्दिरके प्राकारके भीतर ही श्री-शङ्कराचार्यजीका शारदापीठ मठ है। इसके वर्तमान आचार्य हैं—जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामीजी अनन्त श्रीअभि-नवसच्चिदानन्दतीर्थजी महाराज।

४-शृंगेरीपीठ—दक्षिण-रेलवेकी बंगलोर-पूना लाइनपर बिरूर स्टेशन है। वहाँसे साठ मीलपर तुङ्गानदीके किनारे शृंगेरी स्थान है। बिरूरसे चिकमगलूर बस जाती है और चिकमगलूरसे शृंगेरी। इसे वर्तमान आचार्य हैं—जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामीजी अनन्त श्रीअभिनवविद्यातीर्थजी महाराज।

५-कामकोटिपीठ—यह मूलतः काञ्चीमें था तथा आद्यशङ्कराचार्यद्वारा ही स्थापित माना जाता है। आचार्यने यहीं रहकर कैलाससे लाये योगलिङ्ग तथा कामाक्षीकी आराधनामें अपने अन्तिम जीवनका कुछ अंश व्यतीत किया था। यहाँके वर्तमान पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी अनन्त श्रीचन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीजी महाराज हैं। काञ्ची मद्राससे ४३ मील दक्षिण कांजीवरम् स्टेशनसे १॥ मीलपर है। यवनकालमें आक्रमणके भयसे यह पीठ कुम्भकोणम् चला गया था और अब भी वहीं है। पर पीठाधिपति आजकल काञ्चीमें ही रहते हैं।

श्रीशृंगेरीपीठके उपमठ या शाखाएँ निम्नलिखित हैं—

१. कुण्डीमठ—मैसूर राज्यके शिमोगा जिलेमें कुडली ग्राममें तुङ्गा और भद्रा नदियोंके संगमपर यह मठ है। इस मठमें अब श्रीसच्चिदानन्द शङ्करभारती स्वामीजी हैं।

२. शिवगङ्गामठ—बंगलोरके पास शिवगङ्गा ग्राममें यह मठ है। अब इस मठमें एक वृद्ध आचार्य हैं।

३. आवनीमठ—कोलार जिलेके मुलुबागलु तालूकामें आवनि ग्राममें यह मठ है। वर्तमान आचार्य श्रीअभि-नवोद्दण्डविद्यारण्य भारती स्वामीजी हैं।

४. विरूपाक्षमठ—बेल्लरि जिलेके हासपेट तालूकाके हंपि ग्राममें यह है।

५. पुष्पगिरिमठ—मद्रासके कडपा जिलेके कडपा तालूकामें यह मठ है।

६. संकेश्वर-करवीरमठ—एक मठ महाराष्ट्रके पूनामें, दूसरा सङ्केश्वर गाँवमें, तीसरा कोल्हापुरमें है, चौथा मठ सातारामें है। आचार्य पूनामें शिरोलकर स्वामीजी हैं। कोल्हापुरमें एक वृद्ध स्वामीजी हैं। सातारामें शिष्य-स्वामी बाडीकर स्वामीजी हैं।

७. रामचन्द्रापुरमठ—मैसूर राज्यके होसनगर तालूकाके रामचन्द्रापुर ग्राममें है।

कन्नड-प्रान्तमें और भी कतिपय मठ हैं—

१. हरिहरपुरमठ—यह मठ शृंगेरीके पास है। आचार्य श्रीअभिनवरामानन्द सरस्वती स्वामीजी हैं।

२. भण्डिगेडिमठ—दक्षिण-कनाड़ा जिलेके उडुपि तालूकामें यह मठ है।

३. यडनीरुमठ—दक्षिण-कनाड़ा जिलेके कासरगोडु तालूकामें है।

४. कोदण्डाश्रममठ—मैसूर राज्यके तुमकूरु तालूकामें हेब्लैरू ग्राममें है।

५. स्वर्णवल्लीमठ—उत्तर कन्नड जिलाके शिरसी तालूकामें यह मठ है, आचार्य श्रीसर्वज्ञेन्द्र सरस्वतीजी हैं।

६. नेलमावुमठ—उत्तर कनाड़ा जिलेके नेलमावु ग्राममें है।

७. योगनरसिंह स्वामिमठ—मैसूर राज्यके होले-नरसीपुरमें यह मठ है।

८. बालकुदुरुमठ—दखिण-कनाड़ा जिलेके उडुपी तालूकामें यह मठ है। आचार्य आनन्दाश्रम स्वामीजी हैं।

श्रीविष्णुस्वामि-सम्प्रदाय और व्रज-मण्डल

(लेखक—आचार्य श्रीछबीलेवल्लभजी गोस्वामी शास्त्री, साहित्यरत्न, साहित्यालंकार)

श्रीविष्णुस्वामि-सम्प्रदायका प्रभाव आज व्रज-प्रदेशमें कम रह गया है; परन्तु प्राचीन इतिहासके देखनेपर निश्चय होता है कि मध्ययुगमें तथा उसके कुछ काल पश्चात्तक अवश्य ही इस सम्प्रदायकी व्रजमें प्रमुखता रही होगी। आगे चलकर विष्णुस्वामि-मतको आधार बनाकर श्रीवल्लभाचार्यजी महाप्रभुने पुष्टि-सम्प्रदायकी स्थापना की, जिससे विष्णुस्वामि-सम्प्रदायकी मूल-परम्परा क्रमशः लुप्त होती गयी। प्रस्थानत्रयीपर विष्णुस्वामि-रचित भाष्यका अप्राप्त होना भी इसके प्रचारमें बाधारूप बन गया। इतना सब होते हुए भी व्रजके विभूतिस्तम्भस्वरूप कुछ प्राचीन स्थान आज भी विष्णुस्वामि-सम्प्रदायके प्रमुख केन्द्र हैं। कुछ स्थान तो इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि वे व्रजके ही नहीं, अपितु भारतीय इतिहासके प्रकाशमान पृष्ठोंमें सम्मानसूचक पदपर प्रतिष्ठित हैं। इन्हीं स्थानोंके उत्थान-पतनमें व्रजका इतिहास संनिहित है। कुछ प्रमुख स्थानोंका परिचय यहाँ दिया जाता है। व्रजका प्रमुख स्थान होनेके कारण पहले वृन्दावनके विष्णुस्वामि-स्थानोंका वर्णन किया जाता है।

निधिवन-निकुञ्ज

यह निधिवन तथा निधुवन दोनों ही नामोंसे प्रख्यात है। कई महानुभावोंकी वाणियोंके अनुसार यही श्रीकृष्णकी महारास-स्थली है। निधुवन (रमण-स्थली) नाम इसीका द्योतक है। रसिक-शिरोमणि आशुधीरात्मज श्रीस्वामी हरिदासजीकी भजन-स्थली एवं श्रीबाँकेविहारीजीका प्राकट्य-स्थान तथा स्वामी हरिदासजीका समाधिस्थल होनेसे यह भक्तों, कलाकारों एवं साहित्यिकोंका सहज आकर्षण-केन्द्र बना हुआ है। श्रीविहारीजीका प्राकट्य-स्थान होनेके कारण ही इसे निधिवन कहते हैं। यह वही वन है, जिसका वर्णन करके पौराणिककालसे आजतकके कवि वृन्दावनके प्रति अपनी भावना समर्पित करते चले आ रहे हैं। कविरत्न श्रीसत्यनारायणकी वेदनाभरी भावना किस मानव-हृदयमें चमत्कार नहीं उत्पन्न कर देती—

पहिले को-सो अब न तिहारो यह बृंदावन।
याके चारों ओर भये बहुबिधि परिवर्तन॥
बने खेत चौरस नये, काटि घने बनपुंज।
देखन कूँ बस रहि गये, निधिबन सेवाकुंज॥

प्राचीन-वाणी-साहित्य निधिवनकी स्थितिको गोलोकसे भी परेकी मानता है।

लोकन ते ऊँची गोलोक जाहि बेद कहैं,
रावरो बराबरी में फीको निधिबन सों।

श्रीस्वामी हरिदासजी ललिता सखीके अवतार थे। आपका जन्म १५६९ वि० में हुआ था। जन्म-स्थान हरिदासपुर (अलीगढ़के पास) से अपने पिता श्रीआशुधीरजीसे वैष्णवीय दीक्षा लेकर सर्वप्रथम यहाँ आपने ही आकर निवास किया था। फिर क्या था? कमल खिला नहीं कि भौंरे आकर मँड़राने लगे। तानसेन, बैजूबावरा, रामदास संन्यासी, गोपालराय आदि इसी रजमयी भूमिमें स्वामीजीका शिष्यत्व प्राप्त करके विश्वविख्यात संगीतज्ञ बन गये। नरपालोंकी कौन कहे, सम्राट् भी आकर चरणोंमें लोटने लगे। रसिक भक्त-मण्डलीका तो निधिवन तीर्थ ही बन गया। श्रीस्वामी हरिदासजीके पश्चात् अद्यावधि श्रीस्वामीजीके अनुज एवं प्रधान शिष्य श्रीजगन्नाथजीके वंशज गोस्वामिगण श्रीनिधिनवराजकी प्राणोंसे भी अधिक देख-भाल तथा उसके अस्तित्वको बनाये रखनेकी भरसक चेष्टा करते चले आ रहे हैं। निधिवनमें स्वामीजीकी भजन-स्थली, रंगमहल, वंशीचोरी तथा श्रीस्वामीजीकी, श्रीजगन्नाथजीकी, आशुधीरजीकी, श्रीविट्ठल-विपुलजीकी, श्रीविहारिनदेवजीकी तथा अनेकों गोस्वामियोंकी समाधियाँ बनी हुई हैं। श्रीविहारीजीका प्राचीन मन्दिर भी यहीं है। श्रीनिधिवनराज आज वृन्दावनका गौरव है।

श्रीबाँकेविहारीजीका मन्दिर

यहीं वृन्दावनका प्रमुख मन्दिर है, जहाँपर नित्यप्रति सहस्रों दर्शनार्थी आते हैं। श्रीविहारीजी महाराज स्वामी श्रीहरिदासजीके सेव्य श्रीविग्रह हैं। पूर्वमें बहुत समयतक आपका अर्चन-वन्दन प्राकट्य-स्थल निधिवनमें ही होता रहा। अनेकों कारणोंसे सं० १८४४ के आसपास, वर्तमान मन्दिरके निर्माणसे पूर्व उसी स्थानपर एक छोटे-से मन्दिरका निर्माण हुआ और उसीमें श्रीविहारीजी महाराजकी सेवा-व्यवस्था होने लगी। वर्तमान विशाल मन्दिरमें सं० १९२१ में श्रीविहारीजी महाराज पधारे। वर्तमान कालमें विष्णुस्वामि-सम्प्रदायका प्रमुख केन्द्र श्रीबाँकेविहारीजीका मन्दिर है। श्रीविहारीजीकी बाँकी अदाकी झाँकी सर्वप्रसिद्ध है। वृन्दावन ही नहीं, अपितु भारतके कोने-कोनेमें श्रीविहारीजीका यश सुनायी पड़ता है। कहींसे कोई भी यात्री जब श्रीवृन्दावनके लिये

रेलपर सवार होता है, तब वह प्रेमसे 'श्रीवृन्दावनविहारी लालकी जय' बोलकर अपनी भक्ति-भावनाको श्रीविहारीजीके चरणोंमें समर्पित करता है। धार्मिक जनोंकी भावनाके केन्द्र तो श्रीबाँकेविहारीजी महाराज हैं ही, अनेकों नास्तिकोंको भी उनके सम्मुख मस्तक टेकते देखा गया है। असीम सौन्दर्यपरमानन्दस्वरूप श्रीबाँकेविहारीजी महाराजके सहस्रों ही लोकोत्तर चरित्र हैं। स्वामी हरिदासजीके साथ की गयी केलि-क्रीड़ाओंको तो कह ही कौन सकता है, अन्य भक्तोंके साथ भी जो लीलाएँ उन्होंने की हैं, उनकी गणना नहीं हो सकती।

भक्त रसखानकी वाणी सुनिये—

अंग हि अंग जड़ाव जड़े अरु सीस बनी पगिया जरतारी।
मोतिन माल हिये लटकै लटुआ लटकैं लट घूँघरवारी॥
पूरब पुन्यान ते रसखानि ये माधुरी मूरति आन निहारी।
देखत नैननि ताकि रही झुकि झाँकि झरोकनि बाँकेबिहारी॥

श्रीविहारीजीके मन्दिरके आस-पास अनेकों मन्दिर श्रीविष्णुस्वामि-सम्प्रदायके हैं, जिनमें प्रमुख श्रीछैलविहारी, श्रीराधाविहारी, श्रीलाड़िलीविहारी, श्रीनवलविहारी, श्रीयुगलविहारी, श्रीमुलतान-विहारी आदिके मन्दिर प्रसिद्ध हैं।

श्रीकलाधारीजीका मन्दिर

यह मन्दिर बहुत प्राचीन है। इसमें श्रीगोवर्धननाथकी बहुत ही सुन्दर मूर्ति है। इसी मन्दिरमें श्रीनानकदेवजीके सेव्य श्रीव्रजमोहनजीकी मूर्ति भी बहावलपुर (पाकिस्तान) से आकर यहाँ विराज रही है। श्रीनानकदेवजीने इन्हींको दूध पिलाया था। यहींपर मुलतानके श्रीमदनमोहनजी महाराज भी विराज रहे हैं।

श्रीकलाधारीजीका बगीचा

श्रीनामदेवजीकी गद्दीके महंत श्रीगोस्वामी यमुनादास-जीको यह बगीचा भेंटमें प्राप्त हुआ था। वृन्दावनमें यही एक ऐसा साधुसेवी स्थान है, जहाँपर कहींसे भी कोई भी वैष्णव साधु आकर जबतक चाहे निवास कर सकता है। उसकी सेवा बराबर की जाती है।

विष्णुस्वामी-अखाड़ा

यह अखाड़ा ज्ञानगुदड़ीमें स्थित है।

राधाकुण्ड

राधाकुण्ड और कृष्णकुण्डके मध्यमें श्रीविहारीजी महाराजका बड़ा पुराना मन्दिर है। यहींपर स्वामी श्रीहरिदासजीकी भजन-स्थली है। यह मन्दिर वृन्दावनके श्रीबाँकेविहारीजीके गोस्वामियोंके अधिकारमें है। मन्दिरसे ही यहाँकी सब व्यवस्था चलती है।

गोवर्धन

यहाँ श्रीहरदेवजीका प्राचीन एवं प्रसिद्ध मन्दिर है। पुराणोंके आधारपर व्रजमें जिन चार देवों एवं चार महादेवोंकी स्थापना श्रीकृष्णके प्रपौत्र श्रीवज्रनाभने की थी, उनमें श्रीहरदेवजीका ही चौथा स्थान है।

इनके भी अनेकों चरित्र हैं।

व्रजके अन्य मन्दिर

कामरमें	श्रीमोहनजीका	मन्दिर है
शरबाटीमें	श्रीदाऊजीका	,,
जखनगाँवमें	,,	,,
मुखरारीमें	,,	,,
कोथरीमें	श्रीविहारीजीका	,,
जानू महसेलीमें	,,	,,
हथियामें	,,	,,
वदनगढ़में	,,	,,
बठैनकलाँमें	,,	,,

तुमारो (कोसीके पास) में श्रीदाऊजीका मन्दिर है।

धनसींगामें	श्रीविहारीजीका	,,
खरोटमें	,,	,,
वरचावलिमें	,,	,,
राजागढ़ीमें	,,	,,
रूपनगरमें	,,	,,
रायपुरमें	श्रीदाऊजीका	,,
सोनहदमें	श्रीबदरीनारायणजीका	,,
गारेमें	श्रीविहारीजीका	,,
घूघरोमें	,,	,,
धतीरमें	,,	,,
ढेरकीमें	,,	,,
कारनामें	,,	,,
पौड्रीमें	,,	,,
किरार्कमें	,,	,,
चेमुहामें	,,	,,
पैठेंमें	श्रीचतुर्भुजजीका	,,
कामवनमें	श्रीकामरियाजीका	,,
ऊँचोगाँवमें	श्रीललिताअटा (ललिताविहारीजीका)	,,
जुहेरामें	श्रीचतुर्भुजजीका	,,
भतरोडमें	श्रीभतरोडविहारीका	,,

मथुरामें श्रीविहारीजीका मन्दिर (जवाहर-विद्यालय मन्दिरमें है)।

श्रीरामानुज-सम्प्रदायके पीठ—एक अध्ययन

(आचार्यपीठाधिपति स्वामीजी श्रीश्रीराघवाचार्यजी महाराज)

आचार्य रामानुजकी परम्परा भगवान् नारायणसे आरम्भ होती है। महाभारतसे पता लगता है कि प्रत्येक कल्पमें नारायणसे प्रवर्तित निवृत्तिप्रधान भागवतधर्मकी परम्पराका अलग रूप रहा है। इस युगमें इस परम्पराका पुनरुज्जीवन जिस क्रमसे हुआ, उसके आरम्भमें नारायणके बाद लक्ष्मी और लक्ष्मीके बाद विश्वके दण्डधर विष्वक्सेनका नाम आता है। नारायण जगत्पिता तथा जगत्पति हैं और लक्ष्मी जगन्माता हैं। दोनोंके दिव्य दाम्पत्यमें जहाँ एक ओर न्याय और दयाका, शक्तिमान् और शक्तिका अचल संयोग है, वहाँ साधनाके क्षेत्रमें साधकके लिये जगन्माता लक्ष्मीके पुरुषकारका उपयोग है। दयामयी जगन्माताकी दया ही इसका मूल कारण बनी। इसी दयाकी भावनासे लक्ष्मीने नारायणको आचार्यके स्थानपर विराजमान करके विष्वक्सेनको परमात्मदर्शनका उपदेश किया।

श्रीमद्भागवतमहापुराणमें लिखा है—

कलौ खलु भविष्यन्ति नारायणपरायणाः॥
क्वचित् क्वचिन्महाराज द्रमिडेषु च भूरिशः।
ताम्रपर्णी नदी यत्र कृतमाला पयस्विनी॥
कावेरी च महापुण्या प्रतीची च महानदी।

(११।५।३८—४०)

'इस कलियुगके आरम्भमें नारायणपरायण संतोंकी एक माला द्रमिडदेशमें ताम्रपर्णी, कृतमाला (वैगै), पयस्विनी (पालार), कावेरी और प्रतीची महानदी (परियार) के प्रदेशोंमें प्रादुर्भूत होगी।'

आळ्वार संतोंका जन्म इन्हीं प्रदेशोंमें हुआ। ताम्रपर्णीकी भूमिमें आळ्वार-शिरोमणि शठकोप और मधुरकविका, कृतमालाके समीप संत विष्णुचित्त और गोदाका, पयस्विनीके प्रदेशमें संत भूतयोगी, सरोयोगी, महायोगी और भक्तिसारका, कावेरीके क्षेत्रमें संत भक्ताङ्घ्रिरेणु, मुनिवाहन और परकालका और महानदीके तटपर संत कुलशेखरका जन्म हुआ। इन आळ्वार संतोंमेंसे आळ्वार-शिरोमणि शठकोपका नाम उस परम्परामें आता है, जो नारायणसे आरम्भ होकर आचार्य रामानुजतक पहुँचती है। प्राचीन अनुश्रुतिके अनुसार संत शठकोपका जन्म उसी वर्ष हुआ था, जिस वर्ष भगवान् श्रीकृष्णने परमधामके लिये प्रयाण किया था। विष्वक्सेनने आचार्यके रूपमें शठकोपको उपदेश दिया। संत मधुरकविने इन्हीं श्रीशठकोपके सांनिध्यमें तत्त्वज्ञान प्राप्त किया और उनके उपदेशकी परम्पराका प्रवर्तन किया। किंतु जिस प्रकार ब्रह्मसूत्रकार व्यासकी वह परम्परा, जिसमें व्यासके बाद क्रमशः बोधायन, टङ्क, द्रमिड, गुहदेव आदिका नाम आता है, ग्रन्थोपदेशके रूपमें ही सुरक्षित रह सकी, उसी प्रकार मधुरकविकी परम्पराने संत शठकोपकी वाणीके साथ अपना प्रयास भी रखा था।

शताब्दियोंके बाद जब आचार्य रामानुजके परमाचार्य आचार्य यामुनके पितामह श्रीनाथमुनिका नाम आता है, तब ये दोनों ही परम्पराएँ पूर्णरूपसे अपने साहित्यको भी सुरक्षित रखनेमें असमर्थ दिखायी देती हैं। आचार्य नाथमुनिने योगसाधनाके द्वारा संत शठकोपका नित्य विभूतिसे आवाहन किया। इस महान् कार्यमें उनको सफलता मिली और आळ्वार-शिरोमणि श्रीशठकोपने उनको उपदेश देकर परमात्मदर्शनकी वैष्णव-परम्पराको पुनरुज्जीवित किया। दक्षिण-भारतके दिव्यदेशोंमें प्राचीन कालसे श्रीरङ्गधामकी जो मान्यता चली आती थी, संत परकालने अपने उद्योगसे उसको परिपुष्ट किया था और आचार्य नाथमुनिके समयमें इस दिव्यदेशको सर्वप्रधान स्थान प्राप्त था। यहीं आचार्य नाथमुनिने उभयवेदान्तका प्रवर्तन किया, जिसमें एक ओर बोधायन-टंक-द्रमिडकी परम्परासे प्राप्त संस्कृत-वेदान्त था और दूसरी ओर आळ्वार संतोंकी वाणीके रूपमें प्रतिष्ठित द्राविड वेदान्त था।

उभयवेदान्तकी परम्परामें आचार्य नाथमुनिके बाद आचार्य पुण्डरीकाक्षका और उनके बाद आचार्य राममिश्रका नाम आता है। आचार्य राममिश्रके उत्तराधिकारी हुए आचार्य श्रीयामुन, जिन्होंने अपनी अलौकिक प्रतिभासे विद्वानोंसे लेकर शासनतकको प्रभावितकर एक शासक (राजा) का यौवराज्यपदतक प्राप्त कर लिया था। तथापि आचार्य राममिश्रकी दिव्य प्रेरणासे उन्होंने राज्यसे

सम्बन्ध तोड़कर श्रीरङ्गधाममें उभयवेदान्तकी परम्पराका प्रधान आचार्यत्व ग्रहण किया। इनके शिष्योंमें प्रधान थे आचार्य महापूर्ण, जिनके शिष्य होनेका गौरव आचार्य रामानुजको भी प्राप्त हुआ था। आचार्य यामुनने उभयवेदान्तके पृथक्-पृथक् विभाग करके अपने शिष्योंको अलग-अलग एक-एक विभागका अधिकारी बनाया था। इन सभीसे उपदेश ग्रहणकर आचार्य रामानुजने सम्पूर्ण ज्ञानको एकत्रित किया और इस प्रकार श्रीवैष्णव-परम्पराका प्रधान आचार्यत्व ग्रहण किया। आपके सम्बन्धमें प्रसिद्ध है—

संसेवितः संयमिसप्तशत्या
पीठेश्चतुस्सप्ततिभिः समेतैः।
अन्यैरनन्तैरपि विष्णुभक्तै-
रास्तेऽधिरङ्गं यतिसार्वभौमः॥

आशय यह कि श्रीरङ्गधाममें आचार्य श्रीरामानुज यतिसार्वभौमके सांनिध्यमें सात सौ संन्यासी, चौहत्तर पीठाधिपति तथा असंख्यात विष्णुभक्त थे।

महर्षि बोधायन, आचार्य टङ्क, आचार्य द्रमिड आदि पूर्वाचार्योंके जो पीठ पहलेसे चले आ रहे थे, उनकी मर्यादाको अक्षुण्ण रखते हुए श्रीरामानुजाचार्यने चतुस्सप्तति (७४) पीठोंकी स्थापना की और उनके आचार्योंकी व्यवस्था की।

इन चौहत्तर पीठोंकी परम्परा आचार्य रामानुजतक एक ही थी। आगे अपनी-अपनी परम्परा चल पड़ी। पूर्वाचार्यपीठोंके तत्कालीन आचार्योंने आचार्य रामानुजसे ज्ञान-सम्बन्ध स्थापित किया था। अतः उनमें भी आचार्य रामानुजतककी परम्पराका प्रचलन हो गया।

श्रीरामानुजीय पीठोंकी आगेकी परम्पराओंका सूक्ष्म निरीक्षण करनेपर प्रकट होता है कि कवितार्किकसिंह, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र, वेदान्ताचार्य श्रीवेङ्कटनाथदेशिक (वेदान्तदेशिक) के सांनिध्यमें अनेकों पीठोंके तत्कालीन आचार्योंने ग्रन्थ-कालक्षेप किया। जिस प्रकार आचार्य शङ्करकी परम्परामें प्रस्थानत्रयीकी मान्यता चली आती है, उसी प्रकार आचार्य रामानुजकी परम्परामें उभयवेदान्त और ग्रन्थचतुष्टयकी मान्यता प्रचलित है। उभयवेदान्तके संस्कृत वेदान्तमें आचार्य श्रीरामानुजके श्रीभाष्य और गीताभाष्यके साथ-साथ द्राविड वेदान्तमें श्रीकुरुकेश्वर देशिककी षट्साहस्री (भगवद्विषय) की प्रतिष्ठा होनेपर इनके उपदेश (कालक्षेप) की अनिवार्य आवश्यकता मान्य हुई। इस आवश्यकताकी प्रामाणिक पूर्तिके लिये जिन पीठाधिपतियोंने श्रीवेदान्तदेशिकका आश्रय ग्रहण किया, उनकी परम्परा श्रीवेदान्तदेशिकके साथ सम्बद्ध हो गयी। आचार्य श्रीवेदान्तदेशिकके आचार्य थे श्रीवादिहंसाम्बुवाह। उनको आचार्य रामानुजके ज्ञानपुत्र (ज्ञानके उत्तराधिकारीके रूपमें मान्य) श्रीकुरुकेश्वर—श्रीविष्णुचित्त—श्रीवात्स्यवरदाचार्यकी परम्परासे उभय-वेदान्तका उपदेश मिला था और आचार्य श्रीप्रणतार्तिहर—श्रीरामानुज-श्रीरङ्गराजकी परम्परासे रहस्यज्ञानका उपदेश प्राप्त हुआ था। श्रीवेदान्तदेशिकने रहस्यज्ञानको श्रीमद्रहस्यत्रयसार (रहस्यशास्त्र) का रूप प्रदान किया। उभयवेदान्तके श्रीभाष्य, गीताभाष्य और भगवद्विषयके साथ रहस्यशास्त्रका संगम होनेपर ये चारों ग्रन्थ ग्रन्थचतुष्टयके नामसे विख्यात हुए।

श्रीवेदान्तदेशिककी परम्परा उपदेशक्रमसे श्रीवरदाचार्य—श्रीब्रह्मतन्त्रस्वतन्त्र स्वामी—श्रीघटिकाशतकम् वरदाचार्यके बाद श्रीआदिवण्शठकोप यतीन्द्रतक पहुँचती है। दीक्षा और भगवद्विषयके उपदेशमें आपका सम्बन्ध एक अन्य प्रधान परम्परासे था, जिसमें आचार्य रामानुजके बाद क्रमशः श्रीगोविन्दभट्ट—श्रीपराशरभट्ट, श्रीवेदान्ति मुनि, श्रीकलिमथन, श्रीकृष्णपाद, श्रीरङ्गाचार्य, श्रीकेशवाचार्य, श्रीश्रीनिवासाचार्य, श्रीकेशवाचार्यके नाम आते हैं। इस प्रकार दोनों परम्पराओंसे सम्बद्ध श्रीआदिवण्शठकोप यतीन्द्र महादेशिकने अहोबिल-क्षेत्रके आराध्यदेव श्रीनृसिंह-भगवान्‌के आदेशानुसार अहोबिल-मठकी स्थापना की और श्रीरामानुजीय पीठाधिपतियोंका नेतृत्व ग्रहण किया, जैसा कि इस श्लोकसे प्रकट है—

श्रीरामानुजसम्प्रदायपदवीभाजां चतुस्सप्ततिः
श्रीमद्वैष्णवभूभृतां गुणभृतां सिंहासनस्थायिनाम्।
अध्यक्षत्वमुपेयिवांसमतुलं श्रीमन्नृसिंहाज्ञया
प्राञ्चं वण्शठकोपसंयमिधराधौरेयमीडीमहि॥

इस नेतृत्वके कारण श्रीरामानुजसिद्धान्तके आचार्योंका एक संगठन हुआ, तथापि इससे किसी परम्परापर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सभी आचार्योंमें अपनी-अपनी परम्परा प्रतिष्ठित थी और उसमें किसी प्रकारका परिवर्तन करनेकी कोई आवश्यकता भी नहीं थी।

श्रीवेदान्तदेशिकसे जो परम्परा श्रीआदिवण्शठकोप

यतीन्द्रतक पहुँची, उसमें श्रीब्रह्मतन्त्रस्वतन्त्र स्वामीका नाम आया है। इनसे एक अन्य परम्परा चली, जिसमें श्रीपरकाल-मठकी स्थापना हुई। इसी परम्परामें श्रीआदिवण् शठकोपके आचार्य श्रीवाटिकाशतकम् वरदाचार्यसे एक अन्य परम्परा भी चली, जो मुनित्रयपरम्पराके नामसे प्रसिद्ध हुई।

श्रीगोविन्दभट्टसे जो परम्परा श्रीआदिवण्शठकोपतक पहुँची, उसमें श्रीकृष्णपादका नाम आया है। श्रीकृष्णपादसे श्रीलोकाचार्य, श्रीशैलपूर्ण, श्रीवरवरमुनिके क्रमसे एक परम्परा अष्टदिग्गज आचार्योंतक पहुँचती है। इस परम्पराके श्रीलोकाचार्यने अष्टादश रहस्य-ग्रन्थोंकी रचना की तथा श्रीवरवरमुनिने अष्टदिग्गज आचार्योंकी स्थापना की। ये अष्टदिग्गज हैं—

वानाद्रियोगिवरवेङ्कटयोगिवर्य-
श्रीभट्टनाथपरवादिभयंकरार्याः ।
रामानुजार्यवरदार्यनतार्तिहारि-
श्रीदेवराजगुरवोऽष्ट दिशांगजास्ते॥

अर्थात् (१) श्रीवानाद्रि योगी, (२) श्रीवेङ्कट योगी, (३) श्रीभट्टनाथ जीयर, (४) श्रीप्रतिवादिभयंकराचार्य (अण्णा), (५) श्रीरामानुजाचार्य (अप्पुल्लार), (६) श्रीवरदाचार्य (कन्दाडै अण्णन्), (७) श्रीप्रणतार्तिहराचार्य और (८) श्रीदेवराजाचार्य।

इन अष्टदिग्गज आचार्योंमेंसे श्रीभट्टनाथ जीयर, श्रीरामानुजाचार्य तथा श्रीप्रणतार्तिहराचार्यकी परम्परा नहीं चली। श्रीवानाद्रि योगीने श्रीतोताद्रि-मठकी स्थापना की तथा अपने अधीन इन अष्टदिग्गजोंकी स्थापना की—

श्रीमन्महार्यरणपुङ्गवशुद्धसत्त्व-
श्रीश्रीनिवासभरतानुजसिद्धपादाः ।
गोष्ठीपुरेशवरदाख्यगुरुर्जयन्ति
वानाद्रियोगिन इमेऽष्टदिशां गजास्ते॥

अर्थात् (१) श्रीमहाचार्य, (२) श्रीरणपुङ्गवाचार्य, (३) श्रीशुद्धसत्त्वाचार्य, (४) श्रीश्रीनिवासाचार्य, (५) श्रीरामानुजाचार्य, (६) श्रीसिद्धपादाचार्य, (७) श्रीगोष्ठीपुराधीशाचार्य और (८) श्रीवरदाचार्य।

यहाँपर यह बता देना अनुचित न होगा कि श्रीरामानुजसम्प्रदायमें बडकलै (उत्तर-कला) और तेन्कलै (दक्षिण-कला) के नामसे दो वर्ग दिखायी देते हैं। इनमेंसे प्रथम वर्गमें श्रीवेदान्तदेशिकके रहस्य-ग्रन्थोंकी तथा द्वितीय वर्गमें श्रीलोकाचार्यके रहस्य-ग्रन्थोंकी मान्यता है। वडकलै-वर्ग श्रीवेदान्तदेशिककी परम्परासे तथा तेन्कलै-वर्ग श्रीवरवरमुनिकी परम्परासे सम्बद्ध है। यद्यपि उत्तर-कलाका अर्थ संस्कृत-वेदान्त तथा दक्षिण-कलाका अर्थ द्राविड-वेदान्त किया जाता है, तथापि दोनों वर्गोंमें सिद्धान्ततः उभयवेदान्तकी भावना प्रतिष्ठित है। द्राविड-वेदान्त किस प्रकार दक्षिण-वेदान्त कहलाया और संस्कृत-वेदान्तको क्यों उत्तर-वेदान्त कहा गया, इसका अनुसंधान करनेपर ज्ञात होता है कि जिन दिनों श्रीरङ्गधाम द्राविड-वेदान्तका तथा काञ्ची संस्कृत-वेदान्तका केन्द्र बना, उन्हीं दिनों इन दोनों शब्दोंका प्रयोग आरम्भ हुआ। काञ्ची श्रीरङ्गधामसे उत्तरमें है तथा श्रीरङ्गधाम काञ्चीमें दक्षिणमें। इस प्रकार दक्षिणप्रदेशके भीतर ही उत्तर-दक्षिणकी यह कल्पना जाग्रत् हुई। यद्यपि भगवान् रामानुजाचार्य तथा आचार्य-सार्वभौम श्रीवेदान्तदेशिक काञ्ची-मण्डलके ही थे, तथापि दोनोंके जीवनका प्रमुख भाग श्रीरङ्गधाममें व्यतीत हुआ। श्रीवेदान्तदेशिकके पश्चात् श्रीघटिकाशतकम् वन्दाचार्यके समयतक उनकी परम्पराके प्रमुख आचार्य श्रीकाञ्चीपुरीके साथ प्रधानरूपमें सम्बद्ध रहे। उधर श्रीवरवरमुनिने श्रीरङ्गधामको द्राविड-वेदान्तका मुख्य प्रवचन-केन्द्र बनाया। इस प्रकार श्रीरामानुज-सम्प्रदायकी जो दो धाराएँ हुई, उनमें परम्पराभेद तो स्पष्ट दिखायी देता है, किंतु सिद्धान्तकी दृष्टिसे देखा जाय तो दोनोंमें परस्पर योजना-भेदके अतिरिक्त अन्य कोई भेद नहीं मिलता। दक्षिण-भारतके कई प्राचीन दिव्यदेशोंमें श्रीवेदान्तदेशिक और श्रीवरवरमुनि दोनोंके दिव्य मङ्गल-विग्रह विराजमान हैं। इससे भी दोनों धाराओंकी मौलिक एकता दिखायी देती है।

श्रीरामानुजीय पीठोंकी दिव्यदेशोंमें मान्यताकी दृष्टिसे विचार किया जाय तो स्पष्टतया ज्ञात होता है कि इनका तथा दिव्यदेशोंका स्थायी सम्बन्ध चला आता है। श्रीरामानुज-सम्प्रदायके पूर्वाचार्योंके दिव्य मङ्गलविग्रह इन दिव्यदेशोंमें विराजमान हैं। इनकी रचनाओंका उपयोग दिव्यदेशोंके आराधनात्मक कार्य-क्रमोंमें होता है तथा इनके उत्सव भी दिव्यदेशोंमें होते हैं। श्रीरामानुजाचार्यके परवर्ती आचार्योंमें श्रीवेदान्तदेशिक और श्रीवरवरमुनि

अथवा दोनोंमेंसे एककी मूर्ति प्राय: दिव्यदेशोंमें विराजमान मिलती है। इतना ही नहीं, द्राविडवेद-पारायणमें (जो प्रत्येक दिव्यदेशमें चलता है) श्रीवेदान्तदेशिक अथवा श्रीवरवरमुनिका विजयगान अवश्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त सभी दिव्यदेशोंमें भगवान् रामानुजाचार्यद्वारा सम्मानित पूर्वाचार्यपीठों तथा संस्थापित चतुस्सप्ततिपीठोंके आचार्योचित सम्मान किया जाता है। कतिपय दिव्यदेशोंकी व्यवस्थामें भी पीठोंका हाथ है; तथापि पीठकी स्थिति दिव्यदेशोंमें ही हो, ऐसा कोई नियम नहीं है। '**तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि**' के नियमानुसार इन पीठाधिपतियोंने जहाँ निवास किया, वही स्थान उस पीठके साथ जुड़ गया। अथवा जिस दिव्यदेशके आराध्यदेवके साथ पीठका सम्बन्ध हुआ, उस दिव्यदेशका नाम पीठके साथ किसी-न-किसी प्रकार सम्बद्ध हो गया।

ध्यान रहे कि श्रीरामानुजीय पीठोंमें आश्रमविशेषका अनिवार्य नियम नहीं है। पूर्वाचार्य-पीठों तथा श्रीरामानुजाचार्यद्वारा स्थापित चतुस्सप्ततिपीठोंकी परम्परा गृहस्थाश्रमी है। श्रीआदिवण्शठकोप संन्यासी थे। उनतक पहुँचनेवाली परम्परामें श्रीयामुनाचार्य, श्रीरामानुजाचार्य, श्रीगोविन्दाचार्य, श्रीवेदान्ती स्वामी तथा ब्रह्मतन्त्रस्वतन्त्र स्वामीको छोड़ अन्य सभी गृहस्थाश्रमी थे। श्रीवरवरमुनि संन्यासी थे। उनके अष्टदिग्गजोंमें तीन संन्यासी थे। श्रीलोकाचार्य नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे। इसका अर्थ यह निकला कि श्रीरामानुजीयपीठका आचार्य किसी भी आश्रमका हो सकता है। गृहस्थपीठोंमें वंश-परम्परा चलती है। वंश-परम्पराके साथ दीक्षा और उपदेशका सम्बन्ध चाहिये। जो गृहस्थपीठ नहीं हैं, उनमें भी दीक्षा और उपदेश मिलता ही है। दक्षिणभारतके ऐसे पीठोंमें भी पूर्वाचार्यपीठों तथा चतुस्सप्ततिपीठोंकी वंश-परम्पराका नियम अनिवार्य है। इस प्रकार दक्षिणभारतके समस्त रामानुजीय पीठोंकी मान्यता उनके पूर्वाचार्यों एवं चतुस्सप्तति-पीठाधिपतियोंकी वंश-परम्परापर निर्भर करती है। दक्षिणभारतसे उत्तरभारतमें स्थानान्तरित पीठ इसी कोटिमें हैं। सम्प्रदायके अन्य जितने आचार्य हैं, वे शिष्य-सम्बन्धके द्वारा इन प्राचीन पीठोंमेंसे किसी-न-किसीके साथ सम्बद्ध हैं और इन्हींपर उनकी मान्यता आधारित है।

श्रीअहोबिल-मठ

स्थान—श्रीअहोबिल-क्षेत्र

उपास्यदेव—श्रीअहोबिल-क्षेत्रके आराध्यदेव श्रीलक्ष्मी-नृसिंह भगवान्।

आचार्योंकी नामावली—

१-श्रीआदिवण्शठकोप	यतीन्द्र	महादेशिक।
२-श्रीनारायण	,,	,,
३-श्रीपराङ्कुश	,,	,,
४-श्रीश्रीनिवास	,,	,,
५-श्रीसर्वतन्त्रस्वतन्त्र	शठकोप	,,
६-श्रीषष्ठपराङ्कुश	यतीन्द्र	,,
७-,, शठकोप	,,	,,
८-,, पराङ्कुश	,,	,,
९-,, नारायण	,,	,,
१०-,, शठकोप	,,	,,
११-,, श्रीनिवास	यतीन्द्र	महादेशिक।
१२-,, नारायण	,,	,,
१३-श्रीवीरराघव	,,	,,
१४-,, नारायण	,,	,,
१५-,, कल्याणवीरराघव	,,	,,
१६-,, शठकोप	,,	,,
१७-,, वीरराघव वेदान्त	,,	,,
१८-,, नारायण	,,	,,
१९-,, श्रीनिवास	,,	,,
२०-,, वीरराघव	,,	,,
२१-,, पराङ्कुश	,,	,,
२२-,, नारायण	,,	,,
२३-,, वीरराघव	,,	,,
२४-,, पराङ्कुश	,,	,,
२५-,, श्रीनिवास	,,	,,
२६-,, रङ्गनाथ	,,	,,
२७-,, वीरराघव वेदान्त	,,	,,
२८-,, रङ्गनाथ शठकोप	,,	,,
२९-,, पराङ्कुश	,,	,,
३०-,, श्रीनिवास वेदान्त	,,	,,
३१-,, नारायण वेदान्त	,,	,,
३२-,, वीरराघव	,,	,,
३३-,, शठकोप	,,	,,
३४-,, शठकोप रामानुज	,,	,,
३५-,, रङ्गनाथ	,,	,,

३६-,, श्रीनिवास यतीन्द्र महादेशिक।
३७-,, वीरराघव शठकोप ,, ,,
३८-,, श्रीनिवास शठकोप ,, ,,
३९-,, पराङ्कुश ,, ,,
४०-,, रङ्गनाथ शठकोप ,, ,,
४१-,, लक्ष्मीनृसिंह शठकोप ,, ,,
४२-,, रङ्ग शठकोप ,, ,,
४३-,, वीरराघव शठकोप ,, ,,

श्रीपरकाल-मठ

स्थान-मैसूर।

उपास्य-श्रीलक्ष्मी-हयग्रीव।

आचार्योंकी नामावली—

१-श्रीपेरिय ब्रह्मतन्त्रस्वतन्त्र स्वामी।
२-श्रीद्वितीय ,, ,,
३-श्रीतृतीय ब्रह्मतन्त्रस्वतन्त्र स्वामी।
४-श्रीपरकाल स्वामी।
५-श्रीवेदान्त रामानुज स्वामी।
६-श्रीश्रीनिवास ब्रह्मतन्त्रस्वतन्त्र स्वामी।
७-श्रीनारायण योगीन्द्र ब्रह्मतन्त्र स्वामी।
८-श्रीरङ्गराज स्वामी।
९-श्रीब्रह्मतन्त्रस्वतन्त्र स्वामी।
१०-श्रीब्रह्मतन्त्र यतिराज स्वामी।
११-श्रीवरदब्रह्मतन्त्र स्वामी।
१२-श्रीब्रह्मतन्त्रपराङ्कुश स्वामी।
१३-श्रीकवितार्किकसिंह स्वामी।
१४-श्रीवेदान्तयतिशेखर स्वामी।
१५-श्रीज्ञानाब्धि ब्रह्मतन्त्र स्वामी।
१६-श्रीवीरराघवयोगीन्द्र स्वामी।
१७-श्रीवरदवेदान्त स्वामी।
१८-श्रीवराह ब्रह्मतन्त्र स्वामी।
१९-श्रीवेदान्त लक्ष्मण ब्रह्मतन्त्र स्वामी।
२०-श्रीवरदवेदान्त स्वामी।
२१-श्रीपरकाल स्वामी।
२२-श्रीश्रीनिवास ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।
२३-श्रीवेदान्त ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।
२४-श्रीश्रीनिवास ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।
२५-श्रीरामानुज ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।
२६-श्रीब्रह्मतन्त्र घण्टावतार परकाल स्वामी।
२७-श्रीवेदान्त ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।
२८-श्रीश्रीनिवास ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।
२९-श्रीश्रीनिवास देशिकेन्द्र ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।
३०-श्रीरङ्गनाथ ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।
३१-श्रीकृष्ण ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।
३२-श्रीवागीश ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।
३३-श्रीअभिनव रङ्गनाथ ब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी।

श्रीतोताद्रि-मठ

स्थान-वानमामलै (तोताद्रि)।

उपास्य-श्रीवरमङ्गादेवीसमेत श्रीदेवनायक-भगवान्।

आचार्योंकी नामावली—

१-श्रीवानाद्रि स्वामी।
२-,, कलमूर वरदमुनि स्वामी।
३-,, शेण्डलंकार रामानुज स्वामी।
४-श्रीरङ्गप्पाह्वय रामानुज स्वामी।
५-,, तिरुमय्यंगाराह्वय ,, ,,
६-,, ऐम्बेरुमानार ,, ,,
७-,, ज्येष्ठ तिरुवेङ्कट ,, ,,
८-,, कोणप्प ,, ,,
९-,, रङ्गप्पाह्वयस्वामी ,, ,,
१०-,, मध्यतिरुवेङ्कट ,, ,,
११-,, ज्येष्ठ देवनायक ,, ,,
१२-,, कनिष्ठ तिरुवेङ्कट ,, ,,
१३-,, कनिष्ठ देवनायक ,, ,,
१४-,, कूरत्ताळवान् ,, ,,
१५-,, वत्सचिह्न ,, ,,
१६-,, तिरुनगरी तिरुवेङ्कट ,, ,,
१७-,, कोयल तिरुवेङ्कट ,, ,,
१८-,, ज्येष्ठ शठकोप रामानुज ,,
१९-,, ज्येष्ठ पट्टरपिरान् ,,
२०-,, ज्येष्ठ कलियन् रामानुज ,,
२१-,, मधुर कवि ,, ,,
२२-,, योगि ,, ,,
२३-,, कनिष्ठ शठकोप ,, ,,
२४-,, ,, विष्णुचित्त ,,
२५-,, ,, कलियन् रामानुज ,,
२६-,, ,, मधुर कवि ,, ,,
२७-,, ,, कनिष्ठ ,, ,,

श्रीप्रतिवादिभयंकर-परम्परा

श्रीमुनित्रय-परम्परा
वटिकाशतम् अम्माक
वरदविष्णवाचार्य
महादयाधीश
वात्स्य अहोबिलाचार्य
षष्ठ पराङ्कुशस्वामी
तातदेशिक
वात्स्य अनन्ताचार्य
रामानुजाचार्य
महागुरु वेङ्कटाचार्य
वीरराघवाचार्य
श्रीरङ्गपति देशिक
रङ्गनाथ स्वामी
वेदान्तरामानुज (साक्षात्) स्वामी
श्रीगोपालार्य महादेशिक
श्रीनिवास महादेशिक
श्रीरङ्गनाथ महादेशिक
वेदान्त रामानुज महादेशिक
श्रीनिवास रामानुज महादेशिक
वेदान्त रामानुज महादेशिक
अण्णयार्य महादेशिक
श्रीनिवास महादेशिक
श्रीरङ्ग रामानुज महादेशिक
वेदान्त रामानुज महादेशिक
नारायण महादेशिक
श्रीपादुकासेवक रामानुज महादेशिक
श्रीनिवास रामानुज महादेशिक
श्रीनिवास रामानुज महादेशिक
श्रीवरद रामानुज महादेशिक
वेदान्त रामानुज महादेशिक
वेदान्त रामानुज महादेशिक
श्रीनिवास महादेशिक
श्रीरङ्ग रामानुज महादेशिक
श्रीनिवास महादेशिक
श्रीरङ्गनाथ महादेशिक

उत्तर-भारतके श्रीरामानुज-सम्प्रदायाचार्य

भगवान् रामानुजाचार्यद्वारा सम्मानित पीठों तथा संस्थापित पीठोंमेंसे कईकी परम्पराएँ उत्तर-भारततक पहुँचीं। दक्षिण-भारतसे स्थानान्तरित पीठोंमें श्रीगोवर्धनपीठ, श्रीआचार्यपीठ आदि हैं। श्रीतोताद्रि-मठ, श्रीअहोबिल-मठ, प्रतिवादिभयंकर-परम्परा आदिसे सम्बद्ध अनेकों आचार्य-स्थान हैं, जिनमेंसे कईको पीठका रूप प्राप्त है। उत्तर-तोताद्रि, उत्तराहोबिल आदि विशेषण मूल सम्बन्धको अभिव्यक्त करते हैं।

श्रीगोवर्धन-पीठ

श्रीवरवरमुनिके शिष्य श्रीआचार्य वरदनारायणकी परम्परामें श्रीशठकोपाचार्यने गोवर्धनमें श्रीगोवर्धन-पीठकी स्थापना की। इनकी परम्परा सर्वश्री वेङ्कटाचार्य, कृष्णमाचार्य, शेषाचार्य, श्रीनिवासाचार्यके क्रमसे श्रीरङ्गदेशिकतक पहुँचती है। श्रीरङ्गदेशिकने वृन्दावन-धाममें श्रीरङ्ग-दिव्यदेश (श्रीरङ्गमन्दिर) की प्रतिष्ठा की। तबसे इस दिव्यदेशमें श्रीगोवर्धनपीठका केन्द्र है।

निम्बार्क-सम्प्रदायके तीर्थस्थल

(लेखक—पं० श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य, पञ्चतीर्थ)

यह प्राचीन पूजनीय तीर्थ गिरिराजकी तरेटीमें स्थित गोवर्धन ग्रामसे पश्चिम, डेढ़ मीलकी दूरीपर बरसाने जानेवाली सड़कके संनिकट है।

कहा जाता है, आन्ध्रदेशसे श्रीनिम्बार्काचार्यके पितृदेव श्रीअरुण ऋषि और माता जयन्ती देवी अन्तर्यामी प्रभुके प्रेरणानुसार वृन्दावन आ गये थे। वहाँ आकर श्रीगिरिराजकी एक कन्दरामें दोनों दम्पति भजन-साधन करने लगे। उस समय श्रीगिरिराज और वृन्दावनकी लंबाई-चौड़ाई विस्तृत थी। इसी स्थलपर श्रीजयन्तीनन्दनने यतियोंकी एक निम्ब-वृक्षपर सूर्य (दिव्य ज्योति) का साक्षात्कार करवाया था, तभीसे आपकी भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य नामसे प्रख्याति हुई। इसी स्थलपर आपने गीता, उपनिषद् और ब्रह्मसूत्रोंपर वृत्तियाँ लिखी थीं; उनमें केवल ब्रह्मसूत्रकी वृत्ति ही इस समय उपलब्ध होती है।

सुदर्शन महाबाहो! कोटिसूर्यसमप्रभ।
अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय॥

भगवान्‌की इस आज्ञाके आधारपर आपको श्रीसुदर्शनका अवतार माना गया है। श्रीवेदव्यासजीने भी सम्मानसूचक शब्दोंमें एक जगह लिखा है—

निम्बार्को भगवान् येषां वाञ्छितार्थप्रदायकः।
उदयव्यापिनी ग्राह्या काले* तिथिरुपोषणे॥

वर्तमान भविष्यपुराणमें यह श्लोक हो या न हो, किंतु १२वीं शताब्दीके हेमाद्रि आदि सभी विद्वानोंने परम्परानुसार इसे उद्धृत किया है।

उपवासके लिये उदय-व्यापिनी तिथिके ग्रहण (कपाल-वेध) की परिपाटीपर आपने ही अधिक बल दिया था। तदनुसार इस सम्प्रदायमें यह परम्परा अविच्छिन्नरूपसे चली आ रही है।

श्रीगिरिराजके प्रतिदिन क्रमशः अन्तर्हित होनेके कारण आजकल इस तीर्थ-स्थलका श्रीगिरिराजसे डेढ़-दो मीलका अन्तर पड़ गया है; यहाँ जो गुफा थी, वह भी अन्तर्हित हो गयी है। प्राचीन वृक्षावलीसे ढका हुआ एक पुराना जलाशय है, जिसे श्रीसुदर्शन-कुण्ड अथवा निम्बार्क-सरोवर कहते हैं। समीपमें ही एक छोटी-सी बस्ती है, जो आचार्यश्रीके नामपर ही 'निम्ब-ग्राम' कहलाती है। यहाँ एक ही पुराना मन्दिर है, जिसमें श्रीनिम्बार्कभगवान्‌की ही प्रधान प्रतिमा है। निम्बार्क-ग्राम और आस-पासके सभी वर्णोंके व्यक्ति निम्बार्क-भगवान्‌को ही अपना प्रिय इष्टदेव मानते हैं। आधि-व्याधियोंके निवारणके लिये भी श्रीनिम्बार्कस्वामीकी ही मनौती करते हैं।

दक्षिण-हैदराबादसे पूर्व ६ मील दूर आदिलाबादसे सम्प्राप्त 'श्रीनिम्बादित्य-प्रसाद' के एक शिलालेखसे पता चलता है कि वि० की ११ वीं शताब्दीतक दक्षिण-भारतमें भी भगवान् श्रीनिम्बार्क—निम्बादित्यकी पूजा होती थी।

वृन्दावन, निम्बग्राम (गोवर्धन), मथुरा, नारद-टीला आदि स्थलोंसे श्रीनिम्बार्कभगवान्‌का आदेश लेकर बहुत-से महापुरुष देश-विदेशोंमें पहुँचे और उनके शिष्य-प्रशिष्योंद्वारा बड़े-बड़े धर्म-स्थानोंकी संस्थापना हुई।

श्रीनारद-टीला

यह तीर्थस्थल मथुराके पूर्वोत्तरभागमें श्रीयमुनातटके संनिकट है; यहाँ श्रीनारदजीने तपश्चर्या की थी, इसीसे इसका नाम नारद-टीला पड़ा। पश्चात् यह स्थल श्रीनारदजीके शिष्य श्रीनिम्बार्क और उनकी परम्परामें होनेवाले सभी आचार्योंका प्रधान निवास-स्थान रहा।

* कहीं-कहीं 'कुले' ऐसा भी पाठ मिलता है।

श्रीनारदजीकी प्रतिमा यहाँ विराजमान है।

जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य, व्रजभाषा-साहित्यके आदि वाणीकार श्रीश्रीभट्टजी तथा महावाणीकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्य—इन तीनों आचार्योंकी यहाँ समाधियाँ हैं।

यह श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायका एक प्राचीन पूज्य ऐतिहासिक तीर्थस्थल है। श्रीपरशुरामदेवाचार्यजीने भी यहींसे जाकर द्वारका-यात्राके मार्गमें बढ़े हुए यवन-आतङ्ककी निवृत्ति की थी।

श्रीध्रुव-टीला

मथुराके पूर्वभागमें श्रीनारद-टीलाके संनिकट यमुना-तटपर ही श्रीध्रुव-टीला है। श्रीनारदजीके उपदेशानुसार श्रीध्रुवजीने यहाँ तपश्चर्या की थी, जिसका श्रीमद्भागवतादि पुराणोंमें उल्लेख है। उसीकी स्मृतिरूपमें इस स्थलका ध्रुव-टीला नाम पड़ा।

मथुराके दर्शनीय प्राचीन श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायके तीर्थ-स्थलोंमें यह एक सुन्दर और पूजनीय स्थल है। व्रजभाषा-साहित्यके आदि वणीकार श्रीश्रीभट्टजीका आविर्भाव यहीं हुआ था। आज भी उन्हींके वंशज गोस्वामिगण यहाँ विराजते हैं और उन्हींके आधिपत्यमें यह स्थल है भी।

सप्तर्षि-टीला

मथुराके प्रसिद्ध तीर्थस्थल श्रीनारद-टीला और ध्रुव-टीलाके संनिकट ही यह प्राचीन दर्शनीय स्थल है। कहा जाता है, यहाँ विश्वामित्र आदि सातों ऋषियोंने प्राचीन समयमें तपश्चर्या की थी, उन्हींके नामसे इसकी प्रसिद्धि हुई।

असकुण्डा

मथुरासे अत्यन्त सटा हुआ श्रीयमुनाके तटपर ही यह स्थल है। यहाँका घाट और मुहल्ला भी इसी नामसे प्रसिद्ध है। यहाँ श्रीहनुमान्‌जीकी एक प्राचीन चमत्कारपूर्ण मूर्ति है। मथुराके सभी नागरिक श्रद्धा-भक्तिपूर्वक इसकी मनौती करते हैं। यह पुनीत स्थल परम्परासे ही श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायसे सम्बद्ध है।

पोतराकुण्ड

मथुराके पश्चिमी भागमें श्रीकेशवदेवजीके मन्दिरके संनिकट ही यह एक प्राचीन विशाल कुण्ड है। भगवान् श्रीकृष्णके अवतारसे पूर्व भी यह सुन्दर जलाशय था। कहा जाता है, श्रीयशोदाजीने यहाँ ही पोतरा धोये थे और जल-पूजा की थी। इसी कारण इसकी 'पोतराकुण्ड' संज्ञा हुई। यहाँपर १३वीं शताब्दीमें श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य विराजे थे। उन्होंने ही श्रीकेशवदेवके मन्दिर और कुण्डका जीर्णोद्धार करवाया था। उसके पश्चात् ओरखा-ग्वालियर आदि राज्योंके नरेशोंने भी समय-समयपर इनकी मरम्मत करवायी थी।

ललिता-संगम

व्रजके तीर्थोंमें श्रीराधाकुण्ड और श्यामकुण्ड बड़े महत्त्वपूर्ण तीर्थ माने जाते हैं, उनमें भी श्रीराधा-कुण्डका सम्मान विशिष्ट है। इसी हेतुसे वर्तमान बस्ती इसी कुण्डके नामसे प्रख्यात है।

ऊर्ध्वाम्नायतन्त्रमें लिखा है कि कण्ठपर्यन्त अथवा हृदयपर्यन्त, नाभिपर्यन्त अथवा जङ्घापर्यन्त ही श्रीराधाकुण्डके जलमें स्थित होकर जो साधक श्रीराधा-कृपा-कटाक्ष स्तोत्रका पाठ करे, उसकी वाणी समर्थ हो जाती है, ऐश्वर्य बढ़ता है और उसके सभी अर्थ सिद्ध हो जाते हैं। अधिक क्या, उसे श्रीस्वामिनीजीका भी साक्षात्कार हो जाता है। वे उस साधकपर संतुष्ट होकर ऐसा वर देती हैं, जिससे उसे श्रीश्यामसुन्दरके दर्शन प्राप्त हो जाते हैं। भगवान् प्रसन्न होकर उसे अपनी नित्यलीलामें भी सम्मिलित कर लेते हैं।

जिस प्रकार श्रीश्यामसुन्दरकी प्रसन्नताके लिये श्रीराधाकिशोरीकी आराधना अपेक्षित है, वैसे ही श्रीराधाकिशोरीकी प्रसन्नताके लिये श्रीललिता आदि अष्टसखियोंकी उपासना परम आवश्यक है—यह सभी तन्त्र-ग्रन्थोंका निष्कर्ष है। तदनुसार श्रीराधाकुण्डकी भाँति ही श्रीललिताकुण्डका भी विशिष्ट महत्त्व है। यह कुण्ड श्रीराधाकुण्डके समीपमें ही है।

भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यने अपने परम प्रिय पट्टशिष्य श्रीश्रीनिवासाचार्यको यही आदेश दिया था कि तुम 'ललिताकुण्डपर निवास करते हुए वहीं आराधना करो।' श्रीगुरुदेवकी आज्ञा पाकर वे निम्बग्रामसे २ मीलकी दूरीपर स्थित श्रीललिता-संगमपर पहुँचे। वहाँ गुरूपदिष्ट मन्त्रका आपने अनुष्ठान किया। थोड़े ही दिनोंमें आपको श्रीललिताजीका साक्षात्कार हुआ और उन्हींके अनुग्रहसे फिर श्रीयुगल किशोरके दर्शन मिले।

तबसे आप इसी ललिता-संगम तीर्थपर निश्चितरूपसे रहने लगे। यहींपर आपने श्रीनिम्बार्काचार्यकृत वेदान्त-पारिजात-सौरभ (ब्रह्मसूत्रोंकी संक्षिप्त वृत्ति) पर 'वेदान्त-कौस्तुभ' नामक ललित भाष्य लिखा। इस भाष्यमें द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत आदि अन्य वादोंकी आलोचना तो दूर रही, नामोल्लेखतक, नहीं मिलता;

केवल स्वाभाविक रूपसे द्वैताद्वैत-सिद्धान्तपर प्रकाश डाला गया है; इसीसे यह भाष्य बड़ा महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

श्रीनिवासाचार्यके लीला-विस्तारके पश्चात् उनके पट्टशिष्य श्रीविश्वाचार्यके समयमें यहाँपर श्रीनिवासाचार्यके चरण-चिह्नोंकी स्थापना हुई। छोटा-सा मन्दिर भी बनवाया गया। आज भी दर्शनार्थी यात्री इन चरणोंके संनिकट पहुँचते हैं तो उन्हें स्वतः ही एक स्वाभाविक शान्तिका अनुभव होता है, समस्त कलिप्रपञ्चोंकी विस्मृति हो जाती है। नेत्रोंके सामने ललित-लावण्यमयी श्रीललितबिहारीकी झलक छा जाती है। यह ऐतिहासिक प्राचीन तीर्थस्थल है। यहाँ ठाकुर श्रीललितविहारीके दर्शन हैं।

गोविन्दकुण्ड (आन्यौर)

गिरिराजके तीर्थोंमें यह पुराण-प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। इन्द्रके कोपसे भगवान्ने व्रजकी रक्षा की; इन्द्रका अभिमान दूर हुआ। तब उन्होंने श्रीश्यामसुन्दर सुरभी-पयसहित स्वर्गगङ्गाके जलसे अभिषेक कराया तथा भगवान्को 'गोविन्द' शब्दसे सम्बोधित कर विनयपूर्वक प्रार्थना की। उसी अभिषेकके दुग्ध और जलका यह कुण्ड माना जाता है। बृहन्नारदीयपुराणमें यहाँके स्नानमात्रसे मोक्ष-प्राप्ति बतलायी गयी है। यही बात स्कन्दपुराणसे अभिव्यक्त होती है—

यत्राभिषिक्तो भगवान् मघोना यदुवैरिणा।
गोविन्दकुण्डं तज्जातं स्नानमात्रेण मोक्षदम्॥

मन्दिरमें यहाँ श्रीगोविन्दविहारीके दर्शन हैं। यहाँसे ईशानकोणमें विद्याधरकुण्ड और गन्धर्व-तलाई हैं। इनके संनिकट ही श्रीचतुरचिन्तामणिदेव नागाजीकी लाल पत्थरकी बनी हुई शिखरदार प्राचीन समाधि है। यह श्रीनिम्बार्कसम्प्रदायका एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थल है। जयपुरके प्रसिद्ध साहित्यसेवी पण्डित श्रीमथुरानाथजी भट्टके पूर्वज श्रीमण्डनकविने स्वरचित 'जयसाह-सुजस' ग्रन्थमें लिखा है कि वि० सं० १७०० के लगभग श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश श्रीनारायणदेवाचार्यजीने अपने गुरुदेव श्रीहरिवंशजीके स्मृति-उत्सवमें यहाँ लाखों वैष्णवोंका एक बृहत्सम्मेलन किया था—

परसुराम महाराज के भये देव हरिबंस।
तिनके नारायण भये देव देव अवतंस॥
गोबिंद-गोवर्धन निकट राजत गोबिंदकुंड।
तहँ लाखन भेले किये हरिदासन के झुंड॥
कियो नारायनदेवने मेला जग जस छाय।
धन जामें दस-बीस लख दीन्हो तुरत लगाय॥

नारदकुण्ड

श्रीगिरिराजकी परिक्रमाके पूर्वभागमें यह प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। यहाँ भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यके दीक्षागुरु देवर्षि श्रीनारदजीने तपश्चर्या की थी, इसी कारण इसका नाम नारदकुण्ड प्रख्यात हुआ।

भगवान् श्रीश्यामसुन्दर गिरिराजपर गोचारण-लीला करते थे। यहाँके भिन्न-भिन्न स्थलोंमें उनका पदार्पण होता था। आगे चलकर उपासक भक्तोंने उनके चरणोंके प्रतीक-रूप चरण-प्रतिमाएँ स्थापित कीं और उनका ध्यान तथा आराधन-पूजन करने लगे।

यहाँ एक स्वच्छ जलका कुण्ड है, जिसमें स्नान-आचमन करके जो कोई भगवान् देवर्षि श्रीनारदजीकी वन्दना करता है, उसे श्रीनारदजी आत्मज्ञान कराते हैं।

इस स्थलमें चारों ओरसे छायी हुई वृक्षावलियोंके बीच एक दर्शनीय प्राचीन मन्दिर है, जिसमें सदासे श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायके सिद्ध महापुरुष और अनेकों साधक संत रहते आये हैं। गिगिराजके दर्शनीय और पूजनीय स्थलोंमें यह एक माना हुआ प्राचीन तीर्थस्थल है।

किलोलकुण्ड

श्रीनारदकुण्डसे थोड़ी ही दूरीपर गिरिराजकी परिक्रमामें यह दर्शनीय पुनीत स्थल है। कहा जाता है, श्रीयुगलकिशोरने यहाँ विविध बाललीलाएँ की हैं। उन्हीं क्रीड़ा-कल्लोलोंका प्रतीक यह किलोलकुण्ड है। चारों ओर सघन और पुराने कदम्ब-वृक्षोंसे आवृत यह स्थल बड़ा ही मनोरम है। एक कुण्ड है, जिसे २०० वर्ष पूर्व यहाँके अधिष्ठित महंतजीने पक्का बनवा दिया था।

कुण्डपर श्रीकिलोलबिहारीजीका मन्दिर है। यहाँ साधक-संत रहते आये हैं। साधनाका यह सुविधापूर्ण स्थल है। यहाँकी जलवायु भी स्वास्थ्यवर्द्धक है। सभी दृष्टिकोणोंसे यह मनोहर तीर्थस्थल आदरणीय है।

श्रीपरशुरामपुरी

श्रीपुष्कर-क्षेत्रके अन्तर्गत पुष्कर और देवधानी (साँभर) के मध्यमें सरस्वतीके किनारे यह एक परमपूज्य तीर्थस्थल है।

विक्रमकी १६ वीं शताब्दीके आरम्भमें कुछ धर्मान्ध यवन तान्त्रिकोंने यहाँ अड्डा जमा लिया था और वे द्वारका आदि तीर्थोंको इस मार्गसे जाने तथा वहाँसे लौटनेवाले हिंदू-यात्रियोंको बहुत सताने लगे थे। हिंदू

जनताकी करुण पुकारसे द्रवित होकर श्रीहरिव्यास-देवाचार्यजीने अपने परम प्रिय शिष्य श्रीपरशुरामदेवको वहाँ जानेकी आज्ञा दी। वे बड़े प्रतापी थे। उनके आते ही समस्त आतङ्क शान्त हो गया। जनता निर्भय यात्रा करने लगी। आपके प्रभावसे बड़े-बड़े दुर्दान्त डाकू भी साधु-स्वभाव बन गये, चारों ओरसे राजा-महाराजा भी दर्शनके लिये आने लगे। श्रीपरशुरामदेवाचार्यके नामसे ही एक बस्ती बतायी गयी, जिसका नाम श्रीपरशुरामपुरी हुआ। वहीं एक आचार्य-पीठकी स्थापना की गयी, जो आज अखिलभारतीय जगद्गुरुनिम्बार्काचार्य-पीठके नामसे प्रख्यात है।

उक्त पीठमें जिस स्थलपर आप विराजते थे, उसका पृष्ठभाग योगपीठ कहा जाता है। उसे हिन्दू-मुसल्मान सभी वर्गके लोग पूजते हैं। वहाँ कोई भेद-भाव नहीं है। उसके नीचे एक नाला है। श्रीसर्वेश्वर-भगवान्के धंडारमें साधु-संतोंकी पंगतके पश्चात् उसके धोवनका जल इसी नालेसे होकर बाहर गिरता है। भयंकर आधि-व्याधियोंके विवरणमें इस जलका उपयोग किया जाता था। शीशियोंमें भर-भरकर दूर-दूरतक लोग इसे ले जाते थे। बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी इसे मँगवाते थे—उनके प्राचीन पत्रोंसे यह निश्चित है।

कहा जाता है, शेरशाह सूरी एक बार यहाँ आया था। उसका मनोरथ पूर्ण होनेपर उसके ज्येष्ठ पुत्र सलमके नामपर एक बस्ती बसायी गयी। तबसे यह सलेमाबाद कहलाने लगा।

यहाँका श्रीसर्वेश्वरकुण्ड एक विशाल कुण्ड है, जो वृक्षावलीसे आच्छादित और ऊँचे-ऊँचे टीलोंसे घिरा हुआ है। इसके घाट पहल कच्चे थे; वि० सं० १८९० में तत्कालीन आचार्य श्रीने पक्के बनवा दिये, जिससे इसकी सुन्दरता बढ़ गयी है।

सनकादिकोंके सेव्य श्रीसर्वेश्वर भगवान् और श्रीजयदेवजी द्वारा सुसेवित श्रीराधामाधव भगवान्के बड़े मनोहर दर्शनोंके अतिरिक्त श्रीपरशुरामदेवजीकी धूनीकी भस्म और श्रीनालाजीका जल दोनों ही बड़े हितकर वस्तुएँ हैं। एकान्तिक साधनाके लिये यह बड़ा उपयोगी स्थल है।

यहाँसे अजमेर दक्षिण पूर्व कोनेमें १० कोस, पुष्कर दक्षिणमें १२ कोस तथा किशनगढ़ पूर्वमें ५ कोसके अन्तरपर है। यहाँके लिये किशनगढ़से दिनके ३ बजे दो मोटरें प्रतिदिन जाती हैं और अजमेरसे भी एक मोटर प्रतिदिन आती-जाती है।

श्रीगोपाल-सरोवर

राजस्थानके श्रीलोहार्गल, गणेश्वर, ढोसी और देवधानी आदि तीर्थस्थलोंके मध्यमें यह प्राचीन प्राकृतिक निर्झर सरोवर है। चारों ओर वृक्षोंसे घिरा हुआ यह श्रीगोपाल-सरोवर दर्शनोंके चित्तको लुभा लेता है। महाभारतके वनपर्व और पद्मपुराण आदि ग्रन्थोंमें मालकेतु पर्वतमालाके अन्तर्गत तीर्थोंमें इसकी गणना की गयी है।

इसके आविर्भावके सम्बन्धमें 'श्रीगोपाललहरी' स्तोत्रमें निम्नलिखित उल्लेख मिलता है—

कदा दीने भक्ते करुणजलधेर्लोचनदलात्
सुताद्विन्दोर्गोपालसर इति जातं जलविलम्।
सुतीर्थैर्वन्द्यं यज्झरति सलिलं साम्प्रतमपि
श्रये तं गोपालं विभुरपि चलायां चलति यः॥

विक्रमकी १६वीं शताब्दीके अवसानमें श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठ (सलेमाबाद) से श्रीपरशुरामदेवाचार्यके पट्टशिष्य श्रीपीताम्बरदेवाचार्यजीने यहाँ आकर तपश्चर्या की थी। देवदर्शनोंमें श्रीगोपालजी, नृसिंहजी, सीतारामजी, गोपीनाथजी, शङ्करजी, हनुमान्जी आदिके कई एक मन्दिर मुख्य हैं।

यहाँसे १ कोस पूर्व महात्मा श्रीगोविन्ददासजीका सुन्दर स्थान है, जिनकी कथा भक्तमालमें मिलती है।

गणेश्वर

श्रीगोपाल-सरोवरके पूर्व ६-७ कोसकी दूरीपर गणेश्वर और गाँवडी आदि कई एक तीर्थस्थल हैं, जहाँ पहाड़ोंके शिखरोंसे गोमुखमेंसे होकर कई एक झरने झरते हैं। दूर-दूरके यात्री पर्वोंपर यहाँ स्नान करने आते हैं। स्थाण्वीश्वर आदि कई प्राचीन शङ्करकी मूर्तियाँ तथा श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायके महात्माओं द्वारा संस्थापित पूजित भगवत्प्रतिमाओंके सुन्दर दर्शन हैं।

मणकसासका घाट

श्रीगोपाल-सरोवरसे पश्चिमोत्तर ३ कोसपर मणकसास नामका एक पहाड़ है। इस पहाड़के शिखरपर एक सुन्दर सरोवर है। इसे मणकसासका घाट कहते हैं। यहाँ भी श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायके अच्छे-अच्छे गारुडी संत हो गये हैं।

लोहार्गल (चेतन-बावड़ी)

उक्त सरोवरसे पश्चिम लगभग ९ कोसकी दूरीपर महात्मा श्रीचेतनदासजीकी बहुत विशाल बावड़ी है; यह लोहार्गल (लोहागर) की सीमापर है। लोहागरका इसे द्वार कहते हैं। चारों ओर पर्वत-मालाओंसे घिरे हुए लोहागर-तीर्थका यही एक प्रशस्त मार्ग है।

यद्यपि श्रीलोहागर-पुरीमें सभी वैष्णव-सम्प्रदायोंके मठ-मन्दिर हैं, तथापि बावड़ी, किरोडी, खाकचौक, श्रीगोपीनाथजी और श्रीश्रीजीमहाराजका खालसाही मन्दिर आदि अधिकतर प्राचीन प्रमुखस्थल श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायके हैं। यहाँका मनोरम दृश्य अनुपम है। पहाड़पर मालकेतकी झाँकी होती है, सुन्दर मन्दिर है। वैशाखी पूर्णिमा और भाद्रपदकी अमावस्याको यहाँपर बड़ा मेला लगता है। यह पुरी राजस्थानका छोटा-सा वृन्दावन है।

श्रीपुष्करराजका परशुरामद्वारा

विक्रमकी १३ वीं शताब्दीमें पुष्करके घाट पक्के नहीं बने थे, कच्चे ही थे। आस-पासमें बस्ती भी नहीं थी, केवल भजन-साधन करनेवाले साधु-संत वहाँकी लता-वल्लरियोंमें वृक्षोंके नीचे बैठकर भजन किया करते थे।

वर्षा आदिके अवसरपर उन साधकोंको ठाकुर-सेवाकी सुविधा रहे और यात्रियोंको भी समय-असमय आश्रय मिले—इस उद्देश्यसे श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायके परमप्रतापी आचार्य श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य आदेशानुसार सर्वप्रथम वहाँके शासक नाहरराव पडिहारने पुष्कर-तीर्थके चारों ओर बारह शालाएँ बनवा दीं। ये केवल बारादरियाँ थीं। इनमें कोई कपाटयुक्त मकान नहीं था। उनमें एक ठाकुर-सेवाके लिये नियत हुई और अवशिष्ट शालाएँ साधु-संतों एवं साधारण यात्रियोंके उपयोगमें आती थीं। उनमेंसे बहुत-से स्थान तो नष्ट-भ्रष्ट हो गये। दो खँडहरके रूपमें दृष्टिगत होते हैं। जिसमें ठाकुर-पूजा होती थी, वह स्थल अब भी सुरक्षित रूपमें विद्यमान है। वह 'श्रीपरशुरामद्वारा' कहलाता है।

श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यसे चतुर्थ-पीठिकारूढ श्रीपरशुरामदेवाचार्यजीने १६ वीं शताब्दीमें यहाँ तपश्चर्या की थी। यहाँ एक विस्तृत गुफा थी। सुना जाता है कि आगे चलकर किसी कारणवश उसका द्वार बंद करवा दिया गया, जिससे उसके आगेका छोटा-सा भागमात्र शेष रह गया है।

उस प्राचीन स्थलपर श्रीपरशुरामदेवजीकी प्राचीन संगमरमरकी समाधि है। फिर उनके पट्टशिष्य श्रीहरिवंशदेवाचार्यजीने बादशाह शाहजहाँके राज्यकाल (वि० सं० १६८९) में यहाँ समाधिके संनिकट एक मन्दिर बनवा दिया था।

पुष्करतीर्थके प्राचीन स्थलोंमें यह श्रीपरशुरामद्वारा एक प्रसिद्ध पूज्य स्थल है। केवल निम्बार्कियोंकी ही नहीं, इसके प्रति सभी सनातनधर्मावलम्बियोंकी श्रद्धा है।

श्रीपरशुरामदेवजी एक परमसिद्ध आचार्य हो गये हैं। आपके सम्बन्धमें यह प्रसिद्ध जनश्रुति है कि जिस समय आप अन्तर्धान हुए थे, आपने पुष्कर, आचार्य-पीठ (सलेमाबाद) और वृन्दावन—इन तीनों ही स्थलोंपर भावुक भक्तोंको एक साथ दर्शन, सान्त्वना और सदुपदेश दिया। तदनुसार पुष्करमें समाधि, आचार्य-पीठमें चरण-पादुकाएँ और वृन्दावनमें आपके चित्रपटकी स्थापना हुई।

इनके अतिरिक्त आपकी मालाकी, जो लगभग २५ सेर वजनकी होगी, एवं चरण-पादुकाओंकी, जिन्हें आप व्यवहारमें लाते थे, आचार्य-पीठमें सेवा पूजा होती है और उन्हें भोग लगाया जाता है।

राधाबाग (श्रीपरशुरामद्वारा)—राजस्थान प्रदेशमें आमेर और जयपुरके मध्य एक छोटा-सा क्षारकुण्ड है, इसके चारों ओर पहले सघन वन था। जयपुरकी आबादीसे पूर्व यहाँपर श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ तत्कालीन आचार्यचरणोंके एक शिष्य राधादासजीने तपश्चर्या की थी। इसी तपःस्थलीके संनिकट आगे चलकर आमेर-नरेश महाराजा सवाई जयसिंहजीने एक अश्वमेधयज्ञ किया था, जिसकी स्मृतिमें यज्ञस्तम्भ एवं यज्ञ-मन्दिरका निर्माण हुआ था। उसी जगह फिर एक विशाल मन्दिर बनवाया गया, जिसे 'श्रीपरशुरामद्वारा' कहते हैं। इसमें श्रीकृष्ण-बलरामकी युगल-प्रतिमा विराजमान है तथा श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठके संस्थापक श्रीपरशुरामजीके चित्रपटकी पूजा होती है। जयपुरसे आमेर जानेवाली पक्की सड़कपर स्थित होनेसे यहाँ समय-समयपर यात्रियोंका यातायात अच्छा रहता है। यह एक ऐतिहासिक तीर्थस्थल है।

पीताम्बरकी गाल

श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठ (परशुरामपुरी) से लगभग ७ कोस पूर्व और किशनगढ़से ३ मील दक्षिणमें पहाड़ियोंसे घिरा हुआ यह एक सुन्दर तीर्थस्थल है। किशनगढ़की आबादीसे पूर्व श्रीपरशुरामदेवाचार्यके पट्टशिष्योंमेंसे एक श्रीपीताम्बरदेवजीने इस प्राचीन एकान्त तीर्थस्थलमें निवास एवं तपश्चर्या की थी, तभीसे इसे पीताम्बरकी गाल कहने लगे। पहले यह स्थल भी पुष्करक्षेत्रके ही अन्तर्गत एक गहन वनके रूपमें था। यहाँ पहाड़ोंसे निर्झरित जलका एक प्राकृतिक छोटा-सा जलाशय है और व्रजके पुराने सुन्दर कदम्ब-वृक्षोंका समूह है, जिसे कदमखंडी कहते हैं। किशनगढ़की आबादीके पश्चात्

यहाँ यातायात विशेष बढ़ गया।

सदासे कोई-न-कोई एकान्तप्रेमी संत-महात्मा यहाँ रहते आये हैं। जब गोवर्धनसे श्रीनाथजी मेवाड़में पधार रहे थे, तब मार्गमें कुछ दिन यहाँ भी विराजे थे। सोमवती अमावस्या और ग्रहण आदि पर्वोंपर यहाँ आस-पासकी जनता विशेष पहुँचती है। श्रावणके सोम-वासरोंमें भी नागरिक यहाँ विशेष जाते हैं। इस समय यह स्थल विशेष उन्नत बन गया है। हालमें यहाँ एक ऋषिकुलविद्यालयकी भी स्थापना हुई है।

श्रीऔदुम्बराश्रम (पपनावा)

कुरुक्षेत्रके संनिकट (वर्तमान कुरुक्षेत्र-कुण्डोंसे लगभग ५ कोसपर) यह आश्रम है, जो भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यके एक परमप्रतापी अयोनिज शिष्य श्रीऔदुम्बराचार्यजीका आश्रम कहलाता है।

श्रीऔदुम्बराचार्यजीने अपने आविर्भावके सम्बन्धमें स्वरचित श्रीनिम्बार्कविक्रान्ति ग्रन्थमें लिखा है कि एक समय भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य पृथ्वी-पर्यटन करते समय दक्षिण-प्रदेशके एक ऐसे स्थलपर जा पहुँचे, जहाँ सनातनधर्म-विरोधियोंका एक गुट बना हुआ था। वह किसी भी वैदिक-धर्मावलम्बीको वहाँ रहने नहीं देता था। आपके उपदेश-प्रभावसे उस समूहके बहुत-से व्यक्ति आस्तिक बन गये, जिससे नास्तिकोंका दल बड़ा क्रुद्ध हुआ। एकान्तमें एक गूलरके वृक्षके नीचे ध्यानावस्थामें एकाकी बैठे हुए श्रीनिम्बार्काचार्यके पास उस क्रुद्ध दलके सैकड़ों व्यक्ति आकर शास्त्रार्थके लिये हल्ला करने लगे। शास्त्रार्थ न करनेपर उन्होंने शस्त्राघात करनेका भी निश्चय कर लिया था। उसी क्षण आचार्यश्रीके संकल्प-बलसे गूलरके पेड़से एक फल गिरा और आचार्यके चरणोंका स्पर्श होते ही वह फल नराकृतिमें उद्भव होकर शास्त्रार्थके लिये उद्यत हो गया। इस प्रभावसे शास्त्रार्थी चकित हो गये और शास्त्रार्थ किये बिना ही परास्त हो आचार्याश्रीके चरणोंमें गिर पड़े। वे ही औदुम्बराचार्य आचार्यश्रीके आज्ञानुसार कुछ समय कुरुक्षेत्रमें रहे थे। आगे चलकर उन्हींके स्मारकरूपमें यह आश्रम प्रसिद्ध हुआ। यहाँ एक विशाल सरोवर है, जो श्रीसर्वेश्वरकुण्ड कहलाता है। पासमें ही एक बस्ती है, जिसे पपनावा कहते हैं। कुण्डपर श्रीऔदुम्बराचार्यजीका एक प्राचीन दर्शनीय मन्दिर है, जहाँ नागरिकोंके अतिरिक्त समय-समयपर आगन्तुक यात्रियोंकी भी भीड़ बनी रहती है।

कुरुक्षेत्रसे अम्बाला जानेवाले पथके दाँतरी स्टेशनसे लगभग १ मीलपर यह तीर्थस्थल है।

वसिष्ठ-आश्रम

आबूके विशालकाय पर्वतमें अनेकों तीर्थ हैं। सभी सुन्दर, मनोहर हैं। उनमें एकान्त, अतएव परम शान्तिका स्थल है वसिष्ठाश्रम। कहा जाता है, यहाँपर त्रेतायुगमें श्रीवसिष्ठजीने तपश्चर्या की थी, तत्पश्चात् अनेकों संत-महात्माओंने यहाँ तप किया। श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायके आचार्योंका भी यहाँ बहुत प्राचीन समयसे निवास रहा है। श्रीपरशुरामदेवाचार्यके पश्चात् वसिष्ठाश्रमपर भी गादीपति महन्तोंकी परम्परा आरम्भ हुई।

यहाँका प्रधान तीर्थ है गोमुख, जिससे निरन्तर जल प्रवाहित होता रहता है। उसके नीचे एक सुन्दर कुण्ड है। उसमें एकत्रित होकर वह जल नदीमें जा मिलता है। यह अर्बुदाचलसे समुद्भूत एक प्रकारकी गङ्गा ही है। एक मन्दिर है, जिसमें महर्षि वसिष्ठजीकी पुरुषपरिमित श्यामशिलामयी प्रतिमा है। उसके दोनों ओर श्रीराम और लक्ष्मणकी खड़ी प्रतिमाएँ हैं, जिनके मस्तकपर वसिष्ठजीने अपने दोनों हाथ रख छोड़े हैं। पासमें ही अरुन्धतीजीकी प्रतिमा है। कहा जाता है, यह प्रतिमा प्राचीन है। पास ही वह अग्निकुण्ड है, जिससे चौहान-वंशीय क्षत्रियोंकी उत्पत्ति हुई थी; किंतु यह कुण्ड अब बालूसे पट गया है। चारों ओर आम-चम्पा आदिके वृक्षोंसे घिरा हुआ यह आश्रम पुरातन ऋषियोंकी स्मृति कराता है।

आश्रमके संनिकट ही जमदग्नि ऋषिकी गुफा और कुण्ड है। थोड़ी दूरपर नागतीर्थ है, जहाँपर उस नागकी स्मृति-प्रतिमा प्रतिष्ठित है, जिसने अपनी पीठपर लाकर अर्बुदाचलकी यहाँ संस्थापना की थी।

कहा जाता है, बहुत पहले इस भूभागमें एक बड़ा भारी दह था, जिसमें अग्निहोत्री ऋषियोंकी गायें डूब जाती थीं। ऋषियोंके इस दुःखको मिटानेके लिये उस नागने उत्तराखण्डसे इस आबू पहाड़को लाकर रख दिया, जिससे यह दह भर गया और गौओंका समुदाय सुखसे विचरण करने लगा। थोड़ी ही दूरपर व्यास-आश्रम है, किंतु ये सब आश्रम वसिष्ठाश्रमके ही अन्तर्गत हैं।

आनन्दतीर्थ-परम्परा और माध्वपीठ

(श्रीअदमारु-मठसे प्राप्त)

द्वैतमतप्रवर्तकाचार्य श्रीमन्मध्वाचार्यजीका आविर्भाव ई० सन् १२३९—विलम्बि-संवत्सरकी आश्विन-शुक्ला १० (विजयादशमी) के शुभ दिनमें उडूपि (रजतपीठ) के समीप पवित्र पाजक-क्षेत्रमें हुआ था। आचार्यजीने अपनी आयुके ७९ वर्षके कालमें अद्भुत मेधाशक्तिके द्वारा लोगोंमें अपने सिद्धान्तका प्रचार किया। उनके कई शिष्य हुए। इस समय आठ माध्वपीठ हैं। वे सभी उन्हींके द्वारा प्रतिष्ठित हैं। परम्परासे उनकी शाखाएँ फैलाकर इस प्रकार विभक्त हैं—

१. फलिमारु-मठ—इससे मूल अधिकारी श्रीहृषीकेश स्वामी थे। आठों मठोंके अधिकारियोंमें सबसे श्रेष्ठ होनेके कारण इन्हें 'आष्टोत्कृष्ट' कहा जाता था। इस मठमें श्रीराम-लक्ष्मण और सीताकी पूजा होती है। इस मठके अधीन तीन और मठ हैं।

२. अदमारु-मठ—इसके मूल अधिकारी श्रीनृसिंहतीर्थ थे। यहाँपर चार भुजावाले कालियमर्दन कृष्णकी पूजा होती है। इस मठके अधीन आठ और मठ हैं।

३. श्रीकृष्णपुर-मठ—इसके मूल अधिकारी श्रीजनार्दन-तीर्थ थे। यहाँ कालियमर्दन कृष्णकी द्विभुज मूर्ति स्थापित है। इस मठके अधीन ग्यारह मठ हैं।

४. श्रीपुत्तिका-मठ—इसके मूल अधिकारी श्रीदेवेन्द्रतीर्थ स्वामी थे। यहाँपर श्रीविट्ठलभगवान्‌का विग्रह है। इसके अधीन तीन मठ हैं।

५. शीरूर-मठ—श्रीवामनतीर्थ इसके मूल अधिकारी थे। यहाँ भी श्रीविट्ठलभगवान्‌का ही विग्रह है। इसके अधीन तीन मठ हैं।

६. सोदे-मठ—इसे मूल अधिकारी श्रीविष्णुतीर्थजी स्वयं श्रीमाधवाचार्यजीके छोटे भाई थे। यहाँके आराध्यदेव श्रीभूवाराह और श्रीहयग्रीव हैं। इस मठके अधीन दस मठ हैं।

७. काणियूर-मठ—इसे मूल अधिकारी श्रीरामतीर्थ थे। यहाँ श्रीनृसिंहभगवान्‌की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। गाँवोंमें इस मठके अधीन पाँच मठ हैं।

८. पेजावर-मठ—इसके मूल अधिकारी श्रीअधोक्षज-तीर्थ थे। यहाँपर भी श्रीविट्ठलभगवान्‌की मूर्ति स्थापित है। इसके अधीन चार मठ हैं।

इन आठों मठोंके यतिवर्य अपने गुरु श्रीमन्मध्वाचार्य-जीके द्वारा उडूपिमें प्रतिष्ठित भगवान् श्रीकृष्णकी पूजा बारी-बारीसे करते थे और मध्वसिद्धान्तका प्रचार एवं प्रवचन भी करते थे। ये सभी बालसंन्यासी थे।

उपर्युक्त मठोंके अतिरिक्त ग्यारह मठ और हैं, जिनके नाम मूल अधिकारियोंसहित इस प्रकार हैं—

९. सुब्रह्मण्य-मठ श्रीविष्णुतीर्थ (अनिरुद्धतीर्थ)।
१०. भीमनकट्टे-मठ ,, श्रीविश्वपति-तीर्थ।
११. भण्डारिकेरि-मठ ,, श्रीगदाधर-तीर्थ।
१२. चित्रापुर-मठ ,, श्रीगदाधर-तीर्थ।
(ये सब भी बाल-संन्यासी थे।)
१३. उत्तरादि-मठ ,, श्रीनरहरितीर्थ।
१४. व्यासराज-मठ ,, श्रीलक्ष्मीकान्ततीर्थ।
१५. राघवेन्द्र-मठ ,, श्रीविबुधेन्द्रतीर्थ।
१६. कूड्लि-मठ ,, श्रीअक्षोभ्यतीर्थ।
१७. मज्जिगेहळ्ळि-मठ ,, श्रीमाधवतीर्थ।
१८. श्रीपादराज-मठ ,, श्रीपद्मनाभतीर्थ।
(ये सब भी आचार्यजीके निजी शिष्य थे।)
१९. कुन्दापुर व्यासराज मठ श्रीराजेन्द्रतीर्थ।

१३ से १९ तकके सात मठोंके यति गृहस्थाश्रमके पश्चात् संन्यासी हुए थे। इस परम्पराके सभी यति अब भी गृहस्थाश्रमके बाद ही संन्यास लेते हैं। परन्तु उत्तरादि-मठके व्यासतीर्थ बालसंन्यासी थे, ऐसा लिखा मिलता है। उपर्युक्त मठोंके अतिरिक्त गौडसारस्वत सम्प्रदायके दो और माध्वपीठ हैं—

२०. काशी-मठ।
२१. गोकर्ण पुर्तगाली जीवोत्तम-मठ।

गोकर्ण स्वामीजीका एक और मठ गोवामें भी है।

श्रीमध्वाचार्यजीने द्वारकासे लाये हुए भगवान् श्रीकृष्णकी प्रतिमा उडूपिमें प्रतिष्ठित की और उसका पूजाधिकार आपने पहले अपने आठ शिष्य यतियोंके सिपुर्द किया। इसी कारण उडूपि (उदीपि) भारतभरमें सुप्रसिद्ध तीर्थ माना जाता है।

श्रीमध्वाचार्यजीकृत ब्रह्मसूत्रभाष्य, गीताभाष्य आदि ग्रन्थोंके व्याख्याकारोंमें प्रसिद्ध हैं—उत्तरादि-मठके जयतीर्थ स्वामीजी। अपने टीका-पाण्डित्यके कारण आप 'टीकाचार्य' नामसे प्रख्यात हुए हैं।

पुष्टिमार्गका केन्द्र—श्रीनाथद्वारा

(लेखक—पं० श्रीकण्ठमणिजी शास्त्री, विशारद)

जगद्‌गुरु श्रीवल्लभाचार्यद्वारा प्रतिष्ठापित शुद्धाद्वैत—पुष्टिमार्गका सर्वस्व, आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक चेतनाका प्रेरक-स्थल श्रीनाथद्वारा भारतमें प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ उसके प्राणप्रेष्ठ श्रीगोवर्धनोद्धरण (श्रीनाथजी) विराजमान होकर लगभग तीन सौ वर्षोंसे राजस्थानमें वैष्णवताके केन्द्र बने हुए हैं।

श्रीनाथद्वारा आधिभौतिकरूपमें एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल, यात्रियोंके आकर्षणका विश्राम-स्थान, आध्यात्मिक-रूपमें प्रेमात्मिका भक्तिकी सरस भागीरथीका उद्गमाचल एवं आधिदैविकरूपमें नित्य सर्वज्ञ जगदाधार अनन्त-करुणासार दैव-जीवोद्धारपरायण पूर्ण पुरुषोत्तमका लीला-निकेतन है—जहाँ कर्म-ज्ञान-भक्तिकी त्रिवेणी अनुग्रहके पुण्यप्रयागकी प्रतिष्ठा करती है। श्रीनाथद्वारा लक्षावधि यात्रियोंका कुम्भपर्वस्थल है, वैष्णव जनताका गोलोकधाम है और पर्यटकोंकी विस्मयोत्पादिका नगरी है। यह नगर राजस्थानमें मेवाड़के अन्तर्गत अरावलीकी प्रत्यन्त-पर्वत-शृङ्खलाके मध्य एक ऐसे दुरधिगम्य स्थानपर प्रतिष्ठित हुआ है, जहाँ यात्रा करना एक तपस्या थी और जो विधर्मियोंके आक्रमणके लिय चुनौती था।

श्रीगोवर्द्धननाथका स्वरूप

श्रीगोवर्द्धननाथका स्वरूप श्रीकृष्णावतारकी उस लीलाका परिचायक है, जिसमें सत्ता-मदसे उन्मत्त स्वर्गाधिपति इन्द्रका गर्व शतशः खण्डित किया गया था। पुष्टि-लीलाके वशवर्ती भगवान् सप्तवर्षीय गोपाल श्रीकृष्णने सात दिनतक, प्रलयकालीन वृष्टिके निवारणार्थ वामहस्तकी कनिष्ठिकापर गोवर्द्धनाचलको धारणकर गौ, वत्स, गोप-गोपी, व्रजवासियोंकी सर्वांशतः रक्षा की थी तथा सुरपतिके लिये समर्पित किये जानेवाले अनन्त अन्नकूट और पूजा-सम्भारकी प्रणालीको विध्वस्तकर गौ, ब्राह्मण, दीन, साधु-भक्तोंके हित-सम्पादनार्थ गोवर्द्धनाद्रिमखका प्रारम्भ किया था। प्रभुने स्वयं शैलरूपसे विराजमान होकर नन्द-यशोदा, गोप-गोपी, व्रजवासियोंकी आत्मविश्वस्त भावनाको पुञ्जीभूत और सुदृढ़ किया था। श्रीहरिके अलौकिक प्रभावसे विनत होकर सर्वोच्च राज्यसत्ताने गोपालका सत्ताको शिरोधार्य किया था, तो स्वर्गकी कामधेनुने अमृत-अभिषेकसे आपके आनन्दमय विग्रहके साथ ही समस्त भूमण्डलको क्षीराभिषिक्त किया था।

यह स्वरूप उसी लीलाकी भावनाका अभिव्यञ्जक ही नहीं, साक्षात् तत्स्वरूपमें प्रतिष्ठित होकर अद्यावधि स्वकीय वामभुजासे आश्रयार्थियोंको आह्वान करता है और दक्षिण करारविन्दकी मुष्टिमें उनके मनोंको दृढ़ आबद्ध किये हुए चरणारविन्दसे कर्म-ज्ञानकी दिव्य ज्योति विकीर्ण करता है अथच प्रफुल्ल ईषत्स्मित-संयुक्त मुखारविन्दकी मोहिनी छटासे दुःखसार संसारमें निमग्न जीवोंका उद्धार करके परमानन्दका पान कराता है।

श्रीनाथजीकी पीठिकामें उत्कीर्ण विविध जीव सृष्टिकी उस समष्टिका दिग्दर्शन कराते हैं, जहाँ भगवत्कृपाके सभी निर्विशेष अधिकारी सिद्ध होते हैं। एकत्र तपःपरायण महर्षि यदि मानव-सृष्टिकी उत्कृष्ट परम्पराओंके द्योतक हैं तो चतुष्पदोंकी प्रतिनिधि मातृवात्सल्यपरायणा गौएँ प्रभुके मुखावलोकनार्थ कर्णपुटोंको ऊँचा करके वंशीध्वनिकी स्पृहा अभिव्यक्त कर रही हैं। पक्षिकुलके प्रतिनिधि विचित्र-रङ्ग-रञ्जित मयूर, सरीसृपोंका प्रतिनिधि सर्प, वन्य पशुओंका सिंह और सर्वोपरि अनुग्रहरूप फलका उपभोक्ता शुक—ये सब गिरिकन्दराओंमें आसीन होकर प्रभुकी अलौकिक झाँकीसे उनकी सर्वोद्धार-परायणताका चमत्कार प्रदर्शित करते हैं। सजल-जलद-नील, करतल-धृतशैल, विद्युच्छटानिभ पीत-कौशेयधारी, वनमालानिवीताङ्ग, स्फुरन्मकरकुण्डल, विचित्रदिव्याभरण-विभूषित, कमल-दल-लोचन, प्रसन्नवदनाम्भोज श्रीपुरुषोत्तम गोवर्द्धनोद्धारणधीर अपनी दिव्य सुषमासे दर्शनाभिलाषियोंकी परितृप्ति न करके उनकी उत्कण्ठा, पिपासा, जिज्ञासा-प्रवणता आदि मधुर भावनाओंको अतिशय उद्दीप्त करते रहते हैं। श्रीहरि स्वकीय अद्भुतकर्मताका दिग्दर्शन कराते हुए—श्रीवल्लभ महाप्रभुके वचनबद्ध होकर अनन्त कालके लिय जीवोद्धारका ठेका-सा लिये हुए सर्वमनोमोहक रूपमें आज नाथद्वारामें विराजमान हैं। नाथद्वारा उनका दिव्यलीलानिकेतन है, पुष्टिमार्गका साक्षात् केन्द्रधाम और आस्तिकताकी विविध सरिताओंका अनन्त महोदधि है, जहाँ मधुरताका ही साम्राज्य है।

श्रीगोवर्द्धननाथजीका स्वरूप कलिजीवोंके उद्धारार्थ उस समय प्रादुर्भूत हुआ था, जब वैदिक रहस्यकी, भागवत पद्धतिकी अभिव्यक्तिके लिये भगवान् पूर्ण पुरुषोत्तमके मुखावतार वैश्वानरस्वरूप श्रीवल्लभाचार्यका प्राकट्य हुआ था। इस प्रकार भारतीय संस्कृतिके लिये झंझावातरूप उस दुर्दम राज्य-क्रान्तिके समय एक ओर जहाँ सेव्यताका साक्षात्कार था, वहाँ दूसरी ओर क्रिया-सदाचारात्मक उपदेशका प्रत्यक्ष निदर्शन था। धार्मिक भावनाकी दोनों पद्धतियाँ उस समय एकाकार हो गयी थीं, जब श्रीमहाप्रभु वल्लभने श्रीगोवर्धनधरका प्राकट्य करके उनकी सेवाका महत्त्व जनताको समझाया था।

श्रीगोवर्द्धननाथजीके स्वरूपका प्राकट्य-क्रम घरू-वार्ता और श्रीनाथजीकी प्राकट्य-वार्ता आदिमें इस प्रकार प्रसिद्ध है। सर्वप्रथम सं० १४६६ श्रावण-कृष्ण ३ रविवारको प्रातः श्रीनाथजीकी ऊर्ध्वभुजाका प्राकट्य हुआ। इस समयसे व्रजवासियोंने भुजाका दुग्धस्नानद्वारा पूजन प्रारम्भ किया। इस भुजा-पूजनसे व्रजवासियोंके सभी मनोरथ पूर्ण होने लगे और व्रजके देवतारूपमें प्रभुकी प्रसिद्धि हुई।

सं० १५३५ वैशाख-कृष्णा ११ बृहस्पतिके दिन श्रीनाथजीके मुखारविन्दका प्राकट्य हुआ और इसी दिन श्रीवल्लभाचार्यका प्राकट्य चम्पारण्यमें हुआ। आजसे आन्यौरके सदू पांडेकी 'धूमर' गायका दुग्ध प्रभु आरोगने लगे। यह गाय स्वरूपके समीप जाकर स्वयं दुग्ध स्रवित कर आती थी। पता लगनेपर सदू पांडेको व्रजके सर्वस्वके प्राकट्यका परिज्ञान हुआ और यह स्वरूप 'देवदमन', 'इन्द्रदमन', 'नागदमन' नामोंसे व्रजमें प्रख्यात हुआ।

सं० १५४९ की फाल्गुन-शुक्ला ११, बृहस्पतिवारको झारखण्डमें भारतयात्राके समय श्रीबल्लभाचार्यजीको प्राकट्यकी प्रेरणा हुई और उन्होंने व्रजमें आकर श्रीनाथजीको एक छोटे-से मन्दिरमें प्रतिष्ठितकर स्वयं भोग समर्पण किया तथा सेवाका भार सदू पांडे आदि व्रजवासियोंको सौंपकर श्रीवल्लभ वापस तीर्थ-प्रदक्षिणा करने चले गये।

सं० १५५६ की वैशाख-शुक्ला ३ रविवारको पूर्णमल्ल खत्री अम्बालावासीने वल्लभाचार्यकी आज्ञा लेकर अनन्त धनराशिसे गिरिराजपर मन्दिरका निर्माण प्रारम्भ कराया। पर यह कार्य सं० १५७६ में पूर्ण हो पाया और वैशाख शुक्ला ३ को श्रीनाथजीका वल्लभ महाप्रभुने पाट बैठाया। प्रभुकी सेवाके लिये कृष्णदासको अधिकारी और सूरदास-कुंभनदासको कीर्तन-सेवामें नियुक्त किया।

सं० १५९० के अनन्तर महाप्रभु श्रीवल्लभके द्वितीय आत्मज श्रीप्रभुचरण गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथजीने सेवाका प्रबन्ध अपने हस्तगत किया और नयी व्यवस्थासे सेवा-पूजा-कीर्तन आदि चालू किये। राजाश्रय पाकर श्रीवृद्धि की तथा अनन्त जीवोंको शरणमें लेर भक्तिमार्गका प्रचार किया।

सं० १६२३ में श्रीनाथजी मथुरा पधारकर गिरिधरजीके घर सतघरामें विराजमान हुए और सं० १६२४ में नृसिंहचतुर्दशीको श्रीगुसाईंजीके यात्रासे लौटनेके पूर्व पुनः गिरिराज पधारे।

सं० १६४० के लगभग अन्तिम समयमें श्रीगुसाईंजीने अपने सातों पुत्रोंको सम्पत्तिका विभाग कर दिया और उनके लिये पृथक्-पृथक् भगवत्स्वरूप पधराकर सात पीठोंकी स्थापना की। श्रीगुसाईंजीकी लीला-प्राप्तिके अनन्तर आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीगिरिधरजी, तत्पुत्र श्रीदामोदरजी और तत्पुत्र श्रीविट्ठलरायजी क्रमशः गोस्वामि तिलकायित-पदपर आसीन हुए और उन्होंने श्रीनाथजीके सेवा-सम्प्रदायकी रक्षा की।

श्रीविट्ठलरायजीके समय (जब कि वे अल्पवयस्क थे) सं० १७२६ में औरंगजेबने मथुरापर चढ़ाई की और व्रजमण्डलके मन्दिरों, स्थलों और पवित्र स्थानोंको ध्वस्त करना प्रारम्भ कर दिया। भौतिक राज्यक्रान्ति तथा म्लेच्छ-भयके कारण और आन्तर रहस्यरूप मेदपाट देशके भक्तोंको पावन करनेके लिये गिरिराजसे श्रीनाथजीके बाहर पधारनेका आयोजन हुआ। श्रीविट्ठलरायजीके पितृव्य श्रीगोविन्दजी महाराजने सं० १७२६ आश्विन-शुक्ला १५ को श्रीनाथजीको आगरा पधराया। वहाँ अन्नकूटोत्सव सम्पन्न करके चंबलके किनारे दंडौतधार स्थानपर होकर कोटाराज्यमें श्रीनाथजीने स्वकीय यात्राके चार मास व्यतीत किये। इस समय कोटामें महाराज अनिरुद्धसिंहजीका शासन था; पर राज्यमें सुख-शान्ति न होनेसे श्रीनाथजी पुष्करक्षेत्र होकर कृष्णगढ़के समीप अगम्य पर्वतस्थलीमें आकर विराजमान हुए, जिसे 'पीताम्बरजीकी गाल' कहते हैं। वहाँसे डूँगरपुर, बाँसवाडा, जोधपुर आदि राज्योंमें होते हुए सं० १७२८ कार्तिक-शुक्ला १५ के दिन महाराणा रामसिंहकी प्रार्थनापर

मेवाड़ पधारे। वहाँ बनास नदीके किनारे रायसागर (काँकरोली) से ५ कोस दूर सिंहाड नामक ग्राममें विराजे। आपके पधारनेके पूर्व ही यहाँ श्रीद्वारकाधीश विराजमान हो गये थे। महाराणाने सुरक्षाका वचन देकर औरंगजेबकी सेनाओंसे लोहा लिया और उन्हें परास्तकर हिंदूधर्मकी रक्षा की।

उसी कालसे सिंहाड नामक छोटा-सा स्थल श्रीनाथजीके विराजमान होनेसे पावन हो गया और यात्री, राजा-महाराजा, संत-साधुओंके समागमसे श्रीनाथद्वाराके नामसे प्रसिद्ध हो गया। समय-समयपर यहाँके संस्थानाधिपति गोस्वामि-तिलकायितोंने क्रमशः इस नगरकी सर्वतोमुखी उन्नति की और आज यह पवित्र धाम भारतप्रसिद्ध होकर वैष्णव-समाज एवं सनातन-धर्मावलम्बियोंका केन्द्र बन गया है।

नाथद्वारा-धाम उदयपुर चित्तौड़-रेलवेकी मावलीसे मारवाड़-जंकशन जानेवाली नयी लाइनके नाथद्वारा स्टेशनसे लगभग ७ मील पश्चिममें अवस्थित है। यहाँ नगरके मध्यभागमें श्रीजीका विशाल मन्दिर तथा आस-पास अन्य कई मन्दिर और धर्मशालाएँ तथा बाजार हैं। नाथद्वाराकी चित्रकारी प्रसिद्ध है। यहाँ बारहों मास यात्रियोंका जमघट रहता है। सभी देशोंके यात्रीगण आ-आकर अपनी भक्तिको साकाररूपमें पाकर आत्मानन्द-निमग्न हो जाते हैं। जन्माष्टमी, हिंडोला, रथयात्रा, वसन्त, डोल आदि कई उत्सव सम्पन्न होते रहते हैं, जिनमें अन्नकूटकी प्रधानता है। उस अवसरपर प्रभुको अनेकों प्रकारके पक्वान्न भोग लगते हैं और दर्शनोंके बाद अन्नकूट—भातकी राशिको ग्रामीण भील लूटते हैं। यहाँ वर्तमान समयकी सभी सुविधाएँ यात्रियोंको प्राप्त हैं। संक्षेपमें नाथद्वारा राजस्थानका मुकुटमणि और भारतका हार्दिक-स्थलापन्न पवित्र धाम है।

वल्लभ-सम्प्रदायके सात प्रधान उपपीठ

(लेखक—श्रीरामलालजी श्रीवास्तवा, बी० ए०)

श्रीमद्वल्लभाचार्यके स्वधाम-गमनके पश्चात् तथा उनके पुत्र श्रीगोपीनाथजीके देहावसानके बाद गुसाईं श्रीविट्ठलनाथजी उनके उत्तराधिकारी हुए। पुष्टिमार्गके सिद्धान्तोंका तथा सेवाक्रमका प्रचार-प्रसार मुख्यतया इन्हींके द्वारा हुआ। गुसाईं श्रीविट्ठलनाथजीकी पहली पत्नी श्रीरुक्मिणीजीके छः पुत्र थे तथा दूसरी पत्नी पद्मावतीजीसे एक पुत्रकी उत्पत्ति हुई। इन पुत्रोंके नाम यथाक्रम श्रीगिरधरजी, श्रीगोविन्दरायजी, श्रीबालकृष्णजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्रीरघुनाथजी, श्रीयदुनाथजी और श्रीघनश्यामजी थे। अपने प्रयाणका समय निकट जानकर श्रीगुसाईं विट्ठलनाथजीने अपनी सारी चल और अचल सम्पत्ति अपने सात पुत्रोंमें विभाजित कर दी। इस विभाजनमें गुसाईंजीके सात सेव्य भगवत्स्वरूप भी थे; गुसाँजीने अपने पुत्रोंमें इनका भी विभाजन कर दिया। यह विभाजन सं० १६४० वि० में हुआ, ऐसा सम्प्रदाय-कल्पद्रुममें उल्लेख मिलता है। साथ-ही-साथ यह निर्णय भी हुआ कि श्रीनाथजी और श्रीनवनीतप्रियके स्वरूपोंपर सातों भाइयोंका समान अधिकार रहेगा। गुसाईंजीके जीवनकालमें तथा उनके लीलाप्रवेशके कुछ समय बादतक भी ये सातों भगवत्स्वरूप जतीपुरा और गोकुलमें ही विद्यमान रहे। मुगल-सम्राट् औरंगजेबके शासनकालमें इन स्वरूपोंको हिंदू राजाओंके संरक्षणमें उनके राज्योंमें पधराया गया। इन स्वरूपोंके नामपर ही श्रीवल्लभ-सम्प्रदायके सात प्रधान उपपीठोंकी प्रतिष्ठा हो सकी।

गुसाईंजीने श्रीमथुरेशजीका स्वरूप अपने प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजीको सौंपा। श्रीमथुरेशजी महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य परमभगवदीय कन्नौज-निवासी श्रीपद्मनाभदासजीके सेव्य थे। श्रीमथुरेशजीको कोटामें पधराया गया था तथा वहाँके राजवंशने वर्तमान पीढ़ियोंतक उनको बड़े ही आदर एवं भक्तिभावपूर्वक रखा। अभी कुछ ही वर्ष पूर्व वर्तमान आचार्यश्रीने श्रीमथुरेशजीको कोटासे जतीपुरामें मथुरेशजीकी हवेलीमें पधराया है। आजकल श्रीमथुरेशजी व्रजमें ही विराजमान हैं।

गुसाईंजीने अपने द्वितीय पुत्र श्रीगोविन्दरायजीको श्रीविट्ठलनाथजीका स्वरूप सौंपा। पहले श्रीविट्ठलनाथजी गोकुलमें विट्ठलनाथ-मन्दिरमें विराजमान थे। आजकल श्रीविट्ठलनाथजीका स्वरूप श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) में श्रीनाथजीके मन्दिरके घेरेमें ही अलग मन्दिरमें विराजमान है। मन्दिरके पार्श्वमें ही महाप्रभु श्रीहरिरायजीकी बैठक है।

गुसाईं श्रीविट्ठलनाथजीने अपने तीसरे पुत्र श्रीबालकृष्णजीको श्रीद्वारकाधीशका स्वरूप प्रदान किया। श्रीद्वारकाधीशजी महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य परमभगवदीय श्रीदामोदरदासजीके सेव्य थे। उनके गोलोकधाम-गमनके बाद यह भगवत्स्वरूप श्रीदामोदर दासजीकी पत्नीने अड़ैलमें महाप्रभुजीको सौंप दिया। सं० १७७६ वि०में मेवाड़के महाराणाके अनुरोधसे श्रीद्वारकाधीशजीको काँकरौलीमें पधराया गया। काँकरौली श्रीवल्लभ-सम्प्रदायके सात प्रधान उपपीठोंमेंसे एक है। उसका विवरण अलग दिया गया है। श्रीद्वारकाधीशजी इस समय काँकरोलीमें ही विराजमान हैं।

श्रीगुसाईंजीने अपने चौथे पुत्र श्रीगोकुलनाथजीको श्रीगोकुलनाथजीका स्वरूप सौंपा। भगवान् श्रीगोकुलनाथजी महाप्रभुके प्राचीन सेव्य-स्वरूप थे। श्रीगोकुलनाथजीका स्वरूप आचार्य महाप्रभुको काशीमें अपनी ससुरालसे मिला था। आजकल यह स्वरूप गोकुलमें ही विराजमान है।

अपने पाँचवें पुत्र श्रीरघुनाथजीको गुसाईंजीने भगवान् श्रीगोकुलचन्द्रमाजीका स्वरूप दिया था। गोकुल-चन्द्रमाजी महावनमें रहनेवाले परमभगवदीय सारस्वत ब्राह्मण श्रीनारायणदासजीके सेव्य ठाकुर थे। उन्होंने श्रीगोकुल-चन्द्रमाजीसे वरदान माँगा था कि मेरे देहावसानके बाद आपका यह स्वरूप आचार्य महाप्रभुके घर पधारकर सेवा स्वीकार करे। भगवान्ने भक्तकी इच्छा पूरी की। आजकल यह स्वरूप कामवन (कामा) में विराजमान है।

अपने छठे लालजी श्रीयदुनाथजीको श्रीगुसाईंजीने श्रीबालकृष्णजीका स्वरूप सौंपा। श्रीबालकृष्णजी सूरतमें विराजमान हैं।

अपने सातवें पुत्र श्रीघनश्यामजीको श्रीगुसाईंजीने श्रीमदनमोहनजीका स्वरूप प्रदान किया। इस स्वरूपकी सेवा महाप्रभुजीके पूर्वजोंद्वारा होती आ रही थी। यह स्वरूप उनके पूर्वज श्रीयज्ञनारायणजी भट्टका सेव्य था। आजकल श्रीमदनमोहनजी कामवनमें श्रीगोकुल-चन्द्रमाजीके मन्दिरके पास ही एक दूसरे मन्दिरमें विराजमान हैं।

जगद्गुरु श्रीवल्लभाचार्यकी चौरासी बैठकें

(लेखक—पं० श्रीकण्ठमणिजी शास्त्री, विशारद)

शुद्धाद्वैत-सिद्धान्तके संस्थापक, पुष्टिमार्गके प्रवर्तक, दैवजीवोद्धारपरायण, भगवद्वदनानलावतार जगद्गुरु श्रीवल्लभाचार्यने स्वकीय जीवनमें जीवोंके उद्धार और तीर्थोंको पावन करनेके लिये तीन बार समस्त भारतवर्षकी परिक्रमा की।

आचार्यश्रीने अपनी तीर्थयात्राओंमें जिन-जिन स्थलोंपर श्रीमद्भागवतका सप्ताह-पारायण किया, वहाँ-वहाँ बैठकें स्थापित हुईं। ये चौरासी बैठकें अखिल भारतवर्षमें वर्तमान हैं। आपकी बैठकोंकी स्मृतिका असाधारण चिह्न यह है कि जहाँ भी आपने श्रीमद्भागवतका पारायण किया, वहाँ छोंकर (शमी) वृक्ष था। उक्त वृक्ष यज्ञकाष्ठ एवं अग्निका उद्भव माना जाता है। आप भी वैश्वानरावतार-रूपसे प्रकट हैं, अतः दोनोंका साहचर्य विशेष विज्ञानात्मक है। किन्हीं-किन्हीं स्थलोंमें आज भी उक्त वृक्ष विद्यमान हैं, कहीं-कहीं लुप्त हो गये हैं। भारतके पुनीत हृदयस्थलरूप ब्रजमण्डलमें महाप्रभुकी सबसे अधिक बैठकें हैं, जहाँ आज भी पुष्टिमार्गीय पद्धतिसे सेवा सम्पन्न होती है और आचार्यके सांनिध्यका अनुभव किया जाता है।

उक्त चौरासी बैठकोंका परिचय इस प्रकार है—

(१) **गोकुल** (गोविन्दघाट)—श्रीयमुनाजीने अपना दिव्य स्वरूप प्रकट करके यहाँ आचार्यश्रीको गोविन्दघाट और ठकुरानी-घाटकी सीमाका परिज्ञान कराया; क्योंकि दोनों घाट समान थे और उनका परिचय जनसमाजकी धारणासे लुप्त हो गया था। यहीं महाप्रभुको जीवोंके समुद्धारकी चिन्ता हुई और रात्रिको भगवत्साक्षात्कार होकर 'ब्रह्मसम्बन्ध-दीक्षा' का उपदेश मिला। श्रावण-शुक्ला ११ के दिन मध्यरात्रिमें आचार्यने श्रीनाथजीको हाथके कते हुए सूतका केसरी पवित्रा और मिश्री समर्पण की। प्रातः ब्रह्मसम्बन्धकी सर्वप्रथम दीक्षा दामोदरदास (दमला) को प्रदानकर इस दीक्षाका प्रचलन किया और यहींसे शुद्ध निर्गुण भक्तिमार्ग-स्वरूप अनुग्रहमार्ग (पुष्टि) के प्रचारका संकल्प किया।

(२) **गोकुल** (मन्दिरके भीतर)—यहाँ आचार्यचरण निवास और कथा-प्रचलन करते थे।

(३) **गोकुल**—यहाँ सम्प्रति श्रीद्वारकाधीशका शय्या-मन्दिर है।

(४) वृन्दावन (वंशीवटके समीप)—यहाँ महाप्रभुने प्रभुदास जलोटा खत्रीको वृन्दावनका माहात्म्य समझाया और '**वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः**' इस श्लोकके अनुसार सर्वत्र भगवल्लीलाके दर्शन कराये।

(५) मथुरा (विश्रामघाट)—प्रथम यहाँ निर्जन स्थल था और समीर ही श्मशान था। महाप्रभुको यह अनुचित प्रतीत हुआ और उन्हें भागवत पाठमें असमञ्जसका बोध हुआ। अतः उन्होंने कृष्णदास मेघनके द्वारा कमण्डलुसे जल छिड़कवाकर उस स्थलको पवित्र किया। इस स्थलकी पवित्रता होनेसे यहाँ बस्ती बस गयी और श्मशान ध्रुवघाटपर हटाया गया।

जब महाप्रभु मथुरा पधारे, तब वहाँ विश्रामघाटपर विधर्मियोंने ऐसा भ्रान्त प्रचार कर रखा था कि जो भी हिंदू यहाँसे निकलेगा, उसकी चोटी कटकर दाढ़ी हो जायगी। फलतः तीर्थयात्रियोंने उधर आना-जाना बंद कर दिया था। महाप्रभुको यह उचित नहीं जँचा। उन्होंने अपने अनेक शिष्योंको लेकर वहाँ प्रतिदिन स्नान किया और भागवत-पारायण करके जनताका भय दूर किया। तात्पर्य यह कि मथुरामें बलात् धर्म-परिवर्तनकी क्रिया श्रीमहाप्रभुके प्रभावसे सर्वथा बंद हो गयी और तीर्थ-स्वरूपकी रक्षा हुई। इसके बाद यहाँसे महाप्रभुने सं० १५४९ भाद्र०कृ० १२ के दिन व्रज-परिक्रमाका संकल्प किया। इस प्रकार आपके प्रभावसे व्रजमण्डलमें यवनोंका उपद्रव शान्त हो गया और तीर्थयात्री यथापूर्व अपनी यात्राएँ करने लगे।

(६) मधुवन (व्रज)—यहाँ भगवान् श्रीकृष्णके यादववंशके उत्तराधिकारी 'व्रज' ने भगवान्‌की स्वरूप-प्रतिष्ठा की थी। श्रीआचार्यने माधवकुण्डके ऊपर कदम्बके नीचे श्रीभागवत-पारायण किया। ऐसा प्रसिद्ध है कि इस यात्रामें सूरदासजी भी सम्मिलित थे।

(७) कुमुद्वन (व्रज)—यहाँ भागवत-सप्ताहद्वारा महाप्रभुने वैष्णवोंको दिव्यदृष्टि देकर भगवल्लीलाके दर्शन कराये थे।

(८) बहुलावन (व्रज)—यहाँ कृष्णकुण्डपर वटवृक्षके नीचे बैठक है, जहाँ तीन दिन निवास करके महाप्रभुने भागवत-पारायण किया था। यहाँका यवन हाकिम हिंदुओंको बहुला गौकी पूजा नहीं करने देता था। फलतः आपने उसे चमत्कारसे प्रभावित कर यह प्रतिबन्ध हटवाया।

(९) श्रीराधाकुण्ड-कृष्णकुण्ड (व्रज)—यहाँ छोंकर-वृक्षके नीचे महाप्रभुकी बैठक है। यहाँ कृष्णकुण्ड भगवान् श्रीकृष्णने क्रीडार्थ स्वकीय वेणुसे और राधाकुण्ड श्रीमती राधिकाजीने स्वकीय नखोंसे खोदकर बनाया था। इन केन्द्रीय कुण्डोंके आठ दिशाओंमें आठ सखियोंके आठ कुण्ड हैं। यहाँ महाप्रभुने तृण-गुल्म-लतारूप श्रीउद्धवके प्रीत्यर्थ भ्रमरगीत-सुबोधिनीका प्रवचन करते समय भागवतके '**भुजमगुरुसुगन्धं मूर्ध्न्यधास्यत् कदा नु**' (१०। ४७। २१)—इस चतुर्थ पादका प्रवचन ही तीन प्रहरतक किया था। इस कथाप्रसङ्गके समय समस्त वैष्णवोंको देहानुसंधान भी नहीं रहा था और वे लगातार वचनामृतका पान करते रहे थे।

(१०) मानसी गङ्गा (व्रज)—यहाँ आचार्यश्रीका श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुसे सम्मिलन हुआ। यहाँ आचार्यजीने मानसी गङ्गाके दिव्य दुग्धमय रूपका सबको दर्शन कराया था।

(११) परासोली (व्रज)—चन्द्रसरोवरके पास ही छोंकरके वृक्षके नीचे महाप्रभुने भागवत-पारायण किया और भगवदीयोंको प्रभुकी रासलीलाके दर्शन कराये थे। यहाँ एक वैष्णवकी गिरिराजके साक्षात् दर्शनकी प्रार्थनापर महाप्रभुने उसे बिना विश्राम किये तीन परिक्रमाएँ करनेकी आज्ञा की। वैष्णवने आज्ञाका पालन किया। मार्गमें उसे श्वेतभुजङ्ग, गोपबाल, सिंह और गौके दर्शन हुए। महाप्रभुने उसे बताया कि श्रीगिरिराज अपने स्थूलरूपके सिवा इन चारों रूपोंसे जिसपर उसकी कृपा होती है, उसे दर्शन देते हैं। आपकी कृपासे वैष्णवका मनोरथ पूर्ण हुआ।

(१२) आन्यौर (व्रज)—सदू पांडेके घरमें आपकी बैठक है। यहाँ जिस समय आपने भागवत-पारायण किया, उसी समय गिरिराजपर श्रीनाथजीका प्राकट्य हुआ। आपने छोटा-सा मन्दिर बनवाकर वहाँ उनकी प्रतिष्ठा की और सदू पांडेको सेवा-भार सौंपा।

(१३) गोविन्दकुण्ड (व्रज)—यहाँ तीन दिन निवास करके आचार्यने भागवत-पारायण किया और भगवत्कृपासे प्राप्त 'श्रीकृष्णप्रेमामृत' नामक ग्रन्थ श्रीचैतन्य महाप्रभुको अर्पित किया।

(१४) सुन्दर शिला (व्रजमें गिरिराजके मुखारविन्दके पास)—छोंकर वृक्षके नीचे बैठक है। यहाँ भागवत-पारायणके साथ-साथ आपने अन्नकूटके दिन सर्वप्रथम श्रीनाथजीका अन्नकूटोत्सव किया।

(१५) गिरिराज (व्रज)—यहाँ गिरिराजके ऊपर

श्रीनाथजीके मन्दिरके दक्षिण भागमें एक चबूतरा है, जहाँ श्रीनाथजीकी सेवा करके महाप्रभु विराजते थे। यहाँ उन्होंने दो भागवत-पारायण किये। यह बैठक सम्प्रति प्रकट नहीं है, केवल प्रसिद्धि है।

(१६) कामवन—सुरभिकुण्ड (श्रीकुण्ड) के ऊपर छोंकर वृक्षके नीचे आपने भागवत-पारायण किया था। एक ब्रह्मराक्षस रात्रिको जो कोई यहाँ रहता, उसे मार डालता था। वैष्णवोंकी प्रार्थनापर आपने उसको मुक्त किया यह पहले कामवनका राजा था, जिसने दानमें दी हुई भूमि ब्राह्मणोंसे छीन ली थी।

(१७) गह्वरवन (बरसाना)—यहाँ कुण्डके ऊपर आपकी बैठक है। यहाँ सघन वनमें आपके सेवकोंने एक अजगरको देखा, जिसे लाखों चींटे काट-काटकर तंग कर रहे थे। आपने मन्त्र-जल छिड़ककर उसका इस योनिसे उद्धार किया। सेवकोंके पूछनेपर आपने बताया कि 'यह वृन्दावनका एक महंत था, जो अपने शिष्योंसे धन तो खूब लेता था, पर उनको सदुपदेश नहीं देता था। वही इस जन्ममें अजगर हुआ है। उसके शिष्यगण चींटे होकर उसका बदला ले रहे हैं। अतः गुरुको चाहिये कि सामर्थ्यवान् होकर अपने शिष्योंका उद्धार करे।' प्रेमसरोवरपर भी बैठकका उल्लेख है; पर वह श्रीआचार्यकी है या उनके पुत्र श्रीगुसाईंजीकी, यह निर्णीत नहीं है।

(१८) संकेतवट (व्रज)—कृष्णकुण्डपर छोंकर वृक्षके नीचे बैठक है।

(१९) नंदगाम (व्रज)—पान-सरोवरपर बैठक है। यहाँ छः मास महाप्रभु विराजे और श्रीनन्दरायजीके स्थानपर भागवत-पारायण किया। यहाँ श्रीउद्धवजीने भी छः मास निवास किया था। आचार्यजीने यहाँ एक मुगलको सत्प्रेरणा—सदुपदेश दिया। करहला ग्राममें भी बैठक विद्यमान है, पर उसका कोई चरित्र नहीं मिलता।

(२०) कोकिला-वन (व्रज)—यहाँ कृष्णकुण्डपर एक मास निवास करके महाप्रभुने भागवत-पारायण किया।

चीरघाटपर भी महाप्रभुकी बैठक है, पर कोई चरित्र प्रसिद्ध नहीं है।

(२१) भाण्डीर-वन (व्रज)—यद्यपि यह बैठक प्रकट नहीं है, फिर भी इसका चरित्र प्रसिद्ध है। यहाँ सात दिन निवास करके महाप्रभुने भागवत-पारायण किया था।

(२२) मानसरोवर (व्रज)—यहाँ तीन दिवस निवास करके महाप्रभुने भागवत-पारायण किया था। यहाँसे अवशिष्ट स्थलोंकी यात्रा पूर्ण करके महाप्रभुने व्रजमण्डलकी परिक्रमा समाप्त की और मथुरा आकर गोकुलमें निवास किया। इस प्रकार व्रजमें आपकी २२ बैठकें प्रसिद्ध हैं।

(२३) सूकर-क्षेत्र (सोरमजी या सोरोंजी)—यहाँ गङ्गातटपर आपकी बैठक है। यहाँ कृष्णदास मेघनके गुरु और आचार्यजीके ज्येष्ठ भ्राता केशवपुरी (जो संन्यासी हो गये थे) आपके प्रभाव, विद्वत्ता और आचार्यत्वसे प्रभावित हुए।

(२४) चित्रकूट—कामतानाथ पर्वत (कामदगिरि) के समीप आपकी बैठक है। आचार्यजीने सोलह दिनतक यहाँ वाल्मीकीय रामायणका पारायण किया था। कामतानाथ पर्वतपर, जिन्हें श्रीगिरिराजका भ्राता कहा जाता है, प्रभु-प्रेरणासे जाकर आपने श्रीरामचन्द्रजीको नैवेद्य (केला-मिश्री) समर्पित किया और अनन्य वैष्णवोंको मर्यादापुरुषोत्तम और पूर्ण पुरुषोत्तम दोनोंकी अभिन्नताका स्वरूप समझाया।

(२५) अयोध्या—सरयू-तीरके गुसाईं-घाटपर आपकी बैठक है। यहाँ आपने वाल्मीकि-रामायणका पारायण किया था।

(२६) नैमिषारण्य—गोविन्दकुण्डपर छोंकर वृक्षके नीचे आपने भागवतका सप्ताह-पारायण किया। यहाँ एक दिन तीन प्रहरतक '**नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितम्**' (श्रीमद्भा० १।५।१२) श्लोककी व्याख्या करके विद्वान् वैष्णवोंको आपने अपनी विद्वत्तासे चमत्कृत किया।

(२७) काशी—सेठ पुरुषोत्तमदासके घरमें आपकी बैठक है। यहाँ आपने बड़े उत्साहसे श्रीनन्द-महोत्सव सम्पन्न किया। श्रीविश्वनाथजीके दर्शन करके आपने उनके मन्दिर-द्वारपर शुद्धाद्वैत मतका प्रतिपादन करनेवाला लेख लगाया, जो 'पत्रावलम्बन' नामसे प्रसिद्ध हुआ। यहाँ काशीके अनेक विद्वानोंसे आपका शास्त्रार्थ हुआ और कई विद्वान् आपके मतावलम्बी होकर शरणमें आये।

(२८) काशी—हनुमानघाटपर आपकी द्वितीय बैठक प्रसिद्ध है। यहाँ आपने संन्यास ग्रहण किया और 'संन्यास-निर्णय' ग्रन्थका प्रणयन किया। एक मासतक अन्न-जल त्यागकर आपने मौन-व्रतका पालन किया और सं० १५८७ आषाढ़ सुदी २, उपरान्त तृतीयाके दिन मध्याह्नमें आप गङ्गामें अन्तर्हित हो गये। कुछ ही क्षण बाद वहाँ जन-समूहने एक ज्योतिःपुञ्जके दर्शन किये, जो मध्यधारामेंसे निकलकर अन्तरिक्षमें ही लीन हो गया। आपकी यह अन्तिम बैठक है।

(२९) हरिहर-क्षेत्र (सोनपुर)—श्रीगङ्गा और गण्डकी नदीके संगमपर भगवानदासके घर आपकी बैठक है। ये भगवानदास वैष्णव आपका विरह नहीं सह सके, अतः यात्रामें जगन्नाथ-धामतक आपके साथ गये। अतः उनकी निष्ठा देखकर महाप्रभुने स्वकीय पादुकाएँ उनके सेवार्थ प्रदान कीं, जिससे भगवानदासको आपका प्रतिदिन साक्षात्कार होने लगा।

(३०) जनकपुर—मानिक-तालाबके ऊपर भगवानदास वैष्णवके बागमें आपकी बैठक है। यहाँ मर्यादा-पुरुषोत्तमकी बारात उतरनेका स्थल था, अतः आपने वहीं भागवतका सप्ताह-पारायण किया। आचार्यजीके वैदुष्य और आचार-प्रभावसे प्रभावित होकर भगवानदास सेठ आपके शिष्य बने और इन्हें अपने घरपर विराजमान किया। यहाँ आप एक वर्षतक किसी समय रहे थे।

(३१) गङ्गा-सागर-संगम—यहाँ कपिलाश्रममें कपिलकुण्डके ऊपर आपकी बैठक है। यहाँ छः मास-पर्यन्त निवास करके आपने भागवत-पारायण किया और अपने दर्शनसे अनेक तामसी जीवोंको कृतार्थ किया। यहाँ आपने भागवतके तृतीय स्कन्धकी सुबोधिनी टीका सम्पूर्ण की थी।

(३२) चम्पारण्य—मध्यप्रदेशके रामपुर जिलेमें राजिम नगरके पास आपकी बैठक है। यहाँ चम्पक वृक्षोंका भयानक वन है। आपका जन्म यहीं हुआ था। लक्ष्मणभट्टजी और उनकी पत्नी इल्लम्मागारु जब काशीसे स्वदेश (आन्ध्रप्रदेश) को लौटते हुए यहाँसे निकले, तब सं० १५३५ की वैशाख-शुक्ला ११ को मध्याह्नमें आपका यहाँ प्रादुर्भाव हुआ था। समय मासका गर्भ होने और राजनीतिक भयाक्रान्ति तथा प्रसव-पीडा आदिके कारण बालकको निश्चेष्ट देखकर उसपर विशेष ध्यान नहीं दिया गया और उसे तृण-गुल्म-लता आदिमें अन्तर्हित कर दिया गया। कुछ समय बाद आपके पिता लक्ष्मणभट्टको दैवी प्रतिबोध हुआ और उन्होंने जाकर देखा तो बालकके चारों ओर प्रज्वलित अग्नि उसकी रक्षा कर रही थी। लक्ष्मणभट्टजीके कुलमें १०० सोमयज्ञोंकी पूर्ति हुई थी, अतः उनके यहाँ भगवद्विभूतिका प्राकट्य अनिवार्य था।

(३३) चम्पारण्य—इस स्थलकी दूसरी बैठक वहाँ है, जहाँ प्रादुर्भावके अनन्तर आपके षष्ठी-पूजनका उत्सव हुआ था। यहाँ माधवानन्द ब्रह्मचारी और मुकुन्ददास संन्यासीने आपको सामुद्रिकशास्त्रके आधारपर महापुरुष स्वीकार किया और बड़ी भक्ति-श्रद्धा प्रदर्शित की थी।

(३४) जगन्नाथपुरी—मन्दिरमें दक्षिणी दरवाजेके पास आपकी बैठक है, जो अब वहाँसे हटाकर अलग स्थापित कर दी गयी है। यहाँ विद्वत्समाजमें आचार्यकी खूब प्रख्याति हुई। यहाँ आप तीन बार पधारे और अनेक अलौकिक चरित्र दिखाये।

(३५) पंढरपुर—यहाँ भीमरथी नदीके तटपर आपकी बैठक है। आपने श्रीपाण्डुरङ्ग (विट्ठलनाथजी) की सेवा करके वहाँके वैष्णवोंको कृतार्थ किया।

(३६) नासिक—तपोवन, पञ्चवटीमें महाप्रभुकी बैठक है। यहाँ कुछ विद्वानोंने आपसे शास्त्रार्थ किया और परास्त होकर भक्तिमार्ग—शुद्धाद्वैत-सम्प्रदायको स्वीकार किया था।

(३७) पनानृसिंह (दक्षिण)—यहाँ छोंकरके वृक्षतले आपकी बैठक है। श्रीनृसिंहजीकी आपने सेवा की थी।

(३८) तिरुपति (श्रीलक्ष्मणबालाजी)—प्रथम यात्राके समय आपके पिताजी श्रीलक्ष्मणभट्टजीको भगवत्स्वरूप प्राप्त हो जानेपर यहीं आपने यात्रा प्रारम्भ करनेका विचार किया और घरकी व्यवस्था करके श्रीभागवत-पारायण श्रीलक्ष्मणबालाजीको सुनाया। श्रीलक्ष्मणबालाजीकी सेवा करके आपने अनेकों विद्वानोंको शुद्धाद्वैतमतका रहस्य समझाया। यहाँ महाप्रभु दो बार भी पधारे और पारायण किये।

(३९) श्रीरङ्गजी—कावेरी नदीके तटपर छोंकर वृक्षके नीचे आपके भागवत-पारायणका स्थल है। यहाँ श्रीरङ्गजीकी सेवा-पूजा करके आपने अनेक विद्वानोंसे शास्त्रार्थ किया और भक्तिमार्गमें अनेक जनोंको दीक्षित किया।

(४०) विष्णुकाञ्ची—यहाँ सुरभी नदीपर छोंकर वृक्षके नीचे आपकी बैठक है। यहाँ श्रीवरदराजस्वामीके मन्दिरमें सीढ़ियोंपर जयदेवकृत अष्टपदी उत्कीर्ण थी, अतः उनपर चरण रखकर आपको मन्दरमें जाना अभीष्ट नहीं था। पर प्रसिद्ध है कि श्रीवरदराज स्वामीने स्वयं अलौकिक रीतिसे आपको मन्दिरमें पधराया था।

(४१) सेतुबन्ध (रामेश्वर)—यहाँ भी छोंकर-वृक्षके नीचे महाप्रभुकी बैठक है। यहाँ श्रीरामेश्वर महादेवको श्रीरामचन्द्रजीका स्वरूप समझाकर आपने उन्हें भागवतपारायण सुनाया था।

636 Tirthank_Section_24_1_Back

(४२) मलयाचल—यहाँ 'हेमगोपालजी' के मन्दिरमें आपने भागवतका सप्ताह-पारायण करके अनेक तामसी जीवोंका उद्धार किया। चन्दनके वनमें अनेक भयानक वन्य-पशुओंका निवास था, तो भी महाप्रभुने उक्त स्थलमें जाकर अपनी परिक्रमाकी पूर्ति की।

(४३) लोहगढ—मलाबार प्रदेशमें इस स्थानको आजकल कोङ्कण-गोवा कहते हैं। यहाँ एक सुन्दर स्थानपर विराजमान हो आपने भागवत-पारायण किया और अनेक जीवोंका उद्धार किया।

(४४) ताम्रपर्णी नदी—तटपर छोंकरके वृक्षके नीचे नगरसे तीन कोस दूर आपने भागवतका सप्ताह-पारायण किया था। यहाँके राजाने अपनी अकाल-मृत्युके निवारणार्थ स्वर्णपुरुषका तुलादान करना चाहा था, पर कोई भी ब्राह्मण उस प्रतिग्रहको लेनेके लिये तैयार नहीं होता था। श्रीमहाप्रभुको आया हुआ सुनकर राजाने वहाँ आकर प्रणाम किया और तुलादान लेनेकी प्रार्थना की। महाप्रभुने राजाकी बात सुनकर और ब्राह्मणत्वकी लाज रखनेके लिये राजाको सान्त्वना दी और स्वयं जाकर उस प्रतिग्रहको स्वीकार किया। ऐसा प्रसिद्ध है कि उस स्वर्णके तुला पुरुषने आचार्यके सम्मुख एक अँगुली उठायी थी, जिसका उत्तर उन्होंने तीन अँगुली दिखाकर दिया था। आपकी शक्तिसे वह तुलापुरुष हतप्रभ हो गया। अन्तमें आपने प्रतिग्रह लेकर उस स्वर्णपुरुषको खण्ड-खण्ड करके ब्राह्मणोंमें वितरण करवा दिया। राजाके प्रश्न करनेपर आपने बताया—'एक अँगुली उठाकर तुलापुरुषने यह जानना चाहा था कि मैं एक बार भी संध्योपासन करता हूँ या नहीं। तीन अँगुलियाँ दिखाकर मैंने उसे यह बताया कि मैं त्रिकाल-संध्योपासन करता हूँ। जो ब्राह्मण एक काल भी यथाविधि संध्योपासन नहीं करता, उसमें प्रतिग्रहकी सामर्थ्य नहीं रहती—दानका फल उसे भोगना पड़ता है। अतः राजन्! इस प्रकारके क्रूरदान देकर तुम्हें ब्राह्मणोंको कष्ट नहीं देना चाहिये। जो ब्राह्मण इस दानको लेता, निश्चय ही तत्काल उसकी मृत्यु हो जाती। नियमानुसार ब्राह्मणका कर्तव्य करते रहनेपर ही ब्राह्मणत्वकी शक्ति रहती है।' इत्यादि। आपसे प्रभावित होकर अन्तमें राजाने महाप्रभुका शिष्यत्व स्वीकार किया और बहुविध सम्मान दिया। अनेक विद्वान् और प्रजाजन उस समय भक्तिमार्गमें प्रविष्ट हुए और आपका जय-जयकार हुआ।

(४५) कृष्णा-नदी—तटपर पीपलवृक्षके नीचे आपका सप्ताहपारायण-स्थल है।

(४६) पम्पा सरोवर—यहाँ वटवृक्षके नीचे आपके भागवत-सप्ताहपारायणका स्थल है। इस वनमें भी अनेक भयानक पशु-पक्षियोंका निवास था। आपने वहाँके तामसी जीवोंका उद्धार करके अलौकिक माहात्म्य दिखाया।

(४७) पद्मनाभ—शेषशायी पद्मनाभ (पौढ़ानाथ) में छोंकर वृक्षके नीचे आपने भागवतका पारायण किया था।

(४८) जनार्दन (वरकला)—यहाँ जनार्दनकुण्डपर आपकी कथाका स्थल है। यहाँ श्रीजनार्दन प्रभुको आपने सेवा-शृङ्गार करके भोग समर्पित किया और अनेक विद्वानोंसे शास्त्रार्थ करके भक्ति मार्गकी स्थापना की।

(४९) विद्यानगर (विजयनगर)—विद्याकुण्डके ऊपर आपकी बैठक है। यहाँ समय-समयपर राजा कृष्णदेवकी सभामें विद्वानोंका शास्त्रार्थ होता रहता है। आप राजसभामें पधारे, जहाँ आपके अलौकिक तेजसे सभी आश्चर्यचकित हो गये। शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ और कई दिनोंतक चला। अन्तमें आपने व्यासतीर्थ स्वामीकी मध्यस्थतामें वैदिक भक्तिमार्गकी स्थापना की। समस्त भारतके विद्वान् और आचार्योंने आपके सिद्धान्तको मान्यता दी। परिणामतः राजा कृष्णदेवने आपका सुवर्ण-धर्मानुवाकसे कनकाभिषेक किया और महान् सम्भारसे पूजन करके आपको 'जगद्गुरु' पदपर स्वीकार किया। महाप्रभुने दान, स्नान भेंटमें प्राप्त अनन्त सुवर्णराशि और धन-धान्यादिको ब्राह्मणमण्डलीमें वितरण कर दिया। राजाके पुनः सहस्र स्वर्णमुद्रा समर्पण करनेपर उनमेंसे सात मुहर लेकर शेषसे जगन्नाथजीकी मेखला बनवाकर भेंट करनेकी व्यवस्था की।

यहाँ विष्णुस्वामि-सम्प्रदायके आचार्य बिल्वमङ्गलजीने, जो अभीतक परोक्षरूपमें विचरण करते हुए प्रतीक्षा कर रहे थे, एक दिन आकर आपको विष्णुस्वामि-सम्प्रदायके भक्तिमार्गका प्रधान पद समर्पित किया।

इस प्रकार यह विद्यानगरकी बैठक सर्वोपरि प्रसिद्धिको प्राप्त है। यहाँ आचार्यका कनकाभिषेक संवत् १५५६ में हुआ, ऐसा विदित होता है।

(५०) त्रिलोकभानु—इस क्षेत्रमें सुन्दर स्थलपर छोंकर वृक्षके नीचे आपको बैठक है।

(५१) तोताद्रि—पर्वतके समीप वनस्थलीमें वटवृक्षके नीचे आपकी बैठक है। यहाँ समीपमें कोई जलका

स्थान अज्ञात था। कृष्णदास मेघनको कदम्बवृक्षके नीचे आपने उसका भूगर्भ-विद्याद्वारा संकेत दिया, जिससे कुण्डका पता लगा। यह वल्लभकुण्ड नामसे प्रख्यात हुआ। यहाँ आपके दिग्विजय और विद्यानगरके कनकाभिषेकसे प्रभावित होकर अनेक विद्वान् आकर आपके शिष्य हुए। भागवत-पारायणद्वारा आपने भक्तिमार्गका प्रचार किया।

(५२) दर्भशयनम्—यहाँ भयानक वनके भीतर आपने एक सुन्दर स्थान देखकर भागवत-पारायण किया और अनेक तामसी जीवोंको वैष्णवधर्ममें दीक्षित किया।

(५३) सूरत—ताप्ती नदीके तटपर अश्विनीकुमार-आश्रममें आपने भागवत-पारायण किया और अनेक जनोंको धर्मकी दीक्षा दी। यहाँसे आप काँकरवाड़ा तथा पाण्डुरङ्ग (विट्ठलनाथ)-क्षेत्र होकर पञ्चवटी पधारे थे।

(५४) भरुच (भृगुकच्छ)—नर्मदा-तटपर भृगुक्षेत्रमें छोंकर वृक्षके नीचे आपके भागवत-पारायणका स्थल है। यहाँ आपने अनेक विद्वानोंपर शास्त्रार्थद्वारा जय प्राप्त की और भक्तिमार्गकी स्थापना करके उन्हें वैष्णवधर्ममें दीक्षित किया।

(५५) मोरवी—मयूरध्वज राजाका स्थान होनेके कारण आप यहाँ पधारे और एक कुण्डके ऊपर छोंकर वृक्षके नीचे आपने भागवत-पारायण किया।

(५६) नवानगर (जामनगर)—यहाँ नागमती नदीके तटपर आपने भागवतका सप्ताह-पारायण सम्पन्न किया। यहाँके राजा परम्परासे वल्लभकुलके शिष्य होते आये हैं।

(५७) खंभालिया—यहाँ एकान्त स्थलमें कुण्डके ऊपर छोंकर वृक्षके नीचे आपकी पारायण-स्थली है। इस एकान्त स्थानमें इमलीके वृक्षपर प्रेत-निवासका भय था, जिससे ब्राह्मण रात्रिके समय यहाँ आते भय खाते थे। आपने कृष्णदासद्वारा भगवच्चरणोदकसे उसका उद्धार कराया और स्थलको निर्भय बना दिया।

(५८) पिण्डतारक—यहाँ समस्त तीर्थोंका निवास माना जाता है। कृष्णावतारके समय महर्षि दुर्वासाने यहाँ तप किया था, इसीलिये आपने यहाँ भागवतका सप्ताह-पारायण किया।

(५९) मूल-गोमती—यहाँ आपने कृष्णदास मेघनके प्रश्नपर उन्हें मूल-गोमतीका पौराणिक उपाख्यान सुनाया और छोंकर वृक्षके नीचे भागवत-पारायण किया। यहीं विष्णुस्वामि-सम्प्रदायके एक अतिशय वृद्ध संन्यासीने आकर आपसे दीक्षा ली।

(६०) द्वारका—यहाँ गोमती-तटपर छोंकर वृक्षके नीचे भागवत-पारायण करके महाप्रभुने पूरा चातुर्मास्य व्यतीत किया था और श्रीद्वारकानाथकी सेवा करके गोविन्ददास ब्रह्मचारीको भागवतका प्रवचन सुनाया तथा अनेक विद्वान् ब्राह्मण एवं साधु-संन्यासियोंको कृतार्थ किया। ऐसा प्रसिद्ध है कि कथाके समय अतिशय वृष्टि हुई; पर आपके अलौकिक प्रभावसे कथास्थलपर एक बूँद भी पानी नहीं गिरा और कथा निर्विघ्न होती रही।

यहाँ आपने श्रीद्वारकानाथजीका अन्नकूट और प्रबोधिनीका उत्सव बड़े चावसे सम्पन्न कराया था।

(६१) गोपी-तलैया (द्वारकाधाम)—यहाँ छोंकर वृक्षके नीचे भागवत-पारायणका स्थल है। यहाँ कृष्णदास मेघनके प्रश्न करनेपर महाप्रभुने इस स्थलका माहात्म्य प्रदर्शित करते हुए श्रीगोपीजनोंकी अहैतुकी भक्तिकी विशद व्याख्या की थी।

(६२) शङ्खोद्धार—यहाँ शङ्खतलैयाके तटपर छोंकरके नीचे आपके विराजनेका स्थान है, जहाँ आपने भागवत-सप्ताहके अनन्तर वेणुगोपालकी सुबोधिनीपर प्रवचन किया था। इसे रमणक-द्वीप भी कहा जाता है।

(६३) नारायण-सरोवर—मार्कण्डेय-ऋषिके आश्रमके समीप छोंकर वृक्षके नीचे पारायणका स्थल है। आदिनारायणका प्रादुर्भाव यहीं हुआ था, इसीलिये यहाँ आपने भागवत-पारायण किया।

इस स्थलसे सिंध-पंजाब पधारनेके लिये महाप्रभुसे प्रार्थना की गयी; पर आप सरस्वती नदी (जिसे ब्रह्मनदी भी कहते हैं) का उल्लङ्घन नहीं करते थे, अतः नहीं पधारे। तदनन्तर आपके वंशजोंने वहाँकी जनताको सनाथ किया।

(६४) जूनागढ़—गिरनार पर्वतपर स्थित रेवतीकुण्डपर छोंकरके वृक्षाश्रयमें आपकी बैठक है। यहाँ दामोदरकुण्डमें स्नान करते समय महाप्रभुको श्रीदामोदरजीका स्वरूप प्राप्त हुआ। यह स्वरूप आज भी जूनागढ़-मन्दिरमें विराजमान है।

ऐसी प्रसिद्धि है कि यहाँ एक वृद्ध संन्यासीके रूपमें अश्वत्थामाके साथ आपका समागम हुआ था।

(६५) प्रभास—यहाँ देहोत्सर्ग-स्थलपर वृक्षके नीचे एक गुफामें आपके विराजनेका स्थान है। यहाँ सोमनाथ महादेवजीके एक प्रसिद्ध पुजारीने वैष्णवधर्मकी दीक्षा ली। यहाँ आपने प्रभास-क्षेत्रकी पञ्चतीर्थी-परिक्रमा की। यहाँ अनेकों विभिन्नमतावलम्बियोंने आपसे शरण-मन्त्र ग्रहण किया।

(६६) माधवपुर—यहाँ कदम्बकुण्डके ऊपर आपकी

636 Tirthank_Section_24_2_Back

बैठक है। कहा जाता है, श्रीरुक्मिणीके साथ यहाँ श्रीकृष्ण प्रभुने विवाहोत्सव सम्पन्न किया था। यहाँ विराजमान श्रीमाधवरायजीकी सेवा-पूजाका उस समय कोई प्रबन्ध नहीं था न कोई क्रम ही। आपने एक छोटा-सा मन्दिर बनवाकर पुजारीको सेवा-पूजाकी विधिका उपदेश दिया और इस स्थलको प्रसिद्ध किया।

(६७) गुप्तप्रयाग—मूल-द्वारका होते हुए आप गुप्त-प्रयाग पधारे। प्रयागकुण्डके ऊपर छोंकर वृक्षके नीचे आपके भागवत-पारायणका स्थल है। वैष्णवोंको आपने उपदेश देकर यह बतलाया कि सारस्वत कल्पमें प्रयागराज यहीं था।

(६८) तगड़ी (धंधूका)—नगरके समीप तालाबके किनारे एक ब्राह्मणके घरके बाहर सुन्दर चबूतरेपर आपने विश्राम किया।

इस ब्राह्मणके घर नित्य गायोंके दूधसे माखन तैयार होता था, पर उसके दोनों बालक माताकी असावधानीसे माखन चुराकर खा जाया करते थे। माता दोनोंको दण्ड देती थी। एक दिन आपके सामने यही प्रश्न आया और आपने सर्वत्र बालकृष्ण-भावकी स्फूर्तिसे दम्पतिको अपने बालकोंके साथ कृष्ण-बलरामकी भावनासे बर्तनेका उपदेश देकर सच्चे गृहस्थ-धर्मका पालन करना सिखाया। यहाँ अनेक व्यक्तियोंको शरण लेकर आपने वैष्णव-धर्मकी स्थापना की।

(६९) नरोड़ा (अहमदाबादके समीप)—यहाँ गोपाल दासके घरमें आपकी बैठक है। गोपालदास अच्छे विद्वान्, कवि और भगवद्भक्त थे। इन्हें महाप्रभुने नामोपदेश देनेका अधिकार दिया था। इनके घर आपने भागवत-पारायण पूर्ण किया।

(७०) गोधरा—यहाँ राणा व्यासके घरमें आपके भागवत-पारायणका स्थल है। राणा व्यास दिग्विजयी षट्शास्त्रवेत्ता पण्डित थे। सर्वत्र इन्होंने शास्त्रार्थमें विजय पायी थी, पर काशीमें गर्व होनेके कारण ये पराजित हो गये थे। आत्मग्लानिसे ये आत्मघात करने गङ्गाजीमें जा रहे थे। इसी समय महाप्रभु काशीमें संध्या-वन्दनार्थ गङ्गा-तटपर पधार रहे थे। प्रसङ्गवश कृष्णदास मेघनने आपसे आत्मघातका प्रायश्चित्त पूछा। परोक्षरूपमें महाप्रभुका उपदेश सुनकर ये बड़े प्रभावित हुए और उनके दीक्षित शिष्य बन गये। महाप्रभुने इन्हें चतु:श्लोकी ग्रन्थका उपदेश दिया। महाप्रभुकी आज्ञासे इन्होंने काशीमें पुनः शास्त्रार्थ करके विजय पायी। ये अन्तमें गोधरा जाकर रहे और मानव-जीवनका रहस्य एवं महत्त्व समझकर भगवत्सेवा करने लगे। इनके सेव्य श्रीबालकृष्णजी अद्यापि विराजमान हैं। यहाँ महाप्रभुने वेणुगीतकी सुबोधिनीपर प्रवचन किया था। वे जब इस ओर आये, राणा व्यासके घरमें ही विराजमान हुए और भागवत-पारायण किया।

(७१) खेरालु—यहाँ जगन्नाथ जोशीके घरमें आपके विराजनेका स्थल है। महाप्रभु जगन्नाथ जोशी और उसकी माताकी भक्तिसे बहुत प्रभावित हुए, अतः उसके घरमें ही आपने निवास किया। यहाँ युगलगीतके एक श्लोकको आपने कई प्रहरतक व्याख्या करके विद्वान् भक्तोंको चमत्कृत कर दिया था।

(७२) सिद्धपुर—बिन्दु-सरोवरपर कर्दम ऋषिके आश्रमके समीप, जहाँ देवहूतिको भगवान् कपिलने उपदेश दिया था, आपकी बैठक है। यहाँ भागवत-सप्ताहके अनन्तर आपने अनेक प्रसिद्ध विद्वानोंके साथ शास्त्रार्थ करके भक्तिमार्गकी प्रख्याति की।

(७३) अवन्तिकापुरी (उज्जैन)—गोमतीकुण्डपर पीपल वृक्षके नीचे महाप्रभुकी बैठक है। इस स्थलपर कोई वृक्ष नहीं था, अत: छायार्थ आपने अश्वत्थकी शाखा रोपित की थी, जो स्वल्प समयमें ही विशाल वृक्ष बन गया था।

(७४) पुष्कर—यहाँ वल्लभघाटपर छोंकर वृक्षके नीचे आपके विराजनेका स्थल है। यहाँ आपने प्रवचनमें पुष्करराजका माहात्म्य प्रदर्शितकर अनेक तामस जीवोंको शरणमें लिया था।

(७५) कुरुक्षेत्र—कुण्डके ऊपर यहाँ बैठक है। यहाँ भी आपने अनेक जीवोंको भक्तिमार्गमें लगाया था।

(७६) हरिद्वार—कनखलमें आपकी बैठक है। यहाँ भी आपने भागवत-पारायण-प्रवचनद्वारा अनेक जीवोंको भक्ति-मार्गमें प्रवृत्त किया।

(७७) बदरिकाश्रम—वामनद्वादशीके दिन आपने यहाँ भगवत्सेवा करके उत्सव सम्पन्न किया था। यहाँ भी भागवत-पारायण एवं प्रवचनद्वारा अनेक जीवोंको आपने शरणमें लिया।

(७८) केदारनाथ—यहाँ केदारकुण्डपर आपकी कथाका स्थल है। कितने ही तपस्वी योगेश्वरोंने यहाँ आपका भागवत-पारायण-प्रवचन सुना। अनेक जीवोंको कृतार्थता प्राप्त हुई।

(७९) व्यासाश्रम—यहाँ आश्रममें आपके विराजनेका

स्थल है। यहाँ आनेपर आप पर्वत-गुहामें व्यासजीके दर्शनार्थ गये और उनका साक्षात्कार करके उन्हें भागवत-भ्रमरगीतकी सुबोधिनीका कुछ अंश सुनाया। पुरोहितके वृत्तिपत्रमें इसका उल्लेख है।

(८०) **हिमाचल पर्वत**—यहाँ पर्वतपर आपकी बैठक है।

(८१) **व्यासगङ्गा**—तटपर छोंकर वृक्षके नीचे आपका पारायण-स्थल है। यहाँ वेदव्यासजीका जन्मस्थान होनेसे आपने भागवतका सप्ताह-पारायण किया। अनेक पर्वतवासी जन यहाँ आपके दर्शनोंसे कृतार्थ हुए और भक्तिमार्गमें अङ्गीकृत किये गये।

(८२) **भद्राचल**—मधुसूदन-भगवान्के मन्दिरके निकट आपका प्रवचन-स्थल है। यहाँसे आप व्रजमें होकर अडेल (प्रयाग) पधारे और अपनी परिक्रमाएँ पूर्ण करके स्थायी रूपसे निवास करने लगे।

(८३) **अडेल** (प्रयाग—गङ्गा-यमुना-संगमके सम्मुख)—यहाँ अनेक विद्वानोंके साथ आपका शास्त्रार्थ हुआ। आपने सबको संतुष्टकर भक्तिमार्गमें प्रवृत्त किया। ऐसी प्रसिद्धि है कि यहाँ गुरुस्वरूपमें माताको मन्त्र-दीक्षा देनेमें असमञ्जसका अनुभव करते थे, अतः श्रीनवनीत प्रभुने स्वयं उन्हें दीक्षा प्रदान की। तबसे आपकी माता इल्लम्मागारु भी पुष्टिमार्गानुसार भगवत्सेवा करने लगीं। यहाँ आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीगोपीनाथजीका जन्म हुआ।

(८४) **चरणाट या चुनार (चरणाद्रि)**—यहाँ आपने भागवत-पारायण किया। एक दिन एक ब्राह्मणने आपको श्रीविट्ठलनाथ-भगवत्स्वरूप, जो उसे श्रीगङ्गाजीमें प्राप्त हुआ था, समर्पित किया। यह ब्राह्मण लगभग बारह वर्षसे नित्य विष्णुसहस्रनामका पाठ गङ्गातीरपर करता था। महाप्रभुने वह भगवत्स्वरूप प्राप्तकर सेवामें विराजमान किया। उसी दिन (सं० १५७२, पौष वदी ९) मध्याह्नमें आपके द्वितीय-पुत्र श्रीविट्ठलनाथजीका जन्म हुआ, जिससे उन्हें बड़े आनन्द और अलौकिकताका अनुभव हुआ। ये श्रीविट्ठलनाथजी आचार्य और गोपीनाथजीके अनन्तर सम्प्रदायके आचार्य-पदपर विराजे और सभी प्रकारसे इन्होंने सम्प्रदायको उत्कर्षशाली बनाया। श्रीविट्ठलनाथजीने ही अपने वैदिक आचार-विचार, राजनीति एवं कला-कौशलसे पुष्टि-सम्प्रदायकी विजय-पताका फहरायी और उसे सुदृढ़रूपसे प्रतिष्ठित किया। आपने ही 'अष्टछाप' की स्थापना की थी।

इस प्रकार जगद्गुरु श्रीवल्लभाचार्यकी भारत-परिक्रमाके स्मारकरूपमें ८४ बैठकें प्रसिद्ध हैं, जो उस समयसे आपकी दिग्विजय, भक्ति-प्रचार और यात्राकी स्मृतियाँ आज भी जाग्रत् करती हैं।

श्रीमध्वगौड-सम्प्रदायके तीर्थ

श्रीगौडीय वैष्णवोंके यों तो प्रायः प्रमुख नगरोंमें सर्वत्र कोई-न-कोई मठ हैं ही, तथापि पुरी, नवद्वीप तथा वन्दावन इनके प्रधान क्षेत्र हैं। यहाँ मुख्यतया उन्हींका विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

पुरी-धाम

यहाँ कई गौडीय मठ हैं, उनमें १० मुख्य हैं। उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. **श्रीजगन्नाथवल्लभ-मठ**—गुंडिचाबाड़ी तथा श्रीमन्दिरके मध्यमें यह मठ पड़ता है। इसके पूर्वमें वरदाण्ड, पश्चिममें मार्कण्डेश्वर, उत्तरमें चूडङ्गसाहि तथा दक्षिणमें नरेन्द्रसरोवर है। यह मठ बहुत प्राचीन है। यह कब बना तथा किसने इसका निर्माण किया, इसका कोई वृत्तान्त उपलब्ध नहीं होता। चैतन्य-चरितामृतमें इस मठके सम्बन्धमें लिखा है—

जगन्नाथवल्लभ नाम उद्यान प्रधान।
प्रवेश करिला प्रभु लइया भक्तगण॥

'पुरीमें जगन्नाथवल्लभ नामका प्रधान उद्यान है। उसमें प्रभुने भक्तगणोंके साथ प्रवेश किया।'

२. **श्रीपुरी गोस्वामीका मठ**—यह भी बहुत पुराना है। श्रीगौराङ्गदेवने यहाँ कथा-प्रवचन किया था। यह पुरीके पश्चिम भागमें है।

३. **श्रीकोठभोग-मठ**—श्रीजगन्नाथ-मन्दिरके समीप दोलमण्डपके सामने श्रीकोठभोग-मठ है। श्रीअद्वैताचार्य प्रभुने इस मठकी स्थापना की थी। इस मन्दिरमें षड्भुज गौराङ्गमूर्ति तथा श्रीराधागोविन्द (श्रीवृन्दावनचन्द्र) की मूर्ति विराजित है।

४. **श्रीतोटा-गोपीनाथ-मठ**—हरिदासजीकी समाधिके आगे लगभग एक मीलपर श्रीजगन्नाथदेवके मन्दिरसे दक्षिण-पश्चिमके कोणपर समुद्रके चटकगिरि नामक वालुकामय पथमें 'यमेश्वर तोटा' नामका स्थान है।

उत्कल भाषामें 'तोटा' शब्दका अर्थ उद्यान होता है। भगवान्‌के द्वारपाल या देवयान-स्वरूप पञ्च प्रतिमाओंमेंसे यमेश्वरदेव भी एक हैं। महाप्रभुने यहाँ श्रीगदाधर पण्डितको रखा था। यहीं रेतका वह टीला है, जिसे चटकगिरि कहते हैं और जिसमें महाप्रभुको गिरिराज गोवर्धनके और निकटवर्ती समुद्रमें कालिन्दीके दर्शन हुए थे। श्रीगौराङ्ग महाप्रभुको इस चटकगिरिकी रेतमें ही श्रीगोपीनाथजीकी मूर्ति मिली थी। श्रीरसिकानन्दजी गोस्वामी इस विग्रहकी अर्चना करते थे। कहा जाता है, यह मूर्ति पहले खड़ी थी। प्रतिमा पर्याप्त ऊँची होनेसे भगवान्‌के मस्तकपर पाग नहीं बाँधी जा पाती थी। इससे जब भावुक आराधकको खेद हुआ, तब श्रीगोपीनाथजी बैठ गये। श्रीचैतन्यमहाप्रभु इसी मूर्तिमें लीन हुए, यह मान्यता भी बहुत-से भक्तोंकी है। मूर्तिमें एक स्वर्णिम रेखा है, जिसे महाप्रभुके लीन होनेका चिह्न कहा जाता है।

५. **श्रीनारायणछाता-मठ**—श्रीजगन्नाथदेवके सिंहद्वारसे होकर उत्तर-पूर्व दिशामें जो विस्तृत सड़क गयी है, उसी मार्गमें प्रायः एक फर्लांगकी दूरीपर यह मठ है। यह मठ भी पर्याप्त पुराना है। इसमें स्थित श्रीविग्रह श्रीशुभलक्ष्मीनारायणदेवके नामसे विख्यात है।

६. **श्रीहरिदासठाकुर-समाधि-मठ**—यह उन्हीं प्रसिद्ध नामप्रेमी गौरभक्त यवन हरिदासका समाधि-स्थल है, जो महाप्रभुके सम्पर्कमें आनेके बादसे प्रतिदिन नियमपूर्वक तीन लाख नाम जोर-जोरसे बोलकर जपते थे और जिन्होंने मुसल्मान काजीद्वारा कोड़ोंसे पिटवाये जानेपर भी नाम-जप नहीं छोड़ा, वरन् प्रत्येक कशाघातपर और जोरसे नामोच्चारण तबतक करते रहे, जबतक उनकी चेतना लुप्त नहीं हो गयी। स्वयं श्रीचैतन्यमहाप्रभुने श्रीहस्तसे श्रीनामाचार्य हरिदासठाकुरको समाधि प्रदान की थी तथा इस समाधि-पीठका निर्माण किया था। नीलाचल (जगन्नाथपुरी) में नील-सागरके तटपर आज भी यह पीठ वर्तमान है। कहा जाता है, आजकी स्वर्गद्वार नामक भूमि पहले श्मशान-भूमि थी। इसके प्रमाणरूपमें श्मशान-महावीरकी प्रतिमा यहाँ आज भी प्रत्यक्ष है। समाधि-मन्दिरसे संलग्न पश्चिमभागमें श्रीगौर, नित्यानन्द एवं श्रीअद्वैत प्रभुकी तीन ध्यानमूर्तियाँ अवस्थित हैं। यहाँके लोगोंका कहना है कि ये तीनों मूर्तियाँ श्रीगौरप्रभुके तिरोभाव—लीलासंवरणके कुछ ही समय बाद यहाँ प्रकट हुई थीं। इस मन्दिरके मध्य दरवाजेके दो बहिःस्तम्भोंमें श्रीजय-विजय अथवा जगाई-मधाईकी प्रतिमाएँ हैं। (गौडीय वैष्णवोंकी मान्यता है कि श्रीगौर-लीलाकालमें जय-विजय ही जगाई-मधाई बनकर उपस्थित हुए थे। इस मठको भजन-कुटी भी कहते हैं, क्योंकि श्रीमहाप्रभु यहाँ प्रतिदिन मध्याह्नमें समुद्रस्नान करके ठाकुर हरिदासके समाधि-स्थानमें बैठकर श्रीनाम-भजन करके ठाकुर हरिदासको महाप्रसादान्न प्रदान करते थे।

७. **श्रीललिता-विशाखा-मठ**—मार्कण्डेय-सरोवरसे थोड़ी ही दूरपर ये दोनों मठ स्थापित हैं।

श्रीललिता-मठसे संलग्न ही दक्षिणकी ओर श्रीविशाखा-मठ है। श्रीविशाखा-मठमें श्रीनरहरि सरकार ठाकुरद्वारा सेवित भक्त-मनोनयनाभिराम दारुमयी श्रीगौर-गदाधरकी युगल-मूर्ति विराजित है।

८. **श्रीराधाकान्त-मठ**—इसे गम्भीरामठ भी कहते हैं। महाप्रभु श्रीगौरकृष्णके अन्तिम बारह वर्ष यहीं व्यतीत हुए थे। ज्यों-ज्यों उनकी एकान्तनिष्ठा तथा प्रेमोन्माद बढ़ता गया, त्यों-त्यों वे इसी मन्दिरमें अधिक रहने लगे थे। अन्तरङ्ग भक्तोंके साथ अधिक ऐकान्तिक रागमय जीवन बितानेसे ही इस स्थानको लोग 'गम्भीरा' कहकर पुकारने लगे। प्रभुकी यहाँकी लीलाएँ गौडीय ग्रन्थोंमें गम्भीरा-लीलाके नामसे ही समादृश हुई हैं।

श्रीजगन्नाथ-मन्दिरके दक्षिण-पूर्वमें थोड़ी ही दूरपर यह अवस्थित है। अब तो इसके पचाससे अधिक शाखा-मठ भी विभिन्न स्थानोंमें बन चुके हैं। यहाँ महाप्रभुकी कन्था, मिट्टीका करवा तथा पादुकाएँ सुरक्षित हैं।

९. **श्रीसिद्धबकुल-मठ**—पहले इसका नाम मुद्रा-मठ था। यहाँसे भगवान्‌का नीलचक्र स्पष्ट दीखता है। इस मठके सम्बन्धमें यह जनश्रुति है कि जगन्नाथजीके पुजारियोंने श्रीगौर महाप्रभुको एक दिन श्रीजगन्नाथजीकी दतुवन प्रसाद रूपमें दी। महाप्रभु प्रेमाविष्ट हो गये और उन्होंने उसे हरिदास ठाकुरके भजनस्थानमें लाकर रोप दिया। क्रमशः वह बढ़ते-बढ़ते छायादार वृक्षके रूपमें परिणत हो गयी। कहते हैं, उसी वृक्षके नीचे बैठकर हरिदास ठाकुर बहुधा भजन करते थे। श्रीजगन्नाथजीके समय पुरीके राजकर्मचारी एक दिन रथ-चक्रके निर्माणके लिये इस बकुल वृक्षको काटने लगे। जगन्नाथदासजीने इसपर आपत्ति की, पर कर्मचारियोंने एक न सुनी। फलतः उसी रातमें वह वृक्ष सूख गया। जब यह बात राजाके कानोंमें पड़ी, तब वह बड़ा उदास हुआ और

तभीसे लोग इसे 'सिद्धबकुल' कहने लगे।

कहते हैं श्रीमहाप्रभुने इसे चैत्रकी संक्रान्तिके दिन रोपा था। आज भी उस अवसरपर इस सिद्धबकुल-मठमें दन्तकाष्ठ-रोपण-महोत्सव मनाया जाता है।

१०. श्रीगङ्गामाता-मठ—भगवान् जगन्नाथके मन्दिरसे दक्षिण श्वेतगङ्गा नामकी एक बावली है। वहीं यह मठ है। इसमें पाँच युगलमूर्तियाँ हैं।

गङ्गामाता—श्रीशचीदेवी, चैतन्यमहाप्रभुकी माताको ही कहते हैं। उनके नामपर ही यह मठ है। इस मठकी तालिकाके अनुसार श्रीगङ्गामाता १६०१ ई० में आविर्भूत हुईं तथा १२० की अवस्थामें १७२१ ई० में नित्यलीलामें प्रविष्ट हुईं। पुरीके वाटलोकनाथ-मन्दिरके समीप रामजी-कोटके उत्तर श्रीगङ्गामाता-मठका समाधि-बाग है।

इसके अतिरिक्त पुरीमें सातासन-मठ (इसमें सात आसन हैं), वालिमठ, नन्दिनी-मठ, सानतरला तथा बड़तरला-मठ, झाँजपिटा-मठ, कुञ्ज-मठ, हावली-मठ, दामोदरवल्लभ-मठ, गन्धर्व-मठ, पौर्णमासी-मठ, गोपालदास-मठ, रङ्गमाता-मठ, नीलमाणि-मठ, कृपासिन्धु-मठ आदि बहुत-से और गौडीय वैष्णवोंके मठ हैं।

नवद्वीप

मायापुरी—यह श्रीमहाप्रभुकी आविर्भावस्थली है यहाँके योगपीठपर गगनभेदी सुरम्य मन्दिर है, जिसमें श्रीगौरसुन्दर (महाप्रभु) तथा उनके वाम भागमें श्रीविष्णुप्रियाजीकी तथा दक्षिणभागमें श्रीलक्ष्मीप्रियाजीकी प्रतिमाएँ हैं। इसी मन्दिरके एक दूसरे कक्षमें श्रीराधा-माधवकी युगल-प्रतिमाके साथ श्रीगौरसुन्दरकी प्रतिमा है। इनके अतिरिक्त कई दूसरे मठ भी हैं।

चैतन्य-मठ—यह मन्दिर मायापुरमें श्रीचन्द्रशेखर-भवनमें प्रतिष्ठित है। ये चन्द्रशेखरजी महाप्रभुके निकट आत्मीय थे महाप्रभुके नवरत्नोंमें ये 'आचार्यरत्न' के नामसे विख्यात थे। इनका घर व्रजपत्तन नामसे प्रसिद्ध था। चैतन्य-भागवतके १८वें अध्यायमें कहा गया है कि महाप्रभुने यहाँ देवी-भावसे नृत्य किया था। इस मन्दिरमें गौराङ्गमहाप्रभु, गिरिधारी-भगवान् तथा गान्धर्विका (श्रीराधा) के विग्रह हैं।

श्रीभक्तिसिद्धान्तसरस्वती-समाधि-मन्दिर—यह मन्दिर बहुत पुराना नहीं है, तथापि इसके दर्शनसे श्रद्धालु भक्तोंके हृदयमें भक्तिरस उमड़ पड़ता है। प्रभुपादने महाप्रभुके नामका विश्वव्यापी प्रचार तथा कई गौडीय मठोंकी स्थापना की थी।

मायापुरी-श्रीधाममें श्रीअद्वैतभवन तथा श्रीवासाङ्गन आदि कई मन्दिर प्रसिद्ध हैं।

वृन्दावन

यहाँ जुगलघाटपर युगलकिशोरजीके मन्दिरके पास ही मदनमोहनजीका मन्दिर है। मदनमोहनजीकी मूलप्रतिमा श्रीसनातन गोस्वामीजीको मिली थी। कहते हैं यह प्रतिमा मथुरामें किसी चौबेजीके पास थी। वहाँसे सनातन गोस्वामीजी इसे वृन्दावन ले आये; किंतु श्रीनरहरि चक्रवर्तीकी बनायी पुस्तक भक्तिरत्नाकरमें इसकी प्राप्ति महावनसे बतलायी गयी है। यह पुस्तक प्राय: ३०० वर्ष पुरानी है। किसी समय यह मन्दिर बहुत सुन्दर लाल पत्थरोंका बना था; पर यवन-उत्पीडनके समय मन्दिर नष्ट कर दिया गया और प्रतिमा करौली चली गयी। फिर नन्दकुमार घोषने दूसरा मन्दिर बनाकर दूसरी प्रतिमा स्थापित की।

श्रीराधारमणजीका मन्दिर—ये श्रीराधारमणजी श्रीगोपालभट्टजीके पूज्य देव हैं, कहते हैं, ये पहले शालग्रामरूपमें थे। एक समय कोई सेठ इनके लिये बहुत-सा वस्त्राभरण लाया। पर जब उसने इन्हें शालग्रामरूपमें देखा, तब उसके मनमें बड़ा संताप हुआ और वह कहने लगा—'प्रभो! मैं तो बड़ी दूरसे बड़ी श्रद्धासे आपको धारण करानेके लिये ये वस्त्राभूषण लाया था, पर आप इन्हें कैसे धारण करेंगे?' रातको स्वप्नमें भगवान्‌ने उसे आश्वासन दिया और उठनेपर देखा गया तो वे श्रीविग्रहके रूपमें परिणत हो गये थे। श्रीराधारमण-मन्दिर वृन्दावनके प्रधान मन्दिरोंमें है।

श्रीगोपीनाथजीका मन्दिर—इनके सम्बन्धमें सुना जाता है कि एक बंगाली मधु-पण्डित कभी वृन्दावन आये और भगवद्दर्शनके लिये व्याकुल हुए। उन्हें भगवान्‌ने यहाँ वंशीवटके नीचे गोपीनाथरूपसे दर्शन दिया। यह मन्दिर श्रीनन्दकुमार बाबूका बनवाया हुआ है।

श्रीगोकुलानन्द-मन्दिर—इसका दूसरा नाम श्रीराधा-विनोद-मन्दिर भी है। यह श्रीलोकनाथ गोस्वामीद्वारा स्थापित है। ये श्रीमहाप्रभुसे भी पहले वृन्दावन आये थे। उन्होंने जीवनभर इनकी सेवा की। यहीं समीपमें वंशीवटसे नीचे (जहाँ भगवान् वंशी बजाते थे) श्रीराधाकृष्णके चरणचिह्न हैं।

अद्वैतवट—यह स्थान श्रीअद्वैत गोस्वामीजीकी तपोभूमि

है। यहाँ एक अष्ट-सखियोंका मन्दिर भी है। दर्शन बहुत ही सुन्दर हैं।

लालाबाबूका मन्दिर—यह भी बड़ा विलक्षण मन्दिर है। इसका शिखर बड़ा ही शोभायमान है तथा उसपर सुदर्शनचक्र विराजमान है। लालाबाबू विरक्त बनकर व्रजमें रहे, व्रजवासियोंके घरसे माधुकरी भिक्षा करते थे। ये लालाबाबू कलकत्ताके बंगाली कायस्थ थे।

श्रीगोविन्ददेवजीका मन्दिर—रङ्गनाथजीके मन्दिरसे कुछ ही दूरपर यह मन्दिर विराजमान है। गोविन्ददेवजी वज्रनाभके पधराये हुए हैं। यह मूर्ति श्रीरूपगोस्वामीजीको मिली थी, पर वह प्राचीन मूर्ति यवनोंके उत्पीडन समयमें जयपुर पधार गयी और अब भी वहीं विराजमान है। गोविन्ददेवजीका मन्दिर लाल पत्थरका बना हुआ बहुत ऊँचा, बड़ा विलक्षण है। इसमें ऐसी भूलभुलैया है कि जिन पैड़ियोंसे ऊपर जाते हैं, उन्हीं सीढ़ियोंसे नीचे कभी नहीं उतर सकते। यह मन्दिर पहले इतना ऊँचा था कि सबसे ऊँची अट्टालिकापर जलता हुआ दीपक दिल्लीमें दीखता था; पर इसका ऊपरका भाग यवनोंने गिरा दिया। यह मन्दिर राजा मानका बनवाया हुआ है। इसके पीछे दूसरा गोविन्ददेवजीका मन्दिर है, गोविन्दबाग है।

ताड़ाशके राजा वनमालीरायका बनवाया हुआ मन्दिर भी यहाँ देखने लायक है। राजासाहब भगवान्‌से जमाईबाबूका सम्बन्ध रखते थे।

नाथ-सम्प्रदायके कुछ तीर्थस्थल

(लेखक—आचार्य श्रीअक्षयकुमार वन्दोपाध्याय एम० ए०)

गोरखपुरका गोरखनाथ-मन्दिर

गोरखपुरका श्रीगोरखनाथ-मन्दिर और मठ उत्तर-भारतकी इस प्रकारकी संस्थाओंमें एक विशिष्ट स्थान रखता है। परम्परागत मान्यता यह है कि यह मन्दिर और इसके साथका मठ ठीक उसी स्थानपर बनाये गये हैं, जहाँ रहकर सिद्ध योगिराट् गोरखनाथने बहुत दिनोंतक गहनतन्त्र समाधिका अभ्यास किया था। मुस्लिम शासन-कालमें अनेक बार अनेक प्रतिकूल परिस्थितियोंके रहते भी इसने शताब्दियोंतक सतत रूपसे यौगिक-संस्कृतिके एक जीवित केन्द्रके रूपमें अपना अस्तित्व अक्षुण्ण रखा है। नाथयोगि-सम्प्रदायके महान् प्रतिष्ठापकने जब इस स्थानको अपने अतिमानवीय आध्यात्मिक गौरवसे पवित्र किया था, तब यह एक वन-प्रदेश था और बहुत ही कम आबाद था। यहाँके निवासी भी असभ्य और असंस्कृत थे। वे यह नहीं जान सकते थे कि क्यों उन्होंने इस विशिष्ट स्थानको ही अपनी साधनाके लिये चुना था। स्वभावतः इस क्षेत्रकी सीधी-सादी जनता इस दिव्य मानवके प्रति आकर्षित हुई। यद्यपि वे स्वभावतः अवलोकित मनःस्थितिमें रहते थे और सांसारिक परिस्थितियोंपर बिलकुल ध्यान नहीं देते थे, फिर भी दीन-हीन जनता स्वभावतः उनके प्रति भक्ति-भावनासे भर गयी और जब कभी वे इसकी ओर अनुग्रहकी भावनासे प्रेरित होकर उसकी कोई शारीरिक सेवा स्वीकार कर लेते थे तो वह अपना अहोभाग्य मानती थी।

इस दिव्य व्यक्तित्वकी पवित्र उपस्थितिमें इस क्षेत्रका सम्पूर्ण वातावरण आध्यात्मिक हो गया। इस निश्छल प्राणियोंमें उनके आशीर्वादात्मक उपदेशोंने एक गतिशील आध्यात्मिक चेतना जाग्रत् कर दी। वे अनुभव करते थे कि महायोगेश्वर शिव कृपापूर्वक मानवरूपमें उनके बीच उपस्थित हैं। वे शिव-गोरखके रूपमें उनकी पूजा करते थे। उनके देवत्वकी कहानी एक दूसरेसे होती हुई विभिन्न दिशाओंमें फैल गयी। बहुत-से सच्चे सत्यान्वेषक उनके पास आने लगे और उनकी कृपाकी भीख माँगने लगे। उनका अतिमानवीय चरित्र और सीधे-सरल उपदेश सच्चे आध्यात्मिक जिज्ञासुओंको त्याग, तपस्या और योग-साधनाके जीवनकी ओर आकर्षित करने लगे। उनके व्यक्तित्वके प्रभावसे स्वतः एक साधनाश्रम विकसित होने लगा। उनके अनुग्रहसे उनके शिष्य आध्यात्मिक जागृतिके पथपर आश्चर्यजनक गतिसे आगे बढ़ने लगे। ये आध्यात्मिक साधनामें सफल विभिन्न क्षेत्रोंमें उनकी शिक्षाओंका प्रचार करने लगे। उन्होंने विभिन्न आश्रमों एवं आध्यात्मिक प्रशिक्षण-केन्द्रोंकी स्थापना की। इस प्रकार गोरखपुर-केन्द्र योग-साधनाके अनेक छोटे-छोटे केन्द्रोंका प्रधान केन्द्र हो गया; यद्यपि आश्रमके पूर्णतः स्थापित हो जानेके थोड़े ही दिनों बाद आश्रमके महान् स्वामीने शरीरतः उस स्थानको छोड़ दिया, फिर भी उनकी आध्यात्मिक उपस्थितिका अनुभव सभी लोग करते रहे। सभी

लोगोंके मनमें यह विश्वास घर कर गया था कि वे मानवरूपमें साक्षात् शिव थे, वे जन्म-मरणसे रहित थे; जो उनका भौतिक शरीर प्रतीत होता था, वह भी भौतिक और सृष्टि-सम्बन्धी नियमोंके अधीन नहीं था। वे निमिषमात्रमें इस प्रकारके अनेक शरीर उत्पन्न कर सकते थे और जब भी चाहते शरीरोंको दृश्य या अदृश्य कर सकते थे। ये सारे कृत्य उनके लिये लीलामात्र थे और यह सब कुछ उन्होंने जनताकी भलाईके लिये किया था।

ऐसा समझा जाता था कि उनका व्यक्तित्व अमर और सर्वव्यापक था। उनके द्वारा स्थापित आश्रम विकसित होता गया और साथ ही उनके आध्यात्मिक प्रभावके क्षेत्रका भी विस्तार होता गया। काल-क्रमसे इस सम्पूर्ण क्षेत्रका भौतिक उत्थान भी हुआ और ऐसा समझा गया कि वह उन्हींकी कृपाका परिणाम है। यहाँसे लेकर नैपालतककी सम्पूर्ण जनता गोरखनाथजीके नामसे प्रेरणा प्राप्त करती थी। कालान्तरमें जब इस जिलेकी सीमाओं और उनके प्रधान केन्द्रका निर्धारण किया गया, तब उसका नाम गोरखनाथजीके ही नामपर गोरखपुर रखा गया।

यद्यपि यह मठ संसारसे विरक्ति रखनेवाले तथा ईश्वरके अन्वेषक तपस्वियोंकी संस्था थी, जिसका कोई सम्बन्ध देशके आर्थिक और राजनीतिक विषयोंसे न था; फिर भी मुस्लिम शासन-कालमें हिंदुओं एवं बौद्धोंके अन्य सांस्कृतिक केन्द्रोंकी भाँति इसे भी प्रायः अनेक भयंकर आपत्तियोंका सामना करना पड़ा। आततायियोंके इस ओर विशेष ध्यान देनेका एक कारण इस मठकी दूरतक फैली प्रसिद्धि और प्रभाव था। ऐसा कहा जाता है कि एक बार अलाउद्दीनके समयमें यह मठ नष्ट कर दिया गया था और यहाँके योगियोंको मारकर भगा दिया गया था; किंतु जनताके हृदयोंसे, निश्चय ही, गोरखनाथजीको नहीं निकाला जा सकता था। मठका पुनः निर्माण किया गया, योगीलोग लौट आये और यौगिक संस्कृतिके प्रमुख केन्द्रके रूपमें इसकी महत्ता इस क्षेत्रमें पुनः प्रतिष्ठित हो गयी। इस केन्द्रसे असाधारण योगशक्ति तथा गहनतम आध्यात्मिक अनुभूति रखनेवाले अनेक महायोगी उत्पन्न हुए, जिनका आध्यात्मिक महत्त्व पूरे देशमें स्वीकार किया गया; यह मठ विरोधियोंके नेत्रोंमें पुनः खटकने लगा और औरंगजेबके शासन-कालमें इसे एक बार फिर नष्ट किया गया; किंतु शिव-गोरखके अनुग्रहने मानो इस स्थानको अमरत्व प्रदान कर दिया था। इन सभी धक्कों और आपत्तियोंके बाद भी इसका विकास होता रहा। आगे चलकर अवधके एक मुसल्मान शासकने इस मठको दैनिक पूजा एवं परिव्राजक योगियोंकी सेवाके लिये अच्छी भू-सम्पत्ति प्रदान की।

इस मठका प्रमुख मन्दिर जिस रूपमें आज वर्तमान है, निश्चय ही अधिक पुराना नहीं है। यह पूर्णतया सम्भव है कि मन्दिरको बार-बार निर्मित करना पड़ा था; किंतु विश्वास यह है कि गोरखनाथकी तपःस्थली कभी भी छोड़ी नहीं गयी और जब कभी मन्दिरका निर्माण हुआ, उसी पवित्र भूमिपर ही हुआ। इस पवित्र मन्दिरकी एक प्रमुख विशेषता उल्लेखनीय है। मन्दिरके केन्द्रमें एक विस्तृत यज्ञस्थली है, जो गोरखनाथजीके पवित्र आसनके रूपमें मानी जाती है। यहींपर नियमतः साम्प्रदायिक विधिके अनुसार नित्यप्रति पूजा की जाती है। इस यज्ञस्थलीपर शिव या गोरखनाथमेंसे किसीकी भी मूर्ति नहीं स्थापित है। प्रत्यक्षतः यह रिक्त स्थान है, किंतु आध्यात्मिक दृष्टिसे यह उस परम सत्य और आदर्शकी ओर संकेत करती है, जिसका स्मरण और भावना प्रत्येक योगीको पूजाके समय करना चाहिये। यह वह परम तत्त्व है, जो प्रत्येक योगीके ध्यान और पूजाका अन्तिम लक्ष्य है और जिसका न कोई विशिष्ट नाम है न रूप। वह सम्पूर्ण गोचर सत्ताका मूलाधार है। वह जीव और शिव, आत्मचेतना और विश्वचेतना, 'अहं' और 'इदम्'-चेतना और 'पदार्थ' तथा 'मन' और 'दिव्य' मनकी एकत्व-अनुभूति है। वह अविभाज्य है वह परम शून्य और परम पूर्ण है। उसमें सत् और असत्की एकरूपता है। पूजाका आदर्श रूप यह है कि आराधकका हृदय इस परम एकत्वकी अनुभूतिसे भर जाय और वह आन्तरिक रूपसे उसके साथ मिलकर एक हो जाय। इस पूर्ण एकत्वकी अनुभूति करनेवाला हृदय ही सच्चे नाथ-सिद्ध या अवधूतका हृदय है। गोरक्ष-सिद्धान्त-संग्रहमें नाथका स्वरूप इस प्रकार वर्णित है—

निर्गुणं वामभागे च सव्यभागेऽद्भुता निजा।
मध्यभागे स्वयं पूर्णस्तस्मै नाथाय ते नमः॥
वामभागे स्थितः शम्भुः सव्ये विष्णुस्तथैव च।
मध्ये नाथः परं ज्योतिस्तज्ज्योतिर्मे तमोहरम्॥

'मैं उस नाथको नमन करता हूँ, जिसके वाम भागमें निर्गुण ब्रह्म तथा दक्षिण भागमें रहस्यमयी आत्मशक्ति (विश्व-प्रपञ्चका त्यागात्मक आधार) है और जो मध्यमें

स्वयं पूर्ण प्रदीप्त चेतनात्मक स्थितिमें परम सत्ताके उक्त द्विविध रूपोंद्वारा आलिङ्गित है। शम्भु या शिव उसके वाम भागमें और विष्णु उसके दक्षिण भागमें स्थित हैं और नाथ उन दोनोंके मध्य परम ज्योतिके रूपमें सुशोभित हैं अर्थात् दोनोंको अपनेमें एकान्वित किये हुए हैं। नाथकी यह परम ज्योति मेरे अज्ञानान्धकारको दूर करे।'

निर्गुण ब्रह्म और विश्व-प्रपञ्च, सर्व-निरपेक्ष शिव और सर्वव्यापी विष्णु—दोनों नाथकी पूर्ण प्रकाशित दिव्य चेतनतामें एकान्वित हैं। वे ही श्रीनाथजी मन्दिरके प्रधान देवता हैं। वे ही योगी गुरु हैं। अज्ञानान्धकारको दूर करनेके लिये उन्हींकी प्रार्थना की जाती है।

मन्दिरके भीतर वेदीके एक ओर शान्त निश्चल दीपशिखा है, जो रात-दिन सतत रूपसे मन्द-मन्द जलती रहती है और जिसे कभी भी बुझने नहीं दिया जाता। यह परम ज्योतिका उपयुक्ततम प्रतीक है, जिसमें शिव और विष्णु—परमतत्त्वके निरपेक्ष और सापेक्ष स्वरूप एक ही रूपमें अभिव्यक्त होते हैं, जिसमें निर्गुण ब्रह्म और उनकी विश्व-जननी और अनिर्वचनीय महाशक्ति एक परम आनन्दमयी चेतनताके रूपमें एकान्वित हैं। यही आत्मज्योति परम चेतनता है, जो प्रत्येक योगीके द्वारा अनुभूत होनेवाला परम सत्य एवं परमादर्श आराधकोंके सम्मुख अनिर्वाण ज्योति या अखण्ड ज्योतिके रूपमें सदैव विद्यमान रहता है। यह दीप-शिखा वायुके झोंकों या अन्य बुझा सकनेवाले प्राकृतिक उपकरणोंसे प्रयत्नपूर्वक सुरक्षित रखी जाती है और इसे सतत प्रदीप्त रखनेके लिये दीपको घीसे सींचते रहते हैं। यह ज्योति पूजकों और साधकोंको स्मरण दिलाती रहती है कि मनको क्रमशः दिव्य आध्यात्मिक अनुभूतिकी ओर उन्मुख करनेके लिये आवश्यक है कि उसे उन सांसारिक प्रपञ्चों तथा ऐन्द्रियविषयों और प्रवृत्तियोंसे सुरक्षित रखा जाय, जो इसे अशान्त और अशुद्ध कर देते हैं। यही नहीं, इसे नियमपूर्वक ध्यान एवं धारणाके द्वारा सुसंस्कृत और अशक्त रखना चाहिये।

मन्दिरके भीतर वेदी और ज्योति-शिखा—इन दो महत्त्वपूर्ण प्रतीकोंके अतिरिक्त बुद्ध-मूर्तियाँ भी मन्दिरसे ही सम्बद्ध हैं। शिवके असीम वक्षःस्थलपर नित्यरूपसे नृत्य करती हुई माता कालीकी मूर्ति है। जिन लोगोंको योग-साधनाके दार्शनिक आधारका थोड़ा भी ज्ञान है, वे इस पवित्र मूर्तिके आध्यात्मिक महत्त्वको भलीभाँति समझ सकते हैं। यह कहा जा चुका है कि परम तत्त्वके निरपेक्ष स्वरूपका प्रतिनिधित्व शिव करते हैं और माता काली या विश्व-जननी अनिर्वचनीय महाशक्ति उसके गत्यात्मक स्वरूपका, जो कालातीत स्थानातीत स्वयं प्रकाशित निरपेक्ष स्वरूपको अपना मूलाधार बनाकर नित्य समय और स्थानकी सीमाओंमें अपनेको अनेक रूपोंमें व्यक्त करता है। काली शिवका ही गतिशील स्वरूप है। शिवके वक्षःस्थलपर कालीका नृत्य इस तथ्यकी ओर संकेत करता है कि यह सतत परिवर्तनशील नानात्वमय जगत् एक अपरिवर्तनशील परम आत्माकी ही अभिव्यक्ति है, जो अपनी सम्पूर्ण अभिव्यक्तिके मूलमें स्थित रहता है। इन सभी परिवर्तनों, सभी परस्पर-विरोधी तत्त्वों—जीवन और मृत्युकी स्थितियों, सुखों और दुःखों, संघर्षों एवं मैत्रियों, पुण्यों और पापोंमें—जिनके माध्यमसे महाकाली अपनेको व्यक्त करती है, आधारभूत शिव-तत्त्वकी आनन्दमयी एकता सदैव अक्षुण्ण रहती है। विश्व-जननी अपने सभी सत्यान्वेषी पुत्रोंको यह दिखाना चाहती है कि शिव सभी सीमित और क्षणिक अस्तित्वोंके मूलाधार रूपमें स्थित हैं। वह अनेकमें एक, परिवर्तनशीलोंमें अपरिवर्तित, सीमाओंमें असीम, द्वैतमें अद्वैतके सत्यको भी प्रत्यक्ष कराना चाहती है। काली-पूजाका उद्देश्य स्वयं अपनेमें और सम्पूर्ण वातावरणमें शिव-तत्त्वकी अनुभूति करना है। योगियोंकी दृष्टिमें इसका विशिष्ट महत्त्व है।

गणेश या गणपतिकी मूर्ति भी मन्दिरके एक कोनेमें रखी हुई है। अतिप्राचीन कालसे ये भारतके सर्वाधिक लोकप्रिय देवताओंमें एक हैं। इन्हें गजानन तथा लम्बोदरके रूपमें मूर्त किया जाता है। आँखें भीतरकी ओर धँसी हुई दिखायी जाती हैं और एक आदर्श योगीके समान इन्हें सदैव गहन ध्यानकी मुद्रामें चित्रित किया जाता है। इनकी धारणा शिव-शक्तिके पुत्ररूपमें की जाती है अर्थात् इन्हें परमतत्त्वके निरपेक्ष एवं गत्यात्मक दोनों रूपोंकी एकताकी गौरवमयी अभिव्यक्तिके रूपमें समझा जाता है। इनके रूपमें बाह्यतः पशुताकी व्यञ्जना है और अन्ततः उसे आध्यात्मिकतामें परिवर्तित कर दिया गया है। इन्हें ज्ञान-देवता तथा बुद्धि देवताके रूपमें समझा जाता है। ये आन्तरिक शान्ति एवं भौतिक समृद्धिके देवता भी समझे जाते हैं। ये सांसारिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकारकी सिद्धि देनेवाले हैं। ऐसा विश्वास किया

जाता है कि ये संसारकी अप्रत्यक्ष शक्तियोंके शासक हैं—उन शक्तियोंके, जो अप्रत्यक्ष रूपसे सफलताके मार्गमें भयंकर अवरोध पैदा कर सकती हैं, यदि सत्यान्वेषक बुरी भावनाओं और बुरे कर्मोंद्वारा उनपर आधिपत्य स्थापित करना चाहता है और जो सफलताके मार्गको सरल, सुगम और विरोधरहित बना सकती हैं, यदि सत्यानुसंधाता सज्जनता और सदाचारिताके अभ्यास तथा विचार, वाणी एवं कर्मकी पवित्रताद्वारा उन्हें अनुकूल दिशामें प्रवृत्त कर देता है। ये जनताके देवता हैं, जो उन्हें अपना भाग्य-विधाता मानकर अनुग्रहकी आशासे सभी ओर देखती रहती है; क्योंकि ये उन अज्ञात शक्तियोंके स्वामी हैं, जिनकी अनुकूलतापर जनताका भाग्य निर्भर करता है। योगियोंके लिये ये आदर्श महायोगी हैं, जो प्रकृति और नियतिकी समस्त शक्तियोंपर नियन्त्रण रखते हुए और समस्त जनतापर अनुग्रह करते हुए सदैव अपनेमें तुष्ट रहते हैं, सदैव पूर्ण शान्त रहते हैं, सदैव ध्यानावस्थामें रहते हैं और सदैव अपनी चेतनाको शिव-शक्तिके साथ संयुक्त रखते हैं। ऐसा माना जाता है कि गणेश शिव-शक्तिके अन्तःपुरके द्वारके प्रहरी हैं।

महावीर हनुमान्‌को भी मन्दिरमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। ऐसी धारणा है कि उनका शरीर बन्दरका है, किन्तु योग और भक्तिकी गहनतम साधनासे उनका भौतिक अस्तित्व पूर्णतः दिव्य और आध्यात्मिक हो चुका है। हनुमान्‌जी सम्पूर्ण भारतमें देवताकी भाँति पूजे जाते हैं; क्योंकि उनकी मूति सदैव हमारे सामने आध्यात्मिकताकी पशुतापर पूर्ण विजयका ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करती है। यही नहीं, सबपर विजय प्राप्त करनेवाले, सभीको ज्योतिष्मान् करनेवाले और सभीको आध्यात्मिक बना देनेवाले योगकी शक्तिके बलपर पशु-शरीरकी आत्माके प्रकाशमान आत्माभिव्यक्तिमें पूर्ण परिवर्तनका वे प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। हनुमान्‌जी एक आदर्श योगी, आदर्श भक्त, आदर्श कर्मी; आदर्श त्यागी और आदर्श ज्ञानी हैं। कहा जाता है, हनुमान्‌ने असाधारण और अद्भुत शक्ति विकसित कर ली थी, वे एक ही छलाँगमें समुद्र पार कर जाते थे, अपनी पीठपर पर्वत धारण करके सरलतापूर्वक बहुत दूरतक हवामें उड़ जाते थे और अपने शरीरको, जैसा चाहते, कभी अति विशाल और कभी अति सूक्ष्म कर सकते थे; किन्तु इन शक्तियोंके होते हुए भी उनमें अहंकार न था, 'मेरे' और 'पराये' की भावना नहीं थी। उन्होंने अपने व्यक्तित्वको पूर्णतः परम तत्त्वमें लीन कर दिया था, जिसकी उन्होंने रामके रूपमें अनुभूति की थी। उनमें सभी प्रकारकी शक्तियोंको अतिक्रमित करनेकी क्षमता थी और उनकी चेतना परमतत्त्व श्रीराममय थी। यह योगका आदर्श है।

त्रिशूलको अति प्राचीन कालसे शिवका अस्त्र समझा जाता रहा है और इसीलिये यह शिवकी आदर्श भावनाका प्रतीक रहा है। महान् योगेश्वर शिवने त्रिशूलकी तीनों नोकोंसे महासुर त्रिपुरका वध किया था, जिसने मृत्युको अस्वीकार कर दिया था और जो तीन पुरों—गृहोंमें छिपे रहकर अपनी रक्षा किया करता था। यह असुर अहंकारका प्रतीक है और त्रिपुर तीन प्रकारके शरीरोंकी ओर संकेत करता है—स्थूल-शरीर, सूक्ष्मशरीर और कारण-शरीर—जिनमें अहंकारका निवास है। भौतिक स्थूल-शरीरसे निकलकर अहंकार सूक्ष्मशरीरमें स्थित हो जाता है और पुनः अपने प्राक्तन कर्मोंका फल प्राप्त करने तथा नवीन कर्मोंका सम्पादन करनेके लिये दूसरा भौतिक शरीर धारण कर लेता है। कोई भी पुण्य-कर्म जीवनके अहंकारको नष्ट नहीं कर सकता, न इसे कर्म और भोगके बन्धनसे ही मुक्त कर सकता है। शिवके त्रिशूलकी तीन नोकें हैं—(१) वैराग्य—सब प्रकारके शारीरिक और भौतिक अधिकारोंसे विरति, (२) ज्ञान—परम तत्त्वकी सत्यरूपमें अनुभूति और (३) समाधि—चेतनाका परमतत्त्वमें पूर्ण लय। त्रिशूल योग-साधनाका प्रतीक है। यह साधना ही वैयक्तिक चेतनाको पूर्णतः प्रकाशमान कर सकती है, आत्माके विविध शरीरोंसे सम्बन्धोंको नष्ट कर सकती है और आत्माको सभी प्रकारके बन्धनों, सीमाओं और दुःखोंसे मुक्त कर सकती है और अन्ततः इसे परम तत्त्वसे मिला सकती है। त्रिशूलकी आराधनासे तात्पर्य वैराग्य, ज्ञान और समाधिका गहनतम अभ्यास है। इसीलिये मन्दिरके सामने खुली जगहमें बहुत-से त्रिशूल गाड़े गये हैं। इन त्रिशूलोंकी स्थिति आध्यात्मिक जिज्ञासुओंको योगके आदर्शकी सतत स्मृति दिलाती रहती है।

मन्दिरके पार्श्वमें अग्नि सदैव प्रज्वलित रहती है और सांसारिक पदार्थ अग्निको समर्पित किये जाते हैं।

यह धूनी भी मठकी स्थायी विशिष्टता है। इससे यह संकेतित होता है कि वैराग्यकी अग्नि सतत रूपसे बन्धन-मुक्तिकी कामना रखनेवाले व्यक्तिके हृदयमें प्रज्वलित रहनी चाहिये। सभी प्रकारकी इच्छाएँ और आसक्तियाँ, सभी प्रकारकी अपवित्रता और चञ्चलता वैराग्यकी अग्निमें जल जानी चाहिये। सभी प्रकारके सांसारिक विभेद और विरोध इस वैराग्य-भावनासे मिट जाने चाहिये। सब प्रकारकी परस्पर-विरोधी वस्तुएँ, जो सांसारिक जीवनमें अनेक प्रकारके विरोधी मूल्य रखती हैं, अग्निमें जलकर राखके रूपमें एकाकार हो जाती हैं और सांसारिक दृष्टिसे यह राख व्यर्थ समझी जाकर हेय मानी जाती है। योगी अपने शरीरको इसी राखसे विभूषित करते हैं, जो वस्तुओंके परस्पर-विरोधी नाम-रूपों और मूल्योंके समाप्त हो जानेपर उनके मूलमें निहित एकताकी अभिव्यक्तिके रूपमें अवशिष्ट रह जाती है। महायोगी एक प्रकारसे बहुत बड़ा ध्वंसक है; क्योंकि अपनी प्रबुद्ध चेतनाके बलपर वह सभी प्रकारके विरोधी तत्त्वोंको परम तत्त्वकी एकतामें बदल देता है। शिव, जो सभी योगियोंके आदिगुरु और स्वामी हैं, विध्वंसके देवता समझे जाते हैं; क्योंकि आध्यात्मिक ज्योतिका वास्तविक कार्य सभी प्रकारके अस्तित्वोंके आध्यात्मिक एकत्वकी अभिव्यक्ति या सभी विरोधी तत्त्वोंको परमतत्त्वकी निरपेक्ष एकतामें परिणत कर देना है। शिवके लिये प्रसिद्ध है कि वे अपना सम्पूर्ण शरीर राखसे विभूषित करते हैं, जिसका तात्पर्य यह है कि उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व सभी प्रकारकी सत्ताओंके एकत्वकी चेतनासे शाश्वतरूपमें प्रकाशित है। मठके मैदानके भीतर एक श्मशान भी है; उसमें योगियोंका मृत भौतिक शरीर समाधिस्थ किया जाता है, जिनकी अमर आत्माएँ उसे मिट्टीमें मिलानेके लिये छोड़ जाती हैं। देव-मन्दिरके पार्श्वमें स्थित श्मशान सभी लोगोंको सतत रूपसे इस भौतिक जीवनके अनिवार्य अन्त तथा सांसारिक प्रभुत्व और उपलब्धियोंकी व्यर्थताका स्मरण दिलाता रहता है। यह दृश्य वैराग्य-भावनाको घनीभूत करता है और दर्शकका नित्य परम तत्त्वकी ओर बलात् ध्यान आकर्षित करता है। उस परम तत्त्वके प्रति एकान्त भक्ति ही आत्माको आनन्दमयी अमरता प्रदान कर सकती है और जीवनको सारपूर्ण बना सकती है। मन्दिर और श्मशान-भूमि असीम नित्य आनन्दमय आध्यात्मिक अस्तित्व और सीमित, क्षणिक, दुःखपूर्ण भौतिक अस्तित्वकी विरोधात्मक स्थिति उपस्थित करती है और मनुष्योंको दोनोंमें किसी एकको चुननेकी प्रेरणा देती है। श्मशान-भूमि इस पृथ्वी—मृत्युलोकका प्रतिनिधित्व करती है; मन्दिर—कैलास आत्माकी निवास-भूमि है, अमरताके क्षेत्रका प्रतिनिधित्व करता है।

भोगका मार्ग श्मशान-भूमिकी ओर ले जाता है और योगका मार्ग मन्दिरकी ओर। श्मशान-भूमि जीवित व्यक्तियोंके सभी विरोधोंको मृतक-भूमिकी एकतामें बदल देती है। यहाँ जीवनकी तुष्टि नहीं है; वे आत्माएँ, जो भौतिक मृत्युके उपरान्त भ्रमवश सूक्ष्मशरीरसे सम्बद्ध रहती हैं, अपूर्ण वासनाओंद्वारा पीड़ित की जाती हैं। मन्दिर सभी प्रकारके विरोधोंको आत्माकी आनन्दमयी एकतामें बदल देता है; यहाँ जीवनकी तुष्टि हो जाती है, आत्मा शिवसे अभिन्न हो जाता है। जब आध्यात्मिक प्रकाश—ज्ञान सभी प्रकारके भ्रमात्मक विरोधोंको मिटा देता है और सभी प्रकारकी सत्ताओंका एकत्व प्रकट कर देता है, तब शिव अपने पूर्ण गौरवके साथ प्रकाशित होते हैं।

इस मठने शताब्दियोंसे अपना अस्तित्त्व सुरक्षित रखा है और सहस्त्रों व्यक्तियोंको योग-मार्गकी ओर आकर्षित किया है। इस मठकी परम्परामें अनेकों विख्यात योगी आते हैं, जिन्हें आश्चर्यजनक आध्यात्मिक शक्तियाँ उपलब्ध थीं और जिन्होंने अनेक युवकोंको योग-मार्गमें दीक्षित किया था। बहुत दिनोंतक यह मठ योग-संस्कृतिका केन्द्र रहा है और इसने देशके आध्यात्मिक वातावरणको बहुत दूरतक प्रभावित किया है। अनेक व्यक्ति आध्यात्मिक जिज्ञासाको लेकर यहाँ आते रहे हैं और आज भी प्रेरणा और दीक्षाके लिये आते रहते हैं। अनेक तीर्थ-यात्री गोरखनाथकी इस तपोभूमि और उनके नामसे पवित्र प्रसिद्ध मन्दिरके दर्शनके लिये बारहों महीने आते रहते हैं। प्रतिदिन एक बड़ी संख्यामें आनेवाले अतिथियों, विशेषकर भ्रमणशील साधुओंके लिये मठको भोजन और सुभीतेकी उचित व्यवस्था करनी पड़ती है। मकर-संक्रान्तिके दिन एक लाखसे अधिक पुरुष और स्त्रियाँ परम देवताके दर्शनसे अपनेको पवित्र करने तथा उनके लिये कुछ खाद्यपदार्थ अर्पित करने आते हैं। इसके अतिरिक्त मङ्गलवार सामान्यतः श्रीनाथजीके दर्शनके लिये एक विशिष्ट पवित्र दिन माना जाता है और प्रति मङ्गलवारको सभी जातियोंके अनेक श्रद्धालु स्त्री-पुरुष मन्दिरमें दर्शनार्थ एकत्र होते हैं। मठसे सम्बद्ध एक गोशाला भी है, जिसमें गायें और भैंसें सावधानीसे पाली जाती हैं। मन्दिरमें

सांस्कृतिक पूजा तो प्राय: थोड़ी-थोड़ी देरके बाद रात-दिन बराबर होती रहती है।

पूरी संस्था एक योगीके प्रबन्धमें है, जिसे महंत कहते हैं। मठमें महंतका स्थल बड़ा ही उच्च और पूज्य माना जाता है। वह योगी गुरु गोरखनाथका प्रतिनिधि समझा जाता है और इस संघटनसे सम्बद्ध सभी योगियोंका आध्यात्मिक नेता या प्रधान माना जाता है। व्यावहारिक दृष्टिसे वह गोरखनाथजीका प्रधान सेवक है और इस संस्थाके संचालकके रूपमें गुरुओंके गुरु गोरखनाथद्वारा प्रतिष्ठित महान् आध्यात्मिक आदर्शकी सुरक्षाके लिये मुख्यत: उत्तरदायी है। वह निश्चित समयपर निर्धारित विधिके अनुसार होनेवाली दैनिक पूजाके नियमित सम्पादनके लिये उत्तरदायी है, साथ ही वर्षकी विभिन्न ऋतुओंमें निश्चित पर्वों और त्यौहारोंके उचित ढंगसे मनाये जानेके लिये भी उत्तरदायी है। उसे मठके आध्यात्मिक और नैतिक वातावरणकी पवित्रता और शान्तिका भी ध्यान रखना पड़ता है। आनेवाले अतिथियोंकी उचित सेवाकी व्यवस्था करनी पड़ती है, गोरखनाथजीके नामपर आनेवाले एक-एक पैसेके उचित व्ययपर दृष्टि रखनी होती है और अन्तत: उसे आश्रम-जीवनके सभी क्षेत्रोंसे सम्बद्ध सभी प्रकारके व्यक्तियोंके उचित सम्मानका ध्यान रखना होता है। अपने व्यक्तिगत जीवनमें उससे आशा की जाती है कि वह त्याग, संयम, विनय तथा शान्तिके आदर्शका पालन करेगा, चाहे उसे व्यावहारिक और सामाजिक जीवनमें कितने ही परस्पर-विरोधी कर्तव्योंका पालन या परस्पर-विरोधी स्थितियोंका मुकाबला क्यों न करना पड़ता हो। उसे निश्चित रूपसे अपनेको सभी प्रकारके सांसारिक आकर्षणों और महत्त्वाकाङ्क्षाओंसे, सभी प्रकारकी चारित्रिक दुर्बलताओंसे तथा शरीर-सुखकी आसक्तियोंसे ऊपर रखना चाहिये।

गोरखपुरका यह गोरखनाथ-मठ निश्चय ही इस दृष्टिसे बड़ा ही भाग्यशाली रहा है। इसकी महंत-परम्परामें कुछ विलक्षण साधनावाले महायोगी हुए हैं, जो अपने आध्यात्मिक ज्ञान और आसाधारण योग-शक्तिके लिये दूर-दूरतक विख्यात रहे हैं। इनमेंसे एक बाबा बालकनाथ यहाँ सन् १७५८ से १७८६ तक महंत रहे हैं। उनके अलौकिक जीवनकी अनेक प्रेरणाप्रद कथाएँ सुनी जाती हैं। उनके पहले वीरनाथ, अमृतनाथ और पियारनाथ इस मठके महंत रह चुके हैं। वे सभी महायोगी थे। प्रारम्भिक महंतोंके नाम कालक्रमसे ठीक-ठीक ज्ञात नहीं है। बुद्धनाथका नाम श्रद्धापूर्वक लिया जाता है। सम्भवत: वीरनाथसे कई पीढ़ी पहले वे यहाँके महंत रह चुके हैं। बालकनाथके उत्तराधिकारी मानसनाथ सन् १७८६ ई० से सन् १८११ ई०तक २५ वर्ष महंत रहे थे। उनके बाद संतोषनाथ १८११ से १८३१ तक बीस वर्ष महंत रहे और उनके बाद मिहिरनाथ १८३१ से १८५५ तक २४ वर्ष महंत रहे। उनके बाद गोपालनाथ १८५५ से १८८० तक पचीस वर्ष और फिर उनके शिष्य बलभद्रनाथ १८८० से १८८९ तक केवल ९ वर्षतक महंत रह सके। इनमेंसे अधिकांश उच्चस्तरके योगी थे। बलभद्रनाथके शिष्य दिलवरनाथ १८८९ से १८९६ तक केवल सात वर्ष ही गद्दीपर रहे। उनके उत्तराधिकारी सुन्दरनाथजी हुए, जो कई वर्षोंतक गद्दीके मालिक रहे, यद्यपि उनके महंत-जीवनके अधिकांश कालमें महंतका दायित्व और अधिकार पूर्ण-प्रबुद्ध महायोगी गम्भीरनाथके हाथोंमें रहा। बाबा गम्भीरनाथ गोरखनाथजीके ही दूसरे स्वरूप थे। सुन्दर-नाथजीकी मृत्युके उपरान्त बाबा गम्भीरनाथके प्रमुख शिष्य ब्रह्मनाथ गद्दीके लिये चुने गये, जिसे उन्होंने कुछ ही वर्षोंतक सुशोभित किया। उनके शिष्य बाबा दिग्विजयनाथ सन् १९३४ में उनकी मृत्युके उपरान्त उनके उत्तराधिकारी हुए और अब भी मठके प्रधान हैं। आप अंग्रेजी शिक्षा-प्राप्त और आधुनिक दृष्टिकोणके व्यक्ति हैं। आपमें महती संघटनशक्ति है, इसीलिये आपने मठके बाह्य आकार-प्रकारमें पर्याप्त सुधार और विकास किया है।

श्रीगोरख-डिब्बी, ज्वालामुखी

यह स्थान जिला होशियारपुर (पंजाब) में है। आगे ज्वालादेवीजीका मन्दिर है, मन्दिरमें हवन-कुण्ड है। मन्दिरकी दीवारोंपर और हवन-कुण्डमें ज्योति जगती है। ज्योति भोगमें दूध पी लेती है यानी छोटी-सी लुटियामें दूध भरकर भोग लगानेपर दूध समाप्त हो जाता है और ज्योति लुटियामें आ जाती है। यहाँपर चैत्र तथा क्वारके नवरात्रमें बड़ा भारी मेला लगता है। सम्राट् अकबरने ज्योतिकी परीक्षाके लिये एक नहर ज्योतिके ऊपर बहा दी थी, तिसपर भी ज्योति नहीं बुझी। यह विचित्र लीला देखकर बादशाहने एक रत्नजटित सोनेका छत्र देवीपर चढ़ाया था। देवीके मन्दिरसे थोड़ी ही दूर ऊपर श्रीगोरखडिब्बी मन्दिरके रूपमें है। अंदर एक

कुण्ड है, जो दिन-रात उबलता रहता है। डिब्बी-कुण्डके नीचे एक छोटा कुण्ड और है, उसमें भी पुजारीके धूप या ज्योति दिखानेपर बड़ा भारी शब्द होता है और एक विशाल ज्योति प्रकट होती है।

पूर्णनाथ (सिद्ध चौरंगीनाथ)-कूप, स्यालकोट (पंजाब)

पूर्णनाथजी सम्राट् शालिवाहनके राजकुमार थे। जब राजकुमार युवावस्थामें पहुँचे, तब अपनी विमाता लूनाके राजमहलमें दर्शन देनेके लिये बुलाये गये। विमाताकी कुदृष्टि इनके ऊपर हुई; किंतु उन्होंने उसका कहना न माना, जिसके कारण विमाताने इनके हाथ-पैर कटवाकर इन्हें एक कुएँमें गिरवा दिया। राजकुमार बारह वर्षतक इसी कुएँमें पड़े रहे। श्रीगोरक्षनाथजी रमते हुए योगियोंकी जमात लेकर वहाँ पहुँचे। कुएँपर एक योगी जल भरने गये। जब जलपात्र पानीमें गया, तब पूर्ण भक्तने उसे अपने दाँतोंसे पकड़ लिया। योगी जलपात्रको अपनी ओर खींचने लगे और पूर्ण भक्त अपनी ओर। नाथजीके शिष्योंने नाथजीके धूनेपर जाकर उनसे इस बातकी चर्चा की। नाथजी स्वयं कुएँपर इस लीलाको देखनेके लिये आये और उन्होंने स्वयं पात्रको खींचकर चौरंगीनाथजीको बाहर निकाला। नाथजीने अपनी योग-शक्तिसे विभूति आदि लगाकर पुनः उनके हाथ-पैर ठीक किये, उनको योग-दान दिया और कान फाड़कर शिष्य बनाया। पूर्ण भक्त गुरु-आज्ञा पाकर पुनः अपने घर गये। वहाँ जाकर उन्होंने अपनी अंधी माता एवं अंधे पिताको नेत्र दिये तथा जिसने पुत्र पानेके लोभमें इनकी यह गति की थी, उस विमाताको पुत्र दिया। तभीसे इस कूपका जल बहुत पुण्यदायक समझा जाता है। यह स्थान अब पाकिस्तानमें पड़ गया है।

श्रीगोरख-टिल्ला (पंजाब)

यह स्थान जिला झेलम (पंजाब) में है। दीना नगर रेलवे-स्टेशनसे उतरकर लगभग तीन-चार मील पहाड़पर जाना पड़ता है। नीचे झेलम नदी बहती है। यहाँपर भर्तृहरिनाथजी तथा चौरंगीनाथजी आदिने घोर तपस्या की है।

देवी हिंगलाज

यह स्थान योगियोंका प्रधान तीर्थ है। यह बलूचिस्तानमें है। यहाँपर भी ज्योतियाँ प्रकट होती हैं, योगी ज्योतिका दर्शन करते हैं। यहाँ जानेके लिये कराचीसे ऊँटोंपर जाया जाता है। मार्ग तीन मासकी कड़ी यात्रा है। यह स्थान भी अब पाकिस्तानमें चला गया है।

कपूरथला-तपोभूमि

यहाँका धूना सर्वदा प्रज्वलित रहता है। धूनेकी अग्नि कभी शान्त नहीं होने पाती। लगभग २०० वर्षसे आजतक यह अग्नि बराबर जला करती है। नित्य २४ घंटेके बाद धूनेमें नया उपला डाल दिया जाता है। यह स्थान डेरा बूँसाबालके नामसे भी प्रसिद्ध है; क्योंकि इसके चारों ओर मोटे-मोटे ऊँचे बाँसोंका घेरा बना हुआ था। इन्हीं बाँसोंसे इस स्थानकी रक्षा होती थी। प्राचीन कालमें कोई व्यक्ति दिनमें भी इस घेरेके भीतर प्रवेश नहीं कर सकता था। कपूरथलाके राजा रणधीरसिंह बहादुरसे लेकर जस्सासिंह, खड्गसिंह, जगजीतसिंह आदि सभी राजा नाथजीको गुरु एवं देवतारूपमें मानते आये हैं।

अद्वैत

बाबा नाहीं दूजा कोई।
एक अनेकन नाँव तुम्हारे, मोपैं और न होई॥ टेक॥
अलख इलाही एक तूँ तूँहीं राम रहीम।
तूँहीं मालिक मोहना, कैसो नाँउ करीम॥ १ ॥
साँईं सिरजनहार तूँ, तूँ पावन तूँ पाक।
तूँ काइम करतार तूँ, तूँ हरि हाजिर आप॥ २ ॥
रमिता राजिक एक तूँ, तूँ साराँग सुबहान।
कादिर करता एक तूँ, तूँ साहिब सुलतान॥ ३ ॥
अविगत अल्लह एक तूँ, गनी गुसाईं एक।
अजब अनूपम आप है, दादू नाँव अनेक॥ ४ ॥

दादू-सम्प्रदायके पाँच तीर्थ-स्थान

(लेखक—श्रीमङ्गलदासजी स्वामी)

संसारमें सर्वदा महान् पुरुषोंका अवतरण होता रहा है। उन महान् पुरुषोंने अपने जीवनका जिन-जिन स्थलोंमें उपयोग किया, वे स्थल पुनीत एवं तीर्थरूप माने जाते हैं।

राजस्थानके साधक महात्माओंमें दादूजीका स्थान महत्त्वपूर्ण है। उनका काल विक्रम-संवत् १६०१ से १६६० तकका है। वे अपने जन्म-स्थान अहमदाबादसे ११ वर्षकी आयुमें ही साधनार्थ निकल गये थे। उनका जीवन जहाँ-जहाँ विशेष अभिसंधिसे व्यतीत हुआ, वे-वे स्थान पुनीत माने जाने उचित हैं। उनके निर्वाणके पश्चात् वे स्थान दादूपंथी-सम्प्रदायमें तीर्थरूप समझे जाने लगे। उनका क्रम निम्न रूपसे है। १-कल्याणपुर-गिरि (करडालेकी डूँगरी), २-साँभर, ३-आमेर, ४-नरैना, ५-भैराणा। इनका सामान्य परिचय क्रमशः इस प्रकार है—

१. कल्याणपुर-गिरि (करडालेकी डूँगरी)—यह स्थान राजस्थानके पर्वतसर कस्बेसे चार मील उत्तरमें है। फुलेरासे जोधपुर जानेवाली रेलवे-लाइनपर मकराना स्टेशन पड़ता है। यहींसे एक शाखा पर्वतसर गयी है। यह स्थान पहले जोधपुर राज्यमें था। दादूजी महाराज जब अहमदाबादसे गुरु-उपदेशके अनुसार साधनाके लिये निकल पड़े, तब वे सर्वप्रथम आबू आये थे। आबूसे चलकर वे इस करडाले ग्रामके पासकी डूँगरी (पहाड़ी) पर आये। यहीं उन्होंने ६ वर्षतक पहाड़ीकी शिलापर आवास करके आत्म-साक्षात्कारके लिये कठोर साधना की। उक्त साधनाके परिणामस्वरूप ही वे आत्मसाक्षात्कार करनेमें सफल हुए। आप जब यहाँ साधनामें लगे हुए थे, तभी पीथाजीका आपसे साक्षात्कार हुआ। जनश्रुति है कि पीथाजी चोरी-डाका किया करते थे। महाराज दादूजीके सत्संगमें आनेके पश्चात् जब दादूजीको यह विदित हुआ कि पीथाजी एक ख्यातनामा डाकू है, तब उन्होंने पीथाजीको यह दुष्कर्म परित्याग करनेका उपदेश दिया। दादूजीके निर्देशको शिरोधार्यकर पीथाजीने डाका-चोरी न करनेकी उसी समय प्रतिज्ञा की। दादूजी महाराज छः वर्षकी साधनाके पश्चात् यहाँसे लगभग १८ वर्षकी आयुमें साँभर चले आये। निर्वाणसे पहले आमेर-निवासके पश्चात् एक बार पुनः आप इस पहाड़ीपर साधनाके लिये आये थे और तीन वर्षतक यहाँ निवास करके अपनी साधनामें उन्होंने और भी प्रगति की। यह स्थान आपकी तपोभूमि है। इसीसे दादू-सम्प्रदायके तीर्थोंमें इसका प्रथम स्थान है। आजकल इस पहाड़ीके निम्न भागमें एक दादूद्वारा स्थापित है। डूँगरकी वह शिला आज भी महाराज दादूजीकी तपोनिष्ठाकी साक्षी दे रही है।

२. साँभर—साँभर दादूजीका परीक्षा-स्थान है। करडालेकी साधनाके पश्चात् दादूजी साँभर ही आये थे। वे साँभरसे पश्चिम-उत्तरकी ओर सरमें ठहरे। दादूजीने यहींपर सर्वप्रथम अपने निश्चयोंको प्रकट करना प्रारम्भ किया। वे धार्मिक असहिष्णुता एवं मानवमें ऊँच-नीचका भेद करना असङ्गत समझते थे। वे उपासनामें मन्दिर-मसजिद आदिकी आवश्यकता नहीं मानते थे। वर्ग-भेद एवं जाति-भेद भी उन्हें मान्य नहीं था। उन्होंने अपने निश्चयानुसार ये विचार सर्वप्रथम साँभरमें ही व्यक्त किये थे। वे अनुमानतः संवत् १६१६ से १६३२ तक साँभरमें रहे। उस समय अजमेर मुसल्मानी शासनमें था। साँभर भी उन्हींका राज्य था। उपासनामें प्रदर्शन या रूढ़ियोंका कोई महत्त्व नहीं है, दादूजीने इसका जोरसे समर्थन किया। वे घंटा-घड़ियाल, शङ्ख, वजू, बाँग, रोजेका धर्मसे सम्बन्ध नहीं मानते थे। उनके इस तरहके विचार हिंदू-मुसल्मान दोनोंके लिये ही उत्तेजक थे। दादूजीके इन विचारोंका प्रारम्भमें बहुत तीव्र विरोध हुआ। दोनों जातियोंके वे व्यक्ति, जो धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्रमें अपना कुछ वैशिष्ट्य रखते थे, दादूजीसे बहुत अप्रसन्न हुए। उस समयके शासनाधिकारियोंने उनको निगृहीत करनेके लिये उनपर कई तरहका दबाव डाला, रुकावटें खड़ी कीं। उनको विविध प्रकारसे आतङ्कित एवं पीड़ित किया; पर उन बाधाओंका दादूजीपर किसी तरहका प्रभाव नहीं पड़ा, प्रत्युत उन्होंने अपने विचारोंको और भी उग्रता प्रदान की। पर्याप्त समयतक विरोधके रहते हुए दादूजी अपने निश्चयपर अटल रहे तथा अपनी विचारधाराको उसी तरह विशेष दृढ़ताके साथ अभिव्यक्त करते रहे। उधर विरोध करनेवालोंने भी इनकी कथनी और करनीमें पूरा-पूरा सामञ्जस्य देखा तो वे इनकी ओर आकृष्ट होने लगे। दादूजीने यहाँकी कठोर परीक्षामें सफलता प्राप्त

की। अतः यह स्थान भी दादू-सम्प्रदायमें तीर्थ-स्थानीय है। सरमें जिस स्थलपर कुटिया बनाकर दादूजीने चौदह वर्ष व्यतीत किये थे, वहाँ आज भी स्मारकके रूपमें एक छतरी बनी हुई है। वसन्तपञ्चमीको साँभरनिवासी यहाँ आ-आकर अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।

३. आमेर—साँभरमें दादूजीके व्यक्तित्वका उत्थान हो चुका था। आस-पासके विस्तृत क्षेत्रमें इनके महात्मापनकी बात फैल चुकी थी। अनेकों व्यक्तियोंने भिन्न-भिन्न क्षेत्रोंसे आ-आकर इनका शिष्यत्व स्वीकार कर लिया था। सारांश, दादूजी एक उच्च महात्माके रूपमें प्रख्यात हो चुके थे। साँभरमें अब उनकी मान्यता बढ़ रही थी और विरोध प्रायः समाप्त हो चुका था। दादूजीने अपने विचारोंको अन्यत्र पहुँचानेके ध्येयसे साँभरसे आमेरको प्रस्थान किया। आमेर उस समय कछवाहोंकी राजधानी थी। राजा भगवानदासजी आमेरके राजा थे। वे इतिहासप्रसिद्ध महाराज मानसिंहके पिता थे। महाराज भगवानदासजीने दादूजीके आमेर पहुँचनेपर उनका अत्यन्त आदर किया। आगे चलकर महाराज भगवानदासजी उनमें अत्यन्त श्रद्धा रखने लग गये थे। वे उनको गुरुवत् ही मानते एवं सम्मान करते थे। दादूजी आमेरमें दलेरामके बागसे कुछ उत्तरमें एक खुले स्थानमें रहते थे। पहाड़ीकी ढालमें एक गुफा खोद दी गयी थी। उसीमें वे अपनी दैनिक साधना किया करते थे। दादूजी आमेरमें भी लगभग बारह वर्षतक रहे—ऐसा उनके जीवनसे सम्बन्धित गाथाओंसे ज्ञात होता है। संवत् १६४४ के आसपास वे महाराजा भगवानदासजीके बहुत आग्रह करनेपर आमेरसे फतहपुर-सीकरी गये थे। बादशाह अकबरने दादूजी महाराजसे मिलनेकी अत्यन्त तीव्र इच्छा व्यक्त की थी तथा महाराजा भगवानदासजीसे दादूजी महाराजको बुला देनेके लिये अधिकसे अधिक आग्रह किया था। आमेरके निवासकालमें उनके पास अनेक योग्यतम साधक शिष्य बननेको आये। रज्जबजी, जगजीवनजी, जगन्नाथदासजी, संतदासजी आदि दादूजीके शिष्योंमें अग्रणी व्यक्तियोंने यहीं उनका शिष्यत्व ग्रहण किया था। उक्त कालमें दादूजीके सिद्धान्तोंका परीक्षण चलता रहा। कई तरहकी अद्भुत घटनाओंका भी इस कालसे सम्बन्ध है। फतहपुर-सीकरीसे लौटते हुए उन्होंने अनेक स्थानोंमें भ्रमण किया। कुछ समय भ्रमण करनेके बाद दादूजीका आमेरमें दुबारा भी आगमन हुआ था। महाराज भगवानदासजीके देहावसानके पश्चात् महाराजा मानसिंहजी राजा बने। प्रारम्भमें भ्रान्तिवश मानसिंहजीने दादूजीकी कुछ उपेक्षा की, परन्तु कुछ समय पश्चात् ही उन्होंने अपनी भूलका परिमार्जन कर लिया। आमेरमें दादूजीने जिस गुफामें निवास करके एक युग (बारह वर्ष) का समय व्यतीत किया था, उस स्थानपर उस गुफाको उसी रूपमें रखते हुए दादूद्वारेका निर्माण किया गया है। गुफा भी अब पक्की बन गयी है। यह दादूद्वारा आमेरमें प्रवेश करते ही घाटीकी मोड़पर स्थित दिखायी पड़ता है। वसन्तपञ्चमीको यहाँ भी मेला लगता है।

४. नरैना—दुबारा आमेर-परित्यागके पश्चात् दादूजी महाराज एक बार पुनः करडाले पधारे और तीन वर्ष पुनः वहाँ आवास किया तथा राजस्थानके अनेक भागोंमें भ्रमण करके साँभर पधारे। साँभरसे नरैनाके तत्कालीन अधिपति भोजावत ठाकुर, जो दादूजीके अतीव श्रद्धालु सेवक थे, अत्यन्त आग्रह करके संवत् १६५६-५७ में उनको नरैना ले आये। नरैनामें दादूजीने कुछ समय उस त्रिपोलियामें निवास किया, जो अब कुछ खण्डित अवस्थामें तालाबके ईशानकोणपर बना हुआ है। उसके पश्चात् दादूजी महाराज तालाबके नैर्ऋत्यकोणमें एक कंकरीटके टीलेपर शमीवृक्ष (खेजड़ा) के नीचे आ विराजे। उस कंकरीटके टीलेमें खोदकर एक गुफा बना दी गयी। आप उस गुफामें एवं खेजड़ाजीके नीचे बैठकर अपना ध्यान किया करते थे।

नरैनाके निवासकालमें गरीबदासजी, मशकीनदासजी, चाँदाजी, टीलाजी, बखनाजी आदि कई शिष्य भी आपके सांनिध्यमें ही रहा करते थे। नरैनाका निवास दादूजी महाराजके जीवनका अन्तिम काल था। एक बार नरैनाके कुछ शिष्योंके आग्रहसे उन्होंने उन स्थानोंकी यात्रा भी की, जहाँ-जहाँ वे रहे थे। संवत् १६६० की ज्येष्ठ-कृष्णा अष्टमी उनका निर्वाण दिवस है। शरीरके जानेका समय आया देख दादूजी महाराजने अपने पास रहनेवाले शिष्योंको निर्देश कर दिया था कि उनके शरीरको न जलाया जाय और न गाड़ा ही जाय, किंतु उसे वैसे ही भैराणाकी डूँगरीकी खोहमें छोड़ दिया जाय। यह डूँगर नरैनासे आठ नौ मील दूर पूर्वोत्तर कोणमें स्थित है। डूँगरके दूसरी ओर विचूण कस्बा बसा हुआ है। निर्वाणके पश्चात् दादूजीके आज्ञानुसार उनका पाञ्चभौतिक शरीर भैराणाकी खोहमें लाकर रख दिया गया था। नरैनामें त्रिपोलिया, खेजड़ा एवं भजनशाला—ये तीनों स्थान अब भी स्मारक रूपमें विद्यमान हैं। दादूजीके निर्वाण कालसे

उनके उत्तराधिकारी सभी आचार्य नरैनामें ही निवास करते हैं। नरैनामें बावन बीघा क्षेत्रमें दादूपंथी सम्प्रदायके अनेक स्थान बने हुए हैं। संवत् १८९० के आस-पास पटियालामें रहनेवाले महंत स्वामी ठंडीरामजीने नरैनामें एक मन्दिर भी बनवा दिया था, जो अब भी मौजूद है। दादूपंथी सम्प्रदायमें नरैना दादूजी महाराजका निर्वाण-स्थान होनेके कारण अतीव आदरणीय स्थान है। प्रतिवर्ष फाल्गुन-शुक्ला पञ्चमीसे एकादशीतक यहाँ दादू-सम्प्रदायके संत-महात्मा तथा जिज्ञासु जनोंका मेला लगता है।

५. भैराणा—उपर्युक्त विवरणसे स्पष्ट हो गया होगा कि भैराणा दादूजीके अवशेष रखे जानेके कारण उनका स्मारक या समाधि स्थान है। पर्याप्त समयतक दादूजी महाराजके उत्तराधिकारी सम्प्रदायाचार्योंके स्मृतिस्वरूपकी स्थापना यहाँ होती रही। वीतराग भजनानन्दी अनेक महात्माओंने अपने शवको यहीं भैराणाकी खोहमें पहुँचा देनेका निर्देश किया था। ऐसे अनेक सत्पुरुषोंका यह स्थान स्मारक एवं समाधि-स्थल है। उन्नीसवीं शताब्दीके उत्तरार्धमें यहाँ एक निवासस्थान भी बन गया, जो अब भी वर्तमान है। डूँगरकी उपत्यकामें होनेसे यह स्थान स्वाभाविक ही अत्यन्त शान्तिदायक है। अनेक महात्माओंका ऐसा प्रण भी रहता है कि वे साँभर, नरैना तथा भैराणाके क्षेत्रसे बाहर नहीं जाते।

भैराणामें जिस जगह दादूजी महाराजका पाञ्चभौतिक शरीर रखा गया था, उस स्थानपर अब एक विस्तृत चबूतरा बनाकर उसपर एक संगमरमरकी छोटी छतरी बना दी गयी है। डूँगरके अर्धभागकी ऊँचाईपर पालकीजी हैं। दादूद्वारामें खालसाके महात्मा रहते आ रहे हैं। दादूसम्प्रदायके महात्माओंकी अन्त्येष्टिके पश्चात् उनकी भस्म तथा अस्थियाँ भैराणाकी खोहमें भेज दी जाती हैं। एक तरहसे यह स्थान दादूजी महाराज तथा उनके पीछेके अनेक संत-महात्माओंका समाधिस्थल है। अतः यह तीर्थस्वरूप माना जाता है।

फाल्गुन शुक्ला २, ३, ४ को यहाँ वार्षिक मेला लगता है। इसमें दादूपंथी संत एवं सद्गृहस्थ एकत्रित होते हैं। यहाँसे ही लोग फिर नरैना चले जाते हैं।

इस तरह उपर्युक्त पाँचों स्थान अपनी-अपनी विशिष्टताओंके कारण दादू-सम्प्रदायमें पञ्चपुरीके रूपमें मान्य हैं। वैसे महात्माओंकी चरण-धूलिसे पुनीत हुए सभी स्थान तीर्थस्वरूप ही हैं। जैसा कि स्वयं महाराज दादूजीका निर्देश है—

प्रीतमके पग परसिये मुझ देखन का चाव।
तहँ ले सीस नवाइये, जहाँ धरे थे पाँव॥

श्रीस्वामिनारायण-सम्प्रदायके प्रमुख तीर्थ

(लेखक—पं० श्रीईश्वरलालजी लाभशङ्करजी पंड्या बी०ए०, एल-एल० बी०)

विक्रमकी उन्नीसवीं शताब्दीमें भगवान् श्रीस्वामि-नारायणने, यद्यपि आपका प्राकट्य उत्तर-भारतमें हुआ था, अपनी ग्यारह वर्षकी वयमें ही गृह त्यागकर, समग्र भारतवर्षको पुनीत करते हुए, गुजरात प्रान्तमें पधारकर इसी क्षेत्रको अनन्त जीवोंके उद्धारके लिये अपना कार्य-क्षेत्र बनाया। भगवान्ने अपना सारा जीवन महागुजरातमें ही बिताकर यहाँकी प्रजाका आध्यात्मिक, सामाजिक एवं नैतिक जीवन बहुत उन्नत किया। आज महागुजरातमें लाखोंकी संख्यामें इस सम्प्रदायके अनुयायी हैं, जो भगवान् स्वामिनारायणको पूर्ण पुरुषोत्तमका आविर्भाव समझकर अपने इष्टदेवके रूपमें पूजते हैं।

इस सम्प्रदायके शताधिक तीर्थस्थान हैं; किंतु इस लघु लेखमें सब तीर्थोंका परिचय देना कठिन होनेके कारण केवल प्रमुख तीर्थोंका ही परिचय दिया जाता है।

१-अहमदाबाद

सम्प्रदायके दो विभाग किये गये हैं। भारतवर्षका भौगोलिक दृष्टिसे दो विभागोंमें विभाजन करके उत्तर-विभागकी गद्दी और प्रमुख स्थान अहमदाबादमें—जो गुजरातका मुख्य नगर है—निर्माण किया गया है। अहमदाबाद साभ्रमती नदीके तटपर बसा हुआ बड़ा औद्योगिक नगर है। सम्प्रदायकी यहाँकी गद्दी 'नर-नारायणदेवकी गद्दी' कही जाती है। इस सम्प्रदायके उत्तर-विभागके आचार्यका भी यहीं निवास-स्थान है। भगवान् स्वामिनारायणने अपने जीवनकालमें, स्वयं निर्माण कराये हुए महामन्दिरोंमें सबसे पहले इस नगरमें ही वि०सं० १८७८ में नितान्त मनोहर, कला और स्थापत्यका प्रतीक-सा 'श्रीनर-नारायण' का मन्दिर बनवाया और आपने ही अपने हाथोंसे इस मन्दिरमें

श्रीनर-नारायण, भक्ति-धर्म और वासुदेव एवं श्रीराधा-कृष्णकी नितान्त सुन्दर मूर्तियोंका प्रतिष्ठान किया। अहमदाबादमें प्रथम श्रेणीके दर्शनीय एवं मनोहर स्थानोंमें इस मन्दिरकी गिनती है। इस स्थानपर प्रतिवर्ष दो मेले लगते हैं—(१) कार्तिक शुक्ला एकादशीसे पूर्णिमातक और (२) चैत्र-शुक्ला नवमीसे पूर्णिमातक।

२-वडताल-स्वामिनारायण

यह कस्बा पश्चिम-रेलवेपर बड़ौदा-अहमदाबादके मध्यस्थित वोरिआवी स्टेशनसे तीन मीलकी दूरीपर बसा है। बोरिआवीसे बडताल-स्वामिनारायणतक रेल जाती है।

सारे गुजरातमें चरोतर सबसे सुन्दर और उर्वर प्रदेश है। वडताल चरोतरका केन्द्र है, इसलिये यहाँका जल-वायु उत्कृष्ट आरोग्यप्रद है।

वि० सं० १८८१ में भगवान् स्वामिनारायणने तीन शिखरवाला एक और महामन्दिर यहाँपर बनवाया। मन्दिर नितान्त भव्य, आकर्षक और कला-सौन्दर्यका प्रतीक-सा है। निजमन्दिरोंके तीन खण्ड हैं। मध्यखण्डमें लक्ष्मीनारायण और रणछोड़जी, उतरखण्डमें धर्म, भक्ति और वासुदेव तथा दक्षिण-खण्डमें राधा-कृष्ण और हरिकृष्ण नामकी अपनी मूर्ति भगवान् स्वामिनारायणने अपने ही हाथोंसे प्रतिष्ठित की। मूर्तियाँ भव्य और सुन्दर हैं तथा आज भी अनेक भक्तोंको चमत्कारोंसे प्रभावित करके आकृष्ट कर रही हैं। मन्दिरमें दर्शकोंके लिये विशाल गुम्बज (मण्डप) है, उसके चारों ओर दशावतारोंकी कलापूर्ण मूर्तियाँ हैं।

गुम्बजके ऊपरकी छतमें भगवान् स्वामिनाराणके जीवनके अनेक प्रसङ्ग कलात्मक ढंगसे चित्रित किये गये हैं। मुख्य मन्दिरके चारों ओर शाला-परिशालाओंका लंबा विस्तार है। सम्प्रदायके साधुओंका आश्रम, नैष्ठिक ब्रह्मचारियोंका आश्रम, अक्षरभवन (जिसमें भगवान् स्वामिनारायणकी साङ्गोपाङ्ग मूर्तियाँ और उनके प्रासादिक वस्त्र, पुस्तक एवं अन्य पदार्थोंका संग्रह है), विस्तीर्ण सभामण्डप आदि स्थान दर्शनीय हैं। मन्दिरके प्रवेशद्वारमें दाहिनी ओर हनुमान्‌जी और बायें हाथपर गणेशजीकी मूर्तियाँ हैं। मुख्य-मन्दिरके नैर्ऋत्यकोणमें रंगमहल नामका अति पवित्र स्थान है। जहाँ विराजकर भगवान्‌ने अपने शिष्योंके प्रति एक आज्ञापत्र लिखा था, जिसको 'शिक्षापत्री' कहते हैं। शिक्षापत्री सम्प्रदायके अनुयायियोंके लिये अवश्य पालनीय नियमोंकी पुस्तिका है। गाँवके पास चारों ओर मनोहर सोपानपंक्ति-युक्त बड़ा सुन्दर गोमती सरोवर है, जो स्वयं भगवान्‌ने बनवाया था और जिसकी अपने ही हाथोंसे मिट्टी निकाली थी। चारों ओरकी वनश्री उसकी शोभा बहुत बढ़ाती है। पास ही पीठाधीश आचार्य महोदयका भव्य प्रासाद, विस्तीर्ण उद्यान और संस्थाका बड़ा वारिगृह है।

सम्प्रदायके दक्षिण-विभागके पीठाधीश्वर आचार्यका प्रमुखस्थान होनेके कारण वडतालका माहात्म्य सम्प्रदायमें अत्यधिक है।

यहाँपर प्रत्येक पूर्णिमाको छोटा और प्रतिवर्ष कार्तिक-शुक्ला एकादशीसे पूर्णिमातक और चैत्र-शुक्ला नवमीसे पौर्णमासीतक भारी मेला लगता है।

३-गढड़ा—स्वामिनारायण

सौराष्ट्रमें वोटाद जंक्शनसे भावनगर जानेवाली रेलवे-लाइनपर निगाला जंक्शन है। निगालासे 'गढड़ा' तक एक और लाइन जाती है। गढड़ा भावनगर राज्यान्तर्गत एक छोटी-सी जागीर थी। गढड़ाके अधिपति दादा खाचर भगवान् स्वामिनारायणके अनन्य भक्त थे। इसलिये भगवान्‌ने गढड़ाको अपना 'घर' बनाया था और जीवनका अधिकतर समय यहीं व्यतीत किया था। दादा खाचरने भी अपना सर्वस्व भगवान्‌के चरणोंमें अर्पण कर दिया था; इसलिये भक्तवश भगवान्‌ने राजभवनके विशाल घेरेमें वि० सं० १८८४ में भव्यातिभव्य, नितान्त मनोहर महामन्दिर बनवाया और उसके मध्यखण्डमें अपने ही अङ्ग-उपाङ्ग-सदृश और अपनी ही ऊँचाईकी श्याम आरसकी एक मनोहर मूर्ति 'श्रीगोपीनाथ' नामसे, अपने ही हाथोंसे प्रतिष्ठापित की; साथ-साथ धर्मदेव, भक्तिमाता, वासुदेव, श्रीकृष्ण-बलदेव और रेवतीजी तथा सूर्यनारायणकी मूर्तियोंकी भी आपने अपने ही हाथोंसे प्राण-प्रतिष्ठा की।

मन्दिरके पूर्वमें जो प्रवेशद्वार है, वह सचमुच भव्य है और कलाकी दृष्टिसे अत्यन्त दर्शनीय है। मन्दिरके दक्षिणमें दादा खाचरके और उनकी बहनों जीवुषा और लाडुषाके—जो परमभक्त, परमयोगिनी और आजीवन-ब्रह्मचारिणी थीं—निवास-स्थान जैसे थे, वैसे ही आज भी सुरक्षित हैं। राजभवनके चौकमें आज भी एक नीमवृक्ष खड़ा है, जो भगवान् स्वामिनारायणके समयका ही है और जिसके नीचे भगवान्‌ने अनेक सभाएँ की हैं। पास ही 'अक्षरओरडी' है। जिसमें भगवान् निवास करते थे। गढड़ाके पासमें ही घेला नदी बहती है,

जिसको 'उन्मत्त-गङ्गा' भी कहते हैं। भगवान् स्वामिनारायणकी अनकानेक जल-क्रीड़ाओंसे और उनके पाँच सौ परमहंसोंके स्नानसे पवित्र इस गङ्गामें प्रतिवर्ष लाखों यात्री स्नान करके पवित्र होते हैं। भगवान्ने देहोत्सर्ग भी वि०सं० १८८६ में गढड़ामें ही किया। जहाँ अग्निसंस्कार किया गया था, वह समाधि-स्थान भी लक्ष्मीवाड़ीमें दर्शनीय है। सम्प्रदायमें और महागुजरातमें 'गढड़ा' तीर्थका विशेष गौरव है, वह प्रतिवर्ष लाखों यात्रियोंके यातायातसे पूर्ण रहता है।

प्रतिवर्ष आश्विन मासकी शुक्ल द्वादशीपर यहाँ भारी मेला लगता है। यात्रियोंकी सुविधाके लिये बड़ी-बड़ी धर्मशालाएँ खड़ी की गयी हैं और बिना किसी भेदभावके उनके खाने-पीने एवं बिस्तर आदिकी व्यवस्था संस्थाकी ओरसे होती है।

४-सारङ्गपुर

पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबाद-धंधूका भावनगर लाइनके बोटाद जंक्शनसे पूर्वमें ६ मीलकी दूरीपर यह बड़ा तीर्थ 'कष्टभञ्जन हनुमान्' का मन्दिर होनेके कारण समस्त महागुजरातमें सुप्रसिद्ध है। भगवान् स्वामिनारायणके परमहंसोंमें अग्रगण्य स्वामी गोपालानन्दजीने हनुमान्जीकी मूर्तिकी यहाँ प्रतिष्ठा की और अपने योगैश्वर्यसे मूर्तिमें इतना प्रभाव डाल दिया कि आजतक हजारों यात्रियोंका यातायात यहाँ बना रहता है। भूत-प्रेतादिकी बाधाओंसे यात्री यहाँ आते ही तुरन्त मुक्त हो जाते हैं—ऐसी मान्यता सारे गुजरातमें प्रचलित है। हनुमान्जीके अनेकानेक चमत्कार आज भी होते रहते हैं। सम्प्रदायके आचार्य महोदयका सुन्दर स्थान और विस्तीर्ण उद्यान भी बहुत आकर्षक है। यहाँ प्रत्येक शनिवार और प्रत्येक आश्विन मासकी कृष्णचतुर्दशीके दिन मेला लगता है। यात्रियोंके रहनेकी और खाने-पीनेकी व्यवस्था संस्था बिना मूल्य करती है।

५-धोलेरा बंदर

पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबाद-धंधूका शाखाके धंधूका स्टेशनसे १६ मीलकी दूरीपर यह प्राचीन नगर एक समय समुद्री व्यापारका भारी अड्डा था। समुद्र दूर खिसक जाने कारण आज सागरी व्यापार बहुत कम हो गया है। यहाँपर भगवान् स्वामिनारायणने वि० सं० १८८२ में एक भव्य मन्दिर बनवाकर उसमें अपने ही हाथोंसे मदनमोहनदेव-राधाकृष्ण और हरिकृष्ण नामकी सुन्दर मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कीं। भगवान् स्वामिनारायण और उनके प्रमुख शिष्य वैराग्य-मूर्ति निष्कुलानन्द स्वामीकी प्रासादिक भूमि होनेके कारण इस स्थानका सम्प्रदायमें महान् गौरव है और अनेकानेक यात्री यहाँ आकर कृतकृत्य होते हैं।

यात्रियोंके रहनेकी और खाने-पीनेकी व्यवस्था बिना मूल्य करती है।

६-भुज (कच्छ)

भुज कच्छका प्रधान नगर है। रेल-मार्गसे यहाँ पश्चिम-रेलवेकी पालनपुर-गाँधीधाम शाखाद्वारा जानेमें सुविधा रहती है। वहाँ वायुयानोंका अड्डा भी है। स्वामिनारायण-सम्प्रदायका दूसरा नाम उद्धव-सम्प्रदाय है। भगवान् स्वामिनारायणके गुरु स्वामी रामानन्दजीके, जो उद्धवजीके अवतार माने गये हैं, आध्यात्मिक प्रचार-आन्दोलनका भुज एक बड़ा केन्द्र था। इसलिये भगवान् स्वामिनारायणने भी इस नगरमें वि० सं० १८६२ से १८६७ तक निवास किया था। भगवान् स्वामिनारायण और स्वामी रामानन्दजीका प्रासादिक स्थान होनेके कारण यह नगर सम्प्रदायमें बड़ा तीर्थ माना गया है। भगवान्ने यहाँ एक सुन्दर महामन्दिर बनवाकर श्रीनर-नारायणदेवकी प्रतिष्ठा अपने हाथोंसे की थी। मन्दिरमें श्वेत आरसकी, भगवान् स्वामिनारायणके बालस्वरूपकी 'घनश्याम' नामकी सुन्दर मूर्ति भारतीय कलाका उत्कृष्ट नमूना है। सम्प्रदायके सौ साधुओंका यहाँ स्थायी निवास रहता है। आदर्श, त्याग, तपस्या, विराग और साधुताके श्रेष्ठ गुणोंको जीवनमें मूर्तिमान् करनेवाले इस साधु-समुदायके प्रति सम्प्रदायमें बहुत प्रतिष्ठा और आदर है। इसलिये संत-समागम-दर्शन-स्पर्शके भूखे हजारों मुमुक्षु प्रतिवर्ष भुजकी यात्रा करते हैं।

७-जूनागढ़ (सौराष्ट्र)

ऐतिहासिक एवं धार्मिक दृष्टिसे यह प्राचीन नगर सौराष्ट्रमें सुविख्यात है। भूतपूर्व जूनागढ़ राज्यकी राजधानी होनेके कारण नगर बहुत सुन्दर है। शिल्प और स्थापत्यके अवशेषोंसे भरा हुआ यह नगर गिरनार पर्वतकी उपत्यकामें बसा हुआ है।

भगवान् स्वामिनारायणने यहाँ वि० सं० १८८४ में एक भव्य महामन्दिर बनवाकर राधारमणदेव एवं राधिकाजीकी तथा हरिकृष्ण नामसे अपनी मूर्ति स्थापित करके अपने ही हाथोंसे उनकी प्राण-प्रतिष्ठा की थी। इनके बाद रणछोड़जी, त्रिविक्रमजी, सिद्धेश्वर महादेव, पार्वतीजी, गणपति आदिकी मूर्तियाँ भी दर्शनीय हैं। भगवान् स्वामिनारायणके विचरणसे सारा नगर ही प्रासादिक हो गया है; तथापि यहाँके स्थानोंमें भक्तराज

नरसिंह मेहताका मन्दिर, दामोदरकुण्ड, सम्राट् अशोकका शिलालेख, उपरकोटका किला आदि स्थान बहुत पवित्र और दर्शनीय हैं। हजारों यात्री प्रतिवर्ष यहाँ आते-जाते रहते हैं।

जूनागढ़ अहमदाबादसे प्रभासपाटण जानेवाली रेलवे-लाइनका एक मुख्य स्टेशन है।

८-छपैया-स्वामिनारायण

सम्प्रदायका यह बड़ा महत्त्वपूर्ण तीर्थ है। भगवान् स्वामिनारायण पिता धर्मदेव और माता भक्तिसे वि०सं० १८३७ की चैत्र-शुक्ला नवमीकी रातको दस बजे यहाँ प्रकट हुए थे। महाप्रभुके जन्म-स्थलपर अहमदाबाद-पीठकी ओरसे यहाँ भव्य महामन्दिर बनवाया गया है और भगवान् स्वामिनारायणके बालस्वरूप घनश्याम महाराजकी मूर्ति तथा श्रीकृष्ण, बलदेव, राधिकाजी, रेवती और भगवान्‌के माता-पिता धर्म और भक्तिकी मूर्तियाँ स्थापित की गयी हैं। सम्प्रदायमें इस तीर्थका माहात्म्य बहुत अधिक माना जाता है। यहाँके लिये लखनऊसे बाराबंकी और गोंडा होकर जाना पड़ता है। 'छपैया-स्वामिनारायण' पूर्वोत्तर-रेलवेका स्टेशन है।

उपसंहार

सम्प्रदायके सभी तीर्थोंकी विशिष्टता यह है कि महिलाओं एवं पुरुषोंके लिये दर्शनकी अलग-अलग व्यवस्था है। मन्दिरोंमें स्त्री-पुरुषोंका परस्पर स्पर्श प्रतिबन्धित है। बहुत-से स्थानोंमें तो स्त्रियों एवं पुरुषोंके लिये अलग-अलग मन्दिर हैं। स्त्रियोंके मन्दिरोंका संचालन स्त्रियाँ ही करती हैं, स्त्रियोंको उपदेश भी स्त्रियाँ ही देती हैं।

प्रत्येक तीर्थमें संस्थाकी ओरसे यात्रियोंके लिये खाने-पीनेकी और सोनेकी सारी व्यवस्था स्थानीय संस्था बिना मूल्य करती है।

अनेक तीर्थोंकी एक कथा

बहुत-से तीर्थ ऐसे हैं, जिनके श्रीविग्रहकी उपलब्धिके सम्बन्धमें प्रायः एक-सी घटना कही जाती है। एक-सी मिलती-जुलती घटनाओंका अनेक स्थानोंपर होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। भारत ऋषियों, योगियों, महापुरुषों, भगवदवतारों तथा देवताओंसे सेवित देश है। देशमें लोकोत्तर महापुरुषोंद्वारा स्थापित-आराधित सहस्रशः देवविग्रह हैं। ऐसे श्रीविग्रहोंमें अचिन्त्य शक्तिका होना स्वाभाविक है। ऐसी अवस्थामें अद्भुत घटनाएँ उन श्रीविग्रहोंके सम्बन्धमें घटीं, यह आश्चर्यकी बात नहीं कि उनमें बहुत-सी घटनाएँ परस्पर मिलती-जुलती हों।

एक-सी घटना बार-बार देनेसे बहुत विस्तार होता था; इसलिये ऐसी घटनाओंमेंसे जो परस्पर मिलती-जुलती हैं, मुख्य चार यहाँ दी जा रही हैं—

१-इनमेंसे पहली घटना सबसे अधिक शिवजीकी लिङ्ग-मूर्तियोंकी प्राप्तिके सम्बन्धमें कहीं जाती है। वैसे महाराज विक्रमादित्यको अयोध्या नगरका पता भी ऐसी ही घटनासे लगा।

कोई ग्वाला प्रतिदिन वनमें गाय चराने जाया करता था। गायोंके झुंडमेंसे कोई विशेष गाय जब संध्याको वनसे लौटती, तब पता लगता कि उस दूध देनेवाली गायके थनोंमें दूध नहीं है। गायका स्वामी अप्रसन्न होता था। ग्वालेने गाय दुह ली, यह संदेह स्वाभाविक था।

ग्वाला वनमें उस विशेष गायपर दृष्टि रखता है। जब वह गाय सब गायोंसे अलग वनमें जाने लगती है, तब वह उसका पीछा करता है। गाय एक विशेष स्थानपर जाकर खड़ी हो जाती है और उसके थनोंसे स्वयं दूधकी धारा गिरने लगती है।

ग्वाला यह बात गायके स्वामीको लौटकर बतलाता है। उसकी बातपर विश्वास नहीं किया जाता। गायका स्वामी स्वयं वनमें जाकर इस घटनाकी जाँच करता है। घटनाको सत्य देखकर जहाँ गाय दूध गिराती है, उस स्थानकी खोज होती है और वहाँ शिवलिङ्ग (कहीं-कहीं अन्य भगवन्मूर्ति) मिलता है।

बंगालके सुप्रसिद्ध तीर्थ तारकेश्वर तथा अन्य अनेक स्वयम्भू लिङ्गोंके सम्बन्धमें यह घटना कही जाती है। कालक्रमसे किसी महापुरुषके द्वारा आराधित लिङ्गविग्रह भूमिमें दबा रह जाय, यह सम्भव ही है और तब यह भी सम्भव है कि उस विग्रहका दिव्य प्रभाव पास चरती गायसे उस विग्रहके दुग्धाभिषेककी व्यवस्था करा ले। देशमें सभी कहीं शिवलिङ्गकी पूजा होती है। अद्भुत प्रभावसम्पन्न लिङ्ग-विग्रह भी बहुत अधिक हैं। अतः ऐसी घटना बहुत-से स्थानोंके सम्बन्धमें हुई हो, यह भी सहज सम्भव है।

२-दूसरी घटना जल-तीर्थोंके सम्बन्धकी है। देशमें पावनतम तीर्थ स्थान-स्थानपर हैं। उनका भी अलौकिक प्रभाव है। कोई पवित्र तीर्थ-सरोवर या कुण्ड कालान्तरमें नष्ट हो जाय, मिट्टीसे भर जाय—यह सहज सम्भव है। ऐसा होनेपर भी उसका प्रभाव तो नष्ट हो नहीं जायगा। उस प्रभावसे ऐसे लुप्त तीर्थोंमें एक-सा चमत्कार होना बहुत स्वाभाविक है।

कोई नरेश, शिकारी या अन्य यात्री, जिसके-शरीरमें कुष्ठ रोग (कहीं-कहीं वात-व्याधि) था, शिकार या यात्राके निमित्तसे घूमता हुआ ऐसे स्थानपर पहुँचता है, जहाँ एक गड्ढेमें गंदा—कर्दमप्राय जल है। उसका आखेट किया हुआ पशु-मृग या वराह अथवा अन्य कोई पशु या पक्षी उस व्यक्तिके सामने उस गड्ढेके जलमें लोट-पोट हो लेता है और इससे उस पशु या पक्षीके शरीरका काला भाग श्वेत हो जाता है। यह देखकर वह व्यक्ति स्वयं भी उस गड्ढेके गंदे पानीमें वस्त्र उतारकर किसी प्रकार स्नान करता है और इससे उसका शरीर रोगरहित पूर्ण स्वस्थ हो जाता है। वह व्यक्ति उस गड्ढेके स्थानपर कुण्ड या सरोवर बनवाकर उस तीर्थका उद्धार करता है।

इस कथामें गलितकुष्ठ, श्वेतकुष्ठ तथा वात-रोगके अच्छे होनेकी बातें आती हैं।

३-तीसरी कथा भी कुछ थोड़े स्थानोंके सम्बन्धमें आती है, किंतु प्रायः एक-से रूपमें आती है।

किसी नरेश या बहुत धनी व्यक्तिके स्वयं या उसकी स्त्री, पुत्र, पत्नी, कन्यामेंसे किसीके मस्तकमें भयंकर दर्द रहा करता है। दर्द सहसा उठता और सहसा रुक जाया करता है। बड़े-बड़े ज्योतिषी बुलाये जाते हैं। कोई सिद्ध पुरुष बतलाते हैं कि उस व्यक्तिकी पूर्वजन्मकी खोपड़ी कहीं पड़ी है। उस खोपड़ीमें कोई वृक्ष उग आया है। वायुसे वृक्षकी शाखाएँ जितनी हिलती हैं, उस व्यक्तिके मस्तकमें उतना ही दर्द होता है।

लोग बताये हुए स्थलपर जाते हैं और जाँच करनेपर यह बात सत्य सिद्ध होती है। वह वृक्ष काट दिया जाता है। इससे मस्तकका दर्द सदाके लिये दूर हो जाता है।

उन सिद्ध पुरुषके बताये अनुसार वहीं आस-पास कोई मूर्ति मिलती है।

४-चौथी घटना बहुत अधिक मूर्तियोंके सम्बन्धमें कही जाती है। इस प्रकार भी प्रायः शिवलिङ्ग ही मिले हैं।

कोई व्यक्ति कहीं किसी कामसे मिट्टी खोद रहा था। मिट्टी खोदते समय (किसी मूर्तिका मिलना स्वाभाविक है और बहुत मूर्तियाँ इस प्रकार मिली हैं।) खोदनेवालेका शस्त्र किसी मूर्तिसे लग गया और मूर्तिसे रक्त निकलने लगा। यह बात उसने औरोंको बतायी। वहाँ भगवन्मूर्ति पायी गयी। अभिषेकादि करनेपर मूर्तिसे रक्त निकलना बंद हो गया।

खोदते जानेपर भी मूर्तिका पता नहीं लगा, यह बात भी बहुत मूर्तियोंके सम्बन्धमें कही जाती है और मूर्ति धीरे-धीरे बढ़ती है, यह भी अनेक मूर्तियोंके सम्बन्धमें कहा जाता है।

भगवान्‌की लीला-कथा, महान् तीर्थ

तत्रैव गङ्गा यमुना च वेणी गोदावरी सिन्धुसरस्वती च।
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतोदारकथाप्रसङ्गः॥

जहाँ अच्युत-भगवान्‌की मनोहर कथा होती है, वहाँ गङ्गा, यमुना, वेणी, गोदावरी, सिन्धु और सरस्वती आदि सभी तीर्थ रहते हैं।

कथा भागवतस्यापि नित्यं भवति यद्गृहे। तद् गृहं तीर्थरूपं हि वसतां पापनाशनम्॥

जिस घरमें नित्य भागवतकी कथा होती है, वह घर भी तीर्थरूप ही है तथा उसमें रहनेवालोंके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः। तीर्थं फलति कालेन सद्यः साधुसमागमः॥

साधुओंका दर्शन बड़ा पवित्र होता है; क्योंकि साधु तीर्थरूप ही हैं। तीर्थ तो कालपर फल देते हैं, पर साधु-समागमका फल तो तुरन्त मिलता है।

यौवनं धनमायुष्यं पद्मिनीजलबिन्दुवत्। अतीव चपलं ज्ञात्वाच्युतमेकं समाश्रयेत्॥

जवानी, धन, आयु कमलपर पड़ी हुई जलकी बूँदके समान अत्यन्त चञ्चल हैं—यह जानकर एकमात्र अच्युत-भगवान्‌का ही भलीभाँति आश्रय लेना चाहिये।

तीर्थ और उनकी खोज

'तीर्थ' शब्दका अर्थ है—पवित्र करनेवाला। महापुरुषोंको इसीलिये परमतीर्थ कहा जाता है; क्योंकि अपने लोकोत्तर भगवदीय गुणोंके प्रभावसे वे तीर्थोंको भी पवित्र करते हैं—'**तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि**'।

सामान्यतः उस नदी, सरोवर, मन्दिर अथवा भूमिको तीर्थ कहा जाता है, जहाँ ऐसी दिव्यशक्ति है कि उसके सम्पर्कमें (स्नान-दर्शनादिके द्वारा) जानेपर मनुष्यके पाप अज्ञातरूपसे नष्ट हो जाते हैं।

ऐसे तीर्थ तीन प्रकारके हैं—१-नित्यतीर्थ, २-भगवदीय तीर्थ, ३-संत-तीर्थ।

नित्यतीर्थ—कैलास, मानसरोवर, काशी आदि नित्यतीर्थ हैं। सृष्टिके प्रारम्भसे यहाँकी भूमिमें दिव्य पावनकारिणी शक्ति है। इसी प्रकार गङ्गा, यमुना, रेवा (नर्मदा), कावेरी आदि पुण्यसरिताएँ भी नित्यतीर्थ हैं।

भगवदीय-तीर्थ—जहाँ भगवान्‌का अवतार हुआ, जहाँ उन्होंने कोई लीला की, जहाँ उन्होंने किसी भक्तको दर्शन दिये, वे भगवदीय तीर्थ हैं।

भगवान् नित्य हैं, सच्चिदानन्दघन हैं। उनका प्रभाव नित्य है, चिन्मय है। जिस स्थलमें उनके श्रीचरण कभी पड़े, वह भूमि दिव्य हो गयी। उसमें प्रभुके चरणारविन्दका चिन्मय प्रभाव आ गया और वह प्रभाव ऐसा नहीं है कि काल उसे प्रभावित कर सके। वह प्रभाव तो नित्य है।

संत-तीर्थ—जो जीवन्मुक्त, देहातीत, परमभागवत या भगवत्प्रेममें तन्मय संत हैं, उनका शरीर भले पाञ्चभौतिक एवं नश्वर हो; किन्तु उस देहमें भी संतके दिव्यगुण ओतप्रोत हैं। उस देहसे उन दिव्य गुणोंके परमाणु सदा बाहर निकलते रहते हैं और अपने सम्पर्कमें आनेवाली वस्तुओंको प्रभावित करते रहते हैं। इसलिये संतके चरण जहाँ-जहाँ पड़ते हैं, वह भूमि तीर्थ बन जाती है। संतकी जन्मभूमि, उसकी साधनभूमि और उसकी निर्वाण (देहत्याग)-भूमि एवं समाधि विशेषरूपसे पवित्र हैं।

सम्पूर्ण भारत तीर्थ है

इस प्रकार हम विचार करें तो कैलाससे कन्याकुमारी और कामाख्यासे कच्छतक सम्पूर्ण भारत-भूमि तीर्थ है। यहाँकी भूमिका प्रत्येक कण भगवान् या भगवान्‌के भुवनपावन भक्तों, लोकोत्तर महापुरुषोंकी चरण-रजसे पुनीत है। यहाँ ऐसा कोई अभागा क्षेत्र नहीं मिलेगा, जहाँ आस-पास कोई पुनीत नदी, पवित्र सरोवर, तीर्थभूत पर्वत, लोकपावन मन्दिर या कोई तीर्थभूमि न हो। यहाँ तो सब कहीं तीर्थ हैं। एक-एक तीर्थमें शत-शत तीर्थ हैं। सुर-वन्दिता है यह भारतभूमि।

देवता भी भारतवर्षमें उत्पन्न हुए मनुष्योंकी महिमाका गान करते हुए कहते हैं—

अहो अमीषां किमकारि शोभनं
प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः।
यैर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे
मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहा हि नः॥
कल्पायुषां स्थानजयात् पुनर्भवात्
क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।
क्षणेन मर्त्येन कृतं मनस्विनः
संन्यस्य संयान्त्यभयं पदं हरेः॥
प्राप्ता नृजातिं त्विह ये च जन्तवो
ज्ञानक्रियाद्रव्यकलापसम्भृताम् ।
न वै यतेरन्नपुनर्भवाय ते
भूयो वनौका इव यान्ति बन्धनम्॥
यद्यत्र नः स्वर्गसुखावशेषितं
स्विष्टस्य सूक्तस्य कृतस्य शोभनम्।
तेनाजनाभे स्मृतिमज्जन्म नः स्याद्
वर्षे हरिर्यद्भजतां शं तनोति॥

(श्रीमद्भा० ५। १९। २१, २३, २५, २८)

'जिन जीवोंने भगवान्‌के सेवायोग्य भारतमें मनुष्य-जन्म प्राप्त किया है, उन्होंने कौन-सा ऐसा पुण्य किया है! अथवा इनपर स्वयं श्रीहरि ही प्रसन्न हो गये हैं! इस परम सौभाग्यके लिये तो हमलोग भी निरन्तर तरसते रहते हैं। इस स्वर्गकी तो बात ही क्या, कल्पभरकी आयुवाले ब्रह्मलोकादिकोंकी अपेक्षा भी भारतमें अल्पायु होकर जन्म लेना अच्छा है; क्योंकि यहाँ धीर पुरुष क्षणभरमें ही अपने मर्त्य शरीरसे किये कर्मोंको भगवदर्पण करके श्रीहरिके अभयपदको प्राप्त कर लेता है। वस्तुतः जिन जीवोंने भारतमें ज्ञान, तदनुकूल कर्म तथा उस कर्मके उपयोगी द्रव्यादि-सामग्रीसे सम्पन्न मनुष्य-जन्म पाया है, वे यदि मुक्तिके लिये प्रयत्न नहीं करते तो व्याधकी फाँसीसे छूटकर भी फलादिके लोभसे उसी वृक्षपर विहार करनेवाले वनवासी पक्षियोंके समान फिर बन्धनमें पड़ जाते हैं। अतः

अबतक स्वर्गसुख भोग लेनेके बाद हमारे पूर्वकृत यज्ञ, प्रवचन और शुभ कर्मोंसे यदि कुछ भी पुण्य बच रहा हो तो उसके प्रभावसे हमें इस भारतवर्षमें भगवान्‌की स्मृतिसे युक्त मनुष्य-जन्म मिले; क्योंकि श्रीहरि अपना भजन करनेवालोंका सब प्रकारसे कल्याण करते हैं।'

प्राचीन तीर्थ हम चाहते थे और अनेक लोगोंके ऐसे सुझाव भी आये थे कि महाभारत तथा पुराणोंमें जिन तीर्थोंके नाम हैं, उनका वर्तमान नाम तथा वर्तमान स्थान अवश्य सूचित करना चाहिये; किंतु बहुत शीघ्र यह ज्ञात हो गया कि ऐसा कर पाना एक सीमातक—बहुत छोटी सीमातक ही सम्भव है। बहुत थोड़े प्राचीन तीर्थ, जो प्रख्यात हैं, जाने जा सकते हैं।

कालगत कठिनाई हमारा इतिहास प्राचीन है—अरबों वर्ष प्राचीन—और तीर्थोंको ध्यानमें रखें तो वह नित्य है; क्योंकि कल्पान्तरके भी तीर्थोंका वर्णन तो पुराणोंमें है ही। अरबों वर्ष प्राचीन इतिहासके स्थलों एवं स्मारकोंको पानेकी आशा कोई नहीं कर सकता।

भगवान् श्रीरामका अवतार यदि पिछले त्रेतामें ही मानें तो भी उन्हें हुए लगभग सवा नौ लाख वर्ष हो चुके। महाभारतके अनुसार तो रामावतार हुए प्रायः पौने दो करोड़ वर्ष बीत चुके। पर इतने वर्षोंकी न कोई मूर्ति मिल सकती है न मन्दिर; क्योंकि पत्थरकी आयु इतनी नहीं है। इन लाखों वर्षोंमें नदीकी धारा कहाँ-से-कहाँ गयी, उसने कितने स्थलोंको काटा-बहाया, कितने पर्वत भूगर्भमें गये और पृथ्वीपर दूसरे कौन-कौनसे परिवर्तन हुए, यह कौन बता सकता है।

भगवान् श्रीरामसे पूर्वके अवतारोंको लें तो काल अनुमानसे परे हो जाता है। ध्रुवजी स्वायम्भुव मनुके पुत्र थे। प्रह्लादजी भी पहलेके कल्पोंमें हुए हैं। इस श्वेतवाराह-कल्पके प्रारम्भमें ही जलप्रलय हो चुका है, यह बात सभी जानते-मानते हैं। अतः श्वेतवाराह-कल्पसे पूर्वके तीर्थोंके स्मारक पृथ्वीपर कैसे मिल सकते हैं। इन सब कठिनाइयोंका एक उत्तर है कि ऋषि सर्वज्ञ थे। व्यासजी तो भगवान्‌के अवतार ही हैं। उन्होंने अपनी सर्वज्ञताके कारण जान लिया कि कौन-से तीर्थ कहाँ हैं। उस समय उन सर्वज्ञ ऋषियोंके आदेशसे तीर्थस्थलोंका पुनरुद्धार हुआ था। इसलिये द्वापरान्ततक सभी तीर्थ प्राप्त थे। उनके वर्णन महाभारत तथा पुराणोंमें हैं; किंतु द्वापरको बीते पाँच सहस्र वर्षसे अधिक हो गये। महाभारत तथा पुराणोंकी रचना पाँच सहस्र वर्ष पूर्व हुई थी। उस समयसे अबतक भूमिपर भौगोलिक एवं ऐतिहासिक कारणोंसे जो उलट-पलट बराबर होती रही है, उसके फलस्वरूप तीर्थोंका पता लगाना अब अशक्य हो गया है।

अब महाभारत तथा पुराणवर्णित तीर्थोंका विभाजन इन चार भागोंमें किया जा सकता है—१-प्राप्त तीर्थ, २-विकल्पसंयुत तीर्थ, ३-अर्धलुप्त तथा ४-लुप्त तीर्थ।

प्राप्त-तीर्थ—काशी, पुरी, रामेश्वर आदि नगर; गङ्गा-यमुना, नर्मदा, कावेरी आदि नदियाँ; कैलास, विन्ध्य, गोवर्धन, अरुणाचलादि पर्वत ऐसे तीर्थ हैं जो आज ज्ञात हैं।

इन प्राप्त-तीर्थोंमें भी दो भेद हैं—सुगम और दुर्गम। जहाँ रेल तथा दूसरे वाहनोंसे जानेकी सुविधा है, वे सुगम या सुलभ तीर्थ हैं; किन्तु कैलास, मानसरोवर, अमरनाथ, मुक्तिनाथ-जैसे हिम-प्रदेशके तीर्थ ऐसे हैं कि एक वर्षमें उन सबकी यात्रा सम्भव नहीं। उनतक पहुँचना बहुत कठिन है। 'बराबर' मल्लिकार्जुन-जैसे कुछ तीर्थ घोर वनोंमें हैं। वहाँके मार्गमें डाकुओं या वन्य पशुओंका भय है। मेलेके समय ही वहाँ जाना सुगम है और प्रायः शिव-मन्दिरोंका मेला तो महाशिव-रात्रिपर ही होता है। यात्री एक वर्षमें महाशिवरात्रिपर एक ही दुर्गम शिव-मन्दिरकी यात्रा कर सकता है। इस प्रकारके तीर्थ दुर्गम हैं।

विकल्पसंयुत तीर्थ—बहुतसे तीर्थ कई स्थानोंमें हैं। यह निश्चय करना कठिन है कि उनमेंसे ठीक तीर्थ कौन-सा है। जैसे कई वाल्मीकि-आश्रम हैं, कई शोणितपुर हैं। अन्य अनेकों तीर्थ दो या अधिक स्थानोंमें हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं।

१-ऋषि अतिदीर्घजीवी थे। उनके आश्रमोंका एकाधिक स्थानोंमें होना सहज सम्भव है। उन ऋषिके जीवनके साथ जो मुख्य घटना हुई, प्रत्येक आश्रमके आसपासके लोगोंने (बहुत प्राचीन घटना होनेसे) मान लिया कि आश्रम यहाँ था तो घटना भी यहीं हुई और इस मान्यताके अनुसार घटनाके स्मारक कल्पित कर लिये। ऐसी स्थितिमें वह घटना कहाँ हुई, यह जानना अत्यन्त कठिन हो गया।

२-कल्पभेदसे एक ही तीर्थकी दो स्थानोंपर स्थिति हो सकती है। जैसे देशमें कई वाराह-क्षेत्र कहे जाते हैं। यह सम्भव है कि भिन्न-भिन्न कल्पोंमें वाराहावतार भिन्न-भिन्न स्थानोंमें हुए हों। इस प्रकार अन्य तीर्थोंके

विषयमें भी कल्पभेदका अनुमान किया जा सकता है।

३-मनुष्यमें अपनेको श्रेष्ठ सिद्ध करनेकी एक सहज प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्तिके वश होकर वह अपने वंश, अपने वर्ग और अपने स्थानको भी श्रेष्ठ सिद्ध करनेका प्रयत्न करता रहता है। इस प्रवृत्तिके कारण भी वर्तमान नामसे मिलते-जुलते पौराणिक नाम लेकर यह कहा जाने लगा कि यह अमुक प्राचीन तीर्थ है, वर्तमान नाम उसी प्राचीन नामका अपभ्रंश है। यह प्रवृत्ति भी दीर्घकालसे चली आ रही है, इसके वश होकर भी प्राचीन स्मारक बनाये और कल्पित किये गये हैं।

४-श्रद्धापूर्वक बिना किसी दूषित उद्देश्यके मनुष्य कई बार ऐसे कार्य करता है जो होते तो निर्दोष हैं, किंतु उनसे आगे जाकर भ्रम होने लगता है। जैसे दक्षिणके एक नरेशकी भगवान् विश्वनाथमें श्रद्धा थी। वे काशी आये और यहाँसे शिवलिङ्ग ले जाकर उन्होंने अपने यहाँ स्थापित किया। उस नगरका नाम उन्होंने तेन्काशी (दक्षिण-काशी) रख दिया। अब दक्षिणमें अनेक नगरोंको दक्षिणकाशी कहा जाता है। गुजरातमें अनेक नगरोंमें हाटकेश्वर और आशापूरी देवीके मन्दिर हैं। आगे सहस्रों वर्ष पश्चात् हाटकेश्वर या आशापूरी-धाम कौन-सा है, यह संदिग्ध हो उठे तो क्या आश्चर्य। इस प्रकार भी कुछ तीर्थ एकाधिक हो गये और उनमें मुख्य तीर्थका निर्णय करना कठिन हो गया है।

५-पंडे-पुजारियों तथा अन्य तीर्थजीवी लोगोंके कारण भी कुछ भ्रम फैलते ही हैं। कोई एक मूर्ति रखकर उसे अमुक देवता और ऋषिकी मूर्ति बता देना और उस स्थानके सम्बन्धमें एक प्राचीन कथा उद्धृत करने लगना अस्वाभाविक बात नहीं रही है। ऐसी कथा जब दीर्घकालतक चलती है, तब वह स्थान कल्पित होकर भी प्राचीन माना जाने लगता है। उसकी वास्तविक स्थिति जाननेका साधन नहीं रह जाता।

अर्धलुप्त तीर्थ—बहुत-से तीर्थ ऐसे हैं, जिनके स्थान हैं, चिह्न हैं; किंतु या तो वे अप्रख्यात हो गये हैं या उनके नाम बदल गये हैं। उदाहरणके लिये कालहस्ती तीर्थमें एक पर्वतपर दुर्गाजीका मन्दिर है। यह स्थान ५१ शक्तिपीठोंमेंसे एक है, किंतु उपेक्षित हो गया है। उसे यात्री जानते ही कम हैं। इसी प्रकार कलकत्तेका शक्तिपीठ काली-मन्दिर नहीं है, आदिकाली-मन्दिर है, जो टालीगंजसे एक मील दूर नगरसे प्रायः बाहर है; किंतु काली-मन्दिरकी ख्यातिके कारण यात्री उसे प्रायः भूलते जा रहे हैं।

पुरीसे मद्रास जाते समय मंडासा-रोड स्टेशन मिलता है। उससे बारह मीलपर मंडासा पर्वत है। यह प्राचीन महेन्द्र-पर्वत है, परशुरामजीका स्थान है। उसपर परशुरामजीका मन्दिर है, उस पर्वतसे निकलनेवाली नदीका नाम महेन्द्रतनया है; किंतु पर्वतका नाम मंडासा हो जानेसे अब महेन्द्राद्रिका पता लगना ही कठिन हो गया।

ऐसे अर्द्धलुप्त तीर्थोंका पता लगाना बहुत कालसाध्य, श्रमसाध्य और व्ययसाध्य कार्य है। सरलतासे इसे सम्पन्न नहीं किया जा सकता।

लुप्त तीर्थ—बहुत अधिक तीर्थ ऐसे हैं, जो कहाँ थे, अब यह भी बतानेका कोई साधन नहीं है। दीर्घकालमें पृथ्वीपर जो भौगोलिक और ऐतिहासिक परिवर्तन हुए, उनसे न केवल मन्दिर अपितु बड़े-बड़े नगर और नदियाँतक लुप्त हो गयीं। सरोवरोंका पता न लगना तो सामान्य बात है। ऐसे तीर्थोंकी स्थिति कहाँ थी, इसका अनुमान करनेका भी उपाय न होनेसे उनके सम्बन्धमें कुछ कहा ही नहीं जा सकता।

आज तो एक ही बात सम्भव है—जो तीर्थ उपलब्ध हैं, उनका वर्णन कर दिया जाय, उनकी यात्रा श्रद्धापर्वूक लोग करें। तीर्थ यहाँ या वहाँ—इस विवादमें न पड़कर जहाँ ऐसे विकल्प हों, वहाँ ऐसे सभी स्थानोंको श्रद्धा अर्पित करें; क्योंकि यह बात तो सत्य है ही कि पूरी भारत-भूमि तीर्थ है।

एक बात और—बहुतसे तीर्थोंमें अत्यन्त प्राचीन स्थान बताये जाते हैं—'जैसे ध्रुवजी यहाँ बैठे थे, श्रीरामने इस चौकीपर आसन लगाया था।' इस प्रकारके स्थानों एवं वस्तुओंकी महत्ता इसमें है कि वे हमें उस घटनाका स्मरण कराती हैं। सहस्रों वर्ष प्राचीन वस्तुओंको उसी वास्तविक रूपमें पानेकी आशा हम कैसे कर सकते हैं।

धर्मध्वजी सदा लुब्धः परदाररतो हि यः।
करोति तीर्थगमनं स नरः पातकी भवेत्॥

जो दम्भी, लोभी और पर-स्त्रीपरायण होकर यानी इन्हीं कार्योंके लिये तीर्थयात्रा करता है, वह तो केवल पापका भागी होता है।

तीर्थोंमें कुछ सुधार आवश्यक हैं

तीर्थ परम पवित्र हैं। तीर्थ-यात्रासे पापोंका नाश होता है और चित्तकी शुद्धि होती है। यदि मनुष्य केवल प्रमादपूर्ण भ्रमण ही करने नहीं निकला है तो उसे तीर्थ-यात्रामें पर्याप्त भगवत्स्मरण होता है। तप, त्याग दान, तितिक्षा, भगवत्स्मरण, पूजन आदि अनेकों महान् लाभ होते हैं तीर्थ-यात्रासे।

सृष्टि गुण-दोषमयी है। जो भी सांसारिक पदार्थ या कार्य हैं, उनमें गुण और दोष दोनों रहते हैं। तीर्थोंमें भी युगके प्रभावसे कुछ विकृतियाँ आ गयी हैं। उनमेंसे अनेक विकृतियाँ श्रद्धालु यात्रियोंको भी क्षुब्ध कर देती हैं। अतः वर्तमान समयमें तीर्थोंके लिये कुछ सुधार आवश्यक हैं।

तीर्थोंकी वर्तमान आवश्यकता है सुव्यवस्था, सदाचार और स्वच्छतासम्बन्धी। इनमें भी यदि 'व्यवस्था' हो जाय तो शेष दो उसके कारण स्वतः ही हो जायँगी। तीर्थ-क्षेत्रके अधिकारियोंको अपने यहाँकी सुव्यवस्थाके लिये पूरा ध्यान देना चाहिये।

दक्षिणभारतको छोड़कर प्रायः समस्त भारतके तीर्थोंमें पंडा-प्रथा है। यह प्रथा यात्रिके लिये सुविधाजनक थी और इससे अब भी बहुत सुविधा प्राप्त होती है। एक यात्री अपरिचित स्थानमें पहुँचता है। वह न वहाँके दर्शनीय स्थान जानता, न मार्ग और सम्भव है कि वह वहाँकी भाषा भी न जानता हो। उसका पंडा उसे मिल गया तो उसे किसी बातकी चिन्ता नहीं करनी पड़ती। आजकल भी आवश्यकता होनेपर यात्री अपने पंडेसे ऋण पा जाते हैं, जिसे घर जाकर वे सुविधापूर्वक लौटा देते हैं।

जहाँ पंडा-प्रथा इतनी उपयोगी है, वहीं यह प्रथा यात्रीके लिये सबसे अधिक उबा देनेवाली, तंग करने तथा शोषण करनेवाली भी हो गयी है। यात्रीके तीर्थमें पहुँचनेसे लेकर वहाँसे चल देनेतक एक भीड़ उसे घेरे रहती है। पता नहीं कितने लोग उससे नाम-पता पूछने पहुँचते हैं। वह ऊब जाता है और झल्ला उठता है। स्नान, भोजन, पूजन—उसे कोई कार्य शान्तिपूर्वक नहीं करने दिया जाता। तब भी उससे पता पूछना बंद नहीं किया जाता, जब उसके साथ कोई पंडा मार्गदर्शक होता है।

यात्रीसे अब प्रसन्नतापूर्वक मिले दानपर संतुष्ट रहनेवाले पंडे नहीं हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता; ऐसे आदर्श पंडे भी हैं, किंतु बहुत थोड़े। अधिकांश तो ऐसे ही लोग हैं जो धर्मभीरु यात्रीकी धर्मभीरुतासे अधिक-से-अधिक लाभ उठा लेनेका भरपूर प्रयत्न करते हैं। यात्रीके आवश्यक बर्तन एवं वस्त्रतक उससे ले लेते हैं, यात्रीको कर्जदार बनाकर विदा करनेमें कोई संकोच नहीं किया जाता।

सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि पंडोंका एक बड़ा भाग ठीक संकल्पतक नहीं पढ़ सकता। तीर्थके कर्मोंका उन्हें पूरा बोध नहीं होता। कल्पित अशुद्ध मन्त्रोंसे पूजन-श्राद्धादि सब कर्म वे बिना झिझक कराते हैं। कुछ स्थानोंमें तो विशेष भीड़के अवसरोंपर कुछ पंडे अब्राह्मण नौकर रख लेते हैं और वे अपनेको ब्राह्मण बतलाकर यात्रियोंसे तीर्थ-पूजनादि करवाते हैं।

पंडोंमें अनेक दुर्व्यसन एवं आचारसम्बन्धी त्रुटियाँ आ गयी हैं, यह एक स्पष्ट सत्य है। ये त्रुटियाँ केवल पंडोंमें ही नहीं, समाजके अन्य वर्गोंमें भी हैं; किंतु हमारे तीर्थ-पुरोहितोंमें ये दोष बड़ी मात्रामें हैं और बहुत खटकनेवाले हैं। एक अपरिचित श्रद्धालु यात्री जिसे अपना मार्गदर्शक एवं पुरोहित चुने, उसे विश्वसनीय, संयमी और सदाचारी होना चाहिये।

आवश्यकता इस बातकी है कि प्रत्येक तीर्थके पंडे-पुरोहित अपना एक सुव्यवस्थित संघटन बना लें। उनका एक व्यवस्थित कार्यालय हो और कार्यालयके पास वैतनिक कार्यकर्ता तथा स्वयंसेवक हों। तीर्थयात्रीको कार्यालयके स्वयंसेवक कार्यालयमें ले जायँ और कार्यालयमें यात्रीको बता दिया जाय कि उसका पंडा कौन है। यात्रियोंसे पृथक्-पृथक् लोगोंके द्वारा पूछा जाना तथा यात्रीके लिये झगड़ना, लाठी चलाना बंद कर दें। कार्यालय ही इसकी भी व्यवस्था कर दे कि जिन पंडोंके यहाँ तीर्थकर्म कराने योग्य पढ़े-लिखे व्यक्ति नहीं हैं, उनके यात्रियोंको ऐसे व्यक्ति भी दिये जायँ। कार्यालय यात्रीको पहले ही सूचित कर दे कि उसे तीर्थमें मार्गदर्शनके लिये कम-से-कम इतना व्यय देना चाहिये। अधिक दान-पूजन तो यात्रीकी श्रद्धापर निर्भर रहता ही है। यात्रीकी श्रद्धाका अनुचित लाभ न उठाया जाय और उसकी धर्मभीरुताके कारण उसे उत्पीडित

न किया जाय, उसपर अनिच्छापूर्वक दान देनेके लिये दबाव न डाला जाय। साथ ही जो यात्री अत्यल्प व्यय भी नहीं दे सकते, वे भी तीर्थ-दर्शनका लाभ उठा सकें—ऐसी भी व्यवस्था रखी जाय।

जो पुजारी तथा तीर्थ-पुरोहित यात्रीके साथ रहते समय या मन्दिरमें संयम, सदाचार एवं मर्यादाका ठीक पालन नहीं करते, तीर्थ-पुरोहितोंका संघटन उन्हें सावधान करे और उनपर ऐसा नैतिक नियन्त्रण रखे कि वे अपनी त्रुटियाँ सुधारें। यह खेदकी ही बात है कि अनेक तीर्थोंके प्रतिष्ठित मन्दिरोंमें भगवन्मूर्तिके सम्मुख मन्दिरके सेवकों, पुजारियों या तीर्थ-पुरोहितोंद्वारा अनेक अनुचित व्यवहार होते हैं। भीड़के समय दर्शनार्थियोंको धक्के देना, कहीं-कहीं उनपर बेंत या कोड़े चलाना भी चलता रहता है। भीड़को नियन्त्रित करते समय भी मन्दिरके सेवकोंको यह तो नहीं भूलना चाहिये कि वे भगवान्के सामने हैं। महिलाओं तथा बच्चोंको धक्के देने, लोगोंकी जेब या अंटीसे रुपये उड़ा देनेकी चेष्टा भी होती है; यह तो बहुत ही खेदजनक बात है। मन्दिरके संचालकोंको इन बातोंपर बहुत सतर्क दृष्टि रखनी चाहिये।

बहुत-से मन्दिरोंमें एक अवाच्छनीय घूसखोरी चलती है। मन्दिरका नियम न होनेपर भी पंडे तथा मन्दिरके सेवक कुछ निश्चित पैसे लेकर यात्रीको असमयमें मन्दिरके भीतर ले जाकर दर्शन करा देते हैं। इस प्रकार दर्शन कराना तो अनुचित है ही, दर्शन करना भी नितान्त अनुचित है; क्योंकि इससे मर्यादा भङ्ग होती है। यात्रीको यह बात ठीक समझ लेनी चाहिये कि कुछ पैसे अधिक देकर वह जो सुविधा प्राप्त करता है, वह न्याय नहीं है और तीर्थमें—भगवन्मन्दिरमें किया गया अनुचित कर्म ऐसा दोष है, जिसे तीर्थका प्रभाव भी नष्ट नहीं करता। मन्दिरके नियमोंके अनुसार जो सुविधाएँ मिल सकती हों, वे ही सुविधाएँ प्राप्त करने योग्य हैं।

मन्दिरमें बहुत भीड़ है, दर्शन ठीक हो नहीं रहे हैं। आप लोगोंको धक्का देकर आगे जा सकते हैं अथवा किसी पंडे-पुजारीको कुछ देकर भी ऐसी सुविधा पा सकते हैं; किंतु यदि आप ऐसा करते हैं तो बहुत अनुचित करते हैं। आपने भगवान्के सम्मुख ही भगवदपराध किया। आपने भले ही मूर्तिके दर्शन इस प्रकार कर लिये; परंतु भगवद्दर्शनका कोई लाभ आपने नहीं पाया। किंतु यदि आप चुपचाप पीछे खड़े रहते हैं, किसी असमर्थको आगे कर देते हैं, तो भले आप यह न देख सकें कि वहाँकी मूर्ति और मूर्तिका शृङ्गार कैसा है, आपने दर्शन कर लिये। आपने मूर्तिके दर्शन नहीं भी किये हों तो भी मूर्तिके अधिष्ठाताने आपको देख लिया और विश्वास कीजिये कि उसका प्यार और आशीर्वाद आपको मिल गया। आपने ठीक दर्शन किया और आपकी तीर्थ-यात्रा सम्पूर्ण सफल रही।

मन्दिरोंके प्रबन्धकों, तीर्थपुरोहितोंके संघटनों तथा यात्रियोंको सुविधा देनेवाली अन्य संस्थाओंको भी यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि तीर्थयात्रियोंका बड़ा भाग धर्मभीरु होता है। यात्रीको धक्का दिया गया, उसकी जेब काटनेका प्रयत्न हुआ या और किसी प्रकार वह तंग किया गया, तो भी वह यही चाहेगा कि उसके द्वारा किसीकी हानि न हो। वह शिकायत नहीं करेगा, यह उसका कर्तव्य है। उसके लिये यह सर्वथा उचित है। इसलिये यात्रीके साथ कहाँ अनुचित व्यवहार होता है, किनके द्वारा अनुशासन, मर्यादा या सदाचारके विपरीत आचरण होता है, इसका संस्थाओंको ही सावधानीसे निरीक्षण करते रहना चाहिये।

यात्री ठगा न जाय, सताया न जाय, उसपर दबाव देकर (भले वह आस्तिकताका दबाव हो) उससे कुछ न लिया जाय। यात्रीको ठहरने, स्नान-पूजनादि करने तथा प्रसाद प्राप्त करने और भोजनादि करनेकी समुचित सुविधा मिले। जो अर्थहीन यात्री हैं, वे भी भगवद्दर्शनपूजनसे वञ्चित न रहें। यात्रीके पूजनादि कर्म करानेके लिये योग्य विद्वान् ब्राह्मण मिलें। यात्री जो जितना दान जैसे पात्रोंको करना चाहता है, वैसा दान करनेमें उसे यथासम्भव सहायता दी जाय। इन बातोंका ध्यान रखकर यदि 'तीर्थ-सेवक-संघटन' स्थापित हों तो तीर्थोंमें यात्रियोंकी श्रद्धा बढ़ेगी।

यदि तीर्थोंके पुरोहित-समुदाय या तीर्थके मुख्य मन्दिरोंके संचालक पर्चे अथवा छोटी पुस्तिकाएँ, जो चार-छः पैसेसे अधिकको न हों, छपवा लें और यात्रीको तीर्थमें पहुँचते ही उपलब्ध करा दें तो यात्रीको बहुत सुविधा होगी। ऐसे पर्चों या पुस्तिकाओंमें बहुत संक्षिप्त रूपमें उस तीर्थके दर्शनीय स्थान, उस तीर्थके स्नानके तीर्थ, वहाँके करणीय कर्म, वहाँका सामान्य माहात्म्य, वहाँ ठहरने तथा भोजन या प्रसाद पानेकी क्या सुविधाएँ हैं—इनका विवरण और आस-पासके ऐसे दर्शनीय

स्थानों-मन्दिरोंकी सूचना होनी चाहिये, जिनके दर्शनार्थ उस तीर्थमें रहते हुए यात्री किसी सवारीसे जाकर एक दिनमें लौट आ सके।

तीर्थोंकी एक समस्या है स्वच्छताकी। अधिकांश तीर्थोंके सरोवरोंका जल स्वच्छ नहीं रहता। यह स्वाभाविक है कि जिस सरोवरमें एक बड़ी भीड़ बराबर स्नान करेगी, उसका जल दूषित हो जायगा। गयामें जिन सरोवरोंमें पिण्डविसर्जन होता है, उनके जलमें अन्न सड़नेसे बहुत दूरतक जलकी दुर्गन्ध आती रहती है। सरोवरोंके जलको स्वच्छ रखनेके लिये तीर्थ-स्थानोंकी नगर-कमेटियोंको विचार करना चाहिये।

जिन सरोवरोंमें ऐसे स्रोत नहीं हैं कि नीचेसे बराबर जल निकलता रहे और कुण्ड या सरोवरसे बराबर बाहर जाता रहे, ऐसे बंद जलवाले सरोवर यदि छोटे हों तो उनमें प्रवेश करके स्नान करनेके बदले उनका जल बाहर लेकर स्नान करनेकी परिपाटी डालना उत्तम है। प्रत्येक बंद सरोवरका जल यदि सम्भव हो तो पर्व या मेलोंके पश्चात् अवश्य बदल दिया जाना चाहिये। वर्षमें एक बार सरोवरोंकी स्वच्छता भली प्रकार जल निकालकर हो जानी चाहिये।

जहाँ भीड़ होगी, वहाँ गंदगी बढ़ेगी। तीर्थोंमें प्रायः भीड़ बनी रहती है। यह भीड़ धर्मशालाओंमें, मार्गमें, मन्दिरोंमें, घाटोंपर अनेक प्रकारकी गंदगी बढ़ाती है। यह स्वाभाविक है। कहीं दोने-पत्ते बिखरेंगे, कहीं लोग मल-मूत्र या थूक आदि डालेंगे, कहीं कीचड़ बढ़ेगा। यह गंदगी यथाशीघ्र दूर कर दी जाया करे, ऐसी व्यवस्था नितान्त आवश्यक है। धर्मशालाओंमें जहाँ व्यवस्था ठीक है, स्वच्छता रहती है; किंतु धर्मशालाके पासकी गलियाँ बहुत गंदी रहती हैं। धर्मशाला, मन्दिर तथा घाटके पासकी गलियों एवं मुख्यमार्गोंकी स्वच्छतापर नगर-कमेटियोंको अधिक ध्यान देना चाहिये।

स्वच्छताका जितना दायित्व तीर्थके लोगोंका है, उससे अधिक दायित्व यात्रियोंका है। यात्रीको पर्याप्त सावधानी रखनी चाहिये। उसे कागज, दोने, पत्ते, फलोंके छिलके, शाकके अवशेष, जूठन, दातौन आदि निश्चित टबोंमें या कूड़ा डालनेके स्थानोंपर ही डालना चाहिये।

पवित्र सरोवर तथा देव-मन्दिर पूज्य स्थान हैं। वहाँ या उनके आस-पास किसी प्रकारकी कोई गंदगी उसके द्वारा न बढ़े, यह प्रत्येक यात्रीको बहुत ध्यानपूर्वक सावधानी रखनेकी बात है। स्नान करते समय घाटपर, पूजन करते समय मन्दिरमें जल इस प्रकार न गिरे, न फैले कि आस-पास कीचड़ हो अथवा सूखा फर्श गीला हो जाय। यह सावधानी रखनी चाहिये।

हमारे परम पावन तीर्थ स्वच्छ, सुव्यवस्थित, शान्ति सदाचारके प्रतीक होने चाहिये। वहाँ जाकर यात्रीको जो आधिदैविक रूपसे सात्त्विक पापहारक प्रभाव प्राप्त होता है, वह तो सदा होता रहेगा। इसके साथ उसे तीर्थोंमें स्वास्थ्यप्रद, वायुमण्डल, शान्तिपूर्ण वातावरण तथा सदाचार एवं श्रद्धाको प्रेरित करनेवाला सङ्ग-समाज भी प्राप्त होना चाहिये। इसके लिये तीर्थों तथा मन्दिरोंमें सदाचारी विद्वानोंद्वारा कथा तथा सत्सङ्गका भी नियमित आयोजन होना चाहिये।

तीर्थयात्रा किसलिये ? तीर्थयात्रामें पाप-पुण्य!

तीर्थयात्रा—मौज-आरामके लिये नहीं।
तीर्थयात्रा—सैर-सपाटेके लिये नहीं।
तीर्थयात्रा—मनोरञ्जनके लिये नहीं।
तीर्थयात्रा—खान-पान-शयनके लिये नहीं।
तीर्थयात्रा—महान् तपस्याके लिये है।
तीर्थयात्रा—परमार्थ-साधनके लिये है।
तीर्थयात्रा—मनकी शुद्धिके लिये है।
तीर्थयात्रा—संयम-नियमके लिये है।
तीर्थयात्रामें—किसीकी सुख-सुविधा छीनना पाप है।
तीर्थयात्रामें—मिथ्या-भाषण करना पाप है।
तीर्थयात्रामें—निन्दा-चुगली करना पाप है।
तीर्थयात्रामें—राजस-तामस भोजन करना पाप है।
तीर्थयात्रामें—पर-स्त्री, पर-पुरुषपर कुदृष्टि करना पाप है।
तीर्थयात्रामें—पर-धनपर मन चलाना पाप है।
तीर्थयात्रामें—सबको सुख-सुविधा देकर पुण्य लूटो।
तीर्थयात्रामें—सत्य-भाषण करके पुण्य लूटो।
तीर्थयात्रामें—भगवान्का नाम-गुण गाकर पुण्य लूटो।
तीर्थयात्रामें—सात्त्विक स्वल्प आहार करके पुण्य लूटो।
तीर्थयात्रामें—अष्ट मैथुनका त्याग करके पुण्य लूटो।
तीर्थयात्रामें—धन-वैभवमें वैराग्य करके पुण्य लूटो।

समझने, याद रखने और बरतनेकी चोखी बात

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥
(गीता ६। २९)

सब भूतोंमें स्थित आत्मा है, आत्मामें हैं भूत अशेष।
योगयुक्त सबमें समदर्शी योगीकी यह दृष्टि विशेष॥

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥
(गीता ६। ३०)

जो मुझको सर्वत्र देखता है, मुझमें देखे सारा दृश्य।
उसके लिये अदृश्य नहीं मैं, वह भी मुझसे नहीं अदृश्य॥

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते॥
(गीता ६। ३१)

सब भूतोंमें स्थित मुझको जो भजता है रख एकीभाव।
वह योगी रह सब प्रकारसे मेरे हित करता बर्ताव॥

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः॥
(गीता ६। ३२)

जो अपनी ही भाँति देखता है सबमें सुख-दुःख समान।
अर्जुन! वह माना जाता है योगी सबसे श्रेष्ठ महान॥

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः॥
(गीता ७। १९)

बहु जन्मोंके अन्त जन्ममें जो मुझको भजता सज्ञान।
'सब कुछ वासुदेव हैं'—यों वह महापुरुष दुर्लभ मतिमान॥

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्॥
(शुक्लयजुर्वेद अ० ४०। १)

जगतीमें यह जो कुछ भी जड़-चेतन जग है।
सब ईश्वरसे व्याप्त, उसीसे यह जगमग है॥
ईश्वरको रख साथ त्यागपूर्वक भोगो सब।
धन किसका है? होओ मत आसक्त कभी अब॥

खं वायुमग्निं सलिलं महीं च
ज्योतींषि सत्त्वानि दिशो द्रुमादीन्।
सरित्समुद्रांश्च हरेः शरीरं
यत्किंच भूतं प्रणमेदनन्यः॥
(श्रीमद्भागवत ११। २। ४१)

नभ अनिल अनल जल पृथ्वी रवि शशि तारे।
सब जीव चराचर दिशा द्रुमादिक सारे॥
सर सरिता सागर सब कुछ श्रीहरिका तन।
यह जान करे सबका अनन्य अभिवन्दन॥

सीय राममय सब जग जानी।
करौं प्रनाम जोरि जुग पानी॥
(रामचरितमानस)

तीर्थोंकी महिमा, प्रयोजन और उत्पत्ति तथा तीर्थ-यात्राके पालनीय नियम

(लेखक—श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका)

सर्वप्रथम 'तीर्थ' शब्दका अभिप्राय समझना चाहिये। 'तीर्थ' शब्दका आधुनिक ढंगसे निर्वचन किया जाय तो 'ती' शब्दसे 'तीन' और 'र्थ' से 'अर्थ'—प्रयोजन लेना चाहिये। इस प्रकार जिससे तीन अर्थोंकी सिद्धि अर्थात् तीन पदार्थोंकी प्राप्ति हो, उसे 'तीर्थ' कहते हैं। पदार्थका तात्पर्य है—प्रयोजन और अर्थ। संसारमें चार पदार्थ हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन चारोंमेंसे अर्थ (धन) तो तीर्थ-यात्रा करनेमें खर्च ही होता है, अतः उसकी सिद्धि वहाँ प्रायः सम्भव नहीं है। धर्म, काम और मोक्ष—इन तीनोंकी सिद्धि तीर्थ-यात्रासे होती है। (१) सात्त्विक पुरुष तो मोक्षके लिये ही तीर्थ-यात्रा करते हैं। (२) धर्म-संग्रहके लिये सात्त्विक और राजसी—दोनों प्रकारके ही मनुष्य तीर्थ-यात्रा करते हैं। (३) केवल इहलौकिक और पारलौकिक कामनाओंकी सिद्धिके लिये ही राजसी मनुष्य तीर्थ-यात्रा करते हैं। इनमें धर्म-संग्रहके लिये निष्कामभावसे तीर्थयात्रा करनेवाले मनुष्य सात्त्विक हैं और सकामभावसे यात्रा करनेवाले राजसी हैं; क्योंकि निष्कामभावसे की हुई तीर्थ-यात्राका फल मुक्ति है और सकामभावसे की हुई तीर्थ-यात्राका फल इस लोकके स्त्री-पुत्र आदि और परलोकके स्वर्ग आदि भोगोंकी प्राप्ति है। तीर्थोंमें धर्म, काम और मोक्ष—इन तीनों पदार्थोंकी सिद्धि होती है और वे मनुष्यको पापोंसे मुक्त करनेवाले हैं, इसीसे उन्हें 'तीर्थ' कहा जाता है।

संसारमें जितने भी तीर्थ हैं, वे प्रायः सभी श्रीभगवान् और उनके भक्तोंके सङ्गसे ही तीर्थ बने हैं। उनकी तीर्थ-संज्ञा ईश्वरके, महापुरुषोंके या पतिव्रता स्त्रियोंके प्रभावसे ही हुई है। पतिव्रताएँ भी एक प्रकारसे महात्मा ही हैं।

श्रीभागीरथी गङ्गा एक महान् तीर्थ है। श्रीमद्भागवतके नवम स्कन्धके नवें अध्यायमें बतलाया है कि महाराज भगीरथने अपने पितरोंके उद्धारके लिये इस मर्त्यलोकमें गङ्गाको लानेके उद्देश्यसे बड़ी भारी तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर गङ्गाने उनको प्रत्यक्ष दर्शन दिया और कहा—'जिस समय मैं स्वर्गसे पृथ्वीतलपर गिरूँ, उस समय कोई मेरे वेगको धारण करनेवाला होना चाहिये।' इसपर राजा भगीरथने तपस्याके द्वारा भगवान् शङ्करको प्रसन्न किया, जिससे श्रीशङ्करने गङ्गाको अपनी जटामें ही धारण कर लिया। फिर राजा भगीरथकी प्रार्थनापर श्रीशिवकी कृपासे उनकी जटासे निकलकर गङ्गा पृथ्वीपर प्रवाहित हुईं। उन परमपावनी गङ्गाके स्पर्शमात्रसे राजा भगीरथके पितर—सगरपुत्र स्वर्गको चले गये। इसलिये उस स्थानका नाम 'गङ्गासागर तीर्थ' हुआ। भगवान् शिव और राजा भगीरथके प्रभावसे पापमुक्त करनेके कारण ही गङ्गा एक प्रधान तीर्थ मानी जाती हैं।

श्रीमहाभारतमें कहा है—

पुनाति कीर्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति।
अवगाढा च पीता च पुनास्यासप्तमं कुलम्॥

(वन० ८५। ९३)

'गङ्गा अपना नाम उच्चारण करनेवालोंके पापोंका नाश करती हैं, दर्शन करनेवालेका कल्याण करती हैं और स्नानपान करनेवालेकी सात पीढ़ियोंतकको पवित्र करती हैं।'

इसी प्रकार काशी-क्षेत्र भी भगवान् शिवके प्रतापसे 'तीर्थ' हुआ है। स्कन्दपुराणके काशी-खण्डमें कहा गया है कि वहाँ साक्षात् महेश्वर सदा निवास करते हैं। जो मनुष्य वहाँ मरता है, उसे प्राण-त्यागके समय भगवान् शङ्कर साक्षात् उपस्थित हो तारक-मन्त्रका उपदेश देते हैं, जिससे वह शिवस्वरूप हो जाता है। भगवान् शिवने स्वयं ही वहाँ यह कहा है कि 'यह पाँच कोसका लंबा-चौड़ा क्षेत्र काशीधाम मुझे बहुत प्रिय है। काशीमें केवल मेरा ही शासन चलता है, दूसरेका नहीं।' सप्तपुरियोंमें काशीका प्रमुख स्थान है।

कुरुक्षेत्रमें अग्नि, इन्द्र, ब्रह्मा आदि देवताओं और ऋषियोंने यज्ञ और तप किया था तथा राजा कुरुने भी वहाँ बड़ी भारी तपस्या की थी; अतः वह 'कुरुक्षेत्र' तीर्थके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

मथुरा-तीर्थ भगवान् श्रीकृष्णके अवतारके प्रभावसे विशेषताको प्राप्त हुआ है। इसी मथुराका नाम सत्ययुगमें 'मधुवन' था। जब भक्त ध्रुव माता सुनीतिके वचनोंसे अपना लक्ष्य स्थिर कर नगरसे बाहर चले गये, तब उनको श्रीनारदजीने उपदेश दिया और अन्तमें कहा—

तत् तात गच्छ भद्रं ते यमुनायास्तटं शुचि।
पुण्यं मधुवनं यत्र सांनिध्यं नित्यदा हरेः॥

(श्रीमद्भा० ४। ८। ४२)

'तात! तेरा कल्याण हो, अब तू श्रीयमुनाके तटवर्ती परम पवित्र मधुवनको जा। वहाँ श्रीहरिका नित्य-निवास है।'

भक्त ध्रुवने वहाँ जाकर तपस्या की और भगवान्‌का साक्षात् दर्शन किया, जिसके प्रभावसे मधुवनकी तीर्थ-संज्ञा हुई। वहीं मधुवन आज मथुरापुरीके नामसे प्रसिद्ध है। तत्पश्चात् भगवान् श्रीकृष्णके अवतार लेकर लीला करनेके कारण मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, गोवर्धन, बरसाना, नन्दगाँव आदि व्रजके सभी स्थानोंकी विशेषरूपसे तीर्थ-संज्ञा हो गयी।

भगवान् श्रीकृष्णके प्रभावसे ही द्वारकापुरीकी तीर्थसंज्ञा हुई, जो चार धामोंमेंसे एक धाम है; क्योंकि भगवान् श्रीकृष्णने ही समुद्रके मध्यमें द्वारकाको बसाया था।

श्रीबदरिकाश्रममें भगवान्‌ने नर-नारायण ऋषिके रूपमें तपस्या की, इसीसे उसकी विशेषरूपसे तीर्थसंज्ञा हुई और वह चार धामोंमें गिना जाने लगा। शिव-पार्वतीका निवास-स्थान होनेके कारण हिमाचल, जिसे कैलासपर्वत भी कहते हैं, तीर्थ माना गया है। वह आजकल गौरीशंकर शिखरके नामसे प्रसिद्ध है।

श्रीस्कन्दपुराणके वैष्णवखण्डमें बतलाया गया है कि भगवान्‌के परम भक्त राजा इन्द्रद्युम्नके अश्वमेधयज्ञकी समाप्तिपर वहाँ पुरुषोत्तमक्षेत्रमें भगवान् स्वयं चार काष्ठमयी मूर्तियोंमें प्रकट हुए। राजाने आकाशवाणीके अनुसार भगवान् जगन्नाथजी, बलभद्र, सुभद्रा और सुदर्शनचक्रकी उन प्रतिमाओंकी विधिवत् वहाँ स्थापना की और उनका पूजन किया। इसीसे वह क्षेत्र 'जगन्नाथपुरी' के नामसे प्रसिद्ध हुआ, जो चार धाममेंसे एक है।

स्वयं भगवान् श्रीरामके अवतार लेकर लीला करनेके कारण अयोध्यापुरीको परमधामप्रद और सरयूको मुक्तिदायक तीर्थ कहा गया है।

श्रीरामचरितमानसमें स्वयं भगवान् श्रीरामके वचन हैं—

पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि। त्रिबिध ताप भव रोग नसावनि॥

तथा—

जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जगु जाना॥
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ॥
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजू पावनि॥
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा॥
अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी॥

भगवान् श्रीरामने लक्ष्मण और सीताके सहित वनवासके समय चित्रकूटमें निवास किया, इससे मन्दाकिनी और चित्रकूटको विशेषरूपसे तीर्थ माना जाता है। श्रीभरत भगवान् श्रीरामका राजतिलक करनेके लिये अपने साथ सब तीर्थोंका जल चित्रकूटमें ले गये थे। उन्होंने जिस कूपमें वह सब तीर्थोंका जल रखा, उस कूपकी भरतके प्रतापसे भरतकूपके नामसे प्रसिद्धि है और इसीसे उसे तीर्थ माना गया है। इसी तरह श्रीराम, लक्ष्मण और सीता जिस शिलापर बैठा करते थे, उसे 'स्फटिक-शिला-तीर्थ' कहा जाता है।

श्रीअत्रि ऋषिकी तपस्या और अनसूयाके पातिव्रत्यके प्रभावसे 'अनसूया' नामक तीर्थ हुआ। श्रीशरभङ्ग ऋषिकी तपश्चर्याके प्रभावसे 'शरभङ्ग' नामक तीर्थ प्रसिद्ध हुआ। श्रीसुतीक्ष्णमुनिकी भक्ति और तपके प्रभावसे सुतीक्ष्णतीर्थ प्रसिद्ध हुआ। इसी प्रकार 'अगस्त्याश्रमतीर्थ' अगस्त्यमुनिके तपके प्रभावसे हुआ। उस आश्रमके प्रभावका वर्णन करते हुए वाल्मीकीय रामायणमें स्वयं भगवान् श्रीराम अपने प्रिय भ्राता लक्ष्मणसे कहते हैं।

यदाप्रभृति चाक्रान्ता दिगियं पुण्यकर्मणा।
तदाप्रभृति निर्वैराः प्रशान्ता रजनीचराः॥
अयं दीर्घायुषस्तस्य लोके विश्रुतकर्मणः।
अगस्त्यस्याश्रमः श्रीमान् विनीतमृगसेवितः॥
नात्र जीवेन्मृषावादी क्रूरो वा यदि वा शठः।
नृशंसः पापवृत्तो वा मुनिरेव तथाविधः॥

(वा० रा० अरण्य० ११। ८३, ८६, ९०)

'उन पुण्यकर्मा महर्षि अगस्त्यने जबसे इस दक्षिण दिशामें पदार्पण किया है, तबसे यहाँके राक्षस शान्त हो गये हैं। उन राक्षसोंने दूसरोंसे वैर-विरोध करना छोड़ दिया है। यह आश्रम उन जगत्-प्रसिद्ध उत्तम कर्म करनेवाले अगस्त्यऋषिका ही है; क्योंकि यहाँ मृग आदि पशु विनीतभावसे निवास कर रहे हैं और यह आश्रम शोभा-सम्पन्न हो रहा है। अगस्त्यऋषि ऐसे प्रभावशाली महात्मा हैं कि उनके आश्रममें कोई झूठ बोलनेवाला, क्रूर, शठ, नृशंस अथवा पापाचारी मनुष्य जीवित नहीं रह सकता।'

नासिकमें गोदावरीके तटपर पञ्चवटीमें भगवान् श्रीराम, लक्ष्मण और सीताके निवास करनेके कारण उनके प्रभावसे पञ्चवटीकी तीर्थसंज्ञा हुई है।

परम भक्तिमती शबरी (भीलनी) का निवासस्थान होनेसे 'पम्पा-सरोवर' की तीर्थसंज्ञा हुई।

सुग्रीव, हनुमान्, अङ्गद, जाम्बवान् आदि भगवद्भक्तोंका वासस्थान होनेसे 'किष्किन्धा' को भी तीर्थ कहा जाता है।

सेतुबन्ध रामेश्वर, जो चारों धामोंमें एक धाम है, उसकी तीर्थसंज्ञा भगवान् श्रीरामके द्वारा वहाँ सेतु बाँधे जाने और रामेश्वर शिवलिङ्गकी स्थापना होनेके कारण हुई।

इसी प्रकार पुष्कर तीर्थकी उत्पत्ति ब्रह्माजीके प्रभावसे हुई है। श्रीपद्मपुराणके सृष्टिखण्डमें आता है कि पुष्करमें लोककर्त्ता श्रीब्रह्माजीने यज्ञके निमित्त वेदीका निर्माण किया था और वे वहाँ सदा निवास करते हैं। उन्होंने जीवोंपर कृपा करनेके लिये ही इस तीर्थको प्रकट किया है। पुष्करकी महिमा वर्णन करते हुए श्रीमहाभारतमें कहा गया है—

नृलोके देवदेवस्य तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्।
पुष्करं नाम विख्यातं महाभागः समाविशेत्॥

(वन० ८२। २०)

'मनुष्यलोकमें देवाधिदेव ब्रह्माजीका त्रिलोकविख्यात तीर्थ है, जो 'पुष्कर' नामसे प्रसिद्ध है। उसमें कोई बड़भागी मनुष्य ही प्रवेश कर पाता है।'

तस्मिंस्तीर्थे महाराज नित्यमेव पितामहः।
उवास परमप्रीतो भगवान् कमलासनः॥

(वन० ८२। २५)

'महाराज! उस तीर्थमें कमलासन भगवान् ब्रह्माजी नित्य ही बड़ी प्रसन्नताके साथ निवास करते हैं।'

पुष्करेषु महाभाग देवाः सर्षिगणाः पुरा।
सिद्धिं समभिसम्प्राप्ताः पुण्येन महतान्विताः॥

(वन० ८२। २६)

'महाभाग! पुष्करमें पहले देवता तथा ऋषि महान् पुण्यसे सम्पन्न हो सिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।'

यथा सुराणां सर्वेषामादिस्तु मधुसूदनः।
तथैव पुष्करं राजंस्तीर्थानामादिरुच्यते॥

(वन० ८२। ३४-३५)

'राजन्! जैसे भगवान् मधुसूदन (विष्णु) सब

देवताओंके आदि हैं, वैसे ही पुष्कर सब तीर्थोंका आदि कहा जाता है।'

श्रीस्कन्दपुराणके आवन्त्यखण्डमें महाकालक्षेत्रका वर्णन करते हुए कहा गया है कि भगवान् शिवने उस महाकालवनमें वास किया था, अतः उनके प्रभावसे वह तीर्थ हो गया। वहीं उन्होंने त्रिपुर नामक दानवको उत्कर्षपूर्वक जीता था, इसीसे उसका नाम 'उज्जयिनी' हो गया, जो आज उज्जैनके नामसे प्रसिद्ध है। यह सात पुरियोंमें 'अवन्ती' नामसे विख्यात पुरी है।

श्रीगङ्गा और यमुनाका संगम होने तथा वहाँ अनेक पुण्यात्मा पुरुषोंद्वारा प्राचीनकालसे बहुत-से यज्ञादि किये जानेके कारण 'प्रयाग' तीर्थ हुआ। यह प्रजापतिका क्षेत्र तथा तीर्थोंका राजा माना गया है। माघ मासमें यहाँ सब तीर्थ आकर वास करते हैं, इससे माघ महीनेमें वहाँ वास करनेका बहुत माहात्म्य बतलाया गया है। वन जाते समय भगवान् श्रीराम प्रयागमें श्रीभरद्वाज ऋषिके आश्रमपर होते हुए गये थे, इससे उसका माहात्म्य और भी बढ़ गया।

श्रीदेवीभागवतमें कहा गया है कि जब ऋषिलोग कलिकालके भयसे बहुत घबराये, तब ब्रह्माजीने उन्हें एक मनोरम चक्र देकर कहा कि 'तुमलोग इस चक्रके पीछे-पीछे जाओ और जहाँ इसकी नेमि (मध्यभाग) विशीर्ण हो जाय, उसे ही अत्यन्त पवित्र स्थान समझना; वहाँ रहनेसे तुम्हें कलिका कोई भय नहीं रहेगा।' ऋषियोंने वैसा ही किया। इसीसे वह स्थान 'नैमिषारण्य' तीर्थके नामसे प्रसिद्ध हुआ तथा वहाँ श्रीशौनक आदि अट्ठासी हजार ऋषियोंने एकत्र हो सूतजी (लोमहर्षण) से कथा सुनी और तपस्या की थी, इसलिये वह और भी महिमासे युक्त होकर एक प्रसिद्ध तीर्थ माना जाता है।

श्रीपरशुरामजीके निवास और तपश्चर्याके प्रभावसे आसाममें 'परशुरामकुण्ड' नामक तीर्थ प्रसिद्ध हुआ।

इसी प्रकार अन्यान्य सब तीर्थोंके सम्बन्धमें समझना चाहिये। प्रायः सभी तीर्थ भगवान् और उनके भक्तोंके प्रभावसे ही बने हैं अर्थात् उनके जन्म और सङ्ग-सांनिध्यके कारण ही उनकी तीर्थसंज्ञा हुई है। ये सभी स्थान-विशेष तीर्थ हैं। इनमें निवास करने और मरनेसे मनुष्यकी मुक्ति हो जाती है, यह बात शास्त्रोंमें स्थान-स्थानपर बतलायी गयी है—

काशी काञ्ची च मायाख्या त्वयोध्या द्वारवत्यपि।
मथुरावन्तिका चैताः सप्त पुर्योऽत्र मोक्षदाः॥

(स्क० काशी० पूर्व० ६। ६८)

'काशी, काञ्ची, माया (लक्ष्मणझूलासे कनखलतक), अयोध्या, द्वारका, मथुरा और अवन्ती (उज्जैन)—ये सात पुरियाँ मोक्ष देनेवाली हैं।'

इनके सिवा बदरिकाश्रम, सेतुबन्ध-रामेश्वर, जगन्नाथ-पुरी, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, पुष्कर आदि तीर्थोंमें वास करने और मरनेसे भी मनुष्यकी मुक्ति होनेका वर्णन शास्त्रोंमें मिलता है।

तीर्थयात्राका वास्तविक प्रयोजन है—आत्माका उद्धार करना। इस लोक और परलोकके भोगोंकी प्राप्तिके लिये तो और भी बहुत-से साधन हैं। अतएव मनुष्यको भोगोंकी प्राप्तिके लिये तीर्थयात्रा न करके आत्माके कल्याणके लिये ही तीर्थयात्रा करनी चाहिये। जो मनुष्य आत्मकल्याणके उद्देश्यसे श्रद्धा-भक्तिपूर्वक नियमपालन करते हुए तीर्थयात्रा करता है, उसे तीर्थसे महान् लाभ होता है। जैसे सूर्यके तापसे रहित प्रातःकाल या सायंकालके उत्तम समयमें तथा उत्तम पुरुषोंके सङ्ग और उनके साथ वार्तालापके समयमें स्वाभाविक ही मनुष्यकी चित्तवृत्तियाँ शान्त और सात्त्विक रहती हैं, उसी प्रकार चित्रकूट, ऋषिकेश, वृन्दावन आदि तीर्थस्थानोंमें जाकर वहाँ एकान्त वनमें श्रद्धा-भक्ति और नियमपालनपूर्वक निवास करनेसे वहाँके पवित्र परमाणुओंका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है और भजन-ध्यानमें सहायता मिलती है; क्योंकि तीर्थोंमें अध्यात्मसम्बन्धी परमाणु स्वाभाविक ही व्याप्त रहते हैं। उनका साधारणतया तो वहाँ रहनेवाले सभी लोगोंपर प्रभाव पड़ता है, फिर जिनका हृदय शुद्ध होता है, उन श्रद्धालु मनुष्योंपर तो विशेषरूपसे उनका प्रभाव पड़ता है। जैसे सूर्यका प्रकाश सब जगह समानभावसे होते हुए भी दर्पणपर उसका प्रभाव विशेषरूपसे पड़ता है, उसी प्रकार ईश्वर और महात्माओंका प्रभाव सब जगह समानभावसे रहते हुए भी जिनमें श्रद्धा-भक्ति और अन्तःकरणकी पवित्रता होती है, उनपर उनका विशेष प्रभाव पड़ता है।

अतएव मनुष्यको श्रद्धा-भक्तिपूर्वक विधि और नियमोंका पालन करते हुए ही तीर्थ-यात्रा करनी चाहिये। तीर्थयात्राके समय पैरोंसे जीवोंको बचाते हुए, वाणी और मनसे भगवान्के नामका जप और उनके स्वरूपका ध्यान करते हुए अथवा भगवान्के नाम और गुणोंका कीर्तन करते हुए चलना चाहिये। इसी प्रकार श्रीगङ्गा, यमुना, सिन्धु, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, कृष्णा, सरयू, मानसरोवर, कुरुक्षेत्र, पुष्कर, गङ्गासागर आदि तीर्थोंमें जाकर उनके गुण, प्रभाव,

तत्त्व, रहस्य और महिमाका स्मरण करते हुए आत्मशुद्धि और कल्याणके लिये प्रथम तो उनको नमस्कार करे, फिर तीर्थके जलको सिरपर धारण करे; तदनन्तर उनकी पुष्पादिसे पूजा करके आचमन और स्नान करे; किंतु तीर्थके जलमें वस्त्र न निचोड़े तथा तीर्थके जलसे गुदा-प्रक्षालन आदि कार्य न करे। तीर्थके किनारे मल-मूत्रका त्याग तो कभी भूलकर भी न करे, वहाँसे सौ कदम दूर जाकर करे। मलका त्याग करनेके बाद अपवित्र हाथोंको गङ्गा आदि तीर्थोंके जलसे न धोये तथा तीर्थमें कभी दाँतून-कुल्ला न करे।

तीर्थस्थानोंमें श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्रीशिव, श्रीविष्णु, श्रीदुर्गा आदि भगवद्विग्रहोंका श्रद्धा-प्रेमपूर्वक दर्शन करते हुए उनके गुण, प्रभाव, लीला, तत्त्व, रहस्य और महिमा आदिका स्मरण करके दिव्य स्तोत्रोंके द्वारा आत्मोद्धारके लिये उनकी स्तुति-प्रार्थना, पूजा और नमस्कार करना चाहिये। एवं अपने-अपने अधिकारके अनुसार संध्या, तर्पण, जप, ध्यान, पूजा-पाठ, स्वाध्याय, हवन, बलिवैश्वदेव, सेवा आदि नियम और नैमित्तिक कर्म ठीक समयपर करनेकी विशेष चेष्टा करनी चाहिये। यदि किसी विशेष कारणवश समयका उल्लङ्घन हो जाय, तो भी कर्मका उल्लङ्घन नहीं करना चाहिये। गीता-रामायण आदि शास्त्रोंका अध्ययन, भगवन्नामजप, सूर्य-भगवान्‌को अर्घ्यदान, इष्टदेवकी पूजा, ध्यान, स्तुति, नमस्कार और प्रार्थना आदि तो सभी वर्ण और आश्रमके स्त्री-पुरुषोंको अवश्य ही करने चाहिये। तीर्थोंमें जाकर यज्ञ, तप, दान, श्राद्ध-तर्पण, पिण्डदान, व्रत, उपवास आदि भी अपने अधिकारके अनुसार करने चाहिये।

तीर्थोंमें अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रहरूप यमों और शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधानरूप नियमोंका* पालन विशेषरूपसे करना चाहिये। भोग और ऐश्वर्यको अनित्य समझते हुए विवेक-वैराग्यके द्वारा वशमें किये हुए मन और इन्द्रियोंको शरीर-निर्वाहके अतिरिक्त अपने-अपने विषयोंसे हटानेकी चेष्टा करनी चाहिये तथा कीर्तन और स्वाध्यायके अतिरिक्त समयमें मौन रहनेका प्रयत्न करना चाहिये; क्योंकि मौन रहनेसे जप और ध्यानके साधनमें विशेष मदद मिलती है। यदि विशेष कार्यवश बोलना पड़े तो सत्य, प्रिय और हितकर वचन बोलने चाहिये। भगवान् श्रीकृष्णने गीतामें वाणीके तपकी परिभाषा करते हुए कहा है—

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥

(गीता १७। १५)

'उद्वेग न करनेवाली ऐसी वाणी बोलना, जो प्रिय और हितकारक एवं यथार्थ हो, तथा वेद-शास्त्रोंके पठन एवं परमेश्वरके नाम-जपका अभ्यास ही वाणीसम्बन्धी तप कहा जाता है।'

तीर्थोंमें काम, क्रोध, लोभ आदिके वशमें होकर किसी भी जीवको किसी प्रकार किंचिन्मात्र भी दुःख कभी नहीं पहुँचाना चाहिये तथा साधु, ब्राह्मण, तपस्वी, ब्रह्मचारी, विद्यार्थी आदि सत्पात्रोंकी एवं दुःखी, अनाथ, आतुर, अङ्गहीन, बीमार और साधक पुरुषोंकी अन्न, वस्त्र, औषध और धार्मिक पुस्तकों आदिके द्वारा यथायोग्य सेवा करनी चाहिये।

तीर्थोंमें निवास-स्थान और बर्तनोंके अतिरिक्त किसीकी कोई भी चीज काममें नहीं लानी चाहिये, बिना माँगे देनेपर बिना मूल्य स्वीकार नहीं करनी चाहिये तथा सगे-सम्बन्धी, मित्र आदिकी भेंट-सौगात आदि भी नहीं लेनी चाहिये। बिना अनुमतिके तो किसीकी कोई भी वस्तु काममें लेना चोरीके समान है। बिना मूल्य औषध आदि भी लेना प्रतिग्रह ही है।

तीर्थोंमें मन, वाणी और शरीरसे ब्रह्मचर्यके पालनपर विशेष ध्यान देना चाहिये। स्त्रीको परपुरुषका और पुरुषको परस्त्रीका दर्शन, स्पर्श, भाषण और चिन्तन आदि भी कभी नहीं करना चाहिये। यदि विशेष आवश्यकता हो तो स्त्रियाँ परपुरुषको पिता या भाईके समान समझती हुई और पुरुष परस्त्रीको माता या बहिनके समान समझते हुए नीची दृष्टि करके संक्षेपमें शास्त्रानुकूल वार्तालाप कर सकते हैं। यदि एकपर दूसरेकी भूलसे भी पापबुद्धि हो जाय तो कम-से-कम एक दिनका उपवास करना चाहिये।

ऐश-आराम, स्वाद, शौक और भोगबुद्धिसे तीर्थोंमें न तो किसी पदार्थका संग्रह करना चाहिये और न सेवन ही करना चाहिये। केवल शरीर-निर्वाहके लिये त्याग और वैराग्यबुद्धिसे अन्न-वस्त्रका उपयोग करना चाहिये।

तीर्थोंमें अपनी कमाईके द्रव्यके पवित्रतापूर्वक सिद्ध किये हुए अन्न और दूध-फल आदि सात्त्विक पदार्थोंका

* अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः। (योग० २। ३०)
शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः। (योग० २। ३२)

ही भोजन करना चाहिये। स्वार्थ और अहंकाररहित होकर सबके साथ दया, विनय और प्रेमपूर्वक सात्त्विक व्यवहार करना चाहिये तथा काम-क्रोध, लोभ-मोह, मद-मात्सर्य, राग-द्वेष, दम्भ-कपट, प्रमाद-आलस्य आदि दुर्गुणोंका; बीड़ी-सिगरेट, तम्बाकू-गाँजा, भाँग-सुरती, अफीम-चरस, कोकिन आदि मादक वस्तुओंका; लहसुन-प्याज, बिस्कुट-बरफ, सोडा-लेमोनेड आदि अपवित्र पदार्थोंका;ताश-चौपड़, शतरंज खेलना और नाटक, सिनेमा तथा अन्य प्रकारके खेल-तमाशे, बाग-बगीचे, महल आदि विलासकी वस्तुएँ देखना आदि प्रमादका तथा गाली-गलौज, चुगली-निन्दा, हँसी-मजाक, फालतू बकवाद, आक्षेप आदि व्यर्थ वार्तालापका सर्वथा त्याग करना चाहिये। सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख और अनुकूल-प्रतिकूल पदार्थोंके प्राप्त होनेपर उनको भगवान्‌का भेजा हुआ पुरस्कार मानकर सदा-सर्वदा प्रसन्नचित्त और संतुष्ट रहना चाहिये।

तीर्थयात्रामें अपने सङ्गवालोंमेंसे किसीको अथवा अपने किसी आश्रितको बीमारी आदि विपत्ति आनेपर काम, क्रोध या भयके कारण उसे अकेला कभी नहीं छोड़ना चाहिये। महाराज युधिष्ठिरने तो स्वर्गका तिरस्कार करके परम धर्म समझकर अपने साथी कुत्तेका भी त्याग नहीं किया। जो लोग अपने किसी साथी या आश्रितके बीमार पड़ जानेपर उसे छोड़कर तीर्थ-स्नान और भगवद्विग्रहके दर्शन आदिके लिये चले जाते हैं, उनपर भगवान् प्रसन्न न होकर उलटे अप्रसन्न होते हैं; क्योंकि परमात्मा ही सबकी आत्मा हैं—इस सिद्धान्तके अनुसार उस आपत्तिग्रस्त साथीका तिरस्कार परमात्माका ही तिरस्कार है। इसलिये विपत्तिग्रस्त साथीका त्याग तो भूलकर भी कभी नहीं करना चाहिये।

तीर्थोंमें किसी प्रकारका किंचिन्मात्र भी पाप कभी नहीं करना चाहिये; क्योंकि जैसे तीर्थोंमें किये हुए स्नान-दान, जप-तप, यज्ञ-हवन, व्रत-उपवास, ध्यान-दर्शन, पूजा-पाठ, सेवा-सत्सङ्ग आदि महान् फलदायक होते हैं, वैसे ही वहाँ किये हुए असत्यभाषण, कपट, चोरी, बेईमानी, दगाबाजी, विश्वासघात, मांसभक्षण, मद्यपान, जूआ, व्यभिचार, हिंसा आदि पाप वज्रलेप हो जाते हैं।

शास्त्रोंमें तीर्थोंकी बड़ी भारी महिमा गायी गयी है। श्रीमहाभारतमें पुलस्त्य ऋषिने कहा है—

पुष्करे तु कुरुक्षेत्रे गङ्गायां मगधेषु च।
स्नात्वा तारयते जन्तुः सप्त सप्तावरांस्तथा॥

(वन० ८५। ९२)

'पुष्कर, कुरुक्षेत्र, गङ्गा और मगधदेशीय तीर्थों—फल्गुनदी आदिमें स्नान करनेवाला मनुष्य अपनी सात पीछेकी और सात आगेकी पीढ़ियोंका उद्धार कर देता है।'

ऐसे तीर्थ-माहात्म्यके वचनोंको लोग अर्थवाद और रोचक मानते हैं; किंतु इनको अर्थवाद और रोचक न मानकर यथार्थ ही समझना चाहिये। इनका फल यदि पूरा देखनेमें नहीं आता तो उसका कारण हमारे पूर्वसंचित पाप, वर्तमान नास्तिक वातावरण, पंडे और पुजारियोंके दुर्व्यवहार तथा तीर्थोंमें पाखंडी, नास्तिक और भयानक कर्म करनेवालोंके निवास आदिसे लोगोंके तीर्थोंमें श्रद्धा-विश्वास और प्रेमका कम हो जाना ही है। इसीसे तीर्थका पूरा लाभ नहीं मिलता; किंतु जो मनुष्य श्रद्धा-भक्तिपूर्वक यम-नियमोंका पालन करते हुए तीर्थवास आदि करते हैं, उनको तीर्थका पूरा फल प्राप्त होता है।

श्रीस्कन्दपुराणमें कहा गया है—

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्।
निर्विकाराः क्रियाः सर्वाः स तीर्थफलमश्नुते॥

(माहे० कुमार० २। ६)

'जिसके हाथ, पैर और मन भलीभाँति वशमें हों तथा जिसकी सभी क्रियाएँ निर्विकारभावसे सम्पन्न होती हों, वही तीर्थका पूरा फल प्राप्त करता है।'

इसी प्रकार स्कन्दपुराणके काशीखण्डमें बतलाया गया है कि अश्रद्धालु, पापात्मा, नास्तिक, संशयात्मा और केवल तर्कका सहारा लेनेवाला—ये पाँच प्रकारके मनुष्य तीर्थ-सेवनका फल नहीं पाते।

इसलिये हमलोगोंको यम-नियमोंका पालन करते हुए श्रद्धा-भक्तिपूर्वक निष्कामभावसे ही तीर्थोंका सेवन करना चाहिये। इससे मनुष्यका शीघ्र कल्याण हो जाता है।

तीर्थोंमें जाकर मनुष्यको महात्मा पुरुषोंके सत्सङ्गका विशेषरूपसे लाभ उठाना चाहिये। श्रीस्कन्दपुराणमें कहा गया है—

मुख्या पुरुषयात्रा हि तीर्थयात्राप्रसङ्गतः।
सद्भिः समागमो भूमिभागस्तीर्थतयोच्यते॥

(माहे० कुमा० ११। ११)

'तीर्थ-यात्राके प्रसङ्गसे महापुरुषोंके दर्शनके लिये जाना तीर्थ-यात्राका मुख्य उद्देश्य है; अतः जिस भूभागमें संत-महात्मा निवास करते हैं, वही 'तीर्थ' कहलाता है।'

भगवद्भक्त महात्मा पुरुषोंको तीर्थोंको भी तीर्थत्व प्रदान करनेवाला कहा गया है। श्रीनारदजीने अपने भक्तिसूत्रोंमें कहा है—

भक्ता एकान्तिनो मुख्याः। कण्ठावरोधरोमञ्चाश्रुभिः परस्परं लपमानाः पावयन्ति कुलानि पृथिवीं च। तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि सुकर्मीकुर्वन्ति कर्माणि सच्छास्त्रीकुर्वन्ति शास्त्राणि।

(सूत्र ६७, ६८, ६९)

'एकान्त (अनन्य) भक्त ही श्रेष्ठ हैं। प्रेमके कारण जिनका कण्ठ रुक जाता है, शरीर पुलकित हो जाता है और आँखोंमें प्रेमके आँसुओंकी धारा बहने लगती है, ऐसे अनन्य भक्त सम्भाषण करते हुए अपने कुलोंको और पृथ्वीको पवित्र करते हैं। वे तीर्थोंको सुतीर्थ, कर्मोंको सुकर्म और शास्त्रोंको सत्-शास्त्र कर देते हैं।'

श्रीमद्भागवतमें धर्मराज युधिष्ठिर महात्मा विदुरजीसे कहते हैं—

भवद्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं प्रभो।
तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तःस्थेन गदाभृता॥

(१। १३। १०)

'प्रभो! आप-सरीखे भगवद्भक्त स्वयं तीर्थस्वरूप हैं; क्योंकि आपलोग अपने हृदयमें विराजित भगवान् गदाधरके प्रभावसे तीर्थोंको भी तीर्थ (पवित्र) बना देते हैं।'

अतएव ऐसे महात्मा पुरुषोंके सङ्गको तीर्थोंसे भी बढ़कर बतलाया गया है। श्रीस्कन्दपुराणमें आता है—

तीर्थादप्यधिकः स्थाने सतां साधुसमागमः।
पचेलिमफलः सद्यो दुरन्तकलुषापहः॥
अपूर्वः कोऽपि सद्गोष्ठीसहस्रकिरणोदयः।
य एकान्ततयात्यन्तमन्तर्गततमोपहः॥

(स्क० मा० कुमा० ११। ६-७)

'यह सच है कि श्रेष्ठ (श्रद्धालु एवं सरलहृदय) पुरुषोंका साधुओं—महापुरुषोंके साथ समागम तीर्थसे भी बढ़कर है; क्योंकि उसका परिपक्व फल तुरन्त प्राप्त होता है तथा वह दुरन्त—कठिनाईसे दूर होनेवाले पापोंका भी नाश कर देता है। श्रेष्ठ पुरुषोंका सङ्ग हजारों किरणोंसे प्रकाशमान सूर्योदयकी भाँति अद्भुत प्रभावशाली है; क्योंकि वह अन्तःकरणमें व्याप्त अज्ञानरूप अन्धकारका अत्यन्त नाश करनेवाला है।'

इसलिये श्रीरामचरितमानसमें संत-महात्माओंको जङ्गम तीर्थराज बतलाया है—

मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथ राजू॥

अतएव तीर्थोंमें जाकर मनुष्यको साधु, महात्मा, ज्ञानी, योगी और भक्तोंके दर्शन, सेवा, सत्सङ्ग, वन्दन, उपदेश, आदेश और वार्तालापके द्वारा विशेष लाभ उठानेके लिये उनकी खोज करनी चाहिये। भगवान्‌ने अर्जुनके प्रति गीतामें कहा है—

तद् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

(४। ३४)

'उस ज्ञानको तू समझ; श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ आचार्यके पास जाकर उनको भलीभाँति दण्डवत् प्रणाम करनेसे, उनकी सेवा करनेसे और उनसे कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करनेसे परमात्मतत्त्वको भलीभाँति जाननेवाले वे ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञानका उपदेश करेंगे।'

परन्तु कञ्चन-कामिनीके लोलुप, अपने नाम-रूपको पुजवाकर लोगोंको अपना उच्छिष्ट (जूँठन) खिलानेवाले, मान, बड़ाई और प्रतिष्ठाके गुलाम, प्रमादी और विषयासक्त पुरुषोंका सङ्ग भूलकर भी नहीं करना चाहिये, चाहे वे साधु, ब्रह्मचारी और तपस्वीके वेशमें भी क्यों न हों। मांसाहारी, मादक पदार्थोंका सेवन करनेवाले, पापी दुराचारी और नास्तिक पुरुषोंका तो दर्शन भी नहीं करना चाहिये।

तीर्थोंमें किसी-किसी स्थानपर तो पंडे-पुजारी और महंत आदि यात्रियोंको अनेक प्रकारसे तंग किया करते हैं। यात्रा सफल करवानेके नामपर दुराग्रहपूर्वक अधिक धन लेनेके लिये अड़ जाना, देव-मन्दिरोंमें बिना पैसे लिये दर्शन न करना, बिना भेंट लिये स्नान न करने देना, यात्रियोंको धमकाकर और पापका भय दिखलाकर जबर्दस्ती रुपये ऐंठना, मन्दिरों और तीर्थोंपर भोग-भंडारे आदिके नामपर अधिक भेंट चढ़ानेके लिये अनुचित दबाव डालना, अपने स्थानोंपर ठहराकर अधिक धन प्राप्त करना, सफेद चील (काँक) पक्षियोंको ऋषि और देवताका रूप देकर और उनकी जूँठन खिलाकर भोले-भाले यात्रियोंसे धन ठगना तथा देवमूर्तियोंके द्वारा शर्बत पिये जाने आदि झूठी करामातोंको प्रसिद्ध करके लोगोंको ठगना इत्यादि चेष्टाएँ इसी ढंगकी हैं। अतः तीर्थयात्रियोंको इन सबसे सावधान रहना चाहिये।

स्त्रीके लिये पति, बालकोंके लिये माता-पिता तथा शिष्यके लिये गुरु भी जङ्गम तीर्थ हैं। अतः मनुष्यको तीर्थयात्रा इनके साथ अथवा इनकी आज्ञासे करनी चाहिये, तभी तीर्थयात्रा सफल होती है; क्योंकि ये साक्षात् सजीव तीर्थ हैं। इसलिये इनकी सेवा-शुश्रूषा करनेका तीर्थयात्रासे बढ़कर माहात्म्य है। अतः मनुष्यको उनके हितमें रत रहते हुए निष्काम प्रेमभावसे श्रद्धा-भक्तिपूर्वक उनकी सेवा, वन्दन और आज्ञापालन

करना चाहिये।

इसी प्रकार सत्य, क्षमा, दया, तप, दम, संतोष, धैर्य धर्मपालन, अन्तःकरणकी पवित्रता तथा ज्ञानपूर्वक भगवान्‌का ध्यान आदि तो तीर्थोंसे भी बढ़कर हैं। इनको शास्त्रोंमें 'मानसतीर्थ' कहा गया है—

ध्यानपूते ज्ञानजले रागद्वेषमलापहे।
यः स्नाति मानसे तीर्थे स याति परमां गतिम्॥

(स्कन्द० काशी० पूर्व० ६। ४१)

'ध्यानसे पवित्र, ज्ञानरूप जलसे भरे हुए तथा रागद्वेषरूप मलको दूर करनेवाले मानसतीर्थमें जो पुरुष स्नान करता है, वह परम गतिको प्राप्त होता है।'

अतएव मनुष्यको कुसङ्गसे बचकर तीर्थोंमें श्रद्धा-प्रेम रखते हुए सावधानीके साथ महापुरुषोंका सङ्ग और उपर्युक्त यम-नियमादिका भलीभाँति पालन करके तीर्थोंसे लाभ उठाना चाहिये। यदि इन नियमोंके पालनमें कहीं कुछ कमी भी रह जाय तो उतना हर्ज नहीं; परंतु चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते, भगवान्‌के नामका जप तथा उनके स्वरूपका ध्यान, गुण, प्रभाव, तत्त्व और रहस्यके सहित सदा-सर्वदा निरन्तर ही करनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

तीर्थयात्रियोंके लिये उपर्युक्त बातें बहुत ही उपयोगी हैं, अतः उनको समय-समयपर पढ़कर काममें लानेकी अवश्य चेष्टा करनी चाहिये। काममें लानेसे निश्चय ही मनुष्यका सुधार होकर उद्धार हो सकता है।

तीर्थ-यात्रा कैसे करनी चाहिये?

तीर्थयात्राचिकीर्षुः प्राग् विधायोपोषणं गृहे।
गणेशं च पितॄन् विप्रान् साधून् भक्त्या प्रपूज्य च॥
कृतपारणको हृष्टो गच्छेन्नियमधृक् पुनः।
आगत्याभ्यर्च्य च पितॄन् यथोक्तफलभाग् भवेत्॥

तीर्थयात्राकी इच्छा करनेवाला मनुष्य पहले घरमें उपवास, तीर्थयात्राके निमित्तसे (यथाशक्ति) गणेशजीका पूजन, पितृश्राद्ध, ब्राह्मण-पूजन तथा साधुओंका पूजन करे। फिर पारण करके हर्षित चित्तसे संयम-नियमका पालन करता हुआ तीर्थमें जाय। वहाँ पहुँचकर पितरोंका पूजन करे, तब वह तीर्थके यथार्थ फलका भागी होता है।

न परीक्ष्यो द्विजस्तीर्थेष्वन्नार्थी भोज्य एव च।
शक्तुभिः पिण्डदानं च चरुणा पायसेन च॥
कर्तव्यमृषिभिर्दृष्टं पिण्याकेन गुडेन च।
श्राद्धं तत्र प्रकर्तव्यमर्घ्यावाहनवर्जितम्॥

तीर्थमें ब्राह्मणकी परीक्षा न करे; वह अन्नकी इच्छा रखनेवाला हो तो उसे अवश्य भोजन करा दे। तीर्थोंमें सत्तू, हविष्यान्न, खीर, तिलके चूर्ण और गुड़से पिण्डदान करे। तीर्थमें अर्घ्य और आवाहनके बिना ही श्राद्ध करे।

अकालेऽप्यथ वा काले तीर्थे श्राद्धं च तर्पणम्।
अविलम्बेन कर्तव्यं नैव विघ्नं समाचरेत्॥

श्राद्धके योग्य समय हो अथवा न हो, तीर्थमें पहुँचते ही तुरन्त श्राद्ध-तर्पण करे। श्राद्धमें विघ्न नहीं आने दे।

तीर्थं प्राप्य प्रसङ्गेन स्नानं तीर्थे समाचरेत्।
स्नानजं फलमाप्नोति तीर्थयात्राश्रितं न तु॥

दूसरे कामसे तीर्थमें जानेपर भी वहाँ स्नान अवश्य करे। यों करनेपर वह तीर्थस्नानके फलको पाता है। तीर्थयात्राके फलको नहीं।

नृणां पापकृतां तीर्थे पापस्य शमनं भवेत्।
यथोक्तफलदं तीर्थं भवेच्छ्रद्धात्मनां नृणाम्॥

पाप करनेवाले मनुष्योंके पाप तीर्थस्नानसे नष्ट हो जाते हैं। श्रद्धालु पुरुषोंको तीर्थ शास्त्रोक्त फल देनेवाला होता है।

षोडशांशं स लभते यः परार्थं च गच्छति।
अर्धं तीर्थफलं तस्य यः प्रसङ्गेन गच्छति॥
कुशप्रतिकृतिं कृत्वा तीर्थवारिणि मज्जयेत्।
मज्जयेच्च यमुद्दिश्य सोऽष्टमांशं लभेत वै॥

जो दूसरेके प्रति तीर्थमें जाता है, उसको तीर्थफलका सोलहवाँ भाग मिलता है। जो दूसरे कार्यसे जाता है, उसको आधा फल मिलता है और कुशका पुतला बनाकर उसे तीर्थमें स्नान कराया जाता है तो जिसके उद्देश्यसे पुतला नहलाया जाता है, उसे तीर्थस्नान करनेका आठवाँ भाग प्राप्त हो जाता है।

तीर्थोपवासः कर्तव्यः शिरसो मुण्डनं तथा।
शिरोगतानि पापानि यान्ति मुण्डनतो यतः॥

तीर्थमें जाकर उपवास तथा सिरका मुण्डन कराना चाहिये; मुण्डन करानेसे सिरपर चढ़े हुए पाप दूर हो जाते हैं।

यदह्नि तीर्थप्राप्तिः स्यात् ततोऽह्नः पूर्ववासरे।
उपवासस्तु कर्तव्यः प्राप्तेऽह्नि श्राद्धदो भवेत्॥

जिस दिन तीर्थमें पहुँचना हो, उसके पहले दिन उपवास करे और तीर्थमें पहुँचनेके दिन श्राद्ध करे।

(स्कन्दपुराण-काशीखण्ड)

636 Tirthank_Section_25_2_Back

पाप करनेके लिये तीर्थमें नहीं जाना चाहिये

[काशीका महत्त्व बतलाते हुए, पापकर्म करनेवालोंको काशीमें रहनेका निषेध करते हुए निम्नलिखित वचन कहे गये हैं। इन्हें सभी शास्त्रवर्णित तीर्थोंके सम्बन्धमें समझना चाहिये।]

पापमेव हि कर्तव्यं मतिरस्ति यदीदृशी।
सुखेनान्यत्र कर्तव्यं मही ह्यस्ति महीयसी॥
अपि कामातुरो जन्तुरेकां रक्षति मातरम्।
अपि पापकृता काशी रक्ष्या मोक्षार्थिनैकिका॥
परापवादशीलेन परदाराभिलाषिणा।
तेन काशी न संसेव्या क्व काशी निरयः क्व सः॥
अभिलष्यन्ति ये नित्यं धनं चात्र प्रतिग्रहैः।
परस्वं कपटैर्वापि काशी सेव्या न तैर्नरैः॥
परपीडाकरं कर्म काश्यां नित्यं विवर्जयेत्।
तदेव चेत् किमत्र स्यात् काशीवासो दुरात्मनाम्॥

'मैं तो पाप करूँगा ही—ऐसी जिसकी बुद्धि है, उसके लिये पृथ्वी बहुत बड़ी है। वह काशी (तीर्थ) से बाहर कहीं भी जाकर सुखसे पाप कर सकता है। कामातुर होनेपर भी मनुष्य एक अपनी माताको तो बचाता ही है। ऐसे ही पापी मनुष्यको भी मोक्षार्थी होनेपर एक काशी तीर्थको तो बचाना ही चाहिये। दूसरोंकी निन्दा करना जिसका स्वभाव है और जो परस्त्रीकी इच्छा करता है, उसके लिये काशीमें रहना उचित नहीं। कहाँ मोक्ष देनेवाला काशीधाम (तीर्थ) और कहाँ ऐसा नारकी मनुष्य! जो सदा प्रतिग्रह (दान) के द्वारा धनकी इच्छा करते हैं और जो कपट-जाल फैलाकर दूसरोंका धन हरण करना चाहते हैं, उन मनुष्योंको काशी (तीर्थ) में रहकर ऐसा कोई काम कभी नहीं करना चाहिये, जिससे दूसरेको पीड़ा हो। जिनको यही करना हो, उन दुरात्माओंको काशी (तीर्थ)-वाससे क्या लेना है!'

अर्थार्थिनस्तु ये विप्र ये च कामार्थिनो नराः।
अविमुक्तं न तैः सेव्यं मोक्षक्षेत्रमिदं यतः॥
शिवनिन्दापरा ये च वेदनिन्दापराश्च ये।
वेदाचारप्रतीपा ये सेव्या वाराणसी न तैः॥
परद्रोहधियो ये च परेर्ष्याकारिणश्च ये।
परोपतापिनो ये वै तेषां काशी न सिद्धये॥

'विप्रवर! जो अर्थार्थी या कामार्थी (कामभोगके इच्छुक) हैं, उनको इस मुक्तिदायी काशी (तीर्थ)-क्षेत्रमें नहीं रहना चाहिये। जो शिव (भगवान्) की निन्दामें और वेदकी निन्दामें लगे रहते हैं तथा वेदाचारके विपरीत आचरण करते हैं, उनको वाराणसी (तीर्थ) में नहीं रहना चाहिये। जिनके मनमें दूसरोंके प्रति द्रोह है, जो दूसरोंसे डाह करते हैं और दूसरोंको कष्ट पहुँचाते हैं, काशी (तीर्थ) में उनको सिद्धि नहीं मिलती।'

तीर्थयात्रामें कर्तव्य; तीर्थयात्रामें छोड़नेकी चीजें

तीर्थयात्रामें—आसक्तिका त्याग कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—कामनाओंका त्याग कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—ममताका त्याग कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—अहंकारका त्याग कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—केवल भगवान्में आसक्ति करो।
तीर्थयात्रामें—केवल भगवत्प्रेमकी कामना करो।
तीर्थयात्रामें—केवल भगवान्में ही ममता करो।
तीर्थयात्रामें—केवल भगवान्के दासत्वका अहंकार करो।
तीर्थयात्रामें—दम्भ छोड़ो, दर्प छोड़ो, मान छोड़ो, शान छोड़ो।
तीर्थयात्रामें—गर्व छोड़ो, क्रोध छोड़ो, काम छोड़ो, नाम छोड़ो।
तीर्थयात्रामें—लोभ छोड़ो, मोह छोड़ो, द्रोह छोड़ो, द्वेष छोड़ो।
तीर्थयात्रामें—वैर छोड़ो, सङ्ग छोड़ो, ढंग छोड़ो, रंग छोड़ो।
तीर्थयात्रामें—क्रोध करो अपने दोष-दुर्गुणोंपर।
तीर्थयात्रामें—लोभ करो भगवान्के भजनका।
तीर्थयात्रामें—मोह करो भगवान्की महिमामें।
तीर्थयात्रामें—सङ्ग करो भगवद्भक्तोंका, संतोंका।

मानवसमाज और तीर्थयात्रा

(लेखक—स्वामी श्रीविशुद्धानन्दजी परिव्राजक)

अखिलब्रह्माण्डनायक परात्पर पूर्णतम पुरुषोत्तम परमात्माकी सृष्टिमें अनन्त ब्रह्माण्ड हैं। प्रत्येक ब्रह्माण्डमें अनन्त-भू-भाग हैं। उन समस्त-भू-भागोंमें भारतवर्ष ही ऐसा पावन देश है, जहाँके सरिता, सरोवर, वन, पर्वत और जनपदादि भी अपनी गुण-गरिमा एवं पावनतासे विश्वके समस्त प्राणियोंको परम सिद्धि प्रदान करनेमें समर्थ हैं। अतएव भारतीय समाजकी समस्त आर्थिक, सामाजिक एवं पारमार्थिक व्यवस्थाएँ श्रुति-स्मृति-प्रतिपादित धर्मशास्त्रोंके अटल सिद्धान्तोंपर प्रतिष्ठित हैं। उन धर्मशास्त्रोंसे भारतीय जीवनके आदर्श, सभ्यता, संस्कृति तथा विद्या-वैभवके उत्कर्षका ज्ञान प्राप्त होता है। इसी कारण आर्यभूमिका प्रत्येक प्राणी स्वाभिमानपूर्वक कहता है कि समस्त देशोंको शान्तिका पाठ पढ़ानेवाला देश भारतवर्ष ही है; क्योंकि भारतीय साहित्यमें मानवजीवनके सर्वविध उत्कर्षकी स्फूर्ति प्राप्त होती है। प्राचीन कालमें उस विशुद्ध चेतनाकी प्राप्तिके स्थान तीर्थ माने जाते थे, जहाँ मानव-समाज किन्हीं विशेष पर्व-तिथियोंपर जाकर पूर्वजोंकी अपूर्व देन—धैर्य, साहस, सौख्य, यश, ऐश्वर्य और पुण्य प्राप्त करते थे। आज भी वे तीर्थ अपनी पावनताका परिचय दे रहे हैं। इसी भावनासे प्रेरित होकर भारतवर्षके मानव आज भी लक्षावधि संख्यामें नित्य तीर्थयात्राके लिये जाते हैं। **'तरति अनेन इति तीर्थम्'** अर्थात् जिसके द्वारा मनुष्य इस अपार संसारसे तर जाय, उसीको 'तीर्थ' संज्ञा हमारे धर्माचार्योंने दी है। वे तीर्थ अलौकिक हैं, स्वर्गके सोपान हैं और भगवान्‌की विविध लीलाओंके स्मारक होनेसे भगवन्मय हैं। वे तीर्थ दर्शन, सेवन, मज्जन, स्मरण एवं अभिगमनसे चित्त-शुद्धि करनेवाले हैं। इसका मुख्य कारण है भारतीय महर्षियोंकी तपस्या। उन्होंने अपनी तपःशक्तिद्वारा भारत-वसुन्धराके रजःकणोंमें ऐसे पावन तत्त्वोंको संनिविष्ट कर दिया है कि उस रजको मस्तकपर धारण करनेमात्रसे सम्पूर्ण पाप-ताप उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जैसे भगवान् भास्करके उदय होनेपर अन्धकार नष्ट हो जाता है। कहनेका तात्पर्य यह है कि तीर्थयात्रासे मानव-समाजको महान् पुण्यकी प्राप्ति बतायी गयी है। वहाँ जानेपर प्राणी देवाधिदेव हो जाता है; क्योंकि प्राणी तीर्थ जानेसे पूर्व अपने शरीरको सदाचार, सद्विचार और सदुपासनाद्वारा विशुद्ध बना लेता है, जिससे तीर्थयात्राका महान् पुण्य उसे सहज ही प्राप्त हो जाता है। **'प्रतिमां च हरेर्दृष्ट्वा सर्वतीर्थफलं लभेत्।'** आदि वचनोंसे विदित होता है कि तीर्थोंकी महिमा भगवत्स्मृतिको चिरस्थायी बनाये रखनेके लिये ही कही गयी है। तीर्थमहिमाके प्रसङ्गमें स्पष्ट कहा गया है—**'तीर्थानां च परं तीर्थं कृष्णनाम महर्षयः। तीर्थीकुर्वन्ति जगतीं गृहीतं कृष्णनाम यैः।'** अर्थात् समस्त तीर्थोंमें परम तीर्थ भगवान् वासुदेवका नाम है; जो कृष्णनामका उच्चारण करते हैं, वे सम्पूर्ण जगत्‌को तीर्थ बना सकते हैं; क्योंकि तीर्थोंका पर्यवसान निरन्तर भगवत्स्मरणमें ही है। अभिप्राय यह कि यह सम्पूर्ण चराचर नाम-रूप-क्रियात्मक जगत् भगवत्स्वरूप ही है। सृष्टि-सृष्टिकर्ता, पाल्य-पालक और संहरणीय-संहर्ता—सब कुछ एकमात्र प्रभु ही हैं। भारतवर्षमें ऐसे पावन स्थान सर्वत्र प्राप्त होते हैं। उनमें जो प्रमुख हैं, उनका परिचय पाठकोंको कल्याणके प्रस्तुत विशेषाङ्क 'तीर्थाङ्क' में मिलेगा। धर्मग्रन्थोंमें तीर्थोंकी महिमाके प्रसङ्गमें तीर्थस्नानसे दैविक-दैहिक-भौतिक त्रिविध तापोंकी निवृत्ति बतायी गयी है। अतः कृमि-भस्म-विट्‌रूप परिणामवाले नाशवान् शरीरसे यदि तीर्थयात्रा नहीं की तो, मनुष्यका जीवन व्यर्थ ही है।

अवश्य ही जो वर्णाश्रममें स्थित होकर शास्त्राज्ञाका पालन करता है, जितेन्द्रिय है, वेदोंमें विश्वास करता है तथा पञ्च महायज्ञोंका अनुष्ठान करता है, उसे ही तीर्थ-यात्राका पूरा लाभ मिलता है। जिसके मुखपर दीनताका भाव कभी नहीं आता, जो शूरवीर है अर्थात् गौ, ब्राह्मण, नारी और शरणागतोंकी शरीरका व्यामोह छोड़कर रक्षा करता है, जो नेत्रहीन, पङ्गु, बाल, वृद्ध, असमर्थ, रोगी और अपने आश्रितजनोंकी रक्षा करता है, गो-ग्रास निकालता है और गौओंकी सेवामें सदा तत्पर रहता है, उसीको तीर्थसेवनका यथार्थ फल प्राप्त होता है। इसी प्रकार जो सरोवर, बावली, कूप और पौंसले आदि तीर्थोंमें बनवाते हैं, उनको अक्षय लोकोंकी प्राप्ति होती है; क्योंकि वहाँ सभी प्राणी इच्छानुसार जल पीते हैं और जल ही प्राणियोंका जीवन है। तीर्थमें जाकर मनुष्यको शास्त्र-विपरीत निन्दित कर्म तो भूलकर भी नहीं करने चाहिये; क्योंकि अन्यत्र किये पाप तो तीर्थोंमें जानेसे क्षीण होते हैं किन्तु जो पाप तीर्थोंमें किये जाते हैं, उनका परिमार्जन नहीं किया जा सकता।

तीर्थ-तत्त्व-मीमांसा

(लेखक—पं० श्रीजानकीनाथजी शर्मा)

तीर्थयात्राका हिंदू-संस्कृति तथा हिंदू-धर्ममें प्रधान स्थान है[1]। प्रत्येक हिंदू इसलिये लालायित रहता है कि किसी प्रकार वह एक बार भारतके सम्पूर्ण तीर्थोंका दर्शन-अवगाहन करके अपने जीवनको कृतार्थ करे। एतदर्थ वह कभी-कभी तो अपनी सारी सम्पत्तिको एक ही बारमें न्यौछावर करनेके लिये तैयार हो जाता है। प्रश्न होता है कि तीर्थोंमें कौन-सा ऐसा तत्त्व है, जिसके लिये यह बलिदान—यह त्यागकी परम्परा निरन्तर चालू है। इसका समाधान यह है कि भगवत्प्राप्तिके मार्गमें तीर्थ बहुत बड़े सहायक हैं। तीर्थ स्वयं भी देवता हैं। गङ्गादि दिव्य नदियाँ साक्षात् देवता होनेके साथ-साथ भगवान्से सम्बद्ध भी हैं। इनके तीरोंपर भगवत्प्राप्त संतजन भी निवास करते हैं। उनके सम्पर्कसे भगवत्प्राप्ति, जिसके बिना इस लोकसे प्रयाण उपनिषदोंमें शोच्य कहा गया[2] है, सहज हो जाती है। अतएव तीर्थोंका महत्त्व अनन्त है। सुतरां प्रस्तुत निबन्धमें तीर्थके सभी अङ्गोंपर प्रकाश डालनेकी चेष्टा की जाती है।

'तीर्थ' शब्दका अर्थ और परिभाषा

'तॄ-प्लवनतरणयोः' धातुसे **'पातॄतुदिवचिरिचिसिचिभ्यस्थक्'** इस उणादि सूत्रद्वारा 'थक्' प्रत्यय करनेपर **'तीर्यते अनेन** (इससे तर जाता है)' इस अर्थमें 'तीर्थं' या अर्धर्चादिसे 'तीर्थः' शब्द भी निष्पन्न होता है। अमरसिंहने निपान, आगम, ऋषिजुष्ट जल तथा गुरुकी भी तीर्थसंज्ञा कही है—

निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टजले गुरौ।

(अमर० ३। थान्त ९३)

अमरके टीकाकारोंने 'निपान' का अर्थ जलावतार—नदी आदिमें थाह या पार होनेका स्थान तथा उपकूप अथवा जलाशय, एवं 'आगम' का अर्थ शास्त्र किया है। साथ ही ऋषिसेवित जल, उपाध्यायादि एवं अयोध्या, काशी आदि स्थलोंको भी उन्होंने तीर्थ कहा है। विश्वप्रकाश-कोशकारने शास्त्र, यज्ञ, क्षेत्र, उपाय, उपाध्याय, मन्त्री, अवतार, ऋषिसेवित जल आदिको तीर्थसंज्ञा दी है—

तीर्थं शास्त्राध्वरक्षेत्रोपायोपाध्यायमन्त्रिषु।
अवतारर्षिजुष्टाम्भःस्त्रीरजःसु च विश्रुतम्॥

(थद्विकम्, ८)

मेदिनीकोशकारने भी प्रायः यही बात कही है—

तीर्थं शास्त्राध्वरक्षेत्रोपायनारीरजःसु च।
अवतारर्षिजुष्टाम्बुपात्रोपाध्यायमन्त्रिषु ।

(१७। ७)

आचार्य हेमचन्द्रने भी अपने अनेकार्थसंग्रह नामक कोषमें प्रायः ये ही बातें कही हैं—

तीर्थं शास्त्रे गुरौ यज्ञे पुण्यक्षेत्रावतारयोः।
ऋषिजुष्टे जले सत्रिण्युपाये स्त्रीरजस्यपि॥

(अनेका० संग्र० को० २। २२०)

त्रिकाण्डशेषके टीकाकारने साम-दानादि उपायों, योग, ध्यान, सत्पात्र ब्राह्मण, अग्नि, निदान तथा जङ्गम, मानसिक, भौतिक इन त्रिविध पवित्र पदार्थोंको भी सम्मिलित किया है (३। १९७ की नामचन्द्रिका टीका)। प्रस्तुत निबन्धका सम्बन्ध इन अन्तिम तीन पदार्थोंसे ही है।

तीर्थोंका त्रैविध्य[3]

साधु-ब्राह्मणोंको इस विश्वका जङ्गम, चलता-फिरता तीर्थ कहा गया है। इनके सद्वाक्यरूप निर्मल जलसे मलिन जन भी शुद्ध हो जाते हैं—

ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं निर्मलं सार्वकामिकम्।
येषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिना जनाः॥

(शातातपस्मृ० १। ३४)

मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू॥

बृहद्धर्मपुराणमें ब्राह्मणोंके चरण, गायोंकी पीठ, बालकोंके सिर तथा अपने दाहिने कानको तीर्थ कहा गया है। (पू० खं० १५। १—३) ये सब भी जङ्गम तीर्थ ही हैं। इसी प्रकार मनसे उत्पन्न होनेवाले सद्भाव मानस तीर्थ तथा पृथ्वीपरके पवित्र स्थल भौमतीर्थ कहे गये हैं।

---

१. तस्य द्वाराणि यजनं तपो दानं दमः क्षमा। ब्रह्मचर्यं तथा सत्यं तीर्थानुसरणं शुभम्॥
(मत्स्यपुरा०—आनन्दा० पून—२१२। २०; दूसरे संस्करणोंमें इसकी संख्या २११। १८-१९ है)

२. यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वास्माल्लोकात् प्रैति स कृपणः। (बृह० उप० ३। ८)

३. दैव, आसुर, आर्ष तथा मानुष—इस प्रकार तीर्थोंके चार भेद भी किये गये हैं। (ब्रह्मपुरा० ७०। १६—१८)

मानस तीर्थ

शास्त्रोंमें सत्य, क्षमा, इन्द्रियनिग्रह, दया, सरलता, मृदुभाषण, ब्रह्मचर्य, दान, ज्ञान, दम, धृति, पुण्य—ये सभी मानसतीर्थ कहे गये हैं। मनकी शुद्धि तो सर्वोत्तम तीर्थ है ही। (देखिये महा० शा०; स्कन्दपुराण का० ६; गरुड़० उत्तर० २८। १०।) नृसिंहपुराणका ६७ वाँ अध्याय भी मानस तीर्थोंके वर्णनसे भरा है।

भौम तीर्थोंकी महत्ताका कारण

जिस प्रकार शरीरके कुछ अङ्ग पवित्र तथा श्रेष्ठ समझे जाते हैं, उसी प्रकार पृथ्वीके भी कुछ विशेष भाग महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें भूमिका प्रभाव तथा जलका तेज भी हेतु है। मुनि-महात्माओंका परिग्रह—आवासादि सम्बन्ध भी भूमिकी पवित्रतामें हेतु है[१]। इन सभी दृष्टियोंसे पूरे भारतवर्षको ही साक्षात् तीर्थ तथा तीनों लोकोंका सार कहा गया है।[२]

वेदोंमें तीर्थोंका महत्त्व

वेदोंमें तीर्थोंकी बड़ी प्रशंसा है। ऋग्वेदमें तीर्थराज प्रयागमें स्नान-दानादि करनेवालोंको स्वर्गप्राप्तिकी बात कही गयी है—

सितासिते सरिते यत्र संगते तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति।

(ऋक्-परिशि०)

अथर्ववेद कहता है—'मनुष्य तीर्थोंके सहारे भारी-से-भारी विपत्तियोंको तर जाता है। तीर्थोंके सेवनसे बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं। बड़े-बड़े यज्ञोंका अनुष्ठान करनेवाले पुण्यात्माजन जिस मार्गसे जाते हैं, तीर्थस्नायी भी उसी मार्गसे स्वर्ग जाते हैं—

तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो महीरिति यज्ञकृतः सुकृतो येन यन्ति।

(अथर्व० १८-४-७)

यजुर्वेद भगवान्‌को तीर्थमें, नदीके जलमें तथा तटमें, तटवर्ती छोटे-छोटे तृणोंमें, कुशाङ्कुरोंमें तथा जलके फेनोंमें निवास करनेवाला कहकर नमस्कार करता है—

'नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च'

(१६। ४२)

महीधरके इन शब्दोंके भाष्यमें तीर्थेभवस्तीर्थ्यः, कूले—**तटे भवः कूल्यः, शष्पं बालतृणं—गङ्गातीरोत्पन्नं कुशोङ्कुरादि, तत्र भवः शष्प्यः, तस्मै**' ऐसा लिखा है। इसी अध्यायमें '**ये तीर्थानि प्रचरन्ति**' आदि कई और तीर्थ-माहात्म्य-प्रतिपादक मन्त्र हैं। इसी प्रकार साम तथा कृष्णयजुःमें भी कई तीर्थ-प्रशंसक मन्त्र हैं।

धर्मशास्त्र एवं इतिहास-पुराणोंमें तीर्थोंकी महिमा

महाभारतका कहना है कि तीर्थाटन—तीर्थाभिगमन यज्ञोंसे भी बड़ा है। बहुत-से उपकरणों तथा नाना प्रकारके विस्तृत सम्भारोंसे सम्पन्न होनेवाले यज्ञ दरिद्रोंद्वारा कैसे शक्य हैं? पर ऋषियोंका यह परम गुह्य मत है कि दरिद्र व्यक्ति तीर्थयात्रासे जो फल पाता है, वह अग्निष्टोम आदि यज्ञोंद्वारा भी दूसरोंको सुलभ नहीं।

ऋषीणां परमं गुह्यमिदं भरतसत्तम।
तीर्थाभिगमनं पुण्यं यज्ञैरपि विशिष्यते॥

(महा० वन० ८२। १७)

अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्ट्वा विपुलदक्षिणैः।
न तत्फलमवाप्नोति तीर्थाभिगमनेन यत्॥

(महा० वन० ८२। १९)

अज्ञानेनापि यस्येह तीर्थयात्रादिकं भवेत्।
सर्वकामसमृद्धः स स्वर्गलोके महीयते॥
स्थानं च लभते नित्यं धनधान्यसमाकुलम्।
ऐश्वर्यज्ञानसम्पन्नः सदा भवति भोगवान्॥

विष्णुस्मृति बतलाती है कि महापातकी, उपपातकी—सभी तीर्थानुसरणसे शुद्ध हो जाते हैं—

'अश्वमेधेन शुद्ध्येयुर्महापातकिनस्त्विमे।
पृथिव्यां सर्वतीर्थानां तथानुसरणेन च॥'

(विष्णुस्मृ० ३५। ६)

अनुपातकिनस्त्वेते महापातकिनो यथा।
अश्वमेधेन शुद्ध्यन्ति तीर्थानुसरणेन च॥

(विष्णु० ३६। ८)

गया आदि तीर्थोंमें जानेसे पितृगण भी तर जाते हैं। वे सर्वदा यह कामना करते हैं कि हमारे कुलमें कोई ऐसा उत्पन्न हो, जो गया जाय, नील वृषका उत्सर्ग करे या अश्वमेध यज्ञ करे—

काङ्क्षन्ति पितरः पुत्रान् नरकापातभीरवः।
गयां यास्यति यः कश्चित्सोऽस्मान् संतारयिष्यति॥
एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोऽपि गयां व्रजेत्।
यजेत वाश्वमेधेन नीलं वा वृषमुत्सृजेत्॥

(अत्रिसंहिता ५५, ५६; मत्स्यपु०, वायुपुराण, महाभा०)

तीर्थानुसरण करनेवाला मनुष्य तिर्यक्-योनिमें नहीं

---

१. प्रभावादद्भुताद् भूमेः सलिलस्य च तेजसा। परिग्रहान्मुनीनां च तीर्थानां पुण्यता मता॥ (महा० अनु० १०८। १९)

२. त्रयाणामपि लोकानां तीर्थं मध्यमुदाहृतम्। जाम्बवे भारतं वर्षं तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्॥
कर्मभूमिर्यतः पुत्र तस्मात्तीर्थं तदुच्यते। (ब्रह्मपुरा० ७०। २०-२१)

जाता, बुरे देशमें उत्पन्न नहीं होता, दुःखी नहीं होता।

तीर्थोंकी संख्या तथा प्रसिद्ध तीर्थ

वायुपुराणके अनुसार तीर्थोंकी संख्या साढ़े तीन करोड़ है; किंतु वाराहपुराणमें आया है कि वायु, हनुमान्, वाली, सुग्रीव, ब्रह्माजी, लोमश, मार्कण्डेय आदि ऋषियों, सिद्ध महात्माओं तथा देवताओंने तीर्थोंकी संख्या गिनकर ६६ अरब बतलायी है—

षष्टिकोटिसहस्राणि षष्टिकोटिशतानि च।
तीर्थान्येतानि................................॥
गणितानि समस्तानि वायुना जगदायुषा।
ब्रह्मणा लोमशेनैव नारदेन ध्रुवेण च॥
जाम्बवत्याश्च पुत्रेण नारदेन हनूमता।
क्रमिता बालिना चैव बाह्यमण्डलरेखया॥
अन्तरा भ्रमणेनैव सुग्रीवेण महात्मना।
तथा च पूर्वं देवेन्द्रैः पञ्चभिः पाण्डुनन्दनैः॥
योगसिद्धैस्तथा कैश्चिन्मार्कण्डेयमुखैरपि।

(वाराहपुराण १५९। ७—११)

तथापि गङ्गाको सर्वतीर्थमयी कहा गया है—

सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्वदेवमयो हरिः।
सर्वशास्त्रमयी गीता सर्वधर्मो दयापरः॥

(नारसिंहपुरा० ६६। ४१)

तिस्रःकोट्योऽर्द्धकोटी च तीर्थानां वायुरब्रवीत्।
दिवि भूम्यन्तरिक्षे च तानि ते सन्ति जाह्नवि॥

(मत्स्य० १०१। ५)

न गङ्गासदृशं तीर्थं न देवः केशवात् परः।

(वनपर्व ९५। ९६)

प्रयाग तीर्थराज है। अयोध्या, मथुरा, काशी, काञ्ची, उज्जैन, द्वारका, हरिद्वार—ये सात पुरियाँ हैं। रामेश्वर, बदरी, पुरी तथा द्वारका—चार धाम हैं। गौतमी आदि सप्तगङ्गा; यमुना, नर्मदा, सरयू आदि सात महापवित्र नदियाँ[1] तथा महेन्द्र, मलय, सह्य, विन्ध्य, पारियात्र, ऋक्षवान्[2] आदि सात कुलाचल अधिक पवित्र कहे गये हैं।

तीर्थयात्रा न करनेसे हानि

जिसने तीन राततक भी उपवास नहीं किया, जो तीर्थोंमें कभी नहीं गया और जिसने स्वर्ण अथवा गौका दान भी नहीं किया तो ऐसा पुरुष दरिद्र होता है—

अनुपोष्य त्रिरात्राणि तीर्थान्यनभिगम्य च।
अदत्त्वा काञ्चनं गाश्च दरिद्रो नाम जायते॥

(महा० वन० ८२। १८; पद्मपुराण-आदिखं० ११। १८; बृहन्नारदीय-पूर्वभा० ६२। ८)

तीर्थयात्राका अधिकार

तीर्थयात्रामें सभी श्रद्धालुओंका अधिकार है, चाहे वे किसी भी वर्ण या आश्रमके क्यों न हों?[3] तीर्थयात्रामें स्त्रियोंका भी अधिकार है—

जन्मप्रभृति यत् पापं स्त्रिया वा पुरुषस्य वा।
पुष्करे स्नातमात्रस्य सर्वमेव प्रणश्यति॥

—इस स्कन्दपुराणके वचनसे यह स्पष्ट है। सधवा स्त्रियोंके लिये पतिके साथ ही तीर्थस्नान करनेका विधान है।

तीर्थयात्राकी विधि

तीर्थयात्रामें जानेवाले व्यक्तिको चाहिये कि वह पहले अपने घरपर ही पवित्र हो, उपवास कर गणेशजीकी तथा अन्य देवता, पितर, ब्राह्मण, साधु आदिकी यथाशक्ति धनादिसे पूजाकर शुभ मुहूर्तमें यात्रा आरम्भ करे। तीर्थसे लौटनेपर भी पुनः ये कृत्य करने चाहिये। ऐसा करनेसे निःसंदेह उसे शास्त्रोक्त फलकी प्राप्ति होती है।[4] तीर्थयात्राके समय घरसे पारण करके चलना चाहिये।

तीर्थयात्राका समय

गुरु-शुक्रके बाल, वृद्ध अथवा अस्त होनेपर, मलमासमें, गुर्वादित्यके समय, सूर्यके दक्षिणायनमें, गुरुके अतिचारमें, लुप्त-संवत्सरमें तथा पत्नीके गर्भवती होनेपर

---

१. गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

२. महेन्द्रो मलयो सह्यः शुक्तिमानृक्षवांस्तथा। विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वताः॥ (विष्णुपु०)

३. तीर्थान्येव तु सर्वाणि पापघ्नानि सदा नृणाम्। (शङ्खस्मृ०)

—इति शङ्खवचनाच्चाण्डालकुण्डगोलकादीनामप्यधिकारः। (वीरमित्रो० तीर्थप्रकाश पृ० २३)

किंतु वह्निपुराण (अध्याय १) के अनुसार मातृपितृमान् गृहस्थका तीर्थयात्रामें अधिकार नहीं है—

नित्यं गृहस्थाश्रमसंस्थितस्य मनीषिभिस्तीर्थगतिर्निषिद्धा। मातुः पितुर्भक्तिमना गृहस्थः सुतो न कुर्यात् खलु तीर्थयात्राम्॥ (वह्निपु० १)

प्राक् पित्रोरर्चया विप्रा यद्धर्मं साधयेन्नरः। न तत् क्रतुशतैरेव तीर्थयात्रादिभिर्भुवि॥ (पद्मपुरा० सृष्टिखं० ४७। ८)

४. यो यः कश्चित्तीर्थयात्रां तु गच्छेत् सुसंयतः स तु पूर्वं गृहे स्वे। कृतोपवासः शुचिरप्रमत्तः सम्पूजयेद् भक्तिनम्रो गणेशम्॥ देवान् पितॄन् ब्राह्मणांश्चैव साधून् धीमान् विप्रो वित्तशक्त्या प्रयत्नात्। प्रत्यागतश्चापि पुनस्तथैव देवान् पितॄन् ब्राह्मणान् पूजयेच्च॥ एवं कुर्वतस्तस्य तीर्थाद् यदुक्तं फलं तत् स्यान्नात्र संदेहमस्ति। (ब्रह्मपुराण)

तीर्थयात्रा नहीं करनी चाहिये। चलनेके समय विभिन्न दिशाओंके यात्रामुहूर्तका भी ध्यान रखना चाहिये।

तीर्थस्नान-विधि

तीर्थके दर्शन होते ही साष्टाङ्ग प्रणाम करना चाहिये। फिर '**तीर्थाय नमः**' कहकर पुष्पाञ्जलि देनी चाहिये। तत्पश्चात् ॐकारका उच्चारण करके तीर्थका जल छूए। तदनन्तर '**ॐ नमो देवदेवाय**:[१]' अथवा '**सागरस्वननिर्घोष०**[२]' आदि मन्त्रोंको उच्चारण करता हुआ स्नान करे। तीर्थस्नानकी विस्तृत विधि 'ब्रह्मकर्मसमुच्चय' नामकी पुस्तकके २८३ पृष्ठपर देखनी चाहिये। एक तीर्थमें स्नान करते समय दूसरे तीर्थकी प्रशंसा नहीं करनी चाहिये। पर गङ्गाजीका सर्वत्र कीर्तन किया जा सकता है। साधारण तीर्थोंमें श्रेष्ठ (पुष्कर, प्रभास, काशी, प्रयाग, कुरुक्षेत्र, गया आदि) तीर्थोंका स्मरण किया जा सकता है।

तीर्थमें तर्पण

तीर्थमें पहुँचकर पितृ-तर्पण करना चाहिये। अथवा तीर्थ-यात्राके बीचमें कोई नदी मिल जाय तो उसे पार करते समय पितरोंका जोर-जोरसे नामोच्चारण करे[३]। ऐसा न करना पितरोंके लिये बड़ा दुःखद है[४]। यह तर्पण तिलके साथ करना चाहिये। इसमें निषिद्ध तिथि-वारोंका दोष नहीं होता[५]।

तीर्थ-श्राद्धकी विधि

प्रायः प्रत्येक तीर्थमें श्राद्ध करनेका बड़ा महत्त्व है। अतएव तीर्थमें पहुँचकर श्राद्ध करना चाहिये। तीर्थ-श्राद्धमें ब्राह्मणकी परीक्षा नहीं करनी चाहिये। पिण्डदान पायस, संयाव (घी, दूध, आटेको पकाकर बनाया हुआ पदार्थ) अथवा सत्तूसे भी किया जा सकता है। तीर्थ-श्राद्धमें अर्घ्य, आवाहनकी आवश्यकता नहीं। तीर्थ-श्राद्धमें गीध, चाण्डाल आदिको भी देखनेसे न रोकना चाहिये। यहाँ उनकी दृष्टि भली ही समझी जाती है।[६] जिसका पिता जीवित हो, उसका भी तीर्थ-श्राद्धमें अधिकार है।[७]

तीर्थवास-विधि

तीर्थमें वास करनेवाले बुद्धिमान् तीर्थसेवीको चाहिये कि वह कभी कहीं किसीको कटु वचन न कहे। परस्त्री, परद्रव्य तथा परापकारका सर्वथा त्याग कर देना चाहिये। दूसरेकी निन्दा कभी नहीं करनी चाहिये। भूलकर भी किसीसे ईर्ष्या न करे, झूठ तो प्राणके कण्ठमें आनेपर भी नहीं बोलना चाहिये। पर असत्य बोलकर भी तीर्थके प्राणीकी यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिये। तीर्थवासी प्राणीकी (विशेषतः काशीवासीकी) रक्षासे त्रिलोकीकी रक्षाका पुण्य मिलता है। तीर्थवासियोंको इन्द्रियासक्तिसे प्रयत्नपूर्वक दूर रहना चाहिये। मनकी चञ्चलता भी प्रयत्नपूर्वक दूर करनी चाहिये। तीर्थवासीको मृत्युकी कामना नहीं करनी चाहिये। काशी-अयोध्यामें रहनेवालोंको तो मोक्षकी भी इच्छा नहीं करनी चाहिये। व्रत, स्नान, भगवद्भजन आदिके लिये हर प्रकारसे शरीरके स्वास्थ्यकी ही कामना करनी चाहिये। यों महाफलकी स्मृद्धिके लिये लंबी आयुकी कामना करनी चाहिये। महाश्रेयकी वृद्धिके लिये सर्वथा आत्मरक्षा करनी चाहिये।[८] तीर्थमें रहते हुए भूलकर भी पाप नहीं करना चाहिये; क्योंकि दूसरे स्थलके पाप तो

---

१. ॐ नमो देवदेवाय शितिकण्ठाय दण्डिने। रुद्राय चापहस्ताय चक्रिणे वेधसे नमः॥
सरस्वती च सावित्री वेदमाता गरीयसी। संनिधानी भवन्त्वत्र तीर्थे पापप्रणाशिनि॥
सर्वेषामेव तीर्थानां मन्त्र एष उदाहृतः। (स्कं० प्रभास०)

२. सागरस्वननिर्घोष दण्डहस्तासुरान्तक। जगत्स्रष्टर्जगन्मर्दिन् नमामि त्वां सुरेश्वर॥
तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥
इमं मन्त्रं समुच्चार्य तीर्थस्नानं समाचरेत्।

३. (क) जलं प्रतरमाणश्च कीर्तयेत् प्रपितामहान्। नदीमासाद्य कुर्वीत पितॄणां पिण्डतर्पणम्॥ (महा०)
(ख) अत्र च पितृगाथा भवति—
कुलेऽस्माकं स जन्तुः स्याद्यो नो दद्याज्जलाञ्जलिम्। नदीषु बहुतोयासु शीतलासु विशेषतः॥ (विष्णुस्मृति)

४. यस्तु तीर्थे नरः स्नात्वा न कुर्यात् पितृतर्पणम्। पिबन्ति देहनिस्स्रावं पितरस्तु जलार्थिनः॥ (तीर्थप्रका० पृ० ६८; स्कन्दपुराण)

५. तीर्थे तीर्थविशेषे च गङ्गायां प्रेतपक्षके। निषिद्धेऽपि दिने कुर्यात् तर्पणं तिलमिश्रितम्॥ (मरीचिस्मृति)

६. न चात्र श्येनगृध्रादीन् पक्षिणः प्रतिषेधयेत्। तद्रूपाः पितरस्तस्य समायान्तीति वैदिकम्॥ (देवलस्मृति)

७. देखिये वीरमित्रोदयका तीर्थप्रकाश।

८. अत्र मर्म न वक्तव्यं सुधिया कस्यचित् क्वचित्। परदारपरद्रव्यपरापकरणं त्यजेत्॥
परापवादो न वाच्यः परेर्ष्यां न च कारयेत्। असत्यं नैव वक्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि॥
अत्रत्यजन्तुरक्षार्थमसत्यमपि भाषयेत्। येन केन प्रकारेण शुभेनाप्यशुभेन वा॥
अत्रत्यः प्राणिमात्रोऽपि रक्षणीयः प्रयत्नतः। प्रसरस्त्विन्द्रियाणां हि निवार्योऽत्रनिवासिभिः॥

तीर्थमें स्नान करनेसे कट जाते हैं, किन्तु तीर्थ-स्थलमें किया हुआ पाप वज्रलेप हो जाता है। वह फिर किसी प्रकार नहीं नष्ट होता।[१] काशी आदि मुक्तिपुरियोंमें पापाचरण करना तो और भी बुरा है। वहाँका पापाचारी वहीं मर भी जाय तो भी मोक्षके पहले अनन्तकालतक उसे भैरव पिशाच बनकर भैरवी यातना सहनी पड़ती है। यह भैरवी यातना कोटि नरकसे भी अधिक दुःखद है।

तीर्थके कुछ विशेष नियम—तीर्थयात्रीको परान्न तथा परभोजन त्याग देना चाहिये। उसे जितेन्द्रिय रहना चाहिये तथा क्रोधका सर्वथा परित्याग कर देना चाहिये। तीर्थयात्रीको सदा पवित्र रहना तथा ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहिये।[२]

तीर्थयात्रामें संध्याकी विधि—मनुष्यको तीर्थयात्रामें प्रातःकाल स्नान करके एक ही समय तीनों कालकी संध्याओंका अनुष्ठान कर लेना चाहिये, तब पवित्र होकर दूसरे दिनकी यात्रा करनी चाहिये। अपवित्र अवस्थामें अथवा बिना स्नान किये नहीं चलते जाना चाहिये। भोजन करके भी यात्रा नहीं करनी चाहिये।[३]

तीर्थयात्रामें स्पर्श-दोषका अभाव—तीर्थयात्रामें, विवाहके समय, युद्धके अवसरपर, राष्ट्रविप्लवके समय तथा शहर या गाँवमें आग लग जानेपर स्पर्शास्पर्शका दोष नहीं लगता।[४]

तीर्थके दो विशेष नियम—सभी तीर्थोंमें जाकर मुण्डन तथा उपवास अवश्य करना चाहिये, किंतु कुरुक्षेत्र, बदरीनाथ, जगन्नाथपुरी तथा गयामें मुण्डनादिका नियम नहीं है। स्त्रियोंका मुण्डन केवल सम्पूर्ण केशोंको उठाकर दो अंगुल ऊपरसे काट देना है।[५]

तीर्थमें दान लेना अत्यन्त अनुचित—पुण्यस्थलों तथा तीर्थोंमें दान लेना निषिद्ध है। जो तीर्थमें लोभवश दान लेता है, उसका यह लोक तथा परलोक दोनों ही नष्ट हो जाते हैं। ग्रहण आदिपर नैमित्तिक दानके विषयमें भी यही बात है। इस विषयमें व्यक्तियोंको बहुत सावधान रहना चाहिये।[६]

तीर्थयात्रामें सूतकादिका दोष नहीं—तीर्थयात्रा, विवाह, यज्ञ तथा तीर्थाङ्ग क्रियाओंमें सूतकका स्पर्श नहीं होता। अतएव इनके कारण आगेके कर्मोंको रोकना नहीं चाहिये।[७]

तीर्थ-प्रसङ्गसे अङ्ग-बङ्गादि-गमन भी निर्दोष—यों अङ्ग (भागलपुरका जिला), बङ्ग, कलिङ्ग, सौराष्ट्र तथा मगधदेशोंमें जानेपर पुनः संस्कार तथा पुनः स्तोम-याजनका विधान है; तथापि तीर्थयात्राके प्रसङ्गमें इन स्थानोंकी यात्रा भी निर्दोष है।[८]

करतोया, गण्डकी आदिसे सावधानी—(आरा तथा बनारस जिलोंकी सीमापर बहनेवाली) कर्मनाशा नदीके स्पर्श करनेमात्रसे, करतोया नदीका (जो बंगालके बागोड़ा जिलेमें है) उल्लङ्घन करनेसे तथा गण्डकी नदीपर तैरनेसे मनुष्यके सारे पुण्य नष्ट हो जाते हैं।[९]

तीर्थोंमें कर्तव्यभेद—तपस्याका फल सर्वाधिक रेवा-तटपर होता है, अतः नर्मदा-तीरपर तप, गयामें पिण्डदान, कुरुक्षेत्रमें दान तथा काशीमें प्राणत्याग करना चाहिये।[१०]

युगन्धर आदिमें अकर्तव्य—युगन्धरमें दधि-भक्षण,

मनसोऽपि हि चाञ्चल्यमिह वार्यं प्रयत्नतः। मरणं नाभिकाङ्क्षेत काङ्क्ष्यो मोक्षोऽपि नो पुनः॥
शरीरसौष्ठवं काङ्क्षेद् व्रतस्नानादिसिद्धये। आयुर्बह्वत्र वै चिन्त्यं महाफलसमृद्धये॥
आत्मरक्षात्र कर्त्तव्या महाश्रेयोऽभिवृद्धये॥ (स्कं० पु० काशीखं० ९६। १६—२६)

१. अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति। पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति॥ (स्कं० रेवा० ८। ६९-७०)

२. तीर्थं गच्छंस्त्यजेत् प्राज्ञः परान्नं परभोजनम्। जितेन्द्रियो जितक्रोधो ब्रह्मचारी भवेच्छुचिः॥ (भविष्यपुराण)

३. तीर्थे गच्छंश्चरेत् संध्यास्तिस्र एकत्र मानवः। नास्नातो नाशुचिर्गच्छेन्न भुक्त्वा न च सूतकी॥ (तीर्थप्रकाश पृ० ४१)

४. तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे। नगरग्रामदाहे च स्पृष्टास्पृष्टिर्न दुष्यति॥ (तीर्थप्रकाश)

५. मुण्डनं चोपवासश्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां विरजां गयाम्॥ (स्कन्दपुराण)

६. तीर्थे न प्रतिगृह्णीयात् पुण्येष्वायतनेषु च। निमित्तेषु च सर्वेषु चाप्रमत्तो भवेन्नरः॥
(मत्स्यपुराण; कृत्यकल्पतरु, तीर्थकाण्ड पृ०१५)
यस्तु लौल्याद् द्विजः क्षेत्रे प्रतिग्रहरुचिर्भवेत्। नैव तस्य परो लोको नायं लोको दुरात्मनः॥ (पद्मपुराण)

७. विवाहतीर्थयज्ञेषु यात्रायां तीर्थकर्मणि। न तत्र सूतकं तद्वत् कर्म यज्ञादि कारयेत्॥ (पैठीनसि-स्मृति)

८. अङ्गबङ्गकलिङ्गेषु सौराष्ट्रमगधेषु च। तीर्थयात्रां विना गच्छन् पुनः संस्कारमर्हसि॥ (तीर्थप्रकाश)

९. कर्मनाशानदीस्पर्शात् करतोयाविलङ्घनात्। गण्डकीबाहुतरणाद् धर्मः स्खलति कीर्तनात्॥
(आनन्दरामा० यात्राकाण्ड ९। ३; यागकाण्ड ३। ३६)

१०. रेवातीरे तपस्तप्येत् पिण्डं दद्याद् गयाशिरे। दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे मरणं जाह्नवीतटे॥

अच्युतस्थलमें रात्रिवास तथा भूतालयमें स्नान निषिद्ध है। इनका पाप सूर्यग्रहणमें सरस्वती-स्नानसे दूर होता है।[१]

तीर्थमें यानका निषेध—तीर्थयात्रामें यान वर्जित है। ऐश्वर्यके गर्वसे, मोहसे या लोभसे जो यानारूढ़ होकर तीर्थयात्रा करता है, उसकी तीर्थयात्रा निष्फल हो जाती है।[२]

बैलगाड़ीकी सवारीका विशेष निषेध—मत्स्यपुराणमें मार्कण्डेयजीका वचन है कि बैलपर सवार होकर तीर्थमें जानेवाला व्यक्ति घोर नरकमें वास करता है। पितृगण उसका जल नहीं लेते। गौओंका क्रोध बड़ा भयानक होता है।[३]

यानके सम्बन्धमें विशेष बात—पर शास्त्रोंके अनुसार नौकामें यानका दोष नहीं लगता[४]। साथ ही चक्रवर्ती सम्राट् तथा मठपतिको भी यानादिसे तीर्थयात्रा करनेमें दोष नहीं माना जाता। पर माण्डलिक आदि दूसरे राजाओंको तो पैदल ही यात्रा करनी चाहिये।[५]

तीर्थमें वर्ज्य पाँच चीजें—सवारी तीर्थयात्राका आधा फल अपहरण कर लेती है। उसका आधा छत्र तथा पादुका अपहरण कर लेते हैं। व्यापार पुण्यका तीन चतुर्थांश अपहरण करता है तथा प्रतिग्रह तीर्थके सारे पुण्यको नष्ट कर देता है।[६]

गङ्गाजीमें वर्ज्य चौदह कार्य—पुण्यतोया मङ्गलमयी कल्याणमयी भगवती भागीरथीको प्राप्तकर निम्नलिखित चौदह कार्य कभी न करने चाहिये—समीपमें शौच, गङ्गाजीमें आचमन (कुल्ला), बाल झाड़ना, निर्माल्य डालना, मैल छुड़ाना, शरीर मलना, हँसी-मजाक करना, दान लेना, रतिक्रिया, दूसरे तीर्थके प्रति अनुराग, दूसरे तीर्थकी महिमा गाना, कपड़ा धोना या छोड़ना, जल पीटना तथा तैरना[७]।

तीर्थके फलमें तारतम्य—तीर्थ, मन्त्र, ब्राह्मण, देवता, ओषधि, गुरु तथा ज्योतिषीमें जिनकी जैसी जितनी श्रद्धा होती है, तदनुसार ही फल मिलता है।[८]

पाँच प्रकारके व्यक्तियोंको तीर्थका फल नहीं मिलता—श्रद्धारहित, पापी, नास्तिक, संशयात्मा तथा कुतर्की—ये पाँच प्रकारके लोग तीर्थके फलसे वञ्चित रह जाते हैं[९]—

तीर्थयात्राका फल और उपसंहार

सारे पापोंकी शुद्धि तथा संतोंका दर्शन एवं भगवद्रहस्य-ज्ञानपूर्वक अविचल भगवत्स्मृति ही तीर्थोंका वास्तविक फल है[१०]। तीर्थयात्रा करनेपर भी यदि ऐसा न हुआ तो तीर्थयात्रा राजसी-तामसी होनेके कारण निष्फल समझी जाती है—

निष्पापत्वं फलं विद्धि तीर्थस्य मुनिसत्तम।
कृषेः फलं यथा लोके निष्पन्नान्नस्य भक्षणम्॥

(देवीभाग० ८। ८। २२)

काम, क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णा, द्वेष, राग, मद, असूया, ईर्ष्या, अक्षमा, अशान्ति—ये पाप यदि देहसे न निकल सके तो कैसे शुद्धि, कैसी तीर्थ-यात्रा? उसका श्रम तो निष्फल ही हुआ।

कृते तीर्थे यदैतानि देहान्न निर्गतानि चेत्।
निष्फलः श्रम एवैकः कर्षकस्य यथा तथा॥

(देवीभाग० ८। ८। २५)

अतएव इनका बहुत ध्यान रखना चाहिये और

---

१. युगन्धरे दधि प्राश्य उषित्वा चाच्युतस्थले। तद्वद्भूतिलये स्नात्वा सपुत्रा वस्तुमर्हसि॥

२. ऐश्वर्यलोभान्मोहाद् वा गच्छेद् यानेन यो नरः। निष्फलं तस्य तत्तीर्थं तस्माद्यानं विवर्जयेत्॥

३. बलीवर्दसमारूढः शृणु तस्यापि यद् फलम्। सलिलं च न गृह्णन्ति पितरस्तस्य देहिनः॥
नरके वसते घोरे गवां क्रोधो हि दारुणः॥ (मत्स्यपुरा० ब्राह्मी सं० २—६)

४. नौकायानमयानं स्यात्। (वीरमि० तीर्थप्रकाश)

५. पदा यात्रा न कर्तव्या छत्रचामरधारिणा। राज्ञा द्वीपाधिपतिना कार्या माण्डलिकेन तु॥
पृथिवीशस्य देवस्य लग्नोद्युक्तवरस्य च। तथा मठाधिपस्यापि गमनं न पदा स्मृतम्॥ (आनन्दरामायण, यात्राकाण्ड ८। ४-५)

६. यानमर्धफलं हन्ति तदर्द्धं छत्रपादुके। वाणिज्यं त्रींस्तथा भागान् सर्वं हन्ति प्रतिग्रहः॥ (तीर्थप्रकाश)

७. गङ्गां पुण्यजलां प्राप्य चतुर्दश विवर्जयेत्। शौचमाचमनं केशं निर्माल्यमघमर्षणम्॥
गात्रसंवाहनं क्रीडां प्रतिग्रहमथो रतिम्। अन्यतीर्थरतिं चैव अन्यतीर्थप्रशंसनम्॥
वस्त्रत्यागमथाघातं संतारं च विशेषतः। (रघुनन्दनका प्रायश्चित्त-तत्त्व १। ५३५; ब्रह्माण्डपुराण)

८. मन्त्रे तीर्थे द्विजे दैवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ। यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी॥ (स्मृति-सार-समुच्चय, तीर्थप्रकाश, पृष्ठ १४)

९. अश्रद्दधानः पापात्मा नास्तिकोऽच्छिन्नसंशयः। हेतुनिष्ठश्च पञ्चैते न तीर्थफलभागिनः॥ (वायुपुराण, कृत्यकल्प० तीर्थकाण्ड पृष्ठ ६)

१०. तीर्थाटन साधन समुदाई। बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई॥
जहँ लगि साधन बेद बखानी। सब कर फल हरि भगति भवानी॥ (रामचरितमानस, उत्तर०)

प्रत्येक तीर्थयात्रीको इसी संकल्पसे तीर्थ-यात्राका आरम्भ करना चाहिये। तीर्थोंमें जानेपर तथा स्नानादिके समय भी निरन्तर ऐसी चेष्टा करनी चाहिये कि इनका किसी प्रकार अन्त हो। इन दुर्गुणोंको जीतकर यदि कोई तीर्थयात्रा या तीर्थसेवन करे तो निस्संदेह उसे कुछ भी अलभ्य न रहेगा—

कामं क्रोधं च लोभं च यो जित्वा तीर्थमावसेत्।
न तेन किंचिनप्राप्तं तीर्थाभिगमनाद् भवेत्॥

(महा० अनुशा० २५। ६५)

यद्यपि तीर्थोंसे सब कुछ सुलभ है, तथापि बुद्धिमान् पुरुषको भगवत्प्राप्तिके उद्देश्यसे ही तीर्थयात्रा करनी चाहिये; क्योंकि उसके बिना मनुष्य-जन्म विफल होता है, परलोक-यात्रा शोच्य होती है (बृहदा० ३। ८। १०)। भागवत (११। ९। २८) के अनुसार एकमात्र मनुष्य ही ब्रह्मावलोकधिषण—भगवत्-साक्षात्कारमें समर्थ होता है, अतएव मनुष्य-शरीर पाकर वह न हुआ तो उसकी सफलता कहाँ हुई। इस दृष्टिसे तो यह सबसे भारी चूक, दुर्भाग्य, पराजय, विपत्ति, उत्पात तथा पश्चात्ताप एवं लज्जाजनक बात है।

तीर्थ अनन्तकोटि हैं, कोई-कोई दुर्गम तथा केवल देवगम्य ही हैं; पर 'जहाँ मन तहाँ हम' के नाते कोई यदि मनसे श्रद्धापूर्वक वहाँ जानेकी भावना करे तो उसे उन तीर्थोंकी भी यात्रा आदिका फल सुलभ हो जाता है[1], पूर्ण फल प्राप्त हो जाता है। अतएव सर्वथा असमर्थ तथा अशक्त प्राणियोंको भी निराश न होना चाहिये। उन्हें भगवत्स्मरणके साथ श्रद्धा-भक्तिपूर्वक तीर्थोंके विवरणका पठन, मनन, स्मरण करते रहना तथा मनसे यात्रा करनी चाहिये। इससे उनका परमश्रेय हो जात है तथा उपर्युक्त पठन आदिका पुण्य भी मिल जाता है, इसमें कोई संदेह नहीं[2]।

वेदोंमें तीर्थ-महिमा

(लेखक—याज्ञिक पं० श्रीवेणीरामजी शर्मा गौड, वेदाचार्य, काव्यतीर्थ)

'तरति पापादिकं यस्मात्' अर्थात् जिसके द्वारा मनुष्य पापादिसे मुक्त हो जाय, उसे 'तीर्थ' कहते हैं। वे तीर्थ तीन प्रकारके कहे गये हैं—जङ्गम, मानस और भौम।

सदाचारसम्पन्न वेदज्ञ ब्राह्मण (जिनके द्वारा उच्चारित वेदवाणी सुननेसे मनुष्य पापमुक्त होकर समस्त कामनाओंकी प्राप्ति करते हैं) 'जङ्गमतीर्थ' कहलाते हैं।

सत्य, क्षमा, दान, दया, दम, तप, ज्ञान, संतोष, धैर्य, धर्म और चित्तशुद्धि—ये 'मानसतीर्थ' कहलाते हैं।

अयोध्यादि सप्तपुरियाँ एवं पुष्करादि तीर्थ 'भौमतीर्थ' कहलाते हैं।

उपर्युक्त तीर्थत्रयके अन्तर्गत ही समस्त तीर्थ हैं, जो समस्त भारतमें फैले हुए हैं। उन तीर्थोंमें स्थानभेदके कारण तीर्थ-विशेषकी प्रधानता एवं मान्यता पायी जाती है, न कि समस्त तीर्थोंकी।

जिस प्रकार शरीरमें मस्तक आदि कुछ अङ्ग पवित्र माने गये हैं, उसी प्रकार पृथ्वीमें भी कुछ स्थान विशेष पवित्र माने गये हैं। कहाँ-कहीं भू-भागके अद्भुत प्रभावसे, कहीं-कहीं गङ्गा आदि नदियोंके सांनिध्यसे और कहीं-कहीं ऋषि-मुनियों तथा संत-महात्माओंकी तपोभूमि अथवा भगवदवतारोंकी लीलाभूमि होनेसे 'भौमतीर्थ' पुण्यप्रद माने गये हैं। इन सबमें अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, काञ्ची, अवन्तिका और द्वारका—ये ही सात प्रधान तीर्थ हैं।

अयोध्या आदि सप्तपुरियोंके प्रधान तीर्थ होनेका कारण यह है कि ये सातों ही पुरियाँ मुक्तिको देनेवाली हैं। इन सप्तपुरियोंमें मुक्ति-प्रदान करनेकी शक्ति उनमें सदा संनिहित भगवत्स्वरूपोंके कारण ही है। जैसे अयोध्याकी पावनता मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामकी जन्म-भूमि एवं लीला-भूमि होनेके कारण, मथुराकी पावनता श्रीकृष्णकी जन्मभूमि एवं लीलाभूमि होनेके कारण, माया (हरिद्वार) की पावनता विष्णु-चरणसे निकली हुई भगवती

---

१. (क) गम्यान्यपि च तीर्थानि कीर्तितान्यगमानि च। मनसा तानि गच्छेत सर्वतीर्थसमीक्षया॥
(महा० वनपर्व ८५। १०४-५; पद्मपुराण, आदिखण्ड ३९। ८७)

(ख) यान्यगम्यानि तीर्थानि दुर्गाणि विषमानि च। मनसा तानि गम्यानि सर्वतीर्थसमीक्षया॥
(महा० अनु० २५। ६६)

२. प्राप्तो भवति तत्पुण्यमत्र मे नास्ति संशयः। (महा० उद्योग० ८३। ६)

गङ्गाका द्वार होनेके कारण, काशीकी[1] पावनता भगवान् विश्वनाथके कारण, काञ्चीकी पावनता भगवान् शिव एवं विष्णुके सांनिध्यके कारण, अवन्तिकाकी पावनता भगवान् महाकालके कारण और द्वारकाकी पावनता भगवान् द्वारकानाथके कारण है। नदियोंमें गङ्गा ही प्रधान हैं, क्योंकि वे सर्वतीर्थमयी और समस्त तीर्थोंकी मूर्धन्या हैं।

वेदोंमें भी तीर्थोंकी अद्भुत महिमाका वर्णन मिलता है। कुछ मन्त्र देखिये—

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति
शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तया-
ऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥

(ऋग्वेद, म० १०, सू० ७५, म० ५)

इस मन्त्रमें गङ्गा आदि सात प्रधान नदियों और परुष्णी आदि उनकी शाखास्वरूप तीन नदियोंकी स्तुति की गयी है—'हे गङ्गे, हे यमुने, हे सरस्वति, हे शुतुद्रि, हे परुष्णि, हे असिक्नीसहित मरुद्वृधे, हे वितस्ता तथा सुषोमासहित आर्जीकीये! तुम मेरे इस स्तोत्रको भलीभाँति सुनो, सेवन करो और मुझे अभिमत फल-प्रदानद्वारा सफल करो।'

सप्तापो देवीः सुरणा अमृक्ता
याभिः सिन्धुमतर इन्द्र पूर्भित्।
नवतिं स्रोत्या नव च स्रवन्तीर्देवेभ्यो
गातुं मनुषे च विन्दः॥

(ऋग्वेद म० १०, सू० १०४, म० ८)

'हे इन्द्र (परमेश्वर)! तुम्हारी आज्ञासे गङ्गा आदि जलरूप सात नदी-देवता अत्यन्त आनन्दसे निर्बाधरूपमें पृथ्वीमें बहती हैं। असुरों (मेघों) के शरीरको भेदन करनेवाले इन्द्र! तुमने गङ्गा आदि नदियोंसे समुद्रको बढ़ाया है और तुमने ही गङ्गा आदि नदियोंके तीर्थरूप तटपर यज्ञद्वारा देवताओंके हविप्रदानार्थ एवं मनुष्योंके अभीप्सित फलप्राप्त्यर्थ गङ्गा आदि नदियोंको बहनेके लिये मार्ग बनाया है।'

उत मे प्रयियोर्वयियोः
सुवास्त्वा अधि तुग्वनि।
तिसृणां सप्ततीनां श्यावः
प्रणेता भुवद् वसुर्दियानां पतिः॥

(ऋग्वेद म० ८, सू० १९, म० ३७)

एक ऋषि कहते हैं—'सुवास्तु' नामकी नदीके किनारे जहाँ पर्वावसरपर मनुष्यगण शीघ्रतासे स्नानार्थ आते हैं, ऐसे 'तुग्व' नामक तीर्थमें पौरुकुत्स्य नामके महादानी राजाने बहुत-से घोड़े, वस्त्र, ३१० गौएँ, श्यामवर्णवाला गोपति वृषभ और अनेक कन्याओंको भी मुझे दिया।'

सोमयज्ञमें सोमलताके अभिषव (कूटने) पर जब उससे रस नहीं निकलता, तब यजमान ऋत्विजोंके साथ सोमकी इस प्रकार प्रार्थना करता है—

यत्र गङ्गा च यमुना च
यत्र प्राची सरस्वती।
यत्र सोमेश्वरो देवस्तत्र मा-
ममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव॥

(ऋक्-परिशिष्ट)

'हे सोम! तुम इन्द्रके पानार्थ रसरूपमें निकलो अर्थात् प्रकट होओ। जिस तीर्थमें गङ्गा, यमुना तथा पूर्वाभिमुख बहनेवाली सरस्वती हैं और जिस तीर्थमें सोमेश्वर महादेव हैं, वहाँ आकर तुम मुझे अमृत (मुक्ति) प्रदान करो।'

सितासिते सरिते यत्र सङ्गथे
तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति।
ये वै तन्वं विसृजन्ति धीरा-
स्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते॥

(ऋक्-परिशिष्ट)

'जिस तीर्थमें गङ्गा और यमुना इन दोनों नदियोंका सङ्गम हुआ है, उस तीर्थमें स्नान करनेवाले प्राणी स्वर्गकी प्राप्ति करते हैं और जो वहाँ शरीरका त्याग करते हैं, वे अमृतत्व अर्थात् मोक्षको प्राप्त करते हैं। ऋग्वेदके '**आपो भूयिष्ठा०**' (म०१०, सू० १६१, म०९)—इस मन्त्रमें कहा गया है कि मनुष्यके कल्याणके लिये तीर्थ-सेवन तथा तीर्थ-जल-ग्रहण सर्वोत्तम साधन है। समस्त तीर्थ जितेन्द्रिय और सत्यवादीको ही पुण्य-प्रदान करते हैं।

ऋग्वेदके '**सरस्वती सरयुः**' (म० १०, सू० ६४, म०९)—इस मन्त्रमें सरस्वती, सरयू एवं सिन्धु नामक नदियोंका यज्ञ-रक्षार्थ आह्वान किया गया है और उनसे कल्याणकारक तीर्थरूप जल-प्रदानार्थ प्रार्थना की गयी है—

[1] काशीके अन्तर्गत ही तीर्थराज प्रयाग माना गया है; क्योंकि जहाँ काशीपुरीका केशपाश है, वही पवित्र 'त्रिवेणीसङ्गम' माना गया है।

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाः सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

(शुक्लयजुर्वेद अ० १६, म० ६१)

'जो रुद्र-भगवान् अपने हाथोंमें तलवार और पिनाक धनुष आदि आयुध लेकर (प्रयाग, काशी आदि) तीर्थोंमें भ्रमणकर धर्मका प्रचार करते हैं, वे रुद्र-भगवान् हम तीर्थसेवी व्यक्तियोंपर अनुकूल रहें।'

नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः।

(शुक्लयजुर्वेद १६। ४२)

श्रीगोभिलार्यकृत सामवेदीय 'स्नानविधि-परिशिष्ट'में—

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धिया वसुः॥

(सामसंहिता, पूर्वार्चिक, प्र० ३, उत्तरार्ध, दशती ५, म०५)

—इस मन्त्रका तीर्थके नमस्कारमें विनियोग किया गया है।

तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो महीरिति
यज्ञकृतः सुकृतो येन यन्ति।
अत्रादधुर्यजमानाय लोकं
दिशो भूतानि यदकल्पयन्त॥

(अथर्ववेद, का० १८, अ०४, सू० ४, म०७)

'जिस प्रकार यज्ञ करनेवाले यजमान यज्ञादिद्वारा बड़ी-बड़ी आपत्तियोंसे मुक्त होकर पुण्यलोककी प्राप्ति करते हैं, उसी प्रकार तीर्थयात्रा करनेवाले तीर्थयात्री तीर्थादिद्वारा बड़े-बड़े भयङ्कर पापों और आपत्तियोंसे मुक्त होकर पुण्यलोककी प्राप्ति करते हैं।'

इस प्रकार संक्षेपमें तीर्थोंकी वेदोक्त महिमाका उल्लेख करके अब हम विश्राम लेते हैं। आशा है, इस लेखद्वारा वेदोंमें आस्था रखनेवाले तीर्थ-प्रेमियोंका तीर्थोंमें विशेष अनुराग होगा, जिससे वे तीर्थ-यात्रा एवं तीर्थ-सेवनद्वारा मोक्ष-पक्षमें अग्रसर होंगे।

तीर्थोंकी शास्त्रीय एकान्त लोकोत्तर विशेषता

(लेखक—पं० श्रीरामनिवासजी शर्मा)

प्रभावादद्भुताद् भूमेः सलिलस्य च तेजसा।
परिग्रहान्मुनीनां च तीर्थानां पुण्यता स्मृता॥
तस्माद्भौमेषु तीर्थेषु मानसेषु च नित्यशः।
उभयेष्वपि यः स्नाति स याति परमां गतिम्॥

हमारा लोकवन्द्य भारत प्रकृति सुन्दरीका महतो महीयान् पुण्यदेश है। प्रकृति-सतीका पूर्ण सात्त्विक यौवनोन्मेष भारतमें ही दृष्टिगोचर होता है। यहीं प्रकृतिकी सुषमामें लोकोत्तर अध्यात्म-छटा देखनेको मिलती है। भारतके ही धर्मप्राण वायुमें आत्म-तत्त्व मूर्तरूप ले रहा है। भारतके सुखद, शान्त तत्त्वाराधनाके प्राङ्गणमें ही विश्व-प्राण धर्मकी झाँकियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं। भारतके ही संसार-दुर्लभ शिल्प-सौन्दर्यमें परब्रह्मके दर्शन होते हैं। भारतमें प्रथम बार उषादेवीके पुनीत अरुण आलोकमें संसारको भक्ति-मुक्तिका आभास मिला था। भारतकी ही लोक-स्तुत्य संस्कृतिके धर्म-स्थानोंमें मानवताकी सर्वोच्च परम्पराएँ एकान्त सत्यका पाठ पढ़ा रही हैं। भारतीय तीर्थ ही आज भी योगगम्य शाश्वत निरपेक्ष मुक्ति-साधनाके आधार बने हुए हैं।

तीर्थसे बढ़कर विश्व-भाषाओंमें वस्तुतः दूसरा सुन्दर शब्द नहीं है। इसका तारक—समुद्धारक होना ही इसकी अनुपमताका परिचायक है। तीर्थके पर्याप्त पर्याय भी इसकी महत्ताके अभिव्यञ्जक हैं। भारत स्वयं तीर्थ-बहुल देश है। भारतके प्रत्येक प्रदेश, नगर और ग्रामतकमें तीर्थ विद्यमान हैं। वेदान्तकी दृष्टिसे तो भारतका अणु-रेणुतक तीर्थस्वरूप है। भारतके तीन आश्रम तो निवृत्तिमूलक और तारक होनेसे स्वयं तीर्थ हैं। दूसरा गृहस्थाश्रम भी वानप्रस्थ और संन्यासकी भूमिका होनेसे एक प्रकारका तीर्थ ही है।

भारतके श्रद्धेय साधु-संत तो तीर्थरूप ही हैं। इन्हींके पुण्य-प्रतापसे आज भी भारत तीर्थस्वरूप है। इन्हीं विश्व-मान्य जङ्गम तीर्थोंके वातावरणमें लोकमान्य भारतीय संस्कृति पल्लवित और पुष्पित हुई है एवं संसार-दुर्लभ भारतीय वैदिक वाङ्मय निर्मित हुआ है। भारतकी धर्म-प्राण नारियाँ भी तीर्थरूपा ही हैं। ऋषि-पत्नियाँ तो मन्त्र-दर्शिनी होनेसे तीर्थस्वरूपा थीं ही। ऋषिकल्प व्रजकी गोपाङ्गनाओंका तो भक्ति-जगत्में अपना निराला ही स्थान है। भारतीय नारियोंका सतीत्व तो तीर्थका तीर्थ है। आज भी सती-साध्वी नारी, म० एमियल (Amiel) के शब्दोंमें गृहस्थके सम्पूर्ण सुख-सौभाग्यको अपने उत्तरीयमें सँभाले रखती है।

तीर्थ-वास और तीर्थ-यात्राकी महिमा तो वर्णनातीत है। यही कारण है कि तीर्थोंकी महिमासे संस्कृत-

साहित्य भरा पड़ा है। पुराण तो तीर्थ-माहात्म्यके पर्यायसे ही हैं। इन्हीं वरेण्य एवं अशरण-शरण्य तीर्थोंके महत्त्वका संक्षिप्त-सा विश्लेषण इस प्रकार है—

१-देशाटन और यात्रीकी महिमाका संसारमें सर्वत्र सदा गुणगान होता आया है। आज भी इनपर लेख लिखे जाते और ग्रन्थ रचे जाते हैं; किंतु तीर्थ और तीर्थ-यात्रा तो देशाटन और यात्राके हार्दके आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष हैं।

२-वातावरणका शिक्षा-दीक्षा और सांस्कृतिक समुन्नतिमें अपना विशेष स्थान होता है; किन्तु तीर्थोंका वातावरण तो इस दिशामें समधिक कारगर है। उनमें प्रवास-निवाससे मानव-अन्तःकरण विशेषरूपसे प्रभावित होता है और आत्मलाभकी भूमिकामें प्रगतिशील होने लगता है।

३-प्रकृति-सुषमा सच्चिदानन्दस्वरूप परम ब्रह्मकी अन्तःप्रकृतिके सौन्दर्यका पर्याप्य है। इसकी झाँकीमें राग-द्वेष-विमुक्त मानव प्रभु-स्वरूपकी दिव्यज्योतिका अनुभव करने लगता है। प्रकृतिकी सरल, मञ्जुल सजीली गोदमें प्रतिष्ठित भारतीय तीर्थ इस सत्यके ज्वलन्त उदाहरण हैं। उनमें रहकर साधारण मनुष्य भी परमात्मतत्त्वका विश्वासी बन जाता है, असाधारणकी बात तो पृथक् ही है।

४-आधुनिक भौतिक विज्ञानका यह मत है कि भौतिक पदार्थों, वस्तुओं, खान-पान और वस्त्राच्छादनसे भी मानव-मन प्रभावित होता है। यही कारण है कि मानव-चित्तपर तीर्थोंकी भौतिकता और भौतिक विधि-विधानका भी प्रभाव पड़ता है। इस तरह तीर्थोंकी न केवल अध्यात्म-प्रधानता अपितु भौतिकता भी आत्म-लाभमें कारण बनती है। विशेषतः दैवी अन्तःकरण इस दिशामें अधिक लाभमें रहता है।

५-आधुनिक आचार-शास्त्रके मतसे अपरिष्कृत प्रकृति शनैः-शनैः नैतिकताकी ओर बढ़ रही है। सत्त्व-गुणप्रधान भारतीय प्रकृति तो निसर्गतः सौम्य है। उसके जल-स्थल-प्रधान तीर्थ निसर्गतः पुण्य-धाम हैं। उसके मानस-जङ्गम तीर्थ तो परमात्मतत्त्वके ही अपर रूप हैं। ऐसी परिस्थितिमें भारतीय तीर्थ समधिक लोकत्राता और मानव-जीवन-समुद्धारक ही हैं।[1]

६-विश्व असमानताकी रङ्गस्थली है। सर्वत्र अनुचित असमानता अपने क्रूर रूपमें दृष्टिगोचर होती है। असमानता और समानताका सात्त्विक समन्वय-सामञ्जस्य भी क्वचित् देखनेको मिलता है। साम्यवादकी दुहाई देनेवाले देशोंमें भी यह बात इस क्षण तो दुर्लभ-सी ही प्रतीत होती है; किंतु भारतीय तीर्थ तो वैदिक साम्यवादके औचित्यपूर्ण निदर्शन हैं।

७-तीर्थ भारतीय जातीयता और भारतीय व्यापक अखण्डताके दिव्य प्रतीक हैं। सम्पूर्ण भारतीय तीर्थ तीर्थयात्रियोंके एकात्मभावके मूर्तरूप हैं। तीर्थ वस्तुतः भारतीय जातीयता, भारतीय सांस्कृतिक अखण्डता और तीर्थयात्रियोंकी स्वर्णिम समन्वय-मालाके मनके हैं। इसी भारतीय अविकल एकात्मताका ही यह पुण्य-प्रभाव है कि वर्तमान दुर्धर्ष दुःस्थितिमें भी हिंदू-जनताकी अधिकार-प्रधान विभिन्नता भी तत्त्वतः और स्वरूपतः एकात्मभावकी वस्तु बनी हुई है।

८-संसार धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षासे ही सुखकी साँस लेने योग्य बन सकता है। अन्यथा असांस्कृतिक भौतिक शिक्षारम्भसे तो यह कभी भी सुखकी नींद नहीं सो सकता। यह अध्यात्म-प्रधान तीर्थोंकी ही विशेषता है कि मनुष्य तीर्थ-वास और तीर्थ-यात्रासे धर्म-भावना लेकर आता है और उसके दर्शन और प्रवचनसे दूसरे गृहस्थ भी प्रभावित होते हैं। एक दीपसे सहस्रों दीपक प्रज्वलित हो जाते हैं। इस तरह भारतीय छोटे-बड़े सहस्रों तीर्थ आज धर्म और अध्यात्म-साधनाके विश्वविद्यालय बने हुए हैं और सच्चे यात्री आज भी प्राध्यापकका काम करते हुए जनताके नैतिक स्तरको ऊँचा उठानेके सहायक कारण बने हुए हैं।[2]

९-तीर्थोंमें मानस तीर्थोंकी अत्यन्त विशेषता है; क्योंकि ये स्थावर-जङ्गम तीर्थोंके भव्य पूर्ण रूप हैं। शास्त्रोंमें तीर्थयात्राके इच्छुकके लिये तीर्थयात्रासे पहले मानस-तीर्थमें स्नान करनेका विधि-विधान है। यात्राके पश्चात् भी उसके शासनमें रहनेका आदेश-निर्देश है। यात्राकाल और तीर्थ-वास तो तप-त्याग-यम-नियम और संयममें ही व्यतीत होते हैं। इस क्रम-उपक्रमसे तीर्थसेवीका मन मल-विक्षेप-आवरणके निराकरणकी भूमिकामें रहता हुआ धीरे-धीरे निःश्रेयसके मार्गका पथिक बन जाता है।

१०-यह भी एक शास्त्रीय तथ्य है कि प्रह्लादने दिव्य विश्वास और भक्तिकी शक्तिसे स्तम्भमें भगवान्की

१. स्थावर और मानस तीर्थमें जो नित्य स्नान करता है, उसको उत्कृष्ट फलकी प्राप्ति होती है। (काशीखण्ड)

२. तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसः परा। (स्कन्द०)

अप्रतिम प्रभुत्व-शक्तिको नरसिंहरूपमें आविष्कृत किया। इसी तरह भगीरथने अपनी तप:शक्तिसे गङ्गा-देवीकी दिव्य शक्तिको जल-धाराके रूपमें स्वर्गसे मृत्युलोकमें लानेका सफल प्रयत्न किया। इन्हीं उदाहरणोंसे समझा जा सकता है कि तीर्थवासियों एवं तीर्थयात्रियोंकी पूजा एवं विश्वासरूपिणी ऋण-शक्तिको तथा तीर्थकी धनशक्तिको तीर्थयात्रारूपी प्रतिष्ठान निरन्तर आकर्षित करता रहता है। इससे तीर्थकी सात्त्विक शक्ति उत्तरोत्तर अधिकाधिक समृद्ध होती हुई तीर्थयात्रियोंके धर्मलाभ और आत्मलाभका कारण बनकर प्रकृत वैज्ञानिक दृष्टिमें भी तीर्थ-माहात्म्यकी वास्तविकता सिद्ध करती है।

यहाँ उपसंहारमें यह कथन भी समुचित प्रतीत होता है कि आधुनिक काल नास्तिकताप्रधान काल है। तीर्थोंमें विश्वास न करनेवाले परप्रत्ययनेयमति लोगोंकी भी संख्या भारतमें कम नहीं है। ऐसी दु:खद अवस्थामें भारतीय सात्त्विक हिंदू-जनता और धर्मप्राण बन्धुओंका कर्तव्य है कि वे अपनी घरेलू शिक्षा-दीक्षामें बालकोंको दीक्षित करनेका सफल प्रयत्न करें; किंतु इससे पहले वे स्वयं धर्म-धन एवं तीर्थप्राण बनें, तभी अनुकरण-प्रिय बालक मनोनीत दिशामें सरलतासे दीक्षित किये जा सकते हैं।*

सर्वश्रेष्ठ तीर्थ

(लेखक—स्वामीजी श्रीकृष्णानन्दजी)

ये जितने भी तीर्थ हैं, उनमेंसे प्राय: सभी परिश्रम तथा धनसाध्य हैं। निर्धन स्त्री-पुरुष तो कठिनतासे ही वहाँ पहुँच सकते हैं। अत: मैं नीचे कुछ ऐसे तीर्थोंका वर्णन संक्षेपमें करता हूँ, जो धनी-निर्धन सभी प्रकारके स्त्री-पुरुषोंके लिये सर्वदा तथा सर्वत्र सभी अवस्थामें सुलभ हैं। स्कन्दपुराणमें सात तीर्थोंका वर्णन इस प्रकार आया है—

सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रह:।
सर्वभूतदया तीर्थं तीर्थं च प्रियवादिता॥
ज्ञानं तीर्थं तपस्तीर्थं कथितं तीर्थसप्तकम्।

अर्थात् (१) सत्य, (२) क्षमा, (३) इन्द्रियसंयम, (४) दया, (५) प्रियवचन, (६) ज्ञान और (७) तप—ये सात तीर्थ हैं। इनको मानस तीर्थ कहते हैं। जलसे देहके ऊपरी भागको धो लेना ही स्नान नहीं है; स्नान तो उसका नाम है, जिससे बाहरी शुद्धिके साथ-साथ हम अपनी अन्त:शुद्धि भी कर लें।

न तोयपूतदेहस्य स्नानमित्यभिधीयते।
स स्नातो यस्य वै पुंस: सुविशुद्धं मनो मतम्॥
(स्कं० पु०)

श्रीशंकराचार्य भी लिखते हैं—

'तीर्थं परं किं स्वमनो विशुद्धम्।'

अपने मनकी शुद्धि ही परम तीर्थ है।

श्रीवेदव्यासजी लिखते हैं—

आत्मा नदी संयमपुण्यतीर्था
सत्योदका शीलतटा दयोर्मि:।
तत्रावगाहं कुरु पाण्डुपुत्र
न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा॥

'आत्मा नदी है, जिसमें संयमका पुण्यमय घाट है, सत्य ही जल है, शील किनारा है तथा दयाकी लहरें उठती रहती हैं। युधिष्ठिर! तुम उसीमें गोता लगाओ, (भौतिक) जलसे (शरीर तो धुल जाता है) अन्त:करण नहीं धुलता।'

स्मृतिका भी वचन है—

मानसं स्नानं विष्णुचिन्तनम्।

'भगवान् विष्णुका चिन्तन ही मानस-स्नान है।'

उपर्युक्त मानसतीर्थ तथा अन्य सभी साधनोंका अन्तिम फल है भगवान्‌के चरण-कमलोंमें अविचल प्रेम होना। श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं—

सम जम नियम फूल फल ग्याना।
हरि पद रति रस बेद बखाना॥
जप तप मख सम दम ब्रत दाना।
बिरति बिबेक जोग बिग्याना॥
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा।
तेहि बिनु कोउ न पावइ छेमा॥
जप तप नियम जोग निज धर्मा।
श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा॥

* जिसमें श्रद्धा नहीं है, जो पापात्मा और नास्तिक है, जिसका संशय दूर नहीं हुआ है और जो निरर्थक तर्क करता है, उसे तीर्थका फल प्राप्त नहीं होता।

ग्यान दया तप तीरथ मज्जन।
जहँ लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन॥
आगम निगम पुरान अनेका।
पढ़े सुने कर फल प्रभु एका॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर।
सब साधन कर यह फल सुंदर॥

अन्यत्र भी कहा है—

जन्मान्तरसहस्रेषु तपोज्ञानसमाधिभिः।
नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते॥

मानसमें भी लिखा है—

बिमल ग्यान जल जब सो नहाई।
तब रह राम भगति उर छाई॥

आभ्यन्तर मलका नाश भी तो इसी भक्ति-वारिसे बताया गया है—

राम भगति जल बिनु रघुराई।
अभिअंतर मल कबहुँ कि जाई॥
तुलसिदास ब्रत ग्यान जोग तप सुद्धि हेतु श्रुति गावै।
राम चरन अनुराग नीर बिनु मल अति नास न पावै॥

इस भक्तिके द्वारा जो अनेक जन्मोंतक भगवान्‌की सेवा करता है, उसीके हृदयमें भगवन्नाममें पूर्ण निष्ठा होती है तथा मुखसे नित्य-निरन्तर भगवन्नामका उच्चारण होता है। तभी तो कहा है—

येन जन्मसहस्राणि वासुदेवो निषेवितः।
तन्मुखे हरिनामानि सदा तिष्ठन्ति भारत॥

यह भगवन्नाम ही सभी तीर्थोंसे परम श्रेष्ठ तीर्थ है। इसीसे अन्य तीर्थ भी पवित्र होते हैं। जो इस भगवन्नामका जप करता है, वह सारे संसारको तीर्थ कर देता है। पद्मपुराणमें लिखा है:—

तीर्थानां च परं तीर्थं कृष्णनाम महर्षयः।
तीर्थीकुर्वन्ति जगतीं गृहीतं कृष्णनाम यैः॥

(पद्मपु० स्वर्ग खण्ड ५०। १६)

तीरथ अमित कोटि सम पावन।
नाम अखिल अघ पूग नसावन॥

इस भगवन्नाम-चिन्तन तीर्थके लिये न तो धनकी आवश्यकता है न श्रमकी। घर छोड़नेकी भी जरूरत नहीं। सर्वदा सर्वत्र और सभी अवस्थाओंमें यह सुलभ है। ब्राह्मणसे लेकर चाण्डालतक, यहाँतक कि कीट-पतंगतक भी इस नाम-जपके अधिकारी हैं। यह लोक-परलोक दोनोंका निबाहनेवाला तथा सब सिद्धियोंको देनेवाला है।

सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू।
लोक लाहु परलोक निबाहू॥
बंदउँ बाल रूप सोइ रामू।
सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू॥
स्वपच सबर खस जमन जड़ पामर कोल किरात।
रामु कहत पावन परम होत भुवन बिख्यात॥

पार्थिव तीर्थोंके सेवनका फल तभी होता है, जब नियमपूर्वक इन्द्रियोंको वशमें करके श्रद्धाके साथ वहाँ निवास किया जाय; पर इस नाम-तीर्थकी बात तो निराली है—

भाय कुभाय अनख आलसहूँ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं।
अति अपार भव सागर तरहीं॥

अत:

तुलसी जो सदा सुख चाहिय तौ
रसना निसि बासर राम रटौ।

वृन्दावनकी चाह

बृंदाबन अब जाय रहूँगी, बिपति न सपनेहु जहाँ लहूँगी।
जो भावै सो करौ सबै मिलि, मैं तो दृढ़ हरि चरन गहूँगी॥
प्राननाथ प्रियतमके ढिंग रहि, मनमाने बहु सुखनि पगूँगी।
भली भई बन गई बात यह, अब जगदारुन दुख न सहूँगी॥
करिहैं सुरति कबहुँ तो स्वामी, बिषयानलमें अब न दहूँगी।
जुगलप्रिया सत संग मधुकरी बिमल जमुन जल सदा चहूँगी॥

पुण्यमय तीर्थोंका संचार

(रचयिता—पं० श्रीलम्बोदर झा व्याकरण-साहित्याचार्य, बी० ए०)

पुण्यमय तीर्थोंका संचार।
अवनितलका सुन्दर शृङ्गार॥

(१)

कहीं छलकती मञ्जुल धारा,
गिरि-गह्वर-भू अपरंपारा,
कूलंकषा, रसा-रसना-सी,
दलती पाप हजार॥ पुण्य०॥

(२)

यज्ञ-यूप-संवलित ललिततर,
धूम, धूप-भव सकल कलुष हर,
देवायतन मञ्जु, मनहारी,
झाँकीं आँखें चार॥ पुण्य०॥

(३)

संत-पदाम्बुज-परिमल-सङ्गम,
दैवी-सम्पद-युत जड-जंगम,
दुर्लभतर पुरुषार्थ-चतुष्टय-
के साधन साकार॥ पुण्य०॥

(४)

जन-मानस-तामस-अपहर्ता,
ज्ञानालोक-चमत्कृति-कर्ता,
'सोऽहमस्मि' के दिव्य बोधका
शुचितर रुचिर विचार॥ पुण्य०॥

(५)

मानवता नवता अपनाती,
उभय लोक निःशोक बनाती,
पञ्च महाभूतोंको शुचि कर,
पाती भव-निस्तार॥ पुण्य०॥

सुतीर्थरूप माता-पिता

(चारु चौपाइयाँ)

तीरथ मात-पिता घर मैं है।
व्यर्थहि क्यौं जग मैं भरमै है॥
उत्तम क्यौं न करै करमै है।
काहे कों जात तू बाहर मैं है॥ १॥
क्यौं न सुपानि सौं स्नान करै है।
क्यौं नहिं दान रु ध्यान करै है॥
क्यौं न पदामृत पान करै है।
नेरेकी गङ्ग कों क्यौं बिसरै है॥ २॥

तीर्थोंकी महिमा, तीर्थ-सेवन-विधि, तीर्थ-सेवनका फल और विभिन्न तीर्थ

(लेखक—श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार)

तीर्थोंकी अनन्त महिमा है, वे अपनी स्वाभाविक शक्तिसे ही सबका पाप नाश करके उन्हें मनोवाञ्छित फल प्रदान करते हैं और मोक्षतक दे देते हैं। हिंदू-शास्त्रोंमें तीर्थोंके नाम, रूप, लक्षण और महत्त्वका बड़ा विशद वर्णन है। महाभारत, रामायण आदिके साथ ही प्रायः सभी पुराणोंमें तीर्थोंकी महिमा गायी गयी है। पद्मपुराण और स्कन्दपुराण तो तीर्थ-महिमासे परिपूर्ण हैं। तीर्थोंमें किनको कब, कैसे क्या-क्या लाभ हुए तथा किस तीर्थका कैसे प्रादुर्भाव हुआ—इसका बड़े सुन्दर ढंगसे अतिविशद वर्णन उनमें किया गया है। भारतवर्षमें ऐसे करोड़ों तीर्थ हैं। इसी भाँति अन्यान्य देशोंमें भी बहुत तीर्थ हैं। तीर्थोंकी इतनी महिमा इसीलिये है कि वहाँ महान् पवित्रात्मा भगवत्प्राप्त महापुरुषों और संतोंने निवास किया है या श्रीभगवान्‌ने किसी भी रूपमें कभी प्रकट होकर, उन्हें अपना लीलाक्षेत्र बनाकर महान् मङ्गलमय कर दिया है।

संत-महात्मा तीर्थरूप हैं

भगवान्‌के स्वरूपका साक्षात्कार किये हुए भगवत्प्रेमी महात्मा स्वयं 'तीर्थरूप' होते हैं, उनके हृदयमें भगवान् सदा प्रकट रहते हैं; इसलिये वे जिस स्थानमें जाते हैं, वही तीर्थ बन जाता है। वे तीर्थोंको 'महातीर्थ' बना देते हैं। धर्मराज युधिष्ठिरने महात्मा श्रीविदुरजीसे यही कहा था—

भवद्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं विभो।
तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तःस्थेन गदाभृता॥

(श्रीमद्भागवत १। १३। १०)

भगवती श्रीगङ्गाजीने भगीरथसे कहा—'तुम मुझे पृथ्वीपर ले जाना चाहते हो? अच्छा, मैं तुमसे एक बात पूछती हूँ। देखो, मुझमें स्नान करनेवाले लोग तो अपने पापोंको मुझमें बहा देंगे; पर मैं उनके पापोंको कहाँ धोने जाऊँगी?' भगीरथजीने कहा—

साधवो न्यासिनः शान्ता ब्रह्मिष्ठा लोकपावनाः।
हरन्त्यघं तेऽङ्गसङ्गात् तेष्वास्ते ह्यघभिद्धरिः॥

(श्रीमद्भागवत ९। ९। ६)

'इस लोक और परलोककी समस्त भोग-वासनाओंका सर्वथा परित्याग किये हुए शान्तचित्त ब्रह्मनिष्ठ साधुजन, जो स्वभावसे ही लोगोंको पवित्र करते रहते हैं, अपने अङ्ग-सङ्गसे आपके पापोंको हर लेंगे; क्योंकि उनके हृदयमें समस्त पापोंको समूल हर लेनेवाले श्रीहरि नित्य निवास करते हैं।'

तीन प्रकारके तीर्थ

इसीसे तीर्थ तीन प्रकारके माने गये हैं—१. जङ्गम, २. मानस और ३. स्थावर। १. स्वधर्मपर आरूढ़ आदर्श ब्राह्मण और संत-महात्मा 'जङ्गम तीर्थ' हैं। इनकी सेवासे सारी कामनाएँ सफल होती हैं और भगवत्तत्त्वका साक्षात्कार होता है।

२. 'मानस-तीर्थ' हैं—सत्य, क्षमा, इन्द्रियनिग्रह, प्राणिमात्रपर दया, ऋजुता, दान, मनोनिग्रह, संतोष, ब्रह्मचर्य, प्रियभाषण, विवेक, धृति और तपस्या। इन सारे तीर्थोंसे भी मनकी परम विशुद्धि ही सबसे श्रेष्ठ तीर्थ है। इन तीर्थोंमें भलीभाँति स्नान करनेसे परम गतिकी प्राप्ति होती है—

येषु सम्यक् नरः स्नात्वा प्रयाति परमां गतिम्।

तीर्थयात्राका उद्देश्य ही है—अन्तःकरणकी शुद्धि और उसके फलस्वरूप मानव-जीवनका चरम और परम ध्येय, भगवत्प्राप्ति। इसीलिये शास्त्रोंने अन्तःकरणकी शुद्धि करनेवाले साधनोंपर विशेष जोर दिया है। यहाँतक कहा है कि—'जो लोग इन्द्रियोंको वशमें नहीं रखते, जो लोभ, काम, क्रोध, दम्भ, निर्दयता और विषयासक्तिको लेकर उन्हींकी गुलामी करनेके लिये तीर्थस्नान करते हैं, उनको तीर्थस्नानका फल नहीं मिलता।'

३. 'स्थावर-तीर्थ' हैं—पृथ्वीके असंख्य पवित्र स्थल और सागर, नद-नदियाँ, सरोवर, कूप और जलाशय आदि। इनमें तीर्थराज प्रयाग, पुष्कर, नैमिषारण्य, कुरुक्षेत्र, द्वारका, उज्जैन, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, जगदीशपुरी, काशी, काञ्ची, बदरिकाश्रम, श्रीशैल, सिन्धु-सागर-सङ्गम, सेतुबन्ध, गङ्गा-सागर-सङ्गम तथा गङ्गा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, गोमती, नर्मदा, सरयू, कावेरी, मन्दाकिनी और कृष्णा आदि नदियाँ प्रधान हैं।

तीर्थयात्रा क्यों करनी चाहिये?

मनुष्य-जीवनका उद्देश्य है—भगवत्प्राप्ति या भगवत्प्रेमकी प्राप्ति। जगत्‌में भगवान्‌को छोड़कर सब कुछ नश्वर है, दुःखदायी है। इनसे मन हटकर श्रीभगवान्‌में लग जाय—मनुष्यको बस, यही करना है। यह होता है

भगवत्प्रेमी महात्माओंके सङ्गसे और ऐसे महात्मा रहा करते हैं पवित्र तीर्थोंमें। इसीलिये शास्त्रोंने तीर्थयात्राको इतना महत्त्व दिया है और तीर्थोंमें जाकर सत्संग करने तथा संतजनोंके द्वारा सेवित पवित्र स्थानोंके दर्शन, पवित्र जलाशयोंमें स्नान और पवित्र वातावरणमें विचरण करनेकी आज्ञा दी है—

तस्मात् तीर्थेषु गन्तव्यं नरैः संसारभीरुभिः।

'इसीलिये संसारसे डरे हुए लोगोंको तीर्थोंमें जाना चाहिये।' परंतु तीर्थसेवनका परम फल उन्हींको मिलता है, जो विधिपूर्वक यहाँ जाते हैं और तीर्थोंके नियमोंका सावधानी तथा श्रद्धाके साथ सुखपूर्वक पालन करते हैं। जो लोग 'तीर्थ-काक' होते हैं—तीर्थोंमें जाकर भी कौवेकी तरह इधर-उधर गंदे विषयोंपर ही मन चलाते तथा उन्हींकी खोजमें भटकते रहते हैं, वे तो पूरा पाप कमाते हैं और इससे उन्हें दुस्तर नरकोंकी प्राप्ति होती है। यह याद रखना चाहिये कि 'तीर्थोंमें किये हुए पाप वज्रलेप हो जाते हैं।' वे सहजमें नहीं मिटते। पवित्र होकर दीर्घकालतक तीर्थ-सेवनसे या भगवान्‌के निष्काम भजनसे ही उनका नाश होता है।

तीर्थयात्राकी विधि

तीर्थयात्राकी विधि यह है कि सबसे पहले तीर्थमें श्रद्धा करे, तीर्थोंके माहात्म्यमें विश्वास करे, उसको अर्थवाद न समझकर सर्वथा सत्य समझे, घरमें ही पहले मन-इन्द्रियोंके संयमका अभ्यास करे और उपवास करे। श्रीगणेशजीकी, देवता, ब्राह्मण और साधुओंकी पूजा करे, पितृ-श्राद्ध करे और पारण करे। इसके बाद भगवान्‌के नामका उच्चारण करते हुए यात्रा आरम्भ करे। कुछ दूर जाकर तीर्थादिमें स्नान करके क्षौर कर्म कराये। तदनन्तर लोभ, द्वेष और दम्भादिका त्याग करके मनसे भगवान्‌का चिन्तन और मुँहसे भगवान्‌का नाम-कीर्तन करते हुए तीर्थके नियमोंको धारण करके यात्रा करे।

तीर्थयात्राके लिये पैदल जानेकी ही प्राचीन विधि है। उस कालमें तीर्थप्रेमी नर-नारी वापस लौटने-न-लौटनेकी चिन्ता छोड़कर परम श्रद्धाके साथ संघ बनाकर तीर्थयात्राके लिये निकलते थे। उन दिनों न तो रेल या मोटर आदि सवारियाँ थीं और न दूसरी सुविधाएँ थीं। तीर्थयात्री-संघ घाम-वर्षा सहता हुआ बड़े कष्टसे यात्रा करता था। परंतु श्रद्धा इतनी होती थी कि वह उस कष्टको उत्साहके रूपमें परिणत कर देती थी। आज-कलकी तीर्थयात्रा तो सैर-सपाटेकी चीज हो गयी है। जो लोग छुट्टियाँ मनाने और भाँति-भाँतिसे मौज-शौक या प्रमोद करनेके लिये तीर्थोंमें जाते हैं, उनके सम्बन्धमें तो कुछ कहना नहीं है। जो श्रद्धापूर्वक तीर्थसेवनके लिये जाते हैं, उनके लिये भी आजकल बड़ी आसानी हो गयी है। ऐसी अवस्थामें कुछ नियम अवश्य बना लेने चाहिये, जिससे जीवन संयममें रहे, प्रमाद न हो और तीर्थयात्रा सफल हो।

तीर्थ-सेवनके नियम

तीर्थमें कैसे रहना चाहिये और तीर्थका परम फल किसे प्राप्त होता है, इस सम्बन्धमें शास्त्रके वचन हैं—'जिसके हाथ, पैर, मन भलीभाँति संयमित हैं, जो विद्या, तप तथा कीर्तिसे सम्पन्न है, जो प्रतिग्रहका त्यागी, यथालाभसंतुष्ट तथा अहंकारसे छूटा हुआ है, जो दम्भरहित, आरम्भरहित, लघु-आहारी, जितेन्द्रिय तथा सर्वसङ्गोंसे मुक्त है, जो क्रोधरहित निर्मलमति, सत्यवादी तथा दृढ़व्रती है और समस्त प्राणियोंको अपने आत्माके समान देखता है, वह तीर्थका फल प्राप्त करता है।' इनका विस्तारसे विचार करें—

१. हाथोंका संयम—हाथोंसे किसीको पीड़ा न पहुँचाये, किसीकी वस्तु न चुराये, किसी भी स्त्रीका (स्त्री किसी पुरुषका) अङ्ग-स्पर्श न करे, किसी भी गंदी चीजको न छूए और सदा भगवान्‌की, संतोंकी, गुरुजनोंकी, दीन-दुखियोंकी तथा अपने साथी यात्रियोंकी यथायोग्य सेवा करता रहे।

२. पैरोंका संयम—पैरोंसे हड़बड़ाकर न चले, देख-देखकर पैर रखे, जिससे कहीं काँटा-कंकड़ न गड़ जाय, कोई जीव पैरके नीचे न दब जाय; पैरोंसे बुरे स्थानमें न जाय, असाधुओंके पास न जाय, नाच-तमाशे आदिमें न जाय, बूचड़खाने, शराबखाने, द्यूतगृह, वेश्याके घर, विषयी पुरुषोंके यहाँ और नास्तिकोंकी संगतिमें न जाय।

साधुसङ्ग, तीर्थस्नान, देवदर्शन और सेवाके लिये सदा उत्साहसे जाय और इसमें कभी थकावटका अनुभव न करे।

३. मनका संयम—मनके द्वारा विषयोंका चिन्तन न हो। मनमें काम, लोभ, ईर्ष्या, डाह, द्वेष, वैर, घमंड, कपट, अभिमान, कठोरता, क्रूरता, विषाद, शोक और व्यर्थ-चिन्तन आदि दोष न आने पायें; दूसरोंके दोषोंका चिन्तन-मनन न हो; स्त्रियोंके अङ्गों, चरितों और उनकी चेष्टाओंका जरा भी चिन्तन न हो। (इसी प्रकार स्त्रियोंके द्वारा पुरुषोंका चिन्तन न हो); असम्भव

विषयोंका तथा व्यर्थका चिन्तन न हो। मनके द्वारा भोगोंके दोषों तथा दुःखोंका, अपनी भूलोंका और अपराधोंका, दूसरोंके सच्चे गुणों एवं महत्त्वका तथा महापुरुषोंके चरित्र, गुण और स्वरूपका चिन्तन होता रहे। मन सदा-सर्वदा परम श्रद्धा तथा अनन्य प्रेमके साथ श्रीभगवान्‌के स्वरूपका, उनके दिव्य नाम, गुण एवं लीला-चरित्रोंका, उनके प्रभाव, महत्त्व, तत्त्व और गुरुत्वका चिन्तन करे। भगवान्‌की मोहिनी मूर्तिके निरन्तर दर्शन करता रहे और उन्हें देख-देखकर सदा शान्त, प्रसन्न, प्रफुल्ल और आनन्द-मुग्ध बना रहे।

४. विद्या—श्रीभगवान्‌को जाननेके लिये मन्त्रजाप, उपासना, साधन-चतुष्टय (विवेक, वैराग्य, षट्सम्पत्ति, मुमुक्षुत्व) या गीतोक्त बीस ज्ञानसाधनोंका (१३। ७—११) आश्रय लेना। भगवान्‌का रहस्य खोलनेवाली विद्या ही यथार्थ विद्या है—'**अध्यात्मविद्या विद्यानाम्**' (गीता)।

५. तपस्या—प्रातःकाल सूर्योदयसे पहले उठना, शौच-स्नानादिसे निवृत्त होकर नियमित संध्योपासन-हवन-बलिवैश्वदेव आदि करना, गुरुजनोंको नित्य प्रणाम करना, खान-पानमें संयम-नियम रखना, अपने वर्णाश्रमके धर्मका पालन करना, सादगीसे रहना, सहनशील होना, व्रत-उपवासादि करना, शरीर, वाणी और मनसे प्रमाद न करना, मौन रहना, स्वाध्याय करना, हित-मित-मधुर भाषण करना, किसी भी प्राणीकी हिंसा न करना न कराना, सरल व्यवहार करना, मन-वाणी-शरीरसे पवित्र रहना, निर्दोष सेवा करना, कष्टसाध्य आचारोंके और स्वधर्मके पालनमें सदा तत्पर रहना।

६. कीर्ति—भगवान् तथा महात्माओंके यश गाना और सुनना, श्रीभगवान्‌के कैङ्कर्यसे यशस्वी होना, भगवान्‌की दासतारूपी कीर्तिसे सम्पन्न होना।

७. प्रतिग्रहका त्याग—किसीसे दान न लेना, किसीकी भेंट या उपहार स्वीकार न करना, जहाँतक बने, शरीर-निर्वाहके सभी कार्योंमें स्वावलम्बी रहना, खाने-पीने, जाने-आने तथा सोने-बैठनेके लिये सभी साधनोंकी व्यवस्था यथासाध्य अपने ही बलबूतेपर तथा अपने ही खर्चसे करना। दूसरोंके स्थानमें या धर्मशाला आदिमें ठहरना पड़े तो उसके निमित्त कुछ दे देना, मकान या जमीनके मालिक न लें तो किसी गरीबको दे देना तथा किसीसे भी शारीरिक और आर्थिक सेवा न कराना।

८. यथालाभसंतोष—भगवान्‌की प्रेरणा और विधानसे जैसा कुछ स्थान, खान-पानके पदार्थ, सुविधा-असुविधा मिल जाय, उसीमें संतुष्ट रहना। तीर्थमें मनमाना आराम और भोग खोजनेकी प्रवृत्ति होनेसे मनुष्य तीर्थयात्राके उद्देश्यको भूल जाता है और उसका तन-मन विषय-सेवनमें ही लग जाता है। मनचाहा आराम न मिलनेपर वह विषादग्रस्त होकर लौट आता है तथा लोगोंमें तीर्थ-निन्दा करके तीर्थोंमें अश्रद्धा उत्पन्न कराकर पाप-तापका भागी होता है।

९. अहंकारका अभाव—वर्ण, जाति, धन, बल, विद्या, रूप, पद, अधिकार, प्रतिष्ठा, साधना, सद्‌गुण, शील आदि किसी भी निमित्तसे अहंकार नहीं करना चाहिये। यह भी नहीं सोचना चाहिये कि मेरे पुरुषार्थसे ही सब कुछ हो रहा है। अहंकार होनेपर तीर्थके महत्त्व, तीर्थवासी साधु-महात्मा तथा संतोंके आदर्श साधन और उनके सद्‌गुणोंसे लाभ नहीं उठाया जा सकता। अहंकार उनके सङ्गसे विमुख कर देता है। कहीं प्रसङ्गवश सङ्ग हो भी जाता है तो अहंकारके कारण मनुष्य उससे कोई शुभ भाव ग्रहण नहीं कर सकता। उनमें उपेक्षा और दोष-बुद्धि करके छूँछा ही लौट आता है। इसके अतिरिक्त जहाँतक सम्भव हो, पाञ्चभौतिक शरीरमें भी अहंकार नहीं करना चाहिये।

१०. दम्भका अभाव—अपनेमें सद्गुण या सामर्थ्य होनेपर भी लोगोंसे मान-प्रतिष्ठा, पूजा-सत्कार, धन-जमीन, भोग-ऐश्वर्य आदि प्राप्त करनेके लिये उन्हें अपनेमें दिखाना दम्भ है। दम्भीलोग दूसरोंको ठगने जाकर वास्तवमें स्वयं ही ठगाते हैं। उन्हें तीर्थसेवनका यथार्थ फल नहीं प्राप्त होता।

११. आरम्भशून्यता—तीर्थमें जाकर परमार्थ-साधनके सिवा किसी भी प्रापञ्चिक कार्यका आरम्भ नहीं करना चाहिये। प्रपञ्चमें पड़ते ही तीर्थसेवनका उद्देश्य चित्तसे चला जाता है। तीर्थोंमें जो प्रपञ्चका आरम्भ अथवा अहंकार एवं कामना-आसक्तिको लेकर आरम्भ किया जाता है, उसीसे लड़ाई-झगड़े, कलह, अशान्ति आदि बढ़कर तीर्थसेवनका उल्टा फल होता है।

१२. लघु आहार—शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये आहारमें संयम तो सदा ही करना चाहिये। फिर यात्रामें तो जगह-जगहका जल पीना पड़ता है, सोने-उठनेमें भी कुछ अनियमितता होती है, तरह-तरहके नर-नारियोंसे भेंट होती है, खान-पानकी नयी-नयी वस्तुएँ मिलती हैं; वहाँ यदि संयम न रहे और

ठूँस-ठूँसकर जहाँ-तहाँ जो कुछ भी खाया जाय तो शरीर और मन दोनों ही अस्वस्थ हो जायँगे। ऐसा होनेपर तीर्थयात्राका उद्देश्य तो नष्ट होगा ही, रोगकी पीड़ासे स्वयं दुःखी होना पड़ेगा और इस कारण साथियोंको भी तीर्थसेवनमें विघ्न हो जायगा। अतएव अपनी प्रकृतिके अनुकूल शुद्ध सात्त्विक आहार बहुत थोड़ी मात्रामें करना चाहिये। बीच-बीचमें उपवास भी करना चाहिये; अधिक ठंडी या अधिक गरम चीजें, अधिक खटाई, अधिक मसाले, अचार, बाजारकी बनी मिठाइयाँ, अखाद्य वस्तुएँ, नशैली चीजें, सोडा-लेमन, जूठी चीजें आदि, अपवित्र जल, प्याज-लहसुन तथा अन्यान्य अशुद्ध वस्तुओंका सेवन कदापि नहीं करना चाहिये।

१३. **जितेन्द्रियता**—इन्द्रियाँ दस हैं। आँख, कान, नासिका, रसना और त्वचा—ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। इनके द्वारा देखना, सुनना, सूँघना, चखना और स्पर्श करना—ये पाँच कार्य होते हैं। हाथ, पैर, जीभ, गुदा और उपस्थ—ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। इनके द्वारा लेना-देना, आना-जाना, बोलना, मलत्याग और मूत्र-वीर्यका त्याग—ये पाँच कार्य होते हैं। इनमें ज्ञानेन्द्रियाँ ही प्रधान हैं। उनको जीतकर अपने वशमें रखना तथा भगवत्सेवाके भावसे सदा सद्विषयोंमें ही लगाये रखना चाहिये। किस इन्द्रियसे क्या न करना और क्या करना चाहिये, इसपर कुछ विचार कीजिये।

(क) आँखोंसे किसी भी गंदी वस्तुको, स्त्रियोंके रूपको, स्त्रियोंके किसी भी अङ्गको, स्त्रीके चित्रको (इसी प्रकार स्त्रीके लिये पुरुषके रूप, अङ्ग या चित्रको) और मनमें काम-क्रोध-लोभादिके विकार पैदा करनेवाले सिनेमा, नाच तथा अन्यान्य दृश्योंको कभी नहीं देखना चाहिये। सदाचारी अजामिल थोड़ी ही देरके लिये एक गंदे दृश्यको देखकर उसीके प्रभावसे पवित्र ब्राह्मणत्वसे भ्रष्ट होकर महापापी बन गये थे।

आँखोंसे भगवान्के विष्णु, राम, कृष्ण, शंकर, दुर्गा, सूर्य आदि किसी भी मङ्गलविग्रहको, उनकी पूजा-आरतीको, पवित्र तीर्थस्थानोंको, भगवान्की प्रकृतिकी दर्शनीय शोभाको, सुरुचि और सद्भाव उत्पन्न करनेवाले चित्रों तथा दृश्योंको, संत-महात्माओंके स्थानोंको और संत-महात्माओंको देखना चाहिये।

(ख) कानोंसे किसीकी भी निन्दा नहीं सुननी चाहिये; फिर भगवान्की, संत-महात्माओंकी, गुरुकी और शास्त्रोंकी निन्दा तो कभी किसी हालतमें भी नहीं सुननी चाहिये। अपनी प्रशंसा, दूसरोंके दोष, अश्लील और कुरुचि उत्पन्न करनेवाले गायन और भाषण, विकार पैदा करनेवाली बातें, नास्तिकोंके कुतर्क, गंदे हँसी-मजाक, भोग-बुद्धिको उत्तेजन देनेवाले, वैर-विरोध बढ़ानेवाले तथा हिंसा, मांसाहार, व्यभिचार आदि पाप-प्रवृत्तियोंको जगानेवाले शब्द और स्त्रियोंके शृङ्गार तथा रूप (स्त्रियोंके लिये पुरुषोंके) आदिके वर्णन नहीं सुनने चाहिये। इसके विपरीत भगवान्की लीलाकथाएँ, भगवान्के महत्त्व, तत्त्व, स्वरूप और प्रभावको जनानेवाले तथा उनकी प्राप्तिके साधन—ज्ञान, भक्ति, कर्म, उपासना आदिका निर्देश करनेवाले शास्त्र, भाषण, प्रवचन, सदुक्तियाँ; वैराग्य, सद्भाव, सदाचार, समता और सच्चे सुखको प्राप्त करनेवाली युक्तियाँ; भक्तों, संतों और महापुरुषोंकी जीवनगाथाएँ; अपने दोष और दूसरोंके सच्चे गुणोंकी बातें; भगवान्का नाम-गुण-कीर्तन, उपनिषद्-गीता, रामायण-महाभारत, भागवत एवं अन्यान्य पुराण, स्मृतिशास्त्र और देशी-विदेशी महात्माओंके दिव्य उपदेश सुनने चाहिये।

(ग) नाकसे मानसिक तथा शारीरिक रोग उत्पन्न करनेवाली गन्ध न सूँघकर सुन्दर सात्त्विक भगवत्-प्रसादी सुगन्ध ही सूँघनी चाहिये।

(घ) रसनासे मनमें काम, क्रोध, लोभादि तथा शरीरमें उत्तेजना, पीड़ा, रोग आदि उत्पन्न करनेवाले पदार्थोंका रस नहीं लेना चाहिये। मांस, शराब आदि अपवित्र वस्तुएँ कभी नहीं चखनी चाहिये। वस्तुतः स्वादकी दृष्टिसे तो किसी भी वस्तुको नहीं ग्रहण करना चाहिये। शुद्ध सात्त्विक भावोंको उत्पन्न करनेवाले सत्त्वगुणप्रधान पदार्थोंका परिमित मात्रामें भगवत्सेवाकी दृष्टिसे ही सेवन करना चाहिये। जीभके स्वादमें फँसना बहुत ही हानिकारक है। भगवान्के चरणामृतका स्वाद अवश्य लेना चाहिये।

(ङ) त्वचासे शरीरको विशेष आरामतलब और जीवनको विलासी, आलसी तथा प्रमादी बनानेवाले पदार्थोंका तथा स्त्रियोंके (स्त्रियोंके लिये पुरुषोंके) अङ्गोंका स्पर्श नहीं करना चाहिये। भगवान्की मूर्तियोंके श्रीचरणोंको, संतचरणोंका, महापुरुषोंकी चरण-रजका, माता-पिताकी तथा (स्त्रीके लिये) पतिकी चरणधूलिका, सद्वस्तुओंका और सदाचार बढ़ानेवाले पदार्थोंका ही स्पर्श करना चाहिये।

कर्मेन्द्रियोंमें हाथ-पैरके संयमकी बात आ ही चुकी

है। उपस्थका भी यथायोग्य संयम अवश्य रखना चाहिये।

खास बात है वाणीके संयमकी। जो मनुष्य वाणीका संयम नहीं रख सकता, वह परमार्थ-साधनसे तो वञ्चित रहता ही है, साथ ही लौकिक लाभों और सुखोंसे भी उसे हाथ धोना पड़ता है।

(च) वाणीसे कभी किसीकी निन्दा, चुगली, तिरस्कार, अपमान नहीं करना चाहिये। किसीको गाली या शाप न दे, किसीका जी न दुखाये, जिससे किसीका अहित होता हो, ऐसी बात न कहे, कड़वी वाणी न बोले, मिथ्या-भाषण न करे; स्त्रियोंके रूप, शृङ्गार तथा अङ्गोंकी चर्चा न करे (स्त्री पुरुषोंकी न करे); अपनी बड़ाई तथा अभिमान और घमंडकी बात न करे; किसीको लोक-परलोकके प्रलोभन न दिखाये। भगवान्, शास्त्र, गुरु और संतों-भक्तोंकी निन्दा भूलकर भी न करे। जिससे ब्राह्मण, गौ, अतिथि, अनाथ, रोगपीड़ित, विधवा स्त्री आदिका जरा भी अहित हो, ऐसी कोई बात कभी न कहे। व्यर्थ कभी न बोले। हँसी-मजाक न करे और अश्लील शब्द मुँहसे कभी न निकाले।

वाणीसे भगवान्के गुण, नाम तथा लीलाओंका कथन, कीर्तन या गायन करे। भगवान्के स्वरूप, महत्त्व, तत्त्व और प्रभावकी चर्चा करे। अधिक लोग साथ हों तो मिलकर, नहीं तो अकेले ही भगवान्के नामका नित्य कीर्तन करे। भगवान्के नाम या मन्त्रका जप करे। वेद-उपनिषद्, रामायण-महाभारत, भागवत एवं अन्य पुराण तथा संत और भक्तोंके चरित्रोंका यथाधिकार यथारुचि पारायण करे। अधिक आदमी हों तो इनमेंसे एक सज्जन प्रतिदिन नियमित रूपसे भगवान्की कथा कहें और सब लोग सुनें। अपने सच्चे दोषोंको बिना हिचक आवश्यकतानुसार प्रकट करे और दूसरोंके गुणोंका हर्षके साथ बखान करे। (सर्वोत्तम तो यह है कि दूसरोंके गुण-दोष—किसीका भी वर्णन तो क्या, चिन्तन भी न करे; दिन-रात भगवान्के रूप-गुणोंके चिन्तन एवं कथनमें ही लगा रहे।) परमार्थ, सदाचार, भगवद्भक्ति, सर्वभूतहित तथा ज्ञान-वैराग्यकी चर्चा करे। जिनसे लोगोंमें भगवत्प्रेम, अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, आनन्द, शान्ति आदिका विस्तार हो, ऐसे सत्-साधनोंकी बातें करे।

१४. सङ्गका अभाव—भगवान्को छोड़कर अन्य किसी भी वस्तुमें मनकी आसक्ति न रहे, कहीं भी किसी भी भोग-पदार्थमें मन न फँसने पाये। संसारके प्राणि-पदार्थोंका अथवा भोगप्रेमी जनोंका सङ्ग न करे।

१५. क्रोधका अभाव—अपनी निन्दा या अपकार करनेवालेपर भी क्रोध न हो, क्रोधवश मुँहसे कठोर शब्द न निकलें, मनमें भी जलन न हो, सदा क्षमाभाव रहे। दण्ड देनेकी शक्ति होनेपर भी क्रोधवश हिंसापूर्ण प्रतिकार न करना ही क्षमा है। (प्रेम और सुहृदतापूर्ण प्रतीकार, अपकारीका कल्याण चाहते हुए, शान्त-चित्तसे उसे सन्मार्गपर लानेकी नीयतसे करना बुरा नहीं है।) क्रोध सारे साधनोंको नष्ट कर देता है।

१६. निर्मल मति—बुद्धि ऐसी होनी चाहिये, जो बुरेको बुरा और भलेको भला बतला सके तथा जिसमें बुरेकी ओर जाते हुए मन-इन्द्रियोंको रोककर भले तथा सात्त्विक भावकी ओर चलानेकी शक्ति हो। यह तभी होता है, जब सच्चे सत्सङ्गके प्रभावसे बुद्धि भगवान्की ओर लगकर पूर्ण निश्चयात्मिका और सात्त्विकी हो जाती है। तामसी बुद्धि दोषयुक्त होती है, इसीसे उसका निर्णय सर्वथा विपरीत होता है। वह पापको पुण्य, असत्को सत्, बुरेको भला और अकर्तव्यको कर्तव्य बतलाती है। उसमें मन-इन्द्रियोंको सन्मार्गपर ले जानेकी तो शक्ति ही नहीं होती। ऐसा होता है कुसङ्गसे और निरन्तर विषय-सेवनमें लगे रहनेसे। अतएव बुद्धिको निर्मल करनेके लिये सदा सत्सङ्ग और सद्विषयोंको भगवदर्पण-भावसे सेवन करनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

१७. सत्यवादिता—जैसा कुछ देखा, सुना या अनुभवमें आया हो, वैसा ही समझा देनेकी नीयतसे, बिना किसी छलके, परहितका ध्यान रखते हुए मीठी भाषामें कहना सत्य है। ऐसे सत्यका ही अवलम्बन करना चाहिये। मिथ्यावादीका तीर्थ-फल नष्ट हो जाता है।

१८. दृढ़व्रत—अपने निश्चयमें, अपने इष्ट तथा साधनमें और नियम-पालनमें पतिव्रता स्त्रीकी भाँति अडिग रहना चाहिये। किसी भी प्रलोभन, मोह या भयमें फँसकर व्रतका भङ्ग न होने पाये।

१९. सब प्राणियोंमें आत्मोपम-भाव—अपनेपर कोई दुःख आये, अपनेको गाली, अपमान, रोग-पीड़ा, अभाव आदि सहने पड़ें, तो जैसा कष्ट होता है, वैसा ही सबको होता है; हम जैसे अनुकूलतामें सुखी और प्रतिकूलतामें दुःखी होते हैं, वैसे ही सब होते हैं—इस प्रकार सत्ता और सुख-दुःखमें सबको अपने आत्माके समान ही जानकर सबके साथ आत्मभावसे ही बर्ताव करना चाहिये। अर्थात् हम जैसा भाव तथा बर्ताव अपने

लिये चाहते हैं और करते हैं, वैसा ही सब प्राणियोंके लिये चाहना और करना चाहिये।

तीर्थसेवनका परम फल

तीर्थयात्रा या तीर्थसेवनका वास्तविक परम फल है—'भगवत्प्राप्ति' या 'भगवत्प्रेमकी प्राप्ति'। उपर्युक्त उन्नीस गुणोंसे युक्त होकर जो नर-नारी श्रद्धा-विश्वासपूर्वक तीर्थसेवन करते हैं, उन्हें निश्चय ही यह परम फल प्राप्त होता है। इस परम फलकी प्राप्ति अन्यान्य साधनोंसे कठिन बतलायी गयी है—

अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्ट्वा विपुलदक्षिणैः।
न तत्फलमवाप्नोति तीर्थाभिगमनेन यत्॥

'तीर्थयात्रासे जो फल मिलता है, वह बहुत बड़ी-बड़ी दक्षिणावाले अग्निष्टोमादि यज्ञोंसे भी नहीं मिलता।' परन्तु—

अश्रद्दधानः पापात्मा नास्तिकोऽच्छिन्नसंशयः।
हेतुनिष्ठश्च पञ्चैते न तीर्थफलभागिनः॥

'जिनमें श्रद्धा नहीं है, जो पापके लिये ही तीर्थसेवन करते हैं, जो नास्तिक हैं, जिनके मनमें संदेह भरे हुए हैं तथा जो केवल सैर-सपाटे तथा मौज-शौकके लिये अथवा किसी खास स्वार्थसे तीर्थ-भ्रमण करते हैं—इन पाँचोंको तीर्थका उपर्युक्त भगवत्प्राप्ति या भगवत्प्रेम-प्राप्तिरूप परम फल नहीं मिल सकता।'

तीर्थोंमें और क्या-क्या करना चाहिये?

इसलिये श्रद्धा तथा संयमपूर्वक तीर्थसेवन करना चाहिये। तीर्थमें पितरोंके लिये श्राद्ध-तर्पण अवश्य करना चाहिये। इससे पितरोंको बड़ी तृप्ति होती है और उनका शुभाशीर्वाद प्राप्त होता है।

तीर्थोंमें वहाँके नियमोंका आदर करना चाहिये। प्रसाद आदिमें सत्कार-बुद्धि रखनी चाहिये। श्रद्धा और सत्कार ही सत्फल उत्पन्न करते हैं। तीर्थोंमें कठोर ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करना चाहिये। मन, वाणी, शरीरसे किसी प्रकार भी पुरुषको स्त्रीका और स्त्रीको पुरुषका सङ्ग नहीं करना चाहिये। तीर्थमें सुयोग्य पात्रोंको (जिसको जब जिस वस्तुकी यथार्थमें आवश्यकता है, वही उस वस्तुका पात्र है) अपनी शक्तिके अनुसार दान करना चाहिये। तीर्थमें किये हुए दानकी बड़ी महिमा है। तीर्थयात्रासे लौटकर यथासाध्य ब्राह्मणभोजन तथा पितृश्राद्ध करना चाहिये।

ऊपरके विवेचनसे यह नहीं समझना चाहिये कि उपर्युक्त प्रकारसे किये बिना तीर्थ-सेवनका कोई फल ही नहीं मिलता। जिस वस्तुमें जो स्वाभाविक गुण है, उसका प्रभाव तो होगा ही। अग्निको न जानकर चाहे उसे हम छू लें, उससे हाथ जलेगा ही; क्योंकि यह उसका सहज गुण है। इसी प्रकार तीर्थ-सेवनसे भी तीर्थ-विशेषकी शक्तिके तारतम्यके अनुसार किसी-न-किसी अंशमें पाप-नाश तो होगा ही। हाँ, पापोंका सर्वथा विनाश और परम फलकी प्राप्ति तो उपर्युक्त प्रकारसे तीर्थ-सेवन करनेपर ही होती है। अतएव तीर्थ-यात्रा सभीको करनी चाहिये। इसमें देशाटनका लाभ मिल जाता है और नयी-नयी बातें सीखने-समझनेको तो मिलती ही हैं। परंतु जहाँतक बने यात्रा करनी चाहिये श्रद्धा और संयमके पाथेयको साथ लेकर ही।

मातृतीर्थ, पितृतीर्थ, गुरुतीर्थ, भार्यातीर्थ और भर्तृतीर्थ

एक बात और है। ऐसे लोगोंको बहुत सोच-समझकर तीर्थ-यात्रा करनी चाहिये, जिनको कोई खास अड़चन हो, जिनके घरसे चले जानेपर बूढ़े माता-पिताको कष्ट हो, गुरुको पीड़ा पहुँचती हो, साध्वी पत्नीको संताप और कष्ट होता हो या पत्नीके चले जानेपर श्रेष्ठ पतिको दुःख पहुँचता हो। ऐसे लोग चाहें तो तीर्थयात्रा न करके अपने भावके अनुसार घरमें रहकर तीर्थ-यात्राका फल प्राप्त कर सकते हैं।

शास्त्रमें पुत्रके लिये माता-पिताको, शिष्यके लिये गुरुको, पतिके लिये पत्नीको और पत्नीके लिये पतिको तीर्थ माना गया है। पद्मपुराण-भूमिखण्डमें इसका इतिहासोंके सहित बड़ा ही विशद और सुन्दर वर्णन है। वहाँ कहा गया है—'जो दुष्ट पुरुष वृद्ध माता-पिताका अपमान करता है, उन्हें उचित रीतिसे खाने-पीनेको नहीं देता, कड़वे वचन बोलता है और उनको असहाय छोड़कर चल देता है, वह बार-बार साँप, ग्राह, बाघ तथा रीछ आदि योनियोंको प्राप्त होता है और कुम्भीपाक आदि घोर नरकोंमें युगोंतक पड़ा सड़ा करता है। माता-पिताकी सेवासे, उनको आदरपूर्वक संतुष्ट करनेसे तीनों लोकोंकी तुष्टि होती है। जो पुरुष नित्य अपने माता-पिताके चरण चाँपता है, उसे घरपर ही भागीरथी-स्नानका पुण्य मिलता है। पुत्रोंके लिये माता-पिताके समान कोई 'तीर्थ' नहीं है—

नास्ति मातृसमं तीर्थं पुत्राणां च पितुः समम्।

सूर्य दिनके, चन्द्रमा रात्रिके तथा दीपक घरके अन्धकारको हटाकर उनमें उजियाला करते हैं; परंतु गुरु तो शिष्यके अज्ञानान्धकारको सर्वथा हरकर उसके दिन, रात और घर—तीनोंमें ही उजियाला कर देते हैं—यह समझकर शिष्यको सदा गुरुकी पूजा करनी चाहिये। शिष्योंके लिये गुरु ही परम पुण्य, सनातन धर्म, परम ज्ञान और प्रत्यक्ष फलदायक परम 'तीर्थ' हैं—

शिष्याणां परमं पुण्यं धर्मरूपं सनातनम्।
परं तीर्थं परं ज्ञानं प्रत्यक्षफलदायकम्॥

जिस घरमें सदाचारयुक्त, धर्मतत्पर, पुण्यमयी सती पतिव्रता है, उस घरमें सारे देवता नित्य निवास करते हैं। गङ्गाजी आदि पवित्र नदियाँ, पवित्र समुद्र तथा सारे तीर्थ और पुण्य वहाँ रहते हैं। सत्यपरायणा पवित्र सतीके घरमें समस्त यज्ञ, गौ और ऋषिगण बसते हैं। ऐसी पवित्र भार्याको त्यागकर जो पुरुष धर्म-कार्य करता है, उसके वे सारे धर्म व्यर्थ होते हैं। भार्याके बिना धर्म पुरुषका मित्र नहीं होता। भार्याके समान पुरुषोंको सद्गति देनेवाला कोई दूसरा 'तीर्थ' नहीं, यदि भार्या भक्ता हो—

तस्माद् भार्यां विना धर्मः पुरुषस्य न सिद्ध्यति।
नास्ति भार्यासमं तीर्थं पुंसां सुगतिदायकम्॥

स्त्रीके लिये पति ही परमेश्वर है, पति ही गुरु है, पति ही परम देवता है और पति ही परम 'तीर्थ' है। जो स्त्री पतिको छोड़कर अकेली रहती है, वह पापयुक्त हो जाती है। स्त्रीको पतिके प्रसादसे ही सब कुछ प्राप्त होता है। स्त्रीका पातिव्रत्य ही समस्त पापोंका नाशक और मोक्षदायक है। जो स्त्री पतिपरायणा है, वही पुण्यमयी कहलाती है। स्त्रियोंके लिये पतिको छोडकर पृथक् तीर्थ शोभा नहीं देता। पतिका दाहिना चरण उसके लिये प्रयाग है और बाया चरण पुष्करराज है। पतिके चरणोदक-स्नानसे ही उसे इन सब तीर्थोंमें स्नान करनेका पुण्य मिल जाता है। पत्नीके लिये पति ही सर्वतीर्थमय और पुण्यमय है।

सर्वतीर्थमयो भर्ता सर्वपुण्यमयः पतिः।

किंतु इसका यह तात्पर्य नहीं कि गृहस्थोंको स्थावर तीर्थोंकी यात्रा करनी ही नहीं चाहिये। बात इतनी ही है कि बूढ़े माता-पिता, गुरु, पति और भार्या आदिके पालन-पोषण तथा सेवारूप कर्तव्यसे मुँह मोड़कर इन्हें रोते-बिलखते तथा कष्ट पाते छोड़कर जो नर-नारी तीर्थोंमें जाकर अपना कल्याण चाहते हैं, वे एक बार अपनेको वैसी ही परिस्थितिमें ले जाकर सोच लें। तीर्थ-यात्राके समान ही फल तो उनको घरमें भी भाव होनेपर प्राप्त हो सकता है।

तीर्थ-यात्राके विभिन्न फल

जो लोग भगवान्‌में मन लगाकर भगवत्सेवाकी बुद्धिसे श्रद्धा तथा संयमपूर्वक तीर्थ-यात्रा करते हैं, उन्हें मोक्ष या भगवत्प्रेमकी प्राप्ति होती है। जो लोग ऐसी बुद्धि न रखकर किसी लौकिक अथवा पारलौकिक कामनासे ही श्रद्धा-संयमपूर्वक तीर्थ-यात्रा करते हैं, उनको अपने भाव तथा तीर्थकी शक्तिके अनुसार उनकी कामनाके अनुरूप उचित फल प्राप्त होता है। किसी भी प्रकार हो, तीर्थ-सेवन है निश्चय ही लाभदायक।

तीर्थोंकी वर्तमान बुरी स्थिति

अब अन्तमें एक अप्रिय प्रसङ्गपर कुछ लिखना आवश्यक जान पड़ता है। जैसे भगवत्परायण भजनानन्दी महापुरुषोंने अपने पुण्य-बलसे तीर्थोंको तीर्थ बनाया था, वैसे ही आजकल पापाचारी दाम्भिक लोगोंने उन्हें नष्ट-भ्रष्ट करना आरम्भ कर दिया है। आजकल प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तीर्थोंपर जो पापकाण्ड होते हैं, वे बड़े ही भयानक और रोमाञ्चकारी हैं। सच पूछा जाय तो इन्हीं दुराचारोंको देखकर अच्छे लोगोंकी भी श्रद्धा तीर्थोंसे हटती जा रही है। प्रत्येक तीर्थ-प्रेमीको इस ओर ध्यान देकर धर्मके नामपर होनेवाले इस भीषण पापाचारको रोकनेका प्रयत्न करना चाहिये। तीर्थोंका यह दुरुपयोग शीघ्र ही नष्ट हो जाना चाहिये। नहीं तो भारतके गौरव-स्थल ये तीर्थ लोगोंकी अश्रद्धाके भाजन हो जायँगे।

विभूषितानङ्गरिपूत्तमाङ्गा सद्यः कृतानेकजनार्तिभङ्गा।
मनोहरोत्तुङ्गचलत्तरङ्गा गङ्गा ममाङ्गान्यमलीकरोतु॥

(श्रीजगन्नाथपण्डितराज-कृत गङ्गालहरी, ५२)

'जो भगवान् शङ्करके मस्तकको विभूषित करती हैं, जो तत्क्षण ही (दर्शन, स्पर्श, प्रणाम, अवगाहन तथा शरण लेनेसे) अनेक भक्तोंके क्लेशका दूर कर देती हैं, जो मनोहर, ऊँची चञ्चल लहरियोंसे सुशोभित हैं, वे भगवती गङ्गा मेरे अङ्गोंको निर्मल करें—शुद्ध बना दें।'

तीर्थ और उनका महत्त्व

(लेखक—श्रीगुलाबचन्द्रजी जैन 'विशारद')

व्याकरण-शास्त्रके अनुसार 'तीर्थ' शब्दकी व्याख्या इस प्रकार है। 'तॄ' धातुसे 'थ' प्रत्यय जोड़नेपर 'तीर्थ' शब्दकी उत्पत्ति हुई है। उसका शाब्दिक अर्थ है—जिसके द्वारा तरा जाय। इस प्रकारसे 'तीर्थ' शब्दके अनेक अर्थ होते हैं—जैसे देव, शास्त्र, गुरु, उपाय, पुण्यकर्म और पवित्र स्थान आदि। परन्तु संसारमें इस शब्दका रूढ़ार्थ पवित्र स्थान है और हमारा भी अभिप्राय इसी अर्थसे है! इन पवित्र स्थानोंको हम बड़ी श्रद्धापूर्वक देखते और पूजते हैं।

अब यह देखना है कि ये पवित्र स्थान किस प्रकार बनते हैं।

साधारणतः संसारके सभी लोग यह जानते हैं कि प्रायः सभी क्षेत्र एक-समान होते हैं, परन्तु क्षेत्रोंमें भी महान् अन्तर होता है। भौगोलिक, सामाजिक और धार्मिक आदि किसी भी दृष्टिसे देखिये, अन्तर प्रत्यक्ष हो जायगा।

भौगोलिक दृष्टिसे देखनेपर ज्ञात होता है कि पृथ्वी गोल है। इस गोल पृथ्वीपर वैज्ञानिकोंने स्थानोंकी दूरी तथा पूर्ण जानकारीके लिये कुछ कल्पित निशान, जिन्हें अक्षांश और देशान्तर-रेखाएँ कहते हैं, मान ली हैं। नक्शा देखनेवाले जानते हैं कि अमुक रेखावाले स्थान 'टूंड्रा' कहलाते हैं और उस स्थानपर अमुक तरहके जीव रहते हैं और अमुक प्रकारसे अपना जीवन-निर्वाह करते हैं, अमुक रेखापर स्थित स्थानोंपर रेगिस्तान हैं, अमुक रेखावाले स्थानोंपर अमुक वायु बहती है, अतः यहाँका जलवायु अमुक फलोंके लिये लाभदायक है। इसके अतिरिक्त सामाजिक और धार्मिक दृष्टियोंसे भी द्रव्य, काल, भाव और भवके अनुसार भी क्षेत्रोंमें अन्तर पड़ जाता है। उदाहरणके लिये इस युगके आदिमें भरत-क्षेत्र परमोन्नत दशामें था; किंतु कालके प्रभावसे आज वही देश क्रमशः हीन दशामें दिखायी पड़ रहा है।

ऋतुओंका भी क्षेत्रके ऊपर बड़ा असर पड़ता है। जैसे उदाहरणार्थ जिस स्थानपर वर्षा अधिक होती है, वहाँकी भूमि उस स्थानकी अपेक्षा अधिक उपजाऊ होगी, जहाँ वर्षा कम होती है। रेतीली भूमिकी अपेक्षा खतीली भूमिमें तथा पहाड़ी भूमिकी अपेक्षा मैदानी भूमिमें अन्तर होता है। उदाहरणतः पंजाबकी भूमि गेहूँके लिये तो बंगालकी चावलके लिये उपयुक्त है। चेरापूँजी चायके लिय तो लङ्का रबरके लिये प्रसिद्ध है।

इससे यह स्पष्ट हो गया कि जिस प्रकार बाहरी ऋतुओं आदिके कारणोंको पाकर क्षेत्रोंका प्रभाव विविध रूप धारण कर लेता है, इसी प्रकार पाप, अत्याचार, अनाचार, हिंसा, झूठ, चोरी आदिके प्रभावसे भी क्षेत्रोंका वातावरण अवश्य दूषित हो जाता है। इसपर धर्मके विशेषज्ञोंका कथन है कि जिन स्थानोंपर इस प्रकारके कुकृत्य हुआ करते हैं अथवा हुए हैं, उनका वातावरण वहाँके लिये भूकम्प, दुर्भिक्ष, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि उपद्रव उपस्थित कर देता है। वे ही स्थान वातावरणके कारण पापात्मा जीवोंको उत्पन्न करते हैं और वे पापात्मा बराबर पापोंमें ही रत रहते हैं और उनका दुष्परिणाम भोगते हैं।

उदाहरणार्थ—गङ्गा, यमुना, सिन्धु और नर्मदा आदिमें जो बाढ़ें आती हैं और हजारों नगरों, गाँवों और घरोंको बहाकर नष्ट-भ्रष्ट कर देती हैं! यह सब हमारी पाप-प्रवृत्तिकी बाढ़का ही परिणाम होता है। पानीमें बाढ़ नहीं आती वरं हमारे पाप ही पानीमें मिलकर हमें अपने पापोंका मजा चखाते हैं। उपर्युक्त दैवी प्रकोप उस वातावरणके ही कारण उत्पन्न होते रहते हैं।

जहाँका वातावरण दूषित होता है, वहाँ यदि कोई धर्मात्मा शुद्धहृदय पुरुष पहुँच जाय तो एक क्षणके लिये वहाँका वह दूषित वातावरण उसके हृदयमें क्षोभ उत्पन्न कर देता है—ठीक उसी प्रकार, जैसे तीर्थ-स्थानपर दुष्ट एवं पापी मनुष्योंके हृदयोंमें शान्ति और पवित्रता एक क्षणके लिये अवश्य स्थान ग्रहण कर लेती है। यह उन मनुष्योंका नहीं, क्षेत्रोंका प्रभाव है। कहावत है—'जैसे पीये पानी, वैसी बोले बानी। और जैसा खाये अन्न, वैसा होवे मन्न!'

बहुत-से अनुभवशील व्यक्तियोंका कहना है कि कई स्थान ऐसे भी देखनेमें आये हैं, जहाँ पहुँचनेपर हृदयमें अचानक ही बवंडर उठ खड़ा होता है और मनुष्य सोचने लगता है कि यदि इस समय हाथमें तलवार होती तो खून कर डालता; परन्तु उस क्षेत्रसे बाहर निकलनेपर वह भाव नहीं रहता। यह सब उस क्षेत्रके वातावरणका ही तो प्रभाव है।

अतः स्पष्ट है कि क्षेत्रोंपर बाहरी कारणोंका प्रभाव

अवश्य पड़ता है। तब फिर संसारसे विरक्त हुए महात्माओंके 'स्वार्थत्यागमय जीवन' और धर्म-मार्गके महान् प्रयोगोंका असर उस क्षेत्रपर तथा उसके वायु-मण्डलपर क्यों नहीं पड़ेगा?

इसीलिये संसारसे विरक्त हुए महापुरुष प्रकृतिके एकान्त और शान्त स्थानोंमें—उच्च पर्वतमालाओं, मनोरम उपत्यकाओं, गम्भीर गुफाओं और गहन वनोंमें जाकर तिल-तुषमात्र परिग्रहका भी त्याग करके, मोक्षरूप परम पुरुषार्थके साधक बनकर, दृढ़ आसनसे आसीन हो तपश्चरण करते हैं और ज्ञान-ध्यानके अभ्यास द्वारा अन्तमें कर्म-शत्रुओं (राग-द्वेषादि) का नाश करके परमार्थको प्राप्त करते हैं। इस प्रकार आत्मसिद्धि प्राप्त करके वे स्वयं तो तारण-तरण होते ही हैं, साथ ही उस क्षेत्रको भी तारण-तरण शक्तिसे संस्कारित कर देते हैं। इस प्रकारके महामानव जिस स्थानपर जन्म लेते हैं, लीलाएँ करते हैं, तपद्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं और कर्म-शत्रुओंका समूल नष्ट कर निर्वाणको प्राप्त करते हैं, उन सभी स्थानोंको 'तीर्थ' अथवा पवित्र स्थान कहते हैं।

तीर्थोंका महत्त्व—तीर्थोंका वायु-मण्डल पवित्र होनेके कारण वहाँ पहुँचनेवाले यात्रियोंका मन भी पवित्र होता है। उनके मनसे बुरी भावनाएँ भाग जाती हैं और सद्भावनाएँ घर कर लेती हैं। यहाँतक देखा और सुना गया है कि कठोर-से-कठोर पापात्माओंके भी हृदय कुछ क्षणोंके लिये पवित्र हो जाते हैं। मनुष्योंके अतिरिक्त वहाँके पशु-पक्षी आदि हिंसक जीव भी अहिंसक बन जाते हैं। रामायणमें जिन दिनों चित्रकूटपर श्रीरामचन्द्रजी सीताजी तथा लक्ष्मणजीसहित निवास करते हैं, उन दिनों निषादादिके हृदय-परिवर्तनका कारण भी वहाँका शुद्ध-पवित्र वातावरण ही होता है। यथा—

यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चोराई॥

भील-जैसी अशिक्षित एवं पापकर्मोंमें लिप्त रहनेवाली जातिके लोग भी—जिनका चोरी करना, हत्या करना नित्यकर्म था—कैसे परिवर्तित हृदयके हो गये।

यह है तीर्थोंका महत्त्व। तीर्थ-स्थानोंपर मनुष्य पवित्र वातावरणके ही कारण ऐसी-ऐसी भीषण प्रतिज्ञाएँ बड़े हर्षसे कर लेता है, जिन्हें अन्यत्र वह शायद ही कर सके।

विशेष—

मुमुक्षु जीव पापसे भयभीत होता है—होना ही चाहिये; क्योंकि पापमें पीड़ा है और पीड़ासे सब डरते हैं। इस पीड़ासे बचनेके लिये मनुष्य तीर्थोंकी शरण लेता है। जनसाधारणका विश्वास है कि तीर्थ-वन्दना करनेसे उसका पाप-पङ्क धुल जाता है। यह विश्वास सार्थक है, परंतु विवेकके साथ; क्योंकि जबतक तीर्थके स्वरूप एवं उनकी वन्दना तथा विनय करनेका वास्तविक महत्त्व या रहस्य नहीं समझा जायगा, तबतक तीर्थके दर्शन कर लेना पर्याप्त नहीं। तीर्थ-स्थान, तीर्थ-यात्रा और तीर्थ-वन्दना वास्तवमें वही है, जो पाप-मल धोकर अन्तरङ्गको शुद्ध कर दे। परन्तु तीर्थ-स्थान पाप-मल स्वयं नहीं धो सकते, धोनेमें सहायक मात्र हो सकते हैं।

तीर्थयात्रामें कर्तव्य

तीर्थयात्रामें—नाम-जप करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—मौन रहना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—व्रत-उपवास करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—अहिंसा-सत्यका पालन करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—दोष-त्यागका पालन करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—शौच-सदाचारका पालन करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—तप-स्वाध्याय करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—संतोष धारण करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—श्रद्धापूर्वक स्नान-दर्शन करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—पितरोंका श्राद्ध करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—निष्काम दान करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—निःस्वार्थ सेवा करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—सबके गुण देखना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—भगवद्गुण सुनना-गाना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—भगवान्‌का निरन्तर स्मरण करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—सबसे विनम्र व्यवहार करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—सबका आदर-सम्मान करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—सबसे प्रेम करना कर्तव्य है।
तीर्थयात्रामें—रेलके डिब्बोंको, अपने कपड़ोंको साफ-सुथरा रखना कर्तव्य है।

और

तीर्थयात्रामें—डिब्बेमें, धर्मशालामें, रास्तेमें कभी न थूकना, फलोंके छिलके न डालना, पानी न उँड़ेलना, बीड़ी-सिगरेट (कहीं) न पीना कर्तव्य है।

विविध परमतीर्थ

राम-नाम-परायण कुष्ठी तीर्थ

मूढ़मते! श्रीराम-नाम जप, जिस की महिमा अविचल ही है।
कंचन-काया राम-नाम के बिना निरर्थक—निष्फल ही है॥
गल-गल चर्म देह से गिरता, राम-नाम जपता है प्रतिपल।
तीर्थ-शिरोमणि उस कुष्ठी से घटा स्वयं निर्मल गङ्गा-जल!!

× × × ×

संत-चरण-रेणु तीर्थ

पुण्य-पुञ्ज करुणा के सागर, मानो मूर्तिमान अघमर्षण।
परमतीर्थ है उन संतों की चरण-रेणु का एक-एक कण॥

× × × ×

विधवा-पद-रज तीर्थ

अनल नहीं अपमान विष्णु का, विधवा का अभिशाप अनल है।
परमतीर्थ विधवा की पद-रज, तीर्थ नहीं, गङ्गा का जल है!!

× × × ×

सेवा-तीर्थ

माता तीर्थ, तीर्थ है रोगी, अभ्यागत है तीर्थ महान।
इन सब की सच्ची सेवा से द्रवीभूत होते भगवान॥
द्रवीभूत जब हो जाते हैं, कमल-नयन वे दयानिधान।
तो इच्छित पदार्थ निज जन को कर देते तत्काल प्रदान॥

× × × ×

एक-एक कण तीर्थ महान्

(१)

निज हत्यारे के समक्ष भी, वही विश्व-मोहन मुसकान।
हाथ जोड़ कर सादर उस को, अर्पित कर देते निज प्राण॥
शाप नहीं देते करुणावश, देते हैं पावन वरदान।
उन संतों की चरण-धूलि का एक एक कण तीर्थ महान!!

(२)

लगा नहीं सकता कोई भी जिन की महिमा का अनुमान।
पापी, पतित, पराजित का भी जो करते सच्चा सम्मान॥
सदा काल वशवर्ती जिन के, शरणागत-वत्सल भगवान।
उन संतों की चरण-धूलि का, एक-एक कण तीर्थ महान!!

(३)

छू न गया है स्वप्न बीच भी, जिन को लेश मात्र अभिमान।
जो विनम्रता की परिसीमा, परम सुखद जिन की मुसकान॥
सुधा पिला करके औरों को करते स्वयं विषम विष पान।
उन संतों की चरण-धूलि का एक-एक कण तीर्थ महान॥

(४)

विष्णु, विधाता, उमानाथ भी जाते हैं जिन पर कुर्बान।
कर न सकेंगे शेष-शारदा तक जिन का सम्यक गुणगान॥
जिन के सम्मुख लज्जित होता परमेश्वर का दिव्य विधान।
उन संतों की चरण-धूलि का एक-एक कण तीर्थ महान॥

× × × ×

हल्दी-घाटीकी रज तीर्थ

'हर हर महादेव!' की ध्वनि से, गूँज उठा त्रिभुवन का कण-कण।
देश-भक्ति के दीवानों ने, किया भयंकर प्रलयंकर रण॥
शोणित में उबाल आता है जिस की स्मृति से अब भी क्षण-क्षण।
उस हल्दी घाटी की रज का परम तीर्थ है एक-एक कण॥

× × × ×

जौहर-तीर्थ

जहाँ पद्मिनी सती हुई थी, जहाँ जली जौहर की ज्वाला।
जहाँ अलाउद्दीन रो पड़ा कामदेव-सेवी मतवाला॥
सच पूछो तो तीर्थ वहाँ है—तीर्थ नहीं, निर्मल गङ्गा-जल।
जननी जन्म-भूमि द्रोही का सुर-सरिता का सेवन निष्फल॥

× × × ×

चित्तौड़-तीर्थ

जहाँ पद्मिनी सती हुई थी, जिस की चरण-धूलि चन्दन है।
जिस के सम्मुख लज्जित होता स्वर्ग-लोक का वह नन्दन है॥
जहाँ यवन-सम्राट् रो पड़ा, जहाँ वेदना का क्रन्दन है।
परम तीर्थ चित्तौड़-दुर्ग का कोटि-कोटि शत अभिनन्दन है॥

—श्रीब्रह्मानन्द 'बन्धु'

जङ्गम-तीर्थ ब्राह्मणोंकी लोकोत्तर महनीयता

(लेखक—पं० श्रीरामनिवासजी शर्मा)

पुण्यश्लोक ब्राह्मण—जङ्गम-तीर्थ

ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं निर्मलं सार्वकामिकम्।
येषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिना जनाः[१]॥

(अगस्त्य)

विश्वमें भारत ही एकमात्र ऐसा विलक्षण देश है, जहाँ पूर्णतः सात्त्विक प्रकृतिका विकास-प्रकाश हुआ है; एवं धर्मोंमें हिंदू-धर्म ही ऐसा धर्म है, जिसमें तीर्थोंका शास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक दृष्टिसे लोकोत्तर वर्गीकरण हुआ है।

इस वर्गीकरणमें भी संस्कार-पूत और मोक्ष-धन ब्राह्मण ही स्वगुणोत्कर्षके कारण जङ्गम-तीर्थ माने गये हैं। तीर्थ और भी हैं; परंतु वे स्थावर अथवा कुछ और हैं; किंतु चलते-फिरते तीर्थ तो ब्राह्मण ही हैं, जो पृथ्वीमें सर्वत्र भ्रमण करके दूसरोंको आत्म-सदृश बनाने एवं विश्वमें सर्वत्र निवृत्तिमूलक सार्वभौम और सार्वजनिक वैदिक धर्मके प्रचारद्वारा अभ्युदय करके निःश्रेयसके पथको प्रशस्त और विश्वशान्ति एवं विश्व-कुटुम्ब-भावनाको अनुप्राणित करनेमें सदैव अग्रसर रहे हैं।

साथ ही भारतको भी चरित्रपाठका इन्होंने ऐसा गुरुपीठ बनाया कि बाहरके लोग भी चरित्रशिक्षणके लिये यहाँ आयें। इस सत्य तथ्यके अभिव्यञ्जक प्रमाण हैं—

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।'

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

यही कारण है कि फ्रांसीसी विद्वान् डेलबसके मतसे आज भी हिंदू-सभ्यता किसी-न-किसी रूपमें थोड़ी-बहुत विश्वके दिग्दिगन्तमें व्याप्त है और हैवल महोदयकी सम्मतिमें भारतका नैतिक स्तर पाश्चात्त्य देशोंकी अपेक्षा कहीं अधिक उच्च है।

इतना जगदुद्धार और धर्म-प्रचारका काम करते हुए भी ब्राह्मण मान-प्रतिष्ठाके भावसे सर्वथा असंस्पृष्ट थे—

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव।
अमृतस्येव चाकाङ्क्षेदवमानस्य सर्वदा॥[२]

(मनु० २। ६२)

किंतु ब्राह्मणोंका व्यक्तित्व इससे भी अधिक उच्च था। वे त्रैविद्य, आत्मयाजी, अश्वस्तनिकवृत्ति (कलके लिये भी कुछ बचा न रखनेवाले), प्रवृत्ति-रोधक, निवृत्ति-संस्थापक और मोक्ष-धर्मप्राण महानुभाव थे। मनुकी तो उनके विषयमें समुद्घोषणा है—

उत्पत्तिरेव विप्रस्य मूर्तिर्धर्मस्य शाश्वती।
स हि धर्मार्थमुत्पन्नो ब्रह्मभूयाय कल्पते॥[३]

(मनु० १)

गौरव और आश्चर्यकी बात तो यह है कि साधारण-सा ब्राह्मण भी इन गुणोंके कारण ही ब्राह्मण समझा जाता था—

ज्ञानकर्मोपासनाभिर्देवताराधने रतः।
शान्तो दान्तो दयालुश्च ब्राह्मणश्च गुणैः कृतः॥[४]

(शुक्रनीतिसार १। ४०)

ब्राह्मणत्वका परिचायक मनुप्रोक्त यह भी एक सत्य है कि ब्राह्मण चारों वर्णोंकी क्षेम-कुशलके उपायोंका भी अन्वेषक और निर्णायक होता था—

सर्वेषां ब्राह्मणो विद्याद् वृत्त्युपायान् यथाविधि।
प्रब्रूयादितरेभ्यश्च स्वयं चैव तथा भवेत्॥[५]

(मनु १०। २)

ब्राह्मणोंमें भी जो पौरोहित्यका काम करता था, वह

---

१. ब्राह्मण सर्वफलप्रद चलते-फिरते तीर्थ हैं, जिनके वाक्योदकसे ही मलिन जन शुद्ध हो जाते हैं।

२. सम्मानसे ब्राह्मण सदा उसी प्रकार डरता रहे जैसे मनुष्य जहरसे डरता है और अपमानको उसी प्रकार चाहे जैसे सब लोग अमृतकी आकाङ्क्षा करते हैं।

३. ब्राह्मणका देह ही धर्मकी अविनश्वर मूर्ति होता है। जिस धर्मके लिये इसका जन्म हुआ है उसीसे वह आत्मज्ञानके द्वारा मोक्ष प्राप्त करता है।

४. जो ज्ञान, कर्म एवं उपासनासे युक्त तथा देवाराधनमें दत्तचित्त रहता है तथा (स्वभावसे ही) शान्त, इन्द्रियजयी और दयालु होता है, वही—इन गुणोंसे विशिष्ट ब्राह्मण ही सच्चा ब्राह्मण है।

५. सब वर्णोंकी जीविकाका उपाय ब्राह्मण शास्त्रके अनुसार जाने और उसका उपदेश करे तथा स्वयं भी उपदिष्ट नियमका पालन करे।

न केवल वेदज्ञ, कर्मतत्पर एवं मन्त्रानुष्ठान-सम्पन्न होता था, अपितु उसका पूर्णतः जित-क्रोध, जितेन्द्रिय एवं लोभ-मोह-विवर्जित होना भी आवश्यक था।

पुरोहित प्रशासन-विषयक सभी विद्याओंका ज्ञाता होता था; साथ ही उसका धनुर्वेदमें निपुण होना भी अनिवार्य था। ऐसे ब्राह्मणोंके कोपके भयसे राजालोग भी धर्म-निरत रहा करते थे—

यत्कोपभीत्या राजापि स्वधर्मनिरतो भवेत्।

(शुक्रनीति०)

आचार्य और पुरोधा तो अधिकारियोंको शापाशीर्वादसे भी कर्मतत्पर बनाये रखनेकी क्षमता रखते थे—

सैवाचार्यः पुरोधा वा शापानुग्रहयोः क्षमः।

(शुक्रनीति०)

वशिष्ठ-सदृश प्रजाराध्य लोकनायक ब्राह्मणोंका तो ब्रह्मतेज ही शस्त्र-विनिन्दक होता था। स्ववीर्यगुप्त, तेजःपुञ्ज एवं महाप्रतापी विश्वामित्रको भी स्वीकार करना पड़ा था—

धिग् बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजोबलं बलम्।

परंतु तथाकथित ब्राह्मणत्वके समुत्पादन और सम्पादनके भी कुछ नैसर्गिक असाधारण कारण हुआ करते थे—

वैशिष्ट्यात् प्रकृतिश्रैष्ठ्यान्नियमस्य च धारणात्।
संस्कारस्य विशेषाच्च वर्णानां ब्राह्मणः प्रभुः॥

(मनु० १०। ३)

अर्थात् गुण-वैशिष्ट्य, स्वाभाविक श्रेष्ठता, नियम-पालन, जन्मजात संस्कार-प्राबल्य आदि सभी बातोंमें ब्राह्मण अन्य वर्णोंसे महान् होता था। वर्णोंपर उसकी प्रभुताका यही प्रधान कारण था।

साथ-ही-साथ ब्राह्मणत्वकी रक्षाके लिये आवश्यक प्रतिबन्ध भी हुआ करते थे—

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥
न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्।
स शूद्रवद् बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः॥[1]

(मनु० २। १६८, १०३)

ब्राह्मणत्वका त्राता मनुप्रोक्त यह दण्ड-विधान भी कितना विलक्षण और आदर्श है।

शूद्रको चोरी करनेका दण्ड ८ रुपये।

वैश्यको चोरी करनेका दण्ड १६ रुपये।

क्षत्रियको चोरी करनेका दण्ड ३२ रुपये।

ब्राह्मणको चोरी करनेका दण्ड ६४, १००, अथवा १२० रुपयेतक था—इसलिये कि ज्ञानी और गुरु होता हुआ भी वह ऐसे कर्ममें प्रवृत्त होता है। (मनु०)

एतादृश आप्त ब्राह्मणोंको ही नियम (विधान) बनानेका अधिकार था—

दशावरा वा परिषद् यं धर्मं परिकल्पयेत्।
त्र्यवरा वापि वृत्तस्था तं धर्मं न विचालयेत्॥
एकोऽपि वेदविद् धर्मं यं व्यवस्येद् द्विजोत्तमः।
स विज्ञेयः परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः॥[2]

(मनु० १२)

ऐसा निवृत्ति-धर्मप्राण ब्राह्मण, जो स्वयं तीर्थरूप है, विशेषतः मानस-तीर्थ-स्नातक[3] है; और जो दिव्य-भौम-स्थावर तीर्थोंका अन्वेषक, निर्माता और संरक्षक भी रहा है, यदि तीर्थ कहा गया तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं, प्रत्युत सत्यको ही सत्य कहा गया है।

ऐसे जन्मना एवं कर्मणा ब्राह्मण अब भी वस्तुतः तीर्थ ही हैं। केवल जन्मना ब्राह्मण भी सम्मान्य अवश्य हैं; क्योंकि वे भी प्रसुप्त ब्राह्मणोचित संस्कारोंके अक्षय गुप्त-निधि हैं।[4]

---

१. जो ब्राह्मण वेदाध्ययन छोड़कर अन्य दिशाओंमें परिश्रम करता है, वह अपने जीवन-कालमें ही कुटुम्बसहित तुरंत शूद्र हो जाता है और जो प्रातः-सायं संध्योपासन नहीं करता, उसका शूद्रकी भाँति सभी ब्राह्मण-कर्मोंसे बहिष्कार कर देना चाहिये।

२. कम-से-कम दस अथवा तीन सदाचारी ब्राह्मणोंकी परिषद् अथवा एक ही श्रेष्ठ वेदविद् ब्राह्मण जिस नियमका निर्माण करे, वही अनुल्लङ्घनीय धर्म है; अज्ञानी दस हजार व्यक्तियोंद्वारा निर्णीत धर्म भी पालनीय नहीं होता।

३. मानस-तीर्थ सत्य, दान, तप आदि अनन्त सद्गुणोंका पर्याय है और ब्राह्मण इन सबके मूर्तरूप हैं।

४. संसारमें भारत ही एक ऐसा देश है, जिसने विश्वसमुद्धारक किंतु चलते-फिरते तीर्थोंकी कल्पना की है। इस समय भी जङ्गम-तीर्थ ये ही ब्राह्मण लाखोंकी संख्यामें लोकालयोंमें भ्रमणकर वेदपाठ और पुराणकथाद्वारा समाजके नैतिक स्तरको गिरनेसे बचाये हुए हैं, किंतु जबसे इन्होंने बाहर जाना छोड़ा, जनता वृषलत्वको प्राप्त हो गयी—'वृषलत्वं गता लोका ब्राह्मणानामदर्शनात्।'

तीर्थोंका माहात्म्य

(लेखक—पं० श्रीसूरजचंदजी सत्यप्रेमी (डाँगीजी))

अग्नि-तत्त्व सर्वव्यापक है, परंतु वह दियासलाईमें शीघ्र प्रकट होता है। पत्थरकी अपेक्षा वह लकड़ीमें जल्दी फैलता है और कपूरमें तो अविलम्ब प्रकट हो जाता है। इसी प्रकार भगवत्-तत्त्व भी सर्वव्यापक है, परन्तु तीर्थोंमें वह सुगमताके साथ प्रत्यक्ष हो सकता है। अन्य प्राणियोंकी अपेक्षा मनुष्यको वह शीघ्र प्राप्त होता है और ज्ञानी, भक्त तथा संतोंके हृदयमें तो तुरन्त दृष्टिगोचर हो जाता है।

यों तो पञ्चभूतात्मक इस प्रपञ्चका एक परमाणु भी ऐसा नहीं, जिसे सत्-तत्त्वका सङ्ग कभी न प्राप्त हुआ हो; परन्तु तीर्थस्थान हम उन्हीं भूमिकाओंको समझते हैं, जहाँ परब्रह्म परमात्मा अपने शाश्वत भागवत्स्वरूपका सगुण साकार विग्रह धारणकर विशेषत: प्रकट होते हैं और शुद्ध हृदयोंमें सत्सङ्गकी सत्प्रेरणा किया करते हैं।

बहुत-से भाई-बहिन तीर्थोंमें जाकर भी अन्त:करण मलिन रखते हैं और फिर कहते हैं कि हमपर तो तीर्थोंका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। हम उनसे पूछते हैं—'सरोवरके किनारे जाकर यदि स्नान नहीं किया तो इसमें सरोवरके पानीका क्या दोष? वहाँसे अस्नात ही लौटकर यदि कहते हो कि सरोवरने हमारा मल दूर नहीं किया तो यह अपराध किसका?' बात यह है कि शब्दके परमाणु आकाशव्यापक धर्म-द्रव्यद्वारा सर्वत्र फैल जाते हैं; पर जहाँ शब्दाकर्षक-यन्त्र (रेडियो) रखा हो और उसका सम्बन्ध जोड़ा गया हो, वहाँ उन्हें ग्रहण किया जा सकता है। उसी प्रकार तीर्थोंमें सत्सङ्गद्वारा जो पवित्र मन तथा वाणीके परमाणुओंका विस्तार होता है, उनका ग्रहण भी विशिष्ट प्रकारके मानस-तन्त्रसे ही हो सकता है, जो भक्तिपूर्ण संस्कारोंसे बना हुआ हो।

अपने देशमें ऐसे तीर्थस्थान अनेक हैं, जहाँ जीवनके भिन्न-भिन्न अङ्गोंको शुद्ध, स्थिर और उन्नतिशील बनानेके लिये व्यवस्थित कारखाने बनाये गये हैं। उन कारखानोंमें जो निर्मल हृदयवाले संत रहते हैं, वे ही चतुर इंजीनियर हैं। पूर्वजन्मके अनन्त पुण्योंसे ही मनुष्य-जीवनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग तीर्थस्थानोंके उन कारखानोंमें सत्पुरुषोंके हाथ पड़ते हैं और वे ऐसे हितकारी और सुन्दर रूपको धारण करते हैं, जो सर्वत्र सात्त्विक आनन्दकी सृष्टि करनेमें समर्थ सिद्ध हो सके।

अशुभ कर्मोंसे निवृत्तिका अभ्यास करना हो तो भगवान् शंकरके ज्योतिर्लिङ्गोंका दर्शन करना चाहिये। शुभ कर्मोंमें प्रवृत्तिका अभ्यास करना हो तो कुछ दिन पुष्करराजमें बिताना चाहिये। प्रवृत्ति-निवृत्तिसे ऊपर उठकर शुद्ध शाश्वत धर्ममें प्रतिष्ठित होना हो तो बदरिकाश्रम आदि चार धामोंकी यात्रा करनी चाहिये। प्रज्ञाको स्थिर करनेके लिये बौद्ध-तीर्थोंकी यात्रा प्रधान मानी जाती है। जैनतीर्थोंकी यात्रासे वीतराग भावकी वृद्धि होती है। यह तो एक सामान्य दिशा-निर्देश किया गया है। अपने मनके रोगोंका किसी सद्गुरुसे निदान करवाकर तदनुरूप तीर्थोंका सेवन करनेसे अवश्यमेव इष्टसिद्धि होगी।

अन्तमें हम गोस्वामी तुलसीदासजीकी निम्नलिखित चौपाई उद्धृत किये बिना नहीं रह सकते—

मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू॥

× × ×

सबहि सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा॥

वास्तवमें संत-समाज सङ्गम तीर्थस्वरूप है। आदरपूर्वक सेवन करनेसे वह सम्पूर्ण क्लेशोंको शान्त करता है और सर्वत्र सबको समानरूपसे सुलभ है। हमारे हृदयोंमें भी तीर्थस्वरूपिणी शान्तवृत्तियाँ निवास करती हैं, उनको जाग्रत् करना ही तीर्थसेवनका सदुपयोग है।

श्रीमन्महाप्रभु कृष्णचैतन्यदेवप्रदर्शित तीर्थ-महिमा

(लेखक—आचार्य श्रीकृष्णचैतन्यजी गोस्वामी)

महाप्रभु श्रीचैतन्यदेवकी आज्ञासे व्रज-महिमा-प्रकाशनार्थ सर्वप्रथम श्रीवृन्दावन-महातीर्थमें प्रेषित परम भक्त श्रीलोकनाथ गोस्वामिपादके अन्यतम शिष्य श्रीनरोत्तमदास ठाकुर महाशयका एक सूत्र है—

तीर्थयात्रा परिश्रम केवल मनेर भ्रम सर्वसिद्धि गोविन्दचरण।

यह वाक्य तीर्थयात्राके प्रतिवादार्थ नहीं, किंतु प्रतिपादनार्थ है। उनका कहना है कि '(दान, ध्यान, भजन-पूजन, अर्चन-सेवन आदि) सबका सिद्धिदायक गोविन्द-चरण है। उसमें तल्लीन भाव न हो और केवल आमोद-कौतुक, नेत्ररञ्जन या ग्राम्य विषयासक्ति आदिके लिये आचरित किया जाय तो तीर्थयात्राका-सा महाफलप्रद साधन भी निष्फल और व्यर्थ हो जाता है। श्रीमद्भागवतमें श्रीयुधिष्ठिरजीने श्रीविदुरजीसे कहा था—

भवद्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं विभो।
तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तःस्थेन गदाभृता॥

तात्पर्य यह है कि अनन्य भावसे केवल भगवान्‌के चरणोंमें मनोवृत्तियोंको विलीन करनेपर ही तीर्थयात्राका साफल्य है। इसी सिद्धान्तको प्रदर्शित करनेके लिये श्रीकृष्णदास कविराज महाशयने कलियुग-पावनावतार भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुकी तीर्थ-भ्रमण-लीलाका वर्णन श्रीचैतन्यचरितामृतमें विस्तृत रूपसे किया है।

ऐश्वर्य प्रकाशनके लिये जब भगवान्‌की भगवत्ता हमारे सामने आती है, तब तो हम डर जाते हैं; उनके तेजोमय रूपके सामने आँख उठाकर देखनेकी भी क्षमता नहीं रहती। श्रीनृसिंह-भगवान्‌के ऐश्वर्य-प्रकाशके समय ब्रह्मा-रुद्रतककी बोलती बंद हो गयी थी। उनकी भगवत्ताका महत्त्व तो हमारे सामने तब खिल उठता है, जब अकारण-दयालु प्रभु करुणाप्रवण होकर सम्मुख आते हैं और एक प्रकारसे घसीटकर जीवोंको सुपथपर चलना सिखाते और उन्मुखकर श्रेय-पथपर चला देते हैं। श्रीराम-श्रीकृष्णरूपमें बार-बार जीवोंको प्रत्येक दिशामें मधुरभावसे सदुपदेश दिया गया और श्रीमन्महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्यदेवकी प्रकटलीलामें तो हमें पद-पदपर विभुकी वही परम्परा दीखती है। उन्होंने सम्पूर्ण साधनोंको अपने आचरण, व्यवहार और संकेतमात्रके द्वारा कलियुगके अनवधान जीवोंके कल्याणार्थ बताया था। भगवन्नामका कीर्तन, श्रवण, मनन, आस्वादन आदि किस प्रकार कर्तव्य है—यह दिखाया। वैसे ही तीर्थपर्यटन और तीर्थ-सेवनकी शिक्षा भी केवल मुखसे—शास्त्रोक्त प्रमाणोंकी दुहाई देकर व्याख्यानबाजीसे नहीं, अपितु स्वयं आचरण करके दी थी।

यह श्रीगौराङ्गदेवकी गरिमामयी लीला हमारे सामने उस समयसे आती है, जब सर्वकर्मोंका संन्यास करके वे माता शचीदेवीके आज्ञा-व्याजसे नीलाचलमें निवास करनेके लिये प्रस्थित होते हैं। आहा! कितना आकर्षण, कितना उल्लास, कितनी विरह-व्याकुलता, कितनी त्वरा, कैसी संलग्नता और कैसा अपरूप भाव शान्तिपुरसे पुरीतक जानेमें प्रभुने प्रदर्शित किया—यह श्रीचैतन्य-लीलाके प्रकाशकारी श्रीकृष्णदास कविराज, श्रीवृन्दावनदास आदि महानुभावोंकी सिद्ध वाणीमें आस्वादनीय है। तीर्थ-संदर्शनकी आकुल आकाङ्क्षामें उन्हें तन-बदन, अशन-शयन, विश्राम, आगे-पीछे, ऊँचे-नीचे, अपने-पराये—किसीका ध्यान नहीं रहता, न किसी ओर भ्रूक्षेप होता है। रटना रह जाती है—'कब पाऊँ नीलाचल-चन्द्र!' केवल उन्हींका ध्यान, ज्ञान, गान और भान रह जाता है। यही तो है—तीर्थाटनके समय हमारे लिये अनुकरणीय तथा हृदयङ्गम करनेकी वस्तु। उत्कट इच्छा, व्याकुल भावना और तद्गतभावसे ही तीर्थ प्रत्यक्ष एवं फलप्रद होता है।

तीर्थभ्रमणके इतने उपदेशसे श्रीमहाप्रभुकी तृप्ति नहीं हुई। यह तो एकदेशीय प्रदर्शन हुआ समझा गया। इसलिये कुछ ही दिन नीलाचलमें रहकर दक्षिण-तीर्थाटन-व्याजसे श्रीगौराङ्गदेव फिर चल पड़े। वैसी ही उत्कट तीर्थेशके दर्शनोंकी आकाङ्क्षा, वैसा ही नामोन्माद, वैसा ही व्याकुल भाव वर्षोंके लंबे भ्रमणमें! अद्भुत, सभी अद्भुत! न उन्हें श्रान्ति है न भ्रान्ति है न क्लान्ति है। न भय है न क्लेश। मुखसे नाम और नेत्रोंसे अविराम वारिधारा। बाह्यज्ञानशून्य, एक प्रकार उन्मादी कहिये या मूर्च्छित। जंगली काँटे-कंकड़ोंसे भरा पथ है। कहीं भालू हैं कहीं शेर, कहीं सर्प कहीं बिच्छू आदि हजारों हिंसक जीव; परन्तु किसी ओर कोई हो—वे तो प्रेम-विभोर हैं, अभीष्ट है केवल इष्टदेव-दर्शन। 'सर्वं

खल्विदं ब्रह्म' की चरितार्थता हो रही है, तब भय और अभावके लिये अवकाश ही कहाँ। मजा यह कि श्रीप्रभुकी तद्गततासे हिंसक जीव भी हिंसा भूल जाते हैं। प्रभुके मुखसे निरन्तर निकलती हुई नाम-ध्वनिकी तालपर सिंह-भालू भी नाच उठते हैं और वशंवद हो नाममय हो जाते हैं। यात्रा प्रायः दो वर्षोंमें समाप्त होती है; परन्तु क्रम निरन्तर एक-सा रहा। मनुष्योंकी तो बात ही क्या, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, जड़-जङ्गम भी श्रीचैतन्य महाप्रभुके दर्शन और नामश्रवणसे पवित्र—कृतकृत्य हो गये।

इतनी लंबी यात्रा करके श्रीरङ्गम्में पहुँचकर ही श्रीप्रभुने कुछ दिन विश्राम किया और उस तीर्थभ्रमणकी पूर्णता तब की, जब एक दाक्षिणात्य ब्राह्मण वेङ्कट भट्टके छोटे-से पुत्रको श्रीचैतन्य महाप्रभुने मन्त्रोपदेश देकर अपना परम कृपापात्र और 'तीर्थङ्कर' बना दिया। वही बालक श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी श्रीप्रभुकी महान् शक्तिसे शक्तिमान् हो कुछ समयके बाद प्रभुके इच्छानुसार वृन्दावन पधारे और अपने गुरुदेवकी शिक्षाके अनुसार उनकी निर्दिष्ट आज्ञा—शास्त्र-प्रणयन, वृन्दावनके लुप्तप्राय तीर्थस्थलोंका प्रकाशन और भगवद्भजन जीवनभर करते रहे। श्रीगोपालभट्ट गोस्वामीजीकी निष्ठा, भक्ति और प्रेमके वशीभूत हो श्रीशालग्रामकी एक शिलासे साक्षात् श्रीराधारमणदेवकी मूर्तिका प्रादुर्भाव हुआ। श्रीचैतन्य महाप्रभुकी दक्षिण-तीर्थाटन-लीलामें यही चमत्कारी लक्ष्य अन्तर्निहित था।

श्रीचैतन्य महाप्रभुका लक्ष्य तीर्थ-भ्रमण नहीं, तीर्थकी महत्ताका प्रकाशन ही सविशेष था। श्रीकृष्णके परमधाम-गमनको बहुत काल व्यतीत हो गया था, श्रीकृष्णकी लीलाभूमि श्रीवृन्दावनकी महत्ता और स्वरूप सब लोग भूल चुके थे। व्रजभूमिमें सर्वत्र कालके प्रभावसे घना जंगल हो गया था। भाँति-भाँतिके संहारक जीव-जन्तुओंकी निवासस्थली वह पवित्र लीलाभूमि हो गयी थी। कोई भक्त वहाँ जानेकी भावना भी नहीं कर सकता था। यह श्रीमहाप्रभुको असह्य था। संन्यास लेनेके बाद ही उन्हें वृन्दावनकी रट-सी लग गयी थी और प्रेमोन्मादके समय कहीं पर्वतको देखते ही श्रीगोवर्द्धन पर्वत, किसी नदीको देखते ही यमुनाकी तथा मयूर-पक्षका दर्शन करके श्रीकृष्णकी भावनासे विभोर हो मूर्च्छित हो जाते। कई बार चेष्टा करके भी वृन्दावन जाते-जाते इच्छामय प्रभुने किसी गम्भीर लीलाकी रचनाके लिये मार्गसे ही यात्रा स्थगित कर दी थी; परन्तु दक्षिणसे लौटकर आगमनके कुछ काल बाद ही उन्हें वृन्दावन-यात्राकी धुन पुनः सवार हुई और एक ब्राह्मण बलभद्र भट्टाचार्यको सङ्ग लेकर चुपचाप जंगली मार्गसे वृन्दावनके लिये चल दिये। पूर्वके समान ही भाव, उन्माद, विकलता और प्रेमविभोरतासे यह यात्रा भी चालू हुई। यह यात्रा भी तीर्थ-दर्शनके लिये नहीं, किन्तु तीर्थप्रकाशके लिये हुई थी। भक्तोंके लिये अतर्कित, अगम्य और दुर्लभ श्रीकृष्णलीला-भूमिको सर्वसाधारणके लिये सुलभ करना ही उन्हें इष्ट था। उनकी इच्छासे ही पथमें काशी-प्रयाग आदिमें श्रीरूप, श्रीसनातन आदि बिना प्रयास मिलते गये। और उन सब जन्मके नवाबी चाकर राजसी प्रकृतिके व्यक्तियोंके हृदयमें परम-चरम सात्त्विकता एवं विरागका प्रकाश करके श्रीचैतन्य महाप्रभुने उनमें अलौकिक शक्तिका संचार कर दिया। जैसे पारसके स्पर्शमात्रसे लोहा सुवर्ण हो जाता है, वैसे ही क्षणिक सहवास और उपदेशसे दबीरखास और साकर-मल्लिककी राजकीय पदवी धारण करनेवाले व्यक्तियोंका अहंकार-मल जाने कहाँ चला गया। जाने किस प्रभावशाली इन्जेक्शन या कीमियाने क्षणभरमें ही श्रीरूप-श्रीसनातन आदिको वैष्णवसिद्धान्तका प्रतिपादन करनेवाले महाशास्त्रोंको रचनेकी शक्ति दे दी। किस रसायनने उन दुर्बलजनोंको हजारों वर्षोंसे घने वनमें छिपी लुप्तप्राय श्रीराधा-कृष्णकी लीला-स्थलियोंको प्रकाशित कर देनेका प्रबल बल प्रदान किया। यह लोकोत्तर कार्य श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुने वृन्दावन-गमनागमनके समय राह चलते अनायास कर दिया। रोते बच्चोंको जैसे एक खिलौना देकर फुसला दिया जाता है, वैसे ही महाविद्वान्, कट्टर मायावादी संन्यासी, परम दार्शनिक, दस हजार संन्यासियोंके गौरवशाली गुरु स्वामी प्रकाशानन्द यतिका 'अहं ब्रह्म'-भाव भुलाकर श्रीकृष्ण-भक्ति-रसमें मतवाला बनाकर उन्हें प्रबोधानन्द सरस्वतीके नामसे विख्यात किया और वृन्दावन भेज दिया। श्रीलोकनाथ गोस्वामी, श्रीरूप गोस्वामी, श्रीसनातन गोस्वामी, श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी, श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती आदि महानुभावोंमें शक्ति-संचार न किया जाता और क्रमशः श्रीवृन्दावनमें जाकर तथा सर्वथा विरक्तभावसे रहकर इन महात्माओंने तीर्थ-तत्त्वोंका प्रकाश न किया होता तो आज परम पावन

व्रजभूमिकी देवदुर्लभ रज:प्राप्ति जीवोंको कैसे होती। श्रीचैतन्य महाप्रभुने राह-राहमें ही ये सब कठिन और असम्भव काम अपने अलौकिक प्रभावसे सम्पन्न कर दिये और बिना विशेष अटके वैसे ही प्रेमोन्मत्त भावसे बलभद्र भट्टाचार्यके साथ गन्तव्यस्थानपर जा पहुँचे। मथुरामें ही श्रीयमुनाका दर्शन करते ही मूर्च्छित हो गये। बेचारे बलभद्र भट्टाचार्य अपनी शक्तिभर सम्हालते लिये जा रहे थे। श्रीकृष्णकी लीला-भूमियोंका दर्शन-स्पर्शन करते वे अक्रूरतीर्थपर पहुँचे। जगह-जगह भाव-प्रवणतासे मूर्च्छा हो जाती थी और विरह-विभोर अवस्थामें नामध्वनि एवं अश्रुपातका प्रवाह तो निरन्तर चालू था ही। वृन्दावनमें यमुनाके निकट इमलीतला नामसे ख्यात स्थानमें इमलीके वृक्षतले बैठनेपर महाप्रभुको जो कृष्ण-लीला-चिन्तन और भावानुभूति हुई थी, उसका लिखा जाना तो सम्भव ही नहीं है। इमलीतल्यमें श्रीप्रभुकी विश्रामस्थली और प्रतिमामन्दिर अद्यावधि विद्यमान हैं।

आस-पासके निवासी ग्रामीण जन भी सब लीला-स्थलोंको नहीं जानते थे; श्रीराधाकुण्डके पास पहुँचकर श्रीप्रभुने लोगोंसे पूछा—'श्रीराधाकुण्ड और श्यामकुण्ड कहाँ हैं?' परन्तु हजारों वर्षोंकी पुरानी बात कोई न बता सका। तब प्रभुने ही अपनी पूर्व-परिचित लीला-भूमि लोगोंको दिखायी। दो गहरे-से धानके खेत थे, जिनमें कुछ जल भी था। कालक्रमसे वहाँ मिट्टी भर गयी थी। उसीमें खड़े होकर प्रभुने मार्जन किया और राधाकुण्ड तथा श्यामकुण्डका सभी लोगोंको सत्य संधान प्राप्त हुआ। उस अलभ्य निधिको पाकर ग्रामवासी कृतकृत्य हो गये। इन तीर्थोंका प्रभुने ही प्रकाश किया था।

श्रीराधाकुण्डके निकट श्रीगोवर्धन पर्वतका प्रभुने श्रीकृष्णके अङ्गरूपमें निर्देश किया और पर्वतके ऊपर बिना पदन्यास किये वे श्रीमाधवेन्द्रपुरीके द्वारा प्रकाश-प्राप्त श्रीगोपालजीका दर्शन भी करना चाहते थे। गोपालजीकी भी इच्छा थी; इसलिये संयोगवश पर्वतके ऊपर 'म्लेच्छ आ रहे हैं' ऐसी जनश्रुति हो गयी और सेवायतोंके द्वारा गोपालजीकी प्रतिमा गाठोली ग्राममें लायी गयी और बस, श्रीमहाप्रभुकी वासना-पूर्ति हो गयी। उनका दर्शन करके श्रीमहाप्रभु आनन्दोन्मत्त हो गये। श्रीगोपालजी अबतक गोवर्द्धन पर्वतपर प्रच्छन्न भावसे विराजमान थे। वनकी गौएँ उस जगह जाकर अपने दूधकी कुछ बूँदें टपकाकर उनकी अर्चना कर आती थीं। वे ही आज श्रीनाथद्वारेमें श्रीनाथजीके नामसे विख्यात हो विराजमान हैं। कोटि-कोटि जीव उनका दर्शन करके कृतार्थ होते हैं। ये सब लीलाएँ श्रीमच्चैतन्य महाप्रभुकी तीर्थप्रेम-परिपाटीका प्रत्यक्ष कराती हैं। सर्वशक्तिमान् इच्छामय श्रीमन्महाप्रभु श्रीचैतन्यदेवने बिना मुखसे कहे—संकेतमात्रसे कलियुगी जीवोंके उद्धारके लिये पथ-प्रदर्शन करके जीवोंको तीर्थदर्शन और तीर्थसेवनकी परम कल्याणमय विधि निर्दिष्ट की है। श्रीगोविन्दचरणाधारके बिना अन्यमनस्क वृत्तिसे जो तीर्थाटन किया जाता है, वही 'मनेर भ्रम', सुतरां निष्फल है। भगवन्मयी मनोवृत्तिसे ही तीर्थसेवन श्रीमन्महाप्रभु चैतन्यदेवको अभिप्रेत है।

'व्रजकी स्मृति'

रुक्मिनि मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
या क्रीडा खेलत जमुना-तट, बिमल कदमकी छाहीं॥
गोपबधूकी भुजा कंठ धरि, बिहरत कुंजन माहीं।
अमित बिनोद कहाँ लौं बरनौं, मो मुख बरनि न जाहीं॥
सकल सखा अरु नंद जसोदा वे चितते न टराहीं।
सुतहित जानि नंद प्रतिपाले बिछुरत बिपति सहाहीं॥
जद्यपि सुखनिधान द्वारावति, तोउ मन कहुँ न रहाहीं।
सूरदास प्रभु कुंज-बिहारी, सुमिरि सुमिरि पछिताहीं॥

परमात्मा श्रीकृष्णके द्वारा पूजिता अद्भुत तीर्थ गोमाता

(लेखक—भक्त श्रीरामशरणदासजी)

परमपूजनीया गोमाता हमारी ऐसी परमपूज्या माता है कि जिसकी बराबरी न तो कोई देवी-देवता और न कोई तीर्थ ही कर सकता है। गोमाताके दर्शनमात्रसे ऐसा पुण्य प्राप्त होता है, जो बड़े-बड़े यज्ञ, दान-पुण्य और समस्त तीर्थोंकी यात्रासे भी नहीं हो सकता। जिस गोमाताको स्वयं साक्षात् परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण नंगे पाँवों जंगल-जंगल चराते फिरे हों और इसीलिये जिन्होंने अपना 'गोपाल' नाम रखाया हो, जिस गोमाताकी रक्षाके लिये ही भगवान्‌का वह अवतार हुआ हो, उस गोमातासे बढ़कर किसकी महत्ता होगी? सब योनियोंमें मनुष्ययोनि श्रेष्ठ मानी जाती है; पर गोमातासे बढ़कर मनुष्य भी नहीं है। क्या कभी कोई भी यह बता सकता है कि सृष्टिके प्रारम्भसे लेकर आजतक कोई ऐसा महात्मा, संत या अवतारी पुरुष हुआ हो, जिसका मल-मूत्र किसीने भी कभी काममें लिया हो या उसके हाथसे छू जानेपर किसीको घृणा न हुई हो और उसने मिट्टीसे हाथ मलकर न धोये हों? हमारी पूजनीया गोमाता ही एकमात्र ऐसी माता है, जिसका गोबर-गोमूत्र परम पवित्र माना जाता है। सभी उसे काममें लेते हैं, उनका प्राशन करते हैं। सभी पवित्र कर्मोंमें उनका उपयोग होता है।

अद्भुत तीर्थ, अद्भुत मन्दिर—गोमाता

सारे भारतमें कहीं चले जाइये और सारे तीर्थस्थानोंके देवस्थान देख आइये, आपको किसी मन्दिरमें केवल श्रीविष्णु-भगवान् मिलेंगे। तो किसी मन्दिरमें श्रीलक्ष्मी-नारायण दो मिलेंगे। किसीमें श्रीसीता-राम-लक्ष्मण तीन मिलेंगे तो किसी मन्दिरमें श्रीशङ्करजी, श्रीपार्वतीजी, श्रीगणेशजी, श्रीकार्तिकेयजी, श्रीभैरवजी, श्रीहनुमान्‌जी—इस प्रकार छः देवी-देवता मिलेंगे। अधिक-से-अधिक किसीमें दस-बीस देवी-देवता मिल जायँगे; पर सारे भूमण्डलमें ढूँढ़नेपर भी ऐसा कोई देवस्थान या तीर्थ नहीं मिलेगा, जिसमें हजारों देवता एक साथ हों। ऐसा दिव्य स्थान, ऐसा दिव्य मन्दिर, दिव्य तीर्थ देखना हो तो बस, वह आपको एकमात्र गोमाता मिलेगी, जिसमें दो-चार नहीं, दस-बीस नहीं, सौ-दो-सौ नहीं, हजार-दो-हजार नहीं, लाख-दो-लाख नहीं, करोड़-दो-करोड़ नहीं, सारे-के-सारे तैंतीस करोड़ देवी-देवताओंका एक साथ निवास मिलेगा। गोमाताके रोम-रोममें—यहाँतक कि गोबर-गोमूत्रमें भी देवी-देवताओंका वास है। शास्त्रोंमें कहा है—

पृष्ठे ब्रह्मा गले विष्णुर्मुखे रुद्रः प्रतिष्ठितः।
मध्ये देवगणाः सर्वे रोमकूपे महर्षयः॥
नागाः पुच्छे खुराग्रेषु ये चाष्टौ कुलपर्वताः।
मूत्रे गङ्गादयो नद्यो नेत्रयोः शशिभास्करौ॥
एते यस्यास्तनौ देवाः सा धेनुर्वरदास्तु मे।
वर्णितं धेनुमाहात्म्यं व्यासेन श्रीमता स्वयम्॥

सभी देवी-देवताओंके मन्दिर अलग-अलग मिलते हैं और उनके लिये पृथक्-पृथक् स्थानोंपर जाना पड़ेगा। गोमाता ही ऐसा तीर्थ-स्थान है और अद्भुत जीता-जागता, चलता-फिरता दिव्य तीर्थस्थान और दिव्य मन्दिर है, जिसमें ३३ करोड़ देवी-देवताओंका घर बैठे एक साथ वन्दन, पूजन, परिक्रमा और आरती करने तथा उन्हें भोग लगानेका परम सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। गोमाताको श्रद्धा-भक्तिसे प्रणाम कर लेनेमात्रसे ३३ करोड़ देवी-देवताओंको एक साथ प्रणाम हो जाता है। ३३ करोड़ देवी-देवताओंको एक साथ आप प्रसन्न करना चाहें तो नहीं कर सकते और यदि एक-एक पैसा भी चढ़ाना चाहें तो ३३ करोड़ पैसे होने चाहिये। इसलिये इन सबको युगपत् प्रसन्न करनेका एकमात्र साधन गोमाता ही हैं। आप गोमाताको एक ग्रास खिला दीजिये, सारे देवी-देवताओंको पहुँच जायगा और उससे सभी देवी-देवताओंकी प्रसन्नता प्राप्त हो जायगी। सारे देवी-देवताओंको एक साथ प्रसन्न करनेका कैसा सीधा और सरल साधन है! गोमातासे बढ़कर सनातनधर्मी हिंदुओंके लिये न कोई देव-स्थान है, न कोई तीर्थ-स्थान है, न कोई योग-यज्ञ है, न कोई जप-तप है, न कोई सुगम कल्याणमार्ग है और न कोई मोक्षका साधन ही है। गोमाताके रोम-रोममें देवी-देवता निवास करते हैं और एक बार की गयी गोमाताकी परिक्रमा एक साथ सारे देवी-देवताओंको प्रसन्न करनेका सबसे सरल और सबसे सीधा साधन है, जिसे गरीब-अमीर, स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े, ब्राह्मण-अन्त्यज, गृहस्थी-संन्यासी सभी कर सकते हैं और अक्षय पुण्यके भागी बन सकते हैं। ऐसी गोमातासे बढ़कर हमारा सच्चा हितैषी और पूज्य कौन

हो सकता है। जो गोमाता परमात्मा श्रीकृष्णकी पूजनीया हो, इष्ट हो और परमात्मा श्रीकृष्णने जिसे नंगे पाँवों जंगल-जंगल चरानेमें प्रसन्नताका अनुभव किया हो, श्रीवेद-भगवान् भी जिसे '**गावो विश्वस्य मातरः**'— विश्वकी माता बताते हों, उस गोमाताकी महत्ता हम-जैसे नारकीय कीड़े क्या कह सकते हैं? आज उसी परमपूजनीया प्रातःस्मरणीया गोमाताका धर्म-प्राण भारतमें वध हो रहा है और बड़ी निर्दयतासे उसकी गर्दनपर छुरी चलायी जा रही है। इससे बढ़कर जघन्य पाप और क्या होगा? गोहत्या सबसे बढ़कर पाप माना गया है। यह भयानक गोहत्या शीघ्र-से-शीघ्र बंद नहीं हुई तो सारा देश रसातलको चला जायगा और फिर सबको सिर धुन-धुनकर रोना होगा, पछताना होगा। अतः इस परम-तीर्थस्वरूपा सर्वदेवरूपिणी माताकी रक्षाके लिये यथाशक्ति तन-मन-धनसे प्रयत्न करना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिये और गोमाताका वध अविलम्ब बंद करके ही हमें दम लेना चाहिये। इसीमें विश्वका कल्याण है।

'काटत बहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप'

(लेखक—पं० श्रीरेवानन्दजी गौड़ आचार्य, साहित्यरत्न, एम्०ए०)

१५ अगस्त सन् १९५३ की बात है। मैं अपने कालेजके विद्यार्थियोंके साथ गान्धीपार्कमें स्वतन्त्रताप्राप्ति-समारोहमें सम्मिलित था। आज गान्धीपार्कमें एक नवीन ही चहल-पहल थी; क्योंकि आजका राष्ट्रिय पर्व न जाने कितनी अनन्त यम-यातना एवं बलिदानोंके पश्चात् नसीब हुआ है। सबके मुखमण्डलपर तेज था। सबमें स्फूर्ति थी। सबके हृदय-कमल आजके देदीप्यमान अरुणोदयसे विकसित थे। प्रायः सभी संस्थाएँ नानाविध क्रीड़ा-प्रतियोगिताओंमें भाग लेने जा रही थीं और ख्याति प्राप्त करनेके हेतु नाना प्रकारके प्रदर्शनोंका आयोजन कर रही थीं। सभीके नेत्र भविष्यकी ओर थे।

आजका कार्यक्रम आरम्भ होने जा रहा था। चार बजेका समय होगा। वर्षाऋतुकी गरमी बदलीको साथ ही रखती है। अतः सहसा आकाश मेघाच्छन्न-सा हो चला; भगवान् भास्कर भी इन्द्रसेनामें आँखमिचौनी खेलने लगे। दर्शकोंकी जानमें जान आयी। तब तो वह सुखद वेला और भी अधिक सुखद हो उठी। देखते-देखते नभोमण्डल आजके परम पावन पर्वके समुल्लासमें रिमझिम-रिमझिम झरने लगा और धरापर पानी पड़नेके साथ-साथ दर्शकोंकी उत्सुक चिरप्रतीक्षित आशाओंपर भी पानी पड़ने लगा। वर्षा जोर पकड़ती गयी और जन-समुदाय तितर-बितर होता गया। मैंने भी जब काम चलता न देखा, तब भागकर रेलवे-स्टेशनके प्रतीक्षालयकी शरण ली।

प्रतीक्षालयमें जनसमुदायकी अपार भीड़ थी। इधर सबको अपनी-अपनी पड़ी थी, उधर मूसलाधार वर्षा पृथ्वी-आकाशको एक करनेपर तुली थी। सहसा मेरे कानमें 'मुझे अंदर कर दो, मुझे अंदर पटक दो, हाय मैं मरा, कोई रामका बंदा मेरी भी सुन ले।' यह दीन करुण मन्द-सी आवाज आयी। इस आवाजमें दीनता तथा करुणाका समन्वय था और इसीके साथ-साथ सहृदयके मानस-पटलको स्पन्दित करनेवाली मूल वेदना भी थी। मैं चौंका और मैंने पीछेको मुख करके देखा कि सड़कपर पानीके प्रवाहमें मैले-कुचैले गंदे चिथड़ोंमें लिपटा कोई विवशताकी साक्षात् प्रतिकृति बना पड़ा है। उसकी चेतना-शक्ति लुप्तप्राय थी। मैं किसीकी प्रतीक्षा न करके उसे उठाने लगा और एक-दो अन्य व्यक्तियोंकी सहायतासे उसे अंदर ले आया गया। वह मूक और निराश था, उसके चेहरेपर भूत-भविष्यके भयानक चित्र हिलोरे ले रहे थे। वर्षा-वेग ज्यों ही शान्त हुआ, त्यों ही जनता भी अपने अभीष्ट कार्यमें व्यस्त हो गयी। मैं उसकी मुद्रासे इतना मर्माहत था कि एक पग भी न चल सका और पूछ बैठा— 'तुम कौन हो?' वह बोला—'मैं पापी!' उसके इस उत्तरने मुझे और भी उद्वेलित कर दिया और विवश होकर जब मैंने कुछ अधिक पूछना चाहा, तब वह बोला— 'बाबूजी! मैं भूखा हूँ। कुछ खानेको दे दो, तब बताऊँगा।' मैं घर आकर जब उसके लिये खाना ले गया, तब संध्या हो चली थी और बत्तियाँ जल चुकी थीं।

मैं उसके समीप तो बैठा, परन्तु नाक-मुखपर कपड़ा रखना पड़ा। उसके वस्त्र भीगे थे। उनपर गंदे खून और मवादके दाग लगे थे। दुर्गन्ध रग-रगमें व्याप्त थी। समस्त मुखपर सूजन थी। उसका सारा शरीर विकृत था। जहाँ-जहाँ शरीरपर श्वेतकुष्ठके दाग थे, जो वर्षाके कारण हरे हो चले थे। मैंने मानवतावश जब

उसका गीला वस्त्र उतारकर दूसरा वस्त्र ओढ़ाया, तब तो मैं और भी स्तम्भित रह गया। वह नितान्त नग्न था। उसके अङ्ग-उपाङ्ग विकृत हो चुके थे। पेटमें बड़े-बड़े फोड़े और घुटनोंमें कुष्ठका प्रबल प्रकोप था। उसके लिये सीधे, उलटे या करवट लेकर पड़ना दूभर था। इससे भी आगे उसके शरीरमें न जाने क्या-क्या विकार थे; परन्तु उन सबके अवलोकनकी शक्ति मुझमें न रही थी। वह पापी था और पाप था।

मेरी जिज्ञासाओंके उत्तरमें वह बोला—'बाबूजी! मैं पापी हूँ, तीर्थवासी काक हूँ; मैं शिक्षित हूँ, पर आजन्मसे काम-क्रोधी और परद्रोह-व्यवसायी हूँ। मैं बहुत पहले अमुक प्रसिद्ध तीर्थपर रहता था। मेरा मठ था, आश्रम था; मैं वहाँका अधिपति था। तीर्थ-यात्री मेरे विश्वासपर मेरे पास आते थे और मैं उनके साथ विश्वासघात करता था। न जाने कितनोंकी हत्या करके उनको जलमें प्रवाहित किया। कुत्सित-से-कुत्सित जघन्य कर्म मैंने किये। भोले-भाले यात्रियोंको धोखा देकर उनका धन, तन तथा सर्वस्व मैंने अपहरण किया। बाबूजी! और कहाँतक कहूँ; कोई ऐसा पाप न था, जो मैंने न किया हो। जब पापघट परिपूर्ण हो गया, तब मेरा सब खेल समाप्त हो गया और आज उन सब पापोंका फल मैं आपके सामने हाहाकार कर ही रहा हूँ। बाबूजी! मैं आज समझ गया कि यह कथन यथार्थ है—

'काटत बहुत बढ़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप'

तीर्थके पाप

(लेखक—श्रीब्रह्मानन्दजी 'बन्धु')

(१)

विश्व-विख्यात उत्तराखण्डके परमपावन तीर्थस्थान ऋषिकेशमें एक दिन एक स्त्रीकी ओर संकेत करते हुए मेरे एक अन्हड़ श्रद्धालु मित्रने मुझे बतलानेका अप्रासङ्गिक साहस किया—''यह है वह स्त्री, जिसने ऋषिकेशमें अनर्गल व्यभिचारका जाल बिछा रखा है।''

वह बेचारी पतिता क्षेत्रमें भिक्षा माँगने आती थी।

'क्या ऋषिकेशमें भी व्यभिचार? और वह भी अनर्गल!!' यह सोचकर मैं काँप गया! किंतु मैंने इस विचारधाराको अपने मस्तिष्कसे टाल ही दिया।

कुछ दिनों—सम्भवतः एक वर्ष पश्चात् मैंने देखा, वही स्त्री किसी भयानक रोगकी शिकार होकर धरतीपर बैठी-बैठी रेंग रही थी। उसके पाँव चल-फिर सकनेमें शत-प्रतिशत असमर्थ हो चले थे। थूक, बलगम, टट्टी, पेशाब—सड़कपर कुछ भी क्यों न पड़ा हो, उसीके ऊपरसे गुजरकर उसे मार्ग पार करना पड़ता था। उसकी दशा वास्तवमें बड़ी ही दयनीय प्रतीत हो रही थी।

'इस परमपावन सुदुर्लभ तीर्थस्थानपर अनर्गल पापाचारका प्रत्यक्ष फल।'—मेरे मनमें भाव उत्पन्न हुआ 'बेचारी अपने पापोंका प्रायश्चित्त कर रही है।'

मुझे तो फिर ऐसे-ऐसे कई एक और भी कारणोंसे ऋषिकेश रहना अपने लिये भयावह ही प्रतीत होने लगा। घरके पाप ऋषिकेशमें कट सकते हैं, किंतु ऋषिकेशके पाप कहाँ कटेंगे—यह सोचकर मैं आतङ्कित हो उठता। कभी-कभी मुझे अपने मनोगत भावोंमें विकारकी भीषणता प्रत्यक्ष अनुभव भी होती थी। धिक्! मैं ऋषिकेशनिवाससे किनारा करनेके लिये ही बाध्य हुआ।

तीर्थपर किया हुआ हल्का भी पाप तत्क्षण अमङ्गल रूपमें हमारे सम्मुख उपस्थित होता है। यदि हम वहाँ कोई उग्र पाप करें तो सर्वनाश निश्चित ही है।

(२)

मैंने मनको रोका अवश्य, किंतु एक दिन उत्तराखण्डके परम पावन तीर्थराज ऋषिकेशमें मैं साक्षात् श्रीगङ्गा-तटपर कुछ बहनोंपर कुदृष्टिपातके कलङ्कसे बच न सका। कुछ ही मिनटों पश्चात् मेरा पाप तत्क्षण मेरे सम्मुख आया।

दो गौएँ आपसमें लड़ रही थीं। मैं उनकी टक्करमें आकर धड़ामसे पक्की सड़कपर बहुत ही बुरी तरह गिरा। औरोंने ही दौड़कर मुझे उठाया। मेरे बाँयें हाथकी कलई टूट चुकी थी।

इस चोटके कारण मैंने बड़ा कष्ट भोगा। यह हाथ बादको ठीक अवश्य हो गया, किंतु पहलेके समान सुन्दर एवं सुघड़ न रह सका। यह असुन्दरता मुझे याद दिलाती रहती है—

'तीर्थस्थलपर कुदृष्टिपात कितना घातक है!'

चेतावनी

इधर पुण्यतीर्थोंका सेवन, उधर भयङ्कर पापाचार।
यह सब तो है निरी मूर्खता, भीषण मूर्तिमान् कुविचार॥
पहले पापोंसे बचनेका, जोकि करेंगे यत्न अपार।
तीर्थ-महोदय भी उनका ही, कर पायेंगे कुछ उद्धार॥

सावधान

गङ्गामाई नष्ट करेगी सकल हमारे पापाचार।
यही सोचकर जो करते हैं, निशिदिन भीषण अत्याचार॥
वे ईश्वरके अपराधी हैं, मैं कहता हूँ शत-शत बार।
स्वप्न बीच भी कर न सकेंगे, कोटि तीर्थ उनका उद्धार॥

मानसमें तीर्थ

(लें०—श्रीघासीरामजी भावसार 'विशारद')

मानस स्वयं एक तीर्थ है

जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं।
तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं॥

संवत् १६३१, तिथि चैत्र सुदी नवमी और दिन था मंगलवार। योग भी प्राय: वही, जो त्रेतायुगमें श्रीरामनवमीके दिन होते हैं; किंतु विशेषता क्या थी आजके दिन साकेत नगरीमें? वेद कहते हैं कि जिस दिन भगवान् श्रीरामका जन्म होता है, उस दिन श्रीअयोध्याजीमें न केवल समस्त तीर्थ ही आ जाते हैं, वरं सुर, नर, मुनि, नाग और खग आदि उपस्थित होकर श्रीराम-जन्मोत्सवको सफल बनाते हैं, एवं श्रीसरयूमें मज्जन करके श्रीरामचरितमानसका गुण-गान करते हैं।

भगवान् शिव और भगवती शिवाके आदेशानुसार भक्ताग्रगण्य संत-शिरोमणि गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी इस पुनीत अवसरपर श्रीअवधपुरीमें थे और इसी दिन शम्भु-प्रसादके रूपमें उन्हें प्राप्त हुआ था 'श्रीरामचरितमानस।'

पुराणोंमें मानस-मानसर या मानसरोवर तीर्थकी महिमाका वर्णन हुआ है, परंतु यह उससे भिन्न—चलता-फिरता घर-घरमें सुलभ—मानस तीर्थ है, जिसका यहाँ विवेचन किया जा रहा है।

महाभारतमें मानस-तीर्थ

'पितामह भीष्मजी कहते हैं—'युधिष्ठिर! इस पृथ्वीपर जितने तीर्थ हैं, वे सब मनीषी पुरुषोंके लिये गुणकारी होते हैं; किंतु उन सबमें जो परम पवित्र और प्रधान तीर्थ है, उसका वर्णन करता हूँ। एकाग्रचित्त होकर सुनो। जिसमें धैर्यरूप कुण्ड है और उसमें सत्यरूप जल भरा हुआ है तथा जो अगाध, निर्मल एवं अत्यन्त शुद्ध है, उस मानस तीर्थमें सदा सत्त्वगुणका आश्रय लेकर स्नान करना चाहिये। कल्पनाका अभाव, सरलता, सत्य, मृदुता, अहिंसा, क्रूरताका अभाव, इन्द्रियसंयम और मनोनिग्रह—ये ही इस मानस तीर्थके सेवनसे प्राप्त होने वाली पवित्रताके लक्षण हैं।

'शरीरको केवल पानीसे भिगो लेना ही स्नान नहीं कहलाता। सच्चा स्नान तो उसीने किया है, जो इन्द्रियसंयममें निष्णात है।'

'मानस-तीर्थमें प्रसन्न मनसे ब्रह्मज्ञानरूपी जलके द्वारा जो स्नान किया जाता है, वही तत्त्वज्ञानियोंका स्नान है।'

अस्तु, क्या मानस (रामचरित) में धैर्य-रूपी कुण्ड और सत्यरूपी जलका अभाव है? नहीं, कदापि नहीं। मानसमें तो धैर्यमें हिमालयके समान[१] और सदा एक वचन बोलनेवाले[२] मतिधीर एवं सत्य-सिन्धु श्रीरामकी धीरता, वीरता और गम्भीरताके अनेकों पवित्र कुण्ड भरे हुए हैं। ब्रह्मज्ञानके हेतु मानसमें स्वयं ब्रह्म श्रीकौसल्या माताकी गोदमें खेलकर नराकाररूपमें हमारे सम्मुख आ खड़े हुए हैं; और दैवी गुणोंका तो मानो सत्य-शिव-सुन्दर मानसमें अगाध भंडार भरा हुआ है। जरा आइये हमारे साथ! भक्तिकी अनेक धाराओंमें अनुरागसे डुबकी लगाइये और फिर तत्काल ही मज्जनका फल देखिये।

सहायक तीर्थ

मानसमें जिन तीर्थोंने मानसको महातीर्थ बनानेमें सहायता दी है, पहले उनका ही स्मरण और वन्दन कर लें, फिर अपनी यात्रामें आगे पैर[३] बढ़ायें।

१. धैर्येण हिमवानिव (वाल्मीकिरामायण)

२. रामो द्विर्नाभिभाषते। (वाल्मीकिरामायण)

३. पैदल—चरणोंसे चलकर ही, रेल-मोटर आदि वाहनोंके बिना यात्रा करनी है; क्योंकि राम उनके ही मनमें आकर बसते हैं। जिनके—

'चरन राम तीरथ चलि जाहीं'

अयोध्या

बंदौं अवधपुरी अति पावनि।

प्रयाग

'तीरथपति पुनि देखु प्रयागा।'
'को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ।'

नैमिषारण्य

तीरथ बर नैमिष बिख्याता।

काशी

जीवन मुकुति हेतु जनु कासी।

चित्रकूट

चित्रकूट रुचि थल तीरथ बन।

भरतकूप

भरतकूप अब कहिहहिं लोगा।
अति पावन तीरथ जल जोगा॥

पंचवटी

पावन पंचवटी तेहि नाऊँ।

उज्जयिनी

गयउँ उजेनी सुनु उरगारी।

रामेश्वर

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं।

सुरसरि (गङ्गा)

'तीरथ आवाहन सुरसरि जस।'
'दीखि जाइ जग पावनि गंगा।'

यमुना

जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी।

सरयू

सरजू नाम सुमंगल मूला।

गोमती

पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा।
हरषि नहाने निरमल नीरा॥

नर्मदा

सिव प्रिय मेकल सैल सुता सी।

गोदावरी

गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ।

बस, बस! अब तो थक गये। बदरीवन-कैलासपर चढ़ते नहीं बनता।

तीर्थकी परिभाषा

पद्मपुराणमें मार्कण्डेय मुनि राजा युधिष्ठिरसे कहते हैं—'राजन्! गोशाला हो या जंगल; जहाँ कहीं भी बहुत-से शास्त्रोंका ज्ञान रखनेवाले ब्राह्मण रहते हों, वह स्थान (आश्रम) तीर्थ कहलाता है।'

अब मानसमें जिन बहुत-से आश्रमों और आश्रमवासी शास्त्रज्ञ ब्राह्मणोंका समागम हो रहा है, उनसे भी परिचय करते चलें—

भरद्वाज

'भरद्वाज आश्रम अति पावन।'
'तापस सम दम दयानिधाना।
परमारथ पथ परम सुजाना॥'

विश्वामित्र

बिस्वामित्र महा मुनि ग्यानी।
बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी॥

वाल्मीकि

देखत बन सर सैल सुहाए।
बालमीकि आश्रम प्रभु आए॥

अत्रि

अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ।
सुनत महामुनि हरषित भयऊ॥

राम! राम!! हम भी कहाँ भटक गये। नाना-पुराण-निगमागमके ज्ञाता भक्ताग्रगण्य श्रीतुलसीदासजीके शास्त्र-ज्ञानकी थाह पाना जब हमारे लिये कठिन ही नहीं, असम्भव है, तब फिर मानसमें आसीन वशिष्ठ, शृङ्गी, याज्ञवल्क्य, नारद, गौतम, लोमश, कश्यप, कपिल आदि महर्षियोंका साम्मुख्य हम कौन-सा मुँह लेकर करने जा रहे हैं।

महाभारतमें लिखा है कि विशुद्ध अन्तःकरणवाले महात्मा पुरुष तीर्थस्वरूप होते हैं; इसलिये उक्त सभी तीर्थस्वरूप संतों और महात्माओंको हमारा यहींसे शत-शत नमस्कार।

करोड़ों तीर्थके समान

स्वर्ग, मर्त्य और रसातलमें चार प्रकारके तीर्थ बतलाये गये हैं—आर्ष, देव, मानुष और आसुर। इनके भी फिर कई भेद हैं। इन भेदों तथा उपभेदोंसहित करोड़ों तीर्थ पवित्रतामें जिस एक तीर्थकी समानता कर सकते हैं, वह है नाम-तीर्थ—

तीरथ अमित कोटि सम पावन।
नाम अखिल अघ पूग नसावन॥

× × ×

भज मन चरन कमल अबिनासी।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हे,
कहा लिये करवत कासी॥

—मीराँ बाई।

'जो सुख होत गुपालहि गाये।
सो नहिं होत किये जप तप के,
कोटिक तीरथ न्हाये॥'

—सूरदास

मनकी मनही माँहि रही।
ना हरि भजे न तीरथ सेये,
चोटी काल गही॥

× × ×

हाँ, तो नाम-राम मिलेगा मानसमें। उसके प्रत्येक पृष्ठमें—

एहि महँ रघुपति नाम उदारा।
अति पावन पुरान श्रुति सारा॥

अस्तु, यात्रा कुछ लंबी हो गयी है; फिर भी अभी पितृ-तीर्थ, पत्नीतीर्थ, अतिथितीर्थ, सेवातीर्थ, क्षमातीर्थ, साधनतीर्थ, परमार्थतीर्थ आदि अनेकों पवित्र तीर्थोंकी यात्रा शेष है। फिर भी इति होगी या नहीं, कह नहीं सकते।

गङ्गा-गीता-गायत्री

बड़े नगरोंका मल-मूत्र नदियोंमें बहाया जाता है। नित्य ही तो वे पतित हो रही है, फिर पतितोंका उद्धार करनेके लिये पतितपावनी (गङ्गा) अपने असलीरूपमें रही ही कहाँ?

छूटहिं मल कि मलहि के धोएँ।

हाँ, एक पतितपावन (राम) अवश्य हैं, जो बैठे हैं उस मानसमें, जिसमें गायत्रीके मिस अनेक मन्त्र तथा कर्म और उपासना (भक्ति) के रूपमें गीताका ज्ञान भरा हुआ है।

इस मानसिक यात्राके लिये सबसे अधिक उपयुक्त यदि कोई साधन है तो वह है केवल 'मानस'।

बोलो सियावर रामचन्द्रकी जय।

ज्यौतिषद्वारा तीर्थ-प्राप्ति-योग

(लेखक—ज्यौ०, आयुर्वेदाचार्य पं० श्रीनिवासजी शास्त्री 'श्रीपति')

ॐ नमस्तीर्थ्याय च (यजुर्वेद १६। ४२)

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

(यजु० १६। ६२)

यजुर्वेदके रुद्राध्यायमें भगवान् शिवको सर्वतीर्थस्वरूप कहा गया है। अतः बिना आशुतोष विश्वनाथकी कृपाके सर्वतीर्थोंकी प्राप्ति दुष्कर है।

उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनाम्। धियाविप्रो अजायत॥

(यजु० २६। १५)

'पर्वतोंकी गुफाओं और नदियोंके सङ्गमोंमें महर्षिको सद्बुद्धिकी प्राप्ति हुई।'

स्मृति, मेधा एवं सन्मति (आस्तिकता) की प्राप्तिके हेतु पुण्यमय पवित्र तीर्थोंमें विविध-मन्त्रानुष्ठान, गायत्री-पुरश्चरण आदि करनेकी धर्म-शास्त्रोंमें व्यवस्था की गयी है। शुभाशुभ फलकी प्राप्तिमें श्रद्धा और विश्वास ही प्रधान कारण हैं।

संचित पुण्यके प्रभावसे जिन मानवोंकी जन्म-कुण्डलियोंमें तीर्थकृत् योग आता है, प्रायः उन्हें ही तीर्थोंमें यात्रा करनेका सौभाग्य एवं मोक्षहेतु मृत्युकी प्राप्ति होती है। ज्यौतिषके होरा (जातक)-शास्त्रमें इसके विशद और विविध योगोंका वर्णन है। यथा—

यत्प्रसूतौ नैधनस्थाः सौम्याः सौरिनिरीक्षिताः।
तस्य तीर्थान्यनेकानि भवन्त्यत्र न संशयः॥ १॥

सौम्येऽष्टमस्थे शुभदृष्टियुक्ते
धर्मेश्वरे वा शुभखेचरेन्द्रे।
तीर्थे मृतिः स्याद्यदि योगयुग्मं
तीर्थे हि विष्णुस्मरणेन मुक्तिः॥ २॥

× × × ×

चेत् चित्रकोणभवने निजलये
देवतापतिगुरुर्नरो भवेत्।
श्रीमदच्युतपदच्युतामृत-
स्नानदानकुशलो नलोपमः॥ ३॥

यदा मीने माने गुरुकविमहीजैश्च मिलिते
शरीरान्ते मुक्तिः सुरपतिगुरौ चन्द्रसहिते।
जलर्क्षे मीनर्क्षे भवति हरिपद्यां जनिमतां
सदा चञ्चद्भक्तिर्दुरितदलिनी मुक्तिजननी॥ ४॥

× × × ×

'जिसके जन्माङ्गमें, अष्टम स्थानमें शुभग्रह (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) बैठे हों और उन्हें शनैश्चर देखता हो तो उसे भूतलपर अनेक तीर्थोंकी प्राप्ति होती है। और यदि अष्टमस्थ शुभग्रहोंको शुभग्रह ही देखते हों तथा भाग्येश भी शुभग्रह हो तो तीर्थमें मृत्यु होती है तथा उक्त

दोनों योगोंके होनेपर विष्णुस्मरणपूर्वक मुक्ति होती है। त्रिकोण (५-९) स्थानमें धनु एवं मीनराशिपर गुरुदेव बैठे हों तो उसे अच्युतचरणतरङ्गिणी अमृतमयी श्रीगङ्गामें स्नान-दानादिका सौभाग्य प्राप्त होता है॥ १—३॥

'जिसके दशम स्थानमें मीनराशि हो तथा उसमें गुरु-शुक्र-मङ्गलका योग हो तो उसे मरनेपर मुक्ति (तीर्थ-मृत्यु) प्राप्त होती है एवं चतुर्थभावमें कोई जलचर राशि या मीन राशि हो और उसमें चन्द्रमाके साथ बृहस्पति बैठे हों तो उसे मुक्तिदायिनी श्रीगङ्गाजीमें निश्छला भक्ति होती है'॥ ४॥

मोक्ष-प्राप्ति-योग

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका।
पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्षदायिकाः॥ १॥

लग्नाद्यो द्वाविंशो द्रेष्काणो मरणकारणतया निर्दिष्टस्तदीयो यो बली यदि रिपुकेन्द्रस्थो भवति तदा तीर्थे मरणम्॥ २॥

न स्युर्नैर्याणका योगाः प्रोक्ता मृत्युदिकाणजाः।
बलिनः केन्द्रषष्ठाष्टद्यूने स्युर्मोक्षहेतवः॥ ३॥

'जन्मलग्नसे २२ वाँ (अष्टमभावमें जिस द्रेष्काणका उदय हो, वही) द्रेष्काण मरणका कारण होता है। उसका स्वामी बलवान् होकर केन्द्र (१, ४, ७, १०, ६, ८वें) स्थानमें स्थित हो तो उस प्राणीका (सप्तपुरियोंमें मरण होकर) मोक्ष होता है। किंतु यदि मृत्युके समय ये द्रेष्काणजनित मोक्षके योग न हों पर छठें-आठवें स्थानोंमें बली ग्रह बैठे हों तो भी मोक्षके कारण होते हैं।'

जीवे मोक्षदिकाणेशे सिन्धुं वा मथुरापुरीम्।
विपाशां प्राप्य मरणं निश्चितं याति मानवः॥ १॥
काशीं द्वारावतीं काञ्चीं गङ्गाद्वारवतीं तथा।
गुरौ केन्द्रगते सोच्चे प्राप्य मृत्युं प्रयच्छति॥ ३॥

'यदि मोक्ष (अष्टमभाव का द्रेष्काणेश गुरु हो तो सिन्धुनद, मथुरा, विपाशा (व्यास नदी), काशी, द्वारका, काञ्ची अथवा हरिद्वारमें प्राणीकी मृत्यु होती है। इसी प्रकार, गुरुके उच्च होकर केन्द्रस्थ होनेसे भी तीर्थोंमें मृत्यु होती है।

विविधतीर्थकरः सुकलेवरः
सुरगुरौ नवमे सुखवान् गुणी।
त्रिदशयज्ञपरः परमार्थवित्
प्रचुरकीर्तिकरः कुलवर्द्धनः॥ ४॥

'यदि भाग्यस्थान (९वें स्थान) में गुरु (स्वक्षेत्र उच्चादि राशिमें स्थित) हो तो मनुष्य विविध तीर्थोंका सेवन करनेवाला, सुन्दर, सुखी, गुणवान्, यशस्वी, देवयज्ञादि परायण और परमार्थ-तत्त्वका ज्ञाता तथा अपने कुलकी वृद्धि करनेवाला होता है।

काया-तीर्थ (योगियोंके तीर्थ-स्थान)

(लेखक—पीर श्रीचन्द्रनाथजी 'सैन्धव')

काया एक महान् तीर्थ है। पुण्य-कर्म मोक्ष-प्राप्तिके लिये अथवा जन्म-सुधारके हेतु होते हैं। इनका प्रसाधक काया-तीर्थ प्रधान है। जिसने काया-तीर्थको समझा, काया-तीर्थमें स्नान किया, वास्तवमें उसके लिये सब कुछ सुलभ है। **'यत् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे'** सबके मतमें समानरूपसे चरितार्थ होता है। इस काया-तीर्थकी गङ्गा-यमुना-सरस्वतीके सङ्गमरूप त्रिवेणीमें स्नान करके उनकी अधोगामिनी धाराओंके सहारे ऊर्ध्वलोकको प्राप्त करनेके लिये योगियोंका उपदेश ही नहीं, आज्ञा है; किंतु योगियोंका यह उलटा ज्ञान सहसा समझमें आनेका नहीं, जबतक विषयासक्तिकी सामग्रीसे विरक्त होनेका उपाय हम न कर लें।

इस मानवीय काया-तीर्थमें विषय-वासनाकी चाशनी चाटनेके अभ्यासी ऐसे बलिष्ठ मगर भी हैं, जिनके चक्करमें बुद्धिमान् पुरुष भी बुरी तरहसे फँस जाता है। ऐसे बुद्धिमान् कहलानेवाले किंतु वस्तुतः विवेकहीन पुरुष योगियोंके सीधे ज्ञानको अवश्यमेव उलटा कहेंगे, वे मोहके आवरणमें पड़कर इतने अंधे हो जाते हैं कि अपने पुत्रको भी सही मार्ग नहीं बता सकते, न उसपर ऐसे संस्कार ही डाल सकते हैं, जिससे आगे चलकर वह अपना कर्तव्य समझकर सही मार्गपर चलनेमें समर्थ हो सके या अपने कल्याणका तत्त्व समझ सके। आजके माता-पिता तो उल्टा यह कहते हैं कि बेटा-बेटी बड़े हो गये, विवाह हो जाना चाहिये। ब्याह कर दिया गया, वंश-परम्पराके पुल बँध गये, न जाने कितने जन्मेंगे कितने मरेंगे। किये कर्मोंका फल अवश्यमेव भोगना होगा। यहाँ जलमें पङ्कज-पत्रका ज्ञान सहायता न दे सकेगा।

साधारण लोग इस संसार-वृद्धिकी क्रियाको कर्तव्यकर्म या अनुपालनीय धर्म ही कहेंगे; किंतु, ज्ञानी महात्मा पुरुष तो इसे बन्धन ही कहते हैं। वास्तवमें यह दर्शन

नाथगुरुओंका है। संसार-वृद्धि बन्धनकी पुटिका है और अवधूतत्व-व्रत मुक्ति पदार्थकी प्राप्तिके लिये सर्वप्रथम उपयोगी साधन है। वधू-संयोग संसार-वृद्धिका कारण है। यही तो माया-जालका केन्द्र है; इससे जो '**पलायति स जीवति।**' श्रीयोगिवर प्रज्ञानाथजीका कथन है—

स्त्रिया तनोति संसारः स्त्रीत्यागाज्जगतः क्षयः।
स्त्रियं त्यक्त्वा जगत्त्यक्तं जगत्त्यक्त्वा सुखी भव॥

संत ध्यानदासजी भी यही कहते हैं—

माता सूँ नारी भई पुत्त भये भरतार।
ऐसा अचिरज देखि करि भागा भागण हार॥
राजा कोड़ि निनांणवै नरवै साधै जोग।
सिध चौरासी, नाथनौ, तिनका मिल्या सँजोग॥

(बाबा सेवादासकी बानीसे)

इस वंशवृद्धिके कार्यसे तटस्थ रहना ही मुक्ति-मार्गका पथिक होना है। इस साधनके लिये अवधूतोंका अवधूतत्व-व्रत अत्यन्त उपयोगी माना गया है। इस तथ्यको सुनीति, मदालसा, मैनावतीने समझा, जिन्होंने अपने अत्यल्पवयस्क पुत्रोंमें ऐसे संस्कार भर दिये, जिनके कारण वे सदाके लिये संसारकी दुर्गन्धसे दूर रहे। सनकादि महर्षि ८४ सिद्ध, गोरक्षादि नवनाथ-इन अवधूताचार्योंका यह प्रकृति-खण्डन ज्ञान प्रत्येकको समझके बाहरकी बात है। इन आचार्योंका सिद्धान्त प्रकृतिपर विजय पानेका है। लोग सहज स्थिति चाहते हैं और सहजका अर्थ सरल मान लेते हैं; किंतु ध्यान देनेकी बात है कि आरम्भमें 'क', 'ख' आदि वर्णों या '१', '२' आदि संख्याओंकी सम्यक् शिक्षाके बिना कैसे कोई महाभारत पढ़ लेगा और अरबोंका गुणा-भाग कर सकेगा। शिक्षितके लिये ऐसा करना अवश्य ही सहज या अति सरल हो सकता है। इसी प्रकार योगयुक्ति और त्यागवृत्तिके सिवा सहज स्थिति या मुक्तिकी आशा खपुष्पवत् ही है। अवश्य ही ऐसी आशा करना आत्माको धोखा देना है, भ्रम है।

पुरुषार्थोंकी संख्या चार है। इनमें धर्म, अर्थ, कामको तो पशु भी स्वभावतः प्राप्त कर लेता है, बिना सिखाये ही सीख लेता है। किंतु चतुर्थ पुरुषार्थ 'मोक्ष' ही एक ऐसा पदार्थ है, जिसके लिये प्रकृतिके साथ लोहा लेना पड़ता है, फौलादके अनेक दृढ़तर दुर्गोंको तोड़कर पार होना पड़ता है, अनेक जन्मोंके शुभ संस्कारोंकी संचित शक्तिका आश्रय लेना पड़ता है। तभी इस पदार्थका भागीदार होनेकी आशा की जा सकती है। इतना बड़ा काम मनुष्य ही कर सकता है और वही मनुष्य कर सकता है जिसके खूनमें माता-पिताकी सत्यव्रतताके परमाणु रोम-रोममें समाये हों। वास्तवमें मानव-देह पाकर जिसने मोक्षके लिये किसी प्रकारका भी अमृत-संस्कार नहीं उत्पन्न किया, उसकी मानवता निरर्थक है; उसकी प्रायश्चित्ति चौरासी योनियोंमें ही हो सकती है, उसके लिये और कोई मार्ग नहीं।

कर्म सुधारे सुधरते हैं, बिगाड़े बिगड़ते हैं। कर्मोंका सुधार मनुष्यके वशकी बात है। कर्म-सुधारके लिये हमारे पूर्वज सिद्धर्षि-मुनिजनोंने जो विधान बताये हैं, उनमेंसे एकका भी आश्रय ले लें तो एक ही जन्ममें मुक्ति प्राप्त हो सकती है। कम-से-कम संस्कारोंका परिशोधन तो अवश्य होकर ही रहेगा, यह निश्चित है। मनुष्य जब अमृत-संस्कारोंसे पूर्ण हो जाता है, तब वह स्वयं मोक्षका स्वामी है; उसीमें जगदुद्धारकी शक्ति समा जाती है। दान, दया, जप, तप, सत्य, अहिंसा, तीर्थ, व्रत—कर्म-सुधारके मुख्य साधन हैं। जिस सद्गृहस्थके घरमें भी इनका समाचरण है, वह धन्य है।

हमारे देशकी अधिकांश जातियोंका धार्मिक केन्द्र वेद है, जिसके आधारपर अनेक विचारधाराएँ प्रस्फुटित हुईं तथा जिसके द्वारा विविध सम्प्रदाय एवं संघ संस्थापित हुए हैं। कर्मोंमें अमृतीकरण-संस्कार उत्पन्न करना प्रत्येक व्यक्तिके लिये वाञ्छनीय है; वह जप, तप, योग, याग, तीर्थ, व्रत तथा इन्द्रियनिग्रहसे ही सम्भव है। साधारण मनुष्य भी यह समझ सकता है कि पुण्यकर्मोंके उपार्जनसे ही मानवस्तरकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती है तथा कायातीर्थ क्या वस्तु है, इसे परखनेकी शक्ति मिलती है। अतएव उपर्युक्त जप-तप आदि योग-युक्तिके साथ-साथ तीर्थ-व्रत करना भी अत्यावश्यक है। प्रत्येक सद्-गृहस्थ भक्तगण अपने-अपने धर्ममें वर्णित तीर्थस्थानोंमें जाकर जप-तप, दान-पुण्य, श्राद्धकर्म करते हैं। भारतकी यह वैदिक परम्परा है। अवधूत-व्रतधारी योगीलोग भी तीर्थोंका विशेष सेवन करते हैं; बल्कि तीर्थ-व्रतोंमें ही उनकी जीवनज्योति व्यय होती है। वे पूर्वजोंकी तपोभूमि तीर्थक्षेत्रोंमें रमते रहते हैं। अवधूत आदिनाथके शिवसम्प्रदायमें ४ धाम, ८४ अड्डे (केन्द्र), नाका, घाट, कुम्भ एवं मेला प्रसिद्ध हैं। मेला वार्षिकोत्सवको कहते हैं, जैसे अलवरमें सिद्ध विचारनाथ-भर्तृहरिका मेला होता है। कुम्भ=कुम्भपर्व, जैसे हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक, उज्जैनके कुम्भपर्व। घाट=आने-जानेवाले

योगियोंकी अनायास, भेंट, ज्ञानचर्चा। नाका—जैसे दक्षिणी-पश्चिमी योगियोंके लिये नैपालके पशुपतिनाथ, एवं गोरक्षनाथकी यात्रामें गोरखपुर नाका है। अड्डा—जहाँ योगी जितना चाहे, रह सके तथा साधन-सुविधा भी प्राप्त हो—जैसे त्र्यम्बक, काशी, गोरखपुर, हरिद्वार आदि। धाम-जैसे बदरी-केदारादि। इनके अतिरिक्त अन्य तीर्थस्थान भी हैं, जो चार धाम एवं ८४ अड्डोंकी यात्रामें आ जाते हैं।

तीर्थयात्राका महत्त्व, यात्रा-साहित्य तथा उत्तरप्रदेश

(लेखक—डॉ० श्रीलक्ष्मीनारायणजी टंडन 'प्रेमी' एम्०, ए०, साहित्यरत्न, एन०डी०)

भारतवर्ष एक धर्म-प्रधान देश है। यहाँकी पृथ्वीका कण-कण महत्त्वपूर्ण है। यों तो संसारके देशोंमें अनेक तीर्थस्थान हैं, पर भारतवर्षमें तीर्थस्थानोंकी भरमार है। तीर्थस्थानका तात्पर्य ही है पवित्र स्थान और भारतकी भूमि अपने महापुरुषोंके महान् कृत्योंके कारण अपनेको कृतकृत्य कर चुकी है। भारतके हिंदू हमें जितनी तीर्थ-यात्रा करते दिखायी देते हैं, उतनी दूसरी जातियाँ नहीं। यों तो ईसाइयों और मुसल्मानोंके भी जेरुसलम, वैटिकन सिटी, मक्का और मदीना आदि तीर्थ हैं। भारतवर्षमें भी अजर-शरीफ-जैसे अनेक स्थान तथा दरगाहें हैं, जो मुसल्मानोंके पवित्र स्थान हैं।

हमारे धर्मका अर्थ बहुत व्यापक है और 'तीर्थ'का भी। भारतवर्षने सदा ही आध्यात्मिक विकास तथा आत्मिक उन्नतिको ही अपने जीवनका लक्ष्य बनाया है। भारतीय संस्कृति ही अन्तर्मुखी रही है। बाह्य संसारसे परिचयकी आवश्यकता ही हमने नहीं समझी। यही कारण है कि प्राचीन कालसे ही हमारा साहित्य हमें अपने भीतरकी ही सैर करनेकी शिक्षा देता आया है। इसीसे हमारे यहाँ विवरणात्मक ग्रन्थोंकी, विशेषतया यात्रा-ग्रन्थोंकी कमी रही है। भारतीय साहित्यिक भी कल्पनात्मक संसारकी ही सैर करते रहे हैं। प्रकृतिके प्राङ्गणमें उन्होंने अपनेको डाला भी तो यात्रा-वर्णनकी उन्हें आवश्यकता ही नहीं प्रतीत हुई और न इस ओर उन्होंने ध्यान ही दिया। विवरणात्मक विषयोंपर लिखनेकी उनकी रुचि ही नहीं हुई। इस प्रकारसे हमारी 'तीर्थ-यात्रा' विषयके प्रति सतत अवहेलना-सी रही। किंतु एक बात हमें और याद रखनी चाहिये। संसारमें बहुसंख्या सर्वसाधारणकी होती है। यह सर्वसाधारण जनता प्राचीन कालसे ही धर्म-लाभके लिये तीर्थयात्रा करती रही है; किंतु ऐसे लोगोंमें, जिन्होंने यात्राएँ कीं, अपने अनुभव और आनन्दको कलमबंद करनेकी प्रवृत्ति न थी। यही कारण है कि हमारे यात्रा-साहित्यका अभीतक पर्याप्त पोषण नहीं हो सका है। व्यापारियों तथा गृहस्थाश्रमसे विरक्त साधुओं एवं वृद्धोंके हिस्सेमें ही तीर्थयात्रा रही थी; किंतु इससे तीर्थयात्राका महत्त्व कम नहीं होता।

अतीतकालसे हमारे ऋषि-मुनियोंने अपनी तपस्या, त्याग और परोपकारसे अपनी जन्मभूमि तथा निवास-स्थानको सार्थक 'तीर्थ' नाम दिलवाया है। यों तो पूरे भारतवर्षमें ही अनेक तीर्थ हैं; किंतु उत्तरप्रदेशमें तो तीर्थोंकी भरमार है, जहाँ भारतके कोने-कोनेसे यात्री आते रहते हैं। भारतमें कोई भाग ऐसा नहीं है, जहाँ प्रकृतिने नैसर्गिक चित्र अङ्कित न किये हों; किंतु कश्मीरके नंगापर्वतसे भूटानके चुमलहाटीतक हिमालयके वक्षःस्थलपरके दृश्य तो अनुपम ही हैं। उत्तर-प्रदेश प्राचीन कालसे ही भारतीय संस्कृतिका केन्द्र रहा है; अतः इस प्रान्तके अन्तर्गत हिमालयका जो भाग है, उसके साथ प्राकृतिक सौन्दर्यके अतिरिक्त ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्त्वकी सुगन्ध है। प्राचीन कालसे उत्तराखण्ड ही भारतीय आर्योंकी विश्रान्ति-भूमि रहा है। यमुनासे सरयूतकके मैदानपर भारतीय आर्य-संस्कृतिके केन्द्रित होनेके कारण उत्तरप्रदेशके दक्षिण विन्ध्य-पठारके कुछ भागोंको भी ऐतिहासिक महत्त्व मिल गया है।

हमारे पुरखोंने बहुत सोच-समझकर तीर्थयात्रा करनेका आदेश दिया है। वे जानते थे कि यदि 'यात्राके लाभ' के नामपर देशवासियोंसे घूमनेको कहा जायगा तो बहुत कम लोग 'यात्राका लाभ' उठायेंगे—रुपये-पैसेकी किल्लत, सांसारिक झंझट तथा अस्वास्थ्य आदि न जाने कितने बहाने एवं कठिनाइयाँ निकल आयेंगी; परन्तु प्रकृतिसे ही धर्मभीरु हिंदू 'धर्म'के नामपर अपना परलोक बनानेके लिये सारी परिस्थितियोंकी अवहेलना करते हुए धर्म-लाभके हेतु अवश्य यात्रा करेंगे और अप्रत्यक्षरूपसे यात्राके सब लाभोंको ले सकेंगे। तीर्थ-यात्रा करनेसे अनेक लाभ हैं। स्थान-स्थानकी वेष-भूषा,

रहन-सहन, आचार-विचार, रंग-रूप, भाषा, वनस्पति, पैदावार आदि भिन्न-भिन्न होती है। अतः तीर्थ-यात्रीका ज्ञान और अनुभव विस्तृत होता है। धार्मिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, कलात्मक, सामाजिक, आर्थिक तथा सामयिक ज्ञान तो उसे होता ही है—मन्दिर और मूर्तिके सामने जाकर, श्रद्धासे नतमस्तक हो, अपने कालुष्यका विसर्जन करके कुछ समयतक यात्री आत्म-विस्मृत हो इस लोकसे उस लोकमें पहुँच जाता है। निश्चयरूपसे स्थायी तथा सात्त्विक प्रभाव उसके हृदय और आत्मापर पड़ता है। उसके हृदयमें संसारकी अनित्यता और विलास तथा वैभवके क्षणिक एवं मिथ्या अस्तित्वका ज्ञान उदय होता है और अपने भविष्यके संशोधित जीवन तथा इस लोक और परलोकपर वह सोचने लगता है। परमात्माके प्रति सच्ची भक्ति तथा सद्भावनाओं, सद्विचारों, सत्कर्मों, परोपकार तथा दान-पुण्य आदिके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है और वह वहीं उनका श्रीगणेश भी कर देता है। अपने पुरखों तथा प्राचीन इतिहासकी महत्ताका सच्चा आभास उसे मिलता है। इसके अतिरिक्त जलवायुका परिवर्तन और नाना प्रकारके रंग-बिरंगे दृश्य, झरने, पर्वत, कन्दराएँ, जंगल, पशु-पक्षी आदि उसके स्वास्थ्य तथा मनपर अपना अमिट प्रभाव डालते हैं। ईश्वरकी महत्ता एवं अपनी लघुताका भी वह अनुभव करता है तथा अपने और विराट् प्रकृतिके अटूट सम्बन्धको समझकर '**अहं ब्रह्मास्मि**' महावाक्यका अर्थ समझ पाता है। ईश्वरकी दी हुई आँखोंका फल वह ईश्वरकी कारीगरी और उसकी विचित्र लीला देखकर पाता है। उसकी निरीक्षणशक्ति, प्रकृतिके ज्ञान तथा विज्ञानकी उपयोगिताकी भावनामें वृद्धि होती है।

देश-प्रेमके नारे लगाकर हम बालकों तथा युवकोंमें राष्ट्र-प्रेमके पुनीत भावको भरना चाहते हैं; किन्तु जिस देशको उन्होंने देखा नहीं, समझा नहीं, जिसका वास्तविक स्वरूप ही उनके सामने नहीं है, उसके प्रति सच्चा प्रेम हो ही कैसे सकता है। अतः इस बातकी आवश्यकता है कि हमारे नवयुवकोंको यात्रा करनेके लिये प्रेरित किया जाय तथा देशके रमणीय प्राकृतिक दृश्यों एवं धार्मिक तथा ऐतिहासिक महत्त्वके स्थानोंका सुन्दर वर्णन भी उनके सामने रखा जाय, जिसे पढ़कर उनके हृदयमें उन स्थानोंका परिचय पानेका उत्साह बढ़े यह निर्विवाद सिद्ध है कि यात्रा राष्ट्रिय भावनाओंका भी उदय, पोषण तथा वृद्धि करती है।

तीर्थ-यात्रा और देश-पर्यटनका महत्त्व बहुत बड़ा है। तीर्थ-यात्रासे लौटा हुआ व्यक्ति, अनुभवों, व्यापक दृष्टिसम्पन्न और कार्यकुशल हो जाता है। लोग उसे पुण्यदृष्टिसे देखते हैं। धार्मिक भावनाके अतिरिक्त व्यापार और उद्योगसम्बन्धी अनुसंधानके लिये भी लोग देश-विदेशकी यात्रा करते हैं।

यात्रासे अनन्त लाभ हैं। प्रदर्शिनीकी टीमटाम आदि अनेक उपायों तथा महान् धन-व्ययसे जो उद्देश्य सिद्ध होता है, वह अनायास ही तीर्थ-स्थान तथा मेलोंसे हो जाता है।

हमारे तीर्थ-स्थान प्रायः प्रकृतिकी केलिभूमिमें स्थापित किये गये हैं। तीर्थयात्रा करनेके बाद मनुष्य कूप-मण्डूक नहीं रह जाता। 'A thing of beauty is a joy for ever' (एक सुन्दर वस्तु सदाके लिये हर्षका कारण होती है) की व्यापकताको अनुभव-प्राप्त यात्री समझ पाता है। हमारे धर्म-ग्रन्थोंमें तो प्रत्येक हिंदूके लिये तीर्थ-यात्रा करनेका आदेश है। तीर्थ-यात्राके बिना जीवन नीरस, व्यर्थ, धर्मशून्य माना जाता है। तीर्थ-यात्रा जीवनका एक कर्तव्य है, जिसका पालन कभी-न-कभी मनुष्यको अपने जीवनमें करना ही चाहिये। संन्यासी-गृहस्थ, रङ्क-राजा, विद्वान्-मूर्ख, स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध सभीके लिये तीर्थ-यात्रामें शास्त्रोंकी आज्ञा है।

किंतु जैसे प्रायः प्रत्येक बातके सच्चे अर्थको न समझकर हमने उसके अर्थको बिगाड़ा तथा घसीटा है, वही बात तीर्थ-यात्राके विषयमें भी है। जैसे तीर्थ-यात्रा अब धर्मभीरु बूढ़ों और अशिक्षित तथा अर्ध-शिक्षित अधेड़ स्त्री-पुरुषोंके ही हिस्सेमें हो। जब उनका अन्त समय निकट आता है, तब वे अपना परलोक बनानेकी चिन्तामें लगते हैं। प्रश्न होता है—प्रायः वृद्ध-वृद्धा ही क्यों तीर्थ-यात्रा करते हैं, युवक-युवतियाँ क्यों नहीं? चाहिये तो बालक-बालिकाओं तथा विशेषतया युवक-युवतियोंको ही अधिक तीर्थ-यात्रा करना। किशोरावस्थामें सरल हृदयपर यात्राओंका जो प्रभाव पड़ता है, वह अमिट होता है। तीर्थ-स्थानोंमें जानेकी सतत इच्छाकी जागृति, घुमक्कड़ स्वभाव तथा प्रकृतिके प्रति प्रेम-सम्बन्धी जो प्रबल संस्कार ऐसे हृदयपर पड़ जाते हैं, वे जीवनभर उसके साथ रहकर उसे लाभान्वित करते हैं। बचपनकी स्मृतियाँ कितनी मधुर होती हैं, इसे कौन नहीं जानता। अपने बचपनकी साधारण-से-साधारण बातें याद करके मनुष्यका हृदय गद्गद हो जाता है। इस

समयका खेलना, पढ़ना और छोटी-छोटी घटनाएँ भी बहुत महत्त्वपूर्ण और भावी जीवनके लुभावनी होती हैं। साथ ही बालकके हृदयपर जो नक्शा उस आयुमें बन जाता है, जो अमिट प्रभाव उस समय पड़ जाता है, वह जीवनभर रहता है। बालकोंकी प्रवृत्ति और प्रकृतिका बहुत कुछ दारोमदार उनकी बचपनकी बातोंपर होता है। बचपनमें प्रकृतिकी प्रत्येक वस्तुमें एक निरालेपन, ताजगी, विचित्रता और ब्रह्मानन्दका जो अनुभव होता है तथा जो प्रभाव हृदय और बुद्धिपर पड़ता है, वह उसी वस्तुको बड़ी आयुमें देखनेसे नहीं पड़ता—यह अनुभवी भली प्रकार जान सकते हैं। बालकके हृदयमें सात्त्विकताका पूरा निवास रहता है—समालोचना करनेकी प्रवृत्ति तथा ज्ञानकी कमी भी इसका एक मुख्य कारण हो सकती है। बच्चे भगवान्‌के स्वरूप जो ठहरे।

योरप आदि भूभागोंमें तो नवयुवककी शिक्षा तबतक पूर्ण नहीं समझी जाती, जबतक वह योरप आदिमें भ्रमणकर दूसरे नागरिकों एवं उनकी सभ्यताके सम्पर्कमें न आया हो। कहनेका तात्पर्य यह है कि यात्रा, तीर्थ-यात्राका महत्त्व प्रत्येक आयु तथा स्थितिके मनुष्यके लिये उपयोगी और आवश्यक है। पर हमारे यहाँ वृद्धजन ही प्रायः यात्रा करते हैं। इसका भी एक कारण है और कारण स्पष्ट है। प्राचीन समयमें यात्रा-मार्ग ठीक नहीं थे, यात्राके साधनोंकी भी कमी थी, चोर-डाकुओं तथा अन्य उपद्रवोंका भी भय था। इसीसे वृद्धजन जब यात्रा आरम्भ करते थे, तब यही समझकर करते थे कि ईश्वर जाने अब लौटनेकी नौबत आये या न आये। यदि न भी लौटे तो परलोक बनेगा—अन्तिम समय तो है ही। परन्तु अब रेल, मोटर-बसें, हवाई-जहाज, घोड़ा-गाड़ी आदि सभी साधन पर्याप्त और सुलभ हैं—मार्गमें भी भय और कष्टकी आशङ्का प्रायः नहीं है। पक्की सड़कें, धर्मशालाएँ तथा अन्य सुविधाएँ हैं। ऐसी दशामें अब छोटे-बड़े सभी आयुके स्त्री-पुरुष आरामसे यात्रा कर सकते हैं। किंतु हिंदू प्राचीनताके उपासक तो होते ही हैं। पुरानी बातोंमें यदि बुराइयाँ भी हों, तो भी उन्हें जल्दी छोड़ना पसंद नहीं करते, चाहे अज्ञानके कारण ही वे ऐसा करते हों।

परन्तु अब तो तीर्थ-यात्राके नामपर सैर धीरे-धीरे सभी करने लगे हैं। विदेशी सभ्यताकी विषैली वायुसे प्रभावित हम भारतीय अपने पुरखोंकी मखौल उड़ानेमें अपनी मर्दानगी समझने लगे हैं। एक बात और भी है। अनुभवप्राप्त यात्री जानते हैं कि आजकल तीर्थ-स्थानोंमें कितना धर्मके नामपर अधर्म और सत्यताके स्थानपर ढोंग होता है—कितने पाप, अनाचार और व्यभिचारके अड्डे तीर्थ बन गये हैं। सत्यको छिपानेसे, विकृतिपर पर्दा डालनेसे कोई लाभ नहीं। वास्तविकता अधिक छिपायी नहीं जा सकती। अतः पुरुषार्थ विकृतके पर्दा-फाशमें और उसके दूर करनेमें ही है। सीधे और धर्म-भीरु यात्री कैसे उल्टे छूरेसे मूँड़े जाते हैं। न जाने कितनी बार हमने पत्र-पत्रिकाओंमें पंडोंके अन्यायोंको पढ़ा तथा यात्रियोंकी जबानी सुना है। प्रायः उनके धन और कभी-कभी तो इज्जतपर भी बन आयी है। पंडे भूखे गिद्धकी तरह यात्रियोंपर टूट पड़ते हैं, जिसके कारण यात्री अशान्तिको प्राप्त होकर, तीर्थ-स्थानोंकी लूट-खसोटसे काँपकर वहाँ न जानेके लिये कान पकड़ लेते हैं। उन्हें वास्तवमें ऐसे स्थानोंसे घृणा हो जाती है। विशेषकर नवयुवकोंमें तीर्थोंके लिये प्रतिक्रियाके भाव पैदा होना अस्वाभाविक नहीं है। मैं स्वयं इस बातका साक्षी और भुक्तभोगी हूँ। विद्वानों, नेताओं और सरकारका ध्यान इस ओर गया है और उन्होंने बहुत कुछ सुधार भी किये हैं; किंतु जबतक हमारा अज्ञान और अन्ध-विश्वास दूर न होगा तबतक बहुत अधिक आशा इस क्षेत्रमें नहीं की जा सकती। तीर्थोंकी महत्ताको समझनेके लिये हमारे लिये यह भी आवश्यक है कि कौन-कौन-सी बातें उनकी महत्तापर कुठाराघात कर सकती हैं, इसे भी समझ लिया जाय और इसी दृष्टिकोणसे ऊपर इस विषयपर कुछ लिखा गया है।

तीर्थ-यात्राके लिये सर्वोत्तम आयु तो युवावस्था ही है। वृद्धावस्थामें इन्द्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं। नयी बातोंके प्रति जिज्ञासु-भाव तथा उत्साहकी कमी इस आयुमें हो जाती है। अतः जो रस तथा आनन्दका अनुभव युवावस्थामें तीर्थ-यात्राओंसे सम्भव है, वह वृद्धावस्थामें नहीं। पर धर्मभावना वृद्धावस्थामें ही प्रायः बढ़ती है और इस दृष्टिकोणसे तीर्थ-यात्राओंसे बड़ी आयुके लोगोंको भी आत्मिक सुख, शान्ति तथा संतोष मिलता है। वृद्धावस्थामें अवकाश-ही-अवकाश प्रायः रहता है। अवकाश-प्राप्त जीवन (retired life) व्यतीत करनेसे, जीवनके संघर्षोंसे उन्हें बहुत कुछ छुट्टी मिल चुकती है। तीर्थ-यात्रा तब उनके मनबहलाव तथा कालयापनका एक प्रमुख साधन बन जाता है। अतः यह अवस्था भी यात्राके लिये उपयुक्त ही है।

फेफड़ोंकी कसरत दौड़ने-चलनेसे होती है। तीर्थयात्रामें चलना अधिक होनेसे पेट ठीक होता है। कब्ज, भोजनका ठीकसे न पचाना, अनिद्रा, बवासीर तथा पेट और शरीरके अनेक रोग यात्रासे ठीक होते हैं, स्वास्थ्य ठीक होता है। कठिन मानसिक या मस्तिष्क-सम्बन्धी परिश्रमके बाद छुट्टी तथा विश्रामकी आवश्यकता होती है। तीर्थ-यात्रासे मनबहलावके साथ विश्रान्ति-प्राप्ति भी होती है।

एक विशेष बात हम यह देखेंगे कि प्राय: सभी तीर्थ-स्थान नदियोंके किनारे हैं। प्राचीनकालमें सबसे सुविधाजनक मार्ग नदीका ही था—इसीके द्वारा व्यापार तथा आना-जाना रहता था। ऋषि-मुनि भी शान्ति और सुविधाके विचारसे नदी-तटोंपर ही अपनी कुटियाँ बनाते थे। नदीसे जितने लाभ हो सकते हैं, वे सब नदी-तटपर बसनेवाले ही प्राप्त कर सकते हैं। यही कारण है कि नदी-तटपर ही नगरोंकी सृष्टि हुई। इन्हीं नदी-तटोंपर एक निश्चित अवधिके बाद महापुरुषोंके सम्मेलन होते रहते थे और उसी अवसरपर व्यापारी एकत्र होकर उन पर्वोंको 'मेला' का रूप दे देते थे तथा साधारण जनता भी इनसे प्रत्येक प्रकारका लाभ उठानेके लिये एकत्र होती थी। इन महासम्मेलनोंकी सुचारु तथा सुव्यवस्थित रूपसे निरन्तरता कायम रखनेके लिये हमारे महर्षियोंने धर्मके नामपर बड़ा सुन्दर उपाय निकाला। कुम्भ, अर्द्ध कुम्भी, कार्तिक-पूर्णिमा, गङ्गा-दशहरा तथा सूर्य-चन्द्र-ग्रहणादि और अनेक पर्वोंपर नदी-स्नान तथा तीर्थ-दर्शनका आदर्श एवं महत्त्व रखा गया और इसी बहाने लाखों यात्री, साधु-महात्मा और व्यापारी एकत्रित होते और विचार-विनिमय तथा धर्म-चर्चाके सुयोगसे लाभ उठाते थे। क्या ही अच्छा हो, यदि तीर्थ-यात्राकी सच्ची उपादेयता हम समझ जायँ। जो कार्य आजकल सभाओं तथा अधिवेशनोंसे होता है, वही कार्य प्राचीन कालमें पर्वोंसे होता था।

आर्य-सभ्यताका प्रधान प्रचार-क्षेत्र आर्यावर्त्त ही रहा है और उसमें भी प्रधान गङ्गा-यमुनाकी भूमि उत्तरप्रदेश। भगवान् राम और कृष्णका यहीं जन्म हुआ है और गौतम बुद्ध आदि महर्षियोंका प्रचार-केन्द्र भी यहीं रहा है। दूध, घी, मक्खनकी सदा यहाँ नदियाँ बही हैं तथा आध्यात्मिक ज्योतिका प्रसार भी यहाँ होता रहा है। इस पुण्यदेश भारतवर्षमें अनेक ऐसे प्राकृतिक दृश्य, ऐतिहासिक नगर और तीर्थस्थान हैं, जिन्हें भारतीय जनता हजारों वर्षोंसे पवित्र मानती आ रही है। सात मोक्षदायक नगरियों और चार धामोंकी यात्रा करना धर्मिष्ठ, श्रद्धालु लोग तो पुण्यकार्य समझते ही हैं; धर्ममें श्रद्धा न रखनेवाले व्यक्ति भी भारतके तीर्थ-नगरोंके दर्शनकी कामना करते हैं। अनेक स्थान ऐतिहासिक घटनाओंकी स्मारकताका महत्त्व रखते हैं और अनेक भारतीय संस्कृतिके निदर्शक कीर्तिस्तम्भ हैं। उत्तर-प्रदेश प्राचीन 'मध्यदेश' का एक बृहत् भूमि-भाग है और भारतीय संस्कृति एवं सभ्यताका एक मुख्य स्थान रहा है। पौराणिक, ऐतिहासिक तथा वर्तमानकालिक औद्योगिक महत्ताके कारण बहुत-से स्थान यहाँ भी अपनी महत्ता रखते हैं। गङ्गा, यमुना आदि महान् नदियोंसे सिञ्चित और हरित यह प्रदेश दर्शनीय है।

प्रत्येक तीर्थकी स्थापनाका कुछ उद्देश्य-विशेष दृष्टिमें रखकर ही हमारे पूर्वजोंने अपने ज्ञान-बुद्धिका परिचय दिया है। तत्कालीन परिस्थितियों तथा वातावरणके वे ज्ञाता थे। उदाहरणके लिये बदरीनाथकी पर्वत-श्रेणियाँ भूगर्भ-शास्त्रका ज्ञान करती हैं। उनसे हिम, घाटी, जड़ी-बूटी, प्रपात, शील, चट्टान, जलवायु तथा पर्वतादिका ज्ञान हमें होता है। द्वारकामें जलयानद्वारा यात्रा, समुद्र-टापू आदिका ज्ञान; जगन्नाथपुरीमें समुद्र, समुद्रतटकी वनस्पति आदि तथा विभिन्न वास्तु-कलाके नमूनोंका ज्ञान तथा रामेश्वरमें ईश्वरीय प्रकृतिकी अलौकिकता और मनुष्यकी बुद्धिकी पराकाष्ठाका ज्ञान 'आदमका पुल' आदि देखनेसे होता है। सभी तीर्थ भारतवर्षके प्रति श्रद्धा, भक्ति तथा बन्धुत्वका भाव यात्रियोंके हृदयमें भरते हैं। विद्यार्थियोंको सैर-सपाटेसे व्यावहारिक (practical) ज्ञान होता है। प्राचीन समयमें पैदल, नाव, बैलगाड़ी, घोड़ा, ऊँट आदिपर ही यात्रा होती थी, जिसमें वस्तुओंको देखने-समझनेका काफी समय और अवकाश मिलता था। अब तो मोटर, हवाई जहाज और रेलसे हम एक स्थानसे अन्य नियत स्थानपर बहुत शीघ्र पहुँच जाते हैं—मार्गके ज्ञान तथा दृश्योंका प्रश्न ही नहीं उठता; परन्तु पहले तीर्थ-यात्रीको कष्ट-सहिष्णुता तथा साहस (adventure) की शिक्षा मिलती थी। कहीं ताँबेकी खानें, कहीं लाहौरी (सेंधा) नमक, कहीं मिट्टीका तेल, कहीं संगमरमर, कहीं ज्वालामुखी (पंजाबकी ज्वाला देवी) आदि यात्री देखते रहे हैं। किंतु श्रद्धालुलोग केवल मूर्तिके दर्शन करना ही अपना उद्देश्य समझते हैं और दर्शनमात्रसे यात्राके कष्ट और मार्गके खर्चको भूल जाते हैं।

यात्राका वास्तविक आनन्द तथा लाभ तो पैदल चलनेमें ही है; किंतु जिन्हें समयाभाव है या जिनके पास बहुत कम समय है या जो पैदल चलनेमें अशक्त हैं या इच्छा नहीं रखते, वे यदि तीर्थस्थानोंपर हवाईजहाज, रेल या मोटर-बससे भी जायँ तो क्या हानि है। शास्त्रोंका सिद्धान्त है—'**अकरणान्मन्दकरणं श्रेयः**' (न करनेकी अपेक्षा न्यूनरूपमें करना भी अच्छा है।) अब तो धनाढ्य धर्मात्मा हवाई-जहाजसे बदरीनाथतक जाने लगे हैं। किंतु जो लोग पैदल चल सकते हों, जिनके पास समयका सर्वथा अभाव न हो, वे कम-से-कम पर्वतीय तीर्थ-स्थानोंमें तो पैदल ही जायँ अथवा घोड़ा, डाँड़ी, कंडी या झप्पान आदि धीमी सवारियोंमें।

इन यात्राओंमें पर्याप्त समयकी ही आवश्यकता नहीं है, पर्याप्त धनकी भी आवश्यकता है। जो असमर्थ हैं, निर्धन हैं, वे धनाभावके कारण सतत इच्छा रखते हुए भी तीर्थ-यात्राओंके आनन्द तथा पुण्यसे वञ्चित रहते हैं। ऐसे पुरुषोंके लिये यदि यात्रा-साहित्यपर विविध ग्रन्थ उपलब्ध हों तो वे घर बैठे ही, बहुत कम व्ययसे पुस्तकें खरीदकर उन तीर्थस्थानोंसे परिचय प्राप्त कर सकते हैं। स्वयं यात्रा करनेमें जो आनन्द है, वह यात्रा-ग्रन्थोंके पढ़नेमें कहाँ मिल सकता है; किंतु बिल्कुल न होनेसे तो कुछ होना श्रेष्ठ ही है।

जो लोग यात्रा करनेके इच्छुक हों, उन्हें भी ऐसी यात्रा-पुस्तकोंसे बहुत लाभ पहुँचता है। किसी नवीन स्थानपर जानेके पूर्व वहाँके विषयमें कुछ ज्ञान कर लेना आवश्यक है, जिससे सुविधापूर्वक और एक विशेष क्रमसे वहाँ घूमनेका आनन्द लिया जा सके। ऐसी पुस्तकें जेबी-साथी होती हैं, पथ-प्रदर्शकका काम करती है। अन्यथा यात्रियोंको नवीन स्थानमें आकर पंडोंपर निर्भर होना पड़ता है और जो कुछ वे दिखा देते या स्थानकी महत्ता बता देते हैं, उसीपर विश्वास और संतोष करना पड़ता है। यदि यात्री जिज्ञासु हुआ तो कुछ पूछ-ताछकर देख या जान लेता है; तब भी बहुत कुछ छूट ही जाता है। फिर भी बेचारा इसीमें अपनेको धन्य समझता है—पुण्यका भागी तो वह हो ही गया तीर्थ-यात्रा करनेसे। साधारण स्थितिके जिज्ञासु व्यक्तियोंको, जिनके लिये देशाटन करना सरल या सम्भव नहीं है, ऐसे ग्रन्थोंकी विशेष आवश्यकता है। अतः साधारण स्थितिकी जनताकी ज्ञानवृद्धि तथा देशके प्रसिद्ध स्थानोंसे उसका परिचय कराने और यात्रियोंके पथ-प्रदर्शनके लिये यात्रा और पर्यटनके अनुभवपूर्ण विवरण बड़े लाभकारी सिद्ध होते हैं। अंगरेजी-जैसी विदेशी भाषाओंमें यात्रा-सम्बन्धी साहित्यकी प्रचुरता है, जिसमें ज्ञान-बुद्धिकी सामग्रीके साथ-साथ रसात्मकता भी है। परंतु भारतीय भाषाओंमें इस प्रकारके साहित्यकी कमी है, हिंदीमें तो ऐसे ग्रन्थ और भी कम हैं। संसारभरके यात्रियों और भ्रमण करनेवालोंकी सुविधाके लिये अंग्रेजीमें टॉमस कुक और बेडसर इत्यादि लेखकोंकी लिखी अनेक पथ-प्रदर्शक पुस्तकें (Guide books) मिलेंगी; किंतु भारतवर्षमें, जो विविध सौन्दर्यकी खान है और प्राचीन इतिहासकी महत्ताके कारण जहाँ अनेक देखनेके स्थान हैं, ऐसी पुस्तकोंकी कमी है। यह सच है कि भारतवासी भारतके बाहरके देशोंमें बहुत कम भ्रमण करते हैं; किंतु भारतेतर किसी भी देशमें इतने गरीब यात्री—चाहे अपने लक्ष्यतक पहुँचनेके लिये उन्हें कितनी ही कठिनाइयोंका सामना करना पड़े, एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जाते नहीं मिलेंगे।

आधुनिक कालमें आने-जानेकी सुविधाओंके बढ़ जानेके कारण साहित्यिकोंको सैर करनेका मौका मिला। परंतु हिंदीमें समुचित विवरणात्मक साहित्य न होनेके कारण सुन्दर ढंगसे लिखे यात्रा-विवरणके नमूने उनके सामने बाल्य-कालमें नहीं आ पाये थे। इस कारण यदि उनमेंसे कुछ विद्वान् विवरणात्मक साहित्यकी सृष्टि कर सके तो अंग्रेजी-साहित्यके परिपुष्ट विवरणात्मक अङ्गके ढंगपर ही। प्राचीन ढंगके लेखकोंने जो यात्रा-ग्रन्थ हमारे सामने रखे, उनमें रसात्मकता तथा तल्लीनता लानेकी शक्ति नहीं। पर इस दिशामें अब विद्वानोंका ध्यान जाने लगा है।

भारतवर्ष एक विस्तृत देश है। उसके सम्बन्धमें यहाँ कुछ नहीं कहना है। उत्तरप्रदेश स्वयं एक विस्तृत प्रान्त है। इसके सम्बन्धमें कुछ जान लेना आवश्यक है। स्वतन्त्रताप्राप्तिके पूर्व इसका नाम था 'आगरा एवं अवध' का संयुक्तप्रान्त। इसके चार प्राकृतिक भाग हैं—(१) उत्तरी पहाड़ी भाग (२) तराई, (३) गङ्गा आदिका मैदान, (४) दक्षिणी पहाड़ी भाग। प्रान्तका तीन चौथाई भाग मैदान है। तराईके बाद पूर्वसे पश्चिमतक नदियोंवाला विस्तृत मैदान फैला है, जो गङ्गा तथा उसकी सहायक नदियोंद्वारा लायी गयी मिट्टीसे बना है। गङ्गा और यमुनाके बीचके दोआबको ऐतिहासिक प्रसिद्धि प्राप्त है। मैदानको खोदनेपर २०० से ५०० फुटकी गहराईतक

यहाँ इन्हीं नदियोंद्वारा लायी हुई मिट्टी मिलती है। स्वाभाविक ही कुओं, तालाबों और नहरोंकी अधिकता इस भागमें होगी; क्योंकि उपजाऊ भूमिके लिये इनकी आवश्यकता भी है और मिट्टीके मैदानोंके कारण इनका बनाना भी सुगम है। गङ्गा और यमुनासे नहरें निकाली गयी हैं, जो पश्चिमी जिलोंको पानी देती हैं। गङ्गासे हरिद्वारके पास नहर निकाली गयी है। यहाँकी शारदा नहर अति प्रसिद्ध है। शारदा नदीको बनवसा स्थानपर रोककर उससे शारदा-नहर निकाली गयी है। उससे पीलीभीत, शाहजहाँपुर, हरदोई तथा अवधके बहुत-से भागोंकी सिंचाई होती है। इस कारणसे इन जिलोंकी पैदावार बढ़ गयी है। गेहूँ, चना, चावल, गन्ना, चाय, तम्बाकू, फल, तरकारियाँ, जौ, तेलहन, कपास तथा दाल आदि यहाँकी प्रमुख पैदावार है। प्रान्तकी आबादी बहुत घनी है। नदियोंका जाल-सा यहाँ बिछा है। उत्तरकी नदियोंमें रामगङ्गा गङ्गासे मिलती है। फिर यमुनाका गङ्गासे संगम होता है। गोमती भी गङ्गासे मिलती है। राप्ती घाघरामें मिलती है और फिर घाघरा गङ्गामें मिलती है। यमुनाके किनारे मथुरा, वृन्दावन, गोकुल आदि तीर्थ तथा आगरा, इटावा, कालपी आदि नगर बसे हैं और घाघरा (सरयूजी) के किनारे अयोध्या, फैजाबाद आदि।

सच तो यह है कि आर्यावर्त्तका इतिहास ही भारतवर्षका इतिहास है और आर्यावर्तका इतिहास गङ्गा, सिन्धु तथा हिमालयका इतिहास है। गङ्गा नदी तथा हिमालय पर्वतके अस्तित्वसे उत्तरप्रदेशका ऐतिहासिक तथा भौगोलिक महत्त्व बहुत बढ़ गया है। इसलिये उत्तरप्रदेशके तीर्थस्थानोंकी पृष्ठभूमि समझानेके लिये हमें हिमालय पर्वत तथा गङ्गा नदीके विषयमें अच्छी तरह जानना आवश्यक है।

हिमालय संसारका सर्वोच्च पर्वत है। इसके महान् शिखर मैदानसे लगभग चार मील (२०,००० फुट) ऊँचे हैं और कहीं-कहीं तो ये पाँच मीलतक ऊँचे चले गये हैं। ये चौड़े भी बहुत हैं। दक्षिणसे उत्तरतक यदि इन पर्वतोंको पैदल पार किया जाय तो इनकी चौड़ाई १५० मीलकी मिलेगी और कहीं-कहीं तो २०० मीलकी दूरीतक ऊँचे पर्वतोंपर चलना होगा। अनगिनत शाखा-प्रशाखाएँ श्रेणी-बद्ध रूपमें पूर्वसे पश्चिम १५०० मीलतक चली गयी हैं। पर्वतोंकी श्रेणियाँ उत्तर-पश्चिममें कराकोरम और हिंदूकुशकी श्रेणियोंके नामसे प्रसिद्ध हैं। कराकोरममें माउंट गाडविन आस्टिनकी ऊँची चोटी है। ये श्रेणियाँ पश्चिममें सुलेमान और किरथारके नामसे प्रसिद्ध हैं। इस पर्वतकी पूर्वी श्रेणी पटकोई श्रेणी कहलाती है। भारतवर्षके निकटतम स्थित हिमालय पर्वतकी श्रेणीमें अत्यन्त उच्च शिखर हैं। इनमेंसे अधिकांश शिखरोंकी ऊँचाई तीन मीलसे भी अधिक है। एवरेस्टकी चोटी तो ५ मीलसे भी ऊँची है। कञ्चनजङ्घा, कामेत, कैलास, नन्दादेवी, धवलगिरि तथा नंगा पर्वत आदि अन्य प्रमुख उच्च चोटियाँ हैं। इनके ऊपरके भागकी हवा इतनी ठंडी होती है कि वहाँ वृक्ष नहीं उग सकते। वहाँ तो केवल घास उगती है। कुछ और ऊपर तो घास भी नहीं उगती। पर्वतपर केवल चट्टानें-ही-चट्टानें हैं। १५००० फुटकी ऊँचाईपर केवल बर्फ-ही-बर्फ चारों ओर दिखायी देती है। यहाँकी हल्की हवा (rarified air) में साँस लेना कठिन होता है। अत: यहाँ मनुष्य या पशु जीवित नहीं रह सकते। शिमला, दार्जिलिङ्ग, नैनीताल, मसूरी तथा अल्मोड़ा आदि पर्वतीय नगर ३००० से ७००० फुटतक ऊँची श्रेणियोंपर बसे हैं। हिमालयका एक बड़ा भाग हमारे प्रान्तमें पड़ता है।

उत्तरी पहाड़ी भागमें गर्मीकी ऋतुमें भी गुलाबी जाड़ा रहता है। उस समय जितना ही उत्तरकी ओर बढ़ते जायँगे, ठंड बढ़ती जायगी, यहाँतक कि उत्तरी श्रेणियोंपर बराबर बर्फ जमी रहती है। वर्षा ऋतुमें पानी खूब बरसता है। जाड़ेकी ऋतुमें ठंड अधिक पड़ती है और इसी कारण पहाड़ी लोग पहाड़ोंको छोड़कर तराई और भाभरमें आ जाते हैं। जाड़ेमें हिमवर्षा होती है।

प्रकृतिने यहाँके पशुओंको भी जलवायुके अनुसार घने ऊनसे आच्छादित कर दिया है। बकरियोंका ऊन ग्रीष्म ऋतुमें काट लिया जाता है। सुरागाय, याक बैल तथा पहाड़ी कुत्तोंके भी घने बाल होते हैं। इनसे बोझा ढुलानेका काम लिया जाता है। देवदारु, बलूत, साल आदिकी लकड़ियाँ, तारपीनका तेल, जंगली पशु तथा उनका चमड़ा, अनेक प्रकारके गोंद, पालतू पशुओंसे ऊन तथा ऊनके बने कपड़े—कंबल, शाल आदि, शिलाजीत, अनेक प्रकारके फल आदि इन पर्वतोंसे हमें प्राप्त होते हैं। संसारके किसी भागसे इतनी जड़ी-बूटियाँ तथा जंगलोंसे इतनी वस्तुएँ नहीं प्राप्त होतीं, जितनी यहाँसे। अनेक धातुएँ भी यहाँसे प्राप्त होती हैं। अब तो पर्वतीय प्रपातों तथा नदियोंसे बिजली भी पैदा की जाती है।

हिमालय पर्वतसे अनेक लाभ हैं। भारतवर्षका यह संतरी है। न ध्रुव प्रदेश तथा साइबेरियाकी ओरसे आयी

ठंडी हवाओंको ही यह भारतमें आने देता है और न विदेशी शत्रुओंको ही उत्तरसे। सदा-सर्वदासे गङ्गाका तट तथा हिमालयकी कन्दराएँ हमारे महर्षियोंकी तपोभूमि रही हैं। अनादि कालसे ऋषि-मुनियों तथा कवियोंने इनका यशोगान किया है। समुद्रसे उठी हुई भाप इन पर्वतोंको पार करनेके प्रयत्नमें कुछ तो वर्षाके रूपमें पानी होकर बरस जाती है और कुछ ठंडी होकर बर्फके रूपमें जम जाती है। गर्मीके दिनोंमें सूर्यकी प्रखर किरणें इस बर्फको पिघलाकर नदियोंके हृदयको भरती रहती हैं। असंख्य छोटी-छोटी प्राकृतिक जलकी धाराएँ बहतीं तथा एक दूसरेसे मिलकर बड़ी होती जाती हैं और अन्तमें नदीका रूप ले लेती हैं।

हिमालयका इतिहास भी कम रोचक नहीं है। भूगर्भवेत्ताओंका कहना है कि अतीतकालमें जहाँ आज हिमालय पर्वत है, वहाँ गहरा समुद्र हिलोरे मारता था। विप्लवकारी परिवर्तनोंसे इस स्थानकी पृथ्वी पर्वतोंके रूपमें उठ गयी। हिमालयके हृद्देशमें अनेक गहरी झीलोंका अस्तित्व इसका द्योतक है। पुरातत्त्व-विभागके अन्वेषक प्रायः समुद्री जीवोंकी अस्थियाँ आदि किसी-न-किसी रूपमें यहाँ पा जाते हैं। यहाँकी जलीय चट्टानें (Sedimentary rocks) भी इस बातका प्रमाण हैं।

उत्तरप्रदेश एक विस्तृत प्रान्त है। भारतवर्षके चार प्राकृतिक भाग किये जा सकते हैं—(१) उत्तरमें हिमालयकी श्रेणियाँ, (२) गङ्गा तथा सिन्धु आदिके मैदान, (३) मध्य तथा दक्षिणकी पठारी भूमि तथा (४) समुद्रतटवर्ती मैदान। इनमेंसे प्रथम तीन भागोंके कुछ अंश हमारे प्रान्तमें भी हैं।

उत्तरप्रदेशका अधिकतर भाग मैदान है, केवल उत्तर-पश्चिमी भाग पहाड़ी है। मेरठ-कमिश्नरीके पाँच जिलोंमें केवल देहरादून ही पहाड़ी भाग है। इस जिलेमें चकरौता, कालसी, मसूरी, लंढौर और देहरादून आदि नगर हैं। टेहरीमें यमुनोत्तरी (९,९०० फुट), टेहरी, गङ्गोत्तरी (२०,०३० फुट), देवप्रयाग आदि स्थान हैं। कुमायूँ-कमिश्नरीके तीनों जिले पहाड़ी हैं।

(१) जिला गढ़वालमें केदारनाथ, बदरीनाथ, गुप्तकाशी, रुद्रप्रयाग, श्रीनगर, पौड़ी, लैंसडौन, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, नन्दकोट, नन्दादेवी (२५,६४० फुट) दूनागिरि, जोशीमठ (६,१०७ फुट), त्रिशूल, रामगढ़ आदि हैं। (२) जिला अल्मोड़ामें मिलम (१,१९० फुट), बागेश्वर (३,१९९ फुट), बैजनाथ, द्वाराहट, रानीखेत (५,९०० फुट), हवालबाग, अल्मोड़ा (५,४९४ फुट), चयोवत, पिथौरागढ़, पिंडारी आदि स्थान हैं। (३) जिला नैनीतालमें काशीपुर, रामनगर, नैनीताल, काठगोदाम, हलद्वानी, ललकुआँ आदि हैं। यों तो सभी स्थान दर्शनीय हैं और सभी कहीं यात्री आते-जाते रहते हैं; किंतु धर्मभावसे, स्वास्थ्यके विचारसे या सैर-सपाटे और मनोविनोदके लिये इनमेंसे कुछ स्थानोंपर ही प्रतिवर्ष अधिक यात्री जाते हैं।

उत्तरमें हिमालय पर्वतकी नन्दादेवी, गङ्गोत्तरी तथा यमुनोत्तरी आदि श्रेणियाँ प्रमुख हैं। देहरादून जिलेकी ओर शिवालिककी पहाड़ियाँ हैं, जो पर्वतीय भागका दक्षिणी छोर हैं, और जो समुद्रके स्तरसे २००० फुटसे अधिक ऊँची नहीं हैं। इन्हीं पहाड़ियोंकी असम्बद्ध श्रेणियाँ रुड़कीसे हरिद्वारतक फैली हुई हैं। और इन्हीं शिवालिक पहाड़ियोंके बाद देहरादूनकी उपत्यकाएँ हैं, जिनके एक ओर शिवालिक और दूसरी ओर हिमगिरिकी उच्च श्रेणियाँ हैं। देहरादूनसे पर्वतीय खण्ड उच्चतरसे उच्चतम होते गये हैं—तेजीसे। देहरादून चारों ओर पहाड़ियोंसे घिरा लगता है। देहरादूनसे मसूरी पहुँचते-पहुँचते हमलोग एक साथ दो-ढाई हजार फुटसे आठ-दस हजार फुटकी ऊँचाईपर पहुँच जाते हैं। बढ़ती हुई ठंडक, बदलती हुई वनस्पतियाँ तथा शीतकालके देवदारु आदिके वृक्ष इस बातकी साक्षी देते हैं। इस ओरकी दुनिया ही और है। निवासियोंका रूप-रंग, कद, व्यापार, व्यवसाय, स्वभाव, रीति-रिवाज, रहन-सहन आदि सभी मैदानके निवासियोंसे भिन्न हैं। जिस पुरुषने कभी पर्वतीय प्रदेशकी सैर नहीं की, वह यह समझ ही नहीं सकता।

हिमालयका ढाल उत्तर-पूर्वसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर है, जिसका प्रमाण उत्तर-प्रदेशकी बहती हुई नदियाँ हैं। उत्तरमें १६,००० वर्ग मील पहाड़ी भाग है, दक्षिणमें पठारी भाग है।

हिमालय पर्वत तीन श्रेणियोंमें विभाजित किया जा सकता है। हिमालयका निचला मैदानकी ओरका ढालू भाग, जो शिवालिक पहाड़ियाँ कहलाता है, पहला भाग है। पहले भागके ऊपरका वह भाग, जो घने वृक्षोंसे ढका है और जहाँ कुछ सुविधापूर्वक लोग यात्रा कर सकते हैं, दूसरा भाग है। तीसरा भाग वह है, जिसमें बदरीनाथ नन्दादेवी, आदि हिमाच्छादित पर्वत-शृङ्ग हैं।

उत्तरी पर्वत-श्रेणियोंके नीचे बहुत बड़ा जंगल है, जो तराईके नामसे प्रसिद्ध है। इन दलदलोंसे भरे प्रदेशमें लंबे-लंबे वृक्ष तथा लंबी घासकी बहुतायत है। बाघ,

चीते, गैंडे, जंगली हाथी, रीछ, भेड़िये, सियार, लकड़बग्घा आदि हिंस्र पशु इसमें अधिकतासे पाये जाते हैं। यह भाग बहुत अच्छा शिकारगाह है। जलवायु यहाँकी आर्द्र है, अतः मलेरियाका बहुत प्रकोप रहना स्वाभाविक ही है।

पहाड़ी ढालोंपर बहती हुई नदियोंकी धाराएँ बड़े-बड़े पत्थर बहा लाती हैं। पहाड़ोंके दामनमें ढाल समाप्त हो जाते हैं। अतः पानीकी गति मन्द पड़ जाती है और पानीमें पत्थरों आदिके बहानेकी शक्ति नहीं रह जाती। अतः यहाँ पत्थरोंके टुकड़े जमा हो जाते हैं। पूरे प्रान्तभरमें पहाड़ोंके किनारे-किनारे यह पथरीला सिलसिला चला गया है। इसको भाभर कहते हैं। जमीनके पथरीली होनेके कारण यहाँ खेती नहीं हो सकती। इसके आगे पानी पत्थरोंके नीचे होकर बह निकलता है और यह स्वाभाविक ही है कि मैदानी भाग दलदलोंसे पूर्ण हो जाय। ऐसी दलदली जमीनकी चौड़ी पट्टी भाभरके बराबर लगी हुई चली गयी है और उसको तराई कहते हैं। जहाँ जंगल साफ कर लिये गये हैं वहाँ अवश्य धान आदिकी खेती होती है और बस्ती है। जिला बहराइच, गोरखपुर तथा पीलीभीत ऐसी ही तराईके भागमें है। बाँस, कागज बनानेकी घास तथा लकड़ी इस भागमें बहुतायतसे प्राप्त होती हैं। भाभरके भागोंमें वर्षा बहुत होती है और इसीसे यहाँ घने जंगल होते हैं। मैदानोंकी अपेक्षा यहाँ गर्मी कम और जाड़ा अधिक पड़ता है। पहाड़ी भागोंपर तो मई-जूनमें भी लू नहीं चलती।

हिमालय पर्वतका-सा महत्त्व तो उत्तरप्रदेशके दक्षिणमें स्थित विन्ध्याचलकी पर्वत-श्रेणियोंको नहीं है; किंतु विन्ध्याचलकी श्रेणियोंमें भी इस प्रान्तके अनेक तीर्थ-स्थान हैं। प्रान्तमें बनारस-कमिश्नरीके पाँच जिलोंमें केवल मिर्जापुर जिला ही पहाड़ी है, जिसके अन्तर्गत चुनार, विन्ध्याचल और मिर्जापुर आदि हैं। उत्तरप्रदेशके पठारी प्रदेशका मध्य और पश्चिमी भाग बुंदेलखण्ड कहलाता है। दक्षिणमें विन्ध्याचल और कैमूर पर्वतकी श्रेणियाँ फैली हुई हैं।

प्रान्तके दक्षिणी भाग अर्थात् विन्ध्याचलके पर्वतीय भागोंमें वर्षा कम होती है। दिनमें खूब गर्मी पड़ती है, पर रातें बड़ी सुहावनी होती हैं। यहाँकी जलवायु शुष्क है। जाड़ेमें जाड़ा अधिक और गर्मीमें गर्मी अधिक पड़ती है, पर रातें तो गर्मियोंतककी सुहावनी और ठंडी होती हैं। यह भाग छोटी-छोटी पहाड़ियों, ऊसरों तथा बिना वृक्षवाले सूखे पठारोंसे भरा है। इस ओरकी नदियाँ न गङ्गा आदिकी भाँति गहरी हैं और न सदा जलसे युक्त रहती हैं। गर्मीमें ये शुष्क-सी हो जाती हैं; क्योंकि हिमालयकी भाँति विन्ध्याचल बर्फीली चोटियोंसे युक्त नहीं है। यहाँ छोटे-छोटे वृक्षोंके जंगल पाये जाते हैं। हिमालयके-से घने और बड़े वृक्षोंके न यहाँ जंगल हैं न वैसी हरियाली ही। नहरें भी, पठारी भूमि होनेके कारण नहीं बनायी जा सकी हैं। दालें तथा ज्वार-बाजरा आदि ही यहाँकी पैदावार है। यहाँ न मैदानी भागकी-सी उपज है, न नगर और आबादी ही। बाँदा, हमीरपुर, उरई, कालपी, महोबा, झाँसी तथा चित्रकूट आदि यहाँके नगर हैं।

अरवली पर्वतसे निकली बनास तथा विन्ध्याचल पर्वतसे प्रसूत पार्वती तथा सिंध नदियाँ चम्बलमें मिल जाती हैं। चम्बल स्वयं यमुनामें मिल जाती है। सोन नदीका भी कुछ भाग उत्तरप्रदेशमें बहता है। यह नदी बिहारमें गङ्गासे मिली है।

तीर्थोंके महत्त्वमें गङ्गा अपना प्रमुख स्थान रखती है, अतः गङ्गाजीके विषयमें भी कुछ लिखना आवश्यक जान पड़ता है।

भागीरथी गङ्गा गङ्गोत्तरी ग्लेशियरसे निकली है, जो १५ मील लंबा है। प्रसिद्ध तीर्थ गङ्गोत्तरीसे यह ऊपर है। गङ्गाका उद्गम यही स्थान है। गोमुख-धारासे गङ्गाके दर्शन होते हैं। अनेक छोटी-छोटी धाराएँ इस भागमें निकलकर एक-दूसरेसे मिलती हैं। यहाँ गङ्गा कम चौड़ी हैं, किंतु प्रवाह अत्यधिक तीव्र है। भैरोंघाटीपर जाड़गङ्गा उत्तरसे आकर इसमें मिली है। अलकनन्दाका भागीरथीसे देवप्रयागपर सङ्गम है। अलकनन्दाको भी वहाँके लोग गङ्गाजी ही कहते हैं। देवप्रयागसे ऊपर दोनों नदियाँ ही गङ्गा कहलाती हैं। अलकनन्दा तथा उसकी मुख्य सहायक नदियोंका उद्गम हिमालय-पर्वतकी मुख्य श्रेणीके दक्षिणी ढालमें है। जोशीमठपर अलकनन्दाका भी धौली गङ्गासे सङ्गम हुआ है। वसुधारा-प्रपातके निकटसे अलकनन्दाके दर्शन होते हैं और वहीं उसका उद्गम है। धारटोलीमें अखा नदी इससे मिलती है। यहाँ अलकनन्दा सरस्वती कहलाती है। अनेक छोटी-छोटी धाराओंका इस ओर अलकनन्दासे सङ्गम होता है। नन्दा-देवीके बेसिनसे ऋषि-गङ्गाका फिर सङ्गम है। धौली-गङ्गाका उद्गम १६,६२८ फुट ऊँचेपर स्थित नीति दर्रा

है। मलारी ग्राममें गिरथी नदी इसमें मिली है। धौली-गङ्गासे विष्णुप्रयागमें सङ्गम होनेके बाद नदीका नाम अलकनन्दा पड़ता है। त्रिशूलके पश्चिमी ढालवाले ग्लेशियरसे निकली मन्दाकिनी नदीका विष्णुप्रयागमें अलकनन्दासे सङ्गम है। नन्दकोटके पिंडारी ग्लेशियरसे निकली पिण्डर नदीका कर्णप्रयागमें अलकनन्दासे सङ्गम है। मन्दाकिनी नदीका उद्गम केदारनाथके पाससे है। रुद्रप्रयागमें मन्दाकिनीका अलकनन्दासे सङ्गम है। लक्ष्मणझूलेसे केदारनाथतक गङ्गाके किनारे स्थित देवप्रयाग एवं श्रीनगरसे रुद्रप्रयाग, गुप्तकाशी आदि होते हुए जाते हैं। ऊषीमठ, मन्दाकिनी नदीकी घाटीमें है। अलकनन्दाकी घाटीमें चमोली है। केदारनाथसे ऊषीमठ तथा तुङ्गनाथ होते चमोली आते हैं। चमोलीसे बदरीनाथको जाते हैं। भागीरथीसे अलकनन्दाका सङ्गम देवप्रयागमें होनेके बाद, व्यास-घाटपर नायर-सङ्गम होता है। पूर्वी नायर तथा पश्चिमी नायर दोनों धाराएँ भटकोलीमें मिल जाती हैं। व्यास-घाटसे लक्ष्मणझूलेतक गङ्गाका बहाव पश्चिमकी ओर है। इस प्रकार हम देखते हैं कि देवप्रयागके बादसे गङ्गा कहलानेवाली अलकनन्दा तथा भागीरथी दोनों आपसमें मिलकर गङ्गा नामसे लक्ष्मणझूलेकी ओर बहती हैं।

लक्ष्मणझूलेमें गङ्गा कम चौड़ी किंतु अधिक गहरी और काफी नीचे खड्डमें प्रबल वेगसे घहराती हुई बहती हैं। यहाँसे ३ मील गङ्गातटपर ऋषिकेश है। चन्दन वाराव नदीका यहाँ सङ्गम है। फिर लगभग १० मील बाद रायवालाके निकट सङ्ग तथा सुसवाका गङ्गासे सङ्गम होता है। सुसवा नदी आसारोरी-देहरा सड़कके पूर्व एक जलाशयसे निकली है। रिसपान राव और किन्दल नदियाँ सुसवामें मिलती हैं। सङ्ग नदी कंस रावसे थोड़ी दूरपर सुसवासे मिली है, जिसका उद्गम टेहरीमें है। फिर लगभग २ मील नीचे जाखन राव सुसवासे मिली है।

लक्ष्मणझूलेसे गङ्गा गढ़वाल और देहरादून जिलोंकी सीमापर बहती हुई हरिद्वारतक आती है। सर्वनाथ-मन्दिरके पास लालताखका गङ्गासे सङ्गम है। मायापुर स्थानसे १८५५ ई० में गङ्गासे नहर निकाली गयी थी, जो लगभग ६१५ मील बहकर फिर कानपुरमें गङ्गासे मिल जाती है। गङ्गाकी अनेक धाराएँ हो जाती हैं। मुख्य धारा नीलधारा कहलाती है। मायापुरसे लगभग एक मील बाद कनखलमें नीलधारा गङ्गामें मिल जाती है। कनखलसे लगभग ४ मील नीचे बाणगङ्गा, जो गङ्गाकी ही एक शाखा थी, गङ्गासे मिल जाती है। हरिद्वारके बाद सहारनपुर जिलेमें गङ्गा आती है और पूर्वकी ओर बहती है।

नदीकी प्रायः तीन अवस्थाएँ होती हैं—(१) पर्वतीय अवस्था, (२) मैदानी अवस्था, (३) डेल्टा अवस्था। हरिद्वारतक गङ्गाकी पहली अवस्था रहती है और उसके बाद गङ्गाकी द्वितीय अवस्था प्रारम्भ हो जाती है। बालावलीके बाद नदीके तलमें पत्थर मिलना बहुत कम हो जाता है और धाराकी तीव्रता भी कम हो जाती है। पहाड़ी प्रदेश पार करनेपर भाभरके इलाकेमें नदीका प्रवेश हो चुकता है। फिर गङ्गा-नदीका प्रवेश बिजनौर जिलेमें होता है। गढ़वालसे निकली पैलीराव नदी शामपुरसे दो मील नीचे गङ्गासे मिलती है। यहाँसे लगभग चार मील दक्षिण-पश्चिम लालभंगके निकट खासन नदी आकहू-गङ्गामें मिलती है। कोटवाली रावका सङ्गम आसफगढ़के निकट हुआ है। सैफपुर खादरसे निकली हुई लहपी नदी रावली झीलमें मिल जाती है। गढ़वालसे निकली मालिन नदी नजीबाबाद परगनेमें तीन धाराओंमें विभक्त हो जाती है—पश्चिमवालीको रतनाल और पूर्ववालीको रिवारी कहते हैं। रतनाल, साहनपुरके पास और रिवारी भोगपुरके पास मालिनसे मिल जाती है और फिर रावलीके पास स्वयं मालिन नदी गङ्गासे मिल जाती है। कण्वऋषिका आश्रम यहीं था। नजीबाबाद परगनेके समीपुर ग्रामसे निकली छोइया नदीका सङ्गम जहानाबादसे २ मील नीचे होता है। इसकी सहायक नदियाँ, खलिया और पदोही क्रमशः पडला और मेमनके निकट मिल जाती हैं।

इसके बाद गङ्गा मुजफ्फरनगर जिलेमें बहती है। गङ्गातटपर शुकताल नामक स्थानपर ही राजा परीक्षित्को शुकदेवजीने कथा सुनायी थी। पूर्वकी ओर बहती हुई गङ्गा फिर मेरठ जिलेमें प्रवेश करती है। बूढ़गङ्गा मुजफ्फरनगरसे फीरोजपुर ग्रामके निकट इस जिलेमें प्रवेश करती है और गढ़मुक्तेश्वरमें उसका गङ्गासे संगम होता है। इस जिलेमें गङ्गातटपर गढ़मुक्तेश्वर तथा पूठ—दो ही प्रमुख स्थान हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि हरिद्वारतक गङ्गा पर्वतीय भागपर बहती है और फिर वहाँसे पूठतक भाभर तथा खादरके दलदली जंगलों आदिको यह पार करती है। इसके बाद नदी मैदानमें

आ जाती है। यहाँ नदीका बुलंदशहर जिलेमें प्रवेश हो जाता है। गङ्गातटपर अहार, अनूपशहर, राजघाट तथा रामघाट बसे हुए प्रसिद्ध स्थान हैं। अहार प्राचीन स्थान है। यहीं महाराज जनमेजयने नाग-यज्ञ किया था। मोहम्मदपुर ग्राम भी गङ्गातटपर अपने चैत्र-वैशाखके नागराजके मेलेके लिये प्रसिद्ध है। यहाँ अम्बिकादेवीका मन्दिर है। कुछ लोग कहते हैं कि भगवान् श्रीकृष्णने यहींसे रुक्मिणीका हरण किया था। अहारसे ८ मील दक्षिण अनूपशहर है। कार्तिक-पूर्णिमा तथा फाल्गुनमें यहाँ मेले लगते हैं। यहाँसे ८ मील दक्षिण दानवीर कर्णका बसाया कर्णवास स्थान है। यहाँ कल्याणीदेवीका प्रसिद्ध मन्दिर है। कर्णशिला यहाँका दर्शनीय ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ गङ्गा-दशहरापर बड़ा भारी मेला लगता है। कर्णवाससे ३ मील दक्षिण राजघाट है। यहाँसे चार मील दक्षिण नरोरा स्थान है, जहाँसे लोअर-गङ्गानहर निकाली गयी है। यहाँसे ४ मील दक्षिण प्रसिद्ध तीर्थ रामघाट है। कार्तिकी तथा वैशाखी पूर्णिमा एवं गङ्गा-दशहरापर यहाँ प्रसिद्ध मेले लगते हैं। कोयल स्थानमें कोलापुर दैत्यका वध करनेके बाद बलदाऊजीने इसे बसाया था। बिजनौरसे निकलकर गङ्गा मुरादाबाद जिलेमें आती है। कृष्णी और बैया नदियाँ आजमगढ़के निकट धाव झीलमें मिलती हैं। बैया इससे निकलकर टिगरीके पास गन्दौलीपर गङ्गासे मिलती है। यहाँ अनेक छोटी-मोटी धाराएँ गङ्गासे मिलती हैं। इस भागमें अनेक छोटी-मोटी झीलें हैं। अनेक धाराएँ उनमेंसे निकलतीं तथा उनमें मिलती रहती हैं। बाढ़के समय गङ्गाका जल इन अनेक झीलोंके जलसे मिलकर पृथ्वीको जलमग्न कर देता है। उसके बाद गङ्गा बदाऊँ जिलेमें प्रवेश करती है। इस भागमें भी अनेक झीलें हैं तथा अनेक छोटी-मोटी धाराएँ इनमें गिरती-निकलती रहती हैं। महावा नदी मुरादाबाद जिलेसे निकलती है। सहसवानमें इससे छोइया नदी आकर मिलती है और यह स्वयं उझियानी परगनामें गङ्गासे मिल जाती है। बदाऊँसे १७ मील दूर कछला नामक स्थानपर गङ्गाका बड़ा मेला गङ्गा-दशहरापर लगता है। कछलासे ६ मील ककोरा स्थानपर भी कार्तिक-पूर्णिमाको बड़ा मेला लगता है। फिर गङ्गाका प्रवेश एटा जिलेमें होता है। गङ्गासे ४ मील दूर बूढ़गङ्गापर प्रसिद्ध सोरों तीर्थ है। गङ्गातटपर कादिरगंज नामक प्रसिद्ध स्थान है। एटा जिलेके बाद गङ्गाका प्रवेश शाहजहाँपुर जिलेमें होता है। ढाईघाट नामक स्थानपर कार्तिक-पूर्णिमाको बड़ा मेला लगता है। इसके बाद गङ्गा फर्रुखाबाद जिलेमें आती है। कुसुमखोर और दाईपुर तटवर्ती प्रसिद्ध स्थान हैं। इन जिलोंमें गङ्गासे कई धाराएँ निकलती और मिलती हैं। कम्पिल स्थानमें ऐसी ही एक धारा दो भागोंमें विभाजित हो जाती है, जिनमेंसे एक धारा तो उत्तरकी ओर बहती हुई गङ्गामें मिलती है और दूसरी अजीजाबादके पास गङ्गासे मिली है। फीरोजपुर-कटरीके पास काली नदीका गङ्गासे संगम है। बूढगङ्गापर कम्पिल प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ द्रौपदीका स्वयंवर हुआ था। गङ्गासे अलग हुई धाराओंको लोग बूढगङ्गाके नामसे पुकारते हैं। गङ्गातटपर फर्रुखाबाद प्रसिद्ध स्थान है। फतेहगढ़ यहाँसे ३ मील है। फतेहगढ़से ११ मील दक्षिण सिंधीरामपुर प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ कार्तिक-पूर्णिमा तथा गङ्गा-दशहरापर बड़े मेले लगते हैं। फिर गङ्गा हरदोई जिलेमें बहती है। हैदराबादके पास रामगङ्गा इससे आकर मिली है। इसके बाद गङ्गाका प्रवेश कानपुर जिलेमें होता है। इस जिलेमें गङ्गाकी सहायक ईसन और नोन दो ही नदियाँ हैं। ईसन नदीका उद्गम अलीगढ़ जिलेमें है। महगावाँके निकट इसका गङ्गासे संगम है। नोन नदीका उद्गम बिल्हौर तहसील है। बिठूरके पास इसका गङ्गासे सङ्गम है। पाण्डु नदीका उद्गम फर्रुखाबाद है। इसका गङ्गासे सङ्गम फतेहपुरसे ३ मील आगे हुआ है। बिल्हौरमें नई, शिवराजपुरमें लौखा, कानपुरमें भोनी तथा नरवलमें फगइया और भोनरी नदियाँ गङ्गासे मिली हैं। गङ्गातटपर नानामऊ स्थान है जो बिल्हौरसे ४ मील दूर है। इसीके लिये कहावत प्रसिद्ध है—'देशभरका मुर्दा और नानामऊका घाट।' सरैयाघाट तथा बदीमाताघाट गङ्गा-तटपर प्रसिद्ध स्थान हैं। बिठूर गङ्गातटपर अत्यन्त प्रसिद्ध तीर्थ है। कार्तिक-पूर्णिमाको यहाँ तथा कानपुरमें, जो गङ्गातटपर प्रसिद्ध नगर है, बड़े मेले लगते हैं। इसके बाद गङ्गाका प्रवेश उन्नाव जिलेमें होता है। मरौंदाके निकट कल्याणीका गङ्गासे संगम है। डैंडियाखेरा नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान गङ्गातटपर है तथा यहाँसे ३ मील बकसर नामक प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ कार्तिक-पूर्णिमाको बड़ा मेला लगता है। फिर गङ्गा रायबरेली जिलेमें आती है। इटौरा बुजुर्गके जलविभाजकके दक्षिणसे निकली हुई छोब नदी शहजादपुरके पास गङ्गासे मिलती है। उन्नाव जिलेसे निकली लोनी नदी डलमऊके निकट गङ्गासे मिलती है। गङ्गातटपर खजूरगाँव

प्रसिद्ध स्थान है। डलमऊ यहाँसे ५ मील है। कार्तिक-पूर्णिमाको यहाँ भी बड़ा मेला लगता है। फिर गङ्गाका प्रवेश फतेहपुर जिलेमें होता है। गङ्गातटपर शिवराजपुर एक अच्छा स्थान है। यहाँ भी कार्तिक-पूर्णिमाको मेला लगता है। तदनन्तर गङ्गाका प्रवेश इलाहाबाद जिलेमें होता है। शृंगरौर (शृंगवेरपुर) गङ्गा-तटपर प्राचीन स्थान है। फाफामऊके बाद प्रयागमें गङ्गा-यमुनाका प्रसिद्ध संगम है। पहले सरस्वती नदीका भी गङ्गामें संगम था और इसीसे संयुक्त धाराका 'त्रिवेणी' नाम पड़ा था। गङ्गाके उस पार झूँसी या प्रतिष्ठानपुर अति प्राचीन स्थान है। यमुना-पार अरैल स्थानमें शिवरात्रिपर बड़ा मेला लगता है। प्रत्येक वर्ष मकर-संक्रान्तिपर, छठे वर्ष अर्धकुम्भी तथा बारहवें वर्ष कुम्भके अवसरपर लाखों यात्री सङ्गम-स्नानके लिये आते हैं। सिरसानगर, लच्छागिर आदि प्रसिद्ध स्थान गङ्गातटपर हैं। बैरगिया नाला गङ्गासे मिलता है। स्वर्गीय रायबहादुर श्रीसीतारामकी प्रसिद्ध कविता 'बैरगिया नाला जुलुम जोर' इसीके आधारपर लिखी गयी थी। गङ्गातटपर कुटवा, चक सराय दौलतअली, अकबरपुर, शाहजादपुर, कीहइनाम, संजैती, पट्टीनरवर, कोराईउजहनी, उजहनी पट्टी कासिम, उमरपुर निरावन, दारागंज, अरैल, लवाइन, मनैया, डीहा, लकटहा, सिरसा, बिजौर, मदरा मुकुन्दपुर, परनीपुर, चौखटा और डींगरपुरमें गङ्गा-पार करनेके घाट हैं। फिर गङ्गा मिर्जापुर जिलेमें प्रवेश करती है। विन्ध्याचल, मिर्जापुर तथा चुनार गङ्गातटपर प्रसिद्ध नगर हैं। अनेक नाले गङ्गाके इस भागमें मिले हैं। जिरगो नाला चुनारके पास गङ्गासे मिला है। विलवा, दहवा, खजूरी, लिगड़ा, करनौटी आदि अन्य स्थान हैं। फिर गङ्गा बनारस जिलेमें आती है। सुभा नाला बेतावर गाँवके पास गङ्गासे मिला है। रामनगर तथा काशीके प्रसिद्ध नगर इसके तटपर बसे हैं। बरनाका काशीमें गङ्गासे संगम है। आगे चलकर गोमती नदी भी गङ्गासे मिलती है। इसके बाद गाजीपुर जिलेमें गङ्गा प्रवेश करती है। यहाँ कई छोटी-छोटी धाराएँ गङ्गामें मिलती हैं। गङ्गातटपर गाजीपुर प्रसिद्ध नगर है। इसके बाद गङ्गा बलिया जिलेमें प्रवेश करती है। गङ्गातटपर बलिया प्रसिद्ध नगर है तथा अपने मेलेके लिये प्रसिद्ध है। इसके बाद गङ्गाका प्रवेश शाहाबाद जिलेमें होता है। शाहाबादके पास कर्मनाशा नदीका गङ्गासे संगम होता है। पर अबतक गङ्गा उत्तरप्रदेश प्रान्तको छोड़ चुकती है और बिहार प्रान्तमें आ जाती है, अतः हमारा वर्णन भी अब समाप्त होता है।*

इस प्रकार गङ्गाके वर्णनमें हमने देखा कि सैकड़ों गाँव, कस्बे तथा प्रसिद्ध नगर इसके तटपर बसे हैं। सैकड़ों छोटे-मोटे तीर्थस्थान तथा ऐतिहासिक और धार्मिक स्थान इसके तटपर सुशोभित हैं। गङ्गाके पग-पगपर तीर्थ हैं। गङ्गा स्वयं तीर्थ-स्वरूपिणी है।

एक बात और याद रखनी चाहिये। गङ्गा सदासे अपना मार्ग बदलती रही है, यद्यपि यह कार्य बहुत धीरे-धीरे होता है। फलस्वरूप प्राचीन कालमें जिन स्थानोंपर गङ्गा बहती थी और तदनुसार जो स्थान उस समय महत्त्वपूर्ण थे, आज उनमेंसे बहुतेरे स्थानोंको गङ्गा छोड़ चुकी है और उनका पहले-जैसा महत्त्व नहीं है। साथ ही जहाँ पहले वे नहीं थीं, उन स्थानोंपर आज गङ्गाजी बह रही हैं।

इतने बड़े प्रान्तमें असंख्य गाँव, कस्बे और नगर हैं। और प्रत्येक स्थानमें अनेक देवमन्दिर तथा प्रसिद्ध धार्मिक स्थल हैं। किंतु इस प्रान्तमें कुछ अत्यधिक प्रसिद्ध तीर्थ हैं। उत्तरी पर्वतीय भागमें हरिद्वार, बदरी-धाम, केदारनाथ, गङ्गोत्तरी, यमुनोत्तरी आदि हैं। दक्षिणी पर्वतीय भागमें विन्ध्याचल तथा चित्रकूट आदि हैं तथा मैदानी भागमें काशी, सारनाथ, अयोध्या, प्रयाग, गोला गोकर्णनाथ, बिठूर, नैमिषारण्य-मिश्रिख, हत्याहरण, व्रजके समस्त स्थान (मथुरा, दुर्वासाश्रम, वृन्दावन, रावल, गोकुल, महावन, रमणरेती, ब्राह्मणघाट, बड़े दाऊजी, गोवर्धन, जतीपुरा, राधाकुण्ड, डीग, कामवन, कोसी, छाता, नन्दगाँव, प्रेमसरोवर, बरसाना, मधुवन, कुमुदवन आदि), देवीपाटन, सोरों (वाराहतीर्थ या सूकर क्षेत्र), गढमुक्तेश्वर, नटेश्वर, रामघाट आदि प्रसिद्ध तीर्थस्थान हैं।

भारतवर्षके चार धामों (बदरीनाथ, जगन्नाथपुरी, द्वारकापुरी तथा रामेश्वर) मेंसे एक धाम बदरीनाथ उत्तरप्रदेशमें है। भारतकी सप्तपुरियों—अयोध्या, मथुरा, द्वारका, माया (हरिद्वार), काञ्ची, उज्जैन तथा काशीमें—चार पुरियाँ—अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार तथा काशी इस प्रान्तमें हैं। भारतके बारह ज्योतिर्लिङ्गों (सोमनाथ, त्र्यम्बकेश्वर, ओंकारेश्वर, महाकालेश्वर, केदारनाथ, विश्वनाथ, वैद्यनाथ, रामेश्वर, मल्लिकार्जुन, नागनाथ, धृष्णेश्वर तथा

* गङ्गा-सम्बन्धी वर्णन 'भूगोल' के विशेषाङ्क 'गङ्गा-अङ्क' के आधारपर है।

भीमशङ्कर) में केदारनाथ तथा काशी-विश्वनाथ दो इसी प्रान्तमें हैं। मथुरा तथा बरसाना, काशी तथा विन्ध्याचलमें प्रसिद्ध शक्ति-पीठ हैं। देवी-भक्तोंके लिये ये स्थान बड़े महत्त्वके हैं। सारनाथ, कुशीनगर तथा श्रावस्ती बौद्धोंके तीर्थ हैं।

सिख, बौद्ध तथा जैन सभी धर्म हिंदू-धर्मके अन्तर्गत समझने चाहिये। प्रान्तमें अनेक स्थानोंपर सिखों, बौद्धों तथा जैनियोंके गुरुद्वारे, मठ तथा मन्दिर भी मिलेंगे। अनेक नवीन स्थान भी अब प्रसिद्ध हो रहे हैं। लखनऊ जिलेमें बक्सी तालाबसे लगभग ६ मील दूर देवीका प्रसिद्ध स्थान चन्द्रिकादेवी है, जहाँ प्रति अमावस्याको १०-१५ हजार भक्त जाते हैं। चैत्र तथा कुँआरमें देवीके स्थानोंमें मेले लगते हैं। रामनवमी आदिपर राम-भक्तोंके तथा जन्माष्टमी आदिपर कृष्ण-भक्तोंके धार्मिक उत्सव होते हैं। शिवरात्रि आदि शैवोंके प्रसिद्ध पर्व हैं। गङ्गा-दशहरा, कार्तिक-पूर्णिमा तथा अमावस्या आदि तिथियों तथा ग्रहण आदिके अवसरोंपर गङ्गा तथा यमुना आदि नदियोंपर बड़े मेले लगते हैं। अनेक अन्य पर्वोंपर भी विभिन्न स्थानोंमें मेले लगते हैं। उत्तरप्रदेशका इस दृष्टिसे भारतमें बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

भगवन्नाम सर्वोपरि तीर्थ

भक्त प्रह्लाद कहते हैं—

कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति कलौ वक्ष्यति प्रत्यहम्।
नित्यं यज्ञायुतं पुण्यं तीर्थकोटिसमुद्भवम्॥

(स्कन्द० द्वारका मा० ३८। ४५)

कलियुगमें जो प्रतिदिन 'कृष्ण', 'कृष्ण', 'कृष्ण' उच्चारण करेगा, उसे नित्य दस हजार यज्ञ तथा करोड़ों तीर्थोंका फल प्राप्त होगा।

यावन्ति भुवि तीर्थानि जम्बूद्वीपे तु सर्वदा।
तानि तीर्थानि तत्रैव विष्णोर्नामसहस्रकम्॥
तत्रैव गङ्गा यमुना च वेणी गोदावरी तत्र सरस्वती च।
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्र स्थितं नामसहस्रकं तत्॥

(पद्म० उत्तर० ७२। ९-१०)

जहाँ विष्णु भगवान्के सहस्रनामका पाठ होता है, वहीं पृथ्वीपर जम्बूद्वीपके जितने तीर्थ हैं, वे सब सदा निवास करते हैं। जहाँ भगवान्का सहस्रनाम विराजित है, वहीं गङ्गा, यमुना, कृष्णावेणी, गोदावरी, सरस्वती—नहीं, नहीं, समस्त तीर्थ निवास करते हैं।

तत्र पुत्र गया काशी पुष्करं कुरुजाङ्गलम्।
प्रत्यहं मन्दिरे यस्य कृष्ण कृष्णेति कीर्तनम्॥

(स्कन्द० वै० मार्ग० मा० १५। ५०)

भगवान् (ब्रह्माजी) कहते हैं—वत्स! जिसके घरमें प्रतिदिन 'कृष्ण', 'कृष्ण' का कीर्तन होता है, वहीं गया, काशी, पुष्कर तथा कुरुजाङ्गल (तीर्थ) रहते हैं।

सकृन्नारायणेत्युक्त्वा पुमान् कल्पशतत्रयम्।
गङ्गादिसर्वतीर्थेषु स्नातो भवति निश्चितम्॥

(ब्रह्मवैवर्त०)

जो पुरुष एक बार 'नारायण' नामका उच्चारण कर लेता है, वह निश्चित ही तीन सौ कल्पोंतक गङ्गादि समस्त तीर्थोंमें स्नान कर चुकता है।

सर्वेषामेव यज्ञानां लक्षाणि च व्रतानि च।
तीर्थस्नानानि सर्वाणि तपांस्यनशनानि च॥
वेदपाठसहस्राणि प्रादक्षिण्यं भुवः शतम्।
कृष्णनामजपस्यास्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥

(ब्रह्मवैवर्त०)

समस्त यज्ञ, लाखों व्रत, सम्पूर्ण तीर्थोंका स्नान, सब प्रकारके तप, अनशनादि व्रत, सहस्रों वेदपाठ, पृथ्वीकी सौ परिक्रमाएँ—ये सब श्रीकृष्ण-नाम-जपकी सोलहवीं कलाके बराबर भी नहीं हैं।

राम रामेति रामेति रामेति च पुनर्जपन्।
स चाण्डालोऽपि पूतात्मा जायते नात्र संशयः॥
कुरुक्षेत्रं तथा काशी गया वै द्वारका तथा।
सर्वं तीर्थं कृतं तेन नामोच्चारणमात्रतः॥

(पद्मपुराण, उत्तर० ७१। २०-२१)

'राम,', 'राम', 'राम', 'राम'—इस प्रकार बार-बार जप करनेवाला चाण्डाल हो तो भी वह पवित्रात्मा हो जाता है—इसमें कोई संदेह नहीं है। उसने केवल नामका उच्चारण करते ही कुरुक्षेत्र, काशी, गया और द्वारका आदि सम्पूर्ण तीर्थोंका सेवन कर लिया।

किं वै तीर्थे कृते तात पृथिव्यामटने कृते।
यस्य वै नाममहिमा श्रुत्वा मोक्षमवाप्नुयात्॥
तन्मुखं तु महत्तीर्थं तन्मुखं क्षेत्रमेव च।
यन्मुखे राम रामेति तन्मुखं सार्वकामिकम्॥

(पद्मपुराण, उत्तरखण्ड ७१। ३३-३४)

देवर्षि नारदजी कहते हैं—जिनके नामका ऐसा

माहात्म्य है कि उसके सुनने मात्रसे मोक्षकी प्राप्ति हो जाती है, उनका आश्रय छोड़कर तीर्थसेवनके लिये पृथ्वीपर भटकनेकी क्या आवश्यकता है। जिस मुखमें 'राम-राम' का जप होता रहता है, वह मुख ही महान् तीर्थ है, वही प्रधान क्षेत्र है तथा वही समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाला है।

तन्मुखं परमं तीर्थं यत्रावर्तं वितन्वती।
नमो नारायणायेति भाति प्राची सरस्वती॥

(पद्मपुराण, उत्तरखण्ड ७१। १७)

जहाँ 'नमो नारायणाय' रूपसे आवर्तका विस्तार करती हुई (इन शब्दोंको दुहराती हुई) प्राची सरस्वती (वाणीरूप नदी) बहती है, वह मुख ही परम तीर्थ है।

अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान् यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम्।
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते॥

(श्रीमद्भागवत ३। ३३। ७)

देवहूतिजी कहती हैं—अहो! वह चाण्डाल भी सर्वश्रेष्ठ है, जिसकी जिह्वाके अग्रभागपर आपका नाम विराज रहा है। जो आपका नाम उच्चारण करते हैं, उन्होंने तप, हवन, तीर्थ-स्नान, सदाचारका पालन और वेदाध्ययन—सब कुछ कर लिया।

कुरुक्षेत्रेण किं तस्य किं काश्या विरजेन वा।
जिह्वाग्रे वर्तते यस्य हरिरित्यक्षरद्वयम्॥

(नारदमहापुराण, उत्तर० ७। ४)

ब्रह्माजी कहते हैं—जिसकी जिह्वाके अग्रभागपर 'हरि' ये दो अक्षर विराजमान हैं, उसे कुरुक्षेत्र, काशी और विरज-तीर्थके सेवनकी क्या आवश्यकता है।

इस प्रकार तीर्थोंकी तुलनामें भगवन्नामका माहात्म्य सर्वत्र गाया गया है। ऊपर उसमेंसे कुछ ही श्लोक उद्धृत किये गये हैं। नामकी महिमा अतुलनीय है। विशेषतया कलियुगके प्राणियोंके लिये तो भगवन्नाम ही एकमात्र परम साध्य और परम साधन है। जिसने नामका आश्रय ले लिया, उसका जीवन निश्चय ही सफल हो चुका। यहाँ नीचे कुछ नाम-महिमाके महान् वाक्योंका अनुवाद किया जाता है। उनसे यदि पाठकोंका ध्यान नाम-जप-कीर्तनकी ओर आकर्षित हुआ और वे भगवन्नाम-जप-कीर्तनमें लग गये तो उनका और जगत्का महान् कल्याण होगा। भगवान्के पवित्र नामोंके जप-कीर्तनमें वर्णाश्रमका कोई नियम नहीं है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अन्त्यज, स्त्री—सभी भगवन्नामके अधिकारी हैं, सभी भगवान्का नाम-कीर्तन करके पापोंसे मुक्त हो सनातन पदको प्राप्त कर सकते हैं।

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः स्त्रियः शूद्रान्त्यजातयः।
यत्र तत्रानुकुर्वन्ति विष्णोर्नामानुकीर्तनम्॥
सर्वपापविनिर्मुक्तास्तेऽपि यान्ति सनातनम्॥

न भगवन्नाममें देश-कालका नियम है, न शुद्धि-अशुद्धिका और न अपवित्र-पवित्र अवस्थाका नियम है। चाहे जहाँ, चाहे जब, चाहे जैसी स्थितिमें—चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते—सभी समय भगवान्के नामका कीर्तन करके मनुष्य बाहर-भीतरसे पवित्र हो परमात्माको प्राप्त कर लेता है।

भगवान् विष्णुके पार्षद यमदूतोंसे कहते हैं—

बड़े-बड़े महात्मा पुरुष यह जानते हैं कि संकेतमें (किसी दूसरे अभिप्रायसे), परिहासमें, तान अलापनेमें अथवा किसीकी अवहेलना करनेमें भी यदि कोई भगवान्के नामोंका उच्चारण करता है तो उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य गिरते समय, पैर फिसलते समय, अङ्ग-भङ्ग होते समय और साँपके द्वारा डँसे जाते समय, आगमें जलते तथा चोट लगते समय भी विवशतासे (अभ्यास-वश, बिना किसी प्रयत्नके) 'हरि-हरि' कहकर भगवान्के नामका उच्चारण कर लेता है, वह यमयातनाका पात्र नहीं रह जाता।[१]

यमदूतो! जान या अनजानमें भगवान्के नामोंका संकीर्तन करनेसे मनुष्यके सारे पाप भस्म हो जाते हैं। जैसे कोई परमशक्तिशाली अमृतको उसका गुण न जानकर अनजानमें पी ले, तो भी वह अवश्य ही पीनेवालेको अमर बना देता है, वैसे ही अनजानमें उच्चारित करनेपर भी भगवान्का नाम अपना फल देकर ही रहता है। (वस्तुशक्ति श्रद्धाकी अपेक्षा नहीं करती।)

भगवान् शङ्कर देवी पार्वतीसे कहते हैं—

'राम'—यह दो अक्षरोंका मन्त्र जपे जानेपर समस्त पापोंका नाश करता है। चलते, बैठते, सोते (जब कभी भी) जो मनुष्य राम-नामका कीर्तन करता है, वह यहाँ कृतकार्य होकर जाता है और अन्तमें भगवान् हरिका पार्षद बनता है।[२]

१. साङ्केत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव वा। वैकुण्ठनामग्रहणमशेषाघहरं विदुः॥
पतितः स्खलितो भग्नः संदष्टस्तप्त आहतः। हरिरित्यवशेनाह पुमान् नार्हति यातनाम्॥ (श्रीमद्भागवत ६। २। १४-१५)

२. रामेति द्व्यक्षरजपः सर्वपापापनोदकः। गच्छंस्तिष्ठन् शयानो वा मनुजो रामकीर्तनात्॥
इह निर्वर्तितो याति चान्ते हरिगणो भवेत्। (स्कन्दपुराण, नागरखण्ड)

'राम' यह मन्त्रराज है, यह भय एवं व्याधिका विनाशक है। उच्चारित होनेपर यह द्व्यक्षर मन्त्रराज पृथ्वीमें समस्त कार्योंको सफल करता है। गुणोंकी खान इस राम-नामका देवतागण भी भलीभाँति गान करते हैं। अतएव हे देवेश्वरि! तुम भी सदा राम-नाम कहा करो। जो राम-नामका जप करता है, वह सारे पापोंसे (मोहजनित समस्त सूक्ष्म और स्थूल पापोंसे) छूट जाता है।

मुनि आरण्यक भगवान् श्रीरामभद्रसे कहते हैं—

श्रीराघवेन्द्र! ब्रह्महत्याके समान पाप भी तभीतक गर्जते हैं, जबतक आपके नामोंका स्पष्टरूपसे उच्चारण नहीं किया जाता। आपके नामोंकी गर्जना सुनकर महापातकरूपी मतवाले हाथी कहीं छिपनेके लिये जगह ढूँढ़ते हुए भाग खड़े होते हैं। महान् पाप करनेके कारण कातर हृदयवाले मनुष्योंको तभीतक पापका भय रहता है, जबतक वे अपनी जीभसे परम मनोहर राम-नामका उच्चारण नहीं करते।[१]

भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं ब्रह्माजीसे कहते हैं—

जो 'कृष्ण! कृष्ण!! कृष्ण!!!' यों कहकर मेरा प्रतिदिन स्मरण करता है, उसे—जिस प्रकार कमल जलको भेदकर ऊपर निकल आता है, उसी प्रकार—मैं नरकसे उबार लेता हूँ।[२] जो विनोदसे, पाखण्डसे, मूर्खतासे, लोभसे अथवा छलसे भी मेरा भजन करता है, वह मेरा भक्त कभी कष्टमें नहीं पड़ता। मृत्युकाल उपस्थित होनेपर जो कृष्णनामकी रट लगाते हैं, वे यदि पापी हों तो भी कभी यमराजका दर्शन नहीं करते। पूर्व-अवस्थामें किसीने सम्पूर्ण पाप किये हों, तथापि यदि वह अन्तकालमें श्रीकृष्ण-नामका स्मरण कर लेता है तो निश्चय ही मुझे प्राप्त होता है। मृत्युकाल उपस्थित होनेपर यदि कोई 'परमात्मा श्रीकृष्णको नमस्कार है' इस प्रकार विवश होकर भी कहे तो वह अविनाशी पदको प्राप्त होता है। जो श्रीकृष्णका उच्चारण करके प्राणत्याग करता है, उसे प्रेतराज यम दूरसे ही खड़े होकर भगवद्धाममें जाते देखते हैं। यदि 'कृष्ण-कृष्ण' रटता हुआ कोई श्मशानमें अथवा रास्तेमें भी मर जाता है तो वह भी मुझे ही प्राप्त होता है—इसमें संशय नहीं है। जो मेरे भक्तोंका दर्शन करके कहीं मृत्युको प्राप्त होता है, वह मनुष्य मेरा स्मरण किये बिना भी मोक्ष प्राप्त कर लेता है।[३] बेटा! पापरूपी प्रज्वलित अग्निसे भय न करो, श्रीकृष्णके नामरूपी मेघोंके जलकी बूँदोंसे उसे सींचकर बुझा दिया जा सकता है। तीखी दाढ़ोंवाले कलिकालरूपी सर्पका क्या भय है? श्रीकृष्णके नामरूपी ईंधनसे उत्पन्न आगके द्वारा वह जलकर नष्ट हो जाता है।[४] पापरूपी अग्निसे दग्ध होकर जो सत्कर्मकी चेष्टासे शून्य हो गये हैं, ऐसे मनुष्योंके लिये श्रीकृष्णके नाम-स्मरणके सिवा दूसरी कोई औषध नहीं है। संसार-समुद्रमें डूबकर जो महान् पापोंकी लहरोंमें गिर गये हैं, ऐसे मनुष्योंके लिये श्रीकृष्ण-स्मरणके सिवा दूसरी कोई गति नहीं है। जो पापी हैं, किंतु जो मरना नहीं चाहते, ऐसे मनुष्योंके लिये मृत्युकालमें श्रीकृष्ण-चिन्तनके सिवा परलोक-यात्राके उपयुक्त दूसरा कोई पाथेय (राहखर्च) नहीं है। उसीका जन्म और जीवन सफल है तथा उसीका मुख सार्थक है, जिसकी जिह्वा सदा 'कृष्ण-कृष्ण' की रट लगाये रहती है। समस्त पापोंको भस्म कर डालनेके लिये मुझ भगवान्‌के नाममें जितनी शक्ति है, उतना पातक कोई पातकी मनुष्य कर ही नहीं सकता।[५] 'कृष्ण-कृष्ण' के कीर्तनसे मनुष्यके शरीर और मन कभी श्रान्त नहीं होते, उसे पाप नहीं लगता और विकलता भी नहीं होती। जो श्रीकृष्णनामोच्चारणरूपी पथ्यका कलियुगमें त्याग नहीं करता, उसके चित्तमें पापरूपी रोग नहीं पैदा होते। श्रीकृष्ण-नामका कीर्तन करते हुए मनुष्यकी आवाज सुनकर दक्षिणदिशाके अधिपति यमराज उसके सौ जन्मोंके पापोंका परिमार्जन कर देते हैं। सैकड़ों चान्द्रायण

१. तावत् पापभयः पुंसां कातराणां सुपापिनाम्। यावन्न वदते वाचा रामनाम मनोहरम्॥

२. कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति यो मां स्मरति नित्यशः। जलं भित्त्वा यथा पद्मं नरकादुद्धराम्यहम्॥ (स्कन्द० वैष्णव० सर्ग० १५। ३६)

३. दर्शनान्मम भक्तानां मृत्युमाप्नोति यः क्वचित्। विना मत्स्मरणात् पुत्र मुक्तिमेति स मानवः॥ (१५। ४३)

४. पापानलस्य दीप्तस्य भयं मा कुरु पुत्रक। श्रीकृष्णनाममेघोत्थैः सिच्यते नीरबिन्दुभिः॥
कलिकालभुजङ्गस्य तीक्ष्णदंष्ट्रस्य किं भयम्। श्रीकृष्णनामदारूत्थवह्निदग्धः स नश्यति॥ (१५। ४४-४५)

५. जीवितं जन्म सफलं मुखं तस्यैव सार्थकम्। सततं रसना यस्य कृष्ण कृष्णेति जल्पति॥
नाम्नोऽस्य यावती शक्तिः पापनिर्दहने मम। तावत् कर्तुं न शक्नोति पातकं पातकी जनः॥ (१५। ५१—५३)

और सहस्रों पराक-व्रतसे जो पाप नष्ट नहीं होता, वह 'कृष्ण-कृष्ण' की ध्वनिसे चला जाता है। कोटि-कोटि चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहणमें स्नान करनेसे जो फल बतलाया गया है, उसे मनुष्य 'कृष्ण-कृष्ण' के कीर्तनमात्रसे पा लेता है। जो जिह्वा कलिकालमें श्रीकृष्णके गुणोंका कीर्तन नहीं करती, वह दुष्टा मुँहमें न रहे, रसातलको चली जाय। जो कलियुगमें श्रीकृष्णके गुणोंका प्रयत्नपूर्वक कीर्तन करती है, वह जिह्वा अपने मुखमें हो या दूसरेके मुखमें, वन्दना करने योग्य है। जो दिन-रात श्रीकृष्णके गुणोंका कीर्तन नहीं करती, वह जिह्वा नहीं—मुखमें कोई पापमयी लता है, जिसे जिह्वाके नामसे पुकारा जाता है। जो 'श्रीकृष्ण, कृष्ण, कृष्ण, श्रीकृष्ण' इस प्रकार श्रीकृष्णनामका कीर्तन नहीं करती, वह रोगरूपिणी जिह्वा सौ टुकड़े होकर गिर जाय।[१]

योगेश्वर सनकजी श्रीनारदजीसे कहते हैं—

सत्ययुगमें ध्यान, त्रेतामें यज्ञोंद्वारा यजन और द्वापरमें भगवान्‌का पूजन करके मनुष्य जिस फलको पाता है, उसे ही कलियुगमें केवल भगवान् केशवका कीर्तन करके पा लेता है।

जो मानव निष्काम अथवा सकामभावसे '**नमो नारायणाय**' का कीर्तन करते हैं, उनको कलियुग बाधा नहीं देता।

जो लोग प्रतिदिन 'हरे! केशव! गोविन्द! जगन्मय! वासुदेव!' इस प्रकार कीर्तन करते हैं, उन्हें कलियुग बाधा नहीं पहुँचाता; अथवा जो शिव, शङ्कर, रुद्र, ईश, नीलकण्ठ, त्रिलोचन इत्यादि महादेवजीके नामोंका उच्चारण करते हैं, उन्हें भी कलियुग बाधा नहीं देता। नारदजी! 'महादेव! विरूपाक्ष! गङ्गाधर! मृड! और अव्यय!' इस प्रकार जो शिव-नामोंका कीर्तन करते हैं, वे कृतार्थ हो जाते हैं। अथवा जो 'जनार्दन! जगन्नाथ! पीताम्बरधर! अच्युत!' इत्यादि विष्णु-नामोंका उच्चारण करते हैं, उन्हें इस संसारमें कलियुगसे भय नहीं है।

भगवन्नाममें अनुरक्त चित्तवाले पुरुषोंका अहोभाग्य है, अहोभाग्य है! वे देवताओंके लिये भी पूज्य हैं! इसके अतिरिक्त अन्य अधिक बातें कहनेसे क्या लाभ। अतः मैं सम्पूर्ण लोकोंके हितकी बात कहता हूँ कि भगवन्नाम-परायण मनुष्योंको कलियुग कभी बाधा नहीं दे सकता! भगवान् विष्णुका नाम ही, नाम ही, नाम ही मेरा जीवन है! कलियुगमें दूसरी कोई गति नहीं है, नहीं है, नहीं है।'[२]

श्रीश्रुतदेव कहते हैं—

हँसीमें, भयसे, क्रोधसे, द्वेषसे, कामसे अथवा स्नेहसे, पापी-से-पापी मनुष्य भी यदि एक बार श्रीहरिका पापहारी नाम उच्चारण कर लेते हैं तो वे भी भगवान् विष्णुके निरामय धाममें जा पहुँचते हैं।[३]

भक्त प्रह्लादजी कहते हैं—

जो मनुष्य नित्य 'कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण'का जप करता है, कलियुगमें श्रीकृष्णपर उसका निरन्तर प्रेम बढ़ता है।

जो मनुष्य जागते-सोते समय प्रतिदिन 'कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण' कीर्तन करता है, वह श्रीकृष्णस्वरूप हो जाता है।

कलियुगमें श्रीकृष्णका कीर्तन करनेसे मनुष्य अपनी बीती हुई सात पीढ़ियों और आनेवाली चौदह पीढ़ियोंके सब लोगोंका उद्धार कर देता है।[४]

यमराज अपने दूतोंको आदेश देते हैं—'जहाँ भगवान् विष्णु तथा भगवान् शिवके नामोंका उच्चारण होता है, वहाँ मत जाया करो।' इसपर उन्होंने हरि-

---

१. मुखे भवतु मा जिह्वासती यातु रसातलम्। न सा चेत् कलिकाले या श्रीकृष्णगुणवादिनी॥
स्ववक्त्रे परवक्त्रे च वन्द्या जिह्वा प्रयत्नतः। कुरुते या कलौ पुत्र श्रीकृष्णगुणकीर्तनम्॥
पापवल्ली मुखे तस्य जिह्वारूपेण कीर्त्यते। या न वक्ति दिवारात्रौ श्रीकृष्णगुणकीर्तनम्॥
पततां शतखण्डा तु सा जिह्वा रोगरूपिणी। श्रीकृष्ण कृष्ण कृष्णेति श्रीकृष्णेति न जल्पति॥ (१५। ६३—६६)

२. अहो भाग्यमहो भाग्यं हरिनामरतात्मनाम्। त्रिदशैरपि ते पूज्याः किमन्यैर्बहुभाषितैः॥
हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्। कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥
(नारदमहापुराण पूर्व० ११२—११४)

३. हास्याद् भयात्तथा क्रोधाद् द्वेषात् कामादथापि वा। स्नेहाद् वा सकृदुचार्य विष्णोर्नामाघहारि च॥
पापिष्ठा अपि गच्छन्ति विष्णोर्धाम निरामयम्। (स्कन्द० वैष्णवखण्ड वैशाखमाहात्म्य २१। ३६-३७)

४. अतीतान् सप्तपुरुषान् भविष्यांश्च चतुर्दश। नरस्तारयते सर्वान् कलौ कृष्णेति कीर्तनात्॥
(स्कन्द० प्रभासखण्ड द्वारकामाहात्म्य)

हरकी १०८ नामोंकी नामावलि कही है। नामावलिका महत्त्व वर्णन करते हुए अगस्त्यजी कहते हैं—'जो इस धर्मराजरचित, सारे पापोंका बीज-नाश करनेवाली सुललित हरि-हर-नामावलिका नित्य जप करेगा, उसका पुनर्जन्म नहीं होगा।

नामावलि नीचे दी जाती है—

गोविन्द माधव मुकुन्द हरे मुरारे
शम्भो शिवेश शशिशेखर शूलपाणे।
दामोदराच्युत जनार्दन वासुदेव
त्याज्या भटा य इति संततमामनन्ति॥
गङ्गाधरान्तकरिपो हर नीलकण्ठ
वैकुण्ठ कैटभरिपो कमठाब्जपाणे।
भूतेश खण्डपरशो मृड चण्डिकेश
त्याज्या भटा य इति संततमामनन्ति॥
विष्णो नृसिंह मधुसूदन चक्रपाणे
गौरीपते गिरिश शङ्कर चन्द्रचूड।
नारायणासुरनिबर्हण शार्ङ्गपाणे
त्याज्या भटा य इति संततमामनन्ति॥
मृत्युञ्जयोग्र विषमेक्षण कामशत्रो
श्रीकान्त पीतवासनाम्बुदनील शौरे।
ईशान कृत्तिवसन त्रिदशैकनाथ
त्याज्या भटा य इति संततमामनन्ति॥
लक्ष्मीपते मधुरिपो पुरुषोत्तमाद्य
श्रीकण्ठ दिग्वसन शान्त पिनाकपाणे।
आनन्दकन्द धरणीधर पद्मनाभ
त्याज्या भटा य इति संततमामनन्ति॥
सर्वेश्वर त्रिपुरसूदन देवदेव
ब्रह्मण्यदेव गरुडध्वज शङ्खपाणे।
त्र्यक्षोरगाभरण बालमृगाङ्कमौले
त्याज्या भटा य इति संततमामनन्ति॥
श्रीराम राघव रमेश्वर रावणारे
भूतेश मन्मथरिपो प्रमथाधिनाथ।
चाणूरमर्दन हृषीकपते मुरारे
त्याज्या भटा य इति संततमामनन्ति॥
शूलिन् गिरीश रजनीशकलावतंस
कंसप्रणाशन सनातन केशिनाश।
भर्ग त्रिनेत्र भव भूतपते पुरारे
त्याज्या भटा य इति संततमामनन्ति॥
गोपीपते यदुपते वसुदेवसूनो
कर्पूरगौर वृषभध्वज भालनेत्र।
गोवर्धनोद्धरण धर्मधुरीण गोप
त्याज्या भटा य इति संततमामनन्ति॥
स्थाणो त्रिलोचन पिनाकधर स्मरारे
कृष्णानिरुद्ध कमलाकर कल्मषारे।
विश्वेश्वर त्रिपथगार्द्रजटाकलाप
त्याज्या भटा य इति संततमामनन्ति॥
अष्टोत्तराधिकशतेन सुचारुनाम्नां
संदर्भितां ललितारत्नकदम्बकेन।
सन्नामकां दृढगुणां द्विजकण्ठगां यः
कुर्यादिमां स्त्रजमहो स यमं न पश्येत्॥

अगस्तिरुवाच

यो धर्मराजरचितां ललितप्रबन्धां
नामावलीं सकलकल्मषबीजहन्त्रीम्।
धीरोऽत्र कौस्तुभभृतः शशिभूषणस्य
नित्यं जपेत् स्तनरसं स पिबेन्न मातुः॥

(स्कन्द० काशी० पूर्वार्द्ध, अध्याय ८)

'वे प्रदेश तीरथ कहलाते'

(रचयिता—साहित्याचार्य पं० श्रीश्यामसुन्दरजी चतुर्वेदी)

देहधारियों के दुख लखकर देह धारकर जहँ प्रभु आते।
स्वयं अजन्मा और अकर्ता होकर भी जन-कष्ट मिटाते॥
लीला से पावन प्रदेश जो अब भी उसकी याद दिलाते।
शिक्षा देते पुन सुमार्ग की वे प्रदेश तीरथ कहलाते॥

राजनीति, धर्म और तीर्थ

भगवान् श्रीकृष्णने तामसी बुद्धिका स्वरूप बतलाते हुए अर्जुनसे कहा है—

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥

(श्रीमद्भगवद्गीता १८। ३२)

'अर्जुन! तमोगुणसे आवृत जो बुद्धि अधर्मको धर्म मानती है तथा और भी सभी पदार्थोंको विपरीत (उल्टा) ही समझती है, वह बुद्धि तामसी है।'

दैव-दुर्विपाकसे या किसी भी कारणसे आज जगत्के मानव-समाजकी बुद्धि प्रायः तमसाच्छन्न हो रही है, इसीसे आज सारा जगत् ईश्वर तथा सच्चे ईश्वरीय धर्मसे मुँह मोड़कर 'अधिकार' और 'अर्थ' के पीछे उन्मत्त हो रहा है। मानव-जीवनके असली उद्देश्य भगवत्प्राप्ति, मुक्ति या परम शान्तिकी प्राप्तिको भूलकर वह जिस किसी भी प्रकारसे भौतिक सुखकी—जो मनुष्यको वास्तविक सुखसे सदा ही वञ्चित रखता है और सुखके नामपर नये-नये दुःखोंकी सृष्टि करता रहता है—प्राप्तिके लिये नैतिक-अनैतिक सभी प्रकारके कर्म करनेको प्रस्तुत है। इसीसे वह मानव-जीवनके पवित्रतम आध्यात्मिक उत्कर्षकी अवहेलना करके भौतिक सुख-साधनोंकी अधिक-से-अधिक प्राप्तिके प्रयत्नमें संलग्न है और इसीमें अपनी तथा विश्वकी उन्नति समझता है और इसीको परम कर्तव्य या एकमात्र धर्म मान रहा है।

एक आदरणीय महात्मा कहा करते हैं कि 'धर्महीन राजनीति विधवा है और राजनीतिरहित धर्म विधुर है।' बात वास्तवमें सत्य ही है; परंतु वर्तमान राजनीतिमें—जहाँ तमोगुणकी प्रधानता है—सच्चे धर्मको स्थान मिलना बहुत ही कठिन है।

पाश्चात्य विचारशील विद्वान् श्रीशॉ डेसमण्ड (Shaw Desmond) महोदयकी 'World-birth' नामक एक पुस्तक लगभग अठारह वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई थी; उसमें उन्होंने राजनीति तथा वर्तमान राजनीतिक जगत्की आलोचना करते हुए लिखा था—

"Like horse-racing, there is something in politics which degrades. They turn good men into bad men and bad into worse. They blunt the fineness of youth and destroy the sensitive evaluation of the things by which we live. And the reason is as plain as the cloud which blots out the sun. Our politics today are always "power-politics'.' (Page 247)

'घुड़दौड़के जुएकी तरह राजनीतिमें ऐसा कुछ है, जो मनुष्यको नीचे गिरा देता है। वह अच्छे मनुष्यको बुरा और बुरेको और भी जघन्य बना देती है। वह यौवनकी तीव्रताको कुण्ठित करती और जीवनके लिये आवश्यक वस्तुओंके मूल्याङ्कनकी निपुणताको घटा देती है। इसका कारण उस बादलके टुकड़ेके समान बिल्कुल स्पष्ट है, जो सूर्यको सर्वथा ओझल कर देता है। हमारी आजकी राजनीति सदा अधिकारपरक ही है।'

वे फिर लिखते हैं—

"The young politician, the fliush of idealism upon the brow of innocence, eager to win his spurs, soon after he has been returned under the auspices of his party or group, to Congress or Parliament or Chamber of Deputies, finds himself, as we have already indicated, faced with the following problem.

"He has already been coached in the gentle art of *suppressio veri* and of fictitious promise in order to get elected, and as the 'old hands' will tell him, no man on this earth would stand a chance if he told the truth, the whole truth and nothing but truth.

Now, he can either stand out against his party leaders, veterans in sin, who neither in life nor in death will forgive him, and find himself relegated to back stage with no chance to make his young eager voice heard, or he can go in with those leaders as a Yes-Man, as they are known, and so at long last perhaps be rewarded with the lollipops of office. Jam or ginger?—he can take his choice. If he through idealism, fight the Machine, he will be flattened out by the party steam-roller and will be so quick going that he wo'nt even know he has come! If he rides on the Juggernaut, he will be patted on the back by the

'Old Hands' and spoiled as so often Age spoils Youth.

"Have we not seen in all these countries the once young idealists ""sell out," as the process is perfectly well known, to Power and Privilege, and with the politician's capacity for self-deception' unhappily sometimes quite sincerely? Have we not seen them turn their upholstered backs upon the leanness of old comrades and old ideals, and find themselves sometimes, though not always, ultimately rewarded by power and position to their infernal eternal undoing both in this world and the world to come! Poor devils! usually democratic devils of that ilk x x x x"

(Page 235-236)

'कूटनीतिकी चालोंसे अनभिज्ञ और आदर्शवादके उत्साहसे परिपूर्ण तथा सफलता-प्राप्तिके लिये उत्सुक तरुण राजनीतिज्ञ अपने दल या समुदायके टिकटपर कांग्रेस, लोकसभा या प्रतिनिधि-सभामें चुन लिये जानेके पश्चात् तुरन्त ही अपने-आपको एक उलझनमें पाता है।'

उसे चुनावमें सफलता प्राप्त करनेके लिये सत्यको छिपाने और झूठे वादे करनेकी शिष्ट कलामें पहलेसे ही दीक्षित कर दिया गया होता है। पुराने अनुभवी पुरुष उसे बतलाते हैं कि इस पृथ्वीमण्डलमें ऐसा कोई मनुष्य है ही नहीं, जो सत्य, पूर्ण सत्य, विशुद्ध सत्य बोलकर सफल हो सके।

'अब उसके सामने दो ही मार्ग रहते हैं—या तो वह अपने दलके नेताओं—पापमें अभ्यस्त खूसटोंके विरुद्ध—जो न तो इस जीवनमें और न मृत्युके बाद ही उसे क्षमा करेंगे—खड़ा हो और अपनेको रङ्गमञ्चके पीछे—नेपथ्यमें फेंका हुआ पाये, जहाँसे वह अपनी तरुण उत्सुकतापूर्ण आवाजको सुनानेके लिये कोई अवसर ही न पा सके, या वह उन नेताओंके अनुकूल बनकर उन्हींकी भाँति समाहत होकर रहे, जिससे अन्तमें कदाचित् वह 'पद' रूप प्रसादसे पुरस्कृत किया जाय। मुरब्बा या अदरकका पानी? दोनोंमेंसे वह जो चाहे पसंद कर ले। यदि आदर्शवादके पीछे पड़कर वह इस पुरानी मशीनसे लड़नेकी ठानेगा तो उसपर उस मशीनके वाष्पचालित बेलनका इतना दबाव पड़ेगा कि उसे पिस जाना पड़ेगा और वह इतनी फुर्तीसे बाहर फेंक दिया जायगा कि उसको पता भी न चलेगा कि मैं भीतर आया था। पर यदि वह उस पेषणकारी यन्त्रपर आरूढ़ हो गया तो वे पुराने 'अनुभवी हाथ' उसकी पीठ ठोकेंगे और फलत: जैसे बुढ़ापा जवानीको विरस कर देता है, वैसे ही उसका भी नैतिक पतन हो जायगा।

'क्या हमें इन सब देशोंमें आदर्शवादके ऐसे तरुण भक्त नहीं मिले हैं, जिन्होंने अपने आदर्शवादके प्रेमको कुचलकर अपने-आपको 'पद' और 'विशेषाधिकार' के मोल बेच डाला है? खेदकी बात तो यह होती है कि कई बार वे आत्मवञ्चनाके वशीभूत हो—जिसकी प्रत्येक राजनीतिके व्यवसायीमें क्षमता आ जाती है—शुद्ध नीयतसे अपने आदर्शोंको बेच डालते हैं। बहुधा यह भी देखा गया है कि वे अपने पुराने सहयोगियों और आदर्शोंका परित्याग करके बादमें कभी-कभी—सदा नहीं—सत्ता और पदसे पुरस्कृत हुए हैं और इसके लिये उन्हें इस लोक और परलोकसे सदाके लिये हाथ धोना पड़ा है। प्राय: जनतन्त्रवादीभूतकी यही दशा होती है।'

पाश्चात्त्य देशोंकी और उसीका अनुकरण करनेवाले भारतवर्षकी राजनीतिका आज यही स्वरूप है। इसके साथ सच्चे धर्मका मेल हो और पतिव्रता सतीकी भाँति वह धर्मकी अनुगता होकर रहे, यह बहुत कठिन है। आज तो बहुतसे लोग—पीछे नहीं—पहलेसे ही 'पद' और 'अर्थ' की अभिलाषासे ही लोकसभा आदिमें जाना चाहते हैं। 'कर्तव्य और त्याग' का पवित्र आसन ही आज 'अधिकार और अर्थ' के द्वारा अधिकृत कर लिया गया है। ऐसी अवस्थामें धर्मको राजनीतिके साथ स्थान मिलना बहुत ही कठिन है। हाँ, महात्मा गाँधी होते या उनकी नीतिकी प्रधानता राजनीतिमें अक्षुण्ण रहती तो कुछ आशा अवश्य थी। महात्माजीने राजनीतिके क्षेत्रमें बड़े महत्त्वके कार्य किये; परंतु उनका प्रत्येक कार्य ईश्वर-विश्वास तथा सत्य-अहिंसारूप धर्मपर अवलम्बित होता था, इससे उनकी राजनीतिमें व्यक्तिगत स्वार्थ-मूलक दोषोंका प्रवेश बहुत ही कम हो पाता था। तथापि जो लोग धर्मभीरु हैं तथा देशकी राजनीतिको पवित्र देखना चाहते हैं और जिनकी चित्त-वृत्ति प्रवृत्तिपरायण है, उनको गीताके उपदेशको सामने रखकर आसक्ति तथा फलानुसंधानसे रहित होकर राजनीतिक क्षेत्रमें आना और काम करना चाहिये। देशकी वर्तमान स्थितिमें

ऐसे राग-द्वेषहीन धर्मपरायण कर्मठ लोगोंकी बड़ी आवश्यकता है।

पर जो लोग केवल भगवत्परायण रहकर भजन ही करना चाहते हैं, जिनकी प्रकृति निवृत्तिपरक है और जो राग-द्वेषपूर्ण जनसंसद्से दूर रहनेमें ही अपना हित समझते हैं, उन्हें अवश्य ही राजनीतिसे अलग होकर भजनपरायण रहना चाहिये। यही उनके लिये निरापद मार्ग है। ऐसे भजनानन्दी पुरुषोंको एकान्तमें या पवित्र तीर्थ-स्थानोंमें रहकर सादा-सीधा, बहुत ही कम खर्चीला, सदाचार तथा भजनसे भरा जीवन बिताना चाहिये। यद्यपि आजकल पवित्र एकान्त स्थान मिलना कठिन है और तीर्थोंमें भी पवित्रतासे पूर्ण सात्त्विक वातावरण नहीं रह गया है, तथापि खोजनेपर तीर्थोंमें ऐसे एकान्त पवित्र स्थल अब भी प्राप्त हो सकते हैं। तीर्थोंका महत्त्व इसी कारण है कि वहाँ भगवत्प्राप्त या भजनानन्दी साधकोंने निवास किया था। अब भी भजनानन्दी पुरुष यदि तीर्थोंमें रहने लगें तो तीर्थोंके पवित्र विग्रहमें मलिनता या कालिमा आ गयी है, वह सहज ही दूर हो सकती है और तीर्थयात्रियोंके लिये तीर्थ पुनः पावन बन जा सकते हैं।

तीर्थोंके बाह्य सुधारकी भी आवश्यता है; साथ ही पुराने तीर्थ-स्थानों तथा मन्दिरोंके जीर्णोद्धारका भी महान् कार्य है, जो परमावश्यक है। दक्षिणके महान् तीर्थोंमें सुशोभित अत्यन्त कलापूर्ण विशाल मन्दिर भारतकी भक्ति तथा कलापूर्ण संस्कृतिके जीते-जागते मूर्तरूप हैं—ये जगत्के आश्चर्य हैं। इनके रक्षणावेक्षणका कार्य भी, यदि कुछ पवित्र प्रवृत्तिवाले लोग, दूसरे कार्योंसे पृथक् होकर वहाँ रहने लगें तो सहजमें सम्पन्न होनेकी सम्भावना है।

हिंदुओंके ये पवित्र तीर्थ हिंदू-संस्कृतिकी रक्षा और विभिन्न प्रदेशोंमें रहनेवाले विभिन्नभाषा-भाषी नर-नारियोंको एकताके पवित्र सूत्रमें बाँधे रखनेके लिये परम उपयोगी तथा श्रेष्ठ साधन हैं। अतः राजनीतिक दृष्टिसे भी इन धर्मस्थानोंकी सुरक्षा तथा सेवा परम आवश्यक है।

भारतकी राजनीति धर्मसे पृथक् नहीं थी और भारतवर्षका धर्म प्रत्येक नीतिके साथ संयुक्त था। भगवान्की मङ्गलमयी कृपासे फिर ऐसा हो जाय तो जगत्के लिये एक महान् आदर्श उपस्थित हो।

भगवान् श्रीरामकी तीर्थयात्रा

(लेखक—पं० श्रीजानकीनाथजी शर्मा)

श्रीमद्भागवतकारने रघुनन्दनके शिव-विरञ्चि-नमस्कृत, दुःखशामक, सर्वाभीष्टप्रद, परम शरण्य पदद्वन्द्वोंको 'तीर्थास्पद' (तीर्थस्थान)* कहकर स्मरण किया है—**'तीर्थास्पदं शिवविरञ्चिनुतं शरण्यम्।'** (११। ५। ३३)। सर्वतीर्थमूर्धन्या, मङ्गलमयी, कल्याणमयी पुण्यप्रसविनी श्रीगङ्गा तो साक्षात् इन्हीं चरणोंकी नखपंक्तिसे प्रसूत हुई हैं। यों तो संतोंके चरण भी तीर्थको धन्य बना देते हैं—**'तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि'** (नारद-भक्तिसूत्र)। **'प्रायेण तीर्थाभिगमापदेशैः स्वयं हि तीर्थानि पुनन्ति सन्तः।'** (श्रीमद्भा० १। १९। ८) किंतु इसमें भी भगवान् ही हेतु हैं; क्योंकि भगवान् जिसके हृद्देशमें विराजित होते हैं, वही तो संत होता है। अन्यथा कैसी साधुता, कैसा संतत्व। *'साधु समाज न ताकर लेखा। राम भगति महँ जासु न रेखा॥'* इसीलिये गोस्वामीजीने बड़े स्पष्ट शब्दोंमें लिखा है—

सुर तीरथ तासु मनावत आवन पावन होत है ता तनु छ्वै॥
सति भायँ सदा छल छाडि सबै तुलसी जो रहै रघुबीर को है॥

(कविता० उत्तरकाण्ड ३४)

जो निश्छलभावसे सदा श्रीरघुनाथजीका जन होकर रहता है, सभी (देवमन्दिरोंके) देव तथा तीर्थ उसके आनेकी कामना करते हैं (अथवा देवता तथा तीर्थ उसके

* गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी महाराजने गीतावलीमें राघवेन्द्रके पद-द्वन्द्वोंको सभी तीर्थोंका राजा मानकर बड़ा ही सुन्दर रूपक प्रस्तुत किया है। उसे लोकातीत प्रयागका रूप देते हुए वे लिखते हैं—

राम चरन अभिराम कामप्रद तीरथराज बिराजै। संकर-हृदय-भगति भूतल पर प्रेम-अक्षयवट भ्राजै॥
स्याम-बरन पद-पीठ अरुन-तल लसति बिसद नख-स्रेनी। जनु रबिसुता सारदा सुरसरि मिलि चलि ललित त्रिबेनी॥
अंकुस कुलिस कमल ध्वज सुंदर भँवर तरंग-बिलासा। मज्जहिं सुर-सज्जन, मुनिजन मन मुदित मनोहर बासा॥
बिनु बिराग जप जाग जोग ब्रत, बिनु तप, बिनु तनु त्यागे। सब सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभु-पद प्रयाग अनुरागे॥

(गीतावली, उत्तरकाण्ड १५)

विश्वामित्रके यज्ञ-रक्षार्थ की हुई यात्रासे। मानसमें यद्यपि उन तीर्थोंका बहुत माहात्म्य नहीं लिखा गया है तथापि महर्षि वाल्मीकिने इस यात्राका बड़ा रोचक वर्णन किया है एवं इसमें आनेवाले मलद, करूष, सिद्धाश्रम, गौतमकी तपःस्थली, शोण-गङ्गा-संगम आदिका बड़ा सजीव चित्रण किया है। उसमें प्रसङ्गवशात् महर्षि विश्वामित्रकी जीवनीका उल्लेख करते हुए हिमालय-तटवर्ती कौशिकी आदि नदियों तथा तत्सम्बन्धी अन्य तपःस्थलियोंकी भी रोचक चर्चा की गयी है; किंतु प्रायः सभी रामायणों तथा रामसम्बन्धी काव्यों एवं नाटकोंमें प्रमुखता दी गयी है श्रीरामकी वनवास-यात्रासे सम्बन्धित तीर्थोंको ही और भगवान् व्यासने तो उनके इन सभी विश्रामस्थलोंको महातीर्थ मान लिया है। (देखिये बृहद्धर्मपुराण, पूर्व० १४। ३४) यहाँ प्रधानतया उनपर ही विचार किया जायगा।

वनवास-यात्राके तीर्थ

जैसे वैष्णवोंके १०८ दिव्यदेश तथा वैष्णव, शैव, शाक्त आदि प्रत्येक सम्प्रदायके १०८ स्थल हैं, वैसे ही भगवान् व्यासके मतसे श्रीरामके वनवासके तीर्थ भी १०८ हैं—

वनवासगतो रामो यत्र यत्र व्यवस्थितः।
तानि चोक्तानि तीर्थानि शतमष्टोतरं क्षितौ॥

(बृहद्धर्म० पूर्व० १४)

यहाँ उनमेंसे मुख्यस्थलोंका ही उल्लेख किया जायगा। अग्निवेशरामायण, कालिकापुराण तथा स्कन्दपुराण, धर्मारण्यखण्डके ३०वें अध्यायमें भगवान्की वनवास-यात्राके साथ तिथियोंका भी उल्लेख है। बालरामायणमें लङ्कासे लौटते समय उन्होंने सीताको दिखाते हुए अपने पूर्वनिवासस्थलोंको एक-एककर गिनाया है। इन तीर्थोंमें अधिकांश तो अभी बने हैं और श्रद्धालु जनता उनका जीर्णोद्धार भी करती आयी है।

रामचरितमानसके अनुसार श्रीअयोध्यासे चलकर भगवान्ने पहले दिन संध्याके समय तमसा (टोंस) नदीके तटपर विश्राम किया था—*'तमसा तीर निवास किय प्रथम दिवस रघुनाथ।'* वाल्मीकि-रामायणके अनुसार इस नदीका नाम वेदश्रुति था। (वाल्मीकि-रामायणके बालकाण्डके आरम्भमें तथा उत्तररामचरितमें जिस तमसाका वर्णन आया है, वह दूसरी थी और वह गङ्गाके दक्षिण बहती थी। बँगला विश्वकोशके अनुसार यह यमुनाके साथ निकलकर उससे दक्षिण बहती हुई जबलपुर आदि जिलोंमें होती हुई मिर्जापुरके पास गङ्गामें मिलती है।) इसके बाद सई (स्यन्दनिका) तथा गोमतीको पारकर वे शृंगवेरपुर पहुँचे। यह प्रयागसे १८ मील उत्तर, आजकल इसका नाम सिंगरौर है। रातभर यहाँ ठहरकर दूसरे दिन प्रातः गङ्गा पारकर उसी रातको प्रयागके समीप पहुँचकर एक वृक्षके नीचे विश्राम किया—*'तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू।'* दूसरे दिन प्रातःकृत्य सम्पन्नकर तीर्थराज प्रयागका दर्शन किया और वहाँ महर्षि भरद्वाजजीसे मिलकर उनके आश्रमपर एक रात विश्राम किया। दूसरे दिन पुनः प्रातः स्नान करके चित्रकूटके लिये चले और वाल्मीकि-आश्रम[1] होते हुए वहाँ पहुँचे। यहाँ भगवान् रामसे सम्बद्ध कई तीर्थस्थल हैं। किसीके अनुसार वे यहाँ एक वर्ष, किसीके अनुसार तीन और किसीके मतसे बारह वर्षतक रहे। इसी प्रकार निवासस्थलोंमें भी मतभेद है। यहाँसे वे स्फटिकशिलाके मार्गसे अत्रि-आश्रम, अनसूया[2] होते हुए विराधको गति देकर शरभङ्गाश्रम[3] पधारे। यह स्थान विराधकी समाधिसे प्रायः १५ मील पश्चिम-दक्षिण है।

शरभङ्गाश्रमसे चलकर प्रभु सुतीक्ष्णाश्रम पहुँचे और वहाँसे उन्हें लेकर महर्षि अगस्त्यके आश्रमपर। इस बीचमें वाल्मीकीय रामायणके अनुसार उन्हें पञ्चाप्सर-सरोवर मिला था। प्रो० नन्दलाल दे ने इसके विषयमें अपने भौगोलिक कोषमें लिखा है कि यह सरोवर नागपुरके समीप उदयपुर राज्यमें था। सुतीक्ष्णाश्रमसे वाल्मीकीय रामायणके अनुसार अगस्त्याश्रम ४० मीलकी दूरीपर था। यहाँसे भगवान् पञ्चवटी पधारे। यह अगस्त्याश्रमसे १६ मीलपर था। पञ्चवटीका स्वरूप हेमाद्रिने स्कन्दपुराणके आधारपर यह बतलाया है—'पूर्वमें पीपल, उत्तरमें बिल्व, पश्चिममें वट, दक्षिणमें आँवला तथा अग्निकोणमें अशोककी स्थापना करे; यह पञ्चवटी होती है[4]।' इसी

१. यह स्थान चित्रकूटसे १५ मील पूर्वोत्तर है।

२. यह स्थान चित्रकूटसे प्रायः ८ मील दक्षिण है।

३. यह स्थान इटारसी-प्रयाग लाइनके जैतवार स्टेशनसे १५ मीलपर है।

४. अश्वत्थं बिल्ववृक्षं च वटं धात्री अशोककम्। वटीपञ्चकमित्युक्तं स्थापयेत् पञ्चदिक्षु च॥
अश्वत्थं स्थापयेत् प्राचि बिल्वमुत्तरभागतः। वटं पश्चिमभागे तु धात्रीं दक्षिणतस्तथा॥

प्रकार एक बृहत्पञ्चवटी भी होती; पर यहाँ वे सब वृक्ष तो अब नहीं हैं, यहाँ गोदावरीतटपर पर्णशाला बनाकर उन्होंने प्रायः ८ मास व्यतीत किये। यह नासिकरोड स्टेशनसे, जो मध्य-रेलवेकी बंबई-दिल्ली लाइनपर पड़ता है, पास ही है। यहीं लक्ष्मणजीने कपिला-संगमपर शूर्पणखाकी नाक काटी थी तथा रोहिण पर्वतकी उपत्यकापर श्रीरामने मृगका वध किया था। यहाँ रामकुण्ड, सीताकुण्ड, लक्ष्मणकुण्ड आदि कई तीर्थ हैं। इसके समीप ही जटायुका निवासस्थान, प्रस्रवणगिरि तथा जनस्थान थे—यह महावीरचरितम् (५। १५), रघुवंश (६। ६२), बालरामायण एवं जयदेवकृत प्रसन्नराघवसे स्पष्ट है।

सीताहरणके बाद पञ्चवटीसे चलनेपर तीन ही कोस आगे क्रौञ्चारण्य मिला। इससे तीन कोस पूर्वकी ओर मतङ्गाश्रम था। इसके बीचमें ही एक गहरी घाटीमें उन्हें अयोमुखी राक्षसी मिली और थोड़ी ही दूर आगे जानेपर कबन्ध राक्षस मिला था। आज जो बेल्लारीसे ६ मील पूर्वकी ओर लोहाचल नामक पर्वत है, वही पहले क्रौञ्च नामसे विख्यात था। मतङ्गाश्रमके बाद भगवान् पम्पासर पहुँचे और वहाँसे ऋष्यमूक पर्वतपर। ये सभी स्थान परस्पर बहुत समीप हैं तथा हुबली-बैजवाड़ा-मसुलीपटम् लाइनपर हास्पेट स्टेशनसे बसके रास्ते १० मीलपर हैं। यहीं माल्यवान् पर्वतके एक शृङ्ग प्रवर्षणगिरिपर स्फटिकशिला है, जहाँ भगवान् अपने चातुर्मास्यके समय अधिकतर बैठा करते थे। यहाँ तुङ्गभद्रा नदी है। आजकलका हम्पीक्षेत्र ही पम्पा है तथा हॉस्पेट किष्किन्धा।

वाल्मीकिके अनुसार इसके समीप ही किसी दक्षिण विन्ध्याद्रिकी सूचना मिलती है। उसका यह नाम अब प्रचलित नहीं। सीतान्वेषणमें पहले श्रीहनुमान्-अङ्गदादिकोंने इसीमें प्रवेश किया था। महेन्द्र पर्वतके शिखरसे हनुमान्‌जीने समुद्रोल्लङ्घनके लिये छलाँग लगायी। पुनः समाचार प्राप्तकर भगवान् दर्भशयनम् (जहाँ समुद्रतटपर रास्ता माँगनेके लिये सोये थे) होते, रामेश्वरम् (धनुष्कोटि) पहुँचे और वहाँ सेतु निर्माणकर सुवेलगिरिपर उतरे। आजका सिलोन ही प्राचीन लङ्का है, इसे पुराणोंके आधारपर तो स्वीकार करना बड़ा कठिन है। अतएव सुवेल शैल तथा लङ्काका पता आजके भूगोलसे देना दुष्कर है। लौटते समय तो वे पुष्पकयानसे सीधे श्रीअवधपुरी-धाम ही चले आये। तथापि विमान प्रायः उसी मार्गसे आया, तभी तत्तत्स्थलोंको वे श्रीसीताको तथा अपने मित्रोंको दिखला सके थे, जिसका वर्णन राजशेखर तथा श्रीगोस्वामीजी महाराजने भी किया है।

रसनाको उपदेश

रुचिर रसना तू राम राम क्यों न रटत।
सुमिरत सुख सुकृत बढ़त अघ अमंगल घटत॥
बिनु स्त्रम कलि-कलुष-जाल, कटु कराल कटत।
दिनकरके उदय जैसे तिमिर-तोम फटत॥
जोग जाग जप बिराग तप सुतीर्थ अटत।
बाँधिबेको भव-गोयन्द रजकी रजु बटत॥
परिहारि सुर-मुनि सुनाम गुंजा लखि लटत।
लालच लघु तेरो लखि तुलसि तोहि हटत॥

अशोकं वह्निदिक्स्थाप्यं तपस्यार्थं सुरेश्वरि। मध्ये वेदीं चतुर्हस्तां सुन्दरीं सुमनोहराम्॥
प्रतिष्ठां कारयेत् तस्याः पञ्चवर्षोत्तरं शिवे। अनन्तफलदात्री सा तपस्याफलदायिनी॥
इयं पञ्चवटी प्रोक्ता बृहत्पञ्चवटीं शृणु। बिल्ववृक्षं मध्यभागे चतुर्दिक्षु चतुष्टयम्॥
वटवृक्षं चतुष्कोणे वेदसंख्यं प्ररोपयेत्। अशोकं वर्तुलाकारं पञ्चविंशतिसम्मितम्॥
दिग्विदिक्ष्वामलकीं च एकैकं परमेश्वरि। अश्वत्थं च चतुर्दिक्षु बृहत्पञ्चवटी भवेत्॥
यः करोति महेशानि साक्षादिन्द्रसमो भवेत्। इह लोके मन्त्रसिद्धिः परे च परमा गतिः॥

(हेमाद्रि-व्रतखण्ड, स्कन्दपुराण)

विशेष मूर्तियाँ और तीर्थ

(लेखक—श्रीसुदर्शनसिंहजी)

जिस वस्तुके प्रति हमारा जैसा भाव होता है, वह वस्तु उस भावसे प्रभावित होती है। परीक्षण करनेके लिये तीव्र लाल प्रकाशमें जब कुछ लोगोंको एक अमेरिकन वैज्ञानिकने दूध पिलाया, तब उन्हें वमन हो गया। केवल एक-दो उसे पचानेमें समर्थ हुए; परन्तु उनके भी उदरमें गड़बड़ी रही। इसका कारण यह था कि लाल प्रकाशमें दूध रक्तके समान दिखायी पड़ता था। केवल उनके भावने ही यह परिणाम उत्पन्न किया। भाव जितना प्रगाढ़ होगा, पदार्थमें उतना ही प्रभाव आयेगा। जिन भगवद्विग्रहोंकी स्थापना किन्हीं महापुरुषोंद्वारा हुई है, जो भक्तोंद्वारा दीर्घकालसे भक्तिपूर्वक पूजित हैं, उनमें किसी सामान्य विग्रहकी अपेक्षा भाव-शक्ति अधिक होती है। उनके द्वारा आराधकके भावको तीव्र प्रेरणा एवं एक अज्ञात पवित्रता मिलती है। यही कारण है कि ऐसे श्रीविग्रहोंको बहुत महत्त्व दिया जाता है।

अर्चकस्य तपोयोगादर्चनस्यातिशायनात्।

शास्त्रोंमें श्रीविग्रहके जो विशेष भावोद्दीपक कारण बताये गये हैं, उनमेंसे एक तो यह है कि विग्रहके उपासककी तपस्या, उसका भाव तीव्र हो। यह प्रत्यक्ष है कि किसी महापुरुषद्वारा जो वस्तुएँ काममें ली जाती हैं, वे दूसरोंके लिये श्रद्धाकी वस्तु हो जाती हैं। महापुरुष जिस विग्रहकी अर्चा करते हैं, उसमें उनके शरीरके विशुद्ध परमाणु तथा उनका भाव संनिविष्ट हो जाता है। दूसरे उससे लाभ पाते हैं। आकर्षणका दूसरा कारण पूजाका विपुल सम्भार है। सुन्दर सजावट, जगमगाते उपकरण, आभरण-मालादि मनको आकर्षित कर लेते हैं। साधारण जन तो उपकरणोंसे ही प्रभावित होते हैं। तीसरा कारण श्रीविग्रहकी कलात्मक सुन्दर आकृति है। उद्देश्य मनको भगवान्‌में लगाना है और इसमें तीनों बातोंका महत्त्व है। पूजाका विपुल सम्भार भी इसीलिये सार्थक है।

तीर्थमें सत्पुरुष आते हैं। उनके स्नानादि द्वारा वहाँका वातावरण उनके शरीरके शुद्ध परमाणुओंसे तथा उनके भावसे पवित्र होता है। '**तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि**'—संत तीर्थोंको तीर्थ बनाते हैं। तीर्थ हैं भी वे ही, जहाँ कोई भगवान्‌के अवतार-चरित हुए हों या किसी अत्यन्त प्रभावशाली संतका निवास रहा हो। ऐसे स्थानोंमें संत या भगवान्‌के दिव्य प्रभाव चिरकालतक व्याप्त रहते हैं। हम अनुभव करें या न करें, हमें उस प्रभावसे पवित्रता मिलती है।

तीर्थ तथा मूर्तिपूजाके ये लाभ स्थूल दृष्टिसे हैं। वास्तवमें तो तीर्थ मर्त्यलोकमें दिव्य धामोंकी भावमय भूमिके प्रतीक हैं। तीर्थोंका, जो धरापर हैं, दिव्य धाममें नित्य सम्बन्ध है। इसीलिये वहाँ रहने, जानेसे पाप नष्ट होते हैं। अनेक तीर्थोंके अनेक प्रकारके माहात्म्य हैं। वहाँ वे कार्य स्वतः होते हैं। उदाहरणके लिये काशीमें मरनेवाला प्राणी मुक्त हो जाता है। इसी प्रकार भगवान्‌के श्रीविग्रह साक्षात् भगवद्रूप ही हैं। वे निरे प्रतीक नहीं हैं। अर्चाविग्रह एक प्रकारका अवतार है। उसमें भाव दृढ़ होनेपर समस्त भगवत्-शक्ति आविर्भूत होती है।

अवतार

हम निर्गुण-निराकारका ध्यान नहीं कर सकते, अतः सुविधाके लिये सगुण-साकार रूपमें उसका ध्यान करते हैं और ध्यानको परिपक्व बनानेके लिये उस आकारकी मूर्ति स्थापित करके उसकी आराधना करते हैं, यह तो एक बात है; परंतु मूर्ति भी अर्चावतार है, उस निर्गुण-तत्त्वके सगुण-साकार अवतार भी होते हैं—यह किस प्रकार?

हमारे सम्मुख जो यह विराट् सगुण-साकार संसार है, यही सगुण तत्त्वकी सूचना देता है। अतएव सगुणके सम्बन्धमें विचार करनेके लिये हमें संसारसे ही चलना चाहिये। एक सर्वव्यापक चेतन सत्ता है—इस प्रकार ईश्वरके अस्तित्वको माने बिना जड संसारके कार्योंका समाधान नहीं होता। प्रकृति सदा ह्रासकी ओर जाती है। पहले सम्पूर्ण उन्नत समाज था। मनुष्य भाषा या ज्ञानका स्वयं आविर्भाव नहीं कर सकता। वे उसे ईश्वरकी ओरसे मिलते हैं। ऐसी स्थितिमें ईश्वरकी सत्ता तो माननी ही होगी और यह भी मानना होगा कि वह सर्वव्यापक है। व्याप्यकी सत्ता व्यापकसे भिन्न हो तो व्यापक पूर्णतः व्यापक नहीं रह जाता। ईश्वरको सर्वव्यापक माननेसे जडकी सत्ताका स्वयं निषेध हो जाता है। एकमात्र सर्वव्यापक चेतन सत्ता ही है।

जगत्‌में जो यह अनेकता दीखती है, वह क्यों है? माया या अज्ञानके कारण यह कहनेसे पूरा समाधान नहीं होता; क्योंकि अनेकता तो ज्ञानमें होती है। पुस्तकके

अज्ञान और लोटेके अज्ञानमें कोई अन्तर नहीं। अज्ञान तो अन्धकारधर्मा है। उसमें सब विभिन्नता लुप्त हो जाती है। इसी प्रकार भ्रम उसी वस्तुका होता है, जिसकी कहीं उपस्थिति हो और जहाँ होता है, वहाँ कोई-सा दृश्य लेकर ही होता है। जगत्‌में सर्प न हों तो रस्सीमें सर्पका भ्रम न हो। रस्सी सर्पके समान टेढ़ी न हो, तो भी सर्पका भ्रम तो होता ही है। शास्त्रोंने जगत्‌को मिथ्या और भ्रम कहा है, तब इस भ्रमका आधार क्या है? रस्सीमें सर्पका भान मिथ्या है, पर सर्पका सादृश्य और पृथक् सर्प तो हैं ही। ऐसे ही जगत्‌के नाम-रूप मिथ्या हैं तो इनके भ्रमकी वास्तविकता कहाँ है? उस वास्तविकतासे यहाँ क्या सादृश्य है?

जगत्‌के नाम-रूपोंका इसके लिये विश्लेषण करना होगा। यह कहना नहीं होगा कि नामका अर्थ है शब्द और उसका रेखाङ्कन हो सकता है। ग्रामोफोनके रेकार्डमें ऊँची-नीची रेखाएँ ही होती हैं। उनपर सूई घूमनेपर स्पष्ट शब्द प्रकट हो जाता है। इसी प्रकार फोटोग्राफी और सिनेमामें रूप तथा रूपकी क्रियाका भी रेखाङ्कन है। सुनते हैं ग्रन्थका रेखाङ्कन करनेका भी प्रयत्न हो रहा है। रेडियो और टेलीविजनने सिद्ध कर दिया कि शब्द या रूप किसी स्थूल वस्तुपर रेखाके रूपमें अङ्कित करनेपर ही व्यक्त होंगे, यह आवश्यक नहीं। शब्दको और फोटो-चित्रको बिना आधारके सहस्रों मील दूर भेजा जा सकता है। निराधार आकाशमें इनके कम्पन हो जाते हैं। इसका अर्थ है कि शब्द तथा रूपकी रेखाओंको कम्पनमें तथा कम्पनको रेखा या शब्द तथा रूपमें बदला जा सकता है।

जैसे नदीका जल बहता जा रहा है, परन्तु नदीकी आकृति ज्यों-की-त्यों है, वैसे ही जगत्‌के समस्त रूप प्रवाहात्मक ही हैं। प्रत्येक पदार्थसे परमाणु निकल रहे हैं और दूसरे उसमें जा रहे हैं। हमारा शरीर कुछ वर्षोंमें पूर्णतः बदल जाता है। इतनेपर भी आकृति वही रहती है। जैसे सिनेमामें एक क्रियामें अनेकों चित्र गतिपूर्वक निकल जाते हैं, परन्तु देखनेवाले उन चित्रोंकी गतिके कारण एक ही चित्रकी क्रिया देखते हैं, वैसे ही विश्वके रूप चित्र-प्रवाह हैं। इनके आधार अव्यक्तमें कम्पन हैं और वे ही इन्हें व्यक्त कर रहे हैं।

दूसरी ओरसे भी सोच लीजिये—एक पदार्थ या घटना आपके मनमें आती है और तब वह बाहर प्रकट होती है। चित्रकारके मनका चित्र ही कागजपर व्यक्त होता है। माता-पिताके विचारोंका प्रभाव संतानकी आकृतिपर एक सीमातक पड़ता है, यह सब जानते हैं। इसका अर्थ है कि सभी आकृतियोंकी मूल रेखाएँ, जो अव्यक्तमें है, कम्पनस्वरूप हैं। कम्पनमात्र शब्द उत्पन्न करता है। कहना यह चाहिये कि प्रत्येक शब्द कम्पन उत्पन्न करता है और प्रत्येक कम्पन एक आकृति उत्पन्न कर सकता है। विचार शब्दात्मक ही होते हैं। उनसे शरीरमें क्रिया होती है और वह बाहर आकृति निर्माण करती है। आप तारके खंभेके पास खड़े हों तो एक सनसनाहट सुनायी देगी। रेडियो या टेलीविजन भी जो शब्द या चित्र भेजता है, वह अव्यक्तमें एक शब्द उत्पन्न करता है। शब्दसे यन्त्रमें कम्पन होता है और यन्त्र शब्द या चित्र प्रकट कर देता है।

शास्त्र कहते हैं कि आदिमें प्रणव था। उसकी अर्धमात्रासे त्रिमात्राएँ प्रकट हुईं। उन त्रिमात्राओंके अधिष्ठाता देवता हुए। तीन मात्राओंसे शेष सब अक्षर हुए। ये अक्षर बीजमन्त्र हैं। इन मन्त्रोंके देवता हैं। इन मन्त्रोंके स्थूल तत्त्व हुए। इस प्रकार समस्त जगत् प्रणवसे ही प्रकट हुआ। यह बात ऊपरके विवेचनसे मिलनेपर ध्यानमें आ जायगी। प्रश्न यह है कि विचार मनमें कहींसे आते हैं या मन स्वयं उन्हें उत्पन्न करता है? आप प्रयत्न कीजिये एक सर्वथा नूतन विचार करनेका—ऐसा विचार जिसका कोई अंश कहीं सुना या देखा न हो। आप देखेंगे कि ऐसा करना सम्भव नहीं है। मन नवीन विचार नहीं कर सकता। वह केवल प्राचीन विचारोंको व्यक्त कर सकता है, भले वह उनको चाहे जैसे उलट-पुलटकर व्यक्त करे।

मनुष्य ज्ञान उत्पन्न नहीं कर सकता—केवल सीखता है चाहे उसे वह दूसरेसे सीखे या हृदयकी एकाग्रतामें सीखे; किंतु हृदयकी एकाग्रतामें भाषा नहीं सीखी जा सकती। यही बात बतलाती है कि मन एकाग्र होकर भी विचार उत्पन्न नहीं करता। उसमें विचार उत्पन्न करनेकी शक्ति होती तो वह भाषा भी उत्पन्न कर लेता। एकाग्र होनेपर वह विचार ग्रहण करता है। यह ग्रहण ऐसे ही होता है, जैसे रेडियो यन्त्र आकाशमें व्याप्त शब्दको ग्रहण करके व्यक्त करता है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जैसे रेडियो यन्त्रके शब्द-स्तर हैं—जिस स्तरमें यन्त्रको रखा जाता है, उस स्तर अथवा स्टेशनका शब्द वह प्रकट करता है, वैसे ही मनके भी विचार-स्तर हैं। मन जिस स्तरमें पहुँचता है, उसीके विचार उसमें व्यक्त होने लगते हैं। ये स्तर कितने हैं?

मन जितने विचार करता या कर सकता है, उतने। रेडियोके शब्द-स्तर भी असंख्य हैं; परन्तु हैं, यह तो सिद्ध ही है।

एक योगी दूसरेके चित्तकी बात बतला देता है। एकाग्र मनसे दूसरेके मनका ज्ञान होना सम्भव है। यह इसीलिये सम्भव है कि मन नये विचार स्वयं नहीं कर सकता। जिसका मनपर नियन्त्रण है, वह अपने मनको उस भावस्तरमें पहुँचा देता है, जिसमें दूसरेका मन है। फलतः दोनों मनोंमें एक-सी बातें उठती हैं। ऐसा न हो तो दूसरेके चित्तकी बात ज्ञात न हो सके। भाव-स्तर निश्चित है, अतएव मनमें आनेवाले विचारोंकी संख्या भी निश्चित हैं। विश्वकी प्रत्येक आकृति, प्रत्येक घटना विचारोंमें आकर ही व्यक्त होती है। अतएव सभी आकृतियों और घटनाओंकी संख्या भी निश्चित है। यह विश्व उतनेमें ही घूमता रहता है। यदि यह सब पूर्वसे निश्चित न हो तो कोई सर्वज्ञ न हो सके। परमात्माकी तो चर्चा क्या, ऋषि भी त्रिकालज्ञ होते हैं। जिसका पूर्वसे ज्ञान है, उसका तो उसी रूपमें होना निश्चित ही है। अनिश्चितका पूर्वज्ञान नहीं हो सकता। यदि विश्वमें कुछ भी अनिश्चित हो तो परमात्माकी सर्वज्ञता भी बाधित होगी।

ये भाव-स्तर क्या हैं? इनका मूलरूप या मूलाधार क्या है? रेडियो जिन शब्दोंको बोलता है, उनका फैलानेवाले यन्त्रपर कहीं-न-कहीं कोई मूल होता है। रेडियोपर जो चित्र प्रकट होता है, उसका वहाँ चाहे कम्पन ही व्यक्त हुआ हो, मूलमें तो वह व्यक्ति या पदार्थ होना ही चाहिये, जिसका वह चित्र है। मनमें जो विचार आते हैं, वे शब्दों तथा आकृतियों दोनोंके आते हैं। अतएव भाव-स्तर दोनों प्रकारके होने चाहिये—भले मूलमें वे एक हों। यदि मूलमें वे एक हों तो मूलको रूपात्मक होना चाहिये; क्योंकि रेडियोपर मूलमें गानेवाला होता है। उसीके शब्द और रूप यन्त्रपर आते हैं। फिर शब्द है तो शब्दकर्ता भी होना ही चाहिये।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।

श्रुति कहती है कि ब्रह्मके एक पादमें ये समस्त ब्रह्माण्ड हैं और शेष तीन पादमें अमृत (शाश्वत) दिव्य धाम। ये नित्यधाम गोलोक, साकेत, वैकुण्ठ, कैलासादि हैं। इनके सम्बन्धमें शास्त्रोंपर श्रद्धा ही करनी होगी; क्योंकि ब्रह्माण्डके बाहरके नित्यधामके सम्बन्धमें बुद्धिकी गति सम्भव नहीं। अवश्य ही नित्यधामकी स्वीकृतिसे भाव-स्तरोंका उद्गम मिल जाता है। वह उद्गम साकार है, जैसा कि होना चाहिये। इससे विश्वके नानात्वका कारण भी मिल जाता है। उस दिव्यलोककी स्थिति ही इस भ्रमका आधार है। इस जगत्से दिव्यलोकका उतना ही सादृश्य तथा उतनी ही भिन्नता है, जितना सादृश्य और भिन्नता वृक्ष और उसकी छायामें होती है।

नित्यलोक कितने हैं, कौन कह सकता है। जितने भाव-स्तर हों, उतने ही होने चाहिये। भगवान् भावगम्य हैं। किसी भी भावसे उनकी उपासना की जा सकती है। जिस भावसे भक्त प्रभुकी आराधना करता है, भगवान् उसे उसी रूपमें दर्शन देते हैं। भगवान्के सभी रूप शाश्वत हैं। ये शास्त्रकी बातें अब उपर्युक्त विवेचनसे स्पष्ट हो जाती हैं। प्रत्येक भाव किसी भाव-स्तरसे ही सम्बन्धित है। एक भावका मनमें परिपाक होनेका अर्थ है कि मन एक ही भाव-स्तरमें स्थिर हो जाय। मन सत्त्वगुणका कार्य है, निर्मल है। उसकी चञ्चलताके कारण ही उसमें कोई दिव्य रूप स्पष्ट नहीं हो पाता। हिलते जलमें सूर्यबिम्ब स्पष्ट नहीं होता। जब मन एक भाव-स्तरमें स्थिर हो जाता है, तब उस हृदयका सम्बन्ध सीधे उस स्तरके दिव्यलोकसे हो जाता है। प्रभु तो कृपामय हैं। वे जीवको अपने सम्मुख होते ही अपना लेते हैं। सम्मुख होनेका अर्थ किसी भावमें चित्तका स्थिर हो जाना है। उस भावका जिस नित्यधामसे सम्बन्ध है, उसके अधिष्ठातारूपमें प्रभु प्रत्यक्ष हो जाते हैं।

विश्वमें जब बहुत-से व्यक्तियोंके भाव एक ही प्रकारके भाव-स्तरोंमें हो जाते हैं और बराबर स्थिर रहते हैं, तब दिव्य धामका पृथ्वीपर अवतरण होता है। वह दिव्यलोकका भाव विशुद्ध रूपमें व्यक्त हो जाता है। उस दिव्य धामके अधिष्ठाता प्रभु पृथ्वीपर पधारते हैं और विविध चरित करते हैं। भगवान्का अवतार भक्तोंके भावकी तुष्टिके लिये ही होता है। शेष असुर-संहार, धर्मस्थापन आदि कार्य तो गौण होते हैं।

दिव्य धाम चिन्मय तत्त्वके घनीभाव हैं। वहाँ वही तत्त्व, जो निर्गुण-निराकार रूपमें सर्वत्र व्यापक है, घनीभूत हो गया है। वहाँके सभी पदार्थ, समस्त पार्षदादि सच्चिदानन्दघन ही हैं। यह उस अचिन्त्यकी आत्मक्रीडा है। आकृतिभेद ही वहाँ है। तत्त्वतः सब एक ही हैं। उनमेंसे किसी दिव्य धामका अब पृथ्वीपर अवतरण होता है, तब वह स्थान तीर्थ हो जाता है। तीर्थोंका दिव्य धामोंसे सीधा सम्पर्क है। भगवान् जब पधारते हैं, तो

उनके धामका भी धरापर आविर्भाव होता है। धराका पवित्रतम भाग ही तीर्थ है।

अवतार-शरीर प्रभुका नित्य-विग्रह है। वह न मायिक है और न पाञ्चभौतिक। उसमें स्थूल, सूक्ष्म कारण शरीरोंका भेद भी नहीं होता। जैसे दीपककी ज्योतिमें विशुद्ध अग्नि है, दीपककी बत्तीकी मोटाई केवल उस अग्निके आकारका तटस्थ उपादान कारण है, ऐसे ही भगवान्‌का श्रीविग्रह शुद्ध सच्चिदानन्दघन है। भक्तका भाव उस आकारको व्यक्त करनेका तटस्थ उपादान कारण है। यह आकार भी नित्य है; क्योंकि भक्तका भाव भाव-स्तरसे उद्भूत है और भाव-स्तर नित्यधामसे। भगवान्‌का नित्य श्रीविग्रह कर्मजन्य नहीं है, जीवकी भाँति किसी कर्मका परिणाम नहीं है; वह स्वेच्छामय है। इसी प्रकार भगवदवतारके कर्म भी आसक्ति-कामना-वासना-प्रेरित नहीं है, दिव्य लीलारूप हैं।

भगवान्‌के अवतारके समय उनके शरीरका बाल्य-कौमारादि रूपोंमें परिवर्तन नहीं होता। उनका तो प्रत्येक रूप नित्य है। तो परिवर्तन दीखता है, वह रूपोंके आविर्भाव तथा तिरोभावके कारण। उदाहरणार्थ सिनेमामें जो हँसती आकृति है, वही रोती नहीं। दोनों दो चित्र हैं; किंतु एकके हटकर दूसरेके तीव्रतासे वहाँ आ जानेसे ऐसा लगता है कि एक ही आकृति पहले हँसती थी, अब रोने लगी। यह दीखनेवाला परिवर्तन भी किशोरावस्थातक ही दिखायी देता है, इसके बाद नहीं। इसीलिये भगवान् श्रीराम-कृष्ण नित्य नवकिशोर—१५ वर्षकी-सी उम्रके रहते हैं। जैसे अवतार-विग्रह नित्य हैं, वैसे ही अर्चा-विग्रह भी चिन्मय हैं। मूर्तिमें दो भाव होते हैं।—एक तो वह, जो यह बतलाता है कि वह किस वस्तुसे बनी है। दूसरा भाव यह है कि वह किसकी मूर्ति है। पहला भाव नश्वर तथा विकारी है। दूसरा भाव नित्य है। मूर्ति-भङ्ग होनेपर देवताके अङ्ग-भङ्गका संदेह किसी आस्तिकको नहीं होता। वह दूसरी मूर्ति प्रतिष्ठित कर लेता है, परंतु भाव वही रहता है। भाव अपने भाव-स्तरके माध्यमसे नित्यलोकसे सम्बन्धित है, अतः मूर्तिका भावमय रूप भगवद्रूप है। भावकी परिपक्वतामें मूर्ति चेतन पुरुषकी भाँति हँसना, बोलना, खेलना, खाना आदि सब प्रकारकी चेष्टाएँ करती है। इसीसे मूर्तिको 'अर्चावतार' कहते हैं।

एक ही निर्गुण निराकार ईश्वरके अनन्त दिव्य सगुण साकार धाम, उन धामोंके प्रकृतिमें प्रतिबिम्ब, ये प्रतिबिम्ब भाव-स्तरके रूपमें, भाव-स्तरोंसे विचार और विचारोंसे सृष्टि—इस क्रमके अनुसार सगुण-साकार तत्त्व, उसके विविध रूप, उपासना, अवतार तथा मूर्ति-पूजा सिद्ध हो जानेपर भी हिंदुओंका बहुदेववाद सार्थक नहीं सिद्ध होता। एक साकार सर्वेश्वरके भावानुरूप शाश्वत विविध रूप तो ठीक; परंतु ये इन्द्र, वरुण, कुबेर आदि देवता तो ईश्वर नहीं हैं। ये देवता थोड़े भी नहीं हैं—पूरे तैंतीस करोड़ बताये जाते हैं। इसका क्या प्रयोजन? यह बहुदेवोपासना किसलिये?

देवता दो प्रकारके होते हैं, यह देवताओंके विवेचनसे पूर्व जान लेना चाहिये। एक प्रकारके देवता तो वे हैं, जो पुण्यके कारण स्वर्ग गये हैं। वे अपने पुण्यका फल भोगने गये हैं। उनका इस लोकसे सम्बन्ध नहीं। वे पूजे नहीं जाते। दूसरे प्रकारके देवता वे हैं, जो पूजे जाते हैं। इनकी संख्या तैंतीस करोड़ शास्त्रोंने बतायी है। ये नित्य देवता हैं। किसी-न-किसी कार्य या पदार्थके ये अधिष्ठातृ-देवता हैं। इनके पद भी कर्मसे प्राप्त होते हैं, परन्तु कम-से-कम एक मन्वन्तरतक ये बदलते नहीं और इनके पद तो स्थिर ही रहते हैं। हम पहले कह आये हैं कि सृष्टिकी सब आकृतियाँ, सब घटनाएँ पूर्व-निश्चित हैं। उनमें राई-रत्ती अन्तर नहीं होता। इतिहास बार-बार आवृत्ति करता है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि अमुक जीव ही अमुक कार्य करते हैं। आज जो घटनाएँ हो रही हैं, जो आकृतियाँ जैसी हैं, वे फिर कभी-न-कभी इसी प्रकार आवृत्ति करेंगी और कभी पहले भी हो चुकी हैं; परन्तु उनसे सम्बद्ध जीव वे ही होंगे या रहेंगे, ऐसा नियम नहीं। उदाहरणार्थ वे ही गाड़ियाँ रोज स्टेशनपर आती हैं, ड्राइवरकी वर्दी भी वही होती है; पर ड्राइवर बदलते रहते हैं। यही बात नित्य देवताओंके तथा सबके सम्बन्धमें है। आकृतियाँ वे ही रहेंगी, कार्य वे ही होंगे; पर जीव बदलते रहेंगे। इन्द्रकी आकृति वही रहती है, पर इन्द्र बदलते रहते हैं।

हम पहले बता आये हैं कि नित्य-धामोंसे प्रकृतिमें कम्पन-रूपभाव-स्तर प्रतिबिम्बित होते हैं। कम्पनका स्वभाव है कि वह शब्द उत्पन्न करता है। शब्द एक सूक्ष्म आकृति उत्पन्न करता है। प्रत्येक भाव-स्तरका एक कम्पन है और उसकी एक सूक्ष्म आकृति। यही आकृति प्रकृतिमें उस कम्पनकी देवता है। उस कम्पनके भाव तथा उस भावसे जितने कर्म होंगे, सबकी वही अधिष्ठातृ-शक्ति है। प्रत्येक कम्पन एक शब्द उत्पन्न करता है। यही शब्द बीज-मन्त्र है। प्रत्येक

अधिष्ठातृ-देवताका एक मन्त्र होता है। बीज-मन्त्रसे मन्त्र और मन्त्रसे देवता—यह उद्भव-क्रम है।

आप देखते हैं कि सभी विचार मनमें आते हैं और मनसे ही पुष्ट होते हैं। मनके अधिष्ठातृ-देवता चन्द्रमा हैं। सब देवता चन्द्रमासे ही पोषण प्राप्त करते हैं। यहाँ इतनी बात और समझ लेनी चाहिये कि दैत्य भी एक प्रकारके देवता ही हैं। अन्तर केवल इतना है कि सात्त्विक कार्यों, भावों, पदार्थोंकी अधिष्ठातृशक्तियोंको देवता कहते हैं और राजस तथा तामस कर्मादिके अधिष्ठाताओंको दैत्य, दानव, असुर। असुर भी देवताओंके ही भाई हैं और चन्द्रमासे ही पोषण प्राप्त करते हैं, जैसे राजस-तामस भाव भी मनसे ही पोषित होते हैं।

हिंदू-धर्मकी यह अद्भुत विषेषता है कि वह प्रत्येक पदार्थका अधिदेवता मानता है। यहाँ घर नहीं था, घरके देवता भी नहीं थे। घर बनते ही उसके अधिदेवता भी हो गये। कलम, कागज, पुस्तक, दावात, हल, मूसल, ऊखल, नदी, पर्वत, चूल्हा, चक्की—सभी पदार्थोंके अधिष्ठातृ-देवता माने जाते हैं, पदार्थ चाहे प्राकृतिक हों या मानवकृत। सबकी समय-समयपर पूजा की जाती है। कुआँ, तालाब, सब पूजे जाते हैं। इसे आप उपहासमें उड़ा सकते हैं; पर यह स्वीकार करना होगा कि मनुष्य जब अपने ही द्वारा निर्मित पदार्थकी पूजा करता है, तब यह कार्य भयवश नहीं हुआ है। इसमें तथ्य होना चाहिये।

कोई भी कार्य होगा, कोई भी पदार्थ या आकृति आप बनायेंगे तो पहले उसका विचार मनमें आयेगा। विचार आयेगा भाव-स्तरसे और भाव-स्तरके देवता पहलेसे हैं। अतएव प्रत्येक घटना या आकृति एक भाव-स्तरके अधिष्ठाताका स्थूलशरीर है, यह माननेमें क्यों आपत्ति होनी चाहिये। आकृति या कार्य मनुष्यद्वारा हों या प्रकृति-द्वारा, यह प्रश्न नहीं है। मनुष्यकृत कर्मों तथा पदार्थोंमें मनुष्यके मनके माध्यमसे और प्रकृतिके कर्मोंमें सृष्टिकर्ताके मनके माध्यमसे भाव-स्तर ही व्यक्त होते हैं।

मनुष्य या प्राणियोंका शरीर ही कैसे बनता है? पिताके मनमें संतानोत्पादनकी इच्छा होती है। वहाँ मनमें ही नवीन जीव होता है। वही जीव माताके गर्भमें वीर्यसे पहुँचकर शरीर बनता है। वैज्ञानिक यन्त्रसे भी शरीर बना लेते हैं। अनेक बार बिना पुरुष-सहवासके स्त्रियोंको मूढ़ गर्भ रह जाता है। उसमें वे मांसका लोथड़ा प्रसव करती हैं। जीव नहीं आता उसमें। जीव तो अन्नसे वीर्यमें होकर पुरुषके मनमें पहुँचता है और वहाँ काम उत्पन्न होनेपर फिर वीर्यमें आता है। शरीर जड है। उसका अधिष्ठाता वह जीव ही है। इसी प्रकार समस्त बाह्य घटनाएँ एवं पदार्थोंकी प्रेरणा मनसे व्यक्त होती हैं। वह पदार्थ या घटना तो शरीरकी भाँति जड है; किंतु उसका अधिष्ठाता चेतन है, जो मनमें संकल्पके साथ उस शरीरमें आया है।

सच्ची बात तो यह है कि दृश्य, घटना एवं पदार्थोंका स्थूलरूप मिथ्या है। आइन्स्टीनने सिद्ध कर दिया है कि रूप, आकृति, परिणाम, देश तथा काल—सब अपेक्षाकृत हैं। इनकी वास्तविक सत्ता नहीं है। यद्यपि उसके सापेक्षवादका गणित अत्यन्त जटिल है और उसे बहुत थोड़े लोग विश्वमें समझ पाते हैं, फिर भी उसके प्रयोग भ्रान्तिहीन सिद्ध हुए हैं। मनुष्यके संकल्पोंमें जब पूर्ण शक्ति थीं, तब पदार्थ संकल्पमात्रसे प्रकट हो जाते थे। वे पदार्थ आजके पदार्थों-जैसे ही टिकाऊ और वास्तविक होते थे। जैसे-जैसे संकल्प-शक्ति क्षीण होती गयी, स्थूलको प्रकट करनेके लिये स्थूलका सहारा लेना आवश्यक होता गया। इतनेपर भी जो प्रकट होता है, वह वही होता है, जो पहले संकल्पमें था।

सभी भावोंके अधिष्ठातृ-देवता हैं; जैसे विद्युत्का केन्द्र सूर्य है, वैसे ही उनके भी अपने लोक हैं। जैसे सूर्यमें धब्बे आनेपर रेडियोके संचालनमें बाधा पड़ती है, वैसे ही वे भी अपने भावोंसे सम्बन्धित पदार्थोंका संचालन करते हैं। उन्हें संतुष्ट रखनेसे उस पदार्थसे अभीष्ट लाभ होता है। घरका अधिष्ठातृ-देवता संतुष्ट हो तो घरमें रहनेवाले सुख-शान्तिसे रहेंगे। वह असंतुष्ट हो तो घरके लोगोंकी सुख-शान्तिमें बाधा पड़ेगी। उदाहरणके लिये हमारे शरीरमें सहस्रों रक्त-कीटाणु हैं। शरीरके भीतर तथा ऊपर दूसरे ऐसे सहस्रों कीटाणु हैं, जो विजातीय हैं। शरीरसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं। उनके लिये शरीर जड है। सम्भव है, उनमें कुछ दीर्घजीवी हों और माताके पेटसे शरीरके साथ आये हों तथा अन्ततक शरीरमें रहें। वे शरीरका निर्माण तथा अन्त दोनों देख सकते हैं। शरीरमें चेतन सत्ता है, यह वे किसी प्रकार जान नहीं सकते। पर वे शरीरके अनुकूल रहें तो सुखपूर्वक रह सकते हैं। उनके प्रतिकूल बर्तनेपर हम उन्हें हटाने या नष्ट करनेका प्रयत्न करेंगे। यही बात अधिष्ठातृ-देवताओंकी है।

पदार्थ जड हैं और उनका एक निश्चित धर्म है, यह बात एक सीमातक ही सत्य है। उत्तरप्रदेशके गाँवोंमें

बीमारी आनेपर कराह (एक प्रकारकी पूजा) होती है। इसे वे अहीर करते हैं, जो जीवनभरके लिये विशेष नियम लिये होते हैं। खौलते दूधमें वे किसीका भी हाथ डाल देते हैं। हाथ जलता नहीं। अनेक भागोंमें दहकते अंगारोंपर चलनेकी प्रथा है। नंगे पैर चलनेपर भी पैर नहीं जलते। यह सब सिद्ध करता है कि पदार्थोंके दृश्य-प्रभाव सदा काम करें ही, ऐसी बात नहीं है। उनका निरोध करनेवाली शक्ति भी है। सूर्यकी उपासना करनेवालोंको तापका अनुभव कम होता है, यह एक प्रत्यक्ष-सी बात है।

मनोवैज्ञानिक जानते हैं कि दृढ़ संकल्पसे पदार्थोंको प्रभावित किया जा सकता है। ऐसा क्यों होता है? केवल इसलिये कि पदार्थोंका मनसे नित्य सम्बन्ध है। जिन तत्त्वोंमें परस्पर सम्बन्ध है, उन्हींमेंसे एकके द्वारा दूसरेको प्रभावित करना शक्य है। जिनमें सम्बन्ध नहीं, उनमेंसे परस्पर प्रभावका संक्रमण भी सम्भव नहीं। तपस्वी तपस्याके द्वारा मनोबल प्राप्त करता है। फलतः पदार्थोंको प्रभावित करनेकी शक्ति उसे प्राप्त हो जाती है। तपकी सिद्धियोंका अर्थ है—तपसे इतना मनोबल प्राप्त कर लेना कि संकल्पमें व्यक्त हो जानेकी शक्ति हो जाय। जो शक्ति जितनी सूक्ष्म है, उतनी ही महान् है। परमाणु यों तो तुच्छ हैं; पर उनका विश्लेषण जो भयंकर शक्ति प्रकट करता है, वह अब सबको ज्ञात है। परमाणु-विश्लेषणसे यह सम्भावना हो गयी है कि पदार्थोंको रूपान्तरित किया जा सकेगा। मन परमाणुसे भी सूक्ष्म है। अतएव मनकी शक्ति परमाणुसे अत्यधिक है। उस शक्तिका नियन्त्रण प्राप्त हो जाय तो उससे पदार्थोंको व्यक्त करना कठिन नहीं है।

प्रत्येक पदार्थ संकल्पका ही व्यक्त रूप है। दूसरे शब्दोंमें प्रत्येक व्यक्त रूप संकल्पका ही स्थूलशरीर है। संकल्प उस स्थूलशरीरका सूक्ष्मशरीर है। अतएव संकल्प उसे प्रभावित कर सकता है। संकल्प भाव-स्तरोंसे प्रेरित है। ये भाव-स्तर ही कारण-शरीर हैं और भाव-स्तरोंके अधिष्ठातृ-देवता उसके चेतन अधिष्ठाता। इस प्रकार प्रत्येक पदार्थका एक चेतन अधिष्ठाता है। वह प्रसन्न होनेपर हमारे मनमें अनुकूल, सुखद संकल्पोंका उदय करेगा या दूसरे तत्त्वोंके भाव-स्तरोंको प्रभावित करके हमारे लिये सुखका विधान करेगा। प्रतिकूल होनेपर इससे विपरीत परिणाम होगा।

भाव-स्तर तो दिव्य लोकोंसे प्रेरित उनकी छाया हैं; फिर सूक्ष्म भावजगत्में शब्दाकृतिरूप यदि कोई देवता हैं तो वे भाव-स्तरोंको कैसे प्रभावित कर सकते हैं? इसका इतना ही उत्तर है कि जैसे शरीरको जीव प्रभावित करता है। शरीर स्रष्टाके मनके भावकी अभिव्यक्ति है, जैसे मकान आपके मनकी अभिव्यक्ति; पर शरीर संचालित है अपने अधिष्ठाता जीवसे। वैसे ही मकानका अधिष्ठाता उसका अधिपति है।

'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते....।'

श्रुतिके इस द्विविध चेतनके सिद्धान्तको समझ लेना चाहिये। इस संसारवृक्षपर दो पक्षी हैं। वे नित्ययुक्त हैं, एक दूसरेसे आलिङ्गित हैं। जीव और ईश्वर दोनों शरीरमें हैं। उदाहरणके लिये सूर्यका व्यापक प्रकाश पड़ रहा है। सूर्य-किरणें चारों ओर व्याप्त हैं। अब एक दर्पण रख देनेपर उसमें सूर्यका प्रतिबिम्ब पड़ता है। यह प्रतिबिम्ब उस व्यापक धूपमें और प्रकाश बढ़ा देता है। दर्पणके हिलनेसे यह नया प्रकाश हिलेगा। इसी प्रकार सर्वव्यापक भाव-स्तर तो नित्य धामके हैं। वे एकरस रहते हैं। शरीरादि उस प्रकाशके समान हैं, जो दर्पणसे होकर बाहर पड़ा है। दर्पणका प्रतिबिम्ब ही इस प्रकाशका अधिदेवता है। ऐसे ही प्रकृतिमें जो भाव-स्तरोंकी आकृतियाँ हैं, वे अधिदेवता हैं। व्यक्त शरीर उनके नियन्त्रणमें हैं।

एक ही चेतन सत्ताका यह अधिदेववाद बाधक नहीं है। ये देवता उसी दिव्य नित्य धामके प्रतिबिम्बरूप चेतन ही हैं, जैसे अनेक दर्पणोंमें एक ही सूर्यके प्रतिबिम्ब होते हैं। प्रतिबिम्बोंका नानात्व सूर्यके एकत्वका बाधक नहीं है। उस एकसे ही ये अनेक और इन अनेकमें भी वही एक, यह सामञ्जस्य ही हिंदू शास्त्रोंकी विशेषता है। प्रत्येक स्थानपर चेतनका दर्शन, उसकी आराधना, यह अधिदेववादकी मुख्य प्रेरणा है। जैसे जीवको छोड़कर शरीरोंको जड़ मानकर व्यवहार करनेसे अशान्ति बढ़ती है, वैसे ही आजकी अशान्तिका कारण देवताओंको अस्वीकार करके उनका रोष-भाजन बनना है।

अधिदेवताओंकी स्थिति समझ लेनी चाहिये। समष्टिमें सूर्य-मण्डल भगवान् सूर्यका शरीर है। सूर्य देवता उस मण्डलके अधिष्ठातृ-देवता हैं। उनका आकार वह है, जो शास्त्रोंमें वर्णित है। हम सूर्य-मण्डलके द्वारा उन सूर्यदेवकी आराधना करते हैं, उस स्थूल मण्डलकी नहीं—जैसे पितृभक्त पुत्र पिताके शरीरके द्वारा पिताके चेतन तत्त्वका आराधक है, जड शरीरका नहीं।

व्यष्टिमें नेत्रेन्द्रियके देवता भगवान् सूर्य हैं। नेत्र उन्हींके प्रकाशमें काम करते हैं, उन्हींके द्वारा प्रभावित होते हैं। सूर्यमें ही उनकी शक्तिका उद्भव तथा विनाश दोनों हैं। भगवान् सूर्यकी आराधनासे नेत्र-विकार नष्ट होते हैं। इसी प्रकार अन्य सभी देवताओंके समष्टिमें अपने स्थान हैं। उन स्थानोंको उनका शरीर समझना चाहिये। उस शरीरमें शास्त्रवर्णित आकृतिके उनके अधिदेवता हैं। व्यष्टि-शरीरमें भी देवताओंका स्थान है। वे उसे प्रभावित करते हैं।

अधिकांश देवताओंके शरीर तारक-मण्डलके रूपमें हैं। कुछके शरीर भौतिक जगत्में हैं—जैसे समुद्र, पृथ्वी, पर्वतादि। कुछके शरीर अदृश्य हैं—जैसे कामादि भावरूप देवोंके। तारकोंमें सब इसी ब्रह्माण्डके नहीं हैं। बहुत-से दूसरे ब्रह्माण्डके सूर्य यहाँ तारक रूपमें दृष्टि पड़ते हैं। थोड़ेमें जो कुछ दृश्य है, जो भावरूप है, सब चेतनात्मक है। सबके भीतर उनका अधिष्ठाता चेतन है। सर्वत्र व्याप्त चेतन सत्ताका यह अंश है। यही उस दृश्य या भावरूप शरीरका प्रेरक है।

देवता इस स्थूल जगत्के प्रेरक हैं। वे समष्टिके सूक्ष्म-शरीर—अधिदैव जगत्के नियन्ता हैं। स्थूल जगत्में यज्ञके द्वारा आराधनासे हम उन्हें तुष्ट करते हैं। इससे उनका पोषण होता है और वे पुष्ट एवं प्रसन्न होकर हमारी अभिवृद्धि करते हैं। यदि हम भोजन बंद कर दें, जल न पीयें तो हमारे प्राण क्षीण हो जायँगे। फलतः शरीर अवसन्न—क्लान्त हो जायगा। मनुष्यने यज्ञ बंद कर दिये, फलतः देवताओंकी शक्ति स्थूल जगत्में व्यक्त नहीं होती। पदार्थोंका अभाव, अकाल तथा मानसिक उद्वेगादि व्याप्त होते हैं। यज्ञसे वृष्टि, वृष्टिसे अन्न, अन्नसे यज्ञ—यह यज्ञ-चक्र है जगत्के पोषणके लिये। अन्नसे प्राणियोंकी उत्पत्ति एवं पुष्टि होती है। यही यज्ञ-चक्र गीतामें वर्णित है; पर आज जब मनुष्य देव-शक्तिको मानता ही नहीं, तब यज्ञसे वृष्टि उसकी समझमें कैसे आये।

देवता तैंतीस करोड़ हैं। इसका अर्थ है कि इतने ही भाव-स्तर हैं। मनोवैज्ञानिक अभीतक समस्त भावोंका वर्गीकरण करनेमें समर्थ नहीं हुए हैं, किंतु इससे अबतक विश्लेषित मनोभावोंकी संख्या तो अत्यल्प है। संसारमें पदार्थ, भाव तथा क्रियाओंका समस्त वर्गीकरण इनके भीतर ही हो जाता है। इस संख्यासे अधिक विचार किसी देव, दैत्य या मानवके मनमें नहीं आ सकता।

विभूति-पूजा

जब सभी पदार्थों, क्रियाओं, भावोंके अधिदेवता हैं, तब सबकी पूजा क्यों नहीं होती? विशेष-विशेष पदार्थोंकी ही पूजा क्यों होती है? यह प्रश्न पूर्ण रीतिसे ठीक नहीं है। समय-समयपर अवसर-भेदसे हिंदू-शास्त्रोंके अनुसार सभी पदार्थोंकी पूजा होती है। देव, दैत्य, दानव—सभीको संतुष्ट किया जाता है। अवश्य ही प्रधानतया विशेष विभूतियोंकी पूजा अधिक होती है। आराध्यरूपसे विशेषतया देवता ही ग्रहण किये जाते हैं। यहाँ आराध्यरूपसे भगवान्के स्वरूपमें गृहीत किसी आराध्य विग्रहसे तात्पर्य नहीं है। देव-बुद्धिसे ही जिन देवताओंकी उपासना होती है, उन्हींसे तात्पर्य है; क्योंकि भगवान्के सभी रूप हैं। भगवद्बुद्धिसे तो गुरु, माता, पिता, पति, मूर्ति या किसी देवताका ग्रहण करनेपर वह विग्रह भगवान्का ही हो जाता है। प्रतिबिम्बमें सूर्य-बुद्धिसे की गयी आराधना भी सूर्यकी ही आराधना है।

प्रकृति त्रिगुणात्मक है। इसमें भाव, पदार्थ, क्रिया—सभी त्रिगुणात्मक हैं। कहीं कोई गुण प्रधान है और कहीं कोई गुण। उनके अधिष्ठाता भी उन्हीं गुणोंकी प्रधानता रखते हैं। आराधकमें जिस गुणकी प्रधानता होती है, वह उसी गुणकी प्रधानतावाले देवताकी आराधना करता है। प्रकृतिके अनुरूप होनेसे वह उसीमें सरलतासे सफल भी हो सकता है। प्रत्येक शरीर अपने चेतन तत्त्वको व्यक्त करनेकी समान क्षमता नहीं रखता। वृक्षमें और मनुष्यमें समान चेतनाकी अभिव्यक्ति नहीं है, यद्यपि दोनोंमें जीवनतत्त्व है। इसी प्रकार शीशे और पत्थरमें सूर्यका प्रतिबिम्ब ग्रहण करनेकी समान क्षमता नहीं है। सूर्य-किरणोंकी उष्णता अग्निके रूपमें केवल सूर्यकान्तमणि या आग्नेय (आतशी) शीशेमें ही प्रकट हो सकती है। इसी प्रकार सभी पदार्थोंमें अधिदेवताकी सत्ता होनेपर भी कोई-कोई पदार्थ ही आधिदैविक शक्तिको अधिक व्यक्त कर सकते हैं। कहीं-कहीं ही देवता अपनी शक्ति प्रकट करनेका समुचित साधन पाते हैं। ऐसे पदार्थ विशेषतः पूज्य हैं। इसी दृष्टिसे विशेष-विशेष पदार्थोंकी ही मूर्तियाँ बनायी जाती हैं।

जैसे अनेक पदार्थोंमें देवशक्ति अधिक व्यक्त हो पाती है, वैसे ही अनेक पदार्थों तथा देवताओंमें भगवत्-शक्तिका प्राकट्य शीघ्र होता है। इनको विभूति कहा जाता है। महर्षि शाण्डिल्यका कहना है '**विभूतिर्नोपास्या**।'—विभूतियाँ उपास्य नहीं है। जब भगवद्बुद्धिसे उपासना

होती है, तब वह व्यापक सत्ता समानरूपसे सर्वत्र उपलब्ध है ही। उसपर कोई आवरण नहीं। हृदयकी एकाग्रताका प्रश्न है। वह एकाग्र होते ही वह नित्यतत्त्व अभिव्यक्त हो जायगा। अतएव किसी विभूतिको विभूतिरूपमें मानकर भगवत्प्राप्तिके लिये उसे माध्यम बनानेसे व्यर्थ विलम्ब होगा।

जहाँ-जहाँ श्री, कीर्ति, ऐश्वर्य, बल, क्रान्ति या और कोई विशेषता है, वे सभी पदार्थ या जीव विभूतियाँ हैं। विशेषता तो उसी सच्चिदानन्द-सत्त्वकी है। मायिक जगत् तो जड़ है, अन्धकारपूर्ण है। उसमें कोई विशेषता नहीं है। जहाँ इस जगत्में उस दिव्य तत्त्वका सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंश भी तनिक-सा व्यक्त हो जाता है, वहीं वह जगत्का अंश चमक उठता है। वहीं विशेषता आ जाती है। विशेषताकी आराधना करनेपर भ्रमवश उस विभूतिको ही विशेषतायुक्त मान लिया जा सकता है। इससे लक्ष्यच्युति हो जायगी। विशेषता—विभूतिकी विशुद्ध आराधना अत्यन्त कठिन है। उदाहरणके लिये सर्वत्र सौन्दर्य उस सौन्दर्य-घन-सिन्धुके एक सीकरांशकी ही है; पर सौन्दर्यके उपासक विशुद्ध सौन्दर्यकी उपासना कहाँ कर पाते हैं। वे अपना और उस सौन्दर्याधार वस्तुका भी विनाश ही करते हैं। पुष्पके सौन्दर्यसे आकर्षित होकर हम उसे तोड़ लेते हैं और थोड़ी देर बाद नोच फेंकते हैं। हमारे हाथ भी पँखुड़ियोंके रससे गंदे ही होते हैं।

दूसरे प्रकारसे विभूति-पूजा सकामदृष्टिसे होती है। जिन पदार्थों या देवताओंमें भगवत्-शक्तिका विशेष प्राकट्य है, उनकी पदार्थबुद्धिसे ही पूजा होती है। भगवान्ने बताया है कि ऐसा साधक उन विभूतियोंसे मेरे द्वारा अपनी अभीष्ट-प्राप्तिमें समर्थ होता है। इससे विभूतियोंके प्रति आस्था और सकाम भाव बढ़ता ही है। अतएव दोनों दृष्टियोंसे विभूतिको आराध्य बनाना उचित नहीं है। शास्त्रोंके अनुसार जब जहाँ जिस देवताकी आराधना विहित है, तब कर्तव्यबुद्धिसे, निष्काम-भावसे ही उसकी आराधना करनी चाहिये।

विशेष-विशेष देवताओंकी विशेष-विशेष पूजन-विधियाँ शास्त्रोंमें वर्णित हैं। किसी देवताकी पूजा उनके लिये निर्दिष्ट विधिसे ही करनी चाहिये। जैसे प्रत्येक व्यक्तिकी भिन्न रुचि होती है और वह अपनी रुचिके पदार्थ तथा क्रियासे ही संतुष्ट होता है, वैसे ही देवताओंकी भी रुचि होती है। भावपूर्वक चाहे जो चढ़ाने, चाहे जैसी पूजा करनेकी बात तभी चलती है अब पूजा निष्कामभावसे या भगवान्की हो। हमारे पास जब कोई निःस्वार्थभावसे आता है, तब हम उसके चाहे जैसे उपहारसे संतुष्ट हो जाते हैं; पर जो किसी उद्देश्यसे आता है, उससे उचित उपहार और व्यवहार चाहते हैं। यही बात देवताओंके सम्बन्धमें भी है; क्योंकि वे भी उच्चकोटिके जीव ही तो हैं।

मन्त्र, स्तुति तब पूजा

भाव-स्तरोंके देवता तो उनके अधिष्ठाता हैं। उस भावके कम्पनकी अव्यक्तमें स्थित आकृतियाँ उसके स्वरूप हैं—जैसे हमारे शरीरकी वह आकाशमें स्थित छाया, जिसे छाया-पुरुष कहते हैं। शरीरकी शक्तिकी वही आकृति है। आकृतिके साथ कम्पनमें शब्द भी होता है। ये शब्द ही बीज-मन्त्र हैं। बीज-मन्त्रोंसे ही पूरे मन्त्रका विस्तार होता है। मन्त्र उन कम्पनोंके शब्द हैं, जो देवताके स्वरूप, स्वभाव, पार्षद, वाहनादिसे उत्थित हैं। देवता मन्त्रमय होते हैं, यह अनेक बार शास्त्रोंमें कहा गया है। ऋषियोंने ध्यानमें उन शब्दोंको साक्षात् करके प्रकट किया है। जब हम एक मन्त्रका जप करते हैं, तब हमारे मनमें उन शब्दोंका कम्पन उत्थित होता है। फलतः हमारा मन उन कम्पनोंसे उस भाव-स्तरमें पहुँचता है, जो उस देवताका भाव-स्तर है, जिसका हम मन्त्र जानते हैं। मन उस देवताके सम्पर्कमें आता है, देवताका आकर्षण होता है।

परीक्षणके लिये एक फूल या शीशेके बर्तनको धीरे-धीरे बजाया जाय। एक सारंगीके स्वरको उस बर्तनकी झनकारसे मिला दिया जाय। यदि सारंगीका स्वर पूर्णतः मिल गया तो फिर बर्तन सारंगीके साथ स्वतः बजाता जायगा। उसे बजाना नहीं पड़ेगा और यदि सारंगीका स्वर बहुत उच्च कर लिया जाय तो झंकृति न सहनेसे बर्तनके टुकड़े-टुकड़े हो जायँगे। इससे भी सरल परीक्षण है कि एक स्थानपर दो ढोलकें मिलाकर रख दी जायँ। एक ढोलकके चमड़ेपर ढोलक खड़ी करके कुछ चावल रख दीजिये। दूसरी ढोलक बजानेसे चावल हिलेंगे और उछलेंगे। इसका अर्थ है कि समान झंकृति दूसरेको प्रभावित करती है।

देवता सूक्ष्म हैं, अतः उनकी मन्त्र-झंकृति भी सूक्ष्मतम है। मन्त्र-जप इसीसे वाचिकसे उपांशु और उपांशुसे मानसिक अधिक प्रभावपूर्ण माना गया है; क्योंकि जप जितना सूक्ष्म होगा, अव्यक्तमें व्याप्त

मन्त्रकी झंकृतिसे मनकी स्वर-झंकृतिको मिलनेका उतना ही अवकाश होगा। यहीं दूसरी बात मन्त्रमें अधिकारकी भी समझ लेने योग्य है। हम अभी बता आये हैं कि काचका ग्लास सारंगीकी उच्च स्वर-झंकृतिको न सह पानेसे टूट जाता है। इसी प्रकार सबके अन्तःकरण समान नहीं होते। सब मन्त्रोंकी स्वर-झंकृति समान नहीं होती। अनधिकारी जब अपने अधिकारसे बाहरके मन्त्रका जप करता है, तब उसकी हानिकी ही सम्भावना रहती है। ऋषियोंने इसीसे मन्त्रोंके अधिकारीका विस्तृत विधान किया है। सकाम मन्त्रोंमें ऋणी-धनी आदि विस्तृत मन्त्र-विचार होता है।

मन्त्रका बराबर जप करनेसे मनमें मूलतः मन्त्रका कम्पन जिसे शास्त्रीय शब्दोंमें मन्त्र-जागरण कहते हैं, उत्थित हो जाता है। जैसे दो वाद्योंका मिलानेके लिये कुछ काल प्रयत्न करना पड़ता है, इसी प्रकार मन्त्रोंके भी पुरश्चरणादिकी विधियाँ हैं। विधिपूर्वक ठीक संख्यातकका जप मन्त्र-जागरण कर देता है। इसमें जपकर्ताकी मानसिक स्थिति भी शीघ्रता और विलम्बका कारण होती है। मन्त्र-जागरण अर्थात् मन्त्र-कम्पनका मनमें ठीक उत्थान हो जानेपर जप स्वतः चलने लगता है, जैसे ऊपर शीशेके बर्तनके स्वतः बजनेकी बात लिख आये हैं तथा मन्त्र-देवतासे सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

स्तुति भी एक प्रकारका जप है। फ्रांसमें किसी महिलाने एक यन्त्र बनाया था, जिसके सम्मुख गानेसे उसके पर्देपर पड़े रंगीन बालूके कण उछल-कूदकर उस शब्द-कम्पनका चित्र बना देते थे। एक भारतीय विद्यार्थीने उस यन्त्रके सम्मुख जब आदिशंकराचार्यका कालभैरव-स्तोत्र गाया तो पर्देपर बालूके कणोंद्वारा कुत्तेपर सवार डंडा लिये काशीके काल-भैरवकी मूर्ति बन गयी। इसका तात्पर्य यह है कि प्राचीन ऋषियोंके स्तोत्र देवताके मन्त्रात्मक सम्बन्धको समझकर निर्मित हुए हैं। उनके द्वारा देवतासे शीघ्र सम्बन्ध स्थापित होता है। नवीन स्तोत्रोंमें, जो सामान्य पुरुषोंकी रचनाएँ हैं, यह शक्ति नहीं है।

देवपूजाका भी शास्त्रोंमें निश्चित विधान है। संकल्प, ध्यान, आवाहन तथा पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजन आदि। प्रत्येक देवताके पूजनकी सामग्री, न्यासके मन्त्रादि तथा पूजाके मन्त्र पृथक्-पृथक् हैं। प्रत्येक मन्त्रमें एक कम्पनात्मक शक्ति है, प्रत्येक पदार्थ भी एक अव्यक्त झंकृतिसे सम्बन्धित है; क्योंकि आकृतिका भी रेखाङ्कन होता है। इस प्रकार पूजामें हम एक देवताको आकर्षित करते हैं और उसके स्वभावके अनुसार उसे संतुष्ट करते हैं।

मन्त्र-जप, स्तोत्र, देवपूजन—ये सब दो दृष्टियोंसे होते हैं—एक तो विधानात्मक दृष्टि है और दूसरी भावनात्मक। सकाम जप-पूजादि विधिपूर्वक होनेपर ही फल देते हैं, विधिभङ्ग होनेपर फल नहीं देते। अतः केवल भावपूर्वक पूजन—जिसमें स्वेच्छाके मन्त्र, यथोपलब्ध सामग्री तथा अपने भावोंमें स्तुति आदि होती हैं—निष्काम-भावसे ही होना चाहिये। निष्कामभावसे सविधि पूजनादि हो तो और भी श्रेष्ठ है। विधिपूर्वक यजन-पूजनादिकी व्यवस्था कर्मकाण्ड करता है। इस दर्शनशास्त्रमें कर्म ही परम फलदायक माना गया है। अमुक प्रकारके कर्मका अमुक फल होता है, यह इस शास्त्रका सिद्धान्त है। इसके अनुसार जप, स्तवन, पूजनादि समस्त कर्म एक प्रकारका यन्त्र-विस्तार है। जैसे स्थूल जगत्में यह निश्चित है कि अमुक प्रकारका यन्त्र (मशीन) बनाकर अमुक ढंगसे चलानेसे अमुक परिणाम प्राप्त होगा, वैसे ही ये कर्म सूक्ष्म जगत्को प्रभावित करके सूक्ष्म जगत् या स्थूल जगत्में परिणाम प्राप्त करते हैं; क्योंकि स्थूल जगत् सूक्ष्म जगत्का वशवर्ती और उसीका परिणाम है; जैसे विद्युत्का परिणाम अग्नि। स्थूल यन्त्रमें थोड़ी भी त्रुटि होनेसे जैसे पूरा यन्त्र निष्क्रिय हो जाता है, उसपर श्रम व्यर्थ होता है, कभी-कभी उससे हानिकारक परिणाम भी प्रकट होते हैं, उसी प्रकार कर्मकाण्डमें भी पूजनादिके सारे विधान निश्चित हैं। वहाँ त्रुटि होनेसे पूरा श्रम निष्फल हो सकता है या हानिकर फल भी प्रकट कर सकता है।

स्थूल जगत्से सूक्ष्म जगत्में एक विशेषता है। निष्काम भावसे किये जानेवाले कर्म वहाँ यन्त्र नहीं रह जाते। वे विधिपूर्वक हो या विधिको बिना जाने; परन्तु क्योंकि सूक्ष्म जगत् भाव-जगत् है, अतः वहाँ कर्मका स्वरूप भावसे निश्चित होता है। स्थूल जगत्के यन्त्रोंको बनानेवालेने उन्हें किस भावसे बनाया, यह जानना आवश्यक नहीं। उनकी स्थूल आकृति निर्दोष होनी चाहिये। भाव-जगत्के कर्मोंके सम्बन्धमें भाव प्रधान होता है। वहाँ भावदोषसे कर्ममें दोष हो जाता है; क्योंकि कर्मके उपकरण स्थूल पदार्थ तो यहीं रह जाते हैं, उनके सम्बन्धमें हमारा भाव और भाव-स्तरोंके वे भाव जो उन पदार्थों एवं क्रियाओंके उत्पादक हैं—ये ही दोनों वहाँ

काम करते हैं। यदि हमारा भाव कामनायुक्त है तो क्रियाओं एवं पदार्थोंके मूल भाव व्यवस्थित होने चाहिये। यदि हम निष्काम हैं तो हमारा मन केवल इसीलिये कर्ममें प्रवृत्त होता है कि हम उस देवताकी आराधनामें रुचि रखते हैं। यहाँ मन स्वत: सम्बन्धमें स्थित है। अतएव पूजाका भाव ही पूजादिकी त्रुटि पूर्ण कर देता है।

देवजाति तथा देवाचार

देवताओंसे मैंने राजस, तामस, सात्त्विक—सभी देवताओंका ग्रहण किया है। जिनकी भी पूजा-उपासनादि होती है, वे सभी देवता हैं। भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष, राक्षस, बेताल आदि तामस देवता है। यक्षिणी, योगिनी आदि राजस कोटिमें हैं। देवता (सूर्य-गणेश-इन्द्रादि), ऋषि (सनकादि), नित्य पितर—ये सात्त्विक देवता हैं। एक ही देवताके सात्त्विक, राजस तथा तामस रूप भी उपासना-भेदसे होते हैं; जैसे गणेशजीका गणपतिरूप, चण्डविनायकरूप और उच्छिष्टविनायकरूप या शक्तिके गौरी, काली एवं चामुण्डारूप। जो देवता जिस प्रकारके हैं, उनकी उपासना-पद्धति, उनकी पूजा-सामग्री, उनके उपासकका वेश तथा आचार भी उसी प्रकारका होता है और मरनेपर उपासक उन्हींका लोक पाता है।

उपास्य देवताओंके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी देववर्ग हैं, जिनकी सामान्यत: उपासना नहीं होती—जैसे मनु-गन्धर्वादि; परन्तु शास्त्रोंमें इनकी उपासनाका भी वर्णन है और इनके द्वारा भी उपासकको उसका अभीष्ट प्राप्त होता है। भगवान् तो सर्वव्यापक हैं और सर्वरूप हैं; अत: किसी देवताके रूपमें उसे सर्वेश्वर मान लेनेपर भगवान्‌की उपासना हो जाती है। उन सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान् द्वारा उसी रूपमें समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं; किंतु जब किसी देवताको देवता मानकर पूजा की जाती है, तब यह बात नहीं होती—जैसे स्त्री जब पतिको मनुष्य मानती है, तब वह उस मनुष्यकी शक्ति-सीमामें होनेवाले लाभको ही पा सकती है; परन्तु जब वह पतिमें दृढ़ भगवद्भाव कर लेती है, तब वह पतिसे इस लोक एवं परलोककी समस्त शक्ति प्राप्त कर लेती है। पतिमें वह शक्ति नहीं होती। वह तो स्त्रीके भावके कारण भगवान्‌की शक्तिके व्यक्त होनेका एक माध्यम मात्र रह जाता है।

सभी देवताओंका भाव-जगत्‌में एक कार्यक्षेत्र है और उनकी शक्तिकी एक सीमा है। अपनी शक्तिके अनुसार अपने कार्य-क्षेत्रमें ही वे कुछ कर सकनेमें समर्थ हैं। इसलिये शास्त्रोंने बताया है कि किस कार्यके लिये किस देवताकी आराधना करनी चाहिये। भाव-जगत् भी एक जगत् ही है। देवताओंमें भी समान शक्ति नहीं है। उनमें शक्तिका तारतम्य है और उनमें अधिक शक्तिशाली दूसरोंको प्रभावित भी करता है। यहाँ भी शासक तथा शासित हैं। उपासना-पद्धति तथा उसका परिणाम इन सबसे प्रभावित होता है।

देवता कभी हमारे पदार्थ तो ग्रहण करते नहीं। वे खाते-पीते देखे नहीं जाते। उनके नामपर क्या ये पदार्थ उपासक या पुजारी आपने ही लिये नहीं संग्रह करते? यह तर्क बहुत ही ओछा है। जीव किसीका कभी कुछ नहीं खाता। सूक्ष्मशरीर भी भोजनका गन्धरूप सूक्ष्मांश ही ग्रहण करता है। पदार्थोंसे हमारा स्थूलशरीर ही पुष्ट होता है। इतनेपर भी हम अच्छे पदार्थोंकी कामना करते हैं, उनके देनेवालोंपर संतुष्ट होते हैं। हमारे लिये रसोइया खराब भोजन बनाये तो हम उसपर रुष्ट होते हैं। बात यह है कि हम पदार्थोंसे तुष्टि ही ग्रहण करते हैं। पदार्थ स्थूल-शरीरतक ही रह जाता है।

देवताओंके शरीर स्थूल भूतोंके नहीं है। प्रेतादि तमोगुणी योनियोंके शरीर वायुप्रधान धूमात्मक होते हैं, यक्षादि रजोगुणियोंके वायवीय तथा सूर्य-वरुणादि सात्त्विक देवताओंके ज्योतिर्मय शरीर होते हैं। ये घनीभूत होकर मनुष्याकृति या स्वेच्छानुसार किसी भी आकृतिमें प्रकट हो सकते हैं, मनुष्योंको दर्शन दे सकते हैं; किंतु उस समय भी उनका विभाग सम्भव नहीं है। सूक्ष्म-शरीरोंकी पुष्टि पदार्थके सूक्ष्मांशसे होती है। देवता पदार्थके गन्धसे ही पोषण प्राप्त कर लेते हैं। और पदार्थोंसे तुष्टि तो उनकी भी वैसी ही है, जैसी हमारी; वह तो दोनों स्थानोंपर भावात्मक ही है। एक पदार्थ एकको तुष्ट करता है, दूसरेको नहीं। आदरपूर्वक अर्पित पदार्थ कम अच्छा हो तो भी तुष्ट करता है और अनादरसे दिया गया उत्तम पदार्थ भी तुष्ट नहीं करता।

देवताओंके आचारके सम्बन्धमें इतना जानना ही पर्याप्त है कि वे भी जीव हैं। वे भी अपने स्वभावके अनुसार व्यवहार करते हैं। हम अपनेमेंसे स्थूल-शरीर तथा उसके धर्मको पृथक् करके सूक्ष्म-शरीरके व्यवहारको ध्यानसे समझनेका प्रयत्न करें तो देव-स्वभाव तथा देवाचार हमारी, समझमें आ जायगा। शास्त्रोंमें भूत-प्रेत-

यक्षादि तथा देववर्ग, पितर—इन सबके आचार, स्थान, आहार, स्वभाव, कार्यादिका विस्तृत वर्णन है। ये बातें शास्त्रोंसे ही जाननी चाहिये।

मुख्य प्रश्न है मरणोत्तर जीवनका। मरणोत्तर जीवन है, यह समझमें आते ही यह बात भी समझमें आ जाती है कि जीवके सूक्ष्म-शरीरादि भी हैं। विचार एवं उनसे पदार्थकी अभिव्यक्ति क्रिया एवं पदार्थमात्रमें उन जीवोंकी सत्ता तथा उनका कार्य-क्षेत्र सिद्ध कर देते हैं। हिंदू-शास्त्रोंके देवतावादमें इसी रहस्यको प्रकट किया गया है और यह अधिदेववाद ही हिंदू आचार-व्यवहारको प्रेरित करता है। हिंदू इस मूल धारणाकी भित्तिपर ही अपने विचार-व्यवहारका विस्तार करता है।

'व्रजभूमि मोहनी मैं जानी'

(लेखक—श्रीरामलालजी श्रीवास्तव, बी०ए०)

व्रजभूमि भगवान् मदनमोहनकी रसमयी लीलाभूमि होनेके नाते सर्वदा-सर्वथा मोहिनी है। उसके मोहन स्वरूपकी जानकारी अथवा साक्षात्कार रससिद्ध संत-कवियोंकी वाणीके द्वारा ही सम्भव है। श्रीभट्ट-ऐसे भगवत्-लीला-मर्मज्ञ भक्तकविके नयन ही मोहिनी व्रजभूमिका दर्शन कर सके, साधारण कोटिके जीवोंको ऐसा सौभाग्य तो भगवान्‌के कृपा-प्रसादसे ही मिलता है। समग्र व्रजमण्डल परम मङ्गलमय, चिन्मय तथा अलौकिक है। व्रजभूमिकी मधुमयता—रसमयता, लीला-मयताके बहुत बड़े पारखी नारायणभट्ट गोस्वामीने अपने व्रज-भक्ति-विलास ग्रन्थमें स्वीकार किया है—

व्रजस्य शुभमर्यादा कृष्णलीलाविनिर्मिता।
यादवानां च गोपानां रम्यभूमिर्मनोहरा॥
रत्नगर्भा पयःपूर्णा मणिकाञ्चनभूषिता।

'व्रजकी शुभ मर्यादा श्रीकृष्णकी लीलासे ही निर्मित'—निर्धारित है। वह यादवों एवं गोपोंकी मनोहर रमणस्थली तथा रत्नगर्भा है और विमल जलसे परिपूर्ण एवं मणिकाञ्चनभूषिता है।' इतना कहनेपर भी उन्हें संतोष न हो सका; वे फिर कहते हैं—

यथा भागवतं श्रेष्ठं शास्त्रे कृष्णाकलेवरम्।
तथैव पृथिवीलोके सवनं व्रजमण्डलम्॥

उन्होंने '**व्रजमण्डलं भगवदङ्गरूपम्**' की घोषणा की है अपने इस अपूर्व ग्रन्थमें। व्रजभूमिकी भगवदङ्ग-स्वरूपता—सम्पूर्ण चिन्मयता नितान्त असंदिग्ध और शास्त्रसम्मत है।

व्रजमण्डलकी भगवदङ्गस्वरूपताके प्राण चिन्मय गिरिराज, भगवती कालिन्दी तथा वृन्दावन आदि हैं। परम भागवत रसिक नन्ददासकी उक्ति है—

जो गिरि रुचै तौ बसौ श्रीगोवर्धन,
गाम रुचै तौ बसौ नँदगाम।
नगर रुचै तौ बसौ श्रीमधुपुरी,
सोभा सागर अति अभिराम॥
सरिता रुचै तो बसौ यमुनातट,
सकल मनोरथ पूरनकाम।
'नंददास' कानन जो रुचै तौ
बसौ भूमि बृंदाबन धाम॥

व्रजमण्डलका महिमा-गान इसी प्रकार महाभागवत सूरदास, रसिकसम्राट् महात्मा हितहरिवंश तथा रसिकशेखर स्वामी हरिदास आदिकी रसमयी रचनाओंमें मिलता है।

श्रीगिरिराज गोवर्धन भगवान् श्रीकृष्णका चिन्मय विग्रह ही है। श्रीचैतन्यमहाप्रभुके सम-सामयिक केशवाचार्यकी अपने 'गोवर्धन-शतक' काव्यमें उक्ति है—

गायन्तं निजवेणुभिर्व्रजवधूनामावलीमादराद्
बिभ्राणं तिलकश्रियं मुनिजपाक्रान्तं च गुञ्जाभृतम्।
धातुस्फीततनुं च चन्द्रकधरं शाण्डिल्यवृन्दावृतं
ध्यायेत् कृष्णमिवातिसुन्दरतनुं गोवर्द्धनाख्यं गिरिम्॥

(गोवर्धनशतक २४)

'मैं श्रीकृष्णके समान अत्यन्त सुन्दर शरीरवाले गोवर्धन नामक गिरिका ध्यान करता हूँ। गोवर्धन अपने वेणुवृक्षोंद्वारा अत्यन्त आदरपूर्वक व्रजवधू-नामावलीका गान करते हुए, तिलक वृक्षकी शोभा धारण किये, अगस्त्य तथा जपा-कुसुमोंसे विलसित, गुञ्जाओंसे विभूषित, गैरिक-हरताल आदि धातुओंसे मण्डित, मयूर-पिच्छोंसे शोभित तथा बिल्व एवं तुलसीसे परिव्याप्त हुए स्थित

हैं।' (ये ही विशेषण कुछ परिवर्तनके साथ श्रीकृष्णपर भी लागू हो सकते हैं। इस प्रकार यहाँ श्लेषोपमाका बहुत सुन्दर निर्वाह हुआ है।) श्रीगिरिराजकी चिन्मयताके दर्शनमात्रसे ही चैतन्यमहाप्रभु विह्वल हो गये थे। श्रीचैतन्य-चरितामृतमें वर्णन मिलता है—

तबे चलि आइला प्रभु सुमन सरोवरे,
गोवर्द्धन देखि ताहाँ हइला विह्वले।
गोवर्द्धन देखि प्रभु हइला दण्डवत,
एक शिला आलिंगिया हइला उन्मत्त॥

व्रजविलासिनी कलिन्दनन्दिनी नवघनश्यामशरीर नन्दनन्दनकी रसमयी लीलाओंकी प्राणभूमि हैं। श्रीकालिन्दीके सरस तटपर स्थित अनेकानेक निकुञ्जों और रमणस्थलोंकी अभिरामता भगवत्सौन्दर्यका सूक्ष्म प्रतीक है।

श्रीवृन्दावन व्रजमण्डलका प्राण है। यह परम दिव्य और गुप्त है। सर्वत्र श्रीहरिका दर्शन करनेवाले ही वृन्दावनका रहस्य श्रीहरिकी कृपासे समझ सकते हैं।

श्रीवृन्दावनकी रसमयता अथवा लीलामयताके आधार श्रीराधा-कृष्ण हैं। सम्पूर्ण वृन्दावन श्रीकृष्णके सौन्दर्य-माधुर्यसे नित्य-निरन्तर सम्प्लावित रहता है। देवगण विमानोंपर चढ़कर श्रीवृन्दावनपर सुमन-वृष्टि करते रहते हैं; वे कहते रहते हैं कि वृन्दावन, व्रजबालाएँ, वंशीवट, यमुना-तट, लता-वृक्ष सब-के-सब धन्य हैं। वे वृन्दावनकी महिमा गाते थकते ही नहीं। महाकवि नन्ददासकी उक्ति है उनकी रासपञ्चाध्यायीमें—

श्रीबृंदाबन चिदघन कछु छबि बरनि न जाई।
कृष्न ललित लीला के काज धरि रह्यो जड़ताई॥

× × ×

देवन मैं श्रीरमारमन नारायन प्रभु जस!
बन मैं बृंदाबन सुदेस सब दिन सोभित अस॥
या बन की बर बानिक या बनहीं बनि आवै।
सेस महेस सुरेस गनेस न पारहि पावै॥

यह उक्ति उन नन्ददासकी है, जिन्होंने जगत्के रूप-प्रेम-आनन्दरसको श्रीगिरधरदेवका ही स्वीकार करके अपनी रसमयी वाणीका विषय बनाया था। अपनी रसमञ्जरीमें एक स्थलपर वे कहते हैं—

रूप प्रेम आनंद रस जो कछु जग में आहि।
सो सब गिरिधर देव कौ, निधरक बरनौं ताहि॥

ऐसे ही उच्चकोटिके रसिकोंको वृन्दावनका चिन्मय स्वरूप दीखता है। रसिक भक्तोंने तो यहाँतक कह डाला है—*'कहा करौं बैकुंठै जाइ।'* क्योंकि न तो वैकुण्ठमें वंशीवट, यमुना, गोवर्धन और नन्दकी गायें हैं न उसमें कुञ्ज, लता और द्रुमोंका स्पर्श करके बहनेवाला पवन है; उसमें श्रीकृष्णका प्रेमसाम्राज्य है ही नहीं, न वृन्दावनकी भूमि ही है। मोहिनी व्रजभूमिका रस ही ऐसा है कि उसका त्याग नहीं हो सकता। महामति श्रीभट्टकी उक्ति है—

व्रजभूमि मोहनी मैं जानी।
मोहन कुंज मोहन श्रीबृंदाबन, मोहन जमुना पानी॥
मोहनि नारि सकल गोकुल की, बोलत मोहनि बानी।
'श्रीभट' के प्रभु मोहन नागर, मोहनि राधा रानी॥

(युगलशतक ४)

भगवान् श्रीकृष्णके मोहन रूप-रसका आस्वादन करनेवालोंने सदा उनसे यही वरदान माँगा है कि मैं व्रजमें लता बन जाऊँ, जिससे गोपी-पद-पङ्कजकी रजसे मेरा अभिषेक होता रहे और निरन्तर अधर-देशमें श्रीराधारानीका नाम अङ्कित रहे। व्रजभूमिकी मोहिनी छवि कितनी मधुर और रसमयी है!

गङ्गा-स्तुति

हरनि पाप त्रिबिध ताप सुमिरत सुरसरित।
बिलसति महि कल्प बेलि मुद मनोरथ फरित॥
सोहत ससि धवल धार सुधा सलिल भरित।
बिमलतर तरंग लसत रघुबर के से चरित॥
तो बिनु जगदंब गंग कलिजुग का करित?
घोर भव अपार सिंधु तुलसी किमि तरित॥

बदरिकाश्रम-तीर्थ

[रचयिता—पं० श्रीसरयूप्रसादजी शास्त्री (द्विजेन्द्र) काव्यतीर्थ, आयुर्वेद शास्त्री, साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, कविता-कलानिधि]

एक दिन नारद सुरर्षि गये वहाँ,
विष्णु नारायण विराज रहे जहाँ।
दिव्यलोक अपूर्व वैभव पूर्ण था,
शान्तिका साम्राज्य छाया पूर्ण था।

यक्ष-किंनर-सिद्ध-मुनिजन-वृन्दसे,
देवताओंसे सुशोभित जो सदा।
द्रुम-लता-मण्डित तथा खगवृन्दसे,
गुंजरित जो 'बदरिकाश्रम' सर्वदा॥

बेल, बैर, बहेड़, अमड़ा, आँवला,
आम्र, जामुन, कैथ और कदम्बसे।
मालती, जूही, चमेलीकी लता,
केदली-दल, अलकनन्दा-अम्बुसे॥

था घिरा जो वृत्त-विषमाकारसे,
अति पवित्र विचित्र कानन-कुञ्जसे।
कौन वर्णन कर सकेगा शब्दसे,
जो प्रभान्वित हो रहा तप-पुञ्जसे॥

पर्वतीय प्रदेश दिव्यालोकमें,
चन्द्रिका जब छिटकती राकेशकी।
तब वहाँ वे भोजपत्रोंकी बनी,
पर्णकुटियाँ मोहतीं मति शेषकी॥

मध्यवर्ती शिखरपर रहते जहाँ,
बद्रि केदारेश-ज्योतिर्लिङ्ग हैं।
दूरसे होते विदित वे आज भी,
रजतमय मानो समुज्ज्वल शृङ्ग हैं।

पहुँचकर देवर्षि नारदजी वहाँ,
सत्य-शिव-सुन्दर अनन्त विभूतिमय।
दिव्यरूप अनूप नारायणमयी,
तपोमूर्त्ति विलोक बोले—'जयतु जय!'॥

दण्डवत् साष्टाङ्ग कर मुनिवर वहाँ,
कर-कमल जोड़े हुए कहने लगे—
लोकके 'कल्याण' मिस मानो अहा!
दर्शकोंके चित्त वे हरने लगे॥

बद्रिनारायण! सुरोत्तम विष्णु हे!
सत्यवादी सत्यसम्भव सत्यव्रत!!
तपोमूर्ति, जगन्निवास जगत्पते!
देवदेव! दया करो हे सुव्रत!!

कोटि-कोटि प्रणाम मेरा लीजिये,
दया-दृष्टि दयानिधे! अब कीजिये।
एक बार स्वभक्त-जनपर कर कृपा,
कलियुगी-जन-ताप द्रुत हर लीजिये॥

देखिये, कलिकालके नेता जहाँ,
विषयमें आसक्त अभिमानी बनें।
कीर्ति-धन-दारा-परायण स्वार्थरत,
द्वेष-ईर्ष्यायुक्त मनमानी ठनें॥

ऊँच-नीच विचार छोड़ेंगे सभी,
पुण्य प्रिय होगा नहीं, प्रिय पाप ही।
प्रजातन्त्र-स्वतन्त्रताके व्याजसे,
छत्रहीन नरेश हों बनेंगे आप ही॥

मोद मानेंगे उसीमें नित्य ही,
आसुरी सम्पत्ति पाकर हाय! वे।
प्रजा पीड़ित हो उठेगी लोकमें,
जिस समय निज धर्म-कर्म विहाय वे॥

दस्यु-जन-आतङ्कसे शङ्कित मही,
बाढ़-पीड़ित, क्षुधित हो भूकम्पसे।
अन्न-वस्त्र-विहीन गृहसे हीन हो,
जल मिलेगा लोकमें जब पम्पसे॥

ब्याह-बन्ध न, बन्धु-बन्धन हो जहाँ,
धर्म-कर्म-प्रबन्ध मनमाना रहे।
संविधान नवीन, अस्थिर योजना,
अन्त्यजोंके हाथमें पानी रहे॥

उस समय उन मानवोंके त्राण हित,
क्या उपाय प्रभो! करेंगे लोकमें।
धर्म-निरपेक्षित 'स्वराज' चले जहाँ,
छत्रहीन अराजताके लोकमें॥

प्रार्थना सुनकर सुरर्षि मुनीन्द्रकी,
विष्णु नारायण प्रसन्न हुए वहाँ।
वत्स! शङ्का क्यों ? जहाँ 'हरिधाम' है,
'तीर्थरूप' 'द्विजेन्द्र' रक्षक-सा जहाँ।

तीर्थमें जाकर

(१)

तीर्थमें जाकर—दूसरोंको आराम दो, स्वयं आराम मत चाहो।
तीर्थमें जाकर—दूसरोंको सुविधा दो, स्वयं सुविधा मत चाहो।
तीर्थमें जाकर—दूसरोंको सम्मान दो, स्वयं सम्मान मत चाहो।
तीर्थमें जाकर—दूसरोंको सेवा दो, स्वयं सेवा मत चाहो।
इससे— अपने-आप सबको आराम मिलेगा।
अपने-आप सबको सुविधा मिलेगी।
अपने-आप सबको सम्मान मिलेगा।
अपने-आप सबको सेवा मिलेगी।
तीर्थमें जाकर— दूसरोंकी आशा भरसक पूरी करो,
दूसरोंसे आशा मत करो।
तीर्थमें जाकर— दूसरोंके अधिकारकी रक्षा करो,
अपना अधिकार त्याग दो।
तीर्थमें जाकर— दूसरोंके साथ उदारता बरतो,
अपने साथ न्याय बरतो।
तीर्थमें जाकर— दूसरोंके छोटे दुःखको बड़ा समझो,
अपने दुःखकी परवा मत करो।

(२)

तीर्थमें जाकर— बुरी आदत छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— झूठा मान छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— कटु वचन छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— अकर्मण्यता छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— झूठ बोलना छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— रिश्वतखोरी छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— बेईमानी-चोरी छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— स्वार्थपरता छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— ईर्ष्या-डाह छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— शराब-कबाब छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— बीड़ी-तम्बाकू छोड़ो।
तीर्थमें जाकर— भाँग-गाँजा छोड़ो।
दया करो, ममता नहीं।
सेवा करो, अहसान नहीं।
प्रेम करो, चाह नहीं।
भक्ति करो, भोग नहीं।

तीर्थयात्रामें क्या करें ?

तीर्थयात्रामें—सादा भोजन करो तो जीभ-मन वशमें होंगे।
तीर्थयात्रामें—सबकी सेवा करो तो तीर्थका फल मिलेगा।
तीर्थयात्रामें—सादे कपड़े पहनो तो सीधापन प्राप्त होगा।
तीर्थयात्रामें—भगवान्‌का नाम लो तो जीवन सफल होगा।
तीर्थयात्रामें—भगवान्‌का नाम गाओ।
तीर्थयात्रामें—भगवान्‌के गुण गाओ।
तीर्थयात्रामें—भगवान्‌में मन लगाओ।
तीर्थयात्रामें—भगवान्‌में बुद्धि लगाओ।
तीर्थयात्रामें—भगवान्‌का सदा स्मरण रखो।
तीर्थयात्रामें—भगवान्‌को सब समर्पण कर दो।
तीर्थमें जाकर—जीवनमें कभी अभक्ष्य-भक्षण न करोगे, यह व्रत लो।
तीर्थमें जाकर— जीवनमें कभी झूठ न बोलोगे, यह व्रत लो।
तीर्थमें जाकर— जीवनमें कभी क्रोध नहीं करोगे, यह व्रत लो।
तीर्थमें जाकर— जीवनमें कभी पर-स्त्रीको बुरी दृष्टिसे नहीं देखोगे, यह व्रत लो।
तीर्थमें जाकर— जीवनमें कभी दूसरोंका बुरा न करोगे, यह व्रत लो।
तीर्थमें जाकर— जीवनमें सदा भगवान्‌को याद रखनेकी चेष्टा करोगे, यह व्रत लो।
तीर्थमें जाकर— जीवनमें कभी कुसङ्ग न करोगे, यह व्रत लो।
तीर्थमें जाकर—जीवनमें प्रतिदिन २१६०० भगवान्‌के नाम लोगे, यह व्रत लो।

तीर्थ-श्राद्ध-विधि

प्राय: प्रत्येक तीर्थमें श्राद्ध[1] करनेका विधान है। गया, ब्रह्मकपाली (बदरीनारायण), कपिलधारा (नर्मदा-तट) आदि तीर्थ तो श्राद्धके लिये अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। अत: उपयोगी समझकर यहाँ उसकी विधि लिखी जाती है। तीर्थ-श्राद्धमें अर्घ्य, आवाहन, ब्राह्मणाङ्गुष्ठनिवेशन, विकिर तथा तृप्तिविषयक प्रश्न नहीं किये जाते। ब्राह्मण-परीक्षण भी नहीं करना चाहिये। पिण्डदान पायस, संयाव (घी, दूध, आटेको पकाकर बनाये गये एक पदार्थ) अथवा सत्तूसे करना चाहिये। तीर्थश्राद्धमें गीध, चाण्डाल आदिको भी देखनेसे रोकना नहीं चाहिये। इस श्राद्धमें जिसका पिता जीवित हो, उसका भी अधिकार है।[2]

तीर्थस्नायीको स्नानादि नित्यकर्म समाप्तकर रक्षादीप (साक्षिदीप) जलाकर पूर्वमुख बैठकर पहले पवित्र धारणपूर्वक प्राणायाम करना चाहिये। तदनन्तर—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्।
स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समारभे॥
सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ।
चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥
तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः।
प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥
नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः॥
प्राच्यै नमः। अवाच्यै नमः। प्रतीच्यै नमः। उदीच्यै नमः॥

—इन मन्त्रोंसे गया, गदाधर आदि देवताओं तथा दिशाओंको नमस्कार करके यव तथा पुष्पोंसे '**श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर पृथ्वीका प्रोक्षण करना चाहिये। फिर '**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा०**' से अपने ऊपर जल छिड़कर देश-कालका कीर्तन करते हुए निम्न प्रकारसे संकल्प करना चाहिये—

ॐ तत्सत् अद्य......अमुकोऽहं.......अमुकगोत्राणां पित्रादिसमस्तपितॄणां मोक्षार्थमक्षयविष्णुलोकावाप्त्यर्थं मम आत्मसहितैकोत्तरशत[3] कुलोद्धारणार्थं अमुक गयातीर्थे श्राद्धमहं करिष्ये।

फिर—

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः॥

—इस श्राद्ध-गायत्रीको तीन बार पढ़कर अपसव्य हो जाय—यज्ञोपवीतको दाहिने कंधेपर धारण करे। तत्पश्चात् दक्षिणामुख होकर बायाँ घुटना मोड़ दे और एक वेदी बनाकर—

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।

—इस मन्त्रसे उसपर तीन रेखाएँ खींचकर—

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात् प्रणुदात्यस्मात्॥

—इस मन्त्रसे उसके ऊपर अङ्गार घुमाये और उसे दक्षिण ओर गिरा दे। फिर उसपर छिन्नमूल कुशोंको फैलाकर पुरुषसूक्तके सोलह मन्त्रोंका पाठ कर ले। तत्पश्चात् एक दोनेमें जल, तिल, चन्दन छोड़कर मोटक और तिलजल लेकर कहे—

अद्यामुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहा अमुकामुक शर्माणः अमुकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थानेषु अत्रावनेनिग्ध्वं वः स्वधा॥

अद्यामुकगोत्रा मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहा अमुकामुकशर्माणस्तीर्थश्राद्धे अत्रावनेनिग्ध्वं वः स्वधा॥ २॥

अद्यामुकगोत्राः पितृव्यादिसमस्ताश्रितपितरः तीर्थश्राद्धे अत्रावनेनिग्ध्वं वः स्वधा॥ ३॥

तत्पश्चात् पिण्डोंका निर्माण करके उन्हें हाथमें लेकर तिल, मधु, घी आदि मिलाकर एक पिण्ड—

---

१. श्राद्ध करनेयोग्य तीर्थ-स्थानोंकी विस्तृत सूची मत्स्यपुराणके २२वें, ब्रह्मपुराणके ९३वें, पद्मपुराण-उत्तरखण्डके १७५वें तथा १८१वें अध्यायोंमें एवं इस अङ्कके ५३२वें पृष्ठपर देखनी चाहिये।

२. उद्वाहे पुत्रजनने पित्र्येष्ट्यां सौमिके मखे। तीर्थे ब्राह्मण आयाते षडेते जीवतः पितुः॥ (मैत्रायणीय गृह्यपरिशिष्ट)

—उद्वाहे-द्वितीयादौ, प्रथमे तु पितुरेवाधिकारात्, पुत्रजनने—तन्निमित्ते वृद्धिश्राद्धे, पित्र्येष्ट्यां—चातुर्मास्यान्तर्गतायाम्, सौमिके मखे—तार्त्तीयसवनकैः पुरोडाशखण्डैः स्वचमसाधस्तात् पिण्डदाने, ब्राह्मण आयाते—त्रिणाचिकेताद्युत्तमब्राह्मणप्राप्तौ। (वीरमित्रोदयव्याख्या)

३. पिताके गोत्रमें २४, मातृगोत्रमें २०, स्त्रीके गोत्रमें १६, भगिनीके गोत्रमें १२, पुत्रीके गोत्रमें ११, बुआके गोत्रमें १० तथा मौसीके गोत्रमें ८—ये सात गोत्रोंके एक सौ एक पुरुष हैं।

पिता माता च भार्या च भगिनी दुहिता तथा। पितृष्वसा मातृष्वसा सप्तगोत्राणि वै विदुः॥
तत्त्वानि विंशतिनृपा द्वादशैकादश दश। अष्टाविति च गोत्राणां कुलमेकोत्तरं शतम्॥ (कर्मकाण्डप्रदीप)

अद्यामुकगोत्र पितः! अमुकशर्मन्! अमुकतीर्थश्राद्धे एष ते पिण्डः स्वधा।

—कहकर अर्पित करे। इसी प्रकार नाम-गोत्रका उच्चारण करके पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही, मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह, मातामही, प्रमातामही, वृद्धप्रमातामही, पत्नी, पुत्र, पुत्री, पितृव्य (चाचा), मातुल (मामा), मित्र, भ्राता, पितृभगिनी, (बूआ), मातृभगिनी (मौसी), आत्मभगिनी (बहन), श्वशुर, श्वश्रू (सास), गुरु, शिष्यादिके लिये भी पिण्डदान करना चाहिये। अन्तमें—

अज्ञातनामगोत्राः समस्ताश्रितपितरस्तीर्थश्राद्धेय एष वः पिण्डः स्वधा।

—कहकर सभी अज्ञात पितरोंको भी एक पिण्ड दे। फिर एक सामान्य पिण्ड निम्न मन्त्रसे दे—

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च।
गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवादयः॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः।
क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥
विरूपा आत्मगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम।
तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥

इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्रसे एक पिण्ड और देना चाहिये—

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता
मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः।
कुलद्वये ये मम दासभूता
भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥
मित्राणि शिष्याः पशवश्च वृक्षाः
स्पृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतोपकराः।
जन्मान्तरे ये मम संगताश्च
तेभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि॥
उच्छिन्नकुलवंशानां येषां दाता कुले न हि।
धर्मपिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु॥

फिर '**हस्तलेपभाजः पितरः प्रीयन्ताम्**' इस मन्त्रसे कुशमूलसे हाथ पोंछकर सव्य हो जाय—यज्ञोपवीतको पुनः बायें कंधे पर ले आये और भगवान्का स्मरण करे। तत्पश्चात् पुनः अपसव्य होकर '**अत्र पितरो मादयध्वम्**' इस मन्त्रका जप करे। फिर बायें क्रमसे घूमते हुए उत्तरमुख हो जाय और श्वास रोककर '**अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायीषत**' कहते हुए दक्षिणमुख होकर छोड़ दे। फिर निम्न वाक्योंसे प्रत्यवनेजन जल दे—

अद्यामुकगोत्राः पितृपितामहाः तीर्थश्राद्धपिण्डेषु अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वः स्वधा।

अद्यामुकगोत्राः मातामहादयः तीर्थश्राद्धपिण्डेषु अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वः स्वधा॥

अद्यामुकगोत्राः समस्ताश्रितपितरः तीर्थश्राद्धे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वः स्वधा।

फिर नीवी-विसर्जन करके सव्य हो आचमन कर भगवत्स्मरण करे तथा पुनः अपसव्य हो जाय। फिर एक सूत लेकर—

नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वः। एतद्वः पितरो वासः।

—इस मन्त्रसे सभी पिण्डोंपर उसे रख दे या प्रत्येक पिण्डपर एक-एक या तीन-तीन सूत दे। तत्पश्चात् सभी पिण्डोंपर पितृपूजनके उद्देश्यसे गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल आदि अर्पण करे और फिर सव्य होकर '**अघोराः पितरः सन्तु**' तथा **ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृत घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् स्वधास्थ तर्पयत् मे पितॄन्**' इन मन्त्रोंसे पिण्डपर पूर्वमुख होकर जलधारा गिराये। फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

अघोराः पितरः सन्तु। गोत्रं नो वर्द्धताम्। दातारो नोऽभिवर्धन्ताम्। वेदाः संततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमत्। बहु देयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेत्। अतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु। मा च याचिष्म कंचन। एताः सत्या आशिषः सन्तु। सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्तु तथा राज्यं पितरः श्राद्धतर्पिताः॥

फिर अपसव्य होकर पिण्डपर पवित्रसहित कुशोंको रखकर दक्षिणमुख होकर पूर्वोक्त '**ऊर्जं वहन्तीरमृतं**' मन्त्रसे पुनः जलधारा दे और झुककर पिण्डोंको उठाकर रख ले तथा पिण्डोंके आधारभूत कुशोंको अग्निमें डाल दे और—

अस्य तीर्थश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं पितॄणां स्वर्णं रजतं तदभावे किंचिद् व्यावहारिकं द्रव्यं वा यथानामगोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।*

इस संकल्पसे ब्राह्मणको यथाशक्ति दक्षिणा दे।

* 'श्राद्धगणपति' के अनुसार दक्षिणा देनेके बाद भी 'सप्तव्याधा दशार्णेषु' आदि पूर्वोक्त श्लोक पढ़ने चाहिये।

सम्भव हो तो यथाशक्ति एक या तीन ब्राह्मणोंको भोजन कराकर पूजा करे। फिर रक्षादीप बुझाकर, हाथ-पैर धोकर सव्य होकर आचमन करे तथा पुनः तीन बार पितृगायत्री ('देवताभ्यः पितृभ्यश्च' आदि) का जप करे। फिर गौ, काक एवं श्वानको बलि दे और

'**अनेन पिण्डदानाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् पितृस्वरूपो जनार्दनवासुदेवः प्रीयताम्।**' फिर—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

—आदि मन्त्रोंसे '**विष्णवे नमः, विष्णवे नमः, विष्णवे नमः**' कहकर भगवत्प्रार्थना करते हुए विष्णवर्पण करके पिण्डोंको तीर्थमें छोड़ दे।

इति तीर्थश्राद्धविधिः

दशावतारस्तोत्रम्

आदाय वेदाः सकलाः समुद्रान्निहत्य शङ्खासुरमत्युदग्रम्।
दत्ताः पुरा येन पितामहाय विष्णुं तमाद्यं भज मत्स्यरूपम्॥
दिव्यामृतार्थं मथिते महाब्धौ देवासुरैर्वासुकिमन्दराभ्याम्।
भूमेर्महावेगविघूर्णितायास्तं कूर्ममाधारगतं स्मरामि॥
समुद्रकाञ्ची सरिदुत्तरीया वसुन्धरा मेरुकिरीटभारा।
दंष्ट्रागतो येन समुद्धृता भूस्तमादिकोलं शरणं प्रपद्ये॥
भक्तार्तिभङ्गक्षमया धिया यः स्तम्भान्तरालादुदितो नृसिंहः।
रिपुं सुराणां निशितैर्नखाग्रैर्विदारयन्तं न च विस्मरामि॥
चतुस्समुद्राभरणा धरित्री न्यासाय नालं चरणस्य यस्य।
एकस्य नान्यस्य पदं सुराणां त्रिविक्रमं सर्वगतं स्मरामि॥
त्रिःसप्तवारं नृपतीन् निहत्य यस्तर्पणं रक्तमयं पितृभ्यः।
चकार दोर्दण्डबलेन सम्यक् तमादिशूरं प्रणमामि भक्त्या॥
कुले रघूणां समवाप्य जन्म विधाय सेतुं जलधेर्जलान्तः।
लङ्केश्वरं यः शमयाञ्चकार सीतापतिं तं प्रणमामि भक्त्या॥
हलेन सर्वानसुरान् विकृष्य चकार चूर्णं मुसलप्रहारैः।
यः कृष्णमासाद्य बलं बलीयान् भक्त्या भजे तं बलभद्ररामम्॥
पुरा पुराणमसुरान् विजेतुं सम्भावयञ् चीवरचिह्नवेषम्।
चकार यः शास्त्रममोघकल्पं तं मूलभूतं प्रणतोऽस्मि बुद्धम्॥
कल्पावसाने निखिलैः खुरैः स्वैः संघट्टयामास निमेषमात्रात्।
यस्तेजसा निर्दहतीति भीमो विश्वात्मकं तं तुरगं भजामः॥
शङ्खं सुचक्रं सुगदां सरोजं दोर्भिर्दधानं गरुडाधिरूढम्।
श्रीवत्सचिह्नं जगदादिमूलं तमालनीलं हृदि विष्णुमीडे॥
क्षीराम्बुधौ शेषविशेषतल्पे शयानमन्तः स्मितशोभिवक्त्रम्।
उत्फुल्लनेत्राम्बुजमम्बुजाभमाद्यं श्रुतीनामसकृत्स्मरामि॥
प्रीणयेदनया स्तुत्या जगन्नाथं जगन्मयम्।
धर्मार्थकाममोक्षाणामाप्तये पुरुषोत्तमम्॥

इति श्रीशारदातिलके सप्तदशे पटले दशावतारस्तवः।

दशमहाविद्यास्तोत्रम्

नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्डविनाशिनि।
नमस्ते कालिके कालमहाभयविनाशिनि॥
शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरिवल्लभे।
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्॥
जगत्क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्।
करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्॥
हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्।
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालङ्कारभूषिताम्॥
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्।
सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्॥
मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिङ्गशोभिताम्।
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्॥
उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम्।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्॥
श्यामाङ्गीं श्यामघटिकां श्यामवर्णविभूषिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्॥
विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।
आद्यामाद्यगुरोराद्यामाद्यानाथप्रपूजितान्॥
श्रीदुर्गां जनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्॥
त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्॥
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्॥
सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगणवर्जिताम्।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम्॥
विद्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।
महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम्॥

प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्।
रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्॥
भैरवीं भुवनादेवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्।
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्॥
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्।
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्॥
कमलां छिन्नमस्तां च मातङ्गीं सुरसुन्दरीम्।
षोडशीं विजयां भीमां धूम्रां च बगलामुखीम्॥
सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्।
प्रणमामि जगत्तारां सारां च मन्त्रसिद्धये॥
इत्येवं च वरारोहे स्तोत्रं सिद्धिकरं प्रियम्।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि॥
कुजवारे चतुर्दश्याममायां जीववासरे।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्॥
त्रिपक्षे मन्त्रसिद्धिः स्यात् स्तोत्रपाठाद्धि शंकरि।
चतुर्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा॥
निशामुखे पठेत् स्तोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्।
केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा॥
जागर्ति सततं चण्डीस्तोत्रपाठाद्भुजंगिनी।
काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी॥
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।
बगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।
एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्तिताः॥
इति श्रीमुण्डमालातन्त्रे एकादशपटले महाविद्यास्तोत्रम्॥

श्रीविष्णुके एकादश नाम तथा प्रार्थना

राम नारायणानन्त मुकुन्द मधुसूदन।
कृष्ण केशव कंसारे हरे वैकुण्ठ वामन॥
इत्येकादश नामानि पठेद् वा पाठयेद् यतिः।
जन्मकोटिसहस्राणां पातकादेव मुच्यते॥
हे मुरारे मधुकैटभारे गोपाल गोविन्द मुकुन्द शौरे॥
यज्ञेश नारायण कृष्ण विष्णो निराश्रयं मां जगदीश रक्ष।

श्रीलक्ष्मीके द्वादश नाम तथा नमस्कार

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वं सुस्थिरा कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया सम्पद् रमा श्रीः पद्मधारिणी॥
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत् तस्य पुत्रदारादिभिः सह॥
विश्वरूपस्य भार्यासि पद्मे पद्मालये शुभे।
सर्वतः पाहि मां देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

श्रीसरस्वतीके द्वादश नाम तथा नमस्कार

प्रथमं भारती नाम द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवी चतुर्थं हंसवाहिनी॥
पञ्चमं जगती ख्याता षष्ठं वागीश्वरी तथा।
सप्तमं कुमुदी प्रोक्ता अष्टमं ब्रह्मचारिणी॥
नवमं बुधमाता च दशमं वरदायिनी।
एकादशं चन्द्रकान्तिर्द्वादशं भुवनेश्वरी॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।
जिह्वाग्रे वसते नित्यं ब्रह्मरूपा सरस्वती॥
सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने।
विश्वरूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते॥

श्रीगङ्गाके द्वादश नाम तथा उनकी महिमा

विष्णुपादार्घ्यसम्भूते गङ्गे त्रिपथगामिनि।
धर्मद्रवीति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि॥
विष्णोः पादप्रसूतासि वैष्णवी विष्णुपूजिता।
पाहि नमस्त्वेनसस्तस्मादाजन्ममरणान्तकात्॥
तिस्रः कोट्यर्धकोटी च तीर्थानां वायुरब्रवीत्।
दिवि भुव्यन्तरिक्षे च तानि ते सन्ति जाह्नवि॥
नन्दिनीत्येव ते नाम देवेषु नलिनीति च।
वृक्षा पृथ्वी च विहगा विश्वकाया शिवा शिता॥
विद्याधरी सुप्रसन्ना तथा लोकप्रसादिनी।
एतानि पुण्यनामानि स्नानकाले प्रकीर्तयेत्।
भवेत् संनिहिता तत्र गङ्गा त्रिपथगामिनी॥
गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

श्रीसीता-ध्यान-प्रणाम

नीलाम्भोजदलाभिरामनयनां नीलाम्बरालंकृतां
गौराङ्गीं शरदिन्दुसुन्दरमुखीं विस्मेरबिम्बाधराम्।
कारुण्यामृतवर्षिणीं हरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां
ध्यायेत् सर्वजनेप्सितार्थफलदां रामप्रियां जानकीम्॥
द्विभुजां स्वर्णवर्णाभां रामालोकनतत्पराम्।
श्रीरामवनितां सीतां प्रणमामि पुनः पुनः॥

श्रीराधिका-ध्यान-प्रणाम

अमलकमलकान्तिं नीलवस्त्रां सुकेशीं
शशधरसमवक्त्रां खञ्जनाक्षीं मनोज्ञाम्।
स्तनयुगगतमुक्तादामदीप्तां किशोरीं
व्रजपतिसुतकान्तां राधिकामाश्रयेऽहम्॥
राधां रासेश्वरीं रम्यां स्वर्णकुण्डलभूषिताम्।
वृषभानुसुतां देवीं नमानि श्रीहरिप्रियाम्॥

श्रीहनुमत्प्रार्थना

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम्।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥
अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयंकरम्॥
उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि॥
आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम्।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम्॥
यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥

गङ्गाष्टकम्

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये।
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः॥ १॥
त्वत्तीरे तरुकोटरान्तर्गतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टघण्टारण-
त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः॥ २॥
उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वाराणस्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः।
न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः॥ ३॥
काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं
स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम्।
दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमानं कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः॥ ४॥
अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
र्मदनमथनमौलेर्मालतीपुष्पमाला।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु॥ ५॥
एतत्तालतमालसालसरलव्यालोलवल्लीलता-
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दुकुन्दोज्ज्वलम्।
गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधूत्तुङ्गस्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम्॥ ६॥
गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्॥ ७॥
पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि॥ ८॥
गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः।
प्रक्षाल्य गात्रकलिकल्मषपङ्कमाशु
मोक्षं लभेत्पतति नैव नरो भवाब्धौ॥ ९॥
इति श्रीवाल्मीकिविरचितं गङ्गाष्टकम्॥

श्रीयमुनाष्टकम्

नमामि यमुनामहं सकलसिद्धिहेतुं मुदा
मुरारिपदपङ्कजस्फुरदमन्दरेणूत्कराम्।
तटस्थनवकाननप्रकटमोदपुष्पाम्बुना
सुरासुरसुपूजितस्मरपितुः श्रियं बिभ्रतीम्॥ १॥
कलिन्दगिरिमस्तके पतदमन्दपूरोज्ज्वला
विलासगमनोल्लसत्प्रकटगण्डशैलोन्नता।
सघोषगतिदन्तुरा समधिरूढदोलोत्तमा
मुकुन्दरतिवर्धिनी जयति पद्मबन्धोः सुता॥ २॥
भुवं भुवनपावनीमधिगतामनेकस्वनैः
प्रियाभिरिव सेवितां शुकमयूरहंसादिभिः।
तरङ्गभुजकङ्कणप्रकटमुक्तिकावालुकां
नितम्बतटसुन्दरीं नमत कृष्णतुर्यप्रियाम्॥ ३॥

अनन्तगुणभूषिते शिवविरञ्चिदेवस्तुते
घनाघननिभे सदा ध्रुवपराशराभीष्टदे।
विशुद्धमथुरातटे सकलगोपगोपीवृते
कृपाजलधिसंश्रिते मम मनः सुखं भावय॥ ४॥
यया चरणपद्मजा मुररिपोः प्रियम्भावुका
समागमनतो भवेत्सकलसिद्धिदा सेवताम्।
तया सदृशतामियात् कमलजासपत्नीव यद्
हरिप्रियकलिन्दजा मनसि मे सदा स्थीयताम्॥ ५॥
नमोऽस्तु यमुने सदा तव चरित्रमत्यद्भुतं
न जातु यमयातना भवति ते पयःपानतः।
यमोऽपि भगिनीसुतान् कथमु हन्ति दुष्टानपि
प्रियो भवति सेवनात्तव हरेर्यथा गोपिकाः॥ ६॥
ममास्तु तव संनिधौ तनुनवत्वमेतावता
न दुर्लभतमा रक्तिर्मुररिपौ मुकुन्दप्रिये।
अतोऽस्तु तव लालना सुरधुनी परं संगमा-
त्तवैव भुवि कीर्तिता न तु कदापि पुष्टिस्थितैः॥ ७॥
स्तुतिं तव करोति कः कमलजासपत्नि प्रिये
हरेर्यदनुसेवया भवति सौख्यमामोक्षतः।
इयं तव कथाधिका सकलगोपिकासंगमस्मर-
श्रमजलाणुभिः सकलगात्रजैः संगमः॥ ८॥
तवाष्टकमिदं मुदा पठति सूरसूते सदा
समस्तदुरितक्षयो भवति वै मुकुन्दे रतिः।
तथा सकलसिद्धयो मुररिपुश्च संतुष्यति
स्वभावविजयो भवेद्वदति वल्लभः श्रीहरेः॥ ९॥
इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं यमुनाष्टकं स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रीत्रिवेण्यष्टकम्

देहेन्द्रियप्राणमनोमनीषा-
चित्ताहमज्ञानविभिन्नरूपा ।
तत्साक्षिणी या स्फुरति स्वभावात्
साक्षात् त्रिवेणी मम सिद्धिदास्तु॥ १॥
जाग्रत्पदं स्वप्नपदं सुषुप्तं
विद्योतयन्ती विकृतिं तदीयाम्।
या निर्विकारोपनिषत्सुसिद्धा
साक्षात् त्रिवेणी मम सिद्धिदास्तु॥ २॥
सुप्ते समासात् सकलप्रकार-
ज्ञानक्षये चेन्द्रियजार्थबोधे।
सा प्रत्यभिज्ञायत एव सर्वैः
साक्षात् त्रिवेणी मम सिद्धिदास्तु॥ ३॥
यस्यां समस्तं जगदेति नित्य-
मेका परस्मै भवति स्वयं नः।
यात्यन्तसत्प्रीतिपदत्वमागात्
साक्षात् त्रिवेणी मम सिद्धिदास्तु॥ ४॥
अव्यक्तविज्ञानविराडभेदात्
प्रदीपयन्ती निजदीप्तिदीपात्।
आदित्यवद् विश्वविभिन्नरूपा
साक्षात् त्रिवेणी मम सिद्धिदास्तु॥ ५॥
ब्राह्मणमादौ जगतोऽस्य मध्ये
विष्णुं तथान्ते किल चन्द्रचूडम्।
या भासयन्ती स्वविभासमाना
साक्षात् त्रिवेणी मम सिद्धिदास्तु॥ ६॥
अकारवाच्या चतुरास्य विश्वा
वैश्वानरात्मैव मकारवाच्या।
या तूच्यते तैजससूत्रसंज्ञा
साक्षात् त्रिवेणी ममसिद्धिदास्तु॥ ७॥
अव्याकृतप्राज्ञगिरीश्वराङ्गी
या मुक्तिरज्ञानसमस्तशून्या।
ओंकारलक्ष्या तु तुरीयतत्त्वा
साक्षात् त्रिवेणी मम सिद्धिदास्तु॥ ८॥
अनेन स्तवनेनैनां त्रिसंध्यं यः स्मरेन्नरः।
तस्य वेणी सुप्रसन्ना भविष्यति न संशयः॥ ९॥

नर्मदास्तोत्रम्

नमः पुण्यजले ह्याद्ये नमः सागरगामिनि।
नमस्ते पापशमनि! नमो देवि! वरानने॥
नमोऽस्तु ते ऋषिगणसिद्धसेविते
नमोऽस्तु ते शङ्करदेहनिस्सृते।
नमोऽस्तु ते धर्मभृतां वरप्रदे
नमोऽस्तु ते सर्वपवित्रपावने॥
यस्त्विदं पठते स्तोत्रं नित्यं श्रद्धासमन्वितः।
ब्राह्मणो वेदमाप्नोति क्षत्रियो विजयी भवेत्॥
वैश्यस्तु लभते लाभं शूद्रश्चैव शुभां गतिम्।
अर्थार्थी लभते ह्यर्थं स्मरणादेव नित्यशः॥
इति श्रीमत्स्यपुराणे नर्मदामाहात्म्ये नर्मदास्तोत्रं समाप्तम्॥

श्रीप्रयागाष्टकम्

सुरमुनिदितिजेन्द्रैः सेव्यते योऽस्ततन्द्रै-
र्गुरुतरदुरितानां का कथा मानवानाम्।
स भुवि सुकृतकर्तुर्वाञ्छितावाप्तिहेतु-
र्जयति विजितयागस्तीर्थराजः प्रयागः॥ १॥

श्रुतिः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं पुराणमप्यत्र परं प्रमाणम्।
यत्रास्ति गङ्गा यमुना प्रमाणं स तीर्थराजो जयति प्रयागः॥ २॥
न यत्र योगाचरणप्रतीक्षा न यत्र यज्ञेष्टिविशिष्टदीक्षा।
न तारकज्ञानगुरोरपेक्षा स तीर्थराजो जयति प्रयागः॥ ३॥
चिरं निवासं न समीक्षते यो ह्युदारचित्तः प्रददाति कामान्।
यः कल्पितार्थांश्च ददाति पुंसां स तीर्थराजो जयति प्रयागः॥ ४॥
तीर्थावली यस्य तु कण्ठभागे दानावली वल्गति पादमूले।
व्रतावली दक्षिणबाहुमूले स तीर्थराजो जयति प्रयागः॥ ५॥
यत्राप्लुतानां न यमो नियन्ता यत्र स्थितानां सुगतिप्रदाता।
यत्राश्रितानाममृतप्रदाता स तीर्थराजो जयति प्रयागः॥ ६॥
सितासिते यत्र तरङ्गचामरे नद्यौ विभाते मुनिभानुकन्यके।
नीलातपत्रं वट एव साक्षात् स तीर्थराजो जयति प्रयागः॥ ७॥
पुर्यः सप्त प्रसिद्धाः पतिवचनरतास्तीर्थराजस्य नार्यो
नैकट्येनातिहृद्या प्रभवति च गुणैः काशते ब्रह्म यस्याम्।
सेयं राज्ञी प्रधाना प्रियवचनकरी मुक्तिदाने नियुक्ता
येन ब्रह्माण्डमध्ये स जयति सुतरां तीर्थराजः प्रयागः॥ ८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे प्रयागाष्टकं समाप्तम्॥

श्रीविश्वनाथनगरी (काशी) स्तोत्रम्

यत्र देवपतिनापि देहिनां
मुक्तिरेव भवतीति निश्चितम्।
पूर्वपुण्यनिचयेन लभ्यते
विश्वनाथनगरी गरीयसी॥ १॥
स्वर्गतः सुखकरी दिवौकसां
शैलराजतनयातिवल्लभा।
ढुण्ढिभैरवविदारिताशुभा
विश्वनाथनगरी गरीयसी॥ २॥
राजतेऽत्र मणिकर्णिकामला
सा सदाशिवसुखप्रदायिनी।
या शिवेन रचिता निजायुधै-
र्विश्वनाथनगरी गरीयसी॥ ३॥
सर्वदामरगणैः प्रपूजिता
या गजेन्द्रमुखवारिताशिवा।
कालभैरवकृतैकशासना
विश्वनाथनगरी गरीयसी॥ ४॥
यत्र मुक्तिरखितैस्तु जन्तुभि-
र्लभ्यते मरणमात्रतः शुभा।
साखिलामरगणैरभीप्सिता
विश्वनाथनगरी गरीयसी॥ ५॥
उरगं तुरगं खगं मृगं वा
करिणं केसरिणं खरं नरं वा।
सकृदाप्लुतमेव देवनद्याः
लहरी किं न हरं चरीकरीति॥ ६॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं काशीस्तोत्रम्॥

श्रीवृन्दावनस्तोत्रम्

वृन्दाटवी सहजवीतसमस्तदोषा
दोषाकरानपि गुणकरतां नयन्ती।
पोषाय मे सकलधर्मबहिष्कृतस्य
शोषाय दुस्तरमहावचयस्य भूयात्॥ १॥
वृन्दाटवी बहुभवीयसुपुण्यपुञ्जा-
न्नेत्रातिथिर्भवति यस्य महामहिम्नः।
तस्येश्वरः सकलकर्म मृषा करोति
ब्रह्मादयस्तमतिभक्तियुता नमन्ति॥ २॥
वृन्दावने सकलपावनपावनेऽस्मिन्
सर्वोत्तमोत्तमचरस्थिरसत्त्वजातौ।
श्रीराधिकारमणभक्तिरसैककोशे
तोषेण नित्यापरमेण कदा वसामि॥ ३॥
वृन्दावने स्थिरचराखिलसत्त्ववृन्दा-
नन्दाम्बुधिस्नपनदिव्यमहाप्रभावे।
भावेन केनचिदिहामृति ये वसन्ति
ते सन्ति सर्वपरवैष्णवलोकमूर्ध्नि॥ ४॥

श्रीजगन्नाथाष्टकम्

कदाचित्कालिन्दीतटविपिनसंगीततरलो
मुदाभीरीनारीवदनकमलास्वादमधुपः।
रमाशम्भुब्रह्मामरपतिगणेशार्चितपदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ १॥
भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरकटाक्षं विदधते।
सदा श्रीमद्वृन्दावनवसतिलीलापरिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ २॥
महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहजबलभद्रेण बलिना।
सुभद्रामध्यस्थः सकलसुरसेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ ३॥

कृपापारावारः सजलजलदश्रेणिरुचिरो
रमावाणीरामः स्फुरदमलपङ्केरुहमुखः।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखागीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ ४॥
रथारूढो गच्छन् पथि मिलितभूदेवपटलैः
स्तुतिप्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसदयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ ५॥
परब्रह्मापीडः कुवलयदलोत्फुल्लनयनो
निवासी नीलाद्रौ निहितचरणोऽनन्तशिरसि।
रसानन्दी राधासरसवपुरालिङ्गनसुखो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ ६॥
न वै याचे राज्यं न च कनकमाणिक्यविभवं
न याचेऽहं रम्यां निखिलजनकाम्यां वरवधूम्।
सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ ७॥
हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते
हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते।
अहो दीनेऽनाथे निहितचरणो निश्चितमिदं
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ ८॥
जगन्नाथाष्टकं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः शुचिः।
सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति॥ ९॥
इति श्रीगौरचन्द्रमुखपद्मविनिर्गतं श्रीश्रीजगन्नाथाष्टकं सम्पूर्णम्॥

श्रीपाण्डुरङ्गाष्टकम्

महायोगपीठे तटे भीमरथ्या
वरं पुण्डरीकाय दातुं मुनीन्द्रैः।
समागत्य तिष्ठन्तमानन्दकन्दं
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम्॥ १॥
तडिद्वाससं नीलमेघावभासं
रमामन्दिरं सुन्दरं चित्प्रकाशम्।
वरं त्विष्टकायां समन्यस्तपादं
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम्॥ २॥
प्रमाणं भवाब्धेरिदं मामकानां
नितम्बः कराभ्यां धृतो येन तस्मात्।
विधातुर्वसत्यै धृतो नाभिकोशः परब्रह्मलिङ्गं०॥ ३॥
स्फुरत्कौस्तुभालंकृतं कण्ठदेशे
श्रियाजुष्टकेयूरकं श्रीनिवासम्।
शिवं शान्तमीड्यं वरं लोकपालं परब्रह्म०॥ ४॥
शरच्चन्द्रबिम्बाननं चारुहासं
लसत्कुण्डलाक्रान्तगण्डस्थलाङ्गम्।
जपारागबिम्बाधरं कञ्जनेत्रं परब्रह्म०॥ ५॥
किरीटोज्ज्वलत्सर्वदिक्प्रान्तभागं
सुरैरर्चितं दिव्यरत्नैरनर्घ्यैः।
त्रिभङ्गाकृतिं बर्हमाल्यावतंसं परब्रह्म०॥ ६॥
विभुं वेणुनादं चरन्तं दुरन्तं
स्वयं लीलया गोपवेषं दधानम्।
गवां वृन्दाकानन्ददं चारुहासं परब्रह्म०॥ ७॥
अजं रुक्मिणीप्राणसंजीवनं तं
परं धाम कैवल्यमेकं तुरीयम्।
प्रसन्नं प्रपन्नार्तिहं देवदेवं परब्रह्म०॥ ८॥
स्तवं पाण्डुरङ्गस्य वै पुण्यदं ये
पठन्त्येकचित्तेन भक्त्या च नित्यम्।
भवाम्भोनिधिं तेऽपि तीर्त्वान्तकाले
हरेरालयं शाश्वतं प्राप्नुवन्ति॥
इति श्रीशंकराचार्यविरचितं पाण्डुरङ्गाष्टकं सम्पूर्णम्॥

मीनाक्षीपञ्चरत्नम्

उद्यद्भानुसहस्रकोटिसदृशीं केयूरहारोज्ज्वलां
बिम्बोष्ठीं स्मितदन्तपङ्क्तिरुचिरां पीताम्बरालंकृताम्।
विष्णुब्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदां तत्त्वस्वरूपां शिवां
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि संततमहं कारुण्यवारांनिधिम्॥ १॥
मुक्ताहारलसत्किरीटरुचिरां पूर्णेन्दुवक्त्रप्रभां
शिञ्जन्नूपुरकिङ्किणीमणिधरां पद्मप्रभाभासुराम्।
सर्वाभीष्टफलप्रदां गिरिसुतां वाणीरमासेवितां
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि संततमहं कारुण्यवारांनिधिम्॥ २॥
श्रीविद्यां शिववामभागनिलयां ह्रींकारमन्त्रोज्ज्वलां
श्रीचक्राङ्कितबिन्दुमध्यवसतिं श्रीमत्सभानायिकाम्।
श्रीमत्षण्मुखविघ्नराजजननीं श्रीमज्जगन्मोहिनीं
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि संततमहं कारुण्यवारांनिधिम्॥ ३॥
श्रीमत्सुन्दरनायिकां भयहरां ज्ञानप्रदां निर्मलां
श्यामाभां कमलासनार्चितपदां नारायणस्यानुजाम्।
वीणावेणुमृदङ्गवाद्यरसिकां नानाविधामम्बिकां
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि संततमहं कारुण्यवारांनिधिम्॥ ४॥
नानायोगिमुनीन्द्रहृत्सुवसतिं नानार्थसिद्धिप्रदां
नानापुष्पविराजिताङ्घ्रियुगलां नारायणेनार्चिताम्।
नादब्रह्ममयीं परात्परतरां नानार्थतत्त्वात्मिकां
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि संततमहं कारुण्यवारांनिधिम्॥ ५॥
इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ मीनाक्षीपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

नवग्रहस्तोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥ १ ॥
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥ २ ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥ ३ ॥
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥ ४ ॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥ ५ ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ ६ ॥
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ ७ ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥ ८ ॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥ ९ ॥
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥ १०॥
नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥ ११॥
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥ १२॥

॥ इति श्रीव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रम्॥

दस अवतारोंकी जयन्ती-तिथियाँ

१. **मत्स्य**—चैत्र-शुक्ला तृतीया	मध्याह्नोत्तर
२. **कूर्म**—वैशाख-शुक्ला पूर्णिमा	सायंकाल
३. **वराह**—भाद्र-शुक्ला तृतीया	मध्याह्नोत्तर
४. **नृसिंह**—वैशाख-शुक्ला त्रयोदशी	सायंकाल
५. **वामन**—भाद्र-शुक्ला द्वादशी	मध्याह्न
६. **परशुराम**—वैशाख-शुक्ला तृतीया	मध्याह्न
७. **रामचन्द्र**—चैत्र-शुक्ला नवमी	मध्याह्न
८. **श्रीकृष्ण**—भाद्र-कृष्णा अष्टमी	मध्यरात्रि
९. **बुद्ध**—आश्विन-शुक्ला दशमी	सायंकाल
१०. **कल्कि**—श्रावण-शुक्ला षष्ठी	सायंकाल

दस महाविद्याओंकी जयन्ती-तिथियाँ

१. **काली**—आश्विन-कृष्णा अष्टमी
२. **तारा**—चैत्र-शुक्ला नवमी
३. **षोडशी (त्रिपुरसुन्दरी, श्रीविद्या)**—मार्गशीर्ष-पूर्णिमा
४. **भुवनेश्वरी**—भाद्र-शुक्ला द्वादशी
५. **भैरवी**—माघ-पूर्णिमा
६. **छिन्नमस्ता**—वैशाख-शुक्ला चतुर्दशी
७. **धूमावती**—ज्येष्ठ-शुक्ला अष्टमी
८. **बगलामुखी**—वैशाख-शुक्ला अष्टमी
९. **मातङ्गी**—वैशाख-शुक्ला तृतीया
१०. **कमला**—मार्गशीर्ष-कृष्णा अमावस्या

येनैकादश संख्यानि यन्त्रितानीन्द्रियाणि वै।
स तीर्थफलमाप्नोति नरोऽन्यः क्लेशभाग् भवेत्॥

'जिसने अपनी ग्यारह (मनसहित दस इन्द्रियाँ) इन्द्रियोंको वशमें कर लिया है, वही तीर्थका फल पाता है, दूसरे अजितेन्द्रिय मनुष्य तो केवल क्लेशके भागी होते हैं।

सम्पादककी क्षमा-प्रार्थना

'कल्याण'का तीर्थाङ्क निकालनेका प्रस्ताव बहुत समयसे चला आ रहा था। वर्षोंसे इसके लिये भी प्रयत्न हो रहा था। सामग्री-संग्रहके लिये गीताप्रेसके कार्यकर्ता ठाकुर श्रीसुदर्शनसिंहजीकी अध्यक्षतामें दक्षिणमें कन्याकुमारी, पूर्वमें पुरी तथा उत्तरमें काश्मीर-अमरनाथ, मानसरोवर, कैलास एवं गङ्गोत्तरी-यमुनोत्तरीके आगेतक गये थे। उन्होंने यथासाध्य स्वयं देख-देखकर बहुत सामग्री संग्रह की। फिर गीताप्रेसकी ओरसे तीर्थयात्रागाड़ी निकली, जो उत्तर-पश्चिमके पर्वतीय प्रदेशोंको छोड़कर प्रायः सभी तीर्थोंमें गयी। यह यात्रा पूरे तीन महीनेकी थी। इसमें भी कुछ सामग्री-संग्रह तथा चित्रादि प्राप्त करनेका कार्य हुआ। इसके बाद तीर्थोंके संक्षिप्त विवरण लिखनेका कार्य आरम्भ हुआ और प्रायः वह सारा कार्य हमारे श्रीसुदर्शनसिंहजीने ही किया। वे यदि इस प्रकार लगनसे मन लगाकर बहुत सावधानीके साथ सारा विवरण लिपिबद्ध न करते तो इस वर्ष भी तीर्थाङ्कका प्रकाशन शायद ही हो पाता; क्योंकि भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी,—जो सम्पादनका प्रायः सारा कार्य करते थे, पहले तो तीन महीनेकी लंबी तीर्थयात्रामें चले गये, वहाँसे लौटनेपर अस्वस्थ हो गये। कुछ अच्छे होते ही उन्हें ऋषिकेश जाना पड़ा और वहाँसे गत जुलाईके अन्तमें वे रुग्णावस्थामें ही लौटे। तबसे कुछ ही दिनों पहलेतक वे रुग्ण ही रहे और अन्ततः जलवायु-परिवर्तनार्थ गोरखपुरसे बाहर चले गये। मैं दूसरे कार्योंमें अत्यन्त व्यस्त था। इसलिये यदि ठाकुर श्रीसुदर्शनसिंहजीने समस्त तीर्थोंके वर्णन लिखनेका और आये हुए तीर्थ-सम्बन्धी सैकड़ों लेखोंको साररूपसे पुनः लिखने तथा उन्हें सम्पादन करनेका महत्त्वपूर्ण कार्य न किया होता तो कार्यमें बड़ी ही कठिनाई होती और शायद तीर्थाङ्क निकल भी न पाता। इसके लिये हमलोग उनके बड़े कृतज्ञ हैं।

अपनी समझसे इस विशेषाङ्कको सर्वाङ्गपूर्ण बनानेका प्रयत्न करनेपर भी इसका जैसा रूप बनना चाहिये था, वैसा नहीं बन पाया। भाईजी हनुमानप्रसादजीका यों तो इस अङ्ककी सामग्रीको सजानेमें बहुत कुछ हाथ रहा ही तथा इसकी सारी रूप-रेखा उन्हींके द्वारा निर्धारित है। इसके अतिरिक्त उन्होंने और भी बहुत-सी महत्त्वकी चीजें इसमें देनेकी बात सोच रखी थी; परंतु उनके अस्वस्थ हो जानेके कारण वे सब चीजें नहीं दी जा सकीं और उनके पूर्ण सहयोगसे हम वञ्चित रहे। इसका हमें वस्तुतः बड़ा खेद है।

इस प्रकार कमी रहनेपर भी तीर्थोंके सम्बन्धमें, जहाँतक हमारी जानकारी है, हिंदीमें विशेषाङ्कके रूपमें ऐसा कोई साहित्य अभी नहीं प्रकाशित हुआ था, जिसमें इतने तीर्थोंका वर्णन हो तथा इतनी जाननेकी सामग्री हो। इस सबका श्रेय हमारे श्रीसुदर्शनसिंहजीके अतिरिक्त, भारतके सभी प्रदेशोंके उन सैकड़ों कल्याणप्रेमी महानुभावोंको है, जिन्होंने कृपापूर्वक तीर्थोंके विस्तृत विवरण तथा चित्र आदि भेजनेकी असीम कृपा की। उन सबके नाम-पते लिखनेके लिये स्थानाभाव तो है ही; उससे भी बड़ा डर यह है कि किन्हीं कृपालु महानुभावका नाम छूट जानेका हमसे अपराध न बन जाय। इसलिये किन्हींका नाम न देकर हम अपने उन सभी कृपालु महानुभावोंके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं, जिन्होंने इस पुनीत कार्यमें हमारी विविध रूपोंमें सहायता की है। यह ज्वलन्त सत्य है कि उन महानुभावोंकी सहायताके बिना यह कार्य इस रूपमें सम्पन्न होना असम्भव था। हमें इस बातका बड़ा खेद है कि स्थानाभावसे उन महानुभावके भेजे हुए विस्तृत वर्णनोंको हमें बहुत ही संक्षिप्त करना पड़ा, कई वर्णन तो बिल्कुल नहीं दिये जा सके। इसी प्रकार लेख भी बहुत-से नहीं जा सके और उनको भी संक्षिप्त करना पड़ा। परिस्थितिवश बने हुए इस अपराधके लिये हम उन सभी महानुभावोंसे करबद्ध क्षमा-प्रार्थना करते हैं। बहुत-सी विभिन्न भाषाओंकी पुस्तकोंसे हमने बड़ी सहायता प्राप्त की है, इसके लिये हम उन सबके हृदयसे कृतज्ञ हैं।

एक दर्जनसे अधिक रंगीन तथा सैकड़ों सादे

चित्रोंके अतिरिक्त तीर्थयात्रियोंकी सुविधाके लिये कुछ मानचित्र भी इस अङ्कमें दिये गये हैं। तीर्थ-स्थानोंके विवरणको क्रमबद्ध करनेके लिये उन्हें पाँच भागोंमें बाँटा गया है और उसीके अनुसार छः मानचित्र तो विभिन्न भागोंके लिये और एक मानचित्र पूरे भारतका दिया गया है।

यह सम्भव नहीं है कि सभी तीर्थ एक मार्गमें आ सकें। पूरी भारतभूमि तीर्थस्वरूप है। प्रमुख तीर्थोंतक जानेके मार्ग मानचित्रमें दिये गये हैं; किन्तु एक सामान्य यात्रीको, जो गिने-चुने दिनोंकी यात्रापर निकलता है और मुख्य-मुख्य स्थानोंके दर्शन कर लेना चाहता है, मानचित्रपर दोहरी-पतलीसे एक मार्ग-निर्देश किया गया है। इस मार्गमें निम्न प्रमुख तीर्थ आ जायँ इनका ध्यान रखा गया है—

१. **चारों धाम**—इनमें बदरीनाथकी यात्रा पैदल तथा मोटर-बससे चलकर होती है।

२. **सप्तपुरियाँ**—ये सभी रेलवे-स्टेशन हैं।

३. **द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग**—इनमें मल्लिकार्जुनकी यात्रा शिवरात्रिपर ही सम्भव है। मल्लिकार्जुन तथा केदारनाथकी यात्रा पैदल होती है। भीमशङ्कर भी पैदलका मार्ग है। घृष्णेश्वर मोटर-मार्गपर है।

४-पञ्चतत्त्व-लिङ्ग तथा आत्मतत्त्व-लिङ्ग, गोकर्ण।

५-तीनों रङ्गधाम (आदिरङ्ग, मध्यरङ्ग और अन्त्यरङ्ग)

इनके अतिरक्त प्रयाग, चित्रकूट, नैमिषारण्य, कुरुक्षेत्र, पुष्करराज, नाथद्वारा, सिद्धपुर, पोरबंदर (सुदामापुरी), सूरत, भरुच, अजन्ता (जलगाँवसे), पंढरपुर, किष्किन्धा (हासपेटसे), तिरुपति बालाजी, हरिहर, मैसूर, मदुरै, कन्याकुमारी, जनार्दन, तिरुचेन्दूर आदि कुछ प्रमुख तीर्थस्थल भी आ गये हैं। इनके मार्गमें और भी बहुत-से प्रधान तीर्थ आये हैं। चेष्टा की गयी है कि मार्ग भले कुछ टेढ़ा बने, किंतु मुख्य-मुख्य तीर्थ सभी आ जायँ।

तीर्थोंके—विशेषकर दक्षिण भारतके तीर्थोंके वर्णनमें अवश्य ही बहुत-सी भूलें और त्रुटियाँ रही होंगी। तीर्थोंके तथा मन्दिर और श्रीविग्रहोंके नामोंमें भी भूल हो सकती है। प्रधान तीर्थोंके और किसी एक तीर्थके प्रधान-प्रधान स्थानोंमेंसे कुछ स्थानोंके नाम छूट सकते हैं। मार्ग तथा मार्गकी दूरीके सम्बन्धमें भी भूल रह सकती है। प्रधान धर्मशालाओंके नाम भी छूट सकते हैं। ऐसी सब भूलोंके लिये हम पाठकोंसे करबद्ध क्षमा-प्रार्थना करते हैं।

तीर्थोंका महत्त्व साधारणतया सभीपर विदित है और इस अङ्कमें प्रकाशित विद्वानोंके लेखोंसे वह महत्त्व और भी विशद-रूपसे समझमें आ सकता है। तीर्थ-स्थलोंमें महात्माओंने—संतोंने निवास किया, तपस्या की, तीर्थ-जलोंमें उन्होंने स्नान करके उनको पावन किया, इससे उनका महत्त्व और पतितोंको पावन करनेका उनका बल और भी बढ़ गया। भक्ति-श्रद्धापूर्वक तीर्थोंका सेवन करनेपर आज भी लौकिक-पारलौकिक सभी प्रकारका लाभ सम्भव है, इसमें कोई भी संदेह नहीं।

हमारे इस क्षुद्र प्रयाससे असंख्य तीर्थयात्रियोंमेंसे कुछको भी किंचित् लाभ पहुँचेगा, उनको कुछ भी सुविधा प्राप्त होगी, तो हम उसे भगवान्‌की बड़ी कृपा मानेंगे।

मैं अपने सभी साथियोंका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जिनकी सहायता तथा सहयोगसे मैं इस कार्यको पूरा करनेमें सफल हो सका। भगवान् हम सबको सद्बुद्धि दें, जिससे हमारा जीवन भगवान्‌की ओर अग्रसर हो सके।

क्षमा-प्रार्थी

चिम्मनलाल गोस्वामी

सम्पादक

‘कल्याण’ के पुराने, लोकप्रिय पुनर्मुद्रित विशेषाङ्क

श्रीकृष्णाङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ६, सन् १९३२ ई० (कोड 1184]—भगवान् श्रीकृष्णका चरित्र इतना मधुर है कि बड़े-बड़े अमलात्मा परमहंस भी उसमें बार-बार अवगाहन करके अपने-आपको धन्य करते रहते हैं। यह विशेषाङ्क भगवान् श्रीकृष्णके चरित्रपर प्रकाश डालनेवाले अनेक विद्वान् विचारकोंके शोधपूर्ण लेखोंका अद्भुत संग्रह है। श्रीकृष्ण-चरित्रके विभिन्न पक्षोंका विस्तृत परिचय देनेवाला यह विशेषाङ्क सबके लिये संग्रहणीय है।

ईश्वराङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ७, सन् १९३३ ई० (कोड 749]—इसमें ईश्वर-विश्वासी भक्तों, विद्वानों एवं संत-विचारकोंके ईश्वरके अस्तित्वको सिद्ध करनेवाले अनेक शोधपूर्ण लेखोंका अनुपम संग्रह है। यह विशेषाङ्क ईश्वरके स्वरूप, विशेषता, महत्त्व आदिका सुन्दर परिचायक है।

शिवाङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ८, सन् १९३४ ई० (कोड 635]—इस विशेषाङ्कमें द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंका सचित्र परिचय तथा भारतके सुप्रसिद्ध शैव-तीर्थोंका प्रामाणिक वर्णन तथा शिव-महिमाका विशद विवेचन है। इसमें शिवार्चन, पूजन, व्रत आदिपर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

शक्ति-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ९, सन् १९३५ ई० (कोड 41]—इसमें परब्रह्म परमात्माके आद्याशक्ति-स्वरूपका तात्त्विक विवेचन, महादेवीकी लीला-कथाएँ एवं सुप्रसिद्ध शाक्त भक्तों और साधकोंके प्रेरणादायी जीवन-चरित्र तथा उनकी उपासना-पद्धतिपर उत्कृष्ट उपयोगी सामग्री संगृहीत है।

योगाङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष १०, सन् १९३६ ई० (कोड 616]—इसमें योगकी व्याख्या तथा योगका स्वरूप-परिचय एवं प्रकार और योग-प्रणालियों तथा योगके अङ्ग-उपाङ्गोंपर विस्तारसे प्रकाश डाला गया है। योगसिद्ध महात्माओंके जीवन-चरित्र एवं साधना-पद्धतियाँ इसके अन्य पठनीय विषय हैं।

संत-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष १२, सन् १९३८ ई० (कोड 627]—इसमें उच्चकोटिके अनेक संतों—प्राचीन, अर्वाचीन, मध्ययुगीन एवं कुछ विदेशी भगवद्विश्वासी महापुरुषों तथा त्यागी-वैरागी महात्माओंके ऐसे आदर्श जीवन-चरित्र हैं, जो उच्चकोटिके पारमार्थिक आदर्श जीवन-मूल्योंको रेखाङ्कित करते हैं। भगवद्विश्वास एवं भक्ति-निष्ठाके परिचायक इसमें वर्णित उत्कृष्ट चरित्र पठनीय हैं।

साधनाङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष १५, सन् १९४१ ई० (कोड 604]—इस विशेषाङ्कमें साधना-तत्त्व, साधनाके विभिन्न स्वरूप, ईश्वरोपासना, योगसाधना, प्रेमाराधना आदि अनेक कल्याणकारी साधनोंका शास्त्रीय विवेचन है। साधकोंके लिये यह नित्य पठनीय तथा अनुकरणीय है।

नारी-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष २२, सन् १९४८ ई० (कोड 43]—इसमें भारतकी महान् नारियोंके प्रेरणादायी आदर्श चरित्रों तथा नारीविषयक विभिन्न समस्याओंपर विस्तृत चर्चा और उनका आदर्शोचित समाधान है। यह नारीमात्रके लिये कर्तव्यबोध करनेवाला अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

उपनिषद्-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष २३, सन् १९४९ ई० (कोड 659]—इसमें नौ प्रमुख उपनिषदों-(ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय एवं श्वेताश्वतर)-का मूल, पदच्छेद, अन्वय तथा व्याख्यासहित वर्णन है और अन्य ४५ उपनिषदोंका हिन्दी-भाषान्तर है।

हिन्दू-संस्कृति-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष २४, सन् १९५० ई० (कोड 518]—यह विशेषाङ्क भारतीय संस्कृतिके विभिन्न पक्षों—हिन्दू-धर्म, दर्शन, आचार-विचार, रीति-रिवाज, पर्व-उत्सव, कला-संस्कृति और हिन्दू-आदर्शोंपर प्रकाश डालनेवाला तथ्यपूर्ण बृहद् (सचित्र) दिग्दर्शन है।

भक्त-चरिताङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष २६, सन् १९५२ ई० (कोड 40]—इसमें भगवद्विश्वासको बढ़ानेवाले भगवद्भक्तों, ईश्वरोपासकों और महात्माओंके जीवन-चरित्र एवं विभिन्न भक्तिपूर्ण भावोंकी ऐसी पवित्र, सरस मधुर कथाएँ हैं जो मानव-मनको प्रेम-भक्ति-सुधारससे अनायास सराबोर कर देती हैं। ये भक्तगाथाएँ भगवद्विश्वास और प्रेमानन्द बढ़ानेवाली तथा शान्ति प्रदान करनेवाली होनेसे नित्य पठनीय हैं।

बालक-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष २७, सन् १९५३ ई० (कोड 573]—यह विशेषाङ्क सर्वजनोपयोगी

होनेके साथ-साथ बालकोंके लिये आदर्श मार्गदर्शक है। इसमें वर्णित प्राचीन कालसे अबतकके भारतके महान् बालकों एवं विश्वभरके सुविख्यात आदर्श बालकोंके अनुकरणीय आदर्श चरित्र बार-बार पठनीय हैं। बालकोंसे सम्बन्धित इसमें अनेक अन्य उपयोगी विषय भी हैं।

संतवाणी-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष २९, सन् १९५५ ई० (कोड 667]—संत-महात्माओं और अध्यात्मचेता महापुरुषोंके लोककल्याणकारी उपदेश-उद्बोधनों (वचन और सूक्तियों-)का यह बृहत् संग्रह प्रेरणाप्रद होनेसे नित्य पठनीय और सर्वथा संग्रहणीय है।

सत्कथा-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ३०, सन् १९५६ ई० (कोड 587]—जीवनमें भगवत्प्रेम, सेवा, त्याग, वैराग्य, सत्य, अहिंसा, विनय, प्रेम, उदारता, दानशीलता, दया, धर्म, नीति, सदाचार और शान्तिका प्रकाश भर देनेवाली सत्प्रेरणादायी छोटी-छोटी सत्कथाओंका यह बृहत् संग्रह सर्वदा अपने पास रखनेयोग्य है।

तीर्थाङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ३१, सन् १९५७ ई० (कोड 636]—इस विशेषाङ्कमें भारतके प्रायः समस्त तीर्थोंका अनुसन्धानात्मक ज्ञान करानेवाला यह एक ऐसा संकलन है जो तीर्थाटन-प्रेमियोंके लिये विशेष महत्त्वपूर्ण और संग्रहणीय है। इसमें देव-पूजनसहित तीर्थोंमें पालनीय नियमोंका भी उल्लेख है। (सन् १९५७ के बाद तीर्थोंके मार्गों और यातायातके साधनोंमें हुए परिवर्तन इसमें सम्मिलित नहीं हैं।)

श्रीभगवन्नाम-महिमा-प्रार्थनाङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ३९, सन् १९६५ ई० (कोड 1135]—यह विशेषाङ्क भगवन्नाम-महिमा एवं प्रार्थनाके अमोघ प्रभावका सुन्दर विश्लेषक है। इसमें विभिन्न सन्त-महात्माओं, विद्वान् विचारकोंके भगवन्नाम-महिमा एवं प्रार्थनाके चमत्कारोंके सन्दर्भमें शास्त्रीय लेखोंका सुन्दर संग्रह है। इसके अतिरिक्त इसमें कुछ संत-भक्तोंके नाम-जपके अनुभवोंका भी संकलन है।

परलोक और पुनर्जन्माङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ४३, सन् १९६९ ई० (कोड 572]—मनुष्यमात्रको मानव-चरित्रके पतनकारी आसुरी सम्पदाके दोषोंसे सदा दूर रहने तथा परम विशुद्ध उज्ज्वल चरित्र होकर सर्वदा सत्कर्म करते रहनेकी शुभ प्रेरणाके साथ इसमें परलोक तथा पुनर्जन्मके रहस्यों और सिद्धान्तोंपर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। कल्याणकामी साधकोंके लिये इसका अध्ययन अत्यन्त उपयोगी है।

श्रीगणेश-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ४८, सन् १९७४ ई० (कोड 657]—भगवान् गणेश अनादि, सर्वपूज्य, आनन्दमय, ब्रह्ममय और सच्चिदानन्दरूप (परमात्मा) हैं। महामहिम गणेशकी इन्हीं सर्वमान्य विशेषताओं और सर्वसिद्धि-प्रदायक उपासना-पद्धतिका विस्तृत वर्णन इस विशेषाङ्कमें उपलब्ध है, साथ ही श्रीगणेशकी लीला-कथाओंका बड़ा ही रोचक वर्णन और पूजा-अर्चना आदिपर भी उपयोगी दिग्दर्शन है।

श्रीहनुमान-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ४९, सन् १९७५ ई० (कोड 42]—इसमें श्रीहनुमान्जीका जीवन-चरित्र और श्रीरामभक्तिके प्रतापसे सदा अमर बने रहकर उनके द्वारा किये गये क्रिया-कलापोंका प्रामाणिक चित्रण है। श्रीहनुमान्जीको प्रसन्न करनेवाले विविध स्तोत्र, ध्यान एवं पूजन-विधियोंका भी इसमें उपयोगी संकलन है। भक्तोंके लिये यह नित्य स्वाध्यायका विषय है।

सूर्याङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ५३, सन् १९७९ ई० (कोड 791]—भगवान् सूर्यमें समस्त देवताओंका निवास होनेके कारण ये सभीके लिये उपास्य और आराध्य हैं। इस विशेषाङ्कमें विभिन्न संत-महात्माओंके सूर्यतत्त्वपर सुन्दर लेखोंके अतिरिक्त भगवान् सूर्यके उपासनापरक विभिन्न स्तोत्र, देश-विदेशमें सूर्योपासनाके विविध रूप तथा सूर्य-लीलाका सरस वर्णन है।

शिवोपासनाङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ६७, सन् १९९३ ई० (कोड 586]—इस विशेषाङ्कमें शिवके विविध स्वरूपोंका वर्णन, शिव-उपासनाकी मुख्य विधाएँ, पञ्चमूर्ति, दक्षिणामूर्ति, ज्योतिर्लिङ्ग, नर्मदेश्वर, नटराज, हरिहर आदि विभिन्न स्वरूपोंके विवेचन, आर्ष ग्रन्थोंके आधारपर शिवसाधनाकी पद्धति, भारतके विभिन्न प्रदेशोंमें अवस्थित शिवमन्दिर तथा शैव तीर्थोंका परिचय और विवरण आदि हैं।

श्रीरामभक्ति-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ६८, सन् १९९४ ई० (कोड 628]—इस विशेषाङ्कमें भगवान् श्रीराम और उनकी अभिन्न शक्ति भगवती सीताके नाम, रूप, लीला-धाम, आदर्श गुण, प्रभाव आदिके तात्त्विक विवेचनके साथ श्रीरामजन्मभूमिकी महिमा आदिका विस्तृत दिग्दर्शन कराया गया है।

गो-सेवा-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ६९, सन् १९९५ ई० (कोड 653]—शास्त्रोंमें गौको सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी कहा गया है। गौके दर्शनसे समस्त देवताओंके दर्शन एवं समस्त तीर्थोंकी यात्राका पुण्य प्राप्त होता है। इस विशेषाङ्कमें गौसे सम्बन्धित आध्यात्मिक और तात्त्विक निबन्धोंके साथ गौका विश्वरूप, गोसेवाका स्वरूप, गोपालन एवं गो-संवर्धनकी मुख्य विधाएँ तथा गोदान आदि अनेक उपयोगी विषयोंका संग्रह हुआ है।

धर्मशास्त्राङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ७०, सन् १९९६ ई० (कोड 1132]—इस विशेषाङ्कमें सभी स्मृतियों एवं धर्मसूत्रोंका परिचय, उनके प्रमुख विषयोंका प्रतिपादन, प्रेरणादायक आख्यान तथा स्मृतियोंके उपदेष्टा ऋषियोंका संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

भगवल्लीला-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ७२, सन् १९९८ ई० (कोड 448]—इस विशेषाङ्कमें भगवान् श्रीराम-कृष्णकी लीलाओंके साथ पञ्चदेवोंके विभिन्न अवतारोंकी लीलाओं, भगवद्भक्तोंके चरित्र तथा लीला-कथाके प्रत्येक पक्षपर पठनीय एवं प्रेरक सामग्रीका समायोजन किया गया है।

वेद-कथाङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ७३, सन् १९९९ ई० (कोड 1044]—इस विशेषाङ्कमें वेदोंके प्रमुख विषयोंका विवेचन वैदिक मन्त्रों, सूक्तियों, मन्त्रद्रष्टा ऋषियोंका परिचय एवं वेदोंमें वर्णित कथाओंका रोचक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

[आरोग्य-अङ्क संशोधित एवं संवर्धित संस्करण] (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ७५, सन् २००१ ई० (कोड 1592]—विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों, घरेलू औषधियों तथा स्वास्थ्यरक्षापर संगृहीत अनेक उपयोगी लेखोंके संग्रह इस विशेषाङ्ककी अभूतपूर्व माँगको देखकर अब इसमें साधारण अङ्कोंमें प्रकाशित लेखों एवं पहले अप्रकाशित नवीन सामग्रीको समाहित करके इसे ग्रन्थरूपमें प्रकाशित किया गया है।

नीतिसार-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ७६, सन् २००२ ई० (कोड 1379]—इस विशेषाङ्कमें धर्मनीति, राजनीति, लोकनीति, कूटनीति आदि विविध नीतिपरक विषयोंपर विपुल सामग्रीका संचयन किया गया है। नीतिके विविध आयामोंका परिचायक यह विशेषाङ्क सबके लिये स्वाध्याय तथा संग्रहका विषय है।

भगवत्प्रेम-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ७७, सन् २००३ ई० (कोड 1467]—प्रेम ही परमात्माका स्वरूप तथा परिचय है। प्रेमसे ही भगवत्साक्षात्कार सम्भव है। यह विशेषाङ्क व्यक्ति, राष्ट्र एवं भगवत्प्रेम-विषयक अनेक उत्कृष्ट निबन्धों और आख्यानोंका अद्‌भुत संकलन है।

व्रत-पर्वोत्सव-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ७८, सन् २००४ ई० (कोड 1548]—इस विशेषाङ्कमें व्रत-पर्वोत्सवोंका स्वरूप, पर्व, त्योहारकी परम्परा, वर्षभरके व्रत-त्योहार और व्रतोंका शास्त्रीय विधान एवं उद्यापन-विधियोंका सुन्दर विवेचन है।

संस्कार-अङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ८०, सन् २००६ ई० (कोड 1167]—इस विशेषाङ्कमें संस्कारोंका स्वरूप, महिमा, उपयोगिता, संस्कारोंको सम्पन्न करनेकी विधि, संस्कारवान् महापुरुषोंके चरित्र आदि अनेक विषयोंपर बृहद् सामग्रीका संचयन है।

अवतार-कथाङ्क (सचित्र, सजिल्द) [वर्ष ८१, सन् २००७ ई० (कोड 1734]—इस विशेषाङ्कमें भगवान्के चौबीस अवतारोंकी कथाएँ, पंचदेवोंके विभिन्न लीला-आख्यानों, भगवान्के लीला-सहचरोंकी मधुर कथाओं एवं अवतार-कथाके प्रत्येक पक्षपर सुन्दर विश्लेषण है।

गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित महापुराण

श्रीमद्भागवतमहापुराण, व्याख्यासहित (कोड 26, 27) ग्रन्थाकार—श्रीमद्भागवत भारतीय वाङ्मयका मुकुटमणि है। यह सम्पूर्ण ग्रन्थरत्न मूलके साथ हिन्दी-अनुवाद, पूजन-विधि, भागवत-माहात्म्य, आरती, पाठके विभिन्न प्रयोगोंके साथ दो खण्डोंमें उपलब्ध है। **(कोड 1552, 1553)** सानुवाद गुजराती, **(कोड 1678, 1735)** सानुवाद मराठी, **(कोड 1739, 1740)** कन्नड़, **(कोड 1577, 1744)** बँगला, **(कोड 564, 565)** सानुवाद अंग्रेजी, **(कोड 25)** बृहदाकार, केवल हिन्दी, **(कोड 1190, 1191)** बड़ा टाइप (दो खण्डोंमें) ग्रन्थाकार, केवल हिन्दी, **(कोड 28)** केवल हिन्दी, **(कोड 1608)** केवल गुजराती-अनुवाद, **(कोड 1490)** वि० सं० हिन्दी, **(कोड 1159, 1160)** वि० सं० केवल अंग्रेजी-अनुवाद, दो खण्डोंमें, **(कोड 29)** मूल (मोटा टाइप) संस्कृत, **(कोड 1573)** मूल, मोटा टाइप, तेलुगु, **(कोड 124)** मूल, मझला संस्कृतमें भी।

संक्षिप्त शिवपुराण, मोटा टाइप (कोड 789) ग्रन्थाकार—इस पुराणमें परात्पर ब्रह्म शिवके स्वरूपका तात्त्विक विवेचन तथा लीला-कथाओंका सुन्दर संयोजन है। **(कोड 1468)** विशिष्ट संस्करण हिन्दी एवं **(कोड 1286)** गुजरातीमें भी।

संक्षिप्त पद्मपुराण (कोड 44) ग्रन्थाकार—इस पुराणमें भगवान् विष्णुकी विस्तृत महिमाके साथ, भगवान् श्रीराम तथा श्रीकृष्णके चरित्र, विभिन्न तीर्थोंका माहात्म्य तथा विभिन्न व्रतोंका सुन्दर वर्णन है।

संक्षिप्त मार्कण्डेयपुराण (कोड 539) ग्रन्थाकार—इस पुराणमें दुर्गासप्तशतीकी कथा, हरिश्चन्द्रकी कथा, मदालसा-चरित्र आदि अनेक सुन्दर कथाओंका विस्तृत वर्णन है।

श्रीविष्णुपुराण, अनुवादसहित (कोड 48) ग्रन्थाकार—इसमें आकाश आदि भूतोंका परिमाण, समुद्र, सूर्य आदिका परिमाण, पर्वत, देवतादिकी उत्पत्ति, मन्वन्तर, कल्प-विभाग, सम्पूर्ण धर्म एवं देवर्षि तथा राजर्षियोंके चरित्रका विशद वर्णन है। **(कोड 1364)** केवल हिन्दी-अनुवादमें भी।

संक्षिप्त नारदपुराण (कोड 1183) ग्रन्थाकार—इसमें सदाचार-महिमा, वर्णाश्रम धर्म, देवपूजन, तीर्थ-माहात्म्य और भगवान् विष्णुकी महिमाके साथ अनेक भक्तिपरक आख्यानोंका विस्तृत वर्णन किया गया है।

संक्षिप्त स्कन्दपुराण (कोड 279) ग्रन्थाकार—इसमें भगवान् शिवकी महिमा, सती-चरित्र, शिव-पार्वती-विवाह, कार्तिकेयजन्म, तारकासुर-वध एवं धर्म, सदाचार आदिका सुन्दर वर्णन है।

संक्षिप्त ब्रह्मपुराण (कोड 1111) ग्रन्थाकार—इस पुराणमें सूर्य एवं चन्द्रवंशका वर्णन, श्रीकृष्णचरित्र, तीर्थोंका माहात्म्य एवं अनेक भक्तिपरक आख्यानोंकी सुन्दर चर्चा की गयी है।

संक्षिप्त गरुडपुराण—(कोड 1189) ग्रन्थाकार—इसमें ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, सदाचार, निष्काम कर्मकी महिमाके साथ विभिन्न कर्मोंके अनेक लौकिक एवं पारलौकिक फलोंका वर्णन किया गया है।

संक्षिप्त भविष्यपुराण—(कोड 584) ग्रन्थाकार—इसमें धर्म, सदाचार, नीति, उपदेश, अनेकों आख्यान, व्रत, तीर्थ, दान, ज्योतिष एवं आयुर्वेदशास्त्रके विषयोंका अद्भुत संग्रह है।

संक्षिप्त श्रीवराहपुराण (कोड 1361) ग्रन्थाकार—इस पुराणमें भगवान् श्रीहरिके वराह-अवतारकी मुख्य कथाके साथ अनेक तीर्थ, व्रत, यज्ञ, दान, आदिका विस्तृत वर्णन किया गया है।

संक्षिप्त ब्रह्मवैवर्तपुराण (कोड 631) ग्रन्थाकार—इसमें भगवान् श्रीकृष्णकी लीलाओंका विस्तृत वर्णन, अनेक रोचक एवं रहस्यमयी कथाएँ और श्रीराधाकी गोलोक-लीला तथा अवतार-लीलाका सुन्दर विवेचन है।

वामनपुराण, अनुवादसहित (कोड 1432) ग्रन्थाकार—इसमें भगवान् वामन, नर-नारायण एवं भगवती दुर्गाके उत्तम चरित्रके साथ भक्त प्रह्लाद तथा श्रीदामा आदि भक्तोंके बड़े रम्य आख्यान हैं।

अग्निपुराण, केवल (हिन्दी-अनुवाद) (कोड 1362) ग्रन्थाकार—इसमें महाभारतके सभी पर्वोंकी संक्षिप्त कथा, रामायणकी संक्षिप्त कथा, मत्स्य, कूर्म आदि अवतारोंकी कथाएँ तथा अनेक उपयोगी विषयोंका प्रतिपादन है।

मत्स्यमहापुराण, अनुवादसहित (कोड 557)—इसमें मत्स्यावतारकी कथा, सृष्टि-वर्णन, मन्वन्तर तथा पितृवंश-वर्णन राजनीति, यात्राकाल, स्वप्नशास्त्र, शकुन-शास्त्र आदि अनेक विषयोंका सरल वर्णन किया गया है।

कूर्मपुराण, अनुवादसहित (कोड 1131)—इस पुराणमें भगवान्के कूर्मावतारकी कथाके साथ सृष्टि-वर्णन, मोक्षके साधन, तीर्थ-माहात्म्य, २८ व्यासोंकी कथाएँ, ईश्वर-गीता, व्यासगीता आदिका विस्तृत वर्णन है।

श्रीमद्देवीभागवत अनुवादसहित (कोड 1897, 1898) ग्रन्थाकार, दो खण्डोंमें—इस पुराणमें भगवती पराम्बाके विस्तृत चरित्रके साथ अनेक आख्यानोंका सरस वर्णन है। **संक्षिप्त श्रीमद्देवीभागवत (कोड 1133)** हिन्दी, **(कोड 1326)** गुजराती तथा **(कोड 1770)** मूल, संस्कृत भी उपलब्ध।

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०, २३३३०३०